इस नम्बर के ख़ास लेख	اِس نمبر کے خاص لیکھ
हिन्दुस्तान : मेल मिलाप का संगम	ھندستان : میل ملاپ کا سنگم
—श्री मिरज़ा इस्माइल	—شری مرزا اسماعیل
शेख़ सादी की "करीमा"	شیخ سعدی کی "کریما"
—पंडित सुन्दरलाल	—پنڈت سندر لال
गांधी और लेनिन	گاندھی اور لینن
—श्री जी. सुन्दर रेड्डी	—شری جی. سندر ریڈی
मशहूर सूफ़ी शाह अब्दुल लतीफ़	مشہور صوفی شاہ عبداللطیف
—प्रोफ़ैसर जेठमल परशुराम गुलराजानी	—پروفیسر جیٹھ مل پرشورام گلراجانی
चीन और भारत का सांस्कृतिक मेल जोल	چین اور بھارت کا سانسکرتک میل جول
—श्री मलिन्द	—شری ملند

इसके अलावा — اسکے علاوہ

देस बिदेस के मसलों पर हमारी राय में ज़रूरी सम्पादकी नोट

دیس بدیس کے مسلوں پر ہماری رائے میں ضروری سمپادکی نوٹ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद ہندستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

जनवरी 1956 جنوری

जिल्द 21 جلد नम्बर 1 نمبر

जनवरी 1956 جنوری

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145، مٹھی گنج، الہ آباد

جنوری

क्या किस से	सफ़ा صفحہ	کیا کس سے
1. हिन्दुस्तान : मेल मिलाप का संगम —श्री मिरज़ा इस्माइल	1	1. ہندستان : میل ملاپ کا سنگم —شری مرزا اسماعیل
2. शेख़ सादी की "करीमा" —पंडित सुन्दरलाल	6	2. شیخ سعدی کی "کریما" —پنڈت سندر لال
3. सिख और उनका क़ौमी सङ्गठन —प्रोफ़ेसर तेजासिंह	19	3. سکھ اور اُن کا قومی سنگٹھن —پروفیسر تیجا سنگھ
4. गांधी और लेनिन —श्री जी. सुन्दर रेड्डी	30	4. گاندھی اور لینن —شری جی . سندر ریڈی
5. मशहूर सूफ़ी शाह अब्दुल लतीफ़ —प्रोफ़ेसर जेठमल परशुराम गुलराजानी	34	5. مشہور صوفی شاہ عبدالطیف —پروفیسر جیٹھ مل پرشورام گلراجانی
6. चीन और भारत का सांस्कृतिक मेल जोल —श्री मलिन्द	37	6. چین اور بھارت کا سانسکرتک میل جول —شری ملند
7. कुछ किताबें—	48	7. کچھ کتابیں—
8. हमारी राय— हथियारों की पूजा; बे-लगाम चाल; एक ख़तरनाक सुझाव—सुरेश रामभाई.	54	8. ہماری رائے— ہتھیاروں کی پوجا؛ بےلگام چال؛ ایک خطرناک سوجھاؤ—سریش رامبھائی ۔

हिन्दुस्तान : मेल मिलाप का संगम

श्री मिरज़ा इस्माइल

हिन्दुस्तान की मुख्तलिफ़ क़ौमों के बीच कल्चरल (सांस्कृतिक) एकता और आपसी मोहब्बत के प्रचार का काम बहुत ही ऊँचा काम है. ज़िन्दगी भर मेरा रुझान हिन्दुस्तान के इसी एके की तरफ़ रहा है. और मुझे इस काम से दिली हमदर्दी है. मैं समझता हूँ कि ऐसा हर हिन्दुस्तानी जो यह चाहता है कि दुनिया के मुल्कों के बीच उसके मुल्क की एक आलातर (उच्चतर) जगह हो और उसकी शान बान बढ़े इस कल्चरल एके और आपसी मोहब्बत का तरफ़दार और हामी होगा.

मेरे इस कहने का यह मतलब नहीं कि हिन्दुस्तान की क़ौमी और समाजी ज़िन्दगी में आपसी लड़ाई की कोई मुस्तक़िल जगह थी. मेरा ऐसा फ़र्ज़ करना तारीख़ी नुक़्ते-नज़र से बिल्कुल ग़लत होगा. मेरे कहने की मन्शा यह है कि आजकल की तकलीफ़देह हालत में जबकि आपस में फ़र्क़ पैदा करने वाले रुझान मुल्क की क़ौमी ज़िन्दगी की बुनियादें खोखली करने की लगातार कोशिशें कर रहे हैं, जबकि भाषाई और सूबाई नफ़रत ने भलाई और समझदारी के चश्मे को गँदला कर दिया है तो अपने मुल्क से मुहब्बत रखने वाले हर हिन्दुस्तानी का यह फ़र्ज़ है कि वह देश की ज़हरीली हवा को पाक करने और मोहब्बत के चश्मे को साफ़ करने की जी-तोड़ कोशिश करे.

हिन्दुस्तान में तरह तरह की जातियाँ हैं, तरह तरह की बोलियाँ हैं और तरह तरह के मज़हबी एतक़ाद (विश्वास) हैं, यहाँ मुख्तलिफ़ ख़ान्दानों ने हुकूमतें कीं, बने और बिगड़े मगर इस सबके होते हुये भी इस देश में सदा एक बुनियादी एकता और कल्चर का एक अटूट सिलसिला क़ायम रहा. इस कल्चर की जड़ें जनता की आत्मा की गहराई में जमी हुई हैं. कोई आन्दोलन उन बुनियादों को नहीं हिला सकता जिन्हें सैकड़ों बरस के दौरान में सैकड़ों करोड़ आदमियों के मिले जुले डर और उम्मीदों, ख़ुशियों और रंजों, मुहब्बतों और नफ़रतों ने मज़बूत किया है.

तारीख़ (इतिहास) पर अगर कोई एक सरसरी निगाह डाले तो एक बात उसके सामने साफ़ हो जायगी कि हमारा यह मुल्क हिन्दुस्तान तरह तरह की कल्चरों और तरह तरह की क़ौमों के मिलाप और जमघट की जगह रही है. रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इसे अपनी 'महामानवेर मेला' नाम की एक सुन्दर नज़्म में बड़ी ख़ूबसूरती के साथ ज़ाहिर किया है.

ہندستان : میل ملاپ کا سنگم

شری مرزا اسماعیل

ہندستان کی مختلف قوموں کے بیچ کلچرل (سانسکرتک) ایکتا اور آپسی محبت کے پرچار کا کام بہت ہی اونچا کام ہے. زندگی بھر میرا رجحان ہندستان کے اسی ایکے کی طرف رہا ہے. اور مجھے اس کام سے دلی ہمدردی ہے. میں سمجھتا ہوں کہ ایسا ہر ہندستانی جو یہ چاہتا ہے کہ دنیا کے ملکوں کے بیچ اُس کے ملک کی ایک اعلیٰ تر (اُچ تر) جگہ ہو اور اس کی شان بان بڑھے اِس کلچرل ایکے اور آپسی محبت کا طرفدار اور حامی ہوگا.

میرے اُس کہنے کا یہ مطلب نہیں کہ ہندستان کی قومی اور سماجی زندگی میں آپسی لڑائی کی کوئی مستقل جگہ تھی. میرا ایسا فرض کرنا تاریخی نقطہ نظر سے بالکل غلط ہوگا. میرے کہنے کی منشا یہ ہے کہ آجکل کی تکلیف دہ حالت میں جب کہ آپس میں فرق پیدا کرنے والے رجحان ملک کی قومی زندگی کی بنیادیں کھوکھلی کرنے کی لگاتار کوششیں کررہے ہیں، جب کہ بھاشائی اور صوبائی نفرت نے بھلائی اور سمجھداری کے چشمے کو گندلا کردیا ہے تو اپنے ملک سے محبت رکھنے والے ہر ہندستانی کا یہ فرض ہے کہ وہ دیش کی زہریلی ہوا کو پاک کرنے اور محبت کے چشمے کو صاف کرنے کی جی توڑ کوشش کرے.

ہندستان میں طرح طرح کی جاتیاں ہیں، طرح طرح کی بولیاں ہیں اور طرح طرح کے مذہبی اعتقاد (وشواس) ہیں، یہاں مختلف خاندانوں نے حکومتیں کیں، بنے اور بگڑے مگر اِس سب کے ہوتے ہوئے بھی اِس دیش میں سدا ایک بنیادی ایکتا اور کلچر کا ایک اٹوٹ سلسلہ قایم رہا. اِس کلچر کی جڑیں جنتا کی آتما کی گہرائی میں جمی ہوئی ہیں. کوئی آندولن اُن بنیادوں کو نہیں ہلا سکتا جنہیں سیکڑوں برس کے دوران میں سیکڑوں کروڑ آدمیوں کے ملے جلے ڈر اور اُمیدوں، خوشیوں اور رنجوں، محبتوں اور نفرتوں نے مضبوط کیا ہے.

تاریخ (اِتہاس) پر اگر کوئی ایک سرسری نگاہ ڈالے تو ایک بات اُس کے سامنے صاف ہوجائیگی کہ ہمارا یہ ملک ہندستان طرح طرح کی کلچروں اور طرح طرح کی قوموں کے ملاپ اور جمگھٹ کی جگہ رہی ہے. رویندرناتھ ٹھاکر نے اِسے اپنی 'مہامانویر میلا' نام کی ایک سندر نظم میں بڑی خوبصورتی کے ساتھ ظاہر کیا ہے.

रवीन्द्रनाथ ने हिन्दुस्तान के इस वसीअ (विस्तृत) इनसानी समुन्दर में आर्यों-अनार्यों, द्राविड़ों-चीनियों, सकों-हूणों, पठानों-मुग़लों को एक देह में घुलते-मिलते देखा था. जो लोग यहाँ फ़ौज और तीरो तुफंग लेकर मस्त होकर जीत के गीत गाते हुये, रेगिस्तानों और पहाड़ी दर्रों को पारकर के आये, वे सब यहाँ रहकर हिलमिलकर एक हो गये और मुल्क की रग रग में उनके तराने एक होकर गूँजने लगे.

एक नौजवान हिन्दुस्तानी आलिम ने इन्हीं बातों को ज़रा दूसरे तरीक़े से लिखा है. वह लिखता है—"तीन हज़ार बरस पहले यहां आर्य आये और अपने साथ एक क़ुदरती मज़हब लाये जिसे उन्होंने वेदों की ऋचाओं में ज़ाहिर किया, दो हज़ार बरस पहले यूनानी अपना फ़लसफ़ाना स्टोइक मज़हब लाये, सत्रह सौ बरस पहले सीरियावाले ईसाई मज़हब लाये, बारह सौ बरस पहले अरब लोग इसलाम लाये और हज़ार बरस पहले ईरानी ज़रथुस्त्री मज़हब लाये और यहां इन सब मज़हबों का संगम बना."

हिन्दुस्तान के इस मिलापगाह (मिलन केन्द्र) में क़ौमों और तहज़ीबों की लगातार मिलावट होती रही और उससे एक ऐसी कल्चर पैदा हुई जो अपने क़िस्म की अनोखी, भरी पूरी, ख़ूबसूरत, हर पहलू को छूनेवाली और रंगीन है लेकिन जिसमें एक गहराई है, एक पुख़्तगी है और जो तमाम दुनिया के लिये एक हैरत की चीज़ है. बाहर से आने वाली क़ौमों और यहां की आबाद तहज़ीब में हर क़दम पर झगड़े और झगड़ों से पैदा होनेवाली मुसीबतें लाज़मी थीं, मगर हर बार ये झगड़े एकता में तब्दील हो गये. आख़िर बच्चे के जन्म के वक़्त मां को दर्द तो सहना ही होता है.

हिन्दुस्तान की इस क़ौमी ज़िन्दगी के रंग बिरंगेपन से हमें न तो मायूस होने की ज़रूरत है और न हमें ऐसे नतीजे निकालने की ज़रूरत है जिनकी तारीख़ से ताईद (समर्थन) न हो. मुहज़्ज़ब (सभ्य) ज़िन्दगी के लिये इख़्तलाफ़ (विभिन्नता) एक ज़रूरी चीज़ है. लार्ड आकलैण्ड ने एक जगह कहा था—

"एक ही हुकूमत के मातहत बहुत सी क़ौमों का रहना यह एक इम्तहान भी है और आज़ादी का पक्का बीमा भी. एक ही हुकूमत के मातहत बहुत सी क़ौमों का मिलकर रहना यह मुहज़्ज़ब और शायस्ता ज़िन्दगी की एक वैसी ही शर्त है जैसी समाजी ज़िन्दगी में मुख़्तलिफ़ इनसानों का मिलकर रहना एक ज़रूरी शर्त है. पिछड़ी हुई क़ौमें अगर एक ही सियासी यूनियन में ज़्यादा अक़्लमन्द क़ौमों के साथ रहें तो लाज़मी तौर पर उनकी भी तरक़्क़ी होगी. थकी हुई और बूढ़ी क़ौमों में नई और जवान क़ौमों के साथ से फिर से नई जवानी आ जाती है. लेकिन यह तरक़्क़ी और नई जगमगाहट तभी हासिल हो सकती है जब ये क़ौमें एक ही

[illegible]

سمندر میں آریوں - اناریوں، دراوڑوں - چینیوں، سکوں - ھنوں، پٹھانوں - مغلوں کو ایک دیہ میں گھلتے ملتے دیکھا تھا. جو لوگ یہاں فوج اور تیروتفنگ لیکر مست ہوکر جیت کے گیت گاتے ہوئے، ریگستانوں اور پہاڑی دروں کو پار کر وے آئے، وے سب یہاں رہ کر ھل ملکر ایک ہوگئے اور ملک کی رگ رگ میں اُن کے ترانے ایک ہوکر گونجنے لگے.

ایک نوجوان ھندستانی عالم نے اِنہیں باتوں کو ذرا دوسرے طریقے سے لکھا ھے. وہ لکھتا ھے—"تین ھزار برس پہلے یہاں آریہ آئے اور اپنے ساتھ ایک قدرتی مذھب لائے جسے انہوں نے ویدوں کی رچاؤں میں ظاھر کیا، دو ھزار برس پہلے یونانی اپنا فلسفانہ اِستوئک مذھب لائے، سترہ سو برس پہلے سیریا والے عیسائی مذھب لائے، بارہ سو برس پہلے عرب لوگ اِسلام لائے اور ھزار برس پہلے ایرانی زرتھوستری مذھب لائے اور یہاں اِن سب مذھبوں کا سنگم بنا."

ھندستان کے اِس ملاپ گاہ (ملن کیندر) میں قوموں اور تہذیبوں کی لگاتار ملاوٹ ہوتی رھی اور اِس سے ایک ایسی کلچر پیدا ہوئی جو اپنے قسم کی انوکھی، بھری پوری، خوبصورت، ھر پہلو کو چھونے والی اور رنگین ھے لیکن جس میں ایک گہرائی ھے، ایک پختگی ھے اور جو تمام دنیا کے لئے ایک حیرت کی چیز ھے. باھر سے آنے والی قوموں اور یہاں کی آباد تہذیب میں ھر قدم پر جھگڑے اور جھگڑوں سے پیدا ہونے والی مصیبتیں لازمی تھیں، مگر ھر بار یہ جھگڑے ایکتا میں تبدیل ہوگئے. آخر بچے کے جنم کے وقت ماں کو درد تو سہنا ھی ہوتا ھے.

ھندستان کی اِس قومی زندگی کے رنگ برنگے پن سے ھمیں نہ تو مایوس ہونے کی ضرورت ھے اور نہ ھمیں ایسے نتیجے نکالنے کی ضرورت ھے جن کی تاریخ سے تائید (سمرتھن) نہ ہو. مہذب (سبھیہ) زندگی کے لئے اختلاف (وبھنتا) ایک ضروری چیز ھے. لارڈ آکلینڈ نے ایک جگہ کہا تھا—

"ایک ھی حکومت کے ماتحت بہت سی قوموں کا رھنا یہ ایک امتحان بھی ھے اور آزادی کا پکا بیمہ بھی. ایک ھی حکومت کے ماتحت بہت سی قوموں کا ملکر رھنا یہ مہذب اور شائستہ زندگی کی ایک ویسی ھی شرط ھے جیسی سماجی زندگی میں مختلف انسانوں کا ملکر رھنا ایک ضروری شرط ھے. پچھڑی ہوئی قومیں اگر ایک ھی سیاسی یونین میں زیادہ عقلمند قوموں کے ساتھ رھیں تو لازمی طور پر اُن کی ترقی ہوگی. تھکی ہوئی اور بوڑھی قوموں میں نئی اور جوان قوموں کے ساتھ سے پھر سے نئی جوانی آجاتی ھے. لیکن یہ ترقی اور نئی جگمگاھٹ تبھی حاصل ہوسکتی ھے جب یہ قومیں ایک ھی

सरकार के मातहत रहती हों. सल्तनत के कयाम में तरह तरह की क़ौमों के मुतज़ाद (परस्पर विरोधी) गुणों की मिलावट से एक नया और बेहतरीन गुण बन जाता है. इसी खिल्त मिल्त से इन्सानों का एक गिरोह दूसरे गिरोह से क़ूवत, अक़्ल और क़ाबलीयत हासिल करता है."

वेण्डेन विल्की अपनी मशहूर किताब 'वन वर्ल्ड' में अमरीका के बारे में लिखता है—"मेरे ख़्याल से हमारे तहज़ीब की ऊँचाई की वजह हमारी सिनेटें, हमारी ईजादें या हमारे गढ़े हुए आलीशान कल कारख़ाने नहीं हैं बल्कि मुख़्तलिफ़ मज़हबों और मुख़्तलिफ़ क़ौमियतों के होते हुये भी इस संयुक्त राज्य अमरीका में एक दूसरे को समझते हुये, एक दूसरे का लिहाज़ करते हुये और एक दूसरे को मदद करते हुये हमारी जनता की एक साथ मिलकर रहने की क़ाबलीयत है."

हिन्दुस्तान में मुग़लों का राज, उनकी बढ़ती और उनका अन्त लार्ड आकलैण्ड की ऊपर लिखी बात को साबित करता है. पहली मर्तबा मौर्य और गुप्त साम्राज्यों के वक़्त पूरा या क़रीब क़रीब पूरा हिन्दुस्तान एक सरकार के मातहत आया. हमने देखा इसलामी हुकूमत में नई इसलामी कल्चर हिन्दुस्तान के बूढ़े बदन में फिर से जवानी ले आई और यहां की क़ौमी जिन्दगी के तमाम सीग़ों (अङ्गों) को उसने मालामाल किया. उस यकजाइयत और खिल्त मिल्त के शानदार अजीबो ग़रीब नतीजे हमें फ़न्ने तामीर (निर्माणकला), तसवीरसाज़ी (चित्रकला), शायरी (कविता), संगीत, ज़बान और मज़हब में भी आज तक देखने को मिलते हैं. जो बातें तारीख़ (इतिहास) के विद्यार्थियों को अच्छी तरह मालूम हैं उनकी तफ़सीर (विस्तार) में मुझे यहां जाने की ज़रूरत नहीं. मुग़ल इमारतों के अन्दर हमें इसलामी और हिन्दू कला की मिलावट साफ़ नज़र आती है. राजपूत चित्रकला पर हमें बहुत साफ़ ईरानी असर दिखाई देता है. यह सारी मिलावट ख़ुद मुग़ल दरबार के साये में हुई. अमीर ख़ुसरो और कबीर जैसे मुसलमान शायरों और सूफ़ियों ने हिन्दी कविता को और नसीम, चकबस्त जैसे हिन्दू शायरों ने उर्दू शायरी को मालामाल किया. ख़ुद उर्दू बोली, जिसे उत्तर भारत के हिन्दू और मुसलमानों ने मिलकर अपनाया हिन्दी और फ़ारसी के मेल से बनी. मुग़लों के वक़्त से भारत के सङ्गीत के सबसे बड़े प्रचारक मुसलमान ही हुए हैं जिनके बनाये हुये ख़याल, होली और भजन अब भी हर तबक़े के लोगों में पसन्द किये जाते हैं. अब भी ख़याल के उस्तादों में मुसलमानों की तादाद ज़्यादा है. मज़हबी दायरे में भी इसलाम की छाप हम श्री चैतन्य जैसे हिन्दू सन्तों और हिन्दू मज़हब की छाप कबीर और दादू जैसे मुसलमान सूफ़ी सन्तों की सीख में देख सकते हैं.

سرکار کے ماتحت رہتی ہوں ۔ سلطنت کے قیام میں طرح طرح کی قوموں کے متضاد (پرسپرورودھی) گنوں کی ملاوٹ سے ایک نیا اور بہترین گن بن جاتا ہے ۔ اسی خلط ملط سے انسانوں کا ایک گروہ دوسرے گروہ سے قوت' عقل اور قابلیت حاصل کرتا ہے ۔"

وینڈیل ولکی اپنی مشہور کتاب 'ون ورلڈ' میں امریکہ کے بارے میں لکھتا ہے—"میرے خیال سے ہمارے تہذیب کی اونچائی کی وجہ ہماری سنیٹیں' ہماری ایجادیں یا ہمارے گڑھے ہوئے عالیشان کل کارخانے نہیں ہیں بلکہ مختلف مذہبوں اور مختلف قومیتوں کے ہوتے ہوئے بھی اس سنجکت راج امریکہ میں ایک دوسرے کو سمجھتے ہوئے' ایک دوسرے کا لحاظ کرتے ہوئے اور ایک دوسرے کو مدد کرتے ہوئے ہماری جنتا کی ایک ساتھ ملکر رہنے کی قابلیت ہے ۔"

ہندستان میں مغلوں کا راج' اُن کی بڑھتی اور اُن کا انت لارڈ آکلینڈ کی اُوپر لکھی بات کو ثابت کرتا ہے ۔ پہلی مرتبہ موریہ اور گپت سامراجیوں کے وقت پورا یا قریب قریب پورا ہندستان ایک سرکار کے ماتحت آیا ۔ ہم نے دیکھا اسلامی حکومت میں نئی اسلامی کلچر ہندستان کے بوڑھے بدن میں پھر سے جوانی لے آئی اور یہاں کی قومی زندگی کے تمام سیغوں (انگوں) کو اُس نے مالا مال کیا ۔ اُس یکجائیت اور خلط ملط کے شاندار عجیب و غریب نتیجے ہمیں فن تعمیر (نرمان کلا)' تصویر سازی (چترکلا)' شاعری (کویتا)' سنگیت' زبان اور مذہب میں بھی آج تک دیکھنے کو ملتے ہیں ۔ جو باتیں تاریخ (اِتہاس) کے ودیارتھیوں کو اچھی طرح معلوم ہیں اُن کی تفسیر (وستار) میں مجھے یہاں جانے کی ضرورت نہیں ۔ مغل عمارتوں کے اندر ہمیں اسلامی اور ہندو کلا کی ملاوٹ صاف نظر آتی ہے ۔ راجپوت چترکلا پر ہمیں بہت صاف ایرانی اثر دکھائی دیتا ہے ۔ یہ ساری ملاوٹ خود مغل دربار کے سائے میں ہوئی ۔ امیر خسرو اور کبیر جیسے مسلمان شاعروں اور صوفیوں نے ہندی کویتا کو اور نسیم' چکبست جیسے ہندو شاعروں نے اُردو شاعری کو مالا مال کیا ۔ خود اُردو بولی' جسے اُتر بھارت کے ہندو اور مسلمانوں نے مل کر اپنایا' ہندی اور فارسی کے میل سے بنی ۔ مغلوں کے وقت سے بھارت کے سنگیت کے سب سے بڑے پرچارک مسلمان ہی ہوئے ہیں جن کے بنائے ہوئے خیال' ہولی اور بھجن اب بھی ہر طبقہ کے لوگوں میں پسند کئے جاتے ہیں ۔ اب بھی خیال کے اُستادوں میں مسلمانوں کی تعداد زیادہ ہے ۔ مذہبی دائرے میں بھی اسلام کی چھاپ ہم شری چیتنیہ جیسے ہندو سنتوں اور ہندو مذہب کی چھاپ کبیر اور دادو جیسے مسلمان صوفی سنتوں کی سیکھ میں دیکھ سکتے ہیں ۔

सूफ़ीवाद के अन्दर हमें हिन्दू वेदान्त और भक्तिवाद की मिलावट साफ़ नज़र आती है.

ऊपर यह सरसरी नज़र महज़ इसीलिये डाली गई कि अपने हज़ार बरस के लम्बे तारीख़ी दौर में हिन्दू और मुसलमानों ने साथ साथ रहने की कला अच्छी तरह सीख ली थी. इनसानी ज़िन्दगी में जो कुछ भी अच्छा है और जो बातें ज़िन्दगी में रस पैदा करती हैं उन सबको हिन्दू और मुसलमानों ने एक दूसरे के एतबार, मदद और सहारे से पूरा किया और एक ऐसी मिली जुली हिन्दुस्तानी कल्चर की तामीर की जिसने दोनों को मोहब्बत की एक कड़ी में बांध दिया.

मुख़्तलिफ़ जातियों को क़रीबी रिश्ते में मज़बूती से बांधनेवाली चीज़ तो आपसी शादी ब्याह हैं लेकिन उससे उतरकर अगर तिजारत या धन्धों के ज़रिये मिलकर पैसा कमाया जाय तब भी लोग काफ़ी एक दूसरे के क़रीब आ जाते हैं और मज़हबी, सूबाई और दूसरे फ़रक़ भूल जाते हैं. मिली जुली तिजारत और कामधन्धे भी एक बड़ी हद तक परायेपन और मज़हबी निफ़ाक़ (अनैक्य) को दूर करने में मदद देते हैं.

साथ साथ मिलकर रहने की जिस रीत को हमारे बुज़ुर्गों ने खोज निकाला था और जिसे हज़ार बरस तक तरक़्क़ी दी क्या उस पुरानी रीत को हम भूल गये ? मेरा जवाब है—नहीं, हम नहीं भूले. मेल मोहब्बत का वह सोता अब भी ज्यों का त्यों है. ख़ाली हमारे दिमाग़ी फ़ितूर ने उसकी सतह को परागन्दा कर दिया है. सात लाख गावों में, हिन्दुस्तान के दिल में, मुहब्बत की वही पुरानी धड़कन अब भी होती है. मौजूदा ज़माने से गुज़रने में कुछ दिक़्क़तों का सामना लाज़मी था. चीज़ों को अपनाना और पचाना हिन्दुस्तान की ख़ासियत रही है. इस काम में भी अनगिनत मुश्किलों के बीच से गुज़रना पड़ता है. आज हिन्दुस्तान को पच्छिम की साइन्सी कल्चर को भी उसी तरह अपनाना है. वह पहले पहल आज़ादी, बराबरी, भाईचारे और अक़्ली कसौटी का ख़याल लेकर यहाँ दाख़िल हुई. इनसान के ज़ाती हक़ूक़ (व्यक्तिगत अधिकारों) का एक मुबालग़े (अतिशयोक्ति) से भरा हुआ नारा भी उसने लगाया. सन् 1914-18 की यूरोपियन जङ्ग के बाद उसने सेल्फ़ डिटर्मिनेशन (आत्म निर्णय) का नारा और जोड़ लिया. नये ख़यालातों ने जो नशा हम पर तारी किया है आज हमारे सियासी जिस्म पर उसका असर है. जब यह नशा उतर जायगा और इसका उतरना लाज़मी है तो हिन्दुस्तान फिर उसी पुरानी आलातर मन्ज़िल का सफ़र शुरू करेगा और मुल्क की ज़िन्दगी फिर भरी पूरी और ख़ुशगवार हो जायगी.

صوفی‌واد کے اندر همیں هندو ویدانت اور بهکتی‌واد کی ملاوٹ صاف نظر آتی هے .

اوپر یه سرسری نظر محض اِسی لئے ڈالی گئی که اپنے هزار برس کے لمبے تاریخی دور میں هندو اور مسلمانوں نے ساتھ ساتھ رهنے کی کلا اچھی طرح سیکھ لی تھی . اِنسانی زندگی میں جو کچھ بھی اچھا هے اور جو باتیں زندگی میں رس پیدا کرتی هیں اُن سب کو هندو اور مسلمانوں نے ایک دوسرے کے اعتبار، مدد اور سهارے سے پورا کیا اور ایک ایسی ملی جلی هندستانی کلچر کی تعمیر کی جسنے دونوں کو محبت کی ایک کڑی میں باندھ دیا .

مختلف جاتیوں کو قریبی رشتے میں مظبوطی سے باندھنے والی چیز تو آپسی شادی بیاہ هیں لیکن اُس سے اُتر کر اگر تجارت یا دھندھوں کے ذریعے ملکر پیسه کمایا جائے تب بھی لوگ کافی ایک دوسرے کے قریب آجاتے هیں اور مذهبی، صوبائی اور دوسرے فرق بھول جاتے هیں . ملی جلی تجارت اور کام دھندھے بھی ایک بڑی حد تک پرائے پن اور مذهبی نفاق (انیکیه) کو دور کرنے میں مدد دیتے هیں .

ساتھ ساتھ ملکر رهنے کی جس ریت کو همارے بزرگوں نےکھوج نکالا تھا اور جسے هزار برس تک ترقی دی کیا اُس پرانی ریت کو هم بھول گئے ؟ میرا جواب هے—نهیں، هم نهیں بھولے . میل محبت کا وہ سوتا اب بھی جوں کا تیوں هے . خالی همارے دماغی فتور نے اُس کی سطح کو پراگندہ کردیا هے . سات لاکھ گاؤں میں، هندستان کے دل میں، محبت کی وهی پرانی دھڑکن اب بھی هوتی هے . موجودہ زمانے سے گذرنے میں کچھ دقتوں کا سامنا لازمی تھا . چیزوں کو اپنانا اور پچانا هندستان کی خاصیت رهی هے . اِس کام میں بھی انگنت مشکلوں کے بیچ سے گذرنا پڑتا هے . آج هندستان کو پچھم کی سائنسی کلچر کو بھی اُسی طرح اپنانا هے. وہ پهلے پهل آزادی، برابری بھائی چارے اور عقلی کسوٹی کا خیال لیکر یهاں داخل هوئی . اِنسان کے ذاتی حقوق (ویکتی گت ادھیکاروں) کا ایک مبالغه (اتشیوکتی) سے بھرا هوا نعرہ بھی اُس نے لگا یا. سن 1914-18 کی یوروپین جنگ کے بعد اُس نے سیلف ڈیٹرمینیشن (آتم نرنئے) کا نعرہ اور جوڑ لیا . نئے خیالتوں نے جونشه هم پر طاری کیا هے آج همارے سیاسی جسم پر اِس کا اثر هے . جب یه نشه اُتر جائے گا اور اِس کا اُترنا لازمی هے تو هندستان پھر اُسی اعلیٰ ترمنزل کا سفر شروع کریگا اور ملک کی زندگی پھر بھری پوری اور خوشگوار هو جائیگی .

तारीख़ के पुराने सबक़ पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि यही होना है और यही होकर रहेगा.

टेनीसन की कुछ सतरें हैं—

تاریخ کے پرانے سبق پکار پکار کر کہہ رہے ھیں کہ یہی ھونا ھے اور یہی ھو کر رھیگا ۔

ٹینیسن کی کچھ سطریں ھیں—

Yet I doubt not through the ages one increasing purpose runs
And the thoughts of men are widened with the process of the suns.

अगर हम इनसानी समाज की तरक़्क़ी पर एक नज़र डालें तो दिखाई देगा कि शुरू ज़माने में इनफ़रादी (व्यक्तिगत) दौर था, फिर ख़ानदान बने, फिर कुटुम्ब (कुल) बने, फिर क़बीले बने, तब क़ौमें बनीं और फिर संघ बने. हमें इसमें कोई शुबहा न होना चाहिये कि इस तरक़्क़ी के पीछे एक पुख़्ता क़ुदरती क़ानून (नियम) है और वह क़ानून है मिलावट (समन्वय) का, नीचे से ऊपर जाने का, फ़र्द से संघ का, आसानी से पेचीदगी का और यह क़ुदरती क़ानून उस वक़्त तक अमल में रहेगा जब तक कुल दुनिया और कुल इन्सानों का एक समाज न बन जायगा. जो ताक़त इस क़ानून की इस तरक़्क़ी (प्रगति) को रोकने की कोशिश करेगी वह बरबाद हो जायगी. अगर हमने अब तक यह सबक़ नहीं सीखा तो जो बड़ी लड़ाई दूसरी बार लड़ी गई वह फ़िज़ूल लड़ी गई. अगर इस जङ्ग ने कोई एक सबक़ सिखाया है तो वह यह सिखाया है कि इन्सानों के छोटे छोटे गिरोह चाहे उन्हें नेशन कहो, चाहे क़ौमें कहो, अलग अलग रहकर जिन्दा नहीं रह सकते— और सारी दुनिया के एके से ही इनसान को निजात मिलेगी.

اگر ھم اِنسانی سماج کی ترقی پر ایک نظر ڈالیں تو دکھائی دیگا کہ شروع زمانے میں انفرادی (ویکتی گت) دور تھا، پھر خاندان بنے، پھر کٹمب (کل) بنے، پھر قبیلے بنے، تب قومیں بنیں اور پھر سنگھ بنے ۔ ھمیں اِس میں کوئی شبہہ نہ ھونا چاھئیے کہ اِس ترقی کے پیچھے ایک پختہ قدرتی قانون (نیم) ھے اور وہ قانون ھے ملاوٹ (سمنوئے) کا، نیچے سے اُوپر جانے کا، فرد سے سنگھ کا، آسانی سے پیچیدگی کا اور یہ قدرتی قانون اُس وقت تک عمل میں رھیگا جب تک کل دنیا اور کل انسانوں کا ایک سماج نہ بن جائیگا ۔ جو طاقت اِس قانون کی اِس ترقی (پرگتی) کو روکنے کی کوشش کریگی وہ برباد ھو جائیگی۔ اگر ھمنے اب تک یہ سبق نہیں سیکھا تو جو بڑی لڑائی دوسری بار لڑی گئی وہ فضول لڑی گئی ۔ اگر اِس جنگ نے کوئی ایک سبق سکھایا ھے تو وہ یہ سکھایا ھے انسانوں کے چھوٹے چھوٹے گروہ چاھے اُنھیں نیشن کہو، چاھے قوم کہو، الگ الگ رہ کر زندہ نہیں رہ سکتے—اور ساری دنیاکے ایکے سے ھی انسان کو نجات ملیگی ۔

दुख में दुखी और सुख में सुखी होने वाला लोहे के समान है; दुख में भी सुखी रहने वाला सोने के समान है; दुख-सुख में बराबर रहने वाला रतन के समान है और जो सुख-दुख की भावना से भी परे है वह सच्चा रूहानी बादशाह है.

—सन्त वाणी

دکھ میں دکھی اور سکھ میں سکھی ھونے والا لوھے کے سمان ھے؛ دکھ میں بھی سکھی رھنے والا سونے کے سمان ھے؛ دکھ سکھ میں برابر رھنے والا رتن کے سمان ھے اور جو دکھ سکھ کی بھاؤنا سے بھی پرے ھے وہ سچا روحانی بادشاہ ھے ۔

—سنت وانی

शेख़ सादी की "करीमा"

पंडित सुन्दरलाल

शेख़ सादी फ़ारसी के ऊँचे से ऊँचे विद्वानों और कवियों में से हैं. उनका जन्म सन् 1184 ई० में ईरान के शीराज़ शहर में हुआ था. उनका असली नाम मुशर्रिफ़-उद्दीन था. उनके बाप का नाम मुसलेउद्दीन था. 'सादी' उनका तख़ल्लुस यानी उपनाम था.

शुरू उमर में उन्होंने बग़दाद में तालीम पाई. सन् 1226 से 1256 तक 30 बरस उनके देशाटन में गुज़रे. वह सच्चे अर्थों में परिव्राजक थे. इस अरसे में वे बलख़ गए, ग़ज़नी गए, और पंजाब आए, वहाँ से गुजरात पहुंचे. सब जगह वह बड़े प्रेम और श्रद्धा के साथ अलग अलग मज़हबों के देवालयों के दर्शन करते थे. गुजरात में वह सोमनाथ के मंदिर को देखने के लिए भी गए. बहुत दिनों दिल्ली रहे. वहाँ उन्होंने हिन्दुस्तानी ज़बान सीखी. फिर यमन, अफ़्रीक़ा, मक्का और मदीना गए. लौटकर सीरिया यानी शाम के मशहूर शहर दमिश्क़ में कुछ दिनों ठहरे. दमिश्क़ में शेख़ सादी बहुत मशहूर हो गए थे. वह एक बहुत बड़े सूफ़ी सन्त थे. चारों तरफ़ से लोग उनके दर्शनों को और उनका उपदेश सुनने आते. वह बोलने वाले भी बहुत ऊँचे दरजे के और निडर थे. कुछ दिनों बाद शहर की ज़िन्दगी से ऊबकर जेरूसलम के पास एक जंगल में चले गए और वहां एकान्त में रहने लगे. उन दिनों यूरोप के ईसाइयों और पच्छिम एशिया के मुसलमानों में क्रुसेड की लड़ाइयां जारी थीं. कुछ ईसाई सिपाही शेख़ सादी को जंगल से पकड़कर ले गए. त्रिपोली की ईसाई छावनी में बहुत दिनों तक उनसे एक मामूली मज़दूर की तरह मिट्टी खोदने की बेगार ली जाती रही. आख़ीर में अलेपो के किसी मालदार सौदागर ने उन्हें पहचाना और बहुत सा धन देकर ईसाइयों से छुड़ाया. शेख़ सादी फिर देश देश घूमने लगे. उन्होंने सारी एशिया-कोचक और आस पास के देशों का सफ़र किया. 72 वर्ष की उमर से वह फिर अपनी जन्म भूमि शीराज़ में आकर रहने लगे. इसके बाद उनका सारा समय 'सलूक' यानी योगाभ्यास और ध्यान में गुज़रता था. सन् 1291 ई० में 107 बरस की उमर में शेख़ सादी का शरीर छूटा.

शेख़ सादी की लिखी दरजनों किताबों में 'गुलिस्तां' और 'बोस्तां' सब से ज़्यादा मशहूर हैं. शायद फ़ारसी की

شیخ سعدی کی "کریما"

پنڈت سندر لال

شیخ سعدی فارسی کے اونچے سے اونچے ودوانوں اور کویوں میں سے ہیں ۔ اُن کا جنم سن 1184 عیسوی میں ایران کے شیراز شہر میں ہوا تھا ۔ اُن کا اصلی نام مشرف الدین تھا ۔ اُن کے باپ کا نام مسلح الدین تھا ۔ 'سعدی' اُن کا تخلص یعنی اُپ نام تھا ۔

شروع عمر میں اُنہوں نے بغداد میں تعلیم پائی. سن 1226 سے 1256 تک 30 برس اُن کے دیشاٹن میں گذرے ۔ وہ سچے ارتھوں میں پریوراجک تھے ۔ اِس عرصہ میں وے بلخ گئے' غزنی گئے اور پنجاب آئے اور وہاں سے گجرات پہونچے ۔ سب جگہہ وہ بڑے پریم اور شردھا کے ساتھ الگ الگ مذہبوں کے دیوالیوں کے درشن کرتے تھے ۔ گجرات میں وہ سومناتھ کے مندر کو دیکھنے کے لئے بھی گئے ۔ بہت دنوں دلی رہے ۔ وہاں اُنہوں نے هندستانی زبان سیکھی ۔ پھر یمن' افریقہ' مکہ اور مدینہ گئے ۔ لوٹ کر سیریا یعنی شام کے مشہور شہر دمشق میں کچھ دنوں ٹھہرے ۔ دمشق میں شیخ سعدی بہت مشہور ہو گئے تھے ۔ وہ ایک بہت بڑے صوفی سنت تھے ۔ چاروں طرف سے لوگ اُن کے درشنوں کو اور اُن کا اُپدیش سننے آتے ۔ وہ بولنے والے بھی بہت اونچے درجے کے اور نڈر تھے ۔ کچھ دنوں بعد شہر کی زندگی سے اُوب کر جیروسلم کے پاس ایک جنگل میں چلے گئے اور وہاں ایکانت میں رہنے لگے ۔ اُن دنوں یورپ کے عیسائیوں اور پچھم ایشیا کے مسلمانوں میں کروسیڈ کی لڑائیاں جاری تھیں ۔ کچھ عیسائی سپاہی شیخ سعدی کو جنگل سے پکڑ کر لے گئے ۔ تریپولی کی عیسائی چھاونی میں بہت دنوں تک اُن سے ایک معمولی مزدور کی طرح مٹی کھودنے کی بیگار لی جاتی رہی ۔ آخیر میں الیپو کے کسی مالدار سوداگر نے اُنہیں پہچانا اور بہت سا دھن دیکر عیسائیوں سے چھڑایا ۔ شیخ سعدی پھر دیش دیش گھومنے لگے ۔ اُنہوں نے ساری ایشیا کوچک اور آس پاس کے دیشوں کا سفر کیا ۔ 72 برس کی عمر سے وہ پھر اپنی جنم بھومی شیراز میں آکر رہنے لگے ۔ اِس کے بعد اُن کا سارا سمئے 'سلوک' یعنی یوگابھیاس اور دھیان میں گذرتا تھا ۔ سن 1291 عیسوی میں 107 برس کی عمر میں شیخ سعدی کا شریر چھوٹا ۔

شیخ سعدی کی لکھی درجنوں کتابوں میں 'گلستاں' اور 'بوستاں' سب سے زیادہ مشہور ہیں ۔ شاید فارسی کی

कोई और किताबें संसार के इतने ज़्यादा देशों में इतने दिनों तक और इतने बड़े पैमाने पर नहीं पढ़ाई गईं जितनी 'गुलिस्तां' 'बोस्तां' और 'करीमा'. हिन्दुस्तान में भी तेरहवीं सदी से लेकर आज तक ये किताबें फ़ारसी की किताबों में सबसे ज़्यादा पढ़ी जाती रही हैं. 'गुलिस्तां' का मतलब है 'गुलाब का बाग़'. 'बोस्तां के माने हैं 'फलों का बाग़'. यह दोनों बड़ी बड़ी किताबें हैं और दुनिया के हर मज़हब और हर तरह के लोगों के लिए अच्छी से अच्छी नसीहतों से भरी हुई हैं. 'करीमा' शब्द के माने हैं 'हे दयालु ईश्वर !' 'करीमा' एक छोटा सा काव्य है, और किताब के पहले शब्द 'करीमा' से उसका नाम 'करीमा' पड़ गया,

करीमा का पूरा हिन्दी तरजुमा नीचे दिया जाता है—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ईश्वर के नाम से जो दयालु और कृपालु है

हे दयालु ईश्वर ! मेरे हाल पर दया कर,
मैं मोह के जाल में फंसा हुआ हूँ.
सिवाय तेरे और कोई नहीं जिससे मैं फ़रियाद करूँ.
पापियों के पाप क्षमा कर सकने वाला एक तू ही है.
मुझे बुराई के रास्ते से बचा,
बुराई से बचा और भलाई का रास्ता दिखा.

मोहम्मद साहब की तारीफ़ में

जब तक मेरे मुंह में ज़बान है,
मोहम्मद की तारीफ़ करना मुझे पसन्द हो.
वह ईश्वर का दोस्त और नबियों (Prophets) में बढ़कर था.
ऊँचा आसमान उसका तकिया था.
वह बर्क़ (बिजली) के घोड़े पर सवार, दुनिया को बश में करने वाला,
इस नीली छत वाले महल (पृथ्वी) से पार निकल गया.

अपनी आत्मा से

तेरी प्यारी उम्र के चालीस बरस गुज़र गये,
तेरे मिज़ाज से अभी तक बचपन न गया.
तू हमेशा लोभ और मोह में फँसा रहा,
एक पल के लिये भी तूने नेकी की तरफ़ ध्यान न दिया.
यह उम्र ठहरने वाली नहीं है, इस पर भरोसा मत कर,
काल की लीला से बेख़बर मत हो.

दया की तारीफ़ में

ऐ दिल ! जिस किसी ने दया का ख़ान (वह कपड़ा जिस पर खाना परसा जाता है) बिछा दिया,

کوئی اور کتابیں سنسار کے اِتنے زیادہ دیشوں میں اِتنے دنوں تک اور اتنے بڑے پیمانے پر نہیں پڑھائی گئیں جتنی 'گلستاں' 'بوستاں' اور کریما؛ ہندستان میں بھی تیرھویں صدی سے لے کر آج تک یہ کتابیں فارسی کی کتابوں میں سب سے زیادہ پڑھی جاتی رہی ہیں ۔ 'گلستاں' کا مطلب ہے 'گلاب کا باغ' ۔ 'بوستاں' کے معنے ہیں 'پھلوں کا باغ'؛ یہ دونوں بڑی بڑی کتابیں ہیں اور دنیا کے ہر مذہب اور ہر طرح کے لوگوں کے لئے اچھی سے اچھی نصیحتوں سے بھری ہوئی ہیں ۔ 'کریما' شبد کے معنے ہیں 'ہے دیالو ایشور!' 'کریما' ایک چھوٹا سا کاویہ ہے' اور کتاب کے پہلے شبد 'کریما' سے اُس کا نام 'کریما' پڑ گیا ۔

کریما کا پورا ہندی ترجمہ نیچے دیا جاتا ہے—

بسم اللہ الرحمان الرحیم

ایشور کے نام سے جو دیالو اور کرپالو ہے

ہے دیالو ایشور ! میرے حال پر دیا کر'
میں موہ کے جال میں پھنسا ہوا ہوں ۔
سوائے تیرے اور کوئی نہیں جس سے میں فریاد کروں'
پاپیوں کے پاپ چھما کر سکنے والا ایک تو ہی ہے ۔
مجھے برائی کے راستے سے بچا'
برائی سے بچا اور بھلائی کا راستہ دکھا ۔

محمد صاحب کی تعریف میں

جب تک میرے منھ میں زبان ہے'
محمد کی تعریف کرنا مجھے پسند ہو ۔
وہ ایشور کا دوست اور نبیوں (Prophets) میں بڑھکر تھا ۔
اونچا آسمان اُس کا تکیہ تھا ۔
وہ برق (بجلی) کے گھوڑے پر سوار' دنیا کو وش میں کرنے والا'
اِس نیلی چھت والے محل (پرتھوی) سے پار نکل گیا ۔

اپنی آتما سے

تیری پیاری عمر کے چالیس برس گذر گئے'
تیرے مزاج سے ابھی تک بچپن نہ گیا ۔
تو ہمیشہ لوبھ اور موہ میں پھنسا رہا'
ایک پل کے لئے بھی تونے نیکی کی طرف دھیان نہ دیا ۔
یہ عمر ٹھہرنے والی نہیں ہے' اِس پر بھروسہ مت کر'
کال کی لیلا سے بے خبر مت ہو ۔

دیا کی تعریف میں

اے دل ! جس کسی نے دیا کا خوان (وہ کپڑا جس پر کھانا پرسا جاتا ہے) بچھا دیا'

वह दया के संसार में नाम पा गया.

दया तुझे जहान का सरदार बना देगी,

दया तुझे शान्ति के मैदान में विजयी कर देगी.

दया से बढ़कर दुनिया में कोई काम नहीं,

दया के बाजार से ज्यादा गरम कोई बाजार नहीं.

दया सुख की पूँजी है,

दया इस जीवन का सार है.

तू अपनी दया से दुनिया के दिल को ताजा रख,

जहान में तेरी दया का चर्चा हो.

तू हमेशा दूसरों पर दया करने में लगा रह,

क्योंकि जानदारों का पैदा करने वाला ईश्वर भी सब पर दया करता है (ईश्वर का नाम 'करीम' है जिसके माने दयालु हैं).

दान देने की तारीफ़ में

जो खुशक़िस्मत है वह दानशीलता अख्तियार करता है,

और दानशीलता से ही आदमी खुशक़िस्मत होता है.

अपने प्रेम और दानशीलता से दुनिया को वश में कर,

प्रेम और दानशीलता की दुनिया में तू सरताज बन.

दान देना दिल वालों का काम है.

दान देना उनका पेशा है जो ईश्वर के प्यारे हैं.

दानशीलता आदमी की बुराइयों को इस तरह बदल देती है जिस तरह कीमिया तांबे को सोना करती है.

दानशीलता आदमी के सब दर्दों की दवा है,

जब तक तुझमें हिम्मत है दानशीलता को मत छोड़,

दानशीलता से ही तू अपने कल्याण की गेंद को मैदान में जीत ले जायगा.

कंजूस की बुराई में

अगर आसमान कंजूस आदमी की इच्छा पूरी करने में लग जावे,

और अगर क़िस्मत उसकी ग़ुलाम हो जावे,

अगर उसके हाथ में क़ारूँ (कुबेर) का ख़ज़ाना आ जावे,

और सारी दुनिया उसके क़ब्ज़े में आ जावे,

तब भी कंजूस आदमी इस क़ाबिल नहीं है कि तू उसका नाम ले,

चाहे सारा जमाना उसकी चाकरी करने लगे.

कंजूस के माल की तरफ़ तू कभी ध्यान न दे,

उसके धन और माल का तू कभी नाम भी मत ले.

कंजूस अगर जल और थल में सबसे बढ़कर पूजा पाठ करे,

तब भी उसे स्वर्ग नहीं मिल सकता, यह रसूल का कहना है.

وہ دیا کے سنسار میں نام پا گیا ۔

دیا تجھے جہان کا سردار بنا دیگی'

دیا تجھے شانتی کے میدان میں وجئی کر دیگی ۔

دیا سے بڑھکر دنیا میں کوئی کام نہیں'

دیا کے بازار سے زیادہ گرم کوئی بازار نہیں ۔

دیا سکھ کی پونجی ہے'

دیا اِس جیون کا سار ہے ۔

تو اپنی دیا سے دنیا کے دل کو تازہ رکھ'

جہان میں تیری دیا کا چرچا ہو ۔

تو ہمیشہ دوسروں پر دیا کرنے میں لگا رہ'

کیونکہ جانداروں کا پیدا کرنے والا ایشور بھی سب پر دیا کرتا ہے (ایشور کا ایک نام 'کریم' ہے جس کے معنے دیالو ہیں)۔

دان دینے کی تعریف میں

جو خوش قسمت ہے وہ دان شیلتا اختیار کرتا ہے'

اور دان شیلتا سے ہی آدمی خوش قسمت ہوتا ہے ۔

اپنے پریم اور دان شیلتا سے دنیا کو وش میں کر'

پریم اور دان شیلتا کی دنیا میں تو سرتاج بن ۔

دان دینا دل والوں کا کام ہے ۔

دان دینا اُن کا پیشہ ہے جو ایشور کے پیارے ہیں ۔

دان شیلتا آدمی کی برائیوں کو اِس طرح بدل دیتی ہے جس طرح کیمیا تانبے کو سونا کرتی ہے ۔

دان شیلتا آدمی کے سب دردوں کی دوا ہے'

جب تک تجھ میں ہمت ہے دان شیلتا کو مت چھوڑ'

دان شیلتا سے ہی تو اپنے کلیان کی گیند کو میدان سے جیت لے جائیگا :

کنجوس کی برائی میں ۔

اگر آسمان کنجوس آدمی کی اِچھا پوری کرنے میں لگ جاوے'

اور اگر قسمت اُس کی غلام ہو جاوے'

اگر اُس کے ہاتھ میں قاروں (کبیر) کا خزانہ آجاوے'

اور ساری دنیا اُس کے قبضے میں آجاوے'

تب بھی کنجوس آدمی اِس قابل نہیں ہے کہ تو اُس کا نام لے'

چاہے سارا زمانہ اُس کی چاکری کرنے لگے ۔

کنجوس کے مال کی طرف تو کبھی دھیان نہ دے'

اُس کے دھن اور مال کا تو کبھی نام بھی مت لے ۔

کنجوس اگر جل اور تھل میں سب سے بڑھکر پوجا پاٹھ کرے'

تب بھی اُسے سورگ نہیں مل سکتا' یہ رسول کا کہنا ہے ۔

कंजूस आदमी अगर खूब धनवान भी हो जावे,
तब भी अपनी ज़िल्लत (नीचता) से वह मुफ़लिस की तरह मार खायगा.
दान देने वाले अपने धन से मीठा फल खाते हैं,
कंजूस अपने चाँदी सोने का ग़म खाते हैं.

दीनता की तारीफ़ में

ऐ दिल ! अगर तू दीनता अख्तियार करे,
तो सारी दुनिया तेरी दोस्त हो जावे.
दीनता तेरे रुतबे को इस तरह बढ़ा देगी,
जिस तरह सूरज की रोशनी चाँद को रोशन कर देती है.
दीनता मित्रता की कुंजी है,
दीनता ही से मित्रता का रुतबा ऊँचा होता है.
दीनता आदमी का सिर ऊँचा करती है,
दीनता सरदारों की पहचान है.
आदमी वही है जो दीनता बरते,
दीनता ही में सच्ची आदमीयत है.
जो जितना समझदार है वह उतना ही ज़्यादा दीनता बरतता है,
जिस तरह दरख्त की टहनी जितनी ज़्यादा फलों से लदी रहती है उतनी ही ज़्यादा ज़मीन से आ मिलती है.
दीनता तेरे मान को बढ़ाने वाली है,
दीनता तुझे स्वर्ग तक पहुँचाने वाली है.
दीनता ही स्वर्ग के दरवाज़े की कुंजी है,
दीनता सरदारी और रुतबे का ज़ेवर है.
जिस किसी को दूसरों पर बड़प्पन हासिल है,
उसके लिये और भी अच्छा है कि दीनता बरते.
और जिस किसी को दीनता की आदत है,
मान और बड़ाई की उसे परवाह नहीं.
दीनता तुझे दुनिया का प्यारा बना देगी,
लोग दिल से तुझे उतना ही प्यार करेंगे जितना अपनी जान को.
तू लोगों से दीनता बरतना कभी न छोड़,
किसी से तलवार की तरह गरदन अकड़ी मत रख.
दीनता बड़ों को शोभा देती है,
फ़क़ीर के लिये दीनता उसकी आदत ही है.

घमण्ड की बुराई में

ऐ बेटा ! तू कभी घमण्ड मत कर,
क्योंकि घमण्ड एक न एक दिन तुझे सिर के बल गिरा देगा.
अक़लमन्द आदमी घमण्ड को पसन्द नहीं करता,
जिसे होश है वह कभी घमण्ड नहीं करता.

کنجوس آدمی اگر خوب دھنوان بھی ہو جاوے،
تب بھی اپنی ذلت (نیچتا) سے وہ مفلس کی طرح کھائیگا .
دان دینے والے اپنے دھن سے میٹھا پھل کھاتے ھیں،
کنجوس اپنے چاندی سونے کا غم کھاتے ھیں .

نتا کی تعریف میں

اے دل ! اگر تو دینتا اختیار کرے،
تو ساری دنیا تیری دوست ہو جاوے .
دینتا تیرے رتبہ کو اِس طرح بڑھا دیگی،
جس طرح سورج کی روشنی چاند کو روشن کر دیتی ھے .
دینتا مترتا کی کنجی ھے،
دینتا ھی سے مترتا کا رتبہ اُونچا ہوتا ھے،
دینتا آدمی کا سر اُونچا کرتی ھے،
دینتا سرداروں کی پہچان ھے .
آدمی وھی ھے جو دینتا برتے،
دینتا ھی میں سچی آدمیت ھے .
جو جتنا سمجھدار ھے وہ اُتنی ھی زیادہ دینتا برتتا ھے،
جس طرح درخت کی ٹہنی جتنی زیادہ پھلوں سے لدی
ی ھے اُتنی ھی زیادہ زمین سے آملتی ھے .
دینتا تیرے مان کو بڑھانے والی ھے،
دینتا تجھے سورگ تک پہونچانے والی ھے .
دینتا ھی سورگ کے دروازے کی کنجی ھے،
دینتا سرداری اور رتبے کا زیور ھے .
جس کسی کو دوسروں پر بڑپن حاصل ھے،
اُس کے لئے اور بھی اچھا ھے کہ دینتا برتے .
اور جس کسی کو دینتا کی عادت ھے،
مان اور بڑائی کی اُسے پرواہ نہیں .
دینتا تجھے دنیا کا پیارا بنادیگی،
لوگ دل سے تجھے اُتنا ھی پیار کرینگے جتنا اپنی جان کو .
تو لوگوں سے دینتا برتنا کبھی نہ چھوڑ،
کسی سے تلوار کی طرح گردن اکڑی مت رکھ
دینتا بڑوں کو شوبھا دیتی ھے،
فقیر کے لئے دینتا اس کی عادت ھی ھے .

نڈ کی برائی میں

اے بیٹا ! تو کبھی گھمنڈ مت کر،
کیونکہ گھمنڈ ایک نہ ایک دن تجھے سر کے بل گرادیگا .
عقلمند آدمی گھمنڈ کو پسند نہیں کرتا،
جسے ھوش ھے وہ کبھی گھمنڈ نہیں کرتا .

घमण्ड करना जाहिलों का काम है,
जिनके दिल है वह घमण्ड नहीं करते.
घमण्ड ने ही शैतान को ज़लील किया,
उसे लानत के क़ैदखाने में गिरफ़्तार कर लिया.
जिस किसी को घमण्ड की आदत हो जाती है,
वह अपने ही ख़याल में अपने को ऊँचा समझता रहता है.
घमण्ड बदक़िस्मती की पूँजी है,
घमण्ड बदज़ाती की जड़ है.
जब तू यह सब जानता है तो घमण्ड क्यों करता है ?
अगर करता है तो बुरा करता है—बुरा करता है.

विद्या की बड़ाई में

आदमी विद्या से ही कमाल को पहुँच सकता है,
मान, बड़ाई, रुतबे और माल असबाब से नहीं.
विद्या सीखने में अपने को इस तरह घुला देना चाहिये जिस तरह मोमबत्ती अपने को जल जलकर घुला देती है.
क्योंकि बिना विद्या के आदमी ईश्वर को नहीं पहिचान सकता.
बुद्धिमान आदमी को चाहिये कि विद्या की तलाश करे.
विद्या का बाजार हमेशा गरम रहता है.
जिस किसी को ईश्वर ने सौभाग्य दिया है,
वही विद्या हासिल करने में लगता है.
विद्या हासिल करना आदमी का धर्म है,
विद्या के लिये सारी ज़मीन को छान डालना चाहिये.
जा और विद्या के पल्ले को मज़बूती के साथ पकड़.
विद्या ही तुझे स्वर्ग तक पहुँचा सकती है.
अगर तू अक़्लमन्द है तो सिवाय विद्या के और कुछ मत सीख,
क्योंकि बिना विद्या के रह जाना ग़फ़लत में पड़े रहना है.
तेरे दीन और दुनिया दोनों के लिए विद्या ही काफ़ी है,
तेरा सारा काम विद्या ही से सुधर सकता है.

जाहिलों से बचने में

ऐ दिल ! अगर तू अक़्लमन्द और होशियार है,
तो जाहिलों (अज्ञानियों) की संगत मत कर.
जाहिलों से तीर की तरह भाग,
उनके साथ दूध और चीनी की तरह मिलकर मत रह.
अजगर से दोस्ती करना ज्यादा अच्छा है,
बजाय इसके कि कोई जाहिल तेरा दोस्त हो.
अक़्लमन्द आदमी तेरी जान का दुश्मन भी हो तो अच्छा है,
बजाय इसके कि कोई जाहिल तेरा दोस्त हो.
जाहिल की तरह दुनिया में कोई ज़लील नहीं होता,

گھمنڈ کرنا جاهلوں کا کام هے'
جن کے دل هے وہ گھمنڈ نہیں کرتے .
گھمنڈ نے هی شیطان کو ذلیل کیا'
اِسے لعنت کے قید خانہ میں گرفتار کرلیا .
جس کسی کو گھمنڈ کی عادت هو جاتی هے'
وہ اپنے هی خیال میں اپنے کو اُونچا سمجھتا رهتا هے .
گھمنڈ بدقسمتی کی پونجی هے'
گھمنڈ بدذاتی کی جڑ هے .
جب تو یہ سب جانتا هے تو گھمنڈ کیوں کرتا هے ؟
اگر کرتا هے تو برا کرتا هے—برا کرتا هے .

ودیا کی بڑائی میں

آدمی ودیا سے هی کمال کو پہونچ سکتا هے'
مان' بڑائی' رتبے اور مال اسباب سے نہیں .
ودیا سیکھنے میں اپنے کو اس طرح گھلا دینا چاهئے جس طرح موم‌بتی اپنے کو جل جل‌کر گھلا دیتی هے .
کیونکہ بنا ودیا کے آدمی ایشور کو نہیں پہچان سکتا .
بدھیمان آدمی کو چاهئے کہ ودیا کی تلاش کرے .
ودیا کا بازار همیشہ گرم رهتا هے'
جس کسی کو ایشور نے سوبھاگیہ دیا هے'
وهی ودیا حاصل کرنے میں لگتا هے .
ودیا حاصل کرنا آدمی کا دھرم هے'
ودیا کے لئے ساری زمین کو چھان ڈالنا چاهئے .
جا اور ودیا کے پلے کو مضبوطی کے ساتھ پکڑ'
ودیا هی تجھے سورگ تک پہونچا سکتی هے .
اگر تو عقلمند هے تو سوائے ودیا کے اور کچھ مت سیکھ '
کیونکہ بنا ودیا کے رہ جانا غفلت میں پڑے رهنا هے .
تیرے دین اور دنیا دونوں کے لئے ودیا هی کافی هے'
تیرا سارا کام ودیا هی سے سدھر سکتا هے .

جاهلوں سے بچنے میں

اے دل ! اگر تو عقلمند اور هوشیار هے'
تو جاهلوں (اگیانیوں) کی سنگت مت کر .
جاهلوں سے تیر کی طرح بھاگ'
ان کے ساتھ دودھ اور چینی کی طرح ملکر مت رہ .
اجگر سے دوستی کرنا زیادہ اچھا هے'
بجائے اس کے کہ کوئی جاهل تیرا دوست هو !
عقلمند آدمی تیرا جان کا دشمن بھی هو تو اچھا هے'
بجائے اس کے کہ کوئی جاهل تیرا دوست هو .
جاهل کی طرح دنیا میں کوئی ذلیل نہیں هوتا'

जाहिल रहने से ज़्यादा नासमझी का कोई काम नहीं.
जाहिल सिवाय बुराई के और कुछ कर नहीं सकता,
कोई उससे सिवाय बुरी बात के और कुछ नहीं सुन सकता.
जाहिल आख़िर जहन्नुम (नरक) को जाता है,
जाहिल का आख़ीर अच्छा नहीं हो सकता.
जाहिलों का सिर सूली पर रहे यही ठीक है,
जाहिल ज़िल्लत में पड़ा रहे यही ठीक है.
जाहिल से दूर रहना ही अच्छा है,
यह लोक और परलोक दोनों उससे शर्म करते हैं.

इन्साफ़ की तारीफ़ में

जब कि ईश्वर ने यह काम तेरे सुपुर्द किया है,
तो तू इन्साफ़ क्यों नहीं करता.
जबकि इन्साफ़ ही बादशाहों का लिबास है,
तू साफ़ करने के लिये अपने दिल को मज़बूत क्यों नहीं रखता,
तेरी बादशाही देर तक क़ायम रहे,
अगर इन्साफ़ तेरी मदद करे.
नौशेरवां ने इन्साफ़ को अख़्तियार किया,
इसीलिये उसकी नाम-कीर्त्ति अभी तक क़ायम है.
इन्साफ़ से देश को सुख मिलता है.
इन्साफ़ ही से लोगों की मुरादें पूरी होती हैं.
तू इन्साफ़ से दुनिया को आबाद रख,
जो इन्साफ़ चाहने वाले हैं उनके दिलों को ख़ुश रख.
इन्साफ़ से बढ़कर दुनिया को बनाने वाला दूसरा कारीगर नहीं है,
इन्साफ़ से बढ़कर कोई दूसरा काम नहीं है.
इससे ज़्यादा तुझे और क्या चाहिये,
कि लोग तेरा नाम 'इन्साफ़पसन्द बादशाह' रखें.
अगर तू अपनी ख़ुशक़िस्मती चाहता है
तो दुनिया वालों के ऊपर ज़ुल्म का दरवाज़ा बन्द रख.
प्रजा की हिफ़ाज़त में कभी कमी न कर,
जो लोग तेरे पास फ़रियाद लेकर आवें उनके दिल की मुराद हमेशा पूरी कर.

ज़ुल्म की बुराई में

ज़ुल्म करने वाला दुनिया को इस तरह बरबाद करता है,
जिस तरह पतझड़ की हवा हरे भरे बाग़ को उजाड़ देती है.
किसी हालत में भी ज़ुल्म की इजाज़त मत दे,
ताकि तेरी बादशाहत का सूरज डूबने न लगे.
जिस किसी ने दुनिया में ज़ुल्म की आग लगाई,
लोगों के दिलों से उसके लिये आहें निकलीं.

جاهل رهنے سے زیادہ ناسمجھی کا کوئی کام نہیں ۔
جاهل سوائے برائی کے اور کچھ کر نہیں سکتا'
کوئی اس سے سوائے بری بات کے اور کچھ نہیں سن سکتا ۔
جاهل آخر جہنم (نرک) کو جاتا هے'
جاهل کا آخیر اچھا نہیں هوسکتا ۔
جاهلوں کا سر سولی پر رهے یہی ٹھیک هے'
جاهل ذلت میں پڑا رهے یہی ٹھیک هے ۔
جاهل سے دور رهنا هی اچھا هے'
یہ لوک اور پرلوک دونوں اُس سے شرم کرتے هیں ۔

ـــ کی تعریف میں

جب کہ ایشور نے یہ کام تیرے سپرد کیا هے'
تو تو انصاف کیوں نہیں کرتا ۔
جب کہ انصاف هی بادشاهوں کا لباس هے'
تو انصاف کرنے کے لئے اپنے دل کو مضبوط کیوں نہیں رکھتا'
تیری بادشاهی دیر تک قائم رهے ۔
اگر انصاف تیری مدد کرے ۔
نوشیرواں نے انصاف کو اختیار کیا'
اسی لئے اس کا نام - کیرتی ابھی تک قائم هے ۔
انصاف سے دیش کو سکھ ملتا هے ۔
انصاف هی سے لوگوں کی مرادیں پوری هوتی هیں ۔
تو انصاف سے دنیا کو آباد رکھ'
جو انصاف چاهنے والے هیں ان کے دلوں کو خوش رکھ ۔
انصاف سے بڑھکر دنیا کو بنانے والا دوسرا کاریگر نہیں هے'
انصاف سے بڑھکر دوسرا کام نہیں هے ۔
اس سے زیادہ تجھے اور کیا چاهئے'
کہ لوگ تیرا نام 'انصاف پسند بادشاہ' رکھیں ۔
اگر تو اپنی خوش قسمتی چاهتا هے'
تو دنیا والوں کے اوپر ظلم کا دروازہ بند رکھ ۔
پرجا کی حفاظت میں کبھی کمی نہ کر'
جو لوگ تیرے پاس فریاد لیکر آویں ان کی دل کی مراد نہ پوری کر ۔

کی برائی میں

ظلم کرنے والا دنیا کو اس طرح برباد کرتا هے'
جس طرح پتجھڑ کی هوا هرے بھرے باغ کو اُجاڑ هے ۔
کسی حالت میں بھی ظلم کی اجازت مت دے'
تاکہ تیری بادشاهت کا سورج ڈوبنے نہ لگے ۔
جس کسی نے دنیا میں ظلم کی آگ لگائی'
لوگوں کے دلوں سے اس کے لئے آهیں نکلیں ۔

जिस पर ज़ुल्म हुआ है उसके दिल से अगर आह निकले,
तो उसकी लपट से मिट्टी और पानी में भी आग लग जाए.
कमजोरों और लाचारों के साथ ज़बरदस्ती न कर,
आख़ीर में क़ब्र की तंगी से डर.
किसी सताए हुए को दुःख मत दे,
जनता के दिल के धुएँ से बेख़बर मत हो.
ऐ नासमझ ! लोगों को मत सता,
ऐसा न हो कि ईश्वर का कोप तेरे ऊपर उतरे.
कमजोरों और ग़रीबों पर सितम मत कर,
जो ज़ुल्म करता है उसके नरक में पड़ने में कोई संदेह नहीं.

सन्तोष की तारीफ़ में

ऐ दिल ! अगर तू सन्तोष करे,
तो सुख के संसार में सरदारी करे.
अगर तू ग़रीब है तो अपनी ग़रीबी की शिकायत मत कर,
समझदार आदमी के सामने धन दौलत छोटी चीज़ें हैं.
अक़्लमन्द आदमी फ़क़ीरों से शर्म नहीं करता,
क्योंकि नबी (मोहम्मद साहब) को भी फ़क़ीरी का फ़ख़्र (गर्व) हासिल था.
मालदार आदमी के लिये सोना चांदी ऊपरी सजावट की चीज़ें हैं,
फ़क़ीर को अपनी ग़रीबी से अन्दर का आराम मिलता है.
अगर तू मालदार नहीं है तो बेचैन मत हो,
क्योंकि कोई बादशाह वीरान जगह से टैक्स नहीं लेता.
हर हाल में सन्तोष करना अच्छा है.
जो ख़ुशक़िस्मत है वह संतोष करते हैं.
अगर तू ख़ुशक़िस्मती चाहता है,
तो सन्तोष के प्रकाश (नूर) से अपनी जान को रोशन कर.

लोभ की बुराई में

जो आदमी लोभ के जाल में फंस जाता है,
वह लोभ का प्याला पीकर मस्त और बेअक़्ल हो जाता है.
धन जमा करने में अपनी उम्र को मत खो,
धन ठीकरी है और उम्र मोती.
जो आदमी लोभ के जाल में पड़ गया,
उसने अपनी ज़िन्दगी के खलियान को हवा में उड़ा दिया.
मान लो कि क़ारून का ख़ज़ाना तुझे मिल जावे,

جس پر ظلم ہوا ہے اس کے دل سے اگر آہ نکلے،
تو اس کی لپٹ سے مٹی اور پانی میں بھی آگ لگ جائے ۔
کمزوروں اور لاچاروں کے ساتھ زبردستی نہ کر،
آخیر میں قبر کی تنگی سے ڈر ۔
کسی ستائے ہوئے کو دکھ مت دے،
جنتا کے دل کے دھوئیں سے بےخبر مت ہو ۔
اے ناسمجھ ! لوگوں کو مت ستا،
ایسا نہ ہو کہ ایشور کا کوپ تیرے اوپر اترے۔
کمزوروں اور غریبوں پر ستم مت کر،
جو ظلم کرتا ہے اس کے نرک میں پڑنے میں کوئی سندیہ نہیں ۔

سنتوش کی تعریف میں

اے دل ! اگر تو سنتوش کرے،
تو سکھ کے سنسار میں سرداری کرے ۔
اگر تو غریب ہے تو اپنی غریبی کی شکایت مت کر،
سمجھدار آدمی کے سامنے دھن دولت چھوٹی چیزیں ہیں۔
عقلمند آدمی فقیروں سے شرم نہیں کرتا،
کیونکہ نبی (محمد صاحب) کو بھی فقیری کا فخر (گرو) حاصل تھا ۔
مالدار آدمی کے لئے سونا چاندی اوپری سجاوٹ کی چیزیں ہیں،
فقیر کو اپنی غریبی سے اندر کا آرام ملتا ہے ۔
اگر تو مالدار نہیں ہے تو بےچین مت ہو،
کیونکہ کوئی بادشاہ ویران جگہ سے ٹیکس نہیں لیتا۔
ہر حال میں سنتوش کرنا اچھا ہے،
جو خوش‌قسمت ہیں وہ سنتوش کرتے ہیں ۔
اگر تو خوش‌قسمتی چاہتا ہے،
تو سنتوش کے پرکاش (نور) سے اپنی جان کو روشن کر ۔

لوبھ کی برائی میں

جو آدمی لوبھ کے جال میں پھنس جاتا ہے،
وہ لوبھ کا پیالہ پیکر مست اور بےعقل ہوجاتا ہے ۔
دھن جمع کرنے میں اپنی عمر کو مت کھو،
دھن ٹھیکری ہے اور عمر موتی ۔
جو آدمی لوبھ کے جال میں پڑ گیا،
اس نے اپنی زندگی کے کھلیان کو ہوا میں اڑا دیا ۔
مان لو کہ قارون کا خزانہ تجھے مل جاوے،

दुनिया भर की सुख सामग्री तुझे मिल जावे,
आखिर एक दिन तुझे मिट्टी में मिल जाना पड़ेगा,
बेबसों की तरह और दर्दभरे दिल के साथ.
धन के पागलपन में अपने को क्यों गलाता है,
गधे की तरह मेहनत का बोझ क्यों उठाता है.
धन के लिये तू इतना परिश्रम क्यों करता है,
जबकि एक दिन तुझे अचानक चला जाना है.
तूने अपना दिल दिरम (एक सिक्का) के नक़्श को इस तरह दे रखा है,
कि उसकी चाह में तू शरम से भी हाथ धो बैठा है.
धन की सूरत का तू ऐसा आशिक़ हो गया है,
कि घबराया हुआ और परेशान है.
जिसका तू शिकार करना चाहता है उसका तू खुद इस तरह शिकार हो रहा है.
कि तुझे उस दिन की भी याद नहीं आती जिस दिन सब को अपने कर्मों का फल भुगतना पड़ेगा.
उस तुच्छ आदमी का दिल कभी खुश नहीं रह सकता,
जिसने दुनिया (धन) के लिये अपने दीन (धर्म) को बरबाद कर दिया.

ईश्वर की सेवा और भक्ति की तारीफ़ में

सौभाग्य जिस किसी का ग़ुलाम होता है,
उसका दिल सदा ईश्वर की सेवा में लगा रहता है.
ईश्वर की सेवा से दिल को फेरना नहीं चाहिये,
सच्ची दौलत सेवा ही से मिलती है.
सेवा से ख़ुशक़िस्मती प्राप्त होती है,
सेवा के प्रकाश से दिल रोशन हो जाता है.
यदि तू सेवा के लिये कमर कस ले,
तो कभी नष्ट न होने वाली दौलत का दरवाज़ा तेरे लिये खुल जावे.
अक़लमन्द आदमी सेवा से कभी मुँह नहीं मोड़ता,
क्योंकि सेवा से बढ़कर कोई हुनर नहीं है.
भक्ति के पानी से सदा वुज़ू को ताज़ा रख (अपने को पवित्र रख),
ताकि कल तू नरक की आग से बच सके.
सच्चाई के साथ नमाज़ (पूजा) करता रह,
ताकि हमेशा रहने वाली दौलत तुझे मिल सके.
सेवा से भीतर की आत्मा रोशन होती है.
तू अपने पैदा करने वाले की पूजा कर,
उसकी भक्ति के महल में बैठने वाला बन.
अगर तू हक़ (सत्य) या ईश्वर की पूजा करना अख़्तियार कर ले,
तो दौलत की दुनिया का बादशाह हो जावे.
संयम का जामा हमेशा पहिने रह,

دنیا بھر کی سکھ سامگری تجھے مل جاوے'
آخر ایک دن تجھے مٹی میں مل جانا پڑیگا'
بے بسوں کی طرح اور درد بھرے دل کے ساتھ .
دھن کے پاگل پن میں اپنے کو کیوں گلاتا ھے .
گدھے کی طرح محنت کا بوجھ کیوں اٹھاتا ھے .
دھن کے لئے تو اتنا پریشرم کیوں کرتا ھے'
جب کہ ایک دن تجھے اچانک چلا جانا ھے .
تونے اپنا دل درم (ایک سکہ) کے نقش کو اس طرح دے رکھا ھے'
کہ اس کی چاہ میں تو شرم سے بھی ھاتھ دھو بیٹھا ھے .
دھن کی صورت کا تو ایسا عاشق ھوگیا ھے'
کہ گھبرایا ھوا اور پریشان ھے .
جس کا تو شکار کرنا چاھتا ھے اس کا تو خود اس طرح شکار ہو رہا ھے'
کہ تجھے اس دن کی بھی یاد نہیں آتی جس دن سب کو اپنے کرموں کا پھل بھگتنا پڑےگا .
اس تچھ آدمی کا دل کبھی خوش نہیں رہ سکتا'
جس نے دنیا (دھن) کے لئے اپنے دین (دھرم) کو برباد کردیا .

ایشور کی سیوا اور بھکتی کی تعریف میں

سوبھاگیہ جس کسی کا غلام ھوتا ھے'
اس کا دل سدا ایشور کی سیوا میں لگا رھتا ھے'
ایشور کی سیوا سے دل کو پھیرنا نہیں چاھئے'
سچی دولت سیوا ھی سے ملتی ھے .
سیوا سے خوش قسمتی پراپت ھوتی ھے'
سیوا کے پرکاش سے دل روشن ھوجاتا ھے .
یدی تو سیوا کے لئے کمر کس لے'
تو کبھی نشٹ نہ ھونے والی دولت کا دروازہ تیرے لئے کھل جاوے .
عقلمند آدمی سیوا سے کبھی منہ نہیں موڑتا'
کیونکہ سیوا سے بڑھکر کوئی ھنر نہیں ھے .
بھکتی کے پانی سے سدا وضو کو تازہ رکھ (اپنے کو پوتر رکھ)'
تاکہ کل تو نرک کی آگ سے بچ سکے .
سچائی کے ساتھ نماز (پوجا) کرتا رہ'
تاکہ ھمیشہ رھنے والی دولت تجھے مل سکے .
سیوا سے بھیتر کی آتما روشن ھوتی ھے .
تو اپنے پیدا کرنے والے کی پوجا کر'
اس کی بھکتی کے محل میں بیٹھنے والا بن .
اگر تو حق (ستیہ) یا ایشور کی پوجا کرنا اختیار کرلے'
تو دولت کی دنیا کا بادشاہ ھو جاوے .
سنیم کا جامہ ھمیشہ پہنے رہ'

क्योंकि स्वर्ग संयमी लोगों ही के रहने की जगह है.
अपनी जान के चिराग़ को तू तपस्या से रोशन कर,
ताकि ख़ुशक़िस्मत आदमियों की तरह तू भी ख़ुशक़िस्मत हो.
जो धार्मिक जीवन बिताता है,
वह कर्मों के फल से नहीं डरता.

शैतान (विषय-वासना) की बुराई में

ऐ दिल ! जिस किसी ने शैतान (विषय-वासना) का कहना माना,
वह रात दिन गुनाह के जाल में फंसा रहा.
जिस किसी ने शैतान को अपना अगुवा बनाया,
लौटकर वह ईश्वर के रास्ते पर कैसे आ सकता है.
ऐ दिल ! तू गुनाह का इरादा कभी न कर,
ताकि सबका पालने वाला ईश्वर तुझ पर रहम करे.
समझदार आदमी गुनाह से बचता है,
जैसे शकर पानी से, क्योंकि पानी से शकर के घुल जाने का डर रहता है.
ख़ुशक़िस्मत आदमी गुनाह से बचता है.
क्योंकि सूरज की रोशनी भी बादल से छिप जाती है.
तू अपनी विषय-वासना के पीछे मत चल,
ऐसा न हो कि अचानक नरक में जा पड़े.
अगर तेरा दिल पाप से नहीं फिरता,
तो फिर नरक ही में तेरा ठिकाना होगा.
अपने जीवन के घर को,
बदकारियों और पापों की बाढ़ से बरबाद मत कर.
अगर तू पाप और बुराइयों से दूर रहेगा,
तो स्वर्ग के बाग़ से नज़दीक रहेगा.

प्रेम की मदिरा के बयान में

ऐ साक़ी (गुरू) ! मुझे आग की सूरत वाली शराब दे,
जिसमें वह मस्ती हो जिसकी दिल वाले आदमी चाह रखते हैं.
लाल शराब सोने के प्याले में,
जो प्रीतम के होठों की तरह मेरी आत्मा को बल दे.
जो लोग प्रेम के मतवाले हैं उनकी चाह की आग कैसी प्यारी है,
जो लोग प्रेमी हैं उनके दर्द की लज्ज़त कितनी अच्छी है.
वह शराब ला जो अमृत की तरह अमर बना देने वाली है,
जिसकी ख़ुशबू ही से दिल ग़म से छूट जाता है.
मुबारिक वह दिल है जिसमें प्रीतम (ईश्वर) को पाने की लालसा हो,

کیونکہ سورگ سنیمی لوگوں ھی کے رھنے کی جگہ ھے ۔
اپنی جان کے چراغ کو تو تپسیا سے روشن کر،
تاکہ خوش‌قسمت آدمیوں کی طرح تو بھی خوش‌قسمت ھو ۔
جو دھارمک جیون بتاتا ھے،
وہ کرموں کے پھل سے نہیں ڈرتا ۔

شیطان (وشئے واسنا) کی برائی میں

اے دل ! جس کسی نے شیطان (وشئے واسنا) کا کہنا مانا،
وہ رات دن گناہ کے جال میں پھنسا رہا ۔
جس کسی نے شیطان کو اپنا اگوا بنایا،
لوٹ کر وہ ایشور کے راستے پر کیسے آسکتا ھے۔
اے دل ! تو گناہ کا اِرادہ کبھی نہ کر،
تاکہ سب کا پالنے والا ایشور تجھ پر رحم کرے ۔
سمجھدار آدمی گناہ سے بچتا ھے،
جیسے شکر پانی سے، کیونکہ پانی سے شکر کے گھل جانے کا ڈر رھتا ھے ۔
خوش‌قسمت آدمی گناہ سے بچتا ھے،
کیونکہ سورج کی روشنی بھی بادل سے چھپ جاتی ھے ۔
تو اپنی وشئے واسنا کے پیچھے مت چل،
ایسا نہ ھو کہ اچانک نرک میں جا پڑے ۔
اگر تیرا دل پاپ سے نہیں پھرتا،
تو پھر نرک ھی میں تیرا ٹھکانا ھوگا ۔
اپنے جیون کے گھر کو،
بدکاریوں اور پاپوں کی باڑھ سے برباد مت کر،
اگر تو پاپ اور برائیوں سے دور رھیگا،
تو سورگ کے باغ سے نزدیک رھیگا ۔

پریم کی مدرا کے بیان میں

اے ساقی ! (گرو) ! مجھے آگ کی صورت والی شراب دے،
جس میں وہ مستی ھو جس کی دل والے آدمی چاہ رکھتے ھیں ۔
لال شراب سونے کے پیالے میں،
جو پریتم کے ھونٹھوں کی طرح میری آتما کو بل دے ۔
جو لوگ پریم کے متوالے ھیں اُن کی چاہ کی آگ کیسی پیاری ھے،
جو لوگ پریمی ھیں اُن کے درد کی لذت کتنی اچھی ھے۔
وہ شراب لا جو امرت کی طرح امر بنا دینے والی ھے،
جس کی خوشبو ھی سے دل غم سے چھوٹ جاتا ھے ۔
مبارک وہ دل ھے جس میں پریتم (ایشور) کو پانے کی لالسا ھو،

मुबारिक है वह आदमी जो उसके प्रेम में पागल है.
मुबारिक है वह दिल जिसमें प्रीतम के दर्शन की चाह है,
मुबारिक है वह दिल जिसकी मंज़िल प्रीतम की गली है.
वह शराब जो प्रीतम के जीवन देने वाले होठों की तरह है,
वह पाक शराब जो प्रीतम के साफ़ साफ़ मुखड़े की तरह है.
जो लोग दिल वाले हैं उनका यह प्रेम की शराब पीना कैसा अच्छा है,
जो लोग दिल दे चुके हैं (यानी प्रीतम में लीन हो चुके हैं) उनकी यह मस्ती कैसी अच्छी है.

वफ़ा (वचन निबाहना) की तारीफ़ में

ऐ दिल ! तू वफ़ा में हमेशा पक्का रह,
बिना वफ़ा के जीवन ऐसा ही निकम्मा है जैसा बिना मुहर का सिक्का.
अगर तू वफ़ा की राह से अपनी बाग न फेरेगा,
तो दुशमनों के दिल में भी दोस्त बन जायगा.
अपने दिल को वफ़ा की गली से मत मोड़,
नहीं तो तुझे प्रीतम (ईश्वर) के सामने शर्माना पड़ेगा !
वफ़ा की गली से पाँव बाहर मत रख,
क्योंकि दोस्तों को जफ़ा (वफ़ा का उलटा) शोभा नहीं देती.
दोस्तों से जुदाई करना बुरा है,
मित्रों से नाता तोड़ना वफ़ा के ख़िलाफ़ है.
बेवफ़ाई औरतों की आदत है,
तू औरतों की यह बुरी आदत मत सीख.

ईश्वर को धन्यवाद देने (शुक्र) की बड़ाई में

जिस किसी का दिल सत्य को पहचानता है,
उसे चाहिये कि ईश्वर को धन्यवाद देने से कभी अपनी ज़बान को बन्द न करे.
हर दम ईश्वर को धन्यवाद देता रह,
जो दुनिया को पालता है उसको धन्यवाद देना तेरा फ़र्ज़ है.
धन्यवाद देने (शुक्र करने) से तेरी सुख सम्पत्ति बढ़ेगी,
धन्यवाद के रास्ते से तेरी विजय होगी.
अगर तू क़यामत के दिन तक भी ईश्वर का धन्यवाद करता रहे तो भी तेरे फ़र्ज़ का हज़ारवां हिस्सा भी पूरा नहीं होता.
फिर भी शुक्र करना बड़ी अच्छी बात है,
ईश्वर का शुक्र करना इसलाम (धर्म) का जेवर है.
अगर तू ईश्वर के शुक्र से अपनी ज़बान बन्द न करे,
तो तू वह दौलत पावे जो हमेशा रहने वाली है.

مبارک ھے وہ آدمی جو اُس کے پریم میں پاگل ھو .
مبارک ھے وہ دل جس میں پریتم کے درشن کی چاہ ھے'
مبارک ھے وہ دل جس کی منزل پریتم کی گلی ھے .
وہ شراب جو پریتم کے جیون دینے والے ھونٹھوں کی طرح ھے'
وہ پاک شراب جو پریتم کے صاف صاف مکھڑے کی طرح ھے .
جو لوگ دل والے ھیں اُن کا یہ شراب پینا کیسا اچھا ھے'
جو لوگ دل دے چکے ھیں (یعنی پریتم میں لین ھو چکے ھیں) اُن کی یہ مستی کیسی اچھی ھے .

وفا (وچن نباھنا) کی تعریف میں

اے دل ! تو وفا میں ھمیشہ پکا رہ'
بنا وفا کے جیون ایسا ھی نکما ھے جیسا بنا مہر کا سکہ .
اگر تو وفا کی راہ سے اپنی باگ نہ پھیریگا'
تو دشمنوں کے دل میں بھی دوست بن جائیگا .
اپنے دل کو وفا کی گلی سے مت موڑ'
نہیں تو تجھے پریتم (ایشور) کے سامنے شرمانا پڑیگا !
وفا کی گلی سے پاؤں باھر مت رکھ'
کیونکہ دوستوں کو جفا (وفا کا اُلٹا) شوبھا نہیں دیتی .
دوستوں سے جدائی کرنا برا ھے'
متروں سے ناتا توڑنا وفا کے خلاف ھے .
بیوفائی عورتوں کی عادت ھے'
تو عورتوں کی یہ بری عادت مت سیکھ .

ایشور کو دھنیہ‌واد دینے (شکر) کی بڑائی میں

جس کسی کا دل ستیہ کو پہچانتا ھے'
اُسے چاھئے کہ ایشور کو دھنیہ‌واد دینے سے کبھی اپنی زبان کو بند نہ کرے .
ھر دم ایشور کو دھنیہ‌واد دیتا رہ'
جو دنیا کو پالتا ھے اُس کو دھنیہ‌واد دینا تیرا فرض ھے .
دھنیہ‌واد دینے (شکر کرنے) سے تیری سکھ سمپتی بڑھیگی'
دھنیہ‌واد کے راستے سے تیری وجئے ھوگی .
اگر تو قیامت کے دن تک بھی ایشور کا دھنیہ‌واد کرتا رھے تو بھی تیرے فرض کا ھزارواں حصہ بھی پورا نہیں ھوتا .
پھر بھی شکر کرنا بڑی اچھی بات ھے'
ایشور کا شکر کرنا اِسلام (دھرم) کا زیور ھے .
اگر تو ایشور کے شکر سے اپنی زبان بند نہ کرے'
تو تو وہ دولت پاوے جو ھمیشہ رھنے والی ھے .

सब्र (धीरज) के बयान में

अगर धीरज तेरे हर वक्त साथ रहे,
तो तू हमेशा ठहरने वाली दौलत हासिल करे.
सब्र करना पैग़म्बरों का काम है,
जो दीनदार (धर्मात्मा) हैं वह सब्र से मुँह नहीं मोड़ते.
सब्र जिन्दगी के मक़सद का दरवाजा खोलता है,
क्योंकि सिवाय सब्र के उस दरवाजे की कोई और कुंजी नहीं है.
सब्र करना तेरे दिल की मुराद को पूरा करेगा,
इसी से जो जानने वाले हैं वह तेरी मुशकिल को हल करेंगे.
सब्र करना हमारी कामनाओं के दरवाजे की कुंजी है,
यह कुंजी कामना (आरज़ू) की सल्तनत को खोलने वाली है.
सब्र करना हर हाल में अच्छा है,
इसमें बहुत सी भलाइयाँ छिपी हैं.
सब्र से ही तेरा मक़सद पूरा होगा,
रंज और बला से तुझे छुटकारा मिलेगा.
अगर तुझमें दीन (धर्म) का ख़याल है तो सब्र कर,
जल्दी करना शैतानों का काम है.

सच बोलने की तारीफ़ में

ऐ दिल ! अगर तू सच्चाई को अख़्तियार कर ले,
तो दौलत तेरी दोस्त और भाग्य तेरा मददगार हो जावे.
बुद्धिमान को चाहिये कि सच्चाई से कभी मुँह न मोड़े,
क्योंकि सच्चाई ही से नाम ऊँचा होता है
सुबह की तरह अगर तू सच्चाई के साँस लेने लगे,
तो अपने अन्दर के अज्ञान के अंधियारे से निकलकर ज्ञान के उजियाले में आ जावे.
तू बिना सच्चाई के कभी दम मत मार,
इज्जत दौलत से बढ़कर है.
इस दुनिया में सच बोलने से बढ़कर कोई काम नहीं,
सच्चाई वह गुलजार है जिसमें कोई कांटा नहीं.

झूठ की बुराई में

जिस किसी ने झूठ को अख़्तियार किया,
वह क़यामत के दिन किसी तरह नहीं छूट सकता.
जिस किसी की ज़बान को झूठ की आदत हो गई,
उसके दिल का चिराग़ कभी रोशन नहीं हो सकता.
झूठ बोलना आदमी को शरमिन्दा करता है,
झूठ बोलने से आदमी का मान जाता रहता है.
अक़लमन्द आदमी झूठ बोलने वाले से दूर रहता है,
कोई आदमी झूठ बोलने वाले को गिनती में नहीं लाता.
ऐ भाई ! तू कभी किसी हालत में झूठ न बोल,
क्योंकि झूठ बोलने वाला बेइज्जत होता है और कोई उसका एतबार नहीं करता,

صبر (دھیرج) کے بیان میں

اگر دھیرج تیرے ہر وقت ساتھ رہے'
تو تو ہمیشہ ٹھہرنے والی دولت حاصل کرے .
صبر کرنا پیغمبروں کا کام ہے'
جو دیندار (دھرماتما) ہیں وہ صبر سے منہ نہیں موڑتے .
صبر زندگی کے مقصد کا دروازہ کھولتا ہے'
کیونکہ سوائے صبر کے اُس دروازے کی کوئی اور کنجی نہیں ہے .
صبر کرنا تیرے دل کی مراد کو پورا کریگا'
اِسی سے جو جاننے والے ہیں وہ تیری مشکل کو حل کرینگے .
صبر کرنا ہماری کامناؤں کے دروازے کی کنجی ہے'
یہ کنجی کامنا (آرزو) کی سلطنت کو کھولنے والی ہے .
صبر کرنا ہر حال میں اچھا ہے'
اِس میں بہت سی بھلائیاں چھپی ہیں .
صبر سے ہی تیرا مقصد پورا ہوگا'
رنج اور بلا سے تجھے چھٹکارا ملیگا .
اگر تجھ میں دین (دھرم) کا خیال ہے تو صبر کر'
جلدی کرنا شیطانوں کا کام ہے .

سچ بولنے کی تعریف میں

اے دل ! اگر تو سچائی کو اختیار کر لے'
تو دولت تیری دوست اور بھاگیہ تیرا مددگار ہو جاوے .
بدھیمان کو چاہئے کی سچائی سے کبھی منھ نہ موڑے'
کیونکہ سچائی ہی سے نام اونچا ہوتا ہے .
صبح کی طرح اگر تو سچائی کے سانس لینے لگے'
تو اپنے اندر کے اگیان کے اندھیارے سے نکل کر گیان کے اُجیالے میں آجاوے .
تو بنا سچائی کے کبھی دم مت مار'
عزت دولت سے بڑھکر ہے .
اِس دنیا میں سچ بولنے سے بڑھکر کوئی کام نہیں'
سچائی وہ گلزار ہے جس میں کوئی کانٹا نہیں .

جھوٹ کی برائی میں

جس کسی نے جھوٹ کو اختیار کیا'
وہ قیامت کے دن کسی طرح نہیں چھوٹ سکتا .
جس کسی کی زبان کو جھوٹ کی عادت ہو گئی'
اُس کے دل کا چراغ کبھی روشن نہیں ہو سکتا .
جھوٹ بولنا آدمی کو شرمندہ کرتا ہے'
جھوٹ بولنے سے آدمی کا مان جاتا رہتا ہے .
عقلمند آدمی جھوٹ بولنے والے سے دور رہتا ہے'
کوئی آدمی جھوٹ بولنے والے کو گنتی میں نہیں لاتا .
اے بھائی ! تو کبھی کسی حالت میں جھوٹ نہ بول'
کیونکہ جھوٹ بولنے والا بے عزت ہوتا ہے اور کوئی اُس کا اعتبار نہیں کرتا .

झूठ बोलने से ज़्यादा बुरा कोई काम नहीं है,
ऐ बेटा ! झूठ बोलने से आदमी का यश मिट्टी में मिल जाता है.

ईश्वर (हक़ताला = परम सत्य) की दुनिया के बारे में

इस सुनहले गुम्बद की तरफ़ निगाह डाल,
जिसकी छत बिना किसी खम्भे के सीधी फैली हुई है.
इस घूमने वाले आसमान के परदे को देखो,
उसके अन्दर मोमबत्तियाँ जलती हुई देखो.
दुनिया में कोई दरबान है और कोई बादशाह,
कोई फ़रियादी है और कोई महसूल लेने वाला.
कोई खुश है और कोई दर्दमन्द,
कोई सफल मनोरथ है और कोई लाचार.
किसी के सिर पर ताज है और कोई दूसरे को टैक्स देता है,
कोई सरदार है और कोई ख़ाकसार.
कोई बोरिये पर बैठा है और कोई तख़्त पर,
कोई टाट पहिने है और कोई रेशमी कपड़े.
कोई मोहताज है और कोई मालदार,
कोई नामुराद है और कोई कामयाब.
कोई धन की खुशी में है कोई ग़रीबी के दुख में,
किसी को ज़िन्दगी हासिल है और किसी को मौत.
कोई तन्दुरुस्त है और कोई कमज़ोर,
कोई बूढ़ा है और कोई जवान.
कोई पुण्य में लगा है और कोई पाप में,
कोई दूसरों को दुआ दे रहा है और कोई दूसरे के साथ दग़ा कर रहा है.
कोई नेक काम करता है और विश्वासी (आस्तिक) है,
और कोई पाप और बदकारियों के दरिया में डूबा हुआ है.
कोई मिलनसार है, और कोई बदमिज़ाज,
कोई सहनशील है और कोई लड़ाका.
कोई आनन्द में है और कोई दुख में,
कोई मेहनत कर रहा है और कोई आराम.
कोई मान बड़ाई की दुनिया में बड़ा है,
कोई मुसीबतों के जाल में क़ैद है.
कोई आनन्द के बाग़ में बैठा है,
कोई ग़म, रंज और मेहनत में पड़ा है.
किसी के पास बेहिसाब धन दौलत है,
किसी को अपने बाल बच्चों के लिये रोटी का ग़म है.
कोई फूल की तरह खुशी से खिल रहा है,
किसी का दिल ग़म से मुरझाया हुआ है.
किसी ने ईश्वर की सेवा में कमर कस रखी है,
किसी ने सारी उमर पाप में ख़त्म कर दी !
कोई रात दिन धर्म ग्रंथ हाथ में लिये हुए है,
कोई शराब ख़ाने के कोने में मस्त सोया हुआ है.

جھوٹ بولنے سے زیادہ برا کوئی کام نہیں ہے'
اے بیٹا ! جھوٹ بولنے سے آدمی کا یش مٹی میں مل جاتا ہے۔

ایشور (حق تعالیٰ = پرم ستیہ) کی دنیا کے بارے میں

اِس سنہلے گمبد کی طرف نگاہ ڈال'
جس کی چھت بنا کسی کھمبے کے سیدھی پھیلی ہوئی ہے .
اِس گھومنے والے آسمان کے پردے کو دیکھو'
اُس کے اندر موم بتیاں جلتی ہوئیں دیکھو .
دنیا میں کوئی دربان ہے اور کوئی بادشاہ'
کوئی فریادی ہے اور کوئی محصول لینے والا .
کوئی خوش ہے اور کوئی دردمند'
کوئی سپھل منورتھ ہے اور کوئی لاچار .
کسی کے سر پر تاج ہے اور کوئی دوسرے کو ٹیکس دیتا ہے'
کوئی سردار ہے اور کوئی خاکسار .
کوئی بوریئے پر بیٹھا اور کوئی تخت پر'
کوئی ٹاٹ پہنے ہے اور کوئی ریشمی کپڑے .
کوئی محتاج ہے اور کوئی مالدار'
کوئی نامراد ہے اور کوئی کامیاب .
کوئی دھن کی خوشی میں ہے اور کوئی غریبی کے دکھ میں'
کسی کو زندگی حاصل ہے اور کسی کو موت .
کوئی تندرست ہے اور کوئی کمزور'
کوئی بوڑھا ہے اور کوئی جوان .
کوئی پنیہ میں لگا ہے اور کوئی پاپ میں'
کوئی دوسروں کو دعا دے رہا ہے اور کوئی دوسرے کے ساتھ دغا کر رہا ہے .
کوئی نیک کام کرتا ہے اور وشواسی (آستک) ہے'
اور کوئی پاپ اور بدکاریوں کے دریا میں ڈوبا ہوا ہے .
کوئی ملنسار ہے اور کوئی بدمزاج'
کوئی سہن شیل ہے اور کوئی لڑاکا .
کوئی آنند میں ہے اور کوئی دکھ میں'
کوئی محنت کر رہا ہے اور کوئی آرام .
کوئی مان بڑائی کی دنیا میں بڑا ہے'
کوئی مصیبتوں کے جال میں قید ہے .
کوئی آنند کے باغ میں بیٹھا ہے'
کوئی غم' رنج اور مصیبت میں پڑا ہے .
کسی کے پاس بےحساب دھن دولت ہے'
کسی کو اپنے بال بچوں کے لئے روٹی کا غم ہے .
کوئی پھول کی طرح خوشی سے کھل رہا ہے'
کسی کا دل غم سے مرجھایا ہوا ہے .
کسی نے ایشور کی سیوا میں کمر کس رکھی ہے'
کسی نے ساری عمر پاپ میں ختم کردی !
کوئی رات دن دھرم گرنتھ ہاتھ میں لئے ہوئے ہے'
کوئی شراب خانے کے کونے میں مست سویا ہوا ہے .

कोई शरअ (ऊपरी रीत रिवाज) के दरवाजे पर कील की तरह गड़ा हुआ है,
कोई खुशक़िस्मत, विद्वान और होशियार है,
कोई बदक़िस्मत, अज्ञानी और शरमिन्दा है.
कोई बहादुर, फ़ुरतीला और पहलवान है,
कोई बुज़दिल, सुस्त और डरपोक है.
कोई मुन्शी, ईमानदार और दिल वाला है,
कोई नाम का मुन्शी और दिल का चोर है.

दुनिया के लोगों से आशा रखने के ख़िलाफ़

इसके बाद तू ज़माने के ऊपर भरोसा मत कर,
कि न जाने कब अचानक मौत आ घेरे.
अपनी बेशुमार फ़ौज के ऊपर भरोसा मत कर,
कि शायद उसकी मदद तेरे किसी काम न आ सके.
मुल्क और रुतबे और लशकर के ऊपर भरोसा मत कर,
क्योंकि तुझसे पहिले तेरी तरह के बहुत से हुए और तेरे बाद भी होंगे.
तू किसी के साथ बुराई न कर नहीं तो तू अपने नेक दोस्त से भी बुराई पावेगा,
बुरे बीज से कभी अच्छा फल पैदा नहीं हो सकता.
बहुत से बादशाह और बड़े बड़े सुलतान,
बहुत से पहलवान मुल्कों के जीतने वाले,
बड़े बड़े बलवान सेनाओं को तहस नहस कर देने वाले,
बहुत से शेर मर्द तलवार के धनी,
बड़े बड़े खूबसूरत लोग शमशाद (एक दरख़्त) के से क़द वाले,
बहुत से नाज़नीन सूरज के से मुखड़े वाले,
बहुत से नौजवान चाँद के से मुंह वाले,
बहुत सी नव-वधू सजी हुई,
बहुत से यशस्वी और बहुत से कामयाब लोग,
बहुत से सर्व (दरख़्त) के से क़द वाले और बहुत फूलों के से गालों वाले,
जब उन्होंने अपनी उम्र के कपड़े को फाड़ा,
और मिट्टी के गिरेबान में अपना मुंह छिपाया,
तो उनकी उम्र का खलियान इस तरह हवा में उड़ा,
कि फिर किसी ने उनका निशान तक न बतलाया.
तू इस मौत के पड़ाव से अपना दिल न लगा,
इस पड़ाव में तुझे एक भी दिल ख़ुश न दिखाई देगा.
इस लुभावनी हवा के महल से तू दिल न लगा,
कि इसके आसमान से बला बरसती है.
ऐ बेटा ! इस दुनिया में कोई चीज़ टिकने वाली नहीं है,
तू इसमें ग़फ़लत के साथ अपनी उम्र को मत गुज़ार.
मुल्क और बादशाहत के ऊपर भरोसा मत कर,
क्योंकि जब भी अचानक हुक्म आ जावेगा तुझे जान देनी होगी.
इस न ठहरने वाली दुनिया के ऊपर दिल मत लगा,
"सादी" की इसी एक बात को याद रख.

کوئی شرع (اُوپری ریت رواج) کے دروازے پر کیل کی طرح گڑا ہوا ہے،
کوئی خوش قسمت، ودوان اور ہوشیار ہے ۔
کوئی بدقسمت، اگیانی اور شرمندہ ہے ۔
کوئی بہادر، پھرتیلا اور پہلوان ہے،
کوئی بزدل، سست اور ڈرپوک ہے ۔
کوئی منشی، ایماندار اور دل والا ہے،
کوئی نام کا منشی اور دل کا چور ہے ۔

دنیا کے لوگوں سے آشا رکھنے کے خلاف

اِس کے بعد تو زمانے کے اُوپر بھروسہ مت کر،
کہ نہ جانے کب اچانک موت آگھیرے ۔
اپنی بے شمار فوج کے اُوپر بھروسہ مت کر،
کہ شاید اِسکی مدد تیرے کسی کام نہ آسکے ۔
ملک اور رتبے اور لشکر کے اُوپر بھروسہ مت کر،
کیونکہ تجھ سے پہلے تیری طرح کے بہت سے ہوئے اور تیرے بعد بھی ہونگے ۔
تو کسی کے ساتھ برائی نہ کر نہیں تو تو اپنے نیک دوست سے بھی برائی پاویگا،
برے بیج سے کبھی اچھا پھل پیدا نہیں ہو سکتا ۔
بہت سے بادشاہ اور بڑے بڑے سلطان،
بہت سے پہلوان ملکوں کو جیتنے والے،
بڑے بڑے بلوان سیناؤں کو تہس نہس کردینے والے،
بہت سے شیر مرد تلوار کے دھنی،
بڑے بڑے خوبصورت لوگ شمشاد (ایک درخت) کے سے قد والے،
بہت سے نازنین سورج کے سے مکھڑے والے،
بہت سے نوجوان چاند کے سے منہ والے،
بہت سی نو بدھو سجی ہوئی،
بہت سے یشسوی اور بہت سے کامیاب لوگ،
بہت سے سرو (درخت) کے سے قد والے اور بہت سے پھولوں کے سے گالوں والے،
جب اُنہوں نے اپنی عمر کے کپڑے کو پھاڑا،
اور مٹی کے گریبان میں اپنا منہ چھپایا،
تو اُن کی عمر کا کھلیان اِس طرح ہوا میں اُڑا،
کہ پھر کسی نے اُن کا نشان تک نہ بتلایا ۔
تو اِس موت کے پڑاؤ سے اپنا دل نہ لگا،
اِس پڑاؤ میں تجھے ایک بھی دل خوش نہ دکھائی دیگا،
اِس لبھاونی ہوا کے محل سے تو دل نہ لگا،
کہ اِس کے آسمان سے بلا برستی ہے ۔
اے بیٹا ! اِس دنیا میں کوئی چیز ٹکنے والی نہیں ہے،
تو اِس میں غفلت کے ساتھ اپنی عمر کو مت گذار ۔
ملک اور بادشاہت کے اُوپر بھروسہ مت کر،
کیونکہ جب بھی اچانک حکم آجاویگا تجھے جان دینی ہوگی ۔
اِس نہ ٹھہرنے والی دنیا کے اُوپر دل مت لگا،
"سعدی" کی اِسی ایک بات کو یاد رکھ ۔

सिख और उनका क़ौमी सङ्गठन

سکھ اور اُن کا قومی سنگٹھن

प्रोफ़ैसर तेजासिंह

एक बार जब योगियों ने गुरु नानक से कुछ चमत्कार करके दिखाने को कहा तो गुरू जी ने जवाब दिया कि मेरा चमत्कार तो ये मेरे उपदेश और यह मेरी सङ्गत है.* जहाँ जहाँ गुरु नानक जाते थे वे अपने पीछे अपने शिष्यों की एक सङ्गत छोड़ आते थे जो गुरुद्वारा बनाकर गुरु के भजन गाया करते थे और नाम का जप किया करते थे. थोड़े ही समय में सारे मुल्क में सिख गुरुद्वारों का एक जाल सा बिछ गया. जूनागढ़ (काठियावाड़), कामरूप (आसाम), सूरत (गुजरात), कटक (उड़ीसा), बेहार, जोहर, नानामठ (कुमायूँ) में गुरु नानक के मिशन के केन्द्र खुल गये. खाटमण्डू, ईरान की खाड़ी, काबुल, जलालाबाद और दूसरी दूर दूर की जगहों में गुरु नानक के उपदेशों का प्रचार करने वाली सङ्गतें क़ायम हो गईं. सूरत में नानक बाड़ा और कुमायूँ में नानक मठ केन्द्र अब तक ज्यों के त्यों क़ायम हैं. हालांकि यह दूसरी बात है कि इन मठों के ज्यादातर लोग सिख ग्रन्थों और सिख विचार धारा से पूरी तरह वाक़िफ़ नहीं हैं. गुरु तेग़ बहादुर या पटना के दीवान मोहनसिंह के स्थापित किये हुये सिख केन्द्रों के अवशेष कोलम्बो, रामेश्वरम्, मद्रास, सतूर, कजलीबन, आदिलाबाद (हैदराबाद, दकन), मिरज़ापुर, चटगाँव धुबरी (आसाम) आदि जगहों में अब भी बाक़ी हैं. गुरु ग्रन्थ साहब की बहुत पुरानी प्रतियां और विविध सङ्गतों के नाम गुरु तेग़बहादुर और गुरु गोविन्दसिंह के दस्तख़ती पत्र अब भी इन केन्द्रों में सुरक्षित हैं. पांचवें सिख गुरु के समय के एक सिख प्रचारक भाई गुरुदास के ग्यारहवें भजन में हमें उन प्रमुख सिखों की सूची मिलती है जो उस समय काबुल, काश्मीर, सरहिन्द, थानेश्वर, दिल्ली, फ़तहपुर सीकरी, आगरा, उज्जैन, बुरहानपुर, गुजरात सुहन्द, लखनऊ, प्रयागराज, जौनपुर, पटना, राजमहल, ढाका आदि जगहों में रहते थे. गु० गोविन्द सिंह की धर्मपत्नी माता साहिब कौर के एक हस्तख़ती पत्र में, जो अब भी बनारस के सिख गुरुद्वारे में सुरक्षित है, बनारस के शहर को 'गुरू का दुर्ग' कहा गया है. सन् 1675 की लिखी हुई ग्रन्थ साहिब की एक हस्तलिखित प्रति में एक सिख की दक्षिण

پروفیسر تیجا سنگھ

ایک بار جب یوگیوں نے گرونانک سے کچھ چمتکار کر کے دکھانے کو کہا تو گرو جی نے جواب دیا کہ میرا چمتکار تو یہ میرے اُپدیش اور یہ میری سنگت ہے .* جہاں جہاں گرونانک جاتے تھے وے اپنے پیچھے اپنے ششیوں کی ایک سنگت چھوڑ آتے تھے جو گرو دوارا بنا کر گرو کے بھجن گایا کرتے تھے اور نام کا جپ کیا کرتے تھے . تھوڑے ھی سمے میں سارے ملک میں سکھ گرودواروں کا ایک جال سا بچھ گیا . جوناگڈھ (کاٹھیاواڑ)' کامروپ (آسام)' صورت (گجرات)' کٹک (اُڑیسہ)' بہار' جوھر' نانک مٹھ (کمایوں) میں گرونانک کے مشن کے کیندر کھل گئے . کھاٹمنڈو' ایران کی کھاڑی' کابل' جلال آباد اور دوسری دور دور کی جگہوں میں گرو نانک کے اُپدیشوں کا پرچار کرنے والی سنگتیں قایم ہو گئیں . صورت میں نانک باڑا اور کمایوں میں نانک مٹھ کیندر اب تک جیوں کے تیوں قایم ھیں . حالانکہ یہ دوسری بات ھے کہ اِن مٹھوں کے زیادہ تر لوگ سکھ گرنتھوں اور سکھ وچار دھارا سے پوری طرح واقف نہیں ھیں . گرو تیغ بہادر پٹنہ کے دیوان موھن سنگھ کے اِستھاپت کیئے ھوئے سکھ کیندروں کے اوشیش کولمبو' رامیشورم' مدراس' ستور' کجلی بن' عادل آباد (حیدرآباد' دکن)' مرزاپور' چٹگاؤں' دھوبری (آسام) آدی جگہوں میں اب بھی باقی ھیں . گرو گرنتھ صاحب کی بہت پرانی پرتیاں اور وودھ سنگتوں کے نام گرو تیغ بہادر اور گرو گووند سنگھ کے دستخطی پتر اب بھی اِن کیندروں میں سورکشت ھیں . پانچویں سکھ گرو کے سمے کے ایک سکھ پرچارک بھائی گروداس کے گیارھویں بھجن میں ھمیں اِن پرمکھ سکھوں کی سوچی ملتی ھے جو اُس سمے کابل' کاشمیر' سرھند' تھانیشور' دلی' فتحپور سیکری' آگرہ' اُوجین' برھانپور' گجرات' سوھند' لکھنؤ' پریاگ راج' جونپور' پٹنہ' راج محل' ڈھاکہ آدمی جگہوں میں رھتے تھے' گرو گووند سنگھ کی دھرم پتنی ماتا صاحب کور کے ایک دستخطی پتر میں' جو اب بھی بنارس کے سکھ گرودوارے میں سورکشت ھے' بنارس کے شہر کو 'گرو کا درگ' کہا گیا ھے . سن 1675 کی لکھی ھوئی گرنتھ صاحب کی ایک ھست لکھت پرتی میں ایک سکھ کی دکشن

---

*—गुरुदास का भजन-संग्रह, 1-42.

گروداس کا 'بھجن سنگرہ' 1-42

यात्रा का वर्णन है, जिसका नाम है 'हक़ीक़त राहे मुक़ाम' उससे दक्षिण भारत और लङ्का में जहाँ वहाँ फैली हुई सिख सङ्गतों का पता चलता है.

हर सङ्गत गुरु के द्वारा मुक़र्रर एक नेता के अधीन होती थी. सन् 1588 में भाई सेवादास द्वारा लिखी हुई गु० नानक की एक जीवनी से पता चलता है कि इन नेताओं को 'मञ्जी' कहा जाता था चूंकि ये लोग मञ्जी (चारपाई) पर बैठकर उपदेश दिया करते थे. भाई लल्लो उत्तर में और शेख़ सज्जाद दक्षिण पश्चिम पंजाब में गुरु के उपदेशों का प्रचार करते थे. अन्य प्रचारकों में गोपालदास बनारस में, झण्डा बाड़ी बुशायर में, बुद्धनशाह कीरतपुर में, माही महीसर में, कलजुग जगन्नाथ पुरी में देवलुत लुशाई (तिब्बत) में, सालिसराय पटना और बिहार में, राजा शिवनाथ सिंहल में और अनेक अनगिनत कार्यकर्ता हिन्दुस्तान में और हिन्दुस्तान के बाहर, जहाँ जहाँ गु० नानक गये थे, प्रचार कार्य में लगे हुये थे, चूँकि सब प्रचारक और इनके द्वारा दीक्षित सिख बराबर गुरु के दर्शनों को आया करते थे इसलिये इन सङ्गतों का सम्बन्ध केन्द्र के साथ बराबर क़ायम रहा.

गु० नानक के बाद प्रचार कार्य को अधिक सङ्गठित रूप देने के लिए 22 'मञ्जी' और 52 'पीरा' मुक़र्रर किये गये. किन्तु पञ्जाब में जो परिस्थिति पैदा हो गई थी उसके कारण गुरु को पञ्जाब ही में रहना पड़ता था. शुरू शुरू में सिखों के सङ्गठन की तरफ़ किसी का ध्यान ही नहीं गया और वह बराबर उन्नति करता रहा, किन्तु गु० अर्जुन के समय वह एक शक्तिशाली सङ्गठन बन गया❀ हर जिला एक 'मसन्द' ‡ के मातहत होता था

یاترا کا ورنن ہے، جس کا نام ہے 'حقیقت راہ مقام' اس سے دکشن بھارت اور لنکا میں جہاں تہاں پھیلی ہوئی سکھ سنگتوں کا پتہ چلتا ہے۔

ہر سنگت گرو کے دوارا مقرر ایک نیتا کے ادھین ہوتی تھی۔ سن 1688 میں بھائی سیوا داس دوارا لکھی ہوئی گرونانک کی ایک جیونی سے پتہ چلتا ہے کہ اِن نیتاؤں کو 'منجی' کہا جاتا تھا چونکہ یہ لوگ منجی (چارپائی) پر بیٹھ کر اُپدیش دیا کرتے تھے۔ بھائی للو اُتر میں اور شیخ سجاد دکشن پشچم پنجاب میں گرو کے اُپدیشوں کا پرچار کرتے تھے۔ انیہ پرچارکوں میں گوپال داس بنارس میں، جھنڈا باڑی بوشائر میں، بودھن شاہ کیرتپور میں، ماہی مہیسر میں، کلجگ جگناتھپوری میں، دیولت لوشائی (تبت) میں، سالس رائے پٹنہ اور بہار میں، راجہ شوناتھ سنگھل میں اور انیک انگنت کاریہ کرتا ہندستان میں اور ہندستان کے باہر، جہاں جہاں گرو نانک گئے تھے، پرچار کاریہ میں لگے ہوئے تھے۔ چونکہ سب پرچارک اور اُن کے دوارا دیکشت سکھ برابر گرو کے درشنوں کو آیا کرتے تھے اِس لئے اِن سنگتوں کا سمبندھ کیندر کے ساتھ برابر قایم رہا۔

گرو نانک کے بعد پرچارکاریہ کو ادھک سنگٹھت روپ دینے کے لئے 22 'منجی' اور 52 'پیرا' مقرر کئے گئے۔ کنتو پنجاب میں جو پرستھتی پیدا ہو گئی تھی اُس کے کارن گرو کو نرنتر پنجاب ہی میں رہنا پڑتا تھا۔ شروع شروع میں سکھوں کے سنگٹھن کی طرف کسی کا دھیان ہی نہیں گیا اور وہ برابر اُنتی کرتا رہا، کنتو گرو ارجن کے سمئے وہ ایک شکتی شالی سنگٹھن بن گیا۔ ❀ ہر ضلع ایک 'مسند' ‡ کے ماتحت ہوتا تھا

❀—उस जमाने में सिख यह प्रार्थना किया करते थे—"हर शहर में सैकड़ों और हजारों सिख हों और हर मुल्क में लाखों सिख हों और दुनिया में गुरु के सिख करोड़ों बल्कि अनगिन हो जायें और हर एक जगह एक सिख गुरुद्वारा सुशोभित हो."—भाई गुरुदास का 'भजन संग्रह" 13-19 और 23-2.

ख़फ़ी खां सिखों के बारे में लिखता है—"उनके गुरु लाहौर के निकट फ़क़ीरों की तरह रहते थे. शुरू से ही सिखों ने सन्तों की देख रेख में हर क़सबे और शहर में अपनी सङ्गतें और गुरुद्वारे बना लिये थे."

—اِس زمانے میں سکھ یہ پرارتھنا کیا کرتے تھے—"ہر شہر میں سیکڑوں اور ہزاروں سکھ ہوں اور ہر ملک میں لاکھوں سکھ ہوں اور دنیا میں گرو کے سکھ کروڑوں بلکہ انگن ہو جائیں اور ہر جگہہ ایک سکھ گرودوارا سوشوبھت ہو۔"—بھائی گرو داس کا 'بھجن سنگرہ' 13-19 اور 23-2۔

خفی خاں سکھوں کے بارے میں لکھتا ہے—"اُن کے گرو لہور کے نکٹ فقیروں کی طرح رہتے تھے۔ شروع سے ہی سکھوں نے سنتوں کی دیکھ ریکھ میں ہر قصبے اور شہر میں اپنی سنگتیں اور گرودوارے بنا لئے تھے۔"

‡—'दबिस्ताने मज़ाहिब' से पता चलता है कि ये 'मसन्द', जैसा कि कहा जाता है टैक्स उगाहनेवाले नहीं थे बल्कि धर्म प्रचारक थे. साल में वह जो भेंट गुरु को लाकर चढ़ाते थे वह सिख चेलों की अपनी मरजी से दी हुई भेंट होती थी, असल में यह ग़लतफ़हमी इसलिये हुई कि 'भेंट' को 'बाज' (टैक्स) समझ लिया गया, हालांकि उपरोक्त पुस्तक के लेखक ने 'भेंट' के लिये 'नज़र' शब्द इस्तेमाल किया है.

'دبستان مذاہب' سے پتہ چلتا ہے کہ یہ 'مسند' جیسا کہ کہا جاتا ہے ٹیکس اُگاہنے والے نہیں تھے بلکہ دھرم پرچارک تھے۔ سال میں وہ جو بھینٹ گرو کو لاکر چڑھاتے تھے وہ سکھ چیلوں کی اپنی مرضی سے دی ہوئی بھینٹ ہوتی تھی۔ اصل میں یہ غلط فہمی اِس لئے ہوئی کہ 'بھینٹ' کو 'باج' (ٹیکس) سمجھ لیا گیا، حالانکہ اُپروکت پستک کے لیکھک نے بھینٹ کے لئے 'نظر' شبد استعمال کیا ہے۔

जिसका काम अपने ज़िले में धर्म प्रचार करना होता था और वह गुरु की ओर से ज़िले के सिख सङ्गठन के लिये ज़िम्मेवार होता था. साल में एक मर्तबा बैसाखी के दिन वह ज़िले के सिखों के साथ गुरु की सेवा मे उपहार लेकर हाज़िर होता था और अपने प्रचार का ब्योरा देता था. अपने स्वर्ण मन्दिर और गुरु ग्रन्थ साहब की प्रतिष्ठा के कारण अमृतसर सिखों का केन्द्र बन गया. गुरु के व्यक्तित्व को केन्द्र बनाकर सारा सङ्गठन खड़ा किया गया. हालांकि एक के बाद एक कई गुरु गद्दी पर बैठे किन्तु वे सब एक ही गु० नानक के अन्तर रूप समझे गये*.

धीरे धीरे गुरू के चारों तरफ़ इकट्ठा होने वाली मण्डली को पवित्रता की दृष्टि से देखा जाने लगा. फिर धीरे धीरे तमाम अध्यात्मिक अधिकार उन्हें दे दिये गये. यह गु० गोविन्द सिंह के बाद हुआ जब सिखों का पन्थ के रूप में सङ्गठन शुरू हुआ और पन्थ ने गुरु की सभा अपने हाथों में ले ली. वैसे इस का आभास पहले से ही मिलता है. भाई गुरुदास ने एक बार कहा था—"एक शिष्य एक अकेला सिख है, दो सिख पवित्र मण्डली बन जाते हैं, लेकिन जहां पांच सिख होते हैं वहाँ ख़ुद परमेश्वर होता है." गु० रामदास ने अपने बहुत से वचनों में अपने सिखों के लिये बड़ा आदर दिखाया है. उन्होंने ऐलान किया—"जो सिख गुरू के शब्दों पर चलता है वह गुरु के साथ एकाकार हो जाता है."❀ गु० अर्जुन हमेशा संगतों में शामिल होने के अध्यात्मिक फ़ायदे की बात दोहराया करते थे. लोग भी इन सङ्गतों में ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में जाया करते थे. उन में दोनों भावनाएं होती थीं. कुछ तो भक्ति भाव से वहां जाते थे और कुछ अरज़ी दरख़ास्त लेकर. उस ज़माने का यह एक आम रिवाज था कि जो लोग ईश्वरी दया चाहते थे संगत के सामने अपनी मुराद रखते थे और सारी संगत उनकी मुराद के पूरा होने की प्रार्थना करती थी. †

गु० गोविन्दसिंह पन्थ का अधिकार देने से पहले भी सिखों का बड़ा आदर करते थे. वे इन शब्दों में उनका ज़िक्र करते थे—"उन्हीं के द्वारा मुझे अपने अनुभव हुये. उन्हीं की मदद से मैंने दुशमनों को दबाया. उन्हीं की मेहरबानी से मुझे रुतबा मिला वरना मेरी तरह के लाखों आदमी हैं जिन्हें कोई नहीं पूछता." हालांकि गु० गोविन्द सिंह जनता के नेता थे पर वे अपने को जनता का सेवक समझते थे. वे कहते थे—"उनकी सेवा करके मेरे दिल को ख़ुशी होती है. मेरी आत्मा को इससे ज़्यादा कोई सेवा

س کا کام اپنے ضلع میں دھرم پرچار کرنا ہوتا تھا اور وہ گرو کی اُور
، ضلع کے سکھ سنگٹھن کے لئے ذمہ وار ہوتا تھا ۔ سال میں ایک
تبہ ویشاکھی کے دن وہ ضلع کے سکھوں کے ساتھ گرو کی سیوا
ں اُپہار لیکر حاضر ہوتا تھا اور اپنے پرچار کا بیورا دیتا تھا ۔
ے سورن مندر اور گرو گرنتھ صاحب کی پرتشٹھا کے کارن امرتسر
ھوں کا کیندر بن گیا ۔ گرو کے ویکتتو کو کیندر بنا کر سارا
نگٹھن کھڑا کیا گیا ۔ حالانکہ ایک کے بعد ایک کئی گرو گدی
بیٹھے کنتو وے سب ایک ہی گرو نانک کے انتر روپ سمجھے
ے ۔ *

دھیرے دھیرے گرو کے چاروں طرف اِکٹھا ہونے والی
نڈلی کو پوترتا کی درشٹی سے دیکھا جانے لگا ۔ پھر دھیرے
ھیرے تمام ادھیاتمک ادھیکار اُنھیں دے دیئے گئے ۔ یہ گرو
وند سنگھ کے بعد ہوا جب سکھوں کا پنتھ کے روپ میں سنگٹھن
روع ہوا اور پنتھ نے گرو کی سبھا اپنے ہاتھوں میں لے لی ۔
یسے اس کا آبھاس پہلے سے ہی ملتا ہے ۔ بھائی گرو داس نے
یک بار کہا تھا—"ایک ششیہ ایک اکیلا سکھ ہے' دو سکھ پوتر
نڈلی بن جاتے ہیں' لیکن جہاں پانچ سکھ ہوتے ہیں وہاں
ود پرمیشور ہوتا ہے ۔" گرو رام داس نے اپنے بہت سے وچنوں
یں اپنے سکھوں کے لئے بڑا آدر دکھایا ہے ۔ اُنھوں نے اعلان کیا
—"جو سکھ گرو کے شبدوں پر چلتا ہے وہ گرو کے ساتھ ایکاکار
و جاتا ہے ۔' ❀ گرو ارجن ہمیشہ سنگتوں میں شامل ہونے کے
دھیاتمک فائدے کی بات دوہرایا کرتے تھے ۔ لوگ بھی ان
نگتوں میں زیادہ سے زیادہ تعداد میں جایا کرتے تھے ۔ اُن میں
ونوں بھاونائیں ہوتی تھیں ۔ کچھ تو بھکتی بھاؤ سے وہاں جاتے
ے اور کچھ عرضی درخواست لیکر ۔ اُس زمانے کا یہ ایک عام
واج تھا کہ جو لوگ ایشوری دیا چاہتے تھے وے سنگت کے
امنے اپنی مراد رکھتے تھے اور ساری سنگت اُن کی مراد کے
ورا ہونے کی پرارتھنا کرتی تھی ۔ †

گرو گوبند سنگھ پنتھ کا ادھیکار دینے سے پہلے بھی سکھوں کا
ڑا آدر کرتے تھے ۔ وے اِن شبدوں میں اُن کا ذکر کرتے تھے—
"اُنھیں کے دوارا مجھے اپنے انوبھو ہوئے ۔ اُنھیں کی مدد سے
یں نے دشمنوں کو دبایا ۔ اُنھیں کی مہربانی سے مجھے رتبہ
لا ورنہ میری طرح کے لاکھوں آدمی ہیں جنھیں کوئی نہیں
وچھتا ۔" حالانکہ گرو گوبند سنگھ جنتا کے نیتا تھے پر وے اپنے کو
نتا کا سیوک سمجھتے تھے ۔ وے کہتے تھے—"اُن کی سیوا کرکے میرے
ل کو خوشی ہوتی ہے ۔ میری آتما کو اِس سے زیادہ کوئی سیوا

* Supra pp 26-27.
❀ Asa chhaut IV
† Dabistan-i-Madhahib.

नहीं आती. मेरी तमाम दौलत यहाँ तक कि मेरी आत्मा और मेरी देह सब उनकी सेवा के लिये हाज़िर है."

गुरु के तमाम अधिकारों के साथ खालसा सामने आये. गुरु ने सिखों को इजाज़त दी कि वे अपने बीच से साधारण प्रबन्ध के लिये पाँच प्रतिनिधि चुनें. चुनाव के वक़्त उन्होंने ख़ुद मौजूद रहने का वचन दिया. सिखों का यह सारा जमाव 'सरबस खालसा' कहलाता था. इसी के नाम पर प्रार्थनायें की जाती थीं और सार्वजनिक फ़ैसले किये जाते थे. पन्थ के हित के तमाम सवालों पर सालाना जल्सों में 'अकाल तख़्त' में ग़ौर किया जाता था. हर सिख इस जल्से में भाग ले सकता था. मुक़ामी सवाल मुक़ामी जल्सों में, जिन्हें सङ्गत कहा जाता था, हर जगह तय किये जाते थे. लोगों के दुराचरण पर इन्हीं सङ्गतों में विचार किया जाता था. चाहे कोई कितना ही उच्च पद वाला आदमी क्यों न हो उसे इन सङ्गतों की हुकूमत माननी पड़ती थी. एक मरतबा अपने अनुयायियों की परीक्षा लेने के लिये गु० गोविन्द सिंह ने एक सन्त की समाधि के सामने आदर प्रकट करने के लिये अपना तीर झुका दिया. इस पर सङ्गत में गु० गोविन्द सिंह की तलबी हुई और गुरु जी पर 125 रुपया जुर्माना हुआ. यदि कोई सिख कुछ दुराचरण करे तो उससे यह उम्मीद की जाती थी कि वह नज़दीक की किसी सङ्गत में जाकर जूते रखने की जगह खड़ा होकर दोनों हाथ जोड़ कर सङ्गत से अपने अपराध को स्वीकार करे. सङ्गत पाँच चुने हुये आदमियों के सामने उसका मामला रखती थी और पंच लोग आपस में सलाह करके अपना फ़ैसला सङ्गत के सामने रखते थे. सङ्गत 'सत श्री काल' के नारे के साथ पञ्चों के फ़ैसले पर अपनी मोहर लगा देती थी. जो कुछ सज़ा मिलती थी अपराधी उसे ख़ुशी ख़ुशी स्वीकार करता था और अभिमान के साथ उसे 'इनामो इकराम' कहता था. सज़ा से उसके मन में कोई कड़ुआहट न होती थी क्योंकि सज़ा समस्त सङ्गत की दी हुई होती थी जिसमें कोई दुशमन नहीं बल्कि 'पाँच प्यारे' पञ्च होते थे.

सिखों के इस मुकम्मिल सङ्गठन ने ही मुग़ल सल्तनत को उनके ख़िलाफ़ कर दिया और उनके इसी संगठन ने उन्हें सन् 1716 और 1763 ईसवी के बीच, उन पर जो अत्याचार हुये, उनसे उन्हें बचाया. जब उनके सिर पर क़ीमतें रख दी गई थीं और लम्बे केश रखना जुर्म क़रार दिया गया था,* जब शहरों में आना ग़ैर क़ानूनी क़रार दिया गया था और जब उन्हें जत्थे बनाकर उत्तरी पंजाब के जंगलों या राजपूताने के रेगिस्तान में घूमने के लिये मजबूर होना पड़ा था उस समय की सिखों की प्रार्थना थी—

*—A Sketch of the Sikhs by Malcolm.

نہیں جاتی . میری تمام دولت یہاں تک کہ میری آتما اور میری دیہہ سب اُن کی سیوا کے لئے حاضر ھے ."

گرو کے تمام ادھیکاروں کے ساتھ خالصہ سامنے آئے . گرو نے سکھوں کو اجازت دی کہ وے اپنے بیچ سے سادھارن پربندھ کے لئے پانچ پرتیندھی چنیں - چناؤ کے وقت اُنھوں نے خود موجود رہنے کا وچن دیا. سکھوں کا یہ سارا جماؤ 'سربس خالصہ' کہلاتا تھا . اِسی کے نام پر پرارتھنائیں کی جاتی تھیں اور ساروجانک فیصلے کئے جاتے تھے . پنتھ کے ہت کے تمام سوالوں پر سالانہ جلسوں میں 'اکال تخت' میں غور کیا جاتا تھا . ہر سکھ اِس جلسے میں بھاگ لے سکتا تھا . مقامی سوال مقامی جلسوں میں' جنھیں سنگت کہا جاتا تھا' ہر جگہ طے کئے جاتے تھے . لوگوں کے دراچرن پر اُنھیں سنگتوں میں وچار کیا جاتا تھا . چاھے کوئی کتنا ھی اُوچ پد والا آدمی کیوں نہ ھو اُسے اِن سنگتوں کی حکومت ماننی پڑتی تھی. ایک مرتبہ اپنے انویائیوں کی پریکشا لینے کے لئے گرو گووند سنگھ نے ایک سنت کی سمادھی کے سامنے آدر پرکٹ کرنے کے لئے اپنا تیر جھکا دیا . اِس پر سنگت میں گرو گووند سنگھ کی طلبی ہوئی اور گرو جی پر 125 روپیہ جرمانہ ھوا . یدی کوئی سکھ کچھ دراچرن کرے تو اس سے یہ اُمید کی جاتی تھی کہ وہ نزدیک کی کسی سنگت میں جاکر جوتے رکھنے کی جگہ کھڑا ھوکر دونوں ھاتھ جوڑکر سنگت سے اپنے اپرادھ کو سوئیکار کرے . سنگت پانچ چنے ھوئے آدمیوں کے سامنے اُس کا معاملہ رکھتی تھی اور پنچ لوگ آپس میں صلاح کرکے اپنا فیصلہ سنگت کے سامنے رکھتے تھے . سنگت 'ست شری اکال' کے نعرے کے ساتھ پنچوں کے فیصلے پر اپنی مہر لگا دیتی تھی . جو کچھ سزا ملتی تھی اپرادھی اُسے خوشی خوشی سوئیکار کرتا تھا اور ابھیمان کے ساتھ اُسے 'اِنعام و اِکرام' کہتا تھا . سزا سے اُس کے من میں کوئی کڑواھٹ نہ ھوتی تھی کیونکہ سزا سمست سنگت کی دی ھوئی ھوتی . تھی جس میں کوئی دشمن نہیں بلکہ 'پانچ پیارے' پنچ ھوتے تھے .

سکھوں کے اِس مکمل سنگٹھن نے ھی مغل سلطنت کو اُن کے خلاف کردیا اور اُن کے اِسی سنگٹھن نے اُنھیں سن 1716 اور 1763 عیسوی کے بیچ' اُن پر جو اتیاچار ھوئے' اُن سے اُنھیں بچایا . جب اُن کے سر پر قیمتیں رکھدی گئیں تھیں اور لمبے کیش رکھنا جرم قرار دیا گیا تھا.'* جب شہروں میں آنا غیر قانونی قرار دیا گیا تھا اور جب اُنھیں جتھے بناکر اُتری پنجاب کے جنگلوں یا راجپوتانے کے ریگستان میں گھومنے کے لئے مجبور ھونا پڑا تھا اس سمے کی سکھوں کی پرارتھنا تھی—

"खालसा के अनुयायियों की जहाँ भी वे हों, ईश्वर रक्षा करे."

सिक्खों के गणतांत्रिक संगठन 'मिसल' ने उनमें एक संघ शासन का तरीक़ा पैदा कर दिया था. हर सिख स्वतन्त्र था और 'ख़ालसा' का सदस्य था लेकिन उनकी हैसियतें अलग अलग थीं और उनकी क़ाबलीयत में भी फ़र्क़ था. इसलिये यह समझकर कि उनमें से हर एक व्यक्ति नेता नहीं बन सकता उन्होंने ख़ुशी ख़ुशी एक संघ बनाकर और नेताओं को चुनकर उनके नेतृत्व में चलना स्वीकार किया. जिस तरह उनकी तमाम साधारण कार्रवाइयाँ 'गुरुमत' से तै होती थीं उसी तरह उनके राजनैतिक फ़ैसले भी सरदार और मिसल अकाल तख़्त के सामने इकट्ठा होकर किया करते थे.

स्वर्ण मन्दिर के चारों तरफ़ ठहरने की जगहें, जिन्हें 'बंगह' कहा जाता था, बनी हुई थीं. इन्हीं में सरदार और मिसल आकर ठहरते थे. जल्से के वक़्त वे अकाल तख़्त के सामने खुले मैदान में इकट्ठा होते थे. अनुयायी अपने अपने नेताओं के पीछे बैठते थे और नेता ही उनकी ओर से बोलता था. जब भी किसी को कोई नई बात सूझती थी वह अपने सरदार से जाकर कहता था और केवल सरदार ही उनकी तरफ़ से बोलता था. इस तरह से कुल बारह सरदार ही उस सभा में बोलने वाले होते थे.

प्रस्तावों पर न तो व्यक्तिगत मत लिये जाते थे और न वे बहुमत से पास होते थे. वे सब एक राय से पास होते थे. न तो कभी कोई सरदार अड़ंगा लगाकर कार्रवाई रोकता था और न कभी कोई रुकावट ही पैदा होती थी. इसकी वजह यह थी कि फ़ैसले तादाद के मुर्दा बोझ से नहीं किये जाते थे बल्कि माने हुये नेताओं की सम्मिलित राय से किये जाते थे कि जिनके सामने सदा पन्थ के जीवन मरण का प्रश्न रहता था. पंथ का 'गुरुमत' कोई रोज़मर्रा की चीज़ न थी. वह तभी लिया जाता था जब किसी बाहरी हमले का ख़तरा हो या पंथ की धार्मिक पवित्रता किसी भीतरी ताक़त से ख़तरे में हो. ख़ालसा के विधान में एक बात और ऐसी थी कि जिससे कभी ज़िच पैदा न होने पाती थी. कोई प्रस्ताव ख़ालसा की सभा में उस वक़्त तक नहीं लाया जा सकता था जब तक उपस्थित नेता इस बात की प्रतिज्ञा नहीं करते थे कि गुरु की शरण में वे सब एक हैं. यदि उनमें से किसी के पुराने आपसी झगड़े होते थे तो वे अलग हट कर पहले उन झगड़ों को सुलझाते थे और जब वे आकर कहते थे कि अब हमारे कोई आपसी झगड़े नहीं रहे और हमने सुलह कर ली और अब हम सब निष्पक्ष होकर 'गुरुमत' में भाग ले सकते हैं तब अकाल तख़्त का सभापति ऐलान करता था कि गुरु की राह में ख़ालसा फिर से एक हैं और तब उनके सामने 'गुरुमत' रखा जाता था. उसके बाद प्रस्ताव के शब्द पढ़े जाते थे और उस पर बहस होती थी.

"خالصہ کے انویائیوں کی جہاں بھی وہ ہوں، ایشور رکشا کرے."

سکھوں کے گنتانترک سنگٹھن 'مسل' نے اُن میں ایک سنگھ شاسن کا طریقہ پیدا کردیا تھا ۔ ہر سکھ سوتنتر تھا اور 'خالصہ' کا سدسیہ تھا لیکن اُن کی حیثیتیں الگ الگ تھیں اور اُن کی قابلیت میں بھی فرق تھا ۔ اِس لئے یہ سمجھ کر کہ اُن میں سے ہر ایک ویکتی نیتا نہیں بن سکتا اُنہوں نے خوشی خوشی ایک سنگھ بناکر اور نیتاؤں کو چن کر اُن کے نیترتو میں چلنا سوئیکار کیا ۔ جس طرح اُن کی تمام سادھارن کارروائیاں 'گرومت' سے طے ہوتی تھیں اُسی طرح اُن کے راجنیتک فیصلے بھی سردار اور مسل اکال تخت کے سامنے اِکٹھا ہوکر کیا کرتے تھے ۔

سورن مندر کے چاروں طرف ٹھہرنے کی جگہیں' جنہیں 'بنگہ' کہا جاتا تھا' بنی ہوئی تھیں ۔ اُنہیں میں سردار اور مسل آکر ٹھہرتے تھے ۔ جلسے کے وقت وے اکال تخت کے سامنے کھلے میدان میں اِکٹھا ہوتے تھے ۔ انویائی اپنے نیتاؤں کے پیچھے بیٹھتے تھے اور نیتا ہی اُن کی اور سے بولتا تھا ۔ جب بھی کسی کو کوئی نئی بات سوجھتی تھی وہ اپنے سردار سے جاکر کہتا تھا اور کیول سردار ہی اُن کی طرف سے بولتا تھا ۔ اِس طرح سے کل بارہ سردار ہی اُس سبھا میں بولنے والے ہوتے تھے ۔

پرستاؤں پر نہ تو ویکتی گت مت لئے جاتے تھے اور نہ وے بہومت سے پاس ہوتے تھے ۔ وے سب ایک رائے سے پاس ہوتے تھے ۔ نہ تو کبھی کوئی سردار اڑنگا لگاکر کارروائی روکتا تھا اور نہ کبھی کوئی روکاوٹ ہی پیدا ہوتی تھی ۔ اِس کی وجہ یہ تھی کہ فیصلے تعداد کے مردہ بوجھ سے نہیں کئے جاتے تھے بلکہ مانے ہوئے نیتاؤں کی سملت رائے سے کئے جاتے تھے کہ جن کے سامنے سدا پنتھ کے جیون مرن کا پرشن رہتا تھا ۔ پنتھ کا 'گرومت' کوئی روزمرہ کی چیز نہ تھی ۔ وہ تبھی لیا جاتا تھا جب کسی باہری حملے کا خطرہ ہو یا پنتھ کی دھارمک پوترتا کسی بھیتری طاقت سے خطرے میں ہو ۔ خالصہ کے ودھان میں ایک بات اور ایسی تھی کہ جس سے کبھی زچ پیدا نہ ہونے پاتی تھی ۔ کوئی پرستاؤ خالصہ کی سبھا میں اُس وقت تک نہیں لایا جاسکتا تھا جب تک اُپستھت نیتا اِس بات کی پرتگیا نہیں کرتے تھے کہ گرو کی شرن میں وے سب ایک ہیں ۔ یدی اُن میں سے کسی کے پرانے آپسی جھگڑے ہوتے تھے تو وے الگ ہٹ کر پہلے اُن جھگڑوں کو سلجھاتے تھے اور جب وے آکر کہتے تھے کہ اب ہمارے کوئی آپسی جھگڑے نہیں رہے اور ہم نے صلح کرلی اور' اب ہم سب نشپکش ہوکر 'گرومت' میں بھاگ لے سکتے ہیں تب اکال تخت کا سبھاپتی اعلان کرتا تھا کہ گرو کی راہ میں خالصہ پھر سے ایک ہیں اور تب اُن کے سامنے 'گرومت' رکھا جاتا تھا ۔ اُس کے بعد پرستاؤ کے شبد پڑھے جاتے تھے اور اُس پر بحث ہوتی تھی ۔

पन्थ के इस तरह के अधिकार की तीन जगहें हिन्दुस्तान में और थीं. एक आनन्दपुर, केशगढ़ में जहाँ सबसे पहले गु० गोविन्द सिंह ने पूर्वी पंजाब के लिये खालसा को न्यायाधिकार दिये थे. दूसरी पूर्वी भारत के लिये पटने में जो गु० गोविन्द सिंह का जन्म स्थान भी था. तीसरी दक्षिण में नान्देर (हैदराबाद दकन) में जहाँ गु० गोविन्द सिंह की मृत्यु हुई थी. इन तीनों जगहों के तख्त धार्मिक अधिकारों के केन्द्र थे. रूढ़ियों के उचित रूप को निश्चित करने की अपील यहाँ की जा सकती थी. अकाल तख्त को राजनैतिक और धार्मिक दोनों तरह के अधिकार हासिल थे. वह पंथ के नियन्त्रण का सबसे बड़ा केन्द्र था. अकाल तख्त के सामने ही विदेशी शक्तियों से सुलहनामे तय किये जाते थे. यह स्थिति सन् 1809 ईसवी तक रही जब आखरी गुरुमत लिया गया. इसके बाद महाराजा रणजीत सिंह ने राजनैतिक फैसलों के लिये गुरुमत की प्रथा ही उठा दी और सिखों और गैर सिखों दोनों की सलाह से काम करना शुरू किया.

एक पुराने सिख रिवाज को इस तरह खत्म करने केलिये सिख लेखक महाराज को अकसर दोष देते हैं. किन्तु यदि हम ठीक तरह से सिख धर्म के आदर्शों का अध्ययन करें तो हमें पता चलेगा कि राजनैतिक क्षेत्र में इस गुरुमत की प्रथा का अन्त करना सिख आदर्शों के मुताबिक़ ही हुआ. सिखों का लङ्गर सिर्फ सिखों के लिये नहीं होता. वहाँ हर जाति और हर क़ौम के लोग आकर भोजन कर सकते हैं. अमृतसर में गुरु के बाजार में चौथे और पांचवें गुरुओं के समय से हिन्दू, मुसलमान, सिख सब को तिजारत की इजाजत मिल गई थी. गु० हरगोविन्द ने अनेक शहर आबाद किये और अपने खर्च से मन्दिर और मसजिद बनवाईं. महाराज रणजीत सिंह इन्हीं गुरुओं के चरण चिन्हों पर चल रहे थे जब उन्होंने केवल सिख अधिपति की हैसियत से शासन करने के बजाय हिन्दू, मुसलमान और सिख सभी के महाराज की हैसियत से शासन की बागडोर हाथ में ली. एक ज़माना था जब मुसलमान अपने को विदेशी समझते थे. उन दिनों सिखों में ही सच्ची राष्ट्रीय जागृति थी और वे ऐलान करते थे—"राज करेगा खालसा." जब रणजीत सिंह तख्त पर बैठे तो वे चाहते थे कि हिन्दू और मुसलमान अपने को उसी तरह देश भक्त समझें जिस तरह सिख समझते थे और इस दृष्टि से राजकाज में उन्होंने उनकी सलाह उतनी ही ज़रूरी समझी जितनी सिखों की. इसलिये रणजीत सिंह ने, जहां तक राजनैतिक शासन का सम्बन्ध था, अकाल तख्त की हुकूमत उठा दी और अपने मन्त्रियों से, जिनमें सभी सम्प्रदायों के लोग थे राजकाज के बारे में सलाह लेने लगे. इस तरह की शुद्ध दुनियवी योजना में हुकूमत की जगह न थी. यदि सिखों के मक्के से धार्मिक हुक्मनामों के ज़रिये रणजीत सिंह हुकूमत करने की कोशिश

پنتھ کے اِس طرح کے اَدھیکار کی تین جگہیں ہندستان میں اور تھیں ۔ ایک آنندپور، کیشرگڈھ میں جہاں سب سے پہلے گرو گووند سنگھ نے پوروی پنجاب کے لئے خالصہ کو نیایادھیکار دیئے تھے ۔ دوسری پوروی بھارت کے لئے پٹنے میں جو گرو گووند سنگھ کا جنم استھان بھی تھا ۔ تیسری دکشن میں نانديڑ (حیدرآباد دکن) میں جہاں گرو گووند سنگھ کی مرتیو ہوئی تھی ۔ اِن تینوں جگہوں کے تخت دھارمک ادھیکاروں کے کیندر تھے ۔ روڑھیوں کے اُچت روپ کو نشچت کرنے کی اپیل یہاں کی جاسکتی تھی ۔ اکال تخت کو راجنیتک اور دھارمک دونوں طرح کے ادھیکار حاصل تھے ۔ وہ پنتھ کے نیئنترن کا سب سے بڑا کیندر تھا ۔ اکال تخت کے سامنے ہی ودیشی شکتیوں سے صلحنامے طے کئے جاتے تھے ۔ یہ اِستھتی سن 1809 عیسوی تک رہی جب آخری گرومت لیا گیا ۔ اِس کے بعد مہاراجہ رنجیت سنگھ نے راجنیتک فیصلوں کے لئے گرومت کی پرتھا ہی اُٹھا دی اور سکھوں اور غیر سکھوں دونوں کی صلاح سے کام کرنا شروع کیا ۔

ایک پرانے سکھ رواج کو اِس طرح ختم کرنے کے لئے سکھ لیکھک مہاراج کو اکثر دوش دیتے ہیں ۔ کنتو یدی ہم ٹھیک طرح سے سکھ دھرم کے آدرشوں کا ادھین کریں تو ہمیں پتہ چلیگا کہ راجنیتک چھیتر میں اس گرومت کی پرتھا کا انت کرنا سکھ آدرشوں کے مطابق ہی ہوا ۔ سکھوں کا لنگر صرف سکھوں کے لئے نہیں ہوتا ۔ وہاں ہر جاتی اور ہر قوم کے لوگ آکر بھوجن کرسکتے ہیں ۔ امرتسر میں گروؤں کے بازار میں چوتھے اور پانچویں گروؤں کے سمے سے ہندو، مسلمان، سکھ سبکو تجارت کی اِجازت مل گئی تھی ۔ گرو ہر گووند نے انیک شہر آباد کئے اور اپنے خرچ سے مندر اور مسجد بنوائیں ۔ مہاراج رنجیت سنگھ اِنہیں گروؤں کے چرن چنھوں پر چل رہے تھے جب اُنہوں نے کیول سکھ ادھیپتی کی حیثیت سے شاسن کرنے کے بجائے ہندو، مسلمان اور سکھ سبھی کے مہاراج کی حیثیت سے شاسن کی باگ‌ڈور ہاتھ میں لی ۔ ایک زمانہ تھا جب مسلمان اپنے کو ودیشی سمجھتے تھے ۔ اُن دنوں سکھوں میں ہی سچی راشٹریہ جاگرتی تھی اور وے اعلان کرتے تھے—"راج کریگا خالصہ." جب رنجیت سنگھ تخت پر بیٹھے تو وہ چاہتے تھے کہ ہندو اور مسلمان اپنے کو اُسی طرح دیش بھکت سمجھیں جس طرح سکھ سمجھتے تھے اور اِس درشٹی سے راجکاج میں اُنہوں نے اُنکی صلاح اُتنی ہی ضروری سمجھی جتنی سکھوں کی ۔ اِس لئے رنجیت سنگھ نے، جہاں تک راجنیتک شاسن کا سمبندھ تھا، اکال تخت کی حکومت اُٹھا دی اور اپنے منتریوں سے، جن میں سبھی سمپردایوں کے لوگ تھے، راجکاج کے بارے میں صلاح لینے لگے ۔ اِس طرح کی شدھ دنیوی یوجنا میں حکومت کی جگہ نہ تھی ۔ یدی سکھوں کے مکے سے دھارمک حکمناموں کے ذریعہ رنجیت سنگھ حکومت کرنے کی کوشش

करते तो उनके प्रति हिन्दू और मुसलमानों की वफादारी भी शायद उतनी मज़बूत न रह पाती.

रणजीत सिंह ने सिख 'मिसलों' के पदों को भी तोड़ दिया. मिसल सिख शक्ति के बोधक थे. उनके नेता सदा सिख होते थे और उनके फैसले हमेशा गुरुमत से होते थे. यह प्रथा उस वक़्त तक ज़रूरी थी जब तक हिन्दू दबे हुये थे और मुसलमान विदेशी थे. अब जबकि हिन्दू और मुसलमानों को नागरिकता का अधिकार दे दिया गया और वे पंजाब-राष्ट्र के सम्माननीय अंग बन गये तो उनके ऊपर एक साम्प्रदायिक संघ का शासन बेमौजूँ था. उसकी जगह यदि एक ऐसी सरकार का शासन कर दिया गया जो सब की सरकार थी तो उचित ही हुआ. मिसलों के द्वारा सिखों के बेहतरीन गुनों का विकास हुआ और उस ज़माने में सिख संगठन की खूबियाँ उसके ज़रिये रोशनी में आईं, पर रणजीत सिंह के समय उनकी पुरानी खूबियाँ नष्ट हो गई थीं और खुदग़रज़ी और घरेलू झगड़ों ने उनके गणतांत्रिक पहलू को बिलकुल मज़ाक़ बना दिया था.

[2]

सियासी 'गुरुमत' के बन्द कर देने के बाद धर्मिक 'गुरुमत' जारी रहे, लेकिन चूँकि उनके लिये सार्वजनिक जोश रह नहीं गया था इसलिये वे अपढ़ धर्मान्धों या गुरुद्वारों के ग़ैर ज़िम्मेवार महन्तों के हाथों में चले गये कि जिन्होंने उसे बिल्कुल पतित बना दिया.

सिखों का प्रचार कार्य और पन्थ की ताक़त जम्हूरी भावना के नष्ट हो जाने से बिलकु दब गई. सिख धर्म को फ़र्रुख़सियर के राजकाल में चौतरफ़ा अत्याचारों से उतना नुक़सान नहीं पहुँचा जितना गणतंत्र की भावना के नष्ट होने से पहुँचा. सिख धर्म का विकास उस समय सबसे ज़्यादा हुआ जब बराबरी के दरजे के भिन्न भिन्न व्यक्तियों ने एक होकर संगठित रूप से काम किया. वह उद्योग सबके लिये था और सबका था. यहाँ तक कि सिखों की प्रार्थना भी किसी एक व्यक्ति की नहीं बल्कि जमात की प्रार्थना है. अपनी प्रार्थना में सिख ईश्वर के अतिरिक्त दसों गुरुओं का आह्वान करता है और उन सब महान सिखों के कामों को याद करता है जिन्होंने पन्थ के लिये क़ुरबानियाँ कीं. सिखों की प्रार्थना उसके सामने सम्प्रदाय के सम्मिलित जीवन की और हर जगह की फैली हुई उसकी विविध समितियों और उनके सत्संग की जगहों की तसवीर पेश करती हैं और इस तरह वह उन लोगों के संसर्ग में आता है जिन्होंने पन्थ के पुराने और नये इतिहास को बनाया है और बना रहे हैं. कोई दूसरा शब्द ऐसा नहीं है जिसकी आवाज़ पर दूसरे फ़िरक़े पूरी तरह से इकट्ठा हो सकें. कैथालिक ईसाइयों के पास 'चर्च' शब्द है पर वह ऐसा

ے تو اُن کے پرتی ھندو اور مسلمانوں کی وفاداری بھی شاید
ی مضبوط نہ رہ پاتی ۔

رنجیت سنگھ نے سکھ 'مسلوں' کے پدوں کو بھی توڑ دیا ۔
مسل سکھ شکتی کے بودھک تھے ۔ اُن کے نیتا سدا سکھ ہوتے تھے
ر اُن کے فیصلے ہمیشہ گرومت سے ہوتے تھے ۔ یہ پرتھا اُس
قت تک ضروری تھی جب تک ھندو دبے ہوئے تھے اور مسلمان
دیشی تھے۔ اب جبکہ ھندو اور مسلمانوں کو ناگرکتا کا ادھیکار
ے دیا گیا اور وے پنجاب راشٹر کے سمان نیہ انگ بن گئے تو
ن کے اوپر ایک سامپردایک سنگھ کا شاسن بے موزوں تھا ۔ اُس
ی جگہ یدی ایک ایسی سرکار کا شاسن کردیا گیا جو سب
ی سرکار تھی تو اُچت ہی ہوا ۔ مسلوں کے دوارا سکھوں کے
بہترین گنوں کا وکاس ہوا اور اُس زمانے میں سکھ سنگٹھن کی
خوبیاں اُس کے ذریعے روشنی میں آئیں۔ پر رنجیت سنگھ کے سمے
نکی پرانی خوبیاں نشٹ ہوگئی تھیں اور خودغرضی اور
ھریلو جھگڑوں نے اُن کے گنتانترک پہلو کو بالکل مذاق بنا
یا تھا ۔

[2]

سیاسی 'گرومت' کے بند کردینے کے بعد دھارمک 'گرومت'
جاری رہے لیکن چونکہ اُن کے لئے ساروجنک جوش رہ نہیں
گیا تھا اِس لئے وے اَپڑھ دھرماندھوں یا گرودواروں کے غیر ذمہ وار
مہنتوں کے ھاتھوں میں چلے گئے کہ جنھوں نے اُسے بالکل
پتت بنا دیا ۔

سکھوں کا پرچار کاریہ اور پنتھ کی طاقت جمہوری بھاونا
کے نشٹ ہو جانے سے بالکل دب گئی ۔ سکھ دھرم کو فرخ
سیئر کے راجکال میں چوطرفہ اتیاچاروں سے اُتنا نقصان
نہیں پہونچا جتنا گنترنتر کی بھاونا کے نشٹ ہونے سے
پہونچا ۔ سکھ دھرم کا وکاس اُس سمئے سب سے زیادہ ہوا جب
برابری کے درجے کے بھن بھن ویکتیوں نے ایک ہوکر سنگٹھت
روپ سے کام کیا ۔ وہ اُدیوگ سب کے لئے تھا اور سب کا تھا ۔
یہاں تک کہ سکھوں کی پرارتھنا بھی کسی ایک ویکتی کی نہیں
بلکہ جماعت کی پرارتھنا ھے ۔ اپنی پرارتھنا میں سکھ ایشور
کے اتیرکت دسوں گروؤں کا آہوان کرتا ھے اور اُن سب مہان سکھوں
کے کاموں کو یاد کرتا ھے جنھوں نے پنتھ کے لئے قربانیاں کیں ۔
سکھوں کی پرارتھنا اُس کے سامنے سمپردائے کے سملت جیون
کی اور ھر جگہہ کی پھیلی ہوئی اُس کی وودھ سمتیوں اور اُن کے
ستسنگ کی جگہوں کی تصویر پیش کرتی ھیں اور اِس طرح
وہ اُن لوگوں کے سنسرگ میں آتا ھے جنھوں نے پنتھ کے پرانے
اور نئے اِتہاس کو بنایا ھے اور بنا رہے ھیں ۔ کوئی دوسرا شبد
ایسا نہیں ھے جس کی آواز پر دوسرے فرقے پوری طرح سے اِکٹھا
ھو سکیں۔ کیتھالک عیسائیوں کے پاس 'چرچ' شبد ھے پر وہ ایسا

नहीं है कि राष्ट्र के सभी कामों, न केवल उसके इतिहास बल्कि उसके फ़ौजी, दुनियवी और मज़हबी ज़िन्दगी के लिये इस्तेमाल किया जा सके. किन्तु 'ख़ालसा' शब्द के अन्दर सिखों की सभी संस्थायें और उनके सभी काम आ जाते हैं. जब तक सिखों में 'ख़ालसा' की भावना होगी वे बड़े से बड़ा काम कर सकते हैं. महाराज रणजीत सिंह को भी सिखों से कामयाबी के साथ काम लेने के लिये 'ख़ालसा' के सभी अंगों और कर्मकाण्डों को इस्तेमाल करना पड़ा था. रणजीत सिंह की मौत के बाद जब कोई एक व्यक्ति शासन की बागडोर न सम्हाल सका तो चुने हुये प्रतिनिधियों की पंचायतों ने किसी तरह शासन की एक रूपरेखा क़ायम रखी.

हिन्दुस्तान से बाहर मलाया, चीन, या कनाडा में यदि आप सिखों के कामों पर नज़र डालें तो आपको उनकी संगठन प्रियता का सुबूत मिलेगा. वे सामाजिक प्राणी हैं. जब भी दो या तीन सिख इकट्ठा होंगे तो मिल बैठकर भजन गायेंगे. यदि उनकी तादाद काफ़ी हो तो वे फ़ौरन गुरुद्वारा की बुनियाद डाल देंगे और संगत बनाकर इकट्ठा होने लगेंगे. उनकी जो यह संघ-भावना है उसके कारण जब भी वे मिलते हैं तो अपने 'जत्थे' या 'दीवान' (समिति) बनाकर प्रचार कार्य शुरू कर देते हैं.

[3]

यह तरक़्क़ी का ज़माना है. अपने पतन के ज़माने से सिख जो अपने को भूले हैं तो आज तक नहीं जाग पाये. आज तक उन्हें अपने को और नये सिरे से अपनी तमाम संस्थाओं को जगाना है. वैसे पुरानी परम्परा की याद कुछ कुछ बाक़ी है. अमृतसर, आनन्दपुर, पटना और नान्देर के चारों तख़्तों का इतिहास 'राहतनामा' और दूसरी ऐतिहासिक पुस्तकों में दर्ज है, पर जो सामग्री मिलती है वह काफ़ी नहीं और सिखों को पुरानी कल्पना क़ायम करने के लिये अपनी कल्पना से काम लेना पड़ेगा. सिखों में चूँकि शिक्षा की बहुत कमी है इसलिये उनकी कल्पना का भी समुचित उपयोग नहीं किया जा सकता. सिखों की कोई ऐसी केन्द्रीय संस्था भी नहीं है जो उनके धार्मिक फ़ैसलों में एकता और बुद्धिमत्ता पैदा कर सके. नतीजा यह है कि कुछ बेचैन सुधारक ख़ालसा की उदार भावना के बिलकुल विपरीत आश्चर्यजनक रिवाज और अनोखी संस्थायें क़ायम कर रहे हैं. किन्तु समझदार नेता जल्दबाज़ी का क़दम उठाने से अपने को बचा रहे हैं और अपनी सारी शक्ति सिखों में सार्वजनिक रूप से शिक्षा देने और गुरुद्वारों का सुधार करने में लगा रहे हैं और एक ऐसी केन्द्रीय संस्था की बुनियाद डाल रहे हैं जिसके फ़ैसले सबके लिये मान्य होंगे. उन्होंने अधिकांश गुरुद्वारों पर क़ानूनी अधिकार पा लिया है और बाक़ी गुरुद्वारों पर भी अधिकार

نہیں ھے کہ راشٹر کے سبھی کاموں' نہ کیول اُس کے اِتہاس بلکہ اُس کے فوجی' دنیوی اور مذھبی زندگی کے لئے اِستعمال کیا جا سکے . کنتو 'خالصہ' شبد کے اندر سکھوں کی سنستھائیں اور اُن کے سبھی کام آجاتے ھیں. جب تک سکھوں میں 'خالصہ' کی بھاؤنا ھوگی وے بڑے سے بڑا کام کر سکتے ھیں . مہاراج رنجیت سنگھ کو بھی سکھوں سے کامیابی کے ساتھ کام لینے کے لئے 'خالصہ' کے سبھی انگوں اور کرم کانڈوں کو اِستعمال کرنا پڑا تھا . رنجیت سنگھ کی موت کے بعد جب کوئی ایک ویکتی شاسن کی باگ ڈور نہ سنبھال سکا تو چنے ھوئے پرتینِدھیوں کی پنچایتوں نے کسی طرح شاسن کی ایک روپ ریکھا قایم رکھی .

ھندستان سے باھر ملایا' چین' یا کناڈا میں یدی آپ سکھوں کے کاموں پر نظر ڈالیں تو آپ کو اُن کی سنگٹھن پریتا کا ثبوت ملیگا . وے سماجک پرانی ھیں . جب بھی دو یا تین سکھ اِکٹھا ھونگے تو مل بیٹھ کر بھجن گائینگے . یدی اُن کی تعداد کافی ھو تو وے فوراً گرودوارا کی بنیاد ڈال دینگے اور سنگت بنا کر اِکٹھا ھونے لگینگے . اُن کی جو یہ سنگھ بھاؤنا ھے اُس کے کارن جب بھی وے ملتے ھیں تو اپنے 'جتھے' یا 'دیوان' (سمتی) بنا کر پرچار کاریہ شروع کر دیتے ھیں .

[3]

یہ ترقی کا زمانہ ھے . اپنے پتن کے زمانے سے سکھ جو اپنے کو بھولے ھیں تو آج تک نہیں جاگ پائے . آج تک اُنھیں اپنے کو اور نئے سرے سے اپنی تمام سنستھاؤں کو جگانا ھے . ویسے پرانی پرمپرا کی یاد کچھ باقی ھے . امرتسر' آنند پور' پٹنہ اور نانڈیر کے چاروں تختوں کا اِتہاس 'راحت نامہ' اور دوسری ایتہاسک پستکوں میں درج ھے پر جو سامگری ملتی ھے وہ کافی نہیں اور سکھوں کو پرانی کلپنا قایم کرنے کے لئے اپنی کلپنا سے کام لینا پڑیگا . سکھوں میں چونکہ شکشا کی بہت کمی ھے اِس لئے اُن کی کلپنا کا بھی سموچت اُپیوگ نہیں کیا جا سکتا . سکھوں کی کوئی ایسی کیندریہ سنستھا بھی نہیں ھے جو اُن کے دھارمک فیصلوں میں ایکتا اور بدھیمتا پیدا کر سکے . نتیجہ یہ ھے کہ کچھ بے چین سدھارک خالصہ کی اُدار بھاونا کے بالکل وپریت آشچریہ جنک رواج اور انوکھی سنستھائیں قایم کر رھے ھیں . کنتو سمجھدار نیتا جلدبازی کا قدم اُٹھانے سے اپنے کو بچا رھے ھیں اور اپنی ساری شکتی سکھوں میں سارو جنک روپ سے شکشا دینے اور گرودواروں کا سدھار کرنے میں لگا رھے ھیں اور ایک ایسی کیندریہ سنستھا کی بنیاد ڈال رھے ھیں جس کے فیصلے سب کے لئے مانیہ ھونگے . اُنھوں نے ادھیکانش گرودواروں پر قانونی ادھیکار پالیا ھے اور باقی گرودواروں پر بھی ادھیکار

करने की कोशिश कर रहे हैं. इस सब प्रबन्ध के लिये उन्होंने बालिग़ मताधिकार में हर सिख स्त्री पुरुष द्वारा चुनी हुई शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी बना ली है. स्त्रियों को वोट का अधिकार देकर उन्होंने एक क्रान्तिकारी क़दम उठाया है जिससे स्त्रियों को सम्प्रदाय के हर फ़ैसले, मन्दिरों और धार्मिक आचार विचारों तक को तय करने में हिस्सा लेने का अधिकार हासिल हो गया है. किन्तु शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का दायरा अभी छोटा है और वह पन्थ की हर कार्रवाई में नेतृत्व नहीं कर सकती. सिख अभी तक यह फ़ैसला नहीं कर सके कि उन्हें गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अलावा पन्थ के लिये कोई और संस्था बनानी है या नहीं.

पन्थ के लिये इस तरह की संस्था बनाने का सवाल बहुत महत्वपूर्ण है. अन्तिम गुरु गोविन्द सिंह की मौत के समय पन्थ को आध्यात्मिक होमरूल मिल गया था. शुरू शुरू में उन्होंने पंथ के फ़ैसलों के लिये यूनानी तरीक़ा अपनाया था कि जिसके अनुसार हर व्यक्ति को पंथ के फ़ैसलों में हिस्सा लेने का अधिकार था. इस काम के लिये 'अकाल तख़्त' में 'सरबत ख़ालसा' का अधिवेशन साल में या छै महीने में एक बार हुआ करता था. जब सिखों पर अत्याचार होने लगे तो इस तरह के अधिवेशन नामुमकिन हो गये और अकाल तख़्त को ख़ुद ही सारे फ़ैसले करने पड़ते थे. मिसलों के शासन के समय अकाल तख़्त की कार्रवाई भारी भरकम हो गई और सत्ता की ख़्वाहिश ने ख़ुदग़रज़ लोगों के हाथों में ताक़त दे दी. यह कैफ़ियत रणजीत सिंह ने आकर दूर की. रणजीत सिंह की ख़्वाहिश मुग़लों की तरह ही एक सार्वभौम सत्ता स्थापित करने की थी. इसीलिये उन्होंने सब फ़िरक़ों की मिली जुली संस्था की बात सोची. उनके ज़माने में अकाल तख़्त एक बेजान चीज़ बनकर रह गया. रणजीत सिंह के बाद जब अंग्रेज़ी शासन क़ायम हुआ तो सिखों के नेता इतने पज़मुर्दा हो चुके थे कि वे निर्वाचित संस्थाओं की बात भी न सोच सकते थे. जब पश्चिमी सभ्यता का संसर्ग हुआ और पश्चिमी शिक्षा और संस्थाओं से लोगों का परिचय हुआ तो सिखों ने भी 'दीवान' बनाकर शिक्षा, सामाजिक और धार्मिक सुधार का काम अपने हाथों में ले लिया. किन्तु सिखों में घोर अशिक्षा होने के कारण यह प्रगति पूरी तरह सम्भव न हो सकी. पर सन् 1921 से 1926 तक उन पर जो गुरु के बाग़ आदि में भयंकर ज़ुल्म हुये उन्होंने इस तरह उन्हें संगठित कर दिया जैसे वे पहले कभी न थे. गुरुद्वारों के प्रबन्ध के लिये उनकी शिरोमणि प्रबन्धक कमेटी क़ानूनी संस्था बन गई है किन्तु जैसा मैंने ऊपर बताया है कि वह अभी तक ऐसी सर्वाधिकारी संस्था नहीं बन पाई जो सारे पंथ को अधिकार के साथ चलाये.

کرنے کی کوشش کر رہے ھیں ۔ اِس سب پربندھ کے لئے اُنھوں نے بالغ متادھیکار میں ھر سکھ اِستری پرش دوارا چنی ھوئی شرومنی گرودوارا پربندھک کمیٹی بنا لی ھے ۔ اِستریوں کو ووٹ کا ادھیکار دیکر اُنھوں نے ایک کرانتیکاری قدم اُٹھایا ھے جس سے اِستریوں کو سمپردائے کے ھر فیصلے' مندروں اور دھارمک آچار وچاروں تک کو طے کرنے میں حصہ لینے کا ادھیکار حاصل ھو گیا ھے۔ کنتو شرومنی گرودوارا پربندھک کمیٹی کا دایرہ ابھی چھوٹا ھے اور وہ پنتھ کی ھر کارروائی میں نیترتو نہیں کر سکتی ۔ سکھ ابھی تک یہ فیصلہ نہیں کر سکے کہ اُنھیں گرودوارا پربندھک کمیٹی کے علاوہ پنتھ کے لئے کوئی اور سنستھا بنانی ھے یا نہیں ۔

پنتھ کے لئے اِس طرح کی سنستھا بنانے کا سوال بہت مہتوپورن ھے ۔ انتم گرو گووند سنگھ کی موت کے سمے پنتھ کو آدھیاتمک ھوم رول مل گیا تھا ۔ شروع شروع میں اُنھوں نے پنتھ کے فیصلوں کے لئے یونانی طریقہ اپنایا تھا کہ جس کے انوسار ھر ویکتی کو پنتھ کے فیصلوں میں حصہ لینے کا ادھیکار تھا ۔ اِس کام کے لئے 'اکال تخت' میں 'سربت خالصہ' کا ادھیویشن سال میں یا چھ مہینے میں ایکبار ھوا کرتا تھا ۔ جب سکھوں پر اتیاچار ھونے لگے تو اِس طرح کے ادھیویشن ناممکن ھو گئے اور اکال تخت کو خود ھی سارے فیصلے کرنے پڑتے تھے ۔ مسلوں کے شاسن کے سمے اکال تخت کی کارروائی بھاری بھرکم ھوگئی اور سستا کی خواھش نے خودغرض لوگوں کے ھاتھوں میں طاقت دے دی ۔ یہ کیفیت رنجیت سنگھ نے آکر دور کی ۔ رنجیت سنگھ کی خواھش مغلوں کی طرح ھی ایک سارو بھوم ستتا استھاپت کرنے کی تھی ۔ اِس لئے اُنھوں نے سب فرقوں کی ملی جلی سنستھا کی بات سوچی ۔ اُن کے زمانے میں اکال تخت ایک بےجان چیز بن کر رہ گیا ۔ رنجیت سنگھ کے بعد جب انگریزی شاسن قایم ھوا تو سکھوں کے نیتا اِتنے پژمردہ ھو چکے تھے کہ وے نرواچت سنستھاؤں کی بات بھی نہ سوچ سکتے تھے ۔ جب پشچمی سبھیتا کا سنسرگ ھوا اور پشچمی شکشا اور سنستھاؤں سے لوگوں کا پریچے ھوا تو سکھوں نے بھی 'دیوان' بنا کر شکشا' سماجک اور دھارمک سدھار کا کام اپنے ھاتھوں میں لے لیا ۔ کنتو سکھوں میں گھور اشکشا ھونے کے کارن یہ پرگتی پوری طرح سمبھو نہ ھو سکی ۔ پر سن 1921 سے 1926 تک اُن پر جو گرو کے باغ آدی میں بھینکر ظلم ھوئے اُنھوں نے اِس طرح اُنھیں سنگٹھت کر دیا جیسے وے پہلے کبھی نہ تھے ۔ گرودواروں کے پربندھ کے لئے اُن کی شرومنی پربندھک کمیٹی قانونی سنستھا بن گئی ھے کنتو جیسا میں نے اُوپر بتایا ھے کہ وہ ابھی تک ایسی سروادھیکاری سنستھا نہیں بن پائی جو سارے پنتھ کو ادھیکار کے ساتھ چلائے ۔

[4]

क्या सिखों को इस काम के लिये किसी अलग संस्था की ज़रूरत है? इस मक़सद को हासिल करने में कुछ दिक़्क़तें हैं. सब से ख़ास दिक़्क़त यह है कि इसके दायरे में राजनीति को शामिल किया जाय या न किया जाय. इस दिक़्क़त को ठीक-ठीक समझने के लिये हमें सिखों के सियासी सम्बन्ध पर एक नज़र डालनी होगी. गु० गोविन्द सिंह ने शान्ति के समय सिखों पर ज़ोर दिया था कि वे बाबर के राजकुल को उसी तरह सार्वभौम दुनियवी सत्ता स्वीकार कर लें जिस तरह उन्होंने गु० नानक की गद्दी को सार्वभौम धार्मिक सत्ता स्वीकार किया है. किन्तु सिखों के 300 वर्षों की प्रगति के इतिहास को देखने से पता चलता है कि सिखों ने इस सिद्धान्त को कभी स्वीकार नहीं किया. वे या तो शासकों के साथ युद्ध करते रहे या ख़ुद शासन करते रहे. बाद में उन्होंने ब्रिटिश सरकार के मातहत काम करना शुरू किया. किन्तु फिर भी वे कोई अपनी राजनैतिक हैसियत नहीं बना पाये. हाल में इधर पंथ में नवीन जाग्रति हुई है किन्तु उसके साथ ही साथ पुराने संघर्ष भी फिर शुरू हो गये. सिखों को यह सचाई हिम्मत के साथ स्वीकार कर लेनी चाहिये कि यदि उनका संगठन फिर पुरानी परिपाटी पर चला तो वे सरकार के साथ या ग़ैर सिखों के साथ निश्चय ही संघर्ष में आयेंगे. इसलिये क्योंकि हर सिख पहले पंथ की तरफ़ वफ़ादार होगा और दूसरों के सामने सर झुकाने का अर्थ गु० गोविन्द सिंह के झण्डे को नीचा करना होगा! हालांकि यही चीज़ सिखों को शक्ति देती है और उन्हें मुसीबतों का सामना करने के लिये तैयार करती है, लेकिन उनकी यही भावना ग़ैर सिखों से उनका समझौता नहीं होने देती. वे अपना ही बोलबाला चाहते हैं. धार्मिक मामलों में तो यह ठीक है किन्तु राजनीति या दूसरे दुनियवी मामलों में सब के साथ मिलकर काम करना होता है. वहाँ दूसरे सम्प्रदायों का सहयोग ज़रूरी हो जाता है. राजनीति में असहयोग की भावना सफल नहीं होती. वहाँ दूसरों की सुविधाओं और रायों का ख़याल रखना पड़ता है. दूसरों के साथ सुलह करने को तैयार रहना पड़ता है. पिछले कई बरस पहले सिखों ने 'गुरुमत' से यह तय किया था कि वे गुरुद्वारा बिल पर उस वक़्त तक सरकार से समझौते की कोई बात न करेंगे जब तक सब सत्याग्रही क़ैदी पहले रिहा न कर दिये जाँय. इसे लेकर मतभेद पैदा हो गया. सिख नेता इस प्रस्ताव को फ़िज़ूल समझते थे पर गुरुमत के ख़िलाफ़ जाने की उनमें हिम्मत न थी. नतीजा यह हुआ कि बहुत तकलीफ़ें उठाने के बाद सिख नेताओं ने दूसरों की मारफ़त समझौते की बात शुरू की. सरकार से जो चुपके चुपके सुलह की गई वह गुप्त रखी गई. सुलह की शर्तें नेताओं को तो मालूम थीं पर जनता को वे इसलिये नहीं बताई गईं कि उनके गुरुमत

[4]

کیا سکھوں کو اِس کام کے لئے کسی الگ سنستھا کی ضرورت ہے؟ اِس مقصد کو حاصل کرنے میں کچھ دقتیں ہیں۔ سب سے خاص دقت یہ ہے کہ اِس کے دایرے میں راجنیتی کو شامل کیا جائے یا نہ کیا جائے ۔ اِس دقت کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے کے لئے ہمیں سکھوں کے سیاسی سمبندھ پر ایک نظر ڈالنی ہوگی ۔ گرو گووند سنگھ نے شانتی کے سمے سکھوں پر زور دیا تھا کہ وہ بابر کے راج کل کو اُسی طرح ساروبھوم دنیوی ستتا سوئیکار کرلیں جس طرح اُنہوں نے گرو نانک کی گدی کو سارو بھوم دھارمک ستتا سوئیکار کیا ہے ۔ کنتو سکھوں کے 300 ورشوں کی پرگتی کے اِتہاس کو دیکھنے سے پتہ چلتا ہے کہ سکھوں نے اِس سدھانت کو کبھی سوئیکار نہیں کیا ۔ وے یا تو شاسکوں کے ساتھ یدھ کرتے رہے یا خود شاسن کرتے رہے ۔ بعد میں اُنہوں نے برٹش سرکار کے ماتحت کام کرنا شروع کیا ۔ کنتو پھر بھی وے کوئی اپنی راجنیتک حیثیت نہیں بنا پائے ۔ حال میں ادھر پنتھ میں نوین جاگرتی ہوئی ہے کنتو اُس کے ساتھ ہی ساتھ پُرانے سنگھرش بھی پھر شروع ہوگئے ۔ سکھوں کو یہ سچائی ہمت کے ساتھ سوئیکار کرلینی چاہیئے کہ یدی اُن کا سنگٹھن پھر پرانی پریپاٹی پر چلا تو وے سرکار کے ساتھ یا غیر سکھوں کے ساتھ نشچئے ہی سنگھرش میں آئینگے ۔ اِس لئے کیونکہ ہر سکھ پہلے پنتھ کی طرف وفادار ہوگا اور دوسروں کے سامنے سر جھکانے کا ارتھ گرو گووند سنگھ کے جھنڈے کو نیچا کرنا ہوگا ! حالانکہ یہی چیز سکھوں کو شکتی دیتی ہے اور اُنہیں مصیبتوں کا سامنا کرنے کے لئے تیار کرتی ہے، لیکن اُنکی یہی بھاؤنا غیر سکھوں سے اُن کا سمجھوتہ نہیں ہونے دیتی ۔ وے اپنا ہی بول بالا چاہتے ہیں ۔ دھارمک معاملوں میں تو یہ ٹھیک ہے کنتو راجنیتی یا دوسرے دنیوی معاملوں میں سب کے ساتھ ملکر کام کرنا ہوتا ہے ۔ وہاں دوسرے سمپردایوں کا سہیوگ ضروری ہو جاتا ہے ۔ راجنیتی میں اسہیوگ کی بھاؤنا سپھل نہیں ہوتی ۔ وہاں دوسروں کی سویدھاؤں اور رایوں کا خیال رکھنا پڑتا ہے ۔ دوسروں کے ساتھ صلح کرنے کو تیار رہنا پڑتا ہے ۔ پچھلے کئی برس پہلے سکھوں نے 'گرومت' سے یہ طے کیا تھا کہ وے گرودوارا بل پر اُس وقت تک سرکار سے سمجھوتے کی کوئی بات نہ کرینگے جب تک سب ستیاگرہی قیدی پہلے رہا نہ کر دیئے جائیں ۔ اِسے لیکر مت بھید پیدا ہوگیا ۔ سکھ نیتا اِس پرستاؤ کو فضول سمجھتے تھے پر گرومت کے خلاف جانے کی اُن میں ہمت نہ تھی ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ بہت تکلیفیں اُٹھانے کے بعد سکھ نیتاؤں نے دوسروں کی معرفت سمجھوتے کی بات شروع کی۔ سرکار سے جو چپکے چپکے صلح کی گئی وہ گپت رہی گئی۔ صلح کی شرطیں نیتاؤں کو تو معلوم تھیں پر جنتا کو وے اِس لئے نہیں بتائی گئیں کہ اُن کے گرومت

के विरुद्ध नेताओं ने सुलह की थी. सिख नेताओं में इतनी हिम्मत न थी कि वे जनता का खुल्लमखुल्ला सामना करते.

इस दिक़्क़त से निकलने का अब एक यही तरीक़ा है कि मौजूदा हालत में सिर्फ़ धार्मिक मामलों में गुरुमत लिया जाय और राजनैतिक मसलों को सुलह सफ़ाई से हल किया जाय. इस फ़ैसले के लिये दो साफ़ वजहें हैं. एक यह कि जिन दिनों पन्थ क़ायम हुआ था तब से अब राजनैतिक नज़रिया बिलकुल बदल गया है. तब खालसा आज़ाद थे. ऊपर ईश्वर था और नीचे पन्थ था, दोनों के बीच में दख़ल देने वाली कोई दुनियवी ताक़त न थी. किन्तु आज स्वराज का मतलब ख़ाली सिखों का राज नहीं है बल्कि कुल हिन्दुस्तानियों का राज है जिसमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और सिख शामिल हैं. उस ज़माने में किसी भी ख़ित्ते पर हिन्दू, सिख या मुसलमान आज़ादी से हुकूमत कर सकते थे लेकिन आज राष्ट्रीयता का अर्थ बदल गया है. आज बहुत से सवाल ऐसे हैं जो महज़ सिखों के नहीं रहे बल्कि सभी सम्प्रदायों के बन गये हैं. मिसाल के तौर पर पञ्जाबी भाषा का प्रश्न जिसकी हिफ़ाज़त के लिये आज हिन्दू, मुसलमान, सिख, सबको सम्मिलित प्रयत्न करना चाहिये. एक बार एक ब्राह्मण ने शिकायत की कि उसकी बीवी 'क़ुसूर का नवाब' हर ले गया. इस पर अकाल तख़्त पर मिसल इकट्ठा हुये और इन्होंने इस अन्याय का बदला लेने और ब्राह्मणी को वापस लाने के लिये एक जत्था भेजा. आज अगर कोई ऐसी बात हो तो मामला पुलिस के सुपुर्द करना होगा. उस तरह के मामले यदि पन्थ हाथ में लेगा तो सरकार के साथ उसके निरर्थक संघर्ष होंगे. सिख नेताओं का यह फ़र्ज़ है कि वे सिख जनता को बतायें कि अब ज़माना बदल गया है और राजनैतिक आदर्श भी बदल गये हैं. इसलिए इस परिवर्तन के अनुसार सिख जनता को अपने पन्थ के सङ्गठन में भी परिवर्तन करने की ज़रूरत है.

کے وِرودھ نیتاؤں نے صلح کی تھی . سکھ نیتاؤں میں اِتنی ہمت نہ تھی کہ وہ جنتا کا کھلم کھلا سامنا کرتے .

اِس دقت سے نکلنے کا اب ایک یہی طریقہ ہے کہ موجودہ حالت میں صرف دھارمک معاملوں میں گرومت لیا جائے اور راجنیتک مسلوں کو صلح صفائی سے حل کیا جائے . اِس فیصلے کے لئے دو صاف وجہیں ہیں . ایک یہ کہ جن دنوں پنتھ قایم ہوا تھا تب سے اب راجنیتک نظریہ بالکل بدل گیا ہے . تب خالصہ آزاد تھے . اوپر ایشور تھا اور نیچے پنتھ تھا' دونوں کے بیچ میں دخل دینے والی کوئی دنیوی طاقت نہ تھی . کنتو آج سوراج کا مطلب خالی سکھوں کا راج نہیں ہے بلکہ کل ہندستانیوں کا راج ہے جس میں ہندو' مسلمان' عیسائی اور سکھ شامل ہیں . اُس زمانے میں کسی بھی خطے پر ہندو' سکھ یا مسلمان آزادی سے حکومت کرسکتے تھے' لیکن آج راشٹریتا کا ارتھ بدل گیا ہے . آج بہت سے سوال ایسے ہیں جو محض سکھوں کے نہیں رہے بلکہ سبھی سمپردایوں کے بن گئے ہیں . مثال کے طور پر پنجابی بھاشا کا پرشن جس کی حفاظت کے لئے آج ہندو' مسلمان' سکھ سب کو سملت پریتن کرنا چاہئے . ایکبار ایک براھمن نے شکایت کی کہ اُس کی بیوی 'قصور کا نواب' ہر لے گیا . اِس پر اکال تخت پر مسل اِکٹھا ہوئے اور اُنھوں نے اِس انیائے کا بدلہ لینے اور براھمنی کو واپس لانے کے لئے ایک جتھا بھیجا . آج اگر کوئی ایسی بات ہو تو معاملہ پولس کے سپرد کرنا ہوگا . اِس طرح کے معاملے یدی پنتھ ہاتھ میں لیگا تو سرکار کے ساتھ اُس کے نررتھک سنگھرش ہونگے . سکھ نیتاؤں کا یہ فرض ہے کہ وے سکھ جنتا کو بتائیں کہ اب زمانہ بدل گیا ہے اور راجنیتک آدرش بھی بدل گئے ہیں . اِس لئے اِس پریورتن کے انوسار سکھ جنتا کو اپنے پنتھ کے سنگٹھن میں بھی پریورتن کرنے کی ضرورت ہے .

गांधी और लेनिन

श्री जी. सुन्दर रेड्डी

पुराने जमाने से मजहब और साइंस के बीच खींचतान चली आ रही है. अगर धर्म और विज्ञान के बीच में यह खींचतान न होती तो आज की दुनिया जिस शकल में हमारी आँखों के सामने है, कभी न रहती. हिन्दू धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम धर्म के इतिहास से यह साफ़ है कि धर्म और वैज्ञानिक विचारों का संघर्ष इनमें आज तक जारी है.

फ्रांस की क्रान्ति के बाद यूरोप के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्रों में साइंस का एक तूफ़ान आया था. इस वैज्ञानिक क्रांति ने तमाम दुनिया में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को और जगाया. इस विचारधारा का मक़सद था कि सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रों में वैज्ञानिक विचारधारा के विरुद्ध जो आन्दोलन हो रहा है उसे खतम किया जाय.

लिबरलिज्म, डेमोक्रेटिक सोशलिज्म, कम्यूनिज्म और अनार्किज्म की पैदाइश इसलिए हुई कि समाज का सारा काम तर्क की बुनियाद पर हो. समाज में जो अन्याय और अत्याचार हो रहे हैं, वे सब समाज में वैज्ञानिक-विचारधारा की कमी के कारण हैं.

अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में वाल्टेयर, डिडोरांट, रूसो, मार्क्स, एंजिल्स और लेनिन ने अपने जीवन का ध्येय, दुनिया के अंधेरे से अंधेरे कोने में वैज्ञानिक विचारधारा के प्रकाश को फैलाना बना लिया था. वैज्ञानिक-विचारधारा, के इन पैग़म्बरों ने अपनी लेखिनी की शक्ति से सारे संसार में उसका प्रचार भी किया और उनके अनुयायियों की संख्या भी दिन दुगुनी और रात चौगुनी बढ़ गई.

जैसे जैसे विज्ञान की उन्नति होती गयी वैसे वैसे वैज्ञानिक विचार-धारा का महत्व भी बढ़ता गया. किंतु दुनिया के कोने कोने में इस वैज्ञानिक विचार-धारा के विरुद्ध विद्रोह उठ खड़े हुए. एक रंग, जाति, संस्कृति और ऐसे ही कुछ अंधविश्वास जिनके अस्तित्व का कोई तार्किक आधार नहीं दुनिया में फैलते जा रहे हैं. इन्हें बनाने वाले कहते हैं कि उनका विश्वास दिल की उन भावनाओं में है जो दलील पर मुनहसिर नहीं.

گاندھی اور لینن

شری جی. سندر ریڈی

پرانے زمانے سے مذہب اور سائنس کے بیچ کھینچ تان چلی آرہی ہے۔ اگر دھرم اور وگیان کے بیچ میں کھینچ تان نہ ہوتی تو آج کی دنیا جس شکل میں ہماری آنکھوں کے سامنے ہے' کبھی نہ رہتی۔ ہندو دھرم' عیسائی دھرم اور اسلام دھرم کے اتہاس سے یہ صاف ہے کہ دھرم اور ویگیانک وچاروں کا سنگھرش ان میں آج تک جاری ہے۔

فرانس کی کرانتی کے بعد یورپ کے سماجک' آرتھک راجنیتک اور دھارمک چھیتروں میں سائنس کا ایک طوفان آیا تھا۔ اس ویگیانک کرانتی نے تمام دنیا میں ویگیانک درشٹی کونڑ کو اور جگایا۔ اس وچار دھارا کا مقصد تھا کہ سماجک' آرتھک اور راجنیتک چھیتروں میں ویگیانک وچار دھارا کے ورودھ جو آندولن ہو رہا ہے اسے ختم کیا جاوے۔

لبرازم' ڈیماکریٹک سوشلزم' کمیونزم اور انارکزم کی پیدائش اس لئے ہوئی کہ سماج کا سارا کام ترک کی بنیاد پر ہو۔ سماج میں جو انیائے اور انیاچار ہو رہے ہیں' وے سب سماج میں ویگیانک وچار دھارا کی کمی کے کارن ہیں۔

اٹھارھویں اور انیسویں صدی میں والٹیر' ڈیڈورانٹ' روسو' مارکس' انجیلس اور لینن نے اپنے جیون کا دھییہ' دنیا کے اندھیرے سے اندھیرے کونے میں ویگیانک وچار دھارا کے پرکاش کو پھیلانا بنا لیا تھا۔ ویگیانک وچار دھارا کے ان پیغمبروں نے اپنی لیکھنی کی شکتی سے سارے سنسار میں اس کا پرچار بھی کیا اور اس کے انویائیوں کی سنکھیا دن دوگنی اور رات چوگنی بڑھ گئی

جیسے جیسے وگیان کی انتی ہوتی گئی ویسے ویسے ویگیانک وچار دھارا کا مہتو بھی بڑھتا گیا۔ کنتو دنیا کے کونے کونے میں اس ویگیانک وچار دھارا کے وروده ودروہ اٹھ کھڑے ہوئے۔ ایک رنگ' جاتی' سنسکرتی اور ایسے ہی کچھ اندھوشواس جن کے استیتو کا کوئی تارکک آدھار نہیں دنیا میں پھیلتے جا رہے ہیں۔ انہیں بنانے والے کہتے ہیں کہ ان کا وشواس دل کی ان بھاوناؤں میں ہے جو دلیل پر منحصر نہیں۔

इस वैज्ञानिक विचारधारा के विरुद्ध जो सिद्धांत हम सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में देख रहे हैं उन्हीं को हम नेशनलिज़म, कैपिटलिज़म, फासिज़म और इंपीरियलिज़म कहते हैं. फ्रांस और रूस की क्रांतियों ने जिस विचारधारा को दुनिया में फैलाया था, मार्क्स और लेनिन ने जिन सिद्धांतों को फैलाने में अपने प्राणों को त्याग दिया था, उन्हें नेशनलिस्ट, कैपिटलिस्ट और इंपीरियलिस्ट राज्य मिटाना चाहते हैं. इनका विश्वास ऐसे सिद्धान्तों में हैं, जो तार्किक नज़रिये से परे हैं. अपनी जाति और क़ौम की उन्नति और स्वार्थ-सिद्धी जिस में है, वही उनका धर्म है. अपने राज्य की उन्नति और अपनी जाति की उन्नति के लिए जो धर्म सहायता नहीं देता, उनकी नज़र में वह धर्म नहीं है.

ऐसे समय में सत्य और अहिंसा संदेशवाहक महात्मा बुद्ध और ईसा मसीह की तरह गांधीजी ने हमारे बीच आ हमारी ज्ञान की आँखों को खोल दिया, हमारे मस्तकों को ऊँचा किया और हमें साफ़ साफ़ बताया कि धर्म और विज्ञान का समन्वय होना चाहिए. तभी मानव जाति की भलाई होगी. नहीं तो युद्धों से हमें निजात नहीं मिलेगी.

गाँधी और लेनिन दोनों के आदर्श बहुत ऊँचे हैं. वे दोनों सामाजिक असमानता और आर्थिक-असमानता दूर करना चाहते हैं, और ऐसे समाज को क़ायम करना चाहते हैं जहाँ पर शोषण न हो, और जाति, रंग और धर्म के कारण मानवता के बीच में दीवारें न हों. लेकिन दोनों के रास्ते अलग अलग हैं. साधनों की अलहदगी के कारण ही गाँधी और लेनिन कहीं उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव बन जाते हैं. आजकल के हमारे कम्यूनिस्टों की तरह लेनिन का भी यह विचार था कि चाहे साधन अच्छे हों या बुरे, पवित्र हों या अपवित्र, हिंसा के हों या अहिंसा के, अपने आदर्श को प्राप्त कर लेना चाहिए. लेकिन गांधी जी का यह सिद्धान्त था कि आदर्श और साधन में गहरा सम्बन्ध है, इसलिए दोनों को अलग नहीं करना चाहिए. ऊँचे आदर्शों को ऊँचे साधनों के द्वारा ही हासिल करना चाहिये. जब आदर्श हासिल करने के साधन भी पवित्र होंगे, तभी उस आदर्श का मूल्य होगा.

आर्थिक और सामाजिक समानता के लिए लेनिन ने वर्ग-संघर्ष को अपना साधन बना लिया. लेकिन गांधी जी ने वर्ग-समन्वय और सांस्कृति समन्वय को अपना मार्ग बना लिय, विश्व-शान्ति के लिए आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक शोषण का अन्त दोनों का मक़सद है. किन्तु लेनिन हिंसा के साधन के उपयोग से अपना ध्येय प्राप्त करना चाहते हैं तो गांधी अहिंसा के साधन के उपयोग के द्वारा. एक में रक्तपात ज़रूरी है, दूसरे में हृदय परिवर्तन.

اِس ویگیانک وچار دھارا کے ویرودھ میں جو سدھانت ہم ساماجک اور راجنیتک چھیتر میں دیکھ رہے ہیں اُنہیں کو ہم نیشنلزم' کیپٹلزم' فاسزم اور امپیریلزم کہتے ہیں ۔ فرانس اور روس کی کرانتیوں نے جس وچار دھارا کو دنیا میں پھیلایا تھا' مارکس اور لینن نے جن سدھانتوں کے پھیلانے میں اپنے پرانوں کو تیاگ دیا تھا' انہیں نیشنلسٹ' کیپٹلسٹ اورامپیریلیسٹ راج مٹانا چاہتے ہیں۔ اِن کا وشواس ایسے سدھانتوں میں ہے' جو تارکک نظریہ سے پرے ہے. اپنی جاتی اور قوم کی اُنتی اور سوارتھ سدھی جس میں ہے' وہی اِن کا دھرم ہے ۔ اپنے راجیہ کی اُنتی اور اپنی جاتی کی اُنتی کے لئے جو دھرم سہایتا نہیں دیتا' اُن کی نظر میں وہ دھرم نہیں ہے ۔

ایسے سمے میں ستیہ اور اہنسا سندیش واھک مہاتما بدھ اور عیسیٰ مسیح کی طرح گاندھی جی نے ہمارے بیچ آ ہماری گیان کی آنکھوں کو کھول دیا' ہمارے مستکوں کو اُونچا کیا اور ہمیں صاف صاف بتایا کہ دھرم اور وگیان کا سمنوے ہونا چاہیئے۔ تبھی مانو جاتی کی بھلائی ہوگی ۔ نہیں تو یدھوں سے ہمیں نجات نہیں ملیگی ۔

گاندھی اور لینن دونوں کے آدرش بہت اُونچے ہیں ۔ وے دونوں ساماجک اسمانتا اور آرتھک اسمانتا دور کرنا چاہتے ہیں' اور ایسے سماج کو قایم کرنا چاہتے ہیں جہاں پر سوشنتر نہ ہو' اور جاتی' رنگ اور دھرم کے کارن مانوتا کے بیچ میں دیواریں نہ ہوں ۔ لیکن دونوں کے راستے الگ الگ ہیں ۔ سادھنوں کی علیحدگی کے کارن ہی گاندھی اور لینن کہیں اُتری دھرو اور دکشنی دھرو بن جاتے ہیں۔ آجکل کے ہمارے کمیونسٹوں کی طرح لینن کا بھی یہ وچار تھا کہ چاہے سادھن اچھے ہوں یا برے' پوتر ہوں یا اپوتر' ہنسا کے ہوں یا اہنسا کے' اپنے آدرش کو پراپت کر لینا چاہیئے ۔ لیکن گاندھی جی کا یہ سدھانت تھا کہ آدرش اور سادھن میں گہرا سمبندھ ہے' اس لئے دونوں کو الگ نہیں کرنا چاہئے ۔ اُونچے آدرشوں کو اُونچے سادھنوں کے دوارا ہی حاصل کرنا چاہئے ۔ جب آدرش کے حاصل کرنے کے سادھن بھی پوتر ہونگے' تبھی اُس آدرش کا مولیہ ہوگا ۔

آرتھک اور ساماجک سمانتا کے لئے لینن نے ورگ سنگھرش کو اپنا سادھن بنا لیا ۔ لیکن گاندھی جی نے ورگ - سمنوئے اور سانسکرتک سمنوئے کو اپنا مارگ بنا لیا ۔ وشوشانتی کے لئے آرتھک' راجنیتک' دھارمک اور ساماجک شوشنز کا انت دونوں کا مقصد ہے ۔ کنتو لینن ہنسا کے سادھن کے اُپیوگ سے اپنا دھییہ پراپت کرنا چاہتے ہیں تو گاندھی اہنسا کے سادھن کے اُپیوگ کے دوارا ۔ ایک میں رکتپات ضروری ہے' دوسرے میں ہردئے پریورتن ۔

गांधी जी का यह विश्वास था कि रक्तपात से या युद्ध से कोई भी समस्या नहीं हल हो सकती. लेकिन उससे और कई विकट समस्याएँ पैदा हो जाती हैं जिन्हें हल करना मुशकिल हो जाता है.

अगर एक युद्ध से कोई समस्या हल हो जाती तो हमारे इतिहास में इतने युद्ध क्यों होते ? इतने जानलेवा हथियारों की उत्पत्ति क्यों होती ? एटम बम और सुपर एटम बम की उत्पत्ति में इतनी होड़ क्यों होती ?

दुनिया के किसान और मजदूर, दीन और दुखी, दलित और पतित जातियों ने गाँधी और लेनिन दोनों की विचारधाराओं में अपने सारे दुखों और शोषणों का अन्त देखा परन्तु धनी और उन्नतिशील राष्ट्रों ने लेनिन के सिद्धांतो के खिलाफ़ अपनी आवाज़ बुलंद की. मगर धनिक और उन्नतिशील राष्ट्रों ने भी गाँधी जी की वाणी में शान्ति और प्रगति का मार्ग देखा. लेनिन का प्रभाव किसी एक जाति, या वर्ग तक ही सीमित रहा, लेकिन गांधी का प्रभाव दुनिया की तमाम जाति, तमाम वर्ग और तमाम मजहब वालों पर पड़ा.

लेनिन के जीवन में ईश्वर के लिए कहीं स्थान नहीं है वह तो मनुष्य को सर्व शक्तिमान सिरजनहार मानते हैं. उनका मत है कि ईश्वर तो एक होता है, जिसके नाम पर जुल्म और सितम, शोषण और अन्याय किये जाते हैं. धर्म का मूल ईश्वर है और आजकल की आर्थिक और सामाजिक असमानता के पीछे धर्म काम कर रहा है. इस लिए धर्म तो अफ़ीम के समान है, जिसके सेवन से आदमी कमजोर हो जाता है और अपनी बुद्धि और शक्ति को खो देता है. किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वह किसी भी धर्म को न मानते हों. उनका धर्म कम्यूनिजम है, जिसके द्वारा वह ऐसा एक समाज स्थापित करना चाहते हैं, जिसमें सारी दुनिया के लोग सुखी हों.

गांधी जी तो ईश्वर को दुनिया का सिरजनहार और उसे संचालित करने वाला मानते हैं. ईश्वर की अनन्त शक्ति के सामने मनुष्य को बहुत छोटा समझते हैं. ईश्वर एक सागर है तो मनुष्य को उसके एक बिन्दु के समान मानते हैं. किन्तु आजकल के धर्मों को, जिनकी बुनियाद शोषण और असमानता पर है, धर्म नहीं मानते हैं. उनका विश्वास है कि सब धर्मों का मूल एक है. इसीपर अपने विश्व धर्म का वे निर्माण करते हैं.

आज एक तरफ़ नेशनलिजम, रेशिनलिजम, केपिटेलिजम और इम्पीरियलिजम पुरानी विचार-धारा का प्रतिनिधि कम्यूनिजम है. दोनों विचार-धाराओं में संघर्ष जारी है. एक की तरफ धर्म है और दूसरे की तरफ परिश्रम करनेवाला वर्ग. इन दोनों विचार-धाराओं का समन्वय है गांधीवाद. इसमें सच्चे धर्म का समुचित स्थान है. एक आदमी दूसरे

گاندھی جی کا یہ وشواس تھا کہ رکتپات سے یا یدھ سے کوئی بھی سمسیا نہیں حل ھوسکتی . لیکن اُس سے اور کئی وکٹ سمسیائیں پیدا ھو جاتی ھیں جنھیں حل کرنا مشکل ھوجاتا ھے .

اگر ایک یدھ سے کوئی سمسیا حل ھوجاتی تو ھمارے اِتہاس میں اِتنے یدھ کیوں ھوتے ؟ اِتنے جان لیوا ھتھیاروں کی اُتپتی کیوں ھوتی ؟ ایٹم بم اور سوپر ایٹم بم کی اُتپتی میں اِتنی ھوڑ کیوں ھوتی ؟

دنیا کے کسان اور مزدور، دین اور دکھی، دلت اور پتت جاتیوں نے گاندھی اور لینن دونوں کی وچار دھاراؤں میں اپنے سارے دکھوں اور شوشنوں کا انت دیکھا پرنتو دھنی اور اُنتی شیل راشٹروں نے لینن کے سدھانتوں کے خلاف اپنی آواز بلند کی . مگر دھنک اور اُنتی شیل راشٹروں نے بھی گاندھی جی کی بانی میں شانتی اور پرگتی کا مارگ دیکھا . لینن کا پربھاؤ کسی ایک جاتی، یا ورگ تک ھی سیمت رھا، لیکن گاندھی کا پربھاؤ دنیا کی تمام جاتی، تمام ورگ اور تمام مذھب والوں پر پڑا .

لینن کے جیون میں ایشور کے لئے کہیں استھان نہیں ھے . وہ تو منوشیہ کو سرو شکتیمان سرجن‌ھار مانتے ھیں . اُن کا مت ھے کہ ایشور تو ایک ھوتا ھے، جس کے نام پر ظلم اور ستم، شوشن اور انیایہ کئے جاتے ھیں . دھرم کا مول ایشور ھے اور آجکل کی آرتھک اور سماجک اسمانتا کے پیچھے دھرم کام کررھا ھے . اس لئے دھرم تو افیم کے سمان ھے، جس کے سیون سے آدمی کمزور ھوجاتا ھے اور اپنی بدھی اور شکتی کو کھو دیتا ھے. کنتو اس کا ارتھ یہ نہیں ھے کہ وہ کسی بھی دھرم کو نہ مانتے ھوں . ان کا دھرم کمیونزم ھے، جس کے دوارا وہ ایک ایسا سماج استھاپت کرنا چاھتے ھیں، جس میں ساری دنیا کے لوگ سکھی ھوں .

گاندھی جی تو ایشور کو دنیا کا سرجن‌ھار اور اسے سنچالت کرنے والا مانتے ھیں . ایشور کی اننت شکتی کے سامنے منوشیہ کو بہت چھوٹا سمجھتے ھیں . ایشور ایک ساگر ھے تو منوشیہ کو اُسکے ایک وندو کے سمان مانتے ھیں. کنتو آجکل کے دھرموں کو، جن کی بنیاد شوشن اور اسمانتا پر ھے، دھرم نہیں مانتے ھیں. ان کا وشواس ھے کہ سب دھرموں کا مول ایک ھے . اسی پر اپنے وشو دھرم کا وے نرمان کرتے ھیں .

آج ایک طرف نیشنلیزم، ریشنلیزم، کیپٹلزم اور امپیریلیزم پرانی وچاردھارا کا پرتینِدھی کمیونزم ھے . دونوں وچاردھاراؤں میں سنگھرش جاری ھے . ایک کی طرف دھرم ھے اور دوسرے کی طرف پریشرم کرنے والا ورگ . ان دونوں وچاردھاراؤں کا سمنوے ھے گاندھی‌واد . اس میں سچے دھرم کا سموچت استھان ھے . ایک آدمی دوسرے

की बेइज़्ज़त नहीं समझ सकता. धर्म और एक दूसरे को अपने से नीचा नहीं समझ सकता. धर्म धर्म के लिए नहीं, विज्ञान विज्ञान के लिए नहीं. दोनों मानव समाज के कल्याण के लिए हैं. जिस विज्ञान से मानव समाज की आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति नहीं होती, वह तो विज्ञान नहीं, लेकिन ऐसा एक विस्फोटक है, जिसके फट जाने से उसका खात्मा हो जाना ज़रूरी है. इसलिए इन दोनों का उपयोग मानव समाज के फ़ायदे के लिए ही होना चाहिए. यही हमें गांधी-वाद सिखाता है.

गाँधी जी और लेनिन आज की पीड़ित और दुखित मानवता के लिए दो अमर ज्योति हैं. जिन ज्योतियों के सहारे आजकल की मानवता एक शानदार जगत की कल्पना कर रही है उनके भौतिक शरीर तो आज हमारे बीच में नहीं हैं, लेकिन उनकी अमर आत्मा और उन के आदर्शों की दिव्य-ज्योति हमारे सामने है. ये दिव्य-ज्योतियाँ तब तक जलती रहेंगी जब तक ज़मीन और आसमान है, और जब तक उनके बीच इनसान साँस लेते रहेंगे.

کی محدات نہیں سمجھ سکتا ۔ دھرم اور ایک دوسرے کو اپنے سے نیچا نہیں سمجھ سکتا ۔ دھرم دھرم کے لئے نہیں' وگیان وگیان کے لئے نہیں' دونوں مانو سماج کے کلیان کے لئے ہیں ۔ جس وگیان سے مانو سماج کی آدھیاتمک اور بھوتک اُنتی نہیں ہوتی' وہ تو وگیان نہیں' لیکن ایک ایسا وسپھوٹک ہے جس کے پھٹ جانے سے اس کا خاتمہ ہوجانا ضروری ہے ۔ اس لئے ان دونوں کا اُپیوگ مانو سماج کے فائدے کے لئے ہی ہونا چاہئے ۔ یہی ہمیں گاندھی واد سکھاتا ہے ۔

گاندھی اور لینن آج کی پیڑت اور دوکھت مانوتا کے لئے دو امر جیوتی ہیں ۔ جن جوتیوں کے سہارے آجکل کی مانوتا ایک شاندار جگت کی کلپنا کر رہی ہے ان کے بھوتک شریر تو آج ہمارے بیچ میں نہیں ہیں' لیکن انکی امر آتما اور ان کے آدرشوں کی دیویہ جیوتی ہمارے سامنے ہے یے دیویہ جیوتیاں تب تک جلتی رہینگی جب تک زمین اور آسمان ہے' اور جب تک ان کے بیچ انسان سانس لیتے رہیں گے ۔

मशहूर सूफ़ी शाह अब्दुल लतीफ़

प्रोफ़ैसर जेठमल परशुराम गुलराजानी

हम लोग महापुरुषों के दिवस मनाते हैं. गु० नानक का दिवस मनाते हैं, गु० गोबिन्द सिंह का दिवस मनाते हैं. आज हम सिंध के प्रसिद्ध कवि शाह अब्दुल लतीफ़ का दिवस मना रहे हैं. क्या इनसे हमें वर्त्तमान समस्याओं को सुलझाने का मार्ग मिल सकता है? जबकि चारों ओर साम्प्रदायिकता की अग्नि धधक रही थी, हिन्दू-मुसलमान एक दूसरे को काट कर खा रहे थे उधर नोआखाली में हिन्दुओं पर विपत्ति का पहाड़ टूटा और बिहार में मुसलमानों का क़तले आम हुआ, क्या ऐसी विपत्ति में हम भारत की समन्वयात्मक आत्मा को बचाकर रख सके? क्या आज इन दिवसों के मनाने से हमें लाभ हो सकता है? इन सब प्रश्नों का एक ही उत्तर है— "अवश्य". कारण इन महापुरुषों की वाणी में न केवल अपने समय की बात कही गई है, किन्तु आज के मामलों का सुझाव भी इन से मिल जाता है.

हम देखते हैं कि प्रकृति ने सिंध को एक विशेष सौग़ात दी थी, वह सौग़ात है "सूफ़ीवाद". सिन्ध का प्रदेश प्राचीन आर्य-भूमि है. वहाँ वेद और उपनिषदों के मन्त्रों का उच्चारण किया गया. वहाँ पहले अरबी भाषा आई, फिर फ़ारसी आई. उपनिषद्-पुराण आदि संस्कृत साहित्य का इन दोनों भाषाओं में अनुवाद हुआ. इस प्रकार परस्पर विचारों का आदान-प्रदान बढ़ा. फिर इस अरब, फ़ारस और आर्यों की संस्कृति की संगम रूपी त्रिवेणी से जा एक उत्तम चीज़ बनी, वह है—सूफ़ीवाद, जिसमें "नहिं हिन्दू नहिं मुसलमान" की ध्वनि गूंजी. यह वही प्रचीन वस्तु है जो सत्य है, शिव है और सुन्दर है. जिसमें ज्ञान, कर्म और शक्ति की त्रिपुटी है. सूफ़ी इस को हक़, हुस्न और ख़ैर कहते हैं. शाह लतीफ़ के शब्दों में यह सृजन ('ख़ैर करने वाला') सुरति और सूंह, हुस्न यानी सुन्दरता है. यही संसार के कल्याण का मार्ग है.

एक समय की बात है, सिन्ध में बरसात अच्छी हुई थी, अन्न बहुत हुआ. काश्तकार बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे कि यह वर्ष बड़े आनन्द से कटेगा. उधर महाजन विचार करने लगे कि—"इस वर्ष अन्न बहुत होने से उसका भाव अवश्य मन्दा पड़ जाएगा." इसलिये उसपर अपना क़ब्ज़ा कर लेते हैं. शाह लतीफ़ ने देखा कि जिन बेचारों ने आंधी, वर्षा और कड़ी धूप का तनिक भी विचार न किया, बीज बोया, दिन

مشہور صوفی شاہ عبداللطیف

پرفیسر جیٹھ مل پرشورام گلراجانی

ہم لوگ مہاپرشوں کے دیوس مانتے ھیں ۔ گرو نانک کا دیوس مانتے ھیں' گرو گووند سنگھ کا دیوس مانتے ھیں ۔ آج ہم سندھ کے پرسدھ کوی شاہ عبداللطیف کا دیوس منا رھے ھیں ۔ کیا اِن سے ھمیں ورتمان سمسیاؤں کو سلجھانے کا مارگ مل سکتا ھے جبکہ چاروں اُور سامپردایکتا کی اگنی دھدھک رھی تھی' ھندو مسلمان ایک دوسرے کو کاٹ‌کر کھا رھے تھے ؟ اُدھر نوآکھالی میں ھندؤں پر وپتی کا پہاڑ ٹوٹا اور بہار میں مسلمانوں کا قتل علم ھوا ۔ کیا ایسی وپتی میں اِن دیوسوں کے منانے سے ھمیں لابھ ھوسکتا ھے ؟ اِن سب پرشنوں کا ایک ھی اُتر ھے— ''اوشیہ'' کارن اِن' مہاپرشوں کی بانی میں نہ کیول اپنے سمے کی بات کہی گئی ھے' کنتو آج کے معاملوں کا سجھاؤ بھی اِن سے مل جاتا ھے ۔

ہم دیکھتے ھیں کہ پرکرتی نے سندھ کو ایک وشیش سوغات دی تھی' وہ سوغات ھے ''صوفی‌واد''. سندھ کا پردیش پراچین آریہ بھومی ھے ۔ وھاں وید اور اُپنشدوں کے منتروں کا اُچارن کیا گیا. وھاں پہلے عربی بھاشا آئی' پھر فارسی آئی ۔ اُپنشد پران آدی سنسکرت ساھتیہ کا اِن دونوں بھاشاؤں میں انواد ھوا ۔ اِس پرکار پرسپر وچاروں کا آدان پردان بڑھا ۔ پھر اِس عرب' فارس اور آریوں کی سنسکرتی کی سنگم روپی تروینی سے جو ایک اُتم چیز بنی' وہ ھے—صوفی‌واد' جس میں ''نا ھیں ھندو نا ھیں مسلمان'' کی دھونی گونجی ۔ یہ وہی پراچین وستو ھے جو ستیہ ھے' شو ھے اور سندر ھے' جس میں گیان' کرم اور شکتی کی تریپوٹی ھے ۔ صوفی اِس کو حق' حسن اور خیر کہتے ھیں۔ شاہ لطیف کے شبدوں میں یہ سرجن ('خیر رنے والا') سورتی اور سونہہ' حسن یعنی سندرتا ھے ۔ یہی سنسار کے کلیان کا مارگ ھے ۔

ایک سمے کی بات ھے' سندھ میں برسات اچھی ھوئی تھی' اَن بہت ھوا ۔ کاشتکار بڑے پرسن ھوئے اور کہنے لگے کہ یہ ورش بڑے آنند سے کٹیگا ۔ اُدھر مہاجن وچار کرنے لگے کہ— ''اِس ورش اَن بہت ھونے سے اُس کا بھاو اوشیہ مندا پڑ جائیگا۔'' اِس لئے اُس پر اپنا قبضہ کرلیتے ھیں ۔ شاہ لطیف نے دیکھا کہ جن بیچاروں نے آندھی' ورشا اور کڑی دھوپ کا تنک بھی وچار نہ کیا' بیج بویا' دن

रात जाग कर उसकी संभाल की, फ़सल तैयार होने पर काट कर रखा, उसका इन बेचारों को एक दाना भी न मिला और भाव गिर जाने के डर से इन मूजियों (व्यापारियों) ने वह सब दबा कर रख छोड़ा. तब शाह को बड़ा गुस्सा आया और कहा कि—

"जिनि यहां गोलही मेरियों, था इथ इराति।
पंजनि थां पंद्रह थिया, ईअं था वर्क वरनि।
द्र कारिया द्रेह मां, शाह मूजी सथि मरनि।"

अर्थात—"जिन्होंने मंहगाई के ख्याल से सब अन्न इकट्ठा किया, वे सब आज हाथ मार रहे हैं. पांच से पन्द्रह हुए, इस प्रकार जिनके बही के पन्ने उलटते रहते हैं, ऐसे अकाल को पैदा करने वाले ये सब मूजी (सट्टे बाज़ व्यापारी) ईश्वर करे मर जांय."

शाह साहब को साम्प्रदायिकता से बड़ी चिढ़ थी. हिन्दू और मुसलमानों का मन मलिन और बाह्य आडम्बर देखकर एक जगह कहते हैं कि—

"दग़ा तुहिंजे दिलि में शिरकु अईं शैतानु मुँह में मुसलमानु अन्दारि आजरू आहियें."

फिर हिन्दुओं को कहते है—

"कूड़ो तूँ कुफ़र से काफ़रु म कोठाइ।
हिन्दू हद्रि न आहीं जनियों तो न जुमाइ।
तिहिकु तिनिहों खेलाइ, सचा जे शिरक से।।"

शाह सूफ़ी को इन दोनों के आपस के झगड़ों को देखकर बड़ा गुस्सा आया और फटकारते हुये कहा कि—

पिकू हिन्दू ब्रिया मुसलमान टियों विचु विधाऊँ वेरू
अंधनि उन्धहि न लहे निति खे सचु बुधाईन्दो केरू

अर्थात्—"एक हिन्दू हैं और दूसरे मुसलमान हैं. फिर जो तीसरी बात इनमें पैदा हुई वह है आपस का वैर. इस प्रकार से दोनों साम्प्रदायिकता में बिलकुल अन्धे बन गये हैं. भला जो अन्धे हैं उन्होंने कभी अंधकार का अन्त पाया है? कभी प्रकाश देखा है? फिर, सत्य क्या है, प्रकाश क्या है, यह इनको कौन समझा सकता है!"

सचल—सिन्धी जिसको सिरमस्त कहते हैं—वह मस्ती में आकर नाचता है और गाता है—

"मां हिन्दू मोमिनु नाम्हां, मां जोई आम्हा सोई आहयां। मां मजहबुसुरु न मञा, मां मुशरब मंझि पुदामु; अहिड़ों इश्क़ जो इन्हाफ़ु, सथेई मजहब कमाईं माफ़ु।।"

अर्थात्—"मैं न हिन्दू हूँ न मुसलमान हूँ. मैं जो कुछ हूँ मैं मज़हबों को बिल्कुल नहीं मानता. मैं मुदायर (नित्य) मुशरबर (अमृत) में रहता हूँ. यह तो इश्क़ का इन्साफ़ है

رات جاگ کر اُس کی سنبھال کی، فصل تیار ہونے پر کاٹ کر رکھا، اُس کا اِن بیچاروں کو ایک دانہ بھی نہ ملا اور بھاؤ گر جانے کے ڈر سے اِن موجیوں (ویاپاریوں) نے وہ سب دباکر رکھ چھوڑا۔ تب شاہ کو بڑا غصہ آیا اور کہا کہ—

"جنی یہاں گولہی میریوں، تھا اِتھ اِرتی،
پنجنی یاں پندرہ تھیا، عیاں تھا ورک ورنی،
درا کاریا دریہ ماں، شاہ موجی ستھی مرنی۔"

ارتھات—"جنہوں نے مہنگائی کے خیال سے سب اَن اِکٹھا کیا، وے سب آج ہاتھ مار رہے ہیں۔ پانچ سے پندرہ ہوئے، اِس پرکار جن کے بہی کے پنّے اُلٹتے رہتے ہیں، ایسے اکال کو پیدا کرنے والے یہ سب موجی (سٹّے باز ویاپاری) ایشور کرے مر جائیں۔"

شاہ صاحب کو سامپردایکتا سے بڑی چڑھ تھی۔ ہندو اور مسلمانوں کا من ملن اور باہیہ آڈمبر دیکھ کر ایک جگہ کہتے ہیں کہ—

"دغا توہنجے دل میں شرکو اَئیں شیطانو منہ میں مسلمانو اندارِی آرزو آھیئیں۔"

پھر ہندوؤں کو کہتے ہیں—

"کوڑو تو کفر سے کافرو ما کوٹھائے
ہندو ھدری نہ آھیں جانیوں تو نہ جگرائے
تیھکو تنہوں کھیلائے، سچا جے شرک سے۔"

شاہ صوفی کو اِن دونوں کے آپس کے جھگڑوں کو دیکھ کر بڑا غصہ آیا اور پھٹکارتے ہوئے کہا کہ—

پکو ہندو بریا مسلمان ٹیوں وچو ودھاؤں ویرو
اندھنی اُندھہی نہ لہے نیتی کھے سچو بدھائندو کیرو

ارتھات—"ایک ہندو ہیں اور دوسرے مسلمان ہیں۔ پھر جو تیسری بات اِن میں پیدا ہوئی وہ ہے آپس کا بیر۔ اِس پرکار سے دونوں سامپردایکتا میں بالکل اندھے بن گئے ہیں۔ بھلا جو اندھے ہیں اُنہوں نے کبھی اندھکار کا انت پایا ہے؟ کبھی پرکاش دیکھا ہے؟ پھر، ستیہ کیا ہے، پرکاش کیا ہے یہ اُن کو کون سمجھا سکتا ہے!"

سچل—سندھی جس کو سرمست کہتے ہیں—وہ مستی میں آکر ناچتا ہے اور گاتا ہے—

"ماں ھندو مومنو ناماں، ماں جوئی آمہاں سوئی آھیاں۔ ماں مجھبوسورو نہ منجا، ماں مشرب منجھی پودامو؛ اَھیڑوں عشق جو اِنہاپھو، ستھیئی مذھب کمائیں معافو۔"

ارتھات—"میں نہ ہندو ہوں نہ مسلمان ہوں۔ میں جو کچھ ہوں میں مذہبوں کو بالکل نہیں مانتا۔ میں مدایر (نتیہ) مشربر (امرت) میں رہتا ہوں۔ یہ تو عشق کا انصاف ہے

जिसने मेरे सब मजहबों (दोषों, भेदों) को मुआफ़ कर दिया है."

गु० गोविन्द सिंह गुस्से में आकर कहते हैं कि—

"हिन्दू मुसलमान बाद पच्चे, इतने नाथ निराले बच्चे॥"

गु० नानक के विषय में कहा जाता है कि जब वे अमृतसर के सरोवर में डुबकी लगाकर तीन दिन के बाद बाहर आये तब उनके मुख से यही आवाज़ निकली—

"नाँह हिन्दू, नाँह मुसलमान"।

कबीर साहब जो गु० नानक से 50 वर्ष पहले हुये वे भी कहते हैं कि—

"हिन्दू तुरक कहाँ से आये, किनने हैं ये भेद बनाये।"

कबीर से एक सौ वर्ष पहले सन् 1310 में काश्मीर के नासुरुद्दीन आदि सूफ़ियों के घर में जन्म लेने वाली लाल माई कहती है—

"म जान हिन्दू मुसलमान"

अर्थात्—"मैं हिन्दू मुसलमान नहीं जानती".

प्राचीन भारत के हृदय की ध्वनि वेदान्त-वाणी की भी यह आवाज़ है—

"नाँह मनुष्य, नच देव यक्षो न ब्राह्मण क्षत्रिय-वैश्य शूद्रा।"

अर्थात्—"मैं मनुष्य, देव या यक्ष, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र नहीं. मैं तो आत्म बोध रूप हूँ."

इस प्रकार यह अथर्वेद की वाणी, यह एकता की वाणी है जिसकी पाकिस्तान और हिन्द को एवं सम्पूर्ण संसार को आवश्यकता है. जिससे इहलोक और परलोक सुखमय बन जाता है. यही सूफ़ियों की आवाज़ है, सच्ची सीख है और यही स । सनातन धर्म है.

جسلے میرے سب مذهبوں (دوشوں' بهیدوں) کو معاف کر دیا هے."

گرو گوبند سنگھ غصے میں آکر کهتے هیں که—

"هندو مسلمان بعد میں بچے' اِتنے ناتھ نرالے بچے."

گرو نانک کے وشے میں کہا جاتا هے که جب وے امرتسر کے سرؤور میں ڈوبکی لگا کر تین دن کے بعد باهر آئے تب اُن کے مکھ سے یہی آواز نکلی—

نا هیں هندو' نا هیں مسلمان."

کبیر صاحب جو گرو نانک سے 50 ورش پہلے هوئےوے بهی کهتے هیں که—

هندو ترک کہاں سے آئے' کن لے هیں یه بهید بنائے."

کبیر سے ایک سو ورش، پہلے سن 1310 میں کاشمیر میں ناصرالدین آدی صوفیوں کے گهر میں جنم لینے والی لال مائی کهتی هے—

"ما جان هندو مسلمان"

ارتهات—"میں هندو مسلمان نهیں جانتی."

پراچین بهارت کے هردئے کی دهونی ویدانت وانی کی بهی یه آواز هے—

نا منوشیه' نیچ دیو یکشو نه براهمن چهتریه ویشیه شودرا."

ارتهات—"میں منوشیه' دیو یا یکش' براهمن' چهتری' ویش یا شودر نهیں. میں تو آتم بودھ روپ هوں."

اِس پرکار یه اتهروید کی وانی هے جس کی پاکستان اور هند کو ایوم سمپورن سنسار کو آوشکتا هے. جس سے ایهه لوک اور پرلوک سکھ مئے بن جاتا هے. یہی صوفیوں کی آواز هے' سچی سیکھ هے اور یہی سچا سناتن دهرم هے.

चीन और भारत का सांस्कृतिक मेलजोल

श्री मलिन्द

दुनिया की आबादी का आधा हिस्सा इन दो विशाल देशों में रह रहा है. विश्व में सबसे अधिक आबादी इन्हीं दो देशों में है. और यहां के वासी भी प्राचीन राष्ट्र के लोग हैं जिनकी प्राचीनतम सभ्यता की कहानियाँ आज भी लोग चाव से पढ़ते हैं इन दो देशों के अलावा कोई ऐसा तीसरा देश नहीं है जो इतनी बड़ी आबादी और प्राचीनता का दावा कर सके.

इन दोनों प्राचीन राष्ट्रों के लोग शुरु से ही शांतिप्रिय रहे हैं और सदा से एक दूसरे के साथ मित्रता का व्यवहार करते आये हैं. कभी भी एक ने दूसरे पर अधिकार जमाने की कोशिश नहीं की. हाँ, "विचारों एवं सिद्धान्तों का आदान-प्रदान अवश्य होता रहा है."—(डा० सनयात सेन).

जहाँ तक बन सका दोनों राष्ट्रों ने संस्कृति और व्यवसाय का अटूट सम्बन्ध स्थापित करने का भगीरथ प्रयत्न किया है और वे सफलता के बहुत पास पहुँच चुके हैं.

4 जनवरी, सन् 1943 को पूना-स्थित 'भण्डारकर रिसर्च स्टीट्यूट' की रजत-जयन्ती के अवसर पर, अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने कहा था—"मध्य-एशिया की मरुभूमि से होकर चीन की दीवार तक व्यापारियों के यात्रा-पथ और भारतीयों की नई आबादी का पता सर ऑरिल स्टीन ने लगाया है. ईसा से पूर्व दूसरी शताब्दी के लगभग भारत की सीमा पारकर मंगोल देशों में बुद्ध-धर्म ने विस्तार पाया. कनिष्क के शासन काल से लेकर हर्ष वर्धन तक (लगभग 600 वर्षों तक) भारत एवं चीनवासियों के बीच सांस्कृतिक एकता की जड़ जमी रही. भारत आये हुए चीनी यात्रियों ने अपनी यात्रा का बहुमूल्य वृत्तान्त लिख छोड़ा है और बहुत सी बौद्ध धर्म सम्बन्धी रचनायें—जो मूलत: खो गई हैं—अनुवाद के रूप में आज भी चीन, जापान और तिब्बत की भाषाओं में सुरक्षित हैं."※

जगत प्रसिद्ध बौद्ध धर्म के ही विस्तार के कारण चीन और भारत के बीच सांस्कृतिक एकता का

※—ए० बी० ओ० आर० आई० 24:4-5 अगस्त 1943 में प्रकाशित.

چین اور بھارت کا سانسکرتک میل جول

شری ملند

دنیا کی آبادی کا آدھا حصہ ان دو وشال دیشوں میں رہ رہا ہے. وشو میں سب سے زیادہ آبادی انہیں دو ادھک دیشوں میں ہے اور یہاں کے واسی بھی پراچین راشٹر کے لوگ ہیں جن کی پراچین تم سبھیتا کی کہانیاں آج بھی لوگ چاؤ سے پڑھتے ہیں ۔ ان دو دیشوں کے علاوہ کوئی ایسا تیسرا دیش نہیں ہے جو اتنی بڑی آبادی اور پراچینتا کا دعویٰ کرسکے ۔

ان دونوں پراچین راشٹروں کے لوگ شروع سے ہی شانتی پریہ رہے ہیں اور سدا سے ایک دوسرے کے ساتھ مترتا کا ویوہار کرتے آئے ہیں ۔ کبھی بھی ایک نے دوسرے پر ادھیکار جمانے کی کوشش نہیں کی ۔ ہاں ''وچاروں ایوم سدھانتوں کا آدان پردان اوشیہ ہوتا رہا ہے''—(ڈاکٹر سنیات سین) ۔

جہاں تک بن سکا دونوں راشٹروں نے سنسکرتی اور ویوسائے کا اٹوٹ سمبندھ استھاپت کرنے کا بھگیرتھ پریتن کیا ہے اور وے سپھلتا کے بہت پاس پہونچ چکے ہیں ۔

4 جنوری سن 1943 عیسوی کو پونا استھت 'بھنڈارکر رسرچ انسٹی ٹیوٹ' کی رجت جینتی کے اوسر پر، ادھیکچھ پد سے بھاشن دیتے ہوئے سروپلی رادھا کرشنن نے کہا تھا—''مدھیہ ایشیا کی مروبھوم سے ہوکر چین کی دیوار تک ویاپاریوں کے یاترا پتھ اور بھارتیوں کی نئی آبادی کا پتہ سر آرل اسٹین نے لگایا ہے ۔ عیسیٰ سے پورو دوسری شتابدی کے لگ بھگ بھارت کی سیما پارکر منگول دیشوں میں بدھ دھرم نے وستار پایا ۔ کنشک کے شاسن کال سے لیکر ہرش وردھن تک (لگ بھگ 600 ورشوں تک) بھارت ایوم چین واسیوں کے بیچ سانسکرتک ایکتا کی جڑ جمی رہی ۔ بھارت آئے ہوئے چینی یاتریوں نے اپنی یاترا کا بہومولیہ ورتانت لکھ چھوڑا ہے اور بہت سی بودھ دھرم سمبندھی رچنائیں—جو مولتا کھو گئی ہیں—انوواد کے روپ میں آج بھی چین، جاپان اور تبت کی بھاشاؤں میں سرکشت ہیں ۔''※

جگت پرسدھ بودھ دھرم کے ہی وستار کے کارن چین اور بھارت کے بیچ سانسکرتک ایکتا کا

※—اے. بی. او. آر. آئی 24:4-5 اگست 1943 میں پرکاشت ۔

सूत्रपात हुआ. चीन में सुरक्षित ऐतिहासिक सामग्रियों (Records) से प्रमाणित है कि बौद्ध धर्म भारत से चीन में बहुत पहले गया था.* जुलाई 42 की 'हिन्दुस्तान रिव्यू' में प्रोफ़ेसर तान युन शान ने लिखा था—

سوترپات هوا. چین میں سرکشت ایتیہاسک سامگریوں (Records) سے پرمانت هے که بودھ دھرم بھارت سے چین میں بہت پہلے گیا تھا. * جولائی سن '42 کی 'هندستان رویو' میں پروفیسر تان یون شان نے لکھا تھا—

"According to the record of Chinese history, it is Yung-Ping tenth year of Minti of the Han-Dynesty, namely 674 A. D., when Budhism formally reached China for the first time."

आगे चलकर वे पुन: लिखते हैं कि "अन्य पुस्तकों से पता चलता है कि 'चीन-राज्य' (ई० पू० 246 227) से पूर्व बौद्ध-धर्म चीन पहुँच चुका था."

آگے چلکر وہ پونہ لکھتے هیں که "انیه پستکوں سے پته چلتا هے که 'شین راج' (246-227 عیسو پورو) سے پورو بودھ دھرم چین پہونچ چکا تھا."

प्रो० तान युन शान का कहना है कि चीन की प्राचीन पुस्तक LEITH-TZU में एक स्थान पर कन्फ्यूसियस कहता है—"मैंने एक ऐसे साधु पुरुष के विषय में सुन रखा है जो 'पच्छिम' में बिना क़ानून के शासन करता है. लोगों का उस पर अखण्ड विश्वास है. उसका स्वरूप इतना विराट है कि उसकी तेजस्विता के सामने कोई नहीं टिक सकता है." हम जानते हैं कि चीनी संत कन्फ्यूसियस (ई० पू० 561—478) गौतम बुद्ध (ई० पू० 560—480) का समकालीन था. पुराने ज़माने में 'पच्छिम' शब्द का प्रयोग चीनवासी भारत के लिए करते थे और उसे प्राय:'पाश्चात्य-राज्य' या 'पाश्चात्य-स्वर्ग' के नाम से पुकारा करते थे, जब कि स्वयं चीन देश के लिए 'मध्य-राष्ट्र' या स्वर्ण राष्ट्र' जैसे नाम व्यवहार में आते थे. इस प्रकार बहुत संभव है कि कंफ्यूसियस का संकेत बुद्ध और उनकी शिक्षा की ओर रहा हो. इसकी पुस्तक 'चिनलु' (Chinese Records) में लिखा है—"चिन-राज्य के राजा चेंग के शासन-काल के चौथे वर्ष में पहले पहल, अठारह बौद्ध-भिक्षु, शिन-ली-फान के नायकत्व में पच्छिम प्रांत से चीन आये और अपने संग बुद्ध की मूर्तियों के अलावा बौद्ध धर्म के ग्रंथ भी लाये." वे संभवत: ई० पू० 268 में चीन गए थे.

پرفیسر تان یون شان کا کہنا هے که چین کی پراچین پستک LEITH-TZU میں ایک استهان پر کنفیوسیس کہتا هے— "میں نے ایک ایسے سادھو پروش کے وشے میں سن رکھا هے جو 'پچھم' میں بنا قانون کے شاسن کرتا هے. لوگوں کا اس پر اکھنڈ وشواس هے. اس کا سروپ اتنا وراٹ هے که اس کے تیجسوتا کے سامنے کوئی نہیں ٹک سکتا هے." هم جانتے هیں که چینی سنت کنفیوسیس (561-478 عیسوی پورو) گوتم بدھ (560-480 عیسوی پورو) کا سمکالین تھا. پرانے زمانے میں 'پچھم' شبد کا پریوگ چین واسی بھارت کے لئے کرتے تھے اور اسے پرایه 'پاشچاتیه راجیه' یا 'پاشچاتیه سورگ' کے نام سے پکارا کرتے تھے جب که سویم چین دیش کے لئے 'مدھیه راشٹر' یا 'سوورن راشٹر' جیسے نام ویوهار میں آتے تھے. اس پرکار بہت سمبھو هے که کنفیوسیس کا سنکیت بدھ اور ان کی شکشا کی اور رها هو. اس کی پستک 'چن لو' (Chinese Records) میں لکھا هے—"چن راج کے راجا چینگ کے شاسن کال کے چوتھے ورش میں پہلے پہل' اٹھارہ بودھ بھکشو' شن - لی - فان کے نائکتو میں پچھم پرانت سے چین آئے اور اپنے سنگ بدھ کی مورتیوں کے علاوہ بودھ دھرم کے گرنتھ بھی لائے." وے سمبھوته عیسوی پورو 268 میں چین گئے تھے.

चीन के दूसरे बौद्ध-धर्म-ग्रन्थों में सामान्य उल्लेख पाये गये हैं. इन सब से हम इस नतीजे पर आ पहुंचते हैं कि चीन में बौद्ध धर्म सन् 67 से बहुत पहले पहुँचा और प्रो० तान-युन-शान के मतानुसार दोनों राष्ट्रों में सांस्कृतिक-एकता का सूत्रपात आज से दो हज़ार बरस पहले ही हो गया था.

چین کے دوسرے بودھ دھرم گرنتھوں میں سامانیه اُلیکھ پائے سمبھوته گئے هیں. ان سب سے هم اس نتیجه پر آ پہونچتے هیں که چین میں بودھ دھرم سن 67 سے بہت پہلے پہونچا اور پروفیسر تان یون شان کے متانوسار دونوں راشٹروں میں سانسکرتک ایکتا کا سوتریات آج سے دو هزار برس پہلے هی هوگیا تھا.

इस विचार से अनेक लेखक सहमत हैं कि चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार ईसवी सन् की पहली शताब्दी के पूर्व ही हो गया था. प्रो० विनय सरकार ने भी यह साबित

اِس وچار سے انیک لیکھک سہمت هیں که چین میں بودھ دھرم کا پرچار عیسوی سن کی پہلی شتابدی کے پورو هی هو گیا تھا. پروفیسر ونے سرکار نے بھی یه ثابت

*हिन्दुस्तान रिव्यू—जुलाई 42.

*هندستان ریویو جولائی 42ع

करने की पूरी कोशिश की है.❀ चाऊ काल के प्रथम-सम्राट का समकालीन अशोक था जिसके समय में चीनवासी एक नये धर्म (बौद्ध-धर्म) से परिचित भर थे. अशोक जैसे, अन्तर्राष्ट्रीय राजा के समय में बौद्ध-धर्म की गन्ध चीन भी जा पहुँची। यह बात अनैतिहासिक नहीं जान पड़ती है. इसके अलावा पता चला है कि 'हान' वंशीय (सम्राट ई० पू० 140) पश्चिमी एवं मध्य-एशिया का एक महान् अन्वेषक था. प्रो० सरकार के अनुसार 'यदि वास्तव में चीन में भारत से बौद्ध धर्म के प्रचारक नहीं गये थे तो भी इतना मानना ही पड़ेगा कि उस समय भारत और चीन के बीच बड़ी सद्भावना थी और चीनी लोग उस बौद्ध धर्म से परिचित थे.

जब चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार हो गया तब चीनी भिक्षु एवं छात्र-गण विशेष-अध्ययन के लिए भारत आये और भारत से चीन में बौद्ध-धर्म के प्रचार के लिए भिक्षुओं एवं दूतों की टोली गई. इतिहास से पता चलता है कि चीन से फ़ाहियान, हुएनसंग, इत्सिंग (67ɔ से 685 तक नालन्दा में विद्यार्थी था) जैसे, विद्वान यात्री भारत आये और भारत से कश्यप मातंग, कुमार जीव❀ एवं गुनरत्न जैसे प्रसिद्ध अनुवादक चीन गए और संस्कृत से चीनी भाषा में पहले ने लगभग 98 पुस्तकों और दूसरे ने लगभग 64 पुस्तकों का सहल अनुवाद किया. फ़ाहियान भारत आया और 15 साल बाद जब वह लौटा तब बुद्ध के रंग में वह पूरी तरह रंग गया था. बौद्ध धर्म के ग्रन्थ 'त्रिपिटिक' का प्रथम अनुवाद हुएनसंग एवं इत्सिंग ने किया था. अपने साथ चीन को हुएनसंग 567 पुस्तकों के 520 पोथे (Bundles) ले गया था जिसमें 75 पुस्तकों का अनुवाद वह कर पाया था. इत्सिंग अपने संग 400 पुस्तकें ले गया था और कुल 56 पुस्तकों का ही अनुवाद कर पाया. सभ्यता के इतिहास में ये गौरवपूर्ण काय सदा अमर रहेंगे.

फु-त्सु-ची नामक पुस्तक के तेंतालीसवें अध्याय में श्रमण ची-पी-आन ने अनुवादक समिति के जिन नौ मुख्य अंगों पर रोशनी डाली है उनका अध्ययन भी जरूरी है.❀

'प्रवासी' में प्रकाशित अपने एक लेख 'प्राचीन चीन और भारत' में श्री सुजित कुमार मुखोपाध्याय ने जिन मशहूर अनुवादकों का जिक्र किया है वे ये हैं :—

अमोघ वज्र—उत्तरी भारत का ब्राह्मण कुलीन श्रमण, जो सन् 719 ई० में चीन गया, भारत और लङ्का के शास्त्र पर लगभग 500 हस्तलिखित पुस्तकें संग्रहीत करता रहा (73½-46 ई०) और उसे चीन-सम्राट ने 'प्रज्ञाकोष' की पदवी दी.

کرنے کی پوری کوشش کی ہے.❀ چاؤکال کے پرتھم سمراٹ کا سمکالین اشوک تھا جس کے سمے میں چین واسی ایک نئے دھرم (بودھ دھرم) سے پرچت بھر تھے . اشوک جیسے' انتر راشٹری راجا کے سمے میں بودھ دھرم کی گندھ چین بھی جا پہونچی یہ بات انیتہاسک نہیں جان پڑتی ہے . اِس کے علاوہ پتہ چلا ہے کہ 'ہان' ونشی سمراٹ (عیسوی پور' 140) پچھمی ایوم مدھیہ ایشیا کا ایک مہان انویشک تھا . پروفیسر سرکار کے انوسار 'یدی واستو میں چین میں بھارت سے بودھ دھرم کے پرچارک نہیں گئے تھے تو بھی اِتنا ماننا ہی پڑے گا کہ اِس سمے بھارت اور چین کے بیچ بڑی سدبھاؤنا تھی اور چینی لوگ اِس سمے بودھ دھرم سے پرچت تھے.

جب چین میں بودھ دھرم کا پرچار ہو گیا تب چینی بھکشو ایوم چھاتر گنز وشیش آدھین کے لئے بھارت آئے اور بھارت سے چین میں بودھ دھرم کے پرچار کے لئے بھکشوؤں ایوم دوتوں کی ٹولی گئی . اِتہاس سے پتا چلتا ہے کہ چین سے فاہیان' ہوئینسانگ' اتسنگ (جو 675 سے 685 تک نالندا میں ودیارتھی تھا) جیسے ودوان یاتری بھارت آئے اور بھارت سے کشیپ ماتنگ' کمارجیو❀ جو ایوم گن رتن جیسے پرسدھ انوادک چین گئے اور سنسکرت سے چینی بھاشا میں پہلے نے لگ بھگ 98 پستکوں اور دوسرے نے لگ بھگ 64 پستکوں کا سہل انواد کیا . فاہیان بھارت آیا اور 15 سال بعد جب وہ لوٹا تب بدھ کے رنگ میں وہ پوری طرح رنگ گیا تھا . بودھ دھرم کے گرنتھ ترپٹک' کا پرتھم انواد ہیونسانگ ایوم اتسنگ نے کیا تھا . اپنے ساتھ چین کو ہیونسنگ 567 پستکوں کے 520 پوتھے (Bundles) لے گیا تھا جس میں سے 75 پستکوں کا انواد وہ کر پایا تھا . اتسنگ اپنے سنگ 400 پستکیں لے گیا تھا اور کل 56 پستکوں کا ہی انوواد کر پایا . سبھیتا کے اِتہاس میں یہ گورو پورن کاریہ سدا امر رہینگے .

فو. تسو. چی نامک پستک کے تینتالیسویں ادھیائے میں شرمنز چی. پی. ان نے انوادک سمتی کے جن نومکھیہ انگوں پر روشنی ڈالی ہے ان کا ادھین بھی ضروری ہے .❀

'پرواسی' میں پرکاشت اپنے ایک لیکھ 'پراچین چین اور بھارت' میں شری سوجیت کمار مکھوپادھیائے نے جن مشہور انوادکوں کا ذکر کیا ہے وے یہ ہیں .

اموگھ وجر—اتری بھارت کا براہمن کلین شرمنز' جو 719ع میں چین گیا' بھارت اور لنکا کے شاستر پر لگ بھگ 500 ہست لکھت پستکیں سنگرہت کرتا رہا (732-46) اور اِسے چین سمراٹ نے 'پرگیا کوش' کی پدوی دی .

❀—देखिए चाइनीज रिलिजन थ्रू हिन्दू आइज—सन् 1919 में शंघाई से प्रकाशित.

دیکھئے چائنیز ریلیجن تھرو ھندو آئیز—1919ع میں شنگھائی سے پرکاشت .

§—'प्रवासी'—ब० सं० 1350 ज्येष्ठ अंक, देखिये पृष्ठ संख्या 96-103.

'پرواسی'—بنگلا سن 1350 جیٹھ انک . دیکھئے پرشٹھ سنکھیا 103-96 .

त्रिपिटक-महन्त' की भी उपाधि इसे मिली. इसकी लगभग 108 पुस्तकों (अनुवाद सहित) का पता चला है.

आन-शि-काओ—सन् 148 में यह पार्थियन-युवराज राज-त्याग कर चीन गया. सूत्रों का चीनी भाषा में अनुवाद किया. इसने लगभग 55 पुस्तकें लिखी हैं.

इत्सिंग—चीनी श्रमण ने 671 ई० में चीन छोड़ा. तीसेक देश-भ्रमण कर 695 ई० में देश लौटा और अपने संग 400 के लगभग पुस्तकें लाया और सन 713 ईसवी में मरा. इसने त्रिपिटक का शेष अनुवाद किया. इसकी क़रीब 56 अनूदित पुस्तकें मिलती हैं.

उ-लो-छा—खोतान के भिक्षु ने चु-शु-त्यान से मिल कर एक सूत्र का अनुवाद किया.

उपशून्य—(538-568 ई०) मध्य भारत में इस राजकुमार की पांचेक पुस्तकें मिलती हैं जिनमें विमल कीर्ति-निर्देश बहुत प्रसिद्ध है.

कश्यप मातंग—सन् 67 में भिक्षुओं की टोली ले चीन गया, बौद्ध धर्म का प्रचार किया, मध्य भारत के ब्राह्मण कुल में जन्म ले, चीन के 'श्वेत मठ' में मरा.

कुमार जीव—परम्परागत मंत्रियों के कुल का एक भारतीय श्रमण जो सन् 383 में चीन गया और जिसने सन् 412 तक लगभग 98 पुस्तकों का अनुवाद किया. चीन में 3000 से ज्यादा उसके शिष्य थे. संभवत: 415 ई० में वह मरा. लगभग 50 पुस्तकें मिलती हैं.

गौतम धर्मज्ञान या धर्मप्रज्ञा—बनारस के गौतम प्रज्ञा रुचि का बड़ा लड़का जो 577 ई० में उत्तरी-चाओ राजकुमार के अधीन एक जिला का 'लाट' बनाया गया. एक पुस्तक उसने लिखी है.

गौतम प्रज्ञा रुचि—(538—543 ई०) बनारस का ब्राह्मण, इसकी 13 पुस्तकें मिलती हैं.

गौतम संघदेव—काबुल का श्रमण, जो सन् 382 में चीन गया. इसकी चार पुस्तकें मिलती हैं.

गुनभद्र—ब्राह्मण कुलीन भारतीय श्रमण जो महायान बौद्ध-धर्म से पूर्ण-परिचित था, सन् 435 में चीन गया, सन् 443 तक अनुवाद करता रहा, 75 वर्ष की अवस्था में सन् 468 में मरा.

गुनरत्न—भारतीय श्रमण, 64 पुस्तकों का अनुवादक.

चु-शु-ला—चीन में पैदा हुआ, 52 पुस्तकों का अनुवाद किया. एक भी नहीं मिलती.

दिवाकर—भारतीय श्रमण (676-688 ई०), 19 पुस्तकों का प्रणेता, सभी प्राप्त हैं.

दानपाल—यह भारतीय श्रमण सन् 980 में चीन गया. चीन-सम्राट द्वारा प्रतिष्ठित. 777 पुस्तकें लिखीं.

ترپٹک مہنت' کی بھی اپادھی اسے ملی . اس کی لگ بھگ 108 پستکوں (انوواد سہت) کا پتا چلا ھے .

آن شی. کاؤ—سن 148 میں یہ پارتھین یو راج راج تیاگ کو چین گیا . سوتروں کا چینی بھاشا میں انوواد کیا . اس نے لگ بھگ 55 پستکیں لکھی ھیں .

اِت سنگ—چینی شرملترنے 671ع میں چین چھوڑا . تیس ایک دیش بھرمن کر کے 695ع میں دیش لوٹا اور اپنے سنگ 400 کے لگ بھگ پستکیں لایا اور 713ع میں مرا . اس نے تری پٹک کا شیش انوواد کیا . اس کی قریب 56 پستکیں ملتی ھیں .

او. لو. چھا.—خوتن کے بھکشو نے چو. شو. تیان سے مل انودت کر ایک سوترکا انوواد کیا .

اپ شونیہ—(538-568ع) مدھیہ بھارت میں اِس راجکمار کی پانچ ایک پستکیں ملتی ھیں جن میں وِمل کیرتی۔ نردیش بہت پرسدھ ھے .

کشیپ ماتنگ—سن 67 میں بھکشوؤں کی ٹولی لے چین گیا' بودھ دھرم کا پرچار کیا' مدھیہ بھارت کے براھمن کل میں جنم لے' چین کے 'شویت مٹھ' میں مرا .

کمار جیو—پرمپراگت منتریوں کے کل کا ایک بھارتی شرمنز جو 3838 سن میں چین گیا اور جس نے 12 4تک لگ بھگ 98 پستکوں کا انوواد کیا . چین میں 3000 سے زیادہ اِس کے ششیہ تھے . سمبھوتہ 415ع میں وہ مرا. لگ بھگ 50 پستکیں ملتی ھیں .

گوتم دھرم گیان یا دھرم پر گیا—بنارس کے گوتم پرگیاروچی کا بڑا لڑکا جو 577ع میں اُتری - چاؤ راجکمار کے ادھین ایک ضلع کا 'وت' بنایا گیا . ایک پستک اس نے لکھی ھے .

گوتم پرگیاروچی—سن(538-543ع) بنارس کا براھمن' اس کی 13 پستکیں ملتی ھیں .

گوتم سنگھ دیو—کابل کا شرمنز' جو سن 382ع میں چین گیا . اس کی چار پستکیں ملتی ھیں .

گن بھدر—براھمن کلین بھارتیہ شرمنز جو مہایان بودھ دھرم سے پورن پرچت تھا' سن 435ع میں چین گیا' سن 443ع تک انوواد کرتا رھا' 75 ورش کی اوستھا میں سن 468 میں مرا .

گن رتن—بھارتیہ شرمنز' 64 پستکوں کا انووادک .

چو - شو - لا—چین میں پیدا ھوا . 52 پستکوں کا انوواد کیا . ایک بھی نہیں ملتی .

دیواکر—بھارتیہ شرمنز (676-688ع) 19 پستکوں کا پرنیتا' سبھی پراپت ھیں .

دان پال—یہ بھارتیہ شرمنز سن 980ع میں چین گیا . چین سمراٹ دوارا پرتشٹھت . 777 پستکیں لکھیں .

देव—जालंधर (काश्मीर) का श्रमण, सन् 980 में चीन गया, बीस वर्षों तक अनुवाद-कार्य करता रहा, सन् 1000 में मरा. 18 पुस्तकें लिखीं.

धर्मदेव—नालन्दा विहार का वह श्रमण (973-1001 ई०) जिसे चीन-सम्राट ने 'महाधर्माचार्य' के उपनाम से विभूषित किया. 118 प्राप्त पुस्तकों का लेखक.

धर्मकला—सन् 222 में यह भारती भिक्षु चीन गया, सन् 250 में 'प्रति मोक्ष' का अनुवाद किया जिसकी प्रति खो गई है.

धर्मनन्दी—सन् 384 में यह श्रमण चीन गया, पांच पुस्तकों का अनुवाद किया जिनमें दो मिलती हैं.

धर्म प्रिय—इस भारतीय श्रमण ने केवल एक ही सूत्र का अनुवाद किया.

धर्म रक्षा—गोवर्धन या भरत के नाम से भी प्रसिद्ध, विनय में पटु, भारतीय श्रमण, कश्यप-मातंग के बाद चीन गया, मिल-जुलकर पांचेक पुस्तकों का अनुवाद किया.

धर्म रक्षा—(266-377 ई०) 36 भाषाओं का पंडित, अनेक पुस्तकों का लेखक जिनमें 90 मिलती हैं.

धर्म रक्षा—सन् 414 ई० में यह भारतीय श्रमण चीन गया, सन् 421 तक अनुवाद कार्य करता रहा, जिनमें एक दर्जन के लगभग पुस्तकें मिलती हैं. 49 वर्ष की अवस्था में मिथ्या सन्देह पर मार डाला गया.

धर्म रक्षा—मगध का यह भारतीय श्रमण सन् 1004 में चीन गया और मौत तक अनुवाद कार्य करता रहा. सम्राट द्वारा प्रतिष्ठित हुआ, 96 वर्ष की अवस्था में मरा. दर्जनों पुस्तकें लिखीं.

धर्म रुचि—भारतीय श्रमण, (501-507 ई०), इसकी दो पुस्तकें मिलती हैं.

धर्म विक्रम या धर्मासुर—चीनी भिक्षु 15 मित्रों के संग सन् 420 में भारत आया. इसने सन् 453 में देश लौटने के पहले एक पुस्तक का अनुवाद किया.

नरेन्द्र व्यास—भारतीय श्रमण, (557-589 ई०), 15 पुस्तकें मिलती हैं,

परमार्थ—गुनरत्न एवं कुलनाथ के नाम से भी प्रसिद्ध, उज्जैन का यह श्रमण, 548 ई० में चीन गया. इसने 557-569 ई० के अन्दर 40 पुस्तकों का अनुवाद किया जिनमें 32 मिलती हैं. 71 वर्ष की उम्र में सन् 569 में वह मरा। उसके अनुवादों में अश्वघोष की दो पुस्तकें, और आचार्य वसुबन्धु का जीवन चरित प्रमुख हैं.

प्रभाकर मित्र—(557-589 ई०), केवल तीन पुस्तकें इस भारतीय श्रमण की मिलती हैं ।

प्रज्ञा—(785-810 ई०), काबुल का श्रमण, पुस्तकें नहीं मिलतीं.

دیو—جالندھر (کشمیر) کا شرمنڑ سن 980 میں چین گیا' بیس برسوں تک انوواد کاریہ کرتا رہا ۔ سن 1000 میں مرا ۔ 18 پستکیں لکھیں ۔

دھرم دیو—نالنداوہار کا یہ شرمنڑ (973-1001) جسے چین سمراٹ نے 'مہادھرماچاریہ' کے اُپ نام سے وبھوشت کیا ۔ 118 پراپت پستکوں کا لیکھک ۔

دھرم کلا—سن 222ع میں بھارتیہ بھکشو چین گیا' سن 250ع میں 'پرتی موکشھ' کا انوواد کیا جس کی پرتی کھو گئی ہے ۔

دھرم نندی—سن 384 میں یہ شرمنڑ چین گیا' پانچ پستکوں کا انوواد کیا جن میں دو ملتی ہیں ۔

دھرم پریہ—اس بھارتیہ شرمنڑ نے کیول ایک ہی سوتر کا انوواد کیا ۔

دھرم رکشا—گوبردھن یا بھرت کے نام سے بھی پرسدھ' ونئے میں پٹو' بھارتیہ شرمنڑ' کشیپ ماتنگ کے بعد چین گیا' مل جل کر پانچ ایک پستکوں کا انوواد کیا ۔

دھرم رکشا (266-377) 36 بھاشاؤں کا پنڈت' انیک پستکوں کا لیکھک جن میں 90 ملتی ہیں ۔

دھرم رکشا—سن 414ع میں یہ بھارتیہ شرمنڑ چین گیا' سن 421ع تک انوواد کاریہ کرتا رہا جن میں ایک درجن کے لگ بھگ پستکیں ملتی ہیں ۔ 49 برس کی اوستھا میں متھیا ابھیوگ کے سندیہہ پر مار ڈالا گیا ۔

دھرم رکشا—مگدھ کا یہ بھارتیہ شرمنڑ سن 1004ع میں چین گیا اور موت تک انوواد کاریہ کرتا رہا. سمراٹ دوارا پرتشٹھت ہوا ۔ 96 برس کی عمر میں مرا ۔ درجنوں پستکیں لکھیں ۔

دھرم روچی—بھارتیہ شرمنڑ (501-507ع)' اس کی دو پستکیں ملتی ہیں ۔

دھرم وکرم یا دھرماسر—چینی بھکشو ۔ 15 متروں کے سنگ سن 420 میں بھارت آیا ۔ اس نے سن 453ع میں دیش لوٹنے کے پہلے ایک پستک کا انوواد کیا ۔

نریندر ویاس—بھارتیہ شرمنڑ (557-589) اس کی 15 پستکیں ملتی ہیں ۔

پرمارتھ—گن رتن ایوم کل ناتھ کے نام سے بھی پرسدھ ۔ اجین کا یہ شرمنڑ سن 544ع میں چین گیا ۔ اس نے سن 557-569ع کے اندر 40 پستکوں کا انوواد کیا جن میں 32 ملتی ہیں ۔ 71 برس کی عمر میں سن 569ع میں وہ مرا ۔ اس کے انوادوں میں اشوگھوش کی دو پستکیں اور آچارج بسو بندھو کا جیون چرت پرمکھ ہیں ۔

پربھاکر متر—(557-589ع) کیول تین پستکیں اس بھارتیہ شرمنڑ کی ملتی ہیں ۔

پرگیا—(785-790)' کابل کا شرمنڑ' پستکیں نہیں ملتیں۔

प्रमिति—भारतीय श्रमण (705 ई०), इसकी एक पुस्तक मिलती है.

फाहियान—प्रसिद्ध चीनी भिक्षु, सन् 399 में बुद्धभद्र के साथ साथ उसने अनेक पुस्तकें लिखीं. उसकी पुस्तकों में केवल चार मिलती हैं. 86 वर्ष की अवस्था में वह मरा.

बोधी रुचि—उत्तरी भारत का श्रमण जो सन् 508 में चीन गया. अनूदित ग्रंथों में लगभग तीस मिलते हैं.

बोधी रुचि कश्यप—ब्राह्मण कुलीन, दक्षिण भारतीय श्रमण, पूर्व नाम धर्म रुचि था, (684-705 ई०), 53 ग्रंथों का अनुवाद किया जिनमें 41 मिलते हैं. ऐसा विश्वास किया जाता है कि वह 156 वर्ष की उम्र में मरा.

बुद्ध भद्र—भारतीय श्रमण, चीनी भाषा में 15 पुस्तकों का अनुवाद किया. कुमार जीव से वह परिचित था, 91 साल की उम्र में सन् 429 में मरा.

बुद्धशांत—इस भारतीय श्रमण की (524-509 ई०) 9 पुस्तकें मिलती हैं.

मैत्रेय भद्र—मगध का भारतीय श्रमण, लिआ-ओ शाखा के राजा का यह गुरु था (907-1125 ई०), 5 पुस्तकों का लेखक.

रत्न मति—भारतीय श्रमण, (508 ई०) दो पुस्तकों का लेखक.

रत्न-चिन्ता—एक श्रमण, (693-727 ई०) काश्मीर निवासी, सात पुस्तकों का अनुवादक. सौ वर्ष जिया.

वज्र बोधी—ब्राह्मण कुलीन, दक्षिण भारतीय श्रमण, सन् 719 में चीन गया और वहीं 71 वर्ष की अवस्था में मरा. 11 पुस्तकों का लेखक.

वाष्प—तिब्बत का श्रमण, कुबलाई खाँ का सलाहकार इसने सन् 1269 में मंगोलियन भाषा की रूप रेखा तैयार की.

संघ वर्मन—(506-520 ई०) श्याम देशीय श्रमण, 9 ग्रंथों का अनुवादक.

सुभाकर सिंह—भारतीय श्रमण, नालान्दा बिहार से सन् 716 में चीन गया, सन् 815 में 99 वर्ष की अवस्था में मरा. 5 पुस्तकों का लेखक.

हुई-ची (प्रज्ञा)—भारतीय श्रमण, चीन में पैदा हुआ, पिता ब्राह्मण थे, सन् 692 में एक पुस्तक का अनुवाद किया जो मिलती है.

ज्ञानगुप्त—(561—600 ई०) गांधार का श्रमण, 38 पुस्तकों का लेखक, सभी मिलती हैं. 98 वर्ष की अवस्था में मरा.

ज्ञान श्री—सन् 1053 में यह भारतीय श्रमण चीन गया. दो प्राप्त पुस्तकों का लेखक.

इनके अलावा भारत से चीन जाने वाले कुछ लोगों का पता राधाकृष्णन् के 'इंडिया ऐंड चाइना' से चलता है. खास लोगों में, संघभूमि (381 ई०), गौतम संघदेव (384 ई०) पुण्य मत और उनका शिष्य धर्मोशाय (397 ई०), बुद्धाशय (चौथी शताब्दी), विमलाक्ष (406 ई०), धर्मक्षेम (414 ई०

پرمتی—بھارتیہ شرمنز (705ع)' اس کی ایک پستک ملتی هے .

فاهیان—پرسدھ چینی بھکشو' سن 399 میں بدھ بھدر کے ساتھ‌ساتھ اس نے انیک پستکیں لکھیں . اس کی پستکوں میں کیول چار ملتی هیں . 86 برس کی اوستھا میں وہ مرا .

بودھی روچی—اُتری بھارت کا شرمنز جو سن 508ع میں چین گیا. انودت گرنتھوں میں لگ بھگ تیس ملتے هیں.

بودھی روچی کشیپ—براهمن کلین دکھن' بھارتیہ شرمنز' پوروـنام دھرم روچی تھا (684-705). 53 گرنتھوں کا انوواد کیا جن میں 41 ملتے هیں . ایسا وشواس کیا جاتا هے کہ وہ 156 ورش کی عمر میں مرا .

بدھ بھدر—بھارتیہ شرمنز' چینی بھاشا میں 15 پستکوں کا انوواد کیا . کمار جیو سے وہ پرچت تھا' 91 سال کی عمر میں سن 429 میں مرا .

بدھ شانت—اس بھارتیہ شرمنز کی (524-539ع) 9 پستکیں ملتی هیں .

متریہ بھدر—مگدھ کا بھارتیہ شرمنز' لی آؤ شاکھا کے راجا کا یہ گرو تھا (907-1125ع) 5 پستکوں کا لیکھک .

رتن متی—بھارتیہ شرمنز (508ع) دو پستکوں کا لیکھک.

رتن چنتا—ایک شرمنز (693-727) کاشمیر نواسی' سات پستکوں کا انووادک' 100 برس سو جیا .

وجر بودھی—براهمن کلین' دکھن بھارتیہ شرمنز' سن 719ع میں چین گیا اور وهیں 71 برس کی اوستھا میں مرا. 11 پستکوں کا لیکھک .

واشپ—تبت کا شرمنز' قبلئی خان کا صلاحکار' اس نے سن 1269ع میں منگولین بھاشا کی روپ ریکھا تیار کی .

سنگھ ورمن—(506-520) شیام دیشی شرمنز' 9 گرنتھوں کا انووادک .

سبھاکر سنگھ—بھارتیہ شرمنز' نالندا وهار سے سن 716ع میں چین گیا' سن 815 میں 99 ورش کی اوستھا میں مرا . پانچ پستکوں کا لیکھک .

هوئی - چی (پرگیا)—بھارتیہ شرمنز' چین میں پیدا هوا' پتا براهمن تھے' سن 692ع میں ایک پستک کا انوواد کیا جو ملتی هے .

گیان گپت—(561-600) گاندھار کا شرمنز' 38 پستکوں کا لیکھک' سبھی ملتی هیں . 78 ورش کی عمر میں مرا .

گیان شری—سن 1053 میں یہ بھارتیہ شرمنز چین گیا. دو پراپت پستکوں کا لیکھک .

ان کے علاوہ بھارت سے چین جانے والے کچھ لوگوں کا پتہ رادھا کرشنن کے 'انڈیا اینڈ چائنا' سے چلتا هے . خاص لوگوں میں سنگھ بھوتی (381ع)' گوتم سنگھ دیو (384ع)' پنیہ مت اور ان کا ششیہ دھرماشے (397)' بدھاشے (چوتھی شتابدی)' وملاکش سن (406ع) دھرم چھیم (414ع)'

बुद्ध जीव (423 ई०), गुण-वर्म (431 ई०), बोध धर्म (520 ई०), विमोक्ष सेन (541 ई०) एवं धर्मगुप्त (590 ई०) विशेष-उल्लेखनीय हैं.*

उपर्युक्त अनुवादक न केवल चीन और भारत के ही श्रमण या गृहस्थ थे. बल्कि गांधार, खोतान, तिब्बत, श्याम और सुदूर लङ्का तक के निवासी थे. बौद्ध-धर्म से सम्बन्ध रखने वाले ग्रंथों के अनुवाद के अलावा भारतीय संस्कृति के ग्रंथ भी अनुवादित हुए थे. अनूदित ग्रन्थों में दो विशेष महत्व के हैं—(१) स्वर्ण सप्तती शास्त्र और (2) वैशेषिक दश पदार्थ शास्त्र. पहली पुस्तक 'सांख्य-करिका' की टीका है और दूसरी कणाद के वैशेषिक दर्शन पर लिखी गई है.※

जे. एच. कजिन्स ने एक स्थान पर लिखा है—'अशोक के समय में, चीन और भारत में, आपसी सांस्कृतिक एकता फल फूल रही थी. भारत के पुरोहित और कलाकार चीन में आश्रय पाते थे. एक समय राजधानी लो-यांग में तीन हजार भारतीय यात्रियों के अलावा दस हजार भारतीय परिवार जीवन-यापन करते थे. ये अपने संग अजन्ता और एलौरा की चित्र-कला के आदर्श ले गए थे. इन्होंने ही चीनियों को लिपि-ज्ञान कराया. बौद्ध धर्म के साथ-साथ भारतीय कला एवं विद्या चीन पर ई० पू० पहली शताब्दी में ही अपना प्रभाव जमा गई.

"चीन में बौद्ध-कला से हिन्दू कला गले से गले मिली. नतीजा यह हुआ कि भारतीय शैली बदलकर चीनी हो गयी........".†

बौद्ध-धर्म के 'सत्य' का स्वागत चीनवासियों ने खुले दिल से किया. चीन की विचारधारा के साथ जब भारत की सांस्कृतिक धारा मिल गयी, तब एक नये चीन देश का जन्म हुआ जिसका अस्तित्व आज तक है. चीन पर भारतीय अध्यापकों का कैसा प्रभाव पड़ा है इसका परिचय, इन शब्दों में मिलता है—"चीन पहले बौद्ध मिशनरियों को नहीं भूल सकता. अनुवाद और प्रचार के अति कठिन काम को उन्होंने बड़ी सच्चाई, ईमानदारी और सफलता के साथ किया".‡

तीसरी शताब्दी मध्यकाल में (इत्सिंग के अनुसार) चीन से बीसेक सन्यासी भारत आये थे जिनके लिए किसी गुप्त-सम्राट' ने बोध गया के पास एक 'चीन-संघाराम'

بدھ جیو (423ع) گنرورم (431ع) بودھی دھرم (520ع) وموکش سین (541ع) ایوم دھرم گپت سن (590ع) وشیش اُلیکھنیہ ھیں.*

اُپریوکت انوواک نہ کیول چین اور بھارت کے ھی شرمن یا گرھستھ تھے بلکہ گاندھار، خوطن، تبت، شیام اور سدور للکا تک کے نواسی تھے۔ بودھ دھرم سے سمبندھ رکھنے والے گرنتھوں کے انوواد کے علاوہ بھارتیہ سنسکرتی کے گرنتھ بھی انوادت ہوئے۔ انودت گرنتھوں میں دو وشیش مہتو کے ھیں (1) سورن سپتتی شاستر اور (2) ویشیشک دس پدارتھ شاستر۔ پہلی پستک 'سانکھ کاریکا' کی ٹیکا ھے اور دوسری کنّاد کے ویشیشک درشن پر لکھی گئی ھے.※

جے. ایچ کزنس نے ایک استھان پر لکھا ھے—'اشوک کے سمے میں 'چین اور بھارت میں' آپسی سانسکرتک ایکتا پھل پھول رھی تھی۔ بھارت کے پروھت اور کلاکار چین میں آشرے پاتے تھے۔ ایک سمے راجدھانی لو-یانگ میں تین ہزار بھارتیہ یوگیوں کے علاوہ دس ہزار بھارتیہ پریوار جیون یاپن کرتے تھے۔ یہ اپنے سنگ اجنتا اور ایلورا کی چترکلا کے آدرش لے گئے تھے۔ انہوں نے ھی چینیوں کو لپی گیان کرایا۔ بودھ دھرم کے ساتھ ساتھ بھارتیہ کلا ایوم ودیا چین پر عیسوی پورو پہلی شتابدی میں ھی اپنا پربھاؤ جما گئی۔

"چین میں بودھ کلا سے ھندو کلا گلے سے گلے ملی. نتیجہ یہ ھوا کہ بھارتیہ شیلی بدل کر چینی ھوگئی........"†

بودھ دھرم کے ستیہ کا سواگت چین واسیوں نے کھلے دل سے کیا. چین کی وچار دھارا کے ساتھ جب بھارت کی سانسکرتک دھارا مل گئی تب ایک نئے چین دیش کا جنم ھوا جس کا استتو آج تک ھے۔ چین پر بھارتیہ ادھیاپکوں کا کیسا پربھاؤ پڑا ھے اس کا پریچے' ان شبدوں میں ملتا ھے—"چین پہلے بودھ مشنریوں کو نہیں بھول سکتا۔ انوواد اور پرچار کے اتی کٹھن کام کو انہوں نے بڑی سچائی' ایمانداری اور سپھلتا کے ساتھ کیا."‡

تیسری شتابدی کے مدھیہ کال میں (اِتسنگ کے انوسار) چین سے بیس ایک سنیاسی بھارت آئے تھے جن کے لئے کسی 'گپت سمراٹ' نے بودھ گیا کے پاس ایک 'چین سنگھارام'

*—राधा कृष्णन्—इण्डिया ऐंड चाइना, पृष्ठ 27.

رادھا کرشنن - انڈیا اینڈ چائنا پرشٹھ 27 .

※—एस. सी. गुहा—'इन्डो-चाइनीज़ कान्टिनिटी थ्रू एजेज़'—जे. बी. एच. यू. भाग 89 पृष्ठ 21.

ایس. سی. گوھا—'انڈو چائنیز کانٹی نیوٹی تھرو ایجیز' جے. بی. ایچ یو. بھاگ 89 پرشٹھ 21 .

†—जे. एच. कजिन्स—दी कल्चरल युनिटी ऑफ एशिया, खण्ड दो, पृष्ठ 77.

جے. ایچ. کزنس—دی کلچرل یونٹی آف ایشیا . کھنڈ دو پرشٹھ 77 .

‡—रीकेल्ट (Reichelt)—ट्रू य ऐण्ड ट्रैडिशन इन चाइनीज़ बुद्धिज्म.

ریکلٹ (Reichelt) ٹروتھ اینڈ ٹریڈیشن ان چائنیز بدھ ازم .

बनवा दिया था. इनके अलावा फे-मांग (404-424 ई०), सु'ग-युन (530 ई०), वांग-हुएन-सो (634-647 ई०) आदि की भारत-यात्रा भी कम महत्वपूर्ण नहीं है.*

आम तौर पर चीन में बौद्ध धर्म ग्रन्थों को लोग 'त्रिपिटिक' के नाम से जानते हैं जिसमें केवल 'विनय' 'अभिधम्म' और 'सूत्र' ही हैं. 'चीनी त्रिपिटक' से ऐसा भास होता है कि चीनी भाषा में विभिन्न धर्म-ग्रन्थ सुरक्षित हैं. अभी हाल में जापान से ताई-शाओ नामक चीनी त्रिपिटक का एक नया संस्करण निकला है जिसमें 2184 सूत्र हैं. पहले संस्करणों में 2278 सूत्रों का पता चला है, पर खो जाने के कारण अब केवल 2184 सूत्र ही बच रहे हैं. इतिहास साक्षी है कि बौद्ध धर्म के विरुद्ध होने के कारण दो-एक चीनी सम्राटों ने बहुत-से मठ जला दिये थे जहाँ बहुमूल्य पुस्कें संग्रहीत थीं.

भारत के इन दो स्थानों, (1) चीन भवन, विश्वभारती, शांतिनिकेतन (2) मूल गंध कुटी विहार, सारनाथ, में निम्नांकित चीनी-त्रिपिटकों के संस्कर देखे जा सकते हैं—(क) सुंग शाखा का संस्करण (960-1276 ई०). जिसे ट्रेगन एडीशान भी कहते हैं, (ख) चिंग-शाखा का संस्करण (1644-1911 ई०) और (ग) संघाई संस्करण एक पूरक (Supplement) सहित. (क) में 1921, (ख) में 1666 और (ग) में 1916 रचनाओं का पता पूरक के साथ चलता है.

एक चीनी बौद्ध विद्वान लु-चेंग के मुताबिक चीनी-त्रिपिटक के 16 संस्करण हुए हैं—4 सुंग शाखा में 5 युनान-शाखा में, 1 मिंग शाखा में, 4 चिंग शाखा में और 2 वर्तमान प्रजातंत्र शाखा में.

भारतीय-संस्कृति का प्रभाव चीनवासियों के जीवन के हर अंगों पर समान रूप से पड़ा है—यह ध्यान में रखने योग्य है. साहित्य में गद्य एवं पद्य के क्षेत्र में, चिन-राज्य, (265-423 ई०) और थांग-राज्य (618-907 ई०) ने कमाल कर दिखाया है. आगे चलकर मिंग-शासन में (1368-1643 ई०) दार्शनिक रचनाओं का विकाश हुआ.

थान-शासन काल में शोन-वेन नामक एक बौद्ध भिक्षु ने संस्कृत में वर्णित भारतीय लिपि शास्त्र के आधार पर चीनी लिपि को सुधार कर छोटा रूप (36 वर्णों का) दिया. पर खेद की बात है कि यह वर्णमाला जन साधारण के बीच पनप न सकी.

بنوا دیا تھا. ان کے علاوہ فے - مانگ سن 404-434ع' سونگ یون سن 530ع' وانگ ھوین سو سن 634-647ع آدمی کی بھارت یاترا بھی کم مہتوپورنز نہیں ھے .

عام طور پر چین میں بودھ دھرم گرنتھوں کو لوگ 'تریتک' کے نام سے جانتے ھیں جس میں کیول وینے' . 'ابھی دھمم' اور سوتر ھی ھیں. 'چینی تریتک' سے ایسا بھاس' ھوتا ھے کہ چینی بھاشا میں وبھن دھرم گرنتھ سورکشت ھیں . ابھی حال میں جاپان سے تائی شاؤ نامک چینی تریتک کا ایک نیا سنسکرن نکلا ھے جس میں 2184 سوتر ھیں . پہلے سنسکرنوں میں 2278 سوتروں کا پتا چلا ھے' پر کھو جانے کے کارن اب کیول 2184 سوترھی بچ رھے ھیں . اِتہاس ساکشی ھے کہ بودھ دھرم کے وِرودھ ھونے کے کارن دو ایک چینی سمراٹوں نے بہت سے مٹھ جلا دیئے تھے جہاں بہومولیہ پستکیں سنگرھیت تھیں .

بھارت کے اِن دو استھانوں' (1) چین بھون وشو بھارتی شانتی نکیتن (2) مول گندھ کوٹی وھار' سار ناتھ میں نمنانکت چینی تریٹکوں کے سنسکرن دیکھے جا سکتے ھیں—(کا) سنگ شاکھا کا سنسکرن (960-1276ع) جسے تریگن ایڈیشن بھی کہتے ھیں' (کھ) چنگ شاکھا کا سنسکرن (1644-1911ع) اور (گا) سنگھائی سنسکرن ایک پورک (Supplement) سہت . (کا) میں 1921 (کھ) میں 1666 اور (گا) میں 1916 رچناؤں کا پتہ پورک کے ساتھ چلتا ھے .

ایک چینی بودھ ودوان لوچینگ کے مطابق چینی تریتک کے 16 سنسکرن ھوئے ھیں . 4 سنگ شاکھا میں' 5 یونان شاکھا میں' منگ شاکھامیں' 4 چنگ شاکھا میں اور 2 ورتمان پرجاتنتر شاکھا میں .

بھارتیہ سنسکرتی کا پربھاو چین واسیوں کے جیون کے ھر انگوں پر سمان روپ سے پڑا ھے—یہ دھیان میں رکھنے یوگیہ ھے. ساھتیہ میں گدیہ ایوام پدیہ کے چھیتر میں چن راجیہ (265-423ع) اور تھانگ راجیہ (618-907ع) نے کمال کر دکھایا ھے. آگے چلکر ملگ شاسن میں (1368-1643ع) دارشنک رچناؤں کا وکاس ھوا .

تھان شاسن کال میں شون وین نامک ایک بودھ بھکشو نے سنسکرت میں ورنت بھارتیہ لپی شاستر کے آدھار پر چینی لپی کو سدھار کر چھوٹا روپ (36 ورنوں کا) دیا . پر کھید کی بات ھے کہ یہ ورن مالا جن سادھارن کے بیچ پنپ نہ سکی .

*राधा कृष्णन्—इण्डिया ऐण्ड चाइना, पृष्ठ 26-29 तथा पृष्ठ 12-13.

رادھا کرشنن—انڈیا اینڈ چائنا پرشٹھ 26-29 اور پرشٹھ 12-13 .

ललित कलाओं—मूर्तिकला, वास्तु कला आदि पर आज भी, चीन के पैगोडा आदि को देखने पर * भारतीय असर साफ़ साफ़ दिखाई देता है.

भारत के प्राचीन साहित्य की ओर, ख़ासकर संस्कृत साहित्य की ओर नज़र डालें तो सहज में ही पता चल जायगा कि हर जगह चीन के बारे में बयान भरे पड़े हैं. रामायण और महाभारत में चीनवासियों का ज़िक्र है. रामायण का एक उदाहरण लीजिये—

चीनान् परचीनांश्च तुखारान बर्बरानपि।
काञ्चनैः कमलैश्चैव काम्बोजानपि संवृतान् ॥❀

महाभारत में चीनवासियों का वर्णन बहुत बार आया है. उदाहरण के लिए हम 'आदि पर्व' और 'सभा पर्व' के पन्ने उलट सकते हैं. सभा पर्व में एक जगह हम ऐसा वर्णन पाते हैं कि अर्जुन की विजयी सेना को रोकने के हेतु भागदत्त ने लड़ाई मोल ली और उस समय उसके साथ अन्य सैनिकों के अलावा चीनी सैनिक भी थे—

स किरातैश्च चीनश्च वृतः प्रग्जेतिषोऽभवत......

उद्योग पर्व में भी दुर्योधन को भागदत्त द्वारा चीनी सैनिक दिये जाने का वर्णन है :

तस्य चीनैः किरातैश्च काञ्चनैरिव संवृतम्.

उद्योग पर्व में ही अन्य स्थल पर चीनी घोड़ों का वर्णन आया है :

वाजिनां च सहस्राणि, चीनदेशोद्भवानि च।

उसी पर्व में—

अर्कजश्च बलीहानां चीनानां धौत मूलकः।

वाण पर्व में—

हार हूणांश्च चीनांश्च तुषारान् सैन्धवां स्तथा।

भीष्म पर्व में—

तथैव रमणाश्चीना स्तथां च देशमात्रिकाः।

कर्ण पर्व में—

सुमांनंगांश्च बगांश्च निषादान् पुण्ड्रचीनकान्।

इस प्रकार 'महाभारत' से हमें यह पता चलता है कि भारतीयों की फ़ौज में चीनी सैनिक रहा करते थे और उनसे क्षत्रियों जैसा व्यवहार किया जाता था. वे यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित भी किये जाते थे. परन्तु 'मनुसंहिता' का लेखक अचानक उन्हें शूद्रों की श्रेणी में ले जाकर पटकता है.

لت کلائیں—مورتی کلا' واستو کلا آدی پر آج بھی' چین کے پیگوڈا آدی کو دیکھنے پر * بھارتیہ اثر صاف صاف دکھائی دیتا ھے .

بھارت کے پراچین ساھتیہ کی اور' خاصکر سنسکرت ساھتیہ کی اور نظر ڈالیں تو سہج میں ھی پتا چل جائیگا کہ ہر جگہہ چین کے بارے میں بیان بھرے پڑے ھیں . راماین اور مہابھارت میں چین واسیوں کا ذکر ھے. راماین کا ایک اداھرن لیجئے—

چیناناں پرچی نانشچ توکھاران بربرانپی' !
کانچ نیو کملیشچیو کامبوجانپی سنورتان .

مہابھارت میں چین واسیوں کا ورنن بہت بار آیا ھے. اداھرن کے لئے ھم 'آدی پرو' 'اور سبھا پرو' کے پنے الٹ سکتے ھیں . سبھا پرو میں ایک جگہہ ھم ایسا ورنن پاتے ھیں کہ ارجن کی وجئی سینا کو روکنے کے ھیتو بھاگدت نے لڑائی مول لی اوراُس سمے اُس کے ساتھ انیہ سینکوں کے علاوہ چینی سینک بھی تھے—

سا کراتیشچ چینشچ ورتہ پرگجیتی کھوتبھوت...

اُدیوگ پرو میں بھی دریودھن کو دوارا چینی سینک دئے جانے کا ورنن ھے :

تسیہ چینہ کراتشیچ کانچ نیرو سنورتم .

اُدیوگ پرو میں ہی انیہ استھل پر چینی گھوڑوں کا ورنن آیا ھے .

واجی ناں چہ سہس ترانی' چین دیشودبھوانی چہ
اسی پرو میں—

ارک جشچ بلی ھاناں چیناناں دھوت مول کہہ.

انتر پرو میں—

ھار ھونز انیشچ چینانشچ تشاران سینیہ واں استتھا .

بھیشم پرو میں—

تتھیو رمنزاشچینا استتھاں چہ دیش ماتریکاہ .

کرن پرو میں—

سوماں نلگانشچ رگانشچ نشادان پنترچین کان .

اِس پرکار 'مہابھارت' سے ھمیں یہ پتا چلتا ھے کہ بھارتیوں کی فوج میں چینی سینک رھا کرتے تھے اور ان سے چھتریوں جیسا ویوھار کیا جاتا تھا . وے یگیہ میں سملت ھونے کے لئے آمنترت بھی کئے جاتے تھے . پرنتو 'منوسنہتا' کا لیکھک اچانک انھیں شودروں کی شریڼی میں لیکر جا پٹکتا ھے .

*—एस० सी० गुहा—इंडा-चाइनीज़ कौर्डिएलिटी थ्रू एजेज़, पृष्ठ 22.
ایس. سی. گوھا. انڈو چائینیز کارڈی اے لیٹی تھرو ایجیز پرشٹھ 22 .

❀—रामायण = सं० रसर गेगरेसिअ (पेरिस 1884) 55:44:14.
راماین سن. گورسیو گورے سی او (پیرس 1884) 14 :44: 55 .

'ललित विस्तर' में हम चीनी लघु लेखों का उल्लेख पाते हैं—

ब्राह्मी-खरोष्टीम् अंगलिपिं, बंगलिपिं, चीन लिपिं, हूण लिपिं......चतुःषष्टि लिपीनां कतमांत्वं शिक्षयिष्यसि ?

'कथा सरित् सागर' में 'चीनपिष्टम्' का वर्णन आया है जिसे सोहागिन नारी अपने ललाट पर कुंकुम-बिन्दु के रूप में लगाती हैं. हेमचन्द्र के 'अभिधान चिन्तामणि' में उसे ही 'सिन्दूरम्' भी कहा गया है :

सिन्दूरनागजं नागरश्रृङ्गारभूषणं चीन पिष्टम्।

आज भी चीना सिन्दूर औरतों के बीच बहुत प्रचलित है.

पाली टेक्स्ट-सोसायटी से प्रकाशित—'अट्ठशालिनी' में अट्ठकथा या धम्म संगिनी के भाष्य में हम, यासां वासेन विसा भागा चीन पिट्ठ आदि का वर्णन पाते हैं. सुत्रनिपात में एक शब्द आया है 'चीनक' जिसका अर्थ टीका में है—एक प्रकार का यान. विष्णु पुराण में भी ज्यों का त्यों ऐसा ही प्रयोग हुआ है. अपने 'अभिधान चिन्तामणि' में हेमचन्द्र भी 'चीनक' का यान ही बताता है. हेमाद्री की 'चतुरंग चिन्तामणि' में भी वही बात है. शायद शीत काल में जारों से पाई जाने वाली 'मूंगफली' का मूल स्थान चीन ही है. चूँकि दूसरे शब्दों में 'चिनिया बादाम' हमारे बालकों को बहुत प्रिय है.

'राजनिघंट' में चीन की विभिन्न वस्तुओं का वर्णन आया है—चीन कपूर, चीन कर्कटी, चीनज, चीन बंग आदि.

चीन कपूर का वर्णन भाव प्रकाश में भी आया है. 'सुश्रुत संहिता' में 'चीन पट्ट' का विशेष उल्लेख है. 'दश कुमार चरित' में चीनी वस्त्र का भी वर्णन है—

चीनाम्बरादिना नानविधेन परिमलद्रव्यनिकरेण मनोभवमर्चयन्ती रेमे.

बृहत्-संहिता में चीन का नाम आया है. शक्ति सङ्गम तन्त्र में चीन का यों वर्णन आया है—

मानसेशाच्च दक्षिणे मानसेशादक्ष पूर्वे चीनदेश: प्रकीर्तित: ।

महाचीनाचार तन्त्र एवं चीनाचार प्रयोग विधि नामक दो पुस्तकें तन्त्र पर लिखी गई हैं.

कालीदास के अमर नाटक 'शकुन्तला' में चीनांशुक का उल्लेख है.

चीनांशुकमिव केतो: प्रतिवातं नीयमानस्य ।

'للت وستر' میں هم چینی لگهولیکهوں کا اُلیکھ پاتے هیں—

براهمی کهروشیٹم انگ لپین' بنگ لپین' چین لپین' هونگر لپین . . . چتوششٹی سپینیاں کتماں توں سکچھشیسی ؟

'کتھا سرت ساگر' میں 'چین پشٹم' کا ورنن آیا هے جسے سوهاگن ناری اپنے للاٹ پر کمکم بلدو کے روپ میں لگاتی هیں ، هیم چندر کے 'ابهی دهان چنتامنی' میں اسے هی 'سندورم' بهی کہا گیا هے .

سندورناگجن ناگر شرنگار بهوشنم چین پشٹم .

آج بهی چینا سندور عورتوں کے بیچ بہت پرچلت هے .

پالی ٹکسٹ سوسائیٹی سے پرکاشت—'اٹهشالنی' میں اٹهکتها یا دهم سنگنی کے بهاشیہ میں هم' یاساں واسین دسا بهاگا چین پٹھ آدی کا ورنن پاتے هیں . سوترنپات میں ایک شبد آیا هے 'چنیک' جس کا ارتھ ٹیکا میں هے—ایک پرکار کا یان . وشنو پران میں بهی جیوں کا تیوں ایساهی پریوگ هوا هے . اپنے 'ابهی دهان چنتامنی' میں هیم چندر بهی 'چنیک' کویان هی بتاتا هے . هیمادری کی 'چتورنگ چنتامنی' میں بهی وهی بات هے . شاید شیت کال میں زوروں سے پائی جانے والی 'مونگ پهلی' کا مول استهان چین هی هے . چونکہ دوسرے شبدوں میں 'چنیا بادام' همارے بالکوں کو بہت پریہ هے .

'راج نگهنٹ' میں چین کی وبهن وستوؤں کا ورنن آیا هے —چین کپور' چین کرکٹی' چینج' چین بنگ آدی .

چین کرپور کا ورنن بهاؤ پرکاش میں بهی آیا هے . 'شوشرت سنگها' میں 'چین پٹ' کا وشیش اُلیکھ هے . 'دش کمار چرت' میں چینی وستر کا بهی ورنن هے—

چینامبرادنانان بیدهین پری مل درویہ نکرین' منوبهو مترچ نیتی ریمے .

برهت سنہتا میں چین کا نام آیا هے . شکتی سنگم تنتر میں چین کا یوں ورنن آیا هے—

مان سیشاچ دکچهنیں مان سےشاد کچھ پوروے چین دیشہ پرکیرتیتہ .

مہاچینا چار تنتر ایوم چیناچار پریوگ ودهی نامک دو پستکیں تنتر پر لکهی گئی هیں .

کالیداس کے امر ناٹک 'شکنتلا' میں چینانشوک کا اُلیکھ هے—

چینان شکامیو کیتو پرتی واتن نییہ مانسیہ .

'कुमार सम्भव' में भी—

चीनांशुकै: कल्पित केतुभालम्

जैसा वर्णन आया है. 'मालविकाग्निमित्र' में भी चीनांशुक शब्द का उल्लेख है. 'महाभारत में ऐसा वर्णन है कि चीन देश से 5000 वर्ष पहले युधिष्ठिर के राज्य-तिलक के समय रत्नादि ढेरों की संख्या में उपहार-स्वरूप आये थे.

चीन और भारत दोनों राष्ट्रों के विद्वान मनीषी एवं साधु पुरुष प्रेम जैसे अमोघ अस्त्र से अतीत काल में सांस्कृतिक-एकता क़ायम कर गये.

हज़ारों वर्षों के बाद आज फिर दोनों राष्ट्रों को एक दूसरे की सहानुभूति मिलने लगी है. सन् 1924 में गु० देव रवीन्द्र नाथ की चीन-यात्रा ने सांस्कृतिक एकता की इस नई पुस्तक में एक और अनूठा अध्याय जोड़ दिया है. प्रो० तान युन शान ने विश्व कवि के विषय में लिखा था—"चीन पर गुरु देव की यात्रा का जो प्रभाव पड़ा है वह अतीत में साधु संतों का भी नहीं पड़ा. चीनी जनता प्राय: इन्हें और महात्मा जी को आधुनिक बुद्ध मानती है."

चीन और भारत जैसे दो देशों के बीच सांस्कृतिक एकता का गठ-बन्धन मजबूत से मजबूत हो.

जो अपने अच्छे कर्मों के बदले में धन्यवाद, वाहवाही या किसी फल की चाह करता है वह बहुत ही अभागा है; क्योंकि वह बहुमूल्य सत्कर्मों को थोड़ी क़ीमत पर बेच डालता है.

—संत वाणी

کمار سمبھو میں بھی—

چینانی شوکیھہ کلپت کتیو بھالم

جیسا ورنن آیا ھے ۔ 'مالویکاگن مترا' میں بھی چیناشک شبد کا الیکھ ھے ۔ مہابھارت میں ایسا ورنن ھے کہ چین دیش سے پانچ ھزار ورش پہلے یودھشٹر کے راجیہ تلک کے سمے رتنادی ڈھیروں کی سنکھیا میں اوپہار سوروپ آئے تھے ۔

چین اور بھارت دونوں راشٹر کے ودوان منی شی ایوم سادھو پُرش پریم جیسے اموگھ استر سے اتیت کال میں سانسکرتک قایم کرگئے ۔

ھزاروں ورشوں کے بعد آج پھر دونوں راشٹروں کو ایک دوسرے کی سہانو بھوتی ملنے لگی ھے۔ سن 1924 میں گرودیو رویندر ناتھ کی چین یاترا نے سانسکرتک ایکتا کی اِس نئی پستک میں ایک اور انوٹھا ادھیائے جوڑ دیا ھے۔ پرفیسرو تان یون شان نے وشو کوی کے وشے میں لکھا تھا—"چین پر گرودیو کی یاترا کا جو پربھاؤ پڑا ھے وہ اتیت میں سادھو سنتوں کا بھی نہیں پڑا ۔ چینی جنتا پرایہ انھیں اور مہاتماجی کو آدھونک بدھ مانتی ھے"

چین اور بھارت جیسے دو دیشوں کے بیچ سانسکرتک ایکتا کا گٹھ بندھن مضبوط سے مضبوط ھو ۔

جو اپنے اچھے کرموں کے بدلے میں دھنیہ واد' واہ واھی یا کسی پھل کی چاہ کرتا ھے وہ بہت ھی ابھاگا ھے؛ کیونکہ وہ بہومولیہ ست کو تھوڑی قیمت پر بیچ ڈالتا ھے ۔

—سنت وانی

प्लानिंग फ़ार दी पीपिल बाई दी पीपिल

लेखक—आचार्य जे. सी. कुमारप्पा; प्रकाशक—वोरा एन्ड को, 3 राउन्ड बिल्डिंग, मुंबई—2; पन्ने—155; दाम—तीन रुपये.

आजकल हमारे देश में सरकारी हलक़ों में प्लानिंग या योजनाबन्दी का नाम बहुत लिया जाता है. आगामी मार्च में चालू पंच-साला-योजना ख़त्म होकर दूसरी शुरू होने जा रही है, जिस पर इन दिनों चर्चा भी चल रही है. पर हमारे योजनाकारों और उनके हमदर्दों को एक बात की बड़ी शिकायत जनता से है—कि वह योजना में सरकार को सहयोग नहीं देती. यही वजह है कि हिन्दुस्तान में योजना जिस तेज़ी के साथ चलती है, उससे ज़्यादा तेज़ी के साथ देश में बेरोज़गारी बढ़ती है.

सवाल उठता है कि इसकी वजह क्या है, क्या बात है कि हिन्दुस्तान की जनता अपनी ही सरकार का साथ नहीं देती? इस के जवाब में हमारे शासक लोग हाथ मल कर रह जाते हैं. लेकिन इसका जवाब सच्चा और साफ़ है. सब मानते हैं कि हिन्दुस्तान की अस्सी फ़ीसदी आबादी देहातों में रहती है और तीन-चौथाई लोग खेती के सहारे किसी तरह जीते हैं. इस देहाती जनता का आमद-रफ़्त का आधार—या इसकी सवारी कहिये—बैलगाड़ी है. दूसरे शब्दों में, बैलगाड़ी हिन्दुस्तान की राष्ट्रीय सवारी है. लेकिन कैसे अचरज की बात है कि बैलगाड़ी में बैठ कर कोई भी हिन्दुस्तानी अपने ही राष्ट्रपति से मिलने नहीं जा सकता! विलायत की बनी टैक्सी या मोटर-कार में जा सकता है, लेकिन हिंदुस्तान की ही बनी बैलगाड़ीमें नहीं!! बैलगाड़ी तो दूर, तांगे तक की इजाज़त नहीं है. हमारी राजधानी, नई दिल्ली की सड़कों पर बैलगाड़ी चलाने की मुमानियत ही है.

"बैलगाड़ी ले जाना मना है"—इसका कड़वा अनुभव आचार्य जे० सी० कुमारप्पा को हुआ, जिनकी गिनती देश के सच्चे और तपे हुए सेवकों में होती है और जिनका जीवन क़ुर्बानी और त्याग की एक मशाल है. कुमारप्पा जी

پلاننگ فار دی پیپل بائی دی پیپل

لیکھک—آچاریہ جے. سی. کماریپا؛ پرکاشک— وورا اینڈ کو، 3 راؤنڈ بلڈنگ، ممبئی-2؛ پنّے—155؛ دام—تین روپئے۔

آجکل ہمارے دیش میں سرکاری حلقوں میں پلاننگ یا یوجنا بندی کا نام بہت لیا جاتا ہے۔ آگامی مارچ میں چالو پنچ سالہ یوجنا ختم ہو کر دوسری شروع ہونے جارہی ہے، جس پر اِن دنوں چرچا بھی چل رہی ہے۔ پر ہمارے یوجنا کاروں اور اُن کے ہمدردوں کو ایک بات کی بڑی شکایت جنتا سے ہے—کہ وہ یوجنا میں سرکار کو سہیوگ نہیں دیتی۔ یہی وجہہ ہے کہ ہندستان میں یوجنا جس تیزی کے ساتھ چلتی ہے، اس سے زیادہ تیزی کے ساتھ دیش میں بیروزگاری بڑھتی ہے۔

سوال اُٹھتا ہے کہ اِس کی وجہہ کیا ہے، کیا بات ہے کہ ہندستان کی جنتا اپنی ہی سرکار کا ساتھ نہیں دیتی؟ اِس کے جواب میں ہمارے شاسک لوگ ہاتھ مل کر رہ جاتے ہیں۔ لیکن اِس کا جواب سچا اور صاف ہے۔ سب مانتے ہیں کہ ہندستان کی اسی فیصدی آبادی دیہاتوں میں رہتی ہے اور تین چوتھائی لوگ کھیتی کے سہارے کسی طرح جیتے ہیں۔ اِس دیہاتی جنتا کا آمدرفت کا آدھار—یا اِس کی سواری کہئے—بیل گاڑی ہے۔ دوسرے شبدوں میں، بیل گاڑی، ہندستان کی راشٹریہ سواری ہے۔ لیکن کیسے اچرج کی بات ہے کہ بیل گاڑی میں بیٹھ کر کوئی بھی ہندستانی اپنے ہی راشٹر پتی سے ملنے نہیں جا سکتا! ولایت کی بنی ٹیکسی یا موٹرکار میں جا سکتا ہے، لیکن ہندستان کی ہی بنی بیل گاڑی میں نہیں!! بیل‌گاڑی تو دور، تانگے تک کی اجازت نہیں ہے۔ ہماری راجدھانی، نئی دلی کی سڑکوں پر بیل‌گاڑی چلانے کی ممانیت ہی ہے۔

"بیل گاڑی لیجانا منع ہے"—اِس کا کڑوا انوبھو آچاریہ جے۔ سی۔ کماریپا کو ہوا، جنکی گنتی دیش کے سچے اور تپے ہوئے سیوکوں میں ہوتی ہے اور جن کا جیون قربانی اور تیاگ کی ایک مشعل ہے۔ کماریپا جی

देश के सब से बड़े गांधीवादी अर्थशास्त्री माने जाते हैं. बल्कि कहना तो यह चाहिये कि गांधीवादी अर्थनीति के प्रथम शास्त्रकार ही आप हैं. अर्थशास्त्र सम्बन्धी आपके कई प्रसिद्ध ग्रंथ हैं. इस विषय पर आपके लेख तो पत्रों में प्राय: निकलते ही रहते हैं, विशेषकर आपके अपने एक छोटे से मासिक "ग्राम उद्योग पत्रिका" में.

इस पुस्तक में आचार्य के चालीस लेखों का संग्रह है जो 1948 से 1953 के बीच प्रकाशित हुए थे. पुस्तक को छ: भागों में बांटा गया है— पंच साला योजना, सरकार के काम, खेती और जमीन, मजदूरी और उत्पादन, औद्योगिक नीति, और उपसंहार. लेख पुराने होते हुए भी सामाजिक और महत्वपूर्ण हैं. इस समय तो और भी जयादा, जब योजना पर देश में विचार चल रहा है. हां, जमीन सम्बन्धी वाले हिस्से से कुछ लेख निकाले जा सकते थे क्योंकि अब भारत अनाज के लिये विदेशों का मोहताज नहीं है.

आचार्य कुमारप्पाजी के कुछ लेख—जैसे योजना पर कुछ विचार, क्रान्ति के आसार, बैलगाड़ी मना है; आजादी की अर्थनीति, मेहनत करो, बेकारी—एक रोग और कम्यूनिटी प्रोजेक्ट—तो बहुत सुन्दर और स्थायी साहित्य के अंग हैं. 'मेहनत करो' वाले लेख का एक हिस्सा दिये बग़ैर हमसे नहीं रहा जाता. आचार्य जी कहते हैं.—

"दस पंद्रह साल पहले जब ट्रावनकोर राज्य में सर सी० पी० रामास्वामी अय्यर दीवान थे, तो उन्हों ने धान कूटने की मिलें बन्द करा दी थीं और वहां के हजारों लोग हाथ से ढेकी चला चला कर रोजी कमाते थे और सारा ट्रावनकोर पुष्टिकारक चावल खाता था. लेकिन अब जब ट्रावनकोर भारत में शामिल हुआ तो यह मिलों पर पाबन्दी हट रही है. क्या इसी को जयादा उत्पादन कहेंगे या जो है उसको भी बरबाद करना कहेंगे? जब सरकार ऐसी नीति बरतती है तो किसे मुँह से वह लोगों से कह सकती है कि जयादा पैदा करो."

इसके बाद आचार्य जी कहते हैं:—

"रहन सहन का दर्जा ऊँचा उठाने के माने क्या हैं? फ़र्श पर बैठने वालों को कुर्सी और मेज दे देना? इस दृष्टि से अमरीका का रहन-सहन संसार में सबसे ऊँचा है, लेकिन क्या वहां के लोग सुखी और संतुष्ट हैं? उन पर तीसरी लड़ाई का डर सवार है. केवल भौतिक सम्पत्ति से सच्चा सुख और सन्तोष नहीं पैदा हो सकता है. जरूरत इस बात की है कि इन्सान की शख़सियत का दर्जा ऊँचा उठे और उसका विकास हो. यह चीज़ मिलों में उत्पादन करने से नहीं पैदा हो सकती. क्या

دیش کے سب سے بڑے گاندھی وادی ارتھ شاستری مانے جاتے ھیں . بلکہ کہنا تو یہ چاھئے کی گاندھی وادی ارتھ نیتی کے پرتھم شاسترکار ھی آپ ھیں . ارتھ شاستر سمبندھی آپ کے کئی پرسدھ گرنتھ ھیں . اِس وشئے پر آپ کے لیکھ تو پتروں میں پرایہ نکلتے ھی رھتے ھیں' وشیش کر آپ کے اپنے ایک چھوٹے سے ماسک "گرام اُدیوگ پتریکا" میں .

اِس پستک میں آچاریہ کے چالیس لیکھوں کا سنگرہ ھے جو 1948 سے 1953 کے بیچ پرکاشت ھوئے تھے . پستک کو چھ بھاگوں میں بانٹا گیا ھے—پنچ. سالہ یوجنا' سرکار کے کام' کھیتی اور زمین' مزدوری اور اُتپادن' اُدیوگک نیتی' اور اُپسنگھار . لیکھ پرانے ھوتے ھوئے بھی ساماجک اور مہتو پورن ھیں . اس سمئے تو اور بھی زیادہ' جب یوجنا پر دیش میں وچار چل رھا ھے . ھاں' زمین سمبندھی والے حصے سے کچھ لیکھ نکالے جا سکتے تھے کیونکہ اب بھارت اناج کے لئے ودیشوں کا محتاج نہیں ھے .

آچاریہ کماریپا جی کے کچھ لیکھ—جیسے یوجنا پر کچھ وچار' کرانتی کے آثار' بیل گاڑی منع ھے' آزادی کی ارتھ نیتی' محنت کرو' بےکاری—ایک روگ اور کمیونٹی پروجیکٹ—تو بہت سندر اور استھائی ساھتیہ کے انگ ھیں . 'محنت کرو' والے لیکھ کا ایک حصہ دیئے بغیر ھم سے نہیں رھا جاتا . آچاریہ جی کہتے ھیں:—

"دس پندرہ سال پہلے جب ٹراونکور راجیہ میں سر سی. پی. راماسوامی ائیر دیوان تھے' تو اُنھوں نے دھان کوٹنے کی ملیں بند کرادی تھیں اور وھاں کے ھزاروں لوگ ھاتھ سے ڈھیکی چلا چلا کر روزی کماتے تھے اور سارا ٹراونکور پشٹیکارک چاول کھاتا تھا . لیکن اب جب ٹراونکور بھارت میں شامل ھوا تو یہ ملوں پر پابندی ھٹ رھی ھے . کیا اِسی کو زیادہ اُتپادن کہینگے یا جو ھے اُس کو بھی برباد کرنا کہیں گے ؟ جب سرکار ایسی نیتی برتتی ھے تو کس منہ سے وہ لوگوں سے کہہ سکتی ھے کہ زیادہ پیدا کرو ."

اِس کے بعد آچاریہ جی کہتے ھیں:—

"رھن سہن کا درجہ اُونچا اُٹھانے کے معنے کیا ھیں ؟ فرش پر بیٹھنے والوں کو کرسی اور میز دے دینا ؟ اِس درشٹی سے امریکہ کا رھن سہن سنسار میں سب سے اُونچا ھے' لیکن کیا وھاں کے لوگ سکھی اور سنتوشٹ ھیں ؟ اُن پر تیسری لڑائی کا ڈر سوار ھے . کیول بھوتک سمپتی سے سچا سکھ اور سنتوش نہیں پیدا ھو سکتا ھے . ضرورت اِس بات کی ھے کہ اِنسان کی شخصیت کا درجہ اُونچا اُٹھے اور اُس کا وکاس ھو . یہ چیز ملوں میں اُتپادن کرنے سے نہیں پیدا ھو سکتی . کیا

हमारी सरकार उस तरह के कार्यक्रम को बढ़ावा देती है जिससे इन्सान की शख़्सियत के विकास को मौक़ा मिले?" आचार्य कुमारप्पा ने यह शब्द 1950 में कहे थे. मगर यह आज भी उतने ही ताज़े हैं. और अगर सरकार को योजना की सफलता की दरअसल कामना है तो इस सवाल का सही जवाब देकर उस पर अमल करना होगा.

हम इस पुस्तक के लिये प्रकाशक को बधाई देते हैं और चाहेंगे कि भारत की भाषाओं में भी इसके संस्करण निकलें, हिन्दी में तो जल्द से जल्द. अंग्रेज़ी जानने वाले और देश की रचना में दिलचस्पी लेने वाले हर समझदार आदमी के लिये यह किताब बहुत ज़रूरी और विचार प्रेरक है.

—दादू

समाजवादी अर्थनीति की ओर

(अंग्रेज़ी और हिन्दी)

लेखक—श्री श्रीमन्नारायण; प्रकाशक—भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, 7 जंतर-मंतर रोड, नई दिल्ली; पन्ने—134; दाम—सवा रुपया.

समाजवादी ढंग की व्यवस्था

(अंग्रेज़ी और हिन्दी)

लेखक और प्रकाशक—वही ऊपर वाले; पन्ने—12; दाम—नहीं दिये.

जनवरी 1955 में कांग्रेस ने अपनी आवाड़ी अधिवेशन के मौक़े पर यह प्रस्ताव पास किया कि उसका मक़सद देश के अन्दर सोशलिस्टिक पैटर्न आफ़ सोसाइटी (समाज का समाजवादिक ढांचा) क़ायम करना है. तबसे कांग्रेस की सभाओं में और कांग्रेसजनों या उनके नेताओं के व्याख्यानों या लेखों में "समाजवादिक ढांचे" की नाम-उपासना चल पड़ी है. जहां पहले "वैलफ़ेयर स्टेट" (कल्याणकारी राज्य) का नाम आदर्श के तौर पर लिया जाता था, वहां उसे छोड़ कर अब समाजवादिक ढांचे की तूती बोल रही है. चाहे कोई मिनिस्टर कहीं दूध की डेयरी या बिस्कुट का कारख़ाना खोलता हो, चाहे अमरीका से आने वाले वनस्पति घी की दुकान का उद्घाटन करता हो, चाहे पढ़े-लिखे बेकार पैदा करने वाले कारख़ाने यानी किसी स्कूल या कालिज में की आधार शिला रखता हो, चाहे रोगियों को प्रोत्साहन देने वाले किसी अस्पताल की इमारत में एक नया वार्ड खोलता हो—चाहे कोई कुछ ही करे पर कहता यही है कि उसकी इस राय से मुल्क 'समाजवादिक ढांचे' की तरफ़ बढ़ रहा है. लेकिन जब नया मंत्र बोला जाता है तो उसके मुताबिक़

ہماری سرکار اُس طرح کے کاریہ کرم کو بڑھاوا دیتی ہے جس سے انسان کی شخصیت کے وکاس کو موقع ملے؟" آچاریہ کماریپا نے یہ شبد 1950 میں کہے تھے. مگر یہ آج بھی اتنے ہی تازے ہیں. اور اگر سرکار کو یوجنا کی سپھلتا کی دراصل کامنا ہے تو اُس سوال کا صحیح جواب دیکر اُس پر عمل کرنا ہوگا.

ہم اِس پستک کے لئے پرکاشک کو بدھائی دیتے ہیں اور چاہیںگے کہ بھارت کی بھاشاؤں میں بھی اِس کے سنسکرن نکلیں، ہندی میں تو جلد سے جلد. انگریزی جاننے والے اور دیش کی رچنا میں دلچسپی لینے والے ہر سمجھدار آدمی کے لئے یہ کتاب بہت ضروری اور وچار پریرک ہے.

—دادو

سماجوادی ارتھ نیتی کی اور

(انگریزی اور ہندی)

لیکھک—شری شریمن ناراین؛ پرکاشک—بھارتیہ راشٹریہ کانگریس، 7 جنتر منتر روڈ، نئی دلی، پنّے—134؛ دام—سوا روپیہ.

سماجوادی ڈھنگ کی ویوستھا

(انگریزی اور ہندی)

لیکھک اور پرکاشک—وہی اُوپر والے؛ پنّے—12؛ دام—نہیں دیئے.

جنوری 1955 میں کانگریس نے اپنی آواڑی ادھیویشن کے موقع پر یہ پرستاؤ پاس کیا کہ اُس کا مقصد دیش کے اندر سوشلسٹک پیٹرن آف سوسائٹی (سماج کا سماجوادک ڈھانچہ) قایم کرنا ہے. تب سے کانگریس کی سبھاؤں میں اور کانگریس جنوں یا اُن کے ویاکھیانوں یا لیکھوں میں "سماجوادک ڈھانچے" کی نام اُپاسنا چل پڑی ہے. جہاں پہلے "ویلفیئر اِسٹیٹ" (کلیانکاری راجیہ) کا نام آدرش کے طور پر لیا جاتا تھا، وہاں اُسے چھوڑکر اب سماجوادک ڈھانچے کی طوطی بول رہی ہے. چاہے کوئی منسٹر کہیں دودھ کی ڈیئری یا بسکٹ کا کارخانہ کھولتا ہو، چاہے امریکہ سے آنے والے بنسپتی گھی کی دوکان کا اُدگھاٹن کرتا ہو، چاہے پڑھے لکھے بیکار پیدا کرنے والے کارخانے یعنی کسی اِسکول یا کالج میں کی آدھار شلا رکھتا ہو، چاہے روگیوں کو پروتساہن دینے والے کسی اسپتال کی عمارت میں ایک نیا وارڈ کھولتا ہو—چاہے کوئی کچھ ہی کرے پر کہتا یہی ہے کہ اُس کی اِس رائے سے ملک 'سماجوادک ڈھانچے' کی طرف بڑھ رہا ہے. لیکن جب نیا منتر بولا جاتا ہے تو اُس کے مطابق

क़दम भी रखना पड़ता है और पुराने मूल्यों और मान्यताओं को छोड़कर नये मूल्यों व मान्यताओं पर अमल करना होता है. फिर यह नया अमल मुश्क की तरह अपनी सुगंध चारों ओर फैलाता है जिससे हवा में फ़र्क़ पड़ता है और साधारण जनता का मानस बदलता है.

ख़ुशी की बात है कि इस नये मंत्र का शंख कांग्रेस संगठन के प्रधान-मंत्री श्री श्रीमन्नारायण अपने 'एकोनामिक रिव्यू' (या 'आर्थिक समीक्षा') नाम के पाक्षिक पत्र से लगातार बजा रहे हैं. यह दोनों किताबें उनके फ़ुटकर लेखों का संग्रह हैं. पहली पुस्तक में चौंतीस लेख हैं और दूसरी में तीन. क्योंकि यह लेख एक पाक्षिक के लिये अख़बारी समाचारों के आधार पर लिखे गये, इसलिये उनमें अकसर बातें दुहराई हुई मिलती हैं. कहीं कहीं तो एक ही विषय पर तीन लेख हैं—जैसे 'भूदान और आर्थिक क्रान्ति', 'भूमिद यज्ञ का अर्थशास्त्र', और 'भूमिदान का अर्थ शास्त्र', इनको सहज एक में पिरोया जा सकता था. इसी तरह 'भारत और चीन' पर के लेख हैं. दूसरे, फ़ुटकर लेख लिखते समय लेखक के सामने वह विषय ही सबसे ख़ास मालूम होता है. लेकिन किताब के अन्दर एक सिलसिला रहता है और जिस चीज़ पर जितना ज़ोर दिया जाना चाहिये उतना दिया जाता है. अब इस किताब में पन्ना 71 पर (अंग्रेज़ी) बाढ़ वाले लेख में कहा गया है कि सरकार को चाहिये कि बाढ़ रोकने के लिये युद्ध के पैमाने पर कोशिश करे. साथ ही साथ, पन्ना 48 पर बेकारी के बारे में लिखा है कि वह हमारा अव्वल नम्बर का दुश्मन है और उसका फ़ौरन सामना किया जाये. हमारी अरज़ है कि अगले संस्करण में इन लेखों को लेखक एक बार देख जायें और ठीक से उनका ताल बिठा दें.

पर जिन जिन विषयों पर श्रीमन जी ने चिन्तन किया है वह सभी महत्व के हैं, जैसे ग्रामोद्योग, शिक्षा, भूमि-सुधार, बाढ़, शराब-बन्दी, बेकारी, शासन-व्यवस्था, सरकारी योजनायें, अदालती न्याय, आदि. उनके सुझावों में दुखिया के दर्द की तरफ़ दृष्टि है और देश-भक्ति की लगन है. क्या ही अच्छा हो कि हमारे सार्वजनिक कार्यकर्ता और विशेष कर कांग्रेसजन इन प्रश्नों की तरफ़ ईमानदारी से ध्यान दें और उसके हल ढूंढने की सच्ची कोशिश करें. उससे जहां देश का भला होगा, वहां कार्यकर्त्ताओं की लोक-प्रियता और सेवा-शक्ति भी बढ़ेगी. इस दृष्टि से हम श्रीमन जी की रचनाओं के व्यापक प्रचार और मनन की सिफ़ारिश करते हैं.

—दादू

قدم بھی رکھنا پڑتا ھے اور پرانے مولیوں اور مانیتاؤں کو چھوڑکر نئے مولیوں و مانیتاؤں پر عمل کرنا ھوتا ھے ۔ پھر یہ نیا عمل مشک کی طرح اپنی سوگندھ چاروں اور پھیلاتا ھے جس سے ھوا میں فرق پڑتا ھے اور سادھارن جنتا کا مانس بدلتا ھے ۔

خوشی کی بات ھے کہ اِس نئے منتر کا شنکھ کانگریس سنگٹھن کے پردھان منتری شری شریمن ناراین اپنے 'اِکنامک ریویو' (یا 'آرتھک سمیکشا') نام کے پاکشک پتر سے لگاتار بجا رہے ھیں ۔ یہ دونوں کتابیں اُن کے پھٹکر لیکھوں کا سنگرہ ھیں۔ پہلی پستک میں چونتیس لیکھ ھیں اور دوسری میں تین ۔ کیونکہ یہ لیکھ ایک پاکشک کے لئے اخباری سماچاروں کے آدھار پر لکھے گئے' اِس لئے اُن میں اکثر باتیں دوھرائی ھوئی ملتی ھیں ۔ کہیں کہیں تو ایک ھی وشئے پر تین لیکھ ھیں— جیسے 'بھودان اور آرتھک کرانتی' 'بھومی‌دان یگیہ کا ارتھ شاستر' 'اور بھومی‌دان کا ارتھ شاستر' اِن کو سہج ایک میں‌پرویا جاسکتا تھا۔ اِسی طرح 'بھارت اور چین' پرکے لیکھ ھیں ۔ دوسرے' پھٹکر لیکھ لکھتے سمے لیکھک کے سامنے وہ وشئے ھی سب سے خاص معلوم ھوتا ھے ۔ لیکن کتاب کے اندر ایک سلسلہ رھتا ھے اور جس چیز پر جتنا زور دیا جانا چاھئے اُتنا دیا جاتا ھے ۔ اب اِس کتاب میں پننا 71 پر (انگریزی) باڑھ والے لیکھ میں کہا گیا ھے کہ سرکار کو چاھئے کہ باڑھ روکنے کے لئے یدھ کے پیمانے پر کوشش کرے ۔ ساتھ ھی ساتھ' پننا 48 پر بیکاری کے بارے میں لکھا ھے کہ وہ ھمارا اول نمبر کا دشمن ھے اور اُس کا فوراً سامنا کیا جائے ۔ ھماری عرض ھے کہ اگلے سنسکرن میں اِن لیکھوں کو لیکھک ایک‌بار دیکھ جائیں اور ٹھیک سے اُن کا تال بٹھادیں ۔

پر جن جن وشیوں پر شریمن جی نے چنتن کیا ھے وہ سبھی مہتو کے ھیں' جیسے گرامودیوگ' شکشا' بھومی سدھار' باڑھ' شراب بندی' بیکاری' شاسن ویوستھا' سرکاری یوجنائیں' عدالتی نیائے' آدی ۔ اُن کے سجھاؤں میں دکھیا کے درد کی طرف درشٹی ھے اور دیش بھکتی کی لگن ھے ۔ کیا ھی اچھا ھو کہ ھمارے سارو‌جنک کاریہ کرتا اور وشیشکر کانگریس جن اِن پرشنوں کی طرف ایمانداری سے دھیان دیں اور اُن کے حل ڈھونڈھنے کی سچی کوشش کریں ۔ اُس سے جہاں دیش کا بھلا ھوگا' وھاں کاریہ‌کرتاؤں کی لوک پریتا اور سیوا شکتی بھی بڑھیگی ۔ اِس درشٹی سے ھم شریمن جی کی رچناؤں کے ویاپک پرچار اور منن کی سفارش کرتے ھیں ۔

—دادو

अहिंसक समाजवाद की ओर

लेखक—महात्मा गांधी; सम्पादक—श्री भारतन कुमारप्पा; हिन्दी अनुवादक—श्री राम नरायन चौधरी; प्रकाशक—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; पहली बार, सितम्बर 1955; पन्ने—204; दाम—दो रुपये.

महात्मा गांधी के साहित्य की छान बीन कर, उसको विषयवार छंटवाकर, एक के बाद एक अच्छी पुस्तक नवजीवन प्रकाशन मन्दिर की तरफ़ से समाज को मिलती जा रही है. इनके सम्पादन का काम प्रसिद्ध गांधीवादी लेखक श्री भारतन कुमारप्पा कर रहे हैं. इस किताब में समाजवाद सम्बन्धी बापू के लेखों का उत्तम संग्रह है. अंग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद का काम श्री राम नरायन चौधरी ने किया है जो इस कला में माहर हैं.

इस ज़ोरदार किताब के ग्यारह भाग हैं—ध्येय, नैतिक आवश्यकतायें, समान वितरण, उद्योग-धन्धे, न्यूनतम मज़दूरी, पूंजी और श्रम, हड़तालें, चाय के मज़दूर और किसान, ट्रस्टी के रूप में पूंजीपति और ज़मींदार, ग़रीब लोग और—आख़िरी है—साम्यवाद. अंत में बापू के सरनाम सहयोगी श्री प्यारेलाल जी का एक छोटा-सा लेख भी है—'गांधी जी का साम्यवाद.' इसके बाद आठ पन्नों में किताब की सूची है जिससे वह बहुत कारामद और क़ीमती बन गई है.

अर्थशास्त्र सम्बन्धी बापू के लेखों का यह संग्रह बहुत सामयिक और सुन्दर है. अर्थ-शास्त्र के बीसियों पहलू पर बापू के विचार इसमें दिये गये हैं. समाजवादी ढांचा क़ायम करना हो या साम्यवादी, उसके लिये निज के जीवन में बदल करने की ज़रूरत है. हम अपनी जगह अपने अपने पुराने ढर्रों पर चलते रहें और आशा यह करें कि देश का ढांचा समाजवादी हो जायेगा, तो वह बबूल बोकर आम खाने के जैसी आशा होगी.

हम इस किताब के ज्यादा से ज्यादा प्रचार, अध्ययन, चिंतन और मनन की अपील करते हैं. अर्थशास्त्र और राज-काज में दिलचस्पी रखने वाले हर विद्यार्थी, शिक्षक, कार्यकर्ता, भाई या बहन के लिये तो इसे लाज़मी समझा जाना चाहिये. फिर, इसके पढ़ने से मन को भी शान्ति मिलती है, दिमाग़ के कोनों को साफ़ करने में मदद मिलती है और ज़िन्दगी के लिये रोशनी मिलती है. आख़िर में इस किताब के बारे में ज्यादा कहना सूरज को दीपक दिखाने जैसा है.

—दादू

اھنسک سماج واد کی اور

لیکھک—مہاتما گاندھی؛ سمپادک—شری بھارتن کماریپا؛ ھندی انوادک—شری رام نراین چودھری؛ پرکاشک—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد؛ پہلی بار، ستمبر 1955؛ پنّے—204؛ دام—دو روپئے ۔

مہاتما گاندھی کے ساھتیہ کی چھان بین کر، اُس کو وشے وار چھنٹواکر، ایک کے بعد ایک اچھی پستک نوجیون پرکاشن مندر کی طرف سے سماج کو ملتی جارھی ھے ۔ اِن کے سمپادن کا کام پرسدھ گاندھی وادی لیکھک شری بھارتن کماریپا کررھے ھیں ۔ اِس کتاب میں سماج واد سمبندھی باپو کے لیکھوں کا اُتم سنگرہ ھے ۔ انگریزی سے ھندی انوواد کا کام شری رام نراین چودھری نے کیا ھے جو اِس کلا میں ماھر ھیں ۔

اِس زوردار کتاب کے گیارہ بھاگ ھیں—دھیئے، نیتک آوشیکتائیں، سمان وترن، اُدیوگ دھندھے، نیونتم مزدوری، پونجی اور شرم، ھڑتالیں، چائے کے مزدور اور کسان، ٹرسٹی کے روپ میں پونجی پتی اور زمیندار، غریب لوگ اور—آخری ھے—سامیہ واد ۔ انت میں باپو کے سرنام سہیوگی شری پیارے لال جی کا ایک چھوٹا سا لیکھ بھی ھے—'گاندھی جی کا سامیہ واد.' اِس کے بعد آٹھ پنّوں میں کتاب کی سوچی ھے جس سے وہ بہت کارآمد اور قیمتی بن گئی ھے ۔

ارتھ شاستر سمبندھی باپو کے لیکھوں کا یہ سنگرہ بہت سامئک اور سندر ھے. ارتھ شاستر کے بیسیوں پہلو پر باپو کے وچار اِس میں دیئے گئے ھیں ۔ سماج وادی ڈھانچہ قایم کرنا ھو یا سامیہ وادی، اُس کے لئے نج کے جیون میں بدل کرنے کی ضرورت ھے ۔ ھم اپنی جگہ اپنے پرانے ڈھرّوں پر چلتے رھیں اور آشا یہ کریں کہ دیش کا ڈھانچہ سماج وادی ھوجائیگا، تو وہ ببول بوکر آم کھانے کے جیسی آشا ھوگی ۔

ھم اِس کتاب کے زیادہ سے زیادہ پرچار، اَدھین، چنتن اور منن کی اپیل کرتے ھیں ۔ ارتھ شاستر اور راج کاج میں دلچسپی رکھنے والے ھر ودیارتھی، شکشک، کاریہ کرتا، بھائی یا بہن کے لئے تو اِسے لازمی سمجھا جانا چاھئیے ۔ پھر، اِس کے پڑھنے سے من کو بھی شانتی ملتی ھے، دماغ کے کونوں کو صاف کرنے میں مدد ملتی ھے اور زندگی کے لئے روشنی ملتی ھے ۔ آخر میں اِس کتاب کے بارے میں زیادہ کہنا سورج کو دیپک دکھانے جیسا ھے ۔

—دادو

कहावतों की कहानियां

लेखक—महावीर प्रसाद पोद्दार; प्रकाशक—सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली; पहली बार 1955; पन्ने—158 दाम—दो रुपये.

गोरखपुर के आरोग्य मंदिर के श्री महावीर प्रसाद पोद्दार हमारे देश के पुराने और अनुभवी लेखकों में हैं. पर शायद आने वाली पीढ़ियां उन्हें एक सिद्धस्त लेखक के रूप में याद किया करेंगी. पोद्दार जी कम लिखते हैं, लेकिन जो भी लिखते हैं अपने खरे, चौकस और पक्के अनुभव की बिना पर लिखते हैं. फिर भाषा भी ऐसे कमाल की होती है कि घर के अंदर दादी या नानी या सड़क का रिक्शा वाला या मेहतर भी उसे समझ जाये.

पोद्दार जी ने अब तक आरोग्य सम्बन्धी कई पुस्तकें लिखीं. बापू की 'आत्म कथा' का गुजराती से उल्था किया. लेकिन यह बात ज़ाहिर कम है कि पोद्दार जी कहानियां भी खूब लिख लेते हैं. कोई भी कहानीकार या उपन्यास लिखने वाला उनकी शैली या ज़बान पर ईर्ष्या किये बिना नहीं रह सकता.

इस किताब में पोद्दार जी की 115 कहानियां हैं, और हर कहानी का शीर्षक एक कहावत है. इस तरह यह किताब कहावतों की कहानियां बन गई है. इन कहानियों से उन उन कहावतों का रहस्य, उनकी खूबी और उनके इस्तेमाल का ढंग सामने आ जाता है. हमें शुब्हा है कि आजकल स्कूल-कालिज में पढ़ने वाले भाई बहनों को जो 'राष्ट्र भाषा' सिखाई जा रही है वह कुछ ऐसी बनावटी सी है कि उनको हमारे असली जीवन से जुदा करती जा रही है. बहुत से मुहावरे और कहावतें तो यह पढ़े-लिखे समझते ही नहीं. हमने ऐसे भी शिक्षित देखे हैं जो ऐसी कहावतें तक नहीं समझते—बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा! भैंस के आगे बीन बजाना! उनके मानसिक दरिद्रता के बारे में किसे दुख नहीं होगा.

इसलिये हम इस किताब का बहुत स्वागत करते हैं. क्या लेखक, क्या प्रकाशक—दोनों बधाई के पात्र हैं. हम चाहेंगे कि यह हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों में—उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य भारत, मध्यप्रदेश, विंध्यप्रदेश और राजस्थान में—कोर्स में शामिल की जाये और हिन्दी के हर पुस्तकालय में इसे रखा जाये. साथ ही साथ प्रकाशक महोदय से बिनती करेंगे कि इसका एक सस्ता संस्करण—सस्ते से सस्ता संस्करण—निकालें जिससे न केवल 'सस्ता साहित्य मंडल' का नाम सार्थक हो, बल्कि सत्साहित्य की यह देन हर शहराती के घर पहुंच जाये.

—बापू

کہاوتوں کی کہانیاں

لیکھک—مہاویر پرشاد پودار؛ پرکاشک—سستا ساہتیہ منڈل، نئی دلی؛ پہلی بار 1955؛ پنّے—158؛ دام—دو روپئے .

گورکھپور کے آروگیہ مندر کے شری مہاویر پرساد پودار ہمارے دیش کے پرانے اور انوبھوی سیوکوں میں ہیں . پر شاید آنے والی پیڑھیاں انہیں ایک سدھست لیکھک کے روپ میں یاد کیا کرینگی . پودار جی کم لکھتے ہیں، لیکن جو بھی لکھتے ہیں اپنے کھرے، چوکس اور پکے انوبھو کی بنا پر لکھتے ہیں . پھر بھاشا بھی ایسے کمال کی ہوتی ہے کہ گھر کے اندر دادی یا نانی یا سڑک کا رکشہ والا یا مہتر بھی اُسے سمجھ جائے .

پودار جی نے اب تک آروگیہ سمبندھی کئی پستکیں لکھیں۔ باپو کی 'آتم کتھا' کا گجراتی سے اُلتھا کیا . لیکن یہ بات ظاہر کم ہے کہ پودار جی کہانیاں بھی خوب لکھ لیتے ہیں . کوئی بھی کہانی کار یا اُپنیاس لکھنے والا اُن کی شیلی یا زبان پر ایرشیا کئے بنا نہیں رہ سکتا .

اِس کتاب میں پودار جی کی 115 کہانیاں ہیں، اور ہر کہانی کا شیرشک ایک کہاوت ہے . اِس طرح یہ کتاب کہاوتوں کی کہانیاں بن گئی ہے . ان کہانیوں سے اُن اُن کہاوتوں کا رہسیہ، اُن کی خوبی اور اُن کے اِستعمال کا ڈھنگ سامنے آجاتا ہے . ہمیں شبہ ہے کہ آجکل اسکول کالج میں پڑھنے والے بھائی بہنوں کو جو 'راشٹر بھاشا' سکھائی جا رہی ہے وہ کچھ ایسی بناوٹی سی ہے کہ اُن کو ہمارے اصلی جیون سے جدا کرتی جارہی ہے. بہت سے محاورے اور کہاوتیں تو یہ پڑھے لکھے سمجھتے ہی نہیں . ہم نے ایسے بھی شکشت دیکھے ہیں جو ایسی کہاوتیں تک نہیں سمجھتے—بلی کے بھاگیہ سے چھینکا ٹوٹا ! بھینس کے آگے بین بجانا ! اُن کے مانسک داردرتا کے بارے میں کسے دکھ نہیں ہوگا .

اِس لئے ہم اِس کتاب کا بہت سواگت کرتے ہیں . کیا لیکھک، کیا پرکاشک—دونوں بدھائی کے پاتر ہیں . ہم چاہینگے کہ یہ ہندی بھاشا بھاشی پرانتوں میں—اُترپردیش، بہار، مدھیہ بھارت، مدھیہ پردیش، وندھیہ پردیش، اور راجستھان میں—کورس میں شامل کی جائے اور ہندی کے ہر پستکالیہ میں اِسے رکھا جائے . ساتھ ہی ساتھ پرکاشک مہودئے سے بنتی کرینگے کہ اِس کا ایک سستا سنسکرن—سستے سے سستا سنسکرن—نکالیں جس سے نہ کیول 'سستا ساہتیہ منڈل' کا نام سارتھک ہو، بلکہ ست ساہتیہ کی یہ دین ہر شہراتی کے گھر پہونچ جائے .

—باپو

हथियारों की पूजा

अखबारों में एक बड़ी दुखद खबर आई है, वह यह कि दशहरे के दिन भारत सरकार के डिफ़ैन्स मिनिस्टर ने हथियारों की बाक़ायदा पूजा की और बहुत विधि पूर्वक दशहरे का उत्सव मनाया. जाहिर बात है कि उस पूजन में डिफ़ैन्स मिनिस्टर साहब ने किसी बड़े पुरोहित को बुला कर मन्त्र पढ़वाये होंगे, हथियारों पर तिलक किया होगा और फिर उन पंडित जी को चढ़ावा देकर उनके आशीर्वाद लिये होंगे. हमारी याद में आज़ाद भारत में शायद यह पहला मौक़ा है जब हथियारों की पूजा किसी मिनिस्टर ने की हो. यह घटना है तो छोटी-सी पर, हम इसे बहुत ख़तरनाक और तबाहकुन समझते हैं.

ज़ाहिर बात है कि ख़ास दशहरे के रोज़, किसी पंडित की निगरानी में इस तरह पूजा करना हमारे सेकुलर स्टेट (धर्म निरपेक्ष राज्य) के आदर्शों के ख़िलाफ़ है. डॉक्टर कैलाशनाथ काटजू ने हथियार-पूजा इस दशहरे पर सिर्फ़ इसी वजह से की क्योंकि वह डिफ़ैन्स मनिस्टर हैं. पा साल जब वह होम मिनिस्टर थे, या उसके पहले जब गवर्नर थे तब तो वह ऐसा नहीं करते रहे होंगे। और पारसाल या उसके पहले जो सज्जन डिफ़ैन्स मिनिस्टर रहे उन्होंने भी इस तरह पूजा नहीं की, क्योंकि सरकार की तरफ़ से या विधान के अन्दर इस तरह का कोई हुक्म या पाबन्दी नहीं है. इसलिये इस पूजा के अन्दर से साम्प्रदायिकता की गंध साफ़ साफ़ निकलती है. इसी तरह अगर फ़ाइनैन्स मिनिस्टर दीवाली के दिन सरकारी बजट के काग़ज़ों को लेकर पूजा करने लग जायें, एजुकेशन मिनिस्टर किसी मौक़े पर अपने इस्लामी ढंग से कुछ जश्न मनाने लगें, हल्थ मिनिस्टर अपने ईसाई तरीक़े से कुछ समारोह करें—हर कोई अपने अपने धरम की हंडिया में जो चाहे पकाने लगे—तब हमारे अनेकों दावे ग़लत साबित होंगे और दुनिया के सामने हम झूठे क़रार दिये जायेंगे. यह ज़ाहिर है कि निजी हैसियत से हर नागरिक को मज़हबी आज़ादी हासिल है. उस हक़ की, हम क़द्र करते हैं. लेकिन हर नागरिक को उससे भी ज़्यादा

ھتیاروں کی پوجا

اخباروں میں ایک بڑی دکھد خبر آئی ھے' وہ یہ کہ دشہرے کے دن بھارت سرکار کے ڈفینس منسٹر نے ھتیاروں کی باقاعدہ پوجا کی اور بہت بدھی پوروک دشہرے کا اُتسو منایا. ظاھر بات ھے کہ اُس پوجن میں ڈفینس منسٹر صاحب نے کسی بڑے پروھت کو بلاکر منتر پڑھوائے ھونگے' ھتیاروں پر تلک کیا ھوگا اور پھر اُن پنڈت جی کو چڑھاوا دیکر اُن کے آشیرواد لئے ھونگے. ھماری یاد میں آزاد بھارت میں شاید یہ پہلا موقع ھے جب ھتیاروں کی پوجا کسی منسٹر نے کی ھو. یہ گھٹنا ھے تو چھوٹی سی' پر ھم اِسے بہت خطرناک اور تباہ‌کن سمجھتے ھیں.

ظاھر بات ھے کہ خاص دشہرے کے روز' کسی پنڈت کی نگرانی میں اِس طرح پوجا کرنا ھمارے سیکولر اِسٹیٹ (دھرم نرپیکش راجیہ) کے آدرشوں کے خلاف ھے. ڈاکٹر کیلاش ناتھ کاٹجو نے ھتیار پوجا اِس دشہرے پر صرف اِسی وجہ سے کی کیونکہ وہ ڈفینس منسٹر ھیں. پار سال جب وہ ھوم منسٹر تھے' یا اُس کے پہلے جب گورنر تھے تب تو وہ ایسا نہیں کرتے رھے ھونگے. اور پار سال یا اِس کے پہلے جو سجن ڈفینس منسٹر رھے اُنھوں نے بھی اِس طرح پوجا نہیں کی' کیونکہ سرکار کی طرف سے یا ودھان کے اندر اِس طرح کا کوئی حکم یا پابندی نہیں ھے. اِس لئے اِس پوجا کے اندر سے سامپردایکتا کی گندھ صاف صاف نکلتی ھے. اِسی طرح اگر فائینِنس منسٹر دیوالی کے دن سرکاری بجٹ کے کاغذوں کو لیکر پوجا کرنے لگ جائیں' ایجوکیشن منسٹر کسی موقع پر اپنے اسلامی ڈھنگ سے کچھ جشن منانے لگیں' ھیلتھ منسٹر اپنے عیسائی طریقے سے کچھ سماروہ کریں—ھر کوئی اپنے اپنے دھرم کی ھنڈیا میں جو چاھے پکانے لگے—تب ھمارے انیکوں دعوے غلط ثابت ھونگے اور دنیا کے سامنے ھم جھوٹے قرار دیئے جائینگے. یہ ظاھر ھے کہ نجی حیثیت سے ھر ناگرک کو مذھبی آزادی حاصل ھے. اِس حق کی ھم قدر کرتے ھیں. لیکن ھر ناگرک کو اُس سے بھی زیادہ

बड़ी ज़िम्मेदारी और कर्तव्य है—सब धर्मों को एक ही निगाह से देखना, सब की एक सी इज़्ज़त करना, किसी को चोट न पहुँचाना यानी सर्व-धर्म-समभाव. इस तरह के पूजन करने से वह समभाव नष्ट होता है और हमारे देश की एकता की बुनियादों पर चोट पहुँचती है.

मगर हमें ज़्यादा तकलीफ़ तो इस बात से हुई कि बीसवीं सदी के पचपनवें साल में हिन्दुस्तान जैसे देश का डिफ़ैन्स मिनिस्टर हथियारों की पूजा करता है. आज दुनिया में हर जगह आवाज़ उठ रही है कि लड़ाइयां इन्सानी समाज के लिये ख़तरा हैं, हथियारों से कोई बड़े सवाल ज़रा भी हल नहीं होते और दुनिया में शांति-अमन तभी आयेगा जब हथियारों का इस्तेमाल ख़त्म होगा. चारों तरफ़ से जब हथियार फेंकने की आवाज़ बुलन्द हो रही हो, हमारे प्रधान मंत्री हथियारों का सहारा न लेकर शान्ति और अमन के रास्ते पर "पंचशील" नाम से देश-देश से समझौते या राज़ीनामे कर रहे हों, ऐसी हालत में हिन्दुस्तान के डिफ़ैन्स मिनिस्टर को हथियारों की पूजा करना कहां तक शोभा देता है. कौन नहीं जानता कि हिन्दुस्तान की सरकार या फ़ौजों के पास जो हथियार हैं वे महज़ दिखावे के हैं, तादाद और असर में बहुत हलके और किसी बड़ी फ़ौजी ताक़त के सामने मिन्टों में काफ़ूर हो जाने वाले हैं? कौन नहीं जानता कि हिन्दुस्तान की आज जो दुनिया में इज़्ज़त है उसका कारण हमारी फ़ौज या हथियार नहीं हैं? कौन नहीं जानता कि पन्चशील नाम का चिराग़ जलाकर हिन्दुस्तान ने संसार व्यापी अंधेरे को चीरकर उजाला फैलाने का काम शुरू किया है? इस सूरत में हिन्दुस्तान में हथियारों की पूजा होना हिन्दुस्तान का "पंचशील" की जड़ों को ही खोद डालना है.

लेकिन सबसे ज़्यादा दुख हमें इस चीज़ से हुआ कि हथियारों की पूजा डाक्टर कैलाशनाथ काटजू जैसे समझदार और दूरदर्शी बुज़ुर्ग के हाथों से की गई. हमें याद आ रहा है कि 1946 में डाक्टर काटजू ने अहिंसा के गहरे प्रचार के लिये "हरिजन" में एक लेख भी लिखा था. अकसर अपनी स्पीचों में वह अहिंसा की शक्ति और उसके अमल पर ज़ोर देते रहे हैं. पर अब अचानक जब वह हथियारों का पूजन करते हैं तो मजबूरन इसका यही मतलब लगाना होगा कि उन्हें अहिंसा में अब विश्वास नहीं रहा, वह हिन्दुस्तान को फ़ौजी रास्ते पर ले जाना चाहते हैं और हथियारों के ही ज़रिये देश के भीतरी और बाहरी सवाल हल करने के सपने देखते हैं. जब डाक्टर काटजू जैसे धर्म-पाबन्द, गीता-प्रेमी, और अहिंसा-भक्त के विचार इस तरह पलटा खा जायें तो किसी दूसरे पर कौन विश्वास करेगा?

हम विचारों की संकीर्णता या लकीर की फ़क़ीर पीटने के क़ायल नहीं हैं. दुनिया परिवर्तनशील है, और आदमी

بڑی ذمہ‌داری اور فرض ہے—سب دھرموں کو ایک ہی نگاہ سے دیکھنا، سب کی ایک سی عزت کرنا، کسی کو چوٹ نہ پہونچانا، یعنی سرو دھرم سمبھاؤ ۔ اس طرح کے پوجن کرنے سے وہ سمبھاؤ نشٹ ہوتا ہے اور ہمارے دیش کی ایکتا کی بنیادوں پر چوٹ پہونچتی ہے ۔

مگر ہمیں زیادہ تکلیف تو اس بات سے ہوئی کہ بیسویں صدی کے پچپنویں سال میں ہندستان جیسے دیش کا ڈفینس منسٹر ہتیاروں کی پوجا کرتا ہے ۔ آج دنیا میں ہر جگہ آواز اٹھ رہی ہے کہ لڑائیاں انسانی سماج کے لئے خطرہ ہیں، ہتیاروں سے کوئی بڑے سوال ذرا بھی حل نہیں ہوتے اور دنیا میں شانتی - امن تبھی آئیگا جب ہتیاروں کا استعمال ختم ہوگا ۔ چاروں طرف سے جب ہتیار پھینکنے کی آواز بلند ہو رہی ہو، ہمارے پردھان منتری ہتیاروں کا سہارا نہ لیکر شانتی اور امن کے راستے پر "پنچ شیل" نام سے، دیش دیش سے سمجھوتے یا راضی‌نامے کر رہے ہوں، ایسی حالت میں ہندستان کے ڈفینس منسٹر کو ہتیاروں کی پوجا کرنا کہاں تک شوبھا دیتا ہے ۔ کون نہیں جانتا کہ ہندستان کی سرکار یا فوجوں کے پاس جو ہتیار ہیں وہ محض دکھاوے کے ہیں، تعداد اور اثر میں بہت ہلکے اور کسی بڑی فوجی طاقت کے سامنے منٹوں میں کافور ہوجانے والے ہیں؟ کون نہیں جانتا کہ ہندستان کی آج جو دنیا میں عزت ہے اس کا کارن ہماری فوج یا ہتیار نہیں ہے؟ کون نہیں جانتا کہ پنچ شیل نام کا چراغ جلاکر ہندستان نے سنسار ویاپی اندھیرے کو چیرکر اُجالا پھیلانے کا کام شروع کیا ہے؟ اس صورت میں ہندستان میں ہتیاروں کی پوجا ہونا ہندستان کا "پنچ شیل" کی جڑوں کو ہی کھود ڈالنا ہے ۔

لیکن سب سے زیادہ دکھ ہمیں اس چیز سے ہوا کہ ہتیاروں کی پوجا ڈاکٹر کیلاش ناتھ کاٹجو جیسے سمجھدار اور دور درشی بزرگ کے ہاتھوں سے کی گئی ۔ ہمیں یاد آرہا ہے کہ 1946 میں ڈاکٹر کاٹجو نے اہنسا کے گہرے پرچار کے لئے "ہریجن" میں ایک لیکھ بھی لکھا تھا ۔ اکثر اپنی اسپیچوں میں وہ اہنسا کی شکتی اور اس کے عمل پر زور دیتے رہے ہیں، پر اب اچانک جب وہ ہتیاروں کا پوجن کرتے ہیں تو مجبوراً اس کا یہی مطلب لگانا ہوگا کہ انہیں اہنسا میں اب وشواس نہیں رہا، وہ ہندستان کو فوجی راستے پر لیجانا چاہتے ہیں اور ہتیاروں کے ہی ذریعہ دیش کے بھیتری اور باہری سوال حل کرنے کے سپنے دیکھتے ہیں ۔ جب ڈاکٹر کاٹجو جیسے دھرم پابند، گیتا پریمی اور اہنسا بھکت کے وچار اس طرح پلٹا کھا جائیں تو کسی دوسرے پر کون وشواس کریگا؟

ہم وچاروں کی سنکیرنتا یا لکیر کی فقیر پیٹنے کے قائل نہیں ہیں ۔ دنیا پریورتن شیل ہے، اور آدمی

अमन-प्रेमी है. इसलिये नये नये विचार समाज के सामने आते रहेंगे और इन्सान लगातार आगे बढ़ेगा. लेकिन हमारा ख्याल है कि दुनिया जिस दिशा में जिस हद तक आगे उन्नति कर चुकी है, उस दिशा में फिर वापिस नहीं आयेगी. हथियारों के बारे में उसने समझ लिया है कि उनके इस्तेमाल से उसकी बरबादी ही होगी. यही वजह है कि जिनेवा में अमरीका, रूस, इन्गलैंड और फ्रांस की सरकारों के मुखिया एक साथ बैठे, मिलकर बातें कीं, एक दूसरे के नजदीक आये और अमन की तरफ़ दुनिया को आगे ले जाने का फ़ैसला किया. उसके कुछ अरसे बाद जब दुनिया भर के वैज्ञानिक जिनेवा में जमा हुए तो उन्होंने इस बात पर दिल खोल कर विचार किया कि एटम या परमाणु की शक्ति को किस तरह मनुष्य के हित में कारगर बनाया जाये. आनेवाले ज़माने में हथियार और विज्ञान की बजाय अहिंसा और विज्ञान मिलकर चलने वाले हैं.

इसलिये हिन्दुस्तान के मिनिस्टरों, या अधिकारियों को ज़माने का इशारा समझने में देर नहीं करनी चाहिये. जहां हज़ारों साल पहले हिन्दुस्तान में व्यक्तिगत अहिंसा का जन्म हुआ था, उसी हिन्दुस्तान में अब बीसवीं सदी में सामूहिक अहिंसा या सत्याग्रह का जन्म हुआ. उसी रास्ते पर थोड़ा बहुत चलकर हिन्दुस्तान ने आज़ादी हासिल करने की कोशिश की. इसी रास्ते से हिन्दुस्तान अपनी आज़ादी साबित और सुरक्षित रख सकता है. इसलिये हिन्दुस्तान में अब हथियारों की पूजा नहीं चल सकती. हिन्दुस्तान को यह हथियार हिन्द महासागर में फेंक ही देना है. साथ ही साथ प्रेम, त्याग व सेवा के मूल्य क़ायम करके सामूहिक अहिंसा या सत्याग्रह के नये-नये रूप संसार के आगे पेश करना है.

14. 11. '55 —सुरेश रामभाई

बे-लगाम चाल

देश में पैदावार बढ़ाने और जनता की बेहतरी की ख़ातिर हमारी सरकारें—क्या केन्द्रीय और क्या प्रान्तीय—तरह तरह की योजनायें मुल्क के सामने ला रही हैं. इनमें जनता का लाखों करोड़ों रुपया पानी की तरह खर्च होता चला जा रहा है. कोई अभी से नहीं बता सकता कि इनसे देश को कैसा और कितना फ़ायदा पहुंचेगा. लेकिन एक बात साफ़ ज़ाहिर है. वह यह कि सरकार इस खर्च पर कोई क़ाबू नहीं रख पा रही है और बे-लगाम घोड़े की तरह खर्च अंधा धुन्ध हो रहा है.

हम यह बात अपनी तरफ़ से नहीं कह रहे हैं. सरकारी रिपोर्टें और बयान ही इस अन्धेर की गवाही दे रही हैं. हमारे अख़बारों में इनकी चर्चा भी हुई है. उनमें से चंद ख़ास मदों की तरफ़ अपने पाठक का ध्यान हम खींचना चाहते हैं.

ترقی پریمی ھے. اس لئے نئے نئے وچار سماج کے سامنے آتے رھینگے اور انسان لگاتار آگے بڑھیگا . لیکن ھمارا خیال ھے کہ دنیا جس دشا میں جس حد تک آگے اُنتی کرچکی ھے' اُس دشا میں پھر واپس نہیں جائیگی . ھتیاروں کے بارے میں اُس نے سمجھ لیا ھے کہ اُن کے استعمال سے اُس کی بربادی ھی ھوگی . یہی وجہ ھے کہ جنیوا میں امریکہ' روس' انگلینڈ اور فرانس کی سرکاروں کے مکھیا ایک ساتھ بیٹھے' ملکر باتیں کیں' ایک دوسرے کے نزدیک آئے اور امن کی طرف دنیا کو آگے لیجانے کا فیصلہ کیا . اُس کے کچھ عرصے بعد سب دنیا بھر کے ویگیانک جنیوا میں جمع ھوئے تو اُنھوں نے اِس بات پر دل کھولکر وچار کیا کہ ایٹم یا پرمانو کی شکتی کو کس طرح منشیہ کے ھت میں کارگر بنایا جائے. آنے والے زمانے میں ھتھیار اور وگیان کی بجائے اھنسا اور وگیان ملکر چلنے والے ھیں .

اِس لئے ھندستان کے منسٹروں یا ادھیکاریوں کو زمانے کا اشارہ سمجھنے میں دیر نہیں کرنی چاھئے . جہاں ھزاروں سال پہلے ھندستان میں ویکتی گت اھنسا کا جنم ھوا تھا' اُسی ھندستان میں اب بیسویں صدی میں ساموھک اھنسا یا ستیاگرہ کا جنم ھوا . اُسی راستے پر تھوڑا بہت چلکر ھندستان نے آزادی حاصل کرنے کی کوشش کی . اِسی راستے سے ھندستان اپنی آزادی ثابت اور سرکشت رکھ سکتا ھے . اس لئے ھندستان میں اب ھتیاروں کی پوجا نہیں چل سکتی . ھندستان کو یہ ھتیار ھند مہاساگر میں پھینک ھی دینا ھے . ساتھ ھی ساتھ پریم' تیاگ و سیوا کے مولیہ قایم کرکے ساموھک اھنسا یا ستیاگرہ کے نئے نئے روپ سنسار کے آگے پیش کرنا ھے .

14 . 11 . '55 —سریش رام بھائی .

بے لگام چال

دیش میں پیدا وار بڑھانے اور جنتا کی بہتری کی خاطر ھماری سرکاریں—کیا کیندریہ اور کیا پرانتیہ—طرح طرح کی یوجنائیں ملک کے سامنے لا رھی ھیں . اِن میں جنتا کا لاکھوں کروڑوں روپیہ پانی کی طرح خرچ ھوتا چلا جا رھا ھے . کوئی ابھی سے نہیں بتا سکتا کہ اِن سے دیش کو کیسا اور کتنا فایدہ پہونچیگا . لیکن ایک بات صاف ظاھر ھے . وہ یہ کہ سرکار اِس خرچ پر کوئی قابو نہیں رکھ پا رھی ھے اور بے لگام گھوڑے کی طرح خرچ اندھا دھند ھو رھا ھے .

ھم یہ بات اپنی طرف سے نہیں کہہ رھے ھیں . سرکاری رپورٹیں اور بیان ھی اِس اندھیر کی گواھی دے رھی ھیں . ھمارے اخباروں میں اِن کی چرچا بھی ھوئی ھے . اُن میں سے چند خاص مدوں کی طرف اپنے پاٹھک کا دھیان ھم کھینچنا چاھتے ھیں .

सरकारी खर्चे का हिसाब-किताब देखने वाली पार्लिया-मेंट की तरफ़ से दो कमेटियाँ रहती हैं—पब्लिक एकाउन्ट्स कमेटी और ऐस्टीमेट्स कमेटी. इनकी रिपोर्टें पार्लियामेंट में पेश होती हैं. हाल ही में पब्लिक एकाउन्ट्स कमेटी की चौदहवीं रिपोर्ट पर पार्लियामेन्ट में बहस हुई. उस रिपोर्ट में यह कहा गया है कि लन्दन में भारत सरकार ने जो जीपें ख़रीदीं और योरुप के दीगर देशों से जो दूसरा फ़ौजी सामान लिया, उस बारे में जाँच जरूर की जानी चाहिये. कमेटी ने कहा कि नवीं रिपोर्ट में ही इस जाँच की मांग की गई थी, लेकिन सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया. इस रिपोर्ट पर बोलते हुए डिफ़ेन्स मिनिस्टर ने 29 सितम्बर को पार्लियामेन्ट में कहा कि इस मामले की जाँच 1952 में एक ऊँची कमेटी ने की थी. उस कमेटी के सदर प्रधान मंत्री ख़ुद ही थे. वह कमेटी, डिफ़ेन्स मिनिस्टर ने बताया, इस नतीजे पर पहुँची कि कुछ टैकनिकल ग़लती की गई और क़ायदे का पालन जरूर नहीं हुआ था, लेकिन किसी भी अफ़सर विशेष का दोष नहीं था. इसलिये सरकार न इसमें कोई कारवाई करना चाहती है और न इसकी जाँच के लिये कोई कमेटी बिठाना चाहती है. डिफ़ेन्स मिनिस्टर ने यह भी कहा कि यह मामला अब सात बरस पुराना हो चुका और 'सार्वजनिक हित' की ख़ातिर इसे अब बन्द कर देना चाहिये.

इस तरह पब्लिक एकाउन्ट कमेटी की तजवीज़ को सरकार ने ठुकरा दिया. ज़ाहिर बात है कि मामले को संगीन समझकर ही, उस कमेटी ने अपनी चौदहवीं रिपोर्ट में भी, सन् 1955 में, पुराने मामले पर ज़ोर दिया और जाँच की सिफ़ारिश की. लेकिन उसकी राय की सरकार ने कोई क़दर नहीं की और बिना किसी माक़ूल जवाब के उसे ख़ारिज कर दिया. अगर इस तरह पब्लिक एकाउन्ट कमेटी के फ़ैसलों को काग़ज़ के कचरे के सिपुर्द कर दिया जायेगा. तो फिर समझ में नहीं आता कि उस कमेटी की आख़िर ज़रूरत ही क्या रह जाती है.

अब हम ऐस्टीमेट कमेटी की रिपोर्ट पर आते हैं. इसमें दो कारख़ानों की हालत पर विशेष रोशनी डाली गई है—विज़ागापट्टम में चलने वाला हिन्दुस्तान शिपयार्ड और बंगलोर में चलने वाली हिन्दुस्तान मशीन टूल्स फ़ैक्ट्री. यह दोनों काम भारत सरकार ख़ुद ही चला रही है. हिन्दुस्तान शिपयार्ड को तो कुछ अरसा पहले ही एक प्राईवेट कम्पनी से सरकार ने अपने हाथ में लिया था. उम्मीद यह थी कि सिन्धिया स्टीम नैवीगेशन कम्पनी (उसका पुराना नाम) जो आर्थिक बोझ बर्दाश्त नहीं कर सकती थी, उसे सरकार संभाल लेगी. उम्मीद यह भी थी कि जहाज़ बनाने वाली एक फ़्रांसीसी कम्पनी की मदद से विज़ागापट्टम में

سرکاری خرچ کا حساب کتاب دیکھنے والی پارلیامنٹ کی طرف سے دو کمیٹیاں رہتی ہیں — پبلک ایکاونٹس کمیٹی اور ایسٹیمیٹس کمیٹی ۔ اِن کی رپورٹیں پارلیامینٹ میں پیش ہوتی ہیں ۔ حال ہی میں پبلک ایکاونٹس کمیٹی کی چودھویں رپوٹ پر پارلیامنٹ میں بحث ہوئی ۔ اُس رپورٹ میں یہ کہا گیا ہے کہ لندن میں بھارت سرکار نے جو جیپیں (Jeeps) خریدیں اور یورپ کے دیگر دیشوں سے جو دوسرا فوجی سامان لیا' اُس بارے میں جانچ ضرور کی جانی چاہیئے ۔ کمیٹی نے کہا کہ نویں رپوٹ میں ہی اِس جانچ کی مانگ کی گئی تھی' لیکن سرکار نے کوئی دھیان نہیں دیا ۔ اِس رپورٹ پر بولتے ہوئے ڈفینس منسٹر نے 29 ستمبر کو پارلیامنٹ میں کہا کہ اِس معاملے کی جانچ 1952 میں ایک اونچی کمیٹی نے کی تھی ۔ اِس کمیٹی کے صدر پردھان منتری خود ہی تھے ۔ وہ کمیٹی' ڈفینس منسٹر نے بتایا' اِس نتیجے پر پہونچی کہ کچھ ٹیکنیکل غلطی کی گئی اور قاعدے کا پالن ضرور نہیں ہوا تھا' لیکن کسی بھی افسر وشیش کا دوش نہیں تھا ۔ اِس لئے سرکار نہ اِس میں کوئی کارروائی کرنا چاہتی ہے اور نہ اِس کی جانچ کے لئے کوئی کمیٹی بٹھانا چاہتی ہے ۔ ڈفینس منسٹر نے یہ بھی کہا کہ یہ معاملہ اب سات برس پرانا ہو چکا اور 'ساروجنک ہت' کی خاطر اِسے اب بند کردینا چاہیئے ۔

اِس طرح پبلک ایکاونٹ کمیٹی کی تجویز کو سرکار نے ٹھکرا دیا ۔ ظاہر بات ہے کہ معاملے کو سنگین سمجھ کر ہی' اُس کمیٹی نے اپنی چودھویں رپوٹ میں بھی' سن 1955 میں' پرانے معاملے پر زور دیا اور جانچ کی سفارش کی ۔ لیکن اُس کی رائے کی سرکار نے کوئی قدر نہیں کی اور بنا کسی معقول جواب کے اُسے خارج کر دیا ۔ اگر اِس طرح پبلک ایکاونٹ کمیٹی کے فیصلوں کو کاغذ کے کچرے کے سپرد کر دیا جائیگا' تو پھر سمجھ میں نہیں آتا کہ اُس کمیٹی کی آخر ضرورت ہی کیا رہ جاتی ہے ۔

اب ہم ایسٹیمیٹ کمیٹی کی رپوٹ پر آتے ہیں ۔ اُس میں دو کارخانوں کی حالت پر وشیش روشنی ڈالی گئی ہے — وزاگا پٹم میں چلنے والا ہندستان شپ یارڈ اور بنگلور میں چلنے والی ہندستان مشین ٹولس فیکٹری ۔ یہ دونوں کام بھارت سرکار خود ہی چلا رہی ہے ۔ ہندستان شپ یارڈ کو تو کچھ عرصہ پہلے ہی ایک پرائیویٹ کمپنی سے سرکار نے اپنے ہاتھ میں لیا تھا ۔ اُمید یہ تھی کہ سندھیا اسٹیم نیویگیشن کمپنی (اِس کا پرانا نام) جو آرتھک بوجھ برداشت نہیں کر سکتی تھی' اُسے سرکار سنبھال لیگی ۔ اُمید یہ بھی تھی کہ جہاز بنانے والی ایک فرانسیسی کمپنی کی مدد سے وزاگا پٹم میں

जहाज़ बनने का सिलसिला क़ायम हो जायेगा और हिन्दुस्तानी कारीगरों को ऐसी ट्रेनिंग भी उसमें मिल जायेगी कि सारा काम वह अपने आप चला ले जायें.

लेकिन हुआ कुछ और ही. ऐस्टीमेट कमेटी का कहना है कि कोई भी उम्मीद पूरी नहीं हुई. फ्रांसीसी कम्पनी ने जो माहिर भेजे थे वह पूरे नहीं उतरे. जहाज़ बनाने की रफ़्तार में तेज़ी आने के बजाय और मंदी आ गई. यह नहीं कि सरकार के पास जहाज़ों की सप्लाई की मांग नहीं थी. मांग थी मगर माल ही तैयार नहीं था. इस तरह शेडल (schedule) के मुताबिक़ जहाज़ जो नहीं बन सके, उससे कारख़ाने को भारी आर्थिक नुक़सान उठाना पड़ा. उसकी साख को धक्का लगा सो अलग. एस्टीमेट कमेटी की राय है कि इन नुक़सानों के लिये सरकार के फ्रांसीसी सलाहकार ही ज़िम्मेदार हैं जिन्होंने अपने फ़र्ज़ को ठीक से नहीं निभाया. हमें नहीं मालूम कि भारत सरकार फ्रांसीसी कम्पनी से यह घाटा वसूल कर सकेगी या नहीं. लेकिन इस तरह के एक तरफ़े ठेके विदेशी कम्पनियों को देकर सरकार कई बार धोखा खा चुकी है और जनता का पैसा बरबाद हुआ है. सब में ज़्यादा तकलीफ़देह बात यह हुई कि हिन्दुस्तानी कारीगरों की ट्रेनिंग का काम भी किसी हद तक आगे नहीं बढ़ा. एस्टीमेटी कमेटी ने कहा है कि इस ममले पर फ़ौरन ध्यान दिया जाना चाहिये और जल्द से जल्द इसका इलाज करना चाहिये.

यही हाल बंगलौर की मशीन टूल्स फ़ैक्ट्री में हुआ बताया जाता है जहां एक स्विटज़रलैन्ड की कम्पनी की निगरानी में काम चल रहा था. इस फ़ैक्ट्री को सरकारी हलक़ों में बहुत ही बुनियादी फ़ैक्ट्री माना जाता है. यह यक़ीन दिलाया गया है कि इसकी मदद से देश में अनेकों छोटे-बड़े कारख़ानों के चलने में मदद मिलेगी. लेकिन यहां भी घोटाला हुआ. न माल तैयार हुआ और न इन्तज़ाम ही ठीक रहा. एस्टीमेट कमेटी की रिपोर्ट यह है कि स्विज़ कम्पनी के साथ भारत सरकार बहुत लापरवाही और ढिलाई से पेश आई और देश का पैसा—जो बचाया जा सकता था—नाहक़ लुटाकर बरबाद किया गया. कमेटी ने तजवीज़ की है कि सरकार को चाहिये कि इस फ़ैक्ट्री की योजना की दोबारा जाँच कराये और नये सिरे से इसका बन्दोबस्त करे.

देश के धन की इस तबाही पर मद्रास के "हिन्दू" नाम के सरनाम अख़बार ने बहुत दुख ज़ाहिर किया है. "हिन्दू" कोई क्रान्तिकारी या सरकार विरोधी या ग्रामोद्योगी अख़बार नहीं है. उस तक का कहना है कि आज़ादी के बाद विदेशी फ़र्मों से सरकार के सम्बन्ध का जो लेखा है

جہاز بنلے کا سلسلہ قائم ہو جائیگا اور ہندستانی کاریگروں کو ایسی ٹریننگ بھی اِس میں مل جائیگی کہ سارا کام وہ اپنے آپ چلا لے جائیں۔

لیکن ہوا کچھ اور ہی۔ اِسٹیمیٹ کمیٹی کا کہنا ہے کہ کوئی بھی اُمید پوری نہیں ہوئی۔ فرانسیسی کمپنی لے جو ماہر بھیجے تھے وہ پورے نہیں اُترے۔ جہاز بنانے کی رفتار میں تیزی آنے کے بجائے اور مندی آگئی۔ یہ نہیں کہ سرکار کے پاس جہازوں کی سپلائی کی مانگ نہیں تھی۔ مانگ تھی مگر مال ہی تیار نہیں تھا۔ اِس طرح شیڈول (Schedule) کے مطابق جہاز جو نہیں بن سکے' اُس سے کارخانے کو بھاری آرتھک نقصان اُٹھانا پڑا۔ اُس کی ساکھ کو دھکا لگا سو الگ۔ ایسٹیمیٹ کمیٹی کی رائے ہے کہ اُن نقصانوں کے لئے سرکار کے رانسیسی صلاحکار ہی زمہ دار ہیں جنھوں نے اپنے فرض کو ٹھیک سے نہیں نبھایا۔ ہمیں نہیں معلوم کہ بھارت سرکار رانسیسی کمپنی سے یہ گھاٹا وصول کر سکیگی یا نہیں۔ لیکن س طرح کے ایک طرفے ٹھیکے ودیشی کمپنیوں کو دیکر سرکار ئی بار دھوکھا کھا چکی ہے اور جنتا کا پیسہ برباد ہوا ہے۔ سب یں زیادہ تکلیف دہ بات یہ ہوئی کہ ہندستانی کاریگروں کی ٹریننگ کا کام بھی کسی حد تک آگے نہیں بڑھا۔ ایسٹیمیٹ میٹی نے کہا ہے کہ اس معاملے پر فوراً دھیان دیا جانا چاہئے اور جلد سے جلد اِس کا علاج کرنا چاہئے۔

یہی حال بنگلور کی مشین ٹولس فیکٹری میں ہوا بتایا جاتا ہے جہاں ایک سوئٹزرلینڈ کی کمپنی کی نگرانی میں کام چل رہا تھا۔ اِس فیکٹری کو سرکاری حلقوں میں بہت ہی بنیادی فیکٹری مانا جاتا ہے۔ یہ یقین دلایا گیا ہے کہ اِس کی دد سے دیش میں انیکوں چھوٹے بڑے کارخانوں کے چلنے میں دد ملیگی۔ لیکن یہاں بھی گھوٹالا ہوا۔ نہ مال تیار ہوا اور ہ انتظام ہی ٹھیک رہا۔ ایسٹیمیٹ کمیٹی کی رپورٹ یہ ہے کہ سوز کمپنی کے ساتھ بھارت سرکار بہت لاپرواہی اور ڈھلائی سے یش آئی اور دیش کا پیسہ—جو بچایا جا سکتا تھا—ناحق ٹا کر برباد کیا گیا۔ کمیٹی نے تجویز کی ہے کہ سرکار کو چاہئے ہ اِس فیکٹری کی یوجنا کی دوبارہ جانچ کرائے اور نئے سرے سے س کا بندوبست کرے۔

دیش کے دھن کی اِس تباہی پر مدارس کے "ہندو" ام کے سرنام اخبار نے بہت دکھ ظاہر کیا ہے۔ 'ہندو' کوئی کرانتیکاری یا سرکار وِرودھی یا گرامودیوگی اخبار ہیں ہے۔ اُس تک کا کہنا ہے کہ آزادی کے بعد ودیشی فرموں سے سرکار کے سمبندھ کا جو لیکھا ہے

ह बहुत विनाशक आर्थिक सरगर्मियों का लेखा है. और
अगर देश का ज्यादा पैसा नाले में बहाना मंजूर नहीं है तो
यह दुखद अध्याय फ़ौरन ख़त्म होना चाहिये.

15-11-'55 —सुरेश रामभाई

एक खतरनाक सुझाव

हमारे प्रधानमंत्री ने गत 14 नवम्बर को इस दुनिया
में अपने सफ़र के 66 शानदार साल पूरे किये. इस मौक़े पर
अपने देशवासियों के साथ हम पंडित जवाहरलाल का
आदर के साथ अभिनन्दन करते हैं. अंतर्राष्ट्रीय जगत में
उन्होंने भारत का मस्तक ऊँचा उठाया है. इससे भी बढ़कर
बात यह है कि आज वह दुनिया में शान्ति के सबसे बड़े
अलमबरदार और मशाल हैं और देश-देश के दुखी लोग
उनकी तरफ़ बड़े इतमीनान और उम्मीद-भरी निगाहों से
देखते हैं.

बच्चों से उनको बहुत प्रेम है. बड़े आदमियों को
—दिलदार आदमियों को—यह सदा होता ही है. इसलिये
बच्चों पर पंडित जी न गुस्सा करते हैं और न उनकी
ज़्यादतियों का बुरा मानते हैं. उनके हाथ से फल-फूल लेना
पसंद करते हैं. पिछले दो बरस से उनकी सालगिरह के
मौक़े पर बच्चों के प्रदर्शन शुरू किये गये. "चाचा नेहरू"
कहकर उनकी जय मनाई गई. इस मरतबा इस प्रदर्शन ने
ज़रा ज्यादा बड़ी और नुमांया शक्ल ली—क्योंकि उसमें
सरकारी हलक़ों की तरफ़ से भी काफ़ी दिलचस्पी ली गई.

लेकिन एक ख़ास बात हुई. वह यह कि प्रधानमन्त्री
की सुपुत्री ने एक जगह कहा कि अगले साल से 14 नवम्बर
एक 'पब्लिक हालीडे' (सार्वजनिक छुट्टी) हो और उस
दिन देश में 'चिल्डरन्स डे' (बच्चों का दिन) मनाया जाये.
उनके इस सुझाव के आधार पर "हिन्दुस्तान टाइम्स" के प्रसिद्ध
क़लमनवीस "इन्साफ़" ने यह तजवीज़ पेश की है कि जहां
14 नवम्बर "चिल्डरन्स डे" के तौर पर, वहां गांधी-जयन्ती
यानी 2 अक्तूबर "पेरन्ट्स डे" (माता-पिता का दिन) के तौर
पर मनाया जाय!

क्या ख़ूब टवारा है—'चिल्डरन्स डे' अलग, 'पेरन्ट्स
डे' अलग. आगे चलकर कोई तबियतवाला यह सुझाव पेश
कर देगा कि श्रीमती इन्दिरा गांधी की सालगिरह को 'डाटर्स
डे', (बेटियों का दिन) या 'वाइफ़्स डे' (सधवाओं का दिन)
मनाया जाये, फिर किसी और का 'सन्स डे' (बेटों का दिन)
या 'हज़बन्ड्स डे' (पतियों या ख़ाविन्दों का दिन) मनाया
जाये!

وہ بہت وناشک آرتھک سرگرمیوں کا لیکھا ہے۔ اور اگر دیش
کا زیادہ پیسہ نالے میں بہانا منظور نہیں ہے تو یہ دکھد ادھیائے
فوراً ختم ہونا چاہئے۔

15. 11. 55 —سریش رام بھائی

ایک خطرناک سوجھاؤ

ہمارے پردھان منتری نے گت 14 نومبر کو اِس دنیا میں
اپنے سفر کے 66 شاندار سال پورے کئے۔ اِس موقع پر اپنے دیش
واسیوں کے ساتھ ہم پنڈت جواھر لال کا آدر کے ساتھ ابھینندن کرتے
ھیں۔ انتر راشٹریہ جگت میں اُنھوں نے بھارت کا مستک اُونچا
اُٹھایا ھے۔ اِس سے بھی بڑھکر بات یہ ھے کہ آج وہ دنیا میں
شانتی کے سب سے بڑے علمبردار اور مشعل ھیں اور دیش
دیش کے دکھی لوگ اِن کی طرف بڑے اطمینان اور اُمید
بھری نگاھوں سے دیکھتے ھیں۔

بچوں سے اُن کو بہت پریم ھے۔ بڑے آدمیوں کو—دلدار
آدمیوں کو—یہ سدا ھوتا ھی ھے۔ اِس لئے بچوں پر پنڈت جی
نہ غصہ کرتے ھیں اور نہ اُن کی زیادتیوں کا بُرا مانتے ھیں۔
اُن کے ھاتھ سے پھل پھول لینا پسند کرتے ھیں۔ پچھلے دو برس
سے اُن کی سالگرہ کے موقعے پر بچوں کے پردرشن شروع کئے گئے۔
"چاچا نہرو" کہکر اُن کی جے منائی گئی۔ اِس مرتبہ اِس
پردرشن نے ذرا زیادہ بڑی اور نمایاں شکل لی—کیونکہ اُس
میں سرکاری حلقوں کی طرف سے بھی کافی دلچسپی لی گئی۔

لیکن ایک خاص بات ھوئی۔ وہ یہ کہ پردھان منتری کی
سوپتری نے ایک جگہ کہا کہ اگلے سال سے 14 نومبر ایک
'پبلک ھالیڈے' (سارو جنک چھٹی) ھو اور اُس دن دیش
میں 'چلڈرینس ڈے' (بچوں کا دن) منایا جائے۔ اُن کے
اِس سوجھاؤ کے آدھار پر "ھندستان ٹائمس" کے پرسدھ قلم
نویس "انصاف" نے یہ تجویز پیش کی ھے کہ جہاں 14 نومبر
"چلڈرینس ڈے" کے طور پر، وھاں گاندھی جینتی یعنی 2 اکتوبر
"پیرنٹس ڈے" (ماتا پتا کا دن) کے طور پر منایا جائے!

کیا خوب بٹوارہ ھے—'چلڈرینس ڈے' الگ 'پیرینٹس
ڈے' الگ۔ آگے چلکر کوئی طبیعت والا سوجھاؤ پیش کریگا کہ
شریمتی اِندرا گاندھی کی سالگرہ کو 'ڈاٹرس ڈے' (بیٹیوں کا
دن) یا 'وائفز ڈے' (سدھواؤں کا دن) منایا جائے پھر کسی
اور کا 'سنس ڈے' (بیٹوں کا دن) یا 'ھزبنڈس ڈے' (پتیوں
یا خاوندوں کا دن) منایا جائے!!

ज़ाहिर है कि श्रीमती इन्दिरा गांधी और श्री "इन्साफ़" दोनों के सुझाव बहुत ख़तरनाक और नामुनासिब हैं. इस तरह बच्चों और उनके मां-बाप में बंटवारा करना तो शायद कट्टर से कट्टर मार्क्सवादी भी पसंद नहीं कर सकता. यह वर्गीकरण विचार के ओछे पन और दिल की तंगी का नमूना है. फिर, गांधी-जयन्ती को "पेरन्टस डे" क़रार देना उसे एकदम निकम्मा कर देना है. गांधी जी उसे ख़ुद ही चरखा-जयन्ती नाम दे गये हैं. अगर चरखा जयन्ती कामयाब होती है तो बच्चों को भी रोटी नसीब होगी और उनके मां-बाप भी अपने पैरों पर खड़े रह सकेंगे. और अगर चरखा-जयन्ती कामयाब नहीं होती तो बच्चे दाने दाने को तरसेंगे और मां-बाप ग़ुलामों से भी बदतर हो जायेंगे. इसलिये सच्ची गांधी-जयन्ती में 'चिल्डरन्स डे' और 'पेरन्ट्स डे' दोनों समा जाते हैं.

एक बात और भी है. आज पंडित नेहरू के लिये जो भक्ति दिखाई जा रही है उसे ज़रा हमें समझना चाहिये. विचारने की चीज़ यह है कि उसमें कितनी जवाहरलाल के प्रति है और कितनी भारत सरकार के प्रधानमन्त्री के प्रति. हम जानते हैं कि देश के लाखों करोड़ों लोग आज जवाहर-लाल जी के नाम पर नाच उठते हैं. लेकिन इससे भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि सरकारी अफ़सरों और राजनीतिक कारकुनों में सौ पीछे कम से कम नब्बे ऐसे होंगे जो पंडित जी को 'प्रधान मंत्री' के नाते ही पहचानते हैं. कल अगर कोई दूसरा आदमी उस कुर्सी पर बैठ जाये तो उसी का राग गाने लगेंगे और पंडित जी को शायद पहचानें भी नहीं. उनकी भक्ति एक तरह की लागत पूंजी यानी 'इन्वेस्टमेंट' है जिससे उन्हें काफ़ी वसूलयाबी ही होती है. इसलिये उनकी भक्ति कोई माने नहीं रखती. यही हाल बहुत से अख़बारों का है.

दूसरे, किसी भी पदाधिकारी के जीते जी उसके जन्म दिन को आम छुट्टी कर देना शोभा भी नहीं देता. आख़िर वह पदाधिकारी भी एक इन्सान है. और कौन इन्सान ऐसा है जो गुणों का ही पुतला हो और ख़ामियों से परे हो? इसीलिये किसी इन्सान की असली बुलन्दी उसकी ज़िन्दगी के दौरान में आंकना नामुमकिन है. उसकी लीला के ख़ात्मे के बाद ही उसके व्यक्तित्व का ठीक अन्दाज़ा लगाया जा सकता है और उसकी सही क़दर हो सकती है. पहले से ही उसके कारनामों पर मुहर लगाना जल्दबाज़ी और शैतानियत से ख़ाली नहीं, उस महापुरुष के प्रति अन्याय है.

तीसरे, यह देश है हिन्दुस्तान. यहाँ बहुत-सी अच्छी बातों के साथ साथ बेतुकी बातें भी चलती हैं—जिनमें एक है अंध-भक्ति. अगर एक जवाहरलाल का जन्म-दिन छुट्टी के तौर पर मनाया जाये तब आगे फिर जिस प्रधान-मंत्री

ظاہر ہے کہ شریمتی اِندرا گاندھی اور شری "اِنصاف" دونوں کے سوجھاؤ بہت خطرناک اور نامناسب ہیں ۔ اِس طرح بچوں اور اُن کے ماں باپ میں بٹوارہ کرنا تو شاید کٹر سے کٹر مارکس وادی بھی پسند نہیں کرسکتا ۔ یہ ورگیکرن وچار کے اُوچھےپن اور دل کی تنگی کا نمونہ ہے ۔ پھر' گاندھی جینتی کو 'پیرینٹس ڈے' قرار دینا اُسے ایکدم نکما کردینا ہے ۔ گاندھی جی اُسے خود ہی چرخہ جینتی نام دے گئے ہیں ۔ اگر چرخہ جینتی کامیاب ہوتی ہے تو بچوں کو بھی روٹی نصیب ہوگی اور اُن کے ماں باپ بھی اپنے پیروں پر کھڑے رہ سکینگے ۔ اور اگر چرخہ جینتی کامیاب نہیں ہوتی تو بچے دانے دانے کو ترسینگے اور ماں باپ غلاموں سے بھی بدتر ہو جائینگے۔ اِس لئے سچی گاندھی جینتی میں 'چلڈرینٹس ڈے' اور 'پیرینٹس ڈے' دونوں سما جاتے ہیں ۔

ایک بات اور بھی ہے ۔ آج پنڈت نہرو کے لئے جو بھکتی دکھائی جارہی ہے اُسے ذرا ہمیں سمجھنا چاہئیے ۔ وچار نے کی چیز یہ ہے کہ اُس میں کتنی جواہرلال کے پرتی ہے اور کتنی بھارت سرکار کے پردھان منتری کے پرتی ۔ ہم جانتے ہیں کہ دیش کے لاکھوں کروڑوں لوگ آج جواہر لال جی کے نام پر ناچ اُٹھتے ہیں ۔ لیکن اِس سے بھی اِنکار نہیں کیا جاسکتا کہ سرکاری افسروں اور راجنیتک کارکنوں میں سو پیچھے کم سے کم نوے ایسے ہونگے جو پنڈت جی کو 'پردھان منتری' کے ناتے ہی پہچانتے ہیں ۔ کل اگر کوئی دوسرا آدمی اُس کرسی پر بیٹھ جائے تو اُسی کا راگ گانے لگیں گے اور پنڈت جی کو شاید پہچانیں بھی نہیں ۔ اُن کی بھکتی ایک طرح کی لاگت پونجی یعنی 'انویسٹمنٹ' ہے جن سے اُنہیں کافی وصولیابی ہی ہوتی ہے ۔ اِس لئے اُن کی بھکتی کوئی معنے نہیں رکھتی ۔ یہی حال بہت سے اخباروں کا ہے ۔

دوسرے' کسی بھی پدادھیکاری کے جیتے جی اُس کے جنم دن کو عام چھٹی کر دینا شوبھا بھی نہیں دیتا ۔ آخر وہ پدادھیکاری بھی ایک انسان ہے ۔ اور کون اِنسان ایسا ہے جو گنوں کا ہی پتلا ہو اور خامیوں سے پرے ہو ؟ اِسی لئے کسی انسان کی اصلی بلندی اُس کی زندگی کے دوران میں آنکنا ناممکن ہے ۔ اُس کے لیلا کے خاتمے کے بعد ہی اُس کے ویکتتو کا ٹھیک اندازہ لگایا جاسکتا ہے اور اُس کی صحیح قدر ہو سکتی ہے ۔ پہلے سے ہی اُس کے کارناموں پر مہر لگانا جلدبازی اور شیطانیت سے خالی نہیں' اُس مہاپرش کے پرتی انیائے ہے ۔

تیسرے یہ دیش ہے ہندستان ۔ یہاں بہت سی اچھی باتوں کے ساتھ ساتھ بے تکی باتیں بھی چلتی ہیں—جن میں ایک ہے اندھ بھکتی ۔ اگر ایک جواہر لال کا جنم دن چھٹی کے طور پر منایا جائے تب آگے پھر جس پردھان منتری

के जन्म-दिन छुट्टी न की गई तो उसकी कसरते शान समझी आयेगी, और वह उससे कोई असर ले या न ले लेकिन उसके खुशामदी उसे चैन कहां लेने देंगे ? फिर अगर जवाहरलाल जी की सालगिरह को छुट्टी रखी जाती है तो मन-चले लोग इस बात के लिये जमीन-आसमान एक कर देंगे कि डाक्टर विधानचंद्र राय की सालगिरह पर कम से कम पच्छिम बङ्गाल में तो छुट्टी हो, या डाक्टर श्रीकृष्ण सिंह की सालगिरह पर बिहार में, डाक्टर सम्पूर्णानन्द की उत्तर प्रदेश में, डाक्टर रविशंकर शुक्ल की मध्यप्रदेश में, इत्यादि. यह डर हमें इस बिना पर हो रहा है कि हमने अखबारों में इन मुख्य मंत्रियों पर गम्भीर लोगों के इस आशय के लेख देखे हैं और एक बड़े चालू पत्र ने तो इनमें से एक पर विशेषांक (सपलीमेंट) तक निकाला है. एक मिनिस्टर ने अपने चीफ़ मिनिस्टर की तारीफ़ करते हुए एक बार कहा कि आजकल के जमाने को उनका (चीफ़ मिनिस्टर का नाम) युग कहा जायगा ! इस तरह केन्द्रीय और प्रान्तीय छुट्टियों का दौर चला तो कोई इन्तहा ही नहीं रह सकती. इस वबा को रोकने के लिये कहीं आर्डिनेन्स की जरूरत न पड़ जाय !

आखिर में कोई पूछ सकता है कि अपने पिता, पति, पुत्र या पुत्री या किसी की वर्षगांठ को राष्ट्रीय रूप में मनवाने की हमें लालसा ही क्यों हो ? एक से एक बड़े ऋषि मुनि, राजे-महाराजे, दीवान या अफ़सर आये और चले गये. हिन्दुस्तान में आज कौन जानता है मनु या वाशिष्ठ को, जनक या शंकराचार्य को, अशोक या अकबर को ? और उनको नहीं जानने या उनकी सालगिरह नहीं मनाने से उनकी शान में कोई बट्टा भी तो नहीं आता. उनकी ख़ुशी इसमें नहीं होगी कि लोग उनका जन्म-दिन तो मनायें पर काम जो भी करें सो उनकी ज़िन्दगी के अमल के ख़िलाफ़ करें, बल्कि इससे होगी कि लोग उन्हें इतना भूल जायं कि उनके उसूलों को हज़्म करके एकदम उन्हें आत्मसात कर लें. और इस तरह इन्सानियत की राह में एक से एक बढ़कर मन्ज़िल निडर होकर, हंसते खेलते और शान के साथ तय करें.

20. 11. '55 —सुरेश रामभाई

کے جنم‌دن چھٹی نہ کی گئی تو اِس کی کسرت شان سمجھی جائیگی' اور وہ اُس سے کوئی اثر لے یہ نہ لے لیکن اُس کے خوشامدی اُسے چین کہاں لینے دینگے ؟ پھر' اگر جواھرلال جی کی سالگرہ کو چھٹی رکھی جاتی ھے تو منچلے لوگ اِس بات کے لئے زمین آسمان ایک کر دینگے کہ ڈاکٹر ودھان چندر رائے کی سالگرہ پر کم سے کم پچھم بنگال میں تو چھٹی ھو' یا ڈاکٹر شری کرشن سنگھ کی سالگرہ پر بہار میں' ڈاکٹر سمپورنانند کی اُتر پردیش میں' ڈاکٹر روی شنکر شکل کی مدھیہ پردیش میں' اِتیادی . یہ ڈر همیں اِس بنا پر ھو رھا ھے کہ ھم نے اخباروں میں اِن مکھیہ منتریوں پر گمبھیر لوگوں کے اِس آشئے کے لیکھ دیکھے ھیں اور ایک بڑے چالو پتر نے تو اِن میں سے ایک پر ویشیشانک (سپلیمینٹ) تک نکالا ھے. ایک منسٹر نے اپنے چیف منسٹر کی تعریف کرتے ھوئے ایک بار کہا کہ آجکل کے زمانے کو اُن کا (چیف منسٹر کا نام) یگ کہا جائیگا ! اِس طرح کیندریہ اور پرانتیہ چھٹیوں کا دور چلا تو کوئی اِنتہا ھی نہیں رہ سکتی . اِس وبا کو روکنے کے لئے کہیں آرڈیننس کی ضرورت نہ پڑجائے !

آخر میں کوئی پوچھ سکتا ھے کہ اپنے پتا' پتی' پتر یا پتری یا کسی کی ورش گانٹھ کو راشٹریہ روپ میں منوانے کی ھمیں لالسا ھی کیوں ھو ؟ ایک سے ایک بڑے رشی منی' راجے مہاراجے' دیوان یا افسر آئے اور چلے گئے . ھندستان میں آج کون جانتا ھے منو یا وششٹھ کو' جنک یا شنکراچاریہ کو' اشوک یا اکبر کو ؟ اور اُن کو نہیں جاننے یا اُن کی سالگرہ نہیں منانے سے اُن کی شان میں کوئی بٹہ بھی تو نہیں آتا . اُن کو خوشی اِس نہیں ھوگی کہ لوگ اُن کا جنم‌دن تو منائیں پر کام جو بھی کریں سو اُن کی زندگی کے عمل کے خلاف کریں' بلکہ اِس سے ھوگی کہ لوگ اُنہیں اِتنا بھول جائیں کہ اُن کے اصولوں کو ھضم کر کے ایکدم اُنہیں اتمسات کرلیں . اور اِس طرح انسانیت کی راہ میں ایک سے ایک بڑھ کر منزل نڈر ھو کر ھنستے کھیلتے اور شان کے ساتھ طے کریں .

—سریش رام بھائی 20 .11 .55

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें
ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोट:—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं।

نوٹ:— یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर-ओ-शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئلیہ	1. شعر و شاعری
2. शेर-ओ-सुख़न	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنسمرن
6. दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण साद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہ
9. पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم۔ اے	9. پنچ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.		0	0	شری ویریندر کمار جین ایم۔ اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुख़ारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला		0	0	شری بھگوان داس کیلا'	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور ان کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سرودے ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल. एल. बी. श्री गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, श्री भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم۔ اے۔ ایل ایل۔ بی۔ گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	श्री भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानो	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانو
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ہمت !
28. सलोना सच		0	8	0	,,	28. سلونا سچ
29. मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند'
145 مٹھی گنج' الہ آباد 3

सांस्कृतिक साहित्य

سانسکرتک ساہتیہ

हज़रत मोहम्मद और इसलाम

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—तीन रुपया

इसलाम के पैग़म्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—پنڈت سندر لال، مولیہ—تین روپیہ

اسلام کے پیغمبر کے سمبندھ میں بھارتیہ بھاشاؤں میں اس سے سندر کوئی دوسری پستک نہیں

हज़रत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक—पन्डित सुन्दरलाल, मूल्य—डेढ़ रुपया

حضرت عیسیٰ اور عیسائی دھرم

لیکھک—پنڈت سندر لال، مولیہ—ڈیڑھ روپیہ

महात्मा ज़रथुस्त्र और ईरानी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत—दो रुपया

مہاتما زرتھسترا اور ایرانی سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

यहूदी धर्म और सामी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत—दो रुपया

یہودی دھرم اور سامی سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत—दो रुपया

پراچین مصر کی سبھیتا اور سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

सुमेर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत—दो रुपया

سمیر، بابل اور اسوریا کی پراچین سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

प्राचीन यूनानी सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत—दो रुपया

پراچین یونانی سبھیتا اور سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह)

लेखक—श्री मुजीब रिज़्वी, क़ीमत—दो रुपया

گنگا سے گومتی تک

(پرگتی شیل کہانی سنگرہ)

لیکھک—شری مجیب رضوی، قیمت—دو روپیہ

आग और आँसू

(भावपूर्न सामाजिक कहानियाँ)

लेखक—डाक्टर अख़्तर हुसैन रायपुरी, क़ीमत—डेढ़ रुपया

آگ اور آنسو

(بھاوپورن سماجک کہانیاں)

لیکھک—ڈاکٹر اختر حسین رائے پوری، قیمت—ڈیڑھ روپیہ

क़ुरान और धार्मिक मतभेद

लेखक—मौलाना अबुलकलाम आज़ाद, क़ीमत—डेढ़ रुपया

قرآن اور دھارمک مت بھید

لیکھک—مولانا ابوالکلام آزاد، قیمت—ڈیڑھ روپیہ

झंकार

(प्रगतिशील कविताओं का संग्रह)

लेखक—रघुपति सहाय फ़िराक़, क़ीमत—तीन रुपया

جھنکار

(پرگتی شیل کوتاؤں کا سنگرہ)

لیکھک—رگھوپتی سہائے فراق، قیمت—تین روپیہ

मिलने का पता ملنے کا پتہ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ھندستانی کلچر سوسائٹی

14 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145 مٹھی گنج، الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

इस नम्बर के ख़ास लेख

اِس نمبر کے خاص لیکھ

...नी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद ... ندستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

फ़रवरी 1956 فروری

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only

Can be had from—

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

जिल्द 21 جلد नम्बर 2 نمبر

फरवरी 1956 فروری

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145 مٹھی گنج الہ آباد

जनवरी 1956 فروری

धर्म और राजनीति

डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त

[2]

पहले लेख में❀ जो मिसालें दी गई हैं उनसे हमारी समझ में आ सकता है कि धर्म राजनीति के बाहर की चीज़ नहीं. पुराने ज़माने और मंझले ज़माने में लोग धर्म को राजनीति का एक उपाय समझकर व्यवहार में लाते थे. इसीलिये विजेता लोग हारी हुई जातियों के धर्मस्थान और उनकी धार्मिक किताबें बरबाद करदेते थे. हारी हुई जातियों के दिलों से पुरानी यादगारों को मिटाने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह समझा जाता था कि उनका मज़हब तब्दील कर दिया जाय. अरबों द्वारा जीती हुई मुसलमान दुनिया अपने पुराने इतिहास को भूल सी गई. इसी तरह अपने मज़हब को छोड़कर भारत की हिन्दू सन्तानें कुछ तो एंग्लो-इन्डियन होगईं और कुछ पाकिस्तानी बन गईं. इसी तरह मध्य युग में शैलेन्द्र साम्राज्य के अन्दर फ़िलिपाइन द्वीप समूह था लेकिन आज फ़िलिपाइन वाले अपना अतीत भूल कर यूरोपीय सभ्यता के साथ ही अपना ताल्लुक़ जोड़ते हैं. क़िस्मत की बात कि जिन स्पेनियों ने फ़िलपाइनों को जीता था उन्हों ने लिखा है कि—"इस स्थान के लोगों का धर्म, आचार-व्यवहार, आईन, लिपि वग़ैरह भारतीय थी." आजकल के अमरीकन विद्वानों ने अपनी खोजों से यह साबित किया है कि एक ज़माने में यह जगह भारतीय सभ्यता के असर के अन्दर थी. इसके अलावा मिन्डानाव (Mindanao) टापू के रहने वाले, जो ख़ून के लिहाज़ से शुद्ध भारतवासी हैं, आज भारत के साथ अपने ख़ून के ताल्लुक़ात भूले हुए हैं.*

संसार के सभी मज़हबों ने शुरू में an anthropological शक्ल में जन्म लिया. एन्थ्रापालिजिकल का मतलब है कि जातीयता के प्रकाश के साथ साथ उसमें तरह तरह के एतक़ाद और अनुष्ठान और प्रतिष्ठान पैदा होते हैं. मिसाल के तौर पर इन्डो-यूरोपियन ज़बान बोलने वाले यानी आर्य भाषा बोलने वाले पहले एक साथ रहते थे, सब की एक ही कल्चर और एक से आचार विचार थे, उसके बाद वह अपनी अलग अलग अभिव्यक्ति के लिये अलग अलग हो गये. इसी से अलग अलग क़ौमें बन गईं और उन

دھرم اور راجنیتی

ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت

[2]

پہلے لیکھ میں❀ جو مثالیں دی گئی ھیں اُن سے ھماری سمجھ میں آسکتا ھے کہ دھرم راجنیتی کے باھر کی چیز نہیں۔ پرانے زمانے اور منجھلے زمانے میں لوگ دھرم کو راجنیتی کا ایک اُپائے سمجھکر ویوھار میں لاتے تھے۔ اسی لئے وجیتا لوگ ھاری ھوئی جاتیوں کے دھرم استھان اور اُن کی دھارمک کتابیں برباد کردیتے تھے۔ ھاری ھوئی جاتیوں کے دلوں سے پرانی یادگاروں کو مٹانے کا سب سے اچھا طریقہ یہ سمجھا جاتا تھا کہ اُن کا مذھب تبدیل کردیا جائے۔ عربوں دوارا جیتی ھوئی مسلمان دنیا اپنے پرانے اِتہاس کو بھول سی گئی۔ اِسی طرح اپنے مذھب کو چھوڑکر بھارت کی ھندو سنتانیں کچھ تو اینگلو اِنڈین ھوگئیں اور کچھ پاکستانی بن گئیں۔ اِسی طرح مدھیہ یگ میں شیلیندر سامراجیہ کے اندر فلپائن دویپ سموہ تھا لیکن آج فلپائن والے اپنا اتیت بھول کر یوروپیہ سبھیتا کے ساتھ ھی اپنا تعلق جوڑتے ھیں۔ قسمت کی بات کہ جن اِسپینیوں نے فلپائنوں کو جیتا تھا اُنھوں نے لکھا ھے کہ—"اِس اِستھان کے لوگوں کا دھرم، اچار ویوھار، آئین، لپی وغیرہ بھارتیہ تھی۔" آجکل کے امریکن ودوانوں نے اپنی کھوجوں سے یہ ثابت کیا ھے کہ ایک زمانے میں یہ جگہ بھارتیہ سبھیتا کے اثر کے اندر تھی۔ اس کے علاوہ منڈاناؤ (Mindanao) ٹاپو کے رھنے والے، جو خون کے لحاظ سے شدھ بھارت واسی ھیں، آج بھارت کے ساتھ اپنے خون کے تعلقات بھولے ھوئے ھیں۔*

سنسار کے سبھی مذھبوں نے شروع میں anthropological شکل میں جنم لیا۔ اینتھراپالاجیکل کا مطلب ھے کہ جاتیتا کے پرکاش کے ساتھ ساتھ اُس سے طرح طرح کے اعتقاد اور انوشٹھان اور پرتشٹھان پیدا ھوتے ھیں۔ مثال کے طور پر اِنڈو - یوروپین زبان بولنے والے یعنی آریہ بھاشا بولنے والے پہلے ایک ساتھ رھتے تھے، سب کی ایک ھی کلچر اور ایکسے آچار وچار تھے۔ اس کے بعد وہ اپنی الگ الگ ابھیویکتی کے لئے الگ الگ ھوگئے۔ اِسی سے الگ الگ قومیں بن گئیں اور اُن

❀—Wigmore : Legal Panorama of the world.

*—Athropological Report of the Philipine Island.

क़ौमों के अलग अलग सामाजिक आचार विचार बन गये. यूनानियों के महाकाव्य (होमर के 'इलियड' और 'ओडेसी') पढ़कर हमारे मन में यह विचार नहीं उठता कि हम किसी ग़ैर क़ौम का महाकाव्य पढ़ रहे हैं. उनका परलोक एक हरा भरा मैदान है जहाँ प्रेतात्मा निवास करती हैं. ऋग्वेद के 'देवजन' 'पिन्ट लोक' नामक स्थान में निवास करते हैं.† इसके लिये पहले 'पूर्वजन्म' का उसूल क़ायम किया गया और तब देवजन और पिन्ट लोक का. उपनिषद में इसकी नई व्याख्या दी गई है.‡ इसी तरह यूनानी, रोमन और भारतवासियों की cult of the dead (मुरदों का संस्कार) के ज़रीये नई दाह प्रथा बनाई गई जो 'urn burial' यानी मटके में अस्थियाँ रखकर मिट्टी में दफ़न करने की प्रथा कहलाती है. होमर द्वारा बयान की हुई 'पैट्राकोलस' (Patracolus) और 'अखिलिऊ' (Achilleus) शवदाह और अस्थि विसर्जन की प्रथा और वैदिक प्रथा जिसका पूरा बयान हमें 'ऐतरेय आरण्यक' और 'आपस्तम्भ सूत्र' में मिलता है उसमें कोई अन्तर नहीं दिखाई देता (इनमें वैदिक प्रथा के मुक़ाबले में यूनानी प्रथा आधुनिक प्रथा है). वैदिक प्रथा और आजकल की हिन्दू दाह प्रथा में भी कितना फ़रक़ पड़गया है.§ अस्थि सञ्चय का रिवाज अब बिलकुल उड़ा दिया गया है. रघुनन्दन के "शुद्धि तत्त्व" में उसका बराय नाम ज़िक्र है लेकिन लोग उसका मतलब तक नहीं समझते. गंगाजल में अस्थि का एक टुकड़ा छोड़ कर यह समझा जाता है कि मृतात्मा के लिये स्वर्ग की सीढ़ी तय्यार कर दी गई.

इब्तदाई युग में मानव समूह एक था लेकिन जैसे जैसे इनसानी समाज में तरक़्क़ी होती गई वैसे वैसे उनमें आपसी फ़रक़ भी बढ़ता गया. इसीलिये वैदिक काल, वैदिक काल के बाद के ज़माने या मौजूदा ज़माने के रिवाजों को हमें सनातन रिवाज नहीं समझना चाहिये. हर ज़माने में सभ्यता के परिवर्तन के साथ साथ हिन्दू या अहिन्दुओं के मज़हबी एतक़ाद या धर्म-विश्वास, आचार-व्यवहार और अनुष्ठान-प्रतिष्ठान ज़माने की उपयोगिता को ध्यान में रखकर तब्दील होते रहते हैं. हमारे अन्ध विश्वास के कारन ही रघुनन्दन ने ऋग्वेद के जाली श्लोक हमारे सामने रखे. इसके पीछे अर्थ नीतिक कारन थे इसीलिये इन जाली श्लोकों की रचना की गई, उसी के समर्थन के लिये ये जाली श्लोक बनाये गये. इसके चार सौ साल बाद कलकत्ते के कुछ पंडितों और राजा राममोहन राय ने

†—देखें यजुर्वेद.
‡—देखें छान्दोग्य उपनिषद और शंकराचार्य की टीका.
§—देखें अश्वलायन का 'ग्रह्य सूत्र.'

قوموں کے الگ الگ ساماجک آچار وچار بن گئے ۔ یونانیوں کے مہاکاویہ (ہومر کے 'اِلیڈ' اور 'اُوڈیسی') پڑھکر ہمارے من میں یہ وچار نہیں اُٹھتا کہ ہم کسی غیر قوم کا مہاکاویہ پڑھ رہے ہیں ۔ اُن کا پرلوک ایک ہرا بھرا میدان ہے جہاں پریتاتما نواس کرتی ہیں ۔ رگوید کے 'دیوجن' 'پنٹ لوک' نامک استھان میں نواس کرتے ہیں † اُس کے لئے پہلے 'پوروجنم' کا اُصول قایم کیا گیا اور تب دیوجن اور پنٹ لوک کا ۔ اُپنشد میں اِس کی نئی وِیاکھیا دی گئی ہے ۔‡ اِسی طرح یونانی' رومن اور بھارت واسیوں کی cult of the dead (مردوں کا سنسکار) کے ذریعے نئی داہ پرتھا بنائی گئی جو 'urn burial' یعنی مٹکے میں استھیاں رکھکر مٹی میں دفن کرنے کی پرتھا کہلاتی ہے ۔ ہومر دوارا بیان کی ہوئی 'پیٹرا کولس' (Patracolus) اور 'اچلیو' (Achilleus) شوداہ اور استھی وسرجن کی پرتھا اور ویدک پرتھا جس کا پورا بیان ہمیں 'ایتریئہ آرنیک' اور 'آپستمبھ سوتر' میں ملتا ہے اُس میں کوئی انتر نہیں دکھائی دیتا (اِن میں ویدک پرتھا کے مقابلے میں یونانی پرتھا آدھونک پرتھا ہے) ۔ ویدک پرتھا اور آجکل کی ہندو داہ پرتھا میں بھی کتنا فرق پڑ گیا ہے ۔§ استھی سنچیئے کا رواج اب بالکل اُڑا دیا گیا ہے ۔ رگھونندن کے "شدھی تتو" میں اُس کا برائے نام ذکر ہے لیکن لوگ اُس کا مطلب تک نہیں سمجھتے ۔ گنگاجل میں استھی کا ایک ٹکڑا چھوڑکر یہ سمجھا جاتا ہے کہ مرت آتما کے لئے سورگ کی سیڑھی تیار کردی گئی ۔

ابتدائی یگ میں مانو سموہ ایک تھا لیکن جیسے جیسے اِنسانی سماج میں ترقی ہوتی گئی ویسے ویسے اُن میں آپسی فرق بھی بڑھتا گیا ۔ اِس لئے ویدک کال' ویدک کال کے بعد کے زمانے یا موجودہ زمانے کے رواجوں کو ہمیں سناتن رواج نہیں سمجھنا چاہئے ۔ ہر زمانے میں سبھیتا کے پریورتن کے ساتھ ساتھ ہندو یا اہندؤں کے مذہبی اعتقاد یا دھرم وشواس' آچار ویوہار اور انوشٹھان پرتشٹھان زمانے کی اُپیوگتا کو دھیان میں رکھکر تبدیل ہوتے رہتے ہیں ۔ ہمارے اندھ وشواس کے کارن ہی رگھونندن نے رگوید کے جعلی شلوک ہمارے سامنے رکھے ۔ اس کے پیچھے ارتھ نیتک کارن تھے اِس لئے اِن جعلی شلوکوں کی رچنا کی گئی ۔ اِسی کے سمرتھن کے لئے یہ جعلی شلوک بنائے گئے ۔ اِس کے چار سو سال بعد کلکتے کے کچھ پنڈتوں اور راجا رام موہن رائے نے

دیکھیں یجروید ۔
دیکھیں چھاندیوگیہ اُپنشد اور شنکراچاریہ کی ٹیکا ۔
دیکھیں اشولائن کا 'گرھیہ سوتر'۔

भारतीय जनता के साथ किये हुये बुरा जाल का पकड़ा. अनुष्ठान धर्म का अंग नहीं है. राष्ट्रीय भावना के अभाव में यह बात मुमकिन हुई कि हम अनुष्ठान को धर्म का अंग मानने लगे. जातीय राष्ट्र के अभाव में पुरोहित वर्ग जातीय जीवन का परिचालक बन जाता है पुरोहितों के ऊपर धनियों के धन का असर रहता है, इसीलिये हिन्दू जाति इस दुर्दशा को पहुँची. जब एक जबर्दस्त और सामाजिक मामलों में हमदर्द हुकूमत विदेशियों द्वारा क़ायम हुई तब बहुत से जालिमाना रिवाज जैसे—सती दाह, गंगा-सागर में पुत्रों को जल में फेंक देना और बानों से भेदना आदि रिवाज, आईन के जरिये बन्द किये गये $

धर्म और समाज को चलाने वाला राष्ट्र है—यह बात पुराने जमाने के लोग बहुत अच्छी तरह जानते थे. इसीलिये महाभारत में युधिष्ठिर को 'धर्मराज' कहकर पुकारा गया है.

ईसा की चौथी सदी में वाकाटक राजाओं के नाम के पहले 'धर्म महाराजा' की पदवी हम जुड़ी हुई पाते हैं. हमें धर्माशोक के अनुशासन में दिखाई देता है कि उन्होंने धर्म और समाज को अपने आदेशों के द्वारा नियंत्रित किया. अपने एक अनुशासन में उन्होंने लिखा है कि—"स्त्रियों के सामाजिक कामों में बहुत सी अश्लील बातें और कदा-चार घुस गये हैं." इसीलिये उन्हों ने अपने एक आदेश के जरिये "समाज और कर्तव्य" की बात कही.* अशोक ने बहुतेरे पशुओं और पक्षियों की हत्या न करने के सिलसिले में कई आज्ञायें जारी कीं. कौटिल्य के अर्थ शास्त्र से हमें यही मालूम पड़ता है।

इसी तरह बंगाल से तांत्रिक कदाचारों को दूर करने के लिये ब्रह्मवादी बंगेश्वर बर्मन राजा के मंत्री भवदेव भट्ट ने एक नया स्मृति विधान बनाया. वह विधान आज भी जारी है. इसीलिये दिग्विजयी राजा लक्ष्मण सेन ने शूलपाणी द्वारा रचे हुये 'मत्स्य सूत्र' जारी किये कि तरह तरह के तांत्रिक कदाचार दूर हों।

राजा से ही मजहब चलता है, यह हर जमाने की सचाई है. गवर्नमेंट उसकी कार्यकारी समिति है. बेशक जहाँ गणतन्त्र नहीं है वहाँ राज सत्ता चलाने वाला 'राजा' और उसकी 'मंत्रि परिषद' होती है. पुराने जमाने के हिन्दुओं का यही तरीक़ा था. बहुत जमाने से हिन्दुओं की कोई हुकूमत नहीं रही, इसीलिये वे 'राष्ट्र' शब्द के मतलब व माइने भूल गये हैं. वे स्वेच्छाचारी हुकूमतों के मातहत रहकर 'गणतन्त्र' का मतलब भी भूल गये हैं. महाभारत के 'शान्तिपर्व' में भीष्म ने युधिष्ठिर को 'नैराज्य' (Anarchy), 'गणतन्त्र'

بھارتیہ جنتا کے ساتھ کئے ہوئے اِس جھل کو پکڑا. انوشٹھان دھرم کا انگ نہیں ہے. راشٹریہ بھاؤنا کے ابھاؤ میں یہ بات ممکن ہوئی کہ ہم انوشٹھان کو دھرم کا انگ ماننے لگے. جاتیہ راشٹر کے ابھاؤ میں پروہت ورگ جاتیہ جیون کا پریچالک بن جاتا ہے. پروہتوں کے اوپر دھنیوں کے دھن کا اثر رہتا ہے' اِسی لئے ہندو جاتی اِس دردشا کو پہونچی. جب ایک زبردست اور سماجک معاملوں میں ہمدرد حکومت ودیشیوں دوارا قایم ہوئی تب بہت سے ظالمانہ رواج جیسے—ستی داہ' گنگا ساگر میں پتروں کو جل میں. پھینک دینا اور بانوں سے بھیدنا آدی رواج' آئین کے ذریعے بند کئے گئے .$

دھرم اور سماج کو چلانے والا راشٹر ہے—یہ بات پرانے زمانے کے لوگ بہت اچھی طرح جانتے تھے. اِسی لئے مہابھارت میں یدھشٹر کو 'دھرم راج' کہکر پکارا گیا ہے.

عیسوی کی چوتھی صدی میں واکاٹک راجاؤں کے نام کے پہلے 'دھرم مہاراجہ' کی پدوی ہم جوڑی ہوئی پاتے ہیں. ہمیں دھرماشوک کے انوشاسن میں دکھائی دیتا ہے کہ اُنھوں نے دھرم اور سماج کو اپنے آدیشوں کے دوارا نینترت کیا. اپنے ایک انوشاسن میں اُنھوں نے لکھا ہے کہ—"اِستریوں کے سماجک کاموں میں بہت سی اشلیل باتیں اور کداچار گھس گئے ہیں." اِسی لئے اُنھوں نے اپنے ایک آدیش کے ذریعے "سماج اور کرتویہ" کی بات کہی.* اشوک نے بہتیرے پشوؤں اور پکشیوں کی ہتیا نہ کرنے کے سلسلے میں کئی آگیائیں جاری کیں. کوٹلیہ کے ارتھ شاستر سے ہمیں یہی معلوم پڑتا ہے.

اِسی طرح بنگال سے تانترک کداچاروں کو دور کرنے کے لئے برہموادی بنگیشور برمن راجا کے منتری بھودیوبھٹ نے ایک نیا اسمرتی ودھان بنایا. وہ ودھان آج بھی جاری ہے. اِس لئے دگوجئی راجا لکشمن سین نے شولپانی دوارا رچے ہوئے 'متسیہ سوتر' جاری کئے کہ طرح طرح کے تانترک کداچار دور ہوں.

راجا سے ہی مذہب چلتا ہے' یہ ہر زمانے کی سچائی ہے. گورنمنٹ اُس کی کاریہ‌کاری سمتی ہے. بےشک جہاں گنترنتر نہیں ہے وہاں راج ستتا چلانے والا 'راجہ' اور اُس کی 'منتری پریشد' ہوتی ہے. پرانے زمانے کے ہندوؤں کا یہی طریقہ تھا. بہت زمانے سے ہندوؤں کی کوئی حکومت نہیں رہی' اسی لئے وے 'راشٹر' شبد کے مطلب و معنے بھول گئے ہیں. وے سویچھاچاری حکومتوں کے ماتحت رہ کر 'گنترتنتر' کا مطلب بھی بھول گئے ہیں. مہابھارت کے 'شانتی پرو' میں بھیشم نے یدھشٹر کو 'نیراجیہ' (Anarchy)' 'گنترتنتر'

$—Digby's Prospero us British India.

*—इस सिलसिले में देखें 'शुक्ल यजुर्वेद' में पुनर्विवाह की तफ़सील.

اِس سلسلے میں دیکھیں 'شکل یجروید' میں پنرویواہ کی تفصیل.

(Democracy) की बुराइयाँ दिखाकर 'एक राटत्व' या 'राजतन्त्र' की सुविधायें दिखाईं. फिर गणतन्त्र की कमजोरी की मिसाल के तौर पर चर्चा की. 'कृष्ण-नारद-संवाद' अध्याय में गण परिषद् में श्रीकृष्ण की जो दुर्दशा हुई वह उन्होंने नारद को सुनाया. 'बलभद्र अपने बल में चूर हैं, गद (श्रीकृष्ण का छोटा भाई) अपनी कोमलता में मजबूर हैं, प्रद्युम्न अपनी सुन्दरता पर मग़रूर हैं और मैं लाचार हूँ. अक्रूर और उद्धव की अपनी अलग-अलग पार्टियाँ और दल हैं. ये जिसके कन्धों पर लदते हैं उसका बस सर्वनाश समझो और मुझे सबकी गालियाँ खानी पड़ती हैं."

इस तरह राष्ट्र को खोकर हम अपने बहुत पुराने जमाने से जम्हूरियत यानी गणतंत्र के माइने भी भूल बैठे. स्वजाती एक राटतन्त्र के स्वरूप को चलाने के भी हम नाक़ाबिल हैं. इसीलिये हम पुरोहितों और ठाकुरों की 'जमात' को ही अपने समाज और राष्ट्र का चलाने वाला समझ बैठे. लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि बाद के निबन्ध लिखने वालों के बाद भी राजशक्ति मौजूद थी. शक्तिवान राजाओं का सहारा पाकर खुशामदी लोगों की स्मृतियाँ चलने लगती थीं. सुलतानों की हुकूमत के समय जो स्मृतियाँ लिखी गईं मुक़ामी राजा लोग उनको मान्यता देते थे. राजशक्ति के बिना लोक समाज में कोई व्यवस्था नहीं चलती. बंगाल में हिन्दू शासन काल के अवसान के समय जो नई स्मृतियाँ चालू हुईं उन्हें बंगाल के कायस्थ राजाओं ने समर्थन दिया. पंडित हरप्रसाद शास्त्री ने यही लिखा है. इसीलिये रघुनन्दन की लिखी हुई नई स्मृति बंगाल में सब जातियों और सब स्थानों में मान्य नहीं है. श्रीहट्ट (सिलहट) में पुरानी स्मृति अब भी चालू है. वहाँ बल्लाल की तथाकथित प्रथा भी प्रचलित नहीं है. पूर्वी बंगाल और विक्रमपुर में भी रघुनन्दन की स्मृति चालू नहीं है. गौड़ीय वैष्णवों के लिये चैतन्य देव, सनातन गोस्वामी और गोपाल भट्ट ने अपने शिष्यों की अलहदा व्यवस्था की ग़रज से नई स्मृति लिखाई. यह नई स्मृति है—"हरि भक्ति विलास". बंगाला समाज में रघुनन्दन की "अष्टाविंशति तत्त्व" की प्रतिद्वन्दी यह नई स्मृति "हरिभक्ति विलास" है. वैष्णव गुरुओं और वैष्णव राजाओं ने इसे हिन्दू समाज में चलाया. बंगाल के ज्यादातर हिन्दू इसी स्मृति को मानकर चलते हैं.

मुसलिम काल में जो जहाँ का राजा होता था वही अपने वहाँ की स्मृति तैयार करता था. इसके लिये ज्यादा दूर जाने की ज़रूरत नहीं. इसकी मिसालें पश्चिमी बंगाल में ही मिल जायँगी. बाँकुड़ा ज़िले के राजपूत भद्रजनों ने (काँग्रेस नेता स्वर्गीय गोविन्दचन्द्र सिंह वग़ैरह) लेखक को एक बार कहा था:—"हम राजपूत हैं, माँस छोड़कर हमारा खाना नहीं चलता, हमारे बीच में गोस्वामी ठाकुर चैतन्य देव का अहिंसावादी मत जाने कैसे चालू हो गया?" लेखक ने

(Democracy) کی برائیاں دکھاکر ایک راٹتو' یا 'راج‌تنتر' کی سوبدھائیں دکھائیں. پھر گنتنتر کی کمزوری کی مثال کے طور پر چرچا کی. 'کرشنا - نارد - سمواد' ادھیائے میں گن پریشد میں شری کرشن کی جو درُدشا ہوئی وہ اُنہوں نے نارد کو سنایا. "بلبھدر اپنے بل میں چور ہیں' گد (شری‌کرشن کا چھوٹا بھائی) اپنی کوملتا میں مجبور ہیں' پردیومن اپنی سندرتا پر مغرور ہیں اور میں لاچار ہوں. اکرور اور اُودھو کی اپنی الگ الگ پارٹیاں اور دل ہیں. یہ جس کے کندھوں پر لدتے ہیں اُس کا بس سروناش سمجھو اور مجھے سب کی گالیاں کھانی پڑتی ہیں."

اِس طرح راشٹر کو کھوکر ہم اپنے بہت پرانے زمانے سے جمہوریت یعنی گنتنتر کے معنے بھی بھول بیٹھے. سوجاتی ایک راٹتنتر کے سوروپ کو چلانے کے بھی ہم ناقابل ہیں. اسی لئے ہم پروہتوں اور ٹھاکروں کی 'جماعت' کو ہی اپنے سماج اور راشٹر کا چلانے والا سمجھ بیٹھے. لیکن ہم یہ بھول جاتے ہیں کہ بعد کے نبندھ لکھنے والوں کے بعد بھی راج شکتی موجود تھی. شکتی‌وان راجاؤں کا سہارا پاکر خوشامدی لوگوں کی اِسمرتیاں چلنے لگتی تھیں. سلطانوں کی حکومت کے سمے جو اِسمرتیاں لکھی گئیں مقامی راجا لوگ اُن کو مانیتا دیتے تھے. راج شکتی کے بنا لوک سماج میں کوئی ویوستھا نہیں چلتی. بنگال میں ہندو شاسن کال کے اوسان کے سمے جو نئی اسمرتیاں چالو ہوئیں اُنہیں بنگال کے کایستھ راجاؤں نے سمرتھن دیا. پنڈت ہر پرساد شاستری نے یہی لکھا ہے. اسی لئے رگھو نندن کی لکھی ہوئی نئی اسمرتی بنگال میں سب جاتیوں اور سب استھانوں میں مانیہ نہیں ہے. شری ہٹ (سلہٹ) میں پرانی اِسمرتی اب بھی چالو ہے. وہاں بلال کی تتھا کتھت پرتھا بھی پرچلت نہیں ہے. پوروی بنگال اور وکرم‌پور میں بھی رگھو نندن کی اِسمرتی چالو نہیں ہے. گوڑیہ ویشنوں کے لئے چیتنیہ دیو' سناتن گوسوامی اور گوپال بھٹ نے اپنے ششیوں کی علیحدہ ویوستھا کی غرض سے نئی اِسمرتی لکھائی. یہ نئی اِسمرتی ہے—"ہری بھکتی ولاس." بنگالہ سماج میں رگھو نندن کی "اشٹا ونشتی تتو" کی پرتی‌دوندی یہ نئی اِسمرتی "ہری بھکت ولاس" ہے. ویشنو گروؤں اور ویشنو راجاؤں نے اِسے ہندو سماج میں چلایا. بنگال کے زیادہ‌تر ہندو اِسی اِسمرتی کو مان‌کر چلتے ہیں.

مسلم کال میں جو جہاں کا راجہ ہوتا تھا وہی اپنے یہاں کی اِسمرتی تیار کرتا تھا. اِس کے لئے زیادہ دور جانے کی ضرورت نہیں. اس کی مثالیں پشچمی بنگال میں ہی مل جائینگی. بانکوڑا ضلعے کے راجپوت بھدر جنوں نے (کانگریس نیتا سورگیہ گووند چندر سنگھ وغیرہ) لیکھک کو ایک‌بار کہا تھا:—"ہم راجپوت ہیں' مانس چھوڑکر ہمارا کھانا نہیں چلتا' ہمارے بیچ میں گوسوامی ٹھاکر چیتنیہ دیو کا اہنساوادی مت جانے کیسے چالو ہوگیا؟" لیکھک نے

इसका जवाब देते हुये कहा:—"आप लोग वैष्णव राजाओं की चाकरी करने आये और उनके राज में वास करने के फलस्वरूप आपके ऊपर 'गोपालसिंह की बेगार' थोप दी गई." वनविष्णुपुर के मुइयाँ राजा वीर हम्मीर श्री निवास गोस्वामी के मंत्र शिष्य होने के बाद उनके राज में गौड़ीय वैष्णव धर्म की प्रधानता हुई. विष्णुपुर को "गुप्त वृन्दावन" कहकर पुकारा गया. पश्चिम से आये हुये राजपूत बंगाल के 'दाय भाग' आईन और 'हरिभक्ति विलास' विधान को क़बूल करने के लिये मजबूर हुये. विष्णुपुर राजवंश के पुरोहित गाँगुली महाशय ने लेखक से कहा था—"ब्राह्मणों और कायस्थों के जो आचार हैं वही आचार राज परिवार में भी प्रचलित हैं." "यस्मिन राजा तस्मिन प्रजा" यानी प्रजा राजशक्ति की पैरोकार होती है. यही ध्रुव सत्य है.

यहाँ यह सवाल उठाया जायगा कि फिर हम हर बात में धर्म से जकड़े हुये क्यों हैं? यह भी सच है. चाणक्य अथवा कौटिल्य के अर्थशास्त्र के 'युद्ध प्रकरण' अध्याय में अथर्ववेद की तुकताव का उल्लेख है. इसी अज्ञान के कारन सिकन्दर की सेना के आगे भारतीयों को हाथ कटाने पड़े लेकिन भास के नाटक और शुक्रनीति सार में इसका उल्लेख नहीं है. आयुर्वेद शास्त्र में रोगी का आपरेशन करने से पहले तरह तरह की पूजाओं का विधान है. बच्चों के प्रसवकाल के समय घर से भूत भगाने का भी विधान है. कविराज से पूछने पर वे इसके लिये बौद्धों को दोष देते हैं लेकिन आयुर्वेद शास्त्र बौद्धों द्वारा ही लिखा गया (जीवक, चरक, नागार्जुन, चक्रपाणि प्रभृति). ब्राह्मणों की जब प्रधानता हुई तो उनके पुरोहितों के हाथों में ये पुस्तकें पड़ीं और उनकी यह अवैज्ञानिक दशा हुई. अर्थनीति शास्त्र में ब्राह्मणों की ही प्रधानता दिखाई देती है. ये सब किताबें पुरोहितों के जरिये लिखी गईं. इसीलिये उन्होंने अपने गिरोह की इन किताबों में बड़ाई की.

जब देश में ज्यादातर लोग बेवक़ूफ़ और बेपढ़े लिखे थे, जब महज़ पुरोहितों के दो-एक आदमियों में विद्या और आलोचना का ज्ञान था, जब देश के कोटि-कोटि लोगों को शूद्र कहकर विद्या से महरूम कर दिया गया, जब शूद्र को मामूली से क़ुसूर में—'उसकी जीभ काट दो, 'उसके कान में गरम पिघला हुआ शीशा छोड़ दो,' 'उसके नितम्बों का मांस काटकर फेंक दो,' और 'उसे चटाई में लपेट कर जला दो'—इन सबका उल्लेख कौटिल्य के ग्रन्थ में पाया जाता है. ये सब पुरोहितों के वेद वाक्य कहकर ऐलान हुये. राजाओं को भी इन पर अमल कराने के लिये अनुरोध किया जाता था. जब राजा और पुरोहित मिलकर ज़ालिमाना हुकूमत करते थे तब हुकूमत के खिलाफ़ शूद्रों को सर उठाने की कैसे हिम्मत पड़ सकती थी? वाल्मीकि रामायण

اس کا جواب دیتے ہوئے کہا ہے—"آپ لوگ وشنو راجاؤں کی چاکری کرنے آئے اور ان کے راج میں باس کرنے کے پھل سروپ آپ کے اوپر 'گوپال سنگھ کی بیگار' تھوپ دی گئی." ونا شنوپور کے بھوئیاں راجا ویر همیر شری نواس گوسوامی کے منتر ششیہ ہونے کے بعد اُن کے راج میں گوڑیہ ویشنو دھرم کی پردھانتا ہوئی. وشنوپور کو "گپت ورنداون" کہکر پکارا گیا. پشچم سے آئے ہوئے راجپوت بنگال کے 'دایہ بھاگ' آئین اور 'ہری بھکتی ولاس' ودھان کو قبول کرنے کے لئے مجبور ہوئے. وشنوپور راج ونش کے پروہت گانگولی مہاشئے نے لیکھک سے کہا تھا—"برہمنوں اور کایستھوں کے جو آچار ہیں وہی آچار راج پریوار میں بھی پرچلت ہیں." "یسمن راجا تسمن پرجا" یعنی پرجا راج شکتی کی پیروکار ہوتی ہے. یہی دھرو ستیہ ہے.

یہاں یہ سوال اُٹھایا جائیگا کہ پھر ہم ہر بات میں دھرم سے جکڑے ہوئے کیوں ہیں؟ یہ بھی سچ ہے. چانکیہ اتھوا کوٹلیہ کے ارتھ شاستر کے 'یدھ پرکرن' ادھیائے میں اتھرو وید کی تکتاؤ کا اُلیکھ ہے. اِسی اگیان کے کارن سکندر کی سینا کے آگے بھارتیوں کو ہاتھ کٹانے پڑے لیکن بھاس کے ناٹک اور شکرنیتی سار میں اِس کا اُلیکھ نہیں ہے. آیوروید شاستر میں روگی کا آپریشن کرنے سے پہلے طرح طرح کی پوجاؤں کا ودھان ہے. بچوں کے پرسوکال کے سمے گھر سے بھوت بھگانے کا بھی ودھان ہے. کویراج سے پوچھنے پر وے اس کے لئے بودھوں کو دوش دیتے ہیں لیکن آیوروید شاستر بودھوں دوارا ہی لکھا گیا (جیوک، چرک، ناگارجن، چکر پانی پربھرتی). براہمنوں کی جب پردھانتا ہوئی تو اُن کے پروہتوں کے ہاتھوں میں یہ پستکیں پڑیں اور اُن کی یہ اویگیانک دشا ہوئی. ارتھ نیتی شاستر میں براہمنوں کی ہی پردھانتا دکھائی دیتی ہے. یہ سب کتابیں پروہتوں کے ذریعہ لکھی گئیں. اِسی لئے اُنھوں نے اپنے گروہ کی اِن کتابوں میں بڑائی کی.

جب دیش میں زیادہ تر لوگ بیوقوف اور بے پڑھے لکھے تھے، جب محض پروہتوں کے دو ایک آدمیوں میں ودیا اور آلوچنا کا گیان تھا، جب دیش کے کوٹی کوٹی لوگوں کو شودر کہکر ودیا سے محروم کردیا گیا، جب شودر کو معمولی سے قصور میں—'اُس کی جیبھ کاٹ دو' اُس کے کان میں گرم پگھلا ہوا شیشہ چھوڑ دو' 'اُس کے نیتمبوں کا مانس کاٹ کر پھینک دو' اور اُسے چٹائی میں لپیٹ کر جلا دو'—اِن سب کا اُلیکھ کوٹلیہ کے گرنتھ میں پایا جاتا ہے. یہ سب پروہتوں کے وید واکیہ کہکر اعلان ہوئے. راجاؤں کو بھی اِن پر عمل کرانے کے لئے انورودھ کیا جاتا تھا. جب راجا اور پروہت ملکر ظالمانہ حکومت کرتے تھے تب حکومت کے خلاف شودروں کو سر اُٹھانے کی کیسے ہمت پڑ سکتی تھی؟ والمیکی راماین

में उल्लेख है कि ब्राह्मण के पुत्र की मौत की ज़िम्मेवारी शूद्र शंबूक के सिर पर थोपकर धर्मराज रामचन्द्र बिना विचारे उसका मस्तक काट डालते हैं. इस एक मिसाल से यह बात अच्छी तरह समझ में आ सकती है कि राजशक्ति और पुरोहित शक्ति का संयोग कैसा भीषण रूप ले सकता है. पुरोहितों की बे-बुनियाद बातें मुंह-मुंह से ज़ाहिर होती हैं. 'कलियुग में सिर्फ़ आदि और अन्त वर्ण (यानी ब्राह्मण और शूद्र) ही रहेंगे.' यानी समाज में केवल ब्राह्मण (पुरोहित तंत्री लोग) व शूद्र रहेंगे. इस श्लोक का उल्लेख कहीं नहीं मिलता ऐसा श्री वैद्य कहते हैं. जब केवल ब्राह्मण और शूद्र ये दो ही वर्ण माने गये तब धर्म पुस्तकों को पढ़ने, लिखने व गवेषणा करने का हक़ फिर सिवाय ब्राह्मणों के और किसका हो सकता है. फलस्वरूप धर्म ग्रन्थों में झूठी बातें प्रक्षिप्त करके, नये रूप से लिखकर और जाल करके बदलने का क्रम बिना रुके चलने लगा. वेदों में 'बाल खिल्य सूत्र' समूह और 'सर्प सूत्र' समूह ये जालसाज़ी करके शामिल कर दिये गये. बहुत पुराने ज़माने से लेकर रघुनन्दन और 'अल्लाहो उपनिषद्' की रचना के समय तक यह जालसाज़ी चलती रही. ईसाई पादरियों ने भी इन्हीं जाली बातों को मान्यता दी. बाइबिल की ईसा की कथा दूसरे रूप में वेदों में है—यह बताया गया. रेवरेंड स्वार्ट्ज़ आदि "श्वेत द्वीप में अपने को ब्राह्मण कहकर अपना प्रचार करते थे." लेखक ने इनकी यह घोषणा खुद पढ़ी है. केवल उन्नीसवीं शताब्दी के विदेशी पंडितों ने पाठों की तुलना करके इन जालसाज़ियों को पढ़े लिखे भारतवासियों के सामने रखा. इन यूरोपीय विद्वानों ने मूल पाठों को शुद्ध किया.

वेदों में जिस तरह मिथ्याचारी पंडितों ने जाल बट्टा किया उसी तरह स्मृतियों में भी किया गया. ग्यारहवीं सदी में 'मिताक्षरा' पुस्तक के लेखक "परमहंस के उपासक" महापुरुष ज्योति विज्ञानेश्वर रघुनन्दन की तरह ही मुलज़िम हैं. उन्होंने अपने मत का समर्थन कराने के लिये "गौतम संहिता" से एक सूत्र उद्धृत किया है—"सबसे पुरानी स्मृति में यह लिखा है कि पैतृक सम्पत्ति में पिता पुत्र के हक़ बराबर होते हैं;" लेकिन भारत के एक प्रदेश बंगाल में इस सिलसिले में काफ़ी उल्टे विचार हैं. बंगाल ऐसा देश है जहाँ कोई किसी की श्रद्धा नहीं करता—ऐसा समझा जाता है. 'मिताक्षर' का प्रतिद्वन्द्वी 'दाय भाग' ग्रन्थ के टीकाकार श्री कृष्ण तर्कालंकार और बाद में सोलहवीं शताब्दी में अच्युत नामक पंडित ने यह श्लोक चालू कर दिया "अमूल" अर्थात् असली पुस्तक में नहीं है. पुराने ज़माने में यह जुआ-चोरी थी उसे महामहोपाध्याय के कान सुनने को तैयार नहीं थे. उन्होंने कहा—"ठीक ही है किन्तु मनु संहिता की

میں اُلیکھ ھے کہ براھمن کے پتر کی موت کی ذمہواری شودر شمبوک کے سر پر تھوپکر دھرم راج رامچندر بنا بچارے اُس کا مستک کاٹ ڈالتے ھیں ۔ اِس ایک مثال سے یہ بات اچھی طرح سمجھ میں آسکتی ھے کہ راج شکتی اور پروھت شکتی کا سنجوگ کیسا بھیشن روپ لے سکتا ھے۔ پروھتوں کی بے بنیاد باتیں منھ منھ سے ظاھر ھوتی ھیں ۔ 'کلیگ میں' صرف آدی اور انت ورن (یعنی براھمن اور شودر) ھی رھینگے ۔' یعنی سماج میں کیول براھمن (پروھت تنتری لوگ) و شودر رھینگے ۔ اِس شلوک کا اُللیکھ کہیں نہیں ملتا ایسا شری ویدیہ کہتے ھیں ۔ جب کیول براھمن اور شودر یہ دو ھی ورن مانے گئے تب دھرم پستکوں کو پڑھنے' لکھنے و گویشنا کرنے کا حق پھر سوائے براھمنوں کے اور کس کا ھوسکتا ھے۔ پھل سروپ دھرم گرنتھوں میں جھوٹی باتیں پرچھپت کرکے' نئے روپ سے لکھکر اور جعل کرکے بدلنے کا کرم بنا روکے چلنے لگا۔ ویدوں میں 'بال کھلیہ سوتر' سموہ اور 'سرپ سوتر' سموہ یہ جعل سازی کرکے شامل کردیئے گئے ۔ بہت پرانے زمانے سے لیکر رگھونندن اور 'اللہ ھو اُپنشد' کی رچنا کے سمے تک یہ جعل سماج میں رھی ۔ عیسائی پادریوں نے بھی اِنھیں جعلی باتوں کو ماننیتا دی ۔ بائبل کی عیسیٰ کی کتھا دوسرے روپ میں ویدوں میں ھے—یہ بتایا گیا ۔ ریورینڈ سوارٹز آدی "شویت دویپ میں اپنے کو براھمن کہکر اپنا پرچار کرتے تھے ۔" لیکھک نے اِن کی یہ گھوشنا خود پڑھی ھے ۔ کیول اُنیسویں شتابدی کے ودیشی پنڈتوں نے پاٹھوں کی تلنا کرکے اِن جعل سازیوں کو پڑھے لکھے بھارت واسیوں کے سامنے رکھا ۔ اِن یوروپیہ ودوانوں نے مول پاٹھوں کو شدھ کیا ۔

ویدوں میں جس طرح متھیاچاری پنڈتوں نے جعل بٹہ کیا اُسی طرح اِسمرتیوں میں بھی کیا گیا ۔ گیارھویں صدی میں 'متاکشرا' پستک کے لیکھک "پرمھنس کے اُپاسک" مہاپرش جیوتی وگیانیشور رگھو نندن کی طرح ھی ملزم ھیں ۔ اُنھوں نے اپنے مت کا سمرتھن کرانے کے لئے "گوتم سنگھتا" سے ایک سوتر اُدھرت کیا ھے—"سب سے پرانی اِسمرتی میں یہ لکھا ھے کہ پیترک سمپتی میں پتا پتر کے حق برابر ھوتے ھیں۔" لیکن بھارت کے ایک پردیش بنگال میں اِس سلسلے میں کافی اُلٹے وچار ھیں ۔ بنگال ایسا دیش ھے جہاں کوئی کسی کی شردھا نہیں کرتا—ایسا سمجھا جاتا ھے۔ 'متاکشر' کا پرتی دوندی 'دائے بھاگ' گرنتھ کے ٹیکاکار شری کرشن ترکالنکار اور بعد میں سولھویں شتابدی میں اچیوت نامک پنڈت نے یہ شلوک چالو کردیا "امول" ارتھات اصلی پستک میں نہیں ھے ۔ پرانے زمانے میں یہ جوا چوری تھی اُسے مہامہوپادھیائے کے کان سننے کو تیار نہیں تھے ۔ اُنھوں نے کہا—"ٹھیک ھی ھے کنتو منو سنگھیتا کی

टीका में मेधातिथि ने इस व्यवस्था का उल्लेख किया है.” लेखक ने जाँच-पड़ताल करके देखा है कि मनु के वचनों का खंडन करके मेधातिथि ने कहा है—“आचार्यन्य उत्तम”. किन्तु किस आचार्य ने यह कहा है इसका कहीं उल्लेख नहीं है. यह एक जबर्दस्ती की बात है. इस तरह के कई वचन विज्ञानेश्वर ने कहे हैं जो असली पुस्तक में नहीं हैं. इस तरह बहुत से उद्भट श्लोक जो लोगों में प्रचलित थे उन्हें वेद वाक्य और स्मृति वाक्य कहकर चलाया गया. आजकल के नास्तिक खोज करने वालों ने ये सब जालसाजी पकड़ ली है. यह नई बात नहीं है. यह वैज्ञानिक खोजों का नतीजा है. श्री कानेड़ ने मंजूर किया है कि गौतम संहिता का एक पूरा अध्याय बाद में जोड़ा गया.

यूरोप में भी मँझले जमाने में इसी तरह की हालत थी. आईन, विज्ञान, तर्कशास्त्र (मन्तक), दर्शन शास्त्र (फ़लसफ़ा) वगैरह को धर्म के साथ नत्थी कर दिया गया था. जो लोग इसका प्रतिवाद करते थे उन्हें शैतान कहकर या तो ज़िन्दा जला दिया जाता था (Auto da fa) या देश निकाला दिया जाता था. जर्मन अध्यापक म्याक (Mach) ने लिखा है अठारहवीं शताब्दी के आख़ीर में विज्ञान धर्म विश्वास की गहराइयों से बाहर आया.❀

जब समाज में सिर्फ़ पुरोहित वर्ग ही तालीमयाफ्ता हो तब हर जगह यही होता आया है कि पुरोहित वर्ग व्यक्ति और समाज को पूरी तरह धर्म के साथ जकड़ देता है. यूरोप में मध्य युग में दर्शन शास्त्र धर्म का अङ्ग था लेकिन आज ऐसा नहीं है. आज पच्छिमी दुनिया में दर्शन (Metaphysics) और धर्म तत्त्व (Theology) अलग अलग खोज के विषय हैं. दूसरे देशों में, जैसे हिन्दुस्तान में, दर्शन शास्त्र और तर्क शास्त्र तक धर्म और रायज कुसंस्कारों से जकड़े हुये हैं. विदेशी दर्शन शास्त्र (फ़लसफ़ा) की गूँज ही बंगाल का 'नया न्याय शास्त्र है'.* उसमें भी कल्पना से गढ़ी हुई अशरीरी वस्तुओं को जैसे भूत, प्रेतरूप आदि को 'वाय वियजीव' कह कर उल्लेख किया गया है.

लेकिन आजकल जो लोग भारत में अरस्तू न्याय (Aristotelian) पढ़ते हैं, जो लोग एलोपैथी, आयुर्वेद और कविराजी शास्त्र पढ़ते हैं वे लोग भूत, प्रेत और आत्मा या प्राण को तर्क शास्त्र (मन्तक) या आयुर्वेद शास्त्र के अन्तर्गत शुमार नहीं करते; चिकित्सा करने के समय भूत भगाने की कोई कोशिश नहीं करते, वे लोग सेहत सुधारने के लिये स्वस्थकर वातावरण (hygiene) की व्यवस्था करते हैं.

ٹیکا میں میدھاتتھی نے اُس ویوستھا کا اُلیکھ کیا ہے.“ لیکھک نے جانچ پڑتال کرکے دیکھا ھےکہ منو کے وچنوں کا کھنڈن کرکے میدھاتتھی نے کہا ھے—”آچاریئیہ اُتم“ کنتو کس آچاریہ نے یہ کہا ھے اُس کا کہیں اُلیکھ نہیں ھے . یہ ایک زبردستی کی بات ھے . اِس طرح کے کئی وچن وگیانیشور نے کہے ھیں جو اصلی پستک میں نہیں ھیں . اِس طرح بہت سے اُدبھٹ شلوک جو لوگوں میں پرچلت تھے اُنہیں ویدواکیہ اور اسمرتی‌واکیہ کہکر چلایا گیا . آجکل کے ناستک کھوج کرنے والوں نے یہ سب جعل‌سازی پکڑ لی ھے. یہ نئی بات نہیں ھے. یہ ویگیانک کھوجوں کا نتیجہ ھے. شرکانیڈ نے منظور کیا ھے کہ گوتم سنگھیتا کا ایک پورا ادھیائے بعد میں جوڑا گیا .

یورپ میں بھی منجھلے زمانے میں اِسی طرح کی حالت تھی . آئین‘ وگیان‘ ترک شاستر (منطق)‘ درشن شاستر (فلسفہ) وغیرہ کو دھرم کے ساتھ نتھی کردیا گیا تھا . جو لوگ اِس کا پرتیواد کرتے تھے اُنہیں شیطان کہکر یا تو زندہ جلا دیا جاتا تھا (Auto da fa) یا دیش نکالا دیا جاتا تھا . جرمن ادھیاپک میاک (Mach) نے لکھا ھے اٹھارھویں شتابدی کے آخیر میں وگیان دھرم وشواس کی گہرائیوں سے باھر آیا .❀

جب سماج میں صرف پروھت ورگ ھی تعلیم‌یافتہ ھو تب ھر جگہ یہی ھوتا آیا ھے کہ پروھت ورگ ویکتی اور سماج کو پوری طرح دھرم کے ساتھ جکڑ دیتا ھے . یورپ میں مدھیہ یگ میں درشن شاستر دھرم کا انگ تھا لیکن آج ایسا نہیں ھے . آج پچھمی دنیا میں درشن (Metaphysics) اور دھرم تتو (Theology) الگ الگ کھوج کے وشے ھیں . دوسرے دیشوں‘ جیسے ھندستان میں‘ درشن شاستر اور ترک شاستر تک دھرم اور رائج کوسنسکاروں سے جکڑے ھوئے ھیں . ودیشی درشن شاستر (فلسفہ) کی گونج ھی بنگال کا ’نیا نیائے شاستر‘ ھے .* اُس میں بھی کلپنا سے گڑھی ھوئی اشریری وستوؤں کو جیسے بھوت‘ پریت روپ آدی کو ’وائے ویئے جیو‘ کہکر اُلیکھ کیا گیا ھے .

لیکن آجکل جو لوگ بھارت میں ارسطو نیائے (Aristotelian) پڑھتے ھیں؛ جو لوگ ایلوپیتھی‘ آیوروید اور کویراجی شاستر پڑھتے ھیں وہ لوگ بھوت‘ پریت اور آتما یا پران کو ترک شاستر (منتق) یا آیوروید شاستر کے انترگت شمار نہیں کرتے‘ چکتسا کرنے کے سمے بھوت بھگانے کی کوئی کوشش نہیں کرتے؛ وے لوگ صحت سدھارنے کے لئے سوستھکر واتاورن (hygiene) کی ویوستھا کرتے ھیں .

❀—Mach: History of Physics

*—See Bhasha Parichchhed.

यह अजीब भावना क्योंकर हमारे देश में आगई ? ऊपर हमने कहा है कि मध्य युग में यह किस तरह मुमकिन हुआ ? इस ज़माने में अंगरेज़ी से होड़ लेने के लिये हमारे स्वदेश प्रेमी देशभक्तों ने ऐलान करना शुरू किया—"हम लोग धर्म प्राण (मज़हबी) जाति हैं, हमारी सभ्यता (तहज़ीब) धर्म की बुनियादों पर खड़ी है. भारतवासी संसार की एक विशिष्टता प्राप्त जाति है, उनकी ग़ैर मामूली खासियतें हैं, वग़ैरह. इस पर लेखक ने एक दूसरी जगह नुक्ताचीनी की है.

सच तो यह है कि हम लोग मज़हबी पागल (Religious maniac) नहीं हैं.* हमारी सभ्यता की तामीर धर्म के ऊपर नहीं है; हम लोग भगवान के सिरजे हुये कोई ख़ासुलख़ास (वैशिष्टय प्राप्त) जीव नहीं हैं. हम लोग दुनिया की दूसरी जातियों की तरह हाड़ मांस और रक्त वाले इनसान हैं. दीर्घ काल की पराधीनता से पैदा होने वाली राजनैतिक, समाजाजिक और आर्थिक ग्लानि और बुराइयों को दूर करने की हमारी स्वाधीन राष्ट्रीय सरकार दिलोजान से कोशिश कर रही है. जब पेट भर खाने को मिलेगा तभी चरित्र में उत्तमता आयेगी और बुद्धि खुलेगी. हमारा स्वाधीन राष्ट्र इसके लिये तत्पर है. इस समय दुनिया में जो तरक़्क़ी और प्रगति हो रही है उसके साथ ताल मिलाने और क़दम-ब-क़दम चलने के लिये और क़ौमी तरक़्क़ी के लिये सही वातावरण बनाने के लिये ही हमने अपने देश में 'धर्म निरपेक्ष' राज्य (Secular State) की स्थापना की है. अपने हज़ारों बरस के अनुभवों के आधार पर हमने सोच विचार कर यह सही क़दम उठाया है.

इनसान आपस में प्रेम सहित कैसे हिल मिलकर एक दूसरे के साथ जाति के रूप में रह सकते हैं—इसी का नाम सामाजिक विकास है और राष्ट्र के रूप में उनका विकास ही राजनैतिक विकास है. विविध जातियाँ एक ही देश में कैसे एक राष्ट्र का रूप लेती है, उनकी जो मिलन-पद्धति है, एक दूसरे में रल मिलकर जो एक राष्ट्र बनाने का उनका तरीक़ा है वहीं राजनैतिक प्रतिष्ठान यानी राष्ट्र के दायरे में हर इनसान का यह हक़ है कि वह अपनी जिन्दगी में विकास यानी तरक़्क़ी के पूरे पूरे मौक़े हासिल करे. और जाति को पूरी तरह तरक़्क़ी का अवसर मिले इसी के लिये राष्ट्र में शासन विभाग यानी हुकूमत की स्थापना होती है. इसीलिये राष्ट्र सबसे ऊपर और सर्व शक्तिमान होता है. किसी बात को इलहामी, ईश्वरीय व्यवस्था या वेदवाक्य समझकर पकड़कर बैठने के कोई मायने नहीं. मौजूदा हालतों में किसी पुरानी बात को पकड़कर बैठना मुनासिब

یہ عجیب بھاؤنا کیونکر ہمارے دیش میں آگئی ؟ اوپر ہم نے کہا ہے کہ مدھیہ یگ میں یہ کس طرح ممکن ہوا ؟ اِس زمانے میں انگریزوں سے ہوڑ لینے کے لئے ہمارے سودیش پریمی دیش بھکتوں نے اعلان کرنا شروع کیا—"ہم لوگ دھرم پرانڑ (مذہبی) جاتی ہیں' ہماری سبھیتا (تہذیب) دھرم کی بنیادوں پر کھڑی ہے . بھارت نواسی سنسار کی ایک وشِشٹتا پراپت جاتی ہے' اُن کی غیر معمولی خاصیتیں ہیں' وغیرہ . اِس پر لیکھک نے ایک دوسری جگہ نکتہ چینی کی ہے .

سچ تو یہ ہے کہ ہم لوگ مذہبی پاگل (Religious maniac) نہیں ہیں .* ہماری سبھیتا کی تعمیر دھرم کے اُوپر نہیں ہے؛ ہم لوگ بھگوان کے سرجے ہوئے کوئی خاص الخاص (ویشِشٹیہ پراپت) جیو نہیں ہیں . ہم لوگ دنیا کی دوسری جاتیوں کی طرح ہاڑ' مانس اور رکت والے اِنسان ہیں . دیرگھ کال کی پرادھینتا سے پیدا ہونے والی راجنیتک' ساماجک اور آرتھک گلانی اور برائیوں کو دور کرنے کی ہماری سوادھین راشٹریہ سرکار دل و جان سے کوشش کر رہی ہے . جب پیٹ بھر کھانے کو ملیگا تبھی چرتر میں اُتمتا آئیگی اور بدھی کھلیگی . ہمارا سوادھین راشٹر اِس کے لئے تتپر ہے . اِس سمے دنیا میں جو ترقی اور پرگتی ہو رہی ہے اُس کے ساتھ تال ملانے اور قدم بہ قدم چلنے کے لئے اور قومی ترقی کے لئے' صحیح واتاورن بنانے کے لئے ہی ہم نے اپنے دیش میں 'دھرم نرپیکش' راج (Secular State) کی استھاپنا کی ہے . اپنے ہزاروں برس کے انوبھوؤں کے آدھار پر ہم نے سوچ۔چار کر یہ صحیح قدم اُٹھایا ہے .

اِنسان آپس میں پریم سہت کیسے ہل ملکر ایک دوسرے کے ساتھ جاتی کے روپ میں رہ سکتے ہیں—اِسی کا نام ساماجک وکاس ہے اور راشٹر کے روپ میں اُن کا وکاس ہی راجنیتک وکاس ہے . وِودھ جاتیاں ایک ہی دیش میں کیسے ایک راشٹر کا روپ لیتی ہے' اُن کی جو ملن پدھتی ہے' ایک دوسرے میں رل ملکر جو ایک راشٹر بنانے کا اُن کا طریقہ ہے وہی راجنیتک پرتشٹھان ہے یعنی راشٹر کے دایرے میں ہر اِنسان کا یہ حق ہے کہ وہ اپنی زندگی میں وکاس یعنی ترقی کے پورے پورے موقعے حاصل کرے . اور جاتی کو پوری طرح ترقی کا اوسر ملے اِسی کے لئے راشٹر میں شاسن وبھاگ یعنی حکومت کی استھاپنا ہوتی ہے . اِسی لئے راشٹر سب سے اُوپر اور سروشکتیمان ہوتا ہے. کسی بات کو الہامی' ایشوریہ ویوستھا یا ویدواکیہ سمجھکر پکڑ کر بیٹھنے کے کوئی معنے نہیں. موجودہ حالتوں میں کسی پرانی بات کو پکڑ کر بیٹھنا مناسب

*—Swami Vivekanand : Patriot Prophet, pp. 256-258.

नहीं है. पुरानी व्यवस्था को ईश्वर प्रदत्त या खुदाई समझने की तहज़ीब स्वाधीन राष्ट्र की उन्नति की कोशिशों के रास्ते में अड़ंगा डालने के समान है. इससे समाज के शरीर में बुरे नतीजे पैदा होते हैं.

जिस जगह राष्ट्र के चलाने वाले राष्ट्र की क़ौमी ज़िन्दगी को वैज्ञानिक दृष्टि से देखते हैं वहाँ राष्ट्र बेशक तरक़्क़ी करेगा और ताक़तवर बनेगा. क़ौम की ज़िन्दगी को कामयाबी के साथ तरक़्क़ी की दौड़ में आगे बढ़ाने के लिये इस विषय में खोज और छानबीन ज़रूरी है.

نہیں ہے . پرانی ویوستھا کو ایشور پردت یا خدائی سمجھنے کی تہذیب سوادھین راشٹر کی اُنتی کی کوششوں کے راستے میں اڑنگا ڈالنے کے سمان ہے . اس سے سماج کے شریر میں برے نتیجے پیدا ہوتے ہیں .

جس جگہ راشٹر کے چلانے والے راشٹر کی قومی زندگی کو ویگیانک درشٹی سے دیکھتے ہیں وہاں راشٹر بے شک ترقی کریگا اور طاقتور بنیگا . قوم کی زندگی کو کامیابی کے ساتھ ترقی کی دوڑ میں آگے بڑھانے کے لئے اس وشئے میں کھوج اور چھان بین ضروری ہے .

चीनी इलाज का तरीक़ा और दवाएँ

श्री लू चिह-चुन

(डाइरेक्टर आफ़ चाइनीज़ मेडीसिन रिसर्च अकादमी)

[राजकुमारी अमृतकौर ने चीन से लौट कर पुरानी चीनी वैद्यक विद्या और उसकी तरफ़ नई चीनी सरकार की पालिसी पर जो बयान दिया था उस पर एक नोट और एक चीनी विद्वान का लेख इससे पहले "नया हिन्द" में प्रकाशित कर चुके हैं. यहां हम इसी विषय पर एक और चीनी विद्वान का लेख प्रकाशित कर रहे हैं जो चीन के स्वास्थ्य विभाग के एक बहुत बड़े अफ़सर भी हैं. इससे और भी साफ़ पता चलता है कि राजकुमारी का वह बयान कितना ग़लत था—सुन्दर लाल.]

❀ ❀ ❀

कई हज़ार वर्ष से चीन के लोगों की एक अपनी वैद्यक विद्या (मैडीकल साइन्स) चली आ रही है. सातवीं सदी ईसवी तक यह चीनी वैद्यक विद्या कोरिया, जापान, भारत, बरमा और इंडोनीशिया तक फैल चुकी थी. सदियों उन्नति करने के बाद आज यह वैद्यक विद्या सारे चीन में चालू है और इसके पीछे दवाओं और इलाज का बड़ा लम्बा क़ीमती तजरबा है.

चीन के इतिहास में बहुत से मशहूर वैद्यों यानी उस ज़माने के डाक्टरों और उनके कामों का बयान मिलता है. ईसा से चार पांच सौ बरस पहले, जब चीन की कई अलग अलग रियासतों में घरेलू लड़ाइयां जारी थीं, पीएन चुएह नाम का एक बहुत मशहूर वैद्य था जिसने पहली बार नब्ज़ (नाड़ी) की चाल से रोग के पता लगाने का तरीक़ा ईजाद किया. इसमें उसे बड़ी कामयाबी हुई. बहुत से रोगों के इलाज के लिये उसने बारीक बारीक सुइयों से नसों (नर्व्ज़) की हालत और उनकी गति को ठीक करना (ऐक्यु पंक्चर) और बूटियों को गरम करके उनसे शरीर के ख़ास ख़ास अंगों को सेकना (मौक्सी बशाचन) इन दो तरीक़ों से बहुत बड़ा काम लिया. ईसा की पहली और दूसरी शताब्दी में चांग चुंग-चिंग नाम के एक वैद्य ने तरह तरह के बुख़ारों पर एक किताब लिखी जिसका नाम 'शांग हानलुन' है और वैद्यक के उसूलों और ज़रूरी बातों पर एक दूसरी किताब लिखी जिसका नाम "चिंग कुए युहान चिंग" है. इन दोनों किताबों में बुख़ारों और दूसरी बीमारियों के इलाज के लिये बहुत से नुसख़े दिये हुए हैं. आज भी चीन में इन किताबों और

چینی علاج کا طریقہ اور دوائیں

شری لو چہ - چن

(ڈائریکٹر آف چائنیز میڈیسن ریسرچ اکادمی)

[راجکماری امرت کور نے چین سے لوٹ‌کر پرانی چینی ویدک ودیا اور اُس کی طرف نئی چینی سرکار کی پالیسی پر جو بیان دیا تھا اُس پر ایک نوٹ اور ایک چینی ودوان کا لیکھ ہم اِس سے پہلے "نیا ہند" میں پرکاشت کرچکے ہیں . یہاں ہم اِسی وشئے پر ایک اور چینی ودوان کا لیکھ پرکاشت کر رہے ہیں جو چین کے سواستھیہ وبھاگ کے ایک بہت بڑے افسر بھی ہیں . اِس سے اور بھی صاف پتہ چلتا ہے کہ راجکماری کا وہ بیان کتنا غلط تھا——سندر لال .]

❀ ❀ ❀

کئی ہزار ورش سے چین کے لوگوں کی ایک اپنی ویدک ودیا (میڈیکل سائنس) چلی آرہی ہے . ساتویں صدی عیسوی تک یہ چینی ویدک ودیا کوریا، جاپان، بھارت، برما اور انڈونیشیا تک پھیل چکی تھی . صدیوں اُنتی کرلے کے بعد آج یہ ویدک ودیا سارے چین میں چالو ہے اور اِس کے پیچھے دواؤں اور علاج کا بڑا لمبا قیمتی تجربہ ہے .

چین کے اِتہاس میں بہت سے مشہور ویدیوں یعنی اُس زمانے کے ڈاکٹروں اور اُن کے کاموں کا بیان ملتا ہے . عیسیٰ سے چار پانچ سو برس پہلے، جب چین کی کئی الگ الگ ریاستوں میں گھریلو لڑائیاں جاری تھیں، پی این چو ایہ نام کا ایک بہت مشہور وید تھا جس نے پہلی بار نبض (ناڑی) کی چال سے روگ کے پتہ لگانے کا طریقہ اِیجاد کیا . اِس میں اُسے بڑی کامیابی ہوئی . بہت سے روگوں کے علاج کے لئے اُس نے باریک باریک سوئیوں سے نسوں (نروز) کی حالت اور اُن کی گتی کو ٹھیک کرنا (ایکیوپنکچر) اور بوٹیوں کو گرم کرکے اُن سے شریر کے خاص خاص انگوں کو سینکنا (موکسی بشچن) اِن دو طریقوں سے بہت بڑا کام لیا . عیسیٰ کی پہلی اور دوسری شتابدی میں چانگ چونگ - چنگ نام کے ایک وید نے طرح طرح کے بخاروں پر ایک کتاب لکھی جس کا نام "شانگ ھان لن" ہے اور ویدیک کے اُصولوں اور ضروری باتوں پر ایک دوسری کتاب لکھی جس کا نام "چنگ کوئے یہان چنگ" ہے . اِن دونوں کتابوں میں بخاروں اور دوسری بیماریوں کے علاج کے لئے بہت سے نسخے دیئے ہوئے ہیں . آج بھی چین میں اِن کتابوں اور

नुसखों का बहुत बड़ा मान है और उनसे रोगों का इलाज किया जाता है. उसी समय के निकट एक बहुत बड़ा वैद्य "हुआ-तो" हुआ है जो तरह तरह के जर्राही यानी चीर-फाड़ के कामों (वेरियस सरजिकल आपरेशन्स) में बहुत होशियार था. वह इलाज करने में ऊपर लिखे सुइयों के तरीक़े (ऐक्यु-पंकचर) और सेक के तरीक़े (मौक्सी-बशचन) को भी काम में लाता था. चीर-फाड़ के लिये उसने ऐसी दवाओं को ईजाद किया जिनसे रोगी को बिल्कुल पीड़ा अनुभव न होने पावे जिन्हें आजकल ऐनस्थेटिक्स कहते हैं. ईसा के तीन चार सौ बरस बाद वांग शु-हो नाम के एक वैद्य ने नाड़ी परीक्षा पर "माई चिंग" नाम की एक बड़ी प्रमाणिक पुस्तक लिखी. शरीर के अन्दर ख़ून की गति पर और निदान यानी बीमारी का ठीक ठीक पता लगाने के तरीक़े पर भी उसने कई पुस्तकें लिखीं. हुआंगफ़ु-मी नाम के एक वैद्य ने सुइयों वाले इलाज और सेक वाले इलाज पर 'चिआ यी चिंग' नाम से पहली पुस्तक लिखी. को-हुंग नाम के एक वैद्य ने पारे को शोध कर पहली बार दवा के तौर पर काम में लाए जाने के योग्य बनाया. उसकी एक किताब "चौऊ होऊ फ़ांग" नुसख़ों की किताब है जो चीन में आज भी बड़ी महत्व की किताब मानी जाती है और ख़ूब काम में आती है. दवाओं के तैयार करने के तरीक़ों पर सब से पहली किताब 'सेन नुंगपेन त्साओ' है जिसे छठी सदी के शुरू के एक वैद्य ताओ हुंग-चिंग ने दोहरा कर और बड़ा किया. सन् 610 ईसवी में चाओ युआन-फ़ांग नाम के एक वैद्य ने तरह तरह के रोगों के निदान और उनकी अलामतों पर 'चु पिंग युआन होउ त्सुंग लु' नाम से एक किताब लिखी जो अलग अलग बीमारियों और उनके निदान (डाइगनोसिस) पर एक बहुत ही ऊँचे दरजे की किताब है.

इसके बाद तांग राज कुल के समय से लेकर सुंग राज कुल के समय तक चीनी वैद्यक विद्या ने अभूत-पूर्व उन्नति की. मशहूर वैद्य सुन से-मिआव की पुस्तक "चीनचिंग याओ फ़ाग" से, जिसके मानी हैं "सुनहरी दवाएँ' पता चलता है कि उन दिनों जानवरों के अन्दर की चीज़ें, जैसे गाय या भेड़ का पित्ता या जिगर, आदमी की बीमारियों के इलाज में काम में आने लगी थीं. मेंग शीन नाम के एक विद्वान ने "शिह लियाओ पैन त्साओ" नाम की एक किताब लिखी जिसमें वैद्यक की निगाह से सब तरह की खानों की चीज़ों के गुण-दोष बयान किये गये हैं. उस ज़माने में चीनी वैद्यक विद्या ने बहुत तेज़ी से तरक़्क़ी की. एक्यु-पंक्चर और मौक्सी-बशचन का रिवाज ख़ूब बढ़ा. शरीर के अलग अलग अंगों को समझने और उनका अध्ययन करने के लिये मानव शरीर को चीर कर देखा जाता था. आदमी के शरीर और उसके अलग अलग अंगों के नक़्शे तैयार होने लगे. आदमी के पूरे क़द की काँसे की

نسخوں کا بہت بڑا مان ہے اور اُن سے روگوں کا علاج کیا جاتا ہے ۔ اُسی سمے کے نکٹ ایک بہت بڑا وید "ہوا تو" ہوا ہے جو طرح طرح کے جراحی یعنی چیر پھاڑ کے کاموں (ویریئس سرجیکل آپریشنس) میں بہت ہوشیار تھا ۔ وہ علاج کرنے میں اُوپر لکھے سوئیوں کے طریقے (ایکیوپنکچر) اور سینک کے طریقے (موکسی بشچن) کو بھی کام میں لاتا تھا ۔ چیر پھاڑ کے لئے اُس نے ایسی دواؤں کو ایجاد کیا جس سے روگی کو بالکل پیڑا انوبھو نہ ہونے پاوے جنھیں آجکل انیستھیٹکس کہتے ہیں ۔ عیسیٰ کے تین چار سو برس بعد وانگ شو - ہو نام کے ایک وید نے ناڑی پریکشا پر "بھائی چنگ" نام کی ایک بڑی پرامانک پستک لکھی ۔ شریر کے اندر خون کی گتی پر اور ندان یعنی بیماری کا ٹھیک ٹھیک پتہ لگانے کے طریقے پر بھی اُس نے کئی پستکیں لکھیں ۔ ہوآنگ فو - می نام کے ایک وید نے سوئیوں والے علاج اور سینک والے علاج پر "چیائی چنگ" نام سے پہلی پستک لکھی ۔ کوھنگ نام کے ایک وید نے پارے کو شودھکر پہلی بار دوا کے طور پر کام میں لائے جانے کے یوگیہ بنایا ۔ اُس کی ایک کتاب "چوؤ ہوؤ فانگ" نسخوں کی کتاب ہے جو چین میں آج بھی بڑی مہتو کی کتاب مانی جاتی ہے اور خوب کام میں آتی ہے ۔ دواؤں کے تیار کرنے کے طریقوں پر سب سے پہلی کتاب 'سین نونگ پین تساؤ' ہے جسے چھٹی صدی کے شروع کے ایک وید تاؤ ھنگ چنگ نے دوھرا کر اور بڑا کیا ۔ سن 610 عیسوی میں چاؤ یوآن - فانگ نام کے ایک وید نے طرح طرح کے روگوں کے ندان اور اُن کی علامتوں پر "چوپنگ یوآن ہوؤتسنگ لو" نام سے ایک کتاب لکھی جو الگ الگ بیماریوں اور اُن کے ندان (ڈائگنوسس) پر ایک بہت ہی اُونچے درجے کی کتاب ہے ۔

اِس کے بعد تانگ راج کل کے سمے سے لیکر سونگ راج کل کے سمے تک چینی ویدک ودیا نے ابھوت پورو اُنتی کی ۔ مشہور وید سن زے میاؤ کی پستک "چنچنگ یاؤ فاگ" سے، جس کے معنی ہیں "سنہری دوائیں" پتہ چلتا ہے کہ اُن دنوں جانوروں کے اندر کی چیزیں، جیسے گائے یا بھیڑ کا پتا یا جگر، آدمی کی بیماریوں کے علاج میں کام میں آنے لگی تھیں ۔ میگ شین نام کے ایک ودوان نے "شہ لیاؤ پین تساؤ" نام کی ایک کتاب لکھی جس میں ویدیک کی نگاہ سے سب طرح کی کھانوں کی چیزوں کے گن دوش بیان کئے گئے ہیں ۔ اُس زمانے میں چینی ویدیک ودیا نے بہت تیزی سے ترقی کی۔ ایکیوپنکچر اور موکسی بشچن کا رواج خوب بڑھا ۔ شریر کے الگ الگ انگوں کو سمجھنے اور اُن کا ادھین کرنے کے لئے مانو شریر کو چیر کر دیکھا جاتا تھا ۔ آدمی کے شریر اور اُس کے الگ الگ انگوں کے نقشے تیار ہونے لگے۔ آدمی کے پورے قد کی کانسے کی

मूर्तियाँ बनने लगीं जिन के जरिये वैद्यक के विद्यार्थियों को शरीर के अंग, उनके रोग और उन पर दवाओं के असर समझाए जाते थे. अलग अलग रोगों के लिये नुसखों की किताबें उन दिनों सब से अधिक बिकती थीं. औरतों और बच्चों की बिमारियों और चीर फाड़ की विद्या के ऊपर भी खास तौर से किताबें लिखी गईं. चीनी वैद्यक विद्या में एक नई चीज उस समय यह हुई कि वैद्यक की उन्नति और वैद्यों की सुविधा के लिये राज के कानून में क्या क्या सुधार या तबदीलियां होनी चाहियें और वैद्यों के क्या क्या कानूनी फ़र्ज होने चाहियें इन बातों पर विचार होने लगा और किताबें लिखी जाने लगीं.

बारहवीं सदी से उन्नीसवीं सदी तक भी चीनी वैद्यक विद्या, चीनी दवाएँ और उनकी तैयारी बराबर तरक्की करती रहीं. ली शिह-चेन ने सब तर की दवाओं के ऊपर एक बहुत बड़ी किताब "पेन त्साओ कांग मु" लिख कर पूरी की. वु यु-शिंग ने अपनी एक किताब में छूत की या लगनी बीमारियों और महामारियों के ऊपर अपने खास सिद्धान्त दुनिया के सामने रखे. वांग चिंग-जेन ने शरीर के अन्दर के अलग अलग अंगों के बारे में पिछले कुछ गलत विचारों को सुधारा. लगनी बीमारियों का इलाज, आंखों और गले की बीमारियों का इलाज और चीर फाड़ के जरिये शरीर के अंगों की कुरूपता या बेडौलपन को ठीक करना इन तीनों में चीनी वैद्यक ने खास तौर से उन्नति की और इनके खास अलग अलग जानकार पैदा होने लगे.

अलग अलग बीमारियों के अलग अलग लक्षणों या अलामतों को बयान करने में पुरानी चीनी वैद्यक के जानकार जितनी अधिक तफ़सील यानी विस्तार में जाते हैं आजकल के यूरपी ढंग से पढ़े हुए डाक्टर उतनी तफ़सील में नहीं जा सकते. इसके अलवा पुरानी चीनी वैद्यक के नुसखे अधिकतर जड़ी बूटियों के होते हैं और उनसे बाद में इस तरह की हानि या बुरा असर नहीं होता जैसा यूरपी दवाओं से होता है. पुराने चीनी इलाज के तरीक़े में दो बातों की तरफ़ खास ध्यान दिया जाता है, सबसे पहले इस बात की तरफ़ कि रोगी के शरीर का और अलग अलग अंगों के काम का जो समतोल बिगड़ गया है उसे फिर से ठीक किया जावे, और दूसरे यह कि रोगी की आम नसों (नर्वस सिस्टम) को फिर से दुरुस्त किया जाये. नुसखा लिखने में इन दोनों बातों का पूरा ध्यान रखा जाता है. पुरानी चीनी वैद्यक विद्या के अन्दर रोग के कीड़ों को मारना (ऐंटी बायोटिक्स) और दवाओं के जरिये मकान, कपड़ों वगैरा को बीमारी के असर से पाक करना (डिस-इन्फ़ैक्शन) दोनों शामिल हैं.

مورتیاں بننے لگیں جن کے ذریعے ویدیک کے ودیارتھیوں کو شریر کے انگ، ان کے روگ اور اُن پر دواؤں کے اثر سمجھائے جاتے تھے. الگ الگ روگوں کے لئے نسخوں کی کتابیں اُن دنوں سب سے ادھک بکتی تھیں. عورتوں اور بچوں کی بیماریوں اور چیرپھاڑ کی ودیا کے اُوپر بھی خاص طور سے کتابیں لکھی گئیں. چینی ویدیک ودیا میں ایک نئی چیز اُس سمے یہ ہوئی کہ ویدیک کی اُنتی اور ویدیوں کی سویدھا کے لئے راج کے قانون میں کیا کیا سدھار یا تبدیلیاں ہونی چاہئیں اور ویدیوں کے کیا کیا قانونی فرض ہونے چاہئیں اِن باتوں پر وچار ہونے لگا اور کتابیں لکھی جانے لگیں.

بارھویں صدی سے اُنیسویں صدی تک بھی چینی ویدک ودیا، چینی دوائیں اور اُن کی تیاری برابر ترقی کرتی رہیں. لی شہ چین نے سب طرح کی دواؤں کے اُوپر ایک بہت بڑی کتاب "پین تساؤ کانگ مو" لکھکر پوری کی. وویوشنگ نے اپنی ایک کتاب میں چھوت کی یا لگنی بیماریوں اور مہاماریوں کے اُوپر اپنے خاص سدھانت دنیا کے سامنے رکھے. وانگ چنگ جین نے شریر کے اندر کے الگ الگ انگوں کے بارے میں پچھلے کچھ غلط وچاروں کو سدھارا. لگنی بیماریوں کا علاج، آنکھوں اور گلے کی بیماریوں کا علاج اور چیرپھاڑ کے ذریعے شریر کے انگوں کی کروپتا یا بے ڈولپن کو ٹھیک کرنا اِن تینوں میں چینی ویدیک نے خاص طور سے اُنتی کی اور اِن کے خاص الگ الگ جانکار پیدا ہونے لگے.

الگ الگ بیماریوں کے الگ الگ لکشنوں یا علامتوں کو بیان کرنے میں پرانی چینی ویدیک کے جانکار جتنی ادھک تفصیل یعنی وستار میں جاتے ہیں آجکل کے یورپی ڈھنگ سے پڑھے ہوئے ڈاکٹر اُتنی تفصیل میں نہیں جاسکتے. اِس کے علاوہ پرانی چینی ویدیک کے نسخے ادھکتر جڑی بوٹیوں کے ہوتے ہیں اور اُن سے بعد میں اِس طرح کی ہانی یا برا اثر نہیں ہوتا جیسا یورپی دواؤں سے ہوتا ہے. پرانے چینی علاج کے طریقے میں دو باتوں کی طرف خاص دھیان دیا جاتا ہے، سب سے پہلے اِس بات کی طرف کہ روگی کے شریر کا اور الگ الگ انگوں کے کام کا جو سمتول بگڑ گیا ہے اسے پھر سے ٹھیک کیا جاوے، اور دوسرے یہ کہ روگی کی عام نسوں (نروس سسٹم) کو پھر سے درست کیا جائے. نسخہ لکھنے میں اِن دونوں باتوں کا پورا دھیان رکھا جاتا ہے. پرانی چینی ویدیک ودیا کے اندر روگ کے کیڑوں کو مارنا (اینٹی بایوٹکس) اور دواؤں کے ذریعے مکان، کپڑوں وغیرہ کو بیماری کے اثر سے پاک کرنا (ڈس-انفیکشن) دونوں شامل ہیں.

पुराने चीनी वैद्यों ने तजुरबे से यह मालूम कर लिया ा कि शरीर के अन्दर के रोग के कीड़ों (bacteria) को ारने के लिये और खाल के ऊपर के कीड़ों को मारने के लये दोनों कामों के लिये "हुआंग लीन' (Coptis teeta) हुत ही उपयोगी दवा है और पूरा असर करती है, खूनी चिश (Amoellic dysentry) को अच्छा करने के लये पाई तोऊ वेंग (Anemone) बहुत ही कामयाब ौषधि है, मलेरिया के बुखार को ठीक करने के लिये चांग ान (Orixa japonica) बढ़िया दवा है, खांसी के ये सब से अच्छी दवा पाई मू (Fritillaria Verticil- ata) है, औरतों के ख़ून को रोकने के लिये यी मुत्साओ Leonurus Sibricus) बहुत लाभदायक है, रात के सीने को रोकने के लिये हुआंग चि (Astragalus Reflexistipulus) बहुत अच्छी चीज है, पेट के ीड़ों 'कदुदानो' को साफ़ करने के लिये कू चीन पी Melia Azedarath) लासानी है, बुखार को कम रने के लिये चाइ हू (Bupleurum Chinensis) हुत काम की है और खून के दबाव यानी ब्लड प्रेशर के ाज के लिये तू चुंग (Eucommia Ulmoides) बहुत ीद साबित होती है.

बहुत सी बीमारियां हैं जिन से यूरोपियन ढंग के पढ़े ए डाक्टर घबरा जाते हैं और पुरानी चीनी वैद्यक विद्या े जानने वाले उनका इलाज बड़ी आसानी के साथ र लेते हैं. मिसाल के लिये अंतड़ियों की पुरानी ावाही सूजन (Chronic gastro - intestinal nflammation) (गुरदे की पुरानी सूजन Chronic nflammation of the kidneys) अन्दर ी खांसी (Bronchitis), गठिया के कारण जोड़ों ी सूजन (Rheumatsia Arthritis), आंख की ीमारी (Myositis), और नसों की बीमारी Neuritis), यह सब बीमारियां पच्छिम के इलाज के रीक़ों से बहुत ही धीरे धीरे और बहुत ही कम अच्छी ोती हैं, लेकिन अगर पुराने चीनी तरीक़ों से इनका इलाज िया जावे तो बहुत जल्दी ठीक हो जाती हैं, ख़ासकर जब े दवा के साथ साथ पुराने ढंग की सुइयों से नसों को ी ठीक कर दिया जावे (Acupuncture). यह ुइयों का इलाज बहुत ही आसान, सीधा और कारामद है. क और मिसाल लीजिये, पाख़ाने के रास्ते से ख़ून जाना ौर नासूर पड़ जाना (Haemorrhoids and Fistulae), इन का इलाज पुराने चीनी तरीक़ों से हाल में हुत ही कामयाब साबित हुआ है. अंतड़ियों के नीचे के िस्से की बीमारियां पुरानी दवाओं से बहुत जल्दी अच्छी ोती हैं. इलाज का ढंग भी बहुत सीधा सादा है. इसमें बहुत

پرانے چینی ویدیوں نے تجربے سے یہ معلوم کرلیا تھا کہ شریر کے اندر کے روگ کے کیڑوں (bacteria) کو مارنے کے لئے اور کھال کے اوپر کے کیڑوں کو مارنے کے لئے دونوں کاموں کے لئے ہوانگ لین (Coptis teeta) بہت ہی اپیوگی دوا ہے اور پورا اثر کرتی ہے، خونی پیچش (Amoellic dysentry) کو اچھا کرنے کے لئے پائی توؤ وینگ (Anemone) بہت ہی کامیاب اوشدھی ہے، ملیریا کے بخار کو ٹھیک کرنے کے لئے چانگ شان (Orixa japonica) بڑھیا دوا ہے، کھانسی کے لئے سب سے اچھی دوا پائی مو (Fritillaria Verticillata) ہے، عورتوں کے خون کو روکنے کے لئے یی موتساؤ (Leonurus Sibricus) بہت لابھدایک ہے، رات کے پسینے کو روکنے کے لئے ہوانگ چی (Astragalus Reflexistipulus) بہت اچھی چیز ہے، پیٹ کے کیڑوں 'کدودانوں' کو صاف کرنے کے لئے کوچین پی (Melia Azedarath) لثانی ہے، بخار کو کم کرنے کے لئے چائی ہو (Bupleurum Chinensis) بہت کام کی ہے اور خون کے دباؤ یعنی بلڈپریشر کے علاج کے لئے تو چونگ (Eucommia Ulmoides) بہت مفید ثابت ہوتی ہے۔

بہت سی بیماریاں ہیں جن سے یوروپین ڈھنگ کے پڑھے ہوئے ڈاکٹر گھبرا جاتے ہیں اور پرانی چینی ویدیک ودیا کے جاننے والے اُن کا علاج بڑی آسانی کے ساتھ کرلیتے ہیں۔ مثال کے لئے انتڑیوں کی پرانی ریاحی سوجن (Chronic gastro-intestinal inflammation)، گردے کی پرانی سوجن (Chronic inflammation of the kidneys)، اندر کی کھانسی (Bronchitis)، گٹھیا کے کارن جوڑوں کی سوجن (Rheumatsia Arthritis)، آنکھ کی بیماری (Myositis)، اور نسوں کی بیماری (Neuritis)، یہ سب بیماریاں پچھم کے علاج کے طریقوں سے بہت ہی دھیرے دھیرے اور بہت ہی کم اچھی ہوتی ہیں، لیکن اگر پرانے چینی طریقوں سے اِن کا علاج کیا جاوے تو بہت جلدی ٹھیک ہو جاتی ہیں، خاصکر جب کہ دوا کے ساتھ ساتھ پرانے ڈھنگ کی سوئیوں سے نسوں کو بھی ٹھیک کردیا جاوے (Acupuncture)۔ یہ سوئیوں کا علاج بہت ہی آسان، سیدھا اور کارآمد ہے۔ ایک اور مثال لیجئے۔ پاخانے کے راستے سے خون جانا اور ناسور پڑ جانا (Haemorrhoids and Fistulae) اِن کا علاج پرانے چینی طریقوں سے حال میں بہت ہی کامیاب ثابت ہوا ہے۔ انتڑیوں کے نیچے کے حصے کی بیماریاں پرانی دواؤں سے بہت جلدی اچھی ہوتی ہیں۔ علاج کا ڈھنگ بھی بہت سیدھا سادہ ہے۔ اِس میں بہت

पेचीदा डाक्टरी औजारों और सामान की ज़रूरत नहीं पड़ती और न रोगी के रोज़ के काम काज में कोई फ़रक़ आता है.

लेकिन पुराने चीनी इलाज के तरीक़े में कुछ कमी भी है. उसका ज़ियादा ज़ोर तजरबे पर है, उसमें बाक़ायदा साइंसी सिद्धान्त की कमी है. अभी तक उसमें कीमियाई छानबीन और परख के पक्के तरीक़े नहीं हैं. इसका एक ख़ास कारण है. चीन में कोमिनटांग शासन के दिनों में उन दिनों की सरकार पुराने चीनी इलाज के तरीक़े को ही ग़ैर साइंसी और पिछड़ा हुआ समझती थी और उसे हिक़ारत से देखती थी. पर चीन की कम्युनिस्ट पार्टी अपने देश की पुरानी कलचरी विरासत की बड़ी क़द्र करती है. इसलिये वह पुरानी चीनी वैद्यक विद्या के अनुसार इलाज करने वालों को, जिन की संख्या लगभग तीन लाख है, देश के डाक्टरी मैदान में एक बहुत बड़ी शक्ति मानती है. कम्युनिस्ट पार्टी ने पुराने चीनी ढंग के डाक्टरों और नए पच्छिमी ढंग के डाक्टरों दोनों को यह हिदायत की कि वह दोनों मिलकर काम करें, एक दूसरे की मदद करें और मिलकर नई और पुरानी दवाओं आदि की खोज करें जिससे रोगों के इलाज की शक्तियां और अधिक मज़बूत हों और सब मिलकर देश की और अधिक सेवा कर सकें. जुलाई सन् 1954 में नई चीनी सरकार ने सब सरकारी जन स्वास्थ्य महकमों को यह हिदायतें भेजीं कि पुराने चीनी इलाज के तरीक़े के साथ यही नीति बरती जावे और इस पर पूरा पूरा अमल किया जावे. इस समय पुराने चीनी इलाज के तरीक़े के साइंसी स्तर को ऊँचा करने के लिये और उसमें आवश्यक सुधार करने के लिये पहला क़दम यह उठाया गया है कि एक चीनी मेडिकल रिसर्च अकादमी खोली जा रही है. चीनी वैद्यक विद्या की जो दूसरी खोज संस्थायें यानी रिसर्च इंसटीट्यूट हैं उन्हें बढ़ाया जा रहा है. शंघाई, कैन्टन, नानकिंग और चुंगकिंग में पुराने चीनी इलाज के तरीक़े के अस्पताल खोल दिये गये हैं. पेकिंग के बहुत से अस्पतालों में चीनी वैद्यक विद्या के जानकारों को रखकर उनसे सलाहें ली जाती हैं. कुछ अस्पतालों में पुराने ढंग से इलाज के अलग महकमे खोल दिये गए हैं. देश भर के सब मेडिकल कालिजों में पुरानी चीनी दवाओं और उनके बनाने के तरीक़ों में खोज की जा रही है और मेडिकल कालिजों की पढ़ाई की पुस्तकों में चीनी वैद्यक और चीनी दवाएं बनाने के तरीक़े शामिल किये जा रहे हैं. पुराने चीनी इलाज की बहुत सी अधिक महत्व की किताबें फिर से प्रकाशित की जा रही हैं और बहुत सी अभी की जायेंगी.

پیچیدہ ڈاکٹری اوزاروں اور سامان کی ضرورت نہیں پڑتی اور نہ روگی کے روز کے کام کاج میں کوئی فرق آتا ہے .

لیکن پرانے چینی علاج کے طریقہ میں کچھ کمی بھی ہے . اس کا زیادہ زور تجربے پر ہے' اس میں باقاعدہ سائنسی سدھانت کی کمی ہے . ابھی تک اُس میں کیمیائی چھان بین اور پرکھ کے پکے طریقے نہیں ھیں . اِس کا ایک خاص کارن ہے. چین میں کومنٹانگ شاسن کے دنوں میں اُن دنوں کی سرکار پرانے چینی علاج کے طریقہ کو ھی غیر سائنسی اور پچھڑا ھوا سمجھتی تھی اور اُسے حقارت سے دیکھتی تھی . پر چین کی کمیونسٹ پارٹی اپنے دیش کی پرانی کلچری وراثت کی بڑی قدر کرتی ھے . اس لئے وہ پرانی چینی ویدیک ودیا کے انوسار علاج کرنے والوں کو' جن کی سنکھیا لگ بھگ تین لاکھ ھے' دیش کے ڈاکٹری میدان میں ایک بہت بڑی شکتی مانتی ھے. کمیونسٹ پارٹی نے پرانے چینی ڈھنگ کے ڈاکٹروں اور نئے پچھمی ڈھنگ کے ڈاکٹروں دونوں کو یہ ھدایت کی کہ وہ دونوں ملکر کام کریں' ایک دوسرے کی مدد کریں اور ملکر نئی اور پرانی دواؤں آدی کی کھوج کریں جس سے روگوں کے علاج کی شکتیاں اور ادھک مضبوط ھوں اور سب ملکر دیش کی اور ادھک سیوا کرسکیں . جولائی سن 1954 میں نئی چینی سرکار نے سب سرکاری جن سواستھیہ محکموں کو یہ ھدایتیں بھیجیں کہ پرانے چینی علاج کے طریقہ کے ساتھ یہی نیتی برتی جاوے اور اس پر پورا پورا عمل کیا جاوے . اِس سمے پرانے چینی علاج کے طریقہ کے سائنسی استر کو اُونچا کرنے کے لئے اور اُس میں آوشیک سدھار کرنے کے لئے پہلا قدم یہ اُٹھایا گیا ھے کہ ایک چینی میڈیکل ریسرچ اکادمی کھولی جارھی ھے . چینی ویدیک ودیا کی جو دوسری کھوج سنستھانیں یعنی ریسرچ انسٹیٹیوٹ ھیں اُنھیں بڑھایا جا رہا ھے . شنگھائی' کینٹن' نانکنگ اور چنگ کنگ میں پرانے چینی علاج کے طریقے کے اسپتال کھول دیئے گئے ھیں . پیکنگ کے بہت سے اسپتالوں میں چینی ویدیک ودیا کے جانکاروں کو رکھکر اُن سے صلاحیں لی جاتی ھیں . کچھ اسپتالوں میں پرانے ڈھنگ سے علاج کے الگ محکمے کھول دیئے گئے ھیں . دیش بھر کے سب میڈیکل کالجوں میں پرانی چینی دواؤں اور اُن کے بنانے کے طریقوں میں کھوج کی جا رھی ھے اور میڈیکل کالجوں کی پڑھائی کی پستکوں میں چینی ویدیک اور چینی دوائیں بنانے کے طریقے شامل کئے جارھے ھیں . پرانے چینی علاج کی بہت سی ادھک مہتو کی کتابیں پھر سے پرکاشت کی جارھی ھیں اور بہت سی ابھی کی جائینگی .

(News Bulletin of the Embassy of the Peoples Republic of China, New Delhi Nov. 23, 1955.)

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

मुहम्मद साहब ने कहा:—"पिछले ज़माने में एक आदमी था. मौत का फ़रिश्ता उसकी जान लेने के लिये आया. फ़रिश्ते ने उससे पूछा—'क्या तुमने कभी नेक काम किया है?' उस आदमी ने जवाब दिया,—'मुझे नहीं मालूम.' फ़रिश्ते ने फिर कहा,—'सोच कर बताओ.' उस आदमी ने जवाब दिया,—'मुझे और कुछ नहीं याद सिवाय इसके कि मैं दुनिया में लोगों से व्यापार करता था, मेरे गाहकों में से जो ज़रा ख़ुशहाल थे उन्हें मैं छूट दे देता था कि वह अपनी सुविधा के अनुसार मेरी रक़म अदा करें और जो तकलीफ़ में होते थे उन्हें मैं बिलकुल माफ़ कर देता था.' इस पर अल्लाह ने उस आदमी को जन्नत में दाख़िल कर दिया."

—हुज़ैफ़ा और अबु मसऊद अलबद्री, बुख़ारी: मुसलिम.

मैं ने पैग़म्बर से पूछा,—"ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे इसलाम की एक बात ऐसी बता दीजिये कि फिर मुझे आप के बाद किसी और से कुछ पूछना न पड़े." रसूलने कहा:—"कहो कि मुझे अल्लाह में विश्वास है, और फिर नेकी की राह पर चलते रहो."

—सुफ़ियान बिन अब्दुल्ला अस्सक़फ़ी, मुसलिम.

एक आदमी ने आकर पूछा,—"ऐ अल्लाह के रसूल! इसलाम की सब से अच्छी बात क्या है?" मुहम्मद साहब ने जवाब दिया:—"यह कि भूकों को खाना खिलाओ और सब को सलाम करो, जिन्हें तुम जानते हो उन्हें भी और जिन्हें तुम नहीं जानते उन्हें भी."

—इब्न अमरू बिन अलआस, बुख़ारी: मुसलिम: नसाई.

मुहम्मद साहब ने कहा,—"हर मज़हब की एक ख़ास नेकी होती है, और इसलाम की ख़ास नेकी इनकिसार यानी नम्रता है."

—ज़ैद बिन तलहा, मालिक.

मुहम्मद साहब ने मुआज़ को यमन का गवरनर बनाकर भेजा. चलते वक़्त मुहम्मद साहब ने उससे पूछा:—"अगर कोई मामला तुम्हारे सामने आवेगा तो तुम उसका फ़ैसला कैसे करोगे?" मुआज़ ने जवाब दिया,—"मैं क़ुरान

محمد صاحب نے کہا :—"پچھلے زمانے میں ایک آدمی تھا . موت کا فرشتہ اُس کی جان لینے کے لئے آیا . فرشتے نے اُس سے پوچھا—'کیا تم نے کبھی کوئی نیک کام کیا ہے؟' اُس آدمی نے جواب دیا'—'مجھے نہیں معلوم. فرشتے نے پھر کہا— 'سوچکر بتاؤ .' 'اُس آدمی نے جواب دیا'—'مجھے اور کچھ نہیں یاد سوائے اِس کے کہ میں دنیامیں لوگوں سے بیوپار کرتا تھا' میرے گاہکوں میں سے جو ذرا خوش‌حال تھے اُنھیں میں چھوٹ دے دیتا تھا کہ وہ اپنی سویدھا کے انوسار میری رقم ادا کریں' اور جو تکلیف میں ہوتے تھے اُنھیں میں بالکل معاف کردیتا تھا .' اِس پر اللہ نے اس آدمی کو جنت میں داخل کردیا ."

—حذیفہ اور 'مسعودالبدری' بخاری : مسلم .

میں نے پیغمبر سے پوچھا'—"اے اللہ کے رسول ! مجھے اسلام کی ایک بات ایسی بتا دیجئے کہ پھر مجھے آپ کے بعد کسی اور سے کچھ پوچھنا نہ پڑے ." رسول نے کہا :—"کہو کہ مجھے اللہ میں وشواس ہے' اور پھر نیکی کی راہ پر چلتے رہو ."

—سفیان بن عبداللہ آلثقفی' مسلم .

ایک آدمی نے آکر پوچھا'—"اے اللہ کے رسول ! اسلام کی سب سے اچھی بات کیا ہے ؟" محمد صاحب نے جواب دیا :—"یہ کہ بھوکوں کو کھانا کھلاؤ اور سب کو سلام کرو' جنھیں تم جانتے ہو اُنھیں بھی اور جنھیں تم نہیں جانتے اُنھیں بھی ."

—ابن عمرو بن آلعاص' بخاری : مسلم : نسائی .

محمد صاحب نے کہا :—"ہر مذہب کی ایک خاص نیکی ہوتی ہے' اور اِسلام کی خاص نیکی اِنکسار یعنی نمرتاہے."

—زیدبن طلحہ' مالک .

محمد صاحب نے معاذ کو یمن کا گورنر بناکر بھیجا . چلتے وقت محمد صاحب نے اُس سے پوچھا :—"اگر کوئی معاملہ تمہارے سامنے آئیگا تو تم اُس کا فیصلہ کیسے کروگے ؟" 'معاذ نے جواب دیا'—"میں قرآن

के मुताबिक़ फ़ैसला करूँगा". मुहम्मद साहब ने फिर पूछा :—"लेकिन अगर तुम्हें क़ुरान में उस तरह की कोई बात न मिले ?" उस ने जवाब दिया,—"तब मैं रसूल की मिसाल को सामने रखकर उसके अनुसार फ़ैसला करूँगा." मुहम्मद साहब ने फिर पूछा :—"और अगर तुम्हें रसूल की मिसाल में भी कोई बात न मिले ?" उस ने जवाब दिया,—"तब मैं खुद अपनी समझ से काम लूँगा और मैं ग़लती नहीं खाऊँगा." इस पर मुहम्मद साहब ने शाबाशी देते हुए मुआज़ की कमर ठोकी.

—हारिस बिन अमरू, अबुदाऊद : तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"जो कोई लोगों के किसी मामले में भी उनका रक्षक या वली बनाया जाता है वह अगर किसी भी मुसलमान के लिये या किसी भी ऐसे आदमी के लिये जिसके साथ ज़्यादती हुई या किसी भी ऐसे आदमी के लिये जिसे उसकी मदद की ज़रूरत हो अपना दरवाज़ा बन्द कर लेता है, अल्लाह उस समय उसके लिये अपने रहम का दरवाज़ा बन्द कर देगा जब उसे अल्लाह की मदद की सबसे अधिक ज़रूरत होगी."

—अबुशमख़ अल अज़दी.

मुहम्मद साहब ने एक बार कहा :—"मैं केवल एक आदमी हूँ. तुम लोग अपने झगड़े मेरे सामने लाते हो. हो सकता है कि जिन दो आदमियों का झगड़ा मेरे सामने आता है उन में से एक अपनी तरफ़ की बात ज़्यादा अच्छी तरह मेरे सामने रख सके, और दूसरा अपनी बात उतनी अच्छी तरह न रख सके, और ऐसी हालत में मैं जो कुछ सुनूँ उसी के अनुसार फ़ैसला दे दूँ, लेकिन वह फ़ैसला ग़लत हो, असल में हक़ दूसरे का हो. ऐसी सूरत में जिसके हक़ में मैं ने फ़ैसला दिया है उसके हक़ में वह फ़ैसला दोज़ख़ की आग बन जायगा, इसलिये जो दोज़ख़ की आग खाना चाहे खाय और जो बचना चाहे उसे चाहिये कि मेरे फ़ैसला कर देने पर भी असली हक़दार के हक़ में अपना दावा छोड़ दे."

—उम्म सलमा, बुख़ारी : मुसलिम : तिरमिज़ी : अबुदाऊद : नसाई : मालिक.

मुहम्मद साहब ने लोगों को एक दिन यह क़िस्सा सुनाया :—"पिछले ज़माने में एक आदमी था. उसने किसी दूसरे आदमी से कुछ ज़मीन ख़रीदी. जब उसने ज़मीन को खोदा तो उसमें एक देग़ निकला जिसमें सोना भरा हुआ था. वह आदमी देग़ लेकर ज़मीन बेचने वाले के पास गया और उससे कहने लगा,—'यह लो अपना सोना, क्यों

کے مطابق فیصلہ کرونگا." محمد صاحب نے پھر پوچھا :—"لیکن اگر تمہیں قرآن میں اس طرح کی کوئی بات نہ ملے ؟" اس نے جواب دیا،—"تب میں رسول کی مثال کو سامنے رکھکر اس کے انوسار فیصلہ کرونگا." محمد صاحب نے پھر پوچھا :—"اور اگر تمہیں رسول کی مثال میں بھی کوئی بات نہ ملے ؟" اس نے جواب دیا،—"تب میں خود اپنی سمجھ سے کام لونگا اور میں غلطی نہیں کھاؤنگا." اس پر محمد صاحب نے شاباشی دیتے ہوئے معاذ کی کمر ٹھوکی ۔

—حارث بن عمرو، ابوداؤد : ترمذی ۔

محمد صاحب نے کہا :—"جو کوئی لوگوں کے کسی معاملے میں بھی اُن کا رکشک یا ولی بنایا جاتا ہے وہ اگر کسی بھی مسلمان کے لئے یا کسی بھی ایسے آدمی کے لئے جس کے ساتھ زیادتی ہوئی ہو یا کسی بھی ایسے آدمی کے لئے جسے اس کی مدد کی ضرورت ہو اپنا دروازہ بند کرلیتا ہے، اللہ اُس سمے اُس کے لئے اپنے رحم کا دروازہ بند کردیگا جب اُسے اللہ کی مدد کی سب سے ادھک ضرورت ہوگی ۔"

—ابوالشمخ الازدی ۔

محمد صاحب نے ایک بار کہا :—"میں کیول ایک آدمی ہوں ۔ تم لوگ اپنے جھگڑے میرے سامنے لاتے ہو ۔ ہوسکتا ہے کہ جن دو آدمیوں کا جھگڑا میرے سامنے آتا ہے اُن میں سے ایک اپنی طرف کی بات زیادہ اچھی طرح میرے سامنے رکھ سکے، اور دوسرا اپنی بات اُتنی اچھی طرح نہ رکھ سکے، اور ایسی حالت میں میں جو کچھ سنوں اُسی کے انوسار فیصلہ دے دوں، لیکن وہ فیصلہ غلط ہو، اصل میں حق دوسرے کا ہو. ایسی صورت میں جس کے حق میں میں نے فیصلہ دیا ہے اُس کے حق میں وہ فیصلہ دوزخ کی آگ بن جائیگا. اِس لئے جو دوزخ کی آگ کھانا چاہے کھائے اور جو بچنا چاہے اُسے چاہئے کہ میرے فیصلہ کردینے پر بھی اصلی حقدار کے حق میں اپنا دعویٰ چھوڑ دے ۔"

—اُم سلمہ، بخاری : مسلم : ترمذی : ابوداؤد : نسائی : مالک ۔

محمد صاحب نے لوگوں کو ایک دن یہ قصہ سنایا :—"پچھلے زمانے میں ایک آدمی تھا. اُس نے کسی دوسرے آدمی سے کچھ زمین خریدی. جب اُس نے زمین کو کھودا تو اُس میں ایک دیغ نکلا جس میں سونا بھرا ہوا تھا. وہ آدمی دیغ لیکر زمین بیچنے والے کے پاس گیا اور اُس سے کہنے لگا،—'یہ لو اپنا سونا، کیوں

कि मैं ने तुमसे केवल ज़मीन ख़रीदी है, तुम्हारा सोना नहीं ख़रीदा'. बेचने वाले ने जवाब दिया,—'मैंने तुम्हारे हाथ ज़मीन बेच दी है, उसमें जो कुछ है तुम्हारा है, मैं इसे नहीं ले सकता.' इस पर वह दोनों एक तीसरे आदमी के पास फ़ैसले के लिये गए. उस तीसरे ने उन से पूछा,—'क्या तुम्हारे कोई बच्चा है?' उनमें से एक ने जवाब दिया,—'मेरे एक लड़का है.' दूसरे ने कहा,—'मेरे एक लड़की है.' इसपर फ़ैसला करने वाले ने कहा,—'तब फिर उस लड़के की उस लड़की के साथ शादी करदो और यह धन उन दोनों पर ख़र्च करो और उन्हीं को दे दो.'"

—हम्माम बिन मुनब्बिह, बुख़ारी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"अल्लाह दयावान है और दया करने वालों को प्यार करता है."

—आयशा, मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"जिसके दिल में दया नहीं उसमें कोई गुण नहीं."

—जरीर, मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"अल्लाह जिस किसी घर के लोगों के दिलों में दया पैदा कर देता है, उन्हें वह अपनी बरकतें देता है. और जिन लोगों से दया करने की तौफ़ीक़ अल्लाह ले लेता है उन्हें वह अपनी बरकतों से भी महरूम कर देता है."

—आयशा, बेहक़ी.

एक दिन मुहम्मद साहब मसजिद में आए. उन्होंने देखा कि लोगों के दो गिरोह अलग अलग बैठे हुए हैं. मुहम्मद साहब दोनों के पास से निकले. उनमें से एक गिरोह बड़ी लगन के साथ अल्लाह को याद कर रहा था और दूसरे गिरोह में कुछ लोग दूसरों को पढ़ा रहे थे. यह देखकर मुहम्मद साहब ने कहा :—"यह दोनों गिरोह अच्छा काम कर रहे हैं, लेकिन इनमें से एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़कर है. जो गिरोह इतनी लगन के साथ अल्लाह को याद कर रहा है उन्हें अल्लाह चाहे तो अपनी बरकतें दे और न चाहे तो न दे. और दूसरा गिरोह एक दूसरे के इल्म और जानकारी को बढ़ा रहा है अनपढ़ों को पढ़ा रहा है. इसलिये यह लोग बढ़कर हैं. मैं भी केवल एक शिक्षक बना कर भेजा गया हूँ."

—अब्दुल्ला बिन अमरू, दारिमी.

अनुवादक—श्री मुजीब रिज़वी

کہ میں نے تم سے کیول زمین خریدی ہے، تمہارا سونا نہیں خریدا۔' بیچنے والے نے جواب دیا—'میں نے تمہارے ہاتھ زمین بیچ دی ہے، اس میں جو کچھ ہے تمہارا ہے، میں اسے نہیں لے سکتا۔' اِس پر وہ دونوں ایک تیسرے آدمی کے پاس فیصلے کے لئے گئے۔ اُس تیسرے نے اُن سے پوچھا، —'کیا تمہارے کوئی بچہ ہے؟' اُن میں سے ایک نے جواب دیا—'میرے ایک لڑکا ہے۔' دوسرے نے کہا—'میرے ایک لڑکی ہے۔' اس پر فیصلہ کرنے والے نے کہا—'تب پھر اُس لڑکے کی اُس لڑکی کے ساتھ شادی کردو اور یہ دھن اُن دونوں پر خرچ کرو اور اُنہیں کو دے دو۔'"

—ہمام بن منبہ، بخاری۔

محمد صاحب نے کہا :—"اللہ دیاوان ہے اور دیا کرنے والوں کو پیار کرتا ہے۔"

—عائشہ، مسلم۔

محمد صاحب نے کہا :—"جس کے دل میں دیا نہیں اُس میں کوئی گن نہیں۔"

—جریر، مسلم۔

محمد صاحب نے کہا :—"اللہ جس کسی گھر کے لوگوں کے دلوں میں دیا پیدا کردیتا ہے، اُنہیں وہ اپنی برکتیں دیتا ہے۔ اور جن لوگوں سے دیا کرنے کی توفیق اللہ لے لیتا ہے اُنہیں وہ اپنی برکتوں سے بھی محروم کردیتا ہے۔"

—عائشہ اور بیہقی۔

ایک دن محمد صاحب مسجد میں آئے۔ اُنہوں نے دیکھا کہ لوگوں کے دو گروہ الگ الگ بیٹھے ہوئے ہیں۔ محمد صاحب دونوں کے پاس سے نکلے۔ اُن میں سے ایک گروہ بڑی لگن کے ساتھ اللہ کو یاد کررہا تھا اور دوسرے گروہ میں کچھ لوگ دوسروں کو پڑھا رہے تھے۔ یہ دیکھکر محمد صاحب نے کہا :—"یہ دونوں گروہ اچھا کام کر رہے ہیں، لیکن اِن میں سے ایک گروہ دوسرے گروہ سے بڑھکر ہے۔ جو گروہ اتنی لگن کے ساتھ اللہ کو یاد کررہا ہے اُنہیں اللہ چاہے تو اپنی برکتیں دے اور نہ چاہے تو نہ دے۔ اور دوسرا گروہ ایک دوسرے کے علم اور جانکاری کو بڑھا رہا ہے اور انپڑھوں کو پڑھا رہا ہے۔ اِس لئے یہ لوگ بڑھکر ہیں۔ میں بھی کیول ایک شکشک بناکر بھیجا گیا ہوں۔"

—عبداللہ بن عمرو، دارمی۔

انوادک—شری مجیب رضوی۔

14 . 12 . '56

रूसी बच्चे

'तास' एजेन्सी नई दिल्ली से निकलने वाले "न्यूज़ ऐन्ड व्यूज़ फ़्राम दी सोवियत यूनियन" में भाई दुब्रोविन्सकी का एक छोटा सा सुन्दर लेख रूसी बच्चों की सब से बड़ी संस्था "किशोर लेनिनाइट्स" (Young Leninites) के बारे में छपा है.

बच्चों की इस तरह की संस्थाएं आजकल दुनिया के लगभग सब सभ्य देशों में मौजूद हैं. आम तौर पर इन्हें "यंग पायोनीयर्स" कहते हैं. रूस में यह संस्था सन् 1922 में क़ायम हुई थी और वहां "यंग लेनिनाइट्स" कहलाती है.

इस समय सोवियत रूस भर के अन्दर नौ बरस की उमर से लेकर चौदह बरस की उमर तक के डेढ़ करोड़ से ऊपर लड़के और लड़कियां इस संस्था के मेम्बर हैं.

संस्था के उद्देश्य ये हैं:—

(1) लड़कों और लड़कियों में अपने देश के लिये प्रेम पैदा करना;

(2) उनमें सब देशों की जनता के लिये आदर पैदा करना;

(3) उनमें हाथों पैरों से मेहनत मज़दूरी के लिये मान पैदा करना, और

(4) उनमें ज्ञान की चाह को बढ़ाना.

संस्था के सब मेम्बरों में चार गुन पैदा करने की कोशिश की जाती है:—(1) ईमानदारी, (2) शिस्त (डिस्सिपिल्न), (3) ऊंचे सिद्धान्त, और (4) सब के साथ भाई चारे का भाव.

नौ बरस से ऊपर उमर का किसी भी स्कूल का कोई भी लड़का या लड़की जो चाहे संस्था का मेम्बर बन सकता है. हर नए मेम्बर को अपने साथियों के सामने इस आशय की प्रतिज्ञा करनी पड़ती है:—

"मैं जी लगाकर पढ़ूँ लिखूंगा, स्कूल में और स्कूल के बाहर शिस्त का अच्छी तरह पालन करूँगा, अपने अध्यापकों और बड़ों का आदर करूँगा, सब के साथ मिठास और नम्रता का बरताव करूँगा, मेहनत करूँगा दूसरों की मेहनत का आदर करूँगा, जनता के माल और चीज़ों की रक्षा करूँगा, समाज के लिये लाभदायक कामों में हिस्सा लूँगा, अपने माँ बाप को और अपने बड़ों को मदद दूंगा, ईमानदार और सच्चा रहूंगा, अपने साथियों के सदा काम आऊंगा, अपने से छोटे बच्चों की मदद और खबरगीरी करूंगा, और खेल कूद और कसरत में सब के साथ शामिल रहूँगा."

روسی بچے

'تاس' ایجینسی نئی دلی سے نکلنے والے "نیوز اینڈ ویوز فرام دی سوویت یونین" میں بھائی دوبرووِنسکی کا ایک چھوٹا سا سندر لیکھ روسی بچوں کی سب سے بڑی سنستھا "کشور لیننائٹس" (Young Leninites) کے بارے میں چھپا ھے۔

بچوں کی اِس طرح کی سنستھائیں آجکل دنیا کے لگ بھگ سب سبھیہ دیشوں میں موجود ھیں۔ عام طور پر اِنھیں "ینگ پایونیرس" کہتے ھیں۔ روس میں یہ سنستھا سن 1922 میں قایم ھوئی تھی اور وھاں "ینگ لیننائٹس" کہلاتی ھے۔

اِس سمے سوویت روس بھر کے اندر نو برس کی عمر سے لیکر چودہ برس کی عمر تک کے ڈیڑھ کروڑ سے اوپر لڑکے اور لڑکیاں اِس سنستھا کے ممبر ھیں۔

سنستھا کے اُدیشیہ یہ ھیں :—

(1) لڑکوں اور لڑکیوں میں اپنے دیش کے لئے پریم پیدا کرنا؛

(2) اُن میں سب دیشوں کی جنتا کے لئے آدر پیدا کرنا؛

(3) اُن میں ھاتھوں پیروں سے محنت مزدوری کے لئے مان پیدا کرنا' اور

(4) اُن میں گیان کی چاہ کو بڑھانا۔

سنستھا کے سب ممبروں میں چار گن پیدا کرنے کی کوشش کی جاتی ھے :—(1) ایمانداری' (2) شست (ڈسپلن)' (3) اُونچے سدھانت' اور (4) سب کے ساتھ بھائی چارے کا بھاؤ۔

نو برس سے اوپر عمر کا کسی بھی اِسکول کا کوئی بھی لڑکا یا لڑکی جو چاھے سنستھا کا ممبر بن سکتا ھے۔ ھر نئے ممبر کو اپنے ساتھیوں کے سامنے اِس آشئے کی پرتگیا کرنی پڑتی ھے :—

"میں جی لگا کر پڑھوں لکھونگا' اِسکول میں اور اِسکول کے باھر شست کا اچھی طرح پالن کرونگا' اپنے ادھیاپکوں اور بڑوں کا آدر کرونگا' سب کے ساتھ مٹھاس اور نمرتا کا برتاؤ کرونگا' محنت کرونگا' دوسروں کی محنت کا آدر کرونگا' جنتا کے مال اور چیزوں کی رکشا کرونگا' سماج کے لئے لابھدایک کاموں میں حصہ لونگا' اپنے ماں باپ کو اور اپنے بڑوں کو مدد دونگا' ایماندار اور سچا رھونگا' اپنے ساتھیوں کے سدا کام آؤنگا' اپنے سے چھوٹے بچوں کی مدد اور خبرگیری کرونگا' اور کھیل کود اور کسرت میں سب کے ساتھ شامل رھونگا۔"

हर मेम्बर को गले में एक लाल रूमाल बांधना होता है और एक बैज लगाना होता है जिसपर एक लाल तारा बना रहता है और "हमेशा तैयार", ये शब्द लिखे होते हैं. यही संस्था का नारा है.

इस संस्था का मेम्बर बनना हर स्कूल के हर बच्चे के जीवन में एक बहुत बड़ी घटना समझी जाती है. यह पहली संस्था है जिसका कोई रूसी लड़का या लड़की मेम्बर बनता है. मेम्बर मिलकर ख़ुद अपने अपने दल का नेता और अपनी छोटी बड़ी कौन्सिलों के मेम्बर चुनते हैं.

संस्था की सब छोटी बड़ी बैठकों और जलसों में सब मेम्बर हर विषय पर आज़ादी के साथ बहसें करते हैं. ख़ुद अपने सब मामलों का फ़ैसला करते हैं. अपने दल और अपनी संस्था के मान का सब हर समय पूरा पूरा ख़याल रखते हैं. हर मेम्बर यह जानता है कि अगर वह कोई बुरा काम करेगा तो उसके साथी उसे बुरा कहेंगे. इस तरह समाजी ज़िम्मेवारी और जनता की राय की क़दर शुरू से बच्चों के दिलों में पैदा करदी जाती है.

बैठकों और जलसों में सब मेम्बर अपने साथियों की यानी एक दूसरे की पढ़ाई लिखाई और दूसरों के साथ व्यवहार की चरचा करते हैं. फ़र्ज़ कीजिये कोई लड़का या लड़की अपनी पढ़ाई में पीछे मालूम होती है. ऐसी सूरत में दूसरे उससे पूछते हैं—"क्या बात है? क्या तुम्हें कुछ कठिनाई मालूम होती है? या तुम सुस्त हो या परवाह नहीं करते? किसी 'किशोर लेमिनाइट' को सुस्त या बेपरवाह तो नहीं होना चाहिये. अगर तुम्हें कहीं कठिनाई मालूम होती है तो हम तुम्हें मदद देंगे." एक दूसरे की मदद करना संस्था का पवित्र नियम है. हर मेम्बर अपना फ़र्ज़ समझता है कि अपनी पढ़ाई में पिछड़े हुए साथी की मदद करे और जो कुछ ख़ुद जानता है वह दूसरों को सिखाए.

हर बच्चे को संस्था का मेम्बर बनने के दिन से ही इस तरह के छोटे छोटे काम सौंपे जाते हैं, जैसे मौसम, सर्दी, गरमी वग़ैरा को ध्यान से देखना, समझना और नोट करना, पाख़ाना और ग़ुसलख़ाना साफ़ करने वाले को या खाने के कमरे में परसने वाले को उसके काम में मदद देना, स्कूल की दीवार पर चिपकाए जाने वाले समाचार पत्र के सम्पादन में हाथ बटाना, इत्यादि. गरमियों में इस संस्था के मेम्बरों के अलग अलग कैम्प लगते हैं. उन कैम्पों में मेम्बरों को फूलों की क्यारियां बनानी होती हैं, खेलों के लिये मैदान ठीक करने पड़ते हैं, रसोई का सारा काम करना पड़ता है, वग़ैरा वग़ैरा. कभी कभी बच्चे मिल कर दूर दूर के सफ़र करते हैं. उन सफ़रों में उन्हें अपना सब काम ख़ुद देखना पड़ता है. उन्हें ख़ुद अपने बटन टांकने होते हैं, अपने बरतन साफ़ करने पड़ते हैं, अपने

ہر ممبر کو گلے میں ایک لال رومال باندھنا ہوتا ہے اور ایک بیج لگانا ہوتا ہے جس پر ایک لال تارا بنا رہتا ہے اور "ہمیشہ تیار" یہ شبد لکھے ہوتے ہیں۔ یہی سنستھا کا نعرہ ہے۔

اس سنستھا کا ممبر بننا ہر اسکول کے ہر بچے کے جیون میں ایک بہت بڑی گھٹنا سمجھی جاتی ہے۔ یہ پہلی سنستھا ہے جس کا کوئی روسی لڑکا یا لڑکی ممبر بنتا ہے۔ ممبر ملکر خود اپنے اپنے دل کا نیتا اور اپنی چھوٹی بڑی کونسلوں کے ممبر چنتے ہیں۔

سنستھا کی سب چھوٹی بڑی بیٹھکوں اور جلسوں میں سب ممبر ہر وشئے پر آزادی کے ساتھ بحثیں کرتے ہیں۔ خود اپنے سب معاملوں کا فیصلہ کرتے ہیں۔ اپنے دل اور اپنی سنستھا کے مان کا سب ہر سمے پورا پورا خیال رکھتے ہیں۔ ہر ممبر یہ جانتا ہے کہ اگر وہ کوئی برا کام کریگا تو اس کے ساتھی اسے برا کہیں گے۔ اس طرح سماجی ذمہ واری اور جنتا کی رائے کی قدر شروع سے بچوں کے دلوں میں پیدا کردی جاتی ہے۔

بیٹھکوں اور جلسوں میں سب ممبر اپنے ساتھیوں کی یعنی ایک دوسرے کی پڑھائی لکھائی اور دوسروں کے ساتھ ویوہار کی چرچا کرتے ہیں۔ فرض کیجئے کوئی لڑکا یا لڑکی اپنی پڑھائی میں پیچھے معلوم ہوتی ہے۔ ایسی صورت میں دوسرے اس سے پوچھتے ہیں—"کیا بات ہے؟ کیا تمہیں کچھ کٹھنائی معلوم ہوتی ہے؟ یا تم سست ہو یا پرواہ نہیں کرتے؟ کسی 'کشور لیننائٹ' کو سست یا بےپرواہ تو نہیں ہونا چاہئے۔ اگر تمہیں کٹھنائی معلوم ہوتی ہے تو ہم تمہیں مدد دینگے۔" ایک دوسرے کی مدد کرنا سنستھا کا پوتر نیم ہے۔ ہر ممبر اپنا فرض سمجھتا ہے کہ اپنی پڑھائی میں پچھڑے ہوئے ساتھی کی مدد کرے اور جو کچھ خود جانتا ہے وہ دوسروں کو سکھائے۔

ہر بچے کو سنستھا کا ممبر بننے کے دن سے ہی اس طرح کے چھوٹے چھوٹے کام سونپے جاتے ہیں، جیسے موسم، سردی، گرمی وغیرہ کو دھیان سے دیکھنا، سمجھنا اور نوٹ کرنا، پاخانہ اور غسل‌خانہ صاف کرنے والے کو یا کھانے کے کمرے میں پرسنے والے کو اس کے کام میں مدد دینا، اسکول کی دیوار پر چپکائے جانے والے سماچار پتر کے سمپادن میں ہاتھ بٹانا، اتیادی۔ گرمیوں میں اس سنستھا کے ممبروں کے الگ الگ کیمپ لگتے ہیں۔ ان کیمپوں میں ممبروں کو پھولوں کی کیاریاں بنانی ہوتی ہیں، کھیلوں کے لئے میدان ٹھیک کرنے پڑتے ہیں، رسوئی کا سارا کام کرنا پڑتا ہے وغیرہ وغیرہ۔ کبھی کبھی بچے ملکر دور دور کے سفر کرتے ہیں۔ ان سفروں میں انہیں اپنا سب کام خود دیکھنا پڑتا ہے۔ انہیں خود اپنے بٹن ٹانکنے ہوتے ہیں، اپنے برتن صاف کرنے پڑتے ہیں، اپنے

खिलौने ठीक करने होते हैं, संस्था में कोई लड़का या लड़की आराम-पसन्द या आवारा नहीं रह सकता.

संस्था के लगभग सब बड़े लड़के लड़कियां अपने से छोटे लड़कों और लड़कियों की बाज़ाब्ता क्लासें बनाकर या दल बनाकर उन्हें पढ़ाते हैं, छुट्टियों में या स्कूल के समय के बाद उनके लिये खेल कूद का प्रबन्ध करते हैं, उन्हें किताबें पढ़कर सुनाते हैं, कहानियां सुनाते हैं, और उन्हें स्कूल के पाठ समझने और याद करने में मदद देते हैं. इससे बड़े लड़कों लड़कियों का अपना लाभ भी होता है, छोटों में उनका मान बढ़ता है और उनका अपना ज्ञान भी अधिक पक्का होता है. संस्था में एक कहावत है—'हर 'लेनिना-इट दूसरों के लिये आदर्श (नमूना) होता है."

मेम्बरों की जगह जगह सभाएं होती हैं जिन्हें वह " मैं क्या करना जानता हूँ" कहते हैं. इन सभाओं में वह विद्वानों, साइन्सदानों, लेखकों, मिलजुल कर खेती करने वाले किसानों, कारीगरों और आदर्श मज़दूरों को बुलाते हैं, जो अपना अपना काम बच्चों को समझाते हैं, जिससे बच्चों में उत्साह और जानकारी दोनों बढ़ते है.

काम करने का शौक़ और काम की आदत तरह तरह से बच्चों में पैदा की जाती है. शुरू की क्लासों के बच्चे काग़ज़ और गत्ते के नमूने, कशीदे, खिलौने और मशीनें बनाते हैं, लकड़ी की चीजें बनाना कशीदे काढ़ना, खुदाई का काम, जाली बनाना वग़ैरा सीखते हैं. बड़े लड़के लड़कियां काग़ज़ या लकड़ी के हवाई जहाज़, रेडियो और टेलीविज़न बनाते हैं. बच्चों के अच्छे अच्छे कामों की हर साल जगह जगह बड़ी बड़ी नुमाइशें की जाती हैं.

रूस की कम्यूनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार दोनों बच्चों की तरफ़ सब से अधिक ध्यान देते हैं. हर शहर, हर क़सबे और लगभग हर बड़े गांव में "किशोर लेनिनाइटों" के अलग मकान होते हैं जहां तजरबेकार अध्यापक या बड़े लोग उन्हें तरह तरह की बातें सिखाते हैं, बच्चों की अपनी रेलें होती हैं, अपने थियेटर होते हैं, अपने पुस्तकालय होते हैं, अपने मैदान, पार्क और खेल-घर होते हैं. गरमियों की और जाड़े की छुट्टियों में देश भर में उन के अलग अलग खेल, टूरनामेन्ट और तरह तरह के जलसे होते हैं.

सोवियत रूस भर में लाखों नर नारी बड़े प्रेम और उल्लास के साथ उन दिनों को याद करते हैं जब वह स्वयं लाल रूमाल बांधकर और लाल तारे का बैज लगाकर फिरा और काम किया करते थे.

—अनुवादक श्री मुहम्मद हैदर

چھوٹے ٹھیک کرنے ہوتے ہیں' سنستھا میں کوئی لڑکا یا لڑکی آرام پسند یا آوارہ نہیں رہ سکتا۔

سنستھا کے لگ بھگ سب بڑے لڑکے لڑکیاں اپنے سے چھوٹے لڑکوں اور لڑکیوں کی باضابطہ کلاسیں بنا کر یا دل بنا کر انہیں پڑھاتے ہیں' چھٹیوں میں یا اسکول کے سمے کے بعد اُن کے لئے کھیل کود کا پربندھ کرتے ہیں' اُنہیں کتابیں پڑھکر سناتے ہیں' کہانیاں سناتے ہیں' اور انہیں اِسکول کے پاٹھ سمجھنے اور یاد کرنے میں مدد دیتے ہیں' اس سے بڑے لڑکوں لڑکیوں کا اپنا لابھ بھی ہوتا ہے' چھوٹوں میں اُن کا مان بڑھتا ہے اور اُن کا اپنا گیان بھی ادھک پکا ہوتا ہے۔ سنستھا میں ایک کہاوت ہے— 'ہر لیننائٹ دوسروں کے لئے آدرش (نمونہ) ہوتا ہے۔''

ممبروں کی جگہہ جگہہ سبھائیں ہوتی ہیں جنہیں وہ ''میں کیا کرنا جانتا ہوں'' کہتے ہیں۔ اِن سبھاؤں میں وہ ودوانوں' سائنسدانوں' لیکھکوں' مل جل کر کھیتی کرنے والے کسانوں' کاریگروں اور آدرش مزدوروں کو بلاتے ہیں' جو اپنا اپنا کام بچوں کو سمجھاتے ہیں' جس سے بچوں میں اُتساہ اور جانکاری دونوں بڑھتے ہیں۔

کام کرنے کا شوق اور کام کی عادت طرح طرح سے بچوں میں پیدا کی جاتی ہے۔ شروع کی کلاسوں کے بچے کاغذ اور گتے کے نمونے' کشیدے' کھلونے اور مشینیں بناتے ہیں' لکڑی کی چیزیں بنانا' کشیدے کاڑھنا' کھدائی کا کام' جالی بنانا وغیرہ سیکھتے ہیں۔ بڑے لڑکے لڑکیاں کاغذ یا لکڑی کے ہوائی جہاز' ریڈیو اور ٹیلیویژن بناتے ہیں۔ بچوں کے اچھے اچھے کاموں کی ہر سال جگہہ جگہہ بڑی بڑی نمائشیں کی جاتی ہیں۔

روس کی کمیونسٹ پارٹی اور سوویت سرکار دونوں بچوں کی طرف سب سے ادھک دھیان دیتے ہیں۔ ہر شہر' ہر قصبے اور لگ بھگ ہر بڑے گاؤں میں ''کشور لیننائٹوں'' کے الگ مکان ہوتے ہیں جہاں تجربہ کار ادھیاپک یا بڑے لوگ انہیں طرح طرح کی باتیں سکھاتے ہیں' بچوں کی اپنی ریلیں ہوتی ہیں' اپنے تھیٹرے ہوتے ہیں' اپنے پستکالیہ ہوتے ہیں' اپنے میدان' پارک اور کھیل۔گھر ہوتے ہیں۔ گرمیوں کی اور جاڑے کی چھٹیوں میں دیش بھر میں اُن کے الگ الگ کھیل' ٹورنامنٹ اور طرح طرح کے جلسے ہوتے ہیں۔

سوویت روس بھر میں لاکھوں نرناری بڑے پریم اور اُلاس کے ساتھ اُن دنوں کو یاد کرتے ہیں جب وہ سویم لال رومال باندھکر اور لال تارے کا بیج لگا کر پھرا اور کام کیا کرتے تھے۔

—انوادک شری محمد حیدر

नातन

जिओवानी बुकेरिओ

कैथे शहर में नातन नाम का एक बहुत बड़ा जमींदार रहता था. उसके पास बेशुमार धन-दौलत थी. पूरब-पश्चिम के जाने-आने वाले उसकी जमींदारी के पास से ही गुज़रते थे और उसके अपार वैभव को देखकर दंग रह जाते थे. दूर-दूर के नामी कारीगरों को बुलाकर उसने अपना एक महल बनवाया था, जिसे देख-देख कर लोग दाँतों तले उँगली दबाते थे. बाहरी सुन्दरता के अलावा ऐश और आरायश के ऐसे साधनों से उसने अपने महल को सजाया था कि दूर-दूर तक उसकी मिसाल का दूसरा महल नहीं मिलता था. सैकड़ों नौकर-चाकर उसके यहाँ काम करते थे. हज़ारों रुपये महीने मेहमानों की आवभगत में ख़र्च किए जाते थे. कहने का मतलब यह है कि ऐसी शान-शौक़त से बिरले आदमी ही रह सकते हैं.

नातन के दौलत-मन्द होने के साथ-साथ उसके चरित्र में एक ऐसी विशेषता भी थी, जिससे उसे यश और हर-दिल अज़ीज़ी भी हासिल हुई थी. उसके जैसे उदार आदमी ढूँढ़ने पर भी मुश्किल से ही मिलते थे. कोई भी किसी समय उसके यहाँ आजाए, ख़ाली हाथ लौटकर नहीं जाता था. ज़रूरतमन्दों को बड़ी उदारता से उसके यहाँ दान-दक्षिणा दी जाती थी. उनकी तक़लीफ़ों को दूर करने के लिए वह ख़ुद हमेशा तैयार रहता था.

इस उदारता का नतीजा यह हुआ कि दूर-दूर तक उसकी शोहरत फैलने लगी. उसकी जमींदारी से थोड़ी दूर पर रहने वाले मिथरीडन्स नामक एक नौजवान जमींदार के कानों में जब उसके नाम और काम की बड़ाई पहुँची तो उसके मन में नातन की तरफ़ हसद का भाव पैदा हो गया. मिथरीडन्स भी मामूली धनी नहीं था; रुपये पैसे की उसके पास भी काफ़ी इफ़रात थी. उसके मन में विचार आया कि क्या केवल नातन को ही इतना यश मिल सकता है, मुझे नहीं? और उसने भी लाखों रुपये ख़र्च करके नातन के जैसा ही एक महल तैयार करवा लिया. अब उसके यहाँ भी मेहमान आने लगे और उनका भरपूर स्वागत-सत्कार होने लगा. ज़रूरतमन्दों को दान-दक्षिणा भी ख़ूब मिलने लगी. मतलब यह कि वह हर प्रकार की उदारता में नातन से बराबरी करने की कोशिश करने लगा. महज़ बराबरी करने से ही उसे तसल्ली नहीं हुई, बल्कि उससे भी आगे

ناتن

جیووانی بوکیشیو

کیتھے شہر میں ناتن نام کا ایک بہت بڑا زمیندار رہتا تھا۔ اس کے پاس بےشمار دھن دولت تھی ۔ پورب پشچم کے جانے آنے والے اس کی زمینداری کے پاس سے ہی گذرتے تھے اور اس کے اپار ویبھو کو دیکھکر دنگ رہ جاتے تھے ۔ دور دور کے نامی کاریگروں کو بلاکر اس نے اپنا ایک محل بنوایا تھا' جسے دیکھ دیکھکر لوگ دانتوں تلے انگلی دباتے تھے ۔ باہری سندرتا کے علاوہ عیش اور آرایش کے ایسے سادھنوں سے اس نے اپنے محل کو سجایا تھا کہ دور دور تک اس کی مثال کا دوسرا محل نہیں ملتا تھا ۔ سیکڑوں نوکر چاکر اس کے یہاں کام کرتے تھے ۔ ہزاروں روپئے مہینے مہمانوں کی آؤبھگت میں خرچ کیلئے جاتے تھے ۔ کہنے کا مطلب یہ ہے کہ ایسی شان شوکت سے برلے آدمی ہی رہ سکتے ہیں ۔

ناتن کے دولتمند ہونے کے ساتھ ساتھ اس کے چرتر میں ایک ایسی وشیشتا بھی تھی' جس سے اسے یش اور ہردلعزیزی بھی حاصل ہوئی تھی ۔ اس کے جیسے اُدار آدمی ڈھونڈھنے پر بھی مشکل سے ہی ملتے تھے ۔ کوئی بھی کسی سمے اس کے یہاں آجائے' خالی ہاتھ لوٹکر نہیں جاتا تھا ۔ ضرورتمندوں کو بڑی اُدارتا سے اس کے یہاں دان دکشنا دی جاتی تھی ۔ ان کی تکلیفوں کو دور کرنے کے لئے وہ خود ہمیشہ تیار رہتا تھا ۔

اس اُدارتا کا نتیجہ یہ ہوا کہ دور دور تک اس کی شہرت پھیلنے لگی ۔ اس کی زمینداری سے تھوڑی دور پر رہنے والے متھریڈنس نامک ایک نوجوان کے کانوں میں جب اس کے نام اور کام کی بڑائی پہونچی تو اس کے من میں ناتن کی طرف حسد کا بھاؤ پیدا ہوگیا ۔ متھریڈنس بھی معمولی دھنی نہیں تھا' روپئے پیسے کی اس کے پاس بھی کافی اِفراط تھی ۔ اس کے من میں وچار آیا کہ کیا کیول ناتن کو ہی اِتنا یش مل سکتا ہے' مجھے نہیں ؟ اور اس نے بھی لاکھوں روپئے خرچ کرکے ناتن کے جیسا ہی ایک محل تیار کروا لیا ۔ اب اس کے یہاں بھی مہمان آنے لگے اور ان کا بھرپور سواگت ستکار ہونے لگا ۔ ضرورتمندوں کو دان دکشنا بھی خوب ملنے لگی ۔ مطلب یہ کہ وہ ہر پرکار کی اُدارتا میں ناتن سے برابری کرنے کی کوشش کرنے لگا ۔ محض برابری کرنے سے ہی اسے تسلی نہیں ہوئی' بلکہ اس سے بھی آگے

बढ़कर लोगों पर अपना सिक्का क़ायम करने के स्वप्न भी वह देखने लगा.

एक दिन ऐसा हुआ कि जब वह अपने महल के दरबार हाल में अकेला बैठा था तो एक बुढ़िया वहाँ आई और भीख माँगने लगी. उसे जो कुछ चाहिए था फ़ौरन दे दिया गया. वहाँ से हटकर वही बुढ़िया दूसरे दरवाज़े पर पहुँची और भीख माँगने लगी. वहाँ से भी उसे जो कुछ मिलना चाहिए था, मिल गया. इस प्रकार एक को छोड़कर दूसरे पर, दूसरे से हट कर तीसरे पर पहुंचती हुई वह बुढ़िया दरबार हाल के बारह दरवाज़ों पर पहुँची और हर दरवाज़े से भीख में कुछ न कुछ हासिल करती रही. मिथरीडन्स उस बुढ़िया को ध्यान से देख रहा था. जब वह बारहवें दरवाज़े से हटकर तेरहवें पर भीख माँगने आई तो मिथरीडन्स से कुछ कहे बिना न रहा गया. बोला—"ऐ, माई ! अब तो तुम तंग करने लगीं." लेकिन उसने इस बार भी उसे भीख दे दी. बुढ़िया को मिथरीडन्स के ये लफ़्ज़ पसन्द नहीं आये और वह वहीं बड़बड़ाने लगी—"नातन की तो बात ही और है. वैसी उदारता है किस में ! हाँ उसके महल के चौंतीस दरवाज़ों पर मैं गयी, लेकिन किसी भी दरवाज़े पर किसी ने भी मुझे भीख देते वक़्त एक शब्द भी नहीं कहा. लेकिन यहाँ तो बारहवें दरवाज़े पर ही मुझे रोक दिया गया." और वह फिर कभी मिथरीडन्स के दरवाज़े पर भीख माँगने नहीं आई.

इस घटना से मिथरीडन्स का मन खट्टा हो गया और वह सोचने लगा कि इतने किए-करने पर भी मेरी क़िस्मत में नातन की सी लोक-प्रियता नहीं बदी. फिर कुछ देर बाद ही उसके मन में नातन के प्रति हसद का भाव पैदा हो गया और उसने तय किया कि जब तक मैं नातन को इस संसार से विदा न कर दूँगा, मुझे मेरे परिश्रम का पुरस्कार—यश और लोक प्रियता—प्राप्त नहीं हो सकती. वह बड़े जोश में उठा और नातन को मौत के घाट उतार देने के मज़बूत इरादे के साथ वह उसकी ज़मींदारी की ओर चल पड़ा. नातन के महल के पास पहुँच कर उसने अपने एक दो साथियों को, जो उसके साथ आए थे, विदा कर दिया और वह नातन से मिलने के लिए उसके महल की ओर बढ़ा. महल के पास शाम के वक़्त, बूढ़ा नातन बहुत साधारण लिबास में अकेला टहल रहा था. मिथरीडन्स ने उसे पहले कभी नहीं देखा था. इसलिए उसे महल का कोई नौकर समझ कर उसने पूछा कि नातन का महल कहाँ है ? नातन यह न बताते हुए कि वह ख़ुद ही नातन है, मिथरीडन्स का स्वागत किया और उससे कहा कि वह उसे, जहाँ वह जाना चाहता है, ख़ुशी से पहुंचा देगा. मिथरीडन्स ने उसके प्रति गहरी कृतज्ञता प्रकट की और यह भी चाहा कि वह उसके लिए ऐसा इन्तज़ाम करने की कृपा करे जिससे नातन

بڑھکر لوگوں پر اپنا سکہ قایم کرنے کے سپن بھی وہ دیکھنے لگا ۔

ایک دن ایسا ہوا کہ جب وہ اپنے محل کے دربار ہال میں اکیلا بیٹھا تھا تو ایک بڑھیا وہاں آئی اور بھیک مانگنے لگی ۔ اُسے جو کچھ چاہئے تھا فوراً دے دیا گیا۔ وہاں سے ہٹ‌کر وہی بڑھیا دوسرے دروازے پر پہونچی اور بھیک مانگنے لگی ۔ وہاں سے بھی اُسے جو کچھ ملنا چاہئے تھا' مل گیا ۔ اِس پرکار ایک کو چھوڑکر دوسرے پر' دوسرے سے ہٹ‌کر تیسرے پر پہونچتی ہوئی وہ بڑھیا دربار ہال کے بارہ دروازوں پر پہونچی اور ہر دروازے سے بھیک میں کچھ نہ کچھ حاصل کرتی رہی ۔ متھریڈنس اُس بڑھیا کو دھیان سے دیکھ رہا تھا ۔ جب وہ بارہویں دروازے سے ہٹ‌کر تیرھویں پر بھیک مانگنے آئی تو متھریڈنس سے کچھ کہے بنا نہ رہا گیا ۔ بولا—"اے' مائی ! اب تو تم تنگ کرنے لگیں ۔" لیکن اُس نے اِس بار بھی اُسے بھیک دے دی ۔ بڑھیا کو متھریڈنس کے یہ لفظ پسند نہیں آئے اور وہ وہیں بڑبڑانے لگی—"ناتن کی تو بات ہی اور ہے۔ ویسی اُدارتا ہے کس میں ! ہاں ؟ اُس کے محل کے چونتیس دروازوں پر میں گئی' لیکن کسی بھی دروازے پر کسی نے بھی مجھے بھیک دیتے وقت ایک شبد بھی نہیں کہا ۔ لیکن یہاں تو بارھویں دروازے پر ہی مجھے روک دیا گیا ۔" اور وہ پھر کبھی متھریڈنس کے دروازے پر بھیک مانگنے نہیں آئی ۔

اِس گھٹنا سے متھریڈنس کا من کھٹا ہوگیا اور وہ سوچنے لگا کہ اِتنے کئے کرنے پر بھی میری قسمت میں ناتن کی سی لوک پرئیتا نہیں بدی ۔ پھر کچھ دیر بعد ہی اُس کے من میں ناتن کے پرتی حسد کا بھاؤ پیدا ہوگیا اور اُس نے طے کیا کہ جب تک میں ناتن کو اِس سنسار سے بدا نہ کردونگا' مجھے میرے پریشرم کا پورسکار—یش اور لوک پرئیتا—پراپت نہیں ہوسکتی۔ وہ بڑے جوش میں اُٹھا' اور ناتن کو موت کے گھاٹ اُتار دینے کے مضبوط اِرادے کے ساتھ وہ اُس کی زمینداری کی اور چل پڑا. ناتن کے محل کے پاس پہونچ‌کر اُس نے اپنے ایک دو ساتھیوں کو' جو اُس کے ساتھ آئے تھے' بدا کردیا اور خود ناتن سے ملنے کے لئے اُس کے محل کی اور بڑھا ۔ محل کے پاس شام کے وقت' بوڑھا ناتن بہت سادھارن لباس میں اکیلا ٹہل رہا تھا ۔ متھریڈنس نے اُسے پہلے کبھی نہیں دیکھا تھا ۔ اِس لئے اُسے محل کا کوئی نوکر سمجھ‌کر اُس نے پوچھا کہ ناتن کا محل کہاں ہے ؟ ناتن نے یہ نہ بتائے ہوئے کہ وہ خود ہی ناتن ہے' متھریڈنس کا سواگت کیا اور اُس سے کہا کہ وہ اُسے' جہاں وہ جانا چاہتا ہے' خوشی سے پہونچا دیگا ۔ متھریڈنس نے اُس کے پرتی گہری کرتگیتا پرکٹ کی اور یہ بھی چاہا کہ وہ اُس کے لئے ایسا اِنتظام کرنے کی کرپا کرے جس سے ناتن

उसे देख नहीं सके और न उसके बारे में कुछ जान सके. नातन ने कोई शंका अथवा ताज्जुब ज़ाहिर किए बिना अपने सरल स्वभाव से उसे वचन दे दिया कि जैसा वह चाहता है, वैसा ही इन्तज़ाम कर दिया जायगा. इसके बाद वह उसे महल के अन्दर ले गया. महल में पहुँचते ही उसने अपने नौकर-चाकरों से कह दिया कि कोई इस अजनबी को यह न बताए कि नातन कौन है.

महल के एक बड़े शानदार कमरे में मिथरीडन्स को ठहराया गया और नातन ख़ुद अपने को गुप्त रख कर उसकी मेहमाँ नवाज़ी में लग गया. मिथरीडन्स के बहुत पूछने पर उसने केवल अपना यह परिचय दिया कि वह नातन का एक बहुत पुराना नौकर है और उसी की सेवा करते-करते वह बूढ़ा हो चला है, लेकिन नातन ने उसकी सेवाओं के बदले उसे अब तक विशेष तरक़्क़ी नहीं दी. लोग-बाग भले ही नातन के गुणों का बखान करें, लेकिन उसके प्रति उसकी कोई श्रद्धा नहीं है. मिथरीडन्स इस बात से बेहद प्रसन्न हुआ. उसने समझ लिया कि जिस काम के लिए वह यहाँ आया है, उसमें इस व्यक्ति से काफ़ी सहायता मिलेगी. एक दो दिन बाद जब उन दोनों में काफ़ी घनिष्ठता हो गई तो नातन ने भी मिथरीडन्स से पूछा आप कौन हैं और किस ग़रज़ से यहाँ आये हैं ? मिथरीडन्स ने उसे एतबार के लायक़ समझ अपना पूरा परिचय देकर अपने आने का मक़सद बता दिया और कह दिया कि इस बात को वह गुप्त रखे और यथा शक्ति उसकी सहायता भी करे. नातन उसके उद्देश्य को जानकर पहले तो कुछ चकराया लेकिन शीघ्र ही सम्भल कर बोला—"बेटा मिथरीडन्स, तुम एक बड़े बाप के बेटे हो और मुझे आशा है कि तुम कोई ऐसा काम न करोगे जिसमें तुम्हें नीचा देखना पड़े. नातन के प्रति तुम्हारा हसद एक सात्विक हसद है. जिस उदारता को तुमने अपना उद्देश्य बनाया है उसका मैं प्रशंसक हूँ. यदि दूसरे लोग भी तुम्हारी ही तरह, उदारता की उदारता से होड़ बदना, शुरू कर दें तो इस दुखी दुनिया को बड़ी राहत मिलेगी. तुम बेफ़िक्र रहो, तुम्हारा भेद किसी पर ज़ाहिर नहीं होगा. और हाँ, रही नातन को समाप्त करने की बात, सो वह तो बूढ़ा आदमी है. सुबह के वक़्त यहाँ से आधा मील दूर पर एक बग़ीचे में वह घूमने जाता है. तुम किसी दिन वहाँ चुपके से पहुँचकर मज़े में उसका ख़ात्मा कर सकते हो. लेकिन उसका क़त्ल जिस रास्ते से जाओ उसी से मत लौटना. पूरब की ओर एक दूसरा सुरक्षित रास्ता है वहाँ से अपने स्थान को खिसक जाना." मिथरीडन्स उसकी बात से बहुत प्रसन्न हुआ और उसे धन्यवाद देकर अपना प्रोग्राम बनाने में जुट गया.

दूसरे दिन तड़के नातन उठा और बिना किसी संशय के मिथरीडन्स की दी हुई सूचना के अनुसार बग़ीचे में

اسے دیکھ نہیں سکے اور نہ اس کے بارےمیں کچھ جان سکے۔ ناتن نے کوئی شنکا اتھوا تعجب ظاہر کئے بنا اپنے سرل سوبھاؤ سے اسے وچن دے دیا کہ جیسا وہ چاھتا ھے' ویسا ھی اِنتظام کردیا جائیگا ۔ اِس کے بعد وہ اسے محل کے اندر لے گیا ۔ محل میں پہونچتے ھی اس نے اپنے نوکر چاکروں سے کہدیا کہ کوئی اِس اجنبی کو یہ نہ بتائے کہ ناتن کون ھے ۔

محل کے ایک بڑے شاندار کمرے میں متھریڈنس کو ٹھہرایا گیا اور ناتن خود اپنے کو گپت رکھکر اُس کی مہماں نوازی میں لگ گیا ۔ متھریڈنس کے بہت پوچھنے پر اُس نے کیول اپنا یہ پریچے دیا کہ وہ ناتن کا ایک بہت پرانا نوکر ھے اور اُسی کی سیوا کرتے کرتے وہ بوڑھا ھو چلا ھے' لیکن ناتن نے اُس کی سیواؤں کے بدلے اُسے اب تک وشیش ترقی نہیں دی ۔ لوگ باگ بھلے ھی ناتن کے گنوں کا بکھان کریں' لیکن اُس کے پرتی اُس کی کوئی شردھا نہیں ھے ۔ متھریڈنس اس بات سے بےحد پرسن ھوا. اُس نے سمجھ لیا کہ جس کام کے لئے وہ یہاں آیا ھے' اُس میں اِس ویکتی سے کافی سہائتا ملیگی ۔ ایک دو دن بعد جب اُن دونوں میں کافی گھنشٹتا ھوگئی تو ناتن نے بھی متھریڈنس سے پوچھا آپ کون ھیں اور کس غرض سے یہاں آئے ھیں ؟ متھریڈنس نے اُسے اعتبار کے لایق سمجھ اپنا پورا پریچے دیکر اپنے آنے کا مقصد بتا دیا اور کہہ دیا کہ اِس بات کو وہ گپت رکھے اور یتھا شکتی اُس کی سہائتا بھی کرے ۔ ناتن اُس کے اُدیشیہ کو جان کر پہلے تو کچھ چکرایا لیکن شیگرہ ھی سنبھل کر بولا—"بیٹا متھریڈنس' تم ایک بڑے باپ کے بیٹے ھو اور مجھے آشا ھے کہ تم کوئی ایسا کام نہ کرو گے جس میں تمہیں نیچا دیکھنا پڑے ۔ ناتن کے پرتی تمہارا حسد ایک ساتوک حسد ھے ۔ جس اُدارتا کو تم نے اپنا اُدیشیہ بنایا ھے اُس کا میں پرشنسک ھوں ۔ یدی دوسرے لوگ بھی تمہاری ھی طرح' اُدارتا کی اُدارتا سے ھوڑ بدنا' شروع کر دیں تو اِس دکھی دنیا کو بڑی راحت ملیگی ۔ تم بے فکر رھو' تمہارا بھید کسی پر ظاہر نہیں ھوگا ۔ اور ھاں' رھی ناتن کو سماپت کرنے کی بات' سو وہ تو بوڑھا آدمی ھے ۔ صبح کے وقت یہاں سے آدھا میل دور پر ایک بغیچے میں وہ گھومنے جاتا ھے ۔ تم کسی دن وھاں چپکے سے پہونچ کر مزے میں اُس کا خاتمہ کر سکتے ھو ۔ لیکن اُس کا قتل کرکے' جس راستے سے جاؤ اُسی سے مت لوٹنا ۔ پورب کی اور ایک دوسرا سورکشت راستہ ھے وھاں سے اپنے استھان کو کھسک جانا ۔" متھریڈنس اُس کی بات سے بہت پرسن ھوا اور اُسے دھنیواد دیکر اپنا پروگرام بنانے میں جٹ گیا ۔

دوسرے دن تڑکے ناتن اُٹھا اور بنا کسی سنشئے کے متھریڈنس کی دی ھوئی سوچنا کے انوسار بغیچے میں

मुझसे कहा गया. उधर मिथरीडेट्स भी कमर से तलवार बाँध, घोड़े पर चढ़कर नियत स्थान के लिये चल दिया. वहाँ पहुँच कर उसने कुछ दूर से देखा कि जरूर कोई आदमी टहल रहा है और उसे यह निश्चय हो गया कि यह नातन ही है. उसके पास पहुँच कर उसके दिल में आया कि सपाटे से तलवार का हाथ मारकर फ़ौरन इसका काम तमाम करने से पहले इसे सावधान करूँ, जरा सुनूँ तो सही कि उदारता का दम भरने वाला यह आदमी अब क्या कहता है. फलत: उसने बड़ी उद्दंड वाणी में नातन के सिर पर बँधी हुई पगड़ी उछालते हुए कहा—"रे, बुड्ढे, देख तेरा अन्त अब आ गया!"

बूढ़े नातन ने केवल इतना ही कहा—"तो क्या हुआ, यह तो मेरे भाग्य में ही लिखा हुआ था." और वह चुप हो गया.

मिथरीडेट्स ने जब उसकी बोली सुनी और उसके चेहरे पर निगाह दौड़ाई तो उसका दिल धक से रह गया—"जिस आदमी से पहले-पहल मेरी भेंट हुई, जिसने इतनी सहृदयता के साथ मेरा स्वागत-सत्कार किया और जिसने मेरे रहस्य को गुप्त रखकर मुझे अपने काम को पूरा करने के लिए तरकीब बताई, क्या यह वही आदमी नहीं है? क्या यह स्वयं नातन नहीं है? और मैं इसी का वध करने यहाँ आया हूँ!"

उसके हाथ से तलवार गिर पड़ी, घोड़े की लगाम छूट गई और स्वयं अत्यन्त लज्जित होकर नातन के चरणों पर आ गिरा और रोते-रोते बोला—"पिता, मुझसे बड़ा अपराध हुआ है. मुझे सजा दो. तुम्हारी उदारता का सच्चा परिचय मुझे मिल गया. आज न मालूम मुझसे क्या अनर्थ हो जाता. ईर्ष्या ने मेरी आँखें बन्द करदी थीं, आज वे खुल गयीं. मुझे क्षमा करदो."

नातन ने उसे बड़े प्रेम से उठाया और कहा—"बेटा, इसमें क्षमा की कोई बात नहीं. जिस काम के लिए तुम यहाँ आए हो, वह नफ़रत से प्रेरित नहीं है. वह तो तुम्हारी सात्विक ईर्ष्या से प्रेरित है. अच्छे काम में अपने मुख़ालिफ़ को हराने का निश्चय कोई बुरा निश्चय नहीं है. तुम्हारे नाम और काम की बड़ाई मैंने सुनी है. भगवान ने तुम्हें धन दौलत दी है, तुम उसका सदुपयोग कर रहे हो, कंजूसों की तरह उसे गाड़कर नहीं रख रहे. मुझे इससे बड़ी प्रसन्नता होती है. अच्छे काम में दूसरों से बाजी मारने और ज्यादा से ज्यादा नाम हासिल करने की नीयत से यदि तुम मेरा क़त्ल करो तो मुझे कोई दुःख नहीं होगा."

मिथरीडेट्स को अपने ऊपर बड़ी ग्लानि हुई, लेकिन नातन के प्रेम भरे शब्दों से उसे कुछ सिर उठाने की हिम्मत हुई. उसने कहा—"मेरे पिता, मुझे आश्चर्य इस

مجھے بتا دیا گیا. اُدھر متھریڈیٹس بھی کمر سے تلوار باندھ' گھوڑے پر چڑھ کر نیت استھان کے لئے چل دیا. وہاں پہونچکر اُس نے کچھ دور سے دیکھا کہ ضرور کوئی آدمی ٹہل رہا ہے اور اُسے یہ نشچئے ہو گیا کہ یہ ناتن ہی ہے . اُس کے پاس پہونچکر اُس کے دل میں آیا کہ سپاٹے سے تلوار کا ہاتھ مار کر فوراً اِس کا کام تمام کرنے سے پہلے اِسے ساودھان کروں' ذرا سنوں تو سہی کہ اُدارتا کا دم بھرنے والا یہ آدمی اب کیا کہتا ہے . پھلتہ اُس نے بڑی اُدھنڈوانی میں ناتن کے سر پر بندھی ہوئی پگڑی اُچھالتے ہوئے کہا—"اے بڈھے' دیکھ تیرا انت اب آ گیا!"

بوڑھے ناتن نے کیول اِتنا ہی کہا—"تو کیا ہوا' یہ تو میرے بھاگیہ میں ہی لکھا ہوا تھا" . اور وہ چپ ہو گیا .

متھریڈیٹس نے جب اُس کی بولی سنی اور اُس کے چہرے پر نگاہ دوڑائی تو اُس کا دل دھک سے رہ گیا—"جس آدمی سے پہل پہلی میری بھینٹ ہوئی' جسنے اِتنی سہردئیتا کے ساتھ میرا سواگت ستکار کیا اور جسنے میرے رہسیہ کو گپت رکھ کر مجھے اپنے کام کو پورا کرنے کے لئے ترکیب بتائی' کیا یہ وہی آدمی نہیں ہے ؟ کیا یہ سویم ناتن نہیں ہے ؟ اور میں اِسی کا بدھ کرنے یہاں آیا ہوں !"

اُس کے ہاتھ سے تلوار گر پڑی' گھوڑے کی لگام چھوٹ گئی اور سویم اتینت لجت ہو کر ناتن کے چرنوں پر آ گرا اور روتے روتے بولا—" پتا' مجھ سے بڑا اپرادھ ہوا ہے . مجھے سزا دو . تمہاری اُدارتا کا سچا پریچے مجھے مل گیا . آج نہ معلوم مجھ سے کیا انرتھ ہو جاتا . ایرشیا نے میری آنکھیں بند کر دی تھیں' آج وے کھل گئیں . مجھے چھما کردو ."

ناتن نے اُسے بڑے پریم سے اُٹھایا اور کہا—"بیٹا' اِس میں چھما کی کوئی بات نہیں . جس کام کے لئے تم یہاں آئے ہو' وہ نفرت سے پریرت نہیں ہے . وہ تو تمہاری ساتوک اِیرشیا سے پریرت ہے . اچھے کام میں اپنے مخالف کو ہرانے کا نشچئے کوئی برا نشچئے نہیں ہے . تمہارے نام اور کام کی بڑائی میں نے سنی ہے . بھگوان نے تمہیں دھن دولت دی ہے' تم اُس کا سدپیوگ کر رہے ہو' کنجوسوں کی طرح اُسے گاڑ کر نہیں رکھ رہے . مجھے اِس سے بڑی پرسنتا ہوتی ہے . اچھے کام میں دوسروں سے بازی مارنے اور زیادہ سے زیادہ نام حاصل کرنے کی نیت سے یدی تم میرا قتل کرو تو مجھے کوئی دکھ نہیں ہوگا ."

متھریڈیٹس کو اپنے اوپر بڑی گلانی ہوئی' لیکن ناتن کے پریم بھرے شبدوں سے اُسے کچھ سر اُٹھانے کی ہمت ہوئی . اُس نے کہا—"میرے پتا' مجھے آشچریہ اِس

बात से है कि आपने मेरे बुरे विचार को जानते हुए भी, किस प्रकार अपने आप को मेरे हाथों क़त्ल करने के लिए सौंप दिया ?"

नातन ने कहा—"बेटा, इसमें आश्चर्य की क्या बात है. जो कोई भी मेरे पास आता है, मैं यथाशक्ति उसका मनोरथ पूरा करने की चेष्टा करता हूँ. जब तुम मेरे पास आए तो तुम्हें बिना तुम्हारी इच्छा पूरा किए मैं कैसे जाने देता. यदि दूसरे की प्रसन्नता के लिए मुझे अपने प्राण भी देने पड़ें तो पीछे नहीं हटूँगा. और फिर मैं तो अब बूढ़ा हुआ. अस्सी साल से ज़िन्दगी की गाड़ी खींचता आ रहा हूँ. तुम मेरे प्राण लेलो तो मुझे इससे छुटकारा ही मिलेगा. जो आया है वह जाएगा ही. मैं दो-चार साल और ज़िन्दा रहा आया तो क्या बनता बिगड़ता है. काम तो मेरा ख़त्म हो गया. अब ज़िन्दा रहने का कोई मोह नहीं है. मैं कहता हूँ तुम मेरे प्राण लेलो, इसमें तुम्हें लाभ ही होगा और मुझे प्रसन्नता होगी और सन्तोष रहेगा कि अपने प्राण देकर भी मैं दूसरे की इच्छा पूर्ति कर सका."

मिथरीडन्स लज्जा और ग्लानि से और भी गड़ गया और बोला—"नहीं, नहीं ! अब यह नहीं हो सकता. इतने मूल्यवान प्राणों को लेने की हिम्मत मेरी नहीं ! आप की जीवन-लीला समाप्त करने के बजाय मैं तो यही चाहूँगा कि आप युग-युगों तक जीवित रहें."

इस पर नातन ने दूसरा प्रस्ताव उसके सामने रखा—"मैं चाहता हूँ अब तुम मेरे महल में ही रहो और नातन के नाम से प्रसिद्ध हो जाओ. अगर तुम चाहोगे तो मैं तुम्हारी जमींदारी में चला जाऊँगा और अपना नाम मिथरीडन्स रख लूँगा, इससे भी तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी."

मिथरीडन्स ने उत्तर दिया—"नहीं यह भी मेरे बूते की बात नहीं. आपकी उदारता की परम्परा को मैं आपकी ही तरह चालू नहीं रख सकूँगा और न आपके पद और प्रतिष्ठा को ही क़ायम रखने की मुझमें शक्ति है. यह काम मुझ जैसे नाचीज़ आदमी से पूरा नहीं हो सकता. मुझे तो आप क्षमा करें."

नातन के बहुत कहने सुनने पर भी जब मिथरीडन्स ने उसका प्रस्ताव मंजूर न किया तो वे दोनों महल लौट आए. मिथरीडन्स ने नातन के साथ कुछ दिन और बिताए और उसके अनुभवों से लाभ उठाया, फिर वह अपने घर चला आया. अब वह समझ गया था कि सच्ची उदारता किसे कहते हैं.

بات سے ھے کہ آپنے میرے برے وچار کو جانتے ھوئے بھی، کس پرکار اپنے آپ کو میرے ھاتھوں قتل کرنے کے لئے سونپ دیا ؟"

ناتن نے کہا—"بیٹا، اِس میں آشچریہ کی کیا بات ھے. جو کوئی بھی میرے پاس آتا ھے، میں یتھا شکتی اُس کا منورتھ پورا کرنے کی چیشٹا کرتا ھوں. جب تم میرے پاس آئے تو تمھیں بنا تمھاری اِچھا پورا کئے میں کیسے جانے دیتا. یدی دوسرے کی پرسنتا کے لئے مجھے اپنے پران بھی دینے پڑیں تو پیچھے نہیں ھٹونگا. اور پھر میں تو اب بوڑھا ھوا. اَسی سال سے زندگی کی گاڑی کھینچتا چلا آرھا ھوں. تم میرے پران لے لو تو مجھے اِس سے چھٹکارا ھی ملیگا. جو آیا ھے وہ جائیگا ھی. میں دو چار سال اور زندہ رھا آیا تو کیا بنتا بگڑتا ھے. کام تو میرا ختم ھو گیا. اب زندہ رھنے کا کوئی موہ نہیں ھے. میں کہتا ھوں تم میرے پران لے لو، اِس میں تمھیں لابھ ھی ھوگا اور مجھے پرسنتا ھوگی اور سنتوش رھیگا کہ اپنے پران دیکر بھی میں دوسرے کی اِچھا پورتی کر سکا."

متھریڈنس لجا اور گلانی سے اور بھی گڑ گیا اور بولا—"نہیں، نہیں ! اب یہ نہیں ھو سکتا. اِتنے مولیہوان پرانوں کو لینے کی ھمت میری نہیں ! آپ کی جیون لیلا سماپت کرنے کے بجائے میں تو یہی چاھونگا کہ آپ یگ یگوں تک جیوت رھیں."

اِس پر ناتن نے دوسرا پرستاؤ اُس کے سامنے رکھا—"میں چاھتا ھوں اب تم میرے محل میں ھی رھو اور ناتن کے نام سے پرسدھ ھو جاؤ. اگر تم چاھو گے تو میں تمھاری زمینداری میں چلا جاؤنگا اور اپنا نام متھریڈنس رکھ لونگا، اِس سے بھی تمھاری اِچھا پوری ھو جائیگی."

متھریڈنس نے اُتر دیا—"نہیں یہ بھی میرے بوتے کی بات نہیں. آپ کی اُدارتا کی پرمپرا کو میں آپ کی ھی طرح چالو نہیں رکھ سکونگا اور نہ آپ کے پد اور پرتشٹھا کو ھی قایم رکھنے کی مجھ میں شکتی ھے. یہ کام مجھ جیسے ناچیز آدمی سے پورا نہیں ھوسکتا. مجھے تو آپ چھما کر دیں."

ناتن کے بہت کہنے سننے پر بھی جب متھریڈنس نے اُس کا پرستاؤ منظور نہ کیا تو وے دونوں محل لوٹ آئے. متھریڈنس نے ناتن کے ساتھ کچھ دن اور بتائے اور اُس کے انوبھوؤں سے لابھ اُٹھایا، پھر وہ اپنے گھر چلا آیا. اب وہ سمجھ گیا تھا کہ سچی اُدارتا کسے کہتے ھیں.

देहाती दवाखाना

(एकांकी नाटक)

श्री विद्याभूषण मिश्र, एम० ए०, एल-एल० बी०

[सुबह के वक्त गांव का सरकारी दवाखाना खुला है. कम्पाउन्डर आकर सब दरवाजे खोलता है और मेज पोंछकर शीशियां लगाता है. बाहर बरामदे में पहले से ही बहुत से रोगी आकर बैठे हैं और आपस में बातें कर रहे हैं.]

पहला रोगी—वह रे वाह ! गांव-गांव में दवा-दारू का परबन्ध हो गया. क्या कहें भैया, पहले तो काले कोस चलकर सहर जाते थे, तब कहीं डाक्टर बाबू से भेंट होती थी.

दूसरा—हां भैया, ठीक कहते हो. हमें याद है, पांच बरस हुआ हमारे नाना जी बीमार पड़े थे. बस, इसी हरखू के इक्के पर बैठाकर ले चले. चलते चलते संझा हो गई, पर सहर दिखाई न पड़ा. आखिर नाना जी ने इक्के पर ही सांस छोड़ी. अब तो भैया सरकार की किरपा से इस गांव में भी दवाई-खाना खुल गया है.

तीसरा—यहाँ फायदा भी तो जल्दी होता है. देखो, मेरे पांव में फोड़ा हुआ था. हमने महीना भर दवा-दारू की, बराबर पान-पत्ते बांधते रहे, लेकिन रंचो फायदा न हुआ. यहां आकर डाक्टर को दिखाया, तो वह हंसकर कहने लगा कि इसको तुरन्त चिरवा डालो नहीं तो 'बलूड-पापनी' (Blood-poison) हो जाएगा. उसके मुसकिया कर बोलने पर तो बड़ा गुस्सा लगा, लेकिन 'बलूड-पापनी' सुनकर डर गया. अभी चार दिन से यहां आ रहे हैं, लेकिन देखो, घाव भर गया है और दरद भी जाता रहा.

पहला—यहां की सफाई की बलिहारी. देखो कैसे करीने से पट्टी बांधी है.

चौथा—भैया जुग बदल गया है. क्यों, नहीं कहोगे ? अरे डाक्टर ससुर परमात्मा थोड़े ही हैं. अपनी सकती भर ही तो करेंगे. पांव कट जाय तो डाक्टर के पास जाओगे, पर नजर लग जाय, सिर पर भूत आ जाय तब कहां सरन मिलेगी ? तब डाक्टर क्या करेगा ?

सब—हाँ भैया, यह बात तो सच्ची है, इसमें कोई सक नहीं है.

पांचवां—अरे भैया, हम तो सहर से आज ही आए हैं, एक बार हमें भी फोड़ा हुआ था और डाक्टर को

دیہاتی دواخانہ

(ایکانکی ناٹک)

شری ودیا بھوشن مصر، ایم . اے .، ایل . ایل . بی .

[صبح کے وقت گاؤں کا سرکاری دواخانہ کھلا ہے . کمپاؤنڈر آکر سب دروازے کھولتا ہے اور میز پونچھکر شیشیاں لگاتا ہے . باہر برآمدے میں پہلے سے ہی بہت سے روگی آکر بیٹھے ہیں اور آپس میں باتیں کر رہے ہیں .]

پہلا روگی—واہ رے واہ ! گاؤں گاؤں میں دوا دارو کا پربندھ ہوگیا . کیا کہیں بھیا، پہلے تو کالے کوس چلکر سہر جاتے تھے، تب کہیں ڈاکٹر بابو سے بھینٹ ہوتی تھی .

دوسرا—ہاں بھیا، ٹھیک کہتے ہو . ہمیں یاد ہے، پانچ برس ہوا ہمارے نانا جی بیمار پڑے تھے . بس، اِسی ہرکھو کے یکے پر بٹھاکر لے چلے . چلتے چلتے سنجھا ہوگئی، پر سہر دکھائی نہ پڑا . آکھر نانا جی نے یکے پر ہی سانس چھوڑی . اب تو بھیا سرکار کی کرپا سے اِس گاؤں میں بھی دوائی کھانہ کھل گیا ہے .

تیسرا—یہاں پھائدہ بھی تو جلدی ہوتا ہے . دیکھو، میرے پاؤں میں پھوڑا ہوا تھا . ہم نے مہینہ بھر دوا دارو کی، برابر پان پتے باندھتے رہے، لیکن رنچو پھائدہ نہ ہوا . یہاں آکر ڈاکٹر کو دکھایا، تو وہ ہنسکر کہنے لگا کہ اِس کو ترنت چروا ڈالو نہیں تو 'بلوڈ - پاپنی' (Blood-poison) ہوجائیگا . اس کے مسکیا کر بولنے پر تو بڑا گسہ لگا، لیکن 'بلوڈ - پاپنی' سنکر ڈر گیا . ابھی چار دن سے یہاں آرہے ہیں، لیکن دیکھو، گھاؤ بھر گیا ہے اور درد بھی جاتا رہا .

پہلا—یہاں کی سپھائی کی بلہاری . دیکھو کیسے کرینے سے پٹی باندھی ہے .

چوتھا—بھیا جگ بدل گیا ہے . کیوں، نہیں کہوگے ؟ ارے ڈاکٹر سسور پرماتما تھوڑے ہی ہیں . اپنی سکتی بھر ہی تو کرینگے . پاؤں کٹ جائے تو ڈاکٹر کے پاس جاؤگے، پر نجر لگ جائے، سر پر بھوت آجائے تب کہاں سرن ملیگی ؟ تب ڈاکٹر کیا کریگا ؟

سب—ہاں بھیا، یہ بات تو سچی ہے، اِس میں کوئی سک نہیں ہے .

پانچواں—ارے بھیا، ہم تو سہر سے آج ہی آئے ہیں . ایک بار ہمیں بھی پھوڑا ہوا تھا اور ڈاکٹر کو

दिखाया था. फिर हम क्या कहें, जैसा उसने जोंक की तरह रुपैया लिया और तंग किया, हम ही जानते हैं. तब से हमने कान पकड़ा कि डाक्टरों के पास नहीं जाएंगे, चाहे मर जाँय.

चौथा—वाह! तुमने तो इतना दुःख सहकर यह किया. हम तो हाल ही में एक दवा लेने गए और एक ही ख़ुराक पी है. परमेस्वर जानें उसने क्या दे दिया. दवा भीतर जाती ही नहीं और जाती भी है तो कै हो जाती है. हमने बिचारते-बिचारते यह समझा कि कौन जाने, महंगी पड़ी है, बिलायत से दवा आती नहीं, इससे कहीं गो-मूत भर कर न बेचते हों, इनका क्या ठिकाना? इसीलिये हमने भी कसम खा ली है.

पांचवां—हम तो भैया सहर के एक बाबू की दवा करते हैं. वह होमोपाथी (Homoeopathy) दवा देते हैं. सस्ती भी होती है और बिचारे बाबू फीस भी थोड़ी ही लेते हैं. जो पैसा रहा उसे वह धीरे से ले लेते हैं और अगर किसी ने देख लिया तो कह देते हैं "अब तुम्हारा दवाई का दाम चुकता हो गया." हम भी उनकी बात नहीं काटते क्योंकि थोड़े ही में काम निकलता है.

चौथा—अरे! यह तो और अधिक भयानक होते हैं. इनसे तो और बचो. यह तो पानी ही देकर उसे दवा कहते हैं और आजकल लायचीदाना खरीद कर सीसियों में सजा कर रखते हैं.

पांचवां—ऐसा न कहो भैया, हमको तो बड़े कठिन रोग में फायदा हुआ है.

चौथा—किस्मत अच्छी थी. बच गए. कागद पूरा नहीं हुआ था. बिना झाड़-फूँक सीखे दवा बेकार है. फिर डाक्टर लोग जन्तर-मन्तर का हाल क्या जानें?

छठा—(एक कोने से) जन्तर-मन्तर सब ढकोसला है.

चौथा—हम यह नहीं कहते हैं कि डाक्टर कुछ भी नहीं जानते. जरूर जानते हैं, पर उतना ही न, अपनी सकती भर.

छठा—(कोने से) तो जब तुम डागदर बाबू से ज्यादा जानते हो, तब यहां आए क्या करने? घर बैठते, अपना काम-काज देखते और झाड़ फूँक करते.

चौथा—(हाथ से सुरती मलते हुए) कौन ससुरा आया है. (सुरती की फंकी लेकर पीक भरे हुए) थके आए थे, सोचा यहीं छिन भर बैठकर बिसराम कर लें. आखिर सरकारी जगह है, कोहू के बाप का इजारा है!

छठा—यह लो, खूब पूछ बैठे, (मुंह बनाकर) तुम आए किस लिए? जैसे तुम्हीं डागदर बाबू के बाप हो न!

دکھایا تھا . پھر ہم کیا کہیں' جیسا اُس نے جونک کی طرح روپیہ لیا اور تنگ کیا' ہم ہی جانتے ہیں۔ تب سے ہم نے کان پکڑا کہ ڈاکٹروں کے پاس نہیں جائینگے' چاہے مر جائیں .

چوتھا—واہ ! تم نے تو اِتنا دکھ سہکر یہ کیا . ہم تو حال ہی میں ایک دوا لینے گئے اور ایک ہی کھوراک پی ہے . پرمیسور جانیں اُس نے کیا دے دیا . دوا بھیتر جاتی ہی نہیں اور جاتی بھی ہے تو کے ہو جاتی ہے . ہم نے بچارتے بچارتے یہ سمجھا کہ کون جانے' مہنگی پڑی ہے' بلایت سے دوا آتی نہیں' اِس سے کہیں گوموت بھر کر نہ بیچتے ہوں' اِن کا کیا ٹھکانہ ؟ اِسی لئے ہم نے بھی کسم کھالی ہے .

پانچواں—ہم تو بھیا سہر کے ایک بابو کی دوا کرتے ہیں۔ وہ ہوموپاری (Homeopathy) دوا دیتے ہیں . سستی بھی ہوتی ہے اور بچارے بابو پھیس بھی تھوڑی ہی لیتے ہیں۔ جو پیسہ رہا اُسے وہ دھیرے سے لے لیتے ہیں اور اگر کسی نے دیکھ لیا تو کہہ دیتے ہیں "اب تمہاری دوائی کا دام چکتا ہوگیا ." ہم بھی اُن کی بات نہیں کاٹتے کیونکہ تھوڑے ہی میں کام نکلتا ہے .

چوتھا—ارے ! یہ تو اور ادھک بھیانک ہوتے ہیں . اِن سے تو اور بچو . یہ تو پانی ہی دیکر اُسے دوا کہتے ہیں اور آجکل لائچی دانا کھریدکو سیسیوں میں سجاکر رکھتے ہیں .

پانچواں—ایسا نہ کہو بھیا' ہم کو تو بڑے کٹھن روگ میں پھائدہ ہوا ہے .

چوتھا—کسمت اچھی تھی . بچ گئے . کاگد پورا نہیں ہوا تھا . بنا جھاڑ پھونک سیکھے دوا بیکار ہے . پھر ڈاکٹر لوگ جنتر منتر کا حال کیا جانیں ؟

چھٹا—(ایک کونے سے) جنتر منتر سب ڈھکوسلا ہے .

چوتھا—ہم یہ نہیں کہتے ہیں کہ ڈاکٹر کچھ بھی نہیں جانتے۔ جرور جانتے ہیں' پر اُتنا ہی نا' اپنی سکتی بھر .

چھٹا—(کونے سے) تو جب تم ڈاگدر بابو سے جیادہ جانتے ہو' تب یہاں آئے کیا کرنے ؟ گھر بیٹھتے' اپنا کام کاج دیکھتے اور جھاڑ پھونک کرتے .

چوتھا—(ہاتھ سے سرتی ملتے ہوئے) کون سسورا آیا ہے . (سرتی کی پھنکی لیکر پیک بھرے ہوئے) تھکے آئے تھے' سوچا یہیں چھن بھر بیٹھکر بسرام کرلیں . آکھر سرکاری جگہ ہے' کوہو کے باپ کا اِجارا ہے !

چھٹا—یہ لو' کھوب پوچھ بیٹھے' (منھ بناکر) تم آئے کس لئے ؟ جیسے تمہیں ڈاگدر بابو کے باپ ہو نا !

कंपाउंडर—(भीतर से) —अरे ! यह क्या गुल-गपाड़ा मचा रखा है. यह अस्पताल है या तरकारी की सट्टी ? चुपचाप बैठना हो तो बैठे रहो नहीं तो बाहर जाकर झगड़ो.

सब—सरकार, हम लोग तो चुपचाप बैठे हैं. यही झगड़ा कर रहे हैं.

चौथा—हां तो मैं कह रहा था कि गांव का छोटे से छोटा बैद भी जानता है कि किस रोग की कौन सी दवा होती है. किसी रोग में वह दवा देता है, किसी में जन्तर-मन्तर देता है. (बच्चे को गोद में लिए एक स्त्री की ओर संकेत करके) अच्छा तुम्हीं से पूछते हैं, बताओ इसे क्या हुआ है ?

स्त्री—इसके सिर में आज चार दिन से दरद है, बुखार भी है. डाक्टर साहब ने दवाई दी थी, फिर भी फरक नहीं मालूम हो रहा है.

चौथा—फरक कहां से मालूम होगा ? इसे तो लगी है नजर. तुम भले ही डाक्टर को दिखाओ, पर इससे कुछ अच्छा थोड़े ही होगा. तुम अभी जाकर राई-नोन उतारो और ओझा से झड़वा लो. तुरन्त आराम न हो तो हमरा नाँव बदल दो.

(सब रोगी ध्यान पूर्वक उसकी बातें सुनते हैं)

दूसरा—भैया, हमारे कान में दो रोज से दरद बन्द नहीं हो रहा है, हम क्या करें ?

चौथा—बस तुमने कोई मेंढक मार डाला होगा.

दूसरा—नहीं भैया, जानकर तो मैंने कभी हत्या नहीं की, हां पांव के नीचे आ गया हो तो मैं नहीं जानता.

चौथा—बस यही बात है. अब तुम सैयद बाबा की मजार पर मलीदा चढ़ाओ. अगर दिया जलाते ही न अच्छा हो तो उलटे घड़े पानी भरूं. ये मूंछें योंही सफेद नहीं की हैं.

तीसरा—बड़ा गुन है भैया, फकीरों की सेवा के बिना यह हुनर सब को नहीं मिलता. भैया, तुमने खूब बैदक पढ़ी है.

चौथा—पढ़ी कहां ? अगर पढ़ते तो आँख में चसमा लगाकर झख मारते रहते, यह सब कहां पाते ? अपना भी सब भूल जाते. हमने तो चट देखा और पट निदान किया. अरे बाबा, जब तुम खुद अपना हाल नहीं जानोगे तब डाक्टर बिचारा क्या करेगा ? अच्छा, देखो तुम्हें अस्पताल से दवाई मिलती है न ? कम्पोटर साहब कहते हैं, "सीसी हिलाओ" और "यों पीओ" और "त्यों पीओ". उस दवाई में रहता ही क्या है ? और फिर वे पूरी दवाई देते भी तो नहीं.

तीसरा—सच है भैया ! दवाई देने में ये जरूर कंजूसी करते हैं.

کمپاؤنڈر—(بھیتر سے) : ارے ! یہ کیا غل غپاڑہ مچا رکھا ہے . یہ اسپتال ہے یا ترکاری کی سٹی ؟ چپ چاپ بیٹھنا ہو تو بیٹھے رہو نہیں تو باہر جاکر جھگڑو .

سب—سرکار، ہم لوگ تو چپ چاپ بیٹھے ہیں . یہی جھگڑا کر رہے ہیں .

چوتھا—ہاں تو میں کہہ رہا تھا کہ گاؤں کا چھوٹے سے چھوٹا بید بھی جانتا ہے کہ کس روگ کی کونسی دوا ہوتی ہے . کسی روگ میں وہ دوا دیتا ہے، کسی میں جنتر منتر دیتا ہے. (بچے کو گود میں لئے ایک استری کی اور سنکیت کرکے) اچھا تمہیں سے پوچھتے ہیں، بتاؤ اِسے کیا ہوا ہے ؟

اِستری—اِس کے سر میں آج چار دن سے درد ہے، بوکھار بھی ہے. ڈاکٹر صاحب نے دوائی دی تھی، پھر بھی پھرک نہیں معلوم ہو رہا ہے .

چوتھا—پھرک کہاں سے معلوم ہوگا ؟ اِسے تو لگی ہے نجر . تم بھلے ہی ڈاکٹر کو دکھاؤ، پر اِس سے کچھ اچھا تھوڑے ہی ہوگا. تم ابھی جاکر رائی نون اتارو اور اوجھا سے جھڑوالو . ترنت آرام نہ ہو تو ہمرا ناؤں بدل دو .

(سب روگی دھیان پوروک اُس کی باتیں سنتے ہیں)

دوسرا—بھیا، ہمارے کان میں دو روج سے درد بند نہیں ہو رہا ہے، ہم کیا کریں ؟

چوتھا—بس تم نے کوئی مینڈھک مار ڈالا ہوگا .

دوسرا—نہیں بھیا، جانکر تو میں نے کبھی ہتیا نہیں کی، ہاں پاؤں کے نیچے آگیا ہو تو میں نہیں جانتا .

چوتھا—بس یہی بات ہے . اب تم سید بابا کی مجار پر ملیدا چڑھاؤ . اگر دیا جلاتے ہی نہ اچھا ہو تو الٹے گھڑے پانی بھروں . یہ مونچھیں یونہی سفید نہیں کی ہیں .

تیسرا—بڑا گن ہے بھیا، پھکیروں کی سیوا کے بنا یہ ہنر سب کو نہیں ملتا . بھیا، تم نے خوب بیدک پڑھی ہے .

چوتھا—پڑھی کہاں ؟ اگر پڑھتے تو آنکھ میں چسما لگا کر جھک مارتے رہتے، یہ سب کہاں پاتے ؟ اپنا بھی سب بھول جاتے . ہم نے تو چٹ دیکھا اور پٹ ندان کیا . ارے بابا، جب تم خود اپنا حال نہیں جانوگے تب ڈاکٹر بچارا کیا کریگا ؟ اچھا، دیکھو تمہیں اسپتال سے دوائی ملتی ہے نا ؟ کمپوٹر صاحب کہتے ہیں، "سیسی ہلاؤ" اور "یوں پیو" اور "تیوں پیو." اُس دوائی میں رہتا ہی کیا ہے ؟ اور پھر وے پوری دوائی دیتے بھی تو نہیں .

تیسرا—سچ ہے بھیا ! دوائی دینے میں یہ جرور کنجوسی کرتے ہیں .

चौथा—जहाँ कलछुल भरकर दवा देनी चाहिए वहां सिरफ दो बूँद दवाई देंगे. अंधेर है न ? सरकार महाराज ने परजा के सुख के लिये दवाखाना खोला है, इनके बाप का क्या जाता है ? सहरी मनई को भले ही बूंद भर दवाई दें, पर हरबाहन को उससे क्या फायदा होगा ?

कंपाउन्डर—(बाहर आकर) देखो, तुम सब लोग एक पंगत में बैठ जाओ. डाक्टर साहब आ रहे हैं. (सब नीचे एक पंक्ति बद्ध बैठते हैं, केवल चौथा नहीं बैठता. उसे लक्ष्य करके) क्यों जी, तुम वहां क्यों खड़े हो ? इधर चलो.

चौथा—क्यों चलें ? हम दवाई लेने थोड़े ही आए हैं. थके थे, छाया देखी, थकान मिटाने बैठ गए.

कंपाउन्डर—यह सराय नहीं है कि आए सुस्ताने लगे !

(भीतर चला जाता है)

चौथा—(धीरे से) बैदगी जानने वाले को क्यों बैठने दोगे ? रोटी मारी जाएगी न ? बड़े सफेदपोस बने हैं !

(डाक्टर का आगमन. सब खड़े होकर उसे सलाम करते हैं. डाक्टर भीतर प्रवेश करके बैठता है. सिर की पीड़ा से आक्रांत रोगी भीतर जाकर शीघ्र बाहर आता है)

चौथा—कहो, दवाई ले आए ?

रोगी—हां भैया, यही सपेद सपेद चूरन तो दिया है और कहा है कि इसे पानी में घोल कर रखना. (सहसा) अरे राम ! यह तो पूछा ही नहीं कि इसे पी जाना है या सिर पर मलना है.

चौथा—वाह ! अच्छी दवा कहीं यों खराब की जाती है ? इसे पी जाना.

रोगी—(सोच कर) फिर भी पूछ लेना ठीक होगा.

चौथा—कुछ अपना भी दिमाग लगाओ. बिना दिमाग लगाए न अपना भला कर सकोगे न दूसरों का. अभी परसों की बात है. मेरे चचा को गस आ गया था. अब मरे तब मरे की हालत हो गई. मैंने आव देखा न ताव. मंतर पढ़कर एक गिलास पानी जो मुंह में उड़ला तो एकदम खड़े हो कर नाचने लगे. अब उस वक्त अगर हम डाक्टर की तलास में जाते तो चाचा साहब सरग सिधार गए होते. हम अपनी अकल पर भरोसा रखते हैं. हमने कुछ पढ़ा-लिखा नहीं पर सकल देखते ही रोग बता देते हैं.

(अन्य रोगी ध्यानपूर्वक उसकी बातें सुनते हैं और अपने-अपने रोग का निदान कराने के अभिप्राय से उसके निकट पहुंचने के हेतु परस्पर धक्का देते हैं)

एक—धक्का क्यों देते हो जी ? हम पहले आए हैं.

چوتھا—جہاں کلچھل بھر کر دوا دینی چاہئے وہاں سرپھ دو بوند دوائی دینگے ۔ اندھیر ہے نا ؟ سرکار مہاراج نے پرجا کے سکھ کے لئے دوا کھانہ کھولا ہے، اِن کے باپ کا کیا جاتا ہے ؟ سہری منئی کو بھلے ہی بوند بھر دوائی دیں، پر ھرواہن کو اُس سے کیا پھائدہ ہوگا ؟

کمپاونڈر—(باہر آکر) دیکھو، تم سب لوگ ایک پنگت میں بیٹھ جاؤ ۔ ڈاکٹر صاحب آ رہے ہیں ۔ (سب نیچے ایک پنکتی بدھ بیٹھتے ہیں، کیول چوتھا نہیں بیٹھتا ۔ اُسے لکش کر کے) کیوں جی، تم وہاں کیوں کھڑے ہو ؟ ادھر چلو ۔

چوتھا—کیوں چلیں ؟ ہم دوائی لینے تھوڑے ہی آئے ہیں ۔ تھکے تھے، چھایا دیکھی، تھکان مٹانے بیٹھ گئے ۔

کمپاونڈر—یہ سرائے نہیں ہے کہ آئے سستانے لگے !

(بھیتر چلا جاتا ہے)

چوتھا—(دھیرے سے) بیدگی جاننے والے کو کیوں بیٹھنے دو گے ؟ روٹی ماری جائےگی نا ؟ بڑے سپھید پوس بنے ہیں !

(ڈاکٹر کا آگمن ۔ سب کھڑے ہو کر اُسے سلام کرتے ہیں ۔ ڈاکٹر بھیتر پرویش کر کے بیٹھتا ہے ۔ سر کی پیڑا سے آکرانت روگی بھیتر جا کر شیگھر باہر آتا ہے)

چوتھا—کہو، دوائی لے آئے ؟

روگی—ہاں بھیا، یہی سپھید سپھید چورن تو دیا ہے اور کہا ہے کہ اِسے پانی میں گھول کر رکھنا (سہسا) ارے رام ! یہ تو پوچھا ہی نہیں کہ اِسے پی جانا ہے یا سر پر ملنا ہے ۔

چوتھا—واہ ! اچھی دوا کہیں یوں کھراب کی جاتی ہے ؟ اِسے پی جانا ۔

روگی—(سوچ کر) پھر بھی، پوچھ لینا ٹھیک ہوگا ۔

چوتھا—کچھ اپنا بھی دماگ لگاؤ ۔ بنا دماگ لگائے نہ اپنا بھلا کر سکو گے نہ دوسروں کا ۔ ابھی پرسوں کی بات ہے ۔ میرے چچا کو گس آ گیا تھا ۔ اب مرے تب مرے کی حالت ہو گئی ۔ میں نے آؤ دیکھا نہ تاؤ ۔ منتر پڑھ کر ایک گلاس پانی جو منھ میں اُنڈیلا تو ایکدم کھڑے ہوکر ناچنے لگے ۔ اب اس وکت اگر ہم ڈاکٹر کی تلاش میں جاتے تو چاچا صاحب سرگ سدھار گئے ہوتے ۔ ہم اپنی اکل پر بھروسہ رکھتے ہیں ۔ ہم نے کچھ پڑھا لکھا نہیں پر سکل دیکھتے ہی روگ بتا دیتے ہیں ۔

(انیہ روگی دھیان پوروک اُس کی باتیں سنتے ہیں اور اپنے اپنے روگ کا ندان کرانے کے ابھیپرایہ سے اُس کے نکٹ پہونچنے کے ہیتو پرسپر دھکا دیتے ہیں)

ایک—دھکا کیوں دیتے ہو جی ؟ ہم پہلے آئے ہیں ۔

दूसरा—अपनी-अपनी बारी से चलो, फिर धक्का देने की नौबत ही न आवे.

चौथा—तुम चाहते क्या हो? मैं डाक्टर नहीं, वैद्य नहीं, ओझा नहीं. यहाँ तो देखते ही कुछ कह दिया तो ठीक, नहीं तो हर गंगा!

दूसरा—नहीं भैया, तुम बड़े गुनी हो. कृपा करो. हमारी आंख में बिलनी हुई है, इसके मारे बड़ा दरद है. बताओ क्या करें?

चौथा—करो क्या? यह तो सभी जानते हैं. बेर के सात पत्ते लेकर एक बेर के कांटे में बांधकर आंख से छुआओ और धूप में रख दो. जैसे-जैसे पत्ते सूखेंगे वैसे वैसे बिलनी भी सूखती जाएगी.

डाक्टर—(भीतर कंपाउन्डर से) इन देहातियों को क्या हो गया है? तुम उनसे कुछ कह देते हो और ये कुछ और ही कर बैठते हैं. चार दिन की दवा एक वक्त में ही पीकर खाली बोतल लिए चले आते हैं.

चौथा—(रोगियों से) सुना तुम लोगों ने? समझते चलो. तुम्हारा दवा पीना भी इन्हें कितना खलता है? मैं कहता था न कि ये लोग मन से दवाई नहीं देते?

(एक रोगी जो दवा लेकर बाहर निकलता है, चौथे की ओर दवा बढ़ाकर कहता है)

रोगी—देखो भैया, यह मालिस करने की दवाई ठीक है न?

(बोतल पर लेबुल लगा है "बाहर लगाने के लिये". चौथा लेबुल को प्रकाश में ध्यानपूर्वक देखता और शीशी हिलाता है)

चौथा—तुम्हारे लिये यह दवाई बिलकुल ठीक है. इसे सेर भर दूध में मिलाकर गटक जाओ. अब कल दूसरा कुर्ता पहन कर आना, तब ये तुम्हें और दवा देंगे. कंपाउन्डर ने तुम्हें सिरफ आधी खूराक दवा दी है.

रोगी—दवाई देने में भी इनके प्राण सूखते हैं!

चौथा—मैं तो पहले ही कह चुका हूँ. जब टिकस लगाना होता है तब ये परजा को कैसा चूसते हैं और न देने पर लाल-पीले होते हैं. और जब दवा देते हैं तब मन ही मन कुढ़ कुढ़ कर देते हैं. इसीलिये तो इनके हाथ में जस नहीं है.

सब—ठीक है. आओ, इस कंपाउन्डर को निकाल बाहर करें और इसे ऐसी नसीहत दें कि इसे छट्ठी का दूध याद आ जावे.

(कोलाहल—पटाक्षेप)

دوسرا—اپنی اپنی باری سے چلو' پھر دھکا دینے کی نوبت ہی نہ آوے۔

چوتھا—تم چاہتے کیا ہو؟ میں ڈاکٹر نہیں' ویدیہ نہیں' اوجھا نہیں' یہاں تو دیکھتے ہی کچھ کہہ دیا تو ٹھیک' نہیں تو ہر گنگا!

دوسرا—نہیں بھیا' تم بڑے گنی۔ ہو کرپا کرو۔ ہماری آنکھ میں بلنی ہوئی ہے' اِس کے مارے بڑا درد ہے' بتاؤ کیا کریں؟

چوتھا—کرو کیا؟ یہ تو سبھی جانتے ہیں۔ بیر کے سات پتے لیکر ایک بیر کے کانٹے میں باندھکر آنکھ سے چھواؤ اور دھوپ میں رکھ دو۔ جیسے جیسے پتے سوکھینگے ویسے ویسے بلنی بھی سوکھتی جائیگی۔

ڈاکٹر—(بھیتر کمپاونڈر سے) اِن دیہاتیوں کو کیا ہو گیا ہے؟ تم اُن سے کچھ کہہ دیتے ہو اور یہ کچھ اور ہی کر بیٹھتے ہیں۔ چار دن کی دوا ایک وقت میں ہی پی کر خالی بوتل لئے چلے آتے ہیں۔

چوتھا—(روگیوں سے) سنا تم لوگوں نے؟ سمجھتے چلو۔ تمہارا دوا پینا بھی اِنہیں کتنا کھلتا ہے! میں کہتا تھا نا کہ یہ لوگ من سے دوائی نہیں دیتے؟

(ایک روگی جو دوا لیکر باہر نکلتا ہے' چوتھے کی اور دوا بڑھا کر کہتا ہے)

روگی—دیکھو بھیا' یہ مالش کرنے کی دوائی ٹھیک ہے نا؟

(بوتل پر لیبل لگا ہے "باہر لگانے کے لئے"۔ چوتھا لیبل کو پرکاش میں دھیان پوروک دیکھتا اور شیشی ہلاتا ہے)

چوتھا—تمہارے لئے یہ دوائی بالکل ٹھیک ہے۔ اِسے سیر بھر دودھ میں ملاکر گٹک جاؤ۔ اب کل دوسرا کرتا پہن کر آنا' تب یہ تمہیں اور دوا دینگے۔ کمپاونڈر نے تمہیں صرف آدھی کھوراک دوا دی ہے۔

روگی—دوائی دینے میں بھی اِن کے پران سوکھتے ہیں!

چوتھا—میں تو پہلے ہی کہہ چکا ہوں۔ جب ٹکس لگانا ہوتا ہے تب یہ پرجا کو کیسا چوستے ہیں اور نہ دینے پر لال پیلے ہوتے ہیں۔ اور جب دوا دیتے ہیں تب من ہی من کڑھ کڑھکر دیتے ہیں۔ اِسی لئے تو اِن کے ہاتھ میں جس نہیں ہے۔

سب—ٹھیک ہے۔ آؤ' اِس کمپاونڈر کو نکال باہر کریں اور اُسے ایسی نصیحت دیں کہ اسے چھٹی کا دودھ یاد آجائے۔

(کولاہل—پٹاکچھیپ)

भारतीय योजनाबन्दी में ग्रामोद्योग का महत्व

بھارتیہ یوجنا بندی میں گراموديوگ کا مہتو

श्री सुरेश रामभाई

शری سریش رام بھائی

नये सिरजन की योजना और कुटीर धंधे

कॉंग्रेस के लखनऊ के इजलास (1936) में सदर के अपने भाषण में जब पंडित जवाहरलाल नेहरू ने समाजवादी विचार प्रकट किये तो हमारे देश के व्यापारी-क्षेत्र में एक खलबली सी मच गई. उससे यह साफ़ पता चलता था कि यहां के व्यापारियों के स्वार्थ आम जनता के हित से कितने अलग हैं. लेकिन देश की गुलामी, राजनीतिक घटना-चक्र और फिर लड़ाई छिड़ जाने के सबब इन दोनों के बीच का भेद कुछ कम हो गया और दोनों ही, थोड़ा-बहुत मिलकर, आज़ादी के मक़सद की तरफ़ बढ़े. लेकिन आज़ादी के बाद से दोनों के बीच की खाई ज़्यादा चौड़ी होती जा रही है. हमारे बुनकरों की दुर्दशा से साफ़ मालूम होता था कि हवा का रुख़ किधर है. बल्कि कहना यह चाहिये कि उसकी स्थिति एक बैरोमीटर का काम करती थी जिससे यह अन्दाज़ा लग जाता था कि चंद श्रीमानों का कितना ज़बरदस्त दबाव देश की दु:खी जनता पर पड़ रहा है. फिर, जब दो महीना पहले 'कर्वे कमेटी' की रिपोर्ट के शाया होने पर पूंजीपतियों की तरफ़ से जो तूफ़ान उठा उससे तो अंधा भी देख सकता था कि यह दबाव कितना भयानक और बेरहम है.

आज़ादी के बाद से पिछले आठ साल में जो हमारी आर्थिक "प्रगति" हुई है, उसका सार यही है कि एक बेहद धनी व्यापारी वर्ग पनप गया और हमारे बाज़ारों व घरों पर बड़ी तेज़ी से हावी हो गया. इस काम में उसे सरकार की काफ़ी मदद मिली और देश में जो विदेशी आर्थिक स्वार्थ हैं उनका तो पूरा सहारा मिला ही. हमारे प्रमुख व्यापारियों ने विदेशियों की शिरकत से काम शुरू कर दिया. इस अनोखी घटना का नतीजा यह है कि आज किसी "मेड इन इन्डिया" (भारत में बनी) चीज़ को देखकर कोई यह नहीं तमीज़ कर सकता कि वह भारतीय पूँजी से ही बनी है या विदेशी हाथ भी उसमें है. जो भी हो, आज हमारा व्यापारी वर्ग काफ़ी समर्थ हो गया है और वह भारत के बाज़ार पर ही नहीं, विदेश के बाज़ारों पर भी अपना सिक्का जमाना चाहता है. यही सबब है कि अगर ज़रा भी चर्चा उसके पेट को बाँध देने का कभी उठता है तो वह आग बगूला हो

نئے سرجن کی یوجنا اور کوٹیر دھندھے

کانگریس کے لکھنؤ کے اجلاس (1936) میں صدر کے اپنے بھاشن میں جب پنڈت جواہر لال نہرو نے سماج‌وادی وچار پرکٹ کئے تو ہمارے دیش کے ویاپاری-چھیتر میں ایک کھلبلی سی مچ گئی۔ اُس سے یہ صاف پتہ چلتا تھا کہ یہاں کے ویاپاریوں کے سوارتھ عام جنتا کے ہت سے کتنے الگ ہیں۔ لیکن دیش کی غلامی، راجنیتک گھٹنا چکر اور پھر لڑائی چھڑ جانے کے سبب اِن دونوں کے بیچ کا بھید کچھ کم ہوگیا اور دونوں ہی، تھوڑا بہت ملکر، آزادی کے مقصد کی طرف بڑھے۔ لیکن آزادی کے بعد سے دونوں کے بیچ کی کھائی زیادہ چوڑی ہوتی جارہی ہے۔ ہمارے بنکروں کی دردشا سے صاف معلوم ہوتا تھا کہ ہوا کا رخ کدھر ہے۔ بلکہ کہنا یہ چاہئے کہ اُس کی اِستھتی ایک بیرومیٹر کا کام کرتی تھی جس سے یہ اندازہ لگ جاتا تھا کہ چند شریمانوں کا کتنا زبردست دباؤ دیش کی دکھی جنتا پر پڑ رہا ہے۔ پھر، جب دو مہینہ پہلے 'کروے کمیٹی' کی رپورٹ کے شائع ہونے پر پونجی‌پتیوں کی طرف سے جو طوفان اُٹھا اُس سے تو اندھا بھی دیکھ سکتا تھا کہ یہ دباؤ کتنا بھیانک اور بےرحم ہے۔

آزادی کے بعد سے پچھلے آٹھ سال میں جو ہماری آرتھک "پرگتی" ہوئی ہے، اُس کا سار یہی ہے کہ ایک بےحد دھنی ویاپاری ورگ پنپ گیا اور ہمارے بازاروں و گھروں پر بڑی تیزی سے حاوی ہوگیا۔ اِس کام میں اُسے سرکار کی کافی مدد ملی اور دیش میں جو ودیشی آرتھک سوارتھ ہیں اُن کا تو پورا سہارا ملا ہی۔ ہمارے پرمکھ ویاپاریوں نے ودیشیوں کی شرکت سے کام شروع کردیا۔ اِس انوکھی گھٹنا کا نتیجہ یہ ہے کہ آج کسی "میڈ اِن اِنڈیا" (بھارت میں بنی) چیز کو دیکھکر کوئی یہ نہیں تمیز کرسکتا کہ وہ بھارتیہ پونجی سے ہی بنی ہے یا ودیشی ہاتھ بھی اُس میں ہے۔ جو بھی ہو، آج ہمارا ویاپاری ورگ کافی سمرتھ ہوگیا ہے اور وہ بھارت کے بازار پر ہی نہیں، ودیش کے بازاروں پر بھی اپنا سکہ جمانا چاہتا ہے۔ یہی سبب ہے کہ اگر ذرا بھی چرچا اُس کے پیٹ کو باندھ دینے کا کبھی اُٹھتا ہے تو وہ آگ بگولہ ہو

पड़ता है और झल्लाकर कहता है कि अगर हमारे काम में दख़ल-अन्दाज़ी की जायेगी तो तैयार माल मँहगा पड़ेगा और फिर साधारण ग्राहक को ही उससे नुक़सान पहुँचेगा. अजीब तमाशा है—ग़रीब का जितना ज़्यादा शोषण वह करे उतना ही ज़्यादा सस्ता माल तैयार करता है और जितना ही सस्ता माल तैयार करता है उतना ही ज़्यादा ग़रीब का शोषण करता है !

अख़बारों की ख़बर है कि व्यापारी-वर्ग को कितनी छूट दी जाये, इस पर हमारे केन्द्रीय मंत्रिमंडल तक में एकमत नहीं है. अगर औद्योगीकरण के बढ़ने से देश में बेकारी घटती होती तब तो कोई सवाल ही नहीं खड़ा होने वाला था और हर कोई उसे बधाई देता. मगर आफ़त यह हो रही है कि औद्योगीकरण के साथ साथ—फिर जब पंचवर्षीय योजना भी व्यवस्थित ढङ्ग से चल रही हो और विदेशियों की कारगर सलाह व मदद भी मिल रही हो—बेकारी ज़्यादा विकराल स्वरूप लेती जा रही है. और तो और, हमारे केन्द्रीय मिनिस्टर रोज़गार दिलाने के सम्बन्ध में जो वादे करते हैं उन पर भी क़ायम नहीं रह पाते. पिछले दिसम्बर में पार्लियामेन्ट के काँग्रेसी सदस्यों की एक सभा में प्रधान मंत्री ने कहा कि देश के अन्दर बेरोज़गारी, विशेषकर इतने बड़े पैमाने पर, बर्दाश्त नहीं की जा सकती और रोज़गार देना एक फ़र्ज़ ही नहीं, सामाजिक ज़रूरत भी है. इस वजह से सरकार हाथ के धन्धों की तरफ़ भी जा रही है. लगभग तीन साल पहले उसने एक अखिल भारत खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड बनाया जिसकी योजनायें कुछ चल रही हैं, कुछ शुरू होने जा रही हैं. अब यह तो भविष्य ही बतायेगा कि बड़े उद्योग और खादी बोर्ड कंधे से कंधे मिला कर बेकारी दूर कर सकते हैं या बड़े उद्योगों में ही इतनी ज़्यादा सकत है कि बेरोज़गारी ख़त्म कर दें या अगर हालत और भी बिगड़ जाती है तो फिर नये सिरे से विचार करना होगा.

बहुत ही आशावादी नज़र से हम यह मान लेते हैं कि उद्योग ख़ूब फलते-फूलते हैं, बेकारी हवा हो जाती है, खादी बोर्ड की ज़रूरत नहीं रह जाती और देश में मशीनों की भरमार लग गई. तब हमारे देश का स्वरूप क्या होगा ? इन मशीनों के साथ-साथ हमको योरप और अमरीका की तरह बड़े पैमाने पर फ़ौजें रखनी होंगी और फ़ौजी सामान जमा करना होगा. जितना ज़्यादा औद्योगीकरण, उतना ज़्यादा शस्त्रीकरण. हमें केवल उत्पादन संभालने के लिये ही सेना नहीं चाहिये, विदेशों के अपने व्यापार पर चौकीदारी करने के लिये भी सेना चाहिये. तब भारत एक प्रबल शक्ति के रूप में प्रकट होगा—आर्थिक और फ़ौजी दोनों दृष्टियों से. इस तरह हम 'प्रगति' करते चले जायेंगे और आज के चोटी के देशों—इंग्लैंड, अमरीका या रूस—जैसी

پڑتا ھے اور جھلاکر کہتا ھے کہ اگر ھمارے کام میں دخل اندازی کی جائیگی تو تیار مال مہنگا پڑیگا اور پھر سادھارن گراھک کو ھی اُس سے نقصان پہونچیگا . عجیب تماشہ ھے—غریب کا جتنا زیادہ شوشن وہ کرے اُتنا ھی زیادہ سستا مال تیار کرتا ھے اور جتنا ھی زیادہ سستا مال تیار کرتا ھے اُتنا ھی زیادہ غریب کا سوشن کرتا ھے !

اخباروں کی خبر ھے کہ ویاپاری ورگ کو کتنی چھوٹ دی جائے' اِس پر ھمارے کیندریہ منتری منڈل تک میں ایک مت نہیں ھے . اگر اودیوگیکرن کے بڑھنے سے دیش میں بیکاری گھٹتی ھوتی تب تو کوئی سوال ھی نہیں کھڑا ھونے والا تھا اور ھر کوئی اُسے بدھائی دیتا. مگر آفت یہ ھو رھی ھے کہ اودیوگیکرن کے ساتھ ساتھ—پھر جب پنچ ورشیہ یوجنا بھی ویوستھت ڈھنگ سے چل رھی ھو اور ودیشیوں کی کارگر صلاح و مدد بھی مل رھی ھو—بیکاری زیادہ وکرال سوروپ لیتی جارھی ھے . اور تو اور' ھمارے کیندریہ منسٹر روزگار دلانے کے سمبندھ میں جو وعدے کرتے ھیں اُن پر بھی قایم نہیں رہ پاتے . پچھلے دسمبر میں پارلیامینٹ کے کانگریسی سدسیوں کی ایک سبھا میں پردھان منتری نے کہا کہ دیش کے اندر بےروزگاری' وشیشکر اِتنے بڑے پیمانے پر' برداشت نہیں کی جاسکتی اور روزگار دینا ایک فرض ھی نہیں ساماجک ضرورت بھی ھے . اِس وجہ سے سرکار ھاتھ کے دھندھوں کی طرف بھی جارھی ھے . لگ بھگ تین سال پہلے اُس نے ایک اکھل بھارت کھادی اور گرامودیوگ بورڈ بنایا جس کی یوجنائیں کچھ چل رھی ھیں' کچھ شروع ھونے جارھی ھیں . اب یہ تو بھوشیہ ھی بتائیگا کہ بڑے اُدیوگ اور کھادی بورڈ کندھے سے کندھے ملاکر بیکاری دور کرسکتے ھیں یا بڑے اُدیوگوں میں ھی اِتنی زیادہ سکت ھے کہ بےروزگاری ختم کردیں یا اگر حالت اور بھی بگڑ جاتی ھے تو پھر نئے سرے سے وچار کرنا ھوگا .

بہت ھی آشاوادی نظر سے ھم یہ مان لیتے ھیں کہ بڑے اُدیوگ خوب پھلتے پھولتے ھیں' بیکاری ھوا ھو جاتی ھے' کھادی بورڈ کی ضرورت نہیں رہ جاتی اور دیش میں مشینوں کی بھرمار لگ گئی . تب ھمارے دیش کا سوروپ کیا ھوگا ؟ اِن مشینوں کے ساتھ ساتھ ھمکو یورپ اور امریکہ کی طرح بڑے پیمانے پر فوجیں رکھنا ھونگی اور فوجی سامان جمع کرنا ھوگا . جتنا زیادہ اُودیوگیکرن' اُتنا زیادہ شستریکرن . ھمیں کیول اُتپادن سنبھالنے کے لئے ھی سینا نہیں چاھئے' ودیشوں کے اپنے ویاپار پر چوکیداری کرنے کے لئے بھی سینا چاھئے . تب بھارت ایک پربل شکتی کے روپ میں پرکٹ ھوگا—آرتھک اور فوجی' دونوں درشٹیوں سے . اِس طرح ھم 'پرگتی' کرتے چلے جائینگے اور آج کے چوٹی کے دیشوں—اِنگلینڈ' امریکہ یا روس—جیسی

हमारी शान होगी. हम जानते हैं कि यह सब हो जाना इतना आसान नहीं है. फिर भी क्षण भर के लिये हम इसे मान लेते हैं. तब सवाल उठता है—क्या पश्चिम के देशों जैसा हो जाना हमारे लिये सन्तोषप्रद होगा? क्या वही आदर्श हमारे लिये सर्वोपरि है? इसके साथ ही दूसरा सवाल यह पैदा होता है—इतनी अथाह सम्पत्ति के बावजूद आज अमरीका (या रूस) इतना दुःखी क्यों है? वहां हर चीज़ की इफ़रात है, फिर भी वहां के लोगों की आंखों में डर समाया हुआ है. वहां ज़िन्दगी बसर करने के एक से एक उत्तम साधन मौजूद हैं, फिर भी वहां के लोगों के दिलों में खोखलापन है. वहां किसी चीज़ की कमी नहीं, फिर भी वहां के लोगों के दिमाग़ों में परेशानी और घबड़ाहट है. क्या सबब है कि इतने सम्पन्न होने पर भी आज वह इतने बरबाद-कुन हथियारों की तैयारी में खोये हुए हैं?

सवाल दर असल गहरा है. और इस सवाल का सीधा सम्बन्ध संयोजन के मक़सद से है. जो योजना-बन्दी सरकार कर रही है उसका मक़सद क्या है? पिछले दो महायुद्धों से और तीसरे के संकट से यह साफ़ है कि संयोजन की पश्चिमी पद्धति में बहुत ख़राबियाँ भरी पड़ी हैं. उसकी असफलता के माने यह हैं कि जिन मूल्यों के आधार पर वह रचना खड़ी है वे मूल्य ग़लत हैं, जिन उसूलों की वह परिस्तिश करती है वे उसूल खोटे हैं. जिन सिद्धान्तों को वह निर्विवाद मानती है वे विचार दोषपूर्ण हैं. संक्षेप में कहें तो वे मूल्य मान्यतायें या सिद्धान्त यह हैं!

(1) सम्पत्ति और उत्पादन के साधनों पर निजी या सरकारी मालकियत व अधिकार.

(2) शारीरिक श्रम को हीन और मानसिक श्रम को श्रेष्ठ मानकर दोनों के पुरस्कारों में ज़मीन-आसमान का भेद करना.

(3) रक्षा में हथियारों का उपयोग करना.

(4) समाज में वर्ग-भेद और वर्ग-विद्वेष की स्थापना.

(5) जिसकी लाठी उसकी भैंस—इक्यावन के झूठे-सच्चे हित में उन्चास के हित की बलि देना.

कोई ज्योतिषी नहीं, रास्ता-चलता आदमी यह बता सकता है कि जब तक भारतीय संयोजन हमारे देश का नव-निर्माण इन पाँच आधारों पर चलता रहेगा तब तक उसका भविष्य बहुत ही अंधकारमय है. और जब तक हम इस सांचे के मुताबिक़ अपने को ढालते रहेंगे, तब तक हम उस सांचे के मूल बनाने वालों के—पश्चिमी राष्ट्रों के—पीछे रहेंगे और सारा कार्य क्रम उनके हाथ में होगा। मतलब यह है कि हम हमेशा "पिछड़े" हुए रहेंगे। फ़ौजी क्षेत्र में इसका अर्थ यह होगा कि विपक्ष के एक भी उत्तम हथियार के आगे, जो हमारे पास नहीं हैं, हमें चारों ख़ाने चित्त लेटना

ہماری شان ہوگی . ہم جانتے ہیں کہ یہ سب ہوجانا اِتنا آسان نہیں ہے. پھر بھی چھن بھر کے لئے ہم اِسے مان لیتے ہیں. تب سوال اُٹھتا ہے—کیا پچھم کے دیشوں جیسا ہوجانا ہمارے لئے سنتوش پرد ہوگا ؟ کیا وہی آدرش ہمارے لئے سرووپری ہے؟ اِس کے ساتھ ہی دوسرا سوال یہ پیدا ہوتا ہے—اِتنی اتھاہ سمپتی کے باوجود آج امریکہ (یا روس) اِتنا دکھی کیوں ہے ؟ وہاں ہر چیز کی افراط ہے، پھر بھی وہاں کے لوگوں کی آنکھوں میں ڈر سمایا ہوا ہے . وہاں زندگی بسر کرنے کے ایک سے ایک اُتم سادھن موجود ہیں، پھر بھی وہاں کے لوگوں کے دلوں میں کھوکھلاپن ہے . وہاں کسی چیز کی کمی نہیں، پھر بھی وہاں کے لوگوں کے دماغوں میں پریشانی اور گھبراہٹ ہے . کیا سبب ہے کہ اِتنے سمپن ہونے پر بھی آج وہ اِتنے برباد کن ہتھیاروں کی تیاری میں کھوئے ہوئے ہیں ؟

سوال دراصل گہرا ہے . اور اس سوال کا سیدھا سمبندھ سنیوجن کے مقصد سے ہے . جو یوجنا بندی سرکار کر رہی ہے اُس کا مقصد کیا ہے ؟ پچھلے دو مہایدھوں سے اور تیسرے کے سنکٹ سے یہ صاف ہے کہ سنیوجن کی پشچمی پدھتی میں بہت خرابیاں بھری پڑی ہیں . اُس کی اسپھلتا کے معنے یہ ہیں کہ جن مولیوں کے آدھار پر وہ رچنا کھڑی ہے وے مولیہ غلط ہیں، جن اُصولوں کی وہ پرستش کرتی ہے وے اُصول کھوٹے ہیں . جن سدھانتوں کو وہ نرواد مانتی ہے وے وچار دوش پورن ہیں. سنکچھیپ میں کہیں تو وے مولیہ منتائیں یا سدھانت یہ ہیں :

(1) سمپتی اور اُتپادن کے سادھنوں پر نجی یا سرکاری مالکیت و ادھیکار .

(2) شاریرک شرم کو ہین اور مانسک شرم کو شریشٹھ مانکر دونوں کے پرسکاروں میں زمین آسمان کا بھید کرنا .

(3) رکشا میں ہتیاروں کا اُپیوگ کرنا .

(4) سماج میں ورگ بھید اور ورگ ودویش کی استھاپنا .

(5) جس کی لاٹھی اُس کی بھینس—اکیاون کے جھوٹے سچے ہت میں اُنچاس کے ہت کی بلی دینا .

کوئی جیوتشی نہیں، راستہ چلتا آدمی یہ بتا سکتا ہے کہ جب تک بھارتیہ سنیوجن، ہمارے دیش کا نونرمان اِن پانچ آدھاروں پر چلتا رہیگا تب تک اُس کا بھوشیہ بہت ہی اندھکار مئے ہے . اور جب تک ہم اِس سانچے کے مطابق اپنے کو ڈھالتے رہینگے، تب تک ہم اُس سانچے کے مول بنانے والوں کے—پشچمی راشٹروں کے—پیچھے رہینگے اور سارا کاریہ کرم اُن کے ہاتھ میں ہوگا . مطلب یہ ہے کہ ہم ہمیشہ "پچھڑے" ہوئے رہینگے. فوجی چھیتر میں اِس کا ارتھ یہ ہوگا کہ وپکشی کے ایک بھی اُتم ہتھیار کے آگے، جو ہمارے پاس نہیں ہیں، ہمیں چاروں خانے چت لیٹنا

पड़ेगा—ठीक उसी तरह जिस तरह जर्मनी के आगे फ्रांस लेट गया या अमरीका के आगे जर्मनी व जापान लेट गये। ऐसी सूरत में हम पूछना चाहेंगे कि हमारा सारा नव-निर्माण किस नुक़्ते नज़र से हो रहा है?

समय आगया है कि हम इतिहास की रोशनी में भूत-काल पर बुद्धि पूर्वक विचार करें और आगे का साफ़ नक़्शा अपने सामने रखें। दूसरों की रीस करने से कोई फ़ायदा नहीं। हम यह नहीं कहते कि दूसरों से हम सीखें नहीं. नहीं, ज़रूर सीखें—उनकी अच्छी बातें लेने के साथ साथ उनकी बुरी बातों से भी बचें. यह कैसी दर्दनाक बात है कि आठ साल से हमारे यहां विकास का काम चल रहा है लेकिन इस अरसे में अपने नये कारनामों का प्रतीक एक शब्द भी हम जनता को नया नहीं दे सके. कारण केवल यही है कि हमारे चिन्तन की जड़ें अभी तक हमारे देश में हैं ही नहीं. हमारे गणतंत्र का विधान भी इन्हीं परदेशी जड़ों का नमूना है. कोशिश मार-पीट कर यह है कि विदेशी पौधे को किसी तरह अपने देश में जमा दें. लेकिन बढ़ती हुई बेकारी डंके की चोट पर ऐलान कर रही है कि वह विदेशी पौधा यहां की धरती में लगने से इन्कार कर रहा है. इस विदेशी ढाँचे में ग्रामो-द्योग के लिये कहां स्थान है?

इसलिये हिम्मत के साथ खड़े होकर क्रान्तिकारी नज़रिये से काम करने की ज़रूरत है. हम को अपने संयोजन का लक्ष्य स्पष्ट करना चाहिये और उसी के अनुसार अपना रास्ता बनाना चाहिये. केवल उत्पादन बढ़ाना या पूंजी इकट्ठा करना हमारा मक़सद नहीं हो सकता. कोई यह नहीं कहता कि हम ग़रीबी की पूजा करें या सुख के साधनों से मुंह मोड़ें. पूँजी और बहुतायत का हमेशा स्वागत है—लेकिन किस ख़ातिर से? सम्पत्ति एक साध्य मात्र है, साधन नहीं. हमारे सामने साधन क्या हैं, थोड़े शब्दों में उसे इस प्रकार कह सकते हैं:

(1) सब को रोज़गार की व्यवस्था यानी बेकारी का अस्तित्व ही न रहे।

(2) नई समाज रचना की स्थापना जिसकी आधार भूत वे मान्यातायें न हों (जो ऊपर दी जा चुकी हैं) जिनके कारण पश्चिम दुःखी है।

(3) शान्तिमय और अहिंसक उपायों का प्रतिष्ठापन जिससे कि हमारे सभी झगड़े, राष्ट्रीय हों या अंतर्राष्ट्रीय, बिला मार-काट के तय हो जायें।

अगर हमारे मक़सद यह हैं तब तो ग्रामोद्योग के लिये स्थान है. भारत जैसे विशाल और दीन देश में ग्रामोद्योग बेकारी दूर करने में कामयाब हो, यह कोई छोटी बात नहीं है. लेकिन हमारा निवेदन है कि बेकारी-निवारण ही ग्रामो-द्योग का लक्ष्य नहीं है. ग्रामोद्योग एक जीवन-पद्धति का संकेत है. वह एक ज़िन्दगी का तरीक़ा है, एक विचार-ज्योति का

پڑیگا—ٹھیک اُسی طرح جس طرح جرمنی کے آگے فرانس لیٹ گیا یا امریکہ کے آگے جرمنی و جاپان لیٹ گئے۔ ایسی صورت میں ہم پوچھنا چاہینگے کہ ہمارا سارا نونرمان کس نقطہ نظر سے ہو رہا ہے؟

سمے آگیا ہے کہ ہم اِتہاس کی روشنی میں بھوت کال پر بدھی پوروک وچار کریں اور آگے کا صاف نقشہ اپنے سامنے رکھیں۔ دوسروں کی ریس کرنے سے کوئی فایدہ نہیں۔ ہم یہ نہیں کہتے کہ دوسروں سے ہم سیکھیں نہیں۔ نہیں، ضرور سیکھیں—اُن کی اچھی باتیں لینے کے ساتھ ساتھ اُن کی بری باتوں سے بھی بچیں۔ یہ کیسی دردناک بات ہے کہ آٹھ سال سے ہمارے یہاں وکاس کا کام چل رہا ہے لیکن اِس عرصے میں اپنے نئے کارناموں کا پرتیک ایک شبد بھی ہم جنتا کو نیا نہیں دے سکے۔ کارن کیول یہی ہے کہ ہمارے چنتن کی جڑیں ابھی تک ہمارے دیش میں ہیں ہی نہیں۔ ہمارے گن تنتر کا ودھان بھی اِنہیں پردیشی جڑوں کا نمونہ ہے۔ کوشش مار پیٹ کر یہ ہے کہ ودیشی پودھے کو کسی طرح اپنے دیش میں جمادیں۔ لیکن بڑھتی ہوئی بیکاری ڈنکے کی چوٹ پر اعلان کر رہی ہے کہ وہ ودیشی پودھا یہاں کی دھرتی میں لگنے سے انکار کر رہا ہے۔ اِس ودیشی ڈھانچے میں گرامودیوگ کے لئے کہاں استھان ہے؟

اِس لئے ہمت کے ساتھ کھڑے ہو کر کرانتیکاری نظریہ سے کام کرنے کی ضرورت ہے۔ ہمکو اپنے سنیوجن کا لکش اسپشٹ کرنا چاہئے اور اُسی کے انوسار اپنا راستہ چلنا چاہئے۔ کیول اُتپادن بڑھانا یا پونجی اِکٹھا کرنا ہمارا مقصد نہیں ہو سکتا۔ کوئی یہ نہیں کہتا کہ ہم غریبی کی پوجا کریں یا سکھ کے سادھنوں سے منھ موڑیں۔ پونجی اور بہوتایت کا ہمیشہ سواگت ہے—لیکن کس خاطر سے؟ سمپتی ایک سادھن ماتر ہے، سادھیہ نہیں۔ ہمارے سامنے سادھن کیا ہیں، تھوڑے شبدوں میں اُسے اِس پرکار کہہ سکتے ہیں۔

(1) سب کو روزگار کی ویوستھا، یعنی بیکاری کا استتو ہی نہ رہے۔

(2) نئی سماج رچنا کی استھاپنا جس کی آدھار بھوت وے مانیتائیں نہ ہوں (جو اُوپر دی جا چکی ہیں) جن کے کارن پشچم دوکھی ہے۔

(3) شانتی مئے اور اہنسک اُپایوں کا پرتشٹھاپن جس سے کہ ہمارے سبھی جھگڑے، راشٹریہ ہوں یا انتر راشٹریہ، بلا مار کاٹ کے طے ہو جائیں۔

اگر ہمارے مقصد یہ ہیں تب تو گرامودیوگ کے لئے استھان ہے۔ بھارت جیسے وشال اور دین دیش میں گرامودیوگ بیکاری دور کرنے میں کامیاب ہو، یہ کوئی چھوٹی بات نہیں ہے۔ لیکن ہمارا نیویدن ہے کہ بیکاری نوارن ہی گرامودیوگ کا لکش نہیں ہے۔ گرامودیوگ ایک جیون پدھتی کا سنکیت ہے۔ وہ ایک زندگی کا طریقہ ہے، ایک وچار جیوتی کا

दीपक है. यह पद्धति या ज्योति कोई दक़ियानूसी या प्रतिक्रियाशील नहीं, बल्कि अत्यन्त वैज्ञानिक और विवेक पूर्ण है. इसकी कुछ सफ़ाई की ज़रूरत है.

ग्रामोद्योग के माने मशीनों का बहिष्कार नहीं है. ग्रामोद्योग का रहस्य है अपनी बुनियादी ज़रूरतों—खाना, कपड़ा और मकान में—स्वावलम्बन. विज्ञान की एटामिक खोजें यह कह रही हैं कि यह बुनियादी स्वावलम्बन तो इन्सानों को सधना चाहियें. लेकिन हर आदमी इन तीनों बातों में पूरा स्वावलम्बी अकेले नहीं हो सकता. इसलिये वह पास-पड़ोस का सहयोग ले और हर गांव, या जनसंख्या की छोटी से छोटी इकाई, बुनियादन स्वावलम्बी हो. दोनों लड़ाइयों ने दिखला दिया कि बुनियादी ज़रूरतों में परावलम्बन ख़तरनाक और घातक है. खाना, कपड़ा और मकान के मामले में, छोटी से छोटी इकाइयां अपने बल पर खड़ी होनी चाहियें. बाक़ी की न्यारी न्यारी आवश्यकताओं में हम परस्परावलम्बन कर सकते हैं. लेकिन यह तभी सम्भव है जब सम्पत्ति पर स्वामित्व व्यक्ति या सरकार का न होकर समाज का हो और शारीरिक श्रम व मानसिक श्रम में कोई भेद भाव न किया जाये. यानी नयी समाज रचना की दरकार है.

आज विज्ञान भी नयी समाज रचना की मांग कर रहा है. अगर उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व क़ायम रहता है तो जैसा आज हो रहा है, उत्पादक उनसे वंचित रहेगा और इन साधनों की प्राप्ति की लालसा के कारण समाज में ईर्ष्या, द्वेष, नफ़रत और ख़ून-ख़राबी चलती रहेगी. हमारा विश्वास है कि अगर देश की विकास-योजना आज के स्वामित्व-सम्बन्धों पर चोट नहीं करती तो उसके द्वारा श्रीमान लोग दुःखी-दीन का मन चाहा शोषण करेंगे. अगर आज की समाज-रचना को ज्यों का त्यों बरक़रार रखा गया तो आर्थिक विषमता तेज़ी से बढ़ेगी और संहारक-प्रवृत्तियों को प्राणदान मिलेगा. आधुनिक विज्ञान मानव को चेतावनी दे रहा है कि आज की चालू जीवन-धारा को बदल कर, बटोरने की जगह बांटने की प्रथा क़ायम करनी होगी, संचय के बजाये समर्पण की वृत्ति निर्माण करनी होगी और अतिहिंसा को छोड़कर अहिंसा के साधन अपनाने होंगे.

जो राष्ट्र प्रगतिशील माने जाते हैं उनके लिये अपना पुराना चोला छोड़कर कायाकल्प कर लेना ज़रूर मुश्किल होगा. लेकिन भारत को तो इसमें कोई दुश्वारी नहीं होनी चाहिये जिसकी जवानी की पंखड़ी अभी खिलना शुरू ही हो रही है. फिर, हमने अपनी आज़ादी भी अनोखे ढङ्ग से प्राप्त की है. भारत में चर्खे को झंडे के बीचोंबीच में स्थान दिया गया. यह चर्खा केवल उत्पादन का साधन नहीं, जीवन के नये मूल्यों का प्रतीक है, क्रान्ति की नई प्रक्रिया का संकेत है. यह चर्खा अतिहिंसा के सामने अहिंसा का दावेदार है.

دیپک ہے ۔ یہ پدھتی یا جیوتی کوئی دقیانوسی یا پرتیکریا شیل نہیں، بلکہ اتیئنت ویگیانک اور وویک پورن ہے ۔ اس کی کچھ صفائی کی ضرورت ہے ۔

گرامودیوگ کے معنی مشینوں کا بہشکار نہیں ہے ۔ گرامودیوگ کا رہسیہ ہے اپنی بنیادی ضرورتوں—کھانا، کپڑا اور مکان میں—سواولمبن ۔ وگیان کی ایٹامک کھوجیں یہ کہہ رہی ہیں کہ یہ بنیادی سواولمبن تو انسان کو سدھنا چاہئیں ۔ لیکن ہر آدمی ان تینوں باتوں میں پورا سواولمبی اکیلے نہیں ہو سکتا ۔ اس لئے وہ پاس پڑوس کا سہیوگ لے اور ہر گاؤں، یا جن سنکھیا کی چھوٹی سے چھوٹی اکائی، بنیاداً سواولمبی ہو ۔ دونوں لڑائیوں نے دکھلا دیا کہ بنیادی ضرورتوں میں پراولمبن خطرناک اور گھاتک ہے ۔ کھانا، کپڑا اور مکان کے معاملے میں، چھوٹی سے چھوٹی اکائیاں اپنے بل پر کھڑی ہونی چاہئیں ۔ باقی کی نیاری نیاری آوشیکتاؤں میں ہم پرسپراولمبن کر سکتے ہیں ۔ لیکن یہ تبھی سمبھو ہے جب سمپتی پر سوامتو ویکتی یا سرکار کا نہ ہو کر سماج کا ہو اور شاریرک شرم و مانسک شرم میں کوئی بھید بھاؤ نہ کیا جائے ۔ یعنی، نئی سماج رچنا کی درکار ہے ۔

آج وگیان بھی نئی سماج رچنا کی مانگ کر رہا ہے ۔ اگر اُتپادن کے سادھنوں پر نجی سوامتو قایم رہتا ہے تو جیسا آج ہو رہا ہے، اُتپادن اُن سے ونچت رہیگا اور ان سادھنوں کی پراپتی کی لالسا کے کارن سماج میں ایرشیا، دویش، انفرت اور خون خرابی چلتی رہیگی ۔ ہمارا وشواس ہے کہ اگر دیش کی وکاس یوجنا آج کے سوامتو سمبندھوں پر چوٹ نہیں کرتی تو اُس کے دوارا شریمان لوگ دوکھی دین کا من چاہا شوشن کرینگے ۔ اگر آج کی سماج رچنا کو جیوں کا تیوں برقرار رکھا گیا تو آرتھک وشمتا تیزی سے بڑھیگی اور سنگھارک پرورتیوں کو پران دان ملیگا ۔ آدھونک وگیان مانو کو چیتاونی دے رہا ہے کہ آج کی چالو جیون دھارا کو بدل کر، بٹورنے کی جگہہ بانٹنے کی پرتھا قایم کرنی ہوگی، سنچے کے بجائے سمرپن کی ورتی نرمان کرنی ہوگی اور اتی ہنسا کو چھوڑ کر اہنسا کے سادھن اپنانے ہونگے ۔

جو راشٹر پرگتی شیل مانے جاتے ہیں اُن کے لئے اپنا پرانا چولا چھوڑ کر کایا کلپ کر لینا ضرور مشکل ہوگا ۔ لیکن بھارت کو تو اس میں کوئی دشواری نہیں ہونی چاہئے جس کی جوانی کی پنکھڑی ابھی کھلنا شروع ہی ہو رہا ہے ۔ پھر، ہم نے اپنی آزادی بھی انوکھے ڈھنگ سے پراپت کی ہے ۔ بھارت میں چرخے کو جھنڈے کے بیچوں بیچ میں استھان دیا گیا ۔ یہ چرخہ کیول اُتپادن کا سادھن نہیں، جیون کے نئے مولیوں کا پرتیک ہے، کرانتی کی نئی پرکریا کا سنکیت ہے ۔ یہ چرخہ اتی ہنسا کے سامنے اہنسا کا دعویدار ہے ۔

इस कारण से हम भारत वालों की यह खास ज़िम्मेदारी भी हो जाती है कि जिस मार्ग से हम स्वतंत्र हुए, उसी मार्ग पर आगे बढ़ते चले चलें.

इस तरह हम देखते हैं कि एक तरफ़ से आधुनिक विज्ञान, दूसरी तरफ़ से हमारी आज़ादी की मंज़िल का चमकता हुआ उज्जवल इतिहास और तीसरी तरफ़ से हमारे देश की आर्थिक दरिद्रता तीनों का यही इशारा है कि राष्ट्र निर्माण के लिये हमको नई शोध करनी होगी, अपना नया मार्ग खोजना पड़ेगा. इसके माने यह हो जाते हैं कि हमको एक नये सागर पर तैरना होगा जिस पर अब तक कोई दूसरा नहीं गया है. इस नई तैराकी में आनन्द और जोखिम दोनों हैं. और अगर हम ऐसा करते हैं तो ग्रामोद्योग का बेशक जगह है. लेकिन ग्रामोद्योग को बेरोज़गारों, लाचारों का क्षणिक आधार मानना अन्याय करना है. ग्रामोद्योग नये युग के—शान्ति, विज्ञान और अहिंसा के युग के—नवदूत हैं. इसलिये अगर हम यह कोशिश करेंगे कि आज की पूंजी-प्रेरित, मशीन-प्रधान और शस्त्रास्त्र-आधारित समाज रचना में ग्रामोद्योग फले फूलें तो खुद भी धोखा खायेंगे और ग्रामोद्योग को भी चौपट करेंगे. यही पिछले सत्तर-अस्सी साल से देश की औद्योगिक 'प्रगति' के अन्दर होता आ रहा है. ग्रामोद्योग हिंसक और युद्ध-प्रिय छत्र छाया में पनपने के बजाय मुरझाते ही चले जायेंगे.

ऊपर की बात का सार यह है कि यह बात साफ़ होनी और खुलनी चाहिये कि राष्ट्र-नव-निर्माण के हमारे उद्देश्य क्या हैं, भारतीय संयोजन के हमारे लक्ष्य क्या हैं? अगर हमारा आग्रह यह हो कि हम आज योरप व अमरीका जैसे 'प्रगतिशील' बन जायें, तो हम नम्रता से कहना चाहते हैं कि तब ग्रामोद्योग के लिये भारत में कोई स्थान नहीं है. लेकिन अगर पश्चिम के अनुभव से फ़ायदा उठाकर, हम अपने देश की मिट्टी के अनुकूल वैज्ञानिक बुद्धि से, नये ढङ्ग से देश का निर्माण करना चाहते हैं तो आज की चालू मान्यताओं को प्रणाम करना होगा, वर्तमान सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ढाँचे को बुनियाद से ही बदलना पड़ेगा और नये मूल्यों, नये स्तम्भों, नई मान्यताओं को प्रतिष्ठा देकर उनके आधार पर भारत-भवन की रचना की तैयारी के लिये कमर कसना होगा. और नई समाज-रचना क़ायम करने के लिये इस क्रान्तिकारी काम में, ग्रामोद्योग का वही महत्वपूर्ण स्थान होगा जो सौर-मंडल में सूर्य का है.

اِس کارن سے ہم بھارت والوں کی یہ خاص زمہ داری بھی ہو جاتی ہے کہ جس مارگ سے ہم سوتنتر ہوئے' اُسی مارگ پر آگے بڑھے چلے جائیں ۔

اِس طرح ہم دیکھتے ھیں کہ ایک طرف سے آدھونک وگیان' دوسری طرف سے ھماری آزادی کی منزل کا چمکتا ھوا اُجول اِتہاس اور تیسری طرف سے ھمارے دیش کی آرتھک دردرتا—تینوں کا یہی اشارہ ھے کہ راشٹر نرمان کے لئے ہم کو نئی شودھ کرنی ھوگی' اپنا نیا مارگ کھوجنا پڑیگا ۔ اِس کے معنے یہ ھو جاتے ھیں کہ ھم کو ایک نئے ساگر پر تیرنا ھوگا جس پر اب تک کوئی دوسرا نہیں گیا ھے ۔ اس نئی تیرا کی میں آنند اور جوکھم دونوں ھیں ۔ اور اگر ھم ایسا کرتے ھیں تو گرامودیوگ کو بےشک جگہہ ھے ۔ لیکن گرامودیوگ کو بے روزگاروں' لاچاروں کا چھنک آدھار ماننا انیایہ کرنا ھے ۔ گرامودیوگ نئے یگ کے—شانتی' وگیان اور اھنسا کے یگ کے—نودوت ھیں ۔ اِس لئے اگر ھم یہ کوشش کرینگے کہ آج کی پونجی پریرت' مشین پردھان اور شستراستر آدھارت سماج رچنا میں گرامودیوگ پھلے پھولے تو خود بھی دھوکا کھائیں گے اور گرامودیوگ کو بھی چوپٹ کرینگے ۔ یہی پچھلے ستر اسی سال سے دیش کی اُدیوگک 'پرگتی' کے اندر ھوتا آرھا ھے ۔ گرامودیوگ ھنسک اور یدھ پریہ چھترچھایا میں پنپنے کے بجائے مرجھاتے ھی چلے جائیں گے ۔

اُوپر کی بات کا سار یہ ھے کہ بات صاف ھونی اور کھلنی چاھئے کہ راشٹر نو نرمان کہ ھمارے اُدیش کیا ھیں' بھارتیہ سنیوجن کے ھمارے لکش کیا ھیں ؟ اگر ھمارا آگرہ یہ ھو کہ ھم آج یورپ و امریکہ جیسے 'پرگتی شیل' بن جائیں' تو ھم نمرتا سے کہنا چاھتے ھیں کہ تب گرامودیوگ کے لئے بھارت میں کوئی استھان نہیں ھے ۔ لیکن اگر پشچم کے انوبھو سے فائدہ اُٹھا کر' ھم اپنے دیش کی مٹی کے انوکول ویگیانک بدھی سے' نئے ڈھنگ سے دیش کا نرمان کرنا چاھتے ھیں تو آج کی چالو مانتاؤں کو پرنام کرنا ھوگا' ورتمان ساماجک' آرتھک اور راجنیتک ڈھانچے کو بنیاد سے ھی بدلنا پڑیگا اور نئے مولیوں' نئے استمبھوں' نئی مانتاؤں کو پرتشٹھا دیکر اُن کے آدھار پر بھارت بھون کی رچنا کی تیاری کے لئے کمر کسنا ھوگا ۔ اور نئی سماج رچنا قایم کرنے کے لئے اِسی کرانتیکاری کام میں' گرامودیوگ کا بڑا مہتوپورن استھان ھوگا جو سور منڈل میں سوریہ کا ھے ۔

एशिया की एकता के लिये हैदराबाद कुल हिंद कानफ़रेंस

आज से हज़ारों बरस पहले जबकि योरप के बड़े से बड़े देश अभी असभ्य या अर्धसभ्य हालत में थे एशिया और अफ़रीक़ा में बड़ी बड़ी सभ्यताएँ जन्म ले चुकी थीं. उस प्राचीन ज़माने में चीन, भारत, ईरान, सुमेर, बाबुल, और मिस्र बड़ी बड़ी और ऊँची सभ्यताओं के गहवारे थे. अमरीका का उस समय की सभ्य दुनिया में कहीं नाम तक न था. इसके बाद यूनान और रोम की सभ्यताओं का समय आया. यूनान एक अर्ध एशियायी देश था और यूनानी सभ्यता अर्ध एशियाई सभ्यता थी. रोम के उभरने के साथ साथ पहली बार एक शुद्ध योरूपीय सभ्यता का आरम्भ हुआ. पर रोमन सभ्यता के अच्छे से अच्छे दिनों में भी आधे से अधिक योरप जिसमें इंगलैंड, फ़्रांस और जरमनी सब शामिल थे सभ्यता की निगाह से बहुत पिछड़ा हुआ प्रदेश माना जाता था.

ज़माने ने पलटा खाया. ख़ासकर भाप और बिजली की ईजाद के साथ साथ योरप के देशों में नई चहल पहल शुरू हुई. योरपियन क़ौमों की आर्थिक और राजनैतिक लालसाएँ बढ़ीं. एशिया और अफ़रीक़ा की हज़ारों वर्ष पुरानी सभ्यताओं में कमज़ोरियाँ आईं. उन कमज़ोरियों में यहाँ जाने की ज़रूरत नहीं है. एशिया और अफ़रीक़ा के देशों पर योरप वालों के हमले शुरू हुए. यहाँ तक कि अनेक देशों पर योरप वालों का कम या अधिक क़ब्ज़ा हो गया. लगभग दो सदी तक एशिया और अफ़रीक़ा में योरप वालों का प्रभुत्व रहा.

ज़माने ने फिर पलटा खाया. एशिया की बड़ी बड़ी क़ौमें जागीं. चीन और भारत जैसे बड़े बड़े देश योरप वालों के पंजे से आज़ाद हुए. आज़ादी की लहर और देशों में भी फैली. आज एशिया और अफ़रीक़ा में जगह जगह इस आज़ादी की कोशिशें जारी हैं और इसके ख़िलाफ़ जगह जगह ही पच्छिम की क़ौमों ख़ासकर अमरीका, इंगलैंड, फ़्रांस, बेलजियम, हौलेंड, स्पेन और पुर्तगाल की तरफ़ से

ایشیا کی ایکتا کے لئے حیدرآباد کل ھند کانفرنس

آج سے ھزاروں برس پہلے جبکہ یورپ کے بڑے سے بڑے دیش ابھی اسبھیہ یا اردھ سبھیہ حالت میں تھے ایشیا اور افریقہ میں بڑی بڑی سبھیتائیں جنم لے چکی تھیں ۔ اُس پراچین زمانے میں چین، بھارت، ایران، سمیر، بابل اور مصر بڑی بڑی اور اُونچی سبھیتاؤں کے گہوارے تھے ۔ امریکہ کا اُس سمے کی سبھیہ دنیا میں کہیں نام تک نہ تھا ۔ اِس کے بعد یونان اور روم کی سبھیتاؤں کا سمے آیا ۔ یونان ایک اردھ ایشیائی دیش تھا اور یونانی سبھیتا اردھ ایشیائی سبھیتا تھی. روم کے اُبھرنے کے ساتھ ساتھ پہلی بار ایک شدھ یوروپیہ سبھیتا کا آرمبھ ھوا ۔ پر رومن سبھیتا کے اچھے سے اچھے دنوں میں بھی آدھے سے ادھک یورپ جس میں اِنگلینڈ، فرانس اور جرمنی سب شامل تھے سبھیتا کی نگاہ سے بہت پچھڑا ھوا پردیش مانا جاتا تھا ۔

زمانے نے پلٹا کھایا ۔ خاصکر بھاپ اور بجلی کی اِیجاد کے ساتھ ساتھ یورپ کے دیشوں میں نئی چہل پہل شروع ھوئی ۔ یورپین قوموں کی آرتھک اور راجنیتک لالسائیں بڑھیں ۔ اِیشیا اور افریقہ کی ھزاروں ورش پرانی سبھیتاؤں میں کمزوریاں آئیں ۔ اُن کمزوریوں میں یہاں جانے کی ضرورت نہیں ھے ۔ اِیشیا اور افریقہ کے دیشوں پر یورپ والوں کے حملے شروع ھوئے ۔ یہاں تک کہ انیک دیشوں پر یورپ والوں کا کم یا ادھک قبضہ ھوگیا ۔ لگ بھگ دو صدی تک اِیشیا اور افریقہ میں یورپ والوں کا پربھوتو رہا ۔

زمانے نے پھر پلٹا کھایا ۔ ایشیا کی بڑی بڑی قومیں جاگیں. چین اور بھارت جیسے بڑے بڑے دیش یورپ والوں کے پنجے سے آزاد ھوئے ۔ آزادی کی لہر اور دیشوں میں بھی پھیلی. آج ایشیا اور افریقہ میں جگہ جگہ اِس آزادی کی کوششیں جاری ھیں اور اِس کے خلاف جگہ جگہ ھی پچھم کی قوموں خاصکر امریکہ، انگلینڈ، فرانس، بیلجیم، ھالینڈ، اِسپین اور پرتگال کی طرف سے

एशिया और अफ़रीक़ा के उनके अनेक देशों पर अपना प्रभुत्व बनाए रखने और दूसरे देशों पर से अपने खोये हुए प्रभुत्व को फिर से क़ायम करने की कोशिशें भी जारी हैं. ठीक यह इस समय की हालत है.

ऐसी हालत में "एशिया की एकता" की आवाज़ या "एशिया और अफ़रीक़ा के सब देशों की एकता" की आवाज़ उठना एक क़ुदरती बात है. ख़ासकर जबकि "फूट डालो और शासन करो" की अपनी पुरानी चाल के अनुसार पच्छिम की साम्राज्य प्रेमी क़ौमें एशिया और अफ़रीक़ा की क़ौमों को एक दूसरे से लड़ाने की भरसक चालें चल रही हैं, एक दूसरे का साथ देने और मिलकर खड़े होने में ही हम सबका और दुनिया का भला है.

इसीलिये अप्रैल सन् 1955 में दिल्ली में सब एशियायी देशों की एक कानफ़रेंस हुई थी. उस कानफ़रेंस में एक "इंडियन कमेटी फ़ौर एशियन सौलिडेरिटी" (एशियायी एकता के लिए भारतीय कमेटी) बनी. उस कमेटी की तरफ़ से अक्तूबर सन् 1955 में एशियायी एकता को और मज़बूत करने के लिए हैदराबाद में एक आल इंडिया कानफ़रेंस हुई. इस कानफ़रेंस में पूरब से लेकर पच्छिम तक और उत्तर से लेकर दक्खिन तक भारत के सब प्रांतों से बारह सौ से ऊपर प्रतिनिधि शामिल हुए.

हैदराबाद की कानफ़रेंस एक तरह से जनता और सरकार दोनों की मिली-जुली कानफ़रेंस थी. देश की सब राजकाजी पार्टियों के लोग और उन सब पार्टियों की तरफ़ से चुने हुए पारलिमेन्ट और धारा सभाओं के मेम्बर, यहाँ तक कि धारा सभाओं के स्पीकर और सरकारी वज़ीर भी उसमें शामिल थे. उनके रियासतों के गवरनरों, चीफ़ मिनिस्टरों, भारत सरकार के मिनिस्टरों, और युनिवर्सिटियों के वाइस चांसलरों ने कानफ़रेंस की सफलता के लिए अपने संदेश भेजे. दिल्ली विधान सभा के लगभग सब मेम्बरों ने और उत्तर प्रदेश की धारा सभा के अस्सी से ऊपर मेम्बरों ने अपनी सहानुभूति के पत्र और तार भेजे.

कानफ़रेंस में जो प्रस्ताव पास हुए उनमें 'पंचशील' पर यानी सब देशों के मिलकर रहने, एक दूसरे की अखन्डता और आज़ादी की क़दर करने और एक दूसरे के अन्दर के मामलों में दख़ल न देने पर ज़ोर दिया गया, दुनिया से पराधीनता और एक जाति पर दूसरी जाति के प्रभुत्व को मिटाने को ज़रूरी बताया गया, एटम बम और हाइड्रोजन बम जैसे हथियारों की क़तई बंदिश की मांग की गई. फ़ौजी गुटबंदियों के ख़िलाफ़ और एशिया के मामलों में योरप और 'अमरीका वालों' की मदाख़लत के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई गई, नए चीन के राष्ट्र सभा में लिए जाने की मांग को दुहराया गया, वग़ैरा वग़ैरा. यह भी एलान किया गया कि

ایشیا اور افریقہ کے انیک دیشوں پر اپنا پربھوتو جمائے رکھنے اور دوسرے دیشوں پر سے اپنے کھوئے ہوئے پربھوتو کو پھر سے قایم کرنے کی کوششیں بھی جاری ھیں ۔ ٹھیک یہ اِس سمے کی حالت ھے ۔

ایسی حالت میں "ایشیا کی ایکتا" کی آواز یا "ایشیا اور افریقہ کے سب دیشوں کی ایکتا" کی آواز اُٹھنا ایک قدرتی بات ھے ۔ خاصکر جبکہ "پھوٹ ڈالو اور شاسن کرو" کی اپنی پرانی چال کے انوسار پچھم کی سامراجیہ پریمی قومیں ایشیا اور افریقہ کی قوموں کو ایک دوسرے سے لڑانے کی بھرسک چالیں چل رھی ھیں' ایک دوسرے کا ساتھ دینے اور ملکر کھڑے ہونے میں ھی ھم سب کا اور دنیا کا بھلا ھے ۔

اِسی لئے اپریل سن 1955 میں دلی میں سب ایشائی دیشوں کی ایک کانفرنس ھوئی تھی ۔ اُس کانفرنس میں ایک "اِنڈین کمیٹی فار ایشین سولیڈیرٹی" (ایشیا کی ایکتا کے لئے بھارتیہ کمیٹی) بنی ۔ اُس کمیٹی کی طرف سے اکتوبر سن 1955 میں ایشیائی ایکتا کو اور مضبوط کرنے کے لئے حیدرآباد میں ایک آل اِنڈیا کانفرنس ھوئی ۔ اُس کانفرنس میں پورب سے لیکر پچھم تک اور اُتر سے لیکر دکھن تک بھارت کے سب پرانتوں سے بارہ سو سے اُوپر پرتینیدھی شامل ھوئے ۔

حیدرآباد کی کانفرنس ایک طرح سے جنتا اور سرکار دونوں کی ملی جلی کانفرنس تھی۔ دیش کی سب راجکاجی پارٹیوں کے لوگ اور اُن سب پارٹیوں کی طرف سے چنے ھوئے پارلیمنٹ اور دھارا سبھاؤں کے ممبر' یہاں تک کہ دھارا سبھاؤں کے اِسپیکر اور سرکاری وزیر بھی اِس میں شامل تھے۔ اُن کے ریاستوں کے گورنروں' چیف منسٹروں' بھارت سرکار کے منسٹروں اور یونیورسٹیوں کے وائس چانسلروں نے کانفرنس کی سپھلتا کے لئے اپنے سندیش بھیجے ۔ دلی ودھان سبھا کے لگ بھگ سب ممبروں نے اور اُتر پردیش کی دھارا سبھا کے اَسی سے اُوپر ممبروں نے اپنی سہانبھوتی کے پتر اور تار بھیجے ۔

کانفرنس میں جو پرستاؤ پاس ھوئے اُن میں 'پنچ شیل' پر یعنی سب دیشوں کے ملکر رھنے' ایک دوسرے کی اکھنڈتا اور آزادی کی قدر کرنے اور ایک دوسرے کے اندر کے معاملوں میں دخل نہ دینے پر زور دیا گیا' دنیا سے پرادھینتا اور ایک جاتی پر دوسری جاتی کے پربھوتو کو مٹانے کو ضروری بتایا گیا' ایٹم بم اور ھائیڈروجن بم جیسے ھتیاروں کی قطعی بندش کی مانگ کی گئی' فوجی گٹ بندیوں کے خلاف اور ایشیا کے معاملوں میں یورپ اور امریکہ والوں کی مداخلت کے خلاف آواز اُٹھائی گئی' نئے چین کے راشٹر سبھا میں لئے جانے کی مانگ کو دوھرایا گیا' وغیرہ وغیرہ ۔ یہ بھی اعلان کیا گیا کہ

इंडियन [illegible] देश में और विदेशों में अपने प्रचार के लिए बहुत सी भाषाओं में पुस्तकें और पत्र पत्रिकाएँ निकालने वाली है.

कानफ़रेंस में इस बात पर भी ज़ोर दिया गया कि एशिया के अलग अलग देशों में तिजारत और तरह तरह के माल का लेन देन बढ़ाया जावे, कलचर यानी संस्कृति के मैदान में भारत की अनेक सांस्कृतिक संस्थाएँ, एशिया के अलग अलग देशों की कला और साहित्य को दूसरे देशों में पहुँचाने और फैलाने की कोशिश करें ताकि एक विशाल और सुंदर एशियाई कलचर रूप ले सके और आगे के लिये एक वर्ल्ड कलचर यानी जग-संस्कृति की बुनियादें पड़ सकें.

समाजी मामलों में औरतों और बच्चों की रक्षा और खबरगीरी पर खास ज़ोर दिया गया. कहा गया कि साइंस की उन्नति में भी एशिया के सब देशों को अपने अपने यहाँ की खोजों और ईजादों से एक दूसरे को मालामाल करने की कोशिश करनी चाहिए. यह दिखाया गया कि दुनिया की आज़ादी और दुनिया की शांति के लिए पहले एशिया की एकता सब से अधिक ज़रूरी है.

स्वागत समिति के अध्यक्ष उसमानिया युनिवर्सिटी के वाइस-चांसलर डा० भगवंतम ने अपने भाषण में बड़ी सुन्दरता के साथ कहा कि इस युग की सब से बड़ी घटना न ऐटम या हाइड्रोजन बम हैं, और न वह राजकाजी उथल पुथल है जिसने इस समय दुनिया को हिला रक्खा है, बल्कि युग की सब से बड़ी घटना "सारे मानव समाज की बढ़ती हुई एकता" है. उन्हों ने एशिया की नई जागृति पर काफ़ी ज़ोर दिया. विश्व शांति के लिए भारत की कोशिशों को सराहते हुए उन्होंने बताया कि अगर एशिया की क़ौमें अपने अन्दर की कमज़ोरियों को जीतना और अपने ऊपर क़ाबू रखना सीख जाएँ तो आने वाले ज़माने में वह संसार को प्रेम और शांति का सच्चा रास्ता दिखला सकती हैं.

दूसरे बोलने वालों ने कुछ एशियायी देशों के साथ अमरीका और इंगलैंड की फ़ौजी गुट-बंदियों को सारी एशिया और सारी दुनिया के लिए खतरनाक बताते हुए लोगों को उनसे आगाह किया. इस बात पर ज़ोर देते हुए कि जंग को दुनिया से हमेशा के लिये ख़त्म कर देना चाहिए और दुनिया की सब फ़ौजें धीरे धीरे ख़त्म हो जानी चाहिएं, सोवियत रूस की इस बात के लिए सराहना की गई कि उसने अपनी ख़ुशी से अपनी साढ़े छै लाख फ़ौज कम कर दी. पंचशील को एशियाई क़ौमों की एकता का आधार बताया गया. साफ़ साफ़ कहा गया कि दुनिया की जो क़ौम भी जहाँ भी अपनी आज़ादी के लिए कोशिश कर रही है एशिया की सब क़ौमें उस के साथ हैं. बांडुंग की

انڈین کونسل فار کلچرل ریلیشنز دیش میں اور ودیشوں میں اپنے پرچار کے لئے بہت سی بھاشاؤں میں پستکیں اور پتر پتریکائیں نکالنے والی ہے ۔

کانفرنس میں اس بات پر بھی زور دیا گیا کہ ایشیا کے الگ الگ دیشوں میں تجارت اور طرح طرح کے مال کا لین دین بڑھایا جاوے، کلچر یعنی سنسکرتی کے میدان میں بھارت کی انیک سانسکرتک سنستھائیں، ایشیا کے الگ الگ دیشوں کی کلا اور ساہتیہ کو دوسرے دیشوں میں پہونچانے اور پھیلانے کی کوشش کریں تاکہ ایک وشال اور سندر ایشیائی کلچر روپ لے سکے اور آگے کے لئے ایک ورلڈ کلچر یعنی جگ سنسکرتی کی بنیادیں پڑ سکیں ۔

سماجی معاملوں میں عورتوں اور بچوں کی رکشا اور خبرگیری پر خاص زور دیا گیا ۔ اور کہا گیا کہ سائنس کی اُنتی میں بھی ایشیا کے سب دیشوں کو اپنے اپنے یہاں کی کھوجوں اور ایجادوں سے ایک دوسرے کو مالا مال کرنے کی کوشش کرنی چاہئے ۔ یہ دکھایا گیا کہ دنیا کی آزادی اور دنیا کی شانتی کے لئے پہلے ایشیا کی ایکتا سب سے ادھک ضروری ہے ۔

سواگت سمیتی کے ادھیکش عثمانیہ یونیورسٹی کے وائس چانسلر ڈاکٹر بھگونتم نے اپنے بھاشن میں بڑی سندرتا کے ساتھ کہا کہ اِس یگ کی سب سے بڑی گھٹنا نہ ایٹم یا ہائڈروجن بم ہیں اور نہ وہ راجکاجی اتھل پتھل ہے جس نے اس سمے دنیا کو ہلا رکھا ہے' بلکہ یگ کی سب سے بڑی گھٹنا "سارے مانو سماج کی بڑھتی ہوئی ایکتا" ہے ۔ اُنھوں نے ایشیا کی نئی جاگرتی پر کافی زور دیا ۔ وشو شانتی کے لئے بھارت کی کوششوں کو سراہتے ہوئے اُنھوں نے بتایا کہ اگر ایشیا کی قومیں اپنے اندر کی کمزوریوں کو جیتنا اور اپنے اُوپر قابو رکھنا سیکھ جائیں تو آنے والے زمانے میں وہ سنسار کو پریم اور شانتی کا سچا راستہ دکھلا سکتی ہیں ۔

دوسرے بولنے والوں نے کچھ ایشیائی دیشوں کے ساتھ امریکہ اور انگلینڈ کی فوجی گٹ بندیوں کو ساری ایشیا اور ساری دنیا کے لئے خطرناک بتاتے ہوئے لوگوں کو اُن سے آگاہ کیا ۔ اِس بات پر زور دیتے ہوئے کہ جنگ کو دنیا سے ہمیشہ کے لئے ختم کر دینا چاہئے اور دنیا کی سب فوجیں دھیرے دھیرے ختم ہو جانی چاہئیں' سوویت روس کی اِس بات کے لئے سراہنا کی گئی کہ اُس نے اپنی خوشی سے اپنی ساڑھے چھ لاکھ فوج کم کر دی ۔ پنچ شیل کو ایشیائی قوموں کی ایکتا کا آدھار بتایا گیا ۔ صاف صاف کہا گیا کہ دنیا کی جو قوم بھی جہاں بھی اپنی آزادی کے لئے کوشش کر رہی ہے ایشیا کی سب قومیں اس کے ساتھ ہیں ۔ بانڈونگ کی

इस कानफ़रेंस के फ़ैसलों को सराहा गया जिसमें एशिया और अफ़रीक़ा के उनतीस देशों की सरकारों के प्रतिनिधियों ने मिलकर एशिया और अफ़रीक़ा की एकता की आवाज़ उठाई थी. अगस्त सन् 1955 में जनीवा के अंदर सब देशों के साइंसदानों की एक कानफ़रेंस हुई थी, जिसमें दुनिया भर के साइंसदानों ने इस बात पर ज़ोर दिया था कि ऐटम शक्ति और हाइड्रोजन शक्ति को इनसानों की हत्या के लिए इस्तेमाल न किया जावे बल्कि दुनिया से ग़रीबी को मिटाने और दुनिया भर की आम जनता के जीवन को अधिक ख़ुशहाल बनाने के लिये काम में लाया जावे. दुनिया के साइंसदानों के उस फ़ैसले की तारीफ़ की गई. हिंदचीन में और फ़ारमूसा में पच्छिमी क़ौमों की ज़बरदस्तियों की निन्दा की गई. जापान के फिर से पूरी तरह आज़ाद किए जाने पर ज़ोर दिया गया. अरब देशों में योरपवालों की साज़िशों और अफ़रीक़ा में काले गोरे के भेद पर दुख प्रकट किया गया, वग़ैरह वग़ैरह.

सदर श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि जनता की पूरी आज़ादी के लिए बड़े बड़े उद्योग धंधों के साथ साथ छोटे उद्योग धंधों और घरेलू दस्तकारियों को ज़िंदा रखना और तरक़्क़ी देना ज़रूरी है. उन्होंने कहा कि क़ौमों क़ौमों के बीच की तिजारत वही होनी चाहिए जिसमें सब का भला हो, वह नहीं जिसमें एक देश दूसरे देश को चूसे या उससे बेजा फ़ायदा उठाने की कोशिश करे.

कलचर यानी संस्कृति के सवाल पर अलग अलग कलचरों के साथ साथ एक वर्ल्ड कलचर यानी जग-संस्कृति को रूप देने पर काफ़ी ज़ोर दिया गया.

हैदराबाद कानफ़रेंस का शायद सब से सुन्दर प्रस्ताव समाजी प्रस्ताव था जिसमें औरतों और बच्चों के स्वास्थ की रक्षा, औरतों और मर्दों के बराबर के हक़ों, वेश्यावृत्ति के दुनिया से मिटाए जाने और एशियाई देशों में समाजी मेल जोल को बढ़ाने पर ज़ोर दिया गया. इस प्रस्ताव से मालूम होता है कि एशियाई देशों की एकता की मांग केवल एक राजकाजी चीज़ ही नहीं है बल्कि सचमुच दुनिया की एकता, दुनिया की ख़ुशहाली और दुनिया की शांति में एक बहुत बड़ा हिस्सा लेने वाली है.

भारत से बाहर चीन, कोरिया और वीयतनाम जैसे देशों से जो सहानुभूति के संदेश आए थे उन्होंने कान्फ़रेन्स की उपयोगिता और उसकी शक्ति को और अधिक बढ़ा दिया.

हम एशियाई एकता की इस लहर का स्वागत करते हैं और कान्फ़रेन्स की सदर श्रीमती रामेश्वरी नेहरू को और कान्फ़रेन्स में हिस्सा लेने वाले सब भाइयों और बहनों को हृदय से बधाई देते हैं.

15-1-56 —सुन्दर लाल

اس کانفرنس کے فیصلوں کو سراہا گیا جس میں ایشیا اور افریقہ کے اُنتیس دیشوں کی سرکاروں کے پرتیندھیوں نے مل کر ایشیا اور افریقہ کی ایکتا کی آواز اُٹھائی تھی۔ اگست سن 1955 میں جنیوا کے اندر سب دیشوں کے سائنداںوں کی ایک کانفرنس ہوئی تھی، جس میں دنیا بھر کے سائنداںوں نے اِس بات پر زور دیا تھا کہ ایٹم شکتی اور ہائڈروجن شکتی کو انسانوں کی ہتیا کے لئے اِستعمال نہ کیا جاوے بلکہ دنیا سے غریبی کو مٹانے اور دنیا بھر کی عام جنتا کے جیون کو ادھک خوشحال بنانے کے لئے کام میں لیا جاوے، دنیا کے سائنسدانوں کے اُس فیصلے کی تعریف کی گئی۔ ہندچین میں اور فارموسا میں پچھمی قوموں کی زبردستیوں کی نندا کی گئی۔ جاپان کے پھر سے پوری طرح آزاد کیئے جانے پر زور دیا گیا۔ عرب دیشوں میں یورپ والوں کی سازشوں اور افریقہ میں کالے گورے کے بھید پر دکھ پرکٹ کیا گیا، وغیرہ وغیرہ۔

صدر شریمتی رامیشوری نہرو نے اِس بات پر بھی زور دیا کہ جنتا کی پوری آزادی کے لئے بڑے بڑے اُدیوگ دھندھوں کے ساتھ ساتھ چھوٹے اُدیوگ دھندھوں اور گھریلو دستکاریوں کو زندہ رکھنا اور ترقی دینا ضروری ہے۔ اُنہوں نے کہا کہ قوموں قوموں کے بیچ کی تجارت وہی ہونی چاہئے جس میں سب کا بھلا ہو، وہ نہیں جس میں ایک دیش دوسرے کو چوسے یا اُس سے بیجا فائدہ اُٹھانے کی کوشش کرے۔

کلچر یعنی سنسکرتی کے سوال پر الگ الگ کلچروں کے ساتھ ساتھ ایک ورلڈ کلچر یعنی جگ سنسکرتی کو روپ دینے پر کافی زور دیا گیا۔

حیدرآباد کانفرنس کا شاید سب سے سندر پرستاؤ سماجی پرستاؤ تھا جس میں عورتوں اور بچوں کے سواستھ کی رکشا، عورتوں اور مردوں کے برابر کے حقوں، ویشیاورتی کے دنیا سے مٹائے جانے اور ایشیائی دیشوں میں سماجی میل جول کے بڑھانے پر زور دیا گیا۔ اِس پرستاؤ سے معلوم ہوتا ہے کہ ایشائی دیشوں کی ایکتا کی مانگ کیول ایک راجکاجی چیز ہی نہیں ہے بلکہ سچ مچ دنیا کی ایکتا، دنیا کی خوشحالی اور دنیا کی شانتی میں ایک بہت بڑا حصہ لینے والی ہے۔

بھارت سے باہر چین، کوریا اور ویت نام جیسے دیشوں سے جو سہانبھوتی کے سندیش آئے تھے اُنہوں نے کانفرنس کی اُپیوگتا اور اُس کی شکتی کو اور بڑھا دیا۔

ہم ایشیائی ایکتا کی اِس لہر کا سواگت کرتے ہیں اور کانفرنس کی صدر شریمتی رامیشوری نہرو کو اور کانفرنس میں حصہ لینے والے سب بھائیوں اور بہنوں کو ہردئے سے بدھائی دیتے ہیں۔

—سندر لال 15, 1. 56

मानव एकता के शुभ प्रयत्न

दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों के क़ायम करने वाले और सब धर्मों की धार्मिक पुस्तकें इस बात पर ज़ोर देती हैं कि इस धरती के सब आदमी एक कुनबा हैं, और हम सब को एक कुनबे की तरह ही मिल जुल कर प्रेम के साथ रहना चाहिये. इस मेल जोल को बढ़ाने का एक तरीक़ा यह भी है कि अलग अलग देशों में आना जाना बढ़े और अलग अलग देशों के लोग एक दूसरे की कलचर, एक दूसरे की कला, एक दूसरे के साहित्य और एक दूसरे के महापुरुषों की क़दर करना सीखें.

इस उसूल पर अमल करते हुए पिछली 25 नवम्बर को चीन के पेकिंग शहर में पच्छिम के दो महापुरुषों की याद-गार बड़ी धूम धाम के साथ मनाई गई. इन दो महापुरुषों में से एक अमरीका का मशहूर सन्त, कवि और फ़िलासफ़र वाल्ट व्हिटमैन था, जिसकी किताब "लीव्ज़ आफ़ ग्रास" (घास के पत्ते) दुनिया के साहित्य में ऊँची से ऊँची किताबों में गिनी जाती है. दूसरा महापुरुष स्पेन का मशहूर लेखक सरवेन्टीज़ था जिसका उपन्यास "डान कुइकज़ो" भी दुनिया के बड़े से बड़े ग्रन्थों में गिना जाता है.

वाल्ट व्हिटमैन की किताब "लीव्ज़ आफ़ ग्रास" को छपे हुए सौ बरस और सरवेन्टीज़ की किताब "डान कुइकज़ो" को निकले हुए साढ़े तीन सौ बरस हो चुके.

पेकिंग के उस जलसे में चीन की सब बड़ी से बड़ी सन्स्थाओं के और जनता के तेरह सौ से ऊपर नुमाइन्दे मौजूद थे. मन्च के ऊपर वाल्ट व्हिटमैन और सरवेन्टीज़ दोनों की तसवीरें सजी हुई थीं. सब बोलने वालों ने मानव एकता के ऊपर ज़ोर दिया और कहा कि यह दोनों महापुरुष केवल अमरीका और स्पेन के ही नहीं सारी दुनिया के महापुरुष थे. दोनों की किताबों में दुनिया भर की जनता के लिये शान्ति और सुख की लालसा प्रकट की गई है. दोनों सारी दुनिया के सब राष्ट्रों की आज़ादी चाहते थे. बोलने वालों ने अमरीका और स्पेन की जनता और सब देशों की जनता के साथ अपना भाई चारा और प्रेम प्रकट किया. यह भी बताया गया कि इन दोनों महापुरुषों की अनेक कृतियों का अनुवाद चीनी में छप चुका है. चीन के मशहूर नेता और कवि कोमोजो ने वाल्ट व्हिटमैन को "प्रशान्त महा-सागर की तरह महान्" बताया. वाल्ट व्हिटमैन जनता का कवि था. उसने जनता और ख़ासकर मेहनत करने वाली जनता की भाषा में लिखा. इसी तरह सरवेन्टीज़ ने अपने समय से ऊपर उठकर सैंकड़ों बरस आगे के मानव समाज को चित्रित करने की कोशिश की.

अमरीका का एक मशहूर नीग्रो विद्वान आबरे पैन्के भी, जो उस समय चीन का दौरा कर रहा था, उस जलसे

مانو ایکتا کے شبھ پریتن

دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کے قایم کرنے والے اور سب دھرموں کی دھارمک پستکیں اِس بات پر زور دیتی ھیں کہ اِس دھرتی کے سب آدمی ایک کنبہ ھیں' اور ھم سب کو ایک کنبے کی طرح ھی مل جل کر پریم کے ساتھ رھنا چاھئے. اِس میل جول کو بڑھانے کا ایک طریقہ یہ بھی ھے کہ الگ الگ دیشوں میں آنا جانا بڑھے اور الگ الگ دیشوں کے لوگ ایک دوسرے کی کلچر' ایک دوسرے کی کلا' ایک دوسرے کے ساھتیہ اور ایک دوسرے کے مہاپرشوں کی قدر کرنا سیکھیں.

اِس اُصول پر عمل کرتے ھوئے پچھلی 25 نومبر کو چین کے پیکنگ شہر میں پچھم کے دو مہاپرشوں کی یادگار بڑی دھوم دھام کے ساتھ منائی گئی. اِن دو مہاپرشوں میں سے ایک امریکہ کا مشہور سنت' کوی اور فلاسفر والٹ وھٹمین تھا' جس کی کتاب "لیوز آف گراس" (گھاس کے پتے) دنیا کے ساھتیہ میں اُونچی سے اُونچی کتابوں میں گنی جاتی ھے. دوسرا مہاپرش اِسپین کا مشہور لیکھک سروینٹیز تھا جس کا اُپنیاس "ڈان کوئکزو" بھی دنیا کے بڑے سے بڑے گرنتھوں میں گنا جاتا ھے.

والٹ وھٹمین کی کتاب "لیوز آف گراس" کو چھپے ھوئے سو برس اور سروینٹیز کی کتاب "ڈان کوئکزو" کو نکلے ھوئے ساڑھے تین سو برس ھوچکے.

پیکنگ کے اُس جلسے میں چین کی سب بڑی سے بڑی سنستھاؤں کے اور جنتا کے تیرہ سو سے اُوپر نمائندے موجود تھے. منچ کے اُوپر والٹ وھٹمین اور سروینٹز دونوں کی تصویریں سجی ھوئی تھیں. سب بولنے والوں نے مانو ایکتا کے اُوپر زور دیا اور کہا کہ یہ دونوں مہاپرش کیول امریکہ اور اِسپین کے ھی نہیں ساری دنیا کے مہاپرش تھے. دونوں کی کتابوں میں دنیا بھر کی جنتا کے لئے شانتی اور سکھ کی لالسا پرکٹ کی گئی ھے. دونوں ساری دنیا کے سب راشٹروں کی آزادی چاھتے تھے. بولنے والوں نے امریکہ اور اِسپین کی جنتا اور سب دیشوں کی جنتا کے ساتھ اپنا بھائی چارا اور پریم پرکٹ کیا. یہ بھی بتایا گیا کہ اِن دونوں مہاپرشوں کی اَنیک کرتیوں کا انواد چینی میں چھپ چکا ھے. چین کے مشہور نیتا اور کوی کوموجو نے والٹ وھٹمین کو "پرشانت مہاساگر کی طرح مہان" بتایا. والٹ وھٹمین جنتا کا کوی تھا. اُس نے جنتا اور خاصکر محنت کرنے والی جنتا کی بھاشا میں لکھا. اِسی طرح سروینٹیز نے اپنے سمے سے اُوپر اُٹھکر سیکڑوں برس آگے کے مانو سماج کو چترت کرنے کی کوشش کی.

امریکہ کا ایک مشہور نیگرو ودوان آبرے پینکے بھی' جو اُس سمے چین کا دورہ کر رھا تھا' اُس جلسے

में मौजूद था. उसने कहा कि वाल्ट व्हिटमैन के विचारों ने अमरीका से गुलामी की प्रथा को मिटाने में बहुत बड़ा हिस्सा लिया.

सरवेन्टीज के नाविल "डान क्विकज़ो" का अनुवाद दुनिया की अस्सी से ऊपर भाषाओं में हो चुका है.

कई दूर दूर के देशों से खास खास लोगों के संदेश भी जलसे में पढ़े गए.

अमरीका के दो विद्वानों ने अमरीका से आकर इस जलसे में हिस्सा लेना चाहा था, पर अमरीकी सरकार से उन्हें पासपोर्ट नहीं मिल सके.

चीन में दुनिया की इस कलचरी एकता को बढ़ाने के लिये एक और काम हो रहा है. पेकिंग लाइब्रेरी ने, जो चीन की सब से बड़ी लाइब्रेरी है, दुनिया के सत्तावन देशों के साथ पुस्तकों का बदलना शुरू कर दिया है. सन् 1955 के पहले छै महीने के अन्दर उन्होंने पैंसठ हज़ार किताबें दूसरे देशों को भेजीं और उनके बदले में पचपन हज़ार किताबें दूसरे देशों की लाइब्रेरियों ने चीन भेजीं. इन लाइब्रेरियों में से बारह अमरीका की हैं और ग्यारह इंगलैन्ड की. इनमें लन्दन का ब्रिटिश म्युज़ियम, न्युयार्क की स्टेट लाइब्रेरी, लन्दन और हारवर्ड यूनीवर्सिटियों की लाइब्रेरियां, फ्रान्स की नैशनल लाइब्रेरी और पेरिस यूनीवर्सिटी की लाइब्रेरी शामिल हैं.

सोवियत रूस में भी इस तरह का बड़ा सुन्दर काम हो रहा है.

रूसी नेता श्री बुलगानिन ने 21 नवम्बर सन् 1955 को दिल्ली की पार्लिमेन्ट के सामने कहा था कि लगभग पाँच सौ बरस हुए जब एक रूसी यात्री अफ़ानासी निकीतिन भारत आए थे. वह तीन बरस भारत में रहे और रूस लौटकर उन्होंने भारत पर अपनी यात्रा पर 'तीन समन्दर पार की यात्रा" नाम से एक बड़ी सुन्दर किताब लिखी.

सोवियत रूस की सेन्टरल रेडियो सरविस ने अब अफ़ानासी निकीतिन की यात्रा पर एक सिनेमा फ़िल्म तैयार कर ली है. उस फ़िल्म के तैयार करने में कई हिन्दुस्तानी कलाकारों से भी मदद ली गई है. यह फ़िल्म पन्द्रह दिसम्बर सन् 1955 को रूस में दिखाई जा चुकी है.

फ़िल्म सन् 1446 ईसवी में शुरू होती है. उसमें पहले उस समय के रूस के ख़ास ख़ास शहर दिखाए गए हैं. अफ़ानासी निकीतिन का अपने देश से चलना, उस ज़माने का रूसी रहन सहन और रूसी गाने, वौलगा नदी के किनारे किनारे का सारा सफ़र, फिर दूसरे देशों के अन्दर से जाना, रास्ते में तरह तरह की कठिनाइयां, अफ़ानासी निकीतिन का ईरान पहुँचना और वहां से एक छोटे से जहाज़ में बैठकर भारत आना.

میں موجود تھا . اُس نے کہا کہ والٹ وھٹمین کے وچاروں نے امریکہ سے غلامی کی پرتھا کو مٹانے میں بہت بڑا حصہ لیا .

سروینٹیز کے ناول "ڈان کوئکزو" کا انواد دنیا کی اسی سے اوپر بھاشاؤں میں ھوچکا ھے .

کئی دور دور کے دیشوں سے خاص خاص لوگوں کے سندیش بھی جلسے میں پڑھے گئے .

امریکہ کے دو ودوانوں نے امریکہ سے آکر اِس جلسے میں حصہ لینا چاھا تھا' پر امریکی سرکار سے اُنھیں پاسپورٹ نہیں مل سکے .

چین میں دنیا کی اِس کلچری ایکتا کو بڑھانے کے لئے ایک اور کام ھو رھا ھے . پیکنگ لائبریری نے' جو چین کی سب سے بڑی لائبریری ھے' دنیا کے ستاون دیشوں کے ساتھ پستکوں کا بدلنا شروع کر دیا ھے . سن 1955 کے پہلے چھ مہینے کے اندر اُنھوں نے پینسٹھ ھزار کتابیں دوسرے دیشوں کو بھیجیں اور اُن کے بدلے میں پچپن ھزار کتابیں دوسرے دیشوں کی لائبریریوں نے چین بھیجیں . اِن لائبریریوں میں سے بارہ امریکہ کی ھیں اور گیارہ انگلینڈ کی . اِن میں لندن کا برٹش میوزیم' نیویارک کی اِسٹیٹ لائبریری' لندن اور ھارورڈ یونیورسٹیوں کی لائبریریاں' فرانس کی نیشنل لائبریری اور پیرس یونیورسٹی کی لائبریری شامل ھیں .

سوویت روس میں بھی اِس طرح کا بڑا سندر کام ھو رھا ھے .

روسی نیتا شری بلگانن نے 21 نومبر سن 1955 کو دلی کی پارلیمینٹ کے سامنے کہا تھا کہ لگ بھگ پانچ سو برس ھوئے جب ایک روسی یاتری افاناسی نکیتن بھارت آئے تھے . وہ تین برس بھارت میں رھے اور روس لوٹ کر اُنھوں نے بھارت پر اور اپنی یاترا پر "تین سمندرپار کی یاترا" نام سے ایک بڑی سندر کتاب لکھی .

سوویت روس کی سینٹرل ریڈیو سروس نے اب افاناسی نکیتن کی یاترا پر ایک سنیما فلم تیار کرلی ھے . اُس فلم کے تیار کرنے میں کئی ھندستانی کلاکاروں سے بھی مدد لی گئی ھے . یہ فلم 15 دسمبر سن 1955 کو روس میں دکھائی جا چکی ھے .

فلم سن 1446 میں شروع ھوتی ھے . اُس میں پہلے اُس سمے کے روس کے خاص خاص شہر دکھائے گئے ھیں . افاناسی نکیتن کا اپنے دیش سے چلنا' اُس زمانے کا روسی رھن سہن اور روسی گانے' وولگا ندی کے کنارے کنارے کا سارا سفر' پھر دوسرے دیشوں کے اندر سے جانا' راستے میں طرح طرح کی کٹھنائیاں' افاناسی نکیتن کا ایران پہونچنا اور وھاں سے ایک چھوٹے سے جہاز میں بیٹھ کر بھارت آنا .

इसके बाद पन्द्रहवीं सदी के भारत का उसमें खासा अच्छा चित्र है. भारत के उस समय के अनेक नगरों और गांवों का दृश्य दिखाया गया है. उस ज़माने का भारतीय जीवन, रूसी यात्री के साथ भारत वासियों का प्रेम, भारत का गाना बजाना, यह सब चीज़ें उस फ़िल्म में बड़ी सचाई और सुन्दरता के साथ दिखाई गई है. अनेक जगह अफ़ानासी निकीतिन की भारत वासियों से बात चीत होती है.

आख़ीर में "हिन्दी रूसी भाई भाई" से शो ख़तम होता है. रूस में लोगों को यह फ़िल्म बहुत पसन्द आई.

मानव एकता को साक्षात करने और दुनिया में प्रेम बढ़ाने के इस तरह के प्रयत्न बहुत ही सराहनीय हैं. हम इनका हृदय से स्वागत करते हैं और चाहते हैं कि ऐसे प्रयत्न सब देशों में खूब बढ़ें !

21-12-55. —सुन्दरलाल

اِس کے بعد پندرھویں صدی کے بھارت کا اُس میں خاصہ اچھا چتر ھے. بھارت کے اُس سمے کے انیک نگروں اور گاؤں کا درشیہ دکھایا گیا ھے . اُس زمانے کا بھارتیہ جیون' روسی یاتری کے ساتھ بھارت واسیوں کا پریم' بھارت کا گانا بجانا' یہ سب چیزیں اُس فلم میں بڑی سچائی اور سندرتا کے ساتھ دکھائی گئیں ھیں . انیک جگہہ افاناسی نکیتن کی بھارت واسیوں سے بات چیت ھوتی ھے .

آخیر میں "ھندی روسی بھائی بھائی" سے شو ختم ھوتا ھے . روس میں لوگوں کو یہ فلم بہت پسند آئی .

مانو ایکتا کو ساکشات کرنے اور دنیا میں پریم بڑھانے کے اِس طرح کے پریتن بہت ھی سراھنیہ ھیں . ھم اِن کا ھردئے سے سواگت کرتے ھیں اور چاھتے ھیں کہ ایسے پریتن سب دیشوں میں خوب بڑھیں !

—سندر لال 21. 12. 55

बग़दाद का समझौता और पाकिस्तान

इराक़ की राजधानी बग़दाद में टरकी, इराक़, ईरान, पाकिस्तान और इन्गलैंड के बीच पिछले दिनों एक फ़ौजी समझौता हुआ है जिसका राजकाजी दुनिया में काफ़ी शोर मच चुका है. 21 नवम्बर सन् 1955 को बग़दाद ही में इन पांचों देशों के नुमाइन्दों की एक बैठक हुई थी. कहा जाता है अमरीका अभी इस समझौते में शामिल नहीं है. लेकिन यूरप के अख़बारों में बराबर निकलता रहा है कि अमरीका इसमें शामिल होगा, और 21 नवम्बर की बैठक में अमरीकी सरकार के नुमाइन्दे "आबज़रवर्स" यानी दर्शक की हैसियत से मौजूद थे.

अमरीका के मशहूर अख़बार "न्युयार्क टाइम्स" ने इस फ़ौजी समझौते की बाबत साफ़ लिखा है कि—"यह समझौता हमारी (अमरीका की) कोशिशों का नतीजा है और सोवियत रूस और मिस्र दोनों के ख़िलाफ़ किया गया है." हक़ीक़त यह है कि यह समझौता उसी सिलसिले की एक बीच की कड़ी है जिसकी दो सिरे की कड़ियां पच्छिम में 'नाटो' और पूरब में 'सीटो' हैं.

यह भी ध्यान देने की बात है कि जबकि टरकी, इराक़, ईरान और पाकिस्तान चारों एशियाई देश हैं, जिनकी सरहदें एक दूसरे से मिलती हैं या एक दूसरे के पास हैं, इन्गलैंड और अमरीका दोनों एशिया से बाहर के देश और उससे हज़ारों मील की दूरी पर हैं.

दुनिया के अख़बारों और राजकाजी नेताओं के बयानों में यह बात भी साफ़ आ चुकी है कि इस समझौते की असली ग़रज़ यूरप के उन देशों की सत्ता को पच्छिम एशिया

بغداد کا سمجھوتہ اور پاکستان

عراق کی راجدھانی بغداد میں ترکی' عراق' اِیران' پاکستان اور اِنگلینڈ کے بیچ پچھلے دنوں ایک فوجی سمجھوتہ ھوا ھے جس کا راجکاجی دنیا میں کافی شور مچ چکا ھے . 21 نومبر سن 1955 کو بغداد ھی میں اِن پانچوں دیشوں کے نمائندوں کی ایک بیٹھک ھوئی تھی . کہا جاتا ھے امریکہ ابھی اِس سمجھوتے میں شامل نہیں ھے . لیکن یورپ کے اخباروں میں برابر نکلتا رہا ھے کہ امریکہ اِس میں شامل ھوگا' اور 21 نومبر کی بیٹھک میں امریکی سرکار کے نمائندے "آبزروورس" یعنی درشک کی حیثیت سے موجود تھے .

امریکہ کے مشہور اخبار "نیویارک ٹائمس" نے اِس فوجی سمجھوتے کی بابت صاف لکھا ھے کہ—"یہ سمجھوتہ ھماری (امریکہ کی) کوششوں کا نتیجہ ھے اور سوویت روس اور مصر دونوں کے خلاف کیا گیا ھے ." حقیقت یہ ھے کہ یہ سمجھوتہ اُسی سلسلے کی ایک بیچ کی کڑی ھے جس کی دوسرے کی کڑیاں پچھم میں 'ناٹو' اور پورب میں 'سیٹو' ھیں .

یہ بھی دھیان دینے کی بات ھے کہ جبکہ ترکی' عراق' اِیران اور پاکستان چاروں ایشیائی دیش ھیں' جن کی سرحدیں ایک دوسرے سے ملتی ھیں یا ایک دوسرے کے پاس ھیں' اِنگلینڈ اور امریکہ دونوں ایشیا سے باھر کے دیش اور اُس سے ھزاروں میل کی دوری پر ھیں .

دنیا کے اخباروں اور راجکاجی نیتاؤں کے بیانوں میں یہ بات بھی صاف آچکی ھے کہ اِس سمجھوتے کی اصلی غرض یورپ کے اُن دیشوں کی ستا کو پچھم ایشیا

में फिर से पक्का करना है जिनका असर उस इलाक़े में हाल में कुछ कम होने लगा था. असल ग़रज़ यह है कि एशिया के इन देशों के क़ुदरती ख़ज़ानों, ख़ासकर उनके क़ीमती तेल के कुओं, पर क़ब्ज़ा रखा जावे और उस क़ब्ज़े को मज़बूत किया जावे.

क़ुदरती तौर पर इसके लिये यह भी ज़रूरी है कि एशिया के उस इलाक़े में आज़ादी की जो तहरीकें जन्म ले रही हैं उन्हें किसी तरह दबाकर रखा जावे.

पच्छिम एशिया के जो देश बग़दाद के उस समझौते के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाते हैं उनके ख़िलाफ़ माली और तिजारती बायकाट की धमकियां दी जाती हैं या उनकी सरकारों को या उनके राजकाजी नेताओं को उलट देने या उखाड़ फेंकने की साज़िशें होने लगती हैं.

यूरप के कोई कोई अख़बार साफ़ कह रहे हैं कि एशिया के उस हिस्से में जल्दी और खुले तौर पर दख़ल दिया जावे. "लन्दन टाइम्स" ने लिखा है कि—"यू. एन. ओ. की फ़ौजें पच्छिम एशिया में भेजी जावें और वहां रखी जावें." इन्गलैन्ड के अख़बार "डेली मेल" ने लिखा कि—"यह एलान हो जाना चाहिये कि इन्गलैन्ड नहर सुएज़ पर फिर से क़ब्ज़ा करेगा और कम से कम सन् 1975 तक वहां रहेगा."

दुनिया अभी इस चीज़ को भी भूली नहीं है कि केवल अरब देशों को मुसीबत में डालने और उन्हें क़ाबू में रखने के लिये ही यहूदियों को दुनिया भर के मुल्कों से ला लाकर और जमा करके फ़िलस्तीन में 'इसराईल' नाम का एक नया मुल्क बसाया गया था, और आज उन्हीं अरबों को बरबाद करने के लिये अरब-इसराईल झगड़े से पूरा पूरा फ़ायदा उठाया जा रहा है, और इस झगड़े के बहाने इन मुल्कों के अन्दरूनी मामलों मे जबरदस्ती दख़ल दिया जा रहा है.

यह भी ध्यान रखने की बात है कि अरबों और यहूदियों में सरहद की बाबत जो कुछ झगड़े हुए उनसे पहले अंगरेज़ अफ़सरों के मातहत फ़ौज ने जाकर ज़बरदस्ती बुरैमी के नख़लिस्तान पर क़ब्ज़ा कर लिया था. इस नख़लिस्तान पर क़ब्ज़े की भी दो ही वजह बताई जाती हैं, एक यह कि वहां भी तेल के बड़े बड़े कुएं हैं जिन पर अंगरेज़ क़ब्ज़ा करना चाहते हैं और दूसरे यह कि उस हिस्से से सऊदी अरब को दबाकर रखा जा सकता है.

अरब देशों की जनता इन चीज़ों को ख़ूब अच्छी तरह समझ रही है. इसीलिये वहां के अलग अलग विचारों और अलग अलग पार्टियों के लोग भी बग़दाद के फ़ौजी समझौते के ख़िलाफ़ हैं.

میں پھر سے پکا کرنا ہے جن کا اثر اُس علاقے میں حال میں کچھ کم ہونے لگا تھا ۔ اصل غرض یہ ہے کہ ایشیا کے اُن دیشوں کے قدرتی خزانوں، خاصکر اُن کے قیمتی تیل کے کنوؤں، پر قبضہ رکھا جاوے اور اُس قبضے کو مضبوط کیا جاوے ۔

قدرتی طور پر اِس کے لئے یہ بھی ضروری ہے کہ ایشیا کے اُس علاقے میں آزادی کی جو تحریکیں جنم لے رہی ہیں اُنہیں کسی طرح دباکر رکھا جاوے ۔

پچھم ایشیا کے جو دیش بغداد کے اُس سمجھوتے کے خلاف آواز اُٹھاتے ہیں اُن کے خلاف مالی اور تجارتی بائیکاٹ کی دھمکیاں دی جاتی ہیں یا اُن کی سرکاروں کو یا اُن کے راجکاجی نیتاؤں کو اُلٹ دینے یا اُکھاڑ پھینکنے کی سازشیں ہونے لگتی ہیں ۔

یورپ کے کوئی کوئی اخبار صاف کہ رہے ہیں کہ ایشیا کے اُس حصے میں جلدی اور کھلے طور پر دخل دیا جاوے ۔ "لندن ٹائمس" نے لکھا ہے کہ—"یو ۔ این ۔ او ۔ کی فوجیں پچھم ایشیا میں بھیجی جاویں اور وہاں رکھی جاویں ۔" انگلینڈ کے اخبار "ڈیلی میل" نے لکھا ہے کہ—"یہ اعلان ہو جانا چاہئے کہ اِنگلینڈ نہر سوئیز پر پھر سے قبضہ کریگا اور کم سے کم سن 1975 تک وہاں رہیگا ۔"

دنیا ابھی اِس چیز کو بھی بھولی نہیں ہے کہ کیول عرب دیشوں کو مصیبت میں ڈالنے اور انہیں قابو میں رکھنے کے لئے ہی یہودیوں کو دنیا بھر کے ملکوں سے لا لاکر اور جمع کرکے فلسطین میں 'اسرائیل' نام کا ایک نیا ملک بسایا گیا تھا، اور آج اُنہیں عربوں کو برباد کرنے کے لئے عرب اسرائیل جھگڑے سے پورا پورا فائدہ اُٹھایا جا رہا ہے، اور اِس جھگڑے کے بہانے اِن ملکوں کے اندرونی معاملوں میں زبردستی دخل دیا جا رہا ہے ۔

یہ بھی دھیان رکھنے کی بات ہے کہ عربوں اور یہودیوں میں سرحد کی بابت جو کچھ جھگڑے ہوئے اُن سے پہلے انگریز افسروں کے ماتحت فوج نے جاکر زبردستی بوریمی کے نخلستان پر قبضہ کر لیا تھا ۔ اِس نخلستان پر قبضہ کی بھی دو ہی وجہ بتائی جاتی ہیں، ایک یہ کہ وہاں بھی تیل کے بڑے بڑے کنوئیں ہیں جن پر انگریز قبضہ کرنا چاہتے ہیں اور دوسرے یہ کہ اُس حصے سے سعودی عرب کو دباکر رکھا جاسکتا ہے ۔

عرب دیشوں کی جنتا اِن چیزوں کو خوب اچھی طرح سمجھ رہی ہے ۔ اسی لئے وہاں کے الگ الگ وچاروں اور الگ الگ پارٹیوں کے لوگ بھی بغداد کے فوجی سمجھوتے کے خلاف ہیں ۔

मिस्र इस तरह की फ़ौजी गुटबन्दी के सख्त ख़िलाफ़ है. वहां के बड़े वज़ीर जमाल अब्दुल नासिर ने हाल में कहा है :—"हमारे इस एशियाई इलाक़े के मुल्कों की रक्षा केवल हमसे सम्बन्ध रखती है. यह हमारा काम है. हम इस मामले में किसी बाहर वाले को अपना रक्षक बनाना मनज़ूर नहीं कर सकते. हम अपनी ही फ़ौजों की मदद से अपनी आज़ादी की रक्षा कर सकते हैं और करेंगे.

मिस्र के इस्टेट मिनिस्टर अनवर सआदत ने वहां के अख़बार "अल जमहूरिया" में लिखा है कि—"बग़दाद का समझौता उन मुल्कों की जनता की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ किया गया है और इसीलिये समझौता करने वाले अपने अपने यहां की जनता से डरते हैं."

एक और अख़बार "अल अख़बार" लिखता है कि—"पहले 'मिडिल ईस्टर्न कमान्ड' के नाम से एक और तजवीज़ की गई थी जिसका मतलब यह था कि यूरप के मुल्कों की फ़ौजें इस बहाने एशिया के इस हिस्से में रखी जावें. उस समय सब अरब मुल्कों ने ज़ोरों के साथ इसका विरोध किया. अब जो बग़दाद में समझौता हुआ है वह एक दूसरे ढंग से उसी पुरानी तजवीज़ में फिर से जान डालने की कोशिश है. बग़दाद का समझौता 'किसी मुल्क की रक्षा' के लिये नहीं किया जा रहा है बल्कि एशिया के इस हिस्से से विदेशी लोग जो फ़ायदा उठाना चाहते हैं उसकी रक्षा के लिये किया जा रहा है."

सीरिया के बहुत से बड़े बड़े लोगों ने जिनमें जनता के राजकाजी नेता, वहां की पार्लीमेंट के मेम्बर, प्रोफ़ेसर और मज़हबी रहनुमा, सब शामिल थे, हाल में एक बयान निकाला था जिसमें कहा गया है कि—"हमारे यहां की जनता बग़दाद के समझौते को एक इस तरह की फ़ौजी गुट-बन्दी समझती है जिस की ग़रज़ दूसरों पर हमला करना है. यह समझौता जनीवा की इसपिरिट के ख़िलाफ़ है." सीरिया के अख़बारों में भी इसी तरह के लेख निकल रहे हैं.

लबनान की सरकार ने भी बग़दाद के समझौते का विरोध किया है. वहां के बड़े वज़ीर रशीद करामी ने कहा है कि उनकी सरकार तय कर चुकी है कि वह किसी ऐसे समझौते में शामिल नहीं होगी जिससे अरब दुनिया के टुकड़े हो जाँय. लबनान के अख़बार "अल बैरक़" ने लिखा है—"हम उनकी फ़ौजी गुट बन्दियों में शामिल नहीं होंगे, क्योंकि हम अपनी आज़ादी क़ायम रखना चाहते हैं और अंगरेज़ों, तुरकों या पाकिस्तानियों को कोई इसका मौक़ा देना नहीं चाहते कि वह हमारे यहां के अन्दरूनी मामलों में कोई दख़ल दें. सन् 1930 में अंग्रेज़ों और इराक़ के बीच एक सुलहनामा हुआ था जिसके अनुसार अंग्रेज़ ज़बर-दस्ती इराक़ के ट्रस्टी यानी वली बन बैठे थे. बग़दाद के फ़ौजी

مصر اِس طرح کی فوجی گٹ بندی کے سخت خلاف ہے . وہاں کے بڑے وزیر جمال عبدل ناصر نے حال میں کہا ہے :—"ہمارے اِس ایشیائی علاقے کے ملکوں کی رکشا کیول ہم سے سمبندھ رکھتی ہے . یہ ہمارا کام ہے . ہم اِس معاملے میں کسی باہر والے کو اپنا رکشک بنانا منظور نہیں کرسکتے . ہم اپنی ہی فوجوں کی مدد سے اپنی آزادی کی رکشا کرسکتے ہیں اور کرینگے ."

مصر کے اِسٹیٹ منسٹر انور سعادت نے وہاں کے اخبار "الجمہوریہ" میں لکھا ہے کہ—"بغداد کا سمجھوتہ اُن ملکوں کی جنتا کی مرضی کے خلاف کیا گیا ہے اور اِسی لئے سمجھوتہ کرنے والے اپنے اپنے یہاں کی جنتا سے ڈرتے ہیں ."

ایک اور اخبار "ال اخبار" لکھتا ہے کہ—"پہلے 'مڈل ایسٹرن کمانڈ' کے نام سے ایک اور تجویز کی گئی تھی جس کا مطلب یہ تھا کہ یورپ کے ملکوں کی فوجیں اِس بہانے ایشیا کے اِس حصے میں رکھی جاویں . اُس سمے سب عرب ملکوں نے زوروں کے ساتھ اِس کا ورودھ کیا . اب جو بغداد میں سمجھوتہ ہوا ہے وہ ایک دوسرے ڈھنگ سے اُسی پرانی تجویز میں پھر سے جان ڈالنے کی کوشش ہے . بغداد کا سمجھوتہ 'کسی ملک کی رکشا' کے لئے نہیں کیا جا رہا ہے بلکہ ایشیا کے اِس حصے سے ودیشی لوگ جو فایدہ اُٹھانا چاہتے ہیں اُس کی رکشا کے لئے کیا جا رہا ہے ."

سیریا کے بہت سے بڑے بڑے لوگوں نے جن میں جنتا کے راجکاجی نیتا' وہاں کی پارلیمنٹ کے ممبر' پروفیسر اور مذہبی رہنما' سب شامل تھے' حال میں ایک بیان نکالا تھا جس میں کہا گیا ہے کہ—"ہمارے یہاں کی جنتا بغداد کے سمجھوتے کو ایک اِس طرح کی فوجی گٹ بندی سمجھتی ہے جس کی غرض دوسروں پر حملہ کرنا ہے . یہ سمجھوتہ جنیوا کی اِسپرٹ کے خلاف ہے" سیریا کے اخباروں میں بھی اِسی طرح کے لیکھ نکل رہے ہیں .

لبنان کی سرکار نے بھی بغداد کے سمجھوتے کا ورودھ کیا ہے . وہاں کے بڑے وزیر رشید کیرامی نے کہا ہے کہ اُن کی سرکار طے کر چکی ہے کہ وہ کسی ایسے سمجھوتے میں شامل نہیں ہوگی جس سے عرب دنیا کے ٹکڑے ہو جائیں . لبنان کے اخبار "البیرق" نے لکھا ہے—"ہم اُن کی فوجی گٹ بندیوں میں شامل نہیں ہونگے' کیونکہ ہم اپنی آزادی قایم رکھنا چاہتے ہیں اور انگریزوں' ترکوں یا پاکستانیوں کو کوئی اِس کا موقع دینا نہیں چاہتے کہ وہ ہمارے یہاں کے اندرونی معاملوں میں کوئی دخل دیں . سن 1930 میں انگریزوں اور عراق کے بیچ ایک صلحنامہ ہوا تھا جس کے انوسار انگریز زبردستی عراق کے ٹرسٹی یعنی ولی بن بیٹھے تھے . بغدا کے فوجی

समझौते में जब से इंगलैंड शामिल हो गया है बग़दाद के समझौते का भी वही मतलब है जो सन् 1930 के अंग्रेज़-इराक़ी सुलहनामे का था. आज बग़दाद के समझौते के एक शरीक होने के नाते तकनीकी और फ़ौजी मदद देने के बहाने इंगलैन्ड इराक़ में घुस रहा है. लबनान कभी भी दूसरी हुकूमतों का पुछल्ला नहीं बनेगा."

टरकी के प्रेज़ीडेन्ट बयार के साथ वहां के कुछ नेता नवम्बर के शुरू में जार्डन गए थे. उन्होंने जार्डन की सरकार को यह समझाना चाहा कि वह भी बग़दाद के समझौते में शामिल हो जावे. लेकिन अरब अख़बारों में जो कुछ निकलता रहा है उससे मालूम होता है कि टरकी के नेताओं को वहां भी कामयाबी नहीं मिली. वहां के अख़बार "अल अकरम" ने लिखा था कि टर्की के नेता जहां जहां जाते थे वहां वहाँ उनके सामने बड़े बड़े प्रदर्शन होते थे जिनमें इस तरह के नारे लगाए जाते थे—"टर्की-इराक़ी समझौता ख़तम करो." 10 नवम्बर को रायटर अख़बार एजन्सी ने वहां से ख़बर दी कि जार्डन के नेता सईद अल मुफ़्ती और वहाँ के दूसरे नेताओं ने यह कहा कि जार्डन सब गुट बन्दियों से अलग रहना चाहता है और इसीलिये बग़दाद के समझौते में शामिल नहीं हो सकता.

ज़ाहिर है कि पच्छिम एशिया के देशों के बारे में इंगलैन्ड और अमरीका की पालिसी दुनिया के अमन के लिये और ख़ुद उन देशों की आज़ादी और बहबूदी के लिये बहुत ही ख़तरनाक है. अरब मुल्क और अरब क़ौमें अपनी आज़ादी की क़दर करती हैं और दुनिया की सब क़ौमों के साथ अमन से रहना चाहती हैं. वह अपने इतने बड़े पड़ोसी रूस के साथ भी अमन से रहना चाहती हैं. सोवियत रूस की लगभग सब एशियाई जमहूरियतों की सरहदें इन देशों के साथ मिली हुई हैं. इसीलिये अंग्रेज़ और अमरीकी उनके साथ इस तरह के समझौते करना चाहते हैं. अरब इसे ख़ूब समझते हैं.

हमारी अपनी निगाह इस समय सबसे अधिक अपने पड़ोसी पाकिस्तान की तरफ़ है. हम पाकिस्तान को हमेशा के लिये आज़ाद और ख़ुशहाल देखना चाहते हैं. हमें अगर दुनिया से मुहब्बत है—और है—तो सब से अधिक मुहब्बत हमें पाकिस्तान और अपने पाकिस्तानी भाइयों से है. लेकिन उस मुहब्बत ही के नाते हमें यह हक़ है और हमारा यह फ़र्ज़ भी है कि हम जहां ख़तरा देखें वहां जिस से मुहब्बत है उसे आगाह कर दें. हम कम्युनिस्ट नहीं हैं. पर हम चीन और रूस हो आए हैं. हम कई-कई चक्कर यूरप के भी लगा चुके हैं. इसमें ज़रा भी शक नहीं हो सकता कि बग़दाद के समझौते में पाकिस्तान का शामिल होना, और किसी के लिये कुछ भी असर रखे या न रखे, पाकिस्तान

سمجھوتے میں جب سے انگلینڈ شامل ہوگیا ہے بغداد کے سمجھوتے کا وہی مطلب ہے جو سن 1930 کے انگریز عراقی صلحنامہ کا تھا. آج بغداد کے سمجھوتے کے ایک شریک ہونے کے ناتے تکنیکی اور فوجی مدد دینے کے بہانے انگلینڈ عراق میں گھس رہا ہے. لبنان کبھی بھی دوسری حکومتوں کا پچھلا نہیں بنیگا ."

ترکی کے پریزیڈینٹ بیار کے ساتھ وہاں کے کچھ نیتا نومبر کے شروع میں جارڈن گئے تھے . انہوں نے جارڈن کی سرکار کو یہ سمجھانا چاہا کہ وہ بھی بغداد کے سمجھوتے میں شامل ہو جاوے . لیکن عرب اخباروں میں جو کچھ نکلتا رہا ہے اُس سے معلوم ہوتا ہے کہ ترکی کے نیتاؤں کو وہاں بھی کامیابی نہیں ملی. وہاں کے اخبار "الاکرم" نے لکھا تھا کہ ترکی کے نیتا جہاں جہاں جاتے تھے وہاں وہاں اُن کے سامنے بڑے بڑے پردرشن ہوتے تھے جن میں اِس طرح کے نعرے لگائے جاتے تھے—"ترکی عراقی سمجھوتہ ختم کرو ." 10 نومبر کو رائٹر اخبار ایجنسی نے وہاں سے خبر دی کہ جارڈن کے نیتا سعیدالمفتی اور وہاں کے دوسرے نیتاؤں نے یہ کہا کہ جارڈن سب گٹ بندیوں سے الگ رہنا چاہتا ہے اور اِسی لئے بغداد کے سمجھوتے میں شامل نہیں ہو سکتا .

ظاہر ہے کہ پچھم ایشیا کے دیشوں کے بارے میں انگلینڈ اور امریکہ کی پالیسی دنیا کے امن کے لئے اور خود اُن دیشوں کی آزادی اور بہبودی کے لئے بہت ہی خطرناک ہے . عرب ملک اور عرب قومیں اپنی آزادی کی قدر کرتی ہیں اور دنیا کی سب قوموں کے ساتھ امن سے رہنا چاہتی ہیں . وہ اپنے اتنے بڑے پڑوسی روس کے ساتھ بھی امن سے رہنا چاہتی ہیں. سوویت روس کی لگ بھگ سب ایشیائی جمہوریتوں کی سرحدیں اِن دیشوں کے ساتھ ملی ہوئی ہیں . اِسی لئے انگریز اور امریکی اُن کے ساتھ اِس طرح کے سمجھوتے کرنا چاہتے ہیں . عرب اِسے خوب سمجھتے ہیں .

ہماری اپنی نگاہ اِس سمے سب سے ادھک اپنے پڑوسی پاکستان کی طرف ہے . ہم پاکستان کو ہمیشہ کے لئے آزاد اور خوشحال دیکھنا چاہتے ہیں . ہمیں اگر دنیا سے محبت ہے —اور ہے—تو سب سے ادھک محبت ہمیں پاکستان اور اپنے پاکستانی بھائیوں سے ہے . لیکن اُس محبت ہی کے ناتے ہمیں یہ حق ہے اور ہمارا یہ فرض بھی ہے کہ ہم جہاں خطرہ دیکھیں وہاں جس سے محبت ہے اُسے آگاہ کر دیں . ہم کمیونسٹ نہیں ہیں . پر ہم چین اور روس ہو آئے ہیں . ہم کئی کئی چکر یوروپ کے بھی لگا چکے ہیں . اِس میں ذرا بھی شک نہیں ہو سکتا کہ بغداد کے سمجھوتے میں پاکستان کا شامل ہونا، اور کسی کے لئے کچھ بھی اثر رکھے یا نہ رکھے، پاکستان

और वहां के लोगों के लिये किसी तरह और किसी मानी में भी मुफ़ीद नहीं हो सकता.

आठ साल पहले के मिले जुले हिन्दुस्तान को जिन गुनाहों के बदले में डेढ़ सौ बरस से ऊपर ग़ैरों की ग़ुलामी में रहना पड़ा उनमें से एक बड़ा गुनाह यह था कि हमारी हिन्दू, मुसलिम और सिख यानी हिन्दुस्तानी फ़ौजों ने ग़ैरों के तनख़्वाहदार बनकर दूसरे मुल्कों में जाकर वहां के बेगुनाह लोगों पर गोलियां बरसाईं और ग़ैरों को उनकी इस नापाक कोशिशों में मदद दी कि वह दूसरों को अपना ग़ुलाम बना सकें. हम सब को इस गुनाह से या इसके इमकान से भी अब कोसों दूर रहना चाहिये. तब से अब तक दुनिया बहुत आगे बढ़ चुकी है और बढ़ती जा रही है. हमारा अपना अक़ीदा है कि यह जो कुछ हो रहा है अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ है. इन नाज़ुक हालात में हर मुल्क, हर क़ौम और हर आदमी का फ़र्ज़ है कि दुनिया के हालात को ठीक ठीक समझने की कोशिश करे और कम से कम यह कि जब कोई क़दम उठावे तो ख़ुद अपने हाथ पैर बचाकर उठावे.

12-12-'55 —सुन्दरलाल

اور وہاں کے لوگوں کے لئے کسی طرح اور کسی معنی میں بھی مفید نہیں ہو سکتا۔

آٹھ سال پہلے کے ملے جلے ہندستان کو جن گناہوں کے بدلے میں ڈیڑھ سو برس سے اوپر غیروں کی غلامی میں رہنا پڑا اُن میں سے ایک بڑا گناہ یہ تھا کہ ہماری ہندو، مسلم اور سکھ یعنی ہندستانی فوجوں نے غیروں کے تنخواہدار بن کر دوسرے ملکوں میں جا کر وہاں کے بے گناہ لوگوں پر گولیاں برسائیں اور غیروں کو اُن کی اِس ناپاک کوششوں میں مدد دی کہ وہ دوسروں کو اپنا غلام بنا سکیں۔ ہم سب کو اِس گناہ سے یا اِس کے اِمکان سے بھی اب کوسوں دور رہنا چاہئے۔ تب سے اب تک دنیا بہت آگے بڑھ چکی ہے اور بڑھتی جا رہی ہے۔ ہمارا اپنا عقیدہ ہے کہ یہ جو کچھ ہو رہا ہے اللہ کی مرضی کے مطابق ہے۔ اِن نازک حالات میں ہر ملک، ہر قوم اور ہر آدمی کا فرض ہے کہ دنیا کے حالات کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے کی کوشش کرے اور کم سے کم یہ کہ جب کوئی قدم اُٹھائے تو خود اپنے ہاتھ پیر بچا کر اُٹھائے۔

—سندر لال 12. 12. 55

नए चीन में ज़मीन की व्यवस्था

नया चीन आम तौर पर एक कम्युनिस्ट देश माना जाता है. कम्युनिज़्म एक दरजे तक नए चीन का आदर्श भी है. लेकिन चीन के नेताओं के अनुसार चीन अभी कम्युनिज़्म से काफ़ी दूर है. उनका कहना है कि कम्युनिज़्म यानी साम्यवाद की पहली सीढ़ी सोशलइज़्म यानी समाजवाद है और नया चीन अभी बीस या तीस बरस के बाद समाजवाद के आदर्श तक पहुँच सकेगा. उसके बाद समाजवाद से साम्यवाद तक पहुँचने में कितना समय लगेगा यह आगे की बात है.

इस बारे में चीन की आजकल की स्थिति का ख़ासा अच्छा चित्र हमें वहां की ज़मीन की व्यवस्था से मिल सकता है. नए चीन में खेती की अधिकतर ज़मीन की मालिक न सरकार है और न समाज, और न वहां कम्युनिस्ट ढङ्ग की मिलकीयत है. वहां अधिकतर ज़मीन के मालिक वही अलग अलग किसान हैं जो अपनी-अपनी ज़मीन में खेती करते हैं. विनोबा जी कहा करते हैं—"सबै भूमि गोपाल की." संस्कृत की एक कहावत है:—"किसान ही ज़मीन का मालिक है." मुहम्मद साहब की एक हदीस है:—"सारी ज़मीन अल्लाह की ज़मीन है, और सब मख़्लूक़ अल्लाह के बन्दे हैं: जो कोई किसी पड़ी हुई ज़मीन को जोतता और बोता है उसी का उस ज़मीन पर सबसे

نئے چین میں زمین کی ویوستھا

نیا چین عام طور پر ایک کمیونسٹ دیش مانا جاتا ہے۔ کمیونزم ایک درجے تک نئے چین کا آدرش بھی ہے۔ لیکن چین کے نیتاؤں کے انوسار چین ابھی کمیونزم سے کافی دور ہے۔ اُن کا کہنا ہے کہ کمیونزم یعنی سامیہ واد کی پہلی سیڑھی سوشلزم یعنی سماج واد ہے اور نیا چین ابھی بیس یا تیس برس کے بعد سماج واد کے آدرش تک پہونچ سکیگا۔ اس کے بعد سماج واد سے سامیہ واد تک پہونچنے میں کتنا سمے لگیگا یہ آگے کی بات ہے۔

اِس بارے میں چین کی آجکل کی اِستھتی کا خاصہ اچھا چتر ہمیں وہاں کی زمین کی ویوستھا سے مل سکتا ہے۔ نئے چین میں کھیتی کی ادھکتر زمین کی مالک نہ سرکار ہے اور نہ سماج، اور نہ وہاں کمیونسٹ ڈھنگ کی ملکیت ہے۔ وہاں ادھکتر زمین کے مالک وہی الگ الگ کسان ہیں جو اپنی اپنی زمین میں کھیتی کرتے ہیں۔ ونوبا جی کہا کرتے ہیں—"سبے بھومی گوپال کی۔" سنسکرت کی ایک کہاوت ہے :—"کسان ہی زمین کا مالک ہے۔" محمد صاحب کی ایک حدیث ہے :—"ساری زمین اللہ کی زمین ہے، اور سب مخلوق اللہ کے بندے ہیں : جو کوئی کسی پڑی ہوئی زمین کو جوتتا اور بوتا ہے اُسی کا اُس زمین پر سب سے

ज़्यादा हक़ है, किसी दूसरे को हक़ नहीं है कि उसे उस ज़मीन से निकाले." (अबुदाऊद, तिरमिज़ी, मालिक) आजकल के चीन की हालत लगभग इन्हीं कहावतों के अनुसार है.

लेकिन' नए चीन के नेता इस हालत से निकल कर धीरे-धीरे, देख भाल कर, और संभल-संभल कर, समाजवाद की तरफ़ क़दम बढ़ाते जा रहे हैं. कोशिश यह हो रही है कि अलग-अलग गाँव या अलग अलग इलाक़ों के थोड़े थोड़े किसान मिलकर अपनी-अपनी ज़मीनों और खेती के अपने-अपने दूसरे साधनों को मिलाकर कोआपरेटिव की शकल में यानी एक दूसरे के सहयोग से खेती का सारा काम करें और इस तरह देश की पैदावार को भी बढ़ावें और ख़ुद भी अधिक कमा सकें. लेकिन यह चीज़ किसी के लिये लाज़मी नहीं है. किसी के साथ किसी तरह की ज़बरदस्ती नहीं. जो किसान चाहें इस तरह मिलकर काम करें और जो न चाहें अपना अलग-अलग काम करते रहें. इस तरह के कोआपरेटिव या सहयोग संघ, जो इस समय चीन में काम कर रहे हैं, उन्हें चीनी सेमी-सोशलिस्ट यानी अर्ध-समाजवादी कहते हैं. इसी नवम्बर में इस तरह के कोआपरेटिवों को बढ़ाने और उनका प्रबन्ध ठीक करने के लिये वहां की सरकार की तरफ़ से कुछ नए क़ायदे तैयार करके देश के सामने रखे गए हैं और उनपर देश भर में सब से राय माँगी गई है. इन क़ायदों से चीनी नेताओं के इस बारे में विचारों और उनके काम करने के ढङ्ग का ख़ासा पता चलता है.

चीन के सब से बड़े दैनिक "पीपुल्स डेली" (जन दैनिक) में, जिसकी ग्राहक संख्या एक करोड़ से ऊपर है, इन नए क़ायदों की ख़ास-ख़ास बातें छपी हैं, जिनमें से कुछ हम नीचे देते हैं:—

"नए क़ायदों में सब से पहले किसानों को इस बात का पूरा भरोसा दिलाया गया है कि कोआपरेटिव में शामिल होने से उनके अपने-अपने अलग अलग हित को कोई नुक़सान नहीं पहुँचने पायेगा."

"इनमें वह बुनियादी उसूल बयान किये गए हैं जिनके अनुसार अपने हाथ से मेहनत करने वाले किसान जो चाहें ख़ुद अपनी मर्ज़ी से मिलकर काम करना तय कर सकें और काम कर सकें."

"दो बातों को ख़ास तौर से साफ़ कर दिया गया है. एक यह कि कोआपरेटिव में शामिल होना किसी के लिये लाज़मी नहीं है, यह पूरी तरह हर एक की अपनी इच्छा पर है, दूसरे यह कि हर कोआपरेटिव में जहां पूरे कोआपरेटिव का मिलकर भला और लाभ देखा जायगा वहां हर एक मेम्बर के अलग-अलग भले और लाभ का भी उतना ही ख़्याल रखा जायेगा."

زیادہ حق ہے کسی دوسرے کو حق نہیں ہے کہ اسے اس زمین سے نکالے." (ابوداود، ترمذی، مالک) آجکل کے چین کی حالت لگ بھگ انہیں کہاوتوں کے انوسار ہے۔

لیکن نئے چین کے نیتا اس حالت سے نکلکر دھیرے دھیرے، دیکھ بھال کر، اور سنبھل سنبھل کر، سماج واد کی طرف قدم بڑھاتے جارہے ہیں۔ کوشش یہ ہو رہی ہے کہ الگ الگ گاؤں یا الگ الگ علاقوں کے تھوڑے تھوڑے کسان ملکر اپنی اپنی زمینوں اور کھیتی کے اپنے اپنے دوسرے سادھنوں کو ملاکر کوآپریٹو کی شکل میں یعنی ایک دوسرے کے سہیوگ سے کھیتی کا سارا کام کریں اور اس طرح دیش کی پیداوار کو بھی بڑھاویں اور خود بھی ادھک کماسکیں۔ لیکن یہ چیز کسی کے لئے لازمی نہیں ہے۔ کسی کے ساتھ کسی طرح کی زبردستی نہیں۔ جو کسان چاہیں اس طرح ملکر کام کریں اور جو نہ چاہیں اپنا الگ الگ کام کرتے رہیں۔ اس طرح کے کوآپریٹو یا سہیوگ سنگھ، جو اس سمے چین میں کام کر رہے ہیں، انہیں چینی سیمی سوشلسٹ یعنی اردھ سماج وادی کہتے ہیں۔ اسی نومبر میں اس طرح کے کوآپریٹوں کو بڑھانے اور ان کا پربندھ ٹھیک کرنے کے لئے وہاں کی سرکار کی طرف سے کچھ نئے قاعدے تیار کرکے دیش کے سامنے رکھے گئے ہیں اور ان پر دیش بھر میں سب سے رائے مانگی گئی ہے۔ ان قاعدوں سے چینی نیتاؤں کے اس بارے میں وچاروں اور ان کے کام کرنے کے ڈھنگ کا خاصہ پتہ چلتا ہے۔

چین کے سب سے بڑے دینک "پیپلس ڈیلی" (جن دینک) میں، جس کی گراہک سنکھیا ایک کروڑ سے اوپر ہے، ان نئے قاعدوں کی خاص خاص باتیں چھپی ہیں جن میں سے کچھ ہم نیچے دیتے ہیں:—

"نئے قاعدوں میں سب سے پہلے کسانوں کو اس بات کا پورا بھروسہ دلایا گیا ہے کہ کوآپریٹو میں شامل ہونے سے ان کے اپنے اپنے الگ الگ ہت کو کوئی نقصان نہیں پہونچنے پائیگا۔

"ان میں وہ بنیادی اصول بیان کئے گئے ہیں جن کے انوسار اپنے ہاتھ سے محنت کرنے والے کسان جو چاہیں خود اپنی مرضی سے ملکر کام کرنا طے کرسکیں اور کام کرسکیں۔

"دو باتوں کو خاص طور سے صاف کردیا گیا ہے۔ ایک یہ کہ کوآپریٹو میں شامل ہونا کسی کے لئے لازمی نہیں ہے، یہ پوری طرح ہر ایک کی اپنی اچھا پر ہے، دوسرے یہ کہ ہر کوآپریٹو میں جہاں پورے کوآپریٹو کا ملکر بھلا اور لابھ دیکھا جائیگا وہاں ہر ایک ممبر کے الگ الگ بھلے اور لابھ کا بھی اتنا ہی خیال رکھا جائیگا۔

“ग़रज़ यह है कि गाँव के अन्दर कोई अपने पैसे या अपनी पूँजी या अपनी सूझ के बल पर किसी दूसरे की मेहनत से अपने लिये बेजा फ़ायदा न उठा सके.”

“इन क़ायदों में सबसे अधिक ध्यान ग़रीब किसानों की भलाई का रखा गया है.”

“इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि जो कोई दूसरे को किसी कोआपरेटिव में शामिल करना चाहे वह केवल समझा-बुझा कर ऐसा कर सकता है, या वह मिसाल से दूसरे को यह दिखावे कि कोआपरेटिव में शामिल होने से उसे हर तरह लाभ है, हानि नहीं है. किसी पर भी किसी तरह की ज़बरदस्ती का असर नहीं पड़ना चाहिये.

“जो लोग एक बार किसी कोआपरेटिव में शामिल हो जावें उन्हें इस बात का भी हक़ रहेगा कि वह जब चाहें अपनी ज़मीन और अपने खेती के साधन लेकर कोआपरेटिव से फिर अलग हो जावें.”

“यह भी ध्यान रखा गया है कि जो किसान एक बार किसी कोआपरेटिव के मेम्बर होकर फिर उससे अलग हो जावें उन्हें इस अलग होने की वजह से किसी तरह का घाटा या नुक़सान उठाना न पड़े. कोआपरेटिव का मेम्बर बनने के बाद भी अपनी ज़मीन पर और अपने खेती के दूसरे साधनों पर मिलकीयत का हक़ बराबर उसी किसान का बना रहेगा, और उसकी इन चीज़ों का कोई उपयोग उस कोआपरेटिव के अन्दर बिना उस असल मालिक की रज़ामन्दी के नहीं किया जा सकेगा, ताकि जब वह चाहे उसे अलग होने में आसानी रहे. ख़ासकर खेती के जानवरों और औज़ारों के इस्तेमाल में इसका ख़ास ख़्याल रखा जावेगा.”

“जिन जिन की ज़मीनें हैं उन्हें ज़मीन के मालिक की हैसियत से मुनाफ़े का हिस्सा अलग मिलेगा और मेम्बर की हैसियत से जो वह मेहनत करेंगे उसके लिये (मज़दूरी के अलावा मुनाफ़े का हिस्सा अलग मिलेगा.”

“इसका भी ख़याल रखा जायेगा कि कोआपरेटिव की तरक़्क़ी के लिये पूँजी बनी रहे.

“कोआपरेटिव का हर मेम्बर कोआपरेटिव के काम के अलावा अपना निजी छोटा मोटा धन्धा भी कर सकेगा. ताकि ग़रीब किसान और बीच के दरजे के किसान दोनों बराबर का फ़ायदा उठा सकें.

“मुनाफ़े का कितना हिस्सा किसी किसान को उसकी ज़मीन की मिलकीयत के लिये मिले और कितना उसकी मेहनत के लिये इसका बटवारा बड़ी होशियारी के साथ किया गया है. ज़मीन की मिलकीयत से मज़दूरी की क़ीमत ज़ियादा मानी गई है ताकि अपने हाथ से मज़दूरी करने का हौसला सब में बढ़े, क्योंकि हर कोआपरेटिव के मेम्बर ही कोआपरेटिव के मज़दूर हैं.

”غرض یہ ہے کہ گاؤں کے اندر کوئی اپنے پیسے یا اپنی پونجی یا اپنی سوجھ کے بل پر کسی دوسرے کی محنت سے اپنے لئے بیجا فایدہ نہ اُٹھا سکے.

”ان قاعدوں میں سب سے ادھک دھیان غریب کسانوں کی بھلائی کا رکھا گیا ہے.

”اس بات پر زور دیا گیا ہے کہ جو کوئی دوسرے کو کسی کوآپریٹو میں شامل کرنا چاہے وہ کیول سمجھا بوجھاکر ایسا کر سکتا ہے، یا وہ مثال سے دوسرے کو یہ دکھاوے کہ کوآپریٹو میں شامل ہونے سے اُسے ہر طرح لابھ ہے، ہانی نہیں ہے. کسی پر بھی کسی طرح کی زبردستی کا اثر نہیں پڑنا چاہئے.

”جو لوگ ایک بار کسی کوآپریٹو میں شامل ہو جاویں اُنھیں اس بات کا بھی حق رہیگا کہ وہ جب چاھیں اپنی زمین اور اپنے کھیتی کے سادھن لیکر کوآپریٹو سے پھر الگ ہو جاویں.

”یہ بھی دھیان رکھا گیا ہے کہ جو کسان ایک بار کسی کوآپریٹو کے ممبر ہوکر پھر اُس سے الگ ہوجاویں اُنھیں اس الگ ہونے کی وجہ سے کسی طرح کا گھاٹا یا نقصان اُٹھانا نہ پڑے. کوآپریٹو کا ممبر بننے کے بعد بھی اپنی زمین پر اور اپنے کھیتی کے دوسرے سادھنوں پر ملکیت کا حق برابر اُسی کسان کا بنا رہےگا، اور اُس کی اِن چیزوں کا کوئی اُپیوگ اُس کوآپریٹو کے اندر بنا اُس اصل مالک کی رضامندی کے نہیں کیا جاسکیگا، تاکہ جب وہ چاھے اُسے الگ ہونے میں آسانی رہے. خاصکر کھیتی کے جانوروں اور اوزاروں کے استعمال میں اِس کا خاص خیال رکھا جاویگا.

”جن جن کی زمینیں ھیں اُنھیں زمین کے مالک کی حیثیت سے منافع کا حصہ الگ ملیگا اور ممبر کی حیثیت سے جو وہ محنت کریں گے اُس کے لئے (مزدوری کے علاوہ) منافع کا حصہ الگ ملیگا.

”اِس کا بھی خیال رکھا جائیگا کہ کوآپریٹو کی ترقی کے لئے پونجی بنی رہے.

”کوآپریٹو کا ہر ممبر کوآپریٹو کے کام کے علاوہ اپنا نجی چھوٹا موٹا دھندہ بھی کرسکیگا تاکہ غریب کسان اور بیچ کے درجے کے کسان دونوں برابر کا فایدہ اُٹھا سکیں.

”منافع کا کتنا حصہ کسی کسان کو اُس کی زمین کی ملکیت کے لئے ملے اور کتنا اُس کی محنت کے لئے اِس کا بٹوارہ بڑی ہوشیاری کے ساتھ کیا گیا ہے. زمین کی ملکیت سے مزدوری کی قیمت زیادہ مانی گئی ہے تاکہ اپنے ہاتھ سے مزدوری کرنے کا حوصلہ سب میں بڑھے کیونکہ ہر کوآپریٹو کے ممبر ہی کوآپریٹو کے مزدور ھیں.

"साथ ही खास जरूरतों और खास हालतों का भी खयाल रखा गया है. किसी किसान की अगर जमीन अधिक है या अधिक अच्छी है और उसके यहां काम करने वालों की कमी है तो उसको जमीन के मालिक की हैसियत से मुनाफ़े का अधिक हिस्सा दिया जायेगा. ऐसे ही कहीं पर जमीन कम है और आदमी अधिक हैं. अलग अलग हालतों के अनुसार जमीन की मिलकीयत के लिये मुनाफ़े का हिस्सा कहीं मजदूरी से कम दिया जायेगा और कहीं मजदूरी के बराबर

"कोई बात ऐसी नहीं की जायगी जिससे किसी किसान की अपनी जमीन की मिलकीयत के हक़ में कोई फ़रक़ आसके.

"मुनाफ़े की तक़सीम जमीन के घटिया या बढ़िया होने के अनुसार और असल पैदावार के मुताबिक़ की जायेगी.

"आम तौर पर शुरू में खेती के कोई जानवर या कोई औज़ार जिस किसान के होंगे उसी की मिलकीयत रहेंगे. वही अपने जानवरों को खिलाए पिलाएगा ताकि जानवर भी ठीक रह सकें और कोआपरेटिव पर भी कर्ज़ा न लदे.

"जब कभी कोआपरेटिव जानवरों को खिलाने पिलाने और ठीक तरह रखने के क़ाबिल होगा तब असल मालिक की रज़ामन्दी से जानवरों को मालिक से खरीद कर अपना कर लेगा.

"इस तरह हरेक की निजी मिलकीयत और सबका मिला जुला लाभ दोनों में एक ठीक ठीक समतोल बना रहेगा.

"अपनी जितनी जमीन कोई किसान कोआपरेटिव को देगा उसी के अनुसार मुनाफ़े में उसका हिस्सा समझा जावेगा.

"कुल जमीन और खेती के दूसरे साधनों को मिलाकर सब की रज़ामन्दी से उनका उपयोग किया जावेगा.

"कोआपरेटिव के हर मेम्बर की कुछ न कुछ अपनी अलग निजी जमीन भी रह सकेगी जिसे वह जिस तरह चाहे काम में लावे.

"फ़सलों के बोने में देश की और खासकर उस इलाक़े की जरूरतों का खास खयाल रखा जावेगा.

"पैदावार में से पहले सरकार का हिस्सा अलग कर दिया जावेगा, और फिर खेती के खर्च और लागत के लिये पैदावार अलग कर दी जावेगी जिसमें मजदूरी भी शामिल होगी और फिर कुछ रिजर्व फन्ड रखा जावेगा और कुछ सब मेम्बरों और उनके बाल बच्चों के आराम और आसायश के कामों में खर्च किया जायेगा.

"मेम्बरों को मुनाफ़े का जो कुछ हिस्सा मिलता है उस की गारन्टी की जायेगी और उसमें से कुछ हिस्सा उन्हें पेशगी दे दिया जावेगा.

"ساتھ ہی خاص ضرورتوں اور خاص حالتوں کا بھی خیال رکھا گیا ہے. کسی کسان کی اگر زمین ادھک اچھی ہے اور اُس کے یہاں کام کرنے والوں کی کمی ہے تو اُس کو زمین کے مالک کی حیثیت سے منافع کا ادھک حصہ دیا جائیگا. ایسے ہی کہیں پر زمین کم ہے اور آدمی ادھک ہیں. الگ الگ حالتوں کے انوسار زمین کی ملکیت کے لئے منافع کا حصہ کہیں مزدوری سے کم دیا جائیگا اور کہیں مزدوری کے برابر.

"کوئی بات ایسی نہیں کی جائیگی جس سے کسان کی اپنی زمین کی ملکیت کے حق میں کوئی فرق آسکے.

"منافع کی تقسیم زمین کے گھٹیا یا بڑھیا ہونے کے انوسار اور اصل پیداوار کے مطابق کی جائیگی.

"عام طور پر شروع میں کھیتی کے کوئی جانور یا کوئی اوزار جس کسان کے ہونگے اُسی کی ملکیت رہینگے. وہی اپنے جانوروں کو کھلائے پلائیگا تاکہ جانور بھی ٹھیک رہ سکیں اور کوآپریٹو پر بھی قرضہ نہ لدے.

"جب کبھی کوآپریٹو جانوروں کو کھلانے پلانے اور ٹھیک طرح رکھنے کے قابل ہوگا تب اصل مالک کی رضامندی سے جانوروں کو مالک سے خرید کر اپنا کر لیگا.

"اِس طرح ہر ایک کی نجی ملکیت اور سب کا ملا جلا لابھ دونوں میں ایک ٹھیک ٹھیک سمتول بنا رہیگا.

"اپنی جتنی زمین کوئی کسان کوآپریٹو کو دیگا اُسی کے انوسار منافع میں اُس کا حصہ سمجھا جاویگا.

"کل زمین اور کھیتی کے دوسرے سادھنوں کو ملا کر سب کی رضامندی سے اُن کا اُپیوگ کیا جاویگا.

"کوآپریٹو کے ہر ممبر کی کچھ نہ کچھ اپنی الگ نجی زمین رہ سکیگی جسے وہ جس طرح چاہے کام میں لاوے.

"فصلوں کے بونے میں دیش کی اور خاص کر اُس علاقے کی ضرورتوں کا خاص خیال رکھا جاویگا.

"پیداوار میں سے پہلے سرکار کا حصہ الگ کر دیا جاویگا، پھر کھیتی کے خرچ اور لاگت کے لئے پیداوار الگ کر دی جاویگی جس میں مزدوری بھی شامل ہوگی، اور پھر کچھ رزروفنڈ رکھا جاویگا اور کچھ سب ممبروں اور ان کے بال بچوں کے آرام اور آسایش کے کاموں میں خرچ کیا جائیگا.

"ممبروں کو منافع کا جو کچھ حصہ ملتا ہے اُس کی گارنٹی کی جائیگی اور اُس میں سے کچھ حصہ اُنہیں پیشگی دے دیا جائیگا.

"कोआपरेटिव अपने मेम्बरों को इस बात में मदद देगी कि हर मेम्बर अपने घरवालों के साथ मिलकर कोई न कोई अलग ऐसा निजी धन्धा भी करता रहे जिससे कोआपरेटिव के काम में फ़रक़ न पड़े. कोआपरेटिव की आमदनी जितनी बढ़ती जायगी मेम्बरों के आराम और आसायश के साधनों पर उतना ही अधिक से अधिक ख़र्च किया जायेगा.

"इसका ख़ास ख़याल रखा जायेगा कि कोआपरेटिव का पूरा फ़ायदा उसके मेम्बरों को पहुँचे और कोई आदमी अपने लिये दूसरों की मेहनत से फ़ायदा न उठा सके.

"ज़ियादा बड़े या अमीर किसानों को अभी फ़िलहाल इन कोआपरेटिवों में शामिल नहीं किया जायेगा."

"इस पर निगाह रखी जायेगी कि देश में पूँजीवाद घटे और समाजवाद बढ़े.

"कोआपरेटिवों के इन्तज़ाम में सब के यानी जनता के हित का पूरा ख़याल रखा जायेगा. सारा प्रबन्ध मेम्बरों के ही हाथ में रहेगा, कोई बाहर वाला, सरकारी या ग़ैर सरकारी, उनके इन्तज़ाम में दख़ल नहीं दे सकेगा.

"क़ायदों में इसका ख़ास ख़याल रखा गया है कि कोआपरेटिव का कोई अधिकारी अपने अधिकार को इस तरह काम में न ला सके कि जिससे मेम्बरों के यानी आम लोगों के अधिकारों में और उनकी आज़ादी में किसी तरह का भी कोई फ़रक़ आ सके.

"जो अधिकारी इसके ख़िलाफ़ जायेंगे उनकी ख़ास रोक थाम का इन्तज़ाम किया गया है. किसान कोआपरेटिव का यह एक तरह से राजकाजी पहलू है."

नए चीन के किसान कोआपरेटिव के इन नए क़ायदों से नए चीन की स्पिरिट का पता चलता है और हम और दूसरे बहुत से देश उससे बहुत कुछ सीख सकते हैं.

21. 12. 55. —सुन्दरलाल

दिल्ली की नुमायश और 'नव जीवन'

दिल्ली की उस बड़ी नुमायश में, जिसे देखने को लाखों आदमी भारत के दूर-दूर के भागों से आ रहे हैं, हमें दो बार जाने का मौक़ा मिला. दोनों बार हमने सामने घुसते ही एक ऊँची दीवार पर नागरी अक्षरों में 'नव जीवन' शब्द लिखे हुए देखे. 'नव जीवन' शब्द भारत भर में प्रसिद्ध है. प्रदर्शनी की उस दीवार पर उन्हें लिखा देखकर हम यह समझे कि वहां नव जीवन प्रकाशन की पुस्तकें रखी होंगी. हमें कुछ ख़ुशी भी हुई यह सोचकर कि सरकार ने और उस नुमायश के अधिकारियों ने महात्मा गांधी के विचारों के ख़ास प्रचारक 'नवजीवन' को वहां जगह दी है

"کوآپریٹو اپنے میمبروں کو اِس بات میں مدد دیگی کہ ہر میمبر اپنے گھر والوں کے ساتھ ملکر کوئی نہ کوئی الگ ایسا نجی دھندا بھی کرتی رہے جس سے کوآپریٹو کے کام میں فرق نہ پڑے. کوآپریٹو کی آمدنی جتنی بڑھتی جائیگی میمبروں کے آرام اور آسایش کے سادھنوں پر اُتنا ہی ادھک سے ادھک خرچ کیا جائیگا.

"اِس کاخاص خیال رکھا جائیگا کہ کوآپریٹو کا پورا فایدہ اُس کے میمبروں کو پہونچے اور کوئی آدمی اپنے لئے دوسروں کی محنت سے فایدہ نہ اُٹھا سکے.

"زیادہ بڑے یا امیر کسانوں کو ابھی فی الحال اِن کوآپریٹوں میں شامل نہیں کیا جائیگا.

"اِس پر نگاہ رکھی جائیگی کہ دیش میں پونجی واد گھٹے اور سماج واد بڑھے.

"کوآپریٹو کے انتظام میں سب کے یعنی جنتا کے ہت کا پورا خیال رکھا جائیگا. سارا پربندھ میمبروں کے ہی ہاتھ میں رہیگا' کوئی باہر والا' سرکاری یا غیر سرکاری' اُن کے انتظام میں دخل نہیں دے سکیگا.

"قایدوں میں اِس کا خاص خیال رکھا گیا ہے کہ کوآپریٹو کا کوئی ادھیکاری اپنے ادھیکار کو اِس طرح کے کام میں نہ لاسکے کہ جس سے میمبروں کے یعنی عام لوگوں کے ادھیکاروں میں اور اُن کی آزادی میں کسی طرح بھی کوئی فرق آسکے.

"جو ادھیکاری اِس کے خلاف جائینگے اُن کی خاص روک تھام کا انتظام کیا گیا ہے. کسان کوآپریٹو کا یہ ایک طرح سے راجکاجی پہلو ہے."

نئے چین کے کسان کوآپریٹو کے اِن نئے قاعدوں سے نئے چین کی اِسپرٹ کا پتہ چلتا ہے اور ہم اور دوسرے بہت سے دیش اُس سے بہت کچھ سیکھ سکتے ہیں.

21. 12. 55 —سندرلال

دلی کی نمایش اور "نوجیون"

دلی کی اُس بڑی نمایش میں' جسے دیکھنے کو لاکھوں آدمی بھارت کے دور دور کے بھاگوں سے آرہے ہیں' ہمیں دو بار جانے کا موقع ملا. دونوں بار ہم نے سامنے گھستے ہی ایک اونچی دیوار پر ناگری اکشروں میں 'نوجیون' شبد لکھے ہوئے دیکھے. 'نوجیون' شبد بھارت بھر میں پرسدھ ہے. پردرشنی کی اُس دیوار پر اُنہیں لکھا دیکھکر ہم یہ سمجھے کہ وہاں نوجیون پرکاشن کی پستکیں رکھی ہونگی. ہمیں کچھ خوشی بھی ہوئی یہ سوچکر کہ سرکار نے اور اُس نمایش کے ادھیکاریوں نے مہاتما گاندھی کے وچاروں کے خاص پرچارک 'نوجیون' کو وہاں جگہ دی ہے

और इतनी अच्छी जगह दी है. दूसरी बार जब हम गए और नुमायश के उस हिस्से के पास से निकले तो हमने एक ओर की दीवार पर 'नव जीवन' का अंग्रेज़ी अनुवाद The New Life लिखा हुआ देखा. हम कुछ चकराए, क्योंकि आम तौर पर इस तरह के नामों का अनुवाद नहीं किया जाता. हमने एक दर्शक से पूछा तो मालूम हुआ कि नुमायश के उस भाग का 'नव जीवन' प्रकाशन के साथ कोई सम्बंध ही नहीं है. हमने अन्दर जाकर ध्यान से देखा. उस घर के अन्दर थोड़े से में भारत की इस समय की पिछड़ी हुई हालत को दिखाया गया है और उसके साथ सुधार का तरीक़ा बताया गया है. सुधार के मामले में अलग-अलग राय तो हैं ही. वहां हमें कुछ चीज़ें ठीक मालूम हुई और कुछ नाठीक भी. सरकारी योजनाओं का पूरा प्रचार था. सारी प्रदर्शनी का ही यह ख़ास पहलू साफ़ चमकता है. भारत के बड़े से बड़े मशहूर पूँजीपतियों के फ़ोटो भी उस 'नव जीवन' घर में ख़ास तौर से दिखाए गए हैं, उनकी तरफ़ लोगों का विशेष ध्यान आकर्षित किया गया है. जो हो, अच्छा, बुरा या मिला जुला, प्रदर्शनी का वह भाग न कोई गाँधीवादी चीज़ है न कोई कम्युनिस्ट चीज़ है, वह है शुद्ध पूँजीवादी. गाँधी जी के विचारों या नव जीवन के विचारों से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है.

यूँ तो भारत में हिन्दू गाँधी और पारसी गाँधी सब मिलाकर हज़ारों ही गाँधी हैं. हो सकता है इनमें से किसी रुसतम जी शापुर जी गाँधी के विचार देश सुधार के बारे में गाँधी जी के विचारों के ठीक उल्टे हों. ऐसी सूरत में अगर कोई रुसतम जी का अनुयायी रुसतम जी के विचारों को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करे और पुस्तक का नाम रख दे—"गाँधी जी के विचार", और ऊपर यही नाम लिखा हो, तो कौन रोक सकता है. क़ानूनी पोज़ीशन क्या है, हम नहीं जानते, न हमें जानने की चिन्ता है. पर नुमायश के अधिकारियों का 'नव जीवन' नाम को इस तरह काम में लाना बड़ी ग़लत बात है, जो सम्भव है हमारी तरह और बहुत सों को भी खटकी हो. अपने विचारों और अपनी योजनाओं के प्रचार का और अपने काम के विज्ञापन का हर एक को हक़ है, पर इस तरह किसी नाम की आड़ लेना उस नाम के साथ अन्याय करना है और, जाने या अनजाने, जनता को धोखे में डालने की कोशिश है.

नुमायश में बहुत से देशों के अपने-अपने अलग 'नुमायश घर' हैं. विदेशी नुमायश घरों में अधिकतर यात्री सब से अधिक तारीफ़ चीनी नुमायश घर की करते हुए निकलते हैं. वहाँ, 'चीनी कला' चीनी खेतों की पैदावार, चीनी दस्तकारियों, नए चीन की औद्योगिक उन्नति और चीन की बनी हुई कुछ नई मशीनों सब का बड़ा सुन्दर प्रदर्शन है.

اور اتنی اچھی جگہ دی ھے. دوسری بار جب ہم گئے اور نمایش کے اُس حصے کے پاس سے نکلے تو ہم نے ایک اُور کی دیوار پر 'نوجیون' کا انگریزی انوواد The New Life لکھا ھوا دیکھا . ہم کچھ چکرائے' کیونکہ عام طور پر اِس طرح کے ناموں کا انوواد نہیں کیا جاتا . ہم نے ایک درشک سے پوچھا تو معلوم ھوا کہ نمایش کے اُس بھاگ کا 'نوجیون' پرکاشن کے ساتھ کوئی سمبندھ ھی نہیں ھے . ہم نے اندر جاکر دھیان سے دیکھا . اُس گھر کے اندر تھوڑے سے میں بھارت کی اِس سمے کی پچھڑی ھوئی حالت کو دکھایا گیا ھے اور اُس کے ساتھ سدھار کا طریقہ بتایا گیا ھے . سدھار کے معاملہ میں الگ الگ رائے تو ھیں ھی . وھاں ھمیں کچھ چیزیں ٹھیک معلوم ھوئیں اور کچھ ناٹھیک بھی . سرکاری یوجناؤں کا پورا پرچار تھا . ساری پردرشنی کا ھی یہ خاص پہلو صاف چمکتا ھے . بھارت کے بڑے سے بڑے مشہور پونجی پتیوں کے فوٹو بھی اُس 'نوجیون' گھر میں خاص طور سے دکھائے گئے ھیں . اُن کی طرف لوگوں کا وشیش دھیان آکرشت کیا گیا ھے. جو ھو' اچھا' برا یا ملا جلا' پردرشنی کا وہ بھاگ نہ کوئی گاندھی وادی چیز ھے نہ کوئی کمیونسٹ چیز ھے' وہ ھے شدھ پونجی وادی . گاندھی جی کے وچاروں یا نوجیون کے وچاروں سے اُس کا کوئی سمبندھ نہیں ھے .

یوں تو بھارت میں ھندو گاندھی اور پارسی گاندھی سب ملاکر ھزاروں ھی گاندھی ھیں . ھوسکتا ھے اِن میں سے کسی رستم جی شاپور جی گاندھی کے وچار دیش سدھار کے بارے میں گاندھی جی کے وچاروں کے ٹھیک اُلٹے ھوں . ایسی صورت میں اگر کوئی رستم جی کا انویائی رستم جی کے وچاروں کو پستک کے روپ میں پرکاشت کرے اور پستک کا نام رکھدے —"گاندھی جی کے وچار" اور اُس پر یہی نام لکھا ھو' تو کون روک سکتا ھے . قانونی پوزیشن کیا ھے ہم نہیں جانتے' نہ ھمیں جاننے کی چنتا ھے. پر نمائش کے ادھیکاریوں کا 'نوجیون' نام کو اِس طرح کام میں لانا بڑی غلط بات ھے' جو سمبھو ھے ھماری طرح اور بہت سوں کو بھی کھٹکی ھو . اپنے وچاروں اور اپنی یوجناؤں کے پرچار کا اور اپنے کام کے وگیاپن کا ھر ایک کو حق ھے' پر اِس طرح کسی نام کی آڑ لینا اُس نام کے ساتھ انیائے کرنا ھے اور' جانے یا انجانے' جنتا کو دھوکے میں ڈالنے کی کوشش ھے .

نمایش میں بہت سے دیشوں کے اپنے اپنے الگ الگ 'نمائش گھر' ھیں . ودیشی نمایش گھروں میں ادھکتر یاتری سب سے ادھک تعریف چینی نمائش گھر کی کرتے ھوئے نکلتے ھیں . وھاں چینی کلا' چینی کھیتوں کی پیداوار' چینی دستکاریوں' نئے چین کی اودیوگک اُنتی اور چین کی بنی ھوئی کچھ نئی مشینوں سب کا بڑا سندر پردرشن ھے .

इसी तुमायश घर में भी रूस की औद्योगिक और खासकर वैज्ञानिक उन्नति का सब पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है. बाक़ी घरों में से पूरबी जरमनी के नुमायश घर में दो चीज़ें लोगों को खास तौर से पसन्द आती हैं—एक शीशे का एक आदमी जिसके अन्दर की अंतड़ियाँ, फेफड़े, दिल, गुर्दा, और एक एक नस साफ़ दिखाई देती है और यह सब अंग काम करते हुए भी दिखाई देते हैं, और दूसरे एक बन्द अंधेरा शामियाना जिसमें तारों भरी रात का समाँ और तारों और ग्रहों का घूमना देखने को मिलता है. अमरीकी नुमायश घर, जिसमें ऐटम और बिजली अधिक है, लोगों को एक तरह का जादूघर मालूम होता है. भारत के नुमायश घरों में कुछ घरेलू धंधों का भी अच्छा प्रदर्शन है, पर अधिकतर सरकार की पंच वर्षी योजना और भारत के बड़े बड़े पूँजीपतियों और कारखानों के मालिकों का बढ़िया विज्ञापन है.

एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी की हैसियत से चीज़ अच्छी है. पर जहाँ तक अपने देश का सम्बन्ध है, हमने जगह जगह लोगों के मुँह से यही शब्द या इनसे मिलते जुलते शब्द सुने—"भैया, सब सरमायादारों का खेल है!" यह है जनता पर आम असर और हमें यह ग़लत भी नहीं मालूम हुआ.

8-12-'55 —सुन्दरलाल

میں نمائش گھر میں بھی روس کی اُدیوگک اور خاصکر ویگیانک اُنتی کا سب پر بہت گہرا پربھاو پڑتا ہے. باقی گھروں میں سے پوربی جرمنی کے نمائش گھر میں دو چیزیں لوگوں کو خاص طور سے پسند آتی ہیں۔ ایک شیشے کا ایک آدمی جس کے اندر انتڑیاں، پھیپھڑے، دل، گردہ، اور ایک ایک نس صاف دکھائی دیتی ہے اور یہ سب انگ کام کرتے ہوئے بھی دکھائی دیتے ہیں، اور دوسرے ایک بند اندھیرا شامیانہ جس میں تاروں بھری رات کا سماں اور تاروں اور گرہوں کا گھومنا دیکھنے کو ملتا ہے. امریکی نمائش گھر، جس میں ایٹم اور بجلی ادھک ہے، لوگوں کو ایک طرح کا جادو گھر معلوم ہوتا ہے. بھارت کے نمائش گھروں میں گھریلو دھندوں کا بھی اچھا پردرشن ہے، پر ادھکتر سرکار کی پنچ ورشی یوجنا اور بھارت کے بڑے بڑے پونجی پتیوں اور کارخانوں کے مالکوں کا بڑھیا وگیاپن ہے.

ایک انترراشٹریہ پردرشنی کی حیثیت سے چیز اچھی ہے. پر جہاں تک اپنے دیش کا سمبندھ ہے ہم نے جگہ جگہ لوگوں کے منھ سے یہی شبد یا ان سے ملتے جلتے شبد سنے—"بھیا! سب سرمایہ داروں کا کھیل ہے!" یہ ہے جنتا پر عام اثر اور ہمیں یہ غلط بھی نہیں معلوم ہوا.

—سندر لال 8.12.55

ऐलोपैथी और दूसरे इलाज के तरीक़े

पिछले कई लेखों में हम यह दिखा चुके है कि नए चीन की सरकार यूरप के ऐलोपैथिक इलाज से पूरा पूरा लाभ उठाने के साथ साथ अपने देश के पुराने इलाज के तरीक़े से भी कितना लाभ उठा रही है और उसे किस तरह बढ़ावा दे रही है. सरकार ने वहां एक ख़ास महकमा खोल रखा है जिसका काम पुराने इलाज के तरीक़ों की साइंसी ढंग से खोज करना है. अनेक शहरों में बड़े बड़े अस्पताल खोले गए हैं जिनमें केवल पुराने तरीक़े से ही सब रोगों का इलाज किया जाता है. पुरानी दवाओं को नए रोगों पर आज़माया जा रहा है. अनेक रोगों में उन्हें ऐलोपैथिक दवाओं और ऐलोपैथिक इलाज के मुक़ाबले में पुरानी दवाएं और पुराना इलाज अधिक सफल मालूम हुआ है.

हाल में पेकिंग के बच्चों के अस्पताल के डिपटी डाइरेक्टर डाक्टर झू चेंग-वेन ने कहा है कि बच्चों के लक़वे की बीमारी में जिसे 'इनफ़ेन्टाइल पैरेलिसिस' कहते हैं पिछले दो साल के अन्दर पुराने तरीक़े से उनके यहां छिहत्तर फ़ीसदी (76%) बीमार बिलकुल अच्छे हो गए.

ایلوپیتھی اور دوسرے علاج کے طریقے

پچھلے کئی لیکھوں میں ہم یہ دکھا چکے ہیں کہ نئے چین کی سرکار یورپ کے ایلوپیتھک علاج سے پورا پورا لابھ اُٹھانے کے ساتھ ساتھ اپنے دیش کے پرانے علاج کے طریقے سے بھی کتنا لابھ اُٹھا رہی ہے اور اُسے کس طرح بڑھاوا دے رہی ہے. سرکار نے وہاں ایک خاص محکمہ کھول رکھا ہے جس کا کام پرانے علاج کے طریقوں کی سائنسی ڈھنگ سے کھوج کرنا ہے. انیک شہروں میں بڑے بڑے اسپتال کھولے گئے ہیں جن میں کیول پرانے طریقے سے ہی سب روگوں کا علاج کیا جاتا ہے. پرانی دواؤں کو نئے روگوں پر آزمایا جا رہا ہے. انیک روگوں میں انہیں ایلوپیتھک دواؤں اور ایلوپیتھک علاج کے مقابلے میں پرانی دوائیں اور پرانا علاج ادھک سپھل معلوم ہوا ہے.

حال میں پیکنگ کے بچوں کے اسپتال کے ڈپٹی ڈائریکٹر ڈاکٹر جھو چینگ-وین نے کہا ہے کہ بچوں کے لقوے کی بیماری میں جسے 'انفینٹائل پیریلیسس' کہتے ہیں پچھلے دو سال کے اندر پرانے طریقے سے اُن کے یہاں چھہتر فیصدی (76%) بیمار بالکل اچھے ہو گئے.

जिन बच्चों की टाँगें बिलकुल मारी गई थीं वह फिर से चलने फिरने लगे. इनमें से कुछ बच्चे ऐसे भी थे जिनके दो दो साल से हाथ पैर ख़तम हो चुके थे और पट्ठे बिलकुल बेजान हो गए थे. एक चार बरस का लड़का जिसकी ढाई साल से दोनों टाँगें मारी जा चुकी थी इस इलाज की बदौलत ज़रा से सहारे के साथ दूर दूर तक चलने फिरने लगा. थोड़े दिनों के बाद उसे इस सहारे की भी ज़रूरत न रह गई.

इलाज का यह पुराना तरीक़ा चीन में ऐक्युपंक्चर (acupuncture) कहलाता है. इसमें बारीक बारीक सुइयों के ज़रिये बदन की नसों को फिर से जगाया और जिलाया जाता है, लेकिन रोगी को किसी तरह की पीड़ा अनुभव नहीं होती.

हमें बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि भारत सरकार का स्वास्थ्य विभाग ऐलोपैथिक इलाज के तरीक़े पर इतना अधिक लट्टू है कि यहाँ के वैद्यक, यूनानी, होमियो-पैथी और नैचरोपैथी जैसे दूसरे इलाज के तरीक़ों को सरकार से जैसी मदद और जैसा बढ़ावा मिलना चाहिये, नहीं मिल रहा है, यहां तक कि जैसा हम पहले कह चुके हैं राजकुमारी अमृतकौर ने चीन से लौटकर पुराने चीनी इलाज के तरीक़े की तरफ़ नई चीनी सरकार के रुख़ को भी ग़लत बयान किया और सरकार अभी तक भी इलाज के दूसरे तरीक़ों को जो कुछ थोड़ी बहुत मदद दे रही है उस पर भी अफ़सोस ज़ाहिर किया !

हाल में दिल्ली के अन्दर एक मामला स्वयं राजकुमारी जी के सामने आया. भाकरा कन्ट्रोल बोर्ड नई दिल्ली के सेक्रेट्री श्री हरबन्स लाल वढेरा आई० एस० ई० को सन् 1945 में पाख़ाने के साथ ख़ून आना शुरू हुआ. श्री वढेरा मालूम होता है अंगरेज़ी ढंग के डाक्टरों के ही शैदाई थे. इलाज शुरू होगया. न जाने कितनी बार तरह तरह के इम्तहान हुए. बड़े बड़े नाम लेकर कभी एक तरह की पेचिश बताई गई, कभी दूसरी तरह की. दिल्ली के एक मशहूर अस्पताल में भी इलाज के लिये भरती हो गए. अब कहा गया कि पेचिश के साथ बवासीर भी है. खाने के लिये उन से कहा गया कि बिना मान्साहार के वह जलदी अच्छे नहीं होंगे. श्री वढेरा का कहना है कि उस आहार ने भी उन्हें नुक़सान ही किया. सन् 1952 में बीमारी और ज़ोर पर थी. कहा गया कि नीचे की अंतड़ियों में फोड़े हो गए हैं. एक्सरे फ़ोटो भी लिया गया. दिल्ली में फ़ायदा न हुआ तो बम्बई के डाक्टरों के पास पहुँचे और वहां से मद्रास. पेनसिलीन, स्ट्रेपटोमाईसीन, टेरामाईसीन, औरियो-माईसीन, कोर्टिसोन, क्लोरो-माईस्टाइन जैसी सब

تھیں بالکل ماری گئی تھیں وہ پھر سے چلنے پھرنے لگے۔ ان میں سے کچھ بچے ایسے بھی تھے جن کے دو سال سے ہاتھ پیر ختم ہو چکے تھے اور پٹھے بالکل بے جان ہو گئے تھے۔ ایک چار برس کا لڑکا جس کی ڈھائی سال سے دونوں ٹانگیں ماری جا چکی تھیں اس علاج کی بدولت ذرا سے سہارے کے ساتھ دور دور تک چلنے پھرنے لگا۔ تھوڑے دنوں کے بعد اسے اس سہارے کی بھی ضرورت نہ رہ گئی۔

علاج کا یہ پرانا طریقہ چین میں ایکیوپنکچر (Acu-puncture) کہلاتا ہے۔ اس میں باریک باریک سوئیوں کے ذریعے بدن کی نسوں کو پھر سے جگایا اور جلایا جاتا ہے، لیکن روگی کو کسی طرح کی پیڑا انوبھو نہیں ہوتی۔

ہمیں بڑے دکھ کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ بھارت سرکار کا سواستھیہ وبھاگ ایلوپیتھک علاج کے طریقہ پر اتنا ادھک لٹو ہے کہ یہاں کے ویدیک، یونانی، ہومیوپیتھی اور نیچروپیتھی جیسے دوسرے علاج کے طریقوں کو سرکار سے جیسی مدد اور جیسا بڑھاوا ملنا چاہئے نہیں مل رہا ہے، یہاں تک کہ جیسا ہم پہلے کہہ چکے ہیں راجکماری امرت‌کور نے چین سے لوٹ کر پرانے چینی علاج کے طریقہ کی طرف نئی چینی سرکار کے رخ کو بھی غلط بیان کیا اور سرکار ابھی تک بھی علاج کے دوسرے طریقوں کو جو کچھ تھوڑی بہت مدد دے رہی ہے اس پر بھی افسوس ظاہر کیا!

حال میں دلی کے اندر ایک معاملہ سویم راجکماری جی کے سامنے آیا۔ بھاکرا کنٹرول بورڈ نئی دلی کے سیکریٹری شری ہربنس لال ودیرا آئی۔ ایس۔ ای۔ کو جنوری سن 1945 میں پاخانے کے ساتھ خون آنا شروع ہوا۔ شری ودیرا معلوم ہوتا ہے انگریزی ڈھنگ کے ڈاکٹروں کے ہی شیدائی تھے۔ علاج شروع ہو گیا۔ نہ جانے کتنی بار طرح طرح کے امتحان ہوئے۔ بڑے بڑے نام لیکر کبھی ایک طرح کی پیچش بتائی گئی کبھی دوسری طرح کی۔ دلی کے ایک مشہور اسپتال میں بھی علاج کے لئے بھرتی ہو گئے۔ اب کہا گیا پیچش کے ساتھ بواسیر بھی ہے۔ کھانے کے لئے ان سے کہا گیا کہ بنا مانساہار کے وہ جلدی اچھے نہیں ہونگے۔ شری ودیرا کا کہنا ہے کہ اس آہار نے بھی انہیں نقصان ہی کیا۔ سن 1952 میں بیماری اور زور پر تھی۔ کہا گیا کہ نیچے کی انتڑیوں میں پھوڑے ہو گئے ہیں۔ ایکسرے فوٹو بھی لیا گیا۔ دلی میں فائدہ نہ ہوا تو بمبئی کے ڈاکٹروں کے پاس پہونچے اور وہاں سے مدراس۔ پینسلین، اسٹریپٹو مائیسین، ٹیرا مائیسین، اور یومائیسین، کورٹیسون، کلورومائسٹائن جیسی سب

अद्भुत दवाएं खाकर आजमाई गईं. इलाज में उनका दस हज़ार से अधिक रुपया ख़र्च हुआ. बजाय अच्छा होने के मर्ज़ बढ़ता ही चला गया. वज़न तीस पाउन्ड घट गया. मद्रास से फिर दिल्ली लौट आए. अब किसी मित्र ने उन्हें आयुर्वेदिक इलाज कराने की सलाह दी. श्री वधेरा सिवाय ऐलोपैथिक के और सब इलाजों को ढोंग समझते थे. आख़िर मजबूर होकर मार्च सन् 1953 में उन्होंने अपने को दिल्ली ही के एक अनुभवी वैद्य के हवाले कर दिया. केवल दो दिन की दवा से उन्हें इतना फ़र्क़ दिखाई दिया कि उन्होंने इलाज जारी रखा. वैद्य ने खाना उन्हें सादा बिना मान्स का दिया. वज़न धीरे धीरे फिर पहला सा हो गया और श्री वधेरा बिलकुल तन्दुरुस्त हो गए.

राजकुमारी जी के ही बयान में उन्हीं वैद्य का एक और मामला आया है जिसमें यूरप के पढ़े हुए श्री डी. पी. कपिल टैक्सटाइल इनजीनियर की पत्नी के एक लड़का दिल्ली के एक अस्पताल में पैदा हुआ. एक महीने के अन्दर बच्चे को बदहज़मी और दस्त शुरू हो गए. डेढ़ महीने तक तरह तरह की दवाइयां और इनजेक्शन दिये गए. अच्छे से अच्छे डाक्टर इलाज करने वाले थे. बच्चे की हालत नाज़ुक हो गई. आख़िर मजबूर होकर उन्होंने दिल्ली के उन्हीं अनुभवी वैद्य का इलाज शुरू कराया. आठ दस दिन के अन्दर बच्चा बिलकुल अच्छा हो गया. अब वह बच्चा तीन बरस का हो चुका है और अपनी तन्दुरुस्ती के लिये इनाम पा चुका है.

देश भर से इस तरह के अनगिनत रोगियों का हाल बयान किया जा सकता है. हमने यह दो केस केवल इस लिये दिये हैं कि यह दोनों दिल्ली के हैं और स्वयं राजकुमारी जी के नोटिस में आचुके हैं. हमें इसमें ज़रा भी संदेह नहीं कि ऐलोपैथी को छोड़कर इलाज के दूसरे तरीक़ों की तरफ़ भारत सरकार का रुख़, तजरबा, समझ और दलील तीनों के ख़िलाफ़ है और देशवासियों की माली हालत, उनकी तन्दुरुस्ती और विद्या की उन्नति तीनों के लिये अत्यन्त हानिकर है.

20. 12. 55 —सुन्दरलाल

بھوت دوائیں آن پر آزمائی گئیں۔ علاج میں اُن کا دس ہزار سے ادھک روپیہ خرچ ہوا۔ بجائے اچھا ہونے کے مرض بڑھتا ہی چلا گیا۔ وزن تیس پاؤنڈ گھٹ گیا۔ مدراس سے پھر دلی لوٹ آئے۔ اب کسی متر نے انہیں آیورویدک علاج کرانے کی صلاح دی۔ شری ودھیرا سوائے ایلوپیتھی کے اور سب علاجوں کو ڈھونگ سمجھتے تھے۔ آخر مجبور ہو کر مارچ سن 1953 میں اُنہوں نے اپنے کو دلی کے ہی ایک انوبھوی وید کے حوالے کر دیا۔ کیول دو دن کی دوا سے اُنہیں اِتنا فرق دکھائی دیا کہ اُنہوں نے علاج جاری رکھا۔ وید نے کھانا اُنہیں سادہ بنا مانس کا دیا۔ وزن دھیرے دھیرے پھر پہلا سا ہو گیا اور شری ودھیرا بالکل تندرست ہو گئے۔

راجکماری کے ہی بیان میں اُنہیں وید کا ایک اور معاملہ آیا ہے جس میں یورپ کے پڑھے ہوئے شری ڈی. پی. کپل ٹیکسٹائل انجینیر کی پتنی کے ایک لڑکا دلی کے ایک اسپتال میں پیدا ہوا۔ ایک مہینے کے اندر بچے کو بدہضمی اور دست شروع ہو گئے۔ ڈیڑھ مہینے تک طرح طرح کی دوائیاں اور انجیکشن دیئے گئے۔ اچھے سے اچھے ڈاکٹر علاج کرنے والے تھے۔ بچے کی حالت نازک ہو گئی۔ آخر مجبور ہو کر اُنہوں نے دلی کے اُنہیں انوبھوی وید کا علاج شروع کرایا۔ آٹھ دس دن کے اندر بچہ بالکل اچھا ہو گیا۔ اب وہ بچہ تین برس کا ہو چکا ہے اور اپنی تندرستی کے لئے انعام پا چکا ہے۔

دیش بھر سے اِس طرح کے اَنگنت روگیوں کا حال بیان کیا جا سکتا ہے۔ ہم نے یہ دو کیس کیول اِس لئے دیئے ہیں کہ یہ دونوں دلی کے ہیں اور سویم راجکماری جی کے نوٹس میں آچکے ہیں۔ ہمیں اِس میں ذرا بھی سندیہہ نہیں کہ ایلوپیتھی کو چھوڑ کر علاج کے دوسرے طریقوں کی طرف بھارت سرکار کا رخ، تجربہ، سمجھ اور دلیل تینوں کے خلاف ہے اور دیش واسیوں کی مالی حالت، اُن کی تندرستی اور ودیا کی اُنتی تینوں کے لئے اتیہنت ہانیکر ہے۔

—سندرلال 20. 12. 55

आचार्य नरेन्द्र देव

पिछली 19 फ़रवरी को आचार्य नरेन्द्र देव की लम्बी बीमारी के बाद इरोड (दक्खिन भारत) में अचानक मौत हो गई. उनका शव लखनऊ लाया गया जहाँ हज़ारों ग़मगीन दोस्त अहबाबों के आँसुओं के बीच उसे ठीक उसी जगह आग की लपटों के सुपुर्द कर दिया गया जहाँ कुछ बरस पहले श्रीमती सरोजिनी नायडु और डाक्टर बीरबल साहनी के पार्थिव जिस्म आग के सुपुर्द किये गये थे.

यूँ तो मौत के वक़्त आचार्य जी 65 बरस के थे फिर भी उनका इस तरह अचानक चला जाना न सिर्फ़ उनके अज़ीज़ों, दोस्तों और प्रजा सोशलिस्ट पार्टी वालों को अखरा बल्कि हिन्दुस्तान के हर समझदार नागरिक को इससे सख़्त सदमा पहुँचा. आचार्य जी की शख़्सीयत में कुछ ऐसी बात थी जिसने उन्हें सबका प्रिय पात्र बना दिया था. वे उम्र राजनीति में रहते हुये भी राजनीति के तंग नज़रिये से ऊपर थे. सीधा-सादा, मधुर, प्रेम से भरा हुआ उनका व्यक्तित्व था जो हर एक को उनका प्रशंसक बना देता था. उनकी नेकनीयती, ईमानदारी, कर्तव्य निष्ठा, सचाई और साफ़गोई सब पर असर डालती थी इसीलिये उनके चले जाने का देश के हर गिरोह, हर पार्टी और हर व्यक्ति को रंज है.

भारतीय कल्चर, भारतीय सभ्यता और भारतीय दर्शन के वे बहुत बड़े विद्वान थे. बौध धर्म पर उनके ग्रंथ विद्वत्ता, खोज और सरलता से भरे हुये हैं. आचार्य जी की हिन्दुस्तान के राजनैतिक और सांस्कृतिक जीवन में एक ख़ास जगह थी जिसे जल्द भर सकना नामुमकिन मालूम होता है. हम भी अपने इस ग़म में देशवासियों के साथ शरीक हैं.

क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार

कुल हिन्द अंजुमन तरक़्क़ी-ए-उर्दू के जनरल सेक्रेटरी क़ाज़ी अब्दुल ग़फ़्फ़ार का पिछले दिसम्बर में लम्बी बीमारी के बाद अलीगढ़ में इन्तक़ाल हो गया. क़ाज़ी साहब एक ख़ामोश, सीधे-सादे लेकिन बहुत ऊँचे दरजे के आलिम, उर्दू ज़बान के सेवक और हिन्दुस्तान की मिली जुली कल्चर के ज़बरदस्त हामी थे. उनमें आला दरजे की संगठन की शक्ति थी और उसूलों के लिये तकलीफ़ बरदाश्त करने की ताक़त.

वे हिन्दुस्तानी कल्चर सोसायटी की गवर्निंग बाडी के मेम्बर और 'नया हिन्द' के हम दर्दों में थे. उनकी मौत से जो जगह ख़ाली हुई है उसे आसानी से नहीं भरा जा सकता हम 'नया हिन्द' की तरफ़ से उनके ख़ानदान के लोगों के साथ दिली हमदर्दी का इज़हार करते हैं.

25. 2. '56 —विश्वम्भरनाथ पांडे

آچاریہ نریندر دیو

پچھلی 19 فروری کو آچاریہ نریندر دیو کی لمبی بیماری کے بعد ایروڈ (دکھن بھارت) میں اچانک موت ہوگئی۔ اُن کا شو لکھنؤ لایا گیا جہاں ہزاروں غمگین دوست احبابوں کے آنسوؤں کے بیچ اُسے ٹھیک اُسی جگہ آگ کی لپٹوں کے سپرد کردیا گیا جہاں کچھ برس پہلے شریمتی سروجنی نائڈو اور ڈاکٹر بیربل ساہنی کے پارتھو جسم آگ کے سپرد کئے گئے تھے۔

یوں تو موت کے وقت آچاریہ جی 65 برس کے تھے پھر بھی اُن کا اِس طرح اچانک چلا جانا نہ صرف اُن کے آتمیوں، دوستوں اور پرجا سوشلسٹ پارٹی والوں کو اکھرا بلکہ ہندستان کے ہر سمجھدار ناگرک کو اِس سے سخت صدمہ پہونچا۔ آچاریہ جی کی شخصیت میں کچھ ایسی بات تھی جس نے اُنھیں سب کا پریہ پاتر بنا دیا تھا۔ وے اگر راجنیتی میں رہتے ہوئے بھی راجنیتی کے تنگ نظریہ سے اوپر تھے۔ سیدھا-سادہ، مدھر، پریم سے بھرا ہوا اُن کا ویکتتو تھا جو ہر ایک کو اُن کا پرشنسک بنا دیتا تھا۔ اُن کی نیک نیتی، ایمانداری، کرتویہ نشٹھا، سچائی اور صاف گوئی سب پر اثر ڈالتی تھی اِسی لئے اُن کے چلے جانے کا دیش کے ہر گروہ، ہر پارٹی اور ہر ویکتی کو رنج ہے۔

بھارتیہ کلچر، بھارتیہ سبھیتا اور بھارتیہ درشن کے وے بہت بڑے ودوان تھے۔ بودھ دھرم پر اُن کے گرنتھ ودوتا، کھوج اور سرلتا سے بھرے ہوئے ہیں۔ آچاریہ جی کی ہندستان کے راجنیتک اور سانسکرتک جیون میں ایک خاص جگہ تھی جسے جلد بھر سکنا ناممکن معلوم ہوتا ہے۔ ہم بھی اپنے اِس غم میں دیش واسیوں کے ساتھ شریک ہیں۔

قاضی محمد عبدالغفار

کل ہند انجمن ترقی اُردو کے جنرل سکریٹری قاضی عبدالغفار کا پچھلے دسمبر میں لمبی بیماری کے بعد علیگڈھ میں انتقال ہو گیا۔ قاضی صاحب ایک خاموش، سیدھے سادے لیکن بہت اُونچے درجے کے عالم، اُردو زبان کے سیوک اور ہندستان کی ملی جلی کلچر کے زبردست حامی تھے۔ اُن میں اعلیٰ درجہ کی سنگٹھن کی شکتی تھی اور اُصولوں کے لئے تکلیف برداشت کرنے کی طاقت۔

وے ہندستانی کلچر سوسائٹی کی گورننگ باڈی کے ممبر اور نیا ہند کے ہمدردوں میں تھے۔ اُن کی موت سے جو جگہ خالی ہوئی ہے اُسے آسانی سے نہیں بھرا جا سکتا۔ ہم 'نیا ہند' کی طرف سے اُن کے خاندان کے لوگوں کے ساتھ دلی ہمدردی کا اظہار کرتے ہیں۔

25. 2. 56 —وشمبھر ناتھ پانڈے۔

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

इस नम्बर के ख़ास लेख — اِس نمبر کے خاص لیکھ

29 1956

हिन्द और ईरान का कल्चरी मेल जोल — ہند اور ایران کا کلچری میل جول
—विश्वम्भरनाथ पांडे — —وشومبھر ناتھ پانڈے

चीनी अदब (साहित्य) पर एक सरसरी नज़र — چینی ادب (ساھتیہ) پر ایک سرسری نظر
—डाक्टर लतीफ़ दफ़्तरी एम. ए. डी. फ़िल (आक्सन) — —ڈاکٹر لطیف دفتری ایم۔ اے۔ ڈی۔ فل۔ (آکسن)

नया मकान (कहानी) — نیا مکان (کہانی)
—प्रोफ़ेसर मुहम्मद मुजीब — —پروفیسر محمد مجیب

सङ्गम (एक झांकी) — سنگم (ایک جھانکی)
—स्वर्गीय प्रो॰ सुधीन्द्र — —سورگیہ پروفیسر سدھیندر

नये हिन्द की दूसरी पांच बरसी योजना — نئے ہند کی دوسری پانچ برسی یوجنا
—श्री जे. सी. कुमारप्पा — —شری جے۔ سی۔ کمارپپا

इसके अलावा — اسکے علاوہ

देस बिदेस के मसलों पर हमारी राय में ज़रूरी सम्पादकी नोट

دیس بدیس کے مسئلوں پر ہماری رائے میں ضروری سمپادکی نوٹ

...स्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद ...انی کلچر سوسائٹی الٰہ آباد

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

जिल्द 21 جلد नम्बर 3 نمبر

मार्च 1956 مارچ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145، مٹھی گنج الہ آباد

मार्च 1956 مارچ

हिन्द और ईरान का कल्चरी मेल जोल

विश्वम्भरनाथ पांडे

ईरान में भारत के राजदूत माननीय डाक्टर ताराचन्द ने भारत और ईरान के कल्चरी मेल जोल पर तक़रीर करते हुये कहा था—

"हिन्दुस्तान और ईरान एशिया के ऐसे दो देश हैं जिन्हें क़ुदरत ने एक दूसरे से पास पास बसाया है. बीच के पहाड़ी के सिलसिले और फैला हुआ समन्दर कभी भी दोनों तरफ़ से लोगों के मेल जोल को नहीं रोक सके. इन बीच की रुकावटों की वजह से दोनों तरफ़ से साहसी और प्रेमी लोग और भी ज़्यादा एक दूसरे की तरफ़ खिंचते रहे हैं. जब से इनसान की तारीख़ या इतिहास शुरू होता है उसके पहले से आज तक लगातार क़ाफ़िले के क़ाफ़िले ज़मीन के और पानी के रास्ते पहाड़ों, जंगलों, रेगिस्तानों और समन्दर को पार करते हुए इधर से उधर और उधर से इधर आते जाते रहे हैं.

"मालूम पड़ता है कि इन दो मुल्कों के लोगों ने लगभग एक साथ एक ही वक़्त इनसानी तहज़ीब की उन्नति की मंज़िलें तय करनी शुरू कीं. यह दोनों मुल्क अरब सागर के दो सिरों पर हैं. पच्छिम के सिरे पर क़ारू' नदी दक्खिनी जागरूस में से बहती हुई और उन मैदानों में से होती हुई जहां ईरान की सबसे पहली सभ्यताओं ने जन्म लिया था, ईरान की खाड़ी में जाकर गिरती है. पूर्व में सिन्ध नदी, जिसका निकास हिमालय की बरफ़ानी चोटियों से है, पंजाब और सिन्ध के मैदानों को सैलाब करती हुई किसी ज़माने में कच्छ की खाड़ी में जाकर गिरती थी. क़ारू' और सिन्ध दोनों पहाड़ी के पत्थरों और तरह तरह की उपजाऊ मिट्टी को अपने साथ ढकेलती, हमेशा अपना रास्ता बदलती और इन मुल्कों के अलग अलग हिस्सों को उपजाऊ बनाती रही हैं.

"अरब सागर के इन दोनों सिरों पर इनसानी तहज़ीब साथ-साथ शुरू हुई. दोनों जगह साथ-साथ शहर आबाद हुए, खेती बाड़ी, पशु पालन और धातु की चीज़ों के बनने के साथ-साथ दोनों जगह इनसान एक बहुत बड़े दरजे तक क़ुदरत की ग़ुलामी से एक साथ आज़ाद हुआ, दौलत और तिजारत, सामाजिक संस्थाएं, राज सरकार, इल्म और हुनर दोनों जगह फले फूले और दोनों जगह की सभ्यताओं को तरक़्क़ी देने लगे. पच्छिम में तख़्ते जमशीद (परसी पोलिस) [illegible], [illegible] और निहावन्द, उत्तर में अस्तराबाद और [illegible] [illegible] प्राचीन ईरानी शहरों की खुदाई से

ھند اور ایران کا کلچری میل جول

وشوبھرناتھ پانڈے

ایران میں بھارت کے راجدوت مانیہ ڈاکٹر تارا چند نے بھارت اور ایران کے کلچری میل جول پر تقریر کرتے ہوئے کہا تھا—

"ھندستان اور ایران ایشیا کے ایسے دو دیش ھیں جنھیں قدرت نے ایک دوسرے سے پاس پاس بسایا ھے. بیچ کے پہاڑی کے سلسلے اور پھیلا ھوا سمندر کبھی بھی دونوں طرف سے لوگوں کے میل جول کو نہیں روک سکے. ان بیچ کی رکاوٹوں کی وجہ سے دونوں طرف سے ساھسی اور پریمی لوگ اور بھی زیادہ ایک دوسرے کی طرف کھنچتے رھے ھیں. جب سے انسان کی تاریخ یا اتہاس شروع ھوتا ھے اس کے پہلے سے آج تک لگاتار قافلے کے قافلے زمین کے اور پانی کے راستے پہاڑوں، جنگلوں، ریگستانوں اور سمندر کو پار کرتے ھوئے ادھر سے ادھر اور ادھر سے ادھر آتے جاتے رھے ھیں.

"معلوم پڑتا ھے کہ ان دو ملکوں کے لوگوں نے لگ بھگ ایک ساتھ ایک ھی وقت انسانی تہذیب کی اُنتی کی منزلیں طے کرنی شروع کیں. یہ دونوں ملک عرب ساگر کے دو سروں پر ھیں. پچھم کے سرے پر قارون ندی دکھنی زاگروس میں سے بہتی ھوئی اور ان میدانوں میں سے ھوتی ھوئی جہاں ایران کی سب سے پہلی سبھیتاؤں نے جنم لیا تھا، ایران کی کھاڑی میں جاکر گرتی ھے، پورو میں سندھ ندی، جس کا نکاس ھمالیہ کی برفانی چوٹیوں سے ھے، پنجاب اور سندھ کے میدانوں کو سیلاب کرتی ھوئی کسی زمانے میں کچھ کی کھاڑی میں جاکر گرتی تھی. قارون اور سندھ دونوں پہاڑی کے پتھروں اور طرح طرح کی اُپجاؤ مٹی کو اپنے ساتھ ڈھکیلتی، ھمیشہ اپنا راستہ بدلتی اور ان ملکوں کے الگ الگ حصوں کو اُپجاؤ بناتی رھی ھیں.

"عرب ساگر کے ان دونوں سروں پر انسانی تہذیب ساتھ ساتھ شروع ھوئی. دونوں جگہ ساتھ ساتھ شہر آباد ھوئے، کھیتی باڑی، پشو پالن اور دھاتو کی چیزوں کے بننے کے ساتھ ساتھ دونوں جگہ انسان ایک بہت بڑے درجے تک قدرت کی غلامی سے ایک ساتھ آزاد ھوا، دولت اور تجارت، سماجک سنستھائیں، راج سرکار، علم اور ھنر دونوں جگہ پھلے پھولے اور دونوں جگہ کی سبھیتاؤں کو ترقی دینے لگے. پچھم میں تخت جمشید (پرسی پولس) شوش، کاشان اور نہاوند، اُتر میں استرآباد [illegible]

तांबा, पीतल, कांसा, सोना, जवाहिरात और मिट्टी के वह बर्तन मिले हैं जिन से उस ज़माने की ईरानी तहज़ीब और उसकी तरक़्क़ी की मंज़िलों का पता चलता है. ठीक उसी ज़माने की इस तरह की चीज़ें मोहनजोदाड़ो, हड़प्पा और सिन्ध नदी के आस पास के और मुक़ामों की खुदाई में मिली हैं. दोनों तरफ़ की इन चीज़ों से साफ़ पता चलता है कि यह दोनों सभ्यताएँ कितनी मिलती जुलती थीं."

इसके बाद दोनों देशों पर आर्य हमलावरों ने, जो घोड़ों पर सवार और लोहे के हथियार लिये हुये थे, धावा बोल दिया. उन्होंने इन दोनों मुल्कों को अपने अधीन कर लिया. धीरे-धीरे पुराने बाशिन्दे और नये हमलावार दोनों की नसलें एक दूसरे से रल मिलकर एक हो गई. यही आजकल के ईरानियों और हिन्दुस्तानियों दोनों के पुरखे थे. उनकी नसल एक थी, बोली एक थी, धर्म एक था और कल्चर एक थी.

इन आर्य लोगों के ईरान में बस जाने के बाद उन पर वहां के चारों तरफ़ की हालतों का पूरा असर पड़ा. ईरान में तरह-तरह के भू भाग हैं—कहीं पहाड़ और कहीं रेगिस्तान, कहीं दरियाओं की घाटियां और बीच के मैदान जो आदमियों, जानवरों और हरियाली से भरे हुए हैं, और कहीं रेतीले सफ़ाचट मैदान, जिनमें दूर-दूर तक न कोई जानदार दिखाई पड़ता है और न कोई घास का तिनका, जहां सिवाय हवा की सांय-सांय के कोई आवाज़ सुनाई नहीं देती. उजाले और अंधेरे, नेकी और बदी की शक्तियां, वहां साफ़ अलग अलग काम करती दिखाई देती थीं.

हिन्दुस्तान में इसके ख़िलाफ़ प्रकृति ज़्यादा नरम, मीठी, मुलायम और रहमदिल मालूम होती थी, एक दूसरे के बाद खुलते हुए बड़े मैदान थे जिन्हें बहुत से बड़े बड़े दरिया सींचते थे और हर साल मौसमी बारिश जिन्हें फिर से शादाब कर देती थी. हर साल नई बहार वहां आदमी के दिमाग़ में यह ख़्याल ही पैदा होने न देती थी कि प्रकृति की फ़य्याज़ी की कहीं हदें भी हैं या आबादी के मुक़ाबिले में कहीं वीराना भी है.

क़ुदरत की इन रंगारंगियों ने ईरान और हिन्दुस्तान, दोनों मुल्कों में इनसान के जज़बातों को नई उड़ानें और नई कल्पनायें दीं, जो न सिर्फ़ मौजूदा ज़िन्दगी से उन्हें निजात का इतमीनान दिलाती थीं बल्कि जन्म जन्मान्तर के लिये उन्हें उम्मीदों से भर देती थीं. इस आवागमन यानी तनासुख़ के बारे में आप ईरान के महान सूफ़ी मौलाना जलालुद्दीन रूमी का कलाम सुनिये......

"हमचो सब्ज़ा बारहा रोईदाअम,
हफ़्त सद हफ़्ताद क़ालिब दीदाअम।

تانبا' پیتل' کانسا' سونا' جواہرات اور مٹی کے وہ برتن ملے ہیں جن سے اس زمانے کی ایرانی تہذیب اور اس کی ترقی کی منزلوں کا پتہ چلتا ہے ۔ ٹھیک اسی زمانے کی اس طرح کی چیزیں موہن جوداڑو' ہڑپا اور سندھ ندی کے آس پاس کے اور مقاموں کی کھدائی میں ملی ہیں ۔ دونوں طرف کی ان چیزوں سے صاف پتہ چلتا ہے کہ یہ دونوں سبھیتائیں کتنی ملتی جلتی تھیں ۔

اس کے بعد دونوں دیشوں پر آریہ حملہ آوروں نے' جو گھوڑوں پر سوار اور لوہے کے ہتھیار لئے ہوئے تھے' دھاوا بول دیا ۔ انہوں نے ان دونوں ملکوں کو اپنے ادھین کرلیا ۔ دھیرے دھیرے پرانے باشندے اور نئے حملہ آور دونوں کی نسلیں ایک دوسرے سے رل مل کر ایک ہوگئیں ۔ یہی آجکل کے ایرانیوں اور ہندستانیوں دونوں کے پرکھے تھے ۔ ان کی نسل ایک تھی' بولی ایک تھی' دھرم ایک تھا اور کلچر ایک تھی ۔

ان آریہ لوگوں کے ایران میں بس جانے کے بعد ان پر وہاں کے چاروں طرف کی حالتوں کا پورا اثر پڑا ۔ ایران میں طرح طرح کے بھوبھاگ ہیں'—کہیں پہاڑ اور کہیں ریگستان' کہیں دریاؤں کی گھاٹیاں اور بیچ کے میدان جو آدمیوں' جانوروں اور ہریالی سے بھرے ہوئے ہیں' اور کہیں ریتیلے صاف چٹ میدان' جن میں دور دور تک نہ کوئی جاندار دکھائی پڑتا ہے اور نہ کوئی گھاس کا تنکا' جہاں سوائے ہوا کی سائیں سائیں کے کوئی آواز سنائی نہیں دیتی ۔ اجالے اور اندھیرے' نیکی اور بدی کی شکتیاں' وہاں صاف الگ الگ کام کرتی دکھائی دیتی تھیں ۔

ہندستان میں اس کے خلاف پرکرتی زیادہ نرم' میٹھی' ملایم اور رحمدل معلوم ہوتی تھی' ایک دوسرے کے بعد کھلتے ہوئے بڑے میدان تھے جنھیں بہت سے بڑے بڑے دریا سینچتے تھے اور ہر سال موسمی بارش جنھیں پھر سے شاداب کردیتی تھی ۔ ہر سال نئی بہار وہاں آدمی کے دماغ میں یہ خیال ہی پیدا ہونے نہ دیتی تھی کہ پرکرتی کی فیاضی کی کہیں حدیں بھی ہیں یا آبادی کے مقابلے میں کہیں ویرانہ بھی ہے ۔

قدرت کی ان رنگارنگیوں نے ایران اور ہندستان' دونوں ملکوں میں انسان کے جذباتوں کو نئی اڑانیں اور نئی کلپنائیں دیں' جو نہ صرف موجودہ زندگی سے انہیں نجات کا اطمینان دلاتی تھیں بلکہ جنم جنمانتر کے لئے انہیں امیدوں سے بھر دیتی تھیں ۔ اس آواگمن یعنی تناسخ کے بارے میں آپ ایران کے مہان صوفی مولانا جلال الدین رومی کا کلام سنئے......

همچو سبزه بارها روئیده ام'
هفت صد هفتاد قالب دیده ام ۔

अज़ जमादी मुर्दमो नामी शुदम,
वज़ नुमा मुर्दम ब हैवाँ सरज़दम।
मुर्दमज़ हैवानिओ आदम शुदम,
पस चे तरसम कै ज़मुर्दन कम शवम।
हमलये दीगर बमीरम अज़ बशर,
ता बरारम अज़ मलायक बालो पर।
बारे दीगर अज़ मलक पर्रां शवम,
आन्चे अन्दर वहम नायद आँ शवम।"

यानी—"मैं सब्ज़े यानी घास की तरह बार बार पैदा हुआ हूँ. मैंने सात सौ सत्तर जिस्म देखे हैं. मैं पहले जमादात यानी मिट्टी, पत्थर वग़ैरा की हालत में था. उसके बाद नबातात यानी वनस्पति बना. नबातात से निकलकर मैं पशु योनि में आया. पशु योनि से निकलकर मैं आदमी बना. आदमी के बाद फ़रिश्ता बनूँगा और फ़रिश्ते के बाद जिस ऊँची हालत को पहुँचूंगा वह इस वक़्त गुमान से बाहर है।"

दोनों देशों की मज़हबी एकता

ईरान के पैग़म्बरों में सबसे चमकता हुआ नाम ज़रतुश्त का है. ज़रतुश्त की पैदायश के वक़्त ईरान बहुत गिरी हुई हालत में था. अग्निपूजा ने निराकार ईश्वर की जगह ले ली थी. ज़रतुश्त की एकेश्वर की पूजा का पुरोहितों ने प्रचंड विरोध किया. लेकिन उन्हें अपने मिशन पर अखंड विश्वास था. अन्त में उन्हें कामयाबी हासिल हुई. उन्होंने ईरान को क़बीलों के झगड़ों से उठाकर एक विश्वात्मा, सर्व शक्तिमान अहुरमज़्द की उपासना का उपदेश दिया. रवीन्द्रनाथ ठाकुर के मुताबिक़ ज़रतुश्त पहले पैग़म्बर थे जिन्होंने धर्म को क़बीले के देवता के पद से ऊपर उठाकर उसे मानवता की वस्तु बताया.

ज़रतुश्त ने ईरानी मज़हब को जो नया रूप दिया वह अपने हर पहलू में साफ़ साफ़ यह बता रहा है कि ईरानी और वैदिक धर्म दोनों एक ही ख़ानदान से हैं. ऋग्वेद में लिखा है कि "ईश्वर एक है, विद्वान लोग उसे तरह तरह से बयान करते हैं." ईरानी धर्म-पुस्तक अवस्ता के मुताबिक़ "अहुरमज़्द ही इस सारी दुनिया का बनाने वाला और सारी ज़िन्दगी का मालिक है."

तीन हज़ार बरस पहले के ईरानी और हिन्दुस्तानी वरुण (इन्द्र), अग्नि, वायु, सोम और मित्र जैसे देवताओं की उपासना करते थे, नामों में बेशक थोड़ा बहुत फ़र्क़ हो चला था, जैसे अवस्ता में 'वरुण' का नाम 'वरण' है. अवस्ता और ऋग्वेद दोनों मे वरुण को इस सारी दुनिया का बनाने वाला, क़ायम रखने वाला और रक्षा करने वाला बताया गया है. वही सर्वज्ञ यानी अलीम है, वही ज़मीन और आसमान का बनाने वाला है,

از جمادی مردم و نامی شدم
وز نما مردم بہ حیواں سرزدم
مردم از حیوانیو آدم شدم
پس چہ ترسم کے ز مردم کم شوم
حملۂ دیگر بمیرم از بشر
تا برآرم از ملایک بال وپر
بار دیگر از ملک پرّاں شوم
آنچہ اندر وہم آید آں شوم

یعنی—"میں سبزے یعنی گھاس کی طرح بار بار پیدا ہوا ہوں. میں نے سات سوستر جسم دیکھے ہیں. میں پہلے جمادات یعنی مٹی پتھر وغیرہ کی حالت میں تھا . اس کے بعد نباتات یعنی ونسپتی بنا . نباتات سے نکلکر میں پشویونی میں آیا . پشو یونی سے نکل‌کر میں آدمی بنا . آدمی کے بعد فرشتہ بنونگا اور فرشتے کے بعد جس اونچی حالت کو پہونچونگا وہ اس وقت گمان سے باہر ہے ."

دونوں دیشوں کی مذہبی ایکتا

ایران کے پیغمبروں میں سب سے چمکتا ہوا نام زرتشت کا ہے . زرتشت کی پیدایش کے وقت ایران بہت گری ہوئی حالت میں تھا . اگنی پوجا نے نراکار ایشور کی جگہہ لے لی تھی . زرتشت کی ایکشور کی پوجا کا پروہتوں نے پرچنڈ ورودھ کیا . لیکن انہیں اپنے مشن پر اکھنڈ وشواس تھا . انت میں انہیں کامیابی حاصل ہوئی . انہوں نے ایران کو قبیلوں کے جھگڑوں سے اٹھاکر ایک وشوآتما، سرو شکتیمان اہرمزد کی اپاسنا کا اپدیش دیا . رویندرناتھ ٹھاکر کے مطابق زرتشت پہلے پیغمبر تھے جنہوں نے دھرم کو قبیلے کے دیوتا کے پد سے اوپر اٹھاکر اسے مانوتا کی وستو بتایا .

زرتشت نے ایرانی مذہب کو جو نیا روپ دیا وہ اپنے ہر پہلو میں صاف صاف یہ بتا رہا ہے کہ ایرانی اور ویدک دھرم دونوں ایک ہی خاندان سے ہیں . رگوید میں لکھا ہے کہ "ایشور ایک ہے، ودوان لوگ اسے طرح طرح سے بیان کرتے ہیں ." ایرانی دھرم پستک اوستا کے مطابق "اہرمزد ہی اس ساری دنیا کا بنانے والا اور ساری زندگی کا مالک ہے ."

تین ہزار برس پہلے کے ایرانی اور ہندستانی ورونٹر (اندر) اگنی، وایو، سوم اور مترا جیسے دیوتاؤں کی اپاسنا کرتے تھے، ناموں میں بیشک تھوڑا بہت فرق ہو چلا تھا، جیسے اوستا میں 'ورونٹر' کا نام 'ورنٹر' ہے . اوستا اور رگوید دونوں میں ورونٹر کو اس ساری دنیا کا بنانے والا، قایم رکھنے والا اور رکشا کرنے - والا بتایا گیا ہے . وہی سروگیہ یعنی علیم ہے، وہی زمین اور آسمان کا بنانے والا ہے،

उसने आसमान के अन्दर तारों और उनकी गति को क़ायम किया और जल और थल को फैला कर उनमें प्राणियों को बसाया है, वही सब कुछ जानने वाला और सब का हाकिम है.

वेदों में इसी वरुण को 'असुर विश्व देवस' या असुर मेधा कहा गया है. अवस्ता में उसे 'अहुरमज़्द' के नाम से पुकारा गया है. अवस्ता का 'अहुर' वेदों का 'असुर' है. ऋग्वेद की शुरू की रिचाओं में 'असुर' ईश्वर के अर्थ में ही आया है. ईरानी 'मज़्दा' के वही मानी हैं जो संस्कृत 'मेधा' के. ऋग्वेद के मुताबिक़ वैदिक काल में 'देवगण' और 'पितृगण' सभी 'मेधा' की उपासना करते थे.

'मित्र' का नाम अवस्ता में 'मिथ' है. संस्कृत में मित्र का अर्थ सूर्य भी है, ईरानी भी सूर्य के रूप में मित्र की पूजा करते थे. वैदिक वायु ईरानी वयु, वैदिक अग्नि अवस्ता का 'आतरे' है, जो बाद में फ़ारसी में आतश हो गया. दोनों में अग्नि देवता की पैदाइश बादलों के अन्दर की बिजली से बताई गई है. इन्द्र का नाम ज्यों का त्यों अवस्ता में मौजूद है. वेदों में इन्द्र का नाम 'वृत्रहन' है और अवस्ता में 'वृथ्रहन' है. यम अवस्ता का 'यिम' है, अप्सरा ईरान में 'पेरिका' हो गई. दोनों का काम तपस्वियों का योग भ्रष्ट करना है.

ईरानी और हिन्दुस्तानी दोनों ऐसे लोगों में से हैं जो जीवन को ख़ुशी और उमंग के साथ देखते थे, दोनों ऊंची ज़िन्दगी और नेकी के उसूलों के सच्चे खोजी थे. दोनों ने इस उसूल को पा लिया था कि सब का ख़ुदा यानी ईश्वर एक है. दोनों यह मानते थे कि दुनिया एक ऐसे अच्छे क़ानून के सहारे चल रही है जो हमेशा से है और हमेशा तक रहेगा.

इसी ख़्याल को ईरान के मशहूर सूफ़ी हाफ़िज़ ने किस ख़ूबसूरती के साथ अदा किया है—

'ख़ुर्रम आं रोज़ कज़ीं मंज़िले वीरां बेरवम्
राहते जां तलबम वज़ पए जानां बेरवम्
ब हवादारिये ऊ ज़र्रा सिफ़त रक़्स कुनम
ब लबे चश्मए ख़ुर्शीदे दरख़्शां बेरवम्
फ़ाश मी गोयमो अज़ गुफ़्तए ख़ुद दिल शादम्
बन्दए इश्क़मो वज़ हरदो जहां आज़ादम्
नेस्त बर लौहे दिलम जुज़ अलिफ़े क़ामते यार
चे कुनम हर्फ़े दिगर याद नदाद उस्तादम्'

यानी "मुबारक वह घड़ी होगी जब मैं दुनिया की इस उजड़ी सराय से विदा होऊंगा. उस दिन मैं रूहानी सुख की खोज में अपने प्रीतम को ढूंढूंगा.

اس نے آسمان کے اندر تاروں اور اُن کی گتی کو قائم کیا اور جل اور تھل کو پھیلا کر اُن میں پرانیوں کو بسایا ہے، وہی سب کچھ جاننے والا اور سب کا حاکم ہے ۔

ویدوں میں اِسی ورونٹر کو 'اسور وشو دیوس' یا اسور میدھا' کہا گیا ہے ۔ اوستا میں اُسے 'اھورمزد' کے نام سے پکارا گیا ہے ۔ اوستا کا 'اھور' ویدوں کا 'اسور' ہے ۔ رگوید کی شروع کی رچاؤں میں 'اسور' ایشور کے ارتھ میں ہی آیا ہے ۔ ایرانی 'مزدہ' کے وہی معنی ہیں جو سنسکرت 'میدھا' کے ۔ رگوید کے مطابق ویدک کال میں 'دیوگنڑ' اور 'پتر گنڑ' سبھی 'میدھا' کی اُپاسنا کرتے تھے ۔

'متر' کا نام اوستا میں 'متھر' ہے سنسکرت میں متر کا ارتھ سوریہ بھی ہے' ایرانی بھی سوریہ کے روپ میں متر کی پوجا کرتے تھے ۔ ویدک وایو ایرانی ویو' ویدک اگنی اوستا کا 'آترے' ہے' جو بعد میں فارسی میں آتش ہوگیا ۔ دونوں میں اگنی دیوتا کی پیدایش بادلوں کے اندر کی بجلی سے بتائی گئی ہے ۔ اندر کا نام جیوں کا تیوں اوستا میں موجود ہے ۔ ویدوں میں اندر کا نام 'ورترھن' ہے اور اوستا میں 'ورتھردھن' ہے ۔ یم اوستا کا 'اِم' ہے' اپسرا ایران میں 'پیریکا' ہوگئی ۔ دونوں کا کام تپسویوں کو یوگ بھرشٹ کرنا ہے ۔

ایرانی اور ھندستانی دونوں ایسے لوگوں میں سے ھیں جو جیون کو خوشی اور اُمنگ کے ساتھ دیکھتے تھے' دونوں اونچی زندگی اور نیکی کے اُصولوں کے سچے کھوجی تھے ۔ دونوں نے اِس اُصول کو پا لیا تھا کہ سب کا خدا یعنی ایشور ایک ہے ۔ دونوں یہ مانتے تھے کہ دنیا ایک ایسے اچھے قانون کے سہارے چل رھی ہے جو ھمیشہ سے ہے اور ھمیشہ تک رھیگا ۔

اِسی خیال کو ایران کے مشہور صوفی حافظ نے کس خوبصورتی کے ساتھ ادا کیا ہے—

خرم آں روز کزیں منزل ویراں بروم
راحت جاں طلبم وز پئے جاناں بروم
بہ ھواداریئے او زرہصفت رقص کنم
بہ لب چشمئہ خورشید درخشاں بروم
فاش می گویم واز گفتئہ خود دل شادم
بندئہ عشقم و ازھر دو جہاں آزادم
نیست بر لوح دلم جز الف قامت یار
چہ کنم حرف دگر یاد نداد استادم

یعنی "مبارک وہ گھڑی ہوگی جب میں دنیا کی اِس اُجڑی سرائے سے بدا ہونگا ۔ اُس دن میں روحانی سکھ کی کھوج میں اپنے پریتم کو ڈھونڈھونگا ۔

"दुनिया के अन्दर एक ज़र्रे की तरह नाचता हुआ,
सूरज के समान चमकते हुये अपने प्रीतम तक पहुँचूंगा.
मैं साफ़ साफ़ कहता हूं और अपनी बात कह कर मैं खुश हूं.
मैं इश्क़ का बन्दा हूं और दोनों जहान से आज़ाद हूं.
मेरे दिल की तख़्ती पर सिवाय मेरे प्रियतम परमात्मा अलिफ़
के सिवा कोई दूसरा अक्षर नहीं लिखा है.
मैं क्या करूँ मेरे गुरु ने मुझे कोई दूसरा अक्षर सिखाया
ही नहीं."

ाषा और साहित्य

हिन्द ईरानी भाषा समूह में कुछ समान ख़ासियतें हैं
सकी वजह से हिन्द ईरानी भाषा गिरोह अन्य आर्य
ाषा गिरोहों से एक अलहदा हस्ती रखता है. हिन्द ईरानी
रोह में तीन बुनियादी स्वरों की जगह सिर्फ़ एक अकार
. दोनों में उदासीन स्वर की जगह इकार है. अन्तस्थ
, ल का हिन्द ईरानी गिरोह में अभेद मिलता है. भाषा
शेषज्ञों का विचार है कि ये दोनों अन्तस्थ हिन्द ईरानी
ऋ और लृ हो गये हैं. पहली श्रेणी के कंठ्य स्पर्श हिन्द
ानी गिरोह में क, ख, ग, घ, से श, श्ह, ज, ज्ह, में
दल गये.

प्राचीन ईरानी और वेदों की भाषा में इतना साम्य है
क थोड़ी सी तब्दीली से एक दूसरे में बदल जाती है.
ानगी के तौर पर अवस्ता की एक पंक्ति सुनें...

"यों यथा पुथ्रम तउरुनम् ह्ओमम वन्दएंता मश्यो."

ब इसका संस्कृत रूपान्तर सुनें:

"यो यथा पुत्रम् तरुणम् सोमं वन्देत मर्त्यः."

ईरानी की दो उप शाखायें प्राचीन काल में मिलती हैं.
क 'परशि' और दूसरी 'अवस्ती'. इसी भाषा का कई
ताब्दी बाद वाला रूप पहलवी है. इसकी एक शैली में
ामी लफ़्ज़ों की भरमार है.

ईरान के साथ हिन्दुस्तान के गहरे कल्चरी सम्बन्धों
ी वजह से भारत की सूबाई ज़बानों के और ख़ास तौर
र हिन्दी के बहुत से शब्द फ़ारसी ज़बान में दाख़िल हो
ाये हैं. फ़ारसी में हिन्दी शब्दों की मिलावट महमूद ग़ज़नवी
 ज़माने से शुरू हुई. उस ज़माने के कवियों और लेखकों
ैसे फ़िरदौसी, उन्सरी, फ़र्रुख़ी, असदी और सनाई ने
ोतवाल, नौबहार, लगन, कतारा, कटार, चन्दन और
ानी—शब्दों का प्रयोग किया है. दूसरे ईरानी शायरों ने
ो हिन्दी लफ़्ज़ इस्तेमाल किये हैं ज़रा उनकी बानगी देखिये:
ागर, रावत, पायक, सेवती, मौलश्री वग़ैरह.

फ़ारसी ज़बान के सबसे पहले रूप देने वाले हंज़ल-
ादग़ीसी थे. रोदकी को सुल्तान-उल-शोरा कहा जाता है.

"دنیا کے اندر ایک ذرہ کی طرح ناچتا ہوا،
سورج کے سمان چمکتے ہوئے اپنے پریتم تک پہونچونگا۔
میں صاف صاف کہتا ہوں اور اپنی بات کہہ کر میں
خوش ہوں۔
میں عشق کا بندہ ہوں اور دونوں جہان سے آزاد ہوں
میرے دل کی تختی پر سوائے میرے پریتم پرماتما الف
کے سوا کوئی دوسرا اکشر نہیں لکھا۔
میں کیا کروں میرے گرو نے مجھے کوئی دوسرا اکشر سکھایا
ہی نہیں۔"

بھاشا اور ساہتیہ

ھند ایرانی بھاشا سموہ میں کچھ سمان خاصیتیں ہیں جس
کی وجہہ سے ھند اور ایرانی بھاشا گروہ انیہ آریہ بھاشا گروہوں
سے ایک علیحدہ ہستی رکھتا ھے۔ ھند ایرانی گروہ میں تین
بنیادی سوروں کی جگہہ صرف ایک اکار ھے۔ دونوں میں
اُداسین سور کی جگہہ اِکار ھے۔ انتستھ ر، ل کا ھند ایرانی گروہ
میں ابھید ملتا ھے۔ بھاشا وشیشگیوں کا وچار ھے کہ یہ دونوں
انتستھ ھند ایرانی میں رو اور لر ہو گئے ہیں۔ پہلی شرینی کے
کنٹھیہ اسپرش ھند یرانی گروہ میں کا، کھا، گا، گھا سے ش، شہ، ژ،
ژہ میں بدل گئے۔

پراچین ایرانی اور ویدوں کی بھاشا میں اتنا سامیہ ھے کہ
تھوڑی سی تبدیلی سے ایک دوسرے میں بدل جاتی ھے۔
بانگی کے طور پر اوستا کی ایک پنکتی سنیں...

"یوں یتھا پوتھرم تؤ رونم ھؤمم بندایتاں مشیو"

اب اِس کا سنسکرت روپا نتر سنیں:

"یویتھا پترم ترونم سومن وندیت مترئیہ۔"

ایرانی کی دو اُپ شاکھائیں پراچین کال میں ملتی ہیں
—ایک 'پرشی' اور دوسری 'اوستی'۔ اِسی بھاشا کا کئی
شتابدی والا روپ پہلوی ھے۔ اِس کی ایک شیلی میں سامی
لفظوں کی بھرمار ھے۔۔

اِیران کے ساتھ ھندستان کے گہرے کلچری سمبندھوں کی
وجہہ سے بھارت کی صوبائی زبانوں کے اور خاص طور پر ھندی
کے بہت سے شبد فارسی زبان میں داخل ہو گئے ہیں۔
فارسی میں ھندی شبدوں کی ملاوٹ محمود غزنوی کے زمانے
سے شروع ہوئی۔ اُس زمانے کے کویوں اور لیکھکوں جیسے فردوسی،
عنصری، فرخی، اسدی اور ثنائی نے—کوتوال، نوبہار، لگن، کتار،
کٹار، چندن اور پانی—شبدوں کا پریوگ کیا ھے۔ دوسرے ایرانی
شاعروں نے جو ھندی کے لفظ استعمال کئے ہیں ذرا ان کی
بانگی دیکھئے: ساگر، راوت، پایک، سیوتی، مونشری وغیرہ۔

فارسی زبان کے سب سے پہلے روپ دینے والے حنظلہ
بادغیسی ھے۔ رودکی کو "سلطان الشعرا" کہا جاتا ھے۔

फ़ारसी शायरों में ख़ास नाम दक़ीक़ी, उनसुरी, फ़र्रुख़ी, मनुचेहरी और असदी के हैं. उस ज़माने का सबसे बड़ा फ़ारसी शायर फ़िरदौसी था, जिसने प्राचीन ईरान की शान को फिर से चमका कर अमर कर दिया.

प्राचीन ईरानी कल्चर की यह बेदारी महज़ शेरो-शायरी तक ही महदूद नहीं रही. फ़ाराबी, इब्न सीना, अबुरेहान, अलबेरूनी जैसे बड़े बड़े फ़िलासफ़र इसी ज़माने के थे. तसव्वुफ़ के, फूल सबसे पहले ईरान में ही खिले. शुरू के सूफ़ियों में इब्राहीम अज़म, अहमद ख़ज़विया, अबुअली शक़ीक़, यहिया बिन मआज़, फ़ुज़ैल बिन अयाज़, मारूफ़ करख़ी, अबुल हुसेन नूरी और बायज़ीद बिस्तामी के नाम इज़्ज़त से याद किये जाते हैं.

रूढ़ियों और कर्मकांड के बन्धनों से मुक्त इन सदियों की आज़ाद ख़्याली की बानगी देखिये:

"दिल बदस्त आवर कि हज्जे अकबरस्त
अज़ हज़ारां काबा यक दिल बेहतरस्त !"

"काबा बुन्गाहे ख़लीले आज़रस्त
दिल गुज़रगाहे जलीले अकबरस्त !"

"दिला तवाफ़े दिलाँ कुन कि काबए मख़फ़ीस्त
कि आँ ख़लील बिना कर्दो ईं ख़ुदा ख़ुद साख़्त ।"

यानी—"किसी के दिल को हाथ में ले,
क्यों कि यही सबसे बड़ी हज्ज है
हज़ारों काबों से एक दिल बढ़कर है."

"काबा तो आज़र के बेटे ख़लील का क़ायम किया हुआ है
और दिल अल्लाह के आने जाने की जगह है."

"ए मेरे दिल ! दिलों की परिक्रमा कर, उनमें ही काबा छिपा हुआ है, वह पत्थर का काबा तो ख़लील का बनाया हुआ है और यह दिल के अन्दर का काबा ख़ुद ख़ुदा का बनाया हुआ है."

तसव्वुफ़ और वेदान्त

आइये इस तसव्वुफ़ या वेदान्त के नये दौर पर ज़रा हम ग़ौर करें. यह दौर ज्ञान की खोज का दौर था. भारत के छै वैदिक दर्शनों में से आख़िरी दर्शन उत्तर मीमांसा यानी वेदान्त है. वेदान्त के मुताबिक़ यह सारा विश्व माया से पैदा हुआ. यह सब एक धोखा है. परमात्मा यानी ब्रह्म ही असल हक़ीक़त है. शुरू में वही वह था और अपनी ही जोत यानी अपने ही नूर से रोशन था. उसी से यह क़ुदरत वजूद में आई और लाखों करोड़ों रूप बने. पर है यह सब माया यानी फ़रेब, और असल वजूद यानी असलियत एक वही है.

دربار کے شاعروں میں خاص نام دقیقی' عنصری' فرخی' منوچهری اور اسدی کے هیں . اُس زمانے کا سب سے بڑا فارسی شاعر فردوسی تھا' جس نے پراچین ایران کی شان کو پھر سے چمکا کر امر کر دیا .

پراچین ایرانی کلچر کی یہ بیداری محض شعروشاعری تک ہی محدود نہیں رہی . فارابی' ابن سینا' ابوریحان' البیرونی جیسے بڑے بڑے فلسفر بھی اِسی زمانے کے تھے . تصوف کے پھول سب سے پہلے اِیران میں ہی کھلے . شروع کے صوفیوں میں ابراهیم اعظم' احمد خزویه' ابو علی شقیق یحییٰ بن معاذ' فضیل بن ایاز' معروف کرخی' عبدالحسین نوری' اور بایزید بسطامی کے نام عزت سے یاد کئے جاتے هیں .

روڑھیوں اور کرم کانڈ کے بندھنوں سے مکت اِن صدیوں کی آزاد خیالی کی بانگی دیکھئے :

دل بدست آور که حج اکبرست
از هزاراں کعبه یک دل بهترست

کعبه بنگاه خلیل آذرست
دل گذرگاه جلیل اکبرست !

دلا طواف دلاں کن که کعبهٔ مخفیست
که آں خلیل بنا کرده ایں خدا خود ساخت

یعنی—"کسی کے دل کو ھاتھ میں لے'
کیونکہ یہی سب سے بڑی حج ھے .

هزاروں کعبوں سے ایک دل بڑھکر ھے
"کعبہ تو آذر کے بیٹے خلیل کا قایم کیا ھوا ھے
اور دل اللہ کے آنے جانے کی جگہہ ھے"

"اے میرے دل دلوں کی پریکرما کر؛ اُن میں ھی کعبہ چھپا ھوا ھے' وہ پتھر کا کعبہ تو خلیل کا بنایا ھوا ھے اور یہ دل کے اندر کا کعبہ خود خدا کا بنایا ھوا ھے ."

تصوف اور ویدانت

آئیے اِس تصوف یا ویدانت کے نئے دور پر ذرا ھم غورکریں. یہ دور گیان کی کھوج کا دور تھا . بھارت کے چھ ویدک درشنوں میں سے آخری درشن اُتر میمانسا یعنی ویدانت ھے . ویدانت کے مطابق یہ سارا وشو مایا سے پیدا ھوا . یہ سب ایک دھوکا ھے . پرماتما یعنی برھم ھی اصل حقیقت ھے . شروع میں وھی وہ تھا اور اپنی ھی جوت یعنی اپنے ھی نور سے روشن تھا . اُسی سے یہ قدرت وجود میں آئی اور لاکھوں کروڑوں روپ بنے . پر ھے یہ سب مایا یعنی فریب' اور اصل وجود یعنی اصلیت ایک وھی ھے .

हिन्दुस्तान की वेदान्त फ़िलासफ़ी इसी उसूल से शुरू होती है कि आदमी की आत्मा ही ब्रह्म है. वही वह है, वही तू है, वही मैं हूँ, वही सब कुछ है. माया में फंस कर वह आत्मा अपने को भूल जाती है और फिर जागती है और अपने को पहचानती है. इसी का नाम तसव्वुफ़ है. तसव्वुफ़ के मुताबिक़ ख़ुदा एक और सनातन है. उसका न कोई पैदा करने वाला है और न उससे कोई पैदा होता है. वह ग़नी है यानी उसको न कोई मदद देता है और न वह किसी की मदद चाहता है. वह आगे है न पीछे है. न नीचे है न ऊपर, वह नज़दीक से नज़दीक है और दूर से दूर, फिर भी न उसकी कोई कैफ़ियत बयान की जा सकती है और न वह क़यास में आ सकता है.

उस परमात्मा में फ़ना हो जाना ही मोक्ष यानी निजात है. उसका एक ही रास्ता है जिसे योग यानी सलूक कहते हैं. इस योग के रास्ते में बहुत से मुक़ाम हैं. वेदान्त में इन मुक़ामों को यम, नियम, तप, चितप्रसादम्, चित्त परिक्रम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, निर्विकल्प और समाधि कहते हैं. इन्हीं को तसव्वुफ़ की इस्तलाहों में तहज़ीबुन्नफ़्र, तसफ़ीयएदिल, नफ़्सकुशी, रियाज़त, तनक़ीयए क़ल्ब, ज़िक्र, फ़िक्र, मुजाहिदा, अशग़ाल, हब्सदम, मुराक़िबा, मकाशफ़ा, मुशाहिदा, हाल, दीदार और वज्द कहते हैं. तसव्वुफ़ कहता है—अपने होंटों को बन्द करो, अपनी आंखों को बन्द करो, अपने कानों को बन्द करो और तब तुम्हें अपने अन्दर हक़ की सूरत दिखाई देगी. वेदान्त कहता है—जब आदमी की सब इन्द्रियां यानी उसके सब हवास बाहर की तमाम चीज़ों से अपने में खिंचकर अपने अन्दर की तरफ़ मुड़ते हैं और मन पूरी तरह शान्त और निश्चल हो जाता है तब आत्मा अपने को देख पाती है, तब वह देखती है कि सब कुछ वही वह है और कुछ है ही नहीं, तब आदमी की आत्मा परमात्मा या रूहेकुल के साथ मिलकर एक हो जाती है, तब कोई ग़ैर नहीं रह जाता.

जब ईरानी तसव्वुफ़ और भारतीय वेदान्त हिन्दुस्तान की सरज़मीन पर मिले तो हिन्दू और मुसलमान दोनों में तलाशे हक़ के लिये एक नया जोश पैदा हुआ. दोनों में इतनी साफ़ समानता यानी मुशाबेहत थी कि दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया. तसव्वुफ़ के दायरे में कुफ़्र और इसलाम के फ़र्क़ मिट गये. इस मेल को परम सूफ़ी फ़रीदुद्दीन अत्तार ने इन भावों में अदा किया है :

"कुफ़्रो इस्लाम दर रहत पोयाँ
वहदहूलाशरीक गो - योयाँ
कुफ़्र काफ़िर रा व दीं दींदार रा
ज़र्रए दर्दे दिल अत्तार रा।"

"कुफ़्र और इस्लाम दोनों उसी एक अल्लाह की राह में दौड़ रहे हैं. दोनों यही कह रहे हैं कि वह अल्लाह एक है, उस सा कोई

هندستان کی ویدانت فلسفی اِسی اصول سے شروع ہوتی ہے کہ آدمی کی آتما ہی برہم ہے۔ وہی وہ ہے، وہی تو ہے، وہی میں ہوں، وہی سب کچھ ہے۔ مایا میں پھنس کر وہ آتما اپنے کو بھول جاتی ہے اور پھر جاگتی ہے اور اپنے کو پہچانتی ہے۔ اِسی کا نام تصوف ہے۔ تصوف کے مطابق خدا ایک اور سناتن ہے۔ اُس کا نہ کوئی پیدا کرنے والا ہے اور نہ اُس سے کوئی پیدا ہوتا ہے۔ وہ غنی ہے یعنی اُس کو نہ کوئی مدد دیتا ہے اور نہ وہ کسی کی مدد چاہتا ہے۔ وہ آگے ہے نہ پیچھے ہے، نہ نیچے ہے نہ اوپر، وہ نزدیک سے نزدیک ہے اور دور سے دور۔ پھر بھی نہ اُس کی کوئی کیفیت بیان کی جا سکتی ہے اور نہ وہ قیاس میں آسکتا ہے۔

اُس پرماتما میں فنا ہو جانا ہی موکش یعنی نجات ہے۔ اِس کا ایک ہی راستہ ہے جسے یوگ یعنی سلوک کہتے ہیں۔ اِس یوگ کے راستے میں بہت سے مقام ہیں۔ ویدانت میں اِن مقاموں کو یم، نیم، تپ، چت پرسادم، چت پرنکرم، آسن، پرانایام، پرتیاہار، دھیان، دھارنا، نروکلپ اور سمادھی کہتے ہیں۔ انہیں کو تصوف کی اِصطلاحوں میں تہذیب النفس، تصفئی دل، نفس کشی، ریاضت، تنقیہہ قلب، ذکر، فکر، مجاہدہ، اشغال، حبس دم، مراقبہ، مکاشفہ، مشاہدہ، حال، دیدار اور وجد کہتے ہیں۔ تصوف کہتا ہے — اپنے ہونٹوں کو بند کرو، اپنی آنکھوں کو بند کرو، اپنے کانوں کو بند کرو اور تب تمہیں اپنے اندر حق کی صورت دکھائی دیگی۔ ویدانت کہتا ہے — جب آدمی کی سب اِندریاں یعنی اُس کے سب حواس باہر کی تمام چیزوں سے اپنے میں کھینچکر اپنے اندر کی طرف مڑتے ہیں اور من پوری طرح شانت اور نشچل ہو جاتا ہے تب آتما اپنے کو دیکھ پاتی ہے، تب وہ دیکھتی ہے کہ سب کچھ وہی وہ ہے اور کچھ ہے ہی نہیں، تب آدمی کی آتما پرماتما یا روح کل کے ساتھ ملکر ایک ہو جاتی ہے، تب کوئی غیر نہیں رہ جاتا۔

جب اِیرانی تصوف اور بھارتیہ ویدانت ہندستان کی سرزمین پر ملے تو ہندو اور مسلمان دونوں میں تلاش حق کے لئے ایک نیا جوش پیدا ہوا۔ دونوں میں اِتنی صاف سمانتا یعنی مشابہت تھی کہ دونوں نے ایک دوسرے کو پہچان لیا۔ تصوف کے دایرے میں کفر اور اِسلام کے فرق مٹ گئے۔ اِس میل کو پرم صوفی فریدالدین عطار نے اِن بھاؤں میں ادا کیا ہے :

"کفر و اِسلام در رہت پویاں
وحدہ لاشریک لاگویاں
کفر کافر را و دین دیندار را
ذرۂ درد دل عطار را۔"

"کفر اور اِسلام دونوں اُسی ایک اللہ کی راہ میں دوڑ رہے ہیں، دونوں یہی کہ رہے ہیں کہ وہ اللہ ایک ہے، اُس سا کوئی

[illegible] कुफ्र काफ़िर को मुबारिक रहे और दीन दीनदार को. [illegible] के दिल के लिये प्रेम रूपी गुलाब का एक ज़र्रा काफ़ी है."

मज़हबे इश्क़ और प्रेम धर्म

आपस के इसी मिलाप से वह गहरी धारा बह निकली जिसे दुनिया मज़हबे इश्क़ यानी प्रेम धर्म के नाम से पुकारती है और यह मज़हबे इश्क़ या प्रेम धर्म है क्या ? दुनिया की ख़ाहिशों से दिल को हटाना, जो मिल गया उस पर सन्तोष करना, आदमी आदमी से मुहब्बत करना, परमात्मा यानी रूहेकुल से लौ लगाना, जिन्होंने दुनिया को तज दिया है उनका सत्संग करना, गुरु या पीर की इज्ज़त करना, यही प्रेम धर्म का निचोड़ था.

इन प्रेम धर्मी सूफ़ियों के सिरमौर मनसूर थे, जो एक ऐसे मुक़ाम पर पहुंच गए थे जहां से वे कह सके: "अनलहक़ यानी मैं ही ब्रह्म हूँ." इसी मुक़ाम पर पहुँचकर बायज़ीद बिस्तामी ने कहा था: "सुबहानी मा आज़मशानी". ईरान के मशहूर सूफ़ियों में फ़रीदुद्दीन अत्तार, अबुलमज्द सनाई और सब में बुज़ुर्ग और प्रेम धर्म के सरताज मौलाना जलालुद्दीन रूमी बलख़ी थे. हिन्दुस्तान में कबीर, नानक, दादू, तुकाराम, मुईनुद्दीन चिश्ती, बाबा फ़रीद, रज्जब, सरमद और दाराशिकोह ने और बाहर से आकर शम्सतबरेज़ ने इस प्रेम धर्म को फैलाया. इस से सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के वे पुतले तैयार हुए जिनको देखकर आज भी हमारी रगों में ख़ून तेज़ी से दौड़ने लगता है. इसी दिल से वे जज़बे, वे विचार, वे भावनाएं पैदा हुईं जिन्होंने कुछ दिनों के लिए करोड़ों हिन्दुस्तानियों के दिलों से दुई को मिटा दिया.

प्रेमियों के इस धर्म को बयान करते हुए मौलाना रूम फ़रमाते हैं :

"मूसिया आदाब दानाँ दीगरन्द
आशिक़ाँ सोज़े, दरूनाँ दीगरन्द
हिन्दियाँ रा इस्तलाहे दादाअन्द
सिन्धियाँ रा इस्तलाहे दीगरन्द
तू बराए वस्ल करदन आमदी
नै बराए फ़स्ल करदन आमदी
मज़्हबे इश्क़ अज़ हमा मिल्लत जुदास्त
आशिक़ाँ रा मज़्हबो मिल्लत ख़ुदास्त

"ऐ मूसा ! आदाब यानी कर्म कांड के जानने वाले और होते हैं और वह प्रेमी जिनके अन्दर बिरह की आग लगी हुई हो दूसरे होते हैं.

"हमने हिन्दुस्तान के रहने वालों को दूसरी तरह का कर्म कांड बता दिया है और सिन्ध के रहने वालों को दूसरी तरह का कर्म कांड बता दिया है.

دوسرا نہیں [illegible] کفر [illegible] کو مبارک رہے اور دین دیندار کو ۔ عطار کے دل کے لئے پریم روپی گلاب کا ایک ذرہ کافی ہے ۔"

مذہب عشق اور پریم دھرم

آپس کے اِسی ملاپ سے وہ گہری دھارا بہ نکلی جسے دنیا مذہب عشق یعنی پریم دھرم کے نام سے پکارتی ہے اور یہ مذہب عشق یا پریم دھرم ہے کیا ؟ دنیا کی خواہشوں سے دل کو ہٹانا' جو مل گیا اُس پر سنتوش کرنا' آدمی آدمی سے محبت کرنا' پرماتما یعنی روح کل سے لو لگانا' جنہوں نے دنیا کو تج دیا ہے اُن کا ست سنگ کرنا' گرو یا پیر کی عزت کرنا' یہی پریم دھرم کا نچوڑ تھا ۔

اِن پریم دھرمی صوفیوں کے سرمور منصور تھے' جو ایک ایسے مقام پر پہونچ گئے تھے جہاں سے وے کہ سکے—"اناالحق یعنی میں ہی برہم ہوں۔" اِسی مقام پر پہونچکر بایزید بسطامی نے کہا تھا۔ "سبحانی ما اعظم شانی۔" ایران کے مشہور صوفیوں میں فریدالدین عطار' ابوالمجد سنائی اور سب میں بزرگ اور پریم دھرم کے سرتاج مولانا جلال الدین رومی بلخی تھے ۔ ہندستان میں کبیر' نانک' دادو' تکا رام' معین الدین چشتی' بابا فرید' رجب' سرمد اور داراشکوہ نے اور باہر سے آکر شمس تبریز نے اِس پریم دھرم کو پھیلایا ۔ اِس سے ستیم' شوم' سندرم کے وے پتلے تیار ہوئے جن کو دیکھکر آج بھی ہماری رگوں میں خون تیزی سے دوڑنے لگتا ہے ۔ اِسی دل سے وے جذبے' وے وچار' وے بھاؤنائیں پیدا ہوئیں جنہوں نے کچھ دنوں کے لئے کروڑوں ہندستانیوں کے دلوں سے دوئی کو مٹا دیا ۔

پریمیوں کے اِس دھرم کو بیان کرتے ہوئے مولانا روم فرماتے ہیں :

"موسیا آداب داناں دیگراند
عاشقاں سوز دروناں دیگراند
"ہندیاں را اِصطلاحے دادہ اند
سندھیاں را اِصطلاحے دیگراند
"تو برائے وصل کردن آمدی
نے برائے فصل کردن آمدی
"مذہب عشق ازہمہ ملت جداست
عاشقاں را مذہب و ملت خدا ست"

"اے موسیٰ ! آداب یعنی کرم کانڈ کے جاننے والے اور ہوتے ہیں اور وہ پریمی جن کے اندر برہ کی آگ لگی ہوئی ہو دوسرے ہوتے ہیں ۔

"ہم نے ہندستان کے رہنے والوں کو دوسری طرح کا کرم کانڈ بتا دیا ہے اور سندھ کے رہنے والوں کو دوسری طرح کا کرم کانڈ بتا دیا ہے ۔

तुम्हें सब को मिलाने के लिए भेजा गया था.
एक को दूसरे से काटने के लिए नहीं भेजा गया था.
प्रेम धर्म सब धर्मों से अलग है.
प्रेमी के लिए एक ख़ुदा ही उसका दीन और .ख़ुदा ही उसका धर्म है."

प्रेम के इसी धर्म ने प्रेम के देवता सरमद को लखपती फ़क़ीर बनाकर ईरान से हिन्दुस्तान की ख़ाक छानने के ए प्रोत्साहन दिया. प्रेम का यह निर्भीक देवता इसी दिल्ली सूली पर नहीं बल्कि प्रेम की वेदी पर क़ुरबान हो गया.

सूली के तख़्ते से प्रेम धर्मियों को दावत देते हुए सरमद कितने इतमीनान के साथ कहा था :—

> "आशिक़ो इश्क़ बुतो बुतगरो अय्यारे कीस्त
> काबओ दैरो मसजिद हमाजा तारीकीस्त !
> गर दरआई ब चमने वहदते यकरंगी बीं
> ग़ौर कुन आशिक़ो माशूक़ो गुलोख़ार यकीस्त !
> तर्क करदम काराहाए जुमला अज़ मावाए ख़ेश
> नूरे हक़ रा दीदाअम अज़ .ज़ेर ता बालाए ख़ेश !
> गर तू मी ख़्वाही चुनीं हमशाँ जुदा अज़ जाए ख़ुद
> ता बबीनी मज़हरे हक़ जुम्ला सर ता पाए ख़ेश !"

"आशिक़ और इश्क़, मूर्ति और मूर्तिकार कौन है ?
काबा, बुतख़ाना और मसजिद सब जगह अंधेरा है.
अगर तू वहदत की यकरंगी के चमन में आकर देखे
तो तू पायेगा कि आशिक़ और माशूक़, फूल और कांटे सब एक हैं.
मैं रूढ़ियों और कर्म कांड सब को तर्क करता हूं,
मैं सर से पैर तक सचाई की रोशनी को देख रहा हूँ,
अगर तू भी मेरी तरह होना चाहता है तो रूढ़ियों का त्याग कर,
ताकि तू भी मेरी तरह सचाई के ज़हूर को देख सके."

न्द-ईरानी कला

ईरान और हिन्दुस्तान के हज़ारों बरस के आपसी लाप का नतीजा यह निकला कि दोनों मुल्कों ने एक दूसरे कला और संस्कृति की दौलत से मालामाल किया. सबसे ले मशहूर ईरानी शहनशाह दारा के ज़माने मे भारत नी कला के मेल के नमूने हमें मिलते हैं. चन्द्रगुप्त मौर्य कई ईरानी तौर तरीक़े अपने दरबार में जारी किए. ईरान असर से ही भारत में वह खरौष्ठि लिपि चली थी जो रसी की तरह दाहने से बाएं को लिखी जाती है. सम्राट शोक के बहुत से शिलालेख इसी खरोष्ठि में हैं और उनमें त से ईरानी शब्द आते हैं. पहाड़ों, चट्टानों और स्तम्भों लेख खोदने का रिवाज भी सम्राट अशोक ने दारा से

تمھیں سب کو ملانے کے لئے بھیجا گیا تھا .
ایک کو دوسرے سے پھاڑنے کے لئے نہیں بھیجا گیا تھا .
"پریم دھرم سب دھرموں سے الگ ھے .
پریمی کے لئے ایک خدا ھی اُس کا دین اور خدا ھی اُس دھرم ھے ."

پریم کے اِسی دھرم نے پریم کے دیوتا سرمد کو لکھپتی سے فقیر بنا کر اِیران سے ھندستان کی خاک چھاننے کے لئے پروتساھن دیا . پریم کا یہ نربھیک دیوتا اِسی دلی میں سولی پر نہیں بلکہ پریم کی ویدی پر قربان ھو گیا .

سولی کے تختے سے پریم دھرمیوں کو دعوت دیتے ھوئے سرمد نے کتنے اطمینان سے ساتھ کہا تھا:—

> "عاشقو عشق بت و بتگرو عیارے کیست
> کعبہ و دیر و مسجد ھمہ جا تاریکیست !
> گر در آئی بہ چمن وحدت یکرنگی بیں
> غور کن عاشق و معشوق و گل وخاریکیست !
> "ترک کردم چارہھائے جملہ از ماوائے خویش
> نور حق را دیدہ ام از زیر تا بالائے خویش !
> گر تو می خواھی چنیں ھمہ شاں جدا ازجائے خود
> تابہ بینی مظھر حق جملہ سرتا پائے خویش !"

"عاشق اور عشق' مورتی اور مورتیکار کون ھے ؟
کعبہ' بت خانہ اور مسجد سب جگہہ اندھیرا ھے .
اگر تو وحدت کی یکرنگی کے چمن میں آکر دیکھے
توتوپائیگا کہ عاشق اور معشوق' پھول اور کانٹے سب ایک ھیں .
"میں روڑھیوں اور کرم کا نڈ سب کو ترک کرتا ھوں '
میں سر سے پیرتک سچائی کی روشنی کو دیکھ رھا ھوں '
اگر تو بھی میری طرح ھونا چاھتا ھے تو روڑھیوں کا تیاگ کر'
تاکہ تو بھی میری طرح سچائی کے ظہور کو دیکھ سکے ."

ھند اِیرانی کلا

اِیران اور ھندستان کے ھزاروں برس کے آپسی ملاپ کا نتیجہ یہ نکلا کہ دونوں ملکوں نے ایک دوسرے کو کلا اور سنسکرتی کی دولت سے مالا مال کیا . سب سے پہلے مشہور اِیرانی شہنشاہ دارا کے زمانے میں بھارت اِیرانی کلا کے میل کے نمونے ھمیں ملتے ھیں . چندرگپت موریہ نے کئی اِیرانی طور طریقے اپنے دربار میں جاری کئے . اِیران کے اثر سے ھی بھارت میں وہ کھروشٹھی لپی چلی تھی جو فارسی کی طرح داھنے سے بائیں کو لکھی جاتی ھے . سمراٹ اشوک کے بہت سے شلا لیکھ اِسی کھروشٹھی میں ھیں اور اُن میں بہت سے اِیرانی شبد آتے ھیں . پہاڑوں' چٹانوں اور استمبھوں پر لیکھ کھودنے کا رواج بھی سمراٹ اشوک نے دارا سے

दिखा. भारत की मूर्तिकला पर भी ईरानी असर साफ़ दिखाई देता है., भारत में सूर्य की जो सब से पुरानी मूर्ति मिलती है वह पहली सदी ईस्वी की बनी हुई है. उसके शरीर पर ईरानी कुरता, चूड़ीदार पाजामा, पांव में ऊंचे एशियाई जूते, सिर पर इरानी टोपी और कमर से इस्फ़हानी खंजर लटकता हुआ दिखाया गया है. उससे पहले किसी भी हिन्दुस्तानी देवता का यह लिबास नहीं पाया जाता. हिन्दुस्तान की सरज़मीन पर सदियों के बिछड़े ईरानी और हिन्दुस्तानी भाई फिर एक साथ प्रेम और मुहब्बत से गले मिले.

मुग़लों के ज़माने में ईरानी कलाकारों ने हिन्दुस्तान की क़ौमी ज़िन्दगी के सब अंगों को अपनी कला के तोहफ़े भेंट किए. इस ईरानी और हिन्दुस्तानी कला के संगम के शानदार नतीजे हमें हिन्दुस्तान की फ़ने तामीर (निर्माण कला) तस्वीर साज़ी, (चित्र कला), साहित्य और संगीत में देखने को मिलते हैं. ईरानी और भारतीय निर्माण कला ने मिलकर दुनिया की सब से ख़ूबसूरत इमारत ताजमहल को तामीर किया. भारतीय इमारतों में सरों के पेड़, फूलों के गमले, फल, मधु के प्याले, गुलाबजल की सुराहियां सब ईरान की देन हैं. अंगूरी बेल का डिज़ाइन भी ईरानी है. राजपूत चित्रकला पर हमें बहुत साफ़ ईरानी असर दिखाई देता है. हिन्दी और फ़ारसी के मेल से एक नई ज़बान उर्दू पैदा हुई. हिन्दुओं और मुसलमानों ने मिलकर इसके साहित्य का चमकाया. मुग़लों के ज़माने में ईरानी संगीत भी भारत आया. दोनों संगीतों के मिलन से नई नई राग रागनियां पैदा हुईं. ईरानी और भारतीय कलाकारों ने मिलकर रागों का तरतीब और स्थान मुक़र्रर किया—भैरों, परज, सोहनी, सिन्धी, पीलू और भैरवी आदि राग धार्मिक भजनों के लिए और दरबारी, मालकोष, मल्हार और दुर्गा राज दरबारों में गाए जाने के लिए तय हुए. अकबरी दरबार में नृत्य और गान विद्या के अनेकों ईरानी कलाकार थे. भारतीय सप्तक में—सा, रे, ग, म, प, ध, नी हैं तो ईरानी सप्तक में—यक, दो, से, चहार, पंच, शष, हफ़्त हैं. गायन में ईरानी स्वर माधुर्य पर ज़ोर देते थे तो भारतीय लय पर. दोनों की मिलावट से भारत के संगीत में लय और स्वर माधुर्य दोनों चमक उठे.

संगीत के इस आपसी मेलजोल ने ईरानी संगीत पर भी काफ़ी असर डाला.

ईरान का राजकाजी सिलसिला

जिस तरह आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और दार्शनिक क्षेत्रों में बड़ी से बड़ी हस्तियां ईरानी आकाश में चमकीं, उसी तरह राजकाजी क्षेत्र में भी अशोक, हर्ष और अकबर की तरह ईरान में कुरु, दारा और अनुशीरवां

. بھارت کی مورتی کلا پر بھی ایرانی اثر صاف دکھائی دیتا ہے. بھارت میں سوریہ کی جو سب سے پرانی مورتی ملتی ہے وہ پہلی صدی عیسوی کی بنی ہوئی ہے ۔ اُس کے شریر پر ایرانی کرتا' چوڑیدار پاجامہ' پاؤں میں اُونچے ایشیائی جوتے' سر پر ایرانی ٹوپی اور کمر سے اِصفہانی خنجر لٹکتا ہوا دکھایا گیا ہے ۔ اُس سے پہلے کسی بھی ہندستانی دیوتا کا یہ لباس نہیں پایا جاتا ۔ ہندستان کی سرزمین پر صدیوں کے بچھڑے ایرانی اور ہندستانی بھائی پھر ایک ساتھ پریم اور محبت سے گلے ملے ۔

مغلوں کے زمانے میں ایرانی کلاکاروں نے ہندستان کی قومی زندگی کے سب انگوں کو اپنی کلا کے تحفے بھینٹ کئے ۔ اِس ایرانی اور ہندستانی کلا کے سنگم کے شاندار نتیجے ہمیں ہندستان کی فن تعمیر (نرمان کلا) تصویر سازی (چتر کلا) ساہتیہ اور سنگیت میں دیکھنے کو ملتے ہیں ۔ ایرانی اور بھارتیہ نرمان کلا نے ملکر دنیا کی سب سے خوبصورت عمارت تاج محل کو تعمیر کیا ۔ بھارتیہ عمارتوں میں سروں کے پیڑ' پھولوں کے گملے' پھل' مدھو کے پیالے' گلاب جل کی صراحیاں سب ایران کی دین ہیں ۔ انگوری بیل کا ڈیزائن بھی ایرانی ہے ۔ راجپوت چتر کلا پر ہمیں بہت صاف ایرانی اثر دکھائی دیتا ہے ۔ ہندی اور فارسی کے میل سے ایک نئی زبان اُردو پیدا ہوئی ۔ ہندوؤں اور مسلمانوں نے ملکر اِس کے ساہتیہ کو چمکایا. مغلوں کے زمانے میں ایرانی سنگیت بھی بھارت آیا ۔ دونوں سنگیتوں کے ملن سے نئی نئی راگ راگنیاں پیدا ہوئیں ۔ ایرانی اور بھارتیہ کلاکاروں نے ملکر راگوں کی ترتیب اور استھان مقرر کیا— بھیروں' پرج' سوھنی' سندھی' پیلو اور بھیروی ادی راگ دھارمک بھجنوں کے لئے اور درباری' مالکوش' ملہار اور درگا راج درباروں میں گائے جانے کے لئے طے ہوئے ۔ اکبری دربار میں نرتیہ اور گان ودیا کے انیکوں ایرانی کلاکار تھے ۔ بھارتیہ سپتک میں—سا' رے' گا' ما' پا' دھا' نی' ہیں تو ایرانی سپتک میں—یک' دو' سہ' چہار' پنج' شش' ہفت ہیں. گاین میں ایرانی سور مادھوریہ پر زور دیتے تھے تو بھارتیہ لے پر ۔ دونوں کی ملاوٹ سے بھارت کے سنگیت میں لے اور سور مادھوریہ دونوں چمک اُٹھے ۔

سنگیت کے اِس آپسی میل جول نے ایرانی سنگیت پر بھی کافی اثر ڈالا ۔

ایران کا راجکاجی سلسلہ

جس طرح آدھیاتمک' سانسکرتک' ساہتیک اور دارشنک چھیتروں میں بڑی سے بڑی ھستیاں ایرانی آکاش میں چمکیں' اُسی طرح راجکاجی چھیتر میں بھی اشوک' ہرش اور اکبر کی طرح ایران میں کرو' دارا اور انوشیروان

नाम अपने [illegible] शासन, राजकाजी दूरन्देशी, न्याय
ता और सत्यनिष्ठा के लिए इतिहास में हमेशा याद किये
एँगे. कुरु ईसा से छ: सौ बरस पहले पैदा हुआ. यूनानी
से साइरस कहते हैं. उसने उदारता और प्रेम की बुनियादों
र अपनी हुकूमत क़ायम की. वह ख़ुद अग्नि पूजक था.
र उसने जेरूसलम में यहूदियों के मन्दिर और बाबुल में
रदूक के मन्दिर फिर से बनवाए. ख़ुद जीते हुए देशों के
थ कुरु का बर्ताव इतने रहम और मोहब्बत का होता
। कि जिसकी मिसाल उससे पहले के किसी बादशाह की
कूमत में नहीं मिलती.

ईसा से 522 बरस पहले दारा ईरान के तख़्त पर बैठा.
नानी उसे डेरियस कहते हैं. वह दयावान और रहमदिल
दशाह था. राजकाज में वह बहुत होशियार था. रिआया
। वह सच्चा हितचिन्तक था. उसने बड़ी बड़ी इमारतें
ौर नहरें बनवाईं. स्वेज़ की नहर सब से पहले दारा ने
तैयार कराई. कला का वह ज़बरदस्त पोषक था. उसकी
कूमत में सबको पूरी पूरी आज़ादी थी. प्रेम की वह मूर्ति था.
रतुश्त का वह सच्चा अनुयायी था.

ईसा की छठी सदी, सन् 531 ई० में सासानी ख़ानदान
। मशहूर बादशाह अनुशीरवां, जिसे नौशेरवां भी कहते
, तख़्त पर बैठा. अनुशीरवां एक होशियार सिपेहसालार,
हमदिल हाकिम, चतुर राजनीतिज्ञ और इन्साफ़ पसन्द
ादशाह था. यूनान और हिन्दुस्तान के बड़े बड़े आलिम
सके दरबार में रहते थे. हर मज़हब वालों के साथ वह
ड़ी उदारता से पेश आता था. क्लीमेंट हार्ट के मुताबिक़
नुशीरवां का दरबार ज़रतुश्ती, बौद्ध और ईसाई धर्मों का
क सुन्दर मिलाप-घर था. इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत
हम्मद बड़े फ़ख़्र के साथ कहा करते थे कि "मैं अद्ल-
ान्द अनुशीरवां की शहनशाहियत के ज़माने में पैदा
आ हूँ".

632 ई० में ईरान पर अरबों की हुकूमत क़ायम हुई.
ियासी तौर पर ईरान की आज़ादी चली गई मगर इल्मी
ौर कलचरी निगाह से ईरान अपने हमलावरों के ऊपर छा
या. ईरान के आलिमों ने इस्लाम को अपनी उदारता, अपने
लसफ़े और प्रेम धर्म से चार चांद लगाए. साइंस, हिकमत,
गीत, अदब, धर्मशास्त्र, गणित, व्याकरण सब में ईरानी
द्वान थोड़े ही दिनों में अरबों से बढ़ गए. अबुसीना,
मरख़ैयाम, फ़िरदौसी, शेख़ सादी, हाफ़िज़, सुहरावर्दी,
ामी और रूमी जैसे महापुरुष इसी ज़माने में पैदा हुए.
न् 1500 में सफ़वी ख़ानदान के झंडे के नीचे ईरान में
ानियों की आज़ाद हुकूमत क़ायम हुई. सन 1907 में
ान में जनतंत्र हुकूमत के मातहत एक पार्लिमेंट बनी.
न् 1921 में रज़ाशाह पहलवी ने ईरान में अपनी आज़ाद

کے نام اپنے مانوی شاسن، راجکاجی دوراندیشی، [illegible] اور
ستیہ نشٹھا کے لئے اِتہاس میں ہمیشہ یاد کئے جائینگے ۔ کرو
عیسیٰ سے چھ سو برس پہلے پیدا ہوا ۔ یونانی اُسے سائرس
کہتے ہیں۔ اُس نے اُدارتا اور پریم کی بنیادوں پر اپنی حکومت
قایم کی ۔ وہ خود اگنی پوجک تھا ۔ پر اُس نے جیروسلم میں
یہودیوں کے مندر اور بابل میں دوک کے مندر پھر سے بنوائے ۔
خود جیتے ہوئے دیشوں کے ساتھ کرو کا برتاؤ اتنے رحم اور محبت
کا ہوتا تھا کہ جس کی مثال اُس سے پہلے کے کسی بادشاہ
کی حکومت میں نہیں ملتی ۔

عیسیٰ سے 522 برس پہلے دارا اِیران کے تخت پر بیٹھا ۔
یونانی اُسے ڈیریس کہتے ہیں ۔ وہ دیاوان اور رحمدل بادشاہ
تھا۔ راجکاج میں وہ بہت ہوشیار تھا۔ رعایا کا وہ سچا ہتچنتک
تھا ۔ اُس نے بڑی بڑی عمارتیں اور نہریں بنوائیں ۔ سویز کی
نہر سب سے پہلے دارا نے ہی تیار کرائی ۔ کلا کا وہ زبردست
پوشک تھا ۔ اس کی حکومت میں سب کو پوری پوری آزادی
تھی ۔ پریم کی وہ مورتی تھا ۔ زرتشت کا وہ سچا انویائی تھا ۔

عیسیٰ کی چھٹی صدی، سن 531ع میں ساسانی
خاندان کا مشہور بادشاہ انوشیرواں، جسے نوشیرواں بھی کہتے ہیں،
تخت پر بیٹھا ۔ انوشیرواں ایک ہوشیار سپہ سالار، رحمدل حاکم،
چتر راجنیتگیہ اور انصاف پسند بادشاہ تھا ۔ یونان اور ہندستان
کے بڑے بڑے عالم اُس کے دربار میں رہتے تھے ۔ ہر مذہب والوں
کے ساتھ وہ بڑی اُدارتا سے پیش آتا تھا ۔ کلیمینٹ ہارٹ کے
مطابق انوشیرواں کا دربار زرتشتی، بودھ اور عیسائی دھرموں کا
ایک سندر ملاپ گھر تھا ۔ اسلام کے پیغمبر حضرت محمد بڑے فخر
کے ساتھ کہا کرتے تھے کہ "میں عدل پسند انوشیرواں کی شہنشاہیت
کے زمانے میں پیدا ہوا ہوں ۔"

632ع میں اِیران پر عربوں کی حکومت قایم ہوئی ۔
سیاسی طور پر اِیران کی آزادی چلی گئی مگر علمی اور کلچری
نگاہ سے اِیران اپنے حملہ آوروں کے اُوپر چھا گیا ۔ اِیران کے
عالموں نے اسلام کو اپنی اُدارتا، اپنے فلسفے اور پریم دھرم سے چار
چاند لگائے ۔ سائنس، حکمت، سنگیت، ادب، دھرم شاستر،
گنت، ویاکرن سب میں ایرانی ودوان تھوڑے ہی دنوں میں
عربوں سے بڑھ گئے ۔ ابوسینا، عمرخیام، فردوسی، شیخ سعدی،
حافظ، سہراوردی، جامی اور رومی جیسے مہاپرش اِسی زمانے میں
پیدا ہوئے ۔ سن 1500 میں صفوی خاندان کے جھنڈے کے نیچے
اِیران میں اِیرانیوں کی آزاد حکومت قایم ہوئی ۔ سن 1907
میں اِیران میں جن تنتر حکومت کے ماتحت ایک پارلیمینٹ
بنی ۔ سن 1921 میں رضا شاہ پہلوی نے اِیران میں اپنی آزاد

हुकूमत क़ायम की. ईरान के मौजूदा शाहनशाह मोहम्मद रज़ा शाह पहलवी उन्हीं के बेटे हैं. दो करोड़ बीस लाख आबादी वाला यह प्राचीन एशियाई देश अपनी 80 फ़ी सदी किसानों की आबादी को तरक़्क़ी के रास्ते पर आगे बढ़ा रहा है. उसके रेगिस्तानी इलाक़ों में तेल का बेअन्त ज़ख़ीरा है. हिन्दुस्तान की तरह यूरोप की साम्राज्यवादी ताक़तों ने उसे हैरान और परेशान कर रखा है. लेकिन हज़ारों वर्ष की शानदार ज़िन्दगी के क़ीमती तजुरबे उसके पास हैं, जिनकी रोशनी में वह अपने लिए सही और मुनासिब रास्ता निकाल रहा है, और ज़रूर निकालेगा. ईरान और हिन्दुस्तान दोनों को अपनी क़दीम मुहब्बत और दोस्ती को फिर से मज़बूत और ताज़ा करना है. शाह ईरान की आमद के मौक़े पर ईरान के मशहूर आलिम और आजकल हिन्दुस्तान में ईरान के राजदूत हिज़ एक्सेलेन्सी डाक्टर अली असग़र हिकमत के पैग़ाम का एक जुज़ हम आपके सामने पेश कर रहे हैं—

"पिछली सदियों में अगरचे हिन्दुस्तान में ईरानी कला और साहित्य की आवाज़ बदक़िस्मती से ख़ामोश होकर किसी दरजे याद से बाहर हो गई थी, ख़ुदा का शुक्र है कि हिन्दुस्तान के अगुवाओं की कोशिशों से उसमें फिर से एक जान दिखाई दे रही है. हिन्दुस्तान आज फिर से एक आज़ाद और ताक़तवर देश है. ग़ुलामी की ज़ंजीरों को तोड़ कर वह फिर से अपनी पुरानी परम्पराओं, अपने प्राचीन ऐश्वर्य और अपनी पुरानी मित्रता को नए सिरे से हासिल करने की कोशिश कर रहा है."

ईरान के माननीय राजदूत डाक्टर अली असग़र हिकमत के इस बयान से हम पूरी तरह सहमत हैं. शाहनशाह ईरान की इस मुल्क में मैत्री-यात्रा का हम दिल से स्वागत करते हैं. हम उस दिन के इन्तज़ार में हैं जब हमारी पुरानी दोस्ती गहरी, मज़बूत और ताज़ा होगी और भारत और ईरान की मुहब्बत के तराने ईरान की 19 हज़ार फ़ीट ऊंची देमावन्द की चोटियों और हिमालय के गगन-चुम्बी शिखरों पर गूंजेंगे और उसकी ध्वनि, प्रतिध्वनि सारी दुनिया को सुनाई देगी.❀

حکومت قائم کی . ایران کے موجودہ شہنشاہ محمد رضا شاہ پہلوی انہیں کے بیٹے ہیں . دو کروڑ بیس لکھ آبادی والا یہ پراچین ایشیائی دیش اپنی 80 فیصدی کسانوں کی آبادی کو ترقی کے راستے پر آگے بڑھا رہا ہے . اس کے ریگستانی علاقوں میں تیل کا بے انت ذخیرہ ہے . ھندستان کی طرح یورپ کی سامراجوادی طاقتوں نے اسے حیران اور پریشان کر رکھا ہے . لیکن ہزاروں ورش کی شاندار زندگی کے قیمتی تجربے اس کے پاس ہیں' جنکی روشنی میں وہ اپنے لئے صحیح اور مناسب راستہ نکال رہا ہے' اور ضرور نکالیگا . ایران اور ھندستان دونوں کو اپنی قدیم محبت اور دوستی کو پھر سے مضبوط اور تازہ کرنا ہے . شاہ ایران کی آمد کے موقع پر ایران کے مشہور عالم اور آجکل ھندستان میں ایران کے راجدوت ھز ایکسلینسی ڈاکٹر علی اصغر حکمت کے پیغام کا ایک جز ھم آپ کے سامنے پیش کر رہے ہیں—

"پچھلی صدیوں میں اگرچہ ھندستان میں ایرانی کلا اور ساھتیہ کی آواز بدقسمتی سے خاموش ہو کر کسی درجہ یاد سے باہر ہوگئی تھی' خدا کا شکر ہے کہ ھندستان کے اگرگاؤں کی کوششوں سے اس میں پھر سے ایک جان دکھائی دے رہی ہے . ھندستان آج پھر سے ایک آزاد اور طاقتور دیش ہے . غلامی کی زنجیروں کو توڑ کر وہ پھر سے اپنی پرانی پرمپراؤں' اپنے پراچین ایشوریہ اور اپنی پرانی مترتا کو نئے سرے سے حاصل کرنے کی کوشش کر رہا ہے ."

ایران کے مانئیہ راجدوت ڈاکٹر علی اصغر حکمت کے اس بیان سے ہم پوری طرح سہمت ہیں . شہنشاہ ایران کی اس ملک میں میتری یاترا کا ہم دل سے سواگت کرتے ہیں . ہم اس دن کے انتظار میں ہیں جب ہماری پرانی دوستی گہری' مضبوط اور تازہ ہوگی اور بھارت اور ایران کی محبت کے ترانے ایران کی 19 ہزار فیٹ اونچی دیماوند کی چوٹیوں اور ہمالیہ کے گگن چومبی شکھروں پر گونجینگے اور اس کی دھونی' پرتی دھونی ساری دنیا کو سنائی دیگی .❀

❀शाहनशाह ईरान और मलका सोरइया की मैत्री-यात्रा के मौक़े पर 15 फ़रवरी को दिल्ली और काश्मीर रेडियो स्टेशनों से प्रसारित.

(आल इण्डिया रेडियो नई दिल्ली के सौजन्य से)

❀شہنشاہ ایران اور ملکہ ثریہ کی میتری-یاترا کے موقع پر 15 فروری کو دلی اور کاشمیر ریڈیو اسٹیشنوں سے پرسارت .

(آل انڈیا ریڈیو نئی دلی کے سوجنیہ سے)

चीनी अदब (साहित्य) पर एक सरसरी नज़र

डाक्टर लतीफ़ दफ़्तरी एम० ए०, डी० फ़िल० (आक्सन)

पिछले 15 बरस से एशियाई मुल्कों के लोग चीन की सियासी (राजनैतिक) उथल-पुथल को हमदर्दी के साथ देखते रहे हैं. चीनी आज़ादी की जङ्ग के साथ हम पूरबवालों ने हमेशा से एक अपनापा महसूस किया है. सन् 1857 में चीन की टीएंटसिन की सुलह, हिन्दुस्तान की इनक़लाबी बग़ावत और ईरान में नेहेवन्द की साज़िशें साम्राज्यवादी ज़ंजीर की मुख़्तलिफ़ कड़ियाँ थीं जिससे समूचे एशिया को गुलामी के बन्धनों में बाँध लिया गया. ये तीनों ही मुल्क हज़ारों बरस पुरानी तहज़ीब के दावेदार हैं. तीनों ने ही हज़ारों बरस तक एक दूसरे के साथ कल्चरल लेन-देन किया है. इस लेख में मैं चीनी कल्चर, चीनी अदब (साहित्य), चीनी जनता और चीनी इल्म के भण्डार पर एक वसीअ (विस्तृत) नज़र डालना चाहूंगा. एशियायी होने के नाते मेरा यह एतक़ाद (विश्वास) है कि हिन्दुस्तान, चीन और ईरान की एकता एशियायी कल्चरों की वह त्रिवेनी है कि जिसकी धारा में न सिर्फ़ एशिया को बल्कि झुलसी हुई दुनिया को राहत मिलेगी. आज दुनिया की कल्चरल (सांस्कृतिक) बागडोर पच्छिम के ख़ुद-ग़रज़ साम्राजी देशों के हाथों में चली गई है पर हमें यह न भूलना चाहिये कि हज़ारों बरस तक हिन्दुस्तान, चीन और ईरान दुनिया के अरबों खरबों आदमियों को रास्ता दिखाते रहे हैं, कि जो रास्ता एटम बम का नहीं बल्कि आत्मा को शान्ति देनेवाला रूहानी रास्ता था. चीन के साथ आज हमें टूटी हुई कल्चरल कड़ी को फिर से जोड़ना है और उसकी तहज़ीब की वसअ़तआमेज़ शक्ल (विराट रूप) के दर्शन करने हैं.

चीनी बोली और लिखावट

एशियाई ज़बानों में चीनी उस गिरोह की ज़बान है कि जिसका हर हरूफ़ एक अलग माने रखता है और एक ही झटके में बोला जाता है. चीनी ज़बान दो साफ़ अलग अलग हिस्सों में बँटी हुई है. बोलने की अलग, लिखने की अलग. चीनी बोली कोई अपने आप अलग पूरी बोली नहीं है बल्कि कई सूबों की बोलियों की मिलावट है, हालांकि इन सभी बोलियों का निकास एक ही सोते से हुआ है.

چینی ادب (ساھتیہ) پر ایک سرسری نظر

ڈاکٹر لطیف دفتری ایم . اے .' ڈی . فل . (آکسن) /

پچھلے 15 برس سے ایشیائی ملکوں کے لوگ چین کی سیاسی (راجنیتک) اتھل پتھل کو ھمدردی کے ساتھ دیکھتے رھے ھیں. چینی آزادی کی جنگ کے ساتھ ھم پورب والوں نے ھمیشہ سے ایک اپناپا محسوس کیا ھے . سن 1857 میں چین کی ٹینٹزن کی صلح' ھندستان کی اِنقلابی بغاوت اور اِیران میں نھوند کی سازشیں سامراجوادی زنجیر کی مختلف کڑیاں تھیں جس سمرچے ایشیا کو غلامی کے بندھنوں میں باندھ لیا گیا . یہ تینوں ھی ملک ھزاروں برس پرانی تہذیب کے دعویدار ھیں . تینوں نے ھی ھزاروں برس تک ایک دوسرے کے ساتھ کلچرل لین دین کیا ھے . اِس لیکھ میں میں چینی کلچر' چینی ادب (ساھتیہ) چینی جنتا اور چینی علم کے بھنڈار پر ایک وسیع (وستِرت) نظر ڈالنا چاھونگا . ایشیائی ھونے کے ناتے میرا یہ اعتقاد (وشواس) ھے کہ ھندستان' چین اور اِیران کی ایکتا ایشیائی کلچروں کی وہ تروینی ھے کہ جس کی دھارا میں نہ صرف ایشیا کو بلکہ جھلسی ھوئی دنیا کو راحت ملیگی . آج دنیا کی کلچرل (سانسکرتک) باگڈور پچھم کے خودغرض سامراجی دیشوں کے ھاتھوں میں چلی گئی ھے پر ھمیں یہ نہ بھولنا چاھئے کہ ھزاروں برس تک ھندستان' چین اور اِیران دنیا کے اربوں کھربوں آدمیوں کو راستہ دکھاتے رھے ھیں' کہ جو راستہ ایٹم بم کا نہیں بلکہ آتما کو شانتی دینے والا روحانی راستہ تھا . چین کے ساتھ آج ھمیں ٹوٹی ھوئی کلچرل کڑی کو پھر سے جوڑنا ھے اور اس کی تہذیب کی وسعت آمیز شکل (وراٹ روپ) کے درشن کرنے ھیں .

چینی بولی اور لکھاوٹ

ایشیائی زبانوں میں چینی اُس گروہ کی زبان ھے کہ جس کا ھر حروف ایک الگ معنے رکھتا ھے اور ایک ھی جھٹکے میں بولا جاتا ھے . چینی زبان دو صاف الگ الگ حصوں میں بنٹی ھوئی ھے—بولنے کی الگ' لکھنے کی الگ . چینی بولی کوئی اپنے آپ الگ پوری بولی نہیں ھے بلکہ کئی صوبوں کی بولیوں کی ملاوٹ ھے' حالانکہ اِن سبھی بولیوں کا نکاس ایک ھی سوتے سے ھوا ھے .

दक्खिन चीन में क्वांगतुंग के सूबे में 'कैएटनी' बोली बोली जाती है. उसके पड़ोसी सूबे में लोग 'हाका' बोली बोलते हैं. जैसे जैसे हम उत्तर की तरफ़ बढ़ते हैं हमें 'अमाय', 'फ़ुचाओ' और 'निङ्गपो' बोलियाँ बोलनेवाले लोग मिलते हैं. और ज़्यादा उत्तर में 80 फ़ीसदी चीनी 'मण्डारिन' ज़बान बोलते हैं. मण्डारिन की दो ख़ासियतें हैं—(1) यह कि 15 वीं सदी से यह चीनी राजधानी की ज़बान रही है और (2) सरकारी ख़तो किताबत में यह ज़बान इस्तेमाल की जाती रही है.

अपने पुरानेपन के लिहाज़ से कैएटनी ज़बान बहुत अहम है. लेकिन सरकारी ज़बान रहने की वजह से मण्डा-रिन ने बेहद तरक़्क़ी कर ली है. यह बात ग़ौर करने लायक़ है कि कैएटनी ज़बान उस बहुत शुरू की, बाबा आदम के ज़माने की, चीनी ज़बान से निकली है कि जिसने मौजूदा ज़माने की बोलचाल की और लिखी जानेवाली चीनी को जन्म दिया. चीनी ज़बान में पहले हर ख़याल को ज़ाहिर करने के लिये अलग अलग हरूफ़ थे. कन्फ़्यूशिअस के ज़माने में यह कोशिश की गई कि लिखावट (लिपि) की एक छोटे दायरे में हद्बन्दी की जाय. उसी ज़माने में किताबी ज़बान के बीज बोये गये. लेकिन इससे असल मक़सद पूरा नहीं हुआ. इस कोशिश से एक ऐसी भारी भरकम लिखावट निकली कि जिसमें रचे गये धर्म ग्रन्थ पोथे के पोथे बन गये. मगर फिर भी चीनी अदब (साहित्य) की तरक़्क़ी में कन्फ़्यूशियस के ज़माने की यह कोशिश बड़े काम की साबित हुई.

लिखावट की इस तरक़्क़ी के बाद और चीन में छपाई के लिये लकड़ी के छापों की ईजाद के बाद अदब (साहित्य) बामुहाविरा हो गया, उसमें एक फैलाव और चुस्ती आ गई मगर उसके साथ ही साथ धर्म ग्रन्थों की तरफ़ लोगों की इज़्ज़त (श्रद्धा) इस क़दर बढ़ी कि साहित्य और मामूली बोलचाल की ज़बान में कोई वास्ता ही नहीं रह गया.

अलिफ़-बे (वर्ण माला)

चीनी लिखावट बावजूद अपने नपे तुले निशानों और लगातार सुधार के एक तसवीरी लिखावट ही कही जा सकती है. किसी हरूफ़ के ठीक मायने तभी बताये जा सकते हैं जब उसे बाद के हरूफ़ के साथ जोड़कर पढ़ा जाय. विदेशियों को यह एक बड़ी दिक़्क़त की बात मालूम होती है कि बहुत से हरूफ़ों की बिलकुल यकसां आवाज़ें हैं पर उनके मतलब अलहदा हैं. इस तरह के लफ़्ज़ों की तादाद पचास हज़ार है और तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) में ही उनके मतलब में फ़रक़ आता है. मोटे तौर पर चीनी हरूफ़ों को हम पांच हिस्सों में बांट सकते हैं—(1) ख़यालों को ज़ाहिर करने वाले, (2) आवाज़ों को ज़ाहिर करने वाले, (3) जिनसे

دکھن چین میں کوانگتنگ کے صوبے میں 'کینٹی' بولی بولی جاتی ھے ۔ اُس کے پڑوسی صوبے میں لوگ 'ھاکا' بولی بولتے ھیں ۔ جیسے جیسے ھم اُتر کی طرف بڑھتے ھیں ھمیں 'امائے'، 'فوچاؤ' اور 'ننگپو' بولیاں بولنے والے لوگ ملتے ھیں ۔ اور زیادہ اُتر میں 80 فیصدی چینی 'منڈارن' زبان بولتے ھیں۔ منڈارن کی دو خاصیتیں ھیں—(1) یہ کہ 15 ویں صدی سے یہ چینی راجدھانی کی زبان رھی ھے اور (2) سرکاری خط و کتابت میں یہ زبان استعمال کی جاتی رھی ھے ۔

اپنے پرانے پن کے لحاظ سے کینٹی زبان بہت اہم ھے ۔ لیکن سرکاری زبان رھنے کی وجہ سے منڈارن نے بےحد ترقی کرلی ھے ۔ یہ بات غور کرنے لایق ھے کہ کینٹی زبان اُس بہت شروع کی' بابا آدم کے زمانے کی' چینی زبان سے نکلی ھے کہ جس نے موجودہ زمانے کی بول چال کی اور لکھی جانے والی چینی کو جنم دیا. چینی زبان میں پہلے ھر خیال کو ظاھر کرنے کے لئے الگ الگ حروف تھے ۔ کنفیوسیس کے زمانے میں یہ کوشش کی گئی کہ لکھاوٹ (لپی) کی ایک چھوٹے دایرے میں حدبندی کی جائے ۔ اُسی زمانے میں کتابی زبان کے بیج بوئے گئے ۔ لیکن اِس سے اصل مقصد پورا نہیں ھوا ۔ اِس کوشش سے ایک ایسی بھاری بھرکم لکھاوٹ نکلی کہ جس میں رچے گئے دھرم گرنتھ پوتھے کے پوتھے بن گئے ۔ مگر پھر بھی چینی ادب (ساھتیہ) کی ترقی میں کنفیوسیس کے زمانے کی یہ کوشش بڑے کام کی ثابت ھوئی ۔

لکھاوٹ کی اِس ترقی کے بعد اور چین میں چھپائی کے لئے لکڑی کے چھاپوں کی اِیجاد کے بعد ادب (ساھتیہ) بامحاورہ ھوگیا' اُس میں ایک پھیلاو اور چستی آگئی مگر اُس کے ساتھ ھی ساتھ دھرم گرنتھوں کی طرف لوگوں کی عزت (شردھا) اِس قدر بڑھی کہ ساھتیہ اور معمولی بول چال کی زبان میں کوئی واسطہ ھی نہیں رہ گیا ۔

الف ب (ورن مالا)

چینی لکھاوٹ باوجود اپنے نپے تلے نشانوں اور لگاتار سدھار کے ایک تصویری لکھاوٹ ھی کہی جاسکتی ھے ۔ کسی حروف کے ٹھیک معنے تبھی بتائے جاسکتے ھیں جب اُسے بعد کے حروف کے ساتھ جوڑکر پڑھا جائے ۔ ودیشیوں کو یہ ایک بڑی دقت کی بات معلوم ھوتی ھے کہ بہت سے حروفوں کی بالکل یکساں آوازیں ھیں پر اُن کے مطلب علیحدہ ھیں ۔ اس طرح کے لفظوں کی تعداد پچاس ھزار ھے اور تلفظ (اُچارن) میں ھی اُن کے مطلب میں فرق آتا ھے ۔ موٹے طور پر چینی حروفوں کو ھم پانچ حصوں میں بانٹ سکتے ھیں—(1) خیالوں کو ظاھر کرنے والے' (2) آوازوں کو ظاھر کرنے والے' (3) جنسے

सुर [illegible] ज़ाहिर हों, (4) तसवीरों वाले हरूफ़, (5) ऐसे हरूफ़ जो अपनी बुनियाद के दूसरे लफ़्ज़ों से अलग हों.

क़रीब 25 बरस पहले इन हज़ारों चीनी हरूफ़ों के जंगल को हटाकर उनकी जगह धुनियों के हिसाब की नपी तुली वर्ण माला जारी करने की ज़ोरदार कोशिश शुरू हुई, मगर वह इस वजह से कामयाब न हो सकी क्योंकि चीनी लफ़्ज़ों की आवाज़ की बिना पर जो हरूफ़ बनाये जाते उनकी तादाद बजाय कम होने के और भी बेशुमार हो जाती. चीन के फैले हुये हर हिस्से के निशान इन हरूफ़ों में शामिल हैं जिनकी वजह से उन हिस्सों में आपसी एका है. यही वजह है कि जापानियों ने भी चीनी लिखावट छोड़कर रोमन लिखावट को नहीं अपनाया.

चीनी अदब (साहित्य)

और दूसरे पूरबी अदब (साहित्य) की तरह चीन के अपने साहित्य की भी कोई तारीख़ (इतिहास) नहीं है. लेकिन अदबी तारीख़ और तनक़ीद (आलोचना) को छोड़कर चीनी साहित्य ने हर जानिब (दिशा) तरक़्क़ी की है. चीनी साहित्य को हम छै हिस्सों में बांट सकते हैं. मसलन शायरी (कविता) जिसमें रिव्यू (समालोचना) फ़लसफ़ा (दर्शन) और मज़हबी चीज़ें शामिल हैं, इतिहास जिसमें हर तरह का इतिहास सरकारी और ग़ैर सरकारी, सवाने उमरी (आत्म कथा) और भूगोल शामिल हैं, आर्ट (कला) और साइन्स (विज्ञान) तथा ज़बान का इल्म (भाषा शास्त्र) जिसमें इनसाइक्लोपीडिया (विश्वकोष) और लुग़ात (शब्द संग्रह) आदि शामिल हैं. अब हमें इस पर एक सरसरी निगाह डालकर यह देखना है कि चीनी आलिम और साहित्यिकों ने इस मैदान में किस दरजे तरक़्क़ी की.

शायरी (कविता)

दूसरी पुरानी ज़बानों की तरह चीनी साहित्य में भी गीत और गानों का ख़ज़ाना भरा पड़ा है. यह एक बड़ी अजीबो ग़रीब बात है कि चीनी तहज़ीब हज़ारों बरस पुरानी होने पर भी चीनी ज़बान में कोई गीतों का पोथा (महाकाव्य) नहीं है. फिर भी छोटे छोटे गीतों के अलावा लम्बी लम्बी नज़्में (कवितायें) भी, जिन्हें हम मसनवी (खण्ड काव्य) कह सकते हैं, चीनी ज़बान में मिलती हैं. क़ुदरती नज़ारों की तसवीर खींचनेवाली बहुत सी नज़्में चीनी काव्य में मिलती हैं जिनमें मुसकान और आंसू दोनों की छवि दिखाई देती है. चीनी अदब की यह एक ख़ास बात है कि सेक्स से ताल्लुक़ रखनेवाली शायरी में भी उसमें कहीं भद्दापन देखने तक को न मिलेगा. एक दूसरी ख़ास बात यह है कि मज़हबी शायरी चीनी ज़बान में बिलकुल नहीं है. बेतुकी शायरी (अतुकान्त कविता) भी चीनी ज़बान में नहीं मिलती. छन्दों

کچھ مطلب ظاہر ہو' (4) تصویروں والے حروف' (5) ایسے حروف جو اپنی دھولی دھارا کے دوسرے لفظوں سے الگ ہوں ۔

قریب 25 برس پہلے اِن ہزاروں چینی حرفوں کے جنگل کو ہٹاکر اُن کی جگہ دھنیوں کے حساب کی نپی تلی ورن مالا جاری کرنے کی زوردار کوشش شروع ہوئی' مگر وہ اِس وجہ سے کامیاب نہ ہوسکی کیونکہ چینی لفظوں کی آواز کی بنا پر جو حروف بنائے جاتے اُن کی تعداد بجائے کم ہونے کے اور بھی بےشمار ہو جاتی ۔ چین کے پھیلے ہوئے ہر حصے کے نشان اِن حروفں میں شامل ہیں اور جس کی وجہ سے اُن حصوں میں آپسی اِیکا ہے ۔ یہی وجہ ہے کہ جاپانیوں نے بھی چینی لکھاوٹ چھوڑکر رومن لکھاوٹ کو نہیں اپنایا ۔

چینی ادب (ساھتیہ)

اور دوسرے پوربی ادب (ساھتیہ) کی طرح چین کے اپنے ساھتیہ کی بھی کوئی تاریخ (اِتہاس) نہیں ہے ۔ لیکن ادبی تاریخ اور تنقید (آلوچنا) کو چھوڑکر چینی ساھتیہ نے ہر جانب (دشا) ترقی کی ہے ۔ چینی ساھتیہ کو ہم چھ حصوں میں بانٹ سکتے ہیں ۔ مثلاً شاعری (کویتا) جس میں ریویو (سمالوچنا) فلسفہ (درشن) اور مذہبی چیزیں شامل ہیں' اِتہاس جس میں ہر طرح کا اِتہاس سرکاری اور غیر سرکاری' سوانح عمری (آتم کتھا) اور بھوگول شامل ہیں' آرٹ (کلا) اور سائنس (وگیان) تتھا زبان کا علم (بھاشا شاستر) جس میں اِنسائیکلوپیڈیا (وشو کوش) اور لغت (شبد سنگرہ) آدی شامل ہیں ۔ اب ہمیں اِس پر ایک سرسری نگاہ ڈالکر یہ دیکھنا ہے کہ چینی عالم اور ساھتیکوں نے اِس میدان میں کس درجے ترقی کی ۔

شاعری (کویتا)

دوسری پرانی زبانوں کی طرح چینی ساھتیہ میں بھی گیت اور گانوں کا خزانہ بھرا پڑا ہے ۔ یہ ایک بڑی عجیب و غریب بات ہے کہ چینی تہذیب ہزاروں برس پرانی ہونے پر بھی چینی زبان میں کوئی گیتوں کا پوتھا (مہاکاویہ) نہیں ہے ۔ پھر بھی چھوٹے چھوٹے گیتوں کے علاوہ لمبی لمبی نظمیں (کویتائیں) بھی' جنہیں ہم مثنوی (کھنڈ کاویہ) کہہ سکتے ہیں' چینی زبان میں ملتی ہیں ۔ قدرتی نظاروں کی تصویر کھینچنے والی بہت سی نظمیں چینی کاویہ میں ملتی ہیں جن میں مسکان اور آنسو دونوں کی چھبی دکھائی دیتی ہے ۔ چینی ادب کی یہ ایک خاص بات ہے کہ سیکس سے تعلق رکھنے والی شاعری میں بھی اُس میں کہیں بھداپن دیکھنے تک کو نہ ملیگا ۔ ایک دوسری خاص بات یہ ہے کہ مذہبی شاعری چینی زبان میں بالکل نہیں ہے ۔ بےتکی شاعری (اتوکانت کویتا) بھی چینی زبان میں نہیں ملتی ۔ چھندوں

[illegible] को तोड़कर जो शायरी लिखी जाती थी वह ठीक नहीं समझी जाती थी.

जिस ज़माने में शायरी ने जन्म लिया और तरक़्क़ी करके बालिग़ (प्रौढ़) हुई वह ज़माना सन् 1800 ई० पू० से लेकर 600 ई० पू० तक का है. छठवीं और पांचवीं सदी के क़रीब कनफ्यूसियस ने (551 ई० पू०—479 ई० पू०) अपने ज़माने तक के क़रीब 3000 गीत इकट्ठा किये जिन्हें शिह-चिंग कहा जाता था और उनमें से छांटकर 311 गीतों का एक सुन्दर मजमुआ (संग्रह) तैयार किया. लेकिन शायरी की असली तरक़्क़ी आठवीं सदी ईसवी से शुरू हुई. इस ज़माने के दो सब में मशहूर शायर लि-ताइ-पो (705 ई०–762 ई०) और त-फ़ु (712 ई०-770 ई०) समझे जाते हैं. लि-ताइ-पो को लोग उसकी बहुत आला शायरी की वजह से और उसके राज से निकाले जाने के सबब से 'जलावतन फ़रिश्ता' (निर्वासित स्वर्गदूत) कहते थे. इन दोनों शायरों से उतरकर पो-चु-इ (772-849 ई०) समझा जाता है. सरकारी हुक्म से इसकी बहुत सी नज़्में पत्थरों (शिला लेखों) पर उतारी गईं.

सुङ्ग हुकूमत में राजाओं का बढ़ावा पाकर शायरी ने बहुत ज़्यादा तरक़्क़ी की. यह ज़माना 960 ईसवी से शुरू होकर क़रीब 300 बरस रहा. यह सही है कि इस ज़माने की शायरी हर रंग और हर ढङ्ग की है मगर फिर भी इस वक़्त शायरी के जो कड़े क़ायदे क़ानून बन गये थे उनकी वजह से उसमें जिद्दत-पसन्दी (मौलिकता) की कमी दिखाई देती है.

क़द्रदानों के लिहाज़ से सुङ्ग-तुङ्ग-पो सबमें ज़्यादा पसन्दीदा (लोकप्रिय) चीनी कवि हुआ है. वह जितना चमकता हुआ कवि था उतना ही दिलफ़रेब (आकर्षक) मज़मून-निगार (निबन्ध-लेखक) था. मंगोल और मान्चू बादशाहों के ज़माने से इनक़लाबी दौर के पहले तक कोई ख़ास ख़ूबी वाले (प्रतिभा सम्पन्न) शायर नहीं हुये हालांकि मान्चू बादशाहों में कांग-हि और चिएन-लुङ्ग औसत दर्जे के शायर थे. हां, बेशक इस ज़माने में शायरी काफ़ी मिक़दार में लिखी गई.

अफ़साने (उपन्यास)

शाइस्तगी चीनी साहित्य की ख़ासियत है. मगर जहां तक अफ़सानों (उपन्यासों) का ताल्लुक़ है उनमें इस गुण की बिलकुल कमी है. अफ़सानों में घरेलू ज़िन्दगी का सच्चा ख़ाका दर्ज होता है जिनमें नफ़रत और नफ़्सी मुहब्बत (वासनायें) अपनी नंगी शक्ल में दर्ज (चित्रित) मिलती हैं. बावजूद चीनी अदब की क़दामत (प्राचीनता) के उसमें अफ़सानों (उपन्यासों) का लिखा जाना तेरहवीं सदी से

کے قاعدوں کو توڑ کر جو شاعری لکھی جاتی تھی وہ ٹھیک نہیں سمجھی جاتی تھی ۔

جس زمانے میں شاعری نے جنم لیا اور ترقی کرکے بالغ (پرَوڑھ) ہوئی وہ زمانہ سن 1800 ای ۔ پو ۔ سے لیکر 600 ای - پو - تک کا ھے ۔ چھٹویں اور پانچویں صدی کے قریب کنفیوسیس نے (551 ای - پو — 479 ای - پو -) اپنے زمانے تک کے قریب 3000 گیت اِکٹھا کئے جنھیں شہ چن کہا جاتا تھا اور اِن میں سے چھانٹ کر 311 گیتوں کا ایک سندر مجموعہ (سنگرہ) تیار کیا ۔ لیکن شاعری کی اصلی ترقی آٹھویں صدی عیسوی سے شروع ھوئی ۔ اِس زمانے کے دو سب میں مشہور شاعر لی - تائی پو (705 ع - 762 ع -) اور تو - فو (712 ع - 770 ع -) سمجھے جاتے ھیں ۔ لی - تائی - پو کو لوگ اُس کی بہت عالی شاعری کی وجہ سے اور اُس کے راج سے نکالے جانے کے سبب سے 'جلاوطن فرشتہ' (نرواست سورگ دوت) کہتے تھے ۔ اِن دونوں شاعروں سے اُتر کر پو - چو - ای 772-849 ای - سمجھا جاتا ھے ۔ سرکاری حکم سے اِس کی بہت سی نظمیں پتھروں (شلا لیکھوں) پر اُتاری گئیں ۔

سونگ حکومت میں راجاؤں کا بڑھاوا پاکر شاعری نے بہت زیادہ ترقی کی ۔ یہ زمانہ 960 عیسوی سے شروع ھوکر قریب 300 برس رہا ۔ یہ صحیح ھے کہ اِس زمانے کی شاعری ہر رنگ اور ہر ڈھنگ کی ھے مگر پھر بھی اِس وقت شاعری کے جو کڑے قاعدے قانون بن گئے تھے اُن کی وجہ سے اُس میں جدت پسندی (مولکتا) کی کمی دکھائی دیتی ھے ۔

قدردانوں کے لحاظ سے سونگ - تونگ - پو سب میں زیادہ پسندیدہ (لوک پریہ) چینی کوی ھوا ھے ۔ وہ جتنا چمکتا ھوا کوی تھا اُتنا ھی دلفریب (آکرشک) مضمون نگار (نبندھ - لیکھک) تھا ۔ منگول اور مانچو بادشاھوں کے زمانے سے اِنقلابی دور کے پہلے تک کوئی خاص خوبی والے (پرتبھا سمپن) شاعر نہیں ھوئے حالانکہ مانچو بادشاھوں میں کانگ - ھی اور چئین - لونگ اوسط درجے کے شاعر تھے ۔ ھاں بےشک اِس زمانے میں شاعری کافی مقدار میں لکھی گئی ۔

افسانے (اُپنیاس)

شایستگی چینی ساھتیہ کی خاصیت ھے ۔ مگر جہاں تک افسانوں (اُپنیاسوں) کا تعلق ھے اُن میں اِس گن کی بالکل کمی ھے ۔ افسانوں میں گھریلو زندگی کا سچا خاکہ درج ھوتا ھے جن میں نفرت اور نفسی محبت (واسنائیں) اپنی ننگی شکل میں درج (چترت) ملتی ھیں ۔ باوجود چینی ادب کی قدامت (پراچینتا) کے اس میں افسانوں (اُپنیاسوں) کا لکھا جانا تیرھویں صدی سے

शुरू होता है. 17 वीं सदी में अफ़साना नवीसी अपनी चोटी पर पहुँची जब 'हुन-लोउ-मेङ' और 'लिआओ चल' जैसे मशहूर अफ़साने लिखे गये. इनमें से पहले उपन्यास के लिखनेवाले का पता नहीं चलता मगर वह कला के लिहाज से अच्छा लिखा गया है. प्रेम और षडयन्त्र, दौलत और गुरबत, सादगी और कमीनेपन आदि मुख़्तलिफ़ कैफ़ियतों की इतनी ख़ूबसूरती के साथ कहानी में झलक दिखाई गई है कि पढ़कर लेखक की क़लम चूमने की तबियत होती है. उपन्यास में क़रीब 400 पात्र हैं जिनके चरित्र को बड़ी ख़ूबसूरती के साथ पेश किया गया है. उपन्यास में जगह जगह सतही गंवइयत (ग्रामीणता) जरूर दिखाई देती है पर आजकल के उपन्यासों में जो एक जानलेवा सुझाव (घातक व्यंजना) होता है वह उनमें न मिलेगा. 'लिआओ चल' का लेखक पु सुन लिङ है जिसने उसे सन् 1679 ई० में लिखा. साहित्यिक लोग इसे साहित्यिक स्टाइल के लिये एक अक़्ली चीज़ (विचार कृति) समझते हैं. इसमें देहाती पात्रों की घरेलू ज़िन्दगी का सुन्दर और सही (वास्तविक) ख़ाका है.

नाटक

चीन में उपन्यासों के साथ साथ ही नाटकों का लिखा जाना भी शुरू हुआ. नाटकों का दौर मंगोलों का वक़्त (1260-1368 ई०) समझा जाता है हालांकि मामूली रूप में नाटक पुराने अदब (प्राचीन साहित्य) में भी मिलते हैं. एक बात यह कही जाती है कि चीनी साहित्य में मंगोल बादशाहों ने नाटकों का रिवाज डाला और इसलिये चीनी नाटकों की मध्य एशियाई बुनियाद है. लेकिन इस वक़्त चीनी जनता नाटकों को बेहद पसन्द करती है. शायद दुनिया में चीनी जनता के बराबर दूसरी जनता नाटकों को इतना पसन्द नहीं करती. मंगोलों के ज़माने के लिखे हुये क़रीब 100 नाटकों का एक मजमुआ सन् 1615 ई० में शाया हुआ था. एक दूसरा बड़ा (बृहत) संग्रह सन् 1845 में निकला जिसमें नाटकों को तरतीबवार (वर्गीकरण) करके उन्हें शाए किया गया.

तारीख़ (इतिहास)

क़दीम (प्राचीन) ज़माने के लिखे हुये चीनी इतिहासों में सबमें ख़ास कन्फ्यूसिअस का लिखा हुआ इतिहास है. वह पौराणिक राजा याओ (1357 ई० पू०–2205 ई० पू०) से शुरू होता है. यह बात क़ाबिले ग़ौर है कि उस वक़्त भी चीन में लोग सिर्फ़ एक अल्लाह (एकेश्वरवाद) को मानते थे. याओ के आठ बरस बाद इमारत बनाने वाला राजा यु हुआ जिसने ज़बर्दस्त बाढ़ आने के कारण राज भर में हज़ारों मील के दायरे में जो पानी भर गया था उसे बड़ी तरकीब से बाहर निकाला. पश्चिमी लेखक इस क़िस्से को बाइबिल के Deluge (प्रलय) की कहानी से मिलाते हैं.

شروع ہوتاھے ۔ 17 ویں صدی میں افسانہ نویسی اپنی چوٹی پر پہونچی جب 'ھون لوھین' اور 'لیاؤ چل' جیسے مشہور افسانے لکھے گئے ۔ اِن میں سے پہلے اُپنیاس کے لکھنے والے کا پتہ نہیں چلتا مگر وہ کلا کے لحاظ سے اچھا لکھا گیا ھے ۔ پریم اور شڑینتر' دولت اور غربت' سادگی اور کمینہ پن آدی مختلف کیفیتوں کی اِتنی خوبصورتی کے ساتھ کہانی میں جھلک دکھائی گئی ھے کہ پڑھکر لیکھک کی قلم چومنے کی طبیعت ھوتی ھے ۔ اُپنیاس میں قریب 400 پاتر ھیں جن کے چرتر کو بڑی خوبصورتی کے ساتھ پیش کیا گیا ھے. اُپنیاس میں جگہ جگہ سطحی گنوئیت (گرامینتا) ضرور دکھائی دیتی ھے پر آجکل کے اُپنیاسوں میں جو ایک جان لیوا سجھاؤ (گھاتک وینجنا) ھوتا ھے وہ اُن میں نہ ملیگا ۔ 'لیاؤ چل' کا لیکھک پو سن لن ھے جس نے اُسے سن 1679ع میں لکھا ۔ ساھتیک لوگ اِسے ساھتیک اِسٹائل کے لئے ایک عقلی چیز (وچار کرتی) سمجھتے ھیں ۔ اِس میں دیہاتی پاتروں کی گھریلو زندگی کا سندر اور صحیح (واستوک) خاکہ ھے ۔

ناٹک

چین میں اُپنیاسوں کے ساتھ ساتھ ھی ناٹکوں کا لکھا جانا بھی شروع ھوا۔ ناٹکوں کا دور منگولوں کا وقت (1260-1368ع) سمجھا جاتا ھے حالانکہ معمولی روپ میں ناٹک پرانے ادب (پراچین ساھتیہ) میں بھی ملتے ھیں ۔ ایک بات یہ کہی جاتی ھے کہ چینی ساھتیہ میں منگول بادشاھوں نے ناٹکوں کا رواج ڈالا اور اِس لئے چینی ناٹکوں کی مدھیہ ایشیائی بنیاد ھے ۔ لیکن اِس وقت چینی جنتا ناٹکوں کو بے حد پسند کرتی ھے ۔ شائد دنیا میں چینی جنتا کے برابر دوسری جنتا ناٹکوں کو اِتنا پسند نہیں کرتی ۔ منگولوں کے زمانے کے لکھے ھوئے قریب 100 ناٹکوں کا ایک مجموعہ سن 1615ع میں شائع ھوا تھا ۔ ایک دوسرا بڑا (ورھت) سنگرہ سن 1845 میں نکلا جس میں ناٹکوں کو ترتیب وار (ورگیکرن) کر کے اُنھیں شائع کیا گیا ۔

تاریخ (اِتہاس)

قدیم (پراچین) زمانے کے لکھے ھوئے چینی اِتہاسوں میں سب میں خاص کنفیوسیس کا لکھا ھوا اِتہاس ھے ۔ وہ پورانک راجہ یاؤ (2205 ای۔ پو۔—1357 ای۔ پو۔) سے شروع ھوتا ھے ۔ یہ بات قابل غور ھے کہ اُس وقت بھی چین میں لوگ صرف ایک اللہ (ایکیشور واد) کو مانتے تھے ۔ یاؤ کے آٹھ برس بعد عمارت بنانے والا راجہ یو ھوا جس نے زبردست باڑھ آنے کے کارن راج بھر میں ھزاروں میل کے دائرے میں جو پانی بھر گیا تھا اُسے بڑی ترکیب سے باھر نکالا ۔ پچھمی لیکھک اِس قصے کو بائبل کے Deluge (پرلے) کی کہانی سے ملاتے ھیں ۔

सवाने उमरी (जीवनी)

दूसरी जबानों से मिलती जुलती जीवनियां चीनी में भी लिखी गई हैं. सरकारी और ग़ैर सरकारी लोगों ने जीवनियों पर बड़े बड़े पोथे लिखे हैं. चीनी जीवनियों में पैदायश की तारीख और सन का अकसर जिक्र नहीं होता. मौत की तारीख से पैदायश का वक्त निकालना पड़ता है. चीनी जीवनियों की खासियत यह है कि उसमें अपने बुजुर्गों और सरकारी जिन्दगी का मुफ़स्सिल बयान होता है.

जुग़राफ़िया (भूगोल)

जुग़राफ़िया पर चीनी में बहुत सी किताबें हैं लेकिन बाहरी मुल्कों का बयान बहुत कम पाया जाता है. 16वीं सदी में पहली बार जुग़राफ़िया पर चीनी में ऐसी किताब लिखी गई जिसमें दुनिया के मुल्कों की सरहदों का बयान है. सन् 1745 में भूगोल पर एक बहुत बड़ी किताब लिखी गई जिसमें फैलाव (विस्तार) के साथ दुनिया का बयान मिलता है. इसके बाद सन् 1794 में एक दूसरी किताब लिखी गई जिसमें मौसम, समुद्री रास्ते, आबोहवा वग़ैरा का जिक्र है.

यात्रा वृत्तान्त

मुल्की हैसियत से चीनी हमेशा से यात्रा के शौक़ीन रहे हैं. इस क़ौमी ख़ाहिश को सबमें ज्यादा बढ़ावा उस वक्त मिला जब कुछ बौद्ध भिक्खुओं के मन में अपना मजहबी वतन देखने की उमंग उठी. इस उमंग को पूरा करने की गरज से सन् 399 ई० में फ़ाहियान गोबी के रेगिस्तान को पार करता, मध्य एशिया के सुनसान बियाबान से गुजरता, हिन्दुकुश पहाड़ को लांघता हुआ हिन्दुस्तान के खास खास शहरों में ठहरता, एक दो बरस लङ्का में रुककर चीन के लिये रवाना हुआ और बहुत सी किताबें, तसवीरें और मूर्तियां लिये हुये सन् 414 ई० में जहाजी रास्ते से चीन वापस पहुँचा.

हिन्दुस्तानियों के नुक़्ते नजर से हुएनत्सांग की यात्रा कहीं ज्यादा पुरअसर थी. वह चीन से सन् 629 ई० में रवाना हुआ और 15 बरस के बाद सन 645 ई० में चीन वापस पहुँचा. अपने साथ वह यहाँ से 700 बौद्ध ग्रन्थ, मूर्तियां, तसवीरें और यादगारें ले गया. वापस पहुँचकर वह उन तमाम बौद्ध ग्रंथों का चीनी में तर्जुमा करने में लग गया और अपनी दिलचस्प यात्रा को उसने 'पच्छिमी मुल्कों का बयान' के नाम से शाये (प्रकाशित) किया.

राजनैतिक अर्थशास्त्र

सन् 700 ई० पू० में चि राज्य के वजीरे आजम कुआन चुंग का ध्यान देश के इक़्तसादी (आर्थिक) सवालों की

عمری (جیونی)

دوسری زبانوں سے ملتی جلتی جیونیاں چینی میں بھی لکھی گئی ھیں . سرکاری اور غیر سرکاری لوگوں نے جیونیوں پر بڑے بڑے پوتھے لکھے ھیں . چینی جیونیوں میں پیدایش کی تاریخ اور سن کا اکثر ذکر نہیں ہوتا . موت کی تاریخ سے پیدایش کا وقت نکالنا پڑتا ھے . چینی جیونیوں کی خاصیت یہ ھے کہ اُس میں اپنے بزرگوں اور سرکاری زندگی کا مفصل بیان ھوتا ھے .

جغرافیہ (بھوگول)

جغرافیہ پر چینی میں بہت سی کتابیں ھیں لیکن باھری ملکوں کا بیان بہت کم پایا جاتا ھے . 16 ویں صدی میں پہلی بار جغرافیہ پر چینی میں ایسی کتاب لکھی گئی جس میں دنیا کے ملکوں کی سرحدوں کا بیان ھے . سن 1745 میں بھوگول پرایک بہت بڑی کتاب لکھی گئی جس میں پھیلاؤ (وستار) کے ساتھ دنیا کا بیان ملتا ھے . اِس کے بعد سن 1794 میں ایک دوسری کتاب لکھی گئی جس میں موسم' سمدری راستے' آب‌وھوا وغیرہ کا ذکر ھے .

یاترا ورتانت

ملکی حیثیت سے چینی ھمیشہ سے یاترا کے شوقین رھے ھیں . اِس قومی خواھش کو سب میں زیادہ بڑھاوا اُس وقت ملا جب کچھ بودھ بھکشوؤں کے من میں اپنا مذھبی وطن دیکھنے کی اُمنگ اُٹھی . اُس اُمنگ کو پورا کرنے کی غرض سے سن 399ع میں فاھیان گوبی کے ریگستان کو پار کرتا' مدھیہ ایشیا کے سنسان بیابان سے گذرتا' ھندوکش پہاڑ کو لانگھتا ھوا ھندستان کے خاص خاص شہروں میں ٹھہرتا' ایک دو برس لنکا میں رک کر چین کے لئے روانہ ھوا اور بہت سی کتابیں' تصویریں اور مورتیاں لئے ھوئے سن 414ع میں جہازی راستے سے چین واپس پہونچا .

ھندستانیوں کے نقطۂ نظر سے ھوئین تسانگ کی یاترا کہیں زیادہ پر اثر تھی . وہ چین میں سن 629ع میں روانہ ھوا اور 16 برس کے بعد سن 645ع میں چین واپس پہونچا. اپنے ساتھ وہ یہاں سے 700 بودھ گرنتھ' مورتیاں' تصویریں اور یادگاریں لے گیا . واپس پہونچکر وہ اُن تمام بودھ گرنتھوں کا چینی میں ترجمہ کرنے میں لگ گیا اور اپنی دلچسپ یاترا کو اُس نے 'پچھمی ملکوں کا بیان' کے نام سے شائع (پرکاشت) کیا .

راجنیتک ارتھ شاستر

سن 700 ق. م. میں چی راجیہ کے وزیرِاعظم کوآن چونگ کا دھیان دیش کے اقتصادی (آرتھک) سوالوں کی

तरह था. उसमें राज्य के 21 हिस्से किये जिनमें 15 हिस्से सरकारी अफ़सरों और किसानों के हवाले करने की बात थी और छै हिस्से व्यापारियों और काम धन्धे वालों के. उसकी इस अर्थनीति की पुख़्तगी इस बात में थी कि एक ख़ालिस खेतिहर मुल्क के सामने हमेशा ग़रीबी का मसला (समस्या) रहता है जबकि एक कारख़ानेदार मुल्क को सिर्फ़ लड़ाई के वक़्त में ही ग़ल्ले की कमी हो सकती है. फिर भी वह इस बात के ख़िलाफ़ था कि खेतिहर मुल्कों में बाहर से बने माल के आने पर किसी क़िस्म की बन्दिश लगाई जाय. उसकी इस दरियादिली की वजह यह थी कि उसे अपने देश के बने माल की उम्दगी पर पूरा यक़ीन था.

चौथी सदी ईसा पूर्व के आख़ीर में मेन्सिअस नामक एक मशहूर चीनी फ़िलासफ़र हुआ है. उसने हक़्क़ी तिजारत पर टैक्स लगाने की सलाह दी. लेकिन इससे उसकी मुराद कुछ राज की आमदनी बढ़ाना नहीं था बल्कि लोगों की काहिली हटाकर उनकी नैतिक और आर्थिक हालत को सुधारना था.

पुराने ज़माने के चीनी दार्शनिकों में लाओत्ज़े का नाम सबसे पहले आता है. वह ग़ालिबन छठवीं सदी ईसा पूर्व में हुआ है. उसकी कहावतों और उपदेशों का एक बड़ा संग्रह कर दिया गया है मगर यह कहा जाता है और ग़ालिबन सही कहा जाता है कि उसमें यहां वहां काफ़ी चीज़ें बाद में जोड़ दी गईं. अमल (कर्म) उसके फ़लसफ़े की बुनियाद थी और वह इस बात का भी प्रचार करता था कि अगर कोई तुम्हारे साथ बुराई करे तो तुम उसका जवाब भलाई से दो. मेन्सिअस के बाद जो अनगिनत चीनी दार्शनिक हुये उनमें कन्फ़्यूसिअस (कुङ फू त्ज़े) का नाम सबसे ख़ास है. उसका लिखा हुआ 'लु राज्य का इतिहास' ही उसे इतिहासकार की हैसियत से अमर बना देने के लिये काफ़ी था. लेकिन कन्फ़्यूसिअस इतिहासकार के मुक़ाबले में एक धर्मोपदेशक की हैसियत से ज़्यादा मशहूर है. अपने शिष्यों को दिये हुए उसके सुन्दर उपदेश और उसकी निजी ज़िन्दगी के वाक़यात कन्फ़्यूसिअस के धर्म की चार किताबों में से एक में दर्ज हैं. कन्फ़्यूसिअस के उसूलों के मुताबिक़ हर इनसान बुनियादी तौर पर अच्छा होता है और उसके चारों तरफ़ की हालत उसमें बुराई पैदा कर देती है. अपने उपदेशों के मुताबिक़ वह विश्वासी के मुक़ाबले एक नास्तिक ज़्यादा लगता है. उसका उपदेश था—इस दुनिया के या बहिश्त के लालच में नेक चलन न बनो बल्कि इसलिये अच्छी चाल-चलन रखो कि वह ख़ुद अपने आप में एक इनाम है. वह कहता था कि मां-बाप की ख़िदमत और पड़ोसी के दुखों को बँटाना इनसान की सबसे बड़ी ख़ूबी है.

تھا. اُس نے راجیہ کے 21 حصے کئے جن میں 15 حصے سرکاری افسروں اور کسانوں کے حوالے کرنے کی بات تھی اور چھ حصے ویاپاریوں اور کام دھندے والوں کے. اُس کی اِس ارتھ نیتی کی پختگی اِس بات میں تھی کہ ایک خالص کھیتہر ملک کے سامنے ہمیشہ غریبی کا مسئلہ (سمسیا) رہتا ہے جبکہ ایک کارخانےدار ملک کو صرف لڑائی کے وقت میں ہی غلے کی کمی ہو سکتی ہے. پھر بھی وہ اِس بات کے خلاف تھا کہ کھیتہر ملکوں میں باہر سے بنے مال کے آنے پر کسی قسم کی بندش لگائی جائے. اُس کی اِس دریا دلی کی وجہ یہ تھی کہ اُسے اپنے دیش کے بنے مال کی عمدگی پر پورا یقین تھا.

چوتھی صدی عیسوی پورو کے آخیر میں مینسیس نامک ایک مشہور چینی فلاسفر ہوا ہے. اسنے حقوقی تجارت پر ٹیکس لگانے کی صلاح دی. لیکن اِس سے اُس کی مراد کچھ راج کی آمدنی بڑھانا نہیں تھا بلکہ لوگوں کی کاہلی ہٹا کر اُن کی نیتک اور آرتھک حالت کو سدھارنا تھا.

پرانے زمانے کے چینی دارشنکوں میں لاؤتزے کا نام سب سے پہلے آتا ہے. وہ غالباً چھٹویں صدی عیسوی پورو میں ہوا ہے. اُس کی کہاوتوں اور اُپدیشوں کا ایک بڑا سنگرہ کر دیا گیا ہے مگر یہ کہا جاتا ہے اور غالباً صحیح کہا جاتا ہے کہ اُس میں یہاں وہاں کافی چیزیں بعد میں جوڑ دی گئیں. عمل (کرم) اُس کے فلسفے کی بنیاد تھی اور وہ اِس بات کا بھی پرچار کرتا تھا کہ اگر کوئی تمہارے ساتھ برائی کرے تو تم اُس کا جواب بھلائی سے دو. مینسیس کے بعد جو انگنت چینی دارشنک ہوئے اُن میں کنفیوسس (کن فوتزے) کا نام سب سے خاص ہے. اُس کا لکھا ہوا 'لوراجیہ کا اِتہاس' ہی اُسے اِتہاسکار کی حیثیت سے امر بنا دینے کے لئے کافی تھا. لیکن کنفیوسیس اِتہاسکار کے مقابلہ میں ایک دھرموپدیشک کی حیثیت سے زیادہ مشہور ہے. اپنے ششیوں کو دئے ہوئے اُس کے سندر اُپدیش اور اُس کی نجی زندگی کے واقعات کنفیوسیس کے دھرم کی چار کتابوں میں سے ایک میں درج ہیں. کنفیوسس کے اُصولوں کے مطابق ہر انسان بنیادی طور پر اچھا ہوتا ہے اور اُس کے چاروں طرف کی حالت اُس میں برائی پیدا کر دیتی ہے. اپنے اُپدیشوں کے مطابق وہ وشواسی کے مقابلہ ایک ناستک زیادہ لگتا ہے. اُس کا اُپدیش تھا—اِس دنیا کے یا بہشت کے لالچ میں نیک چلن نہ بنو بلکہ اِس لئے اچھی چال چلن رکھو کہ وہ خود اپنے آپ میں ایک اِنعام ہے. وہ کہتا تھا کہ ماں-باپ کی خدمت اور پڑوسی کے دکھوں کو بٹانا اِنسان کی سب سے بڑی خوبی ہے.

चीनी साहित्य में वैद्यकशास्त्र के ऊपर बहुत सी किताबें हैं. इन तमाम किताबों का मजमुआ (संग्रह) 'सुन षेन' के नाम से स 2598-2698 ई० पू० के बीच में किया गया. चीनी में नब्बाजी (नाड़ी परीक्षा), व सफ़रा, सौदा, बलराम (वात, पित्त, कफ़) आदि गुणों, मुख्तलिफ़ तरह के बुख़ारों (ज्वरों) और दिल की हरकत (हृदयगति) पर बहुत सी पुस्तकें हैं. चीनी आयुर्वेद शास्त्र 'मेटीरियामेडिका' इतना पुराना है कि लोग उसे तारीख़ से भी पुराना (प्राग ऐतिहासिक काल का) मानते हैं. 26 वर्षों की लगातार अनथक मेहनत के बाद उसका मौजूदा एडीशन स 1578 ई० में 'पेन-त्साओ' के नाम से प्रकाशित हुआ. यह एक क़ाबिले ग़ौर बात है कि चीनी पेन त्साओ में असल (मौलिक) दवाएं 365 हैं और इनमें एक एक दवा साल के 365 दिनों म से एक एक दिन के साथ मन्सूब (सम्बन्धित) है. इनमें 120 विषादि (संखिया, कुचला आदि जहरीली दवाएं) हैं, 120 स्वर्णादि (सोना, चाँदी, तांबा, मोती, मूंगा, आदि की भस्म) और 120 काष्टादि (जड़ी बूटियाँ) हैं.

खेती

हालांकि राजनैतिक अर्थ शास्त्र के उसूलों पर चीन में हज़रत ईसा की पैदायश से सदियों पहले चर्चा होती थी पर खेती के ऊपर चीनी साहित्य में कोई मुस्तनद (प्रामाणिक) किताब 1200 ई० से पहले नहीं निकली. सन् 1200 ई० में चेन फ़ु ने पहली बार खेती, जानवरों का पालन और रेशम के कीड़ों के ऊपर एक बड़ी सी किताब लिखी. पर खेती पर वैज्ञानिक और स्टैन्डर्ड किताब भिक्षु-सम्राट हु कु आक चि (1562-1634) ने लिखवाई. इस पुस्तक का नाम नुङ-चेङ-चुआन-शु है और यह छे हिस्सों में बंटी हुई है.

चित्रकला

बहुत शुरू ज़माने से ही चीनी चित्रकला के नमूने मिलते हैं. ख़ुशख़ती (शोभनलेखन) की भी चित्रकला के साथ ही साथ तरक़्क़ी हुई. चित्रकला पर जो किताबें हैं उनमें ख़ुशख़त पर भी अध्याय हैं. सन् 1119 और 1126 ई० के बीच चीनी सम्राट ने चित्रकला के ऊपर एक 'हुआन हो हुआ पु' नामक ग्रंथ लिखवाया. इसके मुस फ़ (लेखक) के नाम का पता नहीं चलता लेकिन इसमें 236 चीनी चित्रकारों का जिक्र है और उनके 6000 चित्रों का इसमें संग्रह है.

विश्वकोष

चीनी साहित्य की चौतरफ़ा तरक़्क़ी ने यह ज़रूरी कर दिया कि हवाले (उल्लेख) की किताबें और इनसाइक्लोपीडिया (विश्वकोष) की रचना की जाय. 'ताइ पिङ यु लान'

طب ([illegible])

چینی ساھتیہ میں ویدیک شاستر کے اوپر بہت سی کتابیں ہیں . اِن تمام کتابوں کا مجموعہ (سنگرہ) 'سن شین' کے نام سے سَن 2598-2698 ق. پو کے بیچ میں کیا گیا . چینی میں نباضی (ناڑی پریکشا)' و صفرا' سودا' بلغم (بات' پت' کف) آدی گنوں' مختلف طرح کے بخاروں (جوروں) اور دل کی حرکت (ہردئے گتی) پر بہت سی پستکیں ہیں . چینی ایوروید شاستر 'میٹیریا میڈیکا' اِتنا پرانا ہے کہ لوگ اُسے تاریخ سے بھی پرانا (پراگ ایتہاسک کال کا) مانتے ہیں . 26 ورشوں کی لگاتار انتھک محنت کے بعد اُس کا موجودہ ایڈیشن سن 1578ع میں 'پین تساؤ' کے نام سے پرکاشت ہوا . یہ ایک قابل غور بات ہے کہ چینی پین تساؤ میں اصل (مولک) دوائیں 365 ہیں اور اِن میں ایک ایک دوا سال کے 365 دنوں میں سے ایک ایک دن کے ساتھ منسوب (سمبندھت) ہے . اِن میں 120 وشادی (سنکھیا' کچلا آدی، زہریلی دوائیں) ہیں' 120 سورن آدی (سونا' چاندی' تانبا' موتی مونگا آدی کی بھسم) اور 120 کاشٹادی (جڑی بوٹیاں) ہیں .

کھیتی

حالانکہ راجنیتک ارتھ شاستر کے اُصولوں پر چین میں حضرت عیسیٰ کی پیدائش سے صدیوں پہلے چرچا ہوتی تھی پر کھیتی کے اوپر چینی ساہتیہ میں کوئی مستند (پرامانک) کتاب 1200ع سے پہلے نہیں نکلی . سن 1200ع میں چین فو نے پہلی بار کھیتی' جانوروں کا پالن اور ریشم کے کیڑوں کے اوپر ایک بڑی سی کتاب لکھی . پر کھیتی پر ویگیانک اور اِسٹینڈرڈ کتاب بھکشو سمراٹ ہوئوآن چی (1562-1634) نے لکھوائی . اِس پستک کا نام نون-چین-چوآن-شو ہے اور یہ چھ حصوں میں بنٹی ہوئی ہے .

چترکلا

بہت شروع زمانے سے ہی چینی چترکلا کے نمونے ملتے ہیں . خوشخطی (شوبھن لیکھن) کی بھی چترکلا کے ساتھ ہی ساتھ ترقی ہوئی . چترکلا پر جو کتابیں ہیں اُن میں خوشخط پر بھی ادھیائے ہیں . سن 1119 اور 1126ع کے بیچ چینی سمراٹ نے چترکلا کے اوپر ایک 'ھوآن ھو ھواپو' نامک گرنتھ لکھوایا . اُس کے مصنف (لیکھک) کے نام کا پتہ نہیں چلتا لیکن اِس میں 236 چینی چترکاروں کا ذکر ہے اور اُن کے 6000 چتروں کا اِس میں سنگرہ ہے .

شوکوش

چینی ساھتیہ کی چوطرفہ ترقی نے یہ ضروری کردیا کہ حوالے (اُللیکھ) کی کتابیں اور انسائکلوپیڈیا (وشوکوش) کی رچنا کی جائے . 'تائی پن یو لان'

एक इसी तरह का विश्वकोष है (हालांकि पहला नहीं) और वह 1000 ई० में लिखा गया. क़रीब चार सौ बरस के बाद एक दूसरा विश्वकोष 'यु आन लो ता तिएन' सन 1408 ई० में शाही हुक्म से लिखा गया. इसमें कन्फ्यूशियस के उपदेशों, इतिहास, दर्शन और आम साहित्य पर मुफ़स्सिल (विस्तृत) हवाले मिलते हैं. तीसरा बड़ा विश्वकष 'तु शि चि चाङ' सम्राट काङ हि ने तैयार कराया पर उसके वारिस (उत्तराधिकारी) सम्राट युङ चेङ (1723-1736 ई०) ने उसे शाया (प्रकाशित) किया. इसमें हर तरह के इल्मी हवाले देने की कोशिश की गई है, जैसे—तारा मन्डल, पृथ्वी, मनुष्य, कला, विज्ञान, फ़लसफ़ा (दर्शन), सियासत (राजनीति) वग़ैरा.

एक सरसरी नज़र

चीनी साहित्य पर एक सरसरी नज़र डालने से ही चार बातें ख़ास तौर पर दिखाई देंगी (1) उसकी क़दामत (प्राचीनता), (2) इख़्तलाफ़ (विभिन्नता), (3) मुस्तनद होना (प्रामाणिकता) और (4) ऊँचे उसूल (उच्च सिद्धांतवादिता). चीन में साहित्य की हज़ारों बरस के दौर में जो लगातार तरक़्क़ी हुई है, मुख़्तलिफ़ विषयों पर जिस वैज्ञानिक तरीक़े से किताबें लिखी गई हैं, ऐतिहासिक वाक़यात को जिस सही सही तरीक़े से बयान किया गया है और हर तरह के साहित्य को भद्देपन से जिस तरह बचाया गया है—ये सब ऐसी बातें हैं जिनकी मिसाल दूसरे देशों की अदबी तारीख़ (साहित्यिक इतिहास) में नहीं मिलती.

इस लेख को ख़त्म करते हुये एक ज़रूरी बात यह कहनी है कि चीनी विद्वानों और दार्शनिकों ने जो इतनी ज़बर्दस्त तरक़्क़ी की उसकी एक बहुत बड़ी वजह यह है कि सन् 105 ई० में ही चीनी लोगों को काग़ज़ बनाना आ गया था और दसवीं सदी में छापे की कला से भी चीन वाले वाक़िफ़ हो गये थे और यह वह ज़माना था जब यूरोपीय तहज़ीब अंधेरे में ग़र्क़ पड़ी हुई थी.

ایک ایسی طرح کا وشوکوش ہے (حالانکہ پہلا نہیں) اور وہ 1000ع میں لکھا گیا. قریب چارسو برس کے بعد ایک دوسرا وشوکوش 'یوآن لو تا تیئن' سن 1408ع میں شاہی حکم سے لکھا گیا. اِس میں کنفیوسیس کے اپدیشوں' اِتہاس' درشن اور عام ساہتیہ پر مفصل (وستارت) حوالے ملتے ہیں. تیسرا بڑا وشوکوش تو شی چی چان' سمراٹ کان ہی نے تیار کرایا پر اِس کے وارث (اُتر ادھیکاری) سمراٹ یون چین (1723-1736ع) نے اُسے شائع (پرکاشت) کیا. اِس میں ہر طرح کے علمی حوالے دینے کی کوشش کی گئی ہے' جیسے—تارامنڈل' پرتھوی' منشیہ' کلا' وگیان' فلسفہ (درشن)' سیاست (راجنیتی وغیرہ .

ایک سرسری نظر

چینی ساہتیہ پر ایک سرسری نظر ڈالنے سے ہی چار باتیں خاص طور پر دکھائی دینگی (1) اُس کی قدامت (پراچینتا)' (2) اختلاف (وبھنتا) (3) مستند ہونا (پراما نکتا) اور (4) اُونچے اُصول (اُوچ سدھانتوادیتا) . چین میں ساہتیہ کی ہزاروں برس کے دور میں جو لگاتار ترقی ہوئی ہے' مختلف وشیوں پر جس ویگیانک طریقے سے کتابیں لکھی گئی ہیں' ایتہاسک واقعات کو جس صحیح صحیح طریقے سے بیان کیا گیا ہے اور ہر طرح کے ساہتیہ کو بھدےپن سے جس طرح بچایا گیا ہے —یہ سب ایسی باتیں ہیں جنکی مثال دوسرے دیشوں کی ادبی تاریخ (ساہتیک اِتہاس) میں نہیں ملتی .

اِس لیکھ کو ختم کرتے ہوئے ایک ضروری بات یہ کہنی ہے کہ چینی ودوانوں اور دارشنکوں نے جو اِتنی زبردست ترقی کی اُس کی ایک بہت بڑی وجہہ یہ ہے کہ سن 105ع میں ہی چینی لوگوں کو کاغذ بنانا آگیا تھا اور دسویں صدی میں چھاپے کی کلا سے بھی چین والے واقف ہو گئے تھے اور یہ وہ زمانہ تھا جب یوروپیہ تہذیب اندھیرے میں غرق پڑی ہوئی تھی .

नया मकान

प्रोफ़ेसर मुहम्मद मुजीब

इन्सान को ख़ुदा उसी वक़्त याद आता है जब उस पर कोई आफ़त नाज़िल होती है. अयूबख़ां ताल्लुक़ेदार के पीर उसे कई बरस से समझा रहे थे, लेकिन उसने अपनी ज़िन्दगी का ढङ्ग बदलने का इरादा उसी वक़्त किया जब उसकी जवान लड़की और दस बरस का लड़का एक ही हफ़्ते के अन्दर इन्तक़ाल कर गये और उसे अपनी दाढ़ी में सफ़ेद बाल नज़र आने लगे.

'नई ज़िन्दगी, नया मकान !'—उसने अपने दिल में सोचा—'जिस घर में सात पुश्तों से ऐयाशी हो रही हो, वहां एक अल्लाह वाला कैसे बसर कर सकता है. यहां रहा तो मैं दिन-भर में अपने नेक इरादे सब भूल जाऊँगा.'

पुराने मकान में उसने रात गुज़ारना भी पसन्द न किया. फ़ौरन एक कोठी किराये पर ली और ख़ानदानी घर अपनी आख़िरी तवायफ़ नजिया को बख़्श दिया. नजिया को भी अब अपनी सूरत शक्ल पर इतना भरोसा नहीं रहा था. वह ख़ुशी से इस पर राज़ी हो गई और मछली को जाल से छोड़ दिया. अयूबख़ां का नया मकान बनने लगा, उसके दिल पर दोज़ख़ का ख़ौफ़ छाया था; मगर जब नमाज़ पढ़ते-पढ़ते टांगें थक जातीं, तो जी बहलाने के लिये वह अपने नये मकान को देखने चला जाता. मकान बनते और बढ़ते देखकर उसे मालूम होता कि जैसे उसकी दुआएँ क़ुबूल हो रही हैं और उसके कन्धों से गुनाहों का बोझ हलका होता जाता है. मकान और उसकी रूहानी ज़िन्दगी में एक रिश्ता-सा पैदा हो गया, जिस पर उसे अक्सर ताज्जुब होता था; लेकिन वह उसे कभी समझ न सका.

मकान का बनवाना उसने अपने मुख़्तार मुमिद मियां के सुपुर्द किया और वह रोज़ जाकर उससे कहता था कि जितनी जल्दी मुमकिन हो मकान तैयार करा दो.

'मुमिद मियां ! रुपये का बिलकुल ख़्याल न करो, जितने मज़दूर मिलें उस पर लगा दो. ज़रूरत हो तो क़र्ज़ लेने पर तैयार हूँ. मेरा इरादा अब सीधी-सादी ज़िन्दगी बसर करने का है, जितना भी क़र्ज़ हो, सब अदा हो जायगा. मुमिद मियां, तुम फुर्ती से काम कराओ, मज़दूर बहुत से लगा दो. मैं नये मकान की तरस में मरा जाता हूँ.'

हर शाम को अयूबख़ां और मुमिद मियां में यही सवाल व जवाब हुआ करते थे.

نیا مکان

پروفیسر محمد مجیب

اِنسان کو خدا اُسی وقت یاد آتا ھے جب اُس پر کوئی آفت نازل ھوتی ھے ۔ ایوب خاں تعلقہ‌دار کے پیر اُسے کئی برس سے سمجھا رھے تھے، لیکن اُس نے اپنی زندگی کا ڈھنگ بدلنے کا اِرادہ اُسی وقت کیا جب اُس کی جوان لڑکی اور دس برس کا لڑکا ایک ھی ھفتے کے اندر انتقال کرگئے اور اُسے اپنی داڑھی میں سفید بال نظر آنے لگے ۔

'نئی زندگی، نیا مکان !'—اُس نے اپنے دل میں سوچا —'جس گھر میں سات پشتوں سے عیاشی ھو رھی ھو، وھاں ایک اللہ والا کیسے بسر کرسکتا ھے ۔ یہاں رھا تو میں دن بھر میں اپنے نیک اِرادے سب بھول جاؤنگا ۔'

پرانے مکان میں اُس نے رات گذارنا بھی پسند نہ کیا ۔ فوراً ایک کوٹھی کرایہ پر لی اور خاندانی گھر اپنی آخری طوائف نجیا کو بخش دیا ۔ نجیا کو بھی اب اپنی صورت شکل پر اِتنا بھروسہ نہیں رھا تھا ۔ وہ خوشی سے اِس پر راضی ھوگئی اور مچھلی کو جال سے چھوڑ دیا ۔ ایوب خاں کا نیا مکان بننے لگا، اُس کے دل پر دوزخ کا خوف چھایا تھا، مگر جب نماز پڑھتے پڑھتے ٹانگیں تھک جاتیں، تو جی بہلانے کے لئے وہ اپنے نئے مکان کو دیکھنے چلا جاتا ۔ مکان بنتے اور بڑھتے دیکھکر اُسے معلوم ھوتا کہ جیسے اُس کی دعائیں قبول ھو رھی ھیں اور اس کے کندھوں سے گناھوں کا بوجھ ھلکا ھوتا جاتا ھے ۔ مکان اور اس کی روحانی زندگی میں ایک رشتہ سا پیدا ھوگیا، جس پر اُسے اکثر تعجب ھوتا تھا؛ لیکن وہ اُسے کبھی سمجھ نہ سکا ۔

مکان کا بنوانا اُس نے اپنے مختار مومد میاں کے سپرد کیا اور وہ روز جاکر اُس سے کہتا تھا کہ جتنی جلدی ممکن ھو مکان تیار کرادو ۔

'مومد میاں ! روپئے کا بالکل خیال نہ کرو، جتنے مزدور ملیں اُس پر لگادو ۔ ضرورت ھو تو قرض لینے پر تیار ھوں ۔ میرا اِرادہ اب سیدھی سادی زندگی بسر کرنے کا ھے، جتنا بھی قرض ھو، سب ادا ھوجائیگا ۔ مومد میاں، تم پھرتی سے کام کراؤ، مزدور بہت سے لگا دو ۔ میں نئے مکان کی ترس میں مرا جاتا ھوں ۔'

ھر شام کو ایوب خاں اور مومد میاں میں یہی سوال و جواب ھوا کرتے تھے ۔

'हुज़ूर [illegible]......[illegible] रोज़ में ?'

'और दीवारों की लीप-पोत ?'

'मुनिह मियां, ज़रा जल्दी करवाइए. आप तो हर रोज़ वही [illegible] रोज़ का क़िस्सा सुनाते हैं.'

'जी हां, हुज़ूर !......अब तो कुछ देर नहीं होगी.'

यह सवाल व जवाब मुख़्तार की कोठरी के सामने हुआ करते [illegible] अयूबख़ां रोज़ बेसब्री में एक लकड़ी से एक ख़ास ईंट के टुकड़े [illegible] तोड़ने की कोशिश करता और फिर इधर-उधर देखकर मोटर की [illegible]फ़ चला जाता.

एक दिन जब अयूबख़ां देख-भाल के लिये आया तो मुख़्तार ने [illegible]—'हुज़ूर अब नवाबगंज की नई कोठी तैयार हो गई. वहां के [illegible] मिस्त्रियों और मज़दूरों को मैंने रख लिया है. मिस्त्री अच्छे हैं [illegible]र अब काम भी अच्छा होगा.'

'अच्छा !'

दोनों मकान का चक्कर लगाने लगे, कल और आज का फ़र्क़ [illegible]ख़्तार बढ़ा-चढ़ा के बता रहा था.

'हुज़ूर ! यह नये मिस्त्री हैं.'

मिस्त्री उठे और झुककर सलाम किया.

'हुज़ूर का मिज़ाज तो अच्छा है...?'—एक मिस्त्री ने पूछा.

अयूबख़ां ने उसका कुछ जवाब नहीं दिया. उसकी नज़र और [illegible]ज्जह दूसरी तरफ़ थी......मिस्त्रियों के पास एक जवान लड़की [illegible] थी. उसने बजाय आदाब बजा लाने के अयूबख़ां की तरफ़ [illegible]र से देखा और उसके मुँह पर कुछ मुस्कराहट-सी आ गई. अयूब[illegible] का बदन काँप गया, चेहरा लाल हो गया.

'हुज़ूर ! मिस्त्री शिकायत करते हैं कि यह चूना ख़राब है, मेरे [illegible] में किसी ठीकेदार से मुआमला करना चाहिये.'

'हां !'

अयूबख़ाँ मुख़्तार की बातों के जवाब में सिर्फ़ हूँ-हाँ करता रहा, [illegible]कान को भी वह अच्छी तरह न देख सका. जिस तरफ़ वह देखता, [illegible] लड़की की शोख़ आँखें उसकी नज़र का मुक़ाबिला करतीं और [illegible]के कान में कहीं से आवाज़ आती—'हुज़ूर का मिज़ाज तो [illegible] है ?'

अयूबख़ां सर झुका लेता, अगरचे उसे मालूम था कि वह [illegible]की और मिस्त्री सब अपने काम में मशग़ूल हैं. उसका दिल [illegible]क रहा था, तबीयत पर क़ाबू बिलकुल नहीं रहा. शराब पीने से [illegible] इख़्तिलाज की शिकायत वैसे भी हो गई थी, इस नये वाक़िये ने [illegible] कैफ़ियत उसके दिल में पैदा की थी, वह एक आंधी थी जिसमें [illegible] तिनके की तरह इधर-उधर चक्कर खा रहा था.

लेकिन इन ख़यालात और जज़्बात की असलियत क्या थी ? [illegible] [illegible] आशिक़ हो चुका था. [illegible] और [illegible] के

[illegible]

'[illegible]......پندرہ روز میں !'

'اور دیواروں کی لیپ پوت ؟'

'منیمد میاں' ذرا جلدی کروائیے ۔ آپ تو ہر روز وہی پندرہ روز کا قصہ سناتے ہیں ۔'

'جی ہاں حضور !......اب تو کچھ دیر نہیں ہوگی ۔'

یہ سوال و جواب مختار کی کوٹھری کے سامنے ہوا کرتے تھے۔ ایوب خاں روز بے صبری میں ایک لکڑی سے ایک خاص اینٹ کے ٹکڑے کو توڑنے کی کوشش کرتا اور پھر اِدھر اُدھر دیکھکر موٹر کی طرف چلا جاتا ۔

ایک دن جب ایوب خاں دیکھ بھال کے لئے آیا تو مختار نے کہا—'حضور اب نواب گنج کی نئی کوٹھی تیار ہوگئی ۔ وہاں کے چند مستریوں اور مزدوروں کو میں نے رکھ لیا ہے ۔ مستری اچھے ہیں اور اب کام بھی اچھا ہوگا ۔

'اچھا !'

دونوں مکان کا چکر لگانے لگے' کل اور آج کا فرق مختار بڑھا بڑھا کے بتا رہا تھا ۔

'حضور ! یہ نئے مستری ہیں ۔'

مستری اٹھے اور جھک کر سلام کیا ۔

'حضور کا مزاج تو اچھا ہے......؟'—ایک مستری نے پوچھا ۔

ایوب خاں نے اُس کا کچھ جواب نہیں دیا ۔ اُس کی نظر اور توجہ دوسری طرف تھی......مستریوں کے پاس ایک جوان لڑکی کھڑی تھی ۔ اُس نے بجائے آداب بجا لانے کے ایوب خاں کی طرف غور سے دیکھا اور اُس کے منہ پر کچھ مسکراہٹ سی آگئی ۔ ایوب خاں کا بدن کانپ گیا' چہرہ لال ہوگیا ۔

'حضور ! مستری شکایت کرتے ہیں کہ یہ چونا خراب ہے' میرے خیال میں کسی ٹھیکیدار سے معاملہ کرنا چاہئیے ۔'

'ہاں !'

ایوب خاں مختار کی باتوں کے جواب میں صرف ہوں - ہاں کرتا رہا' مکان کو بھی وہ اچھی طرح نہ دیکھ سکا ۔ جس طرف وہ دیکھتا' اُس لڑکی کی شوخ آنکھیں اُس کی نظر کا مقابلہ کرتیں اور اُس کے کان میں کہیں سے آواز آتی—'حضور کا مزاج تو اچھا ہے ؟'

ایوب خاں سر جھکا لیتا' اگرچہ اُسے معلوم تھا کہ وہ لڑکی اور مستری سب اپنے کام میں مشغول ہیں ۔ اُس کا دل دھڑک رہا تھا' طبیعت پر قابو بالکل نہیں رہا ۔ شراب پینے سے اُسے اختلاج کی شکایت ویسے ہی ہوگئی تھی' اِس نئے واقعے نے جو کیفیت اُس کے دل میں پیدا کی تھی' وہ ایک آندھی تھی جس میں وہ تنکے کی طرح اِدھر اُدھر چکر کھا رہا تھا ۔

لیکن اِن خیالات اور جذبات کی اصلیت کیا تھی ؟ ایوب خاں کئی مرتبہ عاشق ہوچکا تھا ۔ [illegible] کے

अन्दाज़ को वह ख़ूब समझता और पहचानता था. क्या इसी शैतान ने एक नया रूप लेकर उस पर हमला किया था ? नहीं, यह इश्क़ नहीं था, यहां न हुस्न था, न तलब. घर पहुँचते-पहुँचते अयूबख़ां को बिलकुल यक़ीन हो गया था कि वह आशिक़ नहीं हुआ है; मगर फिर यह घबराहट कैसी ? यह लाचारी क्यों ?

घर पहुँचते ही अयूबख़ां ने दो रकअत नमाज़ पढ़ी. ख़ुदा की याद में वह कभी इतना न डूबा था जितना इस नमाज़ में, और यह अजीब बात थी कि हरदम उस नौजवान मज़दूरिनी की शोख़ आँखें उसे ताकती रहीं, उसका दिल धड़कता रहा, तबीयत कुछ परेशान रही, लेकिन इबादत में कोई फ़र्क़ न आया, ख़ुदा ख़फ़ा न हुआ, वज़ीफ़े के बीच-बीच में वह ख़ुशी की आहें भरता जाता था, उसकी आँखों में आंसू आ रहे थे, उस मरीज़ की तरह जो किसी लम्बी बीमारी से अच्छा होकर अपनी आफ़ियत की ख़ुशी मना रहा हो.

'अजीब बात है...अजीब बात है...'—इसके सिवा अयूबख़ां के मुँह से कुछ न निकला.

सवेरे जब सोकर उठा तो अपने-आपको उसने एक बिलकुल दूसरा आदमी पाया, वह सादा लिबास जिसे वह रोज़ा, नमाज़ और वज़ीफ़े की ज़ंजीरों की कड़ी और अपने लिये एक सज़ा समझता था, उसे बहुत पसन्द आया. नौकर जब नाश्ता लाया तो उससे वह बहुत प्यार से बोला, इस तरह कि नौकर घबरा गया; क्योंकि वह एक सूखा चेहरा और सुर्ख़ आँखें देखने का आदी था. दो-चार लोग मिलने आये, वह भी ख़ुश हुए और यह राय वापस लेकर गये कि ताल्लुक़ेदार साहब वाक़ई अल्लाह वाले हो गये हैं. अयूबख़ां जब मकान देखने गया, तो उसने बजाय मुख़्तार के साथ घूमने के मज़दूरों से बातें छेड़ीं. बिलकुल इस तरह गोया वह ख़ुद मज़दूर है. एक बुड्ढा मिस्त्री, जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था, उसे उस दिन बहुत पसन्द आया, यहां तक कि वह उसके पास बैठ गया और बेतकल्लुफ़ी से बातें करने लगा.

'भई क्या तुम आज से काम कर रहे हो ?'

'नाहीं हजूर, हम तो बहुत दिनन से हियां हन.'—मिस्त्री ने जवाब दिया. 'हजूर गरीब आदमिन का कौन देखत है. बड़की का नजरायत हैं ?'—मिस्त्री ने मुसकरा कर कहा.

'हां भाई, ठीक कहते हो.'—अयूबख़ां बजाय इस ताने पर नाराज़ होने के और ख़ुश हुआ. उसके दिल में ख़्वाहिश पैदा हुई कि अपने और मिस्त्री के दरमियान जो फ़ासला है वह कम हो जाय, जो दीवार है वह गिर जाय. पहले अगर वह इसकी कोशिश करता तो उसकी समझ काम न देती. आज उसे सब साफ़ दिखाई दे रहा था.

'हां भाई, ठीक कहते हो.'—उसने ठण्डी सांस भरकर कहा—'तुम यहां कोई एक महीने से काम कर रहे हो और मुझे यह भी नहीं मालूम कि तुम हो भी या नहीं...लेकिन अब धीरे-धीरे मेरी तबीयत बदल रही है. अब मुझे मालूम हुआ कि हमारे रसूल ने क्यों फ़रमाया है कि अमीरों के लिये जन्नत में जाना उतना ही मुश्किल

انداز کو وہ خوب سمجھتا اور پہچانتا تھا ۔ کیا اِسی شیطان نے ایک نیا روپ لیکر اُسی پر حملہ کیا تھا ؟ نہیں، یہ عشق نہیں تھا، یہاں نہ حسن تھا، نہ طلب ۔ گھر پہونچتے پہونچتے ایوب خاں کو بالکل یقین ہوگیا تھا کہ وہ عاشق نہیں ہوا ہے؛ مگر پھر یہ گھبراہٹ کیسی ؟ یہ لاچاری کیوں ؟

گھر پہونچتے ہی ایوب خاں نے دو رکعت نماز پڑھی ۔ خدا کی یاد میں وہ کبھی اِتنا نہ ڈوبا تھا جتنا اِس نماز میں، اور یہ عجیب بات تھی کہ ہردم اُس نوجوان مزدورنی کی شوخ آنکھیں اُسے تاکتی رہیں، اُس کا دل دھڑکتا رہا، طبیعت کچھ پریشان رہی؛ لیکن عبادت میں کوئی فرق نہ آیا، خدا خفا نہ ہوا، وظیفے کے بیچ بیچ میں وہ خوشی کی آہیں بھرتا جاتا تھا، اُس کی آنکھوں میں آنسو آرہے تھے، اُس مریض کی طرح جو کسی لمبی بیماری سے اچھا ہوکر اپنی عافیت کی خوشی منا رہا ہو ۔

'عجیب بات ہے.....عجیب بات ہے'—اِس کے سوا ایوب خاں کے منہ سے کچھ نہ نکلا ۔

سویرے جب سوکر اُٹھا تو اپنے آپ کو اُس نے ایک بالکل دوسرا آدمی پایا، وہ سادہ لباس جسے وہ روزہ، نماز اور وظیفہ کی زنجیروں کی کڑی اور اپنے لئے ایک سزا سمجھتا تھا، اُسے بہت پسند آیا ۔ نوکر جب ناشتہ لایا تو اُس سے وہ بہت پیار سے بولا، اس طرح کہ نوکر گھبرا گیا؛ کیونکہ وہ ایک سوکھا چہرہ اور سرخ آنکھیں دیکھنے کا عادی تھا ۔ دو چار لوگ ملنے آئے، وہ بھی خوش ہوئے اور یہ رائے واپس لیکر گئے کہ تعلقہ‌دار صاحب واقعی اللہ والے ہوگئے ہیں ۔ ایوب خاں جب مکان دیکھنے گیا، تو اس نے بجائے مختار کے ساتھ گھومنے کے مزدوروں سے باتیں چھیڑیں، بالکل اِس طرح گویا وہ خود مزدور ہے ۔ ایک بڈھا مستری، جسے اُس نے پہلے کبھی نہیں دیکھا تھا، اُسے اُس دن بہت پسند آیا، یہاں تک کہ وہ اُس کے پاس بیٹھ گیا اور بےتکلفی سے باتیں کرنے لگا ۔

'بھئی کیا تم آج سے کام کررہے ہو ؟'

'ناہیں ہجور، ہم تو بہت دنن سے ہیاں ہن'—مستری نے جواب دیا ۔ 'ہجور گریب آدمن کا کون دیکھت ہے ۔ وھکی کا نجروات ہیں ؟'—مستری نے مسکرا کر کہا ۔

'ہاں بھائی، ٹھیک کہتے ہو'—ایوب خاں بجائے اِس طعنہ پر ناراض ہونے کے اور خوش ہوا ۔ اُس کے دل میں خواہش پیدا ہوئی کہ اپنے اور مستری کے درمیان جو فاصلہ ہے وہ کم ہو جائے، جو دیوار ہے وہ گر جائے ۔ پہلے اگر وہ اس کی کوشش کرتا تو اُس کی سمجھ کام نہ دیتی ۔ آج اُسے سب صاف دکھائی دے رہا تھا ۔

'ہاں بھائی، ٹھیک کہتے ہو'—اُس نے ٹھنڈی سانس بھر کر کہا—'تم یہاں کوئی ایک مہینے سے کام کر رہے ہو اور مجھے یہ بھی نہیں معلوم کہ تم ہو بھی یا نہیں......لیکن اب دھیرے دھیرے میری طبیعت بدل رہی ہے ۔ اب مجھے معلوم ہوا کہ ہمارے رسول نے کیوں فرمایا ہے کہ امیروں کے لئے جنت میں جانا اُتنا ہی مشکل

है, जितना [illegible] अपनी जवानी बड़ी बुरी तरह गुज़ारी. अभी कुछ दिन हुए जब मेरे दो बच्चे एक ही हफ़्ते के अन्दर मर गये, तब मुझे ख़याल आया कि ख़ुदा भी एक चीज़ है, और जो ख़ुदा को भूल जाता है, उसका नुक़सान ही नुक़सान है.'

'हां हुज़ूर ! जब सारी दुनिया ख़ुदाई की है, तो ख़ुदाय को भूले से दुनिया कैसे मिले !'—मिस्त्री ने इतमीनान से कहा.

'हां ठीक कहते हो......इसलिये मैंने इरादा कर लिया है कि अपना पुराना मकान, जहां मैं अमीरों की तरह रहता था, छोड़ दूंगा, और इस नये मकान में बैठकर अपने ख़ुदा की इबादत करूँगा.'

मिस्री कुछ कहना चाहता था मगर रुक गया. अयूबख़ां ने सिलसिला जारी रक्खा—'मैं अब यहां बिल्कुल ग़रीबों की ज़िन्दगी बसर करूँगा....ग़रीबों के साथ रहूँगा...सबका दोस्त, सबका भाई...'

अयूबख़ाँ कुछ देर तक ख़ामोश खड़ा सोचता रहा. दिल की बात ज़बान पर इतनी आसानी से नहीं आती. मिस्री ने एक ठंडी सांस ली और काम शुरू कर दिया; लेकिन दोनों को यह मालूम हो गया कि उनमें दोस्ती हो गई है, और दोनों इससे बहुत ख़ुश हुए. अयूबख़ां में अब किसी क़िस्म की झिझक बाक़ी नहीं रही.

घूमते-घूमते वह उस जगह पर भी पहुँचा जहाँ वह नौजवान मज़दूरनी काम कर रही थी, जिसकी आँखों और मुसकराहट ने अयूबख़ाँ में यह नया जोश पैदा कर दिया था. लड़की ने अयूबख़ाँ पर सिर्फ़ एक सरसरी नज़र डाली और अपने काम में लगी रही; लेकिन अयूबख़ाँ को यह नज़र भी बहुत प्यारी मालूम हुई. वह बरसों की मुहब्बत, हमदर्दी, दिली दोस्ती से भरी थी, उसने एकदम में ज़ाहिर कर दिया, जो महीनों की दोस्ती में नहीं बताया जा सकता और फिर ज़बान में वह क़ूवते अदा कहाँ जो निगाहों में हुआ करती है. कम-से-कम अयूबख़ाँ इसे यों ही समझा, उसने यह नहीं सोचा कि मज़दूरनी उसकी राज़दार क्यों बनने लगी, ऐसी बात आज उसके दिमाग़ में समा ही नहीं सकती थी. आज वह सबका भाई. सब का दोस्त था. उसे एक तरह से आशा थी कि हर मर्द और औरत उससे अपनी मुहब्बत का इज़हार करेगी, और इसमें उसे निराशा नहीं हुई.

मिस्री उससे बेतक़ल्लुफ़ी से बातें करने लगे और हर रोज़ उनसे बातें करने में अयूबख़ाँ को नया आनन्द आता था; हर रोज़ वह नये जज़बात दिल में समेट कर घर वापस आता, जैसे लोग कोई क़ीमती चीज़ बग़ल में दबाकर ले आते हैं और इस दौलत को अपने ख़ुदा के सामने पेश करता. इबादत उसके लिए एक मुलाक़ात-सी हो गई, जिसको वह दिलचस्प और पुरलुत्फ़ बनाने के लिए हर दिन नई हँसी हँसता और नये आँसू रोता. मिस्त्रियों से बातचीत करते हुए उसे हमेशा कोई-न-कोई ऐसी बात सुनाई देती जो उसे सचाई और मुहब्बत से भरी हुई मालूम होती. इस जवान मज़दूरनी की आँखों

[illegible] کا سولی کے تاگے سے نکلنا . میں نے اپنی جوانی بڑی بری طرح گذاری . ابھی کچھ دن ہوئے جب میرے دو بچے ایک ہی ہفتے کے اندر مرگئے' تب مجھے خیال آیا کہ خدا بھی ایک چیز ہے' اور جو خدا کو بھول جاتا ہے' اس کا نقصان ہی نقصان ہے .'

'ہاں حضور ! جب ساری دنیا خدائی کی ہے تو خدائی کو بھولنے سے دنیا کیسے ملے ؟'—مستری نے اطمینان سے کہا .

'ہاں ٹھیک کہتے ہو......اِس لئے میں نے اِرادہ کرلیا ہے کہ اپنا پرانا مکان' جہاں میں امیروں کی طرح رہتا تھا' چھوڑ دونگا' اور اِس نئے مکان میں بیٹھکر اپنے خدا کی عبادت کرونگا.'

مستری کچھ کہنا چاہتا تھا مگر رک گیا . ایوب خاں نے سلسلہ جاری رکھا —'میں اب یہاں بالکل غریبوں کی زندگی بسر کرونگا...غریبوں کے ساتھ رہونگا...سب کا دوست' سب کا بھائی...'

ایوب خاں کچھ دیر تک خاموش کھڑا سوچتا رہا . دل کی بات زبان پر اِتنی آسانی سے نہیں آتی . مستری نے ایک ٹھنڈی سانس لی اور کام شروع کردیا؛ لیکن دونوں کو یہ معلوم ہوگیا کہ اُن میں دوستی ہوگئی ہے' اور دونوں اِس سے بہت خوش ہوئے . ایوب خاں میں اب کسی قسم کی جھجھک باقی نہیں رہی .

گھومتے گھومتے وہ اُس جگہ پر بھی پہونچا جہاں وہ نوجوان مزدورنی کام کررہی تھی' جس کی آنکھوں اور مسکراہٹ نے ایوب خاں میں یہ نیا جوش پیدا کردیا تھا . لڑکی نے ایوب خاں پر صرف ایک سرسری نظر ڈالی اور اپنے کام میں لگی رہی؛ لیکن ایوب خاں کو یہ نظر بھی بہت پیاری معلوم ہوئی . وہ برسوں کی محبت' ہمدردی' دلی دوستی سے بھری تھی' اُس نے ایک دم میں ظاہر کردیا' جو مہینوں کی دوستی میں نہیں بتایا جاسکتا اور پھر زبان میں وہ قوت ادا کہاں جو نگاہوں میں ہوا کرتی ہے . کم سے کم ایوب خاں اِسے یوں ہی سمجھا' اس نے یہ نہیں سوچا کہ مزدورنی اُس کی رازدار کیوں بننے لگی' ایسی بات آج اُس کے دماغ میں سما ہی نہیں سکتی تھی . آج وہ سب کا بھائی' سب کا دوست تھا . اُسے ایک طرح سے آشا تھی کہ ہر مرد اور عورت اُس سے اپنی محبت کا اظہار کریگی' اور اِس میں اُسے نراشا نہیں ہوئی .

مستری اُس سے بے تکلفی سے باتیں کرنے لگے اور ہر روز اُن سے باتیں کرنے میں ایوب خاں کو نیا آنند آتا تھا؛ ہر روز وہ نئے جذبات دل میں سمیٹ کر گھر واپس جاتا' جیسے لوگ کوئی قیمتی چیز بغل میں دبا کر لے جاتے ہیں اور اِس دولت کو اپنے خدا کے سامنے پیش کرتا. عبادت اُس کے لئے ایک ملاقات سی ہو گئی' جسکو وہ دلچسپ اور پرلطف بنانے کے لئے ہر دن نئی ہنسی ہنستا نئے آنسو روتا. مستریوں سے بات چیت کرتے ہوئے اُسے ہمیشہ کوئی نہ کوئی ایسی بات سنائی دیتی جو اُسے سچائی اور محبت سے بھری ہوئی معلوم ہوتی. اِس جوان مزدورنی کی آنکھوں

[illegible] जज़्बात का एक ऐसा तूफ़ान था कि अयूबख़ाँ के दिल में हर रोज़ एक नया हंगामा पैदा होता और उसे सुकून उसी वक़्त होता जब वह इबादत में अपने ख़ुदा को सारा हाल सुना देता.

एक रोज़ जब मकान तैयार हो चुका था और मिस्त्री अन्दर दीवारों पर चूना लगा रहे थे तो बुड्ढे मिस्त्री ने, जो अयूबख़ाँ से बिलकुल आज़ादी से गुफ़्तगू करता था, मुस्कराकर कहा—'कहो साहब, बियाह कब होइहै ?

'क्यूँ ?'

'हम कहा कि पाँच कमरे हैं, उनमाँ कौन रहिहै, आप तो दिन-रात नमाज पढ़त हैं.'

अयूबख़ाँ मुस्कराया और कुछ जवाब न दिया, उसकी बीवी का देहान्त कोई पांच साल पहले हो चुका था; लेकिन उस ज़माने में वह ऐयाशी में ऐसा फँसा हुआ था कि उसे दूसरी शादी का ख़याल कभी नहीं आया, और न कोई ऐसा बाप मिला जो उसे बेटी देने पर राज़ी था. मिस्त्री के सवाल को उस वक़्त तो वह टाल गया, मगर दिल में यह बात ठहर गई. कमरों का आख़िरी मर्तबा गश्त लगाते हुए उसने सोचा—'कहता तो दरअसल ठीक है, मकान ख़ाली-ख़ाली सा रहेगा और फिर दूसरी शादी में गुनाह क्या है ? ऐयाशी तो मैंने छोड़ दी है...पहली बीवी को मैंने जो तकलीफ़ दी है, उसके बदले एक दूसरी औरत को अगर ख़ुश कर सकूँ, तो...'

उसे एकबारगी उस जवान मज़दूरनी का ख़याल आ गया. अयूबख़ाँ से अब वह इस क़दर हिल गई थी कि दोनों में ख़ूब बातें हुआ करती थीं लेकिन उसकी पहली निगाह का जो असर पड़ा था उसे वह कभी नहीं भूला, और दिल में उस मामूली मज़दूरनी की बहुत इज़्ज़त करता रहा. आज शादी की फ़िक्र ने उसके ताल्लुक़ात का रंग बदल दिया, उसने अपने-आपको बहुत यक़ीन दिलाने की कोशिश की कि ऐसा नहीं है; लेकिन उसके पैर उसे बेअख़्तियार उसी कमरे की तरफ़ ले चले जहाँ वह मज़दूरनी काम कर रही थी. नये इरादों के साथ, ताज़ा दीदार का शौक़ पैदा हुआ और अयूबख़ाँ की आँखें यह देखना चाहती थीं कि मज़दूरनी अगर उसकी बीवी हुई तो कैसी मालूम होगी ? कमरे में पहुँच कर उसने मिस्त्रियों से बातें शुरू कर दीं, कुछ अपनी घबराहट दूर करने के लिए, कुछ इस डर से कि कहीं किसी को ख़याल न हो जाय कि वह मज़दूरनी के लिये आया है; लेकिन इन तरकीबों ने ज़्यादा देर तक काम नहीं दिया और चन्द जुमलों के बाद वह ख़ामोश हो गया. उसकी आँखों के सामने एक नये मकान और नई ज़िन्दगी की तसवीर थी. कभी वह देखता कि ख़ुद इबादत में मशग़ूल है और उसकी बीवी थोड़ी-थोड़ी देर बाद उसके कमरे में एक नज़र डाल जाती है और अयूबख़ाँ मज़दूरनी की तरफ़ देखकर सोचता कि यह नज़र कैसी होगी ? कभी उसे दोनों खाने पर बैठे दिखाई देते, वह मुख़्तलिफ़ चीज़ें उसके सामने पेश करती होती और अयूबख़ाँ उस मज़दूरनी की तरफ़ देखता कि वह तवाज़ो कैसी होगी ? कभी तख़य्युल यह मन्ज़र पेश करता कि दोनों शाम के वक़्त सूरज को डूबते हुए देख रहे हैं, उसका

میں جذبات کا ایک ایسا طوفان تھا کہ ایوب خاں کے دل میں ہر روز ایک نیا ھنگامہ پیدا ہوتا اور اُسے سکون اُسی وقت ہوتا جب وہ عبادت میں اپنے خدا کو سارا حال سنا دیتا۔

ایک روز جب مکان تیار ہوچکا تھا اور مستری اندر دیواروں پر چونا لگا رہے تھے تو بڈھے مستری نے، جو ایوب خاں سے بالکل آزادی سے گفتگو کرتا تھا، مسکرا کر کہا—'کہو صاحب' بیاہ کب ہوئیہے ؟'

'کیوں ؟'

'ہم کہا کہ پانچ کمرے ہیں، اُن ماں کون رئیہے، آپ تو دن رات نماج پڑھت ہیں۔'

ایوب خاں مسکرایا اور کچھ جواب نہ دیا، اُس کی بیوی کا دیہانت کوئی پانچ سال پہلے ہو چکا تھا؛ لیکن اُس زمانے میں وہ عیاشی میں ایسا پھنسا ہوا تھا کہ اُسے دوسری شادی کا خیال کبھی نہیں آیا، اور نہ کوئی ایسا باپ ملا جو اُسے بیٹی دینے پر راضی تھا۔ مستری کے سوال کو اُس وقت تو ٹال گیا، مگر دل میں یہ بات ٹھہر گئی۔ کمرے کا آخری مرتبہ گشت لگاتے ہوئے اُس نے سوچا—'کہتا تو دراصل ٹھیک ہے، مکان خالی خالی سا رہیگا اور پھر دوسری شادی میں گناہ کیا ہے ؟ عیاشی تو میں نے چھوڑ دی ہے...پہلی بیوی کو میں نے جو تکلیف دی ہے، اُس کے بدلے ایک دوسری عورت کو اگر خوش کرسکوں، تو...'

اُسے ایکبارگی اُس جوان مزدورنی کا خیال آگیا۔ ایوب خاں سے اب وہ اِس قدر ہل گئی تھی کہ دونوں میں خوب باتیں ہوا کرتی تھیں لیکن اُس کی پہلی نگاہ کا جو اثر پڑا تھا اُسے وہ کبھی نہیں بھولا، اور دل میں اُس معمولی مزدورنی کی بہت عزت کرتا رہا۔ آج شادی کی فکر نے اُس کے تعلقات کا رنگ بدل دیا، اُس نے اپنے آپ کو بہت یقین دلانے کی کوشش کی کہ ایسا نہیں ہے؛ لیکن اُس کے پیر اُسے بے اختیار اُسی کمرے کی طرف لے چلے جہاں وہ مزدورنی کام کررہی تھی۔ نئے اِرادوں کے ساتھ، تازہ دیدار کا شوق پیدا ہوا اور ایوب خاں کی آنکھیں یہ دیکھنا چاہتی تھیں کہ مزدورنی اگر اُس کی بیوی ہوئی تو کیسی معلوم ہوگی ؟ کمرے میں پہونچ کر اُس نے مستریوں سے باتیں شروع کر دیں، کچھ اپنی گھبراہٹ دور کرنے کے لئے، کچھ اِس ڈر سے کہ کہیں کسی کو خیال نہ ہو جائے کہ وہ مزدورنی کے لئے آیا ہے؛ لیکن اِن ترکیبوں نے زیادہ دیر تک کام نہیں دیا اور چند جملوں کے بعد وہ خاموش ہو گیا۔ اُس کی آنکھوں کے سامنے ایک نئے مکان اور نئی زندگی کی تصویر تھی۔ کبھی وہ دیکھتا کہ خود عبادت میں مشغول ہے اور اِس کی بیوی تھوڑی تھوڑی دیر بعد اُس کے کمرے میں ایک نظر ڈال جاتی ہے اور ایوب خاں مزدورنی کی طرف دیکھ کر سوچتا کہ یہ نظر کیسی ہوگی ؟ کبھی اُسے دونوں کھانے پر بیٹھے دکھائی دیتے، وہ مختلف چیزیں اُس کے سامنے پیش کرتی ہوتی اور ایوب خاں اُس مزدورنی کی طرف دیکھتا کہ یہ تواضع کیسی ہوگی ؟ کبھی تخیل یہ منظر پیش کرتا کہ دونوں شام کے وقت سورج کو ڈوبتے ہوئے دیکھ رہے ہیں، اُس کا

[illegible]
मज़दूरनी की तरफ़ देखा कि यह ख़ामोशी कैसी होगी ? मज़दूरनी की सादगी, उसका भोलापन, उसकी मुहब्बत भरी निगाहें ! घर के सजाने और ज़िन्दगी के ख़ुश करने के लिए इससे ज़्यादा किस चीज़ की ज़रूरत थी ? फिर देश से वह रूहानी लगाव, ग़रीबों से वह दोस्ती, जिसका उसने कुछ दिन पहले ही इक़रार किया था, उन सबके क़ायम रखने की और कौन-सी तरकीब हो सकती थी ? अयूबख़ाँ का जी चाहने लगा कि किसी तरह वह कूद-फांदकर अपनी मौजूदा हालत से उस ज़िन्दगी तक पहुँच जाय जिसकी एक झलक अभी उसे नज़र आई थी, अपनी उम्मीदें पूरी करे और दिल की बेचैनी दूर करे; लेकिन जब वह घर पहुँचा और खाने के बाद आराम करके नमाज़ पढ़ना चाहा, तो उसे एक अजीब सुस्ती-सी महसूस हुई. जहाँ वह शौक़ से जाता था वहाँ आज मालूम होता था कि कोई ज़बरदस्ती लिये जा रहा है. नमाज़ तो उसने किसी तरह से ख़त्म कर ली, मगर उसे इस तब्दीली पर हैरत हुई.

'आख़िर मुझे हो क्या गया ?...क्या अब भी अपने ख़ुदा से मुँह फेर लूँगा'—उसने अपने आपसे घबराकर पूछा, मगर उसे कहीं से जवाब न मिला और आख़िरकार आजिज़ आकर वह वज़ीफ़े को छोड़छाड़ अपने पलंग पर लेट गया. वाक़िया यह था कि वह अपनी शादी की सोच में था, और उसी जवान मज़दूरनी की आँखें, जिन्होंने उसकी इबादत ऐसी रसीली कर दी थी, आज उसे अपनी तरफ़ बुला रही थीं. अयूबख़ाँ ने ऐयाशी से तौबा की थी, उस तरह की मुहब्बत से नहीं की थी जो मर्द और औरत को मियां बीवी बनाती है और उनको ख़ुश रखती है, लेकिन फिर ख़ुदा और उसके एक दीनदार बन्दे के दरमियान में यह पर्दा कैसे पड़ गया, यह बेगानी क्यों कर हो गई. अयूबख़ाँ उस वक़्त अपनी आइन्दा ज़िन्दगी की तसवीर बनाने में ऐसा मशग़ूल था कि उसने इस सवाल पर ज़्यादा ग़ौर करने से बचना चाहा, मगर यह अन्देशा उसके दिल में काँटे की तरह चुभने लगा कि शायद वह ज़िन्दगी जिसका वह अब इरादा कर रहा था, ख़ुदा को पसन्द नहीं. जब सिर्फ़ उसके ख़याल ने इबादत से जी हटा दिया तो न जाने असलियत कहां पहुँचायेगी.

नतीजा यह हुआ कि अयूबख़ाँ की तबीयत में झुँझलाहट-सी पैदा हो गई. उसकी ख़याली तस्वीरें सब धुवाँ बनकर उड़ गईं और उसके दिमाग़ में इस मसले पर बहस छिड़ गई कि उसे मज़दूरनी से शादी करनी चाहिए या नहीं. उसकी अपनी राय तो शादी के मुआफ़िक़ थी, लेकिन फिर उसने सोचा कि और लोग क्या कहेंगे ? रिश्तेदारों और अज़ीज़ों की ज़बान से ख़ुदा बचाये, वह तो बेगुनाहों को भी रोज़ सूली पर चढ़ाते हैं, ऐसी हरकत पर तो वह उसकी धज्जियां उड़ा देंगे, नाम मिट्टी में मिला देंगे. रिश्तेदार तो ख़ैर ख़ुदा ने इसीलिए पैदा किये हैं, उनको छोड़िए, मज़दूरनी से निकाह होने की ख़बर सुनकर कौन चुप रहेगा ? गली-गली लोग हँसी उड़ायेंगे, और यह नौकर चाकर, यही लोग जो इस वक़्त ख़ौफ़ज़दा और

[illegible]
مزدورنی کی طرف دیکھا کہ یہ خاموشی کیسی ہوگی ؟ مزدورنی کی سادگی، اس کا بھولا پن، اس کی محبت بھری نگاہیں ! گھر کے سجانے اور زندگی کے خوش کرنے کے لئے اس سے زیادہ کس چیز کی ضرورت تھی ؟ پھر دیش سے وہ روحانی لگاؤ، غریبوں سے وہ دوستی جس کا اس نے کچھ دن پہلے ہی اقرار کیا تھا، ان سب کے قایم رکھنے کی اور کون سی ترکیب ہو سکتی تھی ؟ ایوب خاں کا جی چاہنے لگا کہ کسی طرح سے وہ کود پھاند کر اپنی موجودہ حالت سے اس زندگی تک پہونچ جائے جس کی ایک جھلک ابھی اسے نظر آئی تھی، اپنی امیدیں پوری کرے اور دل کی بے چینی دور کرے؛ لیکن جب وہ گھر پہونچا اور کھانے کے بعد آرام کر کے نماز پڑھنا چاہا، تو اسے ایک عجیب سستی سی محسوس ہوئی ۔ جہاں وہ شوق سے جاتا تھا وہاں آج معلوم ہوتا تھا کہ کوئی زبردستی لئے جا رہا ہے ۔ نماز تو اس نے کسی طرح سے ختم کر لی، مگر اسے اس تبدیلی پر حیرت ہوئی ۔

"آخر مجھے ہو کیا گیا ؟ ... کیا اب بھی اپنے خدا سے منھ پھیر لونگا"—اس نے اپنے آپ سے گھبرا کر پوچھا، مگر اسے کہیں سے جواب نہ ملا اور آخرکار عاجز آکر وہ وظیفہ کو چھوڑ چھاڑ اپنے پلنگ پر لیٹ گیا ۔ واقعہ یہ تھا کہ وہ اپنی شادی کی سوچ میں تھا، اور اسی جوان مزدورنی کی آنکھیں، جنھوں نے اس کی عبادت ایسی رسیلی کر دی تھی، آج اسے اپنی طرف بلا رہی تھیں ۔ ایوب خاں نے عیاشی سے توبہ کی تھی، اس طرح کی محبت سے نہیں کی تھی جو مرد اور عورت کو میاں اور بیوی بناتی ہے اور ان کو خوش رکھتی ہے؛ لیکن پھر خدا اور اس کے ایک دیندار بندے کے درمیان میں یہ پردہ کیسے پڑ گیا، یہ بیگانی کیونکر ہو گئی ؟ ایوب خاں اس وقت اپنی آئندہ زندگی کی تصویر بنانے میں ایسا مشغول تھا کہ اس نے اس سوال پر زیادہ غور کرنے سے بچنا چاہا، مگر یہ اندیشہ اس کے دل میں کانٹے کی طرح چبھنے لگا کہ شاید وہ زندگی جس کا اب وہ ارادہ کر رہا تھا، خدا کو پسند نہیں ۔ جب صرف اس کے خیال نے عبادت سے جی ہٹا دیا تو نہ جانے اصلیت کہاں پہونچائیگی ۔

نتیجہ یہ ہوا کہ ایوب خاں کی طبیعت میں جھنجلاہٹ سی پیدا ہو گئی ۔ اس کی خیالی تصویریں سب دھواں بن کر اڑ گئیں اور اس کے دماغ میں اس مسئلہ پر بحث چھڑ گئی کہ اسے مزدورنی سے شادی کرنی چاہئے یا نہیں ۔ اس کی اپنی رائے تو شادی کے موافق تھی، لیکن پھر اس نے سوچا کہ اور لوگ کیا کہینگے ؟ رشتہ داروں اور عزیزوں کی زبان سے خدا بچائے، وہ تو بے گناہوں کو بھی روز سولی پر چڑھاتے ہیں، ایسی حرکت پر تو وہ اس کی دھجیاں اڑا دینگے، نام مٹی میں ملادینگے ۔ رشتہ‌دار تو خیر خدا نے اسی لئے پیدا کئے ہیں، ان کو چھوڑیئے، مزدورنی سے نکاح ہونے کی خبر سن کر کون چپ رہیگا ؟ گلی گلی لوگ ہنسی اڑائینگے، اور یہ نوکر چاکر، یہی لوگ جو اسوقت خوفزدہ اور

[illegible] मालूम होते हैं, वह भी खूब दांत दिखायेंगे. मज़दूरनी दुनिया में सब से बदसूरत औरत बन जायेगी और वह खुद सबसे ज़्यादा बेवक़ूफ़ आदमी. और क्या. कोई डन्डा लिये लोगों की राय बदलता फिरेगा ? अयूबख़ाँ के ख़यालात का देर तक यही रंग रहा, और जब नौकर ने चाय लाने में देर की तो उसे बिलकुल यक़ीन हो गया कि शादी का नतीजा बुरा होगा.

सारी शाम और आधी रात तक अयूबख़ाँ की तबीयत परेशान रही. कभी उम्मीद नई ज़िन्दगी को उसके सामने दिलरुबा शक्लों में पेश करती, कभी लोग उसकी हिमाक़त पर हँसते हुये नज़र आते. यह भी मुमकिन न था कि वह इबादत में संलग्न होकर इन सब झगड़ों को भूल जाय, क्योंकि इस पर उसका जी किसी तरह से राज़ी नहीं होता था, आख़िरकार नींद ने आकर बहस मुल्तवी कर दी. दूसरे दिन सवेरे जब नये मकान को देखने के लिए जाने का वक़्त आया, तो अयूबख़ाँ का अजीब हाल था.

'पहले तो नई ज़िन्दगी के तरीक़े को तय कर लेना चाहिए'—उसने सोचा—'यह मकान वग़ैरा तो सब मज़ाक़ है, वहाँ कोई जाकर क्या करे.' मगर नई ज़िन्दगी का मसला तैयार नहीं हो सकता था, इसलिए वह दिल बहलाने के लिए चला गया.

मकान के अन्दर मिस्त्रियों में बड़े ज़ोर-शोर से बहस हो रही थी. अयूबख़ाँ को देखते ही बुड्ढे मिस्त्री ने उसकी तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा—'और सुनिये मिया साहेब ! वह सुन्दरिया भाग गई. डेढ़ दिन की मजूरी छोड़कर चली गई...'

'कौन, सुन्दरिया कौन ?'

अयूबख़ाँ को इस जवान मज़दूरी का नाम तो मालूम था, लेकिन वह यह ख़बर सुनकर ऐसा घबराया कि उसकी समझ में और कोई सवाल न आया.

'अरे वही साहेब, जाकी अस बगुला जैसी अँखियाँ रहिन. आप तो वाका जानत हैं.'

'क्यों ! कैसे भाग गई ?'

'हम का जानी साहेब, ई मंगल तो कहत हैं कि ऊ आसिक होय गई रहे, इनहिन से पूछो.'

मिस्त्री मंगल ने इतमीनान से कहा—'साहेब, जब से वह हियां आई रहे यू मिट्ठू वही जिहके साथ चली गई है, उसे रोज कहत रहे कि हमारे पास कानपुर मां मकान है, हमारे साथ हुवां भाग चलो, हम मजूरी करबै तुम रोटी पकायो. वह सारी का जाने, न माय न बाप जिहसे सलाह ले, कानपुर का नाम सुन के वाके साथ भाग गई.'

'लेकिन आख़िर मज़दूरी क्यों छोड़ गई ?'

मंगल ने कुछ नाराज़ होकर कहा—'अब यू साहब हम का जानी !'

बुड्ढा मिस्त्री बोल उठा—'सार कह दिहिस होइहै कि कानपुर की गाड़ी आजै जात है फिर कबहूँ न मिलिहै !'

अयूबख़ाँ का सिर चक्कर खाने लगा. मुँह पर बीमारों की-सी मुस्कराहट आ गई, बग़ैर और कुछ कह-सुन वह घर के बाहर निकल आया और मोटर में जाकर बैठ गया.

'भई, घर चलो.'—उसने ड्राइवर से कहा—'ज़रा घूमते-घामते चलना.'

मोटर फाटक से बाहर निकल गयी और अयूबख़ाँ ने पीछे फिर कर नये मकान पर नज़र भी न डाली.

طابعدار معلوم ہوتے ہیں' یہ بھی خوب دانت دکھائینگے . مزدورنی دنیا میں سب سے بدصورت عورت بن جائیگی اور وہ خود سب سے زیادہ بیوقوف آدمی. اور کیا کوئی ڈنڈا لئے لوگوں کی رائے بدلتا پھریگا ؟ ایوب خاں کے خیالات کا دیر تک یہی رنگ رہا' اور جب نوکر نے چائے لانے میں دیر کی تو اسے بالکل یقین ہو گیا کہ شادی کا نتیجہ برا ہوگا .

ساری شام اور آدھی رات تک ایوب خاں کی طبیعت پریشان رہی . کبھی امید نئی زندگی کو اس کے سامنے دلربا شکلوں میں پیش کرتی' کبھی لوگ اس کی حماقت پر ہنستے ہوئے نظر آتے . یہ بھی ممکن نہ تھا کہ وہ عبادت میں سنلگن ہو کر ان سب جھگڑوں کو بھول جائے' کیونکہ اس پر اس کا جی کسی طرح سے راضی نہیں ہوتا تھا . آخرکار نیند نے آکر بحث ملتوی کر دی . دوسرے دن سویرے جب مکان کو دیکھنے کے لئے جانے کا وقت آیا' تو ایوب خاں کا عجیب حال تھا .

'پہلے تو نئی زندگی کے طریقہ کو طے کر لینا چاہئے'—اس نے سوچا—'یہ مکان وغیرہ تو سب مذاق ہے' وہاں کوئی جاکر کیا کرے' مگر نئی زندگی کا مسئلہ تیار نہیں ہو سکتا تھا' اس لئے وہ دل بہلانے کے لئے چلا گیا .

مکان کے اندر مستریوں میں بڑے زور شور سے بحث ہو رہی تھی . ایوب خاں کو دیکھتے ہی بڈھے مستری نے اس کی طرف مخاطب ہو کر کہا—'اور سنئے میاں صاحب ! وہ سندریا بھاگ گئی . ڈیڑھ دن کی مجوری چھوڑ کر چلی گئی...'

'کون' سندریا کون ؟'

ایوب خاں کو اس جوان مزدورنی کا نام تو معلوم تھا' لیکن وہ یہ خبر سن کر ایسا گھبرایا کہ اس کی سمجھ میں اور کوئی سوال نہ آیا .

'ارے وہی صاحب' جاکی اس بگلا جیسی انکھیاں رہن . آپ تو واکا جانت ہیں .'

'کیوں ! کیسے بھاگ گئی ؟'

'ہم کا جانی صاحب' ای منگل تو کہت ہیں کہ او آسک ہوئی گئی رہے . انہن سے پوچھو .'

مستری منگل نے اطمینان سے کہا—'صاحب' جب سے وہ یہاں آئی رہے یو مٹھو وہی جاکے ساتھ چلی گئی ہے' ویسے روج کہت رہے کہ ہمارے پاس کانپور ماں مکان ہے' ہمارے ساتھ ہواں بھاگ چلو' ہم مجوری کربے تم روٹی پکایو . وہ ساری کا جانے' نہ مائی نہ باپ جیہہ سے صلاح لے' کانپور کا نام سن کے واکے ساتھ بھاگ گئی .'

'لیکن آخر مزدوری کیوں چھوڑ گئی ؟'

منگل نے کچھ ناراض ہو کر کہا—'اب یو صاحب ہم کا جانی !'

بڈھا مستری بول اٹھا—'سار کہہ دیہس ہوئی ہے کہ کانپور کی گاڑی آجے جات ہے پھر کبہوں نہ ملیہے !'

ایوب خاں کا سر چکر کھانے لگا . منہ پر بیماروں کی سی مسکراہٹ آگئی' بغیر اور کچھ کہے سنے وہ گھر کے باہر نکل آیا اور موٹر میں جا کر بیٹھ گیا .

'بھئی' گھر چلو'—اس نے ڈرائیور سے کہا—'ذرا گھومتے گھامتے چلنا .'

موٹر پھاٹک کے باہر نکل گئی اور ایوب خاں نے پیچھے پھر کر نئے مکان پر نظر بھی نہ ڈالی .

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

मुहम्मद साहब ने कहा :—"जो आदमी (दीन को) ठीक क समझता है वह हज़ारों इबादत (पूजा) करने वालों के क़ाबले में शैतान के सिवाय मुश्किल से क़ाबू में आता ।"

—इब्न अब्बास, तिरमिज़ी: इब्न माजह.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"ऐसी विद्या जिससे किसी सरे को फ़ायदा न पहुँचे उस खज़ाने की तरह है जिस में से छ भी अल्लाह की राह में ख़र्च न किया जावे."

—अबु हुरैरा, अहमद: दारीमी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"बुरे से बुरे लोग वह हैं जो द्वान होते हुए भी बुराई करते हैं, और इसमें संदेह नहीं च्छे से अच्छे आदमी वह हैं जो विद्वान होते हुए दूसरों ा भलाई करते हैं."

—अहवस बिन हकीम, दारीमी,

मुहम्मद साहब ने कहा :—"सच मुच क़यामत के दिन रजे के लिहाज से अल्ला की नज़रों में सबसे बुरे आदमी ह होंगे जो विद्वान हैं और जिन्होंने अपनी विद्या से लाभ हीं उठाया."

अबुदरदा, दारीमी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"जो कोई इसलिये ज्ञान ासिल करता है कि उससे विद्वानों पर अपनी धाक जमावे और सीधे सादे लोगों को नुक़सान पहुँचावे और लोगों ा ध्यान अपनी तरफ़ खींचे, अल्लाह उसे जहन्नुम की आग ं डालेगा."

—काब बिन मालिक, तिरमिज़ी; इब्न उमर, इब्न माजह.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"जिस किसी आदमी से ज्ञान की कोई बात पूछी जावे और वह उसे जान बूझकर दूसरों से छिपावे, क़यामत के दिन उसके मुँह में आग का लगाम दी जायगी."

—अबु हुरैरा, अबु दाऊद: तिरमिज़ी: अहमद; अनस, इब्न माजह.

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

محمد صاحب نے کہا :—"جو آدمی (دین کو) ٹھیک ٹھیک سمجھتا ہے وہ ہزاروں عبادت (پوجا) کرنے والوں کے مقابلے میں شیطان کے زیادہ مشکل سے قابو میں آتا ہے ."

—ابن عباس، ترمذی : ابن ماجہ .

محمد صاحب نے کہا :—"ایسی ودیا جس سے کسی دوسرے کو فایدہ نہ پہونچے اُس خزانے کی طرح ہے جس میں سے کچھ بھی اللہ کی راہ میں خرچ نہ کیا جاوے ."

—ابو ہریرہ، احمد : دارمی .

محمد صاحب نے کہا :—"برے سے برے لوگ وہ ہیں جو ودوان ہوتے ہوئے بھی برائی کرتے ہیں، اور اِس میں سندیہہ نہیں اچھے سے اچھے آدمی وہ ہیں جو ودوان ہوتے ہوئے دوسروں کی بھلائی کرتے ہیں ."

—احوص بن حکیم، دارمی .

محمد صاحب نے کہا :—"سچ مچ قیامت کے دن درجہ کے لحاظ سے اللہ کی نظروں میں سب سے برے آدمی وہ ہونگے جو ودوان ہیں اور جنہوں نے اپنی ودیا سے لابھ نہیں اُٹھایا ."

—ابودردہ، دارمی .

محمد صاحب نے کہا :—"جو کوئی ایسے اِس لئے گیان حاصل کرتا ہے کہ اُس سے ودوانوں پر اپنی دھاک جماوے اور سیدھے سادے لوگوں کو نقصان پہونچاوے اور لوگوں کا دھیان اپنی طرف کھینچے، اللہ اسے جہنم کی آگ میں ڈالیگا ."

— کعب بن مالک، ترمذی؛ ابن عمر، ابن ماجہ .

محمد صاحب نے کہا :—"جس کسی آدمی سے گیان کی کوئی بات پوچھی جاوے اور وہ اسے جان بوجھکر دوسروں سے چھپاوے، قیامت کے دن اُس کے منہ میں آگ کی لگام دی جاویگی ."

—ابو ہریرہ، ابوداؤد : ترمذی : احمد؛ انس، ابن ماجہ .

मुहम्मद साहब ने कहा :—"सब कुछ तुम्हारे लिये सब से अच्छी चीज़ खाने की वह है जो तुमने अपनी मेहनत से कमाई है."

—आयशा, अबुदाऊद: नसाई: इब्न मजाह.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"सारी जमीन अल्लाह की जमीन है और सब मख़लूक़ अल्लाह की मख़लूक़ है: जो कोई किसी परती जमीन को जोत बोकर उपजाऊ बनाता है उसी का उस जमीन पर सब से अधिक हक़ है.

—उरवा, अबुदाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"जो आदमी अपने हाथ की मज़दूरी से कमाया हुआ खाना खाता है उस से बढ़कर खाना आज तक किसी ने नहीं पाया.'

—मिक़दाम, बुख़ारी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—जो कोई किसी पड़ी हुई जमीन को जोत बोकर उस से पैदा करता है वही उस जमीन का मालिक है, उसे उस जमीन से निकालने का किसी को हक़ हासिल नहीं है."

—उरवह बिन ज़ुबैर, अबुदाऊद: तिरमिज़ी: मालिक.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"जो कोई किसी ऐसी जमीन को जोतता है और उसको आबाद करता है जिसे उस जमीन का मालिक न जोत सकता है और न आबाद कर सकता है बल्कि उसे ऐसी ही छोड़ देता है, वह जमीन उसी जोतने वाले की हो जायगी."

—समुरह बिन जन्दब, मालिक.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"जो कोई किसी ऐसी जमीन को जोतता है या आबाद करता है जो किसी की मिलकीयत नहीं है, उस जमीन की मिलकीयत का उसे ही सब से ज़ियादा हक़ होगा."

आयशा, बुख़ारी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"जो कोई अन्याय से किसी की एक बालिश्त जमीन भी छीन लेता है, क़यामत के दिन उसके गले में एक तौक़ होगा जिसका बोझ सात जमीनों के बोझ के बराबर होगा."

—अबुसलमा बिन अब्दुर्रहमान, बुख़ारी : मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"दूसरों को दान देने वाला आदमी अल्लाह के नज़दीक होता है, जन्नत के क़रीब होता

محمد صاحب نے کہا :—"سب کچھ تمہارے لئے سب سے اچھی چیز کھانے کی وہ ہے جو تم نے اپنی محنت سے کمائی ہے۔"

—عائشہ' ابوداؤد : نسائی : ابن ماجہ ۔

محمد صاحب نے کہا :—"ساری زمین اللہ کی زمین ہے اور سب مخلوق اللہ کی مخلوق ہے : جو کوئی کسی پرتی زمین کو جوت بوکر اپجاؤ بناتا ہے اسی کا اس زمین پر سب سے ادھک حق ہے۔"

—عروہ' ابوداؤد ۔

محمد صاحب نے کہا :—"جو آدمی اپنے ہاتھ کی مزدوری سے کمایا ہوا کھانا کھاتا ہے اس سے بڑھکر کھانا آج تک کسی نے نہیں کھایا ۔"

—مقدام' بخاری ۔

محمد صاحب نے کہا:—"جو کوئی کسی پڑی ہوئی زمین جوت بو کر اس سے پیدا کرتا ہے وہی اس زمین کا مالک ہے؛ اسے اس زمین سے نکالنے کا کسی کو حق حاصل نہیں ہے ۔"

—عروہ بن زبیر' ابوداؤد : ترمذی : مالک ۔

محمد صاحب نے کہا کہ:—"جو کوئی کسی ایسی زمین کو جوتتا ہے اور اس کو آباد کرتا ہے جسے اس زمین کا مالک نہ جوت سکتا ہے اور نہ آباد کر سکتا ہے بلکہ اسے ایسی ہی چھوڑ دیتا ہے' وہ زمین اسی جوتنے والے کی ہوجائیگی ۔"

—سمورہ بن جندب' مالک ۔

محمد صاحب نے کہا:—"جو کوئی کسی ایسی زمین کو جوتتا ہے یا آباد کرتا ہے جو کسی کی ملکیت نہیں ہے' اس زمین کی ملکیت کا اسے ہی سب سے زیادہ حق ہوگا ۔"

—عائشہ' بخاری ۔

محمد صاحب نے کہا:—"جو کوئی انیائے سے کسی کی ایک بالشت زمین بھی چھین لیتا ہے' قیامت کے دن اس کے گلے میں ایک طوق ہوگا جس کا بوجھ سات زمینوں کے بوجھ کے برابر ہوگا ۔"

—ابو سلمہ بن عبدالرحمان' بخاری : مسلم ۔

محمد صاحب نے کہا:—"دوسروں کو دان دینے والا آدمی اللہ کے نزدیک ہوتا ہے' جنت کے قریب ہوتا

है, लोगों के दिलों के पास होता है, और दोज़ख की आग से दूर रहता है, और कंजूस आदमी अल्लाह से दूर रहता है, जन्नत से दूर रहता है, लोगों के दिलों से दूर रहता है और दोज़ख की आग के पास रहता है. अल्लाह इबादत यानी पूजा करने वाले कंजूस आदमी के मुक़ाबले में जाहिल दान देने वाले आदमी को ज़ियादा प्यार करता है."

—अबु हुरैरा, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"उस अल्लाह की क़सम जिसके हाथों में मेरी जान है! तुम लोग हरगिज़ जन्नत में दाख़िल नहीं होगे जब तक कि तुम ईमान वाले न होगे, और तुम हरगिज़ ईमान वाले न होगे जब तक कि तुम एक दूसरे को प्यार न करोगे."

—अबु हुरैरा, मुसलिम: अबु दाऊद: तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"क्या मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ बताऊँ जिसे करने से तुम एक दूसरे से प्यार करने लगो? वह चीज़ यह है कि एक दूसरे को सलाम किया करो."

—अबु हुरैरा, मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"अल्लाह कहता है कि जो लोग मेरे (अल्लाह के) लिये एक दूसरे से प्यार करते हैं, क़यामत के दिन उन्हें नूर के तख़्त बैठने के लिये मिलेंगे यहां तक कि पैग़म्बर और शहीद भी उन से रश्क (ईर्ष्या) करेंगे."

—मुआज़ बिन जबल, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा—"अल्लाह के बन्दों में कुछ ऐसे लोग हैं जो न पैग़म्बर हैं और न शहीद, लेकिन क़यामत के दिन अल्लाह जो उन्हें जगह देगा उसे देखकर पैग़म्बर और शहीद भी उनसे रश्क करेंगे. यह वह लोग होंगे जो दूसरों से प्यार करते हैं, केवल अपने रिश्तेदारों से ही नहीं बल्कि सब से. ऐसे लोग अल्लाह से रहम की उम्मीद करते हैं. अल्लाह की क़सम! उनके चेहरे नूर से चमकेंगे और वह ख़ुद अल्लाह के नूर में दिखाई देंगे, जबकि और लोग डरेंगे, उन्हें कोई डर न होगा और जबकि और लोग दुखी होंगे, उन्हें कोई दुख न होगा."

—उमर बिन अलख़िताब, अबु दाऊद.

1-2-56 —अनुवादक: श्री मुजीब रिज़वी.

هے' لوگوں کے پاس هوتا هے' اور دوزخ کی آگ سے دور رهتا هے؛ اور کنجوس آدمی الله سے دور رهتا هے' جنت سے دور رهتا هے' لوگوں کے دلوں سے دور رهتا هے اور دوزخ کی آگ کے پاس رهتا هے' الله عبادت یعنی پوجا کرنے والے کنجوس آدمی کے مقابلے میں جاهل دان دینے والے آدمی کو زیادہ پیار کرتا هے ."

—ابو هریرہ' ترمذی .

محمد صاحب نے کہا:—"اس الله کی قسم جس کے هاتهوں میں میری جان هے! تم لوگ هرگز جنت میں داخل نہیں هوگے جب تک کہ تم ایمان والے نہ هوگے' اور تم هرگز ایمان والے نہ هوگے جب تک، کہ تم ایک دوسرے کو پیار نہ کرو گے."

— ابوهریرہ' مسلم : ابوداؤد : ترمذی .

محمد صاحب نے کہا:—"کیا میں تمہیں ایک ایسی چیز بتاؤں جسے کرنے سے تم ایک دوسرے سے پیار کرنے لگو؟ وہ چیز یہ هے کہ ایک دوسرے کو سلام کیا کرو."

—ابو هریرہ' مسلم .

محمد صاحب نے کہا:—"الله کہتا هے کہ جو لوگ میرے (الله کے) لئے ایک دوسرے سے پیار کرتے هیں' قیامت کے دن انہیں نور کے تخت بیٹھنے کے لئے ملینگے یہاں تک کہ پیغمبر اور شہید بھی ان سے رشک (ایرشیا) کرینگے."

—معاذ بن جبل' ترمذی .

محمد صاحب نے کہا:—"الله کے بندوں میں کچھ ایسے لوگ هیں جو نہ پیغمبر هیں اور نہ شہید' لیکن قیامت کے دن الله جو انہیں جگہہ دیگا اسے دیکھ کر پیغمبر اور شہید بھی ان سے رشک کرینگے . یہ وہ لوگ هونگے جو دوسروں سے پیار کرتے هیں' کیول اپنے رشتہ داروں سے هی نہیں بلکہ سب سے . ایسے لوگ الله سے رحم کی امید کرتے هیں . الله کی قسم ! ان کے چہرے نور سے چمکینگے اور وہ خود الله کے نور میں دکھائی دینگے . جب کہ اور لوگ ڈرینگے' انہیں کوئی ڈر نہ هوگا اور جب کہ اور لوگ دکھی هونگے' انہیں کوئی دکھ نہ هوگا."

—عمر بن الخطاب' ابو داؤد .

—انوادک : شری مجیب رضوی .   1. 2. 56

ब्लड प्रेशर का मर्ज़

श्री लिओनार्ड विलियम्स

महात्मा गांधी दुनिया के उन बड़े से बड़े लोगों में से थे जो बहुत समझ बूझकर अपनी ताक़त को ख़र्च करते थे. इस पर भी उनका ख़ून का दबाव बढ़ जाता था. लाखों आदमियों के दिल में यह जानने की इच्छा होगी कि 'ब्लड प्रेशर' या ख़ून का दबाव क्या होता है? यह क्यों बढ़ जाता है? और इसे किस तरह क़ाबू में किया जा सकता है? ये सब बातें श्री लिओनार्ड विलियम्स के इस लेख में अच्छी तरह समझाई गई हैं.

❀ ❀ ❀

ब्लड प्रेशर या ख़ून के दबाव की शिकायत आजकल एक फ़ैशन सी हो गई है. यह फ़ैशन ख़ास तौर से उन लोगों में है जो अपनी तनदुरुस्ती के बारे में बहुत सोचा विचारा करते हैं और लोगों से कहते रहते हैं. किसी बीमारी के फ़ैशन में शुमार होने से पहिले यह ज़रूरी है कि वह किसी हद तक भेद की चीज़ हो. पढ़े लिखे लोगों में ऐसे आदमी कम मिलेंगे जो इस बात को ख़ुशी से मान लें कि वे किसी मामूली बीमारी के शिकार हैं. आप सुनते सुनते थक जायंगे कि किसी मोटर दुर्घटना में उन्होंने किस तरह तकलीफ़ें सहीं और डाक्टर ने उनसे क्या क्या कहा मगर वह अपने दांत के दर्द जैसे मामूली दुःख की बात भी न करेंगे और न अपने पेट के दर्द के बारे में कुछ कहेंगे चाहे वे उससे कितने ही बेचैन क्यों न हों. किसी एक्सीडेन्ट या दुर्घटना के बारे में हमेशा कुछ न कुछ भेद या नयापन रहता ही है लेकिन दांत या पेट के दर्द की वजह और उसकी हालत का सबको पता है. गठिया की बीमारी अब फ़ैशन में नहीं शामिल की जाती क्योंकि यह नहीं कहा जा सकता कि हमारे वे पुरखे जो ख़ूब खाते पीते थे और ख़ूब बच्चे पैदा करते थे, गठिया के बीमार होते थे. वही आदमी जिन्हें पहले अपनी गठिया का घमंड होता था अब आपसे बड़े गर्व से कहेंगे कि 'मुझे ब्लड प्रेशर है'. वह उतनी ही सच्चाई और ज़ोर के साथ यह भी कह सकते हैं कि 'मेरी नाड़ियों में ख़ून चलता है' क्योंकि इनमें से बिना एक के दूसरी हो ही नहीं सकती और उनकी ज़िन्दगी के लिए यह ज़रूरी है कि उन्हें ये दोनों चीज़ें हों. ब्लड प्रेशर तो हर एक को होता है. ब्लड प्रेशर या ख़ून के दबाव के मानी हैं ख़ून का उन नाड़ियों की

بلڈپریشر کا مرض

شری لیونارڈ ولیمس

مہاتما گاندھی دنیا کے اُن بڑے سے بڑے لوگوں میں سے تھے جو بہت سمجھ بوجھکر اپنی طاقت کو خرچ کرتے تھے۔ اِس پر بھی اُن کا خون کا دباؤ بڑھ جاتا تھا۔ لاکھوں آدمیوں کے دل میں یہ جاننے کی اِچھا ہوگی کہ 'بلڈ پریشر' یا خون کا دباؤ کیا ہوتا ہے؟ یہ کیوں بڑھ جاتا ہے؟ اور اِسے کس طرح قابو میں کیا جاسکتا ہے؟ یہ سب باتیں شری لیونارڈ ولیمس کے اِس لیکھ میں اچھی طرح سمجھائی گئی ہیں۔

❀ ❀ ❀

بلڈپریشر یا خون کے دباؤ کی شکایت آجکل ایک فیشن سی ہوگئی ہے۔ یہ فیشن خاص طور سے اُن لوگوں میں ہے جو اپنی تندرستی کے بارے میں بہت سوچا وچارا کرتے ہیں اور لوگوں سے کہتے رہتے ہیں۔ کسی بیماری کے فیشن میں شمار ہونے سے پہلے یہ ضروری ہے کہ وہ کسی حد تک بھید کی چیز ہو۔ پڑھے لکھے لوگوں میں ایسے آدمی کم ملینگے جو اِس بات کو خوشی سے مان لیں کہ وہ کسی معمولی بیماری کے شکار ہیں۔ آپ سنتے سنتے تھک جائینگے کہ کسی موٹر درگھٹنا میں انہوں نے کس طرح تکلیفیں سہیں اور ڈاکٹر نے اُن سے کیا کیا کہا مگر وہ اپنے دانت کے درد جیسے معمولی دکھ کی بات بھی نہ کرینگے اور نہ اپنے پیٹ کے درد کے بارے میں کچھ کہینگے چاہے وے اُس سے کتنے ہی بےچین کیوں نہ ہوں۔ کسی ایکسیڈینٹ یا درگھٹنا کے بارے میں ہمیشہ کچھ نہ کچھ بھید یا نیاپن رہتا ہی ہے لیکن دانت یا پیٹ کے درد کی وجہ اور اس کی حالت کا سب کو پتہ ہے۔ گٹھیا کی بیماری اب فیشن میں نہیں شامل کی جاتی کیونکہ یہ نہیں کہا جاسکتا کہ ہمارے وے پُرکھے جو خوب کھاتے پیتے تھے اور خوب بچے پیدا کرتے تھے، گٹھیا کے بیمار ہوتے تھے۔ وہی آدمی جنہیں پہلے اپنی گٹھیا کا گھمنڈ ہوتا تھا اب آپ سے بڑے گرو سے کہینگے کہ 'مجھے بلڈ پریشر ہے' وہ اُتنی ہی سچائی اور زور کے ساتھ یہ بھی کہہ سکتے ہیں کہ 'میری ناڑیوں میں خون چلتا ہے' کیونکہ اِن میں سے بنا ایک کے دوسری ہو ہی نہیں سکتی اور اُن کی زندگی کے لئے یہ ضروری ہے کہ اُنہیں یہ دونوں چیزیں ہوں۔ بلڈ پریشر تو ہر ایک کو ہوتا ہے۔ بلڈ پریشر یا خون کے دباؤ کے معنے ہیں خون کا اُن ناڑیوں کی

दीवारों पर दबाव डालना जिनमें से होकर ख़ून सारे शरीर में चक्कर लगाता है. यह शरीर का एक ऐसा काम है जिसमें कोई भेद की या अनोखी बात नहीं है. भेद की बात अगर हो भी तो तब हो सकती है जब हम उस दबाव के घटने बढ़ने और उसके कारणों की जाँच करने लगें.

ब्लड प्रेशर का नापना

ब्लड प्रेशर के ठीक ठीक नापने के तरीक़े अभी हाल ही में ईजाद हुए हैं. इसके पहले डाक्टर लोग कलाई के ऊपर की नाड़ी में ख़ून के चाल की जांच करके उसके दबाव का पता लगाया करते थे और मामूली तौर पर जब वह मरीज़ों की नब्ज़ देखते थे तो यह बात भी उनके ध्यान में रहती थी. पर आदमी की अंगुलियां चाहे कितनी ही नाज़ुक और तजरबेकार क्यों न हों यह तो मालूम कर सकती हैं कि ख़ून किस तरह दौड़ रहा है मगर इस चीज़ को ठीक ठीक नहीं माप सकतीं कि बदन की सतह के एक ख़ास हिस्से पर ख़ून का कितना दबाव है. इसलिए ऐसे यन्त्र ईजाद किए गए जिनसे ख़ून का बिल्कुल सही दबाव निकाला जा सके. अब सब मानते हैं कि ख़ून की किसी भी नाड़ी की माप अलग अलग आदमियों और अलग अलग परिस्थितियों में बदलती रहती है. किसी की नाड़ी मोटी होती है और किसी की पतली. इसीलिए ये यन्त्र हमेशा इस्तेमाल किए जाते हैं. सर क्लिफ़ोर्ड आलबट (Sir Clifford Allbutt) का यह कहना ठीक है कि जिस तरह बिना थर्मामीटर के आदमी के बदन की गरमी पर बहस करना बेमायने है उसी तरह बिना यन्त्र के ब्लड प्रेशर के बारे में बात चीत करना बेकार है.

पहला तजरबा

ब्लड प्रेशर को ठीक ठीक नापने के सबसे पहिले तजरबे किसी साइन्सवाले या डाक्टर ने किसी साइन्स के कमरे में नहीं किये थे, बल्कि एक एंग्लिकन पादरी ने यह तजरबा सबसे पहले गांव के एक खेत में किया था. अब आगे की बात सुनकर हमारे उन भाइयों को सदमा होगा जो ज़िन्दा जानवरों पर किसी तरह की चीर फाड़ के ख़िलाफ़ हैं, लेकिन बात सच है. रेवरेण्ड स्टेफ़ेन हेल्स डी० डी०, विकार आफ़ सेन्ट मेरी, टेडिङ्गटन (Rev. Stphen Heles, D. D., Vicar of St. Mary, Teddington) ने एक घोड़ी पर नीचे लिखा तजरबा किया—

घोड़ी को उसकी कमर ज़मीन से मिलाकर उल्टा फाटक से बाँध दिया गया और फिर एक लम्बे शीशे की नली को उसकी बाईं पैर की ख़ून की नाड़ी में घुसेड़ दिया गया. फ़ौरन नली में ख़ून 8 फ़ीट 3 इन्च की ऊँचाई तक चढ़ गया और जब तक ख़ून जम नहीं गया तब तक बराबर

دیواروں پر دباؤ ڈالنا جن میں سے ہوکر خون سارے شریر میں چکر لگاتا ہے ۔ یہ شریر کا ایک ایسا کام ہے جس میں کوئی بھید کی یا انوکھی بات نہیں ہے ۔ بھید کی بات اگر ہو بھی تو تب ہوسکتی ہے جب ہم اُس دباؤ کے گھٹنے بڑھنے اور اُس کے کارنوں کی جانچ کرنے لگیں ۔

بلڈ پریشر کا ناپنا

بلڈ پریشر کے ٹھیک ٹھیک ناپنے کے طریقے ابھی حال ہی میں ایجاد ہوئے ہیں ۔ اس کے پہلے ڈاکٹر لوگ کلائی کے اوپر کی ناڑی میں خون کے چال کی جانچ کرکے اس کے دباؤ کا پتہ لگایا کرتے تھے اور معمولی طور پر جب وہ مریضوں کی نبض دیکھتے تھے تو یہ بات بھی اُن کے دھیان میں رہتی تھی ۔ پر آدمی کی انگلیاں چاہے کتنی ہی نازک اور تجربہ‌کار کیوں نہ ہوں یہ تو معلوم کرسکتی ہیں کہ خون کسی طرح دوڑ رہا ہے مگر اِس چیز کو ٹھیک ٹھیک نہیں ماپ سکتیں کہ بدن کی سطح کے ایک خاص حصے پر خون کا کتنا دباؤ ہے' اِس لئے ایسے یںتر اِیجاد کئے گئے جن سے خون کا بالکل صحیح دباؤ نکالا جاسکے ۔ اب سب مانتے ہیں کہ خون کی کسی بھی ناڑی کی ماپ الگ الگ آدمیوں اور الگ الگ پرستھتیوں میں بدلتی رہتی ہے۔ کسی کی ناڑی موٹی ہوتی ہے اور کسی کی پتلی۔ اس لئے یہ یںتر ہمیشہ استعمال کئے جاتے ہیں ۔ سرکلفورڈ آلبٹ (Sir Clifford Allbutt) کا یہ کہنا ٹھیک ہے کہ جس طرح بنا تھرمامیٹر کے آدمی کے بدن کی گرمی پر بحث کرنا بے معنے ہے اُسی طرح بنا یںتر کے بلڈ پریشر کے بارے میں بات چیت کرنا بےکار ہے ۔

پہلا تجربہ

بلڈ پریشر کو ٹھیک ٹھیک ناپنے کے سب سے پہلے تجربے کسی سائنس والے ڈاکٹر نے کسی سائنس کے کمرے میں نہیں کئے تھے' بلکہ ایک اینگلیکن پادری نے یہ تجربہ سب سے پہلے گاؤں کے ایک کھیت میں کیا تھا ۔ اب آگے کی بات سنکر ہمارے اُن بھائیوں کو صدمہ ہوگا جو زندہ جانوروں پر کسی طرح کی چیر پھاڑ کے خلاف ہیں' لیکن بات سچ ہے ۔ ریورینڈ اسٹیفن ہیلس ڈی ۔ ڈی ۔' وکار آف سینٹ میری' ٹیڈنگٹن (Rev. Stephen Heles, D. D. Vicar of St. Mary, Teddington) نے ایک گھوڑی پر نیچے لکھا تجربہ کیا—

گھوڑی کو اُس کی کمر زمین سے ملاکر اُلٹا پھاٹک سے باندھ دیا گیا اور پھر ایک لمبے شیشے کی نلی کو اُس کے بائیں پیر کی خون کی ناڑی میں گھسیڑ دیا گیا ۔ فوراً نلی میں خون 8 فیٹ 3 اِنچ کی اونچائی تک چڑھ گیا اور جب تک خون جم نہیں گیا تب تک برابر

साँस के चलने और दिल की धड़कन के साथ साथ नली में ऊपर चढ़ता और उतरता रहा. ज़ाहिर है कि जितनी ऊँचाई तक ख़ून नली में ऊपर चढ़ा था वही उस जानवर के ख़ून का दबाव था.

ब्लड प्रेशर बढ़ने के कुछ सबब

तब से अब तक बहुत तरक़्क़ी हो चुकी है और अब हमारे पास ऐसे यन्त्र हैं जिनकी मदद से हम किसी भी आदमी का ब्लड प्रेशर बिलकुल ठीक ठीक बता सकते हैं चाहे वह आदमी किसी भी हालत में क्यों न हो. शायद सबसे दिलचस्पी की बात जो लोगों के ब्लड प्रेशर नापने के दौरान में मालूम हुई है वह यह है कि किसी भी तरह का ज़रा सा भी जोश ब्लड प्रेशर को बढ़ा देता है. यह बात ध्यान देने के क़ाबिल है. क्योंकि अगर किसी भी जल्दी से घबड़ानेवाले आदमी का ख़ून का दबाव मालूम किया जा रहा हो तो आप देखेंगे कि उस आदमी का ब्लड प्रेशर महज़ उसके इस ख़्याल से बढ़ जायगा कि 'मेरा ब्लड प्रेशर नापा जा रहा है' और यन्त्र में उसका ब्लड प्रेशर जो बढ़ जायगा वह उसके असली ब्लड प्रेशर से कहीं ज़्यादा होगा. सर क्लिफ़ोर्ड आलबट एक मरीज़ का क़िस्सा बतलाते हैं जिसका ब्लड प्रेशर मामूली से बहुत ही ज़्यादा निकला क्योंकि वह आदमी ब्लड प्रेशर नापनेवाले यन्त्र को बिजली की बैटरी समझ बैठा था और उसे यह डर हो गया था कि 'मुझे एक ज़ोर का धक्का लगने वाला है'. उसे समझा दिया गया कि डर ग़लत है और जब उसकी समझ में पक्की तौर से आ गया कि वह बिजली की बैटरी नहीं है तब उसका ब्लड प्रेशर लिया गया और मामूली निकला. आम तौर पर ब्लड प्रेशर के थोड़े से बढ़ जाने पर आदमी को बहुत ही अच्छा मालूम होने लगता है. खाना खाने के बाद मामूली तौर पर ब्लड प्रेशर बढ़ता है और इसलिए भरे पेट आदमी के दिमाग़ में जो मस्ती और ख़ुशी होती है उसकी एक वजह प्रेशर का बढ़ना भी है. आँख, नाक, कान किसी भी इन्द्रिय के जोश में आने से भी प्रेशर बढ़ता है. ज़ोर की बदबू या ख़ुशबू से ख़ून का दबाव बढ़ जायगा. इसी तरह ग़ैरमामूली नज़ारे, चाहे अच्छे हों या बुरे, प्रेशर को बढ़ा देंगे. कहा जाता है कि सड़क पर किसी भी दुर्घटना को देखने के लिए आदमी जो इकट्ठा हो जाते हैं वह लोगों की एक कमज़ोरी या बीमारी है. एक दर्जे तक यह बात ठीक हो सकती है लेकिन ज़्यादातर लोगों के बारे में होता यह है कि कोई ग़ैर मामूली बात देखने से, ख़ासकर जब वह डरावनी भी हो, लोगों का ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है. उसे रोमांच कहते हैं और रोमांच आम तौर पर लोगों को अच्छा लगता है, जिसके लिए लोग हमेशा उत्सुक रहते हैं. इसीलिए ज़्यादातर लोग किसी भी दुर्घटना को देखने के लिए बड़े शौक़ से जमा हो जाते हैं.

س کے چلنے اور دل کی دھڑکن کے ساتھ ساتھ نلی میں
ر چڑھتا اور اُترتا رہا . ظاہر ہے کہ جتنی اُونچائی تک
ن نلی میں اُوپر چڑھا تھا وہی اُس جانور کے خون کا
ؤ تھا .

پریشر بڑھنے کے کچھ سبب

تب سے اب تک بہت ترقی ہوچکی ہے اور اب ہمارے
ں ایسے یںتر ہیں جن کی مدد سے ہم کسی بھی آدمی کا
پریشر بالکل ٹھیک ٹھیک بتا سکتے ہیں چاہے وہ آدمی
ی بھی حالت میں کیوں نہ ہو . شاید سب سے دلچسپی
بات جو لوگوں کے بلڈ پریشر ناپنے کے دوران میں معلوم
ہے وہ یہ ہے کہ کسی بھی طرح کا ذرا سا بھی جوش
پریشر کو بڑھا دیتا ہے . یہ بات دھیان دینے کے قابل ہے .
یہ اگر کسی بھی جلدی سے گھبرانے والے آدمی کا خون کا
معلوم کیا جا رہا ہو تو آپ دیکھینگے کہ اُس آدمی کا
پریشر محض اُس کے اِس خیال سے بڑھ جائیگا کہ 'میرا
پریشر ناپا جا رہا ہے' اور یںتر میں اُس کا بلڈ پریشر جو
جائیگا وہ اس کے اصلی بلڈ پریشر سے کہیں زیادہ ہوگا .
یفورڈ آلبٹ ایک مریض کا قصہ بتلاتے ہیں جس کا بلڈ پریشر
لی سے بہت ہی زیادہ نکلا کیونکہ وہ آدمی بلڈ پریشر
والے یںتر کو بجلی کی بیٹری سمجھ بیٹھا تھا اور اُسے یہ ڈر
ا تھا کہ 'مجھے ایک زور کا دھکا لگنے والا ہے.' اُسے سمجھا
گیا کہ ڈر غلط ہے اور جب اُس کی سمجھ میں پکی طور
آگیا کہ وہ بجلی کی بیٹری نہیں ہے تب اس کا بلڈ پریشر
گیا اور معمولی نکلا . عام طور پر بلڈ پریشر کے تھوڑے سے بڑھ
، پر آدمی کو بہت ہی اچھا معلوم ہونے لگتا ہے . کھانا کھانے
بعد معمولی طور پر بلڈ پریشر بڑھتا ہے اور اس لئے بھرے
، آدمی کے دماغ میں جو مستی اور خوشی ہوتی ہے اُس
ایک وجہ پریشر کا بڑھنا بھی ہے . آنکھ' ناک' کان کسی
اِندریہ کے جوش میں آنے سے بھی پریشر بڑھتا ہے . زور کی
یا خوشبو سے خون کا دباؤ بڑھ جائیگا . اِسی طرح غیر
لی نظارے' چاہے اچھے ہوں یا برے' پریشر کو بڑھا دینگے .
جاتا ہے کہ سڑک پر کسی بھی درگھٹنا کو دیکھنے کے لئے آدمی
اِکٹھا ہوجاتے ہیں وہ لوگوں کی ایک کمزوری یا بیماری ہے.
، درجے تک یہ بات ٹھیک ہوسکتی ہے لیکن زیادہ‌تر لوگوں
بارے میں ہوتا یہ ہے کہ کوئی غیر معمولی بات دیکھنے سے'
کر جب وہ ڈراونی بھی ہو' لوگوں کا بلڈ پریشر بڑھ جاتا ہے.
رومانچ کہتے ہیں اور رومانچ عام طور پر لوگوں کو اچھا لگتا
جس کے لئے لوگ ہمیشہ اُتسک رہتے ہیں. اِس لئے زیادہ‌تر
کسی بھی درگھٹنا کو دیکھنے کے لئے بڑے شوق سے جمع ہوجاتے ہیں.

अच्छे नाटक के [illegible] से, जिसमें अच्छी तरह पार्ट अदा किए हों, जो ख़ुशी हमको महसूस होती है उसकी आम तौर से यही वजह होती है. जब कोई दुनिया के सुखों को तुच्छ समझनेवाला आदमी कहता है कि आधे से ज्यादा मज़ा सुख में नहीं है बल्कि सुख के इन्तज़ार करने में है तो वह साइन्स की निगाह से सच्ची बात कहता है. इस बात को अब सब जानते हैं कि किसी भी आनेवाली ख़ुशी का सिर्फ़ ख़्याल करने से आदमी के ख़ून का दबाव बढ़ जाता है. उसके रोंगटे खड़े होने लगते हैं. असली सुख के साथ बुराई भी हो सकती है लेकिन सिर्फ़ इन्तज़ार के साथ कोई बुराई नहीं होती. सिर्फ़ थोड़ी सी ख़ुशी होती है.

रोंगटे खड़े होना

रोंगटे खड़े होना बिलकुल एक जिस्मानी चीज़ है. रोंगटे खड़े होने की वजह ब्लड प्रेशर बढ़ना इतना नहीं है जितना कि वे बातें हैं जिनकी वजह से ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है. बात यह है कि ख़ून की नलियें पतली हो जाती हैं. कोई भी चीज़ अगर किसी ज़ोर के साथ किसी नली में होकर बह रही हो तो नली जितनी पतली हो जावेगी बहाव का ज़ोर उतना ही बढ़ जावेगा. नसों में यह ताक़त होती है कि वे ख़ून की नलियों की मोटाई को जितना चाहें कम या ज़्यादा कर दें और जब कभी ब्लड प्रेशर को बढ़ाने की ज़रूरत होती है तो वे नलियें आम तौर पर सिकुड़ जाती हैं. असल में नलियों के सिकुड़ जाने से ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं. इसीलिए जब नल से ठंढे पानी की धार बदन पर पड़ती है तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं क्योंकि सारे बदन की ख़ून की नलियाँ एकदम सिकुड़ जाती हैं. यही वजह है कि किसी भी जोश के वक़्त बदन सफ़ेद पड़ जाता है. सिर्फ़ डर ही की वजह से बदन पीला नहीं पड़ जाता बल्कि कोई भी चीज़ जो ब्लड प्रेशर को एकदम तेज़ी से बढ़ा दे, बदन को पीला कर देगी. आवाज़ें सुनने से ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है, यह अब सब जानते हैं. यकायक आवाज़ों का होना, तेज़ आवाज़ें ये सब ब्लड प्रेशर बढ़ा देती हैं. जैसा हम ऊपर बता चुके हैं ये चीज़ें डर पैदा करती हैं और कुछ न कुछ करने की रमक दिल में पैदा कर देती हैं. इससे आदमी या तो लड़ने के लिए तैयार हो जाता है या भागने लगता है.

फ़ौजी गानों के असर से 'कुछ न कुछ करने की' इच्छा होती ही है. सिपाही जो थक जाते हैं और जिनके पैर सूज जाते हैं वह फ़ौजी बैण्ड के बजते ही फिर से ताज़े हो जाते हैं. अच्छी कविता का भी किसी हद तक यही असर होता है. कविता के बारे में मैथ्यू अर्नाल्ड (Methe Arnold) का कहना है कि अच्छी कविता में जब साफ़ और जीती जागती बातें होती हैं तो पढ़ने वाले के रोंगटे खड़े हो जाते हैं.

اچھے ناٹک کے دیکھنے سے جس میں اچھی طرح پارٹ ادا کئے گئے ہوں، جو خوشی ہم کو محسوس ہوتی ہے اُس کی عام طور سے یہی وجہ ہوتی ہے. جب کوئی دنیا کے سکھوں کو تچھ سمجھنے والا آدمی کہتا ہے کہ آدھے سے زیادہ مزا سکھ میں نہیں ہے بلکہ سکھ کے انتظار کرنے میں ہے تو وہ سائنس کی نگاہ سے سچی بات کہتا ہے. اِس بات کو اب سب جانتے ہیں کہ کسی بھی آنے والی خوشی کا صرف خیال کرنے سے آدمی کے خون کا دباؤ بڑھ جاتا ہے. اُس کے رونگٹے کھڑے ہونے لگتے ہیں. اصلی سکھ کے ساتھ برائی بھی ہو سکتی ہے لیکن صرف انتظار کے ساتھ کوئی برائی نہیں ہوتی. صرف تھوڑی سی خوشی ہوتی ہے.

رونگٹے کھڑے ہونا

رونگٹے کھڑے ہونا بالکل ایک جسمانی چیز ہے. رونگٹے کھڑے ہونے کی وجہہ بلڈ پریشر بڑھنا اِتنا نہیں ہے جتنا کہ وے باتیں ہیں جن کی وجہہ سے بلڈ پریشر بڑھ جاتا ہے. بات یہ ہے کہ خون کی نلیئیں پتلی ہو جاتی ہیں. کوئی بھی چیز اگر کسی زور کے ساتھ کسی نلی میں ہو کر بہہ رہی ہو تو نلی جتنی پتلی ہو جاویگی بہاؤ کا زور اُتنا ہی بڑھ جاویگا. نسوں میں یہ طاقت ہوتی ہے کہ وہ خون کی نلیوں کی موٹائی کو جتنا چاہے کم یا زیادہ کر دیں اور جب کبھی بلڈ پریشر کو بڑھانے کی ضرورت ہوتی ہے تو وے نلیئیں عام طور پر سکڑ جاتی ہیں. اصل میں نلیوں کے سکڑ جانے سے ہی رونگٹے کھڑے ہو جاتے ہیں. اِس لئے جب نل سے ٹھنڈے پانی کی دھار بدن پر پڑتی ہے تو رونگٹے کھڑے ہو جاتے ہیں کیونکہ سارے بدن کی خون کی نلیاں ایکدم سکڑ جاتی ہیں. یہی وجہہ ہے کہ کسی بھی جوش کے وقت بدن سفید پڑ جاتا ہے. صرف ڈر ہی کی وجہہ سے بدن پیلا نہیں پڑ جاتا بلکہ کوئی بھی چیز جو پریشر کو ایکدم تیزی سے بڑھا دے، بدن کو پیلا کر دیگی. آوازیں سننے سے بلڈ پریشر بڑھ جاتا ہے، یہ اب سب جانتے ہیں. یکایک آوازوں کا ہونا، تیز آوازیں یہ سب بلڈپریشر بڑھا دیتی ہیں. جیسا ہم اوپر بتا چکے ہیں یہ چیزیں ڈر پیدا کرتی ہیں اور کچھ نہ کچھ کرنے کی رمک دل میں پیدا کردیتی ہیں. اِس سے آدمی یا تو لڑنے کے لئے تیار ہو جاتا ہے یا بھاگنے لگتا ہے.

فوجی گانوں کے اثر سے 'کچھ نہ کچھ کرنے کی' اِچھا ہوتی ہی ہے. سپاہی جو تھک جاتے ہیں اور جن کے پیر سوج جاتے ہیں وہ فوجی بینڈ کے بجتے ہی پھر سے تازے ہو جاتے ہیں. اچھی کویتا کا بھی کسی حد تک یہی اثر ہوتا ہے. کویتا کے بارے میں میتھیو آرنالڈ (Mathew Arnold) کا کہنا ہے کہ اچھی کویتا میں جب صاف اور جیتی جاگتی باتیں ہوتی ہیں تو پڑھنے والے کے رونگٹے کھڑے ہو جاتے ہیں.

जो लोग यह कहते हैं कि 'हमें ब्लड प्रेशर है, उनका असली मतलब यह होता है कि उनका ब्लड प्रेशर मामूली से ज्यादा है. यह सचमुच अच्छी चीज नहीं है. कोई पतली चीज नलियों में होकर बह रही हो और उन नलियों पर बेजा दबाव डाल रही हो तो नली के टूट जाने या फट जाने का डर रहता है और अगर नली की दीवार में कहीं पर कोई कमजोर जगह हो तो वहीं पर फटने का डर रहता है. आदमी की नाड़ियों में ऐसी एक कमजोर जगह है और दुर्भाग्य से वह जगह दिमाग़ में है. ऊँचे ब्लड प्रेशरवाले आदमी के किसी भी जगह से ख़ून गिरना शुरू हो सकता है, लेकिन सब से ज्यादा डर दिमाग़ से ख़ून फूट निकलने का होता है. दिमाग़ से ख़ून फूट निकलने के पहले एक दो दफ़ा शायद आदमी की नाक से ख़ून गिरे. इसलिए जरा से भी जोश से किसी अधेड़ आदमी की नाक से यदि ख़ून गिरना शुरू हो जाय तो उस आदमी को डाक्टर से सलाह लेनी चाहिये. इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि दिमाग़ से ख़ून फूट निकलना ख़तरनाक हो सकता है. आम तौर से इसे लक़वे का दौरा कहते हैं. अंग्रेज़ी में इसे स्ट्रोक यानी एकाएक चोट भी कहते हैं क्योंकि ये बातें एकाएक होती हैं, बिल्कुल जैसे किसी छिपे हुए आदमी ने पीछे से जोर का घूँसा मारकर गिरा दिया हो. अगर मरीज बच जावे तो इसका असर बाद में हमेशा यह होता है कि एक तरफ़ के बदन के हिस्से में लक़वा मार जाता है और यह भी मुमकिन है कि आदमी का बोलना बिल्कुल बन्द हो जाय. यह सब चीजें आदमी को बेहद कमजोर बना देती हैं और मरीज़ को ज्यादा दिन तक नहीं चलने देतीं. रोगी की नाड़ियां ऐसी कमजोर हो जाती हैं कि वह दिमाग़ के ख़ून फूट निकलने को बरदाश्त नहीं कर पातीं और आदमी की जिन्दगी को बहुत जल्द ख़तम कर देती हैं. इस तरह आदमी बहुत सी तकलीफ़ों से बच जाता है. याद रखना चाहिये कि ब्लड प्रेशर का ऊँचा जाना शैतान का एक बहाना है. यह पहले ही बताया जा चुका है कि जब ब्लड प्रेशर कुछ ऊँचा जाता है तो तन्दुरुस्ती अच्छी लगती है 'और कुछ न कुछ करने या सोचने' को जी चाहता है. इसलिए ऊँचे ब्लड प्रेशर वाला आदमी ज़रूरत से ज्यादा ख़ुश मालूम होता है और यह मुमकिन है कि कोई भी ऐसी ऊपरी हालत न पैदा हो या न दिखाई दे जिससे उसे अपने ख़तरे का पता आसानी से लग जावे. यह एक और ज़बरदस्त बजह है कि हर साल हमें अपने जिस्म की अच्छी तरह जाँच करा कर उसे दुरुस्त रखना चाहिये. इस चीज़ के लिए मैं बराबर जोर देता आ रहा हूँ. जहां तक नाड़ियों का ताल्लुक़ है कभी कभी

جو لوگ یہ کہتے ہیں کہ ہمیں بلڈپریشر ہے' اُن کا اصلی مطلب یہ ہوتا ہے کہ اُن کا بلڈپریشر معمولی سے زیادہ ہے۔ یہ سچ مچ اچھی چیز نہیں ہے۔ کوئی پتلی چیز نلیوں میں ہو کر بہ رہی ہو اور اُن نلیوں پر بیجا دباؤ ڈال رہی ہو تو نلی کے ٹوٹ جانے یا پھٹ جانے کا ڈر رہتا ہے اور اگر نلی کی دیوار میں کہیں پر کوئی کمزور جگہ ہو تو وہیں پر پھٹنے کا ڈر رہتا ہے. آدمی کی ناڑیوں میں ایسی ایک کمزور جگہ ہے اور دربھاگیہ سے وہ جگہ دماغ میں ہے۔ اونچے بلڈپریشر والے آدمی کے کسی بھی جگہ سے خون گرنا شروع ہو سکتا ہے' لیکن سب سے زیادہ ڈر دماغ سے خون پھوٹ نکلنے کا ہوتا ہے۔ دماغ سے خون پھوٹ نکلنے کے پہلے ایک دو دفعہ شاید آدمی کی ناک سے خون گرے۔ اِس لئے ذرا سے بھی جوش سے کسی ادھیڑ آدمی کی ناک سے یدی خون گرنا شروع ہو جائے تو اُس آدمی کو ڈاکٹر سے صلاح لینی چاہیئے۔ اِس سے کوئی اِنکار نہیں کر سکتا کہ دماغ سے خون پھوٹ نکلنا خطرناک ہو سکتا ہے۔ عام طور سے اِسے لقوے کا دورہ کہتے ہیں۔ انگریزی میں اِسے اِسٹروک یعنی یکایک چوٹ بھی کہتے ہیں کیونکہ یہ باتیں یکایک ہوتی ہیں' بالکل جیسے کسی چھپے ہوئے آدمی نے پیچھے سے زور کا گھونسہ مار کر گرا دیا ہو۔ اگر مریض بچ جاوے تو اِس کا اثر بعد میں ہمیشہ یہ ہوتا ہے کہ ایک طرف کے بدن کے حصے میں لقوہ مار جاتا ہے اور یہ بھی ممکن ہے کہ آدمی کا بولنا بالکل بند ہو جائے۔ یہ سب چیزیں آدمی کو بے حد کمزور بنا دیتی ہیں اور مریض کو زیادہ دن تک نہیں چلنے دیتیں۔ روگی کی ناڑیاں ایسی کمزور ہوتی ہیں کہ وہ دماغ سے خون پھوٹ نکلنے کو برداشت نہیں کرپاتیں اور آدمی کی زندگی کو بہت جلد ختم کر دیتی ہیں۔ اِس طرح آدمی بہت سی تکلیفوں سے بچ جاتا ہے۔ یاد رکھنا چاہیئے کہ بلڈپریشر کا اُونچا جانا شیطان کا ایک بہانا ہے۔ یہ پہلے ہی بتایا جا چکا ہے کہ جب بلڈپریشر کچھ اُونچا جاتا ہے تو تندرستی اچھی لگتی ہے اور 'کچھ نہ کچھ کرنے یا سوچنے' کو جی چاہتا ہے۔ اِس لئے اُونچے بلڈپریشر والا آدمی ضرورت سے زیادہ خوش معلوم ہوتا ہے اور یہ ممکن ہے کہ کوئی بھی ایسی اُوپری حالت نہ پیدا ہو یا نہ دکھائی دے جس سے اسے اپنے خطرے کا پتہ آسانی سے لگ جاوے۔ یہ ایک اور زبردست وجہ ہے کہ ہر سال ہمیں اپنے جسم کی اچھی طرح جانچ کرا کر اُسے درست رکھنا چاہیئے۔ اِس چیز کے لئے میں برابر زور دیتا آرہا ہوں۔ جہاں تک ناڑیوں کا تعلق ہے کبھی کبھی

अपने जिस्म की अच्छी तरह जाँच करा लेना बहुत ज़रूरी और फ़ायदेमन्द है बनिस्बत अपने दाँतों की जाँच कराने के. ऐसे बहुत से लोग हैं जो अपने दाँत के डाक्टर के पास साल भर में कम से कम एक बार ज़रूर जाते हैं लेकिन बहुत कम लोग ऐसे मिलेंगे जो डाक्टर से अपने जिस्म की अच्छी तरह जाँच कराके उसे दुरुस्त रखने की कोशिश करते हों. पचास बरस के खूब तन्दुरुस्त आदमी के लिए, जिसे इस बात का घमण्ड है कि वह ज़िन्दगी में कभी भी इतना अच्छा नहीं रहा, इसका बहुत बड़ा डर है कि कहीं वह इस रोग के नज़दीक न हो.

औसत ब्लड प्रेशर

जिस यन्त्र से ब्लड प्रेशर मालूम किया जाता है उसे स्फ़ाइगनोमैनोमीटर (Sphygnomanometer) कहते हैं. जो लोग इस यंत्र से अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं वे इसे मैनोमीटर (Manometer) भी कहते हैं. लाखों आदमियों का ब्लड प्रेशर इस यंत्र से पढ़ा गया है. इससे यह बात मालूम हो गई है कि आदमी का औसत ब्लड प्रेशर क्या होना चाहिए. यहाँ पर औसत दबाव का मतलब ठीक यानी तनदुरुस्त आदमी का ब्लड प्रेशर नहीं है. ऊपर जो तजरबे बताए गए हैं उनसे पता चलता है कि किसी तनदुरुस्त बीस बरस के जवान आदमी का ब्लड प्रेशर आम तौर पर 120 मिलीमीटर होता है. इस तरह की हालत में यह आंकड़ा औसत ब्लड प्रेशर और मुनासिब ब्लड प्रेशर दोनों बताता है. तजरबे से मालूम हुआ है कि जैसे उमर बढ़ती जाती है वैसे ही वैसे ब्लड प्रेशर आम तौर पर इस तरह बढ़ता है कि अगर हम किसी आदमी की उमर में 100 जोड़ दें तो उसका ब्लड प्रेशर मालूम हो जायगा. अगर मैनो-मीटर में देखें तो यही ब्लड प्रेशर उसमें भी निकलेगा. इसके मुताबिक़ 40 बरस की उमर में ब्लड प्रेशर 140 होगा और 60 बरस की उमर में 160 होगा. हाल के डाक्टर इस बात से सहमत नहीं हैं कि उमर के साथ साथ जो ब्लड प्रेशर बराबर बढ़ता जाता है वह मुनासिब ब्लड प्रेशर होता है. उनका ख़याल है कि जैसे जैसे नाड़ियां पुरानी होती जाती हैं वैसे वैसे वह कमज़ोर भी होती जाती हैं. इसलिए यह मुमकिन नहीं है कि उनकी दीवारों पर बराबर दबाव बढ़ता ही चला जावे और वह उसे बरदाश्त करती रहें. इससे यह नतीजा निकलता है कि इस बराबर बढ़ते रहनेवाले ब्लड प्रेशर की कोई हद होनी चाहिये. फ़िलहाल इस हद को 150 के क़रीब रक्खा गया है. अगर 150 से ज़्यादा किसी का ब्लड प्रेशर हो तो उसे बहुत ज़्यादा तनदुरुस्त नहीं समझना चाहिये. उसका ब्लड प्रेशर कम करने की कोशिश करना चाहिये और हर हालत में उसे बढ़ने नहीं देना चाहिये.

اپنے جسم کی اچھی طرح جانچ کرا لینا ضروری اور فائدہ مند ہے بہ مقابلے اپنے دانتوں کی جانچ کرانے کے ۔ ایسے بہت سے لوگ ہیں جو اپنے دانت کے ڈاکٹر کے پاس سال بھر میں کم سے کم ایک بار ضرور جاتے ہیں لیکن بہت سے کم لوگ ایسے ملینگے جو ڈاکٹر سے اپنے جسم کی اچھی طرح جانچ کرا کے اُسے درست رکھنے کی کوشش کرتے ہوں ۔ پچاس برس کے خوب تندرست آدمی کے لئے' جسے اِس بات کا گھمنڈ ہے کہ وہ زندگی میں کبھی بھی اِتنا اچھا نہیں رہا' اِس کا بہت بڑا ڈر ہے کہ کہیں وہ اِس روگ کے نزدیک نہ ہو ۔

اوسط بلڈ پریشر

جس یںتر سے بلڈپریشر معلوم کیا جاتا ہے اُسے اسفائگنومینومیٹر (Sphygnomanometer) کہتے ہیں ۔ جو لوگ اس یںتر سے اچھی طرح واقف ہیں وے اِسے مینومیٹر (Manometer) بھی کہتے ہیں ۔ لاکھوں آدمیوں کا بلڈ پریشر اِس یںتر سے پڑھا گیا ہے ۔ اِس سے یہ بات معلوم ہو گئی ہے کہ آدمی کا اَوسط بلڈ پریشر کیا ہونا چاہئے ۔ یہاں پر اوسط دباؤ کا مطلب ٹھیک یعنی تندرست آدمی کا بلڈپریشر نہیں ہے ۔ اُوپر جو تجربے بتائے گئے ہیں اُن سے پتہ چلتا ہے کہ کسی تندرست بیس برس کے جوان آدمی کا بلڈپریشر عام طور پر 120 ملی میٹر ہوتا ہے ۔ اِس طرح کی حالت میں یہ آنکڑہ اوسط بلڈپریشر اور مناسب بلڈپریشر دونوں بتاتا ہے ۔ تجربے سے معلوم ہوا ہے کہ جیسے عمر بڑھتی جاتی ہے ویسے ہی ویسے بلڈپریشر عام طور پر اِس طرح بڑھتا ہے کہ اگر کسی آدمی کی عمر میں 100 جوڑ دیں تو اُس کا بلڈپریشر معلوم ہو جائیگا ۔ اگر ہم مینومیٹر میں دیکھیں تو یہی بلڈپریشر اِس میں بھی نکلیگا ۔ اِس کے مطابق 40 برس کی عمر میں بلڈپریشر 140 ہوگا اور 60 برس کی عمر میں 160 ہوگا ۔ حال کے ڈاکٹر اِس بات سے سہمت نہیں ہیں کہ عمر کے ساتھ ساتھ جو بلڈپریشر برابر بڑھتا جاتا ہے وہ مناسب بلڈپریشر ہوتا ہے ۔ اُن کا خیال ہے کہ جیسے جیسے ناڑیاں پرانی ہوتی جاتی ہیں ویسے ویسے وہ کمزور بھی ہوتی جاتی ہیں' اِس لئے یہ ممکن نہیں ہے کہ اُن کی دیواروں پر برابر دباؤ بڑھتا ہی چلا جاوے اور وہ اُسے برداشت کرتی رہیں ۔ اِس سے یہ نتیجہ نکلتا ہے کہ اِس برابر بڑھتے رہنے والے بلڈپریشر کی کوئی حد ہونی چاہئے ۔ فی الحال اِس حد کو 150 کے قریب رکھا گیا ہے ۔ اگر 150 سے زیادہ کسی کا بلڈپریشر ہو تو اُسے بہت زیادہ تندرست نہیں سمجھنا چاہئے ۔ اُس کا بلڈ پریشر کم کرنے کی کوشش کرنی چاہئے اور ہر حالت میں اُسے بڑھنے نہیں دینا چاہئے ۔

सङ्गम

स्वर्गीय प्रो० सुधीन्द्र

[स्थान—रामानन्द स्वामी का मठ, काशी]

(भक्त कबीर, धन्ना जाट, रैदास चमार, वैष्णव धर्माचार्य भगवान् रामानन्द के दोनों ओर बैठे हैं. एक ओर सादी पोशाक पहने गागरोन गढ़ के राजा भी हैं. करताल और मंजीरों के बीच कीर्तन हो रहा है)

कीर्तन

बिसर गई सब तात पराई जब से साधू संगत पाई !
ना कोई वैरी ना बेगाना सकल संग हमरी बन आई !
सब में रम रहिया प्रभु एकै देखि देखि मनुआ मुसकाई !

[कीर्तन बन्द हो जाता है]

रामानन्द:—कितने आनन्द का मौका है आज ! गुरु राघवानन्द के मठ को छोड़ते समय जो इरादा लेकर चला था, उसे आज पूर्ण होते हुए देख रहा हूँ. द्रविड़ देश की कुमारी, यह भक्तिन आज उत्तरापथ की रानी हो गई है, क्यों कबीर ?

कबीर—शंकर का अद्वैतवाद—'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' नाम का मायावाद आज आपकी भक्ति की गङ्गा में डूब गया है, गुरुदेव !

हमरा भरमु गवा भऊ भागा !
जब राम नाम चित लागा !

रामानन्द—भगवान् रामानुजाचार्य की आत्मा भगवद् भक्ति की इस गङ्गा को बहते देखकर कितनी तृप्त हो रही होगी कबीर ! गुरु राघवानन्द के आशीर्वाद से ही 'राम' का सन्देश मैं घर घर में पहुंचा सका हूँ; क्यों रैदास ?

रैदास:—गुरुदेव, मैं तो जब देखता हूँ कि सारा देश आज भगवान् के प्रेमानन्द में मग्न हो रहा है तो सारे दुःख द्वन्द्व को भूल जाता हूँ. भगवन् ! राज मंदिरों से लेकर घास-फूस की कुटियों तक आपने भक्ति का गीत गुँजा दिया है. अटक से लेकर कटक तक आज ईश्वर के नाम का असर फैल गया है.

रामानन्द:—राम ! राम !! राम ! राम !!

सबै भूमि है राम की तामें अटक कहां ?
जाके मन में अटक है सोई अटक रहा ?

سنگم

سورگیہ پروفیسر سودھیندر

[استھان—راماند سوامی کا مٹھ' کاشی]

(بھکت کبیر' دھنا جاٹ' ریداس چمار' ویشنو دھرماچاریہ بھگوان راماند کے دونوں اور بیٹھے ھیں. ایک اور شاھی پوشاک پہنے گاگرون گڈھ کے راجہ بھی ھیں ۔ کرتال اور منجیروں کے بیچ کیرتن ھو رھا ھے).

کیرتن

بسر گئی سب تات پرائی جب سے سادھو سنگت پائی !
نا کوئی بیری نا بیگانا سکل سنگ ھمری بن آئی !
سب میں رم رھیا پربھو ایکے دیکھ دیکھ منوآ مسکائی !

[کیرتن بند ھو جاتا ھے]

راماند—کتنے آنند کا موقع ھے آج ! گرو راگھوانند کے مٹھ کو چھوڑتے سمئے جو اِرادہ لیکر چلا تھا' اُسے آج پورا ھوتے ھوئے دیکھ رھا ھوں ۔ دروڑ دیش کی کماری' یہ بھکتن آج اُترا پتھ کی رانی ھوگئی ھے' کیوں کبیر ؟

کبیر :—شنکر کا ادویتواد—'برھم ستیم جگلمتھیا' نام کا مایاواد آج آپ کی بھکتی کی گنگا میں ڈوب گیا ھے' گرو دیو !

ھمرا بھرمو گوا بھؤ بھاگا !
جب رام نام چت لاگا !

راماند—بھگوان رامانوجاچاریہ کی آتما بھگود بھکتی کی اِس گنگا کو بہتے دیکھکر کتنی ترپت ھو رھی ھوگی کبیر ! گرو راگھوانند کے آشیرواد سے ھی 'رام' کا سندیش میں گھر گھر میں پھونچا سکا ھوں' کیوں ریداس ؟

ریداس—گرودیو' میں تو جب دیکھتا ھوں کہ سارا دیش آج بھگوان کے پریمانند میں مگن ھو رھا ھے تو سارے دکھ دوند کو بھول جاتا ھوں ۔ بھگون ! راج مندروں سے لیکر گھاس پھوس کی کٹیوں تک آپنے بھکتی کا گیت گونجا دیا ھے ۔ اٹک سے لیکر کٹک تک آج ایشور کے نام کا اثر پھیل گیا ھے ۔

راماند—رام ! رام ! رام ! رام !!

سبے بھومی ھے رام کی تا میں اٹک کہا ؟
جاکے من میں اٹک ھے سوئی اٹک رھا ؟

कबीर—धन्य है प्रभु ! तभी तो गागरौन गढ़ के राजा प्रतापसिंह आज इस राम-नाम के राज्य में अपने राज को मिलाने के लिए यहाँ आये हैं, इससे बढ़कर भगवान्, आपकी विजय और क्या होगी ?

रैदास—महाराज ! राजा प्रतापसिंह को श्री-चरणों की सेवा और 'राम' नाम का मंत्र दीजिए.

राजा प्रतापसिंह—(स्वामी रामानन्द के चरणों में प्रणाम कर) यह तुच्छ सेवक भगवान् रामानन्द के चरणों में अपना राजमुकुट रखकर प्रणाम करता है. राज सिंहासन में वह परमानन्द कहां जो आज रामानन्द के चरणों में है ?

(स्वामी रामानन्द आशीर्वाद का हाथ देते हैं)

रैदास—तुम धन्य हो राजा प्रतापसिंह !

प्रतापसिंह—अब राजा नहीं हूँ भगत ! अब तो मैं रामानन्द महाराज के दरबार में एक चाकर हूँ.

रामानंद—इस दरबार में राम को छोड़ और कोई राजा नहीं. आज से तुम पीपा भगत हुए राजा प्रताप !

पीपा—महाराज ! मेरे साथ आया हुआ एक युवक सेना भी श्री चरणों का स्पर्श पाना चाहता है. परन्तु वह तो नाई है महाराज ! यदि क़दमों को न छू सके तो दूर से ही दर्शन की भीक दें. बाहर ही ठहरा है.

रैदास—रामानन्द भगवान के यहाँ कोई छोटा बड़ा नहीं है पीपा भगत ! यहाँ तो प्रताप राजा भी पीपा भगत बनकर सेना भगत के साथ बैठकर भगवान के प्रेम का पान कर सकता है.

कबीर—देखते हो (धन्ना भगत की ओर इशारा करके), वे धन्ना भगत जाट हैं.

धन्ना—हाँ पीपा भगत !

कबीर—और जानते हो मैं कौन हूँ ?

तनना बुनना तज्या कबीर
राम नाम लिखि लिया सरीर
जाति जुलाहा, मति को धीर
हरषि हरषि गुन रमै कबीर

रैदास—और पीपा भगत ! जानते हो मैं कौन हूँ ? मैं वह हूँ जिसकी छाया तक से तिलकधारियों को छूत लग जाती है.

जाति भी ओछी करम भी ओछा
ओछा कसब हमारा ।
नीचे से प्रभु ऊँच कियो है
कह रैदास चमारा ।

کبیر—دھنیہ ہے پربھو! تبھی تو گاگرون گڈھ کے راجہ پرتاپ سنگھ آج اِس رام نام کے راجیہ میں اپنے راج کو ملانے کے لئے یہاں آئے ہیں، اِس سے بڑھکر بھگون، آپ کی وجئے اور کیا ہوگی؟

ریداس—مہاراج! راجہ پرتاپ سنگھ کو شری چرنوں کی سیوا اور 'رام' نام کا منتر دیجئے۔

راجہ پرتاپ سنگھ—(سوامی رامانند کے چرنوں میں پرنام کر) یہ تچھ سیوک بھگوان رامانند کے چرنوں میں اپنا راج مکٹ رکھکر پرنام کرتا ہے۔ راج سنگھاسن میں وہ پرمانند کہاں جو آج رامانند کے چرنوں میں ہے؟

(سوامی رامانند آشیرواد کا ہاتھ دیتے ہیں)

ریداس—تم دھنیہ ہو راجہ پرتاپ سنگھ!

پرتاپ سنگھ—اب راجہ نہیں ہوں بھگت! اب تو میں رامانند مہاراج کے دربار میں ایک چاکر ہوں۔

رامانند—اِس دربار میں رام کو چھوڑ اور کوئی راجہ نہیں. آج سے تم پیپا بھگت ہوئے راجہ پرتاپ!

پیپا—مہاراج! میرے ساتھ آیا ہوا ایک یووک سینا بھی شری چرنوں کا اشپرش پانا چاہتا ہے۔ پرنتو وہ تو نائی ہے مہاراج! یدی چرنوں کو نہ چھوسکے تو دور سے ہی درشن کی بھیک دیں۔ باہر ہی ٹھہرا ہے۔

ریداس—رامانند بھگوان کے یہاں کوئی چھوٹا بڑا نہیں ہے پیپا بھگت! یہاں تو پرتاپ راجہ بھی پیپا بھگت بن کر سینا بھگت کے ساتھ بیٹھ کر بھگوان کے پریم کا پان کر سکتا ہے۔

کبیر—دیکھتے ہو (دھنا بھگت کی اور اِشارہ کر کے)، وے دھنا بھگت جاٹ ہیں۔

دھنا—ہاں، پیپا بھگت!

کبیر—اور جانتے ہو میں کون ہوں؟

تننا بننا تجیا کبیر
رام نام لکھ لیا سریر
جاتی جولاہا، متی کو دھیر
ہرشی ہرشی گن رمے کبیر

ریداس—اور پیپا بھگت! جانتے ہوں میں کون ہوں؟ میں وہ ہوں جس کی چھایا تک سے تلک دھاریوں کو چھوت لگ جاتی ہے۔

جاتی بھی اوچھی کرم بھی اوچھا
اوچھا کسب ہمارا۔
نیچے سے پربھو اونچ کیو ہے
کہہ ریداس چمارا۔

कबीर—चमड़े के टुकड़ों को राम नाम के धागों से जोड़कर जिस्म पर पहनने लायक़ तो बनाते हो तुम रैदास !

धन्ना—भगवान रामानन्द के क़दमों का अमृत पीकर तो अपवित्र भी पवित्र बन जाता है पीपा भगत !

रामानन्द—इन सबने सच कहा पीपा ! राम का दरबार तो सबके लिये खुला है.

जाति पांति पूछै नहिं कोई।
हरि को भजै सो हरि का होई।

आज तो धन्ना चाहे जाट हों तो भी भगत हैं, सेना नाई हों तो भी भगत हैं, कबीर मुसलमान हों तो भी भगत हैं, रैदास चमार हों तो भी भगत हैं और पीपा राजपुत्र हैं तो भी भगत हैं. यहाँ सब एक हैं. रामानन्द का यही सन्देश है भगवान रामानुज ने जो नहीं किया वह मैं आज कर रहा हूँ. मेरा यह सन्देश तुम सब घर-घर पहुँचा दो. हिंदू और मुसलमान कबीर के शब्दों में दो आँखें हैं—दो आँखें भगवान का रूप तो अलग-अलग नहीं देख सकतीं और हिन्दुओ ! यह ऊँच-नीच का भेद यदि राम का नाम भी न मिटा सके तो फिर वह नहीं मिटेगा ! मुसलमानों के ख़ुदा के दरबार में भी तो सब एक हैं और राम और ख़ुदा तो एक ही हैं. नाम के भेद के पीछे लड़-लड़ कर मरते हैं. कबीर, तुम गाओ तो अपना वह पद—सन्तो, देखत जग बौराना !

(कबीर पद गाते हैं)

सन्तो देखत जग बौराना।
साँच कहौ तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना।
हिन्दु कहै मोहि राम प्यारा, तुरुक कहै रहमाना।
आपस में दोउ लरि लरि मूये, मरम न काहू जाना।
कहत कबीर सुनो हो सन्तो, ई सब भरम भुलाना।
केतिक कहौं कहा नहिं मानै, आपुहि आप समाना।

(पटाक्षेप)

کبیر—چمڑے کے ٹکڑوں کو رام نام کے دھاگوں سے جوڑ کر جسم پر پہننے لائق تو بناتے ہو تم ریداس !

دھنا—بھگوان رامانند کے قدموں کا امرت پیکر تو اپوتر بھی پوتر بن جاتا ہے پیپا بھگت !

راما نند—ان سب نے سچ کہا پیپا ! رام کا دربار تو سب کے لئے کھلا ہے .

جاتی پانتی پوچھے نہیں کوئی .
هری کو بھجے سو هری کا هوئی .

آج تو دھنا چاہے جاٹ ہو تو بھی بھگت ہیں' سینانائی ہوں تو بھی بھگت ہیں' کبیر مسلمان ہوں تو بھی بھگت ہیں' ریداس چمار ہوں تو بھی بھگت ہیں اور پیپا راج پتر ہوں تو بھی بھگت ہیں . یہاں سب ایک ہیں . راما نند کا یہی سندیش ہے . بھگوان رامانج نے جو نہیں کیا وہ میں آج کر رہا ہوں . میرا یہ سندیش تم سب گھر گھر پہونچا دو . ہندو اور مسلمان کبیر کے شبدوں میں دو آنکھیں ہیں—دو آنکھیں بھگوان کا روپ تو الگ الگ نہیں دیکھ سکتیں اور ہندؤ ! یہ اونچ نیچ کا بھید یدی رام کا نام بھی نہ مٹا سکے تو پھر وہ نہیں مٹیگا ! مسلمانوں کے خدا کے دربار میں بھی تو سب ایک ہیں اور رام اور خدا تو ایک ہی ہیں . نام کے بھید کے پیچھے لڑ لڑ کر مرتے ہیں . کبیر' تم گاؤ تو اپنا وہ پد—سنتو' دیکھت جگ بوارانا !

(کبیر پد گاتے ہیں)

سنتو دیکھ جگ بورانا .
سانچ کہو تو مارن دھاوے' جھوٹھے جگ پتیانا .
ہندو کہے موہی رام پیارا ترک کہے رحمانا .
آپس میں دوؤ لری لری موئے' مرم نہ کاھو جانا .
کہت کبیر سنو ھو سنتو' اِی سب بھرم بھولانا .
کیتک کہوں کہا نہیں مانے' آپوھی آپ سمانا .

(پٹاکشیپ)

नये हिन्द की दूसरी पांच बरसी योजना

श्री जे. सी. कुमारप्पा

दूसरी पांच बरसी योजना का मसौदा देश के सामने है. उसके मतलब को पूरी तरह समझने के लिये उसे ध्यान से पढ़ने की ज़रूरत है.

हमारा देश एक ग़रीब खेतिहर देश है इसलिये हम यह उम्मीद कर रहे थे कि इस योजना में सबसे ज़्यादा ख़्याल किसानों की ज़रूरतों और उनकी भलाई का किया गया होगा. बाक़ी सब बातों को इसी लिहाज़ से देखा गया होगा कि उनसे किसानों की तरक़्क़ी में मदद मिले. यदि ऐसा किया जाता तभी हम इसे अपने देश की योजना कह सकते थे. लेकिन हम देखते हैं कि इसके ख़िलाफ़ यह सारा मसौदा बड़े बड़े पूँजी पतियों और बड़े बड़े कल कारख़ाने वालों की ज़रूरतों से ही रँगा पड़ा है. देश के बाक़ी लोगों की ज़रूरतों का भी वहाँ तक ही ख़्याल रखा गया है जहाँ तक कि वह इस पूँजीवादी व्यवस्था को फलने-फूलने में मदद दे सकें. इस तरह के मसौदे को हम एक 'तरकीब' या 'तदबीर' कह सकते हैं, देश की योजना नहीं कह सकते. इस सारे मसौदे में इसी बात की तदबीरें की गई हैं कि किस तरह देश का अधिक से अधिक माल बाहर के देशों में बेचा जा सके, बाहर के देशों से अधिक से अधिक धन मिल सके जिससे देश के कारख़ानों के मालिकों की ज़रूरतें पूरी हों और किस तरह देश में अधिक बड़े से बड़े कारख़ाने खुल सकें.

कम्यूनिटी प्रोजेक्ट्स यानी सहकार योजनाओं, कम्यूनिटी डेवलपमेंट यानी सहकार उन्नति या नैशनल एक्सटेंशन यानी क़ौमी फैलाव के रूप में जो कुछ थोड़ा बहुत पेश किया गया है वह सब दिल बहलाने की चीज़ है. बच्चा जब दूध माँगता है तो रबर की चुसनी उसके मुंह में दे दी जाती है. बच्चा उसे चूसता रहता है लेकिन उससे बच्चे का पेट नहीं भरता, हमारा देश चिल्ला चिल्ला कर यह माँग रहा है कि हमारे देहातों का फिर से संगठन किया जावे. इस माँग के जवाब में कुछ थोड़े से चुने हुये इलाक़ों में यह मँहगी "कल्याणकारी" योजनायें पेश की जाती हैं जिनसे कोई अच्छा नतीजा नहीं निकल सकता. इस तरह की योजनाओं को बुनियादी तौर पर खेती के काम के साथ और खेती-किसानी के दूसरे उद्योग-धन्धों के साथ इस तरह होना चाहिये कि जिससे गाँव वालों की धन पैदा करने

نئے ھند کی دوسری پانچ برسی یوجنا

شری جے ۔ سی ۔ کماریپا

دوسری پانچ برسی یوجنا کا مسودہ دیش کے سامنے ھے ۔ اُس کے مطلب کو پوری طرح سمجھنے کے لئے اُسے دھیان سے پڑھنے کی ضرورت ھے ۔

ھمارا دیش ایک غریب کھیتہر دیش ھے اس لئے ھم یہ اُمید کر رھے تھے کہ اِس یوجنا میں سب سے زیادہ خیال کسانوں کی ضرورتوں اور اُن کی بھلائی کا کیا گیا ھوگا ۔ باقی سب باتوں کو اِسی لحاظ سے دیکھا گیا ھوگا کہ اُن سے کسانوں کی ترقی میں مدد ملے ۔ یدی ایسا کیا جاتا تبھی ھم اِسے اپنے دیش کی یوجنا کہہ سکتے تھے ۔ لیکن ھم دیکھتے ھیں کہ اِس کے خلاف یہ سارا مسودہ بڑے بڑے پونجی پتیوں اور بڑے بڑے کل کارخانے والوں کی ضرورتوں سے ھی رنگا پڑا ھے ۔ دیش کے باقی لوگوں کی ضرورتوں کا بھی وھاں تک ھی خیال رکھا گیا ھے جہاں تک کہ وہ اِس پونجی وادی ویوستھا کو پھلنے پھولنے میں مدد دے سکیں اِس طرح کے مسودے کو ھم ایک 'ترکیب' یا 'تدبیر' کہہ سکتے ھیں' دیش کہ یوجنا نہیں کہہ سکتے. اِس سارے مسودے میں اِسی بات کی تدبیریں کی گئی ھیں کہ کس طرح دیش کا ادھک سے ادھک مال باھر کے دیشوں میں بیچا جاسکے' باھر کے دیشوں سے ادھک سے ادھک دھن مل سکے جس سے دیش کے کارخانوں کے مالکوں کی ضرورتیں پوری ھوں اور کس طرح دیش میں ادھک بڑے سے بڑے کارخانے کھل سکیں ۔

کمیونٹی پروجیکٹس یعنی سہکار یوجناؤں' کمیونٹی ڈیولپمینٹ یعنی سہکار اُننتی یا نیشنل ایکسٹینشن یعنی قومی پھیلاؤ کے روپ میں جو کچھ تھوڑا بہت پیش کیا گیا ھے وہ سب دل بہلانے کی چیز ھے ۔ بچہ جب دودھ مانگتا ھے تو ربر کی چوسنی اُس کے منہ میں دے دی جاتی ھے ۔ بچہ اُسے چوستا رھتا ھے لیکن اُس سے بچے کا پیٹ نہیں بھرتا ۔ ھمارا دیش چلا چلاکر یہ مانگ رہا ھے کہ ھمارے دیہاتوں کا پھر سے سنگٹھن کیا جاوے ۔ اِس مانگ کے جواب میں کچھ تھوڑے سے چنے ھوئے علاقوں میں یہ مہنگی "کلیانکاری" یوجنائیں پیش کی جاتی ھیں جن سے کوئی اچھا نتیجہ نہیں نکل سکتا ۔ اِس طرح کی یوجناؤں کو بنیادی طور پر کھیتی کے کام کے ساتھ اور کھیتی کسانی کے دوسرے اُدیوگ دھندوں کے ساتھ اِس طرح جڑنا چاھئے کہ جس سے گاؤں والوں کی دھن پیدا کرنے

की शक्ति बढ़े. हमारे इस मसौदे में यह नहीं किया गया. देश को जरूरत इस बात की है कि देहात की तरक़्क़ी का एक जाल चारों तरफ़ पूर दिया जावे जिसमें गाँव के अच्छी तरह सीखे हुये काम करने वाले हों और उनकी मदद के लिये एक पूरे अधिकार वाली सरकारी कमेटी हो जिसके ऊपर एक योजना मंत्री हो. आजकल की ये योजनायें केवल राजकाजी योजनायें हैं. इनकी ग़रज़ राजकाजी प्रोपेगेंडा है. इनमें गाँव की भलाई के लिये जो कुछ किया जा रहा है वह केवल आँसू पोंछने वाली चीज़ है. जनता का धीरज और जनता का सब्र धीरे धीरे इससे टूट सकता है.

हम पहले भी कई बार कह चुके हैं कि हमारे देश का, बड़ी बड़ी नदियों के बहाव के हिसाब से, फिर से बटवारा होना चाहिये और उन नदियों से ऐसी नहरें निकलनी चाहियें जो हिमालय के बरफ़ानी पानी को सूखे हुये खेतों में से ले जाती हुई कन्या कुमारी तक पहुँचा दें. जरूरत इस बात की है कि किसी भी पार्टी गवर्नमेंएट या उनके मदद-गारों और नेताओं के मुक़ाबले में किसानों की माली जरूरतों का कहीं अधिक ख़याल रखा जावे. राजकाज हमारे लिये अब एक दूसरे दरजे की चीज़ होनी चाहिये. पहला दरजा हमें जनता की माली जरूरतों को देना चाहिये. हमें अपने मंत्रि मंडलों को भी इसी तरह नये सिरे से बदलना चाहिये जिससे आम जनता की माली हालत को हम समझ बूझ के साथ ऊपर ले जा सकें और सारे राष्ट्र का नये सिरे से संगठन कर सकें.

हम अब भी आशा करते हैं कि इस दूसरी पाँच बरसी योजना पर जो बहसें होंगी उनमें इन बातों का ख़याल किया जायगा और इस मसौदे को इस तरह बदल दिया जायगा कि जिससे आम जनता की जरूरतों और उनकी तरक़्क़ी पर पूरा पूरा ध्यान दिया जा सके.

नई योजना के इस मसौदे में जिले को काम की इकाई माना गया है. पहली बात तो यह कि इकाई बहुत छोटी होनी चाहिये थी. एक काम करने वाला एक गाँव को या आस पास के थोड़े से गाँवों को ज्यादा अच्छी तरह सम्हाल सकता है. थोड़े से इलाक़े में वह सबको समझ सकता है और सबसे मेलजोल रख सकता है. गाँव वालों के भले के लिये यह जरूरी है. इसमें बहुत से सीखे हुये ग्राम-सेवकों की जरूरत होगी. पर यदि हमें भारत की करोड़-हा जनता को ऊपर उठाना है तो यह करना ही होगा.

इस योजना में यह मान लिया गया है कि अगर बड़े बड़े उद्योगों और बड़े बड़े कारख़ानों को बढ़ाया जावे तो भूमि पर यानी खेती के ऊपर जो करोड़ों आदमियों का बोझ पड़ता है वह कम हो जायगा. इसके ख़िलाफ़ हम सबका पीढ़ियों का तजुरबा यह है कि इस तरह के बड़े उद्योगों के बढ़ने से लाखों छोटे धन्धे करने वाले बेरोज़गार

ی بھیتی بڑھے. ہمارے اِس مسودے میں یہ نہیں کیا گیا. دیش ، ضرورت اِس بات کی ہے کہ دیہات کی ترقی کا ایک جال پاروں طرف پور دیا جاوے جس میں گاؤں کے اچھی طرح یکھے ہوئے کام کرنے والے ہوں اور اُن کی مدد کے لئے ایک ورے ادھیکار والی سرکاری کمیٹی ہو جس کے اُوپر ایک یوجنا منتری ہو. آجکل کی یہ یوجنائیں کیول راجکاجی یوجنائیں ہیں. اِن کی غرض راجکاجی پروپیگنڈا ہے. اِن میں گاؤں کی بھلائی کے لئے جو کچھ کیا جا رہا ہے وہ کیول آنسو پوچھنے والی چیز ہے. جنتا کا دھیرج اور جنتا کا صبر دھیرے دھیرے اِس سے ٹوٹ سکتا ہے.

ہم پہلے بھی کئی بار کہ چکے ہیں کہ ہمارے دیش کا، بڑی بڑی ندیوں کے بہاؤ کے حساب سے، پھر سے بٹوارہ ہونا چاہئے اور اُن ندیوں سے ایسی نہریں نکلنی چاہئیں جو ہمالیہ کے برفانی پانی کو سوکھے ہوئے کھیتوں میں سے لے جاتی ہوئی کنیا کماری تک پہونچادیں. ضرورت اِس بات کی ہے کہ کسی بھی پارٹی گورنمینٹ یا اُن کے مددگاروں اور نیتاؤں کے مقابلے میں کسانوں کی مالی ضرورتوں کا کہیں ادھک خیال رکھا جاوے. راجکاج ہمارے لئے اب ایک دوسرے درجے کی چیز ہونی چاہئے. پہلا درجہ ہمیں جنتا کی مالی ضرورتوں کو دینا چاہئے. ہمیں اپنے منتری منڈلوں کو بھی اِسی طرح نئے سرے سے بدلنا چاہئے جس سے عام جنتا کی مالی حالت کو ہم سمجھ بوجھ کے ساتھ اُوپر لے جاسکیں اور سارے راشٹر کا نئے سرے سے سنگٹھن کرسکیں.

ہم اب بھی آشا کرتے ہیں کہ اِس دوسری پانچ برسی یوجنا پر بحثیں ہونگی اور اُن میں اِن باتوں کا خیال کیا جائیگا اور اِس مسودے کو اِس طرح بدل دیا جائیگا کہ جس سے عام جنتا کی ضرورتوں اور اُن کی ترقی پر پورا پورا دھیان دیا جاسکے.

نئی یوجنا کے اِس مسودے میں ضلع کو کام کی اِکائی مانا گیا ہے. پہلی بات تو یہ ہے کہ یہ اکائی بہت چھوٹی ہونی چاہئے تھی. ایک کام کرنے والا ایک گاؤں کو یا آس پاس کے تھوڑے سے گاؤں کو زیادہ اچھی طرح سنبھال سکتا ہے. تھوڑے سے علاقے میں وہ سب کو سمجھ سکتا ہے اور سب سے میل جول رکھ سکتا ہے. گاؤں والوں کے بھلے کے لئے یہ ضروری ہے. اِس میں بہت سے سیکھے ہوئے گرام سیوکوں کی ضرورت ہوگی. پر یدی ہمیں بھارت کی کروڑہا جنتا کو اوپر اُٹھانا ہے تو یہ کرنا ہی ہوگا.

اِس یوجنا میں یہ مان لیا گیا ہے کہ اگر بڑے بڑے اُدیوگوں اور بڑے بڑے کارخانوں کو بڑھایا جاوے تو بھومی پر یعنی کھیتی کے اُوپر جو کروڑوں آدمیوں کا بوجھ پڑتا ہے وہ کم ہو جائیگا. اِس کے خلاف ہم سب کا پیڑھیوں کا تجربہ یہ ہے کہ اِس طرح کے بڑے اُدیوگوں کے بڑھنے سے لاکھوں چھوٹے دھندھے کرنے والے بیروزگار

[illegible] जाता है [illegible] एक है और वह यह है कि गाँव के छोटे-छोटे धन्धे बढ़ाये जायँ और उन्हें तरक़्क़ी दी जाय. मसौदे में भी उसूलन इस बात को मान लिया गया है पर मसौदे के बनाने वाले इस उसूल पर अमल करने के लिये इसलिये तैयार नहीं हैं कि इससे आये दिन की ज़रूरत की चीज़ों को पैदा करने वाले बड़े बड़े कारख़ाने के रूप में न चल सकेंगे और बड़े पूँजी पतियों का काम कम हो जायगा.

हम अपने देश की समस्याओं को और बढ़ाकर या उनसे भाग कर उन्हें हल नहीं कर सकते. हमें देश से बेकारी मिटानी है तो हमें गाँव के धन्धों और गाँव के कारीगरों को बड़े पूँजी पतियों और बड़े बड़े कारख़ानों की घातक दाढ़ से बचाना ही होगा.

इस योजना में यह मान लिया गया है कि आये दिन की ज़रूरत की चीज़ों को पैदा करने के लिये बड़ी बड़ी पूँजी लगाकर जो कारख़ाने खोले जायँगे उनसे जो बहुत सा माल पैदा होगा उस माल से लोगों के रहन सहन का ढंग और ऊँचा हो जायगा. रहन सहन का ढङ्ग जनता का तब ऊँचा होता है जब वह मज़दूर या वह कारीगर जो मेहनत मज़दूरी करता है ज़्यादा माल ख़रीद सके. बड़ी पूँजी वाले कारख़ाने से धन का फैलाव बन्द हो जाता है और वह पूँजी बनकर थोड़े से हाथों में जमा हो जाता है. इससे करोड़ों जनता के रहन सहन का ढङ्ग और नीचे जाता है. कपड़ा, तेल, चमड़े का सामान, शक्कर वग़ैरह ऐसी चीज़ें हैं जिनकी पैदावार में ज़्यादा से ज़्यादा आदमियों को काम मिलना चाहिये और जिनसे पैदा हुआ धन ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक फैल जाना चाहिये. हम अपने धन्धों को इस तरह चलावें तो कारख़ाने के माल की हमें ज़रूरत ही नहीं रहेगी, न कारख़ानों में पूँजी लगाने की ज़रूरत रहेगी और जनता का रहन सहन का ढङ्ग अपने आप ऊँचा चला जायगा. सबके पास पैसा होगा और सब उससे अपने सुख का सामान ख़रीद सकेंगे.

इस योजना में उन पूँजी पतियों को मदद देने के लिये जो अपने निजी कारख़ाने चला रहे हैं या चलाना चाहते हैं 560 करोड़ रुपया रखा गया है. इसके मुक़ाबले में गाँव के धन्धों को मदद देने के लिये, जिनका ताल्लुक़ करोड़ों जनता से है, सिर्फ़ 200 करोड़ रखा गया है, यानी उसके आधे से भी कम. लगभग तीन-चौथाई में कुछ हज़ार पूँजी पति और एक चौथाई में करोड़ों छोटे धन्धे वाले. इससे ज़ाहिर है कि अमीरों और ग़रीबों, पैसे वालों और नादारों के बीच की खाई और बढ़ती चली जायगी.

[illegible] بڑھ جاتا ہے [illegible] علاج صرف ایک ہے اور وہ یہ کہ گاؤں کے چھوٹے چھوٹے دھندے بڑھائے جائیں اور اُنہیں ترقی دی جائے۔ مسودے میں بھی اصولاً اِس بات کو مان لیا گیا ہے پر مسودے کے بنانے والے اِس اصول پر عمل کرنے کے لئے اِس لئے تیار نہیں ہیں کہ اِس سے آئے دن کی ضرورت کی چیزوں کو پیدا کرنے والے بڑے بڑے کارخانے کے روپ میں نہ چل سکینگے اور بڑے پونجی پتیوں کا کام کم ہوجائیگا۔

ہم اپنے دیش کی سمسیاؤں کو اور بڑھاکر یا اُن سے بھاگ کر اُنہیں حل نہیں کرسکتے۔ ہمیں دیش سے بیکاری مٹانی ہے تو ہمیں گاؤں کے دھندوں اور گاؤں کے کاریگروں کو بڑے پونجی پتیوں اور بڑے بڑے کارخانوں کی گھاتک ڈاڑھ سے بچانا ہی ہوگا۔

اِس یوجنا میں یہ مان لیا گیا ہے کہ آئے دن کی ضرورت کی چیزوں کو پیدا کرنے کے لئے بڑی بڑی پونجی لگاکر جو کارخانے کھولے جائینگے اُن سے جو بہت سا مال پیدا ہوگا اُس مال سے لوگوں کے رہن سہن کا ڈھنگ اور اُونچا ہوجائیگا۔ رہن سہن کا ڈھنگ جنتا کا تب اُونچا ہوتا ہے جب وہ مزدور یا وہ کاریگر جو محنت مزدوری کرتا ہے زیادہ مال خرید سکے۔ بڑی پونجی والے کارخانے سے دھن کا پھیلاؤ بند ہوجاتا ہے اور وہ پونجی بن کر تھوڑے سے ہاتھوں میں جمع ہوجاتا ہے۔ اِس سے کروڑوں جنتا کے رہن سہن کا ڈھنگ اور نیچے جاتا ہے۔ کپڑا، تیل، چمڑے کا سامان، شکر وغیرہ ایسی چیزیں ہیں جنکی پیداوار میں زیادہ سے زیادہ آدمیوں کو کام ملنا چاہئے اور جن سے پیدا ہوا دھن زیادہ سے زیادہ لوگوں تک پھیل جانا چاہئے۔ ہم اپنے دھندوں کو اِس طرح چلاویں تو کارخانے کے مال کی ہمیں ضرورت ہی نہیں رہیگی، نہ کارخانوں میں پونجی لگانے کی ضرورت رہیگی اور جنتا کا رہن سہن کا ڈھنگ اپنے آپ اُونچا چلا جائیگا۔ سب کے پاس پیسہ ہوگا اور سب اُس سے اپنے سکھ کا سامان خرید سکینگے۔

اِس یوجنا میں اِن پونجی پتیوں کو مدد دینے کے لئے جو اپنے نجی کارخانے چلا رہے ہیں یا چلانا چاہتے ہیں 560 کروڑ روپیہ رکھا گیا ہے۔ اِس کے مقابلے میں گاؤں کے دھندوں کو مدد دینے کے لئے، جن کا تعلق کروڑوں جنتا سے ہے، صرف 200 کروڑ رکھا گیا ہے، یعنی اُس کے آدھے سے بھی کم۔ لگ بھگ تین چوتھائی میں کچھ ہزار پونجی پتی اور ایک چوتھائی میں کروڑوں چھوٹے دھندے والے۔ اِس سے ظاہر ہے کہ امیروں اور غریبوں، پیسے والوں اور ناداروں کے بیچ کی کھائی اور بڑھتی چلی جائیگی۔

इस योजना में इस बात की सबसे ज्यादा चिन्ता दिखाई गई है कि हमारे देश से बहुत सा माल दूसरे देशों को भेजा जावे. इस तरह के व्यापार से ज्यादातर फायदा पूँजी पतियों और बड़े कारखाने वालों को ही होता है. उन्हीं को अपने कारखानों की जरूरत का माल और अपने ऐश आराम का माल विदेशों से खरीदने के लिये विदेशी सिक्कों की जरूरत होती है. इस तरह के व्यापार से किसी देश में अपने पैरों पर खड़े होने की ताक़त नहीं आ सकती. दुनिया में शान्ति तभी क़ायम हो सकती है हो सकती है और करोड़ों जनता तभी खुशहाल हो सकती है जब हर देश कम से कम अपनी आये दिन की जरूरतों की चीजें खुद बनावे और इस मामले में अपने पैरों पर खड़ा हो. हम अपने देश से अधिकतर कच्चा माल बाहर भेजते हैं. अगर हमें अपने यहाँ से बेरोजगारी दूर करनी है तो हमें इस तरह के सब कच्चे माल को अपने यहाँ रोककर खुद उससे अपनी जरूरत की चीजें तैयार करनी चाहियें. जब तक हम कच्चा माल बाहर भेजते रहेंगे और बनी हुई चीजें बाहर से मँगाते रहेंगे तब तक देश में बेरोजगारी बनी रहेगी और बढ़ती रहेगी. इस समय तो हमारी यह हालत है कि विदेशों में बनी चीजों और विदेशी पूँजी से बनी चीजों से हमारे बाजार भरे हुए हैं. "लक्स" जैसे विदेशी साबुन हमारे दूर-दूर के गाँव गाँव तक पहुँच गये हैं. क्या इंगलिस्तान के किसी गाँव में हिन्दुस्तान का बना साबुन आपको मिल सकता है ? अगर हम यह चाहते हैं कि अपने गांव के जीवन को फिर से ऊंचा ले जायें, उसे स्वावलम्बी बनायें और अपने पैरों पर खड़ा होने का मौक़ा दें तो हमें हिम्मत से काम लेना होगा. देश की जनता को दूसरे देशों के सिक्कों की जरूरत नहीं है. उनकी गाढ़ी मेहनत की पैदावार का हमें इस तरह का उपयोग नहीं करना चाहिये कि जिससे पूँजी पतियों को विदेशी माल खरीदने के लिये विदेशी सिक्के मिल सकें.

खेती

यह ठीक है कि खेती हमारे यहां अट्ठारह फ़ीसदी बढ़ गई है. लेकिन यह पैदावार उन चीजों की बढ़ी है जिन्हें विदेशों में बेचकर धन कमाया जा सकता है. नाज या उन चीजों की पैदावार जिनसे पेट भरा जा सकता है बढ़ी नहीं बल्कि और घटी है. यह हम उलटी तरफ़ जा रहे हैं. हमारे गांवों में लोगों को शक्ति बनाए रखने के लिये जैसा चाहिये भोजन नहीं मिलता. बहुतेरे लगभग भूखे रहते हैं. ऐसी सूरत में हमें नाज की पैदावार पर सारा जोर देना चाहिये. हमें यह नहीं होने देना चाहिये कि हमारे खाने के लिये नाज

اِس یوجنا میں اِس بات کی سب سے زیادہ چنتا دکھائی گئی ہے کہ ہمارے دیش سے بہت سا مال دوسرے دیشوں کو بھیجا جاوے۔ اِس طرح کے ویاپار سے زیادہ تر فایدہ پونجی پتیوں اور بڑے کارخانے والوں کو ہی ہوتا ہے۔ اُنہیں کو اپنے کارخانوں کی ضرورت کا مال اور اپنے عیش آرام کا مال ودیشوں سے خریدنے کے لئے ودیشی سکوں کی ضرورت ہوتی ہے۔ اِس طرح کے ویاپار سے کسی دیش میں اپنے پیروں پر کھڑے ہونے کی طاقت نہیں آسکتی۔ دنیا میں شانتی تبھی قایم ہو سکتی ہے۔ اور کروڑوں جنتا تبھی خوشحال ہو سکتی ہے جب ہر دیش کم سے کم اپنی آئے دن کی ضرورتوں کی چیزیں خود بناوے اور اِس معاملے میں اپنے پیروں پر کھڑا ہو۔ ہم اپنے دیش سے ادھکتر کچا مال باہر بھیجتے ہیں۔ اگر ہمیں اپنے یہاں سے بےروزگاری دور کرنی ہے تو ہمیں اِس طرح کے سب کچے مال کو اپنے یہاں روک کر خود اُس سے اپنی ضرورت کی چیزیں تیار کرنی چاہیئں۔ جب تک ہم کچا مال باہر بھیجتے رہینگے اور بنی ہوئی چیزیں باہر سے منگاتے رہینگے تب تک دیش میں بےروزگاری بنی رہیگی۔ اس سمئے تو ہماری یہ حالت ہے کہ ودیشوں میں بنی چیزوں اور ودیشی پونجی سے بنی چیزوں سے ہمارے بازار بھرے ہوئے ہیں۔ "لکس" جیسے ودیشی صابن ہمارے دور دور کے گاؤں گاؤں تک پہونچ گئے ہیں۔ کیا اِنگلستان کے کسی گاؤں میں ہندستان کا بنا صابن آپ کو مل سکتا ہے؟ اگر ہم یہ چاہتے ہیں کہ اپنے گاؤں کے جیون کو پھر سے اونچا لے جائیں، اُسے سواولمبی بنائیں اور اپنے پیروں پر کھڑا ہونے کا موقع دیں تو ہمیں ہمت سے کام لینا ہوگا۔ دیش کی جنتا کو دوسرے دیشوں کے سکوں کی ضرورت نہیں ہے۔ اُن کی گاڑھی محنت کی پیداوار کا ہمیں اِس طرح کا اُپیوگ نہیں کرنا چاہیئے کہ جس سے پونجی پتیوں کو ودیشی مال خریدنے کے لیے ودیشی سکے مل سکیں۔

کھیتی

یہ ٹھیک ہے کہ کھیتی ہمارے یہاں اٹھارہ فیصدی بڑھ گئی ہے۔ لیکن یہ پیداوار اُن چیزوں کی بڑھی ہے جنہیں ودیشوں میں بیچ کر دھن کمایا جا سکتا ہے۔ اناج یا اُن چیزوں کی پیداوار جن سے پیٹ بھرا جا سکتا ہے بڑھی نہیں بلکہ اور گھٹی ہے۔ یہ ہم اُلٹی طرف جا رہے ہیں۔ ہمارے گاؤں میں لوگوں کو شکتی بنائے رکھنے کے لئے جیسا چاہیئے بھوجن نہیں ملتا۔ بہتیرے لگ بھگ بھوکے رہتے ہیں۔ ایسی صورت میں ہمیں اناج کی پیداوار پر سارا زور دینا چاہیئے۔ ہمیں یہ نہیں ہونے دینا چاہیئے کہ ہمارے کھانے کے لئے اناج

बाहर से आते. दूसरे देशों के साथ इस तरह की तिजारत जिसमें अपना सस्ता माल हम बाहर भेजें और उनका क़ीमती माल उनसे ख़रीदें देश को और ज़्यादा ग़रीब कर देगी. हमें नाज की पैदावार बढ़ानी चाहिये. हमारे देश के अन्दर की तिजारत का ढंग भी इसी तरह का बिगड़ा हुआ है. गांव वाले खेती की पैदावार जैसे धान, तिलहन, रूई और चमड़ा शहरों को भेजते हैं और तैयार माल जैसे मिल के कुटे चावल, मिल का तेल, मिल का सूत, मिल के कपड़े, जूते वग़ैरह शहरों से ख़रीदते हैं. अगर गांव वालों की माली हालत को सुधारना है तो इस बहाव को रोकना होगा.

अगर हम आबपाशी के छोटे छोटे ज़रियों को ठीक रखने की तरफ़ ध्यान दें तो आबपाशी की ज़मीन की पैदावार आसानी से चौगुनी हो सकती है. बीसों बरस से हमने गांव के तालाबों की तरफ़ ध्यान नहीं दिया. उनमें से बहुत सों में मिट्टी ऊपर तक भर गई है. अक्सर में तो बारिश हो जाने पर भी मुशकिल से एक फ़ुट पानी टिकता है. देश में जगह जगह बड़े बड़े तालाब मौजूद हैं, पर उनमें एक फ़सल के लायक़ भी पानी नहीं रहता. अगर हम उनकी मिट्टी निकलवा कर उन्हें चार पांच फ़ुट गहरा करा दें, तो वह मिट्टी खेतों में सुन्दर खाद का काम दे सकती है, तालाबों में दो दो और तीन तीन फ़सल के लायक़ पानी रह सकता है, और आबपाशी की खेती आज से दुगनी हो सकती है. हम गांव वालों के सामने इस तरह का प्रोग्राम रखें तो वह हर तरह मदद देने को तैयार हैं. मिट्टी निकालने के लिये हम बुलडोज़रों से काम ले सकते हैं. खेतों की आबपाशी के लिये, नहरों में पानी पहुँचाने के वास्ते हम बिजली के पम्पों से भी काम ले सकते हैं.

बाढ़ की रोक थाम

तालाबों की मिट्टी निकाल देने से हम एक दरजे तक नदियों की बाढ़ों और उन बाढ़ों से अच्छी मिट्टी के कगारों के बह जाने को भी रोक सकेंगे. नदियों का बहुत सा फ़ालतू पानी, जो अब हज़ारों जानें लेता हुआ और गांव के गांव बरबाद करता हुआ समन्दर में जा गिरता है, तब गहरे तालाबों में भर जायगा और गांव वालों के काम आयेगा.

हर जगह यह भी कोशिश होनी चाहिये कि गांव का सब गन्दा पानी ऐसे गड्ढों में पहुँच जाय जहां उससे अच्छी कम्पोस्ट खाद तैयार हो सके. इससे भी धरती की पैदावार बढ़ेगी, और हमें अधिक नाज और हमारे जानवरों को अधिक चारा मिल सकेगा.

खेती में समझ से काम लेने का यह मतलब है कि हम इस बात की तरफ़ ध्यान दें कि किस मौसम से कितनी

باہر سے آتے۔ دوسرے دیشوں کے ساتھ اِس طرح کی تجارت جس میں اپنا سستا مال ہم باہر بھیجیں اور اُن کا قیمتی مال اُن سے خریدیں دیش کو اور زیادہ غریب کر دیگی ہے۔ ہمیں ناج کی پیداوار بڑھانی چاہیئے۔ ہمارے دیش کے اندر کی تجارت کا ڈھنگ بھی اِسی طرح کا بگڑا ہوا ہے۔ گاؤں والے کھیتی کی پیداوار جیسے دھان، تلہن، روئی اور چمڑا شہروں کو بھیجتے ہیں اور تیار مال جیسے مل کے کوٹے چاول، مل کا تیل مل کا سوت، مل کے کپڑے، جوتے وغیرہ شہروں سے خریدتے ہیں۔ اگر گاؤں والوں کی مالی حالت کو سدھارنا ہے تو اِس بہاؤ کو روکنا ہوگا۔

اگر ہم آبپاشی کے چھوٹے چھوٹے ذریعوں کو ٹھیک رکھنے کی طرف دھیان دیں تو آبپاشی کی زمین کی پیداوار آسانی سے چوگنی ہو سکتی ہے۔ بیسیوں برس سے ہم نے گاؤں کے تالابوں کی طرف دھیان نہیں دیا۔ اُن میں سے بہت سوں میں مٹی اوپر تک بھر گئی ہے۔ اکثر میں تو بارش ہونے پر بھی مشکل سے ایک فٹ پانی ٹکتا ہے۔ دیش میں جگہ جگہ بڑے بڑے تالاب موجود ہیں، پر اُن میں ایک فصل کے لایق بھی پانی نہیں رہتا۔ اگر ہم اُن کی مٹی نکلوا کر اُنہیں چار پانچ فٹ گہرا کر دیں، تو وہ مٹی کھیتوں میں سندر کھاد کا کام دے سکتی ہے، تالابوں میں دو دو اور تین تین فصل کے لایق پانی رہ سکتا ہے، اور آبپاشی کی کھیتی آج سے دوگنی ہو سکتی ہے۔ ہم گاؤں والوں کے سامنے اس طرح کا پروگرام رکھیں تو وہ ہر طرح مدد دینے کو تیار ہیں۔ مٹی نکالنے کے لئے ہم بلڈوزروں سے کام لے سکتے ہیں۔ کھیتی کی آبپاشی کے لئے نہروں میں پانی پہونچانے کے واسطے ہم بجلی کے پمپوں سے بھی کام لے سکتے ہیں۔

باڑھ کی روک تھام

تالابوں کی مٹی نکال دینے سے ہم ایک درجہ تک ندیوں کی باڑھوں اور اُن باڑھوں سے اچھی مٹی اور مٹی کے کناروں کے بہ جانے کو بھی روک سکینگے۔ ندیوں کا بہت سے فالتو پانی، جو اب ہزاروں جانیں لیتا ہوا اور گاؤں کے گاؤں برباد کرتا ہوا سمندر میں جا گرتا ہے، تب گہرے تالابوں میں بھر جائیگا اور گاؤں والوں کے کام آئیگا۔

ہر جگہ یہ بھی کوشش ہونی چاہیئے کہ گاؤں کا سب گندا پانی ایسے گڈھوں میں پہونچ جائے جہاں اُس سے اچھی کمپوسٹ کھاد تیار ہو سکے۔ اِس سے بھی دھرتی کی پیداوار بڑھیگی، اور ہمیں ادھک ناج اور ہمارے جانوروں کو ادھک چارا مل سکیگا۔

کھیتی میں سمجھ سے کام لینے کا یہ مطلب ہے کہ ہم اِس بات کی طرف دھیان دیں کہ کس موسم سے کتنی

... मिल सकती है, और फिर कुछ तरह की फ़सलें पैदा ... जिनसे ठीक तरह का भोजन जैसा चाहिये सबको मिल सके. जगह जगह की मिट्टी और पानी की अलग अलग साइन्सी परख के लिये भी अभी हमारे पास साधन नहीं हैं. यह हो जाय तब ही हम ठीक खाद सब जगह पहुंचा सकते हैं. केवल बनावटी कीमियाई खादें सब जगह पहुँचा देना, जैसा कि सरकारी योजना के मसौदे में कहा गया है, बिना जगह जगह की मिट्टी और पानी की कीमियाई परख के, और उलटा घातक होगा. इसके लिये विज्ञान मन्दिर की कल्पना ठीक है.

हमारी योजना ऐसी होनी चाहिये कि जिससे खेती की पैदावार इतने फ़ीसदी या उतने फ़ीसदी नहीं, बल्कि इतने गुना या उतने गुना बढ़ सके. इसके साथ साथ हमें खेती से सम्बन्ध रखने वाले उद्योग धन्धों और गांव की दस्तकारियों को भी बढ़ाना चाहिये जिससे जबरदस्ती की बेकारी मिटे और सबको काम और रोज़गार मिल सके.

क़ीमतें

आजकल किसान को अपनी मेहनत के पूरे पूरे दाम वसूल नहीं होते. उसके पैदावार की क़ीमतों को घटाना बढ़ाना विदेशी मंडियों और विदेशी व्यापारियों के हाथ में है. यह नहीं रहना चाहिये. अपनी पैदावार की क़ीमतें तय करने में खुद किसान की आवाज़ सबसे ज़ोरदार रहनी चाहिये. क़ीमत का बहुत बड़ा भाग आजकल बीच के लोग खा जाते हैं. इन दलालों का एक लम्बा सिलसिला बन गया है. यह सिलसिला घटना चाहिये. क़ीमत का अधिकांश भाग किसान और मज़दूर को मिलना चाहिये.

नए रोज़गार

नई योजना में पढ़े लिखे बेरोज़गारों के लिये कुछ नए काम गढ़े गए हैं. पर वह काम ऐसे हैं जिनसे देश की पैदावार या देश का धन नहीं बढ़ता, ख़र्च ही ख़र्च बढ़ता है. बेरोज़गारी दूर करने के लिये हमारे नए काम ऐसे होने चाहियें जिनसे पैदावार और धन बढ़े.

अगर हम इन तरीक़ों से काम करें तो हमें दूसरे देशों के सामने मदद के लिये हाथ पसारने की ज़रूरत नहीं है. अगर हम अपनी चादर देखकर पांव पसारें, फ़ज़ूल ख़र्ची न करें, अपनी ज़रूरत का अधिकतर सामान खुद पैदा करें तो जिन आठ सौ करोड़ रुपये के बाहर से लेने की ज़रूरत इस योजना में बताई गई है उनकी हमें बाहर से लेने की हरगिज़ ज़रूरत न पड़े. अगर हम अपनी पैदावार और अपने यहां की खपत दोनों को ध्यान से ठीक रखें, और अपने साधनों का ठीक ठीक उपयोग करें तो जितना धन

... مل سکتی ہے اور پھر کچھ طرح کی فصلیں پیدا کریں جن سے ٹھیک طرح کا بھوجن جیسا چاہئے سب کو مل سکے. جگہہ جگہہ کی مٹی اور پانی کی الگ الگ سائنسی پرکھ کے لئے بھی ابھی ہمارے پاس سادھن نہیں ہیں . یہ ہو جائے تب ہی ہم ٹھیک کھاد سب جگہہ پہونچا سکتے ہیں . کیول بناوٹی کیمیائی کھادیں سب جگہہ پہونچا دینا' جیسا کہ سرکاری یوجنا کے مسودے میں کہا گیا ہے' بنا جگہہ جگہہ کی مٹی اور پانی کی کیمیائی پرکھ کے' اور الٹا گھاتک ہوگا . اِس کے لئے وگیان مندر کی کلپنا ٹھیک ہے .

ہماری یوجنا ایسی ہونی چاہئے کہ جس سے کھیتی کی پیداوار اِتنے فیصدی یا اُتنے فیصدی نہیں' بلکہ اِتنے گنا یا اُتنے گنا بڑھ سکے . اِس کے ساتھ ساتھ ہمیں کھیتی سے سمبندھ رکھنے والے اُدیوگ دھندھوں اور گاؤں کی دستکاریوں کو بھی بڑھانا چاہئے جس سے زبردستی کی بےکاری مٹے اور سب کو کام اور روزگار مل سکے .

قیمتیں

آجکل کسانوں کو اپنی محنت کے پورے پورے دام وصول نہیں ہوتے . اُس کے پیداوار کی قیمتوں کو گھٹانا بڑھانا ودیشی منڈیوں اور ودیشی بیوپاریوں کے ہاتھ میں ہے . یہ نہیں رہنا چاہئے . اپنی پیداوار کی قیمتیں طے کرنے میں خود کسان کی آواز سب سے زوردار رہنی چاہئے . قیمت کا بہت بڑا بھاگ آجکل بیچ کے لوگ کھا جاتے ہیں . اِن دلالوں کا ایک لمبا سلسلہ بن گیا ہے . یہ سلسلہ گھٹنا چاہئے . قیمت کا ادھیکانش بھاگ کسان اور مزدور کو ملنا چاہئے .

نئے روزگار

نئی یوجنا میں پڑھے لکھے بےروزگاروں کے لئے کچھ نئے کام گڑھے گئے ہیں . پر وہ کام ایسے ہیں جن سے دیش کی پیداوار یا دیش کا دھن نہیں بڑھتا' خرچ ہی خرچ بڑھتا ہے . بےروزگاری دور کرنے کے لئے ہمارے نئے کام ایسے ہونے چاہئیں جن سے پیداوار اور دھن بڑھے .

اگر ہم اِن طریقوں سے کام کریں تو ہمیں دوسرے دیشوں کے سامنے مدد کے لئے ہاتھ پسارنے کی ضرورت نہیں ہے . اگر ہم اپنی چادر دیکھ کر پاؤں پساریں' فضول خرچی نہ کریں' اپنی ضرورت کا ادھکتر سامان خود پیدا کریں' تو جن آٹھ سو کروڑ روپئے کے باہر سے لینے کی ضرورت اِس یوجنا میں بتلائی گئی ہے اُن کی ہمیں باہر سے لینے کی ہرگز ضرورت نہ پڑے . اگر ہم اپنی پیداوار اور اپنے یہاں کی کھپت دونوں کو دھیان سے ٹھیک رکھیں اور اپنے سادھنوں کا ٹھیک ٹھیک اُپیوگ کریں تو جتنا بھی

में चाहिये वह सब हमें देश ही से मिल सकता है. इसके खिलाफ़ अगर हम बाहर की मदद के सहारे रहेंगे और देश के अन्दर चीज़ों की खपत को समझदारी के साथ क़ाबू में नहीं रखेंगे तो इस देश में जहां लोगों के रहन सहन का ढंग अब भी मामूली आदमी की ज़रूरतों से कहीं गिरा हुआ है हम मँहगाई और बढ़ा देंगे और पैसे के दाम बेहद घटा देंगे.

शराब बन्दी

शराब बन्दी के साथ साथ हमें ख़ासकर ताड़ी तैयार करने वालों को काम देने का भी पूरा प्रबन्ध कर देना चाहिये. इसके लिये हमें अपना गुड़ और चीनी ताड़ के रस से तैयार करनी चाहिये. ताड़ से हमें अपनी ज़रूरत का पूरा गुड़ और पूरी चीनी मिल सकती है. गन्ना बोने में भी हम खेती के साधनों का ग़लत उपयोग करते हैं. शक्कर या चीनी अधिकतर हवा और पानी से बनती है, ज़मीन से थोड़ी पैदा होती है. इसलिये गन्ने की ज़मीन को हमें दूसरी फ़सलें पैदा करने के काम में लाना चाहिये. जो लोग गन्ने की चीनी की मिलों से लाखों रुपये कमाते हैं वह इसके लिये ख़ुशी से राज़ी न होंगे कि हम उसी ज़मीन का उपयोग अधिक समझदारी के साथ दूसरे कामों के लिये करें. चीनी की मिलों की पैदावार पर अगर हम हद बांध दें कि वह इतने से ज़्यादा चीनी पैदा न कर सकें तो उससे भी हमारी समस्या हल न होगी.

शराब बन्दी अगर हम समझदारी के साथ करें तो उस से हमें बजट में घाटा नहीं होना चाहिये. विदेशी सैलानियों या ख़ास सरकारी मुलाज़िमों वग़ैरा के लिये छूट की शकल में भी कोई कमज़ोरी हमारे शराब बन्दी के प्रोग्राम में नहीं होनी चाहिये. शराब सब किसी के लिये क़ानून बन्द होनी चाहिये और उसके साथ समाज में हर तरह की शराब के पीने को बुरा समझा जाना चाहिये, चाहे कोई कम पिये और चाहे अधिक. डरते झिझकते शराब बन्दी करने से हमारी कठिनाइयां बढ़ जायंगी, जैसा कि आजकल कहीं कहीं देखने में आ रहा है.

विदेशी सिक्के

विदेशी सिक्कों के लोभ में ही हम देश में विदेशियों की ख़ातिरदारी ज़रूरत से ज़्यादा करते हैं. अंग्रेज़ी मुहावरा है कि ख़ैरात घर से शुरू होनी चाहिये. मैं कहता हूं कि ख़ातिरदारी भी घर से शुरू होनी चाहिये. हम जो विदेशियों की ख़ातिरदारी करते हैं उसकी जड़ में हमारा विदेशी सिक्कों का लोभ है, और विदेशी सिक्के हमें केवल मिल मालिकों की ज़रूरत का सामान ख़रीदने के लिये चाहियें. हमारे नफ़रीह घर जैसे सिनेमा वग़ैरा, हमारी रेल की बढ़िया

ہمیں چاہئے وہ سب ہمیں دیش ہی سے مل سکتا ہے۔ اس کے خلاف اگر ہم باہر کی مدد کے سہارے رہینگے اور دیش کے اندر چیزوں کی کھپت کو سمجھداری کے ساتھ قابو میں نہیں رکھینگے تو اِس دیش میں جہاں لوگوں کے رہن سہن کا ڈھنگ اب بھی معمولی آدمی کی ضرورتوں سے کہیں گرا ہوا ہے اور ہم مہنگائی اور بڑھا دینگے اور پیسے کے دام بیحد گھٹا دینگے۔

شراب بندی

شراب بندی کے ساتھ ساتھ ہمیں خاصکر تاڑی تیار کرنے والوں کو کام دینے کا بھی پورا پربندھ کردینا چاہئے۔ اِس کے لئے ہمیں اپنا گڑ اور چینی تاڑ کے رس سے تیار کرنی چاہئے۔ تاڑ سے ہمیں اپنی ضرورت کا پورا گڑ اور پوری چینی مل سکتی ہے۔ گنا بونے میں بھی ہم کھیتی کے سادھنوں کا غلط اُپیوگ کرتے ہیں۔ شکر یا چینی ادھکتر ہوا اور پانی سے بنتی ہے، زمین سے تھوڑی پیدا ہوتی ہے۔ اِس لئے گنے کی زمین کو ہمیں دوسری فصلیں پیدا کرنے کے کام میں لانا چاہئے۔ جو لوگ گنے کی چینی کی ملوں سے لاکھوں روپئے کماتے ہیں وہ اِس کے لئے خوشی سے راضی نہ ہونگے کہ ہم اُسی زمین کا اُپیوگ ادھک سمجھداری کے ساتھ دوسرے کاموں کے لئے کریں۔ چینی کی ملوں کی پیداوار پر اگر ہم حد باندھ دیں کہ وہ اِتنے سے زیادہ چینی پیدا نہ کرسکیں تو اُس سے بھی ہماری سمسیا حل نہ ہوگی۔

شراب بندی اگر ہم سمجھداری کے ساتھ کریں تو اُس سے ہمیں بجٹ میں گھاٹا نہیں ہونا چاہئے۔ ودیشی سیلانیوں یا خاص سرکاری ملازموں وغیرہ کے لئے چھوٹ کی شکل میں بھی کوئی کمزوری ہمارے شراب بندی کے پروگرام میں نہیں ہونی چاہئے۔ شراب سب کسی کے لئے قانوناً بند ہونی چاہئے اور اُس کے ساتھ سماج میں ہر طرح کی شراب کے پینے کو برا سمجھا جانا چاہئے، چاہے کوئی کم پیئے اور چاہے ادھک۔ ڈرتے جھجھکتے شراب بندی کرنے سے ہماری کٹھنائیاں بڑھ جائینگی، جیسا کہ آجکل کہیں کہیں دیکھنے میں آرہا ہے۔

ودیشی سکے

ودیشی سکوں کے لوبھ میں ہی ہم دیش میں ودیشیوں کی خاطرداری ضرورت سے زیادہ کرتے ہیں۔ انگریزی محاورہ ہے کہ خیرات گھر سے شروع ہونی چاہئے۔ میں کہتا ہوں کہ خاطرداری بھی گھر سے شروع ہونی چاہئے۔ ہم جو ودیشیوں کی خاطرداری کرتے ہیں اُس کی جڑ میں ہمارا ودیشی سکوں کا لوبھ ہے، اور ودیشی سکے ہمیں کیول مل مالکوں کی ضرورت کا سامان خریدنے کے لئے چاہئیں۔ ہمارے تفریح گھر جیسے سنیما وغیرہ، ہماری ریل کی بڑھیا

सड़कें, हमारे तीर्थ स्थान तक इसलिये सजाकर रखे जाते हैं कि विदेशी यात्री अधिक आवें. यह बात कोई बुरी बात नहीं थी, अगर हम पहले अपने लोगों को काफ़ी आराम पहुँचा सके होते. पर यहाँ तीसरे दरजे में सफ़र करना आसाम की लिंक लाइन जैसी बहुत सी जगहों में ऐसा ही है जैसा जानवरों का ट्रकों में लद कर जाना. ऐसी सूरत में हमें 'एयर कंडीशन्ड' गाड़ियों की ज़रूरत नहीं है. हमारे रेल के यात्रियों को मामूली इन्सानों का सा आराम भी नहीं मिलता. हम उन बातों पर अपने साधन क्यों जाया करें जिनसे विदेशी यात्री यहां अधिक खिचें? अगर हम विदेशी यात्रियों को वह सब आराम पहुंचाना चाहेंगे, जो उन्हें अपने अपने देशों में हासिल हैं, तो हमें विदेशों से ऐश आराम के सामान मंगाने पड़ेंगे, और विदेशी यात्री भी हमारे यहाँ के असूली रहन सहन को ठीक ठीक न समझ पायेंगे.

हमें अगर गाँव की जिन्दगी को बढ़ाना है तो गाँव के बाज़ारों में अधिकतर गाँव की खेती की पैदावार और गाँव के उद्योग धन्धों की बनी चीजें ही बिकनी चाहियें. इसके लिये ज़रूरी है कि गांव की ज़रूरत की चीजें अधिकतर गाँव के कच्चे माल से गांव के कारीगर ही तैयार करें और मिलों के उस माल का, जो गाँव में सस्ता बिककर गाँव के धन्दों को बरबाद कर सकता है, गाँव में जाना बन्द कर दिया जावे. विदेशी साँडों और विदेशी मुर्गों का गाँव में पहुँचाना कुछ देर के लिये लाभदायक हो सकता है, पर यह गाँव वालों की समस्याओं और कठिनाइयों का टिकाऊ हल नहीं है. टिकाऊ हल यह है कि हम साइन्सी खोजें करके और तजरबे करके ख़ुद अपने यहां की नसलों को बढ़ावें और सुधारें.

मिलों की बनी जितनी चीजें गाँव के धन्दों से टक्कर लेती हैं और उन्हें नुक़सान पहुँचाती हैं वह केवल तब ही तक गांव में जानी चाहियें जब तक कि गांव के उसी तरह के धन्दों में फिर से जान न पड़ जावे. उसके बाद किसी पूंजीपति को कारख़ाना खोलकर गांव के इस तरह के धन्दों को मिटाने का मौक़ा नहीं दिया जाना चाहिये. सरकारी योजना का मसौदा तैयार करने वालों ने जो अपनी नीति बताई है वह हमारी इस बात के ख़िलाफ़ है. उनकी नीति है—"आजकल के ढंग की एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था क़ायम करना जिसमें बहुत सी पूंजी से तरह तरह की चीजें तैयार की जा सकें." इस तरह की नीति से ही साम्राजवाद पैदा होता है, इससे सामाजवादी नक़्शा (सोशलिस्ट पैटर्न) तैयार नहीं हो सकता. हम में से जो लोग 'सर्वोदय' के उसूल के अनुसार मानव समाज का एक अहिंसात्मक ढांचा और आदमी आदमी की बराबरी

ٹوپاں' ہمارے تیرتھ استھان تک اِس لئے سجاکر رکھے جاتے ہیں کہ ودیشی یاتری ادھک آویں ۔ یہ بات کوئی بری بات نہیں تھی' اگر ہم پہلے اپنے لوگوں کو کافی آرام پہونچا سکے ہوتے ۔ پر ہمارے یہاں تیسرے درجے میں سفر کرنا آسام کی لنک لین جیسی بہت سی جگہوں میں ایسا ہی ہے جیسا جانوروں کا ٹرکوں میں لدکر جانا ۔ ایسی صورت میں ہمیں 'آیئرکنڈیشنڈ' گاڑیوں کی ضرورت نہیں ہے ۔ ہمارے ریل کے یاتریوں کو معمولی اِنسانوں کا سا آرام بھی نہیں ملتا ۔ ہم اُن باتوں پر اپنے سادھن کیوں ضائع کریں جن سے ودیشی یاتری یہاں ادھک کھنچیں ؟ اگر ہم ودیشی یاتریوں کو وہ سب آرام پہونچانا چاہینگے جو اُنہیں اپنے اپنے دیشوں میں حاصل ہیں تو ہمیں ودیشوں سے عیش آرام کے سامان منگالے پڑینگے' اور ودیشی یاتری بھی ہمارے یہاں کے اصولی رہن سہن کو ٹھیک ٹھیک نہ سمجھ پاوینگے ۔

ہمیں اگر گاؤں کی زندگی کو بڑھانا ہے تو گاؤں کے بازاروں میں ادھکتر گاؤں کی کھیتی کی پیداوار اور گاؤں کے اُدیوگ دھندوں کی بنی چیزیں ہی بکنی چاہئیں ۔ اِس کے لئے ضروری ہے کہ گاؤں کی ضرورت کی چیزیں ادھکتر گاؤں کے کچے مال سے گاؤں کے کاریگر ہی تیار کریں اور ملوں کے اُس مال کا جو گاؤں میں سستا بک کر گاؤں کے دھندوں کو برباد کرسکتا ہے گاؤں میں جانا بند کردیا جاوے ۔ ودیشی سانڈوں اور ودیشی مرغوں کا گاؤں میں پہونچانا کچھ دیر کے لئے لابھ دایک ہوسکتا ہے' پر یہ گاؤں والوں کی سمسیاؤں اور کٹھنائیوں کا ٹکاؤ حل نہیں ہے ۔ ٹکاؤ حل یہ ہے کہ ہم سائنسی کھوجیں کرکے اور تجربے کرکے خود اپنے یہاں کی نسلوں کو بڑھاویں اور سدھاریں ۔

ملوں کی بنی جتنی چیزیں گاؤں کے دھندوں سے ٹکر لیتی ہیں اور اُنہیں نقصان پہونچاتی ہیں وہ کیول تب ہی تک گاؤں میں جانی چاہئیں جب تک کہ گاؤں کے اُسی طرح کے دھندوں میں پھر سے جان نہ پڑ جاوے ۔ اُس کے بعد کسی پونجی پتی کو اپنا کارخانہ کھولکر گاؤں کے اِس طرح کے دھندوں کو مٹانے کا موقع نہیں دیا جانا چاہئے ۔ سرکاری یوجنا کا مسودہ تیار کرنے والوں نے جو اپنی نیتی بتائی ہے وہ ہماری اِس بات کے خلاف ہے ۔ اُن کی نیتی ہے—"آجکل کے ڈھنگ کی ایک ایسی آرتھک ویوستھا قایم کرنا جس میں بہت سی پونجی سے طرح طرح کی چیزیں تیار کی جاسکیں ۔" اِس طرح کی نیتی سے ہی سامراجواد پیدا ہوتا ہے' اِس سے سماجوادی ڈھانچہ (سوشلسٹ پیٹرن) تیار نہیں ہوسکتا ۔ ہم میں سے جو لوگ 'سرودے' کے اُصول کے انوسار مانو سماج کا ایک اہنساتمک ڈھانچہ اور آدمی آدمی کی برابری

का समाज तैयार करना चाहते हैं वह किसी तरह भी ऐसी योजना का साथ नहीं दे सकते.

हम पंचशील के जिन उसूलों का, और जिस अहिंसा और सचाई का दम भरते हैं उसके साथ भी इस योजना की यह नीति मेल नहीं खाती. हम दुनिया भर में शान्ति चाहते हैं तो अपने देश में हमें उसी आधार पर आर्थिक रचना करनी चाहिये. हमें अपने आदर्शों को ठीक ठीक तय करना चाहिये और उनके अनुसार ठीक ठीक सोचना और अमल करना चाहिये.

जो माल हमारे देश में पैदा हो वह एक खास अच्छी क़िस्म का हो (स्टैन्डर्डाइज़ेशन), माल के दर्जे भी तय हों (ग्रेडिंग), यह सब ठीक है. पर इनके साथ इश्तहारबाजी पर सरकार की रोक थाम जरूरी है, खासकर खाने पीने की चीजों और दवाओं के साथ इश्तहारों पर मुनासिब सरकारी महकमों की पूरी रोक थाम होनी चाहिये.

हमें अपनी विदेशी तिजारत की भी ध्यान के साथ छान बीन करनी चाहिये. कच्चे लोहे, कच्चे मैंगेनीज, कच्चे बाक्साइट जैसी चीजों का देश से बाहर भेजना हमें बिल्कुल बन्द कर देना चाहिये. इस तरह के कच्चे मालों का ठीक ठीक उपयोग करके हम उन बड़े बड़े धन्दों को खूब बढ़ा सकते हैं जो सरकार की तरफ़ से चलाए जावें 'जिन्हें पब्लिक सेक्टर' कहते हैं. हम अभी चाहे इसके लिये तय्यार न हों पर हमें इसे निगाह में रखना और जल्दी से जल्दी करना चाहिये. जैसा भी कोयला हमारे पास है उसे हमें अपने काम के लिये देश के अन्दर रखना चाहिये, ताकि कम से कम हमें बाहर से कोयला न मंगाना पड़े और बाहर से कोयला आना बन्द हो जाय. शुरू शुरू में इससे कुछ असुविधा हो सकती है. पर हम साइन्सी खोज से पूरा काम लें तो अपने ही कोयले से काफ़ी 'कैलरी' पैदा कर सकते हैं.

आने जाने के साधन

आने जाने और माल को लाने ले जाने के लिये हमें पानी के रास्ते बढ़ाने की तरफ़ अधिक ध्यान देना चाहिये. उत्तर, दक्खिन, पूरब और पच्छिम चारों तरफ़ जाने वाली नहरों का एक ऐसा जाल हमें पूर देना चाहिये जो देश के सब गांवों को एक दूसरे के साथ जोड़ दे. इससे आबपाशी और पैदावार भी बढ़ेगी. आने जाने का यह साधन बहुत सस्ता पड़ता है, और जब खेतों में काम नहीं रहता तो इससे लाखों को काम और रोजगार मिल जाता है.

मकान

हर कारखाने के मजदूरों के रहने के लिये मकान बनाने और मकान देने की जिम्मेदारी कारखाने के मालिकों

سماج تیار کرنا چاہتے ہیں وہ کسی طرح بھی ایسی یوجنا کا ساتھ نہیں دے سکتے ۔

ہم پنچ شیل کے جن اُصولوں کا، اور جس اہنسا اور سچائی کا دم بھرتے ہیں اُس کے ساتھ بھی اِس یوجنا کی یہ نیتی میل نہیں کھاتی ۔ ہم دنیا بھر میں شانتی چاہتے ہیں تو اپنے دیش میں ہمیں اُسی آدھار پر آرتھک رچنا کرنی چاہئے ۔ ہمیں اپنے آدرشوں کو ٹھیک ٹھیک طے کرنا چاہئے اور اُن کے انوسار ٹھیک ٹھیک سوچنا اور عمل کرنا چاہئے ۔

جو مال ہمارے دیش میں پیدا ہو وہ ایک خاص اچھی قسم کا ہو (اِسٹینڈرڈائیزیشن)، مال کے درجے بھی طے ہوں (گریڈنگ)، یہ سب ٹھیک ہے ۔ پر اِن کے ساتھ اشتہاربازی پر بھی سرکار کی روک تھام ضروری ہے، خاصکر کھانے پینے کی چیزوں اور دواؤں کے سب اشتہاروں پر مناسب سرکاری محکموں کی پوری روک تھام ہونی چاہئے ۔

ہمیں اپنی ودیشی تجارت کی بھی دھیان کے ساتھ چھان بین کرنی چاہئے ۔ کچے لوہے، کچے مینگنیز، کچے باکسائٹ جیسی چیزوں کا دیش سے باہر بھیجنا ہمیں بالکل بند کر دینا چاہئے ۔ اِس طرح کے کچے مالوں کا ٹھیک ٹھیک اُپیوگ کر کے ہم اُن بڑے بڑے دھندوں کو خوب بڑھا سکتے ہیں جو سرکار کی طرف سے چلائے جاویں، جنھیں 'پبلک سیکٹر' کہتے ہیں ۔ ہم ابھی چاہے اِس کے لئے تیار نہ ہوں پر ہمیں اِسے نگاہ میں رکھنا اور جلدی سے جلدی کرنا چاہئے ۔ جیسا بھی کوئلہ ہمارے پاس ہے اُسے ہمیں اپنے کام کے لئے دیش کے اندر رکھنا چاہئے، تاکہ کم سے کم ہمیں باہر سے کوئلہ نہ منگانا پڑے اور باہر سے کوئلہ آنا بند ہو جائے ۔ شروع شروع میں اِس سے کچھ اسویدھا ہو سکتی ہے ۔ پر ہم سائنسی کھوج سے پورا کام لیں تو اپنے ہی کوئلے سے کافی 'کیلری' پیدا کر سکتے ہیں ۔

آنے جانے کے سادھن

آنے جانے اور مال کو لانے لے جانے کے لئے ہمیں پانی کے راستے بڑھانے کی طرف ادھک دھیان دینا چاہئے ۔ اُتر، دکھن، پورب اور پچھم چاروں طرف جانے والی نہروں کا ایک ایسا جال ہمیں پور دینا چاہئے جو دیش کے سب گاؤں کو ایک دوسرے کے ساتھ جوڑ دے ۔ اِس سے آبپاشی اور پیداوار بھی بڑھیگی ۔ آنے جانے کا یہ سادھن بہت سستا پڑتا ہے، اور جب کھیتوں میں کام نہیں رہتا تو اِس سے لاکھوں کو کام اور روزگار مل جاتا ہے ۔

مکان

ہر کارخانے کے مزدوروں کے رہنے کے لئے مکان بنانے اور مکان دینے کی ذمہ‌داری کارخانے کے مالکوں

[खर्च] होनी चाहिये, चाहे मालिक सरकार हो और चाहे कोई पूँजीपति हो. मजदूरों और उनके बाल बच्चों की तन्दुरुस्ती, उनकी तालीम और उनकी बहबूदी का सब खर्च उसी उद्योग या उसी कारखाने पर पड़ना चाहिये. जो मजदूर किसी कारखाने में काम करता है उसे पूरा हक़ है कि उसकी और उसके बाल बच्चों की जरूरतों और उनकी हिफ़ाजत का उस से काम लेने वाले पूरा पूरा प्रबन्ध करें.

तालीम

चौदह साल की उमर तक बुनियादी तालीम की जिम्मेवारी सरकार को अपने ऊपर लेनी चाहिये. यूनिवर्सिटी की तालीम के लिये भी सब को सब सुविधाएं सरकार से मिलनी चाहियें. अलग अलग पेशों की तालीम और तकनीकी ढंग की तालीम का प्रबन्ध लोगों को सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा या निजी ढंग से करना चाहिये.

भोजन

खेती के काम को इस तरह बढ़ाना चाहिये कि उससे गांव वालों को जितना चाहिये उतना, उचित और शक्ति देने वाला भोजन मिल सके. गांव के लोगों में जिस कमी, कमजोरी और अयोग्यता की हम शिकायत करते हैं उस सब का एक बहुत बड़ा कारण यह होता है कि बचपन में उन्हें ठीक तरह का और पेट भर भोजन नहीं मिल पाता. उसी से वह हमेशा के लिये कमजोर रह जाते हैं. इसलिये दूध, अंडे, फल, सब्जी, मछली जैसी चीजें जितनी हम अधिक पैदा करें उस पर सब से पहला हक़ गांव के बच्चों का होना चाहिये, उसके बाद यह चीजें शहर के बच्चों को मिलनी चाहियें. शहरों की जरूरत के लिये दूध मामूली तौर पर गांव से नहीं आना चाहिये. गांव का दूध गांव के बच्चों के लिये रहना चाहिये, और शहरों के लिये शहर वालों के धन से अलग गोशालाएं और डेयरियां होनी चाहियें जहां से शहर वालों को दूध मिले. इससे गांव के बच्चों का दूध उनसे छिनकर शहर नहीं आवेगा. आम तौर पर गांव के लोगों की ग़रीबी उन्हें मजबूर कर देती है कि वह अपने बच्चों की जरूरत का दूध टकों के बदले में शहर वालों के हाथ लाकर बेच डालें. उनकी यह ग़रीबी दूर होनी चाहिये.

संगठन और व्यवस्था

करवे कमेटी ने यह सुझाया था कि गांव के उद्योग धन्धों को बढ़ाने के लिये एक अलग मिनिस्ट्री होनी चाहिये जो इसी काम को देखे. हमारे लाखों गांव और करोड़ों गांववालों की माली हालत को बेहतर बनाने के लिये यह बड़े महत्त्व का और जरूरी सुझाव था. अपनी "योजनाओं" में हमने इस जरूरी काम की तरफ़ से

ہونی چاہئے چاہے مالک سرکار ہو اور چاہے کوئی پونجی ہو. مزدوروں اور اُن کے بال بچوں کی تندرستی، اُن کی ...م اور اُن کی بہبودی کا سب خرچ اُسی اُدیوگ یا اُسی ...الے پر پڑنا چاہئے. جو مزدور کسی کارخانے میں کام کرتا ...سے پورا حق ہے کہ اُس کی اور اُس کے بال بچوں کی ...توں اور اُن کی حفاظت کا اُس سے کام لینے والے پورا پورا ...ھ کریں.

چودہ سال کی عمر تک بنیادی تعلیم کی ذمہ واری سرکار کو اُوپر لینی چاہئے. یونیورسٹی کی تعلیم کے لئے بھی سب کو ... سویدھائیں سرکار سے ملنی چاہئیں. الگ الگ پیشوں ... تعلیم اور تکنیکی ڈھنگ کی تعلیم کا پربندھ لوگوں کو ...جنک سنستھاؤں دوارا یا نجی ڈھنگ سے کرنا چاہئے.

...ن

کھیتی کے کام کو اِس طرح بڑھانا چاہئے کہ اُس سے گاؤں ... کو جتنا چاہئے اُتنا، اُچت اور شکتی دینے والا بھوجن مل ... گاؤں کے لوگوں میں جس کمی، کمزوری اور ایوگیتا کی شکایت کرتے ہیں اُس سب کا ایک بہت بڑا کارن یہ ہوتا ...ہ بچپن میں اُنہیں ٹھیک طرح کا اور پیٹ بھر بھوجن ... مل پاتا. اُسی سے وہ ہمیشہ کے لئے کمزور رہ جاتے ہیں. ... لئے دودھ، انڈے، پھل، سبزی، مچھلی جیسی چیزیں ... ہم ادھک پیدا کریں اُس پر سب سے پہلا حق گاؤں کے ...ں کا ہونا چاہئے، اُس کے بعد یہ چیزیں شہر کے بچوں کو ... چاہئیں. شہروں کی ضرورت کے لئے دودھ معمولی طور پر ...سے نہیں آنا چاہئے. گاؤں کا دودھ گاؤں کے بچوں کے لئے ...چاہئے، اور شہروں کے لئے شہروالوں کے دھن سے الگ گوشالائیں ...ڈیریاں ہونی چاہئیں جہاں سے شہر والوں کو دودھ ملے. ...سے گاؤں کے بچوں کا دودھ اُن سے چھن کر شہر نہیں آویگا. ...طور پر گاؤں کے لوگوں کی غریبی اُنہیں مجبور کر دیتی ہے ...وہ اپنے بچوں کی ضرورت کا دودھ ٹکوں کے بدلے میں شہر ...ں کے ہاتھ لاکر بیچ ڈالیں. اُن کی یہ غریبی دور ہونی ...ئے.

...ن اور ویوستھا

...کروے کمیٹی نے یہ سجھایا تھا کہ گاؤں کے اُدیوگ دھندوں ...ڑھانے کے لئے ایک الگ منسٹری ہونی چاہئے جو اِسی کام ...یکھے. ہمارے لاکھوں گاؤں اور کروڑوں گاؤں والوں کی مالی ...ت کو بہتر بنانے کے لئے یہ بڑے مہتو کا اور ضروری سجھاؤ ... اپنی "یوجناؤں" میں ہم نے اِس ضروری کام کی طرف سے

बेपरवाही की है. अब आखीर में आकर सहकार नाओं (कम्युनिटी डिवेलपमेन्ट) और राष्ट्रीय फैलाव नल एक्सटेन्शन) के रूप में, विदेशी एजेन्टों की मदद के सहारे कुछ अधूरी और रुकती रुकती कोशिशें देश के सामने रखी जा रही हैं. इस तरह की कोशिशें अधिकतर खास खास चुने हुए इलाक़ों या केन्द्रों में की जा रही हैं. इन कोशिशों और योजनाओं से समय की ज़रूरत पूरी नहीं हो सकती. एक तो सीखे हुए काम करने वालों की कमी है और दूसरे धन की भी बेहद कमी रहती है. इस काम में अगर खेती को और खेती से और गांव से सम्बन्ध रखने वाले सब उद्योग धन्धों को बढ़ाने और तरक़्क़ी देने का पूरा पूरा ख़याल रखा जावे और इतने बड़े काम के लिये काफ़ी धन लगाया जाय और काम करने वालों को ठीक ठीक अधिकार मिले हुए हों तो कुछ ठीक काम हो सकता है.

एक योजना मिनिस्ट्री हमारे यहां मौजूद है. उसके साथ एक अलग डिपटी मिनिस्टर होना चाहिये जो सब पहलुओं को ध्यान में रखकर इस काम को पूरा करे. उस डिपटी मिनिस्टर को पूरा अधिकार होना चाहिये कि जिन जिन सरकारी महकमों का इस काम से वास्ता पड़ता है उन सब के इस तरह के कामों को मिलाकर ठीक तरह चला सके. समाज सेवकों का उस तरह का काम जैसा सरकारी मसौदे में बताया गया है केवल ऊपर से लीपा पोती और धोखा है. हमें करना यह है कि गांव वालों की माली हालत को पूरी तरह मज़बूत बना दें. यह काम अधसिखे समाज सेवक नहीं कर सकते. यह पूरी ज़िम्मेवारी का काम है. सरकार को अपना पूरा ज़ोर इस काम में लगाना चाहिये.

بیدا پرواھی کی ھے . اب آخیر میں آکر سہکار یوجناؤں (کمیونٹی ڈیولپمینٹ) اور راشٹریہ پھیلاؤ (نیشنل ایکسٹینشن) کے روپ میں' ودیشی ایجنٹوں کی مدد کے سہارے' کچھ ادھوری اور رکتی رکتی کوششیں دیش کے سامنے رکھی جا رھی ھیں . اِس طرح کی کوششیں ادھکتر خاص خاص چنے ھوئے علاقوں یا کیندروں میں کی جا رھی ھیں . اِن کوششوں اور یوجناؤں سے سمے کی ضرورت پوری نہیں ھو سکتی . ایک تو سیکھے ھوئے کام کرنے والوں کی کمی ھے اور دوسرے دھن کی بھی بیحد کمی رھتی ھے . اِس کام میں اگر کھیتی کو اور کھیتی سے اور گاؤں سے سمبندھ رکھنے والے سب اُدیوگ دھندوں کو بڑھانے اور ترقی کا پورا پورا خیال رکھا جاوے اور اِتنے بڑے کام کے لئے کافی دھن لگایا جائے اور کام کرنے والوں کو ٹھیک ٹھیک ادھیکار ھوئے ملے ھوں تو کچھ ٹھیک کام ھو سکتا ھے .

ایک یوجنا منسٹری ھمارے یہاں موجود ھے . اُس کے ساتھ ایک الگ ڈپٹی منسٹر ھونا چاھئے جو سب پہلوؤں کو دھیان میں رکھ کر اِس کام کو پورا کرے . اِس ڈپٹی منسٹر کو پورا ادھیکار ھونا چاھئے کہ جن جن سرکاری محکموں کا اِس کام سے واسطہ پڑتا ھے اُن سب کے اِس طرح کے کاموں کو ملا کر ٹھیک طرح چلا سکے . سماج سیوکوں کا اِس طرح کا کام جیسا سرکاری مسودے میں بتایا گیا ھے کیول اُوپر سے لیپا پوتی اور دھوکا ھے . ھمیں کرنا یہ ھے کہ گاؤں والوں کی مالی حالت کو پوری طرح مضبوط بنا دیں . یہ کام ادھ سکھے سماج سیوک نہیں کر سکتے . یہ پوری ذمہ واری کا کام ھے . سرکار کو اپنا پورا زور اِس کام میں لگانا چاھئے .

शान्ति का बजट और जंग का बजट

इस समय दुनिया में दो तरह की कोशिशें साथ साथ चल रही हैं. एक तरफ़ कुछ लोग दुनिया को जंग से बचाने, एक दूसरे पर विश्वास बढ़ाने और दुनिया के साधनों को करोड़ों जनता की भलाई के कामों में लगाने की कोशिशों में हैं. दूसरी तरफ़ कुछ लोग बार बार औरों को जंग की धमकी देने, अविश्वास और नफ़रतों को बढ़ाने और जंग की तैयारियों में अरबों ख़र्च करने में लगे हैं. सोवियत रूस में और अमरीका में सन् 1956–57 के जो नए सालाना बजट तैयार हुए हैं उन से यह बात अच्छी तरह चमक उठती है कि कौन किस कोशिश में है.

सोवियत रूस में जो नए साल का बजट बना है उसे उस देश में "शान्तिमय तामीरी बजट" कहा जा रहा है और बहुत से दूसरे देशों के लोग भी उसे ऐसा ही समझते हैं. बजट में अगले साल का कुल ख़र्च 56,960 करोड़ रूबुल रखा गया है. एक रूबुल मोटे तौर पर एक रुपये के बराबर होता है. इस कुल रक़म में से 10,250 करोड़ रूबुल यानी कुल बजट का अठारह फ़ीसदी से कुछ कम फ़ौज और हथियारों पर ख़र्च होगा. पिछले साल रूस में फ़ौज के ऊपर जो ख़र्च हुआ था अगले साल उस से 1,000 करोड़ रूबुल कम ख़र्च किया जायगा. बजट की बाक़ी रक़म ऐसे तामीरी कामों में ख़र्च की जायगी जिन से जनता का सुख और उनकी ख़ुशहाली बढ़े इसमें लोगों की समाजी और कलचरी ज़रूरतों का ख़ास ख़याल रखा गया है. खेती की तरक़्क़ी पर माल को लाने लेजाने की अधिक सुविधाओं पर, उद्योग धन्दों पर, नए मकानों पर और रोशनी के अधिक प्रबन्ध पर 23,730 करोड़ ख़र्च किया जावेगा. इसके अलावा 10,970 करोड़ नई आर्थिक योजनाओं में लगाया जावेगा. तालीम पर, साइंस के तजरबों पर, पुस्तकालयों, किताबों, अख़बारों, कसरतघरों, जनता की तन्दुरुस्ती के दूसरे कामों और बूढ़े और अपाहिज लोगों की पेनशनों पर साल में 16,150 करोड़ ख़र्च होगा.

شانتی کا بجٹ اور جنگ کا بجٹ

اِس سمے دنیا میں دو طرح کی کوششیں ساتھ ساتھ چل رہی ہیں ۔ ایک طرف کچھ لوگ دنیا کو جنگ سے بچانے، ایک دوسرے پر وشواس بڑھانے اور دنیا کے سادھنوں کو کروڑوں جنتا کی بھلائی کے کاموں میں لگانے کی کوششوں میں ہیں ۔ دوسری طرف کچھ لوگ بار بار اوروں کو جنگ کی دھمکی دینے، اوشواس اور نفرتوں کو بڑھانے اور جنگ کی تیاریوں میں اربوں کھربوں خرچ کرنے میں لگے ہیں، سوویت روس میں اور امریکہ میں سن 1956-57 کے جو نئے سالانہ بجٹ تیار ہوئے ہیں اُن سے یہ بات اچھی طرح چمک اُٹھتی ہے کہ کون کس کوشش میں ہے ۔

سوویت روس میں جو نئے سال کا بجٹ بنا ہے اُسے اُس دیش میں "شانتی مے تعمیری بجٹ" کہا جا رہا ہے اور بہت سے دوسرے دیشوں کے لوگ بھی اُسے ایسا ہی سمجھتے ہیں ۔ بجٹ میں اگلے سال کا کل خرچ 56,960 کروڑ روبل رکھا گیا ہے ۔ ایک روبل موٹے طور پر ایک روپئے کے برابر ہوتا ہے ۔ اِس کل رقم میں سے 10,250 کروڑ روبل یعنی کل بجٹ کا اٹھارہ فیصدی سے کچھ کم فوج اور ہتیاروں پر خرچ ہوگا ۔ پچھلے سال روس میں فوج کے اوپر جو خرچ ہوا تھا اگلے سال اُس سے 1,000 کروڑ روبل کم خرچ کیا جائیگا ۔ بجٹ کی باقی رقم ایسے تعمیری کاموں میں خرچ کی جائیگی جن سے جنتا کا سکھ اور اُن کی خوشحالی بڑھے ۔ اِس میں لوگوں کی سماجی اور کلچری ضرورتوں کا خاص خیال رکھا گیا ہے۔ کھیتی کی ترقی پر مال کو لانے لیجانے کی ادھک سوویدھاؤں پر، اُدیوگ دھندوں پر، نئے مکانوں پر اور روشنی کے ادھک پربندھ پر 23,730 کروڑ خرچ کیا جاویگا ۔ اِس کے علاوہ 10,970 کروڑ نئی آرتھک یوجناؤں میں لگایا جاویگا ۔ تعلیم پر، سائنس کے تجربوں پر، پستکالیوں، کتابوں، اخباروں، کسرت گھروں، جنتا کی تندرستی کے دوسرے کاموں اور بوڑھے اور اشکت لوگوں کی پینشنوں پر سال میں 16,150 کروڑ خرچ ہوگا ۔

सन् 1955-56 के मुक़ाबले में अगले साल देश की आर्थिक उन्नति पर 2,000 करोड़ और शिक्षा और कल्चर के कामों पर 1,490 करोड़ अधिक ख़र्च किया जावेगा. फ़ौज के ख़र्च से जो 1,000 करोड़ रूबल बचाया गया है वह सब जनता के भले के इन्हीं कामों में ख़र्च होगा.

फ़ौजी ख़र्च को घटाने और तामीरी कामों के ख़र्च को बढ़ाने से सोवियत रूस का रुख़ साफ़ दिखाई देता है. पिछले साल के मुक़ाबले में सोवियत रूस ने अपनी फ़ौज में भी 6,40,000 आदमी कम कर दिये हैं. यह सब मानव शक्ति उस ओर से हटाकर तामीरी कामों में लगा दी गई है. इससे पहले अपने देश से बाहर रूस का केवल एक फ़ौजी अड्डा था और वह फ़िनलैन्ड के पास पोर्क कलाउद नाम का जल सेना का अड्डा था. सोवियत रूस ने अब अपना सब कारबार वहां से उठा लिया और वह जगह फ़िनलैन्ड को वापिस दे दी.

दूसरी तरफ़ अब हम 1956-57 के अमरीकी बजट पर एक सरसरी नज़र डालें. प्रेज़ीडेन्ट आइज़नहावर ने अमरीकी कांग्रेस के सामने अपने इस बजट को ख़ुद "ठंडी जंग और हथियारों की दौड़ का बजट" कहा है. दुनिया के दूसरे लोग भी इस बजट का इसी तरह देखते हैं. कुल साल का ख़र्च 6,590 करोड़ डालर रखा गया है. एक डालर बराबर लगभग चार रुपये के है. इसमें से 4,240 करोड़ यानी कुल बजट के चौंसठ फ़ीसदी से कुछ ज़ियादा हथियारों और फ़ौज पर ख़र्च किया जावेगा. फ़ौजी ख़र्च कम करने के बजाय पिछले साल के मुक़ाबले में 100 करोड़ डालर बढ़ा दिया गया हैं.

प्रेज़ीडेन्ट आइज़नहावर ने अपने भाषण में कहा है कि अगले साल अमरीकी फ़ौज की तादाद बढ़ाई जायगी और ऐटम बम और हाइड्रोजिन बम जैसे हथियारों की तैयारी पर और ज़्यादा रक़म ख़र्च की जायगी. अमरीकी फ़ौज में फ़िलहाल 24,000 आदमी बढ़ाए जायंगे जिससे अमरीकी फ़ौज की संख्या 28,38,000 तक पहुँच जायगी. 630 करोड़ डालर इस तरह के नए हवाई जहाज़ों के बनाने पर ख़र्च किये जावेंगे जो आजकल के हवाई जहाज़ों के मुक़ाबले में अधिक भारी भारी बम लेकर चल सकें. 430 करोड़ डालर दक्खिन कोरिया, पाकिस्तान और टरकी जैसे देशों और च्यांग काई शेक जैसे लोगों को हथियारों की मदद देने पर ख़र्च किये जावेंगे. यह रक़म भी पिछले साल की इसी तरह की रक़म से 10 करोड़ डालर अधिक है.

इस बजट से अमरीकी सरकार की नीयत और उसकी विदेशी नीति का साफ़ पता चलता है. हथियारों और फ़ौज

سن 1955-56 کے مقابلے میں اگلے سال دیش کی آرتھک اُنتی پر 2,000 کروڑ اور شکشا اور کلچر کے کاموں پر 1,490 کروڑ ادھک خرچ کیا جاویگا . فوج کے خرچ سے جو 1,000 کروڑ روبل بچایا گیا ہے وہ سب جنتا کے بھلے کے اِنھیں کاموں میں خرچ ہوگا .

فوجی خرچ کو گھٹانے اور تعمیری کاموں کے خرچ کو بڑھانے سے سوویت روس کا رخ صاف دکھائی دیتا ہے . پچھلے سال کے مقابلے میں سوویت روس نے اپنی فوج میں بھی 6,40,000 آدمی کم کردیئے ہیں . یہ سب مانو شکتی اُس اور سے ہٹاکر تعمیری کاموں میں لگادی گئی ہے . اِس سے پہلے اپنے دیش سے باہر روس کا کیول ایک فوجی اڈا تھا اور وہ فنلینڈ کے پاس پورک کلاود نام کا جل سینا کا اڈا تھا . سوویت روس نے اب اپنا سب کاربار وہاں سے اُٹھا لیا اور وہ جگہ فنلینڈ کو واپس دیدی .

دوسری طرف اب ہم 1956 - 57 کے امریکی بجٹ پر ایک سرسری نظر ڈالیں . پریزیڈینٹ آئزن ہاور نے امریکی کانگریس کے سامنے اپنے اِس بجٹ کو خود "ٹھنڈی جنگ اور ہتھیاروں کی دوڑ کا بجٹ" کہا ہے . دنیا کے دوسرے لوگ بھی اِس بجٹ کو اِسی طرح دیکھتے ہیں . کل سال کا خرچ 6,590 کروڑ ڈالر رکھا گیا ہے . ایک ڈالر برابر لگ بھگ چار روپئے کے ہے . اِس میں سے 4,240 کروڑ یعنی کل بجٹ کے چونسٹھ فیصدی سے کچھ زیادہ ہتھیاروں اور فوج پر خرچ کیا جاویگا . فوجی خرچ کم کرنے کے بجائے پچھلے سال کے مقابلے میں 100 کروڑ ڈالر بڑھا دیا گیا ہے .

پریزیڈینٹ آئزن ہاور نے اپنے بھاشن میں کہا ہے کہ اگلے سال امریکی فوج کی تعداد بڑھائی جائیگی اور ایٹم بم اور ہائڈروجن بم جیسے ہتھیاروں کی تیاری پر اور زیادہ رقم خرچ کی جائیگی . امریکی فوج میں فی الحال 24000 آدمی بڑھائے جائینگے جس سے امریکی فوج کی سنکھیا 28,38,000 تک پہنچ جائیگی . 630 کروڑ ڈالر اِس طرح کے نئے ہوائی جہازوں کے بنانے پر خرچ کئے جاوینگے جو آجکل کے ہوائی جہازوں کے مقابلے میں ادھک بھاری بھاری بم لیکر چل سکیں . 430 کروڑ دکھنی کوریا، پاکستان اور ٹرکی جیسے دیشوں اور چیانگ کی شیک جیسے لوگوں کو ہتھیاروں کی مدد دینے پر خرچ کئے جاوینگے . یہ رقم بھی پچھلے سال کی اِسی طرح کی رقم سے 10 کروڑ ڈالر ادھک ہے .

اِس بجٹ سے امریکی سرکار کی نیت اور اس کی بدیشی نیتی کا صاف پتہ چلتا ہے . ہتھیاروں اور فوج

पर इस बढ़े हुए ख़र्च को पूरा करने के लिये एक तरफ़ तालीम, कलचर वग़ैरा के ख़र्च कम किये गए हैं और दूसरी तरफ़ अमरीकी जनता पर टैक्सों का बोझ बढ़ा दिया गया है. लोगों की तन्दुरुस्ती, आम तालीम और उन सामाजिक कामों पर जिनका आम जनता से ख़ास सम्बन्ध है कुल बजट का चार फ़ीसदी से कम ख़र्च किया जायगा. किसानों को जो तरह तरह की मदद इस साल दी जाती थी उसमें 25 करोड़ डालर कम कर दिये गए हैं. शख़्सी इनकम टैक्स 150 करोड़ डालर बढ़ा दिया गया है. इनकम टेक्स की कुल आमदनी अब वहां साल में 3,500 करोड़ डालर होगी.

दोनों देशों के बजट की यह कुछ मोटी मोटी बातें हैं. इनसे ज़ाहिर है कि जहां तक दुनिया के अमन का सम्बन्ध है दोनों देशों की निगाहें दो तरफ़ हैं. रूस जहां तक बन पड़े दुनिया को जंग से बचाना चाहता है, देशों देशों के बीच शान्ति चाहता है और अपने यहां की आम जनता को अधिक सुखी और अधिक ख़ुशहाल बनाने में अपनी सारी शक्ति ख़र्च करना चाहता है. दूसरी तरफ़ अमरीका की आजकल की सरकार अपनी फ़ौजी शक्ति को अधिक से अधिक बढ़ाकर, दूसरे देशों में तोड़ फोड़ करके, कुछ को धन और हथियारों का लालच देकर और कुछ को जंग की धमकी देकर, और अगर ज़रूरत पड़े और मौक़ा मिल सके तो एक को दूसरे से लड़ाकर अपने असर और अपनी धाक को बढ़ाना चाहती है. पहला रास्ता दुनिया भर के लिये अमन और सलामती का रास्ता है. दूसरा रास्ता दुनिया के लिये जंग और बरबादी का रास्ता है.

—सुन्दरलाल

پر اِس بڑھے ہوئے خرچ کو پورا کرنے کے لئے ایک طرف تعلیم' کلچر وغیرہ کے خرچ کم کئے گئے ھیں اور دوسری طرف امریکی جنتا پر ٹیکسوں کا بوجھ بڑھا دیا گیا ھے. لوگوں کی تندرستی' عام تعلیم اور اُن سماجک کاموں پر جنکا عام جنتا سے خاص سمبندھ ھے کل بجٹ کا چار فیصدی سے کم خرچ کیا جائیگا. کسانوں کو جو طرح طرح کی مدد اِس سال دی جاتی تھی اُس میں 25 کروڑ ڈالر کم کر دیئے گئے ھیں . شخصی اِنکم ٹیکس 150 کروڑ ڈالر بڑھا دیا گیا ھے . اِنکم ٹیکس کی کل آمدنی اب وھاں سال میں 3,500 کروڑ ڈالر ھوگی .

دونوں دیشوں کے بجٹ کی یہ کچھ موٹی موٹی باتیں ھیں . اِن سے ظاھر ھے کہ جہاں تک دنیا کے امن کا سمبندھ ھے دونوں دیشوں کی نگاھیں دو طرف ھیں . روس جہاں تک بن پڑے دنیا کو جنگ سے بچانا چاھتا ھے' دونوں دیشوں کے بیچ شانتی چاھتا ھے اور اپنے یہاں کی عام جنتا کو ادھک سکھی اور ادھک خوشحال بنانے میں اپنی ساری شکتی خرچ کرنا چاھتا ھے . دوسری طرف امریکہ کی آجکل کی سرکار اپنی فوجی شکتی کو ادھک سے ادھک بڑھا کر' دوسرے دیشوں میں توڑ پھوڑ کر کے' کچھ کو دھن اور ھتیاروں کا لالچ دیکر اور کچھ کو جنگ کی دھمکی دیکر' اور اگر ضرورت پڑے اور موقع مل سکے تو ایک کو دوسرے سے لڑا کر اپنے اثر اور اپنی دھاک کو بڑھانا چاھتی ھے . پہلا راستہ دنیا بھر کے لئے امن اور سلامتی کا راستہ ھے . دوسرا راستہ دنیا کے لئے جنگ اور بربادی کا راستہ ھے .

—سندر لال

आइज़नहावर के नाम बुलगानिन का पत्र

23 जनवरी सन् 1956 को सोवियत रूस के प्रधान मंत्री बुलगानिन ने अमरीका के प्रेज़ीडेन्ट आइज़नहावर को एक ख़त लिखा जिसमें उन्होंने अमरीका के प्रेज़ीडेन्ट को सुझाया कि कम से कम बीस बरस के लिये अमरीका और रूस की सरकारों में दोस्ती और मिलके काम करने का समझौता हो जाय ताकि एक दूसरे पर विश्वास पैदा हो, आगे को मेल मिलाप की राहें खुलें और विश्व शान्ति की नीवें पक्की हो सकें.

इस सुन्दर और लम्बे पत्र में प्रधान मंत्री बुलगानिन ने दिखाया है कि दुनिया के अमन को क़ायम रखने की सब से बड़ी ज़िम्मेदारी इस समय अमरीका और रूस पर है. और अगर यह दोनों आपस में अमन से रहने का फ़ैसला कर लें तो सारी दुनिया जंग के ख़तरे से बच सकती है.

آئزن ھاور کے نام بلگانن کا پتر

23 جنوری سن 1956 کو سوویت روس کے پردھان منتری بلگانن نے امریکہ کے پریزیڈنٹ آئزن ھاور کو ایک خط لکھا جس میں اِنھوں نے امریکہ کے پریزیڈنٹ کو سجھایا کہ کم سے کم بیس برس کے لئے امریکہ اور روس کی سرکاروں میں دوستی اور مل کے کام کرنے کا سمجھوتہ ھوجائے تاکہ ایک دوسرے پر وشواس پیدا ھو' آگے کو میل ملاپ کی راھیں کھلیں اور وشوشانتی کی نیویں پکی ھوسکیں .

اِس سندر اور لمبے پتر میں پردھان منتری بلگانن نے دکھایا ھے کہ دنیا کے امن کو قایم رکھنے کی سب سے بڑی ذمہ واری اِس سمے امریکہ اور روس پر ھے . اور اگر یہ دونوں آپس میں امن سے رھنے کا فیصلہ کرلیں تو ساری دنیا جنگ کے خطرے سے بچ سکتی ھے .

उन्होंने कहा है कि इससे पहले भी अमरीका और रूस मिलकर काम कर चुके हैं. वैसे ही अब भी अगर वह एक दूसरे को समझ लेने की कोशिश करें और एक दूसरे की आजादी की इज्जत करें तो दुनिया जंग के खतरे से बच सकती है.

उन्होंने दिखाया है कि अमरीका और रूस में कोई खास झगड़ा नहीं है, न कहीं दोनों की सरहदें मिलती हैं और न किसी इलाके को अमरीका अपना और रूस अपना कहता है.

इस खत में श्री बुलगानिन ने प्रेसीडेन्ट आइजनहावर को उनके जनीवा के यह शब्द याद दिलाए हैं:—"अमरीका के लोग सोवियत रूस के लोगों के साथ दोस्ती करना चाहते हैं. दोनों देशों के लोगों में कोई कुदरती फरक नहीं है, न किसी इलाके का झगड़ा है, न कोई तिजारती लाग डाट है. पिछले इतिहास में हमारे देशों के लोग हमेशा एक दूसरे के साथ अमन से रहे हैं."

श्री बुलगानिन ने याद दिलाया है कि पिछले दोनों महायुद्धों में अमरीका और रूस एक दूसरे के साथी रहे हैं और मिलकर जरमनी से लड़े हैं. उन जंगों में अमरीका के नौजवानों और रूस के नौजवानों का खून दुनिया की आजादी की रक्षा के लिये एक ही मैदानों में साथ साथ बहा है.

उन्होंने इस बात पर दुख प्रगट किया है कि दूसरी जंग के बाद दोनों देशों में खामखाह तनाव पैदा हो गया जिस से दोनों को नुकसान है और सारी दुनिया का अमन खतरे में है.

उन्होंने यह भी दिखलाया है कि अमरीका और रूस में अलग अलग तरह की राजकाजी, माली और समाजी व्यवस्था होने के कारण कोई वजह नहीं कि दोनों मिलकर प्रेम से न रह सकें और आपस में इस तरह के तिजारती और कलचरी सम्बन्ध न रख सकें जिन से दोनों को लाभ हो.

उन्होंने स्वीकार किया है कि हथियार बन्दी के सवाल पर, जरमनी के सवाल पर और पूर्वी एशिया के सवालों पर दोनों देशों की रायों में फरक भी है. पर यदि एक बार अमरीका और रूस में सुलह से रहने का समझौता हो जाय तो सब सवालों के हल की राहें खुल सकती हैं. अगर इन दोनों में इस तरह का समझौता न हुआ तो दोनों के लिये और दुनिया के लिये खतरा भी जबरदस्त है. श्री बुलगानिन ने यहां पर एटम बम और हाइड्रोजन बम से दुनिया को जो खतरा है उसे दरसाया है और लिखा है कि आज हर देश का यह फर्ज है कि अमन की ताकतों को मजबूत

انہوں نے کہا ہے کہ اِس سے پہلے بھی امریکہ اور روس ملکر
کرچکے ھیں ۔ ویسے ھی اب بھی اگر وہ ایک دوسرے کو
سمجھ لینے کی کوشش کریں اور ایک دوسرے کی آزادی کی
عزت کریں تو دنیا جنگ کے خطرے سے بچ سکتی ھے ۔

انہوں نے دکھایا ھے کہ امریکہ اور روس میں کوئی خاص
جھگڑا نہیں ھے' نہ کہیں دونوں کی سرحدیں ملتی ھیں اور نہ
کسی علاقے کو امریکہ اپنا اور روس اپنا کہتا ھے ۔

اِس خط میں شری بلگانن نے پریزیڈنٹ آئزن ھاور کو
ان کے جنیوا کے یہ شبد یاد دلائے ھیں :—"امریکہ کے لوگ
سوویت روس کے لوگوں کے ساتھ دوستی کرنا چاھتے ھیں ۔
دونوں دیشوں کے لوگوں میں کوئی قدرتی فرق نہیں ھے' نہ
کسی علاقے کا جھگڑا ھے' نہ کوئی تجارتی لاگ ڈانٹ ھے ۔ پچھلے
اتہاس میں ھمارے دونوں دیشوں کے لوگ ھمیشہ ایک دوسرے
کے ساتھ امن سے رھے ھیں ۔"

شری بلگانن نے یاد دلایا ھے کہ پچھلے دونوں مہایدھوں
میں امریکہ اور روس ایک دوسرے کے ساتھی رھے ھیں اور ملکر
جرمنی سے لڑے ھیں ۔ اُن جنگوں میں امریکہ کے نوجوانوں
اور روس کے نوجوانوں کا خون دنیا کی آزادی کی رکشا کے لئے
ایک ھی میدانوں میں ساتھ ساتھ بہا ھے ۔

انہوں نے اِس بات پر دکھ پرگٹ کیا ھے کہ دوسری جنگ
کے بعد دونوں دیشوں میں خواہ مخواہ تناؤ پیدا ھوگیا جس
سے دونوں کو نقصان ھے اور ساری دنیا کا امن خطرے میں ھے ۔

انہوں نے یہ بھی دکھلایا ھے کہ امریکہ اور روس میں الگ
الگ طرح طرح کی راجکاجی' مالی اور سماجی ویوستھا ھونے
کے کارن کوئی وجہ نہیں کہ دونوں ملکر پریم سے نہ رہ سکیں
اور آپس میں اِس طرح کے تجارتی اور کلچری سمبندھ نہ
رکھ سکیں جن سے دونوں کو لابھ ھو ۔

انہوں نے سوئیکار کیا ھے کہ ھتھیار بندی کے سوال پر' جرمنی
کے سوال پر اور پوربی ایشیا کے سوالوں پر دونوں دیشوں کی
رایوں میں فرق بھی ھے ۔ پر یدی ایک بار امریکہ اور روس
میں صلح سے رھنے کا سمجھوتہ ھو جائے تو سب سوالوں کے حل
کی راھیں کھل سکتی ھیں۔ اگر اِن دونوں میں اِس طرح کا سمجھوتہ
نہ ھوا تو دونوں کے لئے اور دنیا کے لئے خطرہ بھی زبردست
ھے ۔ شری بلگانن نے یہاں پر ایٹم بم اور ھائڈروجن بم سے
دنیا کو جو خطرہ ھے اُسے درشایا ھے اور لکھا ھے کہ آج
ھر دیش کا یہ فرض ھے کہ امن کی طاقتوں کو مضبوط

[illegible] और आपस के सब मामलों का फ़ैसला संयुक्त राष्ट्र संघ के उसूलों के अनुसार सुलह से और आपसी बात चीत से ही किया जावे.

उन्होंने इस ख़त में दिखाया है कि हथियारों की दौड़ में दोनों का कितना नुक़सान है और इस दौड़ को बन्द कर देने से दोनों देशों की जनता का कितना लाभ है. जो ज़बरदस्त शक्ति इस समय लड़ाई की तैयारियों में ख़र्च हो रही है उसे फिर दुनिया की जनता की ख़ुशहाली के बढ़ाने में ख़र्च किया जा सकता है.

श्री बुलगानिन ने लिखा है कि अमरीका और रूस में दोस्ती का समझौता इस समय दुनिया की सब से बड़ी ज़रूरत है, और यह बराबरी, एक दूसरे की आज़ादी की इज़्ज़त और एक दूसरे के अन्दरूनी मामलों में दख़ल न देने के उसूलों पर और इस बात पर ही हो सकता है कि जितने अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े रह गए हैं उन्हें जंग से तय करने की कोशिश न करके संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर के अनुसार सुलह से ही तय किया जावे.

श्री बुलगानिन ने लिखा है कि दोनों देशों में माली, तिजारती, कलचरी और साइंसी लेन देन भी बढ़ना चाहिये जिस से दोनों को लाभ हो.

श्री बुलगानिन ने इस पत्र के साथ एक आरज़ी सुलहनामे का मसौदा भेजा है जिसमें इसी बात पर ज़ोर दिया गया है कि बराबरी और दोनों के फ़ायदे के उसूल पर दोनों में कलचरी और तिजारती मेल जोल बढ़ाया जावे और कम से कम बीस बरस के लिये दोनों यह तय कर लें कि एक दूसरे से लड़ेंगे नहीं और जो भी आपसी झगड़े रह गए हैं वह सुलह और बात चीत से ही तय करेंगे.

इसमें सन्देह नहीं कि प्रधान मंत्री बुलगानिन का पत्र सुन्दर और साफ़ है. पर शायद अमरीका के जो पूँजीपति अरबों और खरबों सालाना हथियारों की तैयारी से कमा रहे हैं, या जिनके बड़े बड़े कारख़ाने दूसरे देशों के कच्चे माल और दूर दूर की मन्डियों के सहारे ही चल रहे हैं, उनके गले से दुनिया के भले की यह बात आसानी से नहीं उतर रही है. फिर भी हमें विश्वास है कि अमरीका की जनता और अमरीका के शासक जंग के ख़तरों को अच्छी तरह समझ रहे हैं. किसी देश की जनता जंग नहीं चाहती. हमें विश्वास है कि थोड़ी बहुत देर भले ही लगे, अमरीका को, रूस को और सारी दुनिया को जंग को हमेशा के लिये दुनिया से ख़तम कर देने का पक्का फ़ैसला करना ही होगा.

—सुन्दरलाल

لڑے اور آپس کے سب جھگڑوں کا فیصلہ سنیکت راشٹر سنگھ کے اصولوں کے انوسار صلح سے اور آپسی بات چیت سے ہی کیا جاوے ۔

انہوں نے اس خط میں دکھایا ہے کہ ہتیاروں کی دوڑ میں دونوں کا کتنا نقصان ہے اور اِس دوڑ کو بند کر دینے سے دونوں دیشوں کی جنتا کا کتنا لابھ ہے ۔ جو زبردست شکتی اس سمے لڑائی کی تیاریوں میں خرچ ہو رہی ہے اُسے پھر دنیا کی جنتا کی خوشحالی کے بڑھانے میں خرچ کیا جا سکتا ہے ۔

شری بلگانن نے لکھا ہے کہ امریکہ اور روس میں دوستی کا سمجھوتہ اِس سمے دنیا کی سب سے بڑی ضرورت ہے' اور یہ برابری' ایک دوسرے کی آزادی کی عزت اور ایک دوسرے کے اندرونی معاملوں میں دخل نہ دینے کے اُصولوں پر اور اِس بات پر ہی ہو سکتا ہے کہ جتنے انترراشٹریہ جھگڑے رہ گئے ہیں اُنہیں جنگ سے طے کرنے کی کوشش نہ کر کے سنیکت راشٹر سنگھ کے چارٹر کے انوسار صلح سے ہی طے کیا جاوے ۔

شری بلگانن نے لکھا ہے کہ دونوں دیشوں میں مالی' تجارتی' کلچری اور سائنسی لین دین بھی بڑھنا چاہئے جس سے دونوں کو لابھ ہو ۔

شری بلگانن نے اس پتر کے ساتھ ایک عارضی صلحنامے کا مسودہ بھیجا ہے جس میں اِسی بات پر زور دیاگیا ہے کہ برابری اور دونوں کے فایدے کے اُصول پر دونوں میں کلچری اور تجارتی میل جول بڑھایا جاوے اور کم سے کم بیس برس کے لئے دونوں یہ طے کر لیں کہ ایک دوسرے سے لڑینگے نہیں اور جو بھی آپسی جھگڑے رہ گئے ہیں وہ صلح اور بات چیت سے ہی طے کرینگے ۔

اِس میں سندیہہ نہیں کہ پردھان منتری بلگانن کا پتر سندر اور صاف ہے ۔ پر شاید امریکہ کے جو پونجی پتی اربوں اور کھربوں سالانہ ہتیاروں کی تیاری سے کما رہے ہیں' یا جن کے بڑے بڑے کارخانے دوسرے دیشوں کے کچے مال اور دور دور کی منڈیوں کے سہارے ہی چل رہے ہیں' اُن کے گلے سے دنیا کے بھلے کی یہ بات آسانی سے نہیں اُتررہی ہے ۔ پھر بھی ہمیں وشواس ہے کہ امریکہ کی جنتا اور امریکہ کے شاسک جنگ کے خطروں کو اچھی طرح سمجھ رہے ہیں ۔ کسی دیش کی جنتا جنگ نہیں چاہتی ۔ ہمیں وشواس ہے کہ تھوڑی بہت دیر بھلے ہی لگے' امریکہ کو' روس کو اور ساریٔ دنیا کو جنگ کو ہمیشہ کے لئے دنیا سے ختم کر دینے کا پکا فیصلہ کرنا ہی ہوگا ۔

—سندر لال

इलाज का देसी तरीका

एक पत्र

भाई सुन्दरलाल जी !

आपका एतराज राजकुमारी अमृतकौर के देहली वाले व्याख्यान पर पढ़ने में आया. यह तो मानना ही पड़ेगा कि हर सिसटम में कुछ न कुछ अच्छाइयां हैं. मगर किसी मिनिस्टर से यह आशा नहीं की जा सकती कि हरेक की हर समय अच्छाइयां ही दिखाया करे.

यों तो मैं अपना ही एक केस बताता हूँ. मैं कोई 12 साल का था जब मुझे लमबैगो और बुखार आया. कई महीने यह दर्द और बुखार चला. रोज सिविल सरजन ओब्रायन और कई देसी डाक्टर आते थे और उस सस्ते जमाने में बाइस रुपये रोज फ़ीस उन्हें दी जाती थी. कोई फ़ायदा न हुआ. हमारे घर के एक मित्र ने मेरी माता से कहा कि सदारा मियाँ जर्राह के पास कोई दवा है जो फ़ायदा करेगी. मेरे चाचा की आज्ञा लेकर जर्राह को बुलाया गया. उसने कहा 6 दिन में अच्छा हो जावेगा. उसे इजाजत मिलने पर उसने अपनी मैली थैली से दवा निकाल कर मेरी जांघ पर मली. वाक़ई सातवें दिन न बुखार था, न दर्द. उसे 10) इनाम देकर रुख़सत किया गया और वह ख़ुश होगया.

मिनिस्टरों को कहां इतनी फ़ुरसत कि इन छुटभय्यों की करामात को देखें और उसका बखान करें. यही क्या कम है कि उनपर रोक न लगाई जावे.

—मोहन लाल नेहरू.

لاج کا دیسی طریقہ

ایک پتر

ائی سندر لال جی !

آپ کا اعتراض راجکماری امرت کور کے دھلی والے ویاکھیان ر پڑھنے میں آیا ۔ یہ تو ماننا ھی پڑیگا کہ ھر سسٹم میں چھ نہ کچھ اچھائیاں ھیں ۔ مگر کسی منسٹر سے یہ آشا نہیں ی جاسکتی کہ ھر ایک کی ھر سمے اچھائیاں ھی دکھایا کرے ۔

یوں تو میں اپنا ھی ایک کیس بتاتا ھوں ۔ میں کوئی رہ سال کا تھا جب مجھے لمبیگو اور بخار آیا ۔ کئی مہینے یہ رد اور بخار چلا ۔ روز سول سرجن اوبرائن اور کئی دیسی اکٹر آتے تھے اور اس سستے زمانے میں بائیس روپیہ روز فیس نھیں دیجاتی تھی ۔ کوئی فائدہ نہ ھوا ۔ ھمارے گھر کے ایک تر نے میری ماتا سے کہا کہ سدارا میاں جراح کے پاس کوئی وا ھے جو فائدہ کریگی ۔ میرے چاچا کی آگیا لیکر جراح کو لایا گیا ۔ اس نے کہا چھ دن میں اچھا ھوجایگا ۔ اسے اجازت لنے پر اس نے اپنی میلی تھیلی سے دوا نکال کر میری جانگھ ملی ۔ واقعی ساتویں دن نہ بخار تھا نہ درد ۔ اسے دس وپیہ انعام دیکر رخصت کیا گیا اور وہ خوش ھوگیا ۔

منسٹروں کو کہاں اتنی فرصت کہ ان چھٹ بھئیوں کی امات کو دیکھیں اور اس کا بکھان کریں ۔ یہی کیا کم ھے کہ ن پر روک نہ لگائی جاوے ۔

—موھن لال نہرو ۔

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें — ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोट:—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं. — نوٹ:— یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں۔

	नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1.	शेर-ओ-शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئلیہ	1. شعر و شاعری
2.	शेर-ओ-सुखन	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3.	गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4.	हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5.	संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنسمرن
6.	दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7.	ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8.	पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہ
9.	पंथ प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	9. پنتھ پردیپ
10.	आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11.	मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.		0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	11. مکتی دوت
12.	मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13.	रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14.	मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بکھاریا	14. میرے باپو
15.	विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال، بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16.	भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला		0	0	شری بھگوان داس کیلا	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17.	भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18.	नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19.	साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور اُن کا پتن
20.	भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21.	सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سرووَدے ارتھ ویوستھا
22.	हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23.	अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल. एल. बी. श्री गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, श्री भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24.	नागरिक शिक्षा	श्री भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25.	राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26.	जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27.	मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ہمت !
28.	सलोना सच		0	8	0	,,	28. سلونا سچ
29.	मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, [illegible]-3.

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند'
[illegible] 145

सांस्कृतिक साहित्य

سانسکرتک ساهتیه

हजरत मोहम्मद और इसलाम

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—तीन रुपया

इसलाम के पैग़म्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

حضرت محمد اور اسلام

لیکهک—پنڈت سندر لال، مولیہ—تین روپیہ

اسلام کے پیغمبر کے سمبندھ میں بھارتیہ بھاشاؤں میں اس سے سندر کوئی دوسری پستک نہیں

हजरत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक—पन्डित सुन्दरलाल, मूल्य—डेढ़ रुपया

حضرت عیسیٰ اور عیسائی دھرم

لیکهک—پنڈت سندر لال، مولیہ—ڈیڑھ روپیہ

महात्मा ज़रथुस्त्र और ईरानी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत—दो रुपया

مہاتما زرتشت اور ایرانی سنسکرتی

لیکهک—وشومبهر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

यहूदी धर्म और सामी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत—दो रुपया

یہودی دھرم اور سامی سنسکرتی

لیکهک—وشومبهر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत—दो रुपया

پراچین مصر کی سبھیتا اور سنسکرتی

لیکهک—وشومبهر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

सुमेर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत—दो रुपया

سومیر، بابل اور اسوریا کی پراچین سنسکرتی

لیکهک—وشومبهر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

प्राचीन यूनानी सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत—दो रुपया

پراچین یونانی سبھیتا اور سنسکرتی

لیکهک—وشومبهر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह)

लेखक—श्री मुजीब रिजवी, क़ीमत—दो रुपया

گنگا سے گومتی تک

(پرگتی شیل کہانی سنگرہ)

لیکهک—شری مجیب رضوی، قیمت—دو روپیہ

आग और आँसू

(भावपूर्ण सामाजिक कहानियाँ)

लेखक—डाक्टर अख़्तर हुसेन रायपुरी, क़ीमत—डेढ़ रुपया

آگ اور آنسو

(بھاؤپورن سماجک کہانیاں)

لیکهک—ڈاکٹر اختر حسین رائے پوری، قیمت - ڈیڑھ روپیہ

क़ुरान और धार्मिक मतभेद

लेखक—मौलाना अबुलकलाम आज़ाद, क़ीमत—डेढ़ रुपया

قرآن اور دھارمک مت بھید

لیکهک—مولانا ابوالکلام آزاد، قیمت—ڈیڑھ روپیہ

झंकार

(प्रगतिशील कविताओं का संग्रह)

लेखक—रघुपति सहाय फ़िराक़, क़ीमत—तीन रुपया

جھنکار

(پرگتی شیل کویتاؤں کا سنگرہ)

لیکهک—رگھوپتی سہائے فراق، قیمت—تین روپیہ

मिलने का पता ملنے کا پتہ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी هندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145 مٹھی گنج، الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख — اِس نمبر کے خاص لیکھ

इसके अलावा — اس کے علاوہ

देस बिदेस के मसलों पर हमारी राय में ज़रूरी सम्पादकी नोट

دیس بدیس کے مسئلوں پر ہماری رائے میں ضروری سمپادکی نوٹ

...नी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद ...ستانی کلچر سوسائٹی، الٰہ آباد

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only

Can be had from—

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

जिल्द 21 جلد नम्बर 4 نمبر

अप्रैल 1956 اپریل

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ھندستانی کلچر سوسائٹی
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145 مٹھی گنج الہ آباد

अप्रैल 1956 اپریل

हज़रत मुहम्मद और उनका पैग़ाम

विश्वम्भरनाथ पांडे

इसलाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद की गिनती दुनिया की महान से महान आत्माओं में की जाती है. वे एक मामूली ग़रीब घर में पैदा हुए थे और अपनी मौत से पहले समूचे अरब के बादशाह थे. बरसों की तपस्या, लम्बे लम्बे रोज़ों और एकान्त सेवन के बाद अरब की उस ज़माने की गिरी हुई हालत में ईश्वर ने उन्हें उनके देश और तमाम दुनिया की भलाई का रास्ता दिखाया. अपने धर्म का प्रचार शुरू करने के वक़्त वह 40 बरस के थे और 63 बरस की उमर में वे इस दुनिया से कूच कर गये.

मुहम्मद साहब के उपदेशों ने अरबों के अन्दर से बहुत सी बुराइयों को, जैसे शराबख़ोरी, जुआ, सूदख़ोरी, लड़कियों को मार डालना वग़ैरह जड़ से मिटा दिया. सैकड़ों और हज़ारों अलग-अलग देवी देवताओं के पूजने वालों को अपने उन अलग-अलग देवी देवताओं को छोड़कर, एक निराकार ईश्वर, एक अल्लाह की पूजा करना सिखा दिया. एक दूसरे के दुश्मन हज़ारों क़बीलों को एक धागे में बांधकर उन सबकी एक क़ौम बना दी. सारी क़ौम के चलन और रहन-सहन को पाक और ऊँचा कर दिया. उनमें इल्म और ज्ञान की चाह पैदा कर दी. अरब के उन सब टुकड़ों को जो अलग-अलग विदेशी ताक़तों के मातहत थे आज़ाद करके सारे देश पर एक ख़ुद मुख़्तार अरब हुकूमत क़ायम करदी. और यह सब काम 23 बरस के भीतर पूरा हो गया.

मुहम्मद साहब के मरने के सौ बरस के अन्दर-अन्दर अरब का यह नया मज़हब चीन की दीवार से लेकर अटलांटिक महासागर तक, एशिया, अफ़रीक़ा और यूरोप, तीनों में फैल गया. तमाम पच्छिम एशिया, उत्तर अफ़रीक़ा और आधे यूरोप पर अरबों की हुकूमत क़ायम हो गई. तरह-तरह के इल्म और हुनर में उन दिनों के अरब पच्छिमी दुनिया की सबसे बड़ी चढ़ी क़ौम माने जाने लगे. आज दुनिया में तीस करोड़ से ज़्यादा आदमी इसलाम धर्म के मानने वाले हैं और दुनिया का कोई मुल्क ऐसा नहीं है जहां कुछ न कुछ लोग हज़रत मुहम्मद की ज़िन्दगी और इसलाम से अपनी निजी ज़िन्दगी के लिये धर्म का रास्ता और इन्सानी भलाई का सबक़ न सीखते हों.

उस समय के दूसरे मज़हबों में भी राजवंशों और [illegible] ... हर मज़हब

حضرت محمد اور اُن کا پیغام

وشمبھر ناتھ پانڈے

اسلام کے پیغمبر حضرت محمد کی گنتی دنیا کی مہان سے مہان آتماؤں میں کی جاتی ہے۔ وہ ایک معمولی غریب گھر میں پیدا ہوئے تھے اور اپنی موت سے پہلے سمُوچے عرب کے بادشاہ تھے۔ برسوں کی تپسیا، لمبے لمبے روزوں اور ایکانت سیون کے بعد عرب کی اُس زمانے کی گری ہوئی حالت میں ایشور نے انہیں اُن کے دیش اور تمام دنیا کی بھلائی کا راستہ دکھایا۔ اپنے دھرم کا پرچار شروع کرنے کے وقت وہ 40 برس کے تھے اور 63 برس کی عمر میں وہ اِس دنیا سے کوچ کر گئے۔

محمد صاحب کے اُپدیشوں نے عربوں کے اندر سے بہت سی برائیوں کو، جیسے شراب خوری، جوا، سود خوری، لڑکیوں کو مار ڈالنا وغیرہ جڑ سے مٹا دیا۔ سیکڑوں اور ہزاروں الگ الگ دیوی دیوتاؤں کے پوجنے والوں کو اپنے اُن الگ الگ دیوی دیوتاؤں کو چھوڑ کر، ایک نراکار ایشور، ایک اللہ کی پوجا کرنا سکھا دیا۔ ایک دوسرے کے دشمن ہزاروں قبیلوں کو ایک دھاگے میں باندھ کر اُن سب کی ایک قوم بنادی۔ ساری قوم کے چلن اور رہن سہن کو پاک اور اونچا کر دیا۔ اُن میں علم اور گیان کی چاہ پیدا کر دی۔ عرب کے اُن سب ٹکڑوں کو جو الگ الگ ودیشی طاقتوں کے ماتحت تھے آزاد کر کے سارے دیش پر ایک خودمختار عرب حکومت قایم کر دی۔ اور یہ سب کام 23 برس کے بھیتر پورا ہو گیا۔

محمد صاحب کے مرنے کے سو برس کے اندر اندر عرب کا یہ نیا مذہب چین کی دیوار سے لیکر اٹلانٹک مہاساگر تک، ایشیا، افریقہ اور یورپ، تینوں میں پھیل گیا۔ تمام پچھم ایشیا، اُتر افریقہ اور آدھے یورپ پر عربوں کی حکومت قایم ہو گئی۔ طرح طرح کے علم اور ہنر میں اُن دنوں کے عرب پچھمی دنیا کی سب سے بڑھی چڑھی قوم مانے جانے لگے۔ آج دنیا میں تیس کروڑ سے زیادہ آدمی اسلام دھرم کے ماننے والے ہیں اور دنیا کا کوئی ملک ایسا نہیں ہے جہاں کچھ نہ کچھ لوگ حضرت محمد کی زندگی اور اسلام سے اپنی نجی زندگی کے لئے دھرم کا راستہ اور انسانی بھلائی کا سبق نہ سیکھتے ہوں۔

اُس سمے کے دوسرے مذہبوں میں بھی راج ونشوں اور [illegible] کی طرح ذات بندیاں پیدا ہو گئی تھیں۔ ہر مذہب

हर मज़हब मानने वाला समझता था कि सचाई सिर्फ़ मेरे ही हिस्से में आई है और जो मेरे मज़हब के मानने वाले हैं जन्नत में बस उन्हीं के लिये जगह है, दूसरे मज़हब वालों के लिये नहीं. हर मज़हब ऊपरी कर्मकाण्डों और रीत रिवाजों को ही धर्म की असलियत समझता था, जैसे उपासना का एक ख़ास तरीक़ा, क़ुरबानियों का रिवाज, ख़ास तरह का खान-पान और एक ख़ास तरह का लिबास. ये रीत-रिवाज हर मज़हब के मानने वालों में अलग-अलग थे. इसलिये हर मज़हब वाला विश्वास करता था कि दूसरे मज़हब वालों के पास मज़हबी सचाई नहीं है, हर मज़हब का दावा यही नहीं था कि वह सच्चा है, यह भी था कि दूसरे मज़हब इनसानों को गुमराही की तरफ़ ले जाते हैं. नतीजा यह था कि धर्म और ईश्वर के नाम पर हर मज़हब दूसरे मज़हब वालों से नफ़रत करता था और उनका ख़ून बहाना तक जायज़ समझता था.

इसलाम ने उस ज़माने की इस मज़हबी गिरोह बन्दी के ख़िलाफ़ लोहा लिया. उसने नए सिरे से इस उसूल को पेश किया कि न सिर्फ़ इसलाम में बल्कि दुनिया के सब मज़हबों में सचाई मौजूद है. क़ुरान में एक सूरा है—

"ऐ. पैग़म्बर ! हमने हर गिरोह के लिये उपासना की एक ख़ास विधि तय कर दी है, जिस पर वह अमल करता है. इसलिये लोगों को चाहिये कि इसके बारे में झगड़ा न करें. ऐ पैग़म्बर ! तुम लोगों को अपने अल्लाह की तरफ़ बुलाओ" (सू० 22, आ० 66).

जब इसलाम के पैग़म्बरों ने बैतुल मुक़द्दस (जेरुसेलम) के बदले काबे की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ानी शुरू की तो यह बात यहूदियों और ईसाइयों को अखरी, क्योंकि वे इन बाहरी और ऊपरी बातों पर ही मज़हब का दारमदार समझते थे और इन्हीं को सच और झूठ की कसौटी मानते थे. लोगों ने एतराज़ किया और पूछा कि आपने अपनी पूजा की दिशा क्यों बदल दी ? क़ुरान के सूरे बक़र में इसका जवाब दिया गया है—"पूरब और पच्छिम दोनों अल्लाह के हैं. इसलिये जिधर भी तुम मुड़ो उधर ही अल्लाह का मुँह है" (2 – 115). मुहम्मद साहब ने इस मामले को बिलकुल दूसरी नज़र से देखा। इसलाम कहता है कि इस तरह की बातों को इतनी अहमीयत ही क्यों देते हो ? यह न तो सच और झूट की ही कसौटी है और न इनका धर्म के बुनियादी उसूलों से ही कोई ताल्लुक़ है. क़ुरान में लिखा है—

"हर गिरोह के लिये कोई न कोई दिशा है जिसकी ओर उपासना करते समय वह अपना मुँह कर लेता है, इसलिये इसे तूल न देकर नेकी की राह में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो. चाहे तुम जिस जगह भी हो, अल्लाह तुम्हें ढूँढ लेगा. बेशक अल्लाह की ताक़त से कोई चीज़ बाहर नहीं है." (सू० 2 आ० 148).

نے والا سمجھتا تھا کہ سچائی صرف میرے ہی حصے میں
ہے اور جو میرے مذہب کے ماننے والے ہیں جنت میں
انہوں کے لئے جگہہ ہے، دوسرے مذہب والوں کے لئے
۔ ہر مذہب اُوپری کرم کانڈوں اور ریت رواجوں کو ہی
کی اصلیت سمجھتا تھا، جیسے اُپاسنا کا ایک خاص طریقہ،
یوں کا رواج، خاص طرح کا کھان پان اور ایک خاص طرح
س . یہ ریت رواج ہر مذہب کے ماننے والوں میں الگ
تھے اِس لئے ہر مذہب والا وشواس کرتا تھا کہ دوسرے
ب والوں کے پاس مذہبی سچائی نہیں ہے، ہر مذہب کا
یہی نہیں تھا کہ وہ سچا ہے، یہ بھی تھا کہ دوسرے مذہب
نوں کو گمراھی کی طرف لیجاتے ھیں . نتیجہ یہ تھا کہ
اور ایشور کے نام پر ہر مذہب دوسرے مذہب والوں سے
ت کرتا تھا اور اُن کا خون بہانا تک جائز سمجھتا تھا .

اِسلام نے اس زمانے کی اِس مذہبی گروہ بندی کے خلاف
لیا . اُس نے نئے سرے سے اِس اُصول کو پیش کیا کہ نہ
اِسلام میں بلکہ دنیا کے سب مذہبوں میں سچائی موجود
قران میں ایک سورہ ہے—

"اے پیغمبر ! ہم نے ہر گروہ کے لئے اُپاسنا کی ایک خاص
طے کر دی ہے، جس پر وہ عمل کرتا ہے . اِس لئے
کو چاھئے کہ اِس کے بارے میں جھگڑا نہ کریں. اے پیغمبر !
لوگوں کو اپنے اللہ کی طرف بلاؤ". (سو. 22، الف. 66)

جب اِسلام کے پیغمبر نے بیت المقدس (جیروسلم) کے
کعبہ کی طرف منہ کر کے نماز پڑھانی شروع کی تو یہ بات
یوں اور عیسائیوں کو اکھری، کیونکہ وہ اِن باھری اور اُوپری
پر ھی مذہب کا دارمدار سمجھتے تھے اور اِنہیں کو سچ
جھوٹ کی کسوٹی مانتے تھے. لوگوں نے اعتراض کیا اور
کہ آپنے اپنی پوجا کی دشا کیوں بدل دی ؟ قرآن کے
بقر میں اِس کا جواب دیا گیا ہے—"پورب اور پچھم دونوں
کے ھیں . اِس لئے جدھر بھی تم مڑو اُدھر ھی اللہ کا منہ
(2—115) . محمد صاحب نے اِس معاملے کو بالکل
ری نظر سے دیکھا . اِسلام کہتا ہے کہ اِس طرح کی باتوں کو
اھمیت ھی کیوں دیتے ھو ؟ وہ نہ سچ اور جھوٹ کی
کسوٹی ہے اور نہ اِن کا دھرم کے بنیادی اصولوں سے ھی
تعلق ہے . قرآن میں لکھا ہے—

"ہر گروہ کے لئے کوئی نہ کوئی دشا ہے جس کی اور اُپاسنا
سمے وہ اپنا منہ کر لیتا ہے، اِس لئے اِسے طول نہ دیکر نیکی
راہ میں ایک دوسرے سے آگے بڑھنے کی کوشش کرو . چاھے
اس جگہہ بھی ہو، اللہ تمہیں ڈھونڈھ لیگا . بیشک اللہ کی
طاقت سے کوئی چیز باہر نہیں ہے . (سو . 2، الف
)

इसी सूरे में आगे चलकर कहा है—

"धर्म या नेकी इसमें नहीं है कि तुमने अपने मुंह (नमाज़ के वक्त) पूरब की तरफ़ कर लिये या पच्छिम की तरफ़. धर्म यह है कि आदमी अल्लाह को माने, आख़रत यानी करमों के फल को माने, फ़रिश्तों को माने, सब मज़हबी किताबों और सब नबियों या रसूलों को माने, अल्लाह के प्रेम के नाते यानी उसके नाम पर अपने माल और दौलत में से अपने नातेदारों को, ज़रूरतमन्दों को, यतीमों को, रास्ते चलतों को और मांगने वालों को दान दे और ग़ुलामों को आज़ाद कराने में अपनी दौलत ख़र्च करे. अल्लाह से दुआ मांगता रहे, ज़कात (अपने कुल माल का कम से कम 40 वां हिस्सा हर साल अल्लाह के नाम पर ग़रीबों को ख़ैरात) देता रहे, जब कभी किसी से वादा करे तो उसे पूरा करे, और मुसीबतों में, तकलीफ़ में, और सख़्ती के दिनों में सब्र करे —जो लोग ऐसा करते हैं वे ही सच्चे हैं और वे ही मुत्तक़ी यानी परहेज़गार हैं." (सू० 2 आ० 177).

धर्मों की इस गिरोहबन्दी का नतीजा यह हुआ कि परमात्मा के पूजा घर तक अलग-अलग हो गये. सब धर्मों के मानने वाले एक ही परमात्मा का दम भरते हैं, फिर भी यह नहीं हो सकता कि एक धर्म के मानने वाले दूसरे धर्म वालों के पूजा घरों में जाकर अपने ढङ्ग से परमात्मा का नाम ले सकें. कभी कभी लोग धर्म के नाम पर दूसरों के पूजा घरों को बरबाद तक कर देते हैं. क़ुरान कहता है इससे बढ़कर बेइन्साफ़ी इनसान और क्या कर सकता है कि ख़ुदा के बन्दों को उसकी इबादत से रोके, केवल इसलिये कि वे किसी दूसरे मज़हब में शामिल हैं, क्या मज़हबों में फ़र्क़ से ईश्वर में भी फ़र्क़ हो गया ! क़ुरान में लिखा है—

"उससे बढ़कर अन्यायी और कौन हो सकता है जो अल्लाह के पूजा घरों में किसी को अल्लाह की इबादत और उसका गुनगान करने से रोके, या उन पूजा घरों को बरबाद करने की कोशिश करे ! जो लोग ऐसे ज़ुल्म और ज़्यादती करते हैं वे इस क़ाबिल नहीं हैं कि अल्लाह के पूजा घरों में पैर भी रखें, सिवा इसके कि डरते हुए जायें. ऐसे आदमियों को इस दुनिया में बदनामी और दूसरी दुनिया में ज़बर्दस्त अज़ाब भी ना पड़ेगा." (सू० 2 आ० 114).

क़ुरान परमात्मा के बनाए इस नियम का ऐलान करता है कि—"जिस किसी ने भी अपने कर्मों से बुराई कमाई उसका फल बुरा है और जिस किसी ने भी भलाई कमाई उसका फल अच्छा है." जिस तरह ज़हर खाने वाला मर जाता है चाहे वह किसी भी मज़हब का क्यों न हो और दूध पीने वाला तन्दुरुस्त होता है चाहे वह किसी भी मज़हब या जाति का क्यों न हो. क़ुरान कहता है कि ईश्वरी धर्म की जड़ यही है कि सब इनसान आपस में भाई-भाई हैं और

اسی سورہ میں آگے چل کر کہا ہے —

دھرم یا نیکی اِس میں نہیں ہے کہ تم نے اپنے منھ (نماز کے وقت) پورب کی طرف کر لئے یا پچھم کی طرف ۔ دھرم یہ ہے کہ آدمی اللہ کو مانے، آخرت یعنی کرموں کے پھل کو مانے، فرشتوں کو مانے، سب مذھبی کتابوں اور سب نبیوں یا رسولوں کو مانے، اللہ کے پریم کے ناتے یعنی اُس کے نام پر اپنے مال اور دولت میں سے اپنے ناتےداروں کو، یتیموں کو، ضرورت مندوں کو، راستہ چلتوں کو اور مانگنے والوں کو دان دے اور غلاموں کو آزاد کرانے میں اپنی دولت خرچ کرے ۔ اللہ سے دعا مانگتا رہے، زکاۃ (اپنے کل مال کا کم سے کم 40 واں حصہ ہر سال اللہ کے نام پر غریبوں کو خیرات) دیتا رہے، جب کبھی کسی سے وعدہ کرے تو اُسے پورا کرے، اور مصیبتوں میں، تکلیف میں، اور سختی کے دنوں میں صبر کرے — جو لوگ ایسا کرتے ہیں وے ہی سچے ہیں اور وے ہی متقی یعنی پرہیزگار ہیں (سو. 2، الف 177)۔

دھرموں کی اِس گروہ بندی کا نتیجہ یہ ہوا کہ پرماتما کے پوجا گھر تک الگ الگ ہو گئے سب دھرموں کے ماننے والے ایک ہی پرماتما کا دم بھرتے ہیں، پھر بھی یہ نہیں ہو سکتا کہ ایک دھرم کے ماننے والے دوسرے دھرم والوں کے پوجا گھروں میں جاکر اپنے ڈھنگ سے پرماتما کا نام لے سکیں. کبھی کبھی لوگ دھرم کے نام پر دوسروں کے پوجا گھروں کو برباد تک کر دیتے ہیں. قرآن کہتا ہے اِس سے بڑھکر بےانصافی انسان اور کیا کر سکتا ہے کہ خدا کے بندوں کو اُس کی عبادت سے روکے، کیول اِس لئے کہ وے کسی دوسرے مذھب میں شامل ہیں، کیا مذھبوں میں فرق سے ایشور میں بھی فرق ہو گیا ! قرآن میں لکھا ہے —

"اُس سے بڑھکر انیائی اور کون ہو سکتا ہے جو اللہ کے پوجا گھروں میں کسی کو اللہ کی عبادت اور اُس کا گن گان کرنے سے روکے، یا اُن پوجا گھروں کو برباد کرنے کی کوشش کرے ! جو لوگ ایسے ظلم اور زیادتی کرتے ہیں وے اِس قابل نہیں ہیں کہ اللہ کے پوجا گھروں میں پیر بھی رکھیں، سوا اِس کے کہ ڈرتے ہوئے جائیں ۔ ایسے آدمیوں کو اِس دنیا میں بدنامی اور دوسری دنیا میں زبردست عذاب بھوگنا پڑیگا ." (سو. 2، الف 114) .

قرآن پرماتما کے بنائے اِس نیم کا اعلان کرتا ہے کہ — "جس کسی نے بھی اپنے کرموں سے برائی کمائی اُس کا پھل برا ہے اور جس کسی نے بھی بھلائی کمائی اُس کا پھل اچھا ہے ." جس طرح زہر کھانے والا مر جاتا ہے چاہے وہ کسی بھی مذھب کا کیوں نہ ہو اور دودھ پینے والا تندرست ہوتا ہے چاہے وہ کسی بھی مذھب یا جاتی کا کیوں نہ ہو. قرآن کہتا ہے کہ ایشوری دھرم کی جڑ یہی ہے کہ سب انسان آپس میں بھائی بھائی ہیں اور

... एक है. खुदा के जितने भी रसूल दुनिया में आए सबने यही तालीम दी कि तुम सब बुनियादी तौर पर एक ही पन्थ और एक ही जाति हो और तुम सबका पालनहार भी एक ही है, इसलिये मुनासिब है कि सब उसी एक परवरदिगार की उपासना करें और एक घराने के भाई बन्दों की तरह मिल जुलकर रहें. क़ुरान ने बताया कि ईश्वरी धर्म इसलिये था कि इनसानों के आपसी झगड़े और भेद-भाव दूर हों, इसलिये न था कि ख़ुद मुख़ालफ़त और लड़ाई का सबब बन जाय. इसलिये इससे बढ़कर गुमराही और क्या हो सकती है कि जो चीज़ भेदों को दूर करने आई हो वही भेदों की जड़ बना ली जाय !

इसलाम के मुताबिक़ ईश्वर का धर्म इसलिये नहीं है कि एक इनासन दूसरे इनसान से नफ़रत करे बल्कि इसलिये है कि हर इनसान दूसरे इनसान से मुहब्बत करे और सब एक ही परवरदिगार की इबादत के धागे में बंधकर एक हो जायें, जब सब का पालनहार एक है, सबका मक़सद एक उसी की इबादत है, हर इनसान को अच्छे और बुरे कामों ही का बदला मिलना है तो फिर अल्लाह और मज़हब के नाम पर ये भेद-भाव और लड़ाइयां क्यों हैं ?

इसलाम ने बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया है कि सब मज़हब सच्चे हैं क्योंकि बुनियादी मज़हब एक है और वह है मज़हबे इनसानियत यानी प्रेम धर्म, पर इनसानों ने अपनी गुमराही से अलग-अलग टोलियां बना ली हैं. इस गुमराही से लोग हट जायं तो सब मज़हबी झगड़े ख़ुद-बख़ुद मिट जाँय. हर गिरोह देख लेगा कि उसका रास्ता भी वही है जो दूसरे गिरोह वालों का है. मुहम्मद साहब के मुताबिक़ यही 'अल-इसलाम' है.

मोटे तौर पर मुहम्मद साहब की तालीम का निचोड़ यह है—

(1) "अल्लाह एक है" उसकी कोई शकल सूरत नहीं है. "वह सब दुनियाओं का मालिक" और "सब को उनके कामों का फल देने वाला" है. उस एक अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की पूजा नहीं करनी चाहिये.

(2) सब आदमी उसी एक ईश्वर के बन्दे और आपस में भाई-भाई हैं. आदमियों में सबसे बढ़कर इज़्ज़त के क़ाबिल वह है जो बुराई से बचे और नेकी के कामों में लगा रहे.

(3) दुनिया के सब बड़े-बड़े धर्मों का निकास उसी एक अल्लाह से है, इन सब मज़हबों के क़ायम करने वालों को एक तरह ही उसी अल्लाह से रोशनी मिली है, इसलिये ये सब धर्म सच्चे हैं और जड़ में "सब धर्म एक हैं."

(4) अलग-अलग मज़हबों में अपने-अपने ज़माने, मुल्क और हालत के फ़रक़ से रीति-रिवाज और पूजा बन्दगी

سب ایک ہیں. خدا کے جتنے بھی رسول دنیا میں آئے سب
ہی تعلیم دی کہ تم سب بنیادی طور پر ایک ہی پنتھ
ر ایک ہی جاتی ہو اور تم سب کا پالن ہار بھی ایک ہی
ے' اِس لئے مناسب ہے کہ سب اُسی ایک پروردگار کی اُپاسنا
یں اور ایک گھرانے کے بھائی بندوں کی طرح مل جل کر
ہیں " قرآن نے بتایا کہ ایشوری دھرم اِس لئے تھا کہ اِنسانوں
ے آپسی جھگڑے اور بھید بھاؤ دور ہوں' اِس لئے نہ تھا کہ خود
مخالفت اور لڑائی کا سبب بن جائے اِس لئے اِس سے بڑھکر
مراہی اور کیا ہو سکتی ہے کہ جو چیز بھیدوں کو دور کرنے آئی
و وہی بھیدوں کی جڑ بنا لی جائے !

اسلام کے مطابق ایشور کا دھرم اِس لئے نہیں ہے کہ ایک
نسان دوسرے انسان سے نفرت کرے بلکہ اِس لئے ہے کہ ہر
نسان دوسرے اِنسان سے مُحبت کرے اور سب ایک ہی
روردگار کی عبادت کے دھاگے میں بندھکر ایک ہو جائیں .
جب سب کا پالن ہار ایک ہے' سب کا مقصد ایک اُسی کی
بادت ہے' ہر اِنسان کو اچھے اور برے کاموں کا ہی بدلہ ملنا
ے تو پھر اللہ اور مذہب کے نام پر یہ بھید بھاؤ اور لڑائیاں کیوں
یں ؟

اِسلام نے بار بار اِس بات پر زور دیا ہے کہ سب مذہب
سچے ہیں کیونکہ بنیادی مذہب ایک ہے اور وہ ہے مذہب
انسانیت یعنی پریم دھرم؛ پر اِنسانوں نے اپنی گمراہی سے الگ
لگ ٹولیاں بنا لی ہیں . اِس گمراہی سے لوگ ہٹ جائیں
و سب مذہبی جھگڑے خود بخود مٹ جائیں . ہر گروہ دیکھ
لیگا کہ اُس کا راستہ بھی وہی ہے جو دوسرے گروہ والوں کا ہے .
محمد صاحب کے مطابق یہی 'الاسلام' ہے .

موٹے طور پر محمد صاحب کی تعلیم کا نچوڑ یہ ہے—

(1) "اللہ ایک ہے" اس کی کوئی شکل صورت نہیں ہے.
"وہ سب دنیاؤں کا مالک" اور "سب کو اُس کے کاموں کا
پھل دینے والا" ہے . اُس ایک اللہ کے سوا کسی دوسرے کی
پوجا نہیں کرنی چاہیئے .

(2) سب آدمی اُسی ایک اِیشور کے بندے اور آپس
میں بھائی بھائی ہیں . آدمیوں میں سب سے بڑھکر عزت کے
قابل وہ ہے جو برائی سے بچے اور نیکی کے کاموں میں لگا
رہے .

(3) دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کا نکاس اُسی ایک
اللہ سے ہے' اِن سب مذہبوں کے قایم کرنے والوں کو ایک طرح
ہی اُسی اللہ سے روشنی ملی ہے' اِس لئے یہ سب دھرم سچے
ہیں اور جڑ میں "سب دھرم ایک ہیں ."

(4) الگ الگ مذہبوں میں اپنے اپنے زمانے' ملک
اور حالت کے فرق سے ریت رواج اور پوجا بندگی

के तरीक़ों में फ़रक़ है, बुनियादी उसूलों में फ़रक़ नहीं. झगड़े की वजह यह हो जाती है कि लोग अपने-अपने मज़हबों के इन बुनियादी उसूलों से हट जाते हैं और नेकी और भलाई के कामों के बजाय ऊपरी रीति-रिवाजों और पूजा के तरीक़ों को ज़्यादा अहम समझने लगते हैं.

(5) किसी भी क़ौम या मुल्क में जब लोग मज़हब के बुनियादी उसूलों से हट जाते हैं तो अल्लाह उनमें कोई न कोई रसूल या पैग़म्बर भेजकर उसके ज़रिये उनमें "सच्चे दीन का फिर से क़ायम" करता है और लोगों को ठीक राह पर लाता है. इस तरह के पैग़म्बर सब क़ौमों, सब ज़मानों और सब मुल्कों में होते रहे हैं.

(6) अलग अलग मज़हबों के क़ायम करने वालों यानी अलग-अलग मुल्कों या क़ौमों के पैग़म्बरों में फ़रक़ करना यानी उनमें से किसी को मानना और किसी को न मानना गुनाह है. क़ुरान इस न मानने या फ़रक़ करने को "कुफ़्र" कहता है.

(7) इसलाम अपने से पहले की सब इलहामी यानी ईश्वरी किताबों की तसदीक़ करता है यानी उन्हें सच्चा ठहराता है और मुहम्मद साहब अपने से पहले के "सब पैग़म्बरों की मुहर" यानी उन सब की तसदीक़ करने वाले हैं.

अपनी पूरी ज़िन्दगी भर मुहम्मद साहब ने अपने को एक मामूली इनसान से ज़्यादा कुछ नहीं कहा. क़ुरान में लिखा है—

"लोग कहते हैं कि हम उस वक़्त तक तुम्हारी बात हरगिज़ नहीं मानेंगे जब तक तुम हमारे लिए ज़मीन से पानी का एक चश्मा फोड़ कर न निकाल दो, या खजूरों और अंगूरों का एक ऐसा बाग़ न खड़ा कर दो जिसके बीच से अपने आप फूट कर दरिया बह रहे हों, या अपने ज़ोर से आसमान के टुकड़े-टुकड़े करके हमारे ऊपर न गिरा दो, या अल्लाह और फ़रिश्तों को हमारे सामने लाकर न खड़ा कर दो, या अपने लिये एक सोने का मकान न खड़ा कर लो, या आसमान में न चढ़ जाओ और वहां से एक ऐसी किताब न ले आओ जिसे हम पढ़ सकें. इस सब के जवाब में इनसे कह दो कि मेरे रब्ब का याद करो, मैं सिवाय एक इनसान और रसूल के और कुछ नहीं हूं." (सू० आ० 17,90-93)

"मैं सिर्फ़ तुम्हारी ही तरह एक आदमी हूं, हां अल्लाह ने मुझे यह ज्ञान दिया कि तुम सब का एक ही अल्लाह है. इसलिये जो कोई अपने रब्ब से मिलने की आस लगाए है उसे चाहिये कि नेक काम करे और सिवाय एक रब्ब के दूसरे किसी की पूजा न करे," (सू० 18, आ० 110)

मुहम्मद साहब की निजी ज़िन्दगी और फ़क़ीरी की ज़िन्दगी थी. आख़ीर तक उनका रहन-सहन हद दरजे का सादा

کے طریقوں میں فرق ہے، بنیادی اصولوں میں فرق نہیں۔ جھگڑے کی وجہ یہ ہو جاتی ہے کہ لوگ اپنے اپنے مذہبوں کے اِن بنیادی اصولوں سے ہٹ جاتے ہیں اور نیکی اور بھلائی کے کاموں کے بجائے اُوپری ریت رواجوں اور پوجا کے طریقوں کو زیادہ اہم سمجھنے لگتے ہیں ۔

(5) کسی بھی قوم یا ملک میں جب لوگ مذہب کے بنیادی اصولوں سے ہٹ جاتے ہیں تو اللہ اُن میں کوئی نہ کوئی رسول یا پیغمبر بھیج کر اُس کے ذریعے اُن میں "سچے دین کو پھر سے قایم" کرتا ہے اور لوگوں کو ٹھیک راہ پر لاتا ہے ۔ اِس طرح کے پیغمبر سب قوموں، سب زمانوں اور سب ملکوں میں ہوتے رہے ہیں ۔

(6) الگ الگ مذہبوں کے قایم کرنے والوں یعنی الگ الگ ملکوں یا قوموں کے پیغمبروں میں فرق کرنا یعنی اُن میں سے کسی کو ماننا اور کسی کو نہ ماننا گناہ ہے ۔ قرآن اِس نہ ماننے یا فرق کرنے کو "کفر" کہتا ہے ۔

(7) اِسلام اپنے سے پہلے کی سب اِلہامی یعنی ایشوری کتابوں کی تصدیق کرتا ہے یعنی اُنھیں سچا ٹھہراتا ہے اور محمد صاحب اپنے سے پہلے کے "سب پیغمبروں کی مہر" یعنی اُن سب کی تصدیق کرنے والے ہیں ۔

اپنی پوری زندگی بھر محمد صاحب نے اپنے کو ایک معمولی اِنسان سے زیادہ کچھ نہیں کہا ۔ قرآن میں لکھا ہے—

"لوگ کہتے ہیں کہ ہم اُس وقت تک تمھاری بات ہرگز نہیں مانیں گے جب تک تم ہمارے لئے زمین سے پانی کا ایک چشمہ پھوڑکر نہ نکال دو، یا کھجوروں اور انگوروں کا ایک ایسا باغ نہ کھڑا کردو جس کے بیچ سے اپنے آپ پھوٹ کر دریا بہ رہے ہوں، یا اپنے زور سے آسمان کے ٹکڑے ٹکڑے کرکے ہمارے اُوپر نہ گرا دو، یا اللہ اور فرشتوں کو ہمارے سامنے لاکر نہ کھڑا کردو، یا اپنے لئے ایک سونے کا مکان نہ کھڑا کرلو، یا آسمان میں نہ چڑھ جاؤ اور وہاں سے ایک ایسی کتاب نہ لے آؤ جسے ہم پڑھ سکیں ۔ اِس سب کے جواب میں اِن سے کہدو کہ میرے رب کو یاد کرو، میں سوائے ایک اِنسان اور رسول کے اور کچھ نہیں ہوں ۔" (سو ۔ الف ۔ 17,90-93) ۔

"میں صرف تمھاری ہی طرح ایک آدمی ہوں، ہاں، اللہ نے مجھے یہ گیان دیا کہ تم سب کا ایک ہی اللہ ہے ۔ اِس لئے جو کوئی اپنے رب سے ملنے کی آس لگائے ہے اُسے چاہئے کہ نیک کام کرے اور سوائے ایک رب کے دوسرے کسی کی پوجا نہ کرے ۔" (سو ۔ 18، الف ۔ 110) ۔

محمد صاحب کی نجی زندگی سادگی اور فقیری کی زندگی تھی ۔ آخیر تک اُن کا رہن سہن حد درجے کا سادہ

सहता था. कभी कभी तीन तीन दिन उन्हें और उनके घर वालों को लगातार फ़ाक़ा करते हो जाते थे. सिर्फ़ खजूर और पानी पर उन्हें महीनों बीत जाते थे और उनके घर में चूल्हा न जलता था. वे अपने घर में अकसर अपने हाथ से झाड़ू देते थे. अपने हाथों अपनी बकरियों को दुहते थे. अपने हाथ से अपने कपड़ों में पैबन्द लगाते थे. अपने हाथ से अपनी चप्पल गांठते थे. खुद अपने ऊँट का खरहरा करते थे. खजूर की चटाई या नंगी जमीन पर सोते थे.

छोटे बड़े सब के साथ उनका बरताव सदा एकसा होता था. बच्चों से उन्हें ख़ास मुहब्बत थी. बीमारों को देखने जाते थे, मुसलिम या ग़ैर मुसलिम किसी का भी जनाज़ा (अरथी) जा रहा हो तो उठकर कुछ दूर उसके साथ जाते थे. उनका जीवनी लेखक सर विलियम म्यूर लिखता है—

"मुहम्मद साहब की ख़ास आदत थी छोटे आदमियों के साथ बड़ी मुहब्बत और इज़्ज़त का बरताव करना, झुक कर चलना, सब पर दया करना, किसी के कहे या किये का बुरा न मानना. अपने ऊपर क़ाबू रखना और दिल बड़ा और हाथ खुला रखना. ये मुहम्मद साहब के स्वभाव की ख़ास बातें थीं जो हर वक़्त चमकती रहती थीं और जिनकी वजह से आस-पास के सब लोग उनसे प्रेम करने लगते थे."

मुहम्मद साहब की ज़िन्दगी पर कारलाइल ने लिखा है—

"वह प्रकृति की बड़ी गोद से निकला हुआ ज़िन्दगी का एक ज़बरदस्त दहकता हुआ अङ्गारा था जो दुनिया के बनाने वाले के हुक्म से दुनिया को रोशन करने और दुनिया को जगाने के लिये आया था."

मुहम्मद साहब के उपदेशों ने न सिर्फ़ पिछड़े हुए अरबों में एक नई रूह फूँकी बलिक सैकड़ों बरस तक यूरोप को भी इल्म और तहज़ीब की रोशनी से जगमग रखा. इसलाम ने फ़लसफ़े, ज्योतिष, गणित, वैद्यक पर यूनानी और रोमी लेखकों की किताबों के तरजुमे करके उन्हें बरबादी से बचाया और उनको फैलाया, कारडोवा, बग़दाद, क़ैरो और सेवील की युनिवरसिटियों में इसलामी कलचर ने तरक़्क़ी पाई. जहां जहां इसलाम गया उसने वहां के इल्मो हुनर पर अपना असर डाला. मझले जमाने के यूरोप के मुल्कों पर जो अज्ञान का अंधेरा छाया हुआ था उस अंधेरे को उसने दूर किया और अन्ध विश्वास की जगह अक़्ल को भले बुरे की कसौटी बनाने पर ज़ोर दिया.

मशहूर फ़रांसीसी इतिहासकार गुयार्ड लिखता है—

"मझले ज़माने में इसलाम का इतिहास ख़ुद कलचर और तहज़ीब का इतिहास था. यूरोप अरबों का एहसानमन्द

اور مسلسل کبھی کبھی تین تین دن انہیں اور اُن کے گھر والوں کو لگاتار فاقہ کرتے ہوجاتے تھے. صرف کھجور اور پانی پر انہیں مہینوں بیت جاتے تھے اور اُن کے گھر میں چولہا نہ جلتا تھا. وہ اپنے گھر میں اکثر اپنے ہاتھ سے جھاڑو دیتے تھے. اپنے ہاتھوں اپنی بکریوں کو دوہتے تھے. اپنے ہاتھ سے اپنے کپڑوں میں پیوند لگاتے تھے. اپنے ہاتھ سے اپنی چپل گانٹھتے تھے. خود اپنے اُونٹ کا کھرھرا کرتے تھے. کھجور کی چٹائی یا ننگی زمین پر سوتے تھے.

چھوٹے بڑے سب کے ساتھ اُن کا برتاؤ سدا ایکسا ہوتا تھا. بچوں سے اُنہیں خاص محبت تھی. بیماروں کو دیکھنے جاتے تھے' مسلم یا غیر مسلم کسی کا بھی جنازہ (ارتھی) جارہی ہو تو اُٹھکر کچھ دور اُس کے ساتھ جاتے تھے. اُن کا جیونی لیکھک سر ولیم میور لکھتا ہے—

"محمد صاحب کی خاص عادت تھی چھوٹے آدمیوں کے ساتھ بڑی محبت اور عزت کا برتاؤ کرنا' جھک کر چلنا' سب پر دیا کرنا' کسی کے کہے یا کئے کا برا نہ ماننا' اپنے اُوپر قابو رکھنا اور دل بڑا اور ہاتھ کھلا رکھنا. یہ محمد صاحب کے سبھاؤ کی خاص باتیں تھیں جو ہر وقت چمکتی رہتی تھیں اور جن کی وجہ سے آس پاس کے سب لوگ اُن سے پریم کرنے لگتے تھے."

محمد صاحب کی زندگی پر کارلائل نے لکھا ہے—

"وہ پرکرتی کی بڑی گود سے نکلا ہوا زندگی کا ایک زبردست دھکتا ہوا انگارا تھا جو دنیا کے بنانے والے کے حکم سے دنیا کو روشن کرنے اور دنیا کو جگانے کے لئے آیا تھا."

محمد صاحب کے اُپدیشوں نے نہ صرف پچھڑے ہوئے عربوں میں ایک نئی روح پھونکی بلکہ سیکڑوں برس تک یورپ کو بھی علم اور تہذیب کی روشنی سے جگ مگ رکھا. اسلام نے فلسفے' جیوتش' گنت' ویدیک پر یونانی اور رومی لیکھکوں کی کتابوں کے ترجمے کرکے اُنہیں بربادی سے بچایا اور اُن کو پھیلایا. کارڈووا' بغداد' قیرو اور صیدل کی یونیورسٹیوں میں اسلامی کلچر نے ترقی پائی. جہاں جہاں اسلام گیا اُس نے وہاں کے علم و ہنر پر اپنا اثر ڈالا. منجھلے زمانے کے یورپ کے ملکوں پر جو اگیان کا اندھیرا چھایا ہوا تھا اُس اندھیرے کو اُس نے دور کیا اور اندھ وشواس کی جگہ عقل کو بھلے برے کی کسوٹی بنانے پر زور دیا.

مشہور فرانسیسی اِتہاسکار گویارڈ لکھتا ہے—

"منجھلے زمانے میں اسلام کا اِتہاس خود کلچر اور تہذیب کا اِتہاس تھا. یورپ عربوں کا احسانمند

है कि उन्होंने यूनानी साइंस और फ़लसफ़े को लापरवाही के अँधेरे ग़ारों से निकाल कर रोशनी में रखा और तोहफ़े के तौर पर उसे यूरोप को भेंट किया. उसी का नतीजा था कि यूरोप में ज्ञान और विज्ञान की नई लहर पैदा हुई जिसने बेकन को जन्म दिया. ईसा की सातवीं सदी में जबकि पुरानी दुनिया मौत के जबड़े में फँसी हुई तड़प रही थी अरबों ने उसमें इल्म और कलचर का नया ख़ून डाला और उसे ज़िन्दा किया. उन्होंने अरस्तू, अफ़लातून, उक़लैदस और आर्किमीडीज़ को भूली हुई याद की सन्दूक़ से बाहर निकाला और उनकी रचनाओं के अरबी तरजुमे यूरोप को भेंट किये.*"

"यह बात बिला शुबहा कही जा सकती है कि तेरहवीं सदी के बीच तक पच्छिमी दुनिया को अपनी तहज़ीब की जिस तरक़्क़ी का नाज़ है वह तरक़्क़ी इसलाम के ज़रिये से हुई."†

एच० जी० वेलस ने इसलाम की कामयाबी का ज़िकर करते हुए लिखा है—

"एक नई निगाह और नए जोश के साथ मुसलिम अरबों ने ज्ञान विज्ञान की वह सिलसिलेवार तरक़्क़ी जारी की जिसे यूनानियों ने शुरू करके छोड़ दिया था. अगर यूनानी वैज्ञानिक खोजों को जन्म देने वाली मां थे तो अरब उन्हें दूध पिलाकर पालने वाली धाय मां. आजकल की दुनिया ने जो रोशनी और ताक़त पुराने ज़माने से पाई है वह रोमियों के ज़रिये नहीं बल्कि अरबों के ज़रिये."

एक दूसरा इतिहासकार बेकमैन लिखता है—

"मुहम्मद के अनुयाइयों ने दुनिया के भले के लिये जो बहुत सी काम की खोजें कीं और ज्ञान विज्ञान को तरक़्क़ी दी उसके लिये हम यूरोप के रहने वाले उनके एहसानमन्द हैं. इसमें दो राय नहीं हो सकतीं कि इसलाम की रोशनी पच्छिमी दुनिया के लिये एक बहुत बड़ी बरकत साबित हुई जिसके लिये हमें मुहम्मद और इसलाम दोनों का मशकूर होना चाहिये.'※

इस तरह मुहम्मद साहब की ज़िन्दगी और उनके उपदेशों से न केवल अरबों की ही काया पलट हो गई, बल्कि यूरोप और दुनिया के लिये भी इसलाम ज्ञान-विज्ञान की एक चमकती हुई मशाल साबित हुआ. आजकल की यूरोप की तहज़ीब बहुत दरजे तक इसलाम की ही देन है.

हज़रत मुहम्मद ने करोड़ों इन्सानों की ज़िन्दगी को बदल दिया और उन्हें अज्ञान के अँधेरे से निकाल कर ज्ञान

ہے کہ اُنھوں نے یونانی سائنس اور فلسفے کو لاپرواہی کے اندھیرے غاروں سے نکالکر روشنی میں رکھا اور تحفے کے طور پر اُسے یورپ کو بھینٹ کیا۔ اُسی کا نتیجہ تھا کہ یورپ میں گیان اور وگیان کی نئی لہر پیدا ہوئی جس نے بیکن کو جنم دیا۔ عیسیٰ کی ساتویں صدی میں جبکہ پرانی دنیا موت کے جبڑے میں پھنسی ہوئی تڑپ رہی تھی عربوں نے اُس میں علم اور کلچر کا نیا خون ڈالا اور اُسے زندہ کیا۔ اُنھوں نے ارسطو' افلاطون' اُقلیدس اور آرکمیڈیز کو بھولی ہوئی یاد کی صندوق سے باہر نکالا اور اُن کی رچناؤں کے عربی ترجمے یورپ کو بھینٹ کیئے۔"*

"یہ بات بلا شبہ کہی جاسکتی ہے کہ تیرھویں صدی کے بیچ تک پچھمی دنیا کو اپنی تہذیب کی جس ترقی کا ناز ہے وہ ترقی اِسلام کے ذریعے سے ہوئی۔"†

ایچ۔ جی۔ ویلس نے اِسلام کی کامیابی کا ذکر کرتے ہوئے لکھا ہے—

"ایک نئی نگاہ اور نئے جوش کے ساتھ مسلم عربوں نے گیان وگیان کی وہ سلسلےوار ترقی جاری کی جسے یونانیوں نے شروع کرکے چھوڑ دیا تھا۔ اگر یونانی ویگیانک کھوجوں کو جنم دینے والی ماں تھے تو عرب اُنھیں دودھ پلاکر پالنے والی دھائے ماں۔ آجکل کی دنیا نے جو روشنی اور طاقت پرانے زمانے سے پائی ہے وہ رومیوں کے ذریعے نہیں بلکہ عربوں کے ذریعے۔"

ایک دوسرا اِتہاسکار بیکمین لکھتا ہے—

"محمد کے انویائیوں نے دنیا کے بھلے کے لئے جو بہت سی کام کی کھوجیں کیں اور گیان وگیان کو ترقی دی اُس کے لئے ہم یورپ کے رہنے والے اُن کے احسانمند ہیں۔ اِس میں دو رائے نہیں ہوسکتیں کہ اِسلام کی روشنی پچھمی دنیا کے لئے ایک بہت بڑی برکت ثابت ہوئی جس کے لئے ہمیں محمد اور اِسلام دونوں کا مشکور ہونا چاہئیے۔※

اِس طرح محمد صاحب کی زندگی اور اُن کے اُپدیشوں سے نہ کیول عربوں کی ہی کایاپلٹ ہوگئی' بلکہ یورپ اور دنیا کے لئے بھی اِسلام گیان وگیان کی ایک چمکتی ہوئی مشعل ثابت ہوا۔ آجکل کی یورپ کی تہذیب بہت درجے تک اِسلام کی ہی دین ہے۔

حضرت محمد نے کروڑوں انسانوں کی زندگی کو بدل دیا اور اُنھیں اگیان کے اندھیرے سے نکال کر گیان

* **Stanislas Guyard : Encyclopaedie des Sciences Religieuses, Paris 1888.**
† **W. E. Hocking : the Spirit of World Politics, pp. 458-59.**
※ **History of Inventions by Beckman.**

की रोशनी में ला खड़ा किया. इसलाम धर्म के बुनियादी उसूलों ने इसलाम को मज़हबे इनसानियत यानी मानव धर्म का रूप दिया. इसमें शुबहा नहीं कि सर्व धर्म सम् भाव, यानी सब मज़हबों को एक आदर की निगाह से देखो—इस उसूल का मुहम्मद साहब और इसलाम ने बड़े ज़ोरदार तरीक़े से प्रचार किया. क़ुरान में एक जगह नहीं बल्कि जगह-जगह मज़हबी आज़ादी का नारा बुलन्द किया गया है. यही वजह है कि इसलाम अपने जन्म के सौ बरस के अन्दर चीन से लेकर स्पेन तक फैल गया और उसने थोड़े वक़्त के अन्दर सैकड़ों बड़े से बड़े सूफ़ियों, फ़क़ीरों, फ़िलासफ़रों, वैज्ञानिकों, इतिहास लेखकों, खोजियों और विद्वानों को जन्म दिया जिनके एहसानों के बोझ से दुनिया दबी हुई है.

کی روشنی میں کھڑا کیا. اسلام دھرم کے بنیادی اصولوں نے اسلام کو مذھب انسانیت یعنی مانو دھرم کا روپ دیا. اس میں شبہ نہیں کہ سروودھرم سمبھاو یعنی سب مذھبوں کو ایک آدر کی نگاہ سے دیکھو—اس اصول کا محمد صاحب اور اسلام نے بڑے زوردار طریقے سے پرچار کیا ۔ قرآن میں ایک جگہ نہیں بلکہ جگہ جگہہ مذھبی آزادی کا نعرہ بلند کیا گیا ھے ۔ یہی وجہ ھے کہ اسلام اپنے جنم کے سو برس کے اندر چین سے لیکر اسپین تک پھیل گیا اور اس نے تھوڑے وقت کے اندر سیکڑوں بڑے سے بڑے صوفیوں، فقیروں، فلسفروں، ویگیانکوں، اتہاس لیکھکوں، کھوجیوں اور ودوانوں کو جنم دیا جن کے احسانوں کے بوجھ سے دنیا دبی ہوئی ھے ۔

अलबेरूनी

डाक्टर यदुनाथ सरकार

आज महमूद जैसा महान विजेता भी अपनी क़ब्र में गहरी नींद में सो रहा है. उसकी अज़ीमुश्शान राजधानी, जो किसी समय अब्बासी ख़लीफ़ाओं की राजधानी, बग़दाद से टक्कर लेती थी, आज महज़ एक मामूली सा सूबाई शहर रह गया है. महमूद के दरबार के आलिमों में संसार के मशहूर विद्वान फ़िरदौसी और अलबेरूनी थे, जिनकी वजह से आज भी महमूद का नाम इतिहास में रौशन है. फ़िरदौसी महान कवि था और अलबेरूनी मशहूर इतिहासकार, साइंसदां और फ़िलासफ़र. कहा जाता है कि अलबेरूनी का नाम सुनकर उसका समकालीन महान विद्वान इब्न सीना उसकी धाक से डर गया था.

यह बात अकसर देखी गई है कि बहुत कम लोग एक ही वक़्त में साइंसदां और फ़िलासफ़र हुये हैं. इन्हीं गिने चुने कुछ लोगों में अलबेरूनी की भी गिनती है. भारत में अलबेरूनी की यादगार मनाने का सबब यह है कि उसने भारत पर 'तहक़ीक़ुल-हिन्द' नामक मशहूर ग्रंथ लिखा है. इस ग्रंथ में ईसा से 1000 बरस बाद वाले भारत का वर्णन है. इस पुस्तक को लिखकर अलबेरूनी ने संसार के सामने उस समय के भारत की कल्चर, इतिहास, भूगोल, सामाजिक दशा, फ़लसफ़ा और इल्म का वसीअ और वास्तविक चित्र पेश किया है. यह पुस्तक सातवीं सदी वाले भारत तथा अकबर कालीन भारत को मिलाने में कड़ी का काम करती है सातवीं शताब्दी में प्रसिद्ध चीनी यात्रियों ने भारत की सैर की थी और उन्होंने उस समय की भारत की हालत तथा इतिहास का वर्णन किया है. उसके बाद 'तहक़ीक़ुल-हिन्द' के अलावा कोई दूसरी पुस्तक नहीं जिससे हमें भारत के इतिहास का पता चले. अकबर के समय में स० 1590 में 'आईने-अकबरी' लिखी गई. इस तरह सातवीं सदी से ग्यारहवीं सदी तक के भारत का असली पता संसार को अलबेरूनी की पुस्तक से ही मिलता है.

अलबेरूनी की ज़िन्दगी और काम

अलबेरूनी का पूरा नाम अबु रैहान मुहम्मद था. उसका जन्म 362 हिज्री या सितम्बर 973 ई० में ख़ीव नामक स्थान पर हुआ था. यह स्थान मध्य एशिया में यूराल सागर के किनारे है. पचहत्तर वर्ष की उम्र में 13 सितम्बर सन् 1048 को अलबेरूनी की मौत हुई. जब अलबेरूनी के

البیرونی

ڈاکٹر یدو ناتھ سرکار

آج محمود جیسا مہان وجیتا بھی اپنی قبر میں گہری نیند میں سو رہا ہے ۔ اس کی عظیم الشان راجدھانی' جو کسی سمے عباسی خلیفاؤں کی راجدھانی' بغداد سے ٹکر لیتی تھ' آج محض ایک معمولی سا صوبائی شہر رہ گیا ہے ۔ محمود کے دربار کے عالموں میں سنسار کے مشہور ودوان فردوسی اور البیرونی تھے' جن کی وجہہ سے آج بھی محمود کا نام اِتہاس میں روشن ہے ۔ فردوسی مہان کوی تھا اور البیرونی مشہور اِتہاسکار' سائنسداں اور فلسفر ۔ کہا جاتا ہے کہ البیرونی کا نام سنکر اس کا سمکالین مہان ودوان ابن سینا اس کی دھاک سے ڈر گیا تھا ۔

یہ بات اکثر دیکھی گئی ہے کہ بہت کم لوگ ایک ہی وقت میں سائنسداں اور فلسفر ہوئے ہیں ۔ انہیں گنے چنے کچھ لوگوں میں البیرونی کی بھی گنتی ہے ۔ بھارت میں البیرونی کی یادگار منانے کا سبب یہ ہے کہ اس نے بھارت پر 'تحقیق الہند' نامک مشہور گرنتھ لکھا ہے ۔ اس گرنتھ میں عیسیٰ سے 1000 برس بعد والے بھارت کا ورنن ہے۔ اس پستک کو لکھ کر البیرونی نے سنسار کے سامنے اس سمے کے بھارت کی کلچر' اِتہاس' بھوگول' سماجک دشا' فلسفہ اور علم کا وسیع اور واستوک چتر پیش کیا ہے ۔ یہ پستک ساتویں صدی والے بھارت تتھا اکبر کالین بھارت کو ملانے میں کڑی کا کام کرتی ہے ۔ ساتویں شتابدی میں پرسدھ چینی یاتریوں نے بھارت کی سیر کی تھی اور انہوں نے اس سمے کی بھارت کی حالت تتھا اِتہاس کا ورنن کیا ہے ۔ اس کے بعد 'تحقیق الہند' کے علاوہ کوئی دوسری پستک نہیں جس سے ہمیں بھارت کے اتہاس کا پتہ چلے ۔ اکبر کے سمے میں 1590 میں ''آئین اکبری' لکھی گئی ۔ اِس طرح ساتویں صدی سے گیارھویں صدی تک کے بھارت کا اصلی پتہ سنسار کو البیرونی کی پستک سے ہی ملتا ہے ۔

البیرونی کی زندگی اور کام

البیرونی کا پورا نام ابوریحان محمد تھا ۔ اس کا جنم 362 ھجری یا ستمبر 973ء میں خیو نامک استھان پر ہوا تھا ۔ یہ استھان مدھیہ ایشیا میں یورال ساگر کے کنارے ہے ۔ پچھتر ورش کی عمر میں 13 ستمبر سن 1048 کو البیرونی کی موت ہوئی ۔ جب البیرونی کے

[illegible] को महमूद [illegible] अपने अधीन कर लिया था उसके सुलतान ने अलबेरूनी को महमूद के पास अपना ऐलची बनाकर भेजा. महमूद के साथ-साथ अल बेरूनी भी भारत आया. महमूद की भारत विजय से पञ्जाब का दरवाजा मुसलमानों के लिये खुल गया था. पञ्जाब ही भारतीय आर्यों का पहला निवास स्थान था. अलबेरूनी पञ्जाब में कई वर्षों तक रहा और वहां के पंडितों से संस्कृत, हिन्दू दर्शनशास्त्र, विज्ञान और धर्म शिक्षा की तालीम ली. उसने भारतीयों को अरबी पुस्तकों के जरिये प्राचीन यूनानी विज्ञान तथा दर्शनशास्त्र की शिक्षा दी. अलबेरूनी खुद यूनानी भाषा नहीं जानता था पर सीरिया और स्पेन के राजाओं के समय में यूनानी पुस्तकों के अरबी भाषा में जो अनुवाद हुए थे उनके जरिये उसने प्राचीन यूनानी विज्ञान तथा दर्शनशास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया था. अरबी भाषा में लिखी गई अपनी पुस्तक 'तहक़ीकुल-हिन्द' में उसने भारतीय धर्म, दर्शनशास्त्र, भाषा, काल विज्ञान, खगोल, ज्योतिष, रीति-रिवाज, क़ानून और फलित ज्योतिष आदि का पूरा पूरा और ठीक बयान किया है. यह पुस्तक 1030 ई० के क़रीब लिखी गई थी. इस पुस्तक का अनुवाद डा० सचायु ने अंग्रेजी भाषा में सन् 1888 में किया है. अलबेरूनी जब 421 हिजरी, (1030 ई०) में लौटकर ग़ज़नी गया तो उसने 'क़ानूने-मसूदी' नामक पुस्तक लिखी जो एक प्रकार की भौगोलिक तथा खगोल ज्योतिष सम्बन्धी इनसाइक्लोपीडिया है. इस पुस्तक का हवाला बाद के लेखकों और खासकर अबुल फ़िदा ने दिया है. अबुल फ़िदा प्रसिद्ध भूगोल तथा ज्योतिष शास्त्री था.

अलबेरूनी को साइंस के दायरे में जितना अधिक ज्ञान हासिल था उसका पता हमको उसकी लिखी गई पुस्तकों से मिलता है. विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकों में 'किताबुल-सैदान', 'किताबुल-जवाहर' और 'अलतहफ़ीम' हैं. 'सैदान' में इलाज में प्रयोग होने वाली औषधियों का बयान है. 'किताबुल-जवाहर' में मणि और हीरे जवाहिरात आदि का वैज्ञानिक वर्णन और 'अलतहफ़ीम' में फलित ज्योतिष का वसीअ ज़िक्र है. 'अलतहफ़ीम' का अंग्रेजी तरजुमा राइट (Wright) ने 1934 में किया है. इन ग्रंथों के अलावा उसने अपने आत्मचरित्र पर एक पुस्तक लिखी है और रेखागणित तथा ज्योतिष पर कई छोटी-छोटी क़ीमती पुस्तकें लिखी हैं. उसकी सबसे मशहूर पुस्तक 'असरुल-बाक़ी' है जिसका तरजुमा डा० साचायु ने 1879 ई० में किया है और उसका नाम "वेस्टिजेज आफ दि पास्ट" या "क्रोनोलाजी आफ दि ऐनशेण्ट नेशन्स" है. इस पुस्तक में एशिया, अफ्रीका और यूरोप के देशों का साफ और पूरा भौगोलिक तथा ऐतिहासिक वर्णन है.

[illegible] کو اپنے ادھین کر لیا تو اس کے سلطان نے البیرونی کو محمود کے پاس اپنا ایلچی بنا کر بھیجا. محمود کے ساتھ ساتھ البیرونی بھی بھارت آیا. محمود کی بھارت وجئے سے پنجاب کا دروازہ مسلمانوں کے لئے کھل گیا تھا. پنجاب ہی بھارتیہ آریوں کا پہلا نواس استھان تھا. البیرونی پنجاب میں کئی ورشوں تک رہا اور وہاں کے پنڈتوں سے سنسکرت، ہندو درشن شاستر، وگیان اور دھرم شکشا کی تعلیم لی . اس نے بھارتیوں کو عربی پستکوں کے ذریعے پراچین یونانی وگیان تتھا درشن شاستر کی شکشا دی . البیرونی خود یونانی بھاشا نہیں جانتا تھا پر سیریا اور اسپین کے راجاؤں کے سمے میں یونانی پستکوں کے عربی بھاشا میں جو انواد ہوئے تھے اُن کے ذریعے اُس نے پراچین یونانی وگیان تتھا درشن شاستر کا گیان پراپت کیا تھا . عربی بھاشا میں لکھی گئی اپنی پستک 'تحقیق الہند' میں اُس نے بھارتیہ دھرم، درشن شاستر، بھاشا، کال وگیان، کھگول، جیوتش، ریتی رواج، قانون اور پھلت جیوتش آدی کا پورا پورا اور ٹھیک بیان کیا ہے . یہ پستک 1030ع کے قریب لکھی گئی تھی . اِس پستک کا انواد ڈاکٹر سچایو نے انگریزی بھاشا میں سن 1888 میں کیا ہے . البیرونی جب 421 ھجری' (1030ع) میں لوٹکر غزنی گیا تو اُس نے 'قانون مسعودی' نامک پستک لکھی جو ایک پرکار کی بھوگولک تتھا کھگول جیوتش سمبندھی انسائیکلوپیڈیا ہے . اِس پستک کا حوالہ بعد کے لیکھکوں اور خاصکر ابوالفدا نے دیا ہے . ابوالفدا پرسدھ بھوگول تتھا جیوتش شاستری تھا .

البیرونی کو سائنس کے دایرے میں جتنا ادھک گیان حاصل تھا اُس کا پتہ ہمکو اُس کی لکھی گئی پستکوں سے ملتا ہے. وگیان سمبندھی پستکوں میں 'کتاب السیسان' 'کتاب الجواہر' اور التہفیم ہیں . 'سیدان' میں علاج میں پریوگ ہونے والی اوشدھیوں کا بیان ہے' 'کتاب الجواہر' میں منی اور ہیرے جواہرات آدی کا ویگیانک ورنن اور التہفیم میں پھلت جیوتش کا وسیع ذکر ہے . 'التہفیم' کا انگریزی ترجمہ رائٹ (Wright) نے 1934 میں کیا ہے . اِن گرنتھوں کے علاوہ اُس نے اپنے آتم چرتر پر ایک پستک لکھی ہے اور ریکھاگنت تتھا جیوتش پر کئی چھوٹی چھوٹی قیمتی پستکیں لکھی ہیں . اُس کی سب سے مشہور پستک 'اثرالباقی' ہے جس کا ترجمہ ڈاکٹر ساچایو نے 1879ع میں کیا ہے اور اُس کا نام "ویسٹیجیز آف دی پاسٹ" یا "کرونولوجی آف دی اینشینٹ نیشنس" ہے . اِس پستک میں ایشیا' افریقہ اور یورپ کے دیشوں کا صاف اور پورا بھوگولک تتھا ایتہاسک ورنن ہے .

[illegible] लेखक लिखता है—"कलम उसके हाथ से कभी बाहर नहीं रहती और उसकी आँखें कभी भी पुस्तक के बाहर नहीं होतीं और उसका ध्यान हमेशा अध्ययन की ओर लगा रहता है." बैहक़ी नामक ग़ज़नी का इतिहासकार लिखता है—"अबू रैहान (अलबेरूनी) तुलना से परे था, वह अदब, फ़न तथा इल्म में अपने समय के सभी लोगों से बढ़कर था. वह बड़ा सच्चा था. वह जो कुछ भी लिखता था उसे कसौटी पर कसकर लिखता था. एक सच्चे खोजी की यही सच्ची निशानी है." उन्नीसवीं सदी का एक अंग्रेज समालोचक लिखता है—"अबुरैहान ही केवल ऐसा अरब लेखक है जिसने ऐतिहासिक छानबीन की असली भावना से पूर्व की क़दीमी कल्चर की खोज की है. अलबेरूनी की सादगी, इल्म तथा आचरण का पता इस बात से भली भाँति चलता है कि जब उसने सुल्तान मसूद को उसकी जीवनी 'क़ानूने-मसूदी' लिखकर भेंट की तो मसूद ने हाथी के बोझ भर चाँदी की सिक्के उसे इनाम में दिये पर अलबेरूनी ने उसे शाही खज़ाने में वापस कर दिया.

'तहक़ीक़ुल-हिन्द' के अन्त में अलबेरूनी ने लिखा है—"मैंने अरबी में दो संस्कृत की पुस्तकों का तरजुमा किया है, उनमें से एक का नाम 'सांख्य' है जिसमें संसार की मौजूदा सभी चीज़ों की पैदायश और गुणों का वर्णन है और दूसरी पुस्तक 'पातंजलि' है जिसमें जिस्म से रूह किस प्रकार मुक्ति पाती है इसका ज़िक्र है."

'तहक़ीक़ुल-हिन्द' में अलबेरूनी ने उत्तर पश्चिमी पंजाब, काबुल और उत्तरी भारत के उन मुख्तलिफ़ राजघरानों का बयान किया है जिनसे महमूद को ताल्लुक़ हुआ. उसने सुल्तान महमूद के हमले की ठीक तिथि दी है और सोमनाथ के मन्दिर के असली स्थान का वर्णन किया है. उसने उस कथा का भी वर्णन किया है जिसके मुताबिक़ सोमनाथ का मन्दिर बना. उसके बाद हिन्दुओं की उस समय की दार्शनिक परम्पराओं तथा रीत-रिवाजों, धार्मिक विश्वासों, आचार-विचारों तथा अमली रीतियों का वर्णन किया है जैसी कि वे 1030 में थीं. पुस्तक में जो भौगोलिक बयान है वह बड़े काम का है. हमें अलबेरूनी के ज़रिये इस तकलीफ़देह कहानी का पता चलता है कि किस तरह हज़ारों हिन्दू महमूद द्वारा ग़ुलाम बनाकर भारत से जबरन ले जाये गये और फिर वह कितने वर्षों के बाद किस दशा में भारत लौटे और फिर किस तरह पंचगव्य से उनकी शुद्धि हुई और वे फिर हिन्दू धर्म में दाख़िल हुये.

अलबेरूनी और अबुलफ़ज़ल

अलबेरूनी के क़रीब 600 वर्ष बाद अबुलफ़ज़ल की लिखी 'आईने अकबरी' नामक पुस्तक में हिन्दू ज्योतिष, इतिहास

البیرونی کا سب سے پہلا جیونی لیکھک [illegible] کے ہاتھ سے کبھی باہر نہیں رہتی اور اُس کی آنکھیں کبھی بھی پستک کے باہر نہیں ہوتیں اور اُس کا دھیان ہمیشہ ادھین کی اور لگا رہتا ہے۔" بیہقی نامک غزنی کا اِتہاسکار لکھتا ہے—"ابوریحان (البیرونی) تُلنا سے پرے تھا، وہ ادب، فن تتھا علم میں اپنے سمے کے سبھی لوگوں سے بڑھ کر تھا۔ وہ بڑا سچا تھا۔ وہ جو کچھ بھی لکھتا تھا اُسے کسوٹی پر کس کر لکھتا تھا۔ ایک سچے کھوجی کی یہی سچی نشانی ہے۔" اُنیسویں صدی کا ایک انگریز سمالوچک لکھتا ہے—"ابوریحان ہی کیول ایسا عرب لیکھک ہے جس نے ایتہاسک چھان بین کی اصلی بھاؤنا سے پورو کی قدیمی کلچر کی کھوج کی ہے۔ البیرونی کی سادگی، علم تتھا آچرن کا پتہ اِس بات سے بھلی بھانتی چلتا ہے کہ جب اُس نے سلطان مسعود کو اُس کی جیونی 'قانونِ مسعودی' لکھ کر بھینٹ کی تو مسعود نے ہاتھی کے بوجھ بھر چاندی کے سکے اُسے انعام میں دیئے پر البیرونی نے اُسے شاہی خزانے میں واپس کر دیا۔

'تحقیق الہند' کے انت میں البیرونی نے لکھا ہے—"میں نے عربی میں دو سنسکرت کی پستکوں کا ترجمہ کیا ہے، اُن میں سے ایک کا نام 'سانکھیہ' ہے جس میں سنسار کی موجودہ سبھی چیزوں کی پیدائش اور گُنوں کا ورنن ہے اور دوسری پستک 'پاتنجلی' ہے جس میں جسم سے روح کس پرکار مکتی پاتی ہے اِس کا ذکر ہے۔"

'تحقیق الہند' میں البیرونی نے اُتری پشچمی پنجاب، کابل اور اُتری بھارت کے اُن مختلف راج گھرانوں کا بیان کیا ہے جن سے محمود کو تعلق ہوا۔ اُس نے سلطان محمود کے حملے کی ٹھیک تتھی دی ہے اور سومناتھ کے مندر کے اصلی استھان کا ورنن کیا ہے۔ اُس نے اُس کتھا کا بھی ورنن کیا ہے جس کے مطابق سومناتھ کا مندر بنا۔ اُس کے بعد ہندوؤں کی اُس سمے کی دارشنک پرمپراؤں تتھا ریت رواجوں، دھارمک وشواسوں، آچار وچاروں تتھا عملی ریتیوں کا ورنن کیا ہے جیسی کہ وے 1030 میں تھیں۔ پستک میں جو بھوگولک بیان ہے وہ بڑے کام کا ہے۔ ہمیں البیرونی کے ذریعے اِس تکلیف دہ کہانی کا پتہ چلتا ہے کہ کس طرح ہزاروں ہندو محمود دوارا غلام بناکر بھارت سے جبراً لے جائے گئے اور پھر وہ کتنے ورشوں کے بعد کس دشا میں بھارت لوٹے اور پھر کس طرح پنچگویہ سے اُن کی شدھی ہوئی اور وے پھر ہندو دھرم میں داخل ہوئے۔

البیرونی اور ابوالفضل

البیرونی کے قریب 600 ورش بعد ابوالفضل کی لکھی 'آئینِ اکبری' نامک پستک میں ہندو جیوتش، اِتہاس

विज्ञान, रीति रिवाज, आचार विचार और परम्पराओं का पंडिताना बयान हमें पढ़ने को मिलता है. अबुलफ़ज़ल को अपनी पुस्तक आईने अकबरी के लिखने में सम्राट अकबर की पूरी मदद हासिल थी जबकि अलबेरूनी ने अपनी मर्ज़ी से महज़ अपने बूते पर 'तहक़ीक़ुल अदब' लिखा था.

कर्नल जोरेट, जो 'आईने-अकबरी' का होशियार अनुवाकार माना जाता है, लिखता है—

"मुझे इसका पूरा ऐतक़ाद है कि अबुल फ़ज़ल 'आईने-अकबरी' के लिये अलबेरूनी का रिणी है. अलबेरूनी का अध्ययन पांडित्यपूर्ण था. उसने हर स्थान पर अपने पाठों में संस्कृत की उन पुस्तकों का हवाला दिया है जहां से वह लिये गये हैं. चूंकि वह अरबी भाषा में अनुवादित यूनानी साहित्य से भी भली भांति वाक़िफ़ था इसलिये वह यूनानी और संस्कृत दोनों में भली प्रकार तुलना कर सकता था और ठीक नतीजे पर पहुँच सकता था. अबुल फ़ज़ल इसके बरख़िलाफ़ था. अलबेरूनी ने जो कुछ लिखा है वह अध्ययन पांडित्य और वैज्ञानिक तर्क वितर्क के आधार पर लिखा है पर अबुल फ़ज़ल ने या तो सीधे किसी पुस्तक का अनुवाद किया है या सुनकर कोई बात बिना तर्क पर कसे हुए ही लिख डाली है. अबुल फ़ज़ल संस्कृत या यूनानी भाषा दो में से किसी को भी नहीं जानता था. डब्लू क्रुक ने लिखा है कि अलबेरूनी के चतुर दिमाग़ ने इस बात का पता लगाने में उस समय भी कामयाबी हासिल की थी कि भौगोलिक रूप से अलग होने के कारण भारतीयों में अपने धर्म, राष्ट्रीयता तथा रीति-रिवाजों के तरफ़ अधिक विश्वास उत्पन्न हो गया है. उसने इस बात को उसी समय भांप लिया था कि 'हिन्दुओं का विश्वास है कि उनके देश से बढ़कर दूसरा देश नहीं, उनके राष्ट्र की भांति कोई दूसरा राष्ट्र नहीं और उनके विज्ञान जैसा कोई दूसरा विज्ञान नहीं.'"

अलबेरूनी के मुताल्लिक़ आख़री फ़ैसला

बहुत बड़ा आलिम और पंडित होते हुए भी अलबेरूनी ने इस्लाम में नई रूह नहीं फूँकी और अलमामूं के समय की मुअतज़िली सम्प्रदाय की भांति बुद्धिवाद का प्रचार नहीं किया. यदि इस्लाम में कभी भी बुद्धिवाद (Rationalism) पहुँचा तो उलेमाओं ने उसे खिड़की के बाहर फेंक दिया. इसी तरह अलबेरूनी की गिनती केवल ज्योतिषी, इतिहासकार, गणितज्ञ और जादूगर की ही बनी रही जो कि अपनी गणना से भविष्य की घटनाओं की सचाई बताता रहा. सुल्तान महमूद उसकी अजीबो ग़रीब ताक़त से परेशान था और उसे मार डालना चाहता था.

कुछ भी हो अलबेरूनी खुले दिमाग़ का साफ़गो आदमी था. इस सम्बन्ध में इस्लाम के इतिहास में उसका कोई

[illegible] ... اِتہاس کلا ہے ...
...وں میں پڑھنے کو ملتا ہے . ابوالفضل کو اپنی پستک
آئین اکبری کے لکھنے میں سمراٹ اکبر کی پوری مدد حاصل
تھی جبکہ البیرونی نے اپنی مرضی سے محض اپنے بوتے پر
'تحقیق الادب' لکھا تھا .

کرنل جوریٹ، جو 'آئین اکبری' کا ہوشیار ترجمہ‌کار مانا جاتا ہے، لکھتا ہے—

''مجھے اس کا پورا اعتقاد ہے کہ ابوالفضل 'آئین اکبری' کے لئے البیرونی کا رنی ہے . البیرونی کا ادھین پانڈتیہ پورن تھا . اُس نے ہر استھان پر اپنے پاٹھوں میں سنسکرت کی اُن پستکوں کا حوالہ دیا ہے جہاں سے وہ لئے گئے ہیں . چونکہ وہ عربی بھاشا میں انوادت یونانی ساھتیہ سے بھی بھلی بھانت واقف تھا اِس لئے وہ یونانی اور سنسکرت دونوں میں بھلی پرکار تولنا کرسکتا تھا اور ٹھیک نتیجے پر پہونچ سکتا تھا . ابوالفضل اِس کے برخلاف تھا . البیرونی نے جو کچھ لکھا ہے وہ ادھین' پانڈتیہ اور ویگیانک ترک وترک کے آدھار پر لکھا ہے پر ابوالفضل نے یا تو سیدھے کسی' پستک کا انواد کیا ہے یا سنکر کوئی بات بنا ترک پر کسے ہوئے ہی لکھ ڈالی ہے . ابوالفضل سنسکرت یا یونانی بھاشا دو میں سے کسی کو بھی نہیں جانتا تھا . ڈبلو کروک نے لکھا ہے کہ البیرونی کے چتور دماغ نے اِس بات کا پتہ لگانے میں اُس سمے بھی کامیابی حاصل کی تھی کہ بھوگولک روپ سے الگ ہونے کے کارن بھارتیوں میں اپنے دھرم' راشٹریتا تتھا ریت‌رواجوں کے طرف ادھک وشواس اُتپن ہوگیا ہے . اس نے اِس بات کو اسی سمے بھانپ لیا تھا کہ 'ھندؤں کا وشواس ہے کہ اُن کے دیش سے بڑھکر دوسرا دیش نہیں' اُن کے راشٹر کی بھانت کوئی دوسرا راشٹر نہیں اور اُن کے وگیان جیسا کوئی دوسرا وگیان نہیں .''

البیرونی کے متعلق آخری فیصلہ

بہت بڑا عالم اور پنڈت ہوتے ہوئے بھی البیرونی نے اِسلام میں نئی روح نہیں پھونکی اور المامون کے سمے کی معتزلی سمپردائے کی بھانت بدھی‌واد کا پرچار نہیں کیا . یدی اِسلام میں کبھی بھی بدھی‌واد (Rationalism) پہونچا تو علماؤں نے اُسے کھڑکی کے باہر پھینک دیا . اِسی طرح البیرونی کی گنتی کیول جیوتشی' اِتہاسکار گنتگیہ اور جادوگر کی ہی بنی رہی جو کہ اپنی گنتا سے بھوشیہ کی گھٹناؤں کی سچائی بتاتا رہا . سلطان محمود اُس کی عجیب و غریب طاقت سے پریشان تھا اور اُسے مار ڈالنا چاہتا تھا .

کچھ بھی ہو البیرونی کھلے دماغ کا صاف‌گو آدمی تھا . اِس سمبندھ میں اِسلام کے اِتہاس میں اُس کا کوئی

[illegible]नी नहीं है [illegible] दूसरी [illegible] की ओर बढ़ाया और दूसरा हाथ भारत की ओर और यह काम उसने [illegible] लोगों से ही किया. अलबेरूनी ने जिस दिली प्यास के आजीवन अथक मेहनत के साथ काम किया है उसकी दूसरी मिसाल शायद ही इसलामी दायरे में कोई मिले.

[illegible] نہیں ہے . اس نے ایک [illegible] اور ایک ہاتھ [illegible] کی اور بڑھایا اور دوسرا ہاتھ بھارت کی اور اور یہ کام اس نے مولک [illegible] سے ہی کیا . البیرونی نے جس دلی پیاس سے آجیون انیک محنت کے ساتھ کام کیا ہے اس کی دوسری مثال شاید ہی اسلامی دایرے میں کوئی ملے .

भारतीय संस्कृति

بھارتیہ سنسکرتی

श्री कृष्णदत्त वाजपेयी, एम० ए०

हमें यहां भारतीय संस्कृति (हिन्दुस्तानी कल्चर) के बारे में कुछ विचार करना है. भारतीय संस्कृति में रूहानियत को माद्दी पहलू के मुक़ाबले में ज्यादा अहमीयत दी गई है. यदि हम अपने विशाल प्राचीन साहित्य को देखें तो मालूम होगा कि हमारे यहां आत्मज्ञान का स्थान बहुत ऊंचा रहा है. 'आत्मनं विजानीहि' (आत्म को ख़ास तौर से जानो)—यही भारतीय रिषियों का असली पैग़ाम था. लेकिन इसके साथ ही जिस्मानी और मानसिक तरक़्क़ी की ओर से भी हम बेबहरा नहीं रहे. रूहानी तरक़्क़ी के साथ जिस्मानी और मानसिक तरक़्क़ी हमारी संस्कृति का मक़सद रहा है. कर्मेन्द्रिय, मन और बुद्धि की लोक कल्याणकारी व्यवस्था पर हमारी संस्कृति की इमारत खड़ी हुई. सत्य, अहिंसा, त्याग और सेवा—ये इस इमारत के चार बड़े खम्भे रहे हैं, जिन्होंने युग-युगों तक उसे मज़बूती और स्थायित्व दिया और उसे नष्ट होने से बचाया है.

भारतीय संस्कृति का मक़सद संकुचित न होकर व्यापक रहा है. भारत के प्राचीन इतिहास को उठाकर देखिये. हज़ारों वर्ष के लम्बे काल में कितनी ही अन्दरूनी और बाहरी विचार धाराओं को लेकर भारतीय संस्कृति ने उन्हें पचा लिया. विचारों की इतनी आज़ादी और कहां मिलेगी? हमारे धर्म, दर्शन, कला, साहित्य सभी में इस आज़ादी की नुमायश मिलेगी. हठधर्मी को हमारे यहां अच्छी बात नहीं माना गया है. गीता में श्री कृष्ण अर्जुन को ज्ञान-विज्ञान का उपदेश देने के बाद भी उससे कहते हैं कि 'हे अर्जुन! मैंने तुझे गहरा से गहरा ज्ञान का मर्म बताया इस पर तू विचार कर और विचार करने के बाद तुझे जो ठीक जान पड़े वह कर.

شری کرشن دت باجپئی، ایم . اے .

ہمیں یہاں بھارتیہ سنسکرتی (ہندستانی کلچر) کے بارے میں کچھ وچار کرنا ہے . بھارتیہ سنسکرتی میں روحانیت کو مادی پہلو کے مقابلہ میں زیادہ اہمیت دی گئی ہے . یدی ہم اپنے وشال پراچین ساہتیہ کو دیکھیں تو معلوم ہوگا کہ ہمارے یہاں آتم گیان کا استھان بہت اونچا رہا ہے . 'آتمنں وجانیہی (آتم کو خاص طور سے جانو)—یہی بھارتیہ رشیوں کا اصلی پیغام تھا . لیکن اِس کے ساتھ ہی جسمانی اور مانسک ترقی کی اور سے بھی ہم بےبہرہ نہیں رہے . روحانی ترقی کے ساتھ جسمانی اور مانسک ترقی ہماری سنسکرتی کا مقصد رہا ہے . کرمیندریہ' من اور بدھی کی لوک کلیانکاری ویوستھا پر ہماری سنسکرتی کی عمارت کھڑی ہوئی . ستیہ' اہنسا' تیاگ اور سیوا—یہ اِس عمارت کے چار بڑے کھمبے رہے ہیں' جنہوں نے یگ یگوں تک اُسے مضبوطی اور استھایتو دیا اور اُسے نشٹ ہونے سے بچایا ہے .

بھارتیہ سنسکرتی کا مقصد سنکوچت نہ ہوکر ویاپک رہا ہے. بھارت کے پراچین اِتہاس کو اُٹھاکر دیکھئے. ہزاروں ورش کے لمبے کال میں کتنی ہی اندرونی اور باہری وچار دھاراؤں کو لیکر بھارتیہ سنسکرتی نے انہیں پچا لیا . وچاروں کی اتنی آزادی اور کہاں ملیگی ؟ ہمارے دھرم' درشن' کلا' ساہتیہ سبھی میں اِس آزادی کی نمائش ملیگی . ہٹ دھرمی کو ہمارے یہاں اچھی بات نہیں مانا گیا ہے . گیتا میں شری کرشن ارجن کو گیان وگیان کا اُپدیش دینے کے بعد بھی اُس سے کہتے ہیں کہ "ہے ارجن ! میں نے تجھے گہرا سے گہرا گیان کا مرم بتلایا اِس پر تو وچار کر اور وچار کرنے کے بعد تجھے جو ٹھیک جان پڑے وہ کر ."

विचारों की इस आजादी के कारण ही हमारे यहां श्रुति, स्मृति, षड्दर्शन, बौद्ध एवं जैन दर्शन, लोकायत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत, द्वैताद्वैत आदि कितने ही दर्शनों और मत मतांतरों की रचना हुई. आधुनिक काल में भी अनेक महात्माओं और विद्वानों ने विचारों के अपने अपने नजरिये पेश किये हैं. लेकिन जीवन-दर्शन के इन मुख्तलिफ़ नजरियों के होते हुए तथा इस विशाल देश में आबहवा की विविधता के कारण बाहरी रूप में अन्तर होते हुए भी हमारी संस्कृति की आत्मा एक रही है. कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक तथा सौराष्ट्र से लेकर असम तक सारा देश एक ही कल्चर से जिन्दगी का रस लेता रहा है. विविधता में एकता की यह भावना भारत की विशेषता है.

इतिहास से पता चलता है कि एक दीर्घकाल तक संसार के अन्य देशवासियों ने भी इससे लाभ उठाया. बहुत प्राचीन समय में भारत ने मिस्र, असीरिया और बेबीलोन से तिजारती और कल्चरी मेलजोल क़ायम किये. मौर्य सम्राट् अशोक ने असीरिया, मिस्र, मेसीडोनिया, एपीरस, ताम्रपर्णी, सुवर्णभूमि आदि अनेक देशों को अपनी 'धर्म-विजय' का संदेश भेजा. ई० पूर्व दूसरी शताब्दी के अन्त से मध्य एशिया में भारतीय नवाबादियों की शुरूआत हुई. धीरे-धीरे वहां कोक्कुद, खोतन, कल्मद, भरूक, कूची, अग्निदेश आदि राज्यों में भारती धर्म, कला, भाषा और साहित्य का विकास हुआ. इनमें से कूची और खोतन (कुस्तन) भारतीय संस्कृति के प्रधान केन्द्र हुए. खोतन के राजाओं के नाम विजयसंभव, विजयवीर, विजयजय, विजय धर्म आदि मिलते हैं. वहां का 'गोमति विहार' बौद्ध शिक्षा का बहुत बड़ा केन्द्र था. चौथी शताब्दी के अन्त में जब चीनी यात्री फ़ाहियान वहां गया तब महायान मतावलम्बी 3,000 बौद्ध भिक्षु उस विहार में रहते थे, तथा वहां धर्म यात्राएं बड़े समारोह के साथ चलती थीं.

ईसा की पहली छै सदियों में दक्षिण-पूर्वी एशिया में कई भारतीय बस्तियों की स्थापना हुई. हिन्द चीन के एक बड़े भाग का नाम 'सुवर्ण भूमि' तथा हिन्देशिया के द्वीपों का नाम 'सुवर्ण द्वीप' प्रसिद्ध हुआ. वहां जिन भारतीय राज्यों की स्थापना हुई उनके नाम कम्बुज चपा. कठार पांडुरंग, श्री विजय, मालव, दशार्ण, गंधार आदि मिलते हैं. इसी तरह अनेक नगरों के नाम अयोध्या, वैशाली, मथुरा, श्री क्षेत्र तक्षशिला, इलावती, कुसुमनगर, रामावती, धान्यवती, द्वारवती, विक्रमपुर आदि मिलते हैं. सुवर्णभूमि तथा सुवर्ण द्वीप में भारतीय रहन-सहन रीति रिवाज, लिपि, भाषा और कला का प्रचार हुआ. वहां के आदिम निवासियों के साथ भारतीयों ने जिस प्रेम और सहिष्णुता का बर्ताव किया

وچاروں کی اس آزادی کے کارن ہی ہمارے یہاں شروتی، سمرتی، شٹ درشن، بودھ ایوم جین درشن، لوکایت، ادویت، وششٹادویت، شدھادویت، دویتادویت آدی کتنے ہی درشنوں اور مت متانتروں کی رچنا ہوئی۔ آدھونک کال میں بھی انیک مہاتماؤں اور ودوانوں نے وچاروں کے اپنے اپنے نظریے پیش کئے ہیں، لیکن جیون درشن کے اِن مختلف نظریوں کے ہوتے ہوئے تتھا اِس وشال دیش میں آب ہوا کی وودھتا کے کارن باہری روپ میں انتر ہوتے ہوئے بھی ہماری سنسکرتی کی آتما ایک رہی ہے۔ کشمیر سے لیکر کنیا کماری تک تتھا سوراشٹر سے لیکر آسام تک سارا دیش ایک ہی کلچر سے زندگی کا رس لیتا رہا ہے۔ وودھتا میں ایکتا کی یہ بھاونا بھارت کی وشیشتا ہے۔

اِتہاس سے پتہ چلتا ہے کہ ایک دیرگھ کال تک سنسار کے انیہ دیش واسیوں نے بھی اِس سے لابھ اُٹھایا۔ بہت پراچین سمے میں بھارت نے مصر، اسیریا اور بیبلون سے تجارتی اور کلچری میل جول قایم کئے۔ موریہ سمراٹ اشوک نے اسیریا، مصر، میسیڈونیا، ایپرس، تامرپرنی، سورن بھومی آدی انیک دیشوں کو اپنی 'دھرم وجئے' کا سندیش بھیجا۔ عیسوی پورو دوسری شتابدی کے انت سے مدھیہ ایشیا میں بھارتیہ نوآبادیوں کی شروعات ہوئی۔ دھیرے دھیرے وہاں کوکود، ختن، کلمد، بھروک، کوچی، اگنی دیش آدی راجیوں میں بھارتیہ دھرم، کلا، بھاشا اور ساہتیہ کا وکاس ہوا۔ اِن میں سے کوچی اور ختن (کستن) بھارتیہ سنسکرتی کے پردھان کیندر ہوئے۔ ختن کے راجاؤں کے نام وجئے سمبھو، وجئے ویر، وجئے جے، وجئے دھرم آدی ملتے ہیں۔ وہاں کا 'گومتی وہار' بودھ شکشا کا بہت بڑا کیندر تھا۔ چوتھی شتابدی کے انت میں جب چینی یاتری فاہیان وہاں گیا تب مہایان متاولمبی 3,000 بودھ بھکشو اُس وہار میں رہتے تھے، تتھا وہاں دھرم یاترائیں بڑے سماروہ کے ساتھ چلتی تھیں۔

عیسوی کی پہلی چھ صدیوں میں دکشن پوربی ایشیا میں کئی بھارتیہ بستیوں کی استھاپنا ہوئی۔ ہند چین کے ایک بڑے بھاگ کا نام 'سورن بھومی' تتھا ہندیشیا کے دیپوں کا نام 'سورن دیپ' پرسدھ ہوا۔ وہاں جن بھارتیہ راجیوں کی استھاپنا ہوئی اُن کے نام کمبوج چمپا، کوٹھار پانڈورنگ، شری وجئے، مالب، دشارن، گندھار آدی ملتے ہیں۔ اِسی طرح انیک نگروں کے نام ایودھیا، ویشالی، متھرا، شری چھیتر تکشلا، اِلاوتی، کسم نگر، راماوتی، دھانیہ وتی، دوار وتی، وکرم پور آدی ملتے ہیں۔ سورن بھومی تتھا سورن دیپ میں بھارتیہ رہن سہن، ریت رواج، لپی، بھاشا اور کلا کا پرچار ہوا۔ وہاں کے آدم نواسیوں کے ساتھ بھارتیوں نے جس پریم اور سہشنتا کا برتاؤ کیا

[illegible]

[illegible] को [illegible] और [illegible] 'बृहत्तर भारत' के अन्दर की जाने लगी. ये उपनिवेश भारतीय संस्कृति के तो केन्द्र बने ही, साथ ही उनके ज़रिये भारत कोचीन, जापान, कोरिया आदि देशों के साथ भी अपने सांस्कृतिक सम्बन्धों को मज़बूत बनाने में मदद मिली.

भारतीय संस्कृति का इन दूर दूर के देशों में प्रचार करने का श्रेय हमारे पुरखों को है. वैरोचन, काश्यप, मातंग, आर्यकाल, धर्मकाल, धर्मरक्ष, धर्मप्रिय, कुमारजीव, गुणवर्मा, बोधिधर्म, गुणभद्र शांतरक्षित, पद्मसंभव, जिनमित्र, दीपंकर श्री ज्ञान आदि कितने ही विद्वानों ने सफ़र की तकलीफ़ों की परवाह न कर संसार के अनेक भागों में भारतीय संस्कृति का सन्देश फैलाया. मुख़्तलिफ़ देशों के साथ हमारे पूर्वजों ने संस्कृति, राजनैतिक और आर्थिक सम्बन्ध क़ायम कर उन्हें मज़बूती प्रदान करने के लिये जिस उदारता और बरदाश्त का परिचय दिया वह मानव इतिहास की एक शानदार कहानी है.

प्राचीन भारत में जब तक ज़िन्दगी की तरफ़ वसीअ नज़रिया रहा, जब तक 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की उदार भावना यहां के लोगों में रही तब तक हम संसार में ऊँचे उठे रहे. हमने ज्ञान विज्ञान के विविध क्षेत्रों में अनेक देशों के साथ आदान प्रदान करने में संकोच नहीं किया. कल्याणकारी भावना से हम अपने अगाध ज्ञान और अनुभव को उदारता के साथ दूसरों में बांटते रहे, साथ ही दूसरों की उपयोगी बातों को ग्रहण करने में भी हमने संकोच नहीं किया. आर्य भट्ट, बराहमिहर आदि विद्वानों ने अपने समय के इस व्यापक दृष्टिकोण की ओर इशारा किया है. और बराहमिहिर ने लिखा है कि ज्ञान की कुछ दिशाओं में म्लेच्छ कहे जाने वाले यवन अर्थात् यूनानी लोगों की अच्छी गति है, वे लोग ऋषियों के तुल्य ही पूज्य हैं—

"म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक शास्त्रमिदं स्थितम्. ऋषिवत्तेपि पूजन्ते... (बृहत्संहिता 2, 4)."

विदेशियों की तरफ़ इससे अधिक इज़्ज़त का भाव और क्या हो सकता है. बदक़िस्मती से इस विचारधारा को हम आगे बहुत समय तक क़ायम नहीं रख सके. जब आपसी फूट, दलबन्दी, ख़ुदग़रज़ी और ग़रूर की बढ़ती होने लगी तब इस देश के पतन का दरवाज़ा खुल गया. जनता की तंग ख़याली से नये विचारों के आदान प्रदान की परम्परा भी ख़त्म हो गयी. ग्यारहवीं सदी में जब अलबेरूनी भारत आया तो उसने हिन्दुओं में ये बुराइयाँ देखीं. उसने लिखा है कि ये लोग अपने को सामाजिक और धार्मिक दायरे में बहुत ऊँचा समझते हैं और अपने आगे बाक़ी सभी लोगों को हक़ीर

[illegible]

[illegible] بھارتیہ سنسکرتی کے رنگ میں [illegible] طرح [illegible] اور اُن کی گنتی 'ورھتر بھارت' کے اندر کی جانے [illegible] یہ اُپنیویش بھارتیہ سنسکرتی کے تو کیندر بنے ہی ساتھ ہی [illegible] کے ذریعہ بھارت' کوچین' جاپان' کوریا آدی دیشوں کے ساتھ [illegible] اپنے سانسکرتک سمبندھوں کو مضبوط بنانے میں مدد ملی ۔

بھارتیہ سنسکرتی کا اِن دور دور کے دیشوں میں پرچار [illegible] کا شریہ ہمارے پرکھوں کو ہے ۔ ویروچن' کاشیپ' ماتنگ' آریکال' دھرم رکش' دھرم پریہ' کمارجیو' گن ورما' بودھی دھرم' گن بھدر' شانت رکشت' پدم سمبھو' جن متر' دیپنکر شری گیان آدی کتنے ہی ودوانوں نے سفر کی تکلیفوں کی پرواہ نہ کر سنسار کے انیک بھاگوں میں بھارتیہ سنسکرتی کا سندیش پھیلایا. مختلف دیشوں کے ساتھ ہمارے پوروجوں نے سانسکرتک' راجنیتک اور آرتھک سمبندھ قایم کر انھیں مضبوطی پردان کرنے کے لئے جس اُدارتا اور برداشت کا پریچے دیا' وہ مانو اِتہاس کی ایک شاندار کہانی ہے ۔

پراچین بھارت میں جب تک زندگی کی طرف وسیع نظریہ رہا' جب تک 'بسودھیوکٹمبکم' کی اُدار بھاونا یہاں کے لوگوں میں رہی تب تک ہم سنسار میں اُونچے اُٹھے رہے ۔ ہم نے گیان وگیان کے وودھ چھیتروں میں انیک دیشوں کے ساتھ آدان پردان کرنے میں سنکوچ نہیں کیا ۔ کلیانکاری بھاونا سے ہم اپنے اگادھ گیان اور انوبھو کو اُدارتا کے ساتھ دوسروں میں بانٹتے رہے' ساتھ ہی دوسروں کی اُپیوگی باتوں کو گرہن کرنے میں بھی ہم نے سنکوچ نہیں کیا ۔ آریہ بھٹ' براہ میہر آدی ودوانوں نے اپنے سمے کے اِس ویاپک درشٹی کون کی اور اِشارہ کیا ہے ۔ براہمہر نے لکھا ہے کہ گیان کی کچھ دشاؤں میں ملیچھ کہے جانے والے یون ارتھات یونانی لوگوں کی اچھی گتی ہے' وے لوگ رشیوں کے تولیہ ہی پوجیہ ہیں—

"ملیچھ ہی یوناستیشو سمیک شاسترمدن اِستھتم ۔ رشیوتتیپی پوجیئتے...... برھتسنہتا (14.2)."

ودیشیوں کی طرف اِس سے ادھک عزت کا بھاؤ اور کیا ہوسکتا ہے ۔ بدقسمتی سے اِس وچار دھارا کو ہم آگے بہت سمے تک قایم نہیں رکھ سکے ۔ جب آپسی پھوٹ' دل بندی' خودغرضی اور غرور کی بڑھتی ہونے لگی تب اِس دیش کے پتن کا دروازہ کھل گیا ۔ جنتا کی تنگ خیالی سے نئے وچاروں کے آدان پردان کی پرمپرا بھی ختم ہوگئی ۔ گیارہویں صدی میں جب البیرونی بھارت آیا تو اُس نے ہندؤں میں یہ برائیاں دیکھیں ۔ اُس نے لکھا ہے کہ یہ لوگ اپنے کو سماجک اور دھارمک دایرے میں بہت اُونچا سمجھتے ہیں اور اپنے آگے باقی سبھی لوگوں کو 'حقیر'

इतिहासकारों ने, जिसकी नक़ल बाद में हमारे अनेक भारतीय इतिहासकारों ने की, अपनी-अपनी पुस्तकों में उस युग की जंगों, मार-काट, बाहरी हमलों तथा अशांति के ही चित्र खींचे और इस ढंग से खींचे जिससे ज़ाहिर होता था कि मानों उस काल में यही दिनचर्या रही हो. उन्होंने राजनीतिक उथल-पुथल के जीवन के बाहर जाकर उस ज़माने के समाज की ओर झांका ही न था. हमें यही बताया गया है कि भारत मुहम्मद ग़ोरी या महमूद ग़ज़नी ने कितने हमले किये और कितनी धन सम्पत्ति वे यहां से लूटकर अपने देश को ले गये.

इतिहासकारों ने कभी हमें यह साफ़ साफ़ नहीं बताया कि महमूद ग़ज़नी की सेना के साथ अलबेरूनी नामक एक विद्वान् भी आया था, जिसने भारत आकर संस्कृत, भारतीय दर्शन तथा भारतीय ज्ञान का गहरा अध्ययन किया था और जिसने हिन्दुओं और मुसलमानों के फ़लसफ़ों के मेलजोल को दिखाया था.

उस काल की हालत की खोज करने वाले विद्यार्थियों को जो सचाइयाँ हाथ लगेंगी उन्हे विश्वास हो जाएगा कि दरअस्ल मध्ययुगी भारत में हमारी जो सभ्यता रही है, विदेशियों के सम्पर्क में आकर हमने उन्हें अपनी सभ्यता के जो उपहार दिये हैं और उनसे जो कुछ लिया है, वह हमारे लिए बड़े अभिमान की बात है. ख़ुद महमूद ग़ज़नी ने पंजाब में अपना जो सिक्का चलाया था, उसमें संस्कृत के हरूफ़ खुदे थे, और अल्लाह के लिए 'अव्यक्त', रसूल के लिये 'अवतार' और हिजरत के लिये 'जिनायत' लफ़्ज़ों का इस्तेमाल किया गया है, जो शुद्ध संस्कृत हैं. मुहम्मद ग़ोरी के सिक्कों में लक्ष्मी की मूर्ति अङ्कित थी. 'श्री' शब्द की प्रथा प्रायः सभी मुसलमान बादशाहों के काल में थी, जैसे —'श्री सुल्तान अलाउद्दीन, श्री सुल्तान शेरशाह वग़ैरा. उनकी सभी मस्जिदों में कमल का फूल अंकित रहता था.

उस ज़माने के मुसलमानों ने एक नेशन के उसूल को भी अपनाया था. ख़ुद बाबर ने अपनी 'तुज़ुक बाबरी' में लिखा है कि "हम हिन्दुस्तानी हैं केवल हिन्दुस्तानी."

मध्ययुग में राजनीतिक हार जीत ज़रूर हुई, लेकिन कभी सांस्कृतिक हार नहीं हुई. यह बात तो बिल्कुल ग़लत थी, जैसा कि इतिहासकारों ने हमारे दिमाग़ में बरबस ठूँसने की कोशिश की कि, उस समय पूरा भारत मुसलमानों के अधिकार में था. सचाई यह है कि पूरे भारत में किसी भी ज़माने में मुस्लिम शासन नहीं रहा. उस समय भी 50 प्रतिशत से अधिक भारत हिन्दुओं की हुकूमत में था. वहां मुसलमानों का कोई अधिकार न था और इसका सबब यह था कि हमारा सांस्कृतिक पतन नहीं हुआ था. हमारी संस्कृति तब भी हमें प्रेरणा दे रही थी.

اِتہاسکاروں نے' جس کی نقل بعد میں ہمارے انیک بھارتیہ اِتہاسکاروں نے کی' اپنی اپنی پستکوں میں اُس یگ کی جنگوں' مار کاٹ' باہری حملوں تتھا اشانتی کے ہی چتر کھینچے اور اِس ڈھنگ سے کھینچے جس سے ظاہر ہوتا تھا کہ مانو اُس کال میں یہی دنچریا رہی ہو. اُنہوں نے راجنیتک اُتھل پتھل کے جیون کے باہر جاکر اُس زمانے کے سماج کی اُور جھانکا ہی نہ تھا. ہمیں یہی بتایا گیا ہے کہ بھارت میں محمد غوری یا محمود غزنی نے کتنے حملے کئے اور کتنی دھن سمپتی وے یہاں سے لوٹ کر اپنے دیش کو لے گئے.

اِتہاسکاروں نے کبھی ہمیں یہ صاف صاف نہیں بتایا کہ محمودغزنی کی سینا کے ساتھ البیرونی نامک ایک ودوان بھی آیا تھا' جس نے بھارت آکر سنسکرت' بھارتیہ درشن تتھا بھارتیہ گیان کا گہرا ادھین کیا تھا اور جس نے ہندوں اور مسلمانوں کے فلسفوں کے میل جول کو دکھایا تھا.

اِس کال کی حالت کی کھوج کرنے والے ودیارتھیوں کو جو سچائیاں ہاتھ لگینگی اُنہیں وشواس ہو جائیگا کہ دراصل مدھیہ یگی بھارت میں ہماری جو سبھیتا رہی ہے' ودیشیوں کے سمپرک میں آکر ہم نے اُنہیں اپنی سبھیتا کے جو اُپہار دیئے ہیں اور اُن سے جو کچھ لیا ہے' وہ ہمارے لئے بڑے ابھیمان کی بات ہے. خود محمود غزنی نے پنجاب میں اپنا جو سکہ چلایا تھا' اُس میں سانسکرت کے حروف کھدے تھے اور اللہ کے لئے 'آرویکت' رسول کے لئے 'اوتار' اور ہجری کے لئے 'جنایت' لفظوں کا اِستعمال کیا گیا ہے' جو شدھ سنسکرت ہیں. محمد غوری کے سکوں میں لکشمی کی مورتی انکت تھی. 'شری' شبد کی پرتھا پرایہ سبھی مسلمان بادشاہوں کے کال میں تھی' جیسے—'شری سلطان علاؤالدین' شری سلطان شیرشاہ' وغیرہ. اُن کی سبھی مسجدوں میں کمل کا پھول انکت رہتا تھا.

اُس زمانے کے مسلمانوں نے نیشن کے اُصول کو بھی اپنایا تھا. خود بابر نے اپنی 'تزک بابری' میں لکھا ہے کہ "ہم ہندستانی ہیں کیول ہندستانی."

مدھیہ یگ میں راجنیتک ہار جیت ضرور ہوئی' لیکن کبھی سانسکرتک ہار نہیں ہوئی. یہ بات تو بالکل غلط تھی' جیسا کہ اِتہاسکاروں نے ہمارے دماغ میں بربس ٹھونسنے کی کوشش کی' کہ اُس سمے پورا بھارت مسلمانوں کے ادھیکار میں تھا. سچائی یہ ہے کہ پورے بھارت میں کسی بھی زمانے میں مسلم شاسن نہیں رہا. اُس سمے بھی 50 پرتی شت سے ادھک بھارت ہندؤں کی حکومت میں تھا. وہاں مسلمانوں کا کوئی ادھیکار نہ تھا اور اِس کا سبب یہ تھا کہ ہمارا سانسکرتک پتن نہیں ہوا تھا. ہماری سنسکرتی تب بھی ہمیں پریرنا دے رہی تھی.

हां, महाराजा हर्ष के बाद से धर्म की बाहरी तड़क-भड़क बढ़ने लगी थी और अन्दरूनी अक़ीदों की जड़ें कमज़ोर पड़ने लगीं थीं. भारतीय संस्कृति की जो धारा युग-युग से चली आ रही थीं, उसमें इतनी शक्ति थी कि रुकावटों के होते हुए भी उसके मूल सिद्धान्तों पर असर नहीं पड़ा. इस गिरावट के काल में अपनी संस्कृति को फिर मज़बूत करने के लिए भारत ने शङ्कराचार्य को पैदा किया, जिन्होंने दिग्विजयी बनकर सारे भारत में हिन्दू धर्म, हिन्दू-सिद्धान्त और हिन्दू संस्कृति का डंका पीटा. उन्होंने बुद्धत्व और हिन्दुत्व को नया जीवन प्रदान किया. किन्तु इतनी महान् आत्मा का विवरण भी हमारे विदेशी इतिहासकारों ने न दिया !

शंकर के बाद वेदांत का युग लगभग समाप्त हो गया और सन्यासियों के एक बेकार वर्ग ने समाज में जन्म लिया. इतिहास की इसी पृष्ठभूमि में भारत में मुसलमानों का आगमन हुआ. इस समय दो संस्कृतियों का आमना-सामना हुआ. दोनों में आदान-प्रदान हुआ. इस्लाम और हिन्दू धर्म में मेल की बातें नज़र आईं, जिनके परिणाम स्वरूप रामानन्द, कबीर, चैतन्य और नानक आदि सन्तों के सम्प्रदायों का जन्म हुआ. उन्होंने बाहरी आडंबरों की उपेक्षा करके आंतरिक श्रद्धा, एकेश्वरवाद, निराकारवाद, मानव में समता तथा मानव-प्रतिष्ठा पर ज़ोर दिया.

एक ओर तो हिन्दुओं में सहिष्णु प्रवृत्तियाँ चल रही थीं, तो दूसरी ओर यही प्रवृत्तियां मुसलमानों में भी थीं. मुसलमानों का असहिष्णु वर्ग हिन्दुओं को इस्लाम धर्म में दीक्षित करने, मन्दिर तोड़ने और हिन्दुओं पर अत्याचार करने का पक्षपाती था, जिसका प्रतिनिधि था—औरङ्गज़ेब, तो इन्हीं के दूसरे वर्ग में सूफ़ी, इलाही, तिनसुखिए, चिश्ती औलिया आदि थे, जो सहिष्णु थे और संकुचित मनोवृत्ति से दूर थे. भारत में सूफ़ियों ने वेदान्त के आधार पर अपना मत चलाया. इस वर्ग का प्रतिनिधि था— दाराशिकोह, जिसने संस्कृत का अध्ययन करके उपनिषदों का फ़ारसी में अनुवाद किया था. दुर्भाग्य से औरङ्गज़ेब की विजय हुई और असहिष्णुओं को खुलकर अत्याचार करने का अवसर मिल गया. इस प्रकार तत्कालीन भारत में हिन्दू और इस्लाम दोनों ही धर्मों में दो विरोधी प्रवृत्तियों ने जन्म लिया था. हिन्दू संस्कृति में ही यह क्षमता थी कि उसने इन विरोधी प्रवृत्तियों का समन्वय किया और यह समन्वय हमें साहित्य, कला-कौशल, ज्योतिष, विज्ञान, वास्तुकला, मन्दिरों, मस्जिदों आदि सभी में दृष्टिगोचर होता है. रसखान, ख़ानख़ाना आदि मुसलमान कवियों ने कृष्ण तथा उनकी लीला के सम्बन्ध में काव्य लिखे. बङ्गाल में

ہاں، مہاراجہ ہرش کے بعد سے دھرم کی باہری تڑک بھڑک بڑھنے لگی تھی اور اندرونی عقیدوں کی جڑیں کمزور پڑنے لگی تھیں. بھارتیہ سنسکرتی کی جو دھارا یگ یگ سے چلی آرہی تھی، اُس میں اِتنی شکتی تھی کہ رکاوٹوں کے ہوتے ہوئے بھی اُس کے مول سدھانتوں پر اثر نہیں پڑا. اِس گراوٹ کے کال میں اپنی سنسکرتی کو پھر مضبوط کرنے کے لئے بھارت نے شنکراچاریہ کو پیدا کیا، جنہوں نے دگوجئی بنکر سارے بھارت میں ہندو دھرم، ہندو سدھانت اور ہندو سنسکرتی کا ڈنکا پیٹا. اُنہوں نے بدھتو اور ہندتو کو نیا جیون پردان کیا، کنتو اِتنی مہان آتما کا ورنن بھی ہمارے ودیشی اِتہاس‌کاروں نے نہ دیا !

شنکر کے بعد ویدانت کا یگ لگ بھگ سماپت ہو گیا تھا اور سنیاسیوں کے ایک بیکار ورگ نے سماج میں جنم لیا. اِتہاس کی اِسی پرشٹھ بھومی میں بھارت میں مسلمانوں کا آگمن ہوا. اِس سمئے دو سنسکرتیوں کا آمنا سامنا ہوا. دونوں میں آدان پردان ہوا. اسلام اور ہندو دھرم میں میل کی باتیں نظر آئیں، جن کے پرینام سروپ رامانند، کبیر، چیتنیہ اور نانک آدی سنتوں کے سمپردایوں کا جنم ہوا. اُنہوں نے باہری آڈمبروں کی اُپیکشا کر کے آنترک شردھا، ایکیشورواد، نراکارواد، مانو میں سمتا تتھا مانو پرتشٹھا پر زور دیا.

ایک اور تو ہندوؤں میں سہشنو پرورتیاں چل رہی تھیں، تو دوسری اور یہی پرورتیاں مسلمانوں میں بھی تھیں. مسلمانوں کا اسہشنو ورگ ہندوؤں کو اسلام دھرم میں دیکشت کرنے، مندر توڑنے اور ہندوؤں پر اتیاچار کرنے کا پکشپاتی تھا، جس کا پرتیندھی تھا—اورنگزیب، تو اُنہیں کے دوسرے ورگ میں صوفی، اِلٰہی، تلسوکھیئے، چشتی، اَولیا آدی تھے، جو سہشنو تھے اور سنکوچت منوورتی سے دور تھے. بھارت میں صوفیوں نے ویدانت کے آدھار پر اپنا مت چلایا. اِس ورگ کا پرتیندھی تھا—داراشکوہ، جس نے سنسکرت کا ادھیین کر کے اُپنشدوں کا فارسی میں انوواد کیا تھا. دربھاگیہ سے اورنگزیب کی وجئے ہوئی اور اسہشنوؤں کو کھل کر اتیاچار کرنے کا اوسر مل گیا. اِس پرکار تتکالین بھارت میں ہندو اور اِسلام دونوں ہی دھرموں میں دو ورودھی پرورتیوں نے جنم لیا تھا. ہندو سنسکرتی میں ہی یہ شکتا تھی کہ اُس نے اِن ورودھی پرورتیوں کا سمنوئے کیا اور یہ سمنوئے ہمیں ساہتیہ، کلاکوشل، جیوتش، وگیان، واستوکلا، مندروں، مسجدوں آدی سبھی میں درشٹیگوچر ہوتا ہے. رسکھان، خانخاناں آدی مسلمان کویوں نے کرشن تتھا اُن کی لیلا کے سمبندھ میں کاویہ لکھے. بنگال میں

मुसलमानों के संरक्षण में महाभारत का फ़ारसी में अनुवाद हुआ, अरबों ने भारतीय गणित शास्त्र और ज्योतिष विज्ञान का अनुवाद अपनी भाषा में किया और अनेक मुग़ल बादशाहों ने रामायण और महाभारत का अनुवाद फ़ारसी में कराया. उस काल में मुसलमान अपनी रचनाओं का प्रारम्भ गणेश-सरस्वती से करते थे.

वास्तुकला में भी दोनों सम्प्रदायों की विशेषताएँ पाई जाती थीं. यहां की इमारतें फ़ारस की भांति न थीं. मुसलमानों द्वारा बनाई गई इमारतों में हिन्दू तत्वों का मिश्रण रहता था. ताज के गुम्बद पर आज भी पंचरत्न और कमल देखे जा सकते हैं, परन्तु यह मुसलमानी छाप दक्षिण भारत के मन्दिरों में नहीं पाई जाती, क्योंकि देश का यह भाग किसी भी समय मुसलमानों के सांस्कृतिक असर में नहीं आया.

भारतीय संगीत में लय, स्वर, ध्वनि, नृत्य आदि पर इस्लामी संगीत का प्रभाव पड़ा. धर्म के क्षेत्र में अकबर ने 'दीन इलाही' का प्रचार किया, जिसका उद्देश्य हिन्दू और इस्लाम धर्मों का समन्वय था. 'सत्यपीर' नामक एक ऐसे ईश्वर तक की कल्पना की गई जिसे हिन्दू और मुसलमान दोनों ही मानें. मुसलमान शासक हिन्दू पर्वों में भाग लेते थे, तो हिन्दू मुसलमानी त्योहार में. जहांगीर और सिराजुद्दौला की होली तो प्रसिद्ध थी ही. फ़ैशन और पोशाक में भी दोनों धर्मों का एक दूसरे पर प्रभाव पड़ा. शेरवानी, अचकन, पैजामे, कोट, धोती सभी के लिए एक सी पोशाकें बन गईं. हिन्दू और मुसलमान दोनों को ही उद्योग, व्यवसाय, व्यापार तथा पदार्थों के निर्माण के सम्बन्ध में एक-दूसरे से बहुत कुछ हासिल हुआ. बाबर तो अपने साथ बारूदख़ाना भी लाया था, जिसका प्रयोग आज भी हम करते आ रहे हैं. औषधियों के क्षेत्र में यूनानी और आयुर्वेदिक दवाइयों का समन्वय हुआ. इस प्रकार जब दो संस्कृतियों का एक दूसरे से साक्षात्कार हुआ, दोनों ही पुष्ट हुईं.

مسلمانوں کے سنرکشن میں مہابھارت کا فارسی میں انواد ہوا، عربوں نے بھارتیہ گنت شاستر اور جیوتش وگیان کا انواد اپنی بھاشا میں کیا اور انیک مغل بادشاہوں نے راماین اور مہابھارت کا انواد فارسی میں کرایا ۔ اُس کال میں مسلمان اپنی رچناؤں کا پرارمبھ گنیش سرسوتی سے کرتے تھے ۔

واستو کلا میں بھی دونوں سمپردایوں کی وشیشتائیں پائی جاتی تھیں ۔ یہاں کی عمارتیں فارس کی بھانت نہ تھیں ۔ مسلمانوں دوارا بنائی گئی عمارتوں میں ہندو تتوں کا مشرن رہتا تھا ۔ تاج کے گمبد پر آج بھی پنچ رتن اور کمل دیکھے جا سکتے ہیں، پرنتو یہ مسلمانی چھاپ دکشن بھارت کے مندروں میں نہیں پائی جاتی، کیونکہ دیش کا یہ بھاگ کسی بھی سمے مسلمانوں کے سانسکرتک اثر میں نہیں آیا ۔

بھارتیہ سنگیت میں لے، سور، دھونی، نرتیہ آدی پر اِسلامی سنگیت کا پربھاؤ پڑا ۔ دھرم کے چھیتر میں اکبر نے 'دین اِلٰہی' کا پرچار کیا، جس کا اُدیش ہندو اور اِسلام دھرموں کا سمنوئے تھا ۔ 'ستیہ پیر' نامک ایک ایسے ایشور تک کی کلپنا کی گئی جیسے ہندو اور مسلمان دونوں ہی مانیں ۔ مسلمان شاسک ہندو پروں میں بھاگ لیتے تھے، تو ہندو مسلمانی تیوہاروں میں ۔ جہانگیر اور سراج الدولہ کی ہولی تو پرسدھ تھی ہی ۔ فیشن او پوشاک میں بھی دونوں دھرموں کا ایک دوسرے پر پربھاؤ پڑا ۔ شیروانی، اچکن، پیجامے، کوٹ، دھوتی سبھی کے لئے ایک سی پوشاکیں بن گئیں ۔ ہندو اور مسلمان دونوں کو ہی اُدیوگ، ویوسایہ، ویاپار تتھا پدارتھوں کے نرمان کے سمبندھ میں ایک دوسرے سے بہت کچھ حاصل ہوا ۔ بابر تو اپنے ساتھ بارودخانہ بھی لایا تھا، جس کا پریوگ آج بھی ہم کرتے آرہے ہیں ۔ اوشدھیوں کے چھیتر میں یونانی اور آیور ویدک دوائیوں کا سمنوئے ہوا ۔ اِس پرکار جب دو سنسکرتیوں کا ایک دوسرے سے ساکشاتکار ہوا، دونوں ہی پشٹ ہوئیں ۔

प्रेम और व्याह

श्री चक्रवर्त्ती राजगोपालाचार्य

'एक तो गंजा सिर और बचे-खुचे बाल सफ़ेद ! आप प्रेम के बारे में क्या जानते हैं ? बराह मेहरबानी किसी दूसरे विषय पर अपने ख़याल ज़ाहिर कीजिए. आप अपने उन पुराने तजरुबों को बतलाना चाहते हैं ? बस कीजिए महाराज ! पचीस साल पहले की वे बातें अब कब तक याद रहेंगी ? उन दिनों आपने प्रेम का क्या मजा चखा होगा ? वे दिन तो दक़ियानूसी के थे. हम लोग आप से क्या सीख सकते हैं ?' इस क़िस्म के सवालों की झड़ी, ख़ासकर शहरी युवक-युवतियों की हँसी मेरे कानों में बार-बार पड़ती रहती है.

दूसरों के मन की बातों को मेरे कानों तक खींच लाने वाला एक यन्त्र मेरे पास है. इससे फ़ायदा तो कम, मेरा नुक़सान ही ज्यादा होता है. इसीसे मुझे दूसरों की तरह व्याख्यान देना या लेख लिखना नहीं आता, तो भी मद्रास के 'आनन्द-विकटन' नामक मज़ाक़िया रिसाले में उक्त विषय पर एक मजमून लिखने का मैंने इरादा किया. प्रेम का रास्ता बहुत कठिन है. फिर भी नौजवानों के व्याह और प्रेम के बारे में दो-दो बातें कर लेने का मेरा विचार है. टिकट लेकर ही गाड़ी में चढ़ सकता हूँ. भीड़ में घुस और लड़-भिड़कर टिकट लेना मेरी ताक़त के बाहर की बात है. फिर भी किस जगह के लिए कौन-सी गाड़ी पकड़नी है, गाड़ी में सवार हो लेने के बाद किस तरह का बर्ताव करना चाहिए, वग़ैरह बातों पर कुछ ज़रूर कह सकता हूँ. अच्छी तरह ग़ौर करें तो हमें यह मानना पड़ेगा कि हमारे देश में सच्चा प्रेम पैदा ही नहीं होने पाता, क्योंकि इस नये ज़माने में रोज के आप के बर्ताव में भी स्त्री और पुरुष दिल खोलकर मिलते-जुलते नहीं. मन की तसल्ली के लिए भले ही कोई कुछ कहे; पर यह है खरी सचाई. यह सवाल ही दूसरा है कि यह अच्छा है या बुरा ? दूसरी बात यह है कि हमारे-समाज में सब लड़कियों के लिए व्याह तो लाज़िम ही है, यानी—शादी एक ज़रूरी फ़र्ज़ मान लिया गया है. अगर हम इसके साथ प्रेम की क़ैद लगा दें या इसे प्रेम की कसौटी पर कसें, तो व्याह नामुमकिन हो जायगा. लड़की के मां-बाप इसे अच्छी तरह महसूस कर सकते हैं. तीसरी बात यह है, जोकि सब देशों और समाजों पर लागू होती है, प्रेम दोनों तरफ़ से उत्पन्न होनेवाला एक दिली जज़बा है. एक पुरुष एक स्त्री से प्रेम कर सकता है, लेकिन उस स्त्री के मन में उसी तरह

پریم اور بیاہ

شری چکرورتی راجگوپالاچاریہ

'ایک تو گنجا سر' اور بچے کھچے بال سفید ! آپ پریم کے بارے میں کیا جانتے ہیں ؟ براہ مہربانی کسی دوسرے وشئے پر اپنے خیال ظاہر کیجئے . آپ اپنے اُن پرانے تجربوں کو بتانا چاہتے ہیں ؟ بس کیجئے مہاراج ! پچیس سال پہلے کی وے باتیں اب کب تک یاد رہینگی ؟ اُن دنوں آپنے پریم کا کیا مزہ چکھا ہوگا ؟ وے دن تو دقیانوسی کے تھے . ہم لوگ آپ سے کیا سیکھ سکتے ہیں ؟' اِس قسم کے سوالوں کی جھڑی' خاصکر شہری یوک یوتیوں کی ھنسی میرے کانوں میں بار بار پڑتی رہتی ہے .

دوسرے کے من کی باتوں کو میرے کانوں تک کھینچ لانے والا ایک یَنتر میرے پاس ہے . اِس سے فایدہ تو کم' میرا نقصان ہی زیادہ ہوتا ہے . اِسی سے مجھے دوسروں کی طرح ویاکھیان دینا یا لیکھ لکھنا نہیں آتا' تو بھی مدراس کے 'آنندوِکٹن' نامک مذاقیہ رسالے میں اُکت وشئے پر ایک مضمون لکھنے کا میںنے اِرادہ کیا . پریم کا راستہ بہت کٹھن ہے . پھر بھی نوجوانوں کے بیاہ اور پریم کے بارے میں دو دو باتیں کر لینے کا میرا وچار ہے . ٹکٹ لیکر ہی گاڑی میں چڑھ سکتا ہوں . بھیڑ میں گھس اور لڑ بھڑ کر ٹکٹ لینا میری طاقت کے باہر کی بات ہے . پھر بھی کس جگہہ کے لئے کون سی گاڑی پکڑنی ہے؛ گاڑی میں سوار ہو لینے کے بعد کس طرح کا برتاؤ کرنا چاہیئے' وغیرہ باتوں پر کچھ ضرور کہہ سکتا ہوں . اچھی طرح غور کریں تو ہمیں یہ ماننا پڑیگا کہ ہمارے دیش میں سچا پریم پیدا ہی نہیں ہونے پاتا؛ کیونکہ اِس نئے زمانے میں روز کے آپس کے برتاؤ میں بھی استری اور پرش دل کھول کر ملتے جلتے نہیں . من کی تسلی کے لئے بھلے ہی کوئی کچھ کہے؛ پر یہ ہے کھری سچائی . یہ سوال ہی دوسرا ہے کہ یہ اچھا ہے یا برا ؟ دوسری بات یہ ہے کہ ہمارے سماج میں سب لڑکیوں کے لئے بیاہ تو لازم ہی ہے' یعنی —شادی ایک ضروری فرض مان لیا گیا ہے . اگر ہم اِس کے ساتھ پریم کی قید لگا دیں یا اِسے پریم کی کسوٹی پر کسیں' تو بیاہ ناممکن ہو جائیگا. لڑکی کے ماں باپ اِسے اچھی طرح محسوس کر سکتے ہیں . تیسری بات یہ ہے' جو کہ سب دیشوں اور سماجوں پر لاگو ہوتی ہے' پریم دونوں طرف سے اُتپن ہونے والا ایک دلی جذبہ ہے . ایک پرش ایک استری سے پریم کر سکتا ہے؛ لیکن اُس استری کے من میں اُسی طرح

इस आदमी के लिए प्रेम नहीं होता. अगर एक पुरुष या स्त्री ने प्रेम पैदा करनेवाला रूप, गुण और कोई दूसरा चरित्र हासिल किया हो तो इस पागल दुनिया में बहुत से लोग उस पुरुष या स्त्री को चाहने लगेंगे. इसके लिए क्या किया जाय? कामदेव स्त्री-पुरुषों की अलग-अलग जोड़ियाँ बना-बनाकर उन पर अपने फूलों के बाण से प्रहार नहीं करता. अगर सब लोग 'प्रेम विवाह' ही करना चाहें, तो नतीजा आपस की कलह, व्यर्थ का लड़ाई-झगड़ा होगा, कुछ हाथ न लगेगा और बहुतों को विवाह के बिना जीवन गुजारना पड़ेगा. इसलिए यह साफ़ मालूम होता है कि प्रेम की शर्त निभ नहीं सकती.

इसका मतलब यह हरगिज़ नहीं है कि प्रेम एक सपना है, या वह ज़िन्दगी में कभी सच हो ही नहीं सकता. इसमें तनिक भी शक नहीं कि प्रेम स्वयं एक ग़ज़ब की शक्ति है. कभी-कभी दोनों (स्त्री और पुरुष) प्रेम का अनुभव करते हैं. बाद में ब्याह भी हो जाता है, हम कभी-कभी बिजली को तो देखते हैं, वह एक ऐसी ज़बर्दस्त शक्ति है, जिसका लोहा तो सभी मानते हैं. देखने में बिजली के नज़ारे कितने दिलकश होते हैं! फिर भी यह कोई अटल नियम नहीं है कि बिजली के चमकने पर वर्षा हो. बिजली क़ुदरती है. अगर पैदा हुई तो देखने में बड़ी ही सुन्दर है; लेकिन चाहे बिजली चमके या न चमके, मेघ मिलकर पानी तो बरसा ही देंगे. वर्षा से जीवन है.

विवाहित स्त्री-पुरुषों को चाहिये कि वे एक-दूसरे की इज़्ज़त करें, आपस में प्रेम बढ़ायें, सहयोग और दोस्ती से अपनी ज़िन्दगी बिताना सीखें. 'इसमें प्रेम की कमी है; यह तो माँ बाप की रची हुई शादी है, यह तो बेमज़ा खाना है; इस तरह के विचारों में डूब जाने या चिन्ता ग्रस्त होने की ज़रूरत नहीं.' दूसरे देशों की कितनी ही प्रेम-कहानियां हम पढ़ते हैं, सिनेमा देखते हैं, बस, यही जीवन है, इसी में सच्चा सुख ज़िन्दगी का समाया हुआ है., ऐसी बेकार कल्पना में पड़कर निराश होने की भी ज़रूरत नहीं है. अपने देश मे भी स्त्री-पुरुष मिलकर ऊँचा और सुन्दर जीवन बिता सकते हैं.

ऐ नौजवान! तुम्हारे गौने आई हुई स्त्री है, तुमने कभी इस पर विचार किया? कमसिनी में अपना मायका छोड़कर एक युवती कैसे साहस और कैसी प्रसन्नता के साथ एक अजनबी नये परिवार में आकर मिल जाती है. किस पर आशा बांधकर किसके बल पर इतना साहस, इतनी ख़ुशी और इतना आनन्द महसूस करती है? हर एक विचारवान नौजवान गहराई के साथ सोचेगा, तो उसे ताज्जुब होगा. ऐसी हिम्मत और ऐसी मज़बूती आज तक किसी पुरुष ने दिखलाई है या दिखला सकता है? कम उम्र की दुल्हन के इस

اُس آدمی کے لئے پریم نہیں ہوتا . اگر ایک پرش یا اِستری نے پریم پیدا کرنے والا روپ' گن اور کوئی دوسرا چریتر حاصل کیا ہو تو' اِس پاگل دنیا میں بہت سے لوگ اُس پرش یا اِستری کو چاہنے لگیں گے . اس کے لئے کیا کیا جائے ؟ کامدیو اِستری پرشوں کی الگ الگ جوڑیاں بنا بنا کر اُن پر اپنے پھولوں کے بان سے پرہار نہیں کرتا . اگر سب لوگ 'پریم وواہ' ہی کرنا چاہیں تو نتیجہ آپس کا کلہہ' ویرتھ کا لڑائی جھگڑا ہوگا' کچھ ہاتھ نہ لگیگا اور بہوتوں کو وواہ کے بنا جیون گزارنا پڑیگا . اِس لئے یہ صاف معلوم ہوتا ہے کہ پریم کی شرط نبھ نہیں سکتی .

اِس کا مطلب یہ ہرگز نہیں ہے کہ پریم ایک سپنا ہے' یا وہ زندگی میں کبھی سچ ہو ہی نہیں سکتا . اِس میں تنک بھی شک نہیں کہ پریم سویم ایک غضب کی شکتی ہے . کبھی کبھی دونوں (اِستری اور پرش) پریم کا انوبھو کرتے ہیں . بعد میں وواہ بھی ہو جاتا ہے' ہم کبھی کبھی بجلی کو تو دیکھتے ہیں' وہ ایک ایسی زبردست شکتی ہے' جس کا لوہا تو سبھی مانتے ہیں . دیکھنے میں بجلی کے نظارے کتنے دلکش ہوتے ہیں ! پھر بھی یہ کوئی اٹل نیم نہیں ہے کہ بجلی کے چمکنے پر ورشا ہو . بجلی قدرتی ہے . اگر پیدا ہوئی تو دیکھنے میں بڑی ہی سندر ہے ؛ لیکن چاہے بجلی چمکے یا نہ چمکے' میگھ ملکر پانی تو برسا ہی دینگے . ورشا سے جیون ہے .

وواہت اِستری پرشوں کو چاہئے کہ وے ایک دوسرے کی عزت کریں' آپس میں پریم بڑھائیں' سہیوگ اور دوستی سے اپنی زندگی بتانا سیکھیں . 'اِس میں پریم کی کمی ہے ؛ یہ تو ماں باپ کی رچی ہوئی شادی ہے ؛ یہ تو بے مزہ کھانا ہے ؛ اِس طرح وچاروں میں ڈوب جانے یا چنتا گرست ہونے کی ضرورت نہیں . 'دوسرے دیشوں کی کتنی ہی پریم کہانیاں ہم پڑھتے ہیں' سنیما دیکھتے ہیں' بس' یہی جیون ہے' اِسی میں سچا سکھ زندگی کا سمایا ہوا ہے .' ایسی بیکار کلپنا میں پڑ کر نراش ہونے کی بھی ضرورت نہیں ہے . اپنے دیش میں بھی اِستری پرش ملکر اونچا اور سندر جیون بتا سکتے ہیں .

اے نوجوان ! تمہارے گونے آئی ہوئی اِستری ہے' تم نے کبھی اِس پر وچار کیا ؟ کمسنی میں اپنا مایکا چھوڑ کر ایک یوتی کیسے ساہس اور کیسی پرسنتا کے ساتھ ایک اجنبی نئے پریوار میں آکر مل جاتی ہے . کس پرکار آشا باندھ کر' کس کے بل پر اِتنا ساہس' اِتنی خوشی اور اِتنا آنند محسوس کرتی ہے ؟ ہر ایک وچاروان نوجوان گہرائی کے ساتھ سوچیگا' تو اُسے تعجب ہوگا . ایسی ہمت اور ایسی مضبوطی آج تک کسی پرش نے دکھلائی ہے یا دکھلا سکتا ہے ؟ کم عمر کی دُلہن کے اِس

साहस और आत्मशक्ति को पहचानने पर ही हर नौजवान अपनी उस सहचरी के तरफ़ अपने फ़र्ज़ को महसूस कर सकता है. इसके बाद वह उसे अपने जिस्मानी सुख-भोग के लिए मिला हुआ 'एक यन्त्र' कभी नहीं समझेगा. वह उसे अपने लिए हासिल अनोखे, बहुत बड़े स्नेह-धन के रूप में पहचानेगा. वह अपनी पत्नी के साथ एक सच्चे मित्र के समान आदर, विश्वास और श्रद्धा भाव से बर्ताव करेगा. वह मनमानी कभी न करेगा. वह अपने तईं मालिक, अपनी स्त्री को अपना गुलाम या पैर की जूती कभी न समझेगा.

जिस्मानी भोग-मात्र को विवाह का मक़सद नहीं समझना चाहिए, पर लोग इसे भुला देते हैं. दम्पतियों को शरीर में उत्पन्न होनेवाली क़ुदरती उमंगों की, उनका परस्पर के स्नेह बढ़ाने का साधन समझकर रक्षा करनी चाहिए. वह प्रेम को बढ़ाकर एकता को पक्का करनेवाली एक मज़बूत और क़ुदरती शक्ति है. इसे कभी न भूलना चाहिए कि वह लोगों का एक उपयोगी और पवित्र साधन है, न कि जीवन का सुख. इस तरह का धोखा खाने से सारा जीवन नष्ट हो जाता है, वह दुःखमय बन जाता है.

आज से सैकड़ों बरस पहले हमारे दक्षिण भारत के एक महाकवि और संत पुरुष 'तिरुवल्लुवर' ने पत्नी को जीवन संगिनी के नाम से पुकारा था. दम्पतियों को उस संत महाकवि की वाणी का मर्म समझ कर अपने जीवन में उसे ढालने की कोशिश करनी चाहिए. पति और पत्नी को आपस में स्नेहभाव बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए. जीवन की हर-एक बात पर आपस में सलाह करके फिर फ़ैसला करना चाहिए. इस तरह के बटवारे की भी ज़रूरत नहीं है कि घर की देख-रेख स्त्री के ज़रिये हो और बाहर का सारा व्यवहार पुरुष करे. अभ्यास और साधन से यह बहुत सहल हो सकता है. दोनों की बुद्धि, भावना और शक्ति बढ़कर प्रेम और आनन्द में बदल जायगी. आजकल के ज़माने में स्कूलों और कालेजों में हम जिस क़िस्म की तालीम हासिल करते हैं, उससे कहीं बढ़कर हमें इस जीवन-शिक्षा से फ़ायदा होगा.

न तो प्रेम मर्ज़ है और न ब्याह उसकी दवा. प्रेम के उदय होने के बाद पति-पत्नी बनना कहीं बेहतर है. 'हम दोनों मिलकर प्रेम और सहयोग भाव से घर गिरस्थी चलायेंगे, इस तरह का निश्चय कर प्रेम के आवेग के बिना ही बहुत मामूली तौर से मिले हुए दो व्यक्ति भी उसी तरह अपना जीवन बिता सकते हैं. मैंने अभी ऊपर कहा है कि प्रेम को मर्ज़ और विवाह को उसकी दवा समझना भूल है, क्योंकि ऐसा समझ लिया जाय, तो दवा के सेवन से जैसे बुख़ार भाग जाता है, ठीक उसी प्रकार विवाह होने पर प्रेम को भी ग़ायब हो जाना पड़ेगा. तब तो ज्वर और दवा का ठीक-ठीक जमा-ख़र्च हो जायगा. यह बिलकुल ग़लत है, प्रेम ताप नहीं

ساہس اور آتم شکتی کو پہچاننے پر ہی ہر نوجوان اپنی اُس سہچری کے طرف اپنے فرض کو محسوس کر سکتا ہے . اِس کے بعد وہ اُسے اپنے جسمانی سکھ بھوگ کے لئے ملا ہوا "ایک یَنتر" کبھی نہیں سمجھیگا . وہ اُسے اپنے لئے حاصل انوکھے، بہت بڑے سنیہہ دھن کے روپ میں پہچانیگا . وہ اپنی پتنی کے ساتھ ایک سچے متر کے سمان آدر، وشواس اور شردھا بھاؤ سے برتاؤ کریگا . وہ من مانی کبھی نہ کریگا . وہ اپنے تئیں مالک، اپنی استری کو اپنا غلام یا پیر کی جوتی کبھی نہ سمجھیگا .

جسمانی بھوگ ماتر کو وواہ کا مقصد نہیں سمجھنا چاہیئے؛ پر لوگ اِسے بھلا دیتے ہیں . دمپتیوں کو شریر میں اُتپن ہونے والی قدرتی اُمنگوں کی، اُن کا پرسپر کے سنیہہ بڑھانے کا سادھن سمجھکر رکشا کرنی چاہئے . وہ پریم کو بڑھا کر ایکتا کو پکا کرنے والی ایک مضبوط اور قدرتی شکتی ہے . اِسے کبھی نہ بھولنا چاہئے کہ وہ لوگوں کا ایک اپیوگی اور پوتر سادھن ہے، نہ کہ جیون کا سکھ . اِس طرح کا دھوکا کھانے سے سارا جیون نشٹ ہو جاتا ہے، وہ دکھمئے بن جاتا ہے .

آج سے سیکڑوں برس پہلے ہمارے دکشن بھارت کے ایک مہاکوی اور سنت پرش 'تریولور' نے پتنی کو جیون سنگنی کے نام سے پکارا تھا . دمپتیوں کو اُس سنت مہاکوی کی وانی کا مرم سمجھکر اپنے جیون میں اُسے ڈھالنے کی کوشش کرنی چاہئے . پتی اور پتنی کو آپس میں سنیہہ بھاؤ بڑھانے کی کوشش کرنی چاہئے . جیون کی ہر ایک بات پر آپس میں صلاح کرکے پھر فیصلہ کرنا چاہیئے . اِس طرح کے بٹوارے کی بھی ضرورت نہیں ہے کہ گھر کی دیکھ ریکھ اِستری کے ذریعہ ہو اور باہر کا سارا ویوہار پرش کرے . ابھیاس اور سادھن سے یہ بہت سہل ہوسکتا ہے . دونوں کی بدھی، بھاؤنا اور شکتی بڑھکر پریم اور آنند میں بدل جائیگی . آجکل کے زمانے میں اِسکولوں اور کالجوں میں ہم جس قسم کی تعلیم حاصل کرتے ہیں، اُس سے کہیں بڑھکر ہمیں اِس جیون شکشا سے فایدہ ہو.

نہ تو پریم مرض ہے اور نہ بیاہ اُس کی دوا . پریم کے اُدئے ہونے کے بعد پتی پتنی بننا کہیں بہتر ہے . 'ہم دونوں ملکر پریم اور سہیوگ بھاؤ سے گھر گرہستی چلائینگے' اس طرح کا نشچے کر پریم کے آویگ کے بنا ہی بہت معمولی طور سے ملے ہوئے دو ویکتی بھی اُسی طرح اپنا جیون بِتا سکتے ہیں . میں نے ابھی اوپر کہا ہے کہ پریم کو مرض اور وواہ کو اُس کی دوا سمجھنا بھول ہے؛ کیونکہ ایسا سمجھ لیا جائے، تو دوا کے سیون سے جیسے بخار بھاگ جاتا ہے، ٹھیک اُسی پرکار وواہ ہونے پر پریم کو بھی غایب ہوجانا پڑیگا . تب تو جور اور دوا کا ٹھیک ٹھیک جمع خرچ ہوجائیگا. یہ بالکل غلط ہے. پریم تاپ نہیں

है, वह फूलों में समाई हुई सुगन्धि के सामान एक टिकाऊ क़ुदरती ताक़त है. कभी कभी वह आप-से-आप उमड़ पड़ती है. नहीं तो हम उसे बिजली (Electricity) की तरह पैदा भी कर सकते हैं, उसे बढ़ा भी सकते हैं. प्रेम भी ईश्वर का स्वरूप है. उसका दर्शन किसी भी मन्दिर में कर सकते हैं, लेकिन यह शर्त ज़रूर है कि हममें भक्ति-भावना और श्रद्धा-भाव ज़रूर हो. जहाँ विश्वास होता है, वहीं (उस मन्दिर में) ईश्वर का निवास है. तुम्हारे लिए बनाया हुआ प्रेम परमेश्वर का पवित्र मन्दिर है—तुम्हारी 'जीवन-संगिनी.' व्रत रखकर उपासना करोगे तो प्रेम-पराशक्ति को उस मन्दिर में पाओगे, नहीं तो मन्दिर में पत्थर को ही देखोगे. यह पत्थर का क़ुसूर नहीं, तुम्हारा ही क़ुसूर है.

प्रेम का पहला तजरुबा कोई बड़ी बात नहीं है. अनुभव किया हुआ सारा प्रेम सच्चा प्रेम नहीं है. जीव-मात्र अपने अन्नकोष के सारे तेज को प्रेम के रूप में व्यक्त करेगा. कभी कभी हम यह भी देखते हैं कि विवेक के द्वारा असत्य को दूर कर सच्चे प्रेम को पहचानता है ; फिर भी दोनों प्रेम-पात्रों में समान प्रेम उत्पन्न नहीं होता. जीवन तो वहीं टिक सकता है जहां दोनों तरफ़ से स्वाभाविक और बिना किसी ज़ोर-ज़बर्दस्ती दिखाये प्रेम उत्पन्न हो. ऐसा पुण्य-पर्व का संयोग तो किसी अच्छे नसीबवाले को ही मिलता है. लेकिन एक बात है, स्वाभाविक सिंचाई न होने पर हम ज़मीन को बिना जोते और बोये ही नहीं छोड़ देते. कुआं खोदकर या ख़ुदा से मिन्नत कर खेती को करते ही हैं. इस तरह की खेती में मीठे स्वादिष्ट कन्दमूल और फल तथा सुगन्धित ख़ूबसूरत फूल तो पा सकते हैं ; लेकिन शर्त यह हो कि आलस्य को दूर कर मन लगा कर खेती करें. सच्चे प्रेम का अनुभव करना ज़रा टेढ़ी खीर है, जब ऐसा अनुभव हो, तो उसके समान प्रेम-पात्र और भी मुश्किल है; और वैसा प्रेम मिल भी गया तो उसकी रक्षा करना और भी मुश्किल है. इसलिये युवकों का यही धर्म है कि अनुभव किये हुए प्रेम की रक्षा करना, गुप्त, दैवी तथा व्यापक प्रेम-धन को व्यक्त कर उसे बढ़ाकर पत्नी को जीवन-संगिनी बनाने की कोशिश करना. इसके लिए ईश्वर की महान् कृपा चाहिए और हमारी भी मेहनत.

प्रेम का अर्थ है—'मर मिटना.' इसमें तो हमारा 'अहं-भाव' मिट जाना चाहिए. 'कादल इन्ड्रे ल शादल' यह स्वर्गीय सुब्रह्मण्य भारती (तमिल के एक बड़े राष्ट्रीय कवि) का गीत है. हिन्दी में भी इसी से मिलता जुलता एक भजन गीत है—'जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान.' तमिल गीत का भाव है, 'जिसमें मर मिटने की साध नहीं—वह प्रेम भी क्या ?' यही सच्चा मूल मन्त्र है.

यह समझ बैठना कि विवाह से हमारा कर्तव्य पूरा हो

ھے' وہ پھولوں میں سمائی ھوئی سوگندھ کے سمان ایک ٹکاؤ قدرتی طاقت ھے . کبھی کبھی وہ آپ سے آپ امڑ پڑتی ھے . نہیں تو ھم اسے بجلی (Electricity) کی طرح پیدا بھی کرسکتے ھیں' اسے بڑھا بھی سکتے ھیں. پریم بھی ایشور کا سوروپ ھے. اُس کا درشن کسی بھی مندر میں کرسکتے ھیں' لیکن یہ شرط ضرور ھے' کہ ھم میں بھکتی بھاونا اور شردھا بھاؤ ضرور ھو . جہاں وشواس ھوتا ھے' وھیں (اُس مندر میں) ایشور کا نواس ھے . تمہارے لئے بنایا ھوا پریم پرمیشور کا پوتر مندر ھے —تمہاری 'جیون سنگنی .' ورت رکھکر اُپاسنا کروگے تو پریم پراشکتی کو اُس مندر میں پاؤگے' نہیں تو مندر میں پتھر کو ھی دیکھوگے . یہ پتھر کا قصور نہیں' تمہارا ھی قصور ھے .

پریم کا پہلا تجربہ کوئی بڑی بات نہیں ھے . انوبھو کیا ھوا سارا پریم سچا پریم نہیں ھے ; جیوماتر اپنے ان کوش کے سارے تیج کو پریم کے روپ میں ویکت کریگا . کبھی کبھی ھم یہ بھی دیکھتے ھیں کہ ویویک کے دوارا استیہ کو دور کر سچے پریم کو پہچانتا ھے؛ پھر بھی دونوں پریم پاتروں میں سمان پریم اُتپن نہیں ھوتا . جیون تو وھیں ٹک سکتا ھے' جہاں دونوں طرف سے سوابھاوک اور بنا کسی زور زبردستی دکھائے پریم اُتپن ھو . ایسا پنیہ پرو کا سنیوگ تو کسی اچھے نصیب والے کو ھی ملتا ھے . لیکن ایک بات ھے . سوابھاوک سنچائی نہ ھونے پر ھم زمین کو بنا جوتے اور بوئے ھی نہیں چھوڑ دیتے . کنواں کھودکر یا خدا سے منت کر کھیتی تو کرتے ھی ھیں . اُس طرح کی کھیتی میں بھی میٹھے سوادشٹ کندمول اور پھل تتھا سوگندھت خوبصورت پھول تو پاسکتے ھیں' لیکن شرط یہ ھو کہ آلسیہ کو دور کر من لگاکر کھیتی کریں . سچے پریم کا انوبھو کرنا ذرا ٹیڑھی کھیر ھے' جب ایسا انوبھو ھو' تو اس کے سمان پریم پاتر اور بھی مشکل ھے؛ اور ویسا پریم مل بھی گیا تو اُس کی رکشا کرنا اور بھی مشکل ھے . اِس لئے یوکوں کا یہی دھرم ھےکہ انوبھو کئے ھوئے پریم کی رکشا کرنا' گپت' دیوی تتھا ویاپک پریم دھن کو ویکت کر اُسے بڑھاکر پتنی کو جیون سنگنی بنانے کی کوشش کرنا . اِس کے لئے ایشور کی مہان کرپا چاھئے اور ھماری بھی محنت .

پریم کا ارتھ ھے—'مرمٹنا' . اِس میں تو ھمارا 'اھم بھاؤ' مٹ جانا چاھئے . 'کا دل انڈریل شادل' یہ سورگیہ سوبرامنیہ بھارتی (تمل کے ایک بڑے راشٹریہ کوی) کا گیت ھے . ھندی میں بھی اِسی سے ملتا جلتا ایک بھجن گیت ھے—'جاگھٹ پریم نہ سنچرے' سو گھٹ جان مسان .' تمل گیت کا بھاؤ ھے' —جس میں مرمٹنے کی سادھ نہیں' وہ پریم بھی کیا ؟' یہی سچا مول منتر ھے .

یہ سمجھ بیٹھنا کہ وواہ سے ھمارا کرتویہ پورا ھو

जाता है—एक भारी भूल है. विवाह के बाद ही हमारे सामने कुरुक्षेत्र है. जीवन एक मैदाने जंग है. इस [illegible] में मन की पवित्रता की कई कड़ी-से-कड़ी परीक्षाएं हमारे आगे उपस्थित होंगी. राह में, रेलगाड़ी में, यार दोस्तों के यहां, दावत में, किसी न किसी मौके पर प्रेम के अधिक लायक रूप-रंग, गुण-आकर्षण आदि हमें दिखाई देंगे. अपनी विवाहित स्त्री को नाचीज़ साबित करने वाले कई ख़यालात हमारे दिल में सहज ही में उठेंगे. अर्जुन की तरह उनसे लड़कर उन्हें अपने क़ाबू में करना चाहिये. चाहे प्रेम-विवाह हो, चाहे साधारण विवाह, संग्राम तो बाद को ही शुरू होता है. उसमें जय पाये बिना, फ़तह हासिल किये बग़ैर, सुख नहीं.

सच तो यह है कि सब जीवात्मा एक हैं. उसमें पुरुष एक अंश है, दूसरा अंश स्त्री है. दोनों मिलकर अद्वैतभाव के साधन के लिए उमड़ पड़ते हैं. यही प्रेम की यथार्थ विजयिनी शक्ति है; लेकिन उसे सीमा के भीतर ही रखना चाहिए. सीमा को लांघने से सब जलकर ख़ाक हो जायगा. हम इतनी आँच सह नहीं सकते. अलग-अलग अँगीठी और दीपक ही जीवन है; इसलिए हम अपना-अपना चूल्हा और दीपक जलाकर उसी की रक्षा कर सुख-शान्ति से जीवन बितायें.

جاتا ہے ایک بھاری بھول ہے ۔ وواہ کے بعد ہی ہمارے سامنے کورکشیتر ہے ۔ جیون ایک میدانِ جنگ ہے ۔ اِس مہونت میں من کی پوترتا کی کئی کڑی سے کڑی پریکشائیں ہمارے آگے اپستھت ہونگی ۔ راہ میں، ریل گاڑی میں، یار دوستوں کے یہاں، دعوت میں، کبھی نہ کسی موقع پر پریم کے ادھک لائق روپ رنگ، گن آکرشن آدی ہمیں دکھائی دینگے ۔ اپنی وواہت استری کو ناچیز ثابت کرنے والے کئی خیالات ہمارے دل میں سہج ہی میں اٹھینگے ۔ ارجن کی طرح اُن سے لڑکر انہیں اپنے قابو میں کرنا چاہئے ۔ چاہے پریم وواہ ہو، چاہے سادھارن وواہ سنگرام تو بعد کو ہی شروع ہوتا ہے ۔ اُس میں جے پائے بنا، فتح حاصل کئے بغیر، سکھ نہیں ۔

سچ تو یہ ہے کہ سب جیوآتما ایک ہیں ۔ اُس میں پرش ایک انش ہے، دوسرا انش استری ہے ۔ دونوں ملکر ادویت بھاؤ کے سادھن کے لئے امڑ پڑتے ہیں ۔ یہی پریم کی یتھارتھ، وجئینی شکتی ہے؛ لیکن اسے سیما کے بھیتر ہی رکھنا چاہئے ۔ سیما کو لانگھنے سے سب جل کر خاک ہوجائیگا ۔ ہم اتنی آنچ سہہ نہیں سکتے ۔ الگ الگ انگیٹھی اور دیپک ہی جیون ہے، اِس لئے ہم اپنا اپنا چولہا اور دیپک جلاکر اُسی کی رکشا کر سکھ شانتی سے جیون بتائیں ۔

ज़िन्दगी और हक़ीक़त

زندگی اور حقیقت

श्री गुरुबचन सिंह

شری گربچن سنگھ

डुग डुग करती हुई क़लन्दर के डमरू की धुन बीच बाज़ार में लोगों को अपनी ओर खींच लेती है. बाज़ार के आवारा लड़के जब इस धुन को सुनते हैं तो तमाशा देखने के लिये क़लन्दर की ओर लपकते हैं. शायद बन्दरों का तमाशा देखने में उन्हें बड़ा मज़ा मिलता है. अमूमन बड़ी उम्र के लोग भी बन्दरों का तमाशा बड़ी दिलचस्पी से देखा करते हैं. तमाशे की जगह सबका ठट्ठ लगा रहता है. बच्चे वहां क़लन्दर के चारों ओर घेरा डाल कर बैठ जाते हैं. तालियां पीटते और हँसते हैं. वे लोग, जो बच्चों के पीछे जमघट बांधे खड़े रहते हैं, उन छोटे बच्चों का कौतूहल देखकर ख़ुश होते हैं. वे लोग देखते हैं कि यह बच्चे और बन्दर सभी तो तमाशा है.

ڈوگ ڈوگ کرتی ہوئی قلندر کے ڈمرو کی دھن بیچ بازار میں لوگوں کو اپنی اور کھینچ لیتی ہے ۔ بازار کے آوارہ لڑکے جب اِس دھن کو سنتے ہیں تو تماشہ دیکھنے کے لئے قلندر کی اور لپکتے ہیں ۔ شاید بندروں کا تماشہ دیکھنے میں انہیں بڑا مزہ ملتا ہے ۔ عموماً بڑی عمر کے لوگ بھی بندروں کا تماشہ بڑی دلچسپی سے دیکھا کرتے ہیں ۔ تماشہ کی جگہ سب کا ٹھٹھ لگا رہتا ہے ۔ بچے وہاں قلندر کے چاروں اور گھیرا ڈال کر بیٹھ جاتے ہیں ۔ تالیاں پیٹتے اور ہنستے ہیں ۔ وہ لوگ، جو بچوں کے پیچھے جمگھٹ باندھے کھڑے رہتے ہیں، اُن چھوٹے بچوں کا کوتوہل دیکھکر خوش ہوتے ہیں ۔ وہ لوگ دیکھتے ہیں کہ یہ بچے اور بندر سبھی تو تماشہ ہے ۔

दुनिया तो हमेशा से तमाशा देखने की आदी है, दुनिया तमाशा है. दुनिया के लोग तमाशबीन हैं. वे कभी खुद तमाशा बनते हैं और कभी तमाशबीन; वे खुद खिलाड़ी हैं और खेल भी. लेकिन वे बहुत कम अपने आपको देखते, और समझने की कोशिश करते हैं. इनसान की अपनी कमजोरियों ने उसे खुदग़रज़ और मग़रूर बना दिया है. उसकी शान उसकी शख़्सीयत, उसकी उमंग, उसके विचार सबके विचार न होकर, केवल निजी विचार हो गये हैं. यह मानव का बड़प्पन नहीं, विवेक नहीं, ग़ुरूर है, खुदग़रज़ी है. उसकी यही खुदग़रज़ी धरती को बहिश्त नहीं बनने देती. दुनिया तमाशा देखती है, यह भी तो बतलाना मुशकिल है.

उस दिन क़लन्दर का तमाशा देखने के लिए मैं भी बाज़ार में, भीड़ के बीच जाकर खड़ा हो गया. क़लन्दर डमरू बजा रहा था और मुँह से कुछ बोल भी रहा था. तमाशा देखने के लिए भीड़ की दिलचस्पी बढ़ रही थी. क़लन्दर डमरू बजाता हुआ मजमे के पास से होकर एक चक्कर लगता हुआ बोला—"बच्चो एक क़दम पीछे हट जाओ" सामने खड़े बच्चों को हिदायत देकर वह अपने झोले के नज़दीक आया—"बच्चो बैठ जाओ, सब बैठ जाओ." कुछ देर तक भीड़ को और ज़्यादा इकट्ठा करने के लिये डमरू बजाता रहा. कुछ रटे-रटाए बोल भी बोलता रहा. इतने में कुछ और तमाशबीन आ खड़े हुए. उसने कहा—"बच्चो ज़रा ज़ोर से ताली बजाओ." बच्चे ख़ुशी से तालियां पीटने लगे. लेकिन उसे तसल्ली नहीं हुई, और उन्हें बढ़ावा देते हुए बोला.—"जो बच्चा ज़ोर से ताली नहीं बजाएगा, उसके हाथ में फोड़ा हो जायगा." इस पर सब बच्चे ज़ोर से तालियां पीटने लगे. लोगों की और ज़्यादा दिलचस्पी बढ़ी. क़लन्दर ने बन्दरों की रस्सी थामी. उनमें एक नर था और दूसरी मादा. मादा के साथ एक छोटा बच्चा था जो उसकी पीठ पर सवार दिखाई देता था. लेकिन ज्योंही बंदरिया क़लन्दर के इशारे से एक लकड़ी फांद कर कलाबाज़ियां दिखाने लगी, बच्चा उसकी पीठ पर से उतर कर एक ओर हट कर बैठ गया. दो पैरों के सहारे उसे अकड़ूँ बैठे देखकर बच्चे खिलखिला कर हँस दिये. वह नन्हा सा जीव अजीब डरी हुई निगाहों से उन बच्चों की ओर देखता रहा.

क़लन्दर ने दुल्हे और दुल्हन की कहानी शुरू की. दुल्हा दुल्हन को ब्याह कर लाया, फिर उनकी घरेलू ज़िन्दगी शुरू हुई. सुख दुख का जीवन, जिसमें ख़ुशी और ग़म की मिलावट थी. वे कभी बनते और बिगड़ते थे. कभी एक-दूसरे से रूठते और फिर एक दूसरे को मनाते थे. दिन बीतते हैं और कहानी ख़त्म होने को आती है. ज़िन्दगी की कहानी बहुत लम्बी है और छोटी भी. बन्दर कई वर्षों के बाद जवानी

دنیا تو ہمیشہ سے تماشہ دیکھنے کی عادی ہے ۔ دنیا تماشہ ہے' دنیا کے لوگ تماش بین ہیں ۔ وے کبھی خود تماشہ بنتے ہیں اور کبھی تماش بین؛ وے خود کھلاڑی ہیں اور کھیل بھی۔ لیکن وے بہت کم اپنے آپ کو دیکھتے اور سمجھنے کی کوشش کرتے ہیں ۔ اِنسان کی اپنی کمزوریوں نے اُسے خودغرض اور مغرور بنا دیا ہے ۔ اس کی شان' اُس کی شخصیت' اُس کی اُمنگ' اُس کے وچار سب کے وچار نہ ہوکر' کیول نجی وچار ہوگئے ہیں ۔ یہ مانو کا بڑپن نہیں' ویویک نہیں' غرور ہے' خودغرضی ہے ۔ اُس کی یہی خودغرضی دھرتی کو بہشت نہیں بننے دیتی ۔ دنیا تماشہ دیکھتی ہے' یہ بھی تو بتلانا مشکل ہے ۔

اُس دن قلندر کا تماشہ دیکھنے کے لئے میں بھی بازار میں' بھیڑ کے بیچ جاکر کھڑا ہوگیا ۔ قلندر ڈمرو بجا رہا تھا اور منہ سے کچھ بول بھی رہا تھا ۔ تماشہ دیکھنے کے لئے بھیڑ کی دلچسپی بڑھ رہی تھی ۔ قلندر ڈمرو بجاتا ہوا مجمع کے پاس سے ہوکر ایک چکر لگاتا ہوا بولا— "بچو ایک قدم پیچھے ہٹ جاؤ" سامنے کھڑے بچوں کو ہدایت دیکر وہ اپنے جھولے کے نزدیک آیا—"بچو بیٹھ جاؤ' سب بیٹھ جاؤ ۔" کچھ دیر تک بھیڑ کو اور زیادہ اِکٹھا کرنے کے لئے ڈمرو بجاتا رہا ۔ کچھ رٹے رٹائے بول بھی بولتا رہا ۔ اِتنے میں کچھ اور تماش بین آ کھڑے ہوئے ۔ اُس نے کہا—"بچو' ذرا زور سے تالی بجاؤ ۔" بچے خوشی سے تالیاں پیٹنے لگے ۔ لیکن اُسے تسلی نہیں ہوئی' اور اِنہیں بڑھاوا دیتے ہوئے بولا— "جو بچہ زور سے تالی نہیں بجائیگا' اُس کے ہاتھ میں پھوڑا ہوجائیگا ۔" اِس پر سب بچے زور سے تالیاں پیٹنے لگے ۔ لوگوں کی اور زیادہ دلچسپی بڑھی ۔ قلندر نے بندروں کی رسی تھامی ۔ اُن میں ایک نرتھا اور دوسری مادہ ۔ مادہ کے ساتھ ایک چھوٹا بچہ تھا جو اُس کی پیٹھ پر سوار دکھائی دیتا تھا ۔ لیکن جیوں ہی بندریا قلندر کے اشارے سے ایک لکڑی پھاندکر قلابازیاں دکھانے لگی' بچہ اُس کی پیٹھ پر سے اُترکر ایک اور ہٹ کر بیٹھ گیا ۔ دو پیروں کے سہارے اکڑوں بیٹھے دیکھکر بچے کھلکھلاکر ہنس دیئے ۔ وہ ننھا سا جیو عجیب ڈری ہوئی نگاہوں سے اُن بچوں کی اور دیکھتا رہا ۔

قلندر نے دولہے اور دولہن کی کہانی شروع کی ۔ دولہا دلہن کو بیاہ کر لایا' پھر اُن کی گھریلو زندگی شروع ہوئی ۔ سکھ' دکھ کا جیون' جس میں خوشی اور غم کی ملاوٹ تھی ۔ وے کبھی بنتے اور بگڑتے تھے ۔ کبھی ایک دوسرے سے روٹھتے اور پھر ایک دوسرے کو مناتے تھے ۔ دن بیتتے ہیں اور کہانی ختم ہونے کو آتی ہے ۔ زندگی کی کہانی بہت لمبی ہے اور چھوٹی بھی ۔ بندر کئی ورشوں کے بعد جوانی

के दिन बिताकर बूढ़ा हो जाता है. चूंकि यह ज़िन्दगी बेकार है, बूढ़ा बन्दर अपनी आयु भोग कर इस संसार से उठ जाता है. उसका शव मिट्टी में दफ़ना दिया जाता है. बूढ़ी बन्दरिया पति के शोक में पागल हो उठती है और वह उसके सिरहाने बैठकर विलाप करती है.

तमाशबीन तमाशा देख रहे थे. वे मरे हुए बन्दर के शव को देख रहे थे और साथ ही रोती हुई बन्दरिया को भी, जो अपनी दोनों हथेलियां गालों पर रक्खे रोने की नक़ल उतार रही थी. तमाशबीन देख-देख कर हँस रहे थे—"वाह क्या मज़े का तमाशा है. कितने सधाये हुए बन्दर हैं."

अकस्मात बन्दरिया का बच्चा किसी अनजाने डर के सबब चीख़ उठा—"यक ! यक !! यक !" बंदरिया रोने की नक़ल उतारती उतारती एकाएक चौंक उठी, वह रोना भूल गई. उसने ममता भरी निगाहों से डरे हुये बच्चे की ओर देखा. बच्चा फिर चीख़ उठा—"यक ! यक !! यक !" वह व्याकुल हो उठी और बन्दर से हट उसकी ओर लपकी. बच्चा उचक कर उसकी छाती से चिमट गया. बन्दरिया. उसे सीने से लगाए क़लन्दर की झोली के पीछे सिमट कर बैठ गई.

क़लन्दर की कहानी और कहने की ग़रज़ अधूरी ही रह गई. बन्दर की मौत के बाद वह संसार की निस्सारता पर कुछ रोशनी डालता. शायद वह रोती कलपती बंदरिया को चुप कराता हुआ कहता—"बेटी जाने दे, अब मत रो ! यह संसार निस्सार है ! दुनिया में एक आता और एक जाता है ! संसार एक सराय फ़ानी है, जहां लोग कुछ दिन ठहर कर फिर अपनी-अपनी राह लगते हैं. जहान में रहकर पेट की फ़िक्र करनी पड़ती है बेटी ! पेट का धन्धा तो हमेशा ही साथ लगा रहता है. पेट में अन्न पड़े तो आदमी ज़िन्दा रहता है. जब मौत आती है तो सारी चिंताएँ चली जाती हैं. फिर बता तो भला हमने यह तमाशा किस लिए किया…!!" वह अपना पेट थपथपाती हुई दिखाती—"पेट के लिए !"

"हां बेटी ! पेट की भूख बहुत बुरी होती है. तेरा तमाशा देखने वाले तुम्हें पैसा, दो पैसा, इकन्नी, दुअन्नी जिससे जो कुछ बन पड़ेगा, ज़रूर देंगे." फिर क़लन्दर अपनी चादर धरती पर फैला देता ताकि लोग उस पर पैसे फेंकते. "ख़ुदा आपकी आल-औलाद का भला करे… ख़ुदा आपकी हर मुराद पूरी करे…" कहता हुआ बन्दरिया की रस्सी ढीली कर देता. वह लोगों तक जाती और हाथ फैला कर पैसे मांगती. ज़रूर कुछ न कुछ मिलता. कुछ पैसे पा जाने पर क़लन्दर ख़ुश हो जाता. इस प्रकार इस तमाशे का अन्त होता.

लेकिन इस तमाशे के अन्त से पहले ही बंदरिया ने अपना खेल ख़त्म कर दिया था. वह अपने मुर्दा पति के

کے دن بتاکر بوڑھا ہو جاتا ہے ۔ چونکہ یہ زندگی بےکار ہے' بوڑھا بندر اپنی آیو بھوگ کر اِس سنسار سے اُٹھ جاتا ہے۔ اُس کا شو مٹی میں دفنا دیا جاتا ہے ۔ بوڑھی بندریا پتی کے شوک میں پاگل ہو اُٹھتی ہے اور وہ اُس کے سرہانے بیٹھکر ولاپ کرتی ہے ۔

تماش بین تماشہ دیکھ رہے تھے ۔ وہ مرے ہوئے بندر کے شو کو دیکھ رہے تھے اور ساتھ ہی روتی ہوئی بندریا کو بھی' جو اپنی دونوں ہتھیلیاں گالوں پر رکھے رونے کی نقل اُتار رہی تھی ۔ تماش بین دیکھ دیکھکر ہنس رہے تھے—"واہ کیا مزے کا تماشہ ہے ۔ کتنے سدھائے ہوئے بندر ہیں ۔"

اکسمات بندریا کا بچہ کسی انجانے ڈر کے سبب چیخ اُٹھا—"یک ! یک !! یک !" بندریا رونے کی نقل اُتارتی اُتارتی یکایک چونک اُٹھی' وہ رونا بھول گئی ۔ اُس نے ممتا بھری نگاہوں سے ڈرے ہوئے بچے کی اور دیکھا ۔ بچہ پھر چیخ اُٹھا—"یک ! یک !! یک !" وہ بیاکل ہو اُٹھی اور بندر سے ہٹ اُس کی اور لپکی ۔ بچہ اُچک کر اُس کی چھاتی سے چمٹ گیا ۔ اُسے سینے سے لگائے قلندر کی جھولی کے پیچھے سمٹ کر بیٹھ گئی ۔

قلندر کی کہانی اور کہنے کی غرض ادھوری ہی رہ گئی ۔ بندر کی موت کے بعد وہ سنسار کی نسارتا پر کچھ روشنی ڈالتا ۔ شاید وہ روتی کلپتی بندریا کو چپ کراتا ہوا کہتا—"بیٹی جانے دے' اب مت رو ! یہ سنسار نسار ہے ! دنیا میں ایک آتا اور ایک جاتا ہے ! سنسار ایک سرائے فانی ہے' جہاں لوگ کچھ دن ٹھہر کر پھر اپنی اپنی راہ لگتے ہیں ۔ جہان میں رہ کر پیٹ کی فکر کرنی پڑتی ہے بیٹی ! پیٹ کا دھندا تو ہمیشہ ہی ساتھ لگا رہتا ہے ۔ پیٹ میں اَن پڑے تو آدمی زندہ رہتا ہے ۔ جب موت آتی ہے تو ساری چنتائیں چلی جاتی ہیں ۔ پھر بتا تو بھلا ہم نے یہ تماشہ کس لئے کیا...!!" وہ اپنا پیٹ تھپتھپاتی ہوئی دکھاتی—"پیٹ کے لئے !"

"ہاں بیٹی ! پیٹ کی بھوک بہت بری ہوتی ہے ۔ تیرا تماشہ دیکھنے والے تجھے پیسہ' دو پیسہ' اِکنی' دونی جس سے جو کچھ بن پڑیگا' ضرور دینگے ۔" پھر قلندر اپنی چادر دھرتی پر پھیلا دیتا تاکہ لوگ اُس پر پیسے پھینکتے ۔ "خدا آپ کی آل اولاد کا بھلا کرے...خدا آپ کی مراد پوری کرے..." کہتا ہوا بندریا کی رسی ڈھیلی کر دیتا ۔ وہ لوگوں تک جاتی اور ہاتھ پھیلا کر پیسے مانگتی ۔ ضرور کچھ نہ کچھ ملتا ۔ کچھ پیسے پا جانے پر قلندر خوش ہو جاتا ۔ اِس پرکار اِس تماشے کا انت ہوتا ۔

لیکن اِس تماشے کے انت سے پہلے ہی بندریا نے اپنا کھیل ختم کر دیا تھا ۔ وہ اپنے مردہ پتی کے

सिरहाने बैठने के बजाय अपने सहमे बच्चे को छाती से लगाये क़लन्दर की झोली के पीछे सिमटी बैठी थी. असली ममता बनावटी मोह और शोक पर छा गई थी. क़लन्दर ने एक बार उसकी रस्सी खींची. वह और भी सिमट कर गठरी के ओट हो गई.

क़लन्दर ने पुचकारा—"आ बेटी आ ! डर गई क्या ? अभी तमाशा ख़त्म नहीं हुआ !"

लेकिन बन्दरिया सहमी निगाहों से चारों ओर देखती हुई, गठरी की ओट छिपती गई. क़लन्दर ने उसकी गर्दन से बँधी रस्सी को एक दो झटके दिये और ऊँची आवाज़ में बोला—"बच्चो ज़ोर से ताली तो बजाओ !"

तालियां बजीं. तमाशबीनों ने दिलचस्पी ज़ाहिर की. किन्तु तमाशा आगे न बढ़ सका. क़लन्दर इस बार बन्दरिया को डपट कर बोला—"सुन्दरी !"

और सुन्दरी,...वह दीन और मूक जीव, आँखों में बिनती के भाव लिए उसकी ओर देखती रह गई. जैसे उसकी आंखें कह रही थीं—"मालिक, कुछ देर के लिए माफ़ी चाहती हूँ. कुछ समय के लिये मुझ से यह तमाशा नहीं हो पायेगा. मालिक मुझे माफ़ कर दो !"

लेकिन मालिक कब इस बात को समझता ? उसे अपनी ओर खींचते हुए उसने तड़ाक से छड़ी उसकी पीठ पर मारी ! वह बेचारी चोट से तिलमिला उठी और उचक कर दूसरी ओर चली गई। क़लन्दर ने फिर डपट कर कहा—"सुन्दरी !" फिर एक और छड़ी सनसनाती हुई उसकी पीठ पर पड़ी. सुन्दरी फिर उचक कर झोली के पीछे अपने पहले स्थान पर आ बैठी. क़लन्दर गुस्से में आकर उसे बुरी तरह पीटने लगा ! लोग उसका पिटना और क़लन्दर का पागलपन देखकर बहुत ख़ुश हुए। बच्चों ने तालियां बजाईं और जवानों ने क़हक़हे लगाए और सब आपस में मनोरञ्जक बातें करने लगे. मौत की बनावटी नींद सोया हुआ बन्दर चौंक कर उठ बैठा. वह बेचारा सहमा-सहमा सा एक ओर हट कर बैठ गया. क़लन्दर सुन्दरी को पीटे जा रहा था. वह बेचारी मार खा-खा कर उछल रही थी और बन्दर हसरत से भरा हुआ अपनी जीवन-संगिनी को बेबस निगाहों से देख रहा था !

सहसा मैं गम्भीर हो गया और इतिहास के अनेकों ख़ामोश पन्ने मेरे दिमाग़ में घूम गये. इस तमाशे के पीछे मानव युग के क़दीम ज़माने का इतिहास छिपा था। जब मानव उन्नति करके बानर से आदम बना था, जंगलों में रहता था पशुओं और हिंसक जीवों के बीच में. तब उसके और पशुओं के जीवन में कोई अन्तर न था. धीरे धीरे उसमें बुद्धि और ज्ञान बढ़ा उसने नई शक्ति हासिल की. उसमें श्रद्धा और प्रेम की भावना जागी. उसने जलन, नफ़रत और दुश्मनी सीखी.

سرھانے بیٹھنے کے بجائے اپنے سہمے بچے کو چھاتی سے لگائے قلندر کی جھولی کے پیچھے سمٹی بیٹھی تھی ۔ اصلی ممتا بناوٹی موہ اور شوک پر چھا گئی تھی ۔ قلندر نے ایک بار اُس کی رسی کھینچی ۔ وہ اور بھی سمٹ کر گٹھری کے اُوٹ ہو گئی ۔

قلندر نے پچکارا—"آ بیٹی آ ! ڈر گئی کیا ؟ ابھی تماشہ ختم نہیں ہوا !"

لیکن بندریا سہمی نگاہوں سے چاروں اور دیکھتی ہوئی، گٹھری کی اور چھپتی گئی ۔ قلندر نے اِس کی گردن سے بندھی رسی کو ایک دو جھٹکے دیئے اور اونچی آواز میں بولا—"بچو زور سے تالی تو بجاؤ !"

تالیاں بجیں ۔ تماش بینوں نے دلچسپی ظاہر کی ۔ کنتو تماشہ آگے نہ بڑھ سکا ۔ قلندر اِس بار بندریا کو ڈپٹ کر بولا—"سندری !"

اور سندری،...وہ دین اور موک جیو، آنکھوں میں بنتی کے بھاؤ لئے اُس کی اور دیکھتی رہ گئی ۔ جیسے اُس کی آنکھیں کہہ رہی تھیں—"مالک، کچھ دیر کے لئے معافی چاہتی ہوں ۔ کچھ سمے کے لئے مجھ سے یہ تماشہ نہیں ہو پائیگا ! مالک مجھے معاف کر دو !"

لیکن مالک کب اِس بات کو سمجھتا ؟ اُسے اپنی اور کھینچتے ہوئے اُس نے تڑاق سے چھڑی اُس کی پیٹھ پر ماری ! وہ بیچاری چوٹ سے تلملا اُٹھی اور اُچک کر دوسری اور چلی گئی ۔ قلندر نے پھر ڈپٹ کر کہا—"سندری !" پھر ایک اور چھڑی سنسناتی ہوئی اُس کی پیٹھ پر پڑی ۔ سندری پھر اُچک کر جھولی کے پیچھے اپنے پہلے استھان پر آ بیٹھی ۔ قلندر غصے میں آکر اُسے بری طرح پیٹنے لگا ! لوگ اُس کا پٹنا اور قلندر کا پاگل پن دیکھ کر بہت خوش ہوئے ۔ بچوں نے تالیاں بجائیں اور جوانوں نے قہقہے لگائے اور سب آپس میں منورنجک باتیں کرنے لگے ۔ موت کی بناوٹی نیند سویا ہوا بندر چونک کر اُٹھ بیٹھا ۔ وہ بیچارا سہما سہما سا ایک اور ہٹ کر بیٹھ گیا ۔ قلندر سندری کو پیٹے جا رہا تھا ۔ وہ بیچاری مار کھا کھا کر اُچھل رہی تھی اور بندر حسرت سے بھرا ہوا اپنی جیون سنگنی کو بےبس نگاہوں سے دیکھ رہا تھا !

سہسا میں گمبھیر ہو گیا اور اِتہاس کے انیکوں خاموش پنے میرے دماغ میں گھوم گئے ۔ اِس تماشے کے پیچھے مانو یگ کے قدیم زمانے کا اِتہاس چھپا تھا ۔ جب مانو اُنتی کر کے بانر سے آدم بنا تھا، جنگلوں میں رہتا تھا پشوؤں اور ہنسک جیوؤں کے بیچ میں ۔ تب اُس کے اور پشوؤں کے جیون میں کوئی انتر نہ تھا ۔ دھیرے دھیرے اُس میں بدھی اور گیان بڑھا ۔ اُس نے نئی شکتی حاصل کی، اُس میں شردھا اور پریم کی بھاونا جاگی ۔ اُس نے جلن، نفرت اور دشمنی سیکھی ۔

उसमें खुदग़रज़ी, लालच और ग़ुरूर पैदा हुआ. फिर उसके कुल और क़बीले बने और क़बीलों के सरदार बने. फिर क़बीलों के आपसी युद्ध शुरू हुए. एक विजेता होता और दूसरा दास, एक मालिक और दूसरा नौकर. एक की ज़बान पर हुक्म होता, दूसरे की ज़बान पर फ़रियाद. एक की तलवार होती और दूसरे की गर्दन. समाज में कई प्रकार के भेद हो गए. उन्हीं भेदों को लेकर मानव समाज गिरता गया और क्या यह बन्दर का तमाशा मानव जीवन की एक लम्बी कहानी नहीं है !

अब भी ममता से भरी उस बेबस बन्दरिया पर मदारी की छड़ी तड़ातड़ पड़ रही थी. उसका शरीर ढीला पड़ रहा था लेकिन उसकी आंखों की हसरत अपने पूरे बल के साथ अपनी गोद के उस बच्चे को ढककर इस तेज़ी के साथ फैल रही थी मानों धरती और आकाश को अपनी ममता से ढक लेगी !

اُس میں خودغرضی، لالچ اور غرور پیدا ہوا ۔ پھر اُس کے کل اور قبیلے بنے اور قبیلوں کے سردار بنے ۔ پھر قبیلوں کے آپسی یدھ شروع ہوئے ۔ ایک وجیتا ہوتا اور دوسرا داس، ایک مالک اور دوسرا نوکر ۔ ایک کی زبان پر حکم ہوتا، دوسرے کی زبان پر فریاد. ایک کی تلوار ہوتی اور دوسرے کی گردن ۔ سماج میں کئی پرکار کے بھید ہو گئے. اُنہیں بھیدوں کو لیکر مانو سماج گرتا گیا اور کیا یہ بندر کا تماشہ مانو جیون کی ایک لمبی کہانی نہیں ہے !

اب بھی ممتا سے بھری اُس بےبس بندریا پر مداری کی چھڑی تڑاتڑ پڑ رہی تھی ۔ اُس کا شریر ڈھیلا پڑ رہا تھا لیکن اُس کی آنکھوں کی حسرت اپنے پورے بل کے ساتھ اپنی گود کے اُس بچے کو ڈھک کر اِس تیزی کے ساتھ پھیل رہی تھی مانو دھرتی اور آکاش کو اپنی ممتا سے ڈھک لیگی !

बय्या

بیا

भाई मदनगोपाल जी

بھائی مدن گوپال جی

बय्ये का घोंसला क़ुदरत का एक ऐसा अचम्भा है जिसकी वजह से बय्ये के नाम से तो सब वाकिफ़ हैं. पर बय्ये को पहचानते कम हैं. देखा सबने होगा लेकिन चूँकि उसकी शकल बहुत कुछ घरों की चिड़िया की सी होती है और हमारे देसी भाई और ख़ासकर शहरों में रहने वाले चिड़ियों, दरख़्तों और क़ुदरत की मामूली चीज़ों की तरफ़ कम ध्यान देते हैं, इसलिये हम उसे देखकर भी अनदेखा कर देते हैं. बय्ये की शकल नर और मादीन दोनों की बहुत कुछ घरों की मादीन चिड़िया से मिलती है. बदन की बनावट और क़द बिलकुल चिड़िया जैसा, परों की रंगत भी बहुत कुछ चिड़िया की सी. सिर्फ़ सर पर और कमर पर पीले रंग के कुछ धब्बे होते हैं. जवानी का नशा जिस रुत में चढ़ता है यानी अंडे देने की रुत में यह पीले निशान ज़रा और शोख़ होकर केसरी रंग के होजाते हैं. बय्या सारे हिन्दुस्तान में पाया जाता है. घने जंगल और घनी आबादी से उसे नफ़रत है. शहरों और गावों के आसपास खेती बाड़ी के नज़दीक, जहां

بئے کا گھونسلا قدرت کا ایک ایسا اچنبھا ہے جس کی وجہ سے بئے کے نام سے تو سب واقف ہیں پر بئے کو پہچانتے کم ہیں ۔ دیکھا سب نے ہوگا لیکن چونکہ اُس کی شکل بہت کچھ گھروں کی چڑیا کی سی ہوتی ہے اور ہمارے دیسی بھائی اور خاص کر شہروں میں رہنے والے چڑیوں، درختوں اور قدرت کی معمولی چیزوں کی طرف کم دھیان دیتے ہیں ۔ اس لئے ہم اُسے دیکھ کر بھی اندیکھا کر دیتے ہیں ۔ بئے کی شکل نر اور مادین دونوں کی بہت کچھ گھروں کی مادین چڑیا سے ملتی ہے ۔ بدن کی بناوٹ اور قد بالکل چڑیا جیسا، پروں کی رنگت بھی بہت کچھ چڑیا کی سی ۔ صرف سر پر اور کمر پر پیلے رنگ کے کچھ دھبے ہوتے ہیں ۔ جوانی کا نشہ جس رت میں چڑھتا ہے یعنی انڈے دینے کی رت میں یہ پیلے نشان ذرا اور شوخ ہو کر کیسری رنگ کے ہو جاتے ہیں ۔ بیا سارے ہندستان میں پایا جاتا ہے ۔ گھنے جنگل اور گھنی آبادی سے اُسے نفرت ہے ۔ شہروں اور گاؤں کے آس پاس کھیتی باڑی کے نزدیک، جہاں

पानी की कमी न हो, ऊँचे ऊँचे दरख़्तों की टहनियों से वह अपने घोंसले वहाँ लटकाता है जहां बिल्ली, सांप वग़ैरा की पहुंच न हो. घोंसले के आस पास बैठने की गुँजाइश न होने की वजह से किसी परिन्दे का भी डर नहीं रहता. घोंसला हवा में इस तरह लटकता है कि न कोई उसपर लपक सके, न उसमें ठोंगें मार सके. उड़ते उड़ते घोंसले में घुस सको तो घुस जाओ वरना बाहर मुँह ताकते रहो. अन्दर जाने और बाहर निकलने के रास्ते भी इतने तंग कि बय्ये जैसा छोटा जानवर ही उसमें दाख़िल हो सकता है.

अंगरेज़ी में उसे वीवरबर्ड (Weaver-bird) यानी जुलाहा कहते हैं. जो उसके घोंसले को देखता है वह उसकी कारीगरी की दाद दिये बग़ैर नहीं रह सकता. और जिस किसी ने इन घोंसलों की बनावट को परखा है वह उसकी कारीगरी के अलावा उसकी मेहनत की भी तारीफ़ करता है. सदियों से लोग इसका घोंसला देखकर हैरान होते आए हैं. पर मिस्टर सालिम अली शायद पहला आदमी था जिसने बय्यों के रहन सहन को अच्छी तरह परखा और जांचा और जिसने उनके अजीब रस्मो रिवाज का पता लगाया. इसके बाद तो बहुत सों ने इस तरफ़ ध्यान दिया और सालिम अली की मालूमात को दुरुस्त पाया. उनकी मालूमात से पता लगता है कि दुनिया में विकास क्या क्या निराले ढंग अख़्तियार करता है.

बय्यों की तीन चार क़िस्में हैं जो आपस में मिलती जुलती नहीं हैं. इन क़िस्मों में फ़रक़ सिर्फ़ परों के रंग का होता है और वह भी बहुत नहीं, एक में सियाही ज़ियादा, एक में कहीं कहीं भूरापन ज़ियादा. अमूमन तो ये क़िस्में दूर दूर अलग अलग मुल्कों में रहती हैं, लेकिन कभी कभी दरख़्तों के एक ही झुंड में दो क़िस्म के बय्ये भी बसेरा करते हैं. लेकिन ऐसी हालत में भी किसी एक दरख़्त पर जितने घोंसले होंगे वह एक ही ज़ात के होंगे चाहे दूसरी ज़ात के घोंसले दूसरे पास के दरख़्त पर ही क्यों न हों. बय्ये दस दस बारह बारह के गिरोहों में रहते हैं. लेकिन इनमें यह एक अजीब निराली रसम है कि नर बय्यों की पार्टी अलहदा और मादीन बय्यों की टोली जुदा.

घर किस जगह बनाए जायं, उस जगह को पसन्द करने के लिये शुरु में सिर्फ़ नर बय्ये आते हैं. चूंकि घोंसले लम्बी लम्बी घासों के सूतों से बुने जाते हैं इसलिये हमेशा ऐसी जगह पसन्द की जाती है जिसके आस पास यह लम्बी घासें मौजूद हों. और चूंकि इन्हें कीड़े मकौड़ों के अलावा अनाज और बीज वग़ैरह खाने का भी शौक़ है इसलिये आस पास खेती बाड़ी का होना भी मामूली बात है. सरकंडे सनककड़े, जवार, मकई, मूंजी, केले वग़ैरा के लम्बे लम्बे पत्तों में से एक एक दो दो फ़ुट लम्बे पतले रेशे ये चोंच से

پانی کی کمی نہ ہو، اونچے اونچے درختوں کی ٹہنیوں سے وہ اپنے گھونسلے وہاں لٹکاتا ہے جہاں بلی، سانپ وغیرہ کی پہونچ نہ ہو۔ گھونسلے کے آس پاس بیٹھنے کی گنجائش نہ ہونے کی وجہ سے کسی پرندے کا بھی ڈر نہیں رہتا۔ گھونسلا ہوا میں اِس طرح لٹکتا ہے کہ نہ کوئی اُس پر لپک سکے، نہ اُس میں ٹھونگیں مار سکے۔ اُڑتے اُڑتے گھونسلے میں گھس سکو تو گھس جاؤ ورنہ باہر منہ تاکتے رہو۔ اندر جانے اور باہر نکلنے کے راستے بھی اتنے تنگ کہ بئے جیسا چھوٹا جانور ہی اِس میں داخل ہو سکتا ہے۔

انگریزی میں اِسے ویور برڈ (Weaver-bird) یعنی جلاھا کہتے ہیں۔ جو اِس کے گھونسلے کو دیکھتا ہے وہ اِس کی کاریگری کی داد دیئے بغیر نہیں رہ سکتا۔ اور جس کسی نے اِن گھونسلوں کی بناوٹ کو پرکھا ہے وہ اُس کی کاریگری کے علاوہ اُس کی محنت کی بھی تعریف کرتا ہے۔ صدیوں سے لوگ اِس کا گھونسلا دیکھ کر حیران ہوتے آئے ہیں۔ پر مسٹر سالم علی شاید پہلا آدمی تھا جس نے بیوں کے رہن سہن کو اچھی طرح پرکھا اور جانچا اور جس نے اُن کے عجیب رسم و رواج کا پتہ لگایا۔ اُس کے بعد تو بہت سوں نے اُس طرف دھیان دیا اور سالم علی کی معلومات کو درست پایا۔ اُن کی معلومات سے پتہ لگتا ہے کہ دنیا میں وکاس کیا کیا نرالے ڈھنگ اختیار کرتا ہے۔

بیوں کی تین چار قسمیں ہیں جو آپس میں ملتی جلتی نہیں ہیں۔ اِن قسموں میں فرق صرف پروں کے رنگ کا ہوتا ہے اور وہ بھی بہت نہیں، ایک میں سیاہی زیادہ، ایک میں کہیں کہیں بھورا پن زیادہ۔ عموماً تو یہ قسمیں دور دور الگ ملکوں میں رہتی ہیں۔ لیکن کبھی کبھی درختوں کے ایک ہی جھنڈ میں دو قسم کے بئے بھی بسیرا کرتے ہیں۔ لیکن ایسی حالت میں بھی کسی ایک درخت پر جتنے گھونسلے ہونگے وہ ایک ہی ذات کے ہونگے چاہے دوسری ذات کے گھونسلے دوسرے پاس کے درخت پر ہی کیوں نہ ہوں۔ بئے دس دس بارہ بارہ کے گروہوں میں رہتے ہیں۔ لیکن اِن میں یہ ایک عجیب نرالی رسم ہے کہ نر بیوں کی پارٹی علیحدہ اور مادین بیوں کی ٹولی جدا۔

گھر کس جگہ بنائے جائیں، اُس جگہ کو پسند کرنے کے لئے شروع میں صرف نر بئے آتے ہیں۔ چونکہ گھونسلے لمبی لمبی گھاسوں کے سوتوں سے بنے جاتے ہیں اِس لئے ہمیشہ ایسی جگہ پسند کی جاتی ہے جس کے آس پاس یہ لمبی گھاسیں موجود ہوں۔ اور چونکہ انہیں کیڑے مکوڑوں کے علاوہ اناج اور بیج وغیرہ کھانے کا بھی شوق ہے اس لئے آس پاس کھیتی باڑی کا ہونا بھی معمولی بات ہے۔ سرکنڈے، سن ککڑے، جوار، مکئی، مونجی، کیلے وغیرہ کے لمبے لمبے پتوں میں سے ایک ایک دو دو فٹ لمبے پتلے ریشے یہ چونچ سے

चीरते हैं और फिर चोंच से ही उन्हें बुनकर और उनमें गिरह डालकर वह अपने घोंसले बनाते हैं. शुरू में हरेक बय्या अपने अपने घोंसले के लिये एक अलग मज़बूत शाख़ चुनता है. फिर घास की रस्सियां सी बनाकर उस शाख़ पर इस तरह कस कर लपेटता है कि हिलने न पाये. फिर उन रस्सियों में और रस्सियां जोड़ कर एक लम्बा झूला बनाता है और फिर उस झूले की रस्सियों के धागों में और धागे जोड़ कर एक तोम्बरी की शकल का घर बुनता है. उसके बीच के हिस्से में वह अंडों के लिये और अपने रहने सहने के लिये एक अलग खाना बनाता है जिसकी वजह से यह दरमियानी हिस्सा भारी भरकम हो जाता है. तोम्बरी के दोनों तरफ़ वह आने जाने के रास्ते रखता है, ताकि उड़ते उड़ते अगर चाहे तो नीचे से घुसकर ऊपर से सीधा निकल जाय. घोंसला काफ़ी यानी नौ-दस इन्च लम्बा और पांच-छै इंच मोटा होता है. इस बयान से यह तो साफ़ है कि कारीगरी के अलावा बहुत मेहनत और ताक़त चाहिये. कई दिनों की मुतवातिर मेहनत से एक घोंसला बनता है. कोई बय्या दूसरे बय्यों को घोंसला बनाने में मदद नहीं देता.

जब ये घोंसले क़रीब क़रीब बन चुकते हैं तो, ख़बर नहीं, मादीन बय्यों को किस तरह, इसकी ख़बर पहुंच जाती है. बहर हाल उनकी एक पार्टी की पार्टी वहां आन कूदती है. नर बय्ये उन्हें देखकर ख़ुश होते हैं और उन्हें ख़ुश करने के लिये गाते नाचते भी हैं. लेकिन मादीनें उनके गाने नाचने को शायद देखती भी नहीं. वह तो घोंसले देखती हैं. कौन सा अच्छा और ख़ूब तय्यार है. नर तो घोंसले छोड़ कर अलग शाख़ों पर बैठ कर गाते हैं और मादीनें एक एक घोंसले को अन्दर और बाहर से ख़ूब अच्छी तरह देखती हैं और अपने अपने लिये एक घोंसला चुनती हैं. नर आपस में नहीं लड़ते और न मादीनों की लड़ाई में शरीक होते हैं. अच्छे घोंसले के लिये मादीनों में कभी कभी लड़ाई हो जाती है, घोंसला उसका जो दूसरी को हरादे. जो घोंसला काफ़ी अच्छा न बना हो उसे कोई मादीन नहीं पसन्द करती. यही वजह है कि कुछ घोंसले बिन बसे ही रह जाते हैं. जब वह अपना अपना घोंसला चुन लेती हैं तब वह अपने अपने घोंसला बनाने वाले नर को बुलाती हैं—आओ, अब हम तुम मिलकर इसमें रहें. जिन के घोंसले किसी को पसन्द नहीं आए वे नर बिन ब्याहे ही रह जाते हैं. जोड़ी चुने जाने के बाद रहने के कमरे की सजावट वग़ैरा का काम मादीन के सपुर्द और बाहर के हिस्से की सफ़ाई का काम नर का. थोड़े दिन तो ये जोड़े मिलकर ख़ुशी ख़ुशी गुज़ारते हैं. लेकिन जहां मादीनें अंडों से फूलीं और नर वहां से ग़ायब. अंडों को सेने और बच्चों को चुगाने का काम सिर्फ़ मादीनें करती हैं.

چیرتے ہیں اور پھر چونچ سے ہی انہیں بن کر اور ان میں گرہ ڈالکر وہ اپنے گھونسلے بناتے ہیں۔ شروع میں ہر ایک بیا اپنے اپنے گھونسلے کے لئے ایک الگ مضبوط شاخ چنتا ہے۔ پھر گھاس کی رسیاں سی بناکر اس شاخ پر اس طرح کس کر لپیٹتا ہے کہ ہلنے نہ پائے۔ پھر ان رسیوں میں اور رسیاں جوڑکر ایک لمبا جھولا بناتا ہے اور پھر اس جھولے کی رسیوں کے دھاگوں میں اور دھاگے جوڑکر ایک تومبری کی شکل کا گھر بنتا ہے۔ اس کے بیچ کے حصہ میں وہ انڈوں کے لئے اور اپنے رہنے سہنے کے لئے ایک الگ خانہ بناتا ہے جس کی وجہ سے یہ درمیانی حصہ بھاری بھرکم ہو جاتا ہے۔ تومبری کے دونوں طرف وہ آنے جانے کے راستے رکھتا ہے، تاکہ اُڑتے اُڑتے اگر چاہے تو نیچے سے گھس کر اوپر سے سیدھا نکل جائے۔ گھونسلا کافی یعنی نو دس انچ لمبا اور پانچ چھ انچ موٹا ہوتا ہے۔ اس بیان سے یہ تو صاف ہے کہ کاریگری کے علاوہ بہت محنت اور طاقت چاہئے۔ کئی دنوں کی متواتر محنت سے ایک گھونسلا بنتا ہے۔ کوئی بیا دوسرے بیوں کو گھونسلا بنانے میں مدد نہیں دیتا۔

جب یہ گھونسلے قریب قریب بن چکتے ہیں تو، خبر نہیں، مادین بیوں کو کس طرح اس کی خبر پہونچ جاتی ہے۔ بہر حال ان کی ایک پارٹی کی پارٹی وہاں آن کودتی ہے۔ نر بئے انہیں دیکھ کر خوش ہوتے ہیں اور انہیں خوش کرنے کے لئے گاتے ناچتے بھی ہیں۔ لیکن مادینیں ان کے گانے ناچنے کو شائد دیکھتی بھی نہیں۔ وہ تو گھونسلے دیکھتی ہیں۔ کونسا اچھا اور خوب تیار ہے۔ نر تو گھونسلے چھوڑکر الگ شاخوں پر بیٹھکر گاتے ہیں اور مادینیں ایک ایک گھونسلے کو اندر اور باہر سے خوب اچھی طرح دیکھتی ہیں اور اپنے اپنے لئے ایک گھونسلا چنتی ہیں۔ نر آپس میں نہیں لڑتے اور نہ مادینوں کی لڑائی میں شریک ہوتے ہیں۔ اچھے گھونسلے کے لئے مادینوں میں کبھی کبھی لڑائی ہوجاتی ہے، گھونسلا اس کا جو دوسری کو ہرا دے۔ جو گھونسلا کافی اچھا نہ بنا ہو اسے کوئی مادین نہیں پسند کرتی۔ یہی وجہ ہے کہ کچھ گھونسلے بن بسے ہی رہ جاتے ہیں۔ جب وہ اپنا اپنا گھونسلا چن لیتی ہیں تب وہ اپنے اپنے گھونسلا بنانے والے نر کو بلاتی ہیں—آؤ، اب ہم تم ملکر اس میں رہیں۔ جن کے گھونسلے کسی کو پسند نہیں آئے وے نر بن بیاہے ہی رہ جاتے ہیں۔ جوڑا چنے جانے کے بعد رہنے کے کمرے کی سجاوٹ وغیرہ کا کام مادین کے سپرد اور باہر کے حصہ کی صفائی کا کام نر کا۔ تھوڑے دن تو یہ جوڑے ملکر خوشی خوشی گذارتے ہیں، لیکن جہاں مادینیں انڈوں سے پھولیں اور نر وہاں سے غائب۔ انڈوں کو سینے اور بچوں کو چگانے کا کام صرف مادینیں کرتی ہیں۔

नर वहां से खिसक कर कुछ दूर कोई और मुनासिब रहने की जगह ढूंढते हैं और वहां घोंसले बनाते हैं. जब घोंसले बना चुकते हैं तो वहाँ एक और नई टोली मादीनों की कहीं से आजाती है. फिर इसी तरह घोंसले और जोड़े मादीनें चुनती हैं और इसी तरह थोड़े दिनों के बाद नर वहां से फिर उड़ जाते हैं. जिस साल बारिश अच्छी पड़े उस साल अंडे देने की मौसम अप्रैल से नवम्बर तक खिंच जाता है. ऐसे साल कारीगर बच्चे एक साल में तीन तीन घोंसले बनाकर एक साल में एक दूसरे के बाद तीन तीन व्याह कर लेते हैं. जो जल्दी अच्छा मकान नहीं बना सकते या नहीं जानते वह कुंवारे ही रह जाते हैं, और इसलिये उनके औलाद ही नहीं होती.

نر وہاں سے کھسک کر کچھ دور کوئی اور مناسب رہنے کی جگہ ڈھونڈھتے ہیں اور وہاں گھونسلے بناتے ہیں ۔ جب گھونسلے بنا چکتے ہیں تو وہاں ایک اور نئی ٹولی مادنیوں کی کہیں سے آجاتی ہے ۔ پھر اسی طرح گھونسلے اور جوڑے مادینیں چنتی ہیں اور اسی طرح تھوڑے دنوں کے بعد نر وہاں سے پھر اڑ جاتے ہیں ۔ جس سال بارش اچھی پڑے اُس سال انڈے دینے کی موسم اپریل سے نومبر تک کھنچ جاتا ہے. ایسے سال کاریگر بئے ایک سال میں تین تین گھونسلے بناکر ایک سال میں ایک دوسرے کے بعد تین تین بیاہ کرلیتے ہیں ۔ جو جلدی اچھا مکان نہیں بناسکتے یا نہیں جانتے وہ کنوارے ہی رہ جاتے ہیں اور اس لئے ان کے اولاد ہی نہیں ہوتی ۔

भगवान बुद्ध और उनके उसूल

जन्म-काल

जैन तीर्थङ्कर महावीर स्वामी के ही समय में परन्तु उनसे कुछ बाद—ई० पू० छठवीं शताब्दी में बौद्ध धर्म का प्रवर्तन करने वाले भगवान गौतम बुद्ध हुए. इनके समय तक प्राचीन वेद धर्म अनेक परिवर्तन (फेरफार—उथल-पुथल) देख चुका था. एक ओर जन समाज में किसी-किसी जगह ज्ञान, भक्ति और वैराग्य के उपदेश का जखीरा था, तो उसी के साथ दूसरी ओर प्रजा के बहुत बड़े भाग में कर्म-काण्ड का घना जाल बिछा हुआ था और कवि, भक्त, ज्ञानी और साधुओं का स्थान टीकाकारों, वादियों, कर्मकान्डयों और तपस्वियों ने ले लिया था. ऐसे समय में धर्म-परित्राण के महानियम के अनुसार श्री गौतम बुद्ध का अवतार हुआ.

बुद्ध—बोध प्राप्त, जागृत, ज्ञानी. इस संसार में सब अज्ञानी जनों को सोया समझना और ज्ञानी को ही जागता समझना. इसलिए गौतम कुल में उत्पन्न महापुरुष 'सिद्धार्थ' को बुद्ध कहते हैं. जिस तरह ब्राह्मण धर्म में विष्णु के चौबीस अवतार माने जाते हैं और जिस तरह जैन धर्म में चौबीस तीर्थङ्कर माने जाते हैं, उसी प्रकार बौद्ध धर्म में भी सब मिलाकर चौबीस बुद्ध हुए—ऐसा कहा जाता है. परन्तु इन सब में ऐतिहासिक प्रमाण से जिनकी हस्ती सिद्ध हो चुकी है, वे बुद्ध ई० पू० छठी शताब्दी में हुए और वे गौतम बुद्ध ही हैं.

بھگوان بدھ اور ان کے اُصول

جنم کال

جین تیرتھنکر مہاویر سوامی کے ہی سمئے میں پرنتو اُن سے کچھ بعد ع . پو . چھٹویں شتابدی میں بودھ دھرم کا پرورتن کرنے والے بھگوان گوتم بدھ ہوئے' اُن کے سمئے تک پراچین وید دھرم انیک پریورتن (پھیرپھار—اُتھل پتھل) دیکھ چکا تھا . ایک اور جن سماج میں کسی کسی جگہ گیان' بھگتی اور ویراگیہ کے اُپدیش کا ذخیرہ تھا' تو اُسی کے ساتھ دوسری اور پرجا کے بہت بڑے بھاگ میں کرم کانڈ کا گھنا جال بچھا ہوا تھا اور کوی' بھگت' گیانی اور سادھوؤں کا استھان ٹیکاکاروں' وادیوں' کرمکانڈیوں اور تپسویوں نے لے لیا تھا . ایسے سمئے میں دھرم پریتران کے مہانیم کے انوسار شری گوتم بدھ کا اوتار ہوا .

بدھ—بودھ پراپت' جاگرت' گیانی . اِس سنسار میں سب اگیانی جنوں کو سویا سمجھنا اور گیانی کو ہی جاگتا سمجھنا . اس لئے گوتم کل میں اُتپن مہاپرش 'سدھارتھ' کو بدھ کہتے ہیں . جس طرح براہمن دھرم میں وشنو کے چوبیس اوتار مانے جاتے ہیں اور جس طرح جین دھرم میں چوبیس تیرتھنکر مانے جاتے ہیں' اُسی پرکار بودھ دھرم میں بھی سب ملاکر چوبیس بدھ ہوئے—ایسا کہا جاتا ہے . پرنتو اِن سب میں ایتہاسک پرمان سے جن کی ہستی سدھ ہوچکی ہے' وہ بدھ ع . پو . چھٹی شتابدی میں ہوئے اور وہ گوتم بدھ ہی ہیں .

बौद्ध धर्म का जो महामंत्र है, उसमें भी तीन विषय बताये गए हैं. वह इस प्रकार हैं—

(1) बुद्धं शरणं गच्छामि—मैं बुद्ध की शरण जाता हूँ.

(2) धम्मं शरणं गच्छामि—मैं धर्म की शरण जाता हूँ.

(3) संघं शरणं गच्छामि—मैं संघ की शरण जाता हूँ.

इस 'रत्नत्रय' में बौद्ध धर्म के अनुयायियों द्वारा जो कुछ जानने योग्य है, वह सब बतला दिया गया है.

बौद्ध धर्म के ग्रंथ

बौद्ध धर्म के बहुत-से ग्रंथ पाली भाषा में हैं और बहुत-से संस्कृत में हैं. उसमें पाली भाषा के ग्रंथ बहुत प्राचीन हैं. बाद में बौद्ध धर्म तिब्बत, चीन, जापान वग़ैरा देशों में फैला. इसलिए उस देश की भाषा में भी इस देश के पाली और संस्कृत ग्रंथों का तर्जुमा हुआ है. इस तरह अलग अलग भाषा की पुस्तकों से हमें बौद्ध धर्म के बारे में जानकारी होती है.

बौद्ध धर्म का सब से प्राचीन ग्रंथ—जो पाली भाषा में है— त्रिपिटक नाम से प्रसिद्ध है. पिटक का अर्थ है पेटी, पिटारा, टोकरी. एक ने दूसरे को दी, दूसरे ने तीसरे को दी, इस तरह परम्परा से दी जाती गई धर्म की टोकरियां, अर्थात् तत्सम्बन्ध ग्रंथों का समूह-वर्ग हुआ पिटक. पिटक के तीन वर्ग हैं, इसलिए तीनों मिलाकर त्रिपिटक कहलाते हैं. इन तीन के नाम निम्नलिखित (हस्बज़ैल) हैं—

(1) विनय पिटक.

(2) सूत्र पिटक.

(3) अभिधर्म पिटक.

विनय पिटक में ख़ासकर भिक्षुओं को (साधुओं को) कैसे चलना चाहिए, इस के बारे में अनेक संवादों और कथाओं द्वारा उपदेश किया गया है. सूत्र पिटक में बौद्ध धर्म के तत्वज्ञान के उसूलों का इसी तरह से परन्तु अधिक सरस रीति से उपदेश किया गया है. और अभिधर्म पिटक में इन सिद्धान्तों का अधिक बारीकी से और ब्यौरेवार (तफ़सील से) विचार किया गया है.

इसके अलावा सद्धर्म पुण्डरीक, ललित विस्तर, सुखावती-व्यूह वग़ैरा अनेक संस्कृत ग्रंथों को भी बहुत-से बौद्ध-धर्मी मानते हैं.

सूत्र पिटक में से बौद्ध धर्म का साररूप से 'धम्म (धर्म-) पद' नाम का एक ग्रंथ रचा गया है और गौतम बुद्ध के पूर्व और अवतारों (बोधिसत्व) की कथाओं का एक 'जातक-माला' नाम का ग्रंथ है. इसमें सरल ढंग से बौद्ध धर्म के तत्व ज्ञान और नीति का अच्छा वर्णन है.

بودھ دھرم کا جو مہامنتر ہے' اُس میں بھی تین وشئے بتائے گئے ھیں . وہ اِس پرکار ھیں—

(1) بدھن شرنن گچھامی—میں بدھ کی شرن جاتاھوں.

(2) دھمن شرنن گچھامی—میں دھرم کی شرن جاتا ھوں.

(3) سنگھن شرنن گچھامی—میں سنگھ کی شرن جاتا ھوں.

اِس 'رتن ترئے' میں بودھ دھرم کے انویائیوں دوارا جو کچھ جاننے یوگیہ ہے' وہ سب بتلا دیا گیا ہے .

بودھ دھرم کے گرنتھ

بودھ دھرم کے بہت سے گرنتھ پالی بھاشا میں ھیں اور بہت سے سنسکرت میں ھیں . اُس میں پالی بھاشا کے گرنتھ بہت پراچین ھیں . بعد میں بودھ دھرم تبت' چین' جاپان وغیرہ دیشوں میں پھیلا . اِس لئے اُس دیش کی بھاشا میں بھی اِس دیش کے پالی اور سنسکرت گرنتھوں کا ترجمہ ھوا ہے. اِس طرح الگ الگ بھاشا کی پستکوں سے ھمیں بودھ دھرم کے بارے میں جانکاری ھوتی ہے .

بودھ دھرم کا سب سے پراچین گرنتھ—جو پالی بھاشا میں ہے—ترپٹک نام سے پرسدھ ہے . پٹک کا ارتھ ہے پیٹی' پٹارا' ٹوکری . ایک نے دوسرے کو دی' دوسرے نے تیسرے کو دی' اِس طرح پرمپرا سے دی جاتی گئیں دھرم کی ٹوکریاں' ارتھات تت سمبندھ گرنتھوں کا سموہ ورگ ھوا پٹک - پٹک کے تین ورگ ھیں' اِس لئے تینوں ملاکر ترپٹک کہلاتے ھیں . اِن تین کے نام نمن لکھت (حسب ذیل) ھیں—

(1) ونئے پٹک .

(2) سوتر پٹک .

(3) ابھدھرم پٹک .

ونئے پٹک میں خاصکر بھکشوں کو (سادھوؤں کو) کیسے چلنا چاھئے' اِس کے بارے میں انیک سمبادوں اور کتھاؤں دوارا اُپدیش کیا گیا ہے . سوترپٹک میں بودھ دھرم کے تتوگیان کے اُصولوں کا اِسی طرح سے پرنتو ادھک سرس ریتی سے اُپدیش کیا گیا ہے . اور ابھدھرم پٹک میں اِن سدھانتوں کا ادھک باریکی سے اور بیوریوار (تفصیل سے) وچار کیا گیا ہے .

اِس کے علاوہ سدھرم پونڈریک' للت وستر' سکھاوتی ویوہ وغیرہ انیک سنسکرت گرنتھوں کو بھی بہت سے بودھ دھرمی مانتے ھیں .

سوتر پٹک میں سے بودھ دھرم کا سارروپ سے 'دھم (دھرم-) پد' نام ایک گرنتھ رچا گیا ہے اور گوتم بدھ کے پوروَ اور اَوتاروں (بودھستو) کی کتھاؤں کا ایک 'جاتک مالا' نام کا گرنتھ ہے . اِس میں سرل ڈھنگ سے بودھ دھرم کے تتوگیان اور نیتی کا اچھا ورنن ہے .

गौतम बुद्ध का जीवन-चरित्र

गंगा के उत्तर प्रदेश में हिमालय की दक्षिण तलहटी में कपिलवस्तु नाम का गांव था. छटवीं शताब्दी ई० पू० में शुद्धोदन उसका राजा था. कपिलवस्तु के पास के एक गाँव के राजा की दो लड़कियों से उसका ब्याह हुआ था जिसमें से एक का नाम महामाया और दूसरी का नाम महाप्रजापति था, दोनों के बड़े अर्से तक कोई सन्तान नहीं हुई. 45 वर्ष की उम्र में बड़ी बहन महामाया को गर्भ रहा और प्रसूति का समय पास आने पर वे पीहर जाने को निकलीं. वहाँ रास्ते में एक नदी के किनारे लुम्बिनी नाम के बन में इनके पुत्र हुआ. इस पुत्र के जन्म से माता-पिता की इच्छा पूरी हुई, इसलिए इनका नाम सिद्धार्थ रखा गया. इसके गोत्र (कुल) का नाम गौतम था, इसलिए ये गौतम नाम से भी प्रसिद्ध हैं और ये शाक्य नाम की क्षत्रिय-जाति में शिरोमणि (सरताज) निकले, इसलिए शाक्य सिंह भी कहलाते हैं. दिन बीतने पर इन्होंने बोध पाया—अर्थात् जागे, ज्ञानी हुए, इसलिए इन्हें बुद्ध' कहा जाता है. इनके जन्म के बाद थोड़े ही समय में इनकी माता की मृत्यु हो गई और सिद्धार्थ अपनी सौतेली माता—मौसी—महाप्रजापति के पास पले. बड़े होने पर गौतमबुद्ध का यशोधरा नाम की एक क्षत्रिय राज-कन्या के साथ ब्याह हुआ. उससे इनके राहुल नाम का एक पुत्र हुआ. तब से 29 वर्ष की उम्र तक इनका कुछ हाल प्राप्त नहीं है. परन्तु हम सहज अनुमान कर सकते हैं कि इस समय जवानी के अनेक सुख भोगे गए होंगे.

परन्तु गौतम बुद्ध की आत्मा संस्कारी थी; इन्द्रियों के सुखों में लिप्त रहे, ऐसी न थी. इसी दर्मियान, ऐसा कहा जाता है कि एक समय ये रथ में बैठकर बाहर घूमने निकले, वहां इन्होंने एक बूढ़े मनुष्य को जिसकी कमर झुक गई थी, आँखों में कीचड़ भरा था, मुँह से लार बहती थी, चलते ठोकर लगती थी इत्यादि अनेक बुढ़ापे के दुखों से पीड़ित देखा. दूसरे प्रसंग पर एक रोगी को जिसके हाथ-पाँव में रक्तपीत हो गया था, मुँह पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं और पेट जलोदर से फूल गया था, रास्ते में पड़ा देखा. फिर दूसरी बार एक मुर्दा रास्ते में जाता और उसके पीछे लोगों को हाय-हाय करते रोते जाते देखा. राजकुमार को ऐसा दृश्य पहले कभी नजर नहीं पड़ा था इसलिए उनको बड़ा ताज्जुब हुआ. जब इनके सारथी ने इनको समझाया कि ये बातें—जरा (बुढ़ापा), तकलीफ़ और मौत—तो संसार में बिलकुल साधारण हैं तब इनके मन में तीव्र वैराग्य हो आया, परन्तु क्या करना चाहिए यह नहीं सूझता था.

एक बार ये घूमने निकले थे. वहाँ औसत लोगों से मुख्तलिफ़ भेस का एक आदमी देखा—उसको देखकर इन्होंने सारथी से पूछा—यह कौन है? तब सारथी ने कहा

گوتم بدھ کا جیون چرتر

گنگا کے اُتربردیش میں ہمالیہ کی دکشن تلہٹی میں کپل وستو نام کا گاؤں تھا. چھٹویں شتابدی ع. پو. میں شدھودھن اُس کا راجا تھا. کپل وستو کے پاس کے ایک گاؤں کے راجا کی دو لڑکیوں سے اُس کا بیاہ ہوا تھا، جس میں سے ایک کا نام مہامایا اور دوسری کا نام مہاپرجاپتی تھا. دونوں کے بڑے عرصے تک کوئی سنتان نہیں ہوئی، 45 ورش کی عمر میں بڑی بہن مہامایا کو گربھ رہا اور پرسوتی کا سمئے پاس آنے پر وے پیہر جانے کو نکلیں. وہاں راستے میں ایک ندی کے کنارے لمبنی نام کے بن میں اِن کے پتر ہوا. اِس پتر کے جنم سے ماتا پتا کی اِچھا پوری ہوئی، اِس لئے اِس کا نام سدھارتھ رکھا گیا. اِن کے گوتر (کل) کا نام گوتم تھا، اِس لئے یہ گوتم نام سے بھی پرسدھ ہیں، اور یہ شاکیہ نام کی چھتریہ جاتی میں شرومنی (سرتاج) نکلے، اِس لئے شاکیہ سنگھ بھی کہلاتے ہیں. دن بیتنے پر اُنہوں نے بودھ پایا—ارتھات جاگے، گیانی ہوئے، اِس لئے اِنہیں 'بدھ' کہا جاتا ہے. اِن کے جنم کے بعد تھوڑے ہی سمئے میں اِن کی ماتا کی مرتیو ہوگئی اور سدھارتھ اپنی سوتیلی ماتا—موسی—مہاپرجاپتی کے پاس پلے. بڑے ہونے پر گوتم بدھ کا یشودھرا نام کی ایک چھتریہ راج کنیا کے ساتھ بیاہ ہوا. اُس سے اِن کے راہل نام کا ایک پتر ہوا. تب سے 29 ورش کی عمر تک اِن کا کچھ حال پراپت نہیں ہے. پرنتو ہم سہج انومان کرسکتے ہیں کہ اِس سمئے جوانی کے انیک سکھ بھوگے گئے ہونگے.

پرنتو گوتم بدھ کی آتما سنسکاری تھی؛ اِندریوں کے سکھوں میں 'لپت رہے' ایسی نہ تھی. اِسی درمیان، ایسا کہا جاتا ہے کہ ایک سمئے یہ رتھ میں بیٹھکر باہر گھومنے نکلے، وہاں اِنہوں نے ایک بوڑھے منشیہ کو جس کی کمر جھک گئی تھی، آنکھوں میں کیچڑ بھرا تھا، منہ سے لار بہتی تھی، چلتے ٹھوکر لگتی تھی اِتیادی انیک بڑھاپے کے دکھوں سے پیڑت دیکھا. دوسرے پرسنگ پر ایک روگی کو جس کے ہاتھ پاؤں میں رکت پِت ہوگیا تھا، منہ پر مکھیاں بھنبھنا رہی تھیں اور پیٹ جلودر سے پھول گیا تھا راستے میں پڑا دیکھا. پھر دوسری بار ایک مردہ راستے میں جاتا اور اس کے پیچھے لوگوں کو ہائے ہائے کرتے روتے جاتے دیکھا. راج کمار کو ایسا درشیہ پہلے کبھی نظر نہیں پڑا تھا، اِس لئے اُن کو بڑا تعجب ہوا. جب اِن کے سارتھی نے اِن کو سمجھایا کہ یہ باتیں—جرا (بڑھاپا)، تکلیف اور موت—تو سنسار میں بالکل سادھارن ہیں تب اِن کے من میں تیور ویراگیہ ہو آیا، پرنتو کیا کرنا چاہئے یہ نہیں سوجھتا تھا.

ایک بار یہ گھومنے نکلے تھے. وہاں اوسط لوگوں سے مختلف بھیس کا ایک آدمی دیکھا. اُس کو دیکھ کر اُنہوں نے سارتھی سے پوچھا—یہ کون ہے؟ تب سارتھی نے کہا—

यह सन्यासी है.—सन्यासी कौन होता है ?—संसार को दु:खरूप देखकर जो इसको छोड़ देता है. गौतम ने यह सुनकर संसार छोड़कर चला जाने और इन दुखों: से छुटकारा पाने का तरीक़ा ढूँढ निकालने का निश्चय किया. रोज़ाना के रिवाज के मुताबिक गाना-बजाना हो जाने के बाद कुमार आरामगाह में गये, मगर नींद नहीं आई. रानी यशोधरा और राजकुमार राहुल सोते थे. उनके पास गये. बालक को बुलाकर मिलने का मन हुआ, परन्तु रानी का एक हाथ बालक के ऊपर रखा था, उसको हटाकर बालक को लिया जाय तो रानी जाग उठे और रानी जाग उठे तो फिर वह अपने प्रिय पति को संसार छोड़ने दे तो ठीक, न छोड़ने दे तो फिर क्या होगा ? ऐसी अनेक मुश्किलें इनके मन में आने लगीं, तथा इसको इसी तरह छोड़ जाऊँ या न जाऊँ इत्यादि अनेक बिचार तथा इरादे होने लगे. आखिरकार उसी तरह अनगिन्ती जीवों की भलाई करने के लिए सिद्धार्थ इनको उसी तरह छोड़कर, महल छोड़कर, एक सफ़ेद घोड़े पर सवार होकर चले गये. यह महान घटना बौद्ध धर्म शास्त्रों में 'महाभिनिष्क्रमण' के नाम से प्रसिद्ध है.

गौतम रात-ही-रात घोड़े पर बहुत दूर चले गये. एक नदी के किनारे घोड़े से उतरे, तलवार निकाली और उससे अपने सुन्दर बाल काटे और अपनी पोशाक उतारकर साईस को दे दी और उसको कपिलवस्तु की ओर रवाना किया. खुद साधु के भेस में आगे बढ़े. कुछ समय पास के आम्रवन (आंबावाड़ी, अमराई) में रह कर, मगध की राजधानी राजगृह की ओर गये. वहाँ बिम्बि-(बिन्दु) सार नाम का राजा राज करता था. राजा ने इनकी इज्ज़त की और इनसे आचार्य-पद लेने को कहा. परन्तु वैसा न करते हुए उन्होंने आडार (आराड) कालाम और उद्दक रामपुत्र नाम के दो ब्राह्मण विद्वानों के पास तत्वज्ञान का अभ्यास शुरू किया. परन्तु उनके सिद्धान्त सिद्धार्थ को सन्तोष-जनक (तसल्ली दिने वाले) नहीं लगे. इसलिए उनको छोड़कर ये आगे चले. कितनी ही जगह पुजारियों को यज्ञ में जानवर की क़ुरबानी करते देखा. यह इनकी दयालु आत्मा को बिलकुल विपरीत ही लगा. गया पहुँचकर पास के बन में कौंडिन्य वग़ैरा पाँच चेलों के सामने इन्होंने ज़ोरदार तप किया. छ: वर्ष कठिन तपस्या करने से बदन काठ की तरह सूख गया और कमज़ोरी बढ़ गई. एक बार फल्गु (नैरंजना) नदी में नहाने गये तो वहाँ इनको पानी में से निकलना मुश्किल हो गया. आखिर किनारे पर के पेड़ की डाल पकड़कर खड़े हुए और आश्रम की ओर मुड़े, परन्तु चल नहीं सके. रास्ते में बेसुध होकर गिर पड़े.

एक गोप-कन्या (नन्द बाला) पास से जा रही थी. उसने इनको दूध पिलाया, खड़ा किया और आश्रम पहुँचाया.

یہ سنیاسی ہے۔—سنیاسی کون ہوتا ہے ؟—سنسار کو دکھ روپ دیکھ کر جو اِس کو چھوڑ دیتا ہے. گوتم نے یہ سن کر سنسار چھوڑ کر چلا جانے اور اِن دکھوں سے چھٹکارا پانے کا طریقہ ڈھونڈھ نکالنے کا نشچے کیا. روزانہ کے رواج کے مطابق گانا بجانا ہو جانے کے بعد کمار آرامگاہ میں گئے، مگر نیند نہیں آئی. رانی یشودھرا اور راج کمار راہل سوتے تھے. اُن کے پاس گئے. بالک کو بلا کر ملنے کا من ہوا، پرنتو رانی کا ایک ہاتھ بالک کے اوپر رکھا تھا، اُس کو ہٹا کر بالک کو لیا جائے اور رانی جاگ اٹھے اور رانی جاگ اٹھے تو پھر وہ اپنے پریہ پتی کو سنسار چھوڑنے دے تو ٹھیک، نہ چھوڑنے دے تو پھر کیا ہوگا؟ ایسی انیک مشکلیں اُن کے من میں آنے لگیں، تتھا اِس کو اِسی طرح چھوڑ جاؤں یا نہ جاؤں اِتیادی انیک وچار تتھا اِرادے ہونے لگے. آخرکار اُسی طرح انگنتی جیووں کی بھلائی کرنے کے لئے سدھارتھ اِن کو اُسی طرح چھوڑ کر، محل چھوڑ کر، ایک سفید گھوڑے پر سوار ہو کر چلے گئے. یہ مہان گھٹنا بودھ دھرم شاستروں میں 'مہا بھی نشکرمن' کے نام سے پرسدھ ہے.

گوتم رات ہی رات گھوڑے پر بہت دور چلے گئے. ایک ندی کے کنارے گھوڑے سے اُترے، تلوار نکالی اور اُس سے اپنے سندر بال کاٹے اور اپنی پوشاک اُتار کر سائیس کو دیدی اور اُس کو کپل وستو کی اور روانہ کیا. خود سادھو کے بھیس میں آگے بڑھے. کچھ سمے پاس کے آمرون (آمباوازی، امرائی) میں رہ کر، مگدھ کی راجدھانی راجگرہ کی اور گئے. وہاں بمبی (بندو) سار نام کا راجا راج کرتا تھا. راجا نے اُن کی عزت کی اور اِن سے آچاریہ پد لینے کو کہا. پرنتو ویسا نہ کرتے ہوئے اُنہوں نے آڈار (آراڈ) کالام اور اُددرک رام پتر نام کے دو براہمن ودوانوں کے پاس تت وگیان کا ابھیاس شروع کیا. پرنتو اُن کے سدھانت سدھارتھ کو سنتوش جنک (تسلی دینے والے) نہیں لگے. اِس لئے اُن کو چھوڑ کر یہ آگے چلے. کتنی ہی جگہ پجاریوں کو یگیہ میں جانور کی قربانی کرتے دیکھا. یہ اُن کی دیالو آتما کو بالکل وپریت ہی لگا. گیا پہونچکر پاس کے بن میں کونڈنیہ وغیرہ پانچ چیلوں کے سامنے اُنہوں نے زوردار تپ کیا. چھ ورش کٹھن تپسیا کرنے سے بدن کاٹھ کی طرح سوکھ گیا اور کمزوری بڑھ گئی. ایک بار پھلگو (نیرنجنا) ندی میں نہانے گئے تو وہاں اُن کو پانی میں سے نکلنا مشکل ہو گیا. آخر کنارے پر کے پیڑ کی ڈالی پکڑ کر کھڑے ہوئے اور آشرم کی اور مڑے، پرنتو چل نہیں سکے. راستے میں بے سدھ ہو کر گر پڑے.

ایک گوپ کنیا (نند بالا) پاس سے جا رہی تھی. اُس نے اِن کو دودھ پلایا، کھڑا کیا اور آشرم پہونچایا.

इतना देह-कष्ट सहन करने पर भी संसार के दुःख का निदान (कारण) और उससे छुटकारा पाने का मार्ग इनको न मिला. अत्यन्त भोग-विलास से जिस प्रकार सत्य की प्राप्ति नहीं होती, उसी प्रकार अत्यन्त देह-कष्ट सहने से भी नहीं होती. आखिर 'मध्यम प्रतिपदा' (बीच के मार्ग) की खूबी इनको समझ पड़ी. अब से शरीर का निर्वाह करने के लिए काफी गिज़ा लेने लगे और एक रात गया के पास पेड़ के नीचे ध्यानस्थ (इबादत में मशगूल) होकर बैठ गए. अब तक जिस सत्य को ढूँढ निकालने के लिए इन्होंने बेकार मेहनत की थी उसका इनके दिल में प्रकाश चमक उठा. उन्होंने ज्ञान पाया, वे जागे, बुद्ध हुए. इस समय इनकी उम्र 35 वर्ष की थी.

'मैं जगा परन्तु जब जगत् को जगाऊँ तब ही मेरा जागना सच्चा है'—इस प्रकार विचार कर वे उठे और काशी की तरफ़ गये. वहां के पांच चेले कौंडिन्य वगैरा इनकी नजर पड़े. उन्होंने निश्चय किया था कि इस तपोभ्रष्ट साधु का आतिथ्य-सत्कार (मेहमाननवाज़ी) नहीं करेंगे, परन्तु जब बुद्ध भगवान् के पास आये तब इनके तेज (जलाल) से वे ऐसे प्रभावित (मुतास्सिर) हुए कि सामने से उठकर सत्कार किये बिना उनसे नहीं रहा गया. बुद्ध भगवान् ने इनको 'चार आर्य सत्य' जो सत्य उस ध्यान की रात के प्रहर-प्रहर में इनको ज्ञात हुए थे, का उपदेश किया और तब से बुद्ध भगवान के धर्मचक्र-प्रवर्तन का आरम्भ हुआ।

वे और उनके पांच शिष्य (चेले) मिलकर छ: अर्हन्त (साधु) हुए। पास के गांवों में से बहुत-से लोग इनका उपदेश सुनने आने लगे। इनके शिष्यों की तादाद बढ़ती गई. यशोधरा और राहुल को भी, जिनको सोता छोड़कर सिद्धार्थ गये थे, सच्चे माने में जगाया. वे भिक्षु और भिक्षुणी के संघ में दाखिल हुए,

उसके बाद, पैंतालीस वर्ष भगवान् बुद्ध ने धर्मचक्र का प्रवर्तन किया. उसमें अनेक ब्राह्मणों को सच्चा ब्राह्मणत्व किसमें है यह बताया और अपने संघ में दाखिल किया. इतना ही नहीं, परन्तु हज्जाम, झाड़ू लगानेवाले और गणिका वगैरा हरेक जाति के आदमियों को संघ में दाखिल किया. उनमें से बारह शिष्य बड़े उपदेशक हुए.

ऐसे शान्त, नियमित और परोपकारी जीवन के पैंतालीस वर्ष बिताकर अस्सी वर्ष की उम्र में बुद्ध भगवान् ने निर्वाण पाया.

अपने अवसान-काल में इन्होंने शिष्यों को जो उपदेश दिया है वह इनके गांभीर्य (संजीदगी) विनय और उदारता को शोभा देती है.

"आनन्द (शिष्य का नाम) रोना नहीं, शोक नहीं करना. आनन्द ! क्या मैंने तुमसे नहीं कहा कि वस्तु-मात्र का

اِتنا دیہہ کشٹ سہن کرنے پر بھی سنسار کے دکھ کا ندان (کارن) اور اُس سے چھٹکارا پانے کا مارگ اِن کو نہ ملا ۔ اتینت بھوگ ولاس سے جس پرکار ستیہ کی پراپتی نہیں ہوتی، اُسی پرکار اتینت دیہہ کشٹ سہنے سے بھی نہیں ہوتی ۔ آخر 'مدھیم پرتی پدا' (بیچ کا مارگ) کی خوبی اِن کو سمجھ پڑی ۔ اب سے شریر کا نرواہ کرنے کے لئے کافی غذا لینے لگے اور ایک رات گیا کے پاس پیڑ کے نیچے دھیانستھ (عبادت میں مشغول) ہو کر بیٹھ گئے ۔ اب تک جس ستیہ کو ڈھونڈھ نکالنے کے لئے اُنہوں نے بیکار محنت کی تھی اُس کا اِن کے دل میں پرکاش چمک اُٹھا ۔ اُنہوں نے گیان پایا، وے جاگے، بدھ ہوئے ۔ اِس سمئے اُن کی عمر 35 ورش کی تھی ۔

'میں جگا پرنتو جب جگت کو جگاؤں تب ہی میرا جاگنا سچا ہے'—اِس پرکار وچار کر وے اُٹھے اور کاشی کی طرف گئے ۔ وہاں کے پانچ چیلے کونڈنیہ وغیرہ اُن کی نظر پڑے ۔ اُنہوں نے نشچے کیا تھا کہ اِس تپوبھرشٹ سادھو کا آتتھیہ ستکار (مہمان نوازی) نہیں کرینگے، پرنتو جب بدھ بھگوان کے پاس آئے تب اُن کے تیج (جلال) سے وے ایسے پربھاوت (متاثر) ہوئے کہ سامنے سے اُٹھکر ستکار کئے بنا اُن سے نہیں رہا گیا ۔ بدھ بھگوان نے اِن کو 'چار آریہ ستیہ' جو ستیہ اُس دھیان کی رات پہر پہر میں اُن کو گیات ہوئے تھے، کا اُپدیش کیا اور تب سے بدھ بھگوان کے دھرم چکر پرورتن کا آرمبھ ہوا ۔

وے اور اُن کے پانچ ششیہ (چیلے) ملکر چھ ارہنت (سادھو) ہوئے ۔ پاس کے گاؤں میں بہت سے لوگ اِن کا اُپدیش سننے آنے لگے ۔ اِن کے ششیوں کی تعداد بڑھتی گئی ۔ یشودھرا اور راہل کو بھی، جن کو سوتا چھوڑ کر سدھارتھ گئے تھے، سچے معنے میں جگایا ۔ وے بھکشوں اور بھکشونی کے سنگھ میں داخل ہوئے ۔

اُس کے بعد، 45 ورش بھگوان بدھ نے دھرم چکر کا پرورتن کیا ۔ اُس، میں انیک براہمنوں کو سچا براہمنتو کس میں ہے یہ بتایا اور اپنے سنگھ میں داخل کیا ۔ اِتنا ہی نہیں، پرنتو حجام، جھاڑو لگانے والے اور گنکیا وغیرہ ہر ایک جاتی کے آدمیوں کو سنگھ میں داخل کیا ۔ اُن میں سے بارہ ششیہ بڑے اُپدیشک ہوئے ۔

ایسے شانت، نیمت اور پروپکاری جیون کے پینتالیس ورش بتا کر اسی ورش کی عمر میں بدھ بھگوان نے نروان پایا ۔

اپنے آوسان کال میں اِنہوں نے ششیوں کو جو اُپدیش دیا ہے وہ ان کے گمبھیریہ (سنجیدگی)، ونئے اور اُودارتا کو شوبھا دیتا ہے ۔

"آنند (ششیہ کا نام) ! رونا نہیں، شوک نہیں کرنا ۔ آنند ! کیا میں نے تم سے نہیں کہا کہ وستو ماتر کا

स्वभाव ही है कि हमको वह चाहे जितनी प्रिय क्यों न हो, परन्तु आख़िर में हमें उसको छोड़कर जाना ही पड़ता है. आनन्द ! जो कुछ जन्मा है, हुआ है, वह नाश पाये बिना कैसे रह सकता है ?

"आनन्द ! मैंने तुम को कुछ भी गुप्त रखे बिना धर्म का उपदेश किया है. तथागत (बुद्ध) ने कभी भी धर्म को मुठ्ठी में बाँधकर नहीं रखा. संघ मुझ पर अवलंबित है, ऐसा उसने कभी नहीं माना. उसके बाद इसको क्या सूचना देने को रह जाती है ? धर्म को अपना दीप समझ कर चलना, धर्म की शरण पकड़े रहना. अपनी जाति को छोड़ कर किसी दूसरे पर इस विषय में आधार नहीं रखना. जो इस प्रकार चलेगा वह महापरिनिर्वाण—उत्तम निर्वाण-अवस्था पायेगा."

"मेरे जाने के बाद धर्म और संघ को मेरी जगह मानना" ऐसा उपदेश देकर तथा शिष्यों को परस्पर कैसा बर्ताव करना चाहिए, इसके सम्बन्ध में शिक्षा देकर अपनी अन्तिम समाधि में उन्होंने प्रवेश किया और महापरिनिर्वाण पाया.

بھاؤ ہی ھے کہ ھم کو وہ چاھے جتنی پریہ کیوں نہ ھو' پرنتو خر میں ھمیں اِس کو چھوڑ کر جانا ھی پڑتا ھے . آنند ! جو چھ جنما ھے' ھوا ھے' وہ ناش پائے بنا کیسے رہ سکتا ھے ؟

"آنند ! میں نے تم کو کچھ بھی گپت رکھے بنا دھرم کا اُپدیش یا ھے. تتھا گت (بدھ) نے کبھی بھی دھرم کو مٹھی میں باندھ ر نہیں رکھا. سنگھ مجھ پر اولمبت ھے' ایسا اُس نے کبھی نہیں انا . اُس کے بعد اِس کو کیا سوچنا دینے کو رہ جاتی ھے ؟ ھرم اپنا دیپ سمجھکر چلنا' دھرم کی شرن پکڑے رھنا . اپنی جاتی کو چھوڑ کر کسی دوسرے پر اس وشئے میں آدھار نہیں کھنا . جو اِس پرکار چلیگا وہ مہا پری نِروان—اُتم نروانا وستھا ائیگا ."

"میرے جانے کے بعد دھرم اور سنگھ کو میری جگہہ ماننا" یسا اُپدیش دیکر تتھا ششیوں کو پرسپر کیسا برتاؤ کرنا چاھیئے' س کے سمبندھ میں شکشا دیکر اپنی انتم سمادھی میں اُنھوں ے پرویش کیا اور مہا پرینروان پایا .

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

मुआज़ बिन जबल का बयान है कि :—"मुहम्मद साहब ने जब मुझे यमन का गवरनर बनाकर भेजा तो मुझ से कहा:—'ख़बरदार ! ऐश (विलास) की जिन्दगी बसर न करना क्योंकि अल्लाह के सच्चे बन्दे कभी ऐश की ज़िन्दगी बसर नहीं करते.'"

—मुआज़ बिन जबल, अहमद.

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—"जो आदमी किसी भी झूट बोलने वाले का आदर करता है वह ऐसा करके इसलाम की इमारत को ढाने में मदद देता है."

—इबराहीम, बेहक़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"वह आदमी झूटा नहीं है जो दो आदमियों में सुलह कराता है और इस

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

معاذ بن جبل کا بیان ھے کہ:—"محمد صاحب نے جب مجھے یمن کا گورنر بنا کر بھیجا تو مجھ سے کہا:— 'خبردار ! عیش (ولاس) کی زندگی بسر نہ کرنا کیونکہ اللہ کے سچے بادے کبھی عیش کی زندگی بسر نہیں کرتے !"

—معاذبن جبل' احمد .

محمد صاحب کہا کہ:— "جو آدمی کسی بھی جھوٹ بولنے والے کا آدر کرتا ھے وہ ایسا کر کے اِسلام کی عمارت کو ڈھانے میں مدد دیتا ھے ."

—ابراھیم' بیھقی .

محمد صاحب نے کہا کہ :— "وہ آدمی جھوٹا نہیں ھے جو دو آدمیوں میں صلح کراتا ھے اور اِس

के लिये उनसे अच्छी अच्छी बातें कहता है, और उनमें कुछ अच्छी बातें अपनी तरफ़ से भी जोड़ देता है."

—उम्मे कुलसूम, बुख़ारी : मुसलिम : अबुदाऊद : तिरमिज़ी.

मैंने पूछा :—"ऐ अल्लाह के रसूल ! आदमी को सब से अच्छी चीज़ क्या दी गई है ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया: —"दूसरों के साथ अच्छा बरताव करना."

—उसामह, बेहक़ी; बग़वी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"तुम में से किसी को यह नहीं चाहिये कि अगर कोई दूसरा बैठा हुआ हो तो अपने बैठने के लिये उसे खड़ा कर दो; बल्कि सब को जगह दो, तो अल्लाह तुम्हें जगह देगा."

—इब्न उमर, बुख़ारी : मुसलिम : अबुदाऊद : तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"जब कभी कहीं पर तीन आदमी हों तो उनमें से दो को यह नहीं चाहिये कि वह तीसरे से हटकर दोनों अलग आपस में बातें करने लगें, क्योंकि इससे मुमकिन है कि उस तीसरे को बुरा लगे."

—इब्न उमर, बुख़ारी: मुसलिम: अबुदाऊद: मालिक.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"ख़बरदार ! कभी रास्ते के ऊपर न बैठो !" लोगों ने जवाब दिया—"लेकिन हम वहां बैठकर व्यापार की बातें करते हैं." पैग़म्बर ने फिर कहा :—"तो जिस तरह बातें करनी चाहियें उस तरह करो." लोगों ने पूछा कि—"बातें किस तरह करनी चाहियें ?" मुहम्मद साहब ने जवाब दिया :—"अपनी निगाहें नीचे ज़मीन की तरफ़ रखो, किसी का भी दिल न दुखाओ, जो कोई आता जाता तुम्हें सलाम करे उसके जवाब में उसे सलाम करो, लोगों को अच्छी बातें करने के लिये कहो, बुरी बातों से रोको, दुखियों का दुख दूर करो, और जो राह से भटक गए हों उन्हें ठीक रास्ता बता दो.

—अबुसईद, बुख़ारी: मुसलिम: अबुदाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"सचमुच शादी कर लेने से आदमी की निगाहें नीची रहती हैं और वह बद-चलनी से बचा रहता है; और जो कोई शादी न कर सके उसे चाहिये कि रोज़े रखे, क्योंकि सचमुच रोज़े रखने से उसके लिये अपने ऊपर क़ाबू रखना आसान होगा."

—अब्दुल्लाह बिना मसऊद, बुख़ारी : मुसलिम.

کے لئے اُن سے اچھی اچھی باتیں کہتا ھے' اور اُن میں کچھ اچھی باتیں اپنی طرف سے بھی جوڑ دیتا ھے ."

—اُم کلثوم' بخاری: مسلم: ابوداؤد: ترمذی .

میں نے پوچھا:— "اے اللہ کے رسول ! آدمی کو سب سے اچھی چیز کیا دی گئی ھے ؟" پیغمبر نے جواب دیا:— "دوسروں کے ساتھ اچھا برتاؤ کرنا ."

—اُسامہ' بیہقی؛ بغوی .

محمد صاحب نے کہا:—"تم میں سے کسی کو یہ نہیں چاھئے کہ اگر کوئی دوسرا بیٹھا ہوا ہو تو اپنے بیٹھنے کے لئے اُسے کھڑا کردو؛ بلکہ سب کو جگہہ دو' تو اللہ تمہیں جگہہ دیگا ."

—ابن عمر' بخاری: مسلم: ابوداؤد: ترمذی .

محمد صاحب نے کہا کہ:— "جب کبھی کہیں پر تین آدمی ھوں تو اُن میں سے دو کو یہ نہیں چاھئے کہ وہ تیسرے سے ھٹ کر دونوں الگ آپس میں باتیں کرنے لگیں' کیونکہ اِس سے ممکن ھے کہ اُس تیسرے کو برا لگے ."

—ابن عمر' بخاری: مسلم: ابوداؤد: مالک .

محمد صاحب نے کہا:— "خبردار ! کبھی راستے کے اُوپر نہ بیٹھو !" لوگوں نے جواب دیا—"لیکن ہم وھاں بیٹھ کر بیوپار کی باتیں کرتے ھیں ." پیغمبر نے پھر کہا:— "تو جس طرح باتیں کرنی چاھئیں اُس طرح کرو ." لوگوں نے پوچھا کہ —"باتیں کس طرح کرنی چاھئیں ؟" محمد صاحب نے جواب دیا:—"اپنی نگاھیں نیچے زمین کی طرف رکھو' کسی کا بھی دل نہ دکھاؤ' جو کوئی آتا جاتا تمہیں سلام کرے اِس کے جواب میں اُسے سلام کرو' لوگوں کو اچھی باتیں کرنے کے لئے کہو' بری باتوں سے روکو' دکھیوں کا دکھ دور کرو' اور جو راہ سے بھٹک گئے ھوں اُنھیں ٹھیک راستہ بتا دو ."

—ابو سعید' بخاری: مسلم: ابوداؤد .

محمد صاحب نے کہا کہ:—"سچ مچ شادی کرلینے سے آدمی کی نگاھیں نیچی رھتی ھیں اور وہ بدچلنی سے بچا رھتا ھے' اور جو کوئی شادی نہ کرسکے اُسے چاھئے کہ روزے رکھے' کیونکہ سچ مچ روزے رکھنے سے اُس کے لئے اپنے اُوپر قابو رکھنا آسان ھوگا ."

—عبداللہ بن مسعود' بخاری : مسلم .

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"किसी औरत से शादी चार खूबियों की वजह से की जाती है : या तो उसकी दौलत की वजह से, या उसकी नसल की वजह से, या उसकी खूबसूरती की वजह से, और या उसकी दीनदारी की वजह से. तुम्हें चाहिये कि तुम दीनदार औरतों को पसन्द करो. और अगर तुम इन चारों में से किसी और खूबी की वजह से शादी करोगे तो अपने हाथों को गन्दगी में सान लोगे !"

—अबुहुरैरा, बुख़ारी: मुसलिम: अबुदाऊद: नसाई.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"सचमुच क़यामत के दिन सिवाय उन सौदागरों के जो अल्लाह से डरते हैं, नेकी करते हैं और सच बोलते हैं बाक़ी सौदागर गुनहगारों में खड़े किये जाएंगे."

—रिफ़ाह बिन राफ़ी, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"किसी भी माल का बेचने वाला और ख़रीदने वाला जब तक आमने सामने हों तब तक उन्हें सौदा करने या न करने की आज़ादी है. लेकिन अगर बेचने वाला और ख़रीदने वाला दोनों सच बोलें, और अपने माल की असल हक़ीक़त बता दें, तो उनके व्यापार में बरकत होगी; और अगर वह झूट बोलें और माल की बुराई या उसकी अच्छाई को छुपाएं तो यह हो सकता है कि वह नफ़ा कमालें पर अल्लाह की बरकत उस व्यापार से मिट जाती है."

—हकीम बिन निज़ाम, बुख़ारी: मुसलिम: अबुदाऊद: तिरमिज़ी: नसाई.

लड़ाई के कुछ क़ैदी पैग़म्बर के सामने आए. उनमें एक औरत थी जिसका बच्चा उससे कहीं भटक गया था. उसकी छाती से दूध टपक रहा था और वह बेचैनी के साथ बच्चे को इधर उधर ढूँढ़ती फिर रही थी. जब उसे बच्चा मिल गया तो उसने उसे उठाकर छाती से चिपटा लिया और उसे दूध पिलाना शुरू कर दिया. इस पर पैग़म्बर ने हम लोगों से कहा :—"तुम क्या सोचते हो ? क्या यह औरत कभी अपने बच्चे को आग में फेंकेगी ?" हमने जवाब दिया :—"नहीं, अगर इसमें शक्ति है तो कभी नहीं फेंकेगी." इस पर पैग़म्बर ने कहा :—"जितनी इस औरत को अपने बच्चे पर दया है, उससे कहीं अधिक दया अल्लाह को अपने बन्दों पर है."

—उमर बिन अलख़त्ताब, बुख़ारी: मुसलिम.

محمد صاحب نے کہا کہ :—"کسی عورت سے شادی چار خوبیوں کی وجہ سے کی جاتی ہے : یا تو اُس کی دولت کی وجہ سے، یا اُس کی نسل کی وجہ سے، یا اُس کی خوبصورتی کی وجہ سے، اور یا اُس کی دینداری کی وجہ سے . تمہیں چاہئے کہ تم دیندار عورتوں کو پسند کرو . اور اگر تم اِن چاروں میں سے کسی اور خوبی کی وجہ سے شادی کروگے تو اپنے ہاتھوں کو گندگی میں سان لوگے !"

—ابوہریرہ، بخاری : مسلم : ابوداؤد : نسائی .

محمد صاحب نے کہا کہ :—"سچ مچ قیامت کے دن سوائے اُن سوداگروں کے جو اللہ سے ڈرتے ہیں، نیکی کرتے ہیں اور سچ بولتے ہیں باقی سوداگر گنہگاروں میں کھڑے کئے جائینگے ."

—رفاعہ بن رافع، ترمذی .

محمد صاحب نے کہا کہ :—"کسی بھی مال کا بیچنےوالا اور خریدنے والا جب تک آمنے سامنے ہوں تب تک اُنہیں سودا کرنے یا نہ کرنے کی آزادی ہے . لیکن اگر بیچنےوالا اور خریدنے والا دونوں سچ بولیں، اور اپنے مال کی اصل حقیقت بتادیں، تو اُن کے بیوپار میں برکت ہوگی . اور اگر وہ جھوٹ بولیں اور مال کی برائی یا اُس کی اچھائی کو چھپائیں تو یہ ہوسکتا ہے کہ وہ نفع کمالیں پر اللہ کی برکت اُس بیوپار سے مٹ جاتی ہے ."

—حکیم بن نظام، بخاری : مسلم : ابوداؤد : ترمذی : نساعی .

لڑائی کے کچھ قیدی پیغمبر کے سامنے آئے . اُن میں ایک عورت تھی جس کا بچہ اُس سے کہیں بھٹک گیا تھا . اُس کی چھاتی سے دودھ ٹپک رہا تھا اور وہ بےچینی کے ساتھ بچے کو اِدھر اُدھر ڈھونڈھتی پھر رہی تھی . جب اُسے بچہ مل گیا تو اُسنے اُسے اُٹھاکر چھاتی سے چپٹا لیا اور اُسے دودھ پلانا شروع کردیا . اِس پر پیغمبر نے ہم لوگوں سے کہا :—"تم کیا سوچتے ہو ؟ کیا یہ عورت کبھی اپنے بچے کو آگ میں پھینکیگی ؟" ہم نے جواب دیا :—"نہیں، اگر اِس میں شکتی ہے تو کبھی نہیں پھینکیگی ." اِس پر پیغمبر نے کہا :—"جتنی اِس عورت کو اپنے بچے پر دیا ہے، اُس سے کہیں ادھک دیا اللہ کو اپنے بندوں پر ہے ."

—عمر بن الخطاب، بخاری : مسلم .

एक बार हम पैग़म्बर के साथ सफ़र में जा रहे थे. कुछ लोग हमारे पास से गुज़रे. पैग़म्बर ने उनसे पूछा :—"तुम लोग कौन हो ?" उन्होंने जवाब दिया:—"हम मुसलमान हैं." वहीं पर एक औरत अपना खाना बनाने के लिये आग जला रही थी. उसका बेटा उसके पास फिर रहा था. जब आग की लपटें उठने लगीं तो उसने अपने बेटे को दूर हटा दिया. यह देखकर पैग़म्बर उसके पास गये. उसने पैग़म्बर से पूछा :—"क्या तुम ही अल्लाह के रसूल हो ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया :—"हां." उस औरत ने फिर कहा :—"मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान हों ! क्या अल्लाह सब दया करने वालों से बढ़कर दया करने वाला नहीं है ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया :—"हां, है." उस औरत ने फिर पूछा :—"क्या अल्लाह अपने बन्दों पर उससे ज़्यादा दया नहीं करता जितनी मां अपने बच्चे पर करती है ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया :—"हां, करता है." उस औरत ने फिर कहा :—"सचमुच कोई मां अपने बच्चे को कभी आग में नहीं फेंकेगी." इस पर पैग़म्बर ने अपना सर नीचा कर लिया और रोने लगे. फिर उन्होंने अपना सर ऊपर उठाकर उससे कहा :—"सचमुच अल्लाह अपने किसी बन्दे को सजा नहीं देता सिवाय उनके जो घमंड करते हैं, दूसरों के साथ फ़िसाद करते हैं, जो अल्लाह के ख़िलाफ़ बग़ावत करते हैं, और जो यह कहने से इनकार करते हैं कि सिवाय एक अल्लाह के कोई दूसरा अल्लाह नहीं है."

—अब्दुल्लाह बिन उमर, इब्नमाजह.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"दया उस रहमान (अल्लाह) का एक जुज़ (अंग) है. इसलिये जो कोई दया करेगा वह अल्लाह के नज़दीक पहुंचेगा. और जो कोई अपने को दया से काट देगा अल्लाह उसे अपने से काट देगा."

—इब्न अमरू, अबुदाऊद : तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"वह रहमान (अल्लाह) उन पर रहम करता है जो दूसरों पर रहम करते हैं. तुम उन पर दया (रहम) करो जो ज़मीन पर रहते हैं तो आसमान पर रहने वाला अल्लाह तुम पर दया करेगा."

—इब्न अमरू बिन अलआस, अबुदाऊद : तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"अल्लाह उन पर दया नहीं करता जो आदमियों पर दया नहीं करते."

—जरीर बिन अब्दुल्लाह, बुख़ारी : मुसलिम.

—अनुवादक : श्री मुजीब रिज़वी.

ایک بار ہم پیغمبر کے ساتھ سفر میں جا رہے تھے . کچھ لوگ ہمارے پاس سے گذرے . پیغمبر نے اُن سے پوچھا:— "تم لوگ کون ہو ؟" اُنھوں نے جواب دیا:— "ہم مسلمان ہیں ." وہیں پر ایک عورت اپنا کھانا بنانے کے لئے آگ جلا رہی تھی . اُس کا بیٹا اُس کے پاس پھر رہا تھا . جب آگ کی لپٹیں اُٹھنے لگیں تو اس نے اپنے بیٹے کو دور ہٹا دیا . یہ دیکھ کر پیغمبر اُس کے پاس گئے . اُس نے پیغمبر سے پوچھا:—کیا تم ہی اللہ کے رسول ہو ؟" پیغمبر نے جواب دیا:— "ہاں" . اُس عورت نے پھر کہا:— "میرے ماں باپ آپ پر قربان ہو ! کیا اللہ سب دیا کرنے والوں سے بڑھ کر دیا کرنے والا نہیں ہے ؟" پیغمبر نے جواب دیا:— "ہاں، ہے." اُس عورت نے پھر پوچھا:— "کیا اللہ اپنے بندوں پر اُس سے زیادہ دیا نہیں کرتا جتنی ماں اپنے بچے پرکرتی ہے ؟" پیغمبر نے جواب دیا:— "ہاں، کرتا ہے ." اُس عورت نے پھر کہا:— "سچ مچ کوئی ماں اپنے بچے کو کبھی آگ میں نہیں پھینکیگی ." اِس پر پیغمبر نے اپنا سر نیچا کر لیا اور رونے لگے . پھر اُنھوں نے اپنا سر اُوپر اُٹھا کر اُس سے کہا:— "سچ مچ اللہ اپنے کسی بندے کو سزا نہیں دیتا سوائے اُن کے جو گھمنڈ کرتے ہیں، دوسروں کے ساتھ فساد کرتے ہیں، جو اللہ کے خلاف بغاوت کرتے ہیں، اور جو یہ کہنے سے اِنکار کرتے ہیں کہ سوائے ایک اللہ کے کوئی دوسرا اللہ نہیں ہے ."

—عبداللہ بن عمر، ابن ماجہ .

محمد صاحب نے کہا کہ:— "دیا اُس رحمان (اللہ) کا ایک جز (انگ) ہے . اِس لئے جو کوئی دیا کریگا وہ اللہ کے نزدیک پہونچیگا . اور جو کوئی اپنے کو دیا سے کاٹ دیگا . اللہ اُسے اپنے سے کاٹ دیگا ."

—ابن عمرو، ابوداؤد: ترمذی .

محمد صاحب نے کہا:— "وہ رحمان (اللہ) اُن پر رحم کرتا ہے جو دوسروں پر رحم کرتے ہیں . تم اُن پر دیا (رحم) کرو جو زمین پر رہتے ہیں تو آسمان پر رہنے والا اللہ تم پر دیا کریگا ."

—ابن عمرو بن العاص، ابوداؤد: ترمذی .

محمد صاحب نے کہا کہ:— "اللہ اُن پر دیا نہیں کرتا جو آدمیوں پر دیا نہیں کرتے ."

—جریر بن عبداللہ، بخاری: مسلم .

—انوادک: شری مجیب رضوی .

फुटकर विचार

साधु करें नहिं चाकरी, पंडित करें न काज,
आख़िर हैं यह किस लिये, संसद, सेठ, समाज.

❀ ❀ ❀

कटी बेशक कटी पर, एक ही लंका की नारी की,
भगाई जब गई सीता, तो कितनों की कटी, बोलो?

❀ ❀ ❀

मुरा और कन्स के बैरी, निहायत वीतरागी थे!
मुरारि यह थे, यह ही हैं, परख लीजे, समझ लीजे.

❀ ❀ ❀

ये जिनको क़त्ल करते हैं, उन्हीं को पूज लेते हैं,
ये राजाराम भजते हैं, मिटाकर देश के राजे.

❀ ❀ ❀

वही तो हिन्द है, वहीं तो हिन्दी हैं,
अहिन्सा जिनका पेशा है, 'गदाधर' देवता जिनके.

❀ ❀ ❀

मुझे रग़बत है तारीकी से बेहद,
वह मेरी चान्दनी की वाल्दा है.

❀ ❀ ❀

न हों मुशकिलें तब तो जीना हो मुशकिल,
यही जान है मेरी आसानियों की.

❀ ❀ ❀

घड़ी घड़ी थी घड़ी हाथ में, घड़ी ये घड़ी हरदम दास,
घड़ी घड़ी का अब मैं मालिक. घड़ी हर घड़ी पड़ी उदास.

❀ ❀ ❀

न पूछो मुझ से मैं क्या हूँ, यह पूछो क्या नहीं हूँ मैं,
नहीं हूँ सब मैं जगह गर मैं, बताओ फिर कहीं हूँ मैं?

❀ ❀ ❀

भंगी नगर-पिता बन बैठे, झाड़ू सेठ लगाते हैं,
बामन कमा रहे पैख़ाने, मेहतर ब्याह कराते हैं,
हम जिनको समझाते थे, वह आज हमें समझाते हैं,
गाँधी की आँधी का फल है, वह ख़ुश यह पछताते हैं.

—महात्मा भगवानदीन.

پھٹکر وچار

سادھو کریں نہیں چاکری، پنڈت کریں نہ کاج،
آخر ہیں یہ کس لئے، سنسد، سیٹھ، سماج.

❀ ❀ ❀

کٹی بیشک کٹی پر، ایک ہی لنکا کی ناری کی،
بھگائی جب گئی سیتا، تو کتنوں کی کٹی، بولو؟

❀ ❀ ❀

مورا اور کنس کے بیری، نہایت ویتراگی تھے!
مراری یہ تھے، یہ ہی ہیں، پرکھ لیجے، سمجھ لیجے.

❀ ❀ ❀

یہ جن کو قتل کرتے ہیں، انہیں کو پوج لیتے ہیں،
یہ راجا رام بھجتے ہیں، مٹا کر دیش کے راجے.

❀ ❀ ❀

وہی تو ہند ہے، وہ ہی تو ہندی ہیں،
اہنسا جن کا پیشہ ہے، گدادھر، دیوتا جن کے.

❀ ❀ ❀

مجھے رغبت ہے تاریکی سے بےحد،
وہ میری چاندنی کی والدہ ہے.

❀ ❀ ❀

نہ ہوں مشکلیں تب تو جینا ہو مشکل،
یہی جان ہے میری آسانیوں کی.

❀ ❀ ❀

گھڑی گھڑی تھی گھڑی ہاتھ میں، گھڑی یہ گھڑی ہردم داس،
گھڑی گھڑی کا اب میں مالک، گھڑی ہر گھڑی پڑی اداس.

❀ ❀ ❀

نہ پوچھو مجھ سے میں کیا ہوں، یہ پوچھو کیا نہیں ہوں میں،
نہیں ہوں سب جگہ گر میں، بتاؤ پھر کہیں ہوں میں؟

❀ ❀ ❀

بھنگی نگر پتا بن بیٹھے، جھاڑو سیٹھ لگاتے ہیں،
باہمن کما رہے پیخانے، مہتر بیاہ کراتے ہیں،
ہم جن کو سمجھاتے تھے، وہ آج ہمیں سمجھاتے ہیں،
گاندھی کی آندھی کا پھل ہے، وہ خوش یہ پچھتاتے ہیں.

—مہاتما بھگوان دین.

नीलम का हार

विश्वम्भरनाथ पांडे

कई महीने हुये जब मैंने नया हिन्द के पाठकों से मलका मुमताज़महल और नरगिस के फूलों की घटना का ज़िक्र किया था. उन सदाबहार नरगिस के फूलों को देख कर मेरे दिल में यह यक़ीन पुख्ता होता जाता था कि किसी ने जन्नत के चमन से ही यह फूल तोड़े होंगे. जहां यह चमन होगा वहां न मौसम का कोई असर होगा, न खिज़ाँ का और न मौत का, नहीं तो यह फूल इस तरह हमेशा खिले हुये कैसे अपनी मादक खुशबू फैलाते रहते ?

श्रीमती जी को छोड़कर मैंने किसी और से इन फूलों की चर्चा न की थी. मेरे नज़दीक ये फूल एक बेशक़ीमत ख़ज़ाने की तरह थे. शायद कृष्ण भगवान को कौस्तुभ मणियों की माला से भी इतनी मुहब्बत न होगी जितनी मुझे इन फूलों से है. उनके खिले हुये पाटल देखकर मेरा दिल उमंगों से भर जाता. किसी दिन यह फूल मुरझा जायँगे, इस ख़दशे से ही मेरे मन में एक तड़प पैदा हो जाती. लोग कह सकते हैं कि मेरा दिमाग़ फिर गया था और शायद लोगों का नज़रिया भी ठीक हो, लेकिन अगर किसी ने पूनम की रुपहली रात में ताजमहल के उस बाग़ में वह अचम्भे से भरा हुआ नज़ारा देखा होता, वह मदहोश बना देने वाला संगीत सुना होता, घुँघरुओं की झंकार पर, दिल को बेचैन कर देने वाले नाच पर अपने पंजों से ताल दी होती, जमुना के उस पार संगमरमर के मेहराब से जुड़ा हुआ दूसरा ताजमहल देखा होता, तो मुझे यक़ीन है कि हर ऐसे शख्स का दिमाग़ सौ फ़ीसदी फिर गया होता तब यह नरगिस के फूल उस पर कमोबेश इतना ही असर ज़रूर डालते.

मुझे वे फूल जी-जान से प्यारे थे. इतने दिन बीत चुके थे और मुझे ज़रा भी उनके अन्दर मुरझाने के निशान नहीं दिखाई दिये. यह सही है कि मैं उन्हें हमेशा ताज़े पानी में रखता, लेकिन अगर वे वाक़ई जन्नत के बाग़ से तोड़े गये थे तब यह फ़िक्र बेकार थी, वे बिना पानी दिये ही तरोताज़ा रहते. लेकिन हम लोग, इस फ़ना होनेवाली दुनिया के इनसान ख़तरे और डर की बुनियादों पर ही अपनी ज़िन्दगी का महल उठाते हैं. फूल न मुरझायेंगे इसकी मुझे उम्मीद तो थी पर यक़ीन न था.

نیلم کا ہار

وشومبھر ناتھ پانڈے

کئی مہینے ہوئے جب میں نے نیا ہند کے پاٹھکوں سے ملکہ ممتاز محل اور نرگس کے پھولوں کی گھٹنا کا ذکر کیا تھا. اُن سدابہار نرگس کے پھولوں کو دیکھکر میرے دل میں یہ یقین پختہ ہوتا جاتا تھا کہ کسی نے جنت کے چمن سے ہی یہ پھول توڑے ہونگے. جہاں یہ چمن ہوگا وہاں نہ موسم کا کوئی اثر ہوگا، نہ خزاں کا، اور نہ موت کا، نہیں تو یہ پھول اِس طرح ہمیشہ کھلے ہوئے کیسے اپنی مادک خوشبو پھیلاتے رہتے؟

شریمتی جی کو چھوڑکر میں نے کسی اور سے ان پھولوں کی چرچا نہ کی تھی. میرے نزدیک یہ پھول ایک بیش قیمت خزانے کی طرح تھے. شاید کرشن بھگوان کو کوستوبھ منیوں کی مالا سے بھی اِتنی محبت نہ ہوگی جتنی مجھے اِن پھولوں سے ہے. اُن کے کھلے ہوئے پاٹل دیکھکر میرا دل اُمنگوں سے بھر جاتا ہے. کسی دن یہ پھول مرجھا جائینگے، اِس خدشہ سے ہی میرے من میں ایک تڑپ پیدا ہوجاتی ہے. لوگ کہہ سکتے ہیں کہ میرا دماغ پھر گیا تھا اور شاید لوگوں کا نظریہ بھی ٹھیک ہو، لیکن اگر کسی نے پونم کی روپہلی رات میں تاج محل کے اُس باغ میں وہ اچنبھے سے بھرا ہوا نظارہ دیکھا ہوتا، وہ مدہوش بنا دینے والا سنگیت سنا ہوتا، گھونگھروؤں کی جھنکار پر، دل کو بےچین کردینے والے ناچ پر اپنے پنجوں سے تال دی ہوتی، جمنا کے اُس پار سنگمرمر کے محراب سے جڑا ہوا دوسرا تاج محل دیکھا ہوتا، تو مجھے یقین ہے کہ ہر ایسے شخص کا دماغ سو فیصدی پھر گیا ہوتا. تب یہ نرگس کے پھول اُس پر اُسے کم و بیش اِتنا ہی اثر ضرور ڈالتے.

مجھے وے پھول جی‌جان سے پیارے تھے. اتنے دن بیت چکے تھے اور مجھے ذرا بھی اُن کے اندر مرجھانے کے نشان نہیں دکھائی دیئے. یہ صحیح ہے کہ میں اُنہیں ہمیشہ تازہ پانی میں رکھتا، لیکن اگر وے واقعی جنت کے باغ سے توڑے گئے تھے تب یہ فکر بیکار تھی، وے بنا پانی دیئے ہی تروتازہ رہتے. لیکن ہم لوگ، اس فنا ہونے والی دنیا کے اِنسان، خطرے اور ڈر کی بنیادوں پر ہی اپنی زندگی کا محل اُٹھاتے ہیں. پھول نہ مرجھائینگے اِس کی مجھے اُمید تو تھی، پر یقین نہ تھا.

फिर यकायक मुझे आगरा छोड़कर मेवाड़ आना पड़ा. जिस दिन मैं उदयपुर में था उस दिन भी पूनम की रात थी. ताजमहल की उस पूनम की रात के बाद, कि जैसी रात शायद लाख-लाख बरस में सिर्फ़ एक बार आती है, ठीक एक महीना बीत चुका था. मैं चित्तौड़ की फ़तह मीनार के सामने खड़ा था. कितनी ही सदियों से आज़ादी की यह अनोखी यादगार पहाड़ी की चोटी पर गुरूर से सिर ऊँचा किये खड़ी हुई है. शिशोदिया खान्दान के कितने ही रानाओं को उसने देखा है और कितनों की ही कीर्ति की कहानी उसने सुनी है. उसके पथरीले दिल में ऐसी-ऐसी नाज़ुक और ख़ूबसूरत नवयौवना राजपूत महिलाओं की प्रेम कहानी जुड़ी हुई है जिन्होंने सोहाग रात के सवेरे ही ताज़ा प्रेम की छाती पर पैर रखकर अपने साजन के माथे पर तिलक लगाकर मैदाने जंग के लिये रवाना किया था. लाखों-लाखों कंठों की जय-ध्वनि के बीच उसने मारू गीत सुने. लाखों सैनिकों ने उसके सामने सिर झुकाकर क़सम खाई, मैदाने जंग से कभी ज़िन्दा न लौटने की. तपे हुये सोने सी, चमकते हुये हीरे सी, सुनहले चम्पे सी नाज़ुक, सुकुमार पुरवधुओं को उसने जौहर की लपटों में जलते हुये देखा है. फिर ज़माना बदला, कैफ़ियत बदली, दिन बदले और उसी फ़तह मीनार ने सांगा और प्रताप की औलाद रानाओं को फ़िरंगियों के बूट पहने क़दमों पर गिड़गिड़ाते हुये सिर झुकाते देखा है. मैं हैरत में भरा हुआ जाने कितनी देर तक अपनी उमंगों के किनारों पर डूबता-उतराता रहा और धीरे धीरे चांदनी फीकी पड़ती गई.

पढ़ने वाले शायद मेरे तफ़सीली इस बयान से ग़ालिबन ऊब गये होंगे और पाठक के धीरज की भी एक हद होती है. लेकिन मैं एक ऐसे वाक़ये पर रोशनी डाल रहा हूँ जो मेरी आँखों के सामने गुज़रा है और हरफ़ बहरफ़ सच है. मैं समझता हूँ रसकिन ने ही तो यह कहा है कि—"इन्सान इस दुनिया में जो सबसे बड़ा काम करता है वह है किसी चीज़ को देखना, फिर उसे इस तरह बयान करना जिसे सुनकर दूसरों के सामने उस वाक़ये की ठीक तसवीर उतर आये. एक शख़्स सोचता है और सैकड़ों लोग उस शख़्स के ख़याल को दोहराते हैं. एक आदमी सही नज़रिये से किसी चीज़ को देखता है और हज़ारों आदमी उस पर ग़ौर करते हैं." रसकिन इससे भी आगे बढ़कर कह सकता था कि हज़ारों आदमी देखते हैं लेकिन बिरले ही अपनी देखी हुई घटना को सही लफ़्ज़ों में इज़हार कर सकते हैं. रसकिन ने कहा है—"साफ़-साफ़ देखकर उसे सही लफ़्ज़ों में बयान कर सकना ही 'शायरी', 'पेशीनगोई' और 'मज़हब' है." करोड़ों आदमियों के लिये अपनी आंखों की वही क़ीमत है जो किसी जानवर की आंखों की होती है—महज़ भूक

پھر یکایک مجھے آگرہ چھوڑکر میواڑ آنا پڑا ۔ جس دن میں اُدے پور میں تھا اُس دن بھی پونم کی رات تھی ۔ تاج محل کی اُس پونم کی رات کے بعد، کہ جیسی رات شاید لاکھ لاکھ برس میں صرف ایک بار آتی ہے، آج ٹھیک ایک مہینہ بیت چکا تھا ۔ میں چتوڑ کی فتح مینار کے سامنے کھڑا تھا ۔ کتنی ہی صدیوں سے آزادی کی یہ انوکھی یادگار پہاڑی کی چوٹی پر غرور سے سر اُونچا کئے کھڑی ہوئی ہے ۔ ششودیا خاندان کے کتنے ہی راناؤں کو اُس نے دیکھا ہے اور کتنوں ہی کی کیرتی کی کہانی اُس نے سنی ہے ۔ اُس کے پتھریلے دل میں ایسی ایسی نازک اور خوبصورت نویوونا راجپوت مہلاؤں کی پریم کہانی جڑی ہوئی ہے جنھوں نے سہاگ رات کے سویرے ہی تازہ پریم کی چھاتی پر پیر رکھکر اپنے ساجن کے ماتھے پر تلک لگاکر میدان جنگ کے لئے روانہ کیا تھا ۔ لاکھوں لاکھوں کنٹھوں کی جے دھونی کے بیچ اُس نے مارو گیت سنے ۔ لاکھوں سینکوں نے اُس کے سامنے سر جھکاکر قسم کھائی، میدان جنگ سے کبھی زندہ نہ لوٹنے کی ۔ تپے ہوئے سونے سی، چمکتے ہوئے ہیرے سی، سنہلے چمپے سی نازک، سکمار پوردھوؤں کو اُس نے جوہر کی لپٹوں میں جلتے ہوئے دیکھا ہے ۔ پھر زمانہ بدلا، کیفیت بدلی، دن بدلے اور اُسی فتح مینار نے سانگا اور پرتاپ کی اولاد راناؤں کو فرنگیوں کے بوٹ پہنے قدموں پر گڑگڑاتے ہوئے سر جھکاتے دیکھا ۔ میں حیرت میں بھرا ہوا جانے کتنی دیر تک اپنی اُمنگوں کے کناروں پر ڈوبتا اُتراتا رہا اور دھیرے دھیرے چاندنی پھیکی پڑتی گئی ۔

پڑھنے والے شاید میرے اِس تفصیلی بیان سے غالباً اُوب گئے ہونگے اور پاٹھک کے دھیرج کی بھی ایک حد ہوتی ہے ۔ لیکن میں ایک ایسے واقعے پر روشنی ڈال رہا ہوں جو میری آنکھوں کے سامنے گذرا ہے اور حرف بحرف سچ ہے ۔ میں سمجھتا ہوں رسکن نے ہی تو یہ کہا ہے کہ—"اِنسان اِس دنیا میں جو سب سے بڑا کام کرتا ہے وہ ہے کسی چیز کو دیکھنا، پھر اُسے اِس طرح بیان کرنا جسے سنکر دوسروں کے سامنے اُس واقعے کی ٹھیک تصویر اُتر آئے ۔ ایک شخص سوچتا ہے اور سیکڑوں لوگ اُس شخص کے خیال کو دہراتے ہیں ۔ ایک آدمی صحیح نظریہ سے کسی چیز کو دیکھتا ہے اور ہزاروں آدمی اُس پر غور کرتے ہیں ۔" رسکن اِس سے بھی آگے بڑھکر کہہ سکتا تھا کہ ہزاروں آدمی دیکھتے ہیں لیکن برلے ہی اپنی دیکھی ہوئی گھٹنا کو صحیح لفظوں میں اِظہار کرسکتے ہیں ۔ رسکن نے کہا ہے—"صاف صاف دیکھکر اُسے صحیح لفظوں میں بیان کرسکنا ہی 'شاعری'، 'پیشینگوئی' اور 'مذہب' ہے ۔" کروڑوں آدمیوں کے لئے اپنی آنکھوں کی وہی قیمت ہے جو کسی جانور کی آنکھوں کی ہوتی ہے—محض بھوک

झुकाने में मदद देने वाली. इनके अलावा हजारों इन्सान ऐसे हैं जो देखते हैं, देखी हुई चीज को समझते भी हैं लेकिन लफ़्ज़ों में उसे बयान नहीं कर सकते. अपने ही ख्याल को अलफ़ाज़ का जामा नहीं पहना सकते और ज़िन्दगी में नई-नई चीज़ों को देखने के उन्हें जो नायाब मौके मिलते हैं उसकी ख़ुशी वे किसी और के साथ नहीं बटा सकते. मैंने अक्सर इस बात पर हैरत जाहिर की है कि ऐसे शख्स जिन्होंने दुनिया के बेहद दिलचस्प नज़ारे देखे हैं, कई ऐतिहासिक समारोहों पर मौजूद रहे हैं और अपने ज़माने के बड़े से बड़े लोगों से मिले हैं, अपनी बातचीत में इस तजुरबे से कोई फायदा नहीं उठा पाते. अगर उनसे उनके इन अनुभवों पर सवाल कीजिये तो उनके जवाब निहायत फीके और नीरस होते हैं. सिर्फ थोड़े से लोग ऐसे होते हैं जो स्वयं देखते हैं और दूसरों को भी अपनी ही आँखों से देखने का मौक़ा देते हैं.

चितौड़ से उदयपुर लौटते हुये रास्ते भर मैं इन्हीं विचारों में खोया रहा. जब वापस अपने ठहरने की जगह पहुंचा उस समय पूरब की रानी ऊषा थालों में कुमकुम भर कर बिखेर रही थीं. झील के पास इक्का-दुक्का बगुले योग का आसन लगाये खड़े थे. चटखती हुई कलियां चांदनी के टपटप आंसुओं पर नुकताचीनी कर रही थीं. सूरज की पटरानी प्रभा का सिंगार अभी पूरा न हुआ था, एक आध मेहतरानी कमर कसे प्रभाती गाते हुये, इन्सान के सम्पर्क में आई हुई सड़कों का पाप बटोर रही थी. मैंने जम्हाई लेते हुये कमरे का दरवाज़ा थपथपाया. श्रीमती जी ने अंगड़ाई लेते हुये इस तरह दरवाज़ा खोला मानो शरण में आये हुये शत्रु को आत्म-समर्पण करते देखकर विजयी योद्धा इतमीनान के साथ धनुष की कमान उतार रहा हो.

कमरे में घुसते हुये जिस चीज़ पर सबसे पहले मेरी निगाह पड़ी वह चांदी का नक़्क़ाशी किया हुआ ख़ाली गुलदान था. साथ-साथ श्रीमती जी भी चौंकीं—"हैं! नरगिस के फूल कहां गये?" गुलदान में सिर्फ पानी बच रहा था, कमरे का कोना-कोना छान मारा. रात को जब श्रीमती जी दरवाज़ा बन्द करके सोई थीं तो आख़िरी बार उन फूलों की उन्होंने सुगन्ध ली थी. दरवाज़े, खिड़कियां, झिलमिली और जंगले सब बन्द थे. कमरे की बाक़ी चीज़ें सब ज्यों की त्यों क़रीने से रखी थीं. श्रीमती जी के पर्स में हीरे और पुखराज की तीन अंगूठियाँ और सौ-सौ के सात नोट ज्यों के त्यों रखे थे. मैंने सब नौकर-चाकरों को बुलाकर पूछा, हरेक से सवाल किये गये और जिरह की गई. सबने फूलों को देखा था लेकिन किसी ने उन्हें छुआ न था. कल्पना से मैं किसी भी नतीजे पर पहुँच सकने के लिये आज़ाद था, लेकिन मैं किसी नतीजे पर पहुँचा नहीं.

جھکانے میں مدد دینے والی۔ ان کے علاوہ ہزاروں انسان ایسے ہیں جو دیکھتے ہیں، دیکھی ہوئی چیز کو سمجھتے بھی ہیں، لیکن لفظوں میں اسے بیان نہیں کرسکتے۔ اپنے ہی خیال کو الفاظ کا جامہ نہیں پہنا سکتے اور زندگی میں نئی نئی چیزوں کو دیکھنے کے انہیں جو نایاب موقعے ملتے ہیں اس کی خوشی وہ کسی اور کے ساتھ نہیں بانٹ سکتے۔ میں نے اکثر اس بات پر حیرت ظاہر کی ہے کہ ایسے شخص جنہوں نے دنیا کے بیحد دلچسپ نظارے دیکھے ہیں، کئی ایتہاسک سماروہوں پر موجود رہے ہیں اور اپنے زمانے کے بڑے سے بڑے لوگوں سے ملے ہیں، اپنی بات چیت میں اس تجربے سے کوئی فائدہ نہیں اٹھا پاتے۔ اگر ان سے ان کے ان انوبھووں پر سوال کیجئے تو ان کے جواب نہایت پھیکے اور نیرس ہوتے ہیں۔ صرف تھوڑے سے لوگ ایسے ہوتے ہیں جو سویم دیکھتے ہیں اور دوسروں کو بھی اپنی ہی آنکھوں سے دیکھنے کا موقع دیتے ہیں۔

چتوڑ سے ادےپور لوٹتے ہوئے راستے بھر میں انہیں وچاروں میں کھویا رہا۔ جب واپس اپنے ٹھہرنے کی جگہ پہونچا اس سمئے پورب کی رانی اوشا تھالوں میں کمکم بھرکر بکھیر رہی تھیں۔ جھیل کے پاس اِکا دُکا بگلے یوگ کا آسن لگائے کھڑے تھے۔ چٹختی ہوئی کلیاں چاندنی کے ٹپ ٹپ آنسوؤں پر نکتہ‌چینی کررہی تھیں۔ سورج کی پٹ رانی پربھا کا سنگار ابھی پورا نہ ہوا تھا، ایک آدھ مہترانی کمر کسے پربھاتی گاتے ہوئے، انسان کے سمپرک میں آئی ہوئی سڑکوں کا پاپ بٹور رہی تھی۔ میں نے جمہائی لیتے ہوئے کمرے کا دروازہ تھپتھپایا۔ شریمتی جی نے انگڑائی لیتے ہوئے اس طرح دروازہ کھولا مانو شرن میں آئے ہوئے شترو کو آتم سمرپن کرتے دیکھ کر وجئی یودھا اطمینان کے ساتھ دھنش کی کمان اتار رہا ہو۔

کمرے میں گھستے ہوئے جس چیز پر سب سے پہلے میری نگاہ پڑی وہ چاندی کا نقاشی کیا ہوا خالی گلدان تھا۔ میرے ساتھ ساتھ شریمتی جی بھی چونکیں—"ہیں! نرگس کے پھول کہاں گئے؟" گلدان میں صرف پانی بچ رہا تھا، کمرے کا کونہ کونہ چھان مارا۔ رات کو جب شریمتی جی دروازہ بند کرکے سوئی تھیں تو آخری بار ان پھولوں کی انہوں نے سگندھ لی تھی۔ دروازے، کھڑکیاں، جھلملی اور جنگلے سب بند تھے۔ کمرے کی باقی چیزیں سب جیوں کی تیوں قرینے سے رکھی تھیں۔ شریمتی جی کے پرس میں ہیرے اور پکھراج کی تین انگوٹھیاں اور سو سو کے سات نوٹ جیوں کے تیوں رکھے تھے۔ میں نے سب نوکر چاکروں کو بلا کر پوچھا، ہر ایک سے سوال کئے گئے اور جرح کی گئی۔ سب نے پھولوں کو دیکھا تھا لیکن کسی نے انہیں چھوا نہ تھا۔ کلپنا سے میں کسی بھی نتیجے پر پہونچ سکنے کے لئے آزاد تھا، لیکن میں کسی نتیجے پر پہونچا نہیں۔

घटना की कोई सिलसिलेवार कड़ी होती है, तब न मैं किसी नतीजे पर पहुंचता? लेकिन इसके बाद जो घटना घटी वह इससे इतना ज्यादा मिलती-जुलती है कि शायद उसकी रोशनी में इन फूलों के गुम होने के सिलसिले में कोई राय क़ायम की जा सके.

2]

राजपूताने से बम्बई पहुँचकर क़रीब एक हफ़्ता हमें जहाज का इन्तज़ार करना पड़ा. इस बार मैं अपनी श्रीमती जी को नील नदी के किनारे बने हुये मिस्र के अज़ीमुश्शान पिरेमिड दिखाना चाहता था. 22 फरवरी को हम लोग क़ाहिरा पहुँचे. प्राचीन मिस्र की उस महान सभ्यता को हमने उसी शान के साथ खड़े पाया.

मिस्र के पहले फ़िरऔन मेनी के ज़माने में यानी हज़रत ईसा से 34 सौ बरस पहले और आज से 53 सदी पहले हमें दरया नील के क़ुर्बोजवार में हज़ारों बरस पुराने बड़े-बड़े शहरों के खंडहर मिलते हैं. मेनी के ज़माने में मिस्र की सरसब्ज़ वादी खेतों और दरख़्तों से ढकी हुई थी. समुद्र से सौ मील ऊपर नील सात बड़ी-बड़ी धाराओं में बंटकर बहती थी. इन सातों धाराओं में किश्तियों पर मुसाफ़िरों और व्यापारियों की भीड़ लगी रहती थी. समुन्दर के दोनों किनारे ऐशियाई मुल्कों के साथ तिजारत करन वाले जहाज़ों से भरे रहते थे.

मेनी के ज़माने से मिस्र के बादशाह अपने को 'पेरोये' कहने लगे. मेनी पहला 'पेरोये' था. 'पेरोये' का अर्थ है 'सूर्यवंशी'. यह लफ़्ज़ 'प्राह' से निकला है जो सूर्य का एक नाम है. इसी से बिगड़कर बाद में 'फ़राओह और फ़िरऔन' लफ़्ज़ बने.

क़ाहिरा पहुँचकर क़रीब एक सप्ताह हम लोगों ने पिरेमि देखने मे लगाये. बाद में इस पिरेमि को ही लोग पिरेमिड कहने लगे. ये पिरेमिड सूर्य देवता 'रे' (रवि) का एक प्रतीक समझी जाती थीं और हर पिरेमि के सबसे ऊपर सूर्य का निशान बना होता था.

मेरी बीवी ने जब से गाइड-बुक पढ़ी, उन्हें मलका हेत-शेप-सूत की समाधि देखने की ही धुन थी. मिस्र की यह मशहूर शहंशाह हज़रत ईसा से 1493 बरस पहले मिस्र के तख़्त पर बैठी. पहले पेरोये थुथमोसे की यह बेटी थी. मिस्र के बड़े से बड़े बादशाहों में उसकी गिनती थी. धन-दौलत, ज्ञान-विज्ञान, दस्तकारी, कला-कौशल, तिजारत, अमन-आमान, तहज़ीब और तमद्दुन सब के विचार से हेप-शेप-सूत का ज़माना मिस्र के इतिहास में बड़ा अहम समझा जाता है. 21 बरस तक उसने राज्य किया. वह मरदाने लिबास में रहती थी और बजाय 'मलका' के 'शहंशाह'

گھٹنا کی کوئی سلسلے وار کڑی ہوتی ہے' تب نہ میں کسی نتیجے پر پہونچتا؟ لیکن اِس کے بعد جو گھٹنا گھٹی وہ اِس سے اِتنا زیادہ ملتی جلتی ہے کہ شاید اُس کی روشنی میں اِن پھولوں کے گم ہونے کے سلسلے میں کوئی رائے قایم کی جا سکے.

[2]

راجپوتانے سے بمبئی پہونچکر قریب ایک ہفتہ ہمیں جہاز کا انتظار کرنا پڑا. اِس بار میں اپنی شریمتی جی کو نیل ندی کے کنارے بنے ہوئے مصر کے عظیم‌الشان پریمڈ دکھانا چاہتا تھا. 22 فروری کو ہم لوگ قاہرہ پہونچے. پراچین مصر کی اُس مہان سبھیتا کو ہم نے اُسی شان کے ساتھ کھڑے پایا.

مصر کے پہلے فرعون مینی کے زمانے میں یعنی حضرت عیسیٰ سے 34 سو برس پہلے اور آج سے 53 صدی پہلے ہمیں دریائے نیل کے قریب جوار میں ہزاروں برس پرانے بڑے بڑے شہروں کے کھنڈر ملتے ہیں. مینی کے زمانے میں مصر کی سرسبز وادی کھیتوں اور درختوں سے ڈھکی ہوئی تھی. سمندر سے سو میل اوپر نیل سات بڑی بڑی دھاراؤں میں بٹ کر بہتی تھی: اِن ساتوں دھاراؤں میں کشتیوں پر مسافروں اور ویاپاریوں کی بھیڑ لگی رہتی تھی. سمندر کے دونوں کنارے ایشیائی ملکوں کے ساتھ تجارت کرنے والے جہازوں سے بھرے رہتے تھے.

مینی کے زمانے سے مصر کے بادشاہ اپنے کو 'پیروئے' کہنے لگے. مینی پہلا پیروئے تھا. 'پیروئے' کا ارتھ ہے 'سوریہ ونشی'. یہ لفظ 'پراہ' سے نکلا ہے جو سوریہ کا ایک نام ہے. اِسی سے بگڑ کر بعد میں 'فراعوہ اور فرعون' لفظ بنے.

قاہرہ پہونچ کر قریب ایک سپتاہ ہم لوگوں نے پریمی دیکھنے لگائے. بعد میں اِس پریمی کو ہی لوگ پریمڈ کہنے لگے. یہ پریمڈ سوریہ دیوتا 'رے' (روی) کا ایک پرتیک سمجھی جاتی تھی اور ہر پریمی کے سب سے اوپر سوریہ کا نشان بنا ہوتا تھا.

میری بیوی نے جب سے گائیڈ بک پڑھی' اُنہیں ملکہ ہیت. شیپ. سوت کی سمادھی دیکھنے کی ہی دھن تھی. مصر کی یہ مشہور شہنشاہ حضرت عیسیٰ سے 1493 برس پہلے مصر کے تخت پر بیٹھی. پہلے پیروئے تھتھموسے کی یہ بیٹی تھی. مصر کے بڑے سے بڑے بادشاہوں میں اُس کی گنتی تھی. دھن دولت' گیان وگیان' دستکاری' کلا کوشل' تجارت' امن آمان' تہذیب اور تمدن سب کے وچار سے ہیت. شیپ - سوت کا زمانہ مصر کے اِتہاس میں بڑا اہم سمجھا جاتا ہے. 21 برس تک اُس نے راجیہ کیا. وہ مردانے لباس میں رہتی تھی اور بجائے 'ملکہ' کے 'شہنشاہ'

कहलाना पसंद करती थी. सब सरकारी कागज़ों और ऐलानों में उसके लिये पुल्लिंग सर्वनाम ही इस्तेमाल किये जाते थे.

मिस्रियों में दन्तकथा थी कि हेत-शेप-सूत के जन्म से पहले देवताओं की एक सभा हुई. आमन यानी सूर्य देवता उस सभा के सदर थे. सभा में सत्य के देवता 'थोथ' ने आमन को मशविरा दिया कि इन्सान की भलाई के लिये आप मिस्र के फेरोये थुथमोसे पहले का रूप धरकर थुथमोसे की महारानी के पास जावें और उससे एक सुन्दर कन्या को जन्म दें. इस तरह सूर्य भगवान और थुथमोसे की महारानी के संयोग से हेत-शेप-सूत पैदा हुई. हेत का मतलब है बड़ा. हेत-शेप-सूत का मतलब है अच्छे 'खान्दान वालों में सबसे बड़ा.

कहते हैं मिस्री इतिहास में इससे पहले किसी फेरोये के दरबार की वह शान-शौकत न थी जो हेत-शेप-सूत के दरबार की थी. सन् 1472 ईसा से पहले 58 बरस की आयु में हेत-शेप-सूत की मौत हुई. मरने के बाद सूर्य देवी के नाम से उसकी पूजा होने लगी.

[3]

उस दिन बसन्त ऋतु की पूर्णिमा थी. नील नदी की साड़ी में प्रकृति गोटा टाँकने में मसरूफ़ थी. रेगिस्तान का ज़र्रा-ज़र्रा चांद के रुपहले सरोवर में नहाकर निखर उठा था. इथयोपिया के लोबान के जंगलों से दक्खिनी हवा मिस्र को गुदगुदाते हुये लीबिया को छूने के लिये सरपट दौड़ रही थी. हमारी मोटर रेगिस्तान की छाती चीरती हुई हेत-शेप-सूत की समाधि की ओर चली. क़रीब दस बजे रात को हम लोग समाधि के सामने जाकर खड़े हुये. दिन की तेज़ मिस्री गर्मी श्रीमती जी बर्दाश्त न कर सकती थीं, इसीलिये तेज़ टार्चों की रोशनी में ही समाधि देखने का फ़ैसला किया गया था.

हमने समाधि देखी. उसका बयान असम्भव है. अगर यूनानियों की बनाई हुई समस्त इमारतों को एक जगह एकत्रित कर दिया जावे तो भी वे इस समाधि की बराबरी नहीं कर सकती. यह समाधि क्या थी पूरा एक तिलिस्म थी. इसमें संगमरमर जड़े हुये 12 बड़े-बड़े चौक थे. इसके 6 चौक उत्तर की ओर खुलते हैं और 6 दक्खिण की ओर. ठीक एक दूसरे के सामने विशालकाय द्वार थे. पूरी इमारत चारों ओर से एक बड़ी प्राचीर से घिरी हुई थी. आधी इमारत ज़मीन के भीतर और आधी ज़मीन के ऊपर. कुल कमरों की संख्या तीन हज़ार थी. इस में 1500 ज़मीन के नीचे और 1500 ज़मीनके ऊपर.

کہلانا پسند کرتی تھی . سب سرکاری کاغذوں اور اعلانوں میں اُس کے لئے پولنگ سرونام ہی استعمال کئے جاتے تھے .

مصریوں میں دنت کتھا تھی کہ ہیت- شیپ- سوت کے جنم سے پہلے دیوتاؤں کی ایک سبھا ہوئی. آمن یعنی سوریہ دیوتا اُس سبھا کے صدر تھے. سبھا میں ستیہ کے دیوتا 'تھوت' نے آمن کو مشورہ دیا کہ انسان کی بھلائی کے لئے آپ مصر کے پھروئے تھتھمو سے پہلے کا روپ دھر کر تھتھمو سے کی مہارانی کے پاس جاویں اور اُس سے ایک سندر کنیا کو جنم دیں . اِس طرح سوریہ بھگوان اور تھتھموسے کی مہارانی کے سنیوگ سے ہیت- شیپ- سوت پیدا ہوئی . ہیت کا مطلب ہے بڑا . ہیت- شیپ- سوت کا مطلب ہے 'اچھے خاندان والوں میں سب سے بڑا .'

کہتے ہیں مصری اِتہاس میں اِس سے پہلے کسی پھروے کے دربار کی وہ شان شوکت نہ تھی جو ہیت- شیپ- سوت کے دربار کی تھی . سن 1472 عیسوی سے پہلے 58 برس کی آیو میں ہیت- شیپ- سوت کی موت ہوئی . مرنے کے بعد سوریہ دیوی کے نام سے اُس کی پوجا ہونے لگی .

[3]

اُس دن وسنت رت کی پورنیما تھی . نیل ندی کی ساڑی میں پرکرتی گوٹا ٹانکنے میں مصروف تھی . ریگستان کا ذرہ ذرہ چاند کے روپہلے سرور میں نہا کر نکھر اُٹھا تھا . اِتھیوپیا کے لوبان کے جنگلوں سے دکھنی ہوا مصر کو گدگداتے ہوئے لیبیا کو چھونے کے لئے سرپٹ دوڑ رہی تھی . ہماری موٹر ریگستان کی چھاتی چیرتی ہوئی ہیت - شیپ- سوت کی سمادھی کی اور چلی . قریب دس بجے رات کو ہم لوگ سمادھی کے سامنے جاکر کھڑے ہوئے . دن کی تیز مصری گرمی شریمتی جی برداشت نہ کر سکتی تھیں' اِس لئے تیز ٹارچوں کی روشنی میں ہی سمادھی دیکھنے کا فیصلہ کیا گیا تھا .

ہم نے سمادھی دیکھی . اُس کا بیان اسمبھو ہے . اگر یونانیوں کی بنائی ہوئی سمست عمارتوں کو ایک جگہہ ایکترت کر دیا جاوے تو بھی وے اِس سمادھی کی برابری نہیں کر سکتیں . یہ سمادھی کیا تھی پورا ایک طلسم تھی . اِس میں سنگ‌مرمر جڑے ہوئے 12 بڑے بڑے چوک تھے. اِس کے 6 چوک اُتری اور کھلتے ہیں اور 6 دکھن کی اور. ٹھیک ایک دوسرے کے سامنے وشالکایہ دوار تھے . پوری عمارت چاروں اور سے ایک بڑی پراچیر سے گھری ہوئی تھی. آدھی عمارت زمین کے بھیتر اور آدھی زمین کے اوپر . کل کمروں کی سنکھیا تین ہزار ہے . اِس میں 1500 زمین کے نیچے اور 1500 زمین کے اوپر .

मैं और मेरी श्रीमती जी उस भीमकाय, मौन और सुनसान समाधि में अपनी टार्चों की रौशनी फैलाते हुये घुसे. हम लोग चौकों से निकलकर कमरों में गये और कमरों से निकलकर पटे हुये पक्के रास्तों से होकर सहनों पर खड़ी हुई छतों पर, फिर नये-नये कमरों में, और फिर उनसे निकलकर नये-नये चौकों में. छतें और दीवारें सब पत्थर की थीं. दीवारों का कोना-कोना सुन्दर चित्रकारी से भरा हुआ था. हर चौक के चारों ओर संगमरमर की बनी हुई गैलरी थी जिसमें बहुत बारीक नक़्क़ाशी का काम था.

सबसे अचम्भे की बात यह दिखाई दी कि इन समस्त कमरों और चौकों की छतें एक एक साबित पत्थर की ही काटकर बनाई गई थीं. बीच में कोई कड़ी या शहतीर नहीं थी. यह इतनी बड़ी और भारी इमारत इतनी ठोस बनाई गई थी कि युगों के बीत जाने के बाद भी उस पर कोई नाशकर प्रभाव नहीं पड़ सका. कमरों के दरवाज़े इतने आश्चर्य-जनक ढंग से बनाये गये थे कि खोलते ही बादल की गरज के समान एक ज़ोरदार आवाज़ अन्दर गूँजने लगती थी. इमारत में पत्थर के पचासों ज़ीने बने हुये थे. नीचे के कमरों में पहुँचकर बिलकुल यह मालूम होता था कि अब और कोई रास्ता नहीं है. तीन चार घंटे समाधि में घूमने फिरने के बाद श्रीमती जी नीचे की मंज़िल में एक दीवार के सहारे बैठ गईं. उसके बाद जो घटना हुई उससे हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा.

जिस दीवा के सहारे वे बैठीं वह ठोस पत्थर की थी और क़रीब 1600 मन भारी होगी. श्रीमती जी को उसके सहारे बैठे अभी दो मिनट भी न हुआ होगा कि वह पूरी दीवार उन्हें सरकती हुई मालूम हुई. वे चीख़ मार कर कूद कर अलग जा खड़ी हुईं. मुझे भी पहले भय और बाद में कौतूहल हुआ. उस दीवार पर मैंने अपना पूरा वज़न फेंका. ऐसा लगा यह किसी कील पर रखी हुई थी. दीवार का एक पल्ला पीछे सरकने लगा और साफ़ उतरती हुई सीढ़ियों का एक सिलसिला नज़र आया. हमें ऐसा लगा मानो सदियों के छिपे हुये भेद का द्वार हमारे लिये खुल गया. समाधि की गाइड बुक में नीचे की मंज़िल से किसी कमरे में कहीं रास्ता जाता है, इस का ज़िक्र हमने नहीं पढ़ा था. मेरे दिल में एक आश्चर्यजनक कौतूहल उठा कि बीसों बरस से संसार के पुरातत्ववेत्ता सम्राज्ञी की जिस असली क़ब्र का पता लगा रहे थे—क्या यही उसका द्वार है? मेरी श्रीमती जी सहमी हुई खड़ी थीं. टार्च के प्रकाश में मैंने देखा उनके कपोलों पर पसीने की बूँदें उभर आई थीं. मैंने प्यार से झुककर उन्हें अपने ओठों से मिटा डाला.

टार्च की रोशनी को आगे करके हम दोनों सहमे और शंकित सीढ़ियों से नीचे उतरे. चक्करदार सीढ़ियों का कहीं

میں اور میری شریمتی جی اُس بھیمکایہ' مَونَ اور سنسان سمادھی میں اپنی ٹارچوں کی روشنی پھیلاتے ہوئے گھسے۔ ہم لوگ چوکوں سے نکل کر کمروں میں گئے اور کمروں سے نکل کر پٹے ہوئے پکے راستوں سے ہوکر صحنوں پر کھڑی ہوئی چھتوں پر 'پھر نئے- نئے کمروں میں' اور پھر اُن سے نکل کر نئے نئے چوکوں میں۔ چھتیں اور دیواریں سب پتھر کی تھیں۔ دیواروں کا کونہ کونہ سندر چترکاری سے بھرا ہوا تھا۔ ہر چوک کے چاروں اُور سنگ‌مرمر کی بنی ہوئی گیلری تھی جس میں بہت باریک نقاشی کا کام تھا۔

سب سے اچنبھے کی بات یہ دکھائی دی کہ اِن سمست کمروں اور چوکوں کی چھتیں ایک ایک ثابت پتھر کی ہی کاٹکر بنائی گئی تھیں۔ بیچ میں کوئی کڑی یا شہتیر نہیں تھی۔ یہ اِتنی بڑی اور بھاری عمارت اِتنی ٹھوس بنائی گئی تھی کہ یگوں کے بیت جانے کے بعد بھی اسپر کنچت کوئی ناشکر پربھاؤ نہیں پڑ سکا۔ کمروں کے دروازے اِتنے آشچریہ جنک ڈھنگ سے بنائے گئے تھے کہ کھولتے ہی بادل کی گرج کے سمان ایک زوردار آواز اندر گونجنے لگتی تھی۔ عمارت میں پتھر کے پچاسوں زینے بنے ہوئے تھے۔ نیچے کے کمروں میں پہونچ کر بالکل یہ معلوم ہوتا تھا کہ اب اور کوئی راستہ نہیں ہے۔ تین چار گھنٹے سمادھی میں گھومنے پھرنے کے بعد شریمتی جی نیچے کی منزل میں ایک دیوار کے سہارے بیٹھ گئیں۔ اِس کے بعد جو گھٹنا ہوئی اُس سے ہمارے آشچریہ کا ٹھکانہ نہ رہا۔

جس دیوار کے سہارے وے بیٹھیں وہ ٹھوس پتھر کی تھی اور قریب 1600 من بھاری ہوگی۔ شریمتی جی کو اُس کے سہارے بیٹھے ابھی دو منٹ بھی نہ ہوا ہوگا کہ وہ پوری کی پوری دیوار اُنھیں سرکتی ہوئی معلوم ہوئی۔ وے چیخ مارکر کودکر الگ جاکھڑی ہوئیں۔ مجھے بھی پہلے بھے اور بعد میں کوتوہل ہوا۔ اُس دیوار پر میں نے اپنا پورا وزن پھینکا۔ ایسا لگا یہ کسی کیل پر رکھی ہوئی تھی۔ دیوار کا ایک پلہ پیچھے سرکنے لگا اور صاف اُترتی ہوئی سیڑھیوں کا ایک سلسلہ نظر آیا۔ ہمیں ایسا لگا مانو صدیوں کے چھپے ہوئے بھید کا دوار ہمارے لئے کھل گیا۔ سمادھی کی گائڈ بک میں نیچے کی منزل سے کسی کمرے میں کہیں راستہ جاتا ہے' اِس کا ذکر ہم نے نہیں پڑھا تھا۔ میرے دل میں ایک آشچریہ جنک کوتوہل اُٹھا کہ بیسوں برس سے پراتتو ویتا سمراگی کی جس اصلی قبر کا پتہ لگا رہے تھے—کیا یہی اُس کا دوار ہے؟ میری شریمتی جی سہمی ہوئی کھڑی تھیں۔ ٹارچ کے پرکاش میں میں نے دیکھا کہ اُن کے کپولوں پر پسینے کی بوندیں اُبھر آئی تھیں۔ میں نے پیار سے جھک‌کر اُنھیں اپنے ہونٹوں سے مٹا ڈالا۔

ٹارچ کی روشنی کو آگے کرکے ہم دونوں سہمے اور شنکت سیڑھیوں سے نیچے اُترے۔ چکردار سیڑھیوں کا کہیں

अन्त ही न दिखाई देता था. लगभग 400 सीढ़ियां तै करने के बाद हम लोग सम्राज्ञी की असली समाधि के पास पहुँचे. समाधि का कमरा 22 फ़ुट लम्बा और 8 फ़ुट चौड़ा एक क़ीमती सुन्दर पीले रंग के पत्थर को अन्दर से खोखला करके बनाया गया था. उसकी दीवारें दो फ़ुट मोटी थीं और पूरे पत्थर का वज़न 110 टन यानी क़रीब तीन हज़ार मन होगा. छत उसी तरह से तीन पत्थर के टुकड़ों की बनी हुई थी. इस समाधि के ऊपर इस तिलिस्म की पूरी इमारत खड़ी हुई थी.

इस पीले कमरे के बीच में हेत-शेप-सूत की ममी रखी थी. सारा शरीर पट्टियों से कसा हुआ था, सिर्फ़ मुंह खुला हुआ था. क़रीब 3500 बरस से सूर्य भगवान की यह बेटी इस अँधेरी समाधि में पड़ी हुई थी. 58 वर्ष की उम्र में हेत-शेप-सूत ने प्राण त्यागे थे लेकिन चेहरे को देखकर ऐसा लगता था कि वह 30 बरस से ज़्यादा की नहीं है. पूरे 5 फ़ुट का क़द, छरहरा बदन, बड़ी-बड़ी आँखें, गोल चेहरा; उभरी हुई ठोड़ी, उठी हुई गाल की हड्डी, नीचे का ओठ गोल और ज़रा मोटा, नाक पतली और लम्बी, मालूम होता था मल्का अभी अभी सोई थी. धन्य थे मिस्र के वे ममी बनाने वाले कि चेहरे पर इन 3500 बरसों ने ज़रा-सी शिकन तक नहीं पैदा की. हमारा मस्तक आदर और श्रद्धा से इस महान मल्का के क़दमों पर झुक गया.

सारा कमरा ज़ेवरों और जवाहरात से लक़दक़ हो रहा था. सोना, सूर्य कान्त, अक़ीक़, नीलम, फ़ीरोज़ा, लाजवर्द जैसे जवाहरातों की बहुत सी मालाएं हेत-शेप-सूत की ममी पर पड़ी थीं. सोने का एक तोड़ा रखा था, जिसमें सोने ही के बने घोंघे और तारे लटक रहे थे. तितली की शकल का बनत या ज़रदोज़ी के काम का सोने का एक लटकन था. सोने के कड़े थे, जिनमें सरकने वाले क़ब्ज़े या कांटे लगे थे. फूल पत्तियों समेत टहनियों का एक गुच्छा था, जिसमें पत्ते सोने के थे और फूल और कलियाँ जवाहरों की थीं. सोने के बारीक तारों का बुना हुआ एक बहुत सुन्दर जालीदार मुकुट था, जिसके बीच बीच में छोटे छोटे फूल थे. हर फूल के बीच में एक लाल था और उसकी पंखड़ियां नीलम की थीं. एक और बारीक काम का मुकुट रखा था जो सोना, लाजवर्द, सूर्यकान्त और नीलम का बना हुआ था और जिसमें बड़ी सुन्दर फूल-पत्तियां कटी हुई थीं. कांसे का एक ख़ंजर पड़ा था, जिसमें जवाहरात जड़ी सोने की मूठ थी. हैरत में डूबे हुये हम लोग बड़ी देर तक उस कमरे के बेशक़ीमत जवाहरों को देखते रहे.

टार्च की बैटरी फीकी पड़ने लगी तो यकायक हमें ख़्याल हुआ कि रात बहुत बीत चुकी होगी. हम दोनों ने एक दूसरे को देखा, कमरे को देखा और फिर मल्का की ओर देखा.

انت نظر نہ دکھائی دیتا تھا. لگ بھگ 400 سیڑھیاں طے کرنے کے بعد ہم لوگ سمراگی کی اصلی سمادھی کے پاس پہونچے۔ سمادھی کا کمرہ 22 فٹ لمبا اور 8 فٹ چوڑا ایک قیمتی سندر پیلے رنگ کے پتھر کو اندر سے کھوکھلا کرکے بنایا گیا تھا۔ اُس کی دیواریں دو فٹ موٹی تھیں اور پورے پتھر کا وزن 110 ٹن یعنی قریب تین ہزار من ہوگا۔ چھت اُسی طرح سے تین پتھر کے ٹکڑوں کی بنی ہوئی تھی۔ اِس سمادھی کے اُوپر اِس طلسم کی پوری عمارت کھڑی ہوئی تھی۔

اِس پیلے کمرے کے بیچ میں ہیت - شیپ - سوت کی ممی رکھی تھی۔ سارا شریر پٹیوں سے کسا ہوا تھا، صرف منھ کھلا ہوا تھا۔ قریب 3500 برس سے سوریہ بھگوان کی یہ بیٹی اِس اندھیری سمادھی میں پڑی ہوئی تھی۔ 58 ورش کی عمر میں ہیت - شیپ - سوت نے پران تیاگے تھے لیکن چہرے کو دیکھکر ایسا لگتا تھا کہ وہ 30 برس سے زیادہ کی نہیں ہے۔ پورے 5 فٹ کا قد، چھرھرا بدن، بڑی بڑی آنکھیں، گول چہرہ، اُبھری ہوئی ٹھوڑی، اُٹھی ہوئی گال کی ہڈی، نیچے کا ہونٹ گول اور ذرا موٹا، ناک پتلی اور لمبی، معلوم ہوتا تھا ملکہ ابھی ابھی سوئی تھی۔ دھنیہ تھے مصر کے وے ممی بنانے والے کہ چہرے پر اِن 3500 برسوں نے ذراسی شکن تک نہیں پیدا کی۔ ہمارا مستک آدر اور شردھا سے اِس مہان ملکہ کے قدموں پر جھک گیا۔

سارا کمرہ زیوروں اور جواہرات سے لق دق ہورہا تھا۔ سونا، سوریہ کانت، عقیق، نیلم، فیروزہ، لاجورد جیسے جواہراتوں کی بہت سی مالائیں ہیت - شیپ - سوت کی ممی پر پڑی تھیں۔ سونے کا ایک توڑا رکھا تھا، جس میں سونے کے ہی بنے گھونگھے اور تارے لٹک رہے تھے۔ تتلی کی شکل کا بنت یا زردوزی کے کام کا سونے کا ایک لٹکن تھا۔ سونے کے کڑے تھے، جن میں سرکنے والے قبضے یا کانٹے لگے تھے۔ پھول پتیوں سمیت ٹہنیوں کا ایک گچھا تھا، جس میں پتے سونے کے تھے اور پھول اور کلیاں جواہروں کی تھیں۔ سونے کے باریک تاروں کا بنا ہوا ایک بہت سندر جالیدار مکٹ تھا، جس کے بیچ بیچ میں چھوٹے چھوٹے پھول تھے۔ ہر پھول کے بیچ میں ایک لعل تھا اور اُس کی پنکھڑیاں نیلم کی تھیں۔ ایک اُور باریک کام کا مکٹ رکھا تھا جو سونا، لاجورد، سوریہ کانت اور نیلم کا بنا ہوا تھا اور جس میں بڑی سندر پھول پتیاں کٹی ہوئی تھیں۔ کانسے کا ایک خنجر پڑا تھا، جس میں جواہرات جڑی سونے کی موٹھ تھی۔ حیرت میں ڈوبے ہوئے ہم لوگ بڑی دیر تک اُس کمرے کے بیش قیمت جواہراتوں کو دیکھتے رہے۔

ٹارچ کی بیٹری پھیکی پڑنے لگی تو یکایک ہمیں خیال ہوا کہ رات بہت بیت چکی ہوگی۔ ہم دونوں نے ایک دوسرے کو دیکھا، کمرے کو دیکھا اور پھر ملکہ کی اُور دیکھا۔

जी भर कर फिर एक बार हमने कमरे की सारी चीज़ों को निहारा. गर्व से हमारी छाती फूल रही थी कि संसार के लिये हमने कितनी महान खोज की है. चलने से पहले मैंने नीलम के ख़ूबसूरत छोटे दानों का एक बेशक़ीमत सुन्दर हार उठाकर श्रीमती जी के गले में डाल दिया. उनके ओंठों पर एक हल्की मुसकान दौड़ गई.

[4]

क़ाहिरा पहुँचकर मैंने मिस्री वज़ीरे आज़म को अपनी इस खोज की इत्तला दी. मिस्री सरकार के पुरातत्व विभाग के डाइरेक्टर मुझ से मिलने आये. तमाम मिस्री अख़बारों में मेरी इस खोज की धूम मच गई. लेकिन यह सारी ख़ुशी चन्दरोज़ा निकली. मेरी श्रीमती जी यकायक बीमार पड़ गईं. उनकी बीमारी अजीबो ग़रीब ढङ्ग की थी. एक दिन रात को उन्होंने ख़ौफ़नाक सपना देखा कि एक काली सी डरावनी छाया, अपने सूखे हुये हाथ उनकी गर्दन मसोसने के लिये बढ़ा रही है. बाद में यह सपना रोज़ की चीज़ बन गया. हर रात वह छाया-मूर्ति आती और मेरी बीवी का गला मसोसने की कोशिश करती. वे चीख़कर बेहोश हो जातीं. पहली रात में यह सपना एक ही बार आता था. फिर एक ही रात में यह छाया-मूर्ति कई-कई बार आने लगी. फिर धीरे-धीरे यह कुछ साफ़ सी होने लगी. उसके फीके मुखड़े से यह ज़ाहिर होता था कि वह दयनीय भाव से हाथ पसारे हुये कुछ मिन्नत कर रही है. लेकिन धीरे-धीरे उसके चेहरे की कैफ़ियत बदलने लगी. उसके चेहरे पर ग़ुस्सा और फिर बाद में बदले के भाव जागने लगे.

महीना भर हम क़ाहिरा में पड़े रहे. अच्छे से अच्छे डाक्टर और हकीम का इलाज कराया गया लेकिन सब बेसूद निकला. भूत-प्रेत और जिन्नात उतारने वाले आये, मगर कोई फ़ायदा न हुआ. मरज़ बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की ! मैं परेशान होकर रोज़ अपनी बीवी के पीले पड़े हुये मुख मन्डल को देखा करता. मेरे दिल की कैफ़ियत अजीब थी. मेरी छोटी सी ज़िन्दगी के सारे दुख-सुखों में उन्होंने हिस्सा बंटाया था, लेकिन अपना यह दुख वे अकेले झेल रही थीं. डाक्टरों की सलाह से क़ाहिरा छोड़ हम इसकन्दरिया आये. लेकिन इसकन्दरिया में तो उनकी तकलीफ़ और बढ़ गई. अब उन्हें वह छाया-मूर्ति दिन में भी सताती. कमरे में हम सब बैठे होते, मगर हमारी नज़रें उसे न देख पातीं. सिर्फ़ श्रीमती जी ही उसे देख पातीं और चीख़ मार कर मेरी गोद में अपना सर छिपाकर रोने लगतीं. इसकन्दरिया में भी जी न लगा, वहाँ से हम तोबरुक आये.

समुन्दर के किनारे एक होटल में हमने कमरा लिया. चारों ओर शान्ति थी. सिर्फ़ लहरों की छपछप कभी ध्यान भंग कर देती थी. कई दिनों से पत्नी की पलकें भी न झपकी

جی بھرکر پھر ایک بار ہم نے کمرے کی ساری چیزوں کو نہارا. گرو سے ہماری چھاتی پھول رہی تھی کہ سنسار کے لئے ہم نے کتنی مہان کھوج کی ہے. چلنے سے پہلے میں نے نیلم کے خوبصورت چھوٹے دانوں کا ایک بیش قیمت سندر ہار اُٹھاکر شریمتی جی کے گلے میں ڈال دیا ۔ اُن کے ہونٹھوں پر ایک ہلکی مسکان دوڑ گئی ۔

[4]

قاہرہ پہونچ کر میں نے مصری وزیرعاظم کو اپنی اِس کھوج کی اِطلاع دی ۔ مصری سرکار کے پراتتو وبھاگ کے ڈائریکٹر مجھ سے ملنے آئے ۔ تمام مصری اخباروں میں میری اِس کھوج کی دھوم مچ گئی ۔ لیکن یہ ساری خوشی چندروزہ نکلی ۔ میری شریمتی جی یکایک بیمار پڑ گئیں ۔ اُن کی بیماری عجیب و غریب ڈھنگ کی تھی ۔ ایک دن رات کو اُنھوں نے خوفناک سپنا دیکھا کہ ایک کالی سی ڈراونی چھایا' اپنے سوکھے ہوئے ہاتھ اُن کی گردن مسوسنے کے لئے بڑھا رہی ہے ۔ بعد میں یہ سپنا روز کی چیز بن گیا ۔ ہر رات وہ چھایا مورتی آتی اور میری بیوی کا گلا مسوسنے کی کوشش کرتی ۔ وے چیخ کر بیہوش ہو جاتیں ۔ پہلی رات میں یہ سپنا ایک ہی بار آیا تھا ۔ پھر ایک ہی رات میں یہ چھایا مورتی کئی کئی بار آنے لگی ۔ پھر دھیرے دھیرے یہ کچھ صاف سی ہونے لگی ۔ اُس کے پھیکے مکھڑے سے یہ ظاہر ہوتا تھا کہ وہ دینیہ بھاؤ سے ہاتھ پسارے ہوئے کچھ منت کر رہی ہے ۔ لیکن دھیرے دھیرے اُس کے چہرے کی کیفیت بدلنے لگی ۔ اُس کے چہرے پر غصہ اور پھر بعد میں بدلے کے بھاؤ جاگنے لگے ۔

مہینہ بھر ہم قاہرہ میں پڑے رہے ۔ اچھے سے اچھے ڈاکٹر اور حکیم کا علاج کرایا گیا' لیکن بے سود نکلا ۔ بھوت' پریت اور جنات اُتارنے والے آئے' مگر کوئی فایدہ نہ ہوا ۔ مرض بڑھتا گیا جیوں جیوں دوا کی ! میں پریشان ہوکر روز اپنی بیوی کے پیلے پڑے ہوئے مکھ منڈل کو دیکھا کرتا. میرے دل کی کیفیت عجیب تھی ۔ میری چھوٹی سی زندگی کے سارے دکھ سکھوں میں اُنھوں نے حصہ بٹایا تھا' لیکن اپنا یہ دکھ وے اکیلے جھیل رہی تھیں ۔ ڈاکٹروں کی صلاح سے قاہرہ چھوڑ ہم اسکندریہ آئے ۔ لیکن اسکندریہ میں تو اُن کی تکلیف اور بڑھ گئی ۔ اب اُنھیں وہ چھایا مورتی دن میں بھی ستاتی ۔ کمرے میں ہم سب بیٹھے ہوتے' مگر ہماری نظریں اُسے نہ دیکھ پاتیں. صرف شریمتی جی ہی اُسے دیکھ پاتیں اور چیخ مار کر میری گود میں اپنا سر چھپا کر رونے لگتیں ۔ اسکندریہ میں بھی جی نہ لگا ۔ وہاں سے ہم طوبروک آئے ۔

سمندر کے کنارے ایک ہوٹل میں ہم نے کمرہ لیا ۔ چاروں اور شانتی تھی ۔ صرف لہروں کی چھپ چھپ کبھی دھیان بھنگ کر دیتی تھی. کئی دنوں سے پتنی کی پلکیں بھی نہ جھپکی

थीं. उन्हें जीवन से अब कोई उम्मीद न रही थी. हवा में गरमी थी. अस्त होता हुआ सूरज लहरों से टकराकर कमरे भर में सोने के कन बिखेर रहा था. वे बेहद थकी हुई थीं. मैंने देखा नींद ने उनकी उनींदी पलकों में अपनी एक मादक घुट भर दी है. धीरे-धीरे अंधकार गहरा होता गया.

थोड़ी देर तक उन्हें ज़रूर गहरी नींद आई होगी. फिर सपने की परियें उन्हें अपने देश में उड़ा ले गईं. लेकिन सपने में उन्हें फिर वही छाया-मूरत दिखाई पड़ी. उसकी आँखों में विनय की भीख थी. बड़े ही दयनीय भाव से वह किसी चीज़ की याचना कर रही थी. फिर यकायक वह छाया-मूरत फूट-फूट कर रोने लगी. श्रीमती जी उसकी तकलीफ़ को समझ रही थीं; लेकिन वे यह किसी तरह समझ न सकीं कि आख़िर वह क्या चाहती है. फिर यकायक उस छाया-मूरत ने अपने आंसू पोंछ डाले. बदले की भावना में भरी हुई वह श्रीमती जी पर टूट पड़ी. उसने अपनी भूरे रंग की सूखी पतली उंगुलियां उनके गले में कस दीं. ख़ूनी भाव से वह अपने पंजों का फंदा सख़्त करती गई. श्रीमती जी का दम घुटने लगा और वे चीख़ कर उठ बैठीं. उनका सारा शरीर पसीने से तर था. वे आँधी से हिलते हुये दरख़्त की तरह ज़ोर से काँप रही थीं.

अपने हाथों से उन्होंने अपना गला टटोला और समझीं कि वे सपना देख रही थीं. फिर वे यकायक चौंक पड़ीं. मल्का हेत-शेप-सूत की समाधि का वह नीलम का सुन्दर हार उनके गले में न था. उस हार को उन्होंने उस दिन से एक लम्हे के लिये भी गले से न उतारा था. अभी घन्टे भर पहले तक उनके गले में वह हार पड़ा हुआ था.

श्रीमती जी के गले से जिस दिन वह नीलम का हार ग़ायब हुआ, उसी दिन वह छाया-मूरत भी ग़ायब हो गई और फिर आज तक वह नहीं दिखाई दी. थोड़े ही दिनों में तोबरूक की समुद्री हवा ने श्रीमती को पूरी तरह तंदुरुस्त और स्वस्थ कर दिया.

[5]

अभी इस घटना को हफ़्ता भर भी न हुआ था कि परसों मुझे मिस्र के वज़ीरे ख़ारजा सिर्रीपाशा का एक ख़त मिला. मैंने क़ाहिरा में मल्का की समाधि का उन्हें रास्ता बताया था. मिस्र का पुरातत्व विभाग वहां जाने की तैयारी कर रहा था कि अचानक उसे ख़बर मिली कि रेत के एक भयंकर तूफ़ान में वह विशालकाय इमारत इतनी बुरी तरह दफ़न हो गई है कि इंजीनियरों का कहना है कि उसे अब बीस हज़ार मज़दूर तीन बरस में साफ़ कर सकेंगे.

تھیں ۔ انھیں جیون سے اب کوئی اُمید نہ رهی تھی ۔ هوا میں گرمی تھی ۔ اَست هوتا هوا سورج لہروں سے ٹکرا کر کمرے بھر میں سونے کے کن بکھیر رها تھا ۔ وے بےحد تھکی هوئی تھیں ۔ میں نے دیکھا کہ نیند نے ان کے اُنیندی پلکوں میں اپنی ایک مادک گھٹ بھر دی هے ۔ دھیرے دھیرے اندھکار گہرا هوتا گیا ۔

تھوڑی دیر تک انھیں ضرور گہری نیند آئی هوگی ۔ پھر سپنے کی پریاں انھیں اپنے دیش میں اُڑا لے گئیں ۔ لیکن سپنے میں انھیں پھر وهی چھایا مورت دکھائی پڑی ۔ اس کی آنکھوں میں ونئے کی بھیک تھی ۔ بڑے هی دینیئہ بھاو سے وہ چیز کسی کی یاچنا کر رهی تھی ۔ پھر یکا یک وہ چھایا مورت پھوٹ پھوٹ کر رونے لگی ۔ شریمتی جی اُس کی تکلیف کو سمجھ رهی تھیں؛ لیکن وے یہ کسی طرح سمجھ نہ سکیں کہ آخر وہ چاهتی کیا هے ! پھر یکا یک اُس چھایا مورت نے اپنے آنسو پونچھ ڈالے اور بدلے کی بھاونا میں بھری هوئی شریمتی جی پر ٹوٹ پڑی ۔ اس نے اپنی بھورے رنگ کی سوکھی پتلی اُنگلیاں اُن کے گلے میں کس دیں ۔ خونی بھاو سے وہ اپنے پنجوں کا پھندا سخت کرتی گئی ۔ شریمتی جی کا دم گھٹنے لگا اور وے چیخ کر اُٹھ بیٹھیں ۔ اُن کا سارا شریر پسینے سے تر تھا ۔ وے آندھی سے هلتے هوئے درخت کی طرح زور سے کانپ رهی تھیں ۔

اپنے هاتھوں سے اُنھوں نے اپنا گلا ٹٹولا اور سمجھیں کہ وے سپنا دیکھ رهی تھیں ۔ پھر وے یکا یک چونک پڑیں ۔ ملکہ هیت شیپ سوت کی سمادھی کا وہ نیلم کا سندر هار اُن کے گلے میں نہ تھا ۔ اُس هار کو اُنھوں نے اُس دن سے ایک لمحے کے لئے بھی گلے سے نہ اُتارا تھا ۔ ابھی گھنٹے بھر پہلے تک اُن کے گلے میں وہ هار پڑا هوا تھا ۔

شریمتی جی کے گلے سے جس دن وہ نیلم کا هار غایب هوا اُسی دن سے وہ چھایا مورت بھی غایب هوگئی اور پھر آج تک وہ نہیں دکھائی دی ۔ تھوڑے هی دنوں میں طوبروک کی سمدری هوا نے شریمتی جی کو پوری طرح تندرست اور سوستھ کر دیا ۔

[5]

ابھی اِس گھٹنا کو هفتہ بھر بھی نہ هوا تھا کہ پرسوں مجھے مصر کے وزیر خزانہ سرری پاشا کا ایک خط ملا ۔ میں نے قاهرہ میں ملکہ کی سمادھی تک پہونچنے کا راستہ اُنھیں بتایا تھا ۔ مصر کا پورانتو وبھاگ وهاں جانے کی تیاری کر رها تھا کہ اچانک اُسے خبر ملی کہ ریت کے ایک بھینکر طوفان میں وہ وشالکایہ عمارت اتنی بری طرح دفن هو گئی هے کہ انجینیروں کے کہنا هے کہ اب اُسے بیس هزار مزدور تین برس میں صاف کر سکیںگے ۔

अमरीकी सभ्यता

सभ्यता और कल्चर किसे कहते हैं और सभ्यता में कौन देश आगे और कौन पीछे है इन बातों पर अलग अलग देशों और अलग अलग लोगों में तरह तरह के विचार मौजूद हैं. कुछ लोग अमरीका को आज की दुनिया का सब से अधिक सभ्य और उन्नत देश कहते हैं. अमरीका के अधिकतर हाकिम और नेता भी बार बार इस तरह के विचार प्रगट करते रहते हैं और दूसरे खासकर एशियाई देशों को 'पिछड़े हुए देश' कहकर उनकी चरचा करते हैं. हमारे देश के अन्दर भी इस तरह के काफ़ी लोग मौजूद हैं जो अमरीका को सचमुच आजकल की इनसानी सभ्यता का अगुवा मानते हैं.

सवाल यह है कि सभ्यता या तरक़्क़ी है क्या चीज़? धन दौलत, ऐश आराम के बड़े से बड़े सामान, बड़े बड़े कल कारखानों और क़त्लेआम के बड़े से बड़े हथियारों से हटकर अगर कोई चीज़ आजकल सभ्यता की सबसे बड़ी पहचान मानी जाती है तो वह इनसानी बराबरी, आज़ादी और सच्ची लोकशाही है. इस कसौटी पर अगर हम आज के अमरीका को कसकर देखें तो वह खरा नहीं उतर सकता. यूरप के कुछ गोरे लोगों ने अभी कुछ सदियाँ ही हुईं अमरीका को जाकर बसाया था. उन शुरू के दिनों में अमरीका को वह 'हिन्दुस्तान' समझते थे. वहाँ के पुराने बाशिन्दों को वह उनके रंग के कारण 'रेड इन्डियन्स' यानी 'लाल हिन्दुस्तानी' कहा करते थे. जिस जुल्म और बेदरदी के साथ इन नए गोरे अमरीकियों ने वहां के 'लाल हिन्दुस्तानियों' का जानवरों की तरह शिकार किया और उनकी क़ौम की क़ौम को मिटा डाला, उसकी कहानी मानव इतिहास की एक दर्दनाक कहानी है.

अमरीका के नीग्रो

अमरीका की दक्खिन की रियासतों में काली नीग्रो जाति के लोग रहते हैं. यह लोग कम या ज़्यादा सारे अमरीका में फैले हुए हैं. इस समय अमरीका में नीग्रो जाति

امریکی سبھیتا

سبھیتا اور کلچر کیسے کہتے ہیں اور سبھیتا میں کون دیش آگے اور کون پیچھے ہے اِن باتوں پر الگ الگ دیشوں اور الگ الگ لوگوں میں طرح طرح کے وچار موجود ہیں ۔ کچھ لوگ امریکہ کو آج کی دنیا کا سب سے ادھک سبھیہ اور اُنت دیش کہتے ہیں ۔ امریکہ کے ادھکتر حاکم اور نیتا بھی بار بار اِس طرح کے وچار پرگٹ کرتے رہتے ہیں اور دوسرے خاصکر ایشیائی دیشوں کو 'پچھڑے ہوئے دیش' کہکر اُن کی چرچہ کرتے ہیں ۔ ہمارے دیش کے اندر بھی اِس طرح کے کافی لوگ موجود ہیں جو امریکہ کو سچ مچ آجکل کی انسانی سبھیتا کا اگوا مانتے ہیں ۔

سوال یہ ہے کہ سبھیتا یا ترقی ہے کیا چیز ؟ دھن دولت اور عیش آرام کے بڑے سے بڑے سامان' بڑے بڑے کل کارخانوں' اور قتل عام کے بڑے سے بڑے ہتھیاروں سے ہٹ کر اگر کوئی چیز آجکل سبھیتا کی سب سے بڑی پہچان مانی جاتی ہے تو وہ انسانی برابری' آزادی اور سچی لوک شاہی ہے ۔ اِس کسوٹی پر اگر ہم آج کے امریکہ کو کس کر دیکھیں تو وہ کھرا نہیں اُتر سکتا ۔ یورپ کے کچھ گورے لوگوں نے ابھی کچھ صدیاں ہی ہوئیں امریکہ کو جاکر بسایا تھا ۔ اُن شروع کے دنوں میں امریکہ کو وہ 'ہندستان' سمجھتے تھے ۔ وہاں کے پرانے باشندوں کو وہ اُن کے رنگ کے کارن 'ریڈ اِنڈینس' یعنی 'لال ہندستانی' کہا کرتے تھے ۔ جس ظلم اور بیدردی کے ساتھ اِن نئے گورے امریکیوں نے وہاں کے 'لال ہندستانیوں' کا جانوروں کی طرح شکار کیا اور اُن کی قوم کی قوم کو مٹا ڈالا' اُس کی کہانی مانو اِتہاس کی ایک دردناک کہانی ہے ۔

امریکہ کے نیگرو ۔

امریکہ کی دکھن کی ریاستوں میں کالی نیگرو جاتی کے لوگ رہتے ہیں ۔ یہ لوگ کم یا زیادہ سارے امریکہ میں پھیلے ہوئے ہیں ۔ اِس سمے سے امریکہ میں نیگرو جاتی

के लोगों की तादाद तीन करोड़ से ऊपर है. काले नीग्रो के साथ गोरे अमरीकियों का व्योहार शुरू से मानव इतिहास की एक लज्जा जनक घटना रही है. इन नीग्रो लोगों में आज लाखों ऊँची से ऊँची तालीम पाए हुए हैं. उनमें बैरिस्टर हैं, प्रोफ़ेसर हैं, लेखक हैं, कवि हैं, कलावन्त हैं, सौदागर हैं और धारा सभाओं के मेम्बर भी हैं. अमरीका की कुछ रियासतों में उनके साथ थोड़ा बहुत बराबरी का बरताव भी होता है. हम उन अनेक बहादुर, नेक और मानव प्रेमी अमरीकियों की दिल से क़द्र करते हैं जिन्होंने नीग्रो लोगों के साथ इस बराबरी के व्योहार के लिये समय समय पर कोशिशें कीं. पर आज भी अधिकतर अमरीका के अन्दर गोरे अमरीकियों का नीग्रो लोगों के साथ बरताव हद दर्जे बुरा है.

इस बीसवीं सदी तक और अभी हाल तक हज़ारों ही नीग्रो जाति के लोगों को उनके गोरे अमरीकी पड़ोसियों ने छोटी छोटी बातों पर लटकाकर ज़िन्दा जला डाला और इस तरह की हत्या करने वालों से कोई क़ानूनी पूछ ताछ नहीं की गई. अमरीका में इस तरह के जला डालने को "लिंचिंग" कहते हैं. इस तरह की और इस से मिलती जुलती दूसरी दर्दनाक घटनाएं अमरीका से आए दिन सुनने में आती रहती हैं.

नीग्रो पादरी रेवरेन्ड किंग और अहिंसात्मक सहयोग

अभी पिछले दिनों अमरीका की अलाबामा रियासत के अन्दर एक होनहार नीग्रो लड़की के यूनिवर्सिटी में भरती होने की इच्छा प्रगट करने पर और इस डर से कि कहीं वह भरती न कर ली जावे वहां के हज़ारों गोरे अमरीकी विद्यार्थियों ने जो जो उपद्रव किये और सारे देश के अन्दर जो जो तूफ़ान मचे, जिनसे उस नीग्रो लड़की की जान के लाले तक पड़ गए, उनकी कहानी दुनिया भर के अख़बारों में छप चुकी है.

इसी अमरीकी रियासत के मांटगुमरी शहर में आज तक गोरे अमरीकियों के बैठने के लिये बसें अलग और काले नीग्रो के लिये बसें अलग हैं. एक नीग्रो ईसाई पादरी रेवरेन्ड मार्टिन लूथर किंग ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि वह अपना मान रखने के लिये उन अलग बसों में बैठने से इनकार करें. पादरी किंग ने, जिन की उमर केवल सत्ताइस साल की है, अपने एक व्याख्यान में कहा है— "मैंने अहिंसात्मक असहयोग का यह तरीक़ा हिन्दुस्तान के गेहुवें रंग के आदमी गांधी से सीखा है. इस तरह के अहिंसात्मक असहयोग से ब्रिटिश साम्राज को घुटने टेक देने पड़े थे. मान्टगुमरी में हमने साबित कर दिया है कि कि यह तरीक़ा अमरीका में भी काम दे सकता है. हम ज़ुल्म के साथ सहयोग करने से इनकार करते हैं. हमने

کے لوگوں کی تعداد تین کروڑ سے اوپر ہے ۔ کالے نیگرو کے ساتھ گورے امریکیوں کا ویوہار شروع سے مانو اِتہاس کی ایک لجا جنک گھٹنا رہی ہے ۔ اِن نیگرو لوگوں میں آج لاکھوں اونچی سے اونچی تعلیم پائے ہوئے ہیں ۔ اُن میں بیرسٹر ہیں، پروفیسر ہیں، لیکھک ہیں، کوی ہیں، کلاونت ہیں، سوداگر ہیں اور دھارا سبھاؤں کے ممبر بھی ہیں ۔ امریکہ کی کچھ ریاستوں میں اُن کے ساتھ تھوڑا بہت برابری کا برتاؤ بھی ہوتا ہے ۔ ہم اُن انیک بہادر، نیک اور مانو پریمی امریکیوں کی دل سے قدر کرتے ہیں جنھوں نے نیگرو لوگوں کے ساتھ اِس برابری کے ویوہار کے لئے سمے سمے پر کوششیں کیں ۔ پر آج بھی ادھکتر امریکہ کے اندر گورے امریکیوں کا نیگرو لوگوں کے ساتھ برتاؤ حد درجے برا ہے ۔

اِس بیسویں صدی تک اور ابھی حال تک ہزاروں ہی نیگرو جاتی کے لوگوں کو اُن کے گورے امریکی پڑوسیوں نے چھوٹی چھوٹی باتوں پر لٹکا کر زندہ جلا ڈالا اور اِس طرح کی ہتیا کرنے والوں سے کوئی قانونی پوچھ تاچھ نہیں کی گئی ۔ امریکہ میں اِس طرح کے جلا ڈالنے کو "لن چنگ" کہتے ہیں ۔ اِس طرح کی اور اِس سے ملتی جلتی دوسری دردناک گھٹنائیں امریکہ سے آئے دن سننے میں آتی رہتی ہیں ۔

نیگرو پادری ریورینڈ کنگ اور اہنساتمک سہیوگ ۔

ابھی پچھلے دنوں امریکہ کی الاباما ریاست کے اندر ایک ہونہار نیگرو لڑکی کے یونیورسٹی میں بھرتی ہونے کی اِچھا پرگٹ کرنے پر اور اِس ڈر سے کہ کہیں وہ بھرتی نہ کرلی جاوے وہاں کے ہزاروں گورے امریکی ودیارتھیوں نے جو جو اُپدرو کئے اور سارے دیش کے اندر جو جو طوفان مچے، جن سے اُس نیگرو لڑکی کی جان کے لالے تک پڑ گئے، اُن کی کہانی دنیا بھر کے اخباروں میں چھپ چکی ہے ۔

اُسی امریکی ریاست کے مانٹگمری شہر میں آج تک گورے امریکیوں کے بیٹھنے کے لئے بسیں الگ اور کالے نیگرو کے لئے بسیں الگ ہیں ۔ ایک نیگرو عیسائی پادری ریورینڈ مارٹن لوتھر کنگ نے اپنی قوم کے لوگوں سے کہا کہ وہ اپنا مان رکھنے کے لئے اُن الگ بسوں میں بیٹھنے سے انکار کریں ۔ پادری کنگ نے، جن کی عمر کیول ستائیس سال کی ہے، اپنے ایک ویاکھیان میں کہا ہے—"میں نے اہنساتمک اسہیوگ کا یہ طریقہ ہندستان کے گیہوئیں رنگ کے آدمی گاندھی سے سیکھا ہے ۔ اِس طرح کے اہنساتمک اسہیوگ سے برٹش سامراج کو گھٹنے ٹیک دینے پڑے تھے ۔ مانٹگمری میں ہم نے ثابت کر دیا ہے کہ یہ طریقہ امریکہ میں بھی کام دے سکتا ہے ۔ ہم ظلم کے ساتھ سہیوگ کرنے سے انکار کرتے ہیں ۔ ہم نے

समझ लिया है कि आदमी का असली संदेश उसकी आत्मा है, रंग नहीं. नीग्रो लोगों में नई खुद्दारी जाग गई है." जिस तरह हमारे असहयोग आन्दोलन के शुरू के दिनों में भारत में तिलक स्वराज फ़न्ड जमा हुआ था उसी तरह आज इस नीग्रो पादरी के अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन के लिये अमरीका भर में जगह जगह लाखों डालर जमा हो रहे हैं. दूसरी तरफ़ पादरी किंग को इस शान्तिमय असहयोग के प्रचार के लिये एक साल क़ैद की सजा दी जा चुकी है, अपील दायर है. पादरी किंग जमानत पर छुटे हुए हैं. नीग्रो अहिंसात्मक असहयोग जारी है. मालूम होता है कि यह आन्दोलन सारे अमरीका को और वहां की सारी काली और गोरी इनसानी क़ौम को अपने घेरे के अन्दर लिये बग़ैर नहीं रहेगा.

दूसरे देशों में अमरीकी दख़लन्दाज़ी

आज दुनिया में जहां जहां भी आदमी आदमी में फ़रक़ किया जा रहा है, जहां जहां भी काले और गोरे में भेद बरता जा रहा है, जहां जहां भी अभी तक एक देश पर दूसरे देश की हुकूमत है और जहां भी देशों के अन्दर घरेलू झगड़े हैं, लगभग सब जगह अमरीका के शासकों का हिस्सा इन सब चीज़ों में साफ़ दिखाई देता है.

दक्खिन अफ़रीक़ा की गोरी सरकार आज तक वहां के गोरे आगंतुकों और पुराने काले बाशिन्दों के बीच ख़िलाफ़ इनसानियत भेद भाव क़ायम रखने पर डटी हुई है. इस अन्याय में वहां की सरकार की सबसे बड़ी मददगार अमरीकी सरकार है.

फ़िलिप्पाइन टापुओं पर सन् 1946 ई० तक अमरीका का पूरा पूरा राज था. पचास बरस से वहां आज़ादी की तहरीकें चल रही थीं. बड़ी कोशिशों के बाद 1946 में अमरीका की सरकार ने फ़िलिप्पाइन टापुओं को एक तरह की "आज़ादी" दी. अभी इस साल फ़िलिप्पाइन कांग्रेस के अन्दर वहां के सरकारी और ग़ैर सरकारी दोनों तरह के नेताओं ने एक आवाज़ से यह कहा है कि अमरीकी सरकार ने आज तक अपने दस बरस पहले के वादों को पूरा नहीं किया. अमरीका सन् 1946 ई० के सुलहनामे की शरतों के साफ़ ख़िलाफ़ जा रहा है, अमरीका का बना हुआ ऐशपरस्ती का सामान जबरदस्ती फ़िलिप्पाइन लोगों के ऊपर थोपा जा रहा है, फ़िलिप्पाइन लोगों को अपने माल को जहाँ चाहे बेचने और जिस देश से चाहे तिजारत करने तक की आज़ादी नहीं है. अमरीका अपने लड़ाई के उन हथियारों तक को जबरदस्ती फ़िलिप्पाइन वालों के सर मंढ़ रहा है जो अब पुराने और निकम्मे हो चुके हैं. ग़रीब और असहाय फ़िलिप्पाइन वालों को उसने अपने माली और तिजारत लपेटों में कस रखा है.

سمجھ لیا ہے کہ آدمی کا اصلی سندیش اُس کی آتما ہے، رنگ نہیں. نیگرو لوگوں میں نئی خودداری جاگ گئی ہے." جس طرح ہمارے اسہیوگ آندولن کے شروع کے دنوں میں بھارت میں تلک سوراج فنڈ جمع ہوا تھا اسی طرح آج اِس نیگرو پادری کے اہنساتمک اسہیوگ آندولن کے لئے امریکہ بھر میں جگہ جگہ لاکھوں ڈالر جمع ہو رہے ہیں. دوسری طرف پادری کنگ کو اِس شانتی مے اسہیوگ کے پرچار کے لئے ایک سال قید کی سزا دی جا چکی ہے، اپیل دائر ہے. پادری کنگ ضمانت پر چھوٹے ہوئے ہیں. نیگرو اہنساتمک اسہیوگ جاری ہے. معلوم ہوتا ہے کہ یہ آندولن سارے امریکہ کو اور وہاں کی ساری کالی اور گوری انسانی قوم کو اپنے گھیرے کے اندر لئے بغیر نہیں رہے گا.

دوسرے دیشوں میں امریکی دخل اندازی.

آج دنیا میں جہاں جہاں بھی آدمی میں فرق کیا جا رہا ہے، جہاں جہاں بھی کالے اور گورے میں بھید برتا جا رہا ہے، جہاں جہاں بھی ابھی تک ایک دیش پر دوسرے دیش کی حکومت ہے اور جہاں بھی دیشوں کے اندر گھریلو جھگڑے ہیں، لگ بھگ سب جگہ امریکہ کے شاسکوں کا حصہ اِن سب چیزوں میں صاف دکھائی دیتا ہے.

دکھن افریقہ کی گوری سرکار آج تک وہاں کے گورے آگنتکوں اور پرانے کالے باشندوں کے بیچ خلاف انسانیت بھید بھاؤ قائم رکھنے پر ڈٹی ہوئی ہے. اِس انیائے میں وہاں کی سرکار کی سب سے بڑی مددگار امریکی سرکار ہے.

فلپائن ٹاپوؤں پر 1946ع تک امریکہ کا پورا پورا راج تھا. پچاس برس سے وہاں آزادی کی تحریکیں چل رہی تھیں. بڑی کوششوں کے بعد 1946ع میں امریکہ کی سرکار نے فلپائن ٹاپوؤں کو ایک طرح کی "آزادی" دی. ابھی اِس سال فلپائن کانگریس کے اندر وہاں کے سرکاری اور غیر سرکاری دونوں طرح کے نیتاؤں نے ایک آواز سے یہ کہا ہے کہ امریکی سرکار نے آج تک اپنے دس برس پہلے کے وعدوں کو پورا نہیں کیا. امریکہ سن1946ع کے صلحنامے کی شرطوں کے صاف خلاف جا رہا ہے، امریکہ کا بنا ہوا عیش پرستی کا سامان زبردستی فلپائن لوگوں کے اوپر تھوپا جا رہا ہے، فلپائن لوگوں کو اپنے مال کو جہاں چاہے بیچنے اور جس دیش سے چاہے تجارت کرنے تک کی آزادی نہیں ہے. امریکہ اپنے لڑائی کے اُن ہتھیاروں تک کو زبردستی فلپائن والوں کے سر منڈھ رہا ہے جو اب پرانے اور نکمے ہو چکے ہیں. غریب اور اسہائے فلپائن والوں کو اُس نے اپنے مالی اور تجارتی لپیٹوں میں کس رکھا ہے.

इंडोचाइना में दक्खिन वीतनाम के उन उपद्रवियों को अमरीका बराबर शह दे रहा है जो वहां जनीवा के समझौते पर अमल होने देना और उस देश के लोगों को एकता और प्रेम के साथ रहने देना नहीं चाहते.

भारत के अन्दर गोआ अभी तक विदेशी पुर्तगालियों के क़ब्ज़े में है और पुर्तगालियों को भी सब से अधिक शह अमरीका की है.

फ़ारमूसा में अमरीकी फ़ौजें बराबर डेरा डाले हुए हैं, और किसी तरह नए चीन की सरकार और च्यांग काई शेक की सरकार में सुलह का मौक़ा देने को तैयार नहीं.

दक्खिन कोरिया की कठपुतली सरकार को अमरीका की शह और मदद बराबर जारी है.

जापान में अमरीका के फ़ौजी अड्डे उसी तरह क़ायम हैं. अमरीका चाहता है कि दुनिया के दूसरे देश जापान का बना हुआ माल ख़रीदें, उस जापान का जो अमरीकियों के क़ब्ज़े में है. पर जापान और जापानियों को अपने पड़ौसी चीन और चीनियों के साथ तिजारत करने की आज़ादी नहीं है.

हाल में अमरीका के मशहूर हाकिम डलेस साहब ने एशिया के कुछ देशों का दौरा किया था. वह पाकिस्तान भी गए थे और दिल्ली आए थे. दक्खिन वीतनाम, फ़ारमूसा और दक्खिन कोरिया में उन्हें अपने ख़ास प्रेमी साथी मिले. नया चीन उन्हें कहीं नक़्शे पर दिखाई भी नहीं दिया. अमरीका वापिस पहुँचकर उन्होंने अपनी यात्रा की जो रिपोर्ट अपनी सरकार को दी है वह दुनिया के अख़बारों में छप चुकी है. उसे पढ़कर किसी भी एशिया वासी या किसी भी न्याय प्रेमी आदमी के दिल में श्री डलेस या उनकी सरकार के प्रति प्रेम या आदर पैदा नहीं हो सकता और न सभ्यता या कलचर की निगाह से अमरीका कोई ऊँचा देश दिखाई दे सकता है.

अमरीका में विचारों की आज़ादी पर रोक

ख़ुद अमरीका के अन्दर विचारों की आज़ादी का यह हाल है कि कोई आदमी ख़ासकर कोई स्कूल टीचर या सरकारी नौकर वहां खुले तौर पर कम्युनिस्ट विचारों की किताबें नहीं रख सकता. यूरप के दौरे में अनेक ही ऐसी घटनाएं हमें सुनने को मिलीं जिनसे मालूम होता है कि अमरीका की ख़ुफ़िया पुलिस उन लोगों का, जिन पर कम्युनिस्ट विचार रखने का संदेह होता है, किस बुरी तरह पीछा करती है और उन्हें किस तरह सताती है. हाल में इंगलैन्ड के मशहूर फ़िलासफ़र श्री बरट्रन्ड रसल ने "मेनचेस्टर गारजियन" के अन्दर एक लेख में बताया है कि अमरीका की ख़ुफ़िया पुलिस किस तरह के "ज़ुल्म" करती है. उन्होंने

اِنڈو چائنا میں دکھن ویت نام کے اُن اُپدرویوں کو امریکہ برابر شہہ دے رہا ہے جو وہاں جنیوا کے سمجھوتے پر عمل ہونے دینا اور اُس دیش کے لوگوں کو ایکتا اور پریم کے ساتھ رہنے دینا نہیں چاہتے .

بھارت کے اندر گوآ ابھی تک ودیشی پرتگالیوں کے قبضے میں ہے اور پرتگالیوں کو بھی سب سے اَدھک شہہ امریکہ کی ہے .

فارموسا میں امریکی فوجیں برابر ڈیرہ ڈالے ہوئے ہیں، اور کسی طرح نئے چین کی سرکار اور چیانگ کائی شیک کی سرکار میں صلح کا موقع دینے کو تیار نہیں .

دکھن کوریا کی کٹھپتلی سرکار کو امریکہ کی شہہ اور مدد برابر جاری ہے .

جاپان میں امریکہ کے فوجی اڈے اُسی طرح قایم ہیں . امریکہ چاہتا ہے کہ دنیا کے دوسرے دیش جاپان کا بنا ہوا مال خریدیں، اُس جاپان کا جو امریکیوں کے قبضے میں ہے . پر جاپان اور جاپانیوں کو اپنے پڑوسی چین اور چینیوں کے ساتھ تجارت کرنے کی آزادی نہیں ہے .

حال میں امریکہ کے مشہور حاکم ڈلیس صاحب نے ایشیا کے کچھ دیشوں کا دورہ کیا تھا . وہ پاکستان بھی گئے تھے اور دلی بھی آئے تھے . دکھن ویت نام، فارموسا اور دکھن کوریا میں اُنہیں اپنے خاص پریمی ساتھی ملے . نیا چین انہیں کہیں نقشے پر دکھائی بھی نہیں دیا . امریکہ واپس پہونچکر اُنہوں نے اپنی یاترا کی جو رپورٹ اپنی سرکار کو دی ہے وہ دنیا کے اخباروں میں چھپ چکی ہے . اُسے پڑھکر کسی بھی ایشیا واسی یا کسی بھی نیائے پریمی آدمی کے دل میں شری ڈلیس یا اُن کی سرکار کے پرتی پریم یا ادر پیدا نہیں ہوسکتا اور نہ سبھیتا یا کلچر کی نگاہ سے امریکہ کوئی اُونچا دیش دکھائی دے سکتا ہے .

امریکہ میں وچاروں کی آزادی پر روک

خود امریکہ کے اندر وچاروں کی آزادی کا یہ حال ہے کہ کوئی آدمی خاصکر کوئی اِسکول ٹیچر یا سرکاری نوکر وہاں کھلے طور پر کمیونسٹ وچاروں کی کتابیں نہیں رکھ سکتا . یورپ کے دورے میں انیک ہی ایسی گھٹنائیں ہمیں سننے ملیں جن سے معلوم ہوتا ہے کہ امریکہ کی خفیہ پولیس اُن لوگوں کا 'جن پر کمیونسٹ وچار رکھنے کا سندیہہ ہوتا ہے' کس بری طرح پیچھا کرتی ہے اور انہیں کس طرح ستاتی ہے . حال میں اِنگلینڈ کے مشہور فلسفر شری برٹرنڈرسل نے "مینچسٹر گارجین" کے اندر ایک لیکھ میں بتایا ہے کہ امریکہ کی خفیہ پولس کس طرح کے "ظلم" کرتی ہے . اُنہوں نے

कहा है कि वहां की यह पुलिस पहले किसी ऐसे आदमी को तलाश करती है जिसके खिलाफ कोई जुर्म आसानी से साबित किया जा सकता हो. फिर उसे माफी का वादा देकर उससे इस तरह की झूटी शहादतें तैयार कराती है जिन से दूसरे लोग जिन्हें पुलिस फांसना चाहती है आसानी से फंस सकें और फिर इस तरह बेगुनाहों को फांसा जाता है.

हम एक पहले लेख में कह चुके हैं कि एक प्रतिष्ठित अमरीकी पादरी ने हमें बताया था कि अमरीका में किसी ईसाई धर्म प्रचारक को तब तक किसी दूसरे देश में जाकर धर्म प्रचार करने के लिये पासपोर्ट नहीं दिया जाता जब तक वह लिखकर यह वादा न करे कि वह जिस देश में जायगा वहाँ अमरीकी सरकार की राजकाजी पालिसी को कामयाब होने में मदद देगा.

अमरीकी जनता की ज़िम्मेवारी

हमें यह सब लिखते हुए किसी तरह की खुशी नहीं हो रही है. भारत की सरकार और भारत की जनता दोनों दुनया के सब देशों और सब लोगों के साथ प्रेम और मित्रता से रहना चाहते हैं. अमरीकी क़ौम के अनेक गुणों के लिये हमारे दिल में आदर है. अमरीका ने बड़े बड़े महापुरुष पैदा किये जिनमें से अनेक की यादगारें, आज भी कम्युनिस्ट चीन और कम्युनिस्ट रूस में मनाई जाती हैं. अमरीकी महात्मा थोरो की पुस्तक 'ड्यूटी आफ़ सिविल डिसओबीडियन्स' का तरजुमा करके खुद महात्मा गाँधी ने भारत में प्रकाशित किया था. वाल्टव्हिटमैन, थोरो और इबराहम लिंकन जैसे महापुरुषों को हम दुनिया भर के महापुरुष मानते हैं. पर आज की दुनिया जिस इनसानी बराबरी, आज़ादी और एकता की तरफ बढ़ रही है अमरीकी सरकार की हरकतें उसमें सहायक नहीं, ज़बरदस्त रुकावट हैं. अमरीका के इस तरह से दोषों को हम अमरीकी जनता के दोष नहीं, अमरीकी सरकार ही के दोष मानते हैं, पर अमरीकी जनता को अभी अपने कामों से यह साबित करना है कि वह अपनी सरकार की इन ग़लत हरकतों से सहमत नहीं है. जब तक अमरीकी जनता यह साबित नहीं करती तब तक उन सब देशों के लोगों का, जो दुनिया से काले गोरे आदि के भेदों को मिटाना चाहते हैं, सब की बराबरी और सब की आज़ादी के हक़ में हैं, और जो इनसानी क़ौम की एकता को साक्षात करना चाहते हैं, यह फर्ज़ है कि वह मिलकर मानव सभ्यता और मानव कलचर की रक्षा के लिये खड़े हों.

इस तरह की रुकावटों के होते हुए भी दुनिया बराबर आगे को बढ़ रही है. दुनिया की साम्राज प्रेमी क़ौमें धीरे धीरे अपनी चालों में नाकाम होती जा रही हैं. एशिया और अफरीक़ा के सब देश यह अच्छी तरह महसूस करते

کہا ہے کہ وہاں کی پولس پہلے کسی آدمی کو تلاش کرتی ہے جس کے خلاف کوئی جرم آسانی سے ثابت کیا جاسکتا ہو . پھر اسے معافی کا وعدہ دےکر اُس سے اِس طرح کی جھوٹی شہادتیں تیار کراتی ہے جن سے دوسرے لوگ جنھیں پولس پھانسنا چاہتی ہے آسانی سے پھنس سکیں اور پھر اِس طرح بےگناہوں کو پھانسا جاتا ہے .

ہم ایک پہلے لیکھ میں کہہ چکے ہیں کہ ایک پرتشٹھت امریکی پادری نے ہمیں بتایا تھا کہ امریکہ میں کسی عیسائی دھرم پرچارک کو تب تک کسی دوسرے دیش میں جاکر دھرم پرچار کرنے کے لئے پاس پورٹ نہیں دیا جاتا جب تک وہ لکھکر یہ وعدہ نہ کرے کہ وہ جس دیش میں جائےگا وہاں امریکی سرکار کی راج کاجی پالسی کو کامیاب ہونے میں مدد دےگا.

امریکی جنتا کی ذمہ واری

ہمیں یہ سب لکھتے ہوئے کسی طرح کی خوشی نہیں ہو رہی ہے . بھارت کی سرکار اور بھارت کی جنتا دونوں دنیا کے سب دیشوں اور سب لوگوں کے ساتھ پریم اور مترتا سے رہنا چاہتے ہیں . امریکی قوم کے انیک گنوں کے لئے ہمارے دل میں آدر ہے . امریکہ نے بڑے بڑے مہاپرش پیدا کئے جن میں سے انیک کی یادگاریں آج بھی کمیونسٹ چین اور کمیونسٹ روس میں منائی جاتی ہیں . امریکی مہاتما تھورو کی پستک 'ڈیوٹی آف سول ڈس اوبیڈینس' کا ترجمہ کرکے خود مہاتما گاندھی نے بھارت میں پرکاشت کیا تھا . والٹ وٹ مین' تھورو اور ابراھم لنکن جیسے مہاپرشوں کو ہم دنیا بھر کے مہاپرش مانتے ہیں . پر آج کی دنیا جس اِنسانی برابری' آزادی اور ایکتا کی طرف بڑھ رہی ہے امریکی سرکار کی حرکتیں اُس میں سہایک نہیں' زبردست رکاوٹ ہیں. امریکہ کے اِس طرح کے دوشوں کو ہم امریکی جنتا کے دوش نہیں' امریکی سرکار ہی کے دوش مانتے ہیں . پر امریکی جنتا کو ابھی اپنے کاموں سے یہ ثابت کرنا ہے کہ وہ اپنی سرکار کی اِن غلط حرکتوں سے سہمت نہیں ہے . جب تک امریکی جنتا یہ ثابت نہیں کرتی تب تک اُن سب دیشوں کے لوگوں کا جو دنیا سے کالے گورے آدمی کے بھیدوں کو مٹانا چاہتے ہیں' سب کی برابری اور سب کی آزادی کے حق میں ہیں' اور جو اِنسانی قوم کی ایکتا کو ساکشات کرنا چاہتے ہیں' یہ فرض ہے کہ وہ ملکر مانو سبھیتا اور مانو کلچر کی رکشا کے لئے کھڑے ہوں.

اِس طرح کی رکاوٹوں کے ہوتے ہوئے بھی دنیا برابر آگے کو بڑھ رہی ہے . دنیا کی سامراج پریمی قومیں دھیرے دھیرے اپنی چالوں میں ناکام ہوتی جارہی ہیں . اِیشیا اور افریقہ کے سب دیش یہ اچھی طرح محسوس کرتے

ा रहे हैं कि किस के साथ रहने में उनकी हानि है और
कस के साथ चलने में उनका और दुनिया का भला
. धीरे धीरे एशिया और अफ़रीका के सब देशों और
ाकिस्तान जैसे अपने पड़ौसी देश में भी हमें इसके आसार
ाफ़ दिखाई दे रहे हैं. अमरीका जैसे पूँजीवादी और
ाम्राजवादी देशों की नीति हमें अब—"जब तक निभे
ाब तक" की सी दिखाई देती है. हम मानते हैं कि अब
ी वह इधर उधर साज़िशें करके और कम समझ लोगों
ो उनके देशों के ख़िलाफ़ फोड़कर दुनिया के लिये
ोड़ी बहुत मुसीबतें खड़ी कर सकते हैं. पर वह इतिहास
े प्रवाह और मानव सभ्यता के धारे को नहीं बदल
सकते.

असली इलाज—फ़ौज और हथियारों का ख़ातमा

इस ख़तरे का असली और टिकाऊ इलाज एक ही है और यह है हथियार बन्दी, यानी दुनिया भर की फ़ौजों का और जंग के हथियारों का धीरे धीरे कम करना और आख़ीर में बिलकुल ख़त्म कर देना. दुनिया के सब देशों के विचारकों की निगाहें इस तरफ़ लगी हुई हैं. ऐसा मालूम होता है कि अमरीका के शासक धीरे धीरे इस ज़रूरत को महसूस करते जा रहे हैं. जंग का दुनिया से हमेशा के लिये ख़ात्मा होना ही चाहिये. हज़रत ईसा के शब्दों में हमें अपनी तलवारों को तोड़कर उनके हल बना लेने चाहियें. एक दूसरे पर अविश्वास और पुराने स्वार्थ इस रास्ते में रुकावट हैं. पर यह रुकावटें भी धीरे धीरे मिटती जा रही हैं. इस मिटने में इस समय दो चीज़ें सब से अधिक मदद देती मालूम होती हैं. एक यह कि अमरीका के शासक भी अब इस बात को अपने दिलों में समझने लगे हैं कि हर तरह की फ़ौजों और फ़ौजी हथियारों में सोवियत रूस इस समय अमरीका से बढ़ा हुआ है. दूसरे यह कि हथियारों के ख़त्म हो जाने पर भी देशों देशों में जो मतभेद और छोटे बड़े झगड़े रहेंगे उनको हल करने का तरीक़ा क्या हो. हमें इस बात का अभिमान और ख़ुशी है कि अमरीका की नीग्रो जाति ने इस बारे में महात्मा गाँधी के अहिंसात्मक असहयोग के हथियार को अपनाया है. किसी से बैर न हो, दिल में किसी का बुरा न हो, बुराई से नफ़रत करते हुए भी बुरे से प्रेम और हमदर्दी हो, अन्याय के साथ किसी तरह का सहयोग न हो, ख़ुद अपनी जान पर खेलकर भी अन्याय को मिटाने का दृढ़ संकल्प हो, इस तरह के फ़िक़रे नीग्रो पादरी किंग के व्याख्यानों में भरे पड़े हैं. अभी तक दुनिया के बहुत से विचारकों को यह चीज़ें हवाई और ग़ैर अमली भले ही दिखाई दें, दुनिया के आगे के झगड़ों और अन्यायों को ख़तम करने का यही एक तरीक़ा है. तरीक़ा फ़ैलता जा रहा है और फैलेगा.

وچارک ہیں کہ کس کے ساتھ رہنے میں اُن کی ہانی ہے اور کس
کے ساتھ چلنے میں اُن کا اور دنیا کا بھلا ہے ۔ دھیرے دھیرے
ایشیا اور افریقہ کے سب دیشوں اور پاکستان جیسے اپنے پڑوسی
دیش میں بھی ہمیں اِس کے آثار صاف دکھائی دے رہے
ہیں ۔ امریکہ جیسے پونجی‌وادی اور سامراج‌وادی دیشوں کی
نیتی ہمیں اب—"جب تک نبھے تب تک" کی سی دکھائی
دیتی ہے ۔ ہم مانتے ہیں کہ اب بھی وہ اِدھر اُدھر سازشیں
کرکے اور کم سمجھ لوگوں کو اُن کے دیشوں کے خلاف پھوڑکر دنیا
کے لئے تھوڑی بہت مصیبتیں کھڑی کرسکتے ہیں ۔ پر وہ اِتہاس
کے پرواہ اور مانو سبھیتا کے دھارے کو نہیں بدل سکتے ۔

اصلی علاج—فوج اور ہتھیاروں کا خاتمہ

اِس خطرہ کا اصلی اور ٹکاؤ علاج ایک ہی ہے اور وہ ہے ہتھیار بندی، یعنی دنیا بھر کی فوجوں کا اور جنگ کے ہتھیاروں کا دھیرے دھیرے کم کرنا اور آخر میں بالکل ختم کردینا ۔ دنیا کے سب دیشوں کے وچارکوں کی نگاہیں اِس طرف لگی ہوئی ہیں ۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ امریکہ کے شاسک بھی دھیرے دھیرے اِس ضرورت کو محسوس کرتے جارہے ہیں ۔ جنگ کا دنیا سے ہمیشہ کے لئے خاتمہ ہونا ہی چاہئے ۔ حضرت عیسیٰ کے شبدوں میں ہمیں اپنی تلواروں کو توڑکر اُن کے ہل بنالینے چاہئیں ۔ ایک دوسرے پر اوشواس اور پرانے سوارتھ اِس راستے میں رکاوٹ ہیں ۔ پر یہ رکاوٹیں بھی دھیرے دھیرے مٹتی جارہی ہیں ۔ اِس مٹنے میں اِس سمے دو چیزیں سب سے ادھک مدد دیتی معلوم ہوتی ہیں ۔ ایک یہ کہ امریکہ کے شاسک بھی اب اِس بات کو اپنے دلوں میں سمجھنے لگے ہیں کہ ہر طرح کی فوجوں اور فوجی ہتھیاروں میں سوویت روس اِس سمے امریکہ سے بڑھا ہوا ہے ۔ دوسرے یہ کہ ہتھیاروں کے ختم ہو جانے پر بھی دیشوں دیشوں میں جو مت‌بھید اور چھوٹے بڑے جھگڑے رہینگے اُن کو حل کرنے کا طریقہ کیا ہو ۔ ہمیں اِس بات کا ابھیمان اور خوشی ہے کہ امریکہ کی نیگرو جاتی نے اِس بارے میں مہاتما گاندھی کے اہنساتمک اسہیوگ کے ہتیار کو اپنایا ہے ۔ کسی سے بیر نہ ہو، دل میں کسی کا برا نہ ہو، برائی سے نفرت کرتے ہوئے بھی برے سے پریم اور ہمدردی ہو، انیائے کے ساتھ کسی طرح کا سہیوگ نہ ہو، خود اپنی جان پر کھیل‌کر بھی انیائے کو مٹانے کا دِرڑھ سنکلپ ہو، اِس طرح کے فقرے نیگرو پادری کنگ کے ویاکھیانوں میں بھرے پڑے ہیں ۔ ابھی تک دنیا کے بہت سے وچارکوں کو یہ چیزیں ہوائی اور غیر عملی بھلے ہی دکھائی دیں، دنیا کے آگے کے جھگڑوں اور انیایوں کو ختم کرنے کا یہی ایک طریقہ ہے ۔ طریقہ پھیلتا جا رہا ہے اور پھیلے گا ۔

आज़ाद भारत में फ़ौज नहीं रहनी चाहिये

विनोबा जी ने हाल में बिलकुल सच और ठीक कहा है कि भारत अगर अपनी सारी फ़ौजों को एक दम ख़तम करदे और अपने हथियारों को तोड़कर फेंक दे या हलों और हंसियों में बदल डाले तो दुनिया के सामने इस मामले में एक बहुत बड़ा आदर्श पेश कर सकता है. हमें याद है महात्मा गाँधी कहा करते थे कि—आज़ाद भारत में कोई फ़ौज नहीं रहनी चाहिये. पर अभी तो शायद भारत के शासक और जनता दोनों में से किसी में भी यह हिम्मत नहीं है. हममें अभी आत्मविश्वास की कमी है. भारत इस मामले में चाहे दूसरों के सामने किसी दिन मिसाल क़ायम करे या दूसरों के पीछे चले, जाना हमें इसी ओर है.

30-3-'56. —सुन्दरलाल

राष्ट्र भाषा किस ओर?

महामना पंडित मदनमोहन मालवी के पोते, स्वर्गीय पंडित कृष्णकान्त मालवी के सुपुत्र, पंडित पद्मकान्त मालवी ने अपना एक छपा हुआ वक्तव्य राष्ट्र भाषा हिन्दी के ऊपर हमारे पास भेजा है. हिन्दी साहित्य की चरचा करते हुए उन्होंने लिखा है कि—"हिन्दी साहित्य के एक विशेष दल की संकीर्णता (तंग नज़री) और दलबन्दी के कारण हिन्दी के कितने ही अग्रदूत (पेशवा) और निर्माता (मेमार) आज तक प्रकाश में नहीं आ पाए हैं. और इस कारण हिन्दी साहित्य के अधिकांश आजकल के इतिहास भी न केवल व्यापक और पूरे ही नहीं है बल्कि एकांकी यानी यक-तरफ़ा भी हैं."

इसकी वजह पंडित पद्मकान्त जी ने यह बताई है—"हिन्दी आन्दोलन के शुरू ज़माने से ही साहित्यकारों के दो दल रहे हैं, एक दल वह था जो अपने को शुद्ध साहित्यक कहता रहा है. और अंगरेज़ सरकार का कृपा पात्र था. केवल इसी दल के लोग पढ़ने की पुस्तकों का चुनाव करने वाली सरकारी कमेटियों में लिये जाते थे और स्कूल कालिजों के पढ़ाई के मज़मूनों को तय करते थे. इस दल के ज़रिये दूसरे गिरोह के साहित्यकों और साहित्यकारों की तरफ़ से जिन्हें राष्ट्रीय दल के लोग कहना ठीक होगा, बेपरवाही बरती गई और उन्हें पीछे छोड़ दिया गया. आज इस बात की बड़ी ज़रूरत है कि उस राष्ट्रीय दल के लोगों की रचनाओं पर प्रकाश डाला जाय."

आगे चलकर पंडित पद्मकान्त जी ने लिखा है कि—"साहित्य के इन दोनों दलों में ख़ास फ़रक़ राष्ट्रभाषा का रूप क्या हो इस सवाल पर था. एक दल हिन्दी को संस्कृत भरी करने का तरफ़दार था और दूसरा दल भाषा को

آزاد بھارت میں فوج نہیں رہنی چاہئے

ونوبا جی نے حال میں بالکل سچ اور ٹھیک کہا ہے کہ بھارت اگر اپنی ساری فوجوں کو ایکدم ختم کردے اور اپنے ہتھیاروں کو توڑکر پھینک دے یا ہلوں اور ہنسیوں میں بدل ڈالے تو دنیا کے سامنے اِس معاملے میں ایک بہت بڑا آدرش پیش کرسکتا ہے. ہمیں یاد ہے مہاتما گاندھی کہا کرتے تھے کہ— آزاد بھارت میں کوئی فوج نہیں رہنی چاہئے. پر ابھی تو شاید بھارت کے شاسک اور جنتا دونوں میں سے کسی میں بھی یہ ہمت نہیں ہے. ہم میں ابھی آتم وشواس کی کمی ہے. بھارت اِس معاملے میں چاہے دوسروں کے سامنے کسی دن مثال قائم کرے یا دوسروں کے پیچھے چلے، جانا ہمیں اِسی اور ہے.

30 . 3 . '56 —سندر لال.

راشٹر بھاشا کس اور ؟

مہامنا پنڈت مدن موہن مالوی کے پوتے، سورگیہ پنڈت کرشن کانت مالوی کے سپتر، پنڈت پدم کانت مالوی نے اپنا ایک چھپا ہوا وکتویہ راشٹر بھاشا ہندی کے اوپر ہمارے پاس بھیجا ہے. ہندی ساہتیہ کی چرچا کرتے ہوئے اُنہوں نے لکھا ہے کہ—"ہندی ساہتیہ کے ایک وشیش دل کی سنکیرتا (تنگ نظری) اور دل‌بندی کے کارن ہندی کے کتنے ہی اگردوت (پیشوا) اور نرماتا (معمار) آج تک پرکاش میں نہیں آپائے ہیں. اور اِس کارن ہندی ساہتیہ کے ادھیکانش آجکل کے اِتہاس بھی نہ کیول ویاپک اور پورے ہی نہیں ہیں بلکہ ایکانکی یعنی یک‌طرفہ بھی ہیں."

اِس کی وجہ پنڈت پدم کانت نے یہ بتائی ہے—"ہندی آندولن کے شروع زمانے سے ہی ساہتیہ‌کاروں کے دو دل رہے ہیں؛ ایک دل وہ تھا جو اپنے کو شدھ ساہتیک کہتا رہا ہے اور انگریز سرکار کا کرپا پاتر تھا. کیول اِسی دل کے لوگ پڑھنے کی پستکوں کا چناؤ کرنے والی سرکاری کمیٹیوں میں لئے جاتے تھے اور اِسکول کالجوں کے پڑھائی کے مضمونوں کو طے کرتے تھے. اِس دل کے ذریعے دوسرے گروہ کے ساہیتیکوں اور ساہتیہ‌کاروں کی طرف سے' جنہیں راشٹریہ دل کے لوگ کہنا ٹھیک ہوگا' بےپرواہی برتی گئی اور اُنہیں پیچھے چھوڑ دیا گیا. آج اِس بات کی بڑی ضرورت ہے کہ اُس راشٹریہ دل کے لوگوں کی رچناؤں پر پرکاش ڈالا جائے."

آگے چلکر پنڈت پدم کانت جی نے لکھا ہے کہ— "ساہتیہ کے اِن دونوں دلوں میں خاص فرق راشٹر بھاشا کا روپ کیا ہو اِس سوال پر تھا. ایک دل ہندی کو سنسکرت بھری کرنے کا طرفدار تھا اور دوسرا دل بھاشا کو

आसान कर बसे बोल चाल की भाषा के निकट लाने के पक्ष में था. पहले दल के लोगों को विदेशी सरकार का सहारा हासिल था, क्योंकि वह एक ऐसी भाषा का पक्षपाती था जो हिन्दू और मुसलमानों के बीच की खाई को चौड़ी करने वाली थी. यह दल दूसरे दल का विरोधी था. इसलिये उस समय की सरकार पर अपने असर और अपने बढ़े हुए साधनों में वह राष्ट्रीय विचार के लोगों को पूरी तरह दबा देने में समर्थ हो गया. यह एक बड़े दुख की बात है कि हमारे विश्व विद्यालयों ने भी राष्ट्रीय साहित्यकारों की तरफ़ से वैसी ही बेरुख़ी अख़्तियार की. कारन साफ़ है. आज के प्रोफ़ेसर और शिक्षक स्वयं उसी एकांगी वातावरन की उपज हैं. शिक्षा संस्थाओं के अलावा राष्ट्रीय सरकार का भी फ़र्ज़ है कि वह हिन्दी साहित्यकारों की रचनाओं और साहित्य के इतिहास को सुधारने और ठीक करने में मदद दे."

पं० पद्मकान्त जी ने यह भी लिखा है कि—"खेर कमीशन के सामने एक सवाल यह भी है कि हमारी राष्ट्रीय भाषा का रूप क्या हो ? अंगरेज़ी सरकार के ज़माने में जो नीति चलाई गई थी उसे आजकी बदली हुई हालत में राष्ट्रीय सरकार को बदल देना चाहिये, यदि यह देखा जाय कि पहले वाली नीति अराष्ट्रीय थी. भारत की एकता के लिये हिन्दी को संस्कृत निष्ट बनाने की आवश्यकता के भ्रमजाल का आज पूरी तरह परदा फ़ाश हो चुका है. इस संबन्ध में यह विशेष रूप से ध्यान में रखने की बात है कि संस्कृत के बड़े से बड़े पंडित, जैसे महामहोपाध्याय पं० शिवकुमार शास्त्री हिन्दी को संस्कृत निष्ट बनाने के विरोधी थे."

पं० पद्मकान्त जी ने हमें यह भी याद दिलाया कि स्वर्गीय महामना पं० मदनमोहन जी मालवी मिली जुली बामुहावरा बोल चाल की भाषा के पक्ष में थे और 'आश्चर्य' जैसे ततसम शब्दों की जगह 'अचरज' जैसे तद्भव शब्दों के इस्तेमाल के हक़ में थे.

पं० पद्मकान्त जी के इन विचारों में सचाई, ताज़गी और रवादारी साफ़ झलकती है.

—सुन्दरलाल

آسان کر اسے بول چال کی بھاشا کے نکٹ لانے کے پکش میں تھا ۔ پہلے دل کے لوگوں کو ودیشی سرکار کا سہارا حاصل تھا' کیونکہ وہ ایک ایسی بھاشا کا پکشپاتی تھا جو ہندو اور مسلمانوں کے بیچ کی کھائی کو چوڑی کرنے والی تھی ۔ یہ دل دوسرے دل کا ورودھی تھا ۔ اس لئے اُس سمے کی سرکار پر اپنے اثر اور اپنے بڑھے ہوئے سادھنوں میں وہ راشٹریہ وچار کے لوگوں کو پوری طرح دبا دینے میں سمرتھ ہو گیا ۔ یہ ایک بڑے دکھ کی بات ہے کہ ہمارے وشوودیالیوں نے بھی راشٹریہ ساہتیہ کاروں کی طرف سے ویسی ہی بے رخی اختیار کی ۔ کارن صاف ہے ۔ آج کے پروفیسر اور شکشک سویم اسی ایکانگی واتاورن کی اُپج ہیں ۔ شکشا سنستھاؤں کے علاوہ راشٹریہ سرکار کا بھی فرض ہے کہ وہ ہندی ساہتیہ کاروں کی رچناؤں اور ساہتیہ کے اِتہاس کو سدھارنے اور ٹھیک کرنے میں مدد دے ۔"

پنڈت پدم کانت جی نے یہ بھی لکھا ہے کہ —"کھیر کمیشن کے سامنے ایک سوال یہ بھی ہے کہ ہماری راشٹریہ بھاشا کا روپ کیا ہو ؟ انگریزی سرکار کے زمانے میں جو نیتی چلائی گئی تھی اسے آج کی بدلی ہوئی حالت میں راشٹریہ سرکار کو بدل دینا چاہئے' یدی یہ دیکھا جائے کہ پہلے والی نیتی اراشٹریہ تھی ۔ بھارت کی ایکتا کے لئے ہندی کو سنسکرت نشٹ بنانے کی آوشیکتا کے بھرم جال کا آج پوری طرح پردہ فاش ہو چکا ہے ۔" اِس سمبندھ میں یہ وشیش روپ سے دھیان میں رکھنے کی بات ہے کہ سنسکرت کے بڑے سے بڑے پنڈت جیسے مہامہوپادھیا پنڈت شو کمار شاستری ہندی کو سنسکرت نشٹھ بنانے کے ورودھی تھے ۔"

پنڈت پدم کانت جی نے ہمیں یہ بھی یاد دلایا کہ سورگیہ مہامنا پنڈت مدن موہن جی مالوی ملی جلی بامحاورہ بول چال کی بھاشا کے پکش میں تھے اور 'آشچریہ' جیسے تتسم شبدوں کی جگہ 'اچرج' جیسے تدبھو شبدوں کے استعمال کے حق میں تھے ۔

پنڈت پدم کانت جی کے ان وچاروں میں سچائی' تازگی اور رواداری صاف جھلکتی ہے ۔

— سندر لال

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें

नोट:—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं.

नाम किताब	लेखक	दाम		
1. शेर-ओ-शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0
2. शेर-ओ-सुखन	”	8	0	0
3. गहरे पानी पैठ	”	2	8	0
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0
5. संस्मरण	”	3	0	0
6. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0
9. पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर।	2	0	0
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.		0	0
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला		0	0
17. भारतीय शासन	”	3	0	0
18. नागरिक शास्त्र	”	2	4	0
19. साम्राज्य और उनका पतन	”	2	8	0
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	”	1	4	0
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	”	1	8	0
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल. एल. बी. श्री गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, श्री भगवानदास केला	2	0	0
24. नागरिक शिक्षा	श्री भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0
27. मारने की हिम्मत !	”	1	0	0
28. सलोना सच	”	0	8	0
29. मेरे साथी	”	1	0	0

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द'

ہمارے یہاں ملنےوالی کچھ اور کتابیں

نوٹ :—یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں ۔

نام کتاب	لیکھک
1. شعر و شاعری	شری ایودھیا پرساد گوئلیہ
2. شعر و سخن	”
3. گہرے پانی پیٹھ	”
4. ہمارے آرادھیہ	شری بنارسی داس چترویدی
5. سنسمرن	”
6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں	شری جگدیش چندر جین
7. گیان گنگا	شری نارائن پرساد جین
8. پتھ چنھ	شری شانتی پریہ دویدی
9. پنچ پردیپ	شانتی ایم . اے
10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول	شری کنہیالال مشر پربھاکر
11. مکتی دوت	شری ویریندر کمار جین ایم . اے
12. ملن یامنی	شری بچن
13. رجت رشمی	ڈاکٹر رام کمار ورما
14. میرے باپو	شری تنمے بخاریا
15. وشو سنگھ کی اور	پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا
16. بھارتیہ ارتھ شاستر	شری بھگوان داس کیلا'
17. بھارتیہ شاسن	”
18. ناگرک شاستر	”
19. سامراج اور اُن کا پتن	”
20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن	”
21. سرودے ارتھ ویوستھا	”
22. ہماری آدم جاتیاں	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے
23. ارتھ شاستر شبداولی	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا
24. ناگرک شکشا	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے
25. راشٹر منڈل شاسن	دیا شنکر دوبے
26. جوانی	مہاتما بھگوان دین
27. مارنے کی ہمت !	”
28. سلونا سچ	”
29. میرے ساتھی	”

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند'

हिन्दी घर

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ी केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उर्दू में)
लेखक—गान्धीवाद के माने जाने
विद्वान : श्री मंज़र अली सोख़्ता
सफ़े 225, क़ीमत दो रुपया

—:o:—

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—क़ुदसिया ज़ैदी
भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा काग़ज़, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें
दाम दो रुपया

—:o:—

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

गीता और क़ुरान

275 सफ़े, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफ़े, दाम बारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक़

क़ीमत बारह आने

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क़ीमत चार आने

बंगाल और उससे सबक़

क़ीमत दो आने

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्ठीगंज इलाहाबाद

ھندی گھر

کلچر پر ھر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر—پاٹھک ھندی، اردو، انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ھمیں لکھیں۔

ھماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ھندی اور اردو میں)
لیکھک—گاندھی واد کے مانے جانے
ودوان: شری منظر علی سوختہ
صفحے 225، قیمت دو روپیہ

—:o:—

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)
لیکھکا—قدسیہ زیدی
بھومکا—پنڈت جواہر لال نہرو
موٹا کاغذ، موٹا ٹائپ، بہت سی رنگین تصویریں
دام دو روپیہ

—:o:—

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور قران

275 صفحے، دام ڈھائی روپیہ

ھندو مسلم ایکتا

100 صفحے دام بارہ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

قیمت بارہ آنے

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

قیمت چار آنے

بنگال اور اُس سے سبق

قیمت دو آنے۔

ھندستانی کلچر سوسائٹی

145، مٹھی گنج الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

نیا ہند

इस नम्बर के खास लेख | اِس نمبر کے خاص لیکھ

बौद्ध धर्म और इस्लाम | بودھ دھرم اور اِسلام

—श्री मौलवी ज़ियाउद्दीन साहब | —شری مولوی ضیاالدین صاحب

चीन में बौद्ध धर्म | چین میں بودھ دھرم

—प्रोफ़ैसर तान-युन-शान | —پروفیسر تان- یُن- شان

हिन्दुस्तान की कल्चर पर बौद्ध मज़हब की छाप | ہندستان کی کلچر پر بودھ مذہب کی چھاپ

—आचार्य धर्मानन्द कोसाम्बी | —اُچاریہ دھرمانند کوسمبی

आत्म विद्या (इल्म रूहानी)—आप बीती | آتم ودیا(علم روحانی) — آپ بیتی

—डाक्टर भगवानदास | —ڈاکٹر بھگوان داس

चीन में इलाज का पुराना तरीक़ा | چین میں علاج کا پرانا طریقہ

—पंडित सुन्दरलाल | —پنڈت سندر لال

इसके अलावा | اِسکے علاوہ

देस बिदेस के मसलों पर हमारी राय में ज़रूरी सम्पादकी नोट

دیس بدیس کے مسئلوں پر ہماری رائے میں ضروری سمپادکی نوٹ

जिल्द 21 جلد   नम्बर 5 نمبر

मई 1956 مئی

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद   145، مٹھی گنج الہ آباد

मई 1956 مئی

बौद्ध धर्म और इस्लाम

श्री मौलवी ज़ियाउद्दीन साहब

जिस ज़माने में मुसलिम विद्वानों ने हिन्दू किताबों का अरबी फ़ारसी में तरजुमा किया उस से बहुत पहले और जिस ज़माने में कि दूसरे मुल्कों के मुसलिम यात्री हिन्दुस्तान आकर यहाँ से इस मुल्क की जानकारी हासिल करके अपने अपने मुल्कों को लौटे उससे भी पहले ईरानी अदब के ज़रिये और ईरान के कुछ दूर दूर के हिस्सों में बौद्ध धर्म के बचे खुचे असर के ज़रिये मुसलमानों को हिन्दुस्तान के मज़हबी ख़यालों की काफ़ी झलक मिल चुकी थी. यह मुसलमान बौद्धों को 'समनिया' * कहा करते थे. 'बुद्ध' या 'बुत' शब्द, जो बुद्ध का बिगड़ा हुआ रूप है, काफ़ी पहले गिरते गिरते 'मूर्ति' के मायनों में इस्तेमाल होने लगा था. उसके और कुछ मायने रह ही नहीं गये थे. यह लोग 'बुज़ासफ़' को बौद्ध मज़हब का बानी समझते थे. बुज़ासफ़ 'बोधिसत्व' का बिगड़ा हुआ रूप है. मुसलमानों के बलख़, ट्रांस आक्सियाना, ख़ुरासान, तुर्किस्तान, ईरान और एक दरजे तक इराक़ फ़तह करने से पहले इन सब मुल्कों में बौद्ध धर्म फैल चुका था. इन मुल्कों के लोगों के मुसलमान होजाने के बाद भी वहां के बौद्ध पुरोहितों ने फ़ौरन अपना प्रचार बन्द नहीं कर दिया. उनके वैराग्य, तप और योग के तरीक़े और उनका मज़हबी नज़रिया यह सब चीज़ें बराबर पहले ही की तरह नये मुसलमानों में अपना काम करती रहीं और अपना असर डालती रहीं. 'तसबीह' यानी 'माला' और इसी तरह की और बहुत सी चीज़ें मुसलमानों को बौद्धों से विरसे में मिलीं. इल्मे मारफ़त यानी 'अध्यात्म' में सूफ़ियों का 'फ़ना' का उसूल बौद्धों के 'निर्वाण' से लिया गया है. सूफ़ियों के मुताबिक़ 'सालिक' यानी 'योगी' फ़ना फ़िल्लाह' यानी 'ईश्वर में लीन' होजाने से पहले जिन 'मुक़ामात' या चक्रों में से होकर गुज़रता है वे सब बौद्ध या कम से कम हिन्दुस्तानी हैं.

बलख़ और बुख़ारा के ईरानियों में यह एक ज़बर्दस्त रिवाज था कि वे बार बार फिर अपने पुराने बौद्ध ख़यालातों और बौद्ध रिवाजों को अपनाते रहते थे. शायद और सब देशों के मुक़ाबिले में इन मुल्कों में ही बौद्ध धर्म सब से ज़्यादा देर तक [illegible] अबू नस्र अहमद बिन नरशख़ी

* [illegible] 'श्रमण' से बना है.

بودھ دھرم اور اسلام

شری مولوی ضیاالدین صاحب

جس زمانے میں مسلم ودوانوں نے ہندو کتابوں کا عربی فارسی میں ترجمہ کیا اُس سے بہت پہلے اور جس زمانے میں کہ دوسرے ملکوں کے مسلم یاتری ہندستان آکر یہاں سے اِس ملک کی جانکاری حاصل کرکے اپنے اپنے ملکوں کو لوٹے اُس سے بھی پہلے ایرانی ادب کے ذریعہ اور ایران کے کچھ دور دور کے حصوں میں بودھ دھرم کے بچے کھچے اثر کے ذریعے مسلمانوں کو ہندستان کے مذہبی خیالوں کی کافی جھلک مل چکی تھی۔ یہ مسلمان بودھوں کو 'سمانیہ'* کہا کرتے تھے۔ 'بدھ' یا 'بت' لفظ، جو بدھ کا بگڑا ہوا روپ ہے، کافی پہلے گرتے گرتے 'مورتی' کے معنوں میں استعمال ہونے لگا تھا۔ اُس کے اور کچھ معنے رہ ہی نہیں گئے تھے۔ یہ لوگ 'بزاصف' کو بودھ مذہب کا بانی سمجھتے تھے۔ بزاصف 'بودھستو' کا بگڑا ہوا روپ ہے۔ مسلمانوں کے بلخ، ٹرانس آکسیانا، خراسان، ترکستان، ایران اور ایک درجے تک عراق فتح کرنے سے پہلے اِن سب ملکوں میں بودھ دھرم پھیل چکا تھا۔ اِن ملکوں کے لوگوں کے مسلمان ہوجانے کے بعد بھی وہاں کے بودھ پروہتوں نے فوراً اپنا پرچار بند نہیں کردیا۔ اُن کے ویراگیہ، تپ اور یوگ کے طریقے اور اُن کا مذہبی نظریہ یہ سب چیزیں برابر پہلے ہی کی طرح نئے مسلمانوں میں اپنا کام کرتی رہیں اور اپنا اثر ڈالتی رہیں۔ 'تسبیح' یعنی 'مالا' اور اِسی طرح کی اور بہت سی چیزیں مسلمانوں کو بودھوں سے ورثہ میں ملیں۔ 'علم معرفت' یعنی 'ادھیاتم' میں صوفیوں کا 'فنا' کا اُصول بودھوں کے 'نروان' سے لیا گیا ہے۔ صوفیوں کے مطابق 'سالک' یعنی 'یوگی' 'فنافی اللہ' یعنی ایشور میں لین ہوجانے سے پہلے جن 'مقامات' یا چکروں میں ہوکر گذرتا ہے وہ سب بودھ یا کم سے کم ہندستانی ہیں۔

بلخ اور بخارا کے ایرانیوں میں یہ ایک زبردست رواج تھا کہ وہ بار بار پھر اپنے پرانے بودھ خیالوں اور بودھ رواجوں کو اپناتے رہتے تھے۔ شاید اور سب دیشوں کے مقابلے میں اِن ملکوں میں ہی بودھ دھرم سب سے زیادہ دیر تک بنا رہا۔ ابو نصر احمد بن نرشخی

* ظاہر ہے یہ لفظ بودھ 'شرمن' سے بنا ہے۔

(सन् 943 ई०) अपनी "तारीख़बुख़ारा" में लिखता है कि—"बुख़ारा के लोग बार बार मुसलमान कर लिये जाते थे. वे इसलाम क़ुबूल कर लेते थे और हर ,बार ज्योंही कि अरब उनके मुल्क से चले जाते थे फिर इसलाम छोड़कर अपने पुराने मज़हब में चले आते थे.* बुख़ारा के पुराने इतिहास का ज़िक्र करते हुए वह लिखता है—"साल में दो मर्तबा वहाँ बाज़ार लगा करता था जिसमें मूर्तियां बिका करती थीं. एक एक दिन में पचास पचास हज़ार दिरहम की मूर्तियां बिक जाती थीं···बुख़ारा के लोग पहले बुत परस्त (मूर्ति पूजक) रह चुके थे और साल में दो बार मूर्तियों की फ़रोख़्त उनके देश का एक मुस्तक़िल रिवाज हो गया था. असली अरबी तारीख़ के मुसन्निफ़ मोहम्मद बिन जाफ़र ने अपनी किताब में लिखा है कि यह बाज़ार उसके वक़्त तक बराबर लगता रहा.‡ इन सब बातों को देखते हुए हम यह नतीजा निकाले बग़ैर नहीं रह सकते, और यह नतीजा बहुत ग़लत नहीं हो सकता, कि वहाँ के लोगों के इसलाम धर्म क़ुबूल कर लेने के बाद भी किसी न किसी ज़्यादा बारीक चीज़ का, यानी बौद्ध धर्म के किसी न किसी ज़्यादा असली और ज़बर्दस्त उसूल का असर उनके दिलों और दिमाग़ों पर अपना काम करता रहा होगा. अब्बासी ख़लीफ़ाओं के ज़माने में बरमकियों ने जो कुछ कारनामे दिखलाए उन से यह बात बिना किसी शक और शुबहे के पूरी तरह साबित होती है.

बरमकी शुरू में बलख़ ही के रहने वाले थे. सन् 652 ईसवी में ख़लीफ़ा उसमान के ज़माने में मुसलमानों ने बलख़ को फ़तह किया. वहाँ के बौद्ध मन्दिर 'नव बिहार' का ख़ास पुरोहित 'बरमक' कहलाता था. बरमक संस्कृत लफ़्ज़ 'परमुख' से बना है. बरमक को क़ैद करके ख़लीफ़ा के पास भेज दिया गया. मालूम होता है वहाँ पर वह मुसलमान हो गया क्योंकि लिखा है कि वहाँ से बलख़ वापस आने पर उसने फिर अपना पुराना धर्म अख़्त्यार कर लिया. लेकिन फिर भी वहाँ के लोगों ने उसे अब अछूत समझा. उन्होंने उसे पुरोहिताई के रुतबे से हटाकर उसके लड़के को उसकी जगह मुक़र्रर कर दिया. उसे ही वह अपना धर्म गुरु मानने लगे. उसके बाद बौद्ध तुर्क राजा निज़ाक़ तुरख़ान ने ख़ुफ़िया साज़िश करके बरमक और उसके दस बेटों को मरवा डाला. इसपर बरमक की बीवी अपने सब से छोटे बेटे को साथ लेकर जान बचा कर काशमीर चली गई. बरमक के बेटे, छोटे बरमक को काशमीर में वैद्यक, ज्योतिष और दूसरी भारती विद्याओं की तालीम दी गई. इस नौजवान बरमक को आख़िर में बलख़ वापस बुलाया गया

(سن 943ء) اپنی "تاریخ بخارا" میں لکھتا ہے کہ—
"بخارا کے لوگ بار بار مسلمان کرلئے جاتے تھے . وہ اسلام قبول کرلیتے تھے اور ہر بار جونہی کہ عرب اُن کے ملک سے چلے آتے تھے پھر اسلام چھوڑکر اپنے پرانے مذہب میں چلے جاتے تھے .* بخارا کے پرانے اِتہاس کا ذکر کرتے ہوئے وہ لکھتا ہے—"سال میں دو مرتبہ یہاں بازار لگا کرتا تھا جس میں مورتیاں بکا کرتی تھیں . ایک ایک دن میں پچاس پچاس ہزار درہم کی مورتیاں بک جاتی تھیں...بخارا کے لوگ پہلے بُت‌پرست (مورتی پوجک) رہ چکے تھے اور سال میں دو بار مورتیوں کی فروخت اُن کے دیش کا ایک مستقل رواج ہوگیا تھا . اصلی عربی تاریخ کے مصنف محمد بن جعفر نے اپنی کتاب میں لکھا ہے کہ یہ بازار اُس کے وقت تک برابر لگتا رہا .‡ ان سب باتوں کو دیکھتے ہوئے ہم یہ نتیجہ نکالے بغیر نہیں رہ سکتے' اور یہ نتیجہ بہت غلط نہیں ہوسکتا' کہ وہاں کے لوگوں کے اِسلام دھرم قبول کرلینے کے بعد بھی کسی نہ کسی زیادہ باریک چیز کا یعنی بودھ دھرم کے کسی نہ کسی زیادہ اصلی اور زبردست اُصول کا اثر اُن کے دلوں اور دماغوں پر اپنا کام کرتا رہا ہوگا . عباسی خلیفاؤں کے زمانے میں برمکیوں نے جو کچھ کارنامے دکھلائے اُن سے یہ بات بنا کسی شک اور شبہہ کے پوری طرح ثابت ہوتی ہے .

برمکی شروع میں بلخ ہی کے رہنے والے تھے . سن 652 عیسوی میں خلیفہ عثمان کے زمانے میں مسلمانوں نے بلخ کو فتح کیا . وہاں کے بودھ مندر 'نووہار' کا خاص پروہت 'برمک' کہلاتا تھا . برمک سنسکرت لفظ 'پرمکھ' سے بنا ہے . برمک کو قید کر کے خلیفہ کے پاس بھیج دیا گیا . معلوم ہوتا ہے وہاں پر وہ مسلمان ہوگیا کیونکہ لکھا ہے کہ وہاں سے بلخ واپس آنے پر اُس نے پھر اپنا پرانا دھرم اختیار کرلیا. لیکن پھر بھی وہاں کے لوگوں نے اُسے اب اچھوت سمجھا . اُنھوں نے اُسے پروہتائی کے رتبہ سے ہٹاکر اُس کے لڑکے کو اُس کی جگہ مقرر کردیا . اُسے ہی وہ اپنا دھرم گرو ماننے لگے . اُس کے بعد بودھ ترک راجا نذاق ترخان نے خفیہ سازش کرکے برمک اور اس کے دس بیٹوں کو مروا ڈالا . اس پر برمک کی بیوی اپنے سب سے چھوٹے بیٹے کو ساتھ لیکر جان بچاکر کاشمیر چلی گئی . برمک کے بیٹے' چھوٹے برمک' کو کاشمیر میں ویدک' جوتش اور دوسری بھارتی ودیاؤں کی تعلیم دی گئی . اس نوجوان برمک کو آخر میں بلخ واپس بلایا گیا

*—Tarikh-e-Bukhara, Ed. O. Shefer, Paris, 1892, p. 18.

‡—Ibid. pp. 18-19.

और उसे बौद्ध [illegible] का ख़ास पुरोहित मुक़र्रर कर दिया गया.* [illegible] हारून रशीद का वज़ीरेआज़म इब्न ख़ालिद इसी बौद्ध बरमकी ख़ानदान से था. इब्न अन्नदीम लिखता है कि—"अरबों की हुकूमत के ज़माने में यहिया इब्न ख़ालिद बरमकी ही वह शख़्स था जिसने हिन्दुस्तान के साथ बहुत गहरा ताल्लुक़ क़ायम रक्खा. उसने बड़ी मोहब्बत और इज़्ज़त के साथ हिन्दुस्तान से हिन्दू वैद्यों और विद्वानों को बुलाया.‡ मालूम होता है कि बरमकियों में यह एक रिवाज चला आता था कि वे हिन्दुस्तान में तालीम पाने के लिये अपने यहाँ से तालिबइल्म भेजा करते थे. इसी रिवाज के मुताबिक़ उन्होंने अब मुसलमान होजाने के बाद बड़े बड़े विद्वानों को भारत के मज़हबों के बारे में पूरी पूरी जानकारी हासिल करने के लिये इस मुल्क में भेजा और हिन्दू पंडितों और वैद्यों को ख़लीफ़ा के दरबार में बुलवाया.

मुसलमानों में ख़ासकर अब्बासी ख़लीफ़ाओं के ज़माने में काफ़ी दूरअन्देश विद्वान ऐसे थे जिन पर कम या ज़्यादा बौद्ध धर्म का बराह रास्त असर पड़ा. ईरान के मागी मुसलमान हो जाने के बाद भी आम तौर पर अपने अक़ीदों के लिहाज़ से आधे बौद्ध थे. इब्न मुक़फ़्फ़ह (सन् 760 ई०) जिसने 'कलैला व दमना' का पहलवी से अरबी में तर्जुमा किया और जो बड़ा होकर मुसलमान हो गया, आज़ाद ख़्याल मागियों और मुसलमानों की बहुत अच्छी मिसाल था. इब्न मक़फ़्फ़ह लिखता है कि 'कलैला व दमना' की असली किताब हिन्दुस्तान की लिखी हुई थी. सन् 531—579 ई० के क़रीब बरज़ूयाह इस किताब को हिन्दुस्तान से लाया और ईरान में उसने उसका पहलवी में तर्जुमा किया इब्न मक़फ़्फ़ह ने इसका तर्जुमा पहलवी से अरबी में किया. अपनी इस किताब के दीबाचे में इब्न मुक़फ़्फ़ह ने जो कुछ लिखा है उसमें साफ़ बौद्ध धर्म का असर दिखाई देता है. मसलन वह लिखता है कि—

"और मैंने तजुर्बा किया है कि जिस वक़्त सालिक (योगी) समाधि (इबादत) में मशग़ूल होता है उस वक़्त एक क़िस्म की रूहानी ख़ुशी उस पर तारी हो जाती है. उस वक़्त वह बेफ़िक्र होता है, मुतमईन होता है, ख़्वाहिशात से परे होता है, ख़ुद पर ऐतबार रखता है. उसे किसी बात की फ़िक्र नहीं होती, वह दुनिया को छोड़ चुका होता है, लालच से दूर होता है, पाक होता है, आज़ाद होता है, उसे किसी बात का रंज नहीं हो सकता, वह हसद और जलन से ऊपर उठता है, वह पाक मोहब्बत से भरा होता है,...न वह किसी को कोई नुक़सान पहुंचाता है और न उसे कोई नुक़सान पहुंचा सकता है..."

اور اسے بودھ مندر کا خاص پروہت مقرر کردیا گیا۔† خلیفہ ہارون رشید کا وزیرِاعظم ابن خالد اِسی بودھ برمکی خاندان سے تھا. ابن الندیم لکھتا ہے کہ—"عربوں کی حکومت کے زمانے میں یحییٰ ابن خالد برمکی ہی وہ شخص تھا جس نے ہندستان کے ساتھ بہت گہرا تعلق قایم رکھا . اُس نے بڑی محبت اور عزت کے ساتھ ہندستان سے ہندو ویدیوں اور ودوانوں کو بلایا .‡ معلوم ہوتا ہے کہ برمکیوں میں یہ ایک رواج چلا آتا تھا کہ وے ہندستان میں تعلیم پانے کے لئے اپنے یہاں سے طالب علم بھیجا کرتے تھے . اِسی رواج کے مطابق اُنھوں نے اب مسلمان ہوجانے کے بعد بڑے بڑے ودوانوں کو بھارت کے مذہبوں کے بارے میں پوری پوری جانکاری حاصل کرنے کے لئے اِس ملک میں بھیجا اور ہندو پنڈتوں اور ویدیوں کو خلیفہ کے دربار میں بلوایا .

مسلمانوں میں خاصکر عباسی خلیفاؤں کے زمانے میں کافی دوراندیش ودوان ایسے تھے جن پر کم یا زیادہ بودھ دھرم کا براہراست اثر پڑا . اِیران کے ماگی مسلمان ہوجانے کے بعد بھی عام طور پر اپنے عقیدوں کے لحاظ سے آدھے بودھ تھے . ابن مقفعہ (سن 760ع)' جس نے 'کلیلہ و دمنہ' کا پہلوی سے عربی میں ترجمہ کیا اور جو بڑا ہوکر مسلمان ہوگیا' آزاد خیال ماگیوں اور مسلمانوں کی بہت اچھی مثال تھا . ابن مقفعہ لکھتا ہے کہ 'کلیلہ و دمنہ' کی اصلی کتاب ہندستان کی لکھی ہوئی تھی . سن 579-331ع کے قریب برزویاہ اِس کتاب کو ہندستان سے لایا اور اِیران میں اس نے اُس کا پہلوی میں ترجمہ کیا . ابن مقفعہ نے اِس کا ترجمہ پہلوی سے عربی میں کیا . اپنی اِس کتاب کے دیباچے میں ابن مقفعہ نے جو کچھ لکھا ہے اُس میں صاف بودھ دھرم کا اثر دکھائی دیتا ہے . مثلاً وہ لکھتا ہے کہ—

"اور میں نے تجربہ کیا ہے کہ جس وقت سالک (یوگی) سمادھی (عبادت) میں مشغول ہوتا ہے اُس وقت ایک قسم کی روحانی خوشی اُس پر طاری ہوجاتی ہے . اُس وقت وہ بےفکر ہوتا ہے' مطمئن ہوتا ہے' خواہشات سے پرے ہوتا ہے' خود پر اعتبار رکھتا ہے' اُسے کسی بات کی فکر نہیں ہوتی' وہ دنیا کو چھوڑ چکا ہوتا ہے' لالچ سے دور ہوتا ہے' پاک ہوتا ہے' اُسے کسی بات کا رنج نہیں ہوسکتا' وہ حسد اور جلن سے اوپر اُٹھتا ہے' وہ پاک محبت سے بھرا ہوتا ہے......نہ وہ کسی کو کوئی نقصان پہونچاتا ہے اور نہ اُسے کوئی نقصان پہونچا سکتا ہے..."

*—Kitabul Buldan, P. 324; Arab aur Hind ke Tallukat, pp. 117-18.
‡—Fihrist, p. 345.

[illegible] को एक ख्वाब दिखाई दिया था. इब्न मक़फ़्फ़ा ने उसके ख्वाब की ताबीर की है, यानी इसका मतलब समझाया है. इस ताबीर से ही उसके रहम से भरे और नेक ख्यालात की बहुत अच्छी जानकारी मिलती है. वह लिखता है—

"तुम्हें जानना चाहिये कि कपड़े की जो चादर तुम्हें ख्वाब में दिखाई दी थी वह असली ईश्वरी धर्म है और वे चार आदमी जो उसे चारों कोनों से खींच रहे थे उस धर्म को क़ायम रखने के लिये भेजे गये हैं." जिन चार मजहबों का इब्न मक़फ़्फ़ा ने ज़िक्र किया है वे मागी यानी ज़रथुस्त्री धर्म, यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, और इसलाम हैं. "इस तरह वह लोग अपने मजहब के क़ायम करने की कोशिश करते हैं और एक दूसरे से दूर अपनी अपनी तरफ़ के कोने अलग अलग खींचते हैं. इस तरह मजहब के नाम पर यह एक दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं." ❀

मशहूर अंधा शायर अबुल अला मआरी (973 ई० से 1058 ई० तक) पक्का बौद्ध बल्कि जैन था. जर्मन विद्वान वान क्रेमर ने उसकी बाबत लिखा है कि वह माज़ी, हाल और मुस्तक़बिल तीनों ज़माने के बड़े से बड़े नेक आलिमों में से था और उसका ज़बर्दस्त ग़ैर मामूली दिमाग़ उस वक़्त बहुत सी ऐसी बातों को दुनिया के सामने रख चुका था जो आम तौर पर आजकल की फ़र्ज़ी नई रोशनी की उपज समझी जाती हैं. § मआरी यह नहीं मानता था कि मुर्दे किसी दिन क़ब्रों से निकल कर खड़े हो जायेंगे. बच्चे पैदा करने के काम को आदमी के लिये वह गुनाह मानता था. फ़ना यानी अपनी अलग खुदी को मिटा देने को वह इन्सानी ज़िन्दगी की असली मंज़िल मानता था. वह ज़िन्दगी भर ग़ैर शादी शुदा रहा. वह यह नहीं मानता था कि मजहब ईश्वर से किसी बाहरी इलहाम के ज़रिये हासिल होता है बल्कि उसे आदमी के अपने अन्दर की उपज मानता था. वह लिखता है—

"हनीफ़ ठोकरें खा रहे हैं, ईसाई सब भटके हुए हैं, यहूदी चक्कर में हैं, मागी ग़लत रास्ते पर बढ़े जा रहे हैं, हम मिटने वाले आदमियों में दो ही खास तरह के आदमी हैं, एक समझदार बदमाश और दूसरे मजहबी बेवक़ूफ़"*

मआरी ने एक नज़्म में लिखा है—

"कोई चीज़ रहने वाली नहीं है. हर चीज़ मिटने वाली है. इसलाम भी मिटने वाला है. हज़रत मूसा आए. उन्होंने अपने मजहब का उपदेश दिया और चल बसे. उसके बाद

[illegible] دیا تھا۔ ابن مقفع نے اس کے خواب کی تعبیر کی ہے یعنی اس کا مطلب سمجھایا ہے۔ اس تعبیر سے ہی اس کے رحم سے بھرے اور نیک خیالات کی بہت اچھی جانکاری ملتی ہے۔ وہ لکھتا ہے—

"تمہیں جاننا چاہئے کہ کپڑے کی جو چادر تمہیں خواب میں دکھائی دی تھی وہ اصلی ایشوری دھرم ہے اور وے چار آدمی جو اسے چاروں کونوں سے کھینچ رہے تھے اس دھرم کو قایم رکھنے کے لئے بھیجے گئے ہیں۔" جن چار مذہبوں کا ابن مقفع نے ذکر کیا ہے وے ماگی یعنی زرتھوسٹری دھرم یہودی دھرم، عیسائی دھرم اور اسلام ہیں۔ "اس طرح یہ لوگ اپنے مذہب کے قایم کرنے کی کوشش کرتے ہیں اور ایک دوسرے سے دور اپنی اپنی طرف کے کونے الگ الگ کھینچتے ہیں۔ اس طرح مذہب کے نام پر یہ ایک دوسرے کے دشمن بن جاتے ہیں۔" ❀

مشہور اندھا شاعر ابوالعلیٰ معاری (773ع سے 8 10ع تک) پکا بودھ بلکہ جین تھا۔ جرمن ودوان وان کریمر نے اس کی بابت لکھا ہے کہ وہ ماضی، حال اور مستقبل تینوں زمانے کے بڑے سے بڑے نیک عالموں میں سے تھا اور اس کا زبردست غیر معمولی دماغ اسوقت بہت سے ایسی باتوں کو دنیا کے سامنے رکھ چکا تھا جو عام طور پر آج کل کی فرضی نئی روشنی کی اپج سمجھی جاتی ہیں۔ (§) معاری یہ نہیں مانتا تھا کہ مردے کسی دن قبروں سے نکل کر کھڑے ہو جائینگے۔ بچے پیدا کرنے کے کام کو آدمی کے لئے وہ گناہ مانتا تھا۔ فنا یعنی اپنی الگ خودی کے مٹادینے کو وہ انسانی زندگی کی اصلی منزل مانتا تھا۔ وہ زندگی بھر غیر شادی شدہ رہا۔ وہ یہ نہیں مانتا تھا کہ مذہب ایشور سے کسی باہری الہام کے ذریعے حاصل ہوتا ہے بلکہ اسے آدمی کے اپنے اندر کی اپج مانتا تھا۔ وہ لکھتا ہے—

"حنیف ٹھوکریں کھا رہے ہیں، عیسائی سب بھٹکے ہوئے ہیں، یہودی چکر میں ہیں، ماگی غلط راستے پر بڑھے جا رہے ہیں، ہم مٹنے والے آدمیوں میں دو ہی خاص طرح کے آدمی ہیں، ایک سمجھدار بدمعاش اور دوسرے مذہبی بیوقوف۔ (*)

معاری نے ایک نظم میں لکھا ہے—

"کوئی چیز رہنے والی نہیں ہے۔ ہر چیز مٹنے والی ہے۔ اسلام بھی مٹنے والا ہے۔ حضرت موسیٰ آئے۔ انہوں نے اپنے مذہب کا اپدیش دیا اور چل بسے۔ اس کے بعد

❀—Noeldeke, quoted in the appendix III. "The Iranian Influence on Muslim Literature, pp. 105—133.

§—Nicholson—"A Literary History of the Arabs," p. 316.

*—Ibid. pp. 316.

[illegible] उसने [illegible] एक और [illegible] जायेगा जो उसे हटा कर उसकी जगह ले लेगा, उससे ज़्यादा चमकेगा. इस तरह इन्सानी नसल कल और आज के बीच में हिचकोले खा रही है...यह ज़मीन मिटने वाली है, जिस तरह इसका शुरू हुआ उसी तरह इसका आख़ीर होगा. हर चीज़ पैदा होती है और फ़ना होती है. वक़्त की रवानी बराबर नदी की तरह जारी है. यह रवानी हर वक़्त किसी न किसी नई चीज़ को सामने लाती रहती है.

"पानी के जानवरों को खाकर अपना भोंडापन मत ज़ाहिर करो. जानवरों को मारकर उन्हें अपना खाना मत बनाओ. अंडे मत खाओ...हिंसा सब से बड़ा गुनाह है...इन सब गुनाहों से मैंने अपने हाथ धो डाले हैं...ओह ! काश कि बाल पकने से पहले मैंने इन चीज़ों को समझ लिया होता......*

जिस तरह के फ़िक़रे ऊपर नक़ल किये गये हैं उनसे वान क्रेमर की राय है कि बौद्ध धर्म का असर साफ़ साफ़ ज़ाहिर होता है † मआरी अपने हाथ से रंगा हुआ ऊन का कपड़ा और लकड़ी की खड़ाऊँ पहनता था. निकलसन का ख़्याल है कि यह उसने हिन्दुस्तान के जैनों से सीखा होगा. लेकिन जैनियों से उसके मिलने का मुमकिन होना कम मालूम होता है. ‡ ख़्याल होता है कि मआरी और उस जैसे आज़ाद ख़्याल लोगों के रहन सहन और ख़्यालात की उसके वक़्त के लोग बुराई ही करते रहे होंगे. लेकिन मआरी की यह हालत नहीं थी. मआरी मआरा शहर का रहने वाला था. सन् 1047 ई० के क़रीब नासिर ख़ुसरो मआरा गया. वह लिखता है कि अबुल अला मआरी अभी उसी शहर में रहता है. वह शहर के लोगों में सरदार और मालदार है. इस शहर के रहने वाले उसे अपना गुरु समझकर उसकी इज़्ज़त करते हैं. वह फ़क़ीर की तरह रहता है और ऊन के कपड़े पहनता है. कोई उससे धन माँगे तो वह कभी किसी को इन्कार नहीं करता...शाम (सीरिया) पच्छिम और इराक़ के विद्वान सब शायरी और साहित्य में उसे अपने से बढ़कर मानते हैं.

सालेह बिन अब्दुल क़ुद्दूस जो सन् 783 ई० में सूली पर चढ़ाया गया, अबुल अताहिया (829 ई०) जरीर-इब्न-हज़्म, हम्माद अजरद, यूनान-बिन-हारून, अली-बिन-ख़लील और बश्शार इन सब पर कम या ज़्यादा, हिन्दुस्तान के मज़हब का असर पड़ा और इन लोगों ने मुख़्तलिफ़ विचार धाराओं की बुनियादें डालीं. अबुल अताहिया ने

[illegible] میں آئی۔ پھر حضرت محمد [illegible] کے اپنے وقت کی نماز چلتی۔ کچھ دنوں بعد ایک اور نیا مذہب آئیگا جو اِسے ہٹا کر اِس کی جگہ لے لیگا' اِس سے زیادہ چمکیگا۔ اِس طرح انسانی نسل کل اور آج کے بیچ میں ھچکولے کھا رہی ہے... یہ زمین مٹنے والی ہے' جس طرح اِس کا شروع ہوا اُسی طرح اِس کا آخیر ہوگا۔ ہر چیز پیدا ہوتی ہے اور فنا ہوتی ہے۔ وقت کی روانی برابر ندی کی طرح جاری ہے۔ یہ روانی ہر وقت کسی نہ کسی نئی چیز کو سامنے لاتی رہتی ہے۔

"پانی کے جانوروں کو کھا کر اپنا بھونڈاپن مت ظاہر کرو۔ جانوروں کو مار کر اُنہیں اپنا کھانا مت بناؤ۔ انڈے مت کھاؤ...ھنسا سب سے بڑا گناہ ہے...اِن سب گناھوں سے میں نے اپنے ہاتھ دھو ڈالے ھیں۔ اوہ ! کاش کہ بال پکنے سے پہلے میں نے اِن چیزوں کو سمجھ لیا ہوتا......"*

جس طرح کے فقرے اُوپر نقل کئے گئے ھیں اُن سے وان کریمر کی رائے ہے کہ بودھ دھرم کا اثر صاف صاف ظاہر ہوتا ہے۔ † معاری اپنے ہاتھ سے رنگا ہوا اُون کا کپڑا اور لکڑی کی کھڑاؤں پہنتا تھا۔ نکلسن کا خیال ہے کہ یہ اُس نے ھندستان کے جینوں سے سیکھا ہوگا۔ لیکن جینیوں سے اُس کے ملنے کا ممکن ہونا کم معلوم ہوتا ہے۔ ‡ خیال ہوتا ہے کہ معاری اور اُس جیسے آزاد خیال لوگوں کے رھن سہن اور خیالات کی اُس کے وقت کے لوگ برائی ہی کرتے رہے ہونگے۔ لیکن معاری کی یہ حالت نہیں تھی۔ معاری معارہ شہر کا رہنے والا تھا۔ سن 1047ع کے قریب ناصر خسرو معارہ گیا۔ وہ لکھتا ہے کہ ابوالعلا معاری اِندھا اُسی شہر میں رہتا ہے۔ وہ شہر کے لوگوں میں سردار اور مالدار ہے۔ اِس شہر کے رہنے والے اُسے اپنا گرو سمجھ کر اُس کی عزت کرتے ھیں۔ وہ فقیر کی طرح رہتا ہے اور اُون کے کپڑے پہنتا ہے۔ کوئی اُس سے دھن مانگے تو وہ کبھی کسی کو اِنکار نہیں کرتا...شام (سیریا) پچھم اور عراق کے ودوان سب شاعری اور ساہتیہ میں اُسے اپنے سے بڑھکر مانتے ھیں۔

صالح بن عبدالقدوس جو سن 783ع میں سولی پر چڑھایا گیا' عبدل عطاھیہ (829ع) جریر ابن حزم' حماد اجرد' یونان بن ہارون' علی بن خلیل اور بشار اِن سب پر کم یا زیادہ ھندستان کے مذھب کا اثر پڑا اور اِن لوگوں نے مختلف وچار دھاراؤں کی بنیاد ڈالیں۔ عبدل عطاھیہ نے

*—Islamic Civilization, Vol. II pp. 244-46.
†—Encyclopaedia of Religion and Ethics vol-II pp. 100—01.
‡—Siyahat Namah-i-Nasir Khusro (Persia), pp. 26-27.

लिखा है—"अगर तुम आदमियों में सब से बड़े आदमी को देखना चाहते हो तो उस बादशाह को देखो जो फ़क़ीरों के से कपड़े पहन कर रहता है. आदमियों में वही सब से ज़्यादा पाक है." यह शब्द पुराने वक़्त के एक ऐसे ऊँचे मेयार की यादगार और उसकी गूँज हैं जिसे लोग बहुत दिनों से भूल चुके थे. * कवि आबान ने अपने ज़माने के कुछ ख़ास ख़ास सूफ़ी मुसलमानों का ज़िक्र किया है. इन लोगों के अदबी ख़्यालात से ऐसा मालूम होता है कि वे द्वैतवादी थे और उन पर मानी के ख़्यालात का असर था. लेकिन जाहिज़ ने जिस तरह इन लोगों के ख़्यालात को बयान किया है इससे मालूम होता है कि इन लोगों के ख़्यालात मानी के उसूलों के मुक़ाबिले में बौद्ध धर्म से ज़्यादह मिलते थे.——

"क़लन्दरी यानी परिव्राजकता का वह यह मतलब लेते थे कि उनमें से कोई दो रात एक घर में न रहे. इनमें जो लोग क़लन्दर हैं वह हमेशा दो-दो करके चलते हैं और चार क़ायदों को मानते हैं—फ़क़ीरी, पाकीज़गी, सच्चाई और ग़रीबी."†

अपने उसूल को ज़ाहिर करने के लिये इन सूफ़ियों ने जो क़िस्सा बयान किया वह साफ़ साफ़ बौद्ध क़िस्सा है. वे कहते हैं कि इनमें से दो फ़क़ीर एक बार इतने पीटे गये कि क़रीब क़रीब बेजान हो गये. बात यह थी कि उन पर कुछ जवाहिरात की चोरी का शक किया गया था. इन जवाहिरातों को उनकी आँखों के सामने एक शुतरमुर्ग़ निगल गया था. उस पर शक किया गया. उन्होंने उस परिन्दे के साथ दग़ा करना, जिससे उसे तकलीफ़ पहुंचाई जावे, यानी उसे क़तल किया जावे, ठीक नहीं समझा और ख़ुद मार खाकर अपनी जान ख़तरे में डाली.

——

کہا ہے—"اگر تم آدمیوں میں سب سے بڑے آدمی کو دیکھنا چاہتے ہو تو اُس بادشاہ کو دیکھو جو فقیروں کے سے کپڑے پہن کر رہتا ہے. آدمیوں میں وہی سب سے زیادہ پاک ہے." یہ لفظ پرانے وقت کے ایک ایسے اونچے معیار کی یادگار اور اُس کی گونج ہیں جسے لوگ بہت دنوں سے بھول چکے تھے. * کوی آبان نے اپنے زمانے کے کچھ خاص خاص صوفی مسلمانوں کا ذکر کیا ہے. اِن لوگوں کے ادبی خیالات سے ایسا معلوم ہوتا ہے کہ وے دویت وادی تھے اور اُن پر مانی کے خیالات کا اثر تھا. لیکن جاحظ نے جس طرح اِن لوگوں کے خیالات کو بیان کیا ہے اُس سے معلوم ہوتا ہے کہ اِن لوگوں کے خیالات مانی کے اُصولوں کے مقابلے میں بودھ دھرم سے زیادہ ملتے تھے—

"قلندری یعنی پریوراجکتا کا وہ یہ مطلب لیتے تھے کہ اِن میں سے کوئی دو رات ایک گھر میں نہ رہے. اِن میں جو لوگ قلندر ہیں وہ ہمیشہ دو دو کر کے چلتے ہیں اور چار قاعدوں کو مانتے ہیں—فقیری، پاکیزگی، سچائی اور غریبی."‡

اپنے اُصول کو ظاہر کرنے کے لئے اِن صوفیوں نے جو قصہ بیان کیا وہ صاف صاف بودھ قصہ ہے. وے کہتے ہیں کہ اِن میں سے دو فقیر ایک بار اتنے پیٹے گئے کہ قریب قریب بے جان ہوگئے. بات یہ تھی کہ اُن پر کچھ جواہرات کی چوری کا شک کیا گیا تھا. اِن جواہراتوں کو اِن کی آنکھوں کے سامنے ایک شترمرغ نگل گیا تھا. اُن پر شک کیا گیا. اُنہوں نے اِس پرندے کے ساتھ دغا کرنا، جس سے اُسے تکلیف پہونچائی جاوے یعنی اُسے قتل کیا جاوے، ٹھیک نہیں سمجھا اور خود مار کھا کر اپنی جان خطرے میں ڈالی.

——

*—Goldziher, Transaction of the Ninth Congress of the Orientalists, Vol. II p. 114

†—Encyclopaedia of Religion and Ethics, Vol II p. 189.

चीन में बौद्ध धर्म

چین میں بودھ دھرم

प्रोफ़ेसर तान-युन-शान

दो हज़ार बरसों से ज़्यादा हुए जब बौद्ध धर्म ने भारत में जन्म लिया था और क़रीब दो हज़ार बरस हुए जब बौद्ध धर्म पहली बार चीन में पहुंचा था. बौद्ध धर्म के चीन पहुँचने की ठीक तारीख़ बता सकना बहुत मुश्किल है. फिर भी चीनी तवारीख़ के बयानात के मुताबिक़ बौद्ध धर्म पहली बार हान राज घराने के मिनि-ती राजा के राज के ज़माने के दसवें साल में यानी सन् 67 ई० में चीन पहुँचा. लेकिन दूसरी किताबों की बिना पर ऐसा मालूम होता है कि बौद्ध धर्म चिन राज घराने के भी पहले यानी सन् 246-207 ई० पेश्तर चीन पहुँच चुका था. मिसाल के तौर पर पुराने चीनी ग्रंथ लेह-त्सु में मुन्दर्जा ज़ैल बयान आता है—

"कनफ़्यूसिअस ने कहा है 'मैंने पच्छिम के एक संत की चर्चा सुनी है, जिसने बग़ैर हुकूमत के बन्दोबस्त क़ायम किया है, जिसने बग़ैर उपदेशों के लोगों का ऐतबार हासिल किया और बग़ैर प्रचार के लोगों को सच्चा अमल सिखाया. वह सन्त इतना बड़ा और शानदार था कि लफ़्ज़ों के सहारे उसकी तारीफ़ नहीं की जा सकती."

जहाँ तक मैं जानता हूँ कनफ़्यूसिअस बुद्ध के ज़माने में ही मौजूद थे और पच्छिम से उनका मतलब बेशक भारत से था. चीन में यह पुराना रिवाज है कि वहां भारत को "पच्छिमी राज" या "मग़रिबी बहिश्त" और चीन को "बस्ती राज" या "शानदार मुल्क" कहा जाता था. जब कनफ़्यूसिअस ने पच्छिमी राज के एक सन्त की तारीफ़ की तो इसमें कोई शक नहीं कि इससे उनकी मुराद बुद्ध, उनकी तालीम और भारती फ़लसफ़े से थी. एक दूसरी चीनी किताब "पुरातन विवरण (बयानात माज़ी)" नाम की है. उसमें एक जगह यह ज़िक्र आता है कि चिन सूबे में चेंग राजा के चौथे साल में पच्छिमी राज के 18 भिक्षु, बौद्ध ग्रंथ और बुद्ध की मूर्ति लेकर वहाँ पहली बार आये. उन भिक्षुओं के नेता सिह-ली-फ़ांग थे. चिन राज के चेंग सम्राट के चौथे साल में यानी सन् 268 ई० पेश्तर का यह वाक़िया है. उस वक़्त तमाम चीन चेंग राजा के क़ब्ज़े में था. इसी तरह के बहुत से बयानात अलग अलग किताबों में भरे पड़े हैं. उन सब का यहां बयान कर सकना नामुमकिन है. सवाल उठता है कि जब बुद्ध खुद भारत में अपनी मज़हबी तालीम का

پروفیسر تان - ین - شان

دو ہزار برسوں سے زیادہ ہوئے جب بودھ دھرم نے بھارت
ں جنم لیا تھا اور قریب دو ہزار برس ہوئے جب بودھ دھرم
ی بار چین میں پہونچا تھا ۔ بودھ دھرم کے چین پہونچنے
ٹھیک تاریخ بتا سکنا بہت مشکل ہے ۔ پھر بھی چینی
ریخ کے بیانات کے مطابق بودھ دھرم پہلی بار ھان راج گھرانے
من - تی راجا کے راج کے زمانے کے دسویں سال میں یعنی
ن 67ع میں چین پہونچا ۔ لیکن دوسری کتابوں کی بنا پر
سا معلوم ہوتا ہے کہ بودھ دھرم چن راج گھرانے کے بھی پہلے
ی سن 246-207 عیسوی پیشتر چین پہونچ چکا تھا ۔
ل کے طور پر پرانے چینی گرنتھ لیہتسو میں مندرجہ ذیل
ن آتا ہے—

"کنفیوسیس نے کہا ہے 'میں نے پچھم کے ایک سنت کی
رچا سنی ہے' جس نے بغیر حکومت کے بندوبست قایم کیا ہے'
س نے بغیر اُپدیشوں کے لوگوں کا اعتبار حاصل کیا اور بغیر
چار کے لوگوں کو سچا عمل سکھایا ۔ وہ سنت اِتنا بڑا اور
ندار تھا کہ لفظوں کے سہارے اُس کی تعریف نہیں کی
سکتی ۔"

جہاں تک میں جانتا ہوں کنفیوسیس بدھ کے زمانے میں
ی موجود تھے اور پچھم سے ان کا مطلب بےشک بھارت سے تھا۔
ن میں یہ پرانا رواج ہے کہ وھاں بھارت کو "پچھمی راج"
"مغربی بہشت" اور چین کو "وسطی راج" یا "شاندار
ک" کہا جاتا تھا ۔ جب کنفیوسیس نے پچھمی راج کے ایک
نت کی تعریف کی تو اِس میں کوئی شک نہیں کہ اِس سے
ی کی مراد بدھ' اُن کی تعلیم اور بھارتی فلسفہ سے تھی ۔
ک دوسری چینی کتاب "پراتن وورن (بیانات ماضی)"
م کی ہے ۔ اُس میں ایک جگہ یہ ذکر آتا ہے کہ چین صوبہ
ں چینگ راجا کے چوتھے سال میں پچھمی راج کے 18
کشو بودھ گرنتھ اور بدھ کی مورتی لیکر وھاں پہلی بار آئے ۔
ن بھکشوں کے نیتا سہ - لی - فانگ تھے ۔ چن راج کے
ینگ سمراٹ کے چوتھے سال میں یعنی سن 268ع پیشتر کا
واقعہ ہے ۔ اُس وقت تمام چین چینگ راجا کے قبضے میں
ا ۔ اِسی طرح کے بہت سے بیانات الگ الگ کتابوں میں
رے پڑے ہیں ۔ اُن سب کا یہاں بیان کرسکنا ناممکن ہے ۔
وال اُٹھتا ہے کہ جب بدھ خود بھارت میں اپنی مذہبی تعلیم کا

प्रचार कर रहे थे, इस वक़्त से ही चीन ने उनके बारे में सुना होगा और हान राज घराने के 300 साल पहले बौद्ध धर्म चीन में पहुंच चुका था. लेकिन चीनी तवारीख़ हान राज घराने के वक़्त से ही बौद्ध धर्म के चीन पहुँचने का बयान देती है. चीनी तवारीख़ में उसके पहले बौद्ध धर्म का कहीं ज़िक्र नहीं मिलता. शायद हान राज घराने का मिन-ति राजा ही पहला चीनी राजा था जिसने चीनी राजधानी में पहली बार बहैसियत राजा के बौद्ध धर्म का इस्तक़बाल किया. हालांकि उसके पहले चीन में बौद्ध धर्म पहुँच चुका था फिर भी किसी चीनी राजा ने उसे क़ुबूल नहीं किया था. इसलिये सरकारी चीनी तवारीख़ में इस से पहले बौद्ध धर्म का कोई सरकारी बयान नहीं मिलता. अगर कोई ऐसा बयान भी किया गया होगा तो भी क़दीमी रफ़्तार को न छोड़ने वाले तवारीख़ के मुसन्निफ़ों ने उसे नामुनासिब समझा होगा और बाद में तवारीख़ी बयानात से उसे निकाल दिया होगा. कुछ लोगों का कहना है कि चीनी तवारीख़ के अलावा और जिन किताबों में बौद्ध धर्म का बयान आता है वह ऐतबार के क़ाबिल नहीं हैं. लेकिन मुझे ऐसा मालूम होता है कि चाहे हम उन पर पूरी तरह से ऐतबार न करें, लेकिन कुछ हिस्सों तक तो हमें उनको सच मानना ही पड़ेगा. बुद्ध के दौराने ज़िन्दगी में भारती और चीनी फ़लसफ़ों ने काफ़ी तरक़्क़ी कर ली थी. बुद्ध और कनफ़्यूसियस दोनों आला गुरु एक ही वक़्त में एक "पच्छिम" में और दूसरा "पूरब" में अपना प्रचार कर रहे थे. दोनों सूरज और चन्द्रमा की तरह सारी इन्सानी क़ौम को रौशन कर रहे थे. यह भी मुमकिन है कि दोनों को एक दूसरे का हाल मालूम हो. उस ज़माने में मुमकिन है दोनों फ़लसफ़ों का अदल बदल होता होगा. बुद्ध भी अपने प्रचार के सिलसिले में अक्सर "पूरब में बौद्धों के मुल्क" का ज़िक्र किया करते थे. इससे उनका मतलब सिवाय चीन के किसी दूसरे मुल्क से नहीं हो सकता; लेकिन यह तवारीख़ी खोज की चीज़ है और बग़ैर पूरी खोज हुए बारीकियों में जाना बेकार है.

यहाँ पर यह बताना नामुनासिब न होगा कि शहनशाह हान-मिन-ति ने बौद्ध धर्म का अपने राज में कैसा इस्तक़बाल किया. उसकी भी एक अजीब कहानी है. "हान-फ़ा-येन-चुआन" (हान राज घराने के वक़्त बौद्ध धर्म की तफ़सील) नामक किताब में लिखा है कि शहनशाह हान-मिन-ति ने अपनी हुकूमत के तीसरे साल में यानी 60 ई० में रात को एक बार यह ख़्वाब देखा कि 16 फ़ुट ऊँचा एक सुनहला देव, जिसके सर में रोशनी चमकती है, राज महल के ऊपर आ रहा है. राजा ने इस अजीब ख़्वाब का कोई मतलब नहीं समझा. उसने अपने अक़्लमन्द वज़ीरों को

چار کررہے تھے، اس وقت سے ہی چین نے اُن کے بارے
ن سنا ہوگا اور ہان راج گھرانے کے 300 سال پہلے بودھ دھرم
ین میں پہونچ چکا تھا. لیکن چینی تواریخ ہان راج گھرانے
وقت سے ہی بودھ دھرم کے چین پہونچنے کا بیان دیتی
. چینی تواریخ میں اُس کے پہلے بودھ دھرم کا
یں ذکر نہیں ملتا. شاید ہان راج گھرانے کا من - تی راجا
، پہلا چینی راجا تھا جس نے چینی راجدھانی میں پہلی
بحیثیت راجا کے بودھ دھرم کا اِستقبال کیا. حالانکہ اُس کے
ے چین میں بودھ دھرم پہونچ چکا تھا پھر بھی کسی چینی
جا نے اُسے قبول نہیں کیا تھا. اِس لئے سرکاری چینی تواریخ
ن اِس سے پہلے بودھ دھرم کا کوئی سرکاری بیان نہیں ملتا.
کوئی ایسا بیان بھی کیا گیا ہوگا تو بھی قدیمی رفتار کو نہ
وڑنے والے تواریخ کے مصنفوں نے اُسے نامناسب سمجھا ہوگا اور
ں میں تواریخی بیانات سے اُسے نکال دیا ہوگا. کچھ لوگوں کا
نا ہے کہ چینی تواریخ کے علاوہ اور جن کتابوں میں بودھ دھرم
بیان آتا ہے وہ اعتبار کے قابل نہیں ہیں. لیکن مجھے ایسا
لوم ہوتا ہے کہ چاہے ہم اُن پر پوری طرح سے اعتبار نہ کریں،
ن کچھ حصوں تک تو ہمیں اُن کو سچ ماننا ہی پڑیگا.
ھ کے دوران زندگی میں بھارتی اور چینی فلسفوں نے کافی
قی کرلی تھی. بدھ اور کنفیوسیس دونوں اعلیٰ گرو ایک ہی
ت میں ایک "پچھم" میں اور دوسرا "پورب" میں اپنا
چار کررہے تھے. دونوں سورج اور چندرما کی طرح ساری
سانی قوم کو روشن کررہے تھے. یہ بھی ممکن ہے کہ دونوں کو
ک دوسرے کا حال معلوم ہو. اُس زمانے میں ممکن ہے
نوں فلسفوں کا ادل بدل ہوتا ہوگا. بدھ بھی اپنے پرچار کے
سلے میں اکثر "پورب میں بودھوں کے ملک" کا ذکر کیا
تے تھے. اِس سے اُن کا مطلب سوائے چین کے کسی دوسرے
ک سے نہیں ہوسکتا؛ لیکن یہ تواریخی کھوج کی چیز ہے اور
ر پوری کھوج ہوئے باریکیوں جانا بیکار ہے.

یہاں پر یہ بتانا نامناسب نہ ہوگا کہ شہنشاہ ہان - من -
، - نے بودھ دھرم کا اپنے راج میں کیسا اِستقبال کیا. اِس
، بھی ایک عجیب کہانی ہے. "ہان - یا - ین چوان"
ہان راج گھرانے کے وقت بودھ دھرم کی تفصیل) نامک
اب میں لکھا ہے کہ شہنشاہ ہان - من - تی - نے اپنی
کومت کے تیسرے سال میں یعنی سن 60ع میں
ت کو ایکبار یہ خواب دیکھا کہ 16 فٹ اُونچا ایک
ہلا دیو، جس کے سر میں روشنی چمکتی ہے، راج
حل کے اُوپر آرہا ہے. راجا نے اِس عجیب خواب کا
ئی مطلب نہیں سمجھا. اُس نے اپنے عقلمند وزیروں کو

को अपने ख़्वाब की बात सुनाकर उनसे इसका मतलब पूछा. उसके वज़ीरों में एक फु-यि था. उसने शहनशाह से कहा कि इस ख़्वाब की यह ताबीर है कि तिएन-चु यानी भारत में बुद्ध का अवतार हुआ है. सम्राट ने फ़ौरन सिपहसालार त्साई-यिन और दीवान वांग-त्सुन को एक दस्ते के साथ, बौद्ध धर्म का इस्तक़बाल करने के लिये त्येन-चु यानी भारत भेजा. त्साई-यिन अपने दस्ते के साथ सन् 65 ई० में खोतान पहुँचा. वहाँ क़िस्मत से अचानक उनकी काश्यप मातंग और गोभरण से मुलाक़ात हो गई. यह दोनों भारती संत बौद्ध ग्रंथों और बुद्ध की मूर्तियाँ लेकर "पूर्वी देश" की तरफ़ जा रहे थे. त्साई-यिन मय अपने दस्ते के उन लोगों के साथ वापस चीन लौट आया. यह लोग चीनी राजधानी लो-यांग शहर में शहनशाह मिन-ति के दसवें साल में पहुँचे. चूँकि बौद्ध ग्रंथ और बुद्ध की मूर्तियाँ सफ़ेद रंग के घोड़ों पर लदी हुई थीं इसलिये शहनशाह ने उनके लिये एक ख़ास मन्दिर बनवाकर उसका नाम "पे-मा-स्जु" यानी सफ़ेद घोड़ों का मन्दिर रक्खा. इन बौद्ध ग्रंथों और मूर्तियों को उसी मन्दिर में रक्खा गया. चीन का सब से पहला बौद्ध मन्दिर यही है और अब भी वस्त चीन में होनान नामी सूबे के लो-यंग शहर के बाहर यह मन्दिर अजीब शानो शौकत के साथ खड़ा है. इससे आसानी से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि शाही देख भाल में बौद्ध धर्म का उस वक़्त चीन में कितना बड़ा इस्तक़बाल हुआ होगा ? चीनी जनता में हान-मिन-ति शहनशाह के बौद्ध धर्म के इस्तक़बाल की यह कहानी दो हज़ार साल से मशहूर है. इस कहानी से यह नतीजा निकल सकता है कि हान-मिन-ति के राज के ज़माने के बहुत पहले से भारती और चीनी फ़लसफ़ों का आपसी लेन देन होता रहा होगा और बौद्ध धर्म का चीनी जनता में प्रचार होगा. अगर यह नहीं था तो शहनशाह कैसे अचानक ऐसा ख़्वाब देख सकता था ? वज़ीर कैसे उसे बुद्ध का नाम बता सकता था ? शहनशाह कैसे अपने सिपहसालार और दीवान को बौद्ध धर्म की खोज करने के लिये भेज सकता था ? और यह कैसे मुमकिन था कि मातंग और गोभरण रास्ते में उनको चीन आते हुए मिल जाते ? यह सारे वजूहात इतने साफ़ हैं कि इनके लिये किसी दलील की ज़रूरत नहीं.

काश्यप मातंग और गोभरण सफ़ेद घोड़ों के मन्दिर में रहकर बौद्ध धर्म का प्रचार करते रहे. साथ ही साथ उन्होंने कई बौद्ध ग्रंथों का चीनी ज़बान में तर्जुमा किया. उनके तर्जुमा किये हुए ग्रंथों में सब में ख़ास "42 अध्यायों (बाबों) वाला धर्म ग्रंथ है. यह धर्म ग्रन्थ चीनी स्वभाव के बिल्कुल मुताबिक़ है और तब से लेकर अब तक चीनी जनता बराबर उसका मुताला करती है. लेकिन यह कहना

کو اپنے خواب کی بات سناکر اُن سے اِس کا مطلب پوچھا. اُس کے وزیروں میں ایک فو - اِی - تھا . اُس نے شہنشاہ سے کہا کہ اِس خواب کی یہ تعبیر ہے کہ تئین - چو یعنی بھارت میں بدھ کا اَوتار ہوا ہے . سمراٹ نے فوراً سپہ سالار تسائی - ین اور دیوان وانگ - تسون کو ایک دستے کے ساتھ' بودھ دھرم کا اِستقبال کرنے کے لئے تئین - چو یعنی بھارت بھیجا . تسائی - ین اپنے دستے کے ساتھ سن 65ع میں ختن پہونچا . وھاں قسمت سے اچانک اُن کی کاشیپ ماتنگ اور گوبھرن سے ملاقات ھوگئی . یہ دونوں بھارتی سنت بودھ گرنتھوں اور بدھ کی مورتیاں لیکر "پوربی دیش" کی طرف جارھے تھے . تسائی - ین مع اپنے دستے کے ان لوگوں کے ساتھ واپس چین لوٹ آیا . یہ لوگ چینی راجدھانی لو - یانگ شہر میں شہنشاہ من - تی کے راج کے دسویں سال میں پہونچے . چونکہ بودھ گرنتھ اور بدھ کی مورتیاں سفید رنگ کے گھوڑوں پر لدی ھوئی تھیں اِس لئے شہنشاہ نے اُن کے لئے ایک خاص مندر بنواکر اُس کا نام "پے - ما - سجو" یعنی سفید گھوڑوں کا مندر رکھا . اُن بودھ گرنتھوں اور مورتیوں کو اُسی مندر میں رکھا گیا . چین کا سب سے پہلا بودھ مندر یہی ہے اور اب بھی وسط چین میں ھونان نامی صوبے کے لو - ینگ شہر کے باھر یہ مندر عجیب شان و شوکت کے ساتھ کھڑا ھے . اِس سے آسانی سے اندازہ کیا جاسکتا ھے کہ شاھی دیکھ بھال میں بودھ دھرم کا اُس وقت چین میں کتنا بڑا اِستقبال ھوا ھوگا ؟ چینی جنتا میں ھان - من - تی شہنشاہ کے بودھ دھرم کے اِستقبال کی یہ کہانی دو ھزار سال سے مشہور ھے . اِس کہانی سے یہ نتیجہ نکل سکتا ھے کہ ھان - من - تی کے راج کے زمانے کے بہت پہلے سے بھارتی اور چینی فلسفوں کا آپسی لین دین ھوتا رھا ھوگا اور بودھ دھرم کا چینی جنتا میں پرچار ھوگا. اگر یہ نہیں تھا تو شہنشاہ کیسے اچانک ایسا خواب دیکھ سکتا تھا ؟ وزیر کیسے اُسے بدھ کا نام بتا سکتا تھا ؟ شہنشاہ کیسے اپنے سپہ سالار اور دیوان کو بودھ دھرم کی کھوج کرنے کے لئے بھیج سکتا تھا ؟ اور یہ کیسے ممکن تھا کہ ماتنگ اور گوبھرن راستے میں اُن کو چین آتے ھوئے مل جاتے ؟ یہ سارے وجوھات اِتنے صاف ھیں کہ اِن کے لئے کسی دلیل کی ضرورت نہیں .

کاشیپ ماتنگ اور گوبھرن سفید گھوڑوں کے مندر میں رھکر بودھ دھرم کا پرچار کرتے رھے . ساتھ ھی ساتھ اُنھوں نے کئی بودھ گرنتھوں کا چینی زبان میں ترجمہ کیا . اُن کے ترجمہ کئے ھوئے گرنتھوں میں سب میں خاص "42 ادھیاؤں (بابوں) والا دھرم گرنتھ ھے." یہ دھرم گرنتھ چینی سوبھاؤ کے بالکل مطابق ھے اور تب سے لیکر اب تک چینی جنتا برابر اُس کا مطالعہ کرتی ھے . لیکن یہ کہنا

ज़्यादा मुनासिब होगा कि यह "42 अध्यायों वाला धर्म ग्रंथ" एक तरह का निचोड़ है. यह धर्म ग्रंथ किसी एक किताब का तर्जुमा नहीं है बल्कि कई बौद्ध किताबों के ख़याल उसमें शामिल किये गये हैं; ऐसे ख़याल जो मनोवैज्ञानिक नज़रिये से चीनी जनता के मुताबिक़ थे. पुराने चीनी धर्म ग्रंथों के साथ इस ग्रंथ का पूरा मेल था. पुराने चीनी ग्रन्थ जैसे "माता पिता की भक्ति", "चार पुस्तकें" और "लाओ-त्ज़ु" और यह "42 अध्यायों वाला ग्रंथ" एक ही तरह की तालीमों से भरे हैं. अगर इस बौद्ध ग्रंथ में से "बुद्ध ने कहा," "हे भिक्खुओ" जैसे अल्फ़ाज़ निकाल दिये जायें तो पढ़ने वाले मुश्किल से उसे बौद्ध धर्म का कोई ग्रंथ समझेंगे. संकलन के अलावा मातंग और गोभरण ने और दूसरे तर्जुमे भी किये थे कि जिनका इस वक़्त कोई पता नहीं चलता. इसके दसियों साल बाद पार्थिया के शाहज़ादे इन्कशाओ शहिनशाह हान-हुआन-ति (148 ई०) के वक़्त में चीन आये. इन्कशाओ के बाद ही शक हिन्द के मशहूर भिक्खु लोकरक्ष भी चीन पहुँचे. इन दोनों बौद्ध सन्तों ने, जो बौद्ध धर्म के अच्छे जानकार थे और बहुत बड़े आलिम थे, चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार किया और बौद्ध ग्रंथों का चीनी ज़बान में तर्जुमा करने का काम शुरू किया. इन्कशाओ ने "लो-यंग" में 20 साल से ज़्यादा बौद्ध धर्म की किताबों का चीनी ज़बान में तर्जुमा किया. इन अनमोल ग्रंथों के पढ़ने के बाद चीनियों ने बौद्ध अदब की गहराई और धर्म की असलियत को ठीक ठीक समझना शुरू किया. इसके बाद भारत से कई बौद्ध सन्त और आलिम चीन आये और उन्होंने चीन में बौद्ध धर्म का प्रचार किया. उनमें ज़्यादा मशहूर यह हैं—बुद्ध भद्र, धर्म रक्ष, कुमार जीव, बोधी धर्म, शुभाकर, वज्रबोधी और अमोघ इन बौद्ध सन्तों और आलिमों के कामों और उनकी कामयाबी का इस छोटे से मज़मून में दिखला सकना नामुमकिन है.

कई बड़े बौद्ध भिक्खु रास्ते की सैकड़ों मुसीबतें उठाकर भारत से चीन पहुँच रहे थे. उन्हें देख देखकर चीनी भिक्खुओं में बौद्ध धर्म की जन्मभूमि भारत जाने की ज़बरदस्त ख़्वाहिश पैदा हुई. सफ़र की तमाम मुसीबतों का सामना करने की उनमें हिम्मत आई. ऐसे चीनी भिक्खु जो भारत पहुँचे उनमें सबमें ख़ास सिन राज घराने के वक़्त का चीनी बौद्ध सैयाह फाहियान है. फ़ाहियान 5वीं सदी ईसवी के शुरू में वस्त ऐशिया होते हुए भारत पहुँचा. दसियों रजवाड़ों में 15 साल बिताकर वह बौद्ध ग्रंथों का ख़ज़ाना लेकर चीन वापस पहुँचा. 7वीं सदी के 'तांग' राजघराने के वक़्त में एक दूसरा चीनी भिक्खु ह्वेन-त्सांग वस्त एशिया होते हुए भारत पहुँचा. ह्वेन-त्सांग ने 17 वर्ष की मीआद में सैकड़ों राजधानियों का सफ़र किया और

زیادہ مناسب ہوگا کہ یہ "42 ادھیاؤں والا دھرم گرنتھ" ایک طرح کا نچوڑ ہے۔ یہ دھرم گرنتھ کسی ایک کتاب کا ترجمہ نہیں ہے بلکہ کئی بودھ کتابوں کے خیال اس میں شامل کئے گئے ہیں؛ ایسے خیال جو منووگیانک نظریہ سے چینی جنتا کے مطابق تھے۔ پرانے چینی دھرم گرنتھوں کے ساتھ اِس گرنتھ کا پورا میل تھا۔ پرانے چینی گرنتھ جیسے "ماتا پتا کی بھکتی" "چار پستکیں" اور "لاؤ-تزو" اور یہ "42 ادھیاؤں والا گرنتھ" ایک ہی طرح کی تعلیموں سے بھرے ہیں۔ اگر اِس بودھ گرنتھ میں سے "بدھ نے کہا" "ہے بھکشو" جیسے الفاظ نکال دئے جائیں تو پڑھنے والے مشکل سے اُسے بودھ دھرم کا کوئی گرنتھ سمجھیں گے۔ سنکلن کے علاوہ ماتنگ اور گوبھرن نے اور دوسرے ترجمے بھی کئے تھے کہ جنکا اِس وقت کوئی پتہ نہیں چلتا۔ اِس کے دسیوں سال بعد پارتھیا کے شہزادے انشکاؤ شہنشاہ ہان-ہوان-تی (148ء) کے وقت میں چین آئے۔ انشکاؤ کے بعد ہی شک ہند کے مشہور بھکشو لوکرکش بھی چین پہونچے۔ اِن دونوں بودھ سنتوں نے جو بودھ دھرم کے اچھے جانکار تھے اور بہت بڑے عالم تھے، چین میں بودھ دھرم کا پرچار کیا اور بودھ گرنتھوں کا چینی زبان میں ترجمہ کرنے کا کام شروع کیا۔ انشکاؤ نے "لویانگ" میں 20 سال سے زیادہ بودھ دھرم کی کتابوں کا چینی زبان میں ترجمہ کیا۔ اِن انمول گرنتھوں کے پڑھنے کے بعد چینیوں نے بودھ ادب کی گہرائی اور دھرم کی اصلیت کو ٹھیک ٹھیک سمجھنا شروع کیا۔ اس کے بعد بھارت سے کئی بودھ سنت اور عالم چین آئے اور انہوں نے چین میں بودھ دھرم کا پرچار کیا۔ اُن میں زیادہ مشہور یہ ہیں—بدھ بھدر، دھرم رکش، کمار جیو، بودھی دھرم، سوبھا کر، وجربودھی اور اموگھ۔ اِن بودھ سنتوں اور عالموں کے کاموں اور اُن کی کامیابی کا اِس چھوٹے سے مضمون میں دکھلا سکنا ناممکن ہے۔

کئی بڑے بودھ بھکشو راستے کی سیکڑوں مصیبتیں اُٹھا کر بھارت سے چین پہونچ رہے تھے۔ انہیں دیکھ دیکھ کر چینی بھکشوؤں میں بودھ دھرم کی جنم بھومی بھارت جانے کی زبردست خواہش پیدا ہوئی۔ سفر کی تمام مصیبتوں کا سامنا کرنے کی اُن میں ہمت آئی۔ ایسے چینی بھکشو جو بھارت پہونچے اُن میں سب میں خاص سن راج گھرانے کے وقت کا چینی بودھ سیاح فاہیان ہے۔ فاہیان 5 ویں صدی عیسوی کے شروع میں وسط ایشیا ہوتے ہوئے بھارت پہونچا۔ دسیوں رجواڑوں میں 15 سال بِتا کر، وہ بودھ گرنتھوں کا خزانہ لیکر چین واپس پہونچا۔ 7 ویں صدی کے 'تانگ' راج گھرانے کے وقت میں ایک دوسرا چینی بھکشو ہوئن تسانگ وسط ایشیا ہوتے ہوئے بھارت پہونچا۔ ہوئن تسانگ نے 17 ورش کی میعاد میں سیکڑوں راجدھانیوں کا سفر کیا اور

बौद्ध [illegible]
वापस [illegible] लामा चीनी भिक्षु
[illegible] से भारत के लिये रवाना
हुआ और बौद्ध धर्म की क़रीब क़रीब 400 किताबें लेकर चीन वापस आया. इन बड़े चीनी भिक्षुओं ने न सिर्फ़ बौद्ध धर्म के ग्रंथों का ही संस्कृत से चीनी में तर्जुमा किया बल्कि अपने सफ़र के बारे में अनमोल किताबें लिखीं. फ़ाहियान की किताब "फ़ो-कुआको-चि" यानी "बौद्ध मुल्कों का बयान" ह्वेन-त्सांग की किताब "सी-यु-चि" यानी "दक्खिनी समन्दर के पैग़ाम" यह तीन निहायत मशहूर किताबें हैं. बौद्ध धर्म, भारती फ़लसफ़ा और भारती जनता का इनमें काफ़ी बयान मिलता है. किताबें न सिर्फ़ बौद्ध साहित्य की रतन हैं बल्कि इनसे भारत की पुरानी तहज़ीब और भारत की पुरानी तारीख़ की काफ़ी जानकारी मिलती है. इसलिये इनका दुनिया की कई ज़बानों में तर्जुमा हुआ है और दुनिया के नामवर आलिमों ने इनकी खुले दिल से तारीफ़ की है.

दोनों मुल्कों के मशहूर संतों के इन सफ़रों से न सिर्फ़ भारतीय धर्म ग्रंथ ही चीन पहुँचे बल्कि भारती तहज़ीब भी चीन पहुंची. बौद्ध दर्शन का जो चीनी तर्जुमा हुआ है उसकी कोई बराबरी नहीं हो सकती. हान राजघराने से यु-आन राजघराने तक यानी 1000 बरस में 190 तर्जुमाकारों के नाम आते हैं जिन्होंने 1440 किताबों का, जिनकी 5586 जिल्दें हैं, तर्जुमा किया और यह तर्जुमे अभी तक बरक़रार हैं. यह तो हुई माने जाने तर्जुमाकारों की बात. बहुत से तर्जुमाकार ऐसे हुए हैं जिनका कोई नाम तक नहीं जानता और जिनके तर्जुमे किये हुए ग्रंथों की तादाद तक नहीं मालूम. ऐसे तर्जुमाकारों की और उनके तर्जुमा किये हुए ग्रंथों की तादाद वाक़ई बेशुमार होगी. सरकारी तर्जुमे का काम बड़े क़ायदे के साथ किया जाता था. खुद शाहनशाह इन तर्जुमों की जाँच पड़ताल करते थे. तर्जुमाकार बहुत आलिम और बौद्ध अदब में तजरुबेकार होते थे. यह लोग एक साथ बैठकर तर्जुमे का काम करते जाते थे. हर एक लफ़्ज़, हर एक आवाज़, और हर एक जाते थे और एक दूसरे से सलाह और मशविरा भी करते मानी को काग़ज़ पर लिखने के पहले काफ़ी बहस की जाती थी. सुई-तांग और सुंग राजघराने के वक़्त में तर्जुमे का एक ख़ास महकमा ही क़ायम था—जिसके नौ अलग अलग हिस्से थे. कुछ लोग जुमलों का तर्जुमा करते थे, कुछ तलफ़्फ़ुज़ की जाँच पड़ताल करते थे और कुछ मानों पर बहस करते थे, कुछ ज़बान को बेहतर बनाते थे, कुछ ग़ल्तियाँ दुरुस्त करते थे और कुछ लोग किये हुए तर्जुमे को दोहराते थे. जहाँ तक तर्जुमे का सरोकार है तर्जुमाकारों के लिये बड़े [illegible] बने हुए थे. तांग राजघराने के वक़्त में तर्जुमे

[illegible] دھرم کی 657 کتابیں لیکر اپنے ملک چین
میں واپس پہونچا . ہونین تسانگ کے بعد آئی-
سنگ نامی چینی بھکشو کوانگ تنگ ہو کر سمندری راستے سے بھارت کے لئے روانہ ہوا اور بودھ دھرم کی قریب 400 کتابیں لیکر چین واپس آیا . ان بڑے چینی بھکشوؤں نے نہ صرف بودھ دھرم کے گرنتھوں کا ہی سنسکرت سے چینی میں ترجمہ کیا بلکہ اپنے سفر کے بارے میں انمول کتابیں لکھیں . فاہیان کی کتاب "فو- کواؤ- چی" یعنی "بودھ ملکوں کا بیان" ہونین- تسانگ کی کتاب "سی- یو- چی" یعنی "دکھنی سمندر کے پیغام" یہ تین نہایت مشہور کتابیں ہیں . بودھ دھرم، بھارتی فلسفہ اور بھارتی جنتا کا ان میں کافی بیان ملتا ہے . کتابیں نہ صرف بودھ ساہتیہ کی رتن ہیں بلکہ ان سے بھارت کی پرانی تہذیب اور بھارت کی پرانی تاریخ کی کافی جانکاری ملتی ہے . اس لئے ان کا دنیا کی کئی زبانوں میں ترجمہ ہوا ہے اور دنیا کے نامور عالموں نے ان کی کھلے دل سے تعریف کی ہے .

دونوں ملکوں کے مشہور سنتوں کے ان سفروں سے نہ صرف بھارتی دھرم گرنتھ ہی چین پہونچے بلکہ بھارتی تہذیب بھی چین پہونچی . بودھ درشن کا جو چینی ترجمہ ہوا ہے اس کی کوئی برابری نہیں ہو سکتی . ہن راج گھرانے سے یو- آن راج گھرانے تک یعنی 1000 برس میں 190 ترجمہ کاروں کے نام آتے ہیں جنہوں نے 1440 کتابوں کا، جن کی 5586 جلدیں ہیں، ترجمہ کیا اور یہ ترجمے ابھی تک برقرار ہیں . یہ تو ہوئی مانے جانے ترجمہ کاروں کی بات . بہت سے ترجمہ کار ایسے ہوئے ہیں جن کا کوئی نام تک نہیں جانتا اور جن کے ترجمہ کئے ہوئے گرنتھوں کی تعداد تک نہیں معلوم . ایسے ترجمہ کاروں کی اور ان کے ترجمہ کئے ہوئے گرنتھوں کی تعداد یقینی بے شمار ہوگی . سرکاری ترجمہ کا کام بڑے قاعدے کے ساتھ کیا جاتا تھا . خود شہنشاہ ان ترجموں کی جانچ پڑتال کرتے تھے . ترجمہ کار بہت عالم اور بودھ ادب میں تجربہ کار ہوتے تھے . یہ لوگ ایک ساتھ بیٹھکر ترجمہ کا کام کرتے تھے اور ایک دوسرے سے صلاح اور مشورہ بھی کرتے جاتے تھے . ہر ایک لفظ، ہر ایک آواز اور ہر ایک معنی کو کاغذ پر لکھنے کے پہلے کافی بحث کی جاتی تھی . سوئی، تانگ اور سونگ راج گھرانے کے وقت میں ترجمہ کا ایک خاص محکمہ ہی قایم تھا—جس کے نو الگ الگ حصے تھے . کچھ لوگ جملوں کا ترجمہ کرتے تھے، کچھ تلفظ کی جانچ پڑتال کرتے تھے اور کچھ معنوں پر بحث کرتے تھے، کچھ زبان کو بہتر بناتے تھے، کچھ غلطیاں درست کرتے تھے اور کچھ لوگ کئے ہوئے ترجمہ کو دوہراتے تھے . جہاں تک ترجمہ کا سروکار ہے ترجمہ کاروں کے لئے بڑے قاعدے بنے ہوئے تھے . تانگ راج گھرانے کے وقت میں ترجمہ

[illegible] बौद्ध उसूल के [illegible] के बारे में 6 कायदे थे. उस ज़माने में आजकल के से सस्ते और जल्दबाज़ी में किये हुए तर्जुमों के बदले कितने बेहतर तरीक़े से तर्जुमा होता था. चीनी बौद्ध भिक्खुओं ने तर्जुमा के अलावा बुनियादी ग्रंथों की भी तसनीफ़ की. उन्होंने बौद्ध अदब को एक सिलसिले में किया. बौद्ध धर्म के अदबी उसूलों का मुताला करके उन पर नुक्ताचीनी की और इस तरह बौद्ध धर्म को तरक़्क़ी की आख़िरी हद तक पहुँचाया. सैकड़ों सालों में तैयार किये हुए इन तमाम बौद्ध ग्रन्थों को एक जगह जमा किया गया और उन्हें "सान-त्सांग" यानी "त्रिपिटक" में तक़सीम किया गया. यह त्रिपिटक—(1) सूत्र त्रिपिटक, (2) विनय पिटक और (3) अभिधर्म पिटक कहलाते हैं. इन तीनों को मिलाकर "ता-त्सांग-चिंग" यानी "बौद्ध धर्म का बड़ा ग्रन्थ" कहा जाता है. इन ग्रंथों के अलावा चीनियों के ज़रिये लिखे हुए बौद्ध धर्म की किताबों की तादाद क़रीब क़रीब 10 हज़ार समझी जाती है. पुराने भारत के [illegible]रीब क़रीब तमाम ख़ास बौद्ध ग्रन्थों का चीनी ज़बान में तर्जुमा किया गया. जो ग्रन्थ आज भारत में लापता हो गये हैं, वे चीन में चीनी ज़बान के तर्जुमे की शक्ल में आज भी बरक़रार हैं. अगर कोई शख़्स बौध धर्म का पूरा मुताला करना चाहे तो उसके लिये इन चीनी ग्रन्थों का पढ़ना बहुत ज़रूरी है. यह कोई बड़बोल नहीं है, बल्कि एक असलियत है. आज चीनी ही सिर्फ़ एक ऐसी ज़बान है जिसके ज़रिये बौद्ध धर्म का पूरा पूरा मुताला किया जा सकता है.

हान राजघराने के ज़माने में पहले पहल बौद्ध धर्म बाज़ाब्ते से चीन पहुँचा. उसके बाद से मुख़्तलिफ़ घरानों के चीनी शहनशाह बौद्ध धर्म में शख़्सी दिलचस्पी लेते रहे, उसके फैलाव को तरक़्क़ी देते और उसकी हिफ़ाज़त करते रहे. जगह जगह मन्दिर बनवाए गये. पागोदा खड़े किये गये. इबादत के सरअंजाम किये गये. भिक्खु और भिक्खुनियों के रहने का बन्दोबस्त किया गया. शाही ख़र्च से बने हुए सारे मुल्क में बड़े बड़े मन्दिर, ऊँचे ऊँचे पागोदा और शानदार विहार अब तक खड़े हैं. चीनी नज़्म की एक सतर है—ऊँची और ख़ूबसूरत पहाड़ी चोटियाँ बौद्धों ने क़ब्ज़े में कर रक्खी हैं, इसका मतलब यह है कि चीन में मशहूर और ख़ूबसूरत पहाड़ियों पर बौद्ध मन्दिर, पागोदा और भिक्खु संघ छाए पड़े हैं. मुख़्तलिफ़ ज़मानों में मुख़्तलिफ़ शहनशाहों की मदद के बिना बौद्ध धर्म को इतनी कामयाबी कैसे मिल सकती थी ? फिर भी कुछ तंग दिमाग़ के चीनी शहनशाह हुए हैं जिन्होंने बौद्ध धर्म का मतलब नहीं समझा और उसे नुक़सान पहुँचाने की कोशिश की. मसलन शुमाली चीन में 'वे'

کے پانچ [illegible] کے بارے میں 6 قاعدے تھے . اُس زمانے میں آجکل کے سے سستے اور جلدبازی میں کئے ہوئے ترجموں کے بدلے کتنے بہتر طریقے سے ترجمہ ہوتا تھا . چینی بودھ بھکشوؤں نے ترجمہ کے علاوہ بنیادی گرنتھوں کی بھی تصنیف کی . اُنھوں نے بودھ ادب کو ایک سلسلے میں کیا . بودھ دھرم کے ادبی اصولوں کا مطالعہ کر کے اُن پر نکتہ چینی کی اور اِس طرح بودھ دھرم کو ترقی کی آخری حد تک پہونچایا . سیکڑوں سالوں میں تیار کئے ہوئے اِن تمام بودھ گرنتھوں کو ایک جگہہ جمع کیا گیا اور اُنھیں 'سان- تسانگ'' یعنی ''تریپٹک'' میں تقسیم کیا گیا . یہ تریپٹک—(1) سوترپٹک' (2) وینے پٹک اور (3) ابھیدھرم پٹک کہلاتے ہیں . اِن تینوں کو ملا کر 'تا- تسانگ- چنگ'' یعنی ' بودھ دھرم کا بڑا گرنتھ'' کہا جاتا ہے . اِن گرنتھوں کے علاوہ چینیوں کے ذریعے لکھے ہوئے بود دھرم کی کتابوں کی تعداد قریب قریب 10 ہزار سمجھی جاتی ہے . پرانے بھارت کے قریب قریب تمام خاص بودھ گرنتھوں کا چینی زبان میں ترجمہ کیا گیا . جو گرنتھ آج بھارت میں لاپتہ ہو گئے ہیں' وے چین میں چینی زبان کے ترجمہ کی شکل میں آج بھی برقرار ہیں . اگر کوئی شخص بودھ دھرم کا پورا مطالعہ کرنا چاہے تو اُس کے لئے اِن چینی گرنتھوں کا پڑھنا بہت ضروری ہے . یہ کوئی بڑبول نہیں ہے' بلکہ ایک اصلیت ہے . آج چینی ہی صرف ایک ایسی زبان ہے جس کے ذریعہ بودھ دھرم کا پورا پورا مطالعہ کیا جا سکتا ہے .

ہان راج گھرانے کے زمانے میں پہلے پہل بودھ دھرم ضابطہ سے چین پہونچا . اِس کے بعد سے مختلف گھرانوں کے چینی شہنشاہ بودھ دھرم میں شخصی دلچسپی لیتے رہے' اُس کے پھیلاؤ کو ترقی دیتے اور اُس کی حفاظت کرتے رہے . جگہہ جگہہ مندر بنوائے گئے . پاگودا کھڑے کئے گئے . عبادت کے سرانجام کئے گئے . بھکشو اور بھکشونیوں کے رہنے کا بندوبست کیا گیا . شاہی خرچ سے بنے ہوئے سارے ملک میں بڑے بڑے مندر' اونچے اونچے پاگودا اور شاندار وہار اب تک کھڑے ہیں . چینی نظم کی ایک سطر ہے—'اونچی اور خوبصورت پہاڑی چوٹیاں بودھوں نے قبضے میں کر رکھی ہیں' اِس کا مطلب یہ ہے کہ چین میں مشہور اور خوبصورت پہاڑیوں پر بودھ مندر' پاگودا اور بھکشو سنگھ چھائے پڑے ہیں . مختلف زمانوں میں مختلف شہنشاہوں کی مدد کے بنا بودھ دھرم کو اِتنی کامیابی کیسے مل سکتی تھی ؟ پھر بھی کچھ تنگ دماغ کے چینی شہنشاہ ہوئے ہیں جنھوں نے بودھ دھرم کا مطلب نہیں سمجھا اور اسے نقصان پہونچانے کی کوشش کی . مثلاً شمالی چین میں 'وے'

राजघराने के [illegible] [illegible] ने सन् 446 ई० में बौद्ध [illegible] [illegible] बौद्ध भिक्खुओं को दुनियावी ज़िन्दगी बसर करने के लिये मजबूर किया. दूसरे शुमाली चीन के 'चु' राजघराने के शहनशाह 'वु-ति' ने सन् 574 ई० में बौद्ध विहारों को जलाकर, बौद्ध धर्म को ग़ैर क़ानूनी क़रार दिया. उसके बाद सन् 845 ई० में तांग राजघराने के शहनशाह वु-त्सुंग ने बौद्ध मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ फोड़ डाला. चीन में आम तौर पर यह "तीन 'वु' सम्राटों का बौद्ध धर्म पर "नाजायज़ गुनाह" कह कर याद किया जाता है. लेकिन इस तरह की शाही आफ़त सिर्फ़ चन्द रोज़ा रही और उससे बौद्ध धर्म को कोई भारी नुक़सान नहीं पहुँचा. उसके बरख़िलाफ़ चीनी बौद्ध धर्म की तारीख़ में दो मारके के वाक़ेआत हुए हैं. एक यह कि चीन में एक मर्तबा एक "सम्राट भिक्खु" और दूसरी मर्तबा एक "भिक्खु सम्राट" हुए हैं. दक्खिन राजघराने के शहनशाह लियांग-वु-ति ने तीन मर्तबा अपने शाही ताज को छोड़कर "तुंग-तसाई" मन्दिर में भिक्खुओं का लिबास पहना. इसलिये उसे सम्राट भिक्खु कहा जाता है. उसकी यादगार के खंडहर नानकिंग शहर में अब तक मिलते हैं. 'मिन' राजघराने की बुनियाद डालने वाला ताई-त्सु "ह्वां-चिआओ मन्दिर का एक भिक्खु था. उसने ज़ालिम मंगोल राजा को चीन से खदेड़ कर सारे चीन के शहनशाह का रुतबा हासिल किया और इस तरह चीनी तवारीख़ में एक सुनहरा सफ़ा जोड़ दिया. इसीलिये ताई-त्सु "भिक्खु शहनशाह" कहलाता है. इसके अलावा और दूसरे आलिम और पाक भिक्खु हुए हैं जिन्होंने शहनशाहों के मज़हबी कामों में मदद दी और कामयाबी के साथ समाज में अनुशासन क़ायम रक्खा है. ऐसे भिक्खुओं की तादाद इतनी ज़्यादा है कि उनकी शख़्सी चर्चा कर सकना यहाँ नामुमकिन है.

छिन राजघराने के शुरू ज़माने के तमाम शहनशाहों का बौद्ध धर्म पर ऐतबार था. देश ताक़तवर था और चारों तरफ़ इतमीनान था. इस ज़माने में बौद्ध धर्म की बराबर तरक़्क़ी होती गई लेकिन मांचु हुकूमत के आख़िर ज़माने में चीनी राज के साथ साथ बौद्ध धर्म भी तनुज़्ज़ली के ग़ार में गिर गया. इसी वक़्त यूरपी तहज़ीब ने दूर पूरब में तूफ़ानी क़दम बढ़ाया और नतीजे की शकल में चीनी दिमाग़ों में अजीबो ग़रीब कैफ़ियत पैदा होनी शुरू हुई. ख़ासे मोहज़्ज़िब लोगों ने उम्मीद की कि पच्छिम के मेल में आकर मुल्क के अन्दर नई ज़िन्दगी की शुरूआत होगी. पुराने ढंग की तालीमी संस्थाओं को ख़तम करके यूरपी नमूने के नये स्कूल क़ायम किये गये. आलिमों को साइंसी ज्ञान के तजरबे हासिल करने के लिये बाहर भेजा गया. इन नये पढ़े लिखे लोगों को पच्छिम की मशीनों और भौतिक-वाद ने चकाचौंध कर दिया और वे मुँह खोलकर उसकी

[illegible] گھرانے کے شہنشاہ تائی-وو تی نے سن 446ع میں بودھ [illegible] کو جلا کر بودھ بھکھوؤں کو دنیاوی زندگی بسر کرنے کے لئے مجبور کیا. دوسرے شمالی چین کے 'چو' راج گھرانے کے شہنشاہ 'وو- تی' نے سن 574ع میں بودھ وہاروں کو جلا کر، بودھ دھرم کو غیر قانونی قرار دیا. اُس کے بعد سن 845ع میں تانگ راج گھرانے کے شہنشاہ وو- تسنگ نے بودھ مندروں اور مورتیوں کو توڑ پھوڑ ڈالا. چین میں عام طور پر یہ "تین 'وو' سمراٹوں کا بودھ دھرم پر نا جائز گناہ" کہکر یاد کیا جاتا ہے. لیکن اِس طرح کی شاہی آفت صرف چند روزہ رہی اور اُس سے بودھ دھرم کو کوئی بھاری نقصان نہیں پہونچا. اِس کے برخلاف چینی بودھ دھرم کی تاریخ میں دو معرکے کے واقعات ہوئے ہیں. ایک یہ کہ چین میں ایک مرتبہ ایک "سمراٹ بھکھو" اور دوسری مرتبہ ایک "بھکھو سمراٹ" ہوئے ہیں. دکھن راج گھرانے کے شہنشاہ لیانگ- وو- تی نے تین مرتبہ اپنے شاہی تاج کو چھوڑ کر "تونگ تسائی" مندر میں بھکھوؤں کا لباس پہنا. اِس لئے اُسے سمراٹ بھکھو کہا جاتا ہے. اُس کی یادگار کے کھنڈہر نانکنگ شہر میں اب تک ملتے ہیں. 'مِن' راج گھرانے کی بنیاد ڈالنے والا تائی- تسو "ہوانگ چیاؤ" مندر کا ایک بھکھو تھا. اُس نے ظالم منگول راجا کو چین سے کھدیڑ کر سارے چین کے شہنشاہ کا رتبہ حاصل کیا اور اِس طرح چینی تواریخ میں ایک سنہرا صفحہ جوڑ دیا. اِس لئے تائی تسو "بھکھو شہنشاہ" کہلاتا ہے. اِس کے علاوہ اور دوسرے عالم اور پاک بھکھو ہوئے ہیں جنھوں نے شہنشاہ کے مذہبی کاموں میں مدد دی ہے اور کامیابی کے ساتھ سماج میں انوشاسن قایم رکھا ہے. اِیسے بھکھوؤں کی تعداد اِتنی زیادہ ہے یہ اُن کی شخصی چرچا کر سکنا یہاں ناممکن ہے.

چھن راج گھرانے کے شروع زمانے کے تمام شہنشاہوں کا بودھ دھرم پر اعتبار تھا. دیش طاقتور تھا اور چاروں طرف اطمینان تھا. اِس زمانے میں بودھ دھرم کی برابر ترقی ہوتی گئی لیکن مانچو حکومت کے آخر زمانے میں چینی راج کے ساتھ ساتھ بودھ دھرم بھی تنزلی کے غار میں گر گیا. اِسی وقت یورپی تہذیب نے دور پورب میں طوفانی قدم بڑھایا اور نتیجے کی شکل میں چینی دماغوں میں عجیب و غریب کیفیت پیدا ہونی شروع ہوئی. خاصے مہذب لوگوں نے اُمید کی کہ پچھم کے میل میں آکر ملک کے اندر نئی زندگی کی شروعات ہوگی. پرانے ڈھنگ کی تعلیمی سنستھاؤں کو ختم کرکے یورپی نمونے کے نئے سکول قایم کئے گئے. عالموں کو سائنسی گیان کے تجربے حاصل کرنے کے لئے باہر بھیجا گیا. اِن نئے پڑھے لکھے لوگوں کو پچھم کی مشینوں اور بھوتک واد نے چکاچوندھ کردیا اور وے منہ کھول کر اُس کی

[illegible] से देखने लगे. उनके दिलों में पश्चिमी फलसफे की तरफ़ तारीफ़ के भाव आये. तारीफ़ के भावों ने पश्चिमी फलसफे की तरफ़ उनमें इज़्ज़त पैदा की और इज़्ज़त ने पैदा किया नक़ल करने का ख़्याल. तमाम मुल्क में भोंचाल सा आ गया. पुरानी तालीम और ख़्याल, पुरानी राजनीति और माली रवैया और पुराने सामाजिक रीत रिवाजों की जड़ें हिलने लगीं और हमारे प्यारे पुराने मुल्क की पुरानी शानदार तहज़ीब बरबाद होती हुई दिखाई देने लगी. ख़्यालात के इस ख़ौफ़नाक तूफ़ानी समन्दर में बौद्ध धर्म पहली मर्तबा तनज़्ज़ुली की गहराई में दिखाई देने लगा. चूँकि इसके पीछे एक इतना लम्बा इतिहास था और वह लोगों के दिलों पर इतनी गहरी जड़ जमा चुका था और उसके अन्दर ज़बर्दस्त मुमकिनात थीं, इसलिये यह लाज़मी था कि वह मौक़ा पाकर फिर हरा भरा होगा.

चीनी डेमोक्रेसी (प्रजातन्त्र) के शुरू के सालों में न तो शान्ति क़ायम होने पाई और न अमन. बौद्ध धर्म ख़ामोश होकर नेक मौक़े का इन्तज़ार करता रहा और उसे फिर तरक़्क़ी का मौक़ा मिला. इस कशमकश के ज़माने में चीन में जो सांस्कृतिक इन्क़लाब शुरू हुए उनमें सब में पहला "4 मई सन् 1919 का इन्क़लाब" था. यह तालिबइल्मों के ज़रिये शुरू किया गया था. इसे वे "नया तहज़ीबी इन्क़लाब" कहते थे. लेकिन इसके आमिल ख़ाली ख़्यालात से भरे हुए थे. वे सिर्फ़ "काढ़े हुए ग़िलाफ़" की तरह थे. न उनके अन्दर कोई असली ज्ञान था और न कोई नेक अमल. इसलिये उनके लफ़्ज़ों में न तो कोई ज़ोर था और न उनसे कभी कोई अच्छा नतीजा निकला. कैफ़ियत यह हुई कि वे कभी कोई अच्छाई तो न कर पाए पर बुराई ज़रूर कर गये. मुल्क में ऐसा गड़बड़ झाला मचा कि किसी की समझ में ही न आता था कि वह किसे माने और क्या करे. नये तहज़ीबी इन्क़लाब के प्रचारकों के लिये अध्यात्म और धर्म की बड़ाई समझ सकना टेढ़ी खीर था; इसलिये इन लोगों ने धर्म पर ही हमला करना शुरू किया. बौद्ध धर्म के जानिब इन लोगों के ख़्याल न तो इज़्ज़त के थे और न दोस्ती के. 15 साल पहले जब नानकिंग में पहली दफ़ा राष्ट्री दल की कामयाबी के बाद केन्द्री हुकूमत क़ायम हुई तब पश्चिम की अन्धी नक़ल का ख़्याल लोगों के दिलों से ग़ायब हुआ और पागलपन से भरे इन्क़लाबों में सुधार हुए. अब इस वक़्त चीनी सरकार के मातहत धर्म की हिफ़ाज़त की जाती है और उन्हें मदद दी जाती है. ख़ास तौर [illegible] बौद्ध धर्म में नई जान पड़ी है. बहुत से लोगों को इस पर ऐतबार है. सरकारी वज़ीरी हलक़े में [illegible] ख़ास लोगों को बौद्ध धर्म से बेहद मोहब्बत है.

طرف [illegible] اُن کے دلوں میں پچھمی فلسفے کی طرف تعریف کے بھاؤ جاگے۔ تعریف کے بھاؤں نے پچھمی فلسفے کی طرف اُن میں عزت پیدا کی اور عزت نے پیدا کیا نقل کرنے کا خیال۔ تمام ملک میں بھونچال سا آگیا۔ پرانی تعلیم اور خیال، پرانی راج نیتی اور مالی رویہ اور پرانے سماجک ریت رواجوں کی جڑیں ہلنے لگیں اور ہمارے پیارے پرانے ملک کی پرانی شاندار تہذیب برباد ہوتی ہوئی دکھائی دینے لگی۔ خیالات کے اِس خوفناک طوفانی سمندر میں بودھ دھرم پہلی مرتبہ تنزلی کی گہرائی میں دکھائی دینے لگا۔ چونکہ اِس کے پیچھے ایک اِتنا لمبا اِتہاس تھا اور وہ لوگوں کے دلوں پر اِتنی گہری جڑ جما چکا تھا اور اُس کے اندر زبردست ممکنات تھیں اِس لئے یہ لازمی تھا کہ وہ موقع پاکر پھر ہرا بھرا ہوگا۔

چینی ڈیموکریسی (پرجاتنتر) کے شروع کے سالوں میں نہ تو شانتی قایم ہونے پائی اور نہ امن۔ بودھ دھرم خاموش ہوکر نیک موقع کا انتظار کرتا رہا اور اُسے پھر ترقی کا موقع ملا۔ اِس کشمکش کے زمانے میں چین میں جو سانسکرتک اِنقلاب شروع ہوئے اُن میں سب میں پہلا "4 مئی سن 1919ع کا انقلاب" تھا۔ یہ طالب‌علموں کے ذریعے شروع کیا گیا تھا۔ اِسے وہ "نیا تہذیبی انقلاب" کہتے تھے۔ لیکن اِس کے عامل خالی خیالات سے بھرے ہوئے تھے۔ وہ صرف "کاڑھے ہوئے غلاف" کی طرح تھے۔ نہ اُن کے اندر کوئی اصلی گیان تھا اور نہ کوئی نیک عمل۔ اِسی لئے اُن کے لفظوں میں نہ تو کوئی زور تھا اور نہ اُن سے کبھی کوئی اچھا نتیجہ نکلا۔ کیفیت یہ ہوئی کہ وے کبھی کوئی اچھائی تو نہ کرپائے پر برائی ضرور کرگئے۔ ملک میں ایسا گڑبڑ جھالا مچا کہ کسی کی سمجھ میں ہی نہ آتا تھا کہ وہ کسے مانے اور کیا کرے۔ نئے تہذیبی اِنقلاب کے پرچارکوں کے لئے ادھیاتم اور دھرم کی بڑائی سمجھ سکنا ٹیڑھی کھیر تھا؛ اِس لئے اِن لوگوں نے دھرم پر ہی حملہ کرنا شروع کیا۔ بودھ دھرم کے جانب اِن لوگوں کے خیال نہ تو عزت کے تھے اور نہ دوستی کے۔ 15 سال پہلے جب نانکنگ میں پہلی دفعہ راشٹری دل کی کامیابی کے بعد کیندری حکومت قایم ہوئی تب پچھم کی اندھی نقل کا خیال لوگوں کے دلوں سے غایب ہوا اور پاگلپن سے بھرے اِنقلابوں میں سدھار ہوئے۔ اب اِس وقت چینی سرکار کے ماتحت دھرم کی حفاظت کی جاتی ہے اور انہیں مدد دی جاتی ہے خاص طور پر بودھ دھرم میں نئی جان پڑی ہے۔ بہت سے لوگوں کو اُس پر اعتبار ہے۔ سرکاری وزیری حلقے میں بہت خاص لوگوں کو بودھ دھرم سے بےحد محبت ہے۔

[illegible] बौद्ध धर्म की [illegible] और उन्होंने अपनी जन्मभूमि में [illegible] पहाड़ी पर एक बड़े आलीशान विहार की [illegible]. इस तरह हाल के चीन में बौद्ध धर्म में नई जान पड़ने और बौद्ध इन्क़लाब के लिये बहुत बड़ी गुन्जाइश है.

इस वक्त बौद्ध इन्क़लाब और चीनी बौद्ध धर्म को हम दो हिस्सों में तक़सीम कर सकते हैं—(1) बौद्ध धर्म और (2) बौद्ध तालीम. जहाँ तक बौद्ध धर्म का ताल्लुक़ है मुल्क में दसों के दस दल थे—

1. चु-शेह्-त्सुङ्ग (अभिधर्म कोष दल),
2. चेङ्ग-शिह्-त्सुङ्ग (संयुक्त दल),
3. लु-त्सुङ्ग (विनय दल),
4. फ़ा-सियाङ्ग-त्सुङ्ग (योगाचार दल),
5. सान-लुन-त्सुङ्ग (माध्यमिक दल),
6. ह्वा-येन-त्सुङ्ग (अवतामसक दल),
7. तिएन-ताई त्सुङ्ग (सद्धर्म पुण्डरीक महा परिनिर्वाण दल),
8. चेन-येन-त्सुङ्ग (मंत्र दल),
9. त्सिङ्ग-तु-त्सुङ्ग (अमिताभ दल) और
10. शान-त्सुङ्ग (ध्यान दल).

इन दसों जमाअतों में हर एक बौद्ध धर्म का झंडा फहराना सिर्फ़ अपना ही निजी हक़ समझता था और दूसरे जमाअत की बुराई करता था. यह सही है कि आपसी लाग डांट से वे फ़ायदा उठा सकते थे. लेकिन यह भी सही है कि वे एक दूसरे के बारे में ग़लत प्रचार करते थे और बौद्ध दुनिया में निफ़ाक़ फैलाते थे. ख़ुशक़िस्मती से इन मुख़्तलिफ़ गिरोहों में धीरे धीरे इत्तफ़ाक़ क़ायम हो गया है और अब कोई ख़ास खाई इन के दरमियान दिखाई नहीं देती. बौद्ध धर्म बुनियादी ढंग से एक है. उसे टुकड़ों में तक़सीम करना ग़लत है. मुल्क में बौद्ध नेता आज ज़ोर शोर के साथ एकता का इन्क़लाब चला रहे हैं. उन्होंने मुख़्तलिफ़ सूबों में बौद्ध जमाअतें क़ायम की हैं और सारे चीन के बौद्धों के लिये शंघाई में "चीनी बौद्ध केन्द्री संघ" क़ायम किया है. सभी जमाअतों ने इसके मातहत काम करने का पक्का इरादा किया है. इस तरह की जमाअत की बेहद ज़रूरत थी जो एक तरफ़ धर्म में अन्दरूनी एकता पैदा करे और दूसरी तरफ़ बाहरी सवालों को हल करे. लेकिन केन्द्री संघ में हल्के हल्के दो दल बनते नज़र आ रहे हैं—एक तेज़ रफ़्तार जमाअत और दूसरी पुरानी रीत रिवाजों वाली जमाअत. तेज़ रफ़्तार जमाअत नये नये सुधारों की मांग करती है और पुरानी रीत रिवाजों वाली जमाअत पुराने रिवाजों के क़ायम रखने

[illegible] بودھ دھرم کے بہت بڑے عالم اور [illegible] ہیں۔ چین کے راشٹری سردار بودھ دھرم [illegible] ہیں اور اُنہوں نے اپنی جنم بھومی میں خوشنما [illegible] پہاڑی پر ایک بڑے عالیشان وہار کی بنیاد ڈالی۔ اِس طرح حال کے چین میں بودھ دھرم میں نئی جان پڑنے اور بودھ اِنقلاب کےلئے بہت بڑی گنجائش ہے۔

اِس سمے بودھ اِنقلاب اور چینی بودھ دھرم کو ہم دو حصوں میں تقسیم کرسکتے ہیں—(1) بودھ دھرم اور (2) بودھ تعلیم۔ جہاں تک بودھ دھرم کا تعلق ہے ملک میں دسوں کے دس دل تھے—

1. چو - شیہ - تسونگ (ابھی دھرم کوش دل)،
2. چینگ - شیہ - تسونگ (سنیکت دل)،
3. لو - تسونگ (ونئے دل)،
4. فا - سیانگ - تسونگ (یوگ چار دل)،
5. سان - لون - تسونگ (مادھیمک دل)،
6. ہوا - ئین - تسونگ (اوتامسک دل)،
7. تئین - تائی - تسونگ (سدھرم پونڈریک مہاپرینروان دل)،
8. چین - ئین - تسونگ (منتر دل)،
9. تسنگ - تو - تسونگ (امیتابھ دل) اور
10. شان - تسونگ (دھیان دل)۔

اِن دسوں جماعتوں میں ہر ایک بودھ دھرم کا جھنڈا پھہرانا صرف اپنا ہی نجی حق سمجھتا تھا اور دوسرے جماعت کی برائی کرتا تھا۔ یہ صحیح ہے کہ آپسی لاگ ڈانٹ سے وے فایدہ اُٹھاسکتے تھے۔ لیکن یہ بھی صحیح ہے کہ وے ایک دوسرے کے بارے میں غلط پرچار کرتے تھے اور بودھ دنیا میں نفاق پھیلاتے تھے۔ خوش قسمتی سے اِن مختلف گروہوں میں دھیرے دھیرے اِتفاق قایم ہوگیا ہے اور اب کوئی خاص کھائی اِن کے درمیان دکھائی نہیں دیتی۔ بودھ دھرم بنیادی ڈھنگ سے ایک ہے۔ اُسے ٹکڑوں میں تقسیم کرنا غلط ہے۔ ملک میں بودھ نیتا آج زور شور کے ساتھ ایکتا کا اِنقلاب چلا رہے ہیں۔ اُنہوں نے مختلف صوبوں میں بودھ جماعتیں قایم کی ہیں اور سارے چین کے بودھوں کے لئے شنگھائی میں "چینی بودھ کیندری سنگھ" قایم کیا ہے۔ سبھی جماعتوں نے اِس کے ماتحت کام کرنے کا پکا اِرادہ کیا ہے۔ اِس طرح کی جماعت کی بیحد ضرورت تھی جو ایک طرف دھرم میں اندرونی ایکتا پیدا کرے اور دوسری طرف باہری سوالوں کو حل کرے۔ لیکن کیندری سنگھ میں ہلکے ہلکے دو دل بنتے نظر آرہے ہیں—ایک تیز رفتار جماعت اور دوسری پرانی ریت رواجوں والی جماعت۔ تیز رفتار جماعت نئے نئے سدھاروں کی مانگ کرتی ہے اور پرانی ریت رواجوں والی جماعت پرانے رواجوں کے قایم رکھنے

रखते हैं. बौद्ध कर्मकान्डों को मानते हैं और कभी कभी ख़ुद बौद्ध भिक्खु बन जाते हैं.

चीनी बौद्ध धर्म का एक अनोखा पहलू है जिसे लामा धर्म कहा जाता है. इसका प्रचार तिब्बत और मङ्गोलिया में ज़्यादा है. लामा धर्म की पैदायशी जगह तिब्बत है. असलियत में यह बौद्ध धर्म की एक शाख़ है. चीनी ज़बान में इसे "चेन-पियेन-त्सुङ्ग" या "मन्त्र धर्म" कहा जाता है. इस पर तिब्बती रीत रिवाज की गहरी छाप है. तिब्बत ही दुनिया का एक ऐसा हमवार हिस्सा है जो चारों तरफ़ से बरफ़ीली पहाड़ियों से घिरा हुआ है. तिब्बत आम तौर पर और क़ुदरती नज़रिये से ख़ुद ही ताज्जुबख़ेज़ और पुरइसरार है. तिब्बतियों का अपना ऐतबार और पुराना धर्म भी राज़ से भरा है और इसीलिये तिब्बतवालों को बौद्ध धर्म की यह मंतर जमाअत बेहद अच्छी लगी. असल में इस मंतर जमाअत के अन्दर एक गहरा राज़ छिपा हुआ है. यह तिब्बत वालों के भेद भरे मिज़ाज के मुताबिक़ पड़ता है. पुराना तिब्बती धर्म और मंतर जमाअत आपस में इतने मिल जुल गये कि उन्होंने बौद्ध धर्म की एक नई शकल लामा धर्म की बुनियाद डाली. सातवीं सदी ईस्वी में तांग राजघराने के शुरू के ज़माने में पहली बार बौद्ध धर्म तिब्बत पहुँचा. उस वक़्त तिब्बत चीन के मातहत ख़िराज देने वाला एक अलग राज था. तिब्बत के राजा "सुङ्ग-त्सान" ने तांग राजघराने की शहज़ादी "वेन-चेङ्ग" के साथ शादी की. बाद में इस तिब्बती राजा ने नैपाल की शहज़ादी "पेलिस्बू" के साथ शादी की. यह दोनों शहज़ादियां बौद्ध धर्म की सच्ची पैरोकार थीं. इन दोनों रानियों से तिब्बत राज इतना मुतास्सिर हुआ कि उन्होंने भी बौद्ध धर्म क़ुबूल कर लिया. दोनों रानियाँ अपने मैके से बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये कई बौद्ध ग्रंथ और बौद्ध मूर्तियां अपने साथ लाई थीं. इस तरह यह दोनों रानियां तिब्बत में बौद्ध धर्म की पहली प्रचारक समझी जाती हैं. अब भी तिब्बत की राजधानी ल्हासा में "ता-चाबु" यानी "महान मन्दिर" नामी एक आलीशान मन्दिर खड़ा हुआ है, जिसे चीनी शहज़ादी वेन-चेंग ने बनवाया था और जिसमें अब तक उसकी एक सुनहली मूर्ति मौजूद है. तिब्बत में यही सब से पुराना मन्दिर समझा जाता है और लोग उसे निहायत पाक समझते हैं. हर साल नौरोज़ के दिन तमाम तिब्बती भिक्खु प्रार्थना और पूजा के लिये इस मन्दिर में जमा होते हैं. एक दूसरा मन्दिर नैपाली शहज़ादी पेलिस्बू का बनवाया हुआ है, जो "स्याओ-चाओ" यानी "हिना मन्दिर" कहलाता है. इस मन्दिर में नैपाली शहज़ादी की एक सुनहली मूर्ति अब तक मौजूद है. तिब्बती बड़े इज़्ज़त के साथ इस मन्दिर को देखते हैं. ज़माने की रफ़्तार के साथ साथ भारत, नैपाल

رکھتے ھیں، بودھ کرم کانڈوں کو مانتے ھیں اور کبھی کبھی خود بودھ بھکھو بن جاتے ھیں ۔

چینی بود دھرم کا ایک انوکھا پہلو ھے جسے لاما دھرم کہا جاتا ھے ۔ اِس کا پرچار تبت اور منگولیا میں زیادہ ھے ۔ لاما دھرم کی پیدائشی جگہہ تبت ھے ۔ اصلیت میں یہ بودھ دھرم کی ایک شاخ ھے ۔ چینی زبان میں "چین- پئین- تسونگ" یا "منتر دھرم" کہا جاتا ھے ۔ اِس پر تبتی ریت رواج کی گہری چھاپ ھے ۔ تبت ھی دنیا کا ایک ایسا ھموار حصہ ھے جو چاروں طرف سے برفیلی پہاڑیوں سے گھرا ھوا ھے ۔ تبت عام طور پر اور قدرتی نظریہ سے خود ھی تعجب خیز اور پراسرار ھے ۔ تبتیوں کا اپنا اعتبار اور پرانا دھرم بھی راز سے بھرا ھے اور اِس لئے تبت والوں کو بودھ دھرم کی یہ منتر جماعت بےحد اچھی لگی ۔ اصل میں اِس منتر جماعت کے اندر ایک گہرا راز چھپا ھوا ھے ۔ یہ تبت والوں کے بھید بھرے مزاج کے مطابق پڑتا ھے ۔ پرانا تبتی دھرم اور منتر جماعت آپس میں اتنے مل جل گئے کہ اُنھوں نے بودھ دھرم کی ایک نئی شکل لاما دھرم کی بنیاد ڈالی ۔ ساتویں صدی عیسوی میں تانگ راج گھرانے کے شروع کے زمانے میں پہلی بار بودھ دھرم تبت پہونچا ۔ اُس وقت تبت چین کے ماتحت خراج دینے والا ایک الگ راج تھا ۔ تبت کے راجا "سونگ- تسان" نے تانگ راج گھرانے کی شہزادی "وین چینگ" کے ساتھ شادی کی ۔ بعد میں اِس تبتی راجا نے نیپال کی شہزادی "پیلسبو" کے ساتھ شادی کی ۔ یہ دنوں شہزادیاں بودھ دھرم کی سچی پیروکار تھیں ۔ اِن دونوں رانیوں سے تبت راج اِتنا متاثر ھوا کہ اُنھوں نے بھی بودھ دھرم قبول کر لیا ۔ دونوں رانیاں اپنے میکے سے بودھ دھرم کے پرچار کے لئے کئی بودھ گرنتھ اور بودھ مورتیاں اپنے ساتھ لائی تھیں ۔ اِس طرح یہ دنوں رانیاں تبت میں بودھ دھرم کی پہلی پرچارک سمجھی جاتی ھیں ۔ اب بھی تبت کی راجدھانی لھاسا میں "تا- چاوو" یعنی "مہان مندر" نامی ایک عالیشان مندر کھڑا ھوا ھے، جسے چینی شہزادی وین- چینگ نے بنوایا تھا اور جس میں اب تک اُس کی ایک سنہلی مورتی موجود ھے ۔ تبت میں یہی سب سے پرانا مندر سمجھا جاتا ھے اور لوگ اُسے نہایت پاک سمجھتے ھیں ۔ ھر سال نوروز کے دن تمام تبتی بھکھو پرارتھنا اور پوجا کے لئے اِس مندر میں جمع ھوتے ھیں ۔ ایک دوسرا مندر نیپالی شہزادی پیلسبو کا بنوایا ھوا ھے، جو "سھاؤ- چاؤ" یعنی "ھنا مندر" کہلاتا ھے ۔ اِس مندر میں نیپالی شہزادی کی ایک سنہلی مورتی اب تک موجود ھے ۔ تبتی بڑے عزت کے ساتھ اِس مندر کو دیکھتے ھیں ۔ زمانہ کی رفتار کے ساتھ ساتھ بھارت، نیپال

और चीन के कई मशहूर भिक्खु तिब्बत पहुँचे और उनके प्रचार से तिब्बत में बौद्ध धर्म तरक़्क़ी की आख़िरी मंज़िल पर पहुँचा. उस वक़्त तक तिब्बत में कोई लिखावट का तरीक़ा ईजाद नहीं हुआ था. बौद्ध धर्म ग्रंथों के तर्जुमे को लिखने के लिये संस्कृत के 30 हुरूफ़ को लेकर एक तिब्बती लिखावट बनाई गई. तिब्बती, पाली और चीनी ज़बान में तिब्बती बौद्ध दर्शन का ख़ज़ाना भरा पड़ा है. चीन में युआन राजघराने के वक़्त में मंगोलों ने हमला करके एशिया और यूरप के एक बड़े हिस्से को अपने मातहत कर लिया. उन्होंने तिब्बत को भी अपने राज में शामिल कर लिया. इन मङ्गोल युआन शहनशाहों ने तिब्बती बौद्ध धर्म को अपना राजधर्म बना लिया. बहुत से तिब्बती भिक्खुओं ने युआन शहनशाहों के ज़रिये इज़्ज़त हासिल की और उनसे उन्हें राज भर के राजगुरू का ऊँचा रुतबा मिला. 15वीं सदी में चीन में मिन राजघराने के वक़्त में तिब्बती बौद्ध धर्म में ज़बर्दस्त हेर फेर हुए. तिब्बती बौद्ध धर्म के इस सुधारक का नाम "त्सुङ्ग-काओ" था. इस तिब्बती सुधारक और ईसाई धर्म के सुधारक "मार्टिन लूथर" के सुधारों में बहुत कुछ बराबरी पाई जाती है. तिब्बती भिक्खुओं के काम और उनकी आदतें इस वक़्त तक ऐसी हो गई थीं कि उनसे बौद्ध धर्म की बड़ी बदनामी होने लगी थी. त्सुंग-काओ को इससे गहरा दिली सदमा पहुँचा और उसने सुधार करने की ठानी. इसके बाद तिब्बती बौद्ध धर्म दरअसल बहुत कुछ सुधर गया और क़रीब क़रीब एक नया धर्म ही बन गया. पहले तिब्बती बौद्ध भिक्खु सुर्ख़ कपड़े पहनते थे और इसीलिये वे 'लाल लामा' कहलाते थे. सुधार के बाद वे पीला कपड़ा पहनने लगे और इसीलिये 'पीले लामा' कहलाने लगे. अब भी तिब्बत में लाल लामा दिखाई देते हैं, लेकिन उनकी तादाद नहीं के बराबर है. त्सुङ्ग-काओ की मौत के बाद तिब्बती सुधार का काम उसके वसीअतनामे के मुताबिक़ उसके दो चेलों के आपसी मेल जोल के साथ चलना शुरू हुआ. उसके यह दो चेले 'दलाई लामा' और 'पन्सन लामा' थे. इस वक़्त तक 13 दलाई लामा और 8 पन्सन लामा गद्दी पर बैठ चुके हैं. 13वें दलाई लामा की मौत के कई साल बाद तक, मरहूम दलाई लामा की रूह किसी दूसरे में न दिखाई दी. सालों की खोज के बाद आख़िर में एक लड़के के अन्दर वे निशान दिखाई दिये जिस से यह मालूम हुआ कि मरहूम दलाई लामा की रूह इसी लड़के के अन्दर पोशीदा है. पन्सन लामा कई साल हुए चीन में बौद्ध धर्म की मंतर जमाअत का प्रचार करने आये थे और उनका चीनी बौद्धों ने काफ़ी इस्तक़बाल और इज़्ज़त की थी.

बौद्ध धर्म ने चीन को जिस तरह मुतास्सिर किया है उसे बयान कर सकना नामुमकिन है. हान और तांग राजघराने

اور چین کے کئی مشہور بھکھو تبت پہنچے اور اُن کے پرچار سے تبت میں بودھ دھرم ترقی کی آخری منزل پر پہونچا ۔ اُس وقت تک تبت میں کوئی لکھاوٹ کا طریقہ ایجاد نہیں ہوا تھا ۔ بودھ دھرم گرنتھوں کے ترجمے کو لکھنے کے لئے سنسکرت کے 30 حروف لیکر ایک تبتی لکھاوٹ بنائی گئی ۔ تبتی، پالی اور چینی زبان میں تبتی بودھ درشن کا خزانہ بھرا پڑا ہے۔ چین میں یوآن راج گھرانے کے وقت میں منگولوں نے حملہ کر کے ایشیا اور یورپ کے ایک بڑے حصہ کو اپنے ماتحت کر لیا ۔ اُنہوں نے تبت کو بھی اپنے راج میں شامل کر لیا ۔ اِن منگول یوآن شہنشاہوں نے تبتی بودھ دھرم کو اپنا راج دھرم بنا لیا ۔ بہت سے تبتی بھکھوؤں نے یوآن شہنشاہوں کے ذریعہ عزت حاصل کی اور اُن سے اُنہیں راج بھر کے "راج گرو" کا اُونچا رتبہ ملا ۔ 15 ویں صدی میں چین میں من راج گھرانے کے وقت میں تبتی بودھ دھرم میں زبردست ھیر پھیر ہوئے ۔ تبتی بودھ دھرم کے اس سدھارک کا نام "تسونگ‌کاؤ" تھا ۔ اِس تبتی سدھارک اور عیسائی دھرم کے سدھارک "مارٹن لوتھر" کے سدھاروں میں بہت کچھ برابری پائی جاتی ہے ۔ تبتی بھکھوؤں کے کام اور اُن کی عادتیں اِس وقت تک ایسی ہو گئی تھیں کہ اُن سے بودھ دھرم کی بڑی بدنامی ہونے لگی تھی ۔ تسونگ‌کاؤ کو اِس سے گہرا دلی صدمہ پہونچا اور اُس نے سدھار کرنے کی ٹھانی ۔ اِس کے بعد تبتی بودھ دھرم دراصل بہت کچھ سدھر گیا اور قریب قریب ایک نیا دھرم ہی بن گیا ۔ پہلے تبتی بودھ بھکھو سرخ کپڑے پہنتے تھے اور اِس لئے وے 'لال لاما' کہلاتے تھے ۔ سدھار کے بعد وے پیلا کپڑا پہننے لگے اور اِس لئے 'پیلے لاما' کہلانے لگے ۔ اب تبت میں لال لاما دکھائی دیتے ہیں، لیکن اُن کی تعداد نہیں کے برابر ہے ۔ تسونگ‌کاؤ کی موت کے بعد تبتی سدھار کا کام اُس کے وصیت نامے کے مطابق اُس کے دو چیلوں کے آپسی میل جول کے ساتھ چلنا شروع ہوا۔ اُس کے یہ دو چیلے 'دلائی لاما' اور 'پنسن لاما' تھے ۔ اِسوقت تک 13 دلائی لاما اور 8 پنسن لاما گدی پر بیٹھ چکے ہیں ۔ 13 ویں دلائی لاما کی موت کے کئی سال بعد تک، مرحوم دلائی لاما کی روح کسی دوسرے میں نہ دکھائی دی ۔ سالوں کی کھوج کے بعد آخر میں ایک لڑکے کے اندر وے نشان دکھا دیئے جس سے یہ معلوم ہوا کہ مرحوم دلائی لاما کی روح اِسی لڑکے کے اندر پوشیدہ ہے ۔ پنسن لاما کئی سال ہوئے چین میں بودھ دھرم کی منتر جماعت کا پرچار کرنے آئے تھے اور اُن کا چینی بودھوں نے کافی اِستقبال اور عزت کی تھی ۔

بودھ دھرم نے چین کو جس طرح متاثر کیا ہے اُسے بیان کر سکنا ناممکن ہے ۔ ھان اور تانگ راج گھرانے

के वक़्त से चीन के ख़्यालात, तालीम, अदब, कारीगरी, ज़बान, रस्मो रिवाज, ग़ौरो ख़ौज़ और रोज़मर्रा की हर ज़रूरत की बातों पर बौध धर्म ने अपना असर डाला है. ज़िन्दगी का कोई ऐसा पहलू नहीं जो बौद्ध धर्म के असर से अछूता बचा हो. आजकल की चीनी तहज़ीब ज़्यादातर बौद्ध तहज़ीब है. आजकल की चीनी ज़िन्दगी ज़्यादातर बौद्ध ज़िन्दगी है. चीनी प्रजातन्त्र के सभापति से लेकर मामूली जनता तक एक भी ऐसा आदमी नहीं है जो भगवान बुद्ध के नाम से नाआशना हो या जो "नमो अमिताभ्य बुद्धाय:" मन्त्र का तलफ़्फ़ुज़ न करता हो. चारों तरफ़ चीनी ज़बानों से यह मन्त्र सुनाई पड़ता है. इसी से अंदाज़ा किया जा सकता है कि चीन मे बौद्ध धर्म का कितना ज़बर्दस्त असर पड़ा. मौजूदा बौद्ध धर्म को जानने के लिये 3 ज़बानों का आसरा लेना पड़ेगा—पाली, चीनी और तिब्बती. चूँकि चीनी और तिब्बती दोनों चीनी ही हैं, इसीलिये बौद्ध धर्म का दो-तिहाई ज्ञान चीनी ज़बान में ही मौजूद है. चीन ने बौद्ध धर्म के लगातार प्रचार, उसकी तरक़्क़ी और उसके फैलाव के लिये ज़बर्दस्त कोशिश की है. लेकिन अफ़सोस का मुक़ाम है कि चीनी बौद्धों ने न तो मुल्क दर मुल्क प्रचार ही किया और न संस्कृत और दूसरी ज़बानों के पढ़ने की ही कोशिश की. इसका नतीजा यह हुआ कि चीनी बौद्ध आलिम सिर्फ़ अपनी मादरी ज़बान में ही बौद्ध धर्म का प्रचार कर सकते थे. दूसरी बात यह कि बहुत कम विदेशी ऐसे हैं जो चीनी ज़बान जानते हों या जिन्हें चीनी ज़बान का इतना ज्ञान है कि वे चीनी बौद्ध अदब का मुताला कर सकें. चीन में बौद्ध धर्म का जितना वसी ख़ज़ाना भरा पड़ा है उसका दुनिया को अन्दाज़ा तक नहीं है. जापान में चीन से ही बौद्ध धर्म गया और जापान में ही चीनी ज़बान में बौद्ध धर्म की किताबें हैं. जापानी बौद्धों की कोशिश दर असल तारीफ़ के क़ाबिल है कि उन्होंने संस्कृत और दूसरी विदेशी ज़बानों का मुश्तरका मुताला किया. वे जानते हैं कि बौद्ध धर्म का मुल्क दर मुल्क प्रचार किस तरह करना चाहिये. विदेशी ज़बान में लिखे हुए उनके ग्रन्थ कुछ कम नहीं हैं. दुनिया के आलिम यह नहीं जानते कि जापानी बौद्ध धर्म असल में चीनी बौद्ध धर्म है. चीनी बौद्ध के लिये यह बड़े अफ़सोस की बात है की चीनी बौद्ध धर्म तारीकी में छिपा पड़ा है. इधर हाल में चीनी बौद्धों के अन्दर कुछ नई जान पड़ने के आसार दिखाई दे रहे हैं और कई चीनी नौजवान विदेशी ज़बान सीखने की कोशिश कर रहे हैं. साथ ही साथ विदेशी लोग अब कुछ कुछ चीनी ज़बान का महत्व समझने लगे हैं और चीनी बौद्ध धर्म का ख़ज़ाना लोगों का ख़्याल अपनी तरफ़ खींच रहा है. सन् 1933 ई० में अंग्रेज बौद्ध भिक्खु चाओ-कोआङ्ग की देख भाल में दस यूरपी भिक्खु और

کے وقت سے چین کے خیالات، تعلیم، ادب، کاریگری، زبان، رسم و رواج، غور و خرض اور روز مرہ کی ہر ضرورت کی باتوں پر بودھ دھرم نے اپنا اثر ڈالا ہے ۔ زندگی کا کوئی یسا پہلو نہیں جو بودھ دھرم کے اثر سے اچھوتا بچا ہو ۔ آجکل کی چینی تہذیب زیادہ تر بودھ تہذیب ہے ۔ آجکل کی چینی زندگی زیادہ تر بودھ زندگی ہے ۔ چینی پرجاتنتر کے سبھا پتی سے لیکر معمولی جنتا تک ایک بھی ایسا آدمی نہیں ہے جو بھگوان بدھ کے نام سے نا آشنا ہو یا جو "نمو امیتابھیہ بدھایہ" منتر کا تلفظ نہ کرتا ہو ۔ چاروں طرف چینی زبانوں سے یہ منتر سنائی پڑتا ہے ۔ سی سے اندازہ کیا جا سکتا ہے کہ چین میں بودھ دھرم کا کتنا بردست اثر پڑا ۔ موجودہ بودھ دھرم کو جاننے کے لئے 3 بانوں کا آسرا لینا پڑیگا—پالی، چینی اور تبتی ۔ چونکہ چینی اور تبتی دونوں چینی ہی ہیں، اس لئے بودھ ھرم کا دو تہائی گیان چینی زبان میں ہی موجود ہے ۔ ین نے بودھ دھرم کے لگاتار پرچار، اس کی ترقی اور اس پھیلاؤ کے لئے زبردست کوشش کی ہے ۔ لیکن افسوس کا مقام کہ چینی بودھوں نے نہ تو ملک در ملک پرچار ہی کیا اور سنسکرت اور دوسری زبانوں کے پڑھنے کی ہی کوشش کی ۔ اس نتیجہ یہ ہوا کہ چینی بودھ عالم صرف اپنی مادری زبان ں ہی بودھ دھرم کا پرچار کر سکتے تھے ۔ دوسری بات یہ کہ ت کم ودیشی ایسے ہیں جو چینی زبان جانتے ہوں یا جنھیں نی زبان کا اتنا گیان ہے کہ وے چینی بودھ ادب کا مطالعہ کر ں ۔ چین میں بودھ دھرم کا جتنا وسیع خزانہ بھرا پڑا ہے کا دنیا کو اندازہ تک نہیں ہے ۔ جاپان میں چین سے ہی ھ دھرم گیا اور جاپان میں چینی زبان میں ہی بودھ دھرم کتابیں ہیں ۔ جاپانی بودھوں کی کوشش دراصل تعریف ابل ہے کہ انھوں نے سنسکرت اور دوسری ودیشی زبانوں کا رکہ مطالعہ کیا ۔ وے جانتے ہیں کہ بودھ دھرم کا ملک در پرچار کس طرح کرنا چاہئے ۔ ودیشی زبان میں لکھے اُن کے گرنتھ کچھ کم نہیں ہیں ۔ دنیا کے عالم یہ نہیں ہ کہ جاپانی بودھ دھرم اصل میں چینی بودھ دھرم ہے ۔ بودھ کے لئے یہ بڑے افسوس کی بات ہے کہ چینی بودھ تاریکی میں چھپا پڑا ہے ۔ ادھر حال میں چینی بودھوں در کچھ نئی جان پڑنے کے آثار دکھائی دے رہے ہیں اور کئی نوجوان ودیشی زبان سیکھنے کی کوشش کر رہے ہیں ۔ ی ساتھ ودیشی لوگ اب کچھ کچھ چینی زبان کا مہتو نے لگے ہیں اور چینی بودھ دھرم کا خزانہ لوگوں کا خیال طرف کھینچ رہا ہے ۔ سن 1933ع میں انگریز بودھ چاؤ-کوانگ کی دیکھ بھال میں دس یورپی بھکھو اور

भिक्खुनियाँ चीनी बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने के लिये चीन आये. आजकल के चीनी बौद्ध धर्म की तवारीख में यह एक ज़बरदस्त वाक़ेआ है.

एक सवाल यहाँ पर यह उठता है कि चीन में बौद्ध धर्म इतना ज्यादा ज़ोर और असर कैसे पैदा कर सकता है और चीन बौद्ध धर्म को इतनी तरक्क़ी और बढ़ावा कैसे दे सकता है ? इसका जवाब हमें चीनी जनता की राजकाजी तहज़ीब के अन्दर ढूँढ़ना होगा. चीनी तहज़ीब सुनहरे रास्ते के उसूलों को क़ुबूल करती है. वह एकता के ख्याल से भरी हुई है और तमाम दुनियावी कामों में अहिंसा उसका बुनियादी उसूल है. चीनी तहज़ीब के अन्दर भेद भाव और अलाहदगी का ख्याल नहीं है. चीनी सन्तों ने हमेशा से चीन की एक महासागर से उपमा देकर चीनियों के रहन सहन और दिल को बड़ा और वसीअ बनाने की तालीम दी है. इसीलिये दुनिया की हर एक तहज़ीब के जानिब चीनी इज्ज़त और स्वागत का भाव रखते हैं. एक चीनी धर्म ग्रन्थ में लिखा है "दुनिया की तमाम बड़ी से बड़ी तालीमें एक सी हैं. उनमें कोई भेद भाव और लड़ाई नहीं है. वे बग़ैर एक दूसरे को नुक़सान पहुँचाये साथ साथ चल सकती हैं." इसलिये चीन में दुनिया के तमाम धर्म एक साथ रह सकते हैं और वहाँ कोई मज़हबी लड़ाई झगड़ा नहीं होता, जबकि मज़हबी लड़ाई झगड़ों ने दूसरे मुल्कों की तवारीख़ को ख़ून आलूदा कर रखा है. बुद्ध और कनफ़्यूसिअस की तालीमें बुनियादी ढंग से एक हैं और भारत और चीन की तहज़ीब बहुत दूर तक एक दूसरे से मिलती जुलती हैं और इसलिये बौद्ध धर्म चीन में इतनी तरक़्क़ी कर सका.

आज दुनिया के विचारक धीरे धीरे बौद्ध धर्म की बड़ाई को समझते जा रहे हैं. यूरप और अमरीका के आलिम बौद्ध धर्म के मुताले में जी जान से लगे हैं. ऐसे लोगों की तादाद बढ़ती ही जाती है. इस मौजूदा ज़िन्दगी की नापायदारी से सभी वाक़िफ़ हो रहे हैं. दुनिया की बेहतरी का रास्ता अब उन्हें बौद्ध धर्म की बड़ाई, उसकी तालीम, उसके नेक आमाल और उसके नेक रहन सहन में दिखाई देता है. उसे देखते हुए बौद्धों का यह लाज़िमी फ़र्ज़ है कि वे बौद्ध धर्म के विदेशी प्रचार के लिये कोई कोशिश बाक़ी न रक्खें. आज दुनिया के बौद्धों का एक बेहतरीन फ़र्ज़ है कि वे मोहब्बत और आपसी मेल जोल के साथ बौद्ध धर्म के ज़रिये दुनिया के दिल को बदलने की ठोस कोशिश में लग जायें. क्या दुनिया के बौद्ध इस सुनहरे मौक़े को हाथ से खो जाने देंगे ?

بھکھونیاں چینی بودھ دھرم کی دیکشا لینے کے لئے چین آئے - آجکل کے چینی بودھ دھرم کی تواریخ میں یہ ایک زبردست واقعہ ہے .

ایک سوال یہاں پر یہ اُٹھتا ہے کہ چین میں بودھ دھرم اتنا زیادہ زور اور اثر کیسے پیدا کر سکتا ہے اور چین بودھ دھرم کو اتنی ترقی اور بڑھاوا کیسے دے سکتا ہے ؟ اِس کا جواب ہمیں چینی جنتا کی راجکاجی تہذیب کے اندر ڈھونڈھنا ہوگا . چینی تہذیب سنہرے راستے کے اُصولوں کو قبول کرتی ہے . وہ ایکتا کے خیال سے بھری ہوئی ہے اور تمام دنیاوی کاموں میں اہنسا اُس کا بنیادی اُصول ہے. چینی تہذیب کے اندر بھید بھاؤ اور علیحدگی کا خیال نہیں ہے . چینی سنتوں نے ہمیشہ سے چین کی ایک مہاساگر سے اُپما دیکر چینیوں کے رہن سہن اور دل کو بڑا اور وسیع بنانے کی تعلیم دی ہے . اِس لئے دنیا کی ہر ایک تہذیب کے جانب چینی عزت اور سواگت کے بھاؤ رکھتے ہیں . ایک چینی دھرم گرنتھ میں لکھا ہے "دنیا کی تمام بڑی سے بڑی تعلیمیں ایک سی ہیں . اُن میں کوئی بھید بھاؤ اور لڑائی نہیں ہے . وے بغیر ایک دوسرے کو نقصان پہونچائے ساتھ ساتھ چل سکتی ہیں ." اِس لئے چین میں دنیا کے تمام دھرم ایکساتھ رہ سکتے ہیں اور وہاں کوئی مذہبی لڑائی جھگڑا نہیں ہوتا، جبکہ مذہبی لڑائی جھگڑوں نے دوسرے ملکوں کی تواریخ کو خون آلودہ کر رکھا ہے . بدھ اور کنفوسیس کی تعلیمیں بنیادی ڈھنگ سے ایک ہیں اور بھارت اور چین کی تہذیب بہت دور تک ایک دوسرے سے ملتی جلتی ہیں اور اسی لئے بودھ دھرم چین میں اِتنی ترقی کر سکا .

آج دنیا کے وچارک دھیرے دھیرے بودھ دھرم کی بڑائی کو سمجھتے جا رہے ہیں . یورپ اور امریکہ کے عالم بودھ دھرم کے مطالعہ میں جی جان سے لگے ہیں . ایسے لوگوں کی تعداد بڑھتی ہی جاتی ہے . اِس موجودہ زندگی کی ناپائداری سے سبھی واقف ہو رہے ہیں . دنیا کی بہتری کا راستہ اب اُنہیں بودھ دھرم کی بڑائی، اُس کی تعلیم، اُس کے نیک اعمال اور اِس کے نیک رہن سہن میں دکھائی دیتا ہے . اِسے دیکھتے ہوئے بودھوں کا یہ لازمی فرض ہے کے وے بودھ دھرم کے ودیشی پرچار کے لئے کوئی کوشش باقی نہ رکھیں . آج دنیا کے بودھوں کا ایک بہترین فرض ہے کہ وے محبت اور آپسی میل جول کے ساتھ بودھ دھرم کے ذریعے دنیا کے دل کو بدلنے کی ٹھوس کوشش میں لگ جائیں . کیا دنیا کے بودھ اِس سنہرے موقع کو ہاتھ سے کھو جانے دینگے ؟

यूनानी विचार धारा और बौद्ध धर्म

श्री टी० विमलानन्द एम० ए०

बहुत से इतिहासकारों की यह राय रही है कि जब तक सिकन्दर अपनी बहादुर फ़ौज के साथ व्यास नदी के किनारे पर नहीं पहुँचा तब तक भारत पच्छिमी दुनिया के लिये एक राज़ था. भारत और यूनान के दरमियान ताल्लुक़ क़ायम करने का महत्त्व सिकन्दर को हीं दिया जाता है. यूरप के बड़े आलिमों के मुताबिक़ सिकन्दर के हमले के बाद ही मग़रबी मुल्कों के रहने वालों की नज़र भारती तहज़ीब पर पड़ी. इसमें शक नहीं कि पच्छिमी तहज़ीब का यह पहला क़दम भारती जनता को अपने मज़हब और तहज़ीब को बर्बाद करने वाला एक अछूत की शकल में दिखाई दिया होगा. भारती तहज़ीब को इस आफ़त से बचाने के लिये चन्द्रगुप्त सामने आये. चन्द्रगुप्त ने सेलूकस पर ज़बर्दस्त हमला किया. चन्द्रगुप्त की इस फ़तह का भारत पर गहरा असर पड़ा. इसके नतीजे की शकल में भारत शुमाल मग़रिब में अपनी क़ुदरती हद तक पहुंच गया. इसी वक़्त मगध राज की बुनियाद पड़ी और कई सदियों तक भारत दुश्मनों के हमलों से महफ़ूज़ रहा. इस बयान में कुछ ज़ोर नहीं कि सिकन्दर के हमले के नतीजे की शकल में भारतीयों ने पच्छिमी सियासी जमाअतों की नक़ल की. अब तक यह बात साबित नहीं हुई है कि किस किस बारे में भारती हुकूमती रवैये पर यूनान का असर पड़ा. जब तक इस बात का सबूत नहीं मिलता तब तक पच्छिमी दुनिया की जानिब भारत के क़र्ज़दार होने की बात अन्दाज़िया रहेगी. मौर्य राजाओं ने पड़ोसी यूनानियों के साथ नेक बरताव किया होगा. यह भारती हुकूमत करने वाले इतने बहादुर थे और इनका राज इतना फैला हुआ था कि इनके हमअसर विदेशियों को इनसे सियासी रिश्ता क़ायम करने में फ़ख़्र का ख़्याल होता होगा. दर असल सिकन्दर के हमले का असर शुमाल मग़रिब तक महदूद रहा.

हरोदत्त नामी यूनानी इतिहासकार—जिसका जन्म ई० पू० 484 में हुआ था—के मुताबिक़ भारत के बाशिन्दे मिस्र के रहने वालों की तरह गोरे थे. उनकी पोशाक सादी थी और वे तीर कमान लेकर बहादुरी के साथ यूनानियों से लड़ते थे. यह बासबूत बात है कि भारती फ़ौजों ने सालिमस में जंग की थी. वह जंग तवारीख़ में अपनी ख़ास

یونانی وچاردھارا اور بودھ دھرم

شری ٹی . وملانند ایم . اے .

بہت سے اِتہاسکاروں کی یہ رائے رہی ھے کہ جب تک سکندر اپنی بہادر فوج کے ساتھ ویاس ندی کے کنارے پر نہیں پہونچا تب تک بھارت پچھمی دنیا کے لئے ایک راز تھا . بھارت اور یونان کے درمیان تعلق قایم کرنے کا مہتو سکندر کو ھی دیا جاتا ھے . یورپ کے بڑے عالموں کے مطابق سکندر کے حملہ کے بعد ھی مغربی ملکوں کے رھنے والوں کی نظر بھارتی تہذیب پر پڑی . اِس میں شک نہیں کہ پچھمی تہذیب کا یہ پہلا قدم بھارتی جنتا کو اپنے مذھب اور تہذیب کو برباد کرنے والا ایک اچھوت کی شکل میں دکھائی دیا ھوگا . بھارتی تہذیب کو اِس آفت سے بچانے کے لئے چندر گپت سامنے آئے . چندر گپت نے سیلوکس پر زبردست حملہ کیا . چندر گپت کی اِس فتح کا بھارت پر گہرا اثر پڑا . اِس کے نتیجے کی شکل میں بھارت شمال مغرب میں اپنی قدرتی حد تک پہونچ گیا . اِسی وقت مگدھ راج کی بنیاد پڑی اور کئی صدیوں تک بھارت دشمنوں کے حملوں سے محفوظ رھا . اس بیان میں کچھ زور نہیں کہ سکندر کے حملے کے نتیجے کی شکل میں بھارتیوں نے پچھمی سیاسی جماعتوں کی نقل کی . اب تک یہ بات ثابت نہیں ھوئی ھے کہ کس کس بارے میں بھارتی حکومتی رویہ پر یونان کا اثر پڑا . جب تک اس بات کا ثبوت نہیں ملتا تب تک پچھمی دنیا کی جانب بھارت کے قرضدار ھونے کی بات اندازیہ رھیگی . موریہ راجاؤں نے پڑوسی یونانیوں کے ساتھ نیک برتاؤ کیا ھوگا . یہ بھارتی حکومت کرنے والے اِتنے بہادر تھے اور اِن کا راج اِتنا پھیلا ھوا تھا کہ اِن کے ھمعصر ودیشیوں کو اِن سے سیاسی رشتہ قایم کرنے میں فخر کا خیال ھوتا ھوگا . دراصل سکندر کے حملہ کا اثر شمال مغرب تک محدود رھا .

ھرودت نامی یونانی اِتہاسکار—جس کا جنم ع . پ . 484 میں ھوا تھا—کے مطابق بھارت کے باشندے مصر کے رھنے والوں کی طرح گورے تھے . اُن کی پوشاک سادی تھی اور وے تیر کمان لیکر بہادری کے ساتھ یونانیوں سے لڑتے تھے . یہ باثبوت بات ھے کہ بھارتی فوجوں نے سالیمس میں جنگ کی تھی . وہ جنگ تواریخ میں اپنی خاص

जगह रखती है. भारती उस लड़ाई में मिस्री फ़ौज के साथ थे. इससे यह पूरी तरह साबित होता है कि सिकन्दर के हमले से पहले यूनानियों को भारत और भारतियों के बारे में जानकारी थी. उस वक़्त मिस्र राज बहेरा रूम (भूमध्य सागर) से सिन्ध नदी तक फैला हुआ था. हमें यह देखना चाहिये कि भारती ख़्यालात का असर यूनानी अदब पर किस तरह पड़ा. यूनानियों की दिलचस्पी सिर्फ़ जंगी हथकन्डों तक ही महदूद नहीं थी, बल्कि उन्होंने और बहुत सी सनअती कारीगरियों की बुनियाद डाली. दुनियावी तहज़ीब और अदब को उनकी देन ज़बर्दस्त है. वे इज़्ज़त और ताज्जुब के साथ मिस्र की तहज़ीब की जानिब देखते थे. उन्होंने मिस्र वालों से आवागवन (दोबारा पैदा होना) का उसूल क़ुबूल किया. मिस्र वाले इस उसूल के लिये भारती तहज़ीब के क़र्ज़दार थे. कुछ बातों में पेथागोर का धर्म बौद्ध और जैन धर्म से बराबरी का दर्जा रखता है. उसके उसूलों के गहरे पहलुओं को जानने से यह मालूम होता है कि पेथागोर को उपनिषदों की जानकारी ज़रूर थी. 'यूनानी वेचारक' नामी अपनी किताब में कास लिखता है—"इसमें कोई शक नहीं कि पेथागोर को, जोकि भगवान बुद्ध का]मअसर था, मिस्र के ज़रिये पूरब के मुल्कों की जानकारी]ी. यह याद रखने की बात है कि जबकि पेथागोर आयोनिया]ें रहता था, उस वक़्त एशिया के यूनानी ईरानी राज के]ुनियाद डालने वाले कुरु के मातहत थे." "भारत की देन"]ामी अपनी किताब में रालिन्सन ने कुछ भारती और यूनानी]डितों के दरमियान एक मज़हबी बहस मुबाहिसे का बयान]या है. रालिन्सन के ही अल्फ़ाज़ में यह बयान इस तरह]—"इक्सेबियस अपने हमअसर लेखक हरमोनियस]ारस्टोक्समस के बताए एक तहरीर का बयान देता है. इस]हरीर के मुताबिक़ कुछ भारती पंडितों ने एथेंस जाकर]क़रात से मज़हबी बहस मुबाहिसा किया था. उन पंडितों] सुक़रात से उसके मज़हब की ग़रज़ पूछी. जवाब में]क़रात ने कहा कि इन्सानी ज़िन्दगी के पेशे की खोज है,]स पर एक पंडित ने हँसकर कहा—"जब तक ईश्वर का]ल्म नहीं तब तक इन्सानियत का इल्म किस तरह हो]कता है?' इस बात पर नुक्ताचीनी करते हुए वह आलिम]ताता है—"अगर हम इक्सेबियस के इस बयान पर]तबार करें तो हमें चाहिये कि इन दोनों मुल्कों के रिश्ते]बारे में अपनी पुरानी रायों को दोहरायें."

इसकन्दरिया के क्लेमेन्ट ने, जो ईसा से दो सदियों]द हुआ था, लिखा है कि बौद्ध धर्म भारती अदबों में]पनी ख़ास जगह रखता है. उसने बार बार इस बात को]तहरीर किया है कि इसकन्दरिया में बौद्ध धर्म राइज है]र यूनानी लोग अपने अदब के लिये बौद्धों के क़र्ज़दार

جگہ رکھتی ہے ۔ بھارتی اُس لڑائی میں مصری فوج کے ساتھ تھے۔ اِس سے یہ پوری طرح ثابت ہوتا ہے کہ سکندر کے حملے سے پہلے یونانیوں کو بھارت اور بھارتیوں کے بارے میں جانکاری تھی۔ اُس وقت مصر راج بحیرہ روم (بھومدھیہ ساگر) سے سندھ ندی تک پھیلا ہوا تھا ۔ ہمیں یہ دیکھنا چاہئے کہ بھارتی خیالات کا اثر یونانی ادب پر کس طرح پڑا ۔ یونانیوں کی دلچسپی صرف جنگی ہتھکنڈوں تک ہی محدود نہیں تھی' بلکہ اُنہوں نے اور بہت سی صنعتی کاریگریوں کی بنیاد ڈالی ۔ دنیاوی تہذیب اور ادب کو اُن کی دین زبردست ہے ۔ وے عزت اور تعجب کے ساتھ مصر کی تہذیب کی جانب دیکھتے تھے ۔ اُنہوں نے مصر والوں سے آواگون (دو بارہ پیدا ہونا) کا اُصول قبول کیا ۔ مصر والے اِس اُصول کے لئے بھارتی تہذیب کے قرضدار تھے ۔ کچھ باتوں میں پیتھا گور کا دھرم بودھ اور جین دھرم سے برابری کا درجہ رکھتا ہے ۔ اُس کے اصولوں کے گہرے پہلوؤں کو جاننے سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ پیتھا گور کو اُپنشدوں کی جانکاری تھی ۔ 'یونانی وچارک' نامی اپنی کتاب میں کاس لکھتا ہے—"اِس میں کوئی شک نہیں کہ پیتھاگور کو' جو کہ بھگوان بدھ کا ہمعصر تھا' مصر کے ذریعے پورب کے ملکوں کی جانکاری تھی ۔ یہ یاد رکھنے کی بات ہے کہ جب کہ پیتھاگور آیونیا میں رہتا تھا' اُس وقت ایشیا کے یونانی ایرانی راج کے بنیاد ڈالنے والے کرو کے ماتحت تھے ۔" "بھارت کی دین" نامی اپنی کتاب میں رالنسن نے کچھ بھارتی اور یونانی پنڈتوں کے درمیان ایک مذہبی بحث مباحثے کا بیان دیا ہے۔ رالنسن کے ہی الفاظ میں یہ بیان اس طرح ہے—"ایوسیبس اپنے ہمعصر لیکھک ہرمونیس ارستو کسمس کے بتائے ایک تحریر کا بیان دیتا ہے ۔ اِس تحریر کے مطابق کچھ بھارتی پنڈتوں نے ایتھنس جاکر سقراط سے مذہبی بحث مباحثہ کیا تھا ۔ اُن پنڈتوں نے سقراط سے اِس کے مذہب کی غرض پوچھی ۔ جواب میں سقراط نے کہا کہ اِنسانی زندگی کے پیشے کی کھوج ہے' جس پر ایک پنڈت نے ہنسکر کہا—"جب تک ایشور کا علم نہیں تب تک انسانیت کا علم کس طرح ہو سکتا ہے ؟" اِس بات پر نکتہ چینی کرتے ہوئے وہ عالم بتاتا ہے—' اگر ہم ایوسیبیس کے اِس بیان پر اعتبار کریں تو ہمیں چاہئے کہ اِن دونوں ملکوں کے رشتے کے بارے میں اپنی پرانی رایوں کو دوہرائیں ۔"

اِسکندریہ کے کلمینٹ نے' جو عیسیٰ سے دو صدیوں بعد ہوا تھا' لکھا ہے کہ بودھ دھرم بھارتی ادبوں میں اپنی خاص جگہہ رکھتا ہے ۔ اُس نے بار بار اِس بات کو بھی تحریر کیا ہے کہ اِسکندریہ میں بودھ دھرم رائج ہے اور یونانی لوگ اپنے ادب کے لئے بودھوں کے قرضدار

थे. आगे वे लिखते हैं कि बुद्ध के पैरोकार आवागवन (तनासुख) में ऐतबार करते हैं और मिड्स जैसे मक़बरों की पूजा करते हैं जिनमें उनके देवता (भगवान बुद्ध) की हड्डियां दफ़न हैं. बौद्ध लोग अपनी भक्ती की वजह से अपने गुरु को देवता की शकल में देखते हैं.

इस तहरीर से दुनिया के इस हिस्से में बौद्ध पेशवाओं के कामों के ऊपर बड़ी रोशनी पड़ती है. उसी वक़्त दूसरे बौद्ध राजा कनिष्क का नमूद हुआ. उसके राज की हद रोमन राज से पांच सौ मील तक थीं. रोमनों से कनिष्क का मेल जोल था. इसकन्दरिया नास्टिक मज़हब के फैलाव के लिये वसीअ मैदान बना. मुल्क मुल्क से आये तिजारत करने वाले वहाँ पर मिलते थे. वहीं पर टालेमी ने दुनिया के मशहूर कुतुबख़ाने को क़ायम किया था. ईसाई मज़हब के फैलने की वजह से एथेंस तालीमी केन्द्र नहीं रहा. नतीजे की शकल में इसकन्दरिया को तरक़्क़ी की चोटी पर पहुंचने का मक़दूर हासिल हुआ. बहुत हद तक नास्टिक मज़हब आजकल की थियास्फ़ी से मिलता जुलता है. नास्टिक मज़हब का बयान देते हुए लिखा है कि वह यूनानी लिबास में एक पुराना मज़हब है. नास्टिक मज़हब का निचोड़ है—"दुख और डर" यह भगवान बुद्ध के चार आर्य सत्यों का हिस्सा सा ही मालूम होता है.

यूनान और आस पास के मुल्कों में बौद्ध धर्म को बढ़ाने के काम के ऊपर अशोक के पत्थरों पर की लिखी हुई तहरीरें बहुत रोशनी डालती हैं. इनके अलावा यूनानी राजा मिलिन्द ने भिक्षु नागसेन से बौद्ध धर्म का संजीदगी के साथ मुताला किया था.

تھے. آگے وے لکھتے ھیں کہ بدھ کے پیروکار آواگون (تناسخ) میں اعتبار کرتے ھیں اور مڈس جیسے مقبروں کی پوجا کرتے ھیں جن میں اُن کے دیوتا (بھگوان بدھ) کی ھڈیاں دفن ھیں. بودھ لوگ اپنی بھکتی کی وجہہ سے اپنے گرو کو دیوتا کی شکل میں دیکھتے ھیں .

اِس تحریر سے دنیا کے اُس حصہ میں بودھ پیشواؤں کے کاموں کے اُوپر بڑی روشنی پڑتی ھے . اُسی وقت دوسرے بودھ راجا کنشک کا نمود ھوا . اُس کے راج کی حد رومن راج سے پانچسو میل تک تھی . رومنوں سے کنشک کا میل جول تھا . اسکندریہ ناسٹک مذھب کے پھیلاؤ کے لئے وسیع میدان بنا . ملک ملک سے آئے تجارت کرنے والے وھاں پر ملتے تھے . وھیں پر ٹالیمی نے دنیا کے مشہور کتب خانہ کو قایم کیا تھا . عیسائی مذھب کے پھیلنے کی وجہہ سے ایتھنس تعلیمی کیندر نہیں رھا . نتیجے کی شکل میں اسکندریہ کو ترقی کی چوٹی پر پہونچنے کا مقدور حاصل ھوا . بہت حد تک ناسٹک مذھب آجکل کی تھیاسفی سے ملتا جلتا ھے . ناسٹک مذھب کا بیان دیتے ھوئے لکھا ھے کہ وہ یونانی لباس میں ایک پرانا مذھب ھے . ناسٹک مذھب کا نچوڑ ھے— "دکھ اور ڈر" . یہ بھگوان بدھ کے چار آریہ ستیوں کا حصہ سا ھی معلوم ھوتا ھے .

یونان اور آس پاس کے ملکوں میں بودھ دھرم کو بڑھانے کے کام کے اُوپر اشوک کے پتھروں پر کی لکھی ھوئی تحریریں بہت روشنی ڈالتی ھیں . اِن کے علاوہ یونانی راجا ملند نے بھکشو ناگسین سے بودھ دھرم کا سنجیدگی کے ساتھ مطالعہ کیا تھا .

हिन्दुस्तान की कल्चर पर बौद्ध मज़हब की छाप

आचार्य धर्मानन्द कोसम्बी

अहिंसा धर्म का ज़रिया

इन्द्र के मातहत आर्य लोगों ने सप्त सिंधु (सिंधु और पंजाब का) मुल्क फ़तह किया और इस मुल्क में यज्ञ करने की फ़िलासफ़ी को बहुत बढ़ावा दिया. उस वक्त वस्ती हिन्दुस्तान में क़ुर्बानी के ज़रिये यज्ञ करने का रिवाज नहीं था. इन्द्र ने उस मुल्क पर हमला किया और उसे देवकी के बेटे कृष्ण ने पीछे हटा दिया. यह बात ख़ास रिगवेद में आती है. इन्द्र के हमले में सर्फ़ मुल्क जीतने की बात नहीं थी, इसमें फ़िलासफ़ी का झगड़ा भी था. यज्ञयाग की फ़िलासफ़ी कृष्ण पसंद करते तो शायद यह हमला न होता.

कृष्ण को घोर आंगिरस रिषि ने रूहानी इबादत की तालीम दी. इस परिस्तिश की उजरत इबादत, ख़ैरात, नेक अफ़आल, अहिंसा और रास्तगोई थी. (अथ यत्तपोदान मार्जव हिंसा सत्यवचनमिति ता अस्य दक्षिणा: छान्दोग्य उपनिषद 3-17-46). जैन मज़हबी नामा निगारों का कहना है कि कृष्ण के गुरु तीर्थंकर नेमिनाथ और घोर आंगिरस दोनों एक ही शख़्स के नाम थे. कुछ भी हो इससे एक बात साबित होती है कि वस्ती हिन्दुस्तान पर वेदों का असर पड़ने के पहले एक तरह का अहिंसा धर्म राइज था और इसके सब से बड़े पैरोकार देवकी के बेटे कृष्ण थे.

जैनों के अस्तानांग सूत्र में (सफ़ा 26) यह बात आती है कि भारत और एरवत मुल्कों में पहला और आख़िरी छोड़कर बाक़ी 22 तीर्थंकर चातुरयाम धर्म का उपदेश इस तरह देते हैं—सब जानदारों की क़ुर्बानी को छोड़ना, उसी तरह झूठ का छोड़ना, सब अदत्तादान (चोरी वग़ैरा) का छोड़ना, सब बहिर्धा आदानों (परिग्रहों) का छोड़ना, यह फ़र्ज़ी कहानी हो सकती है; पर छान्दोग्य उपनिषद में घोर अंगिरस की जो नसीहत है, उससे और हमेशा से चली आई हुई इस कहानी से मुक़ाबला करके देखा जाय तो यह बात साफ़ हो जाती है कि कृष्ण के वक्त में वस्ती हिन्दुस्तान में अहिंसा का मतलब लोग जानते थे.

मज्झिमनिकाय के (बारहवें) महासहिनाद सुत्त में बुद्ध के बोधिसत्वावस्था (क़ब्ल पैदाइश) में चार तरह की इबादत का अमल करने का बयान मिलता है. इबादत के चार तरीक़े यानी तपस्विता, रूक्षता, जगुप्सा और प्रविविक्तता

ھندستان کی کلچر پر بودھ مذھب کی چھاپ

آچاریہ دھرمانند کو سمبی

اھنسا دھرم کا ذریعہ

اندر کے ماتحت آریہ لوگوں نے سپت سندھو (سندھ اور پنجاب کا) ملک فتح کیا اور اس ملک میں یگیہ کرنے کی فلسفی کو بہت بڑھاوا دیا . اُس وقت وسطی ھندستان میں قربانی کے ذریعہ یگیہ کرنے کا رواج نہیں تھا . اِندر نے اِس ملک پر حملہ کیا اور اُسے دیو کی کے بیٹے کرشن نے پیچھے ھٹا دیا . یہ بات خاص رگوید میں آتی ھے . اِندر کے حملے میں صرف ملک جیتنے کی بات نہیں تھی' اِس میں فلسفی کا جھگڑا بھی تھا . یگیہ یاگ کی فلسفی کرشن پسند کرتے تو شاید یہ حملہ نہ ھوتا .

کرشن کو گھور آنگیرس رشی نے روحانی عبادت کی تعلیم دی . اس پوستھش کی اُجرت عبادت' خیرات' نیک افعال' اھنسا اور راست گوئی تھی . (اَتھ یتتوپی دانمارجوھنسا ستیہ وچن متی تا آسیہ دکشنہ : چھاندوگیہ اُپنشد 3-17-4-6) . جین مذھبی نامہ نگاروں کا کہنا ھے کہ کرشن کے گرو تیرتھنکر نیمیناتھ اور گھور انگیرس دنوں ایک ھی شخص کے نام تھے . کچھ بھی ھو اِس سے ایک بات ثابت ھوتی ھے کہ وسطی ھندستان پر ویدوں کا اثر پڑنے کے پہلے ایک طرح کا اھنسا دھرم رائج تھا اور اِس کے سب سے بڑے پیروکار دیوکی کے بیٹے کرشن تھے .

جینوں کے استانانگ سوتر میں (صفحہ 266) یہ بات آتی ھے کہ بھارت اور ایروت ملکوں میں پہلا اور آخری چھوڑ کر باقی تیرتھنکر چاتوریام دھرم کا اُپدیش اِس طرح دیتے ھیں— سب جانداروں کی قربانی کا چھوڑنا' اُسی طرح جھوٹ کا چھوڑنا' سب ادتادان (چوری وغیرہ) کا چھوڑنا' سب بہردھا آدانوں (پریگرھوں) کا چھوڑنا . یہ فرضی کہانی ھو سکتی ھے ؛ پر چھاندوگیہ اُپنشد میں گھور انگیرس کی جو نصیحت ھے' اُس سے اور ھمیشہ سے چلی آئی ھوئی اِس کہانی سے مقابلہ کر کے دیکھا جائے تو یہ بات صاف ھو جاتی ھے کہ کرشن کے وقت میں وسطی ھندستان میں اھنسا کا مطلب لوگ جانتے تھے .

منجھی ملکایہ کے (بارھویں) مہاسیھناد سوت میں بدھ کے بودھستاوستھا (قبل پیدائش) میں چار طرح کی عبادت کا عمل کرنے کا بیان ملتا ھے . عبادت کے چار طریقے یعنی تپسویتا' روکشیتا' جگوپسا اور پرویوکتا

हैं. नंगे रहना, हथेलियों के ऊपर ही भीख मांग कर खाना, बाल तोड़ के निकालना, कांटों की खाट पर लेटना वग़ैरा इस तरह की जिस्मानी तकलीफ़ बरदाश्त करने को तपस्विता कहते थे. कई साल की धूल वैसी ही बदन पर पड़ी रहने देना और उसको कोई न निकाले उसको रूक्षता कहते थे. इस रूक्षता की ज़्यादती की मिसाल पुराणों में भी पाई जाती है, रिषी लोगों के जिस्म पर दीमक का घर बनना और सिर्फ़ उनकी आंखें बाहर दिखाई देने के बयानात आते हैं. पानी की बूँद तक पर भी रहम करना, इसको जोगुप्सा कहते थे—जोगुप्सा यानी हिंसा (हत्या) से नफ़रत.

इन बातों से यह जाना जा सकता है कि अहिंसा या दया को इबादत का एक तरीक़ा मानते थे. इन तरीक़ों पर अमल करने वाले बुद्ध के पहले मौजूद थे. उन लोगों में कृष्ण के गुरु घोर आंगिरस—जैनों के कहने के मुताबिक़—का होना मुमकिन है. पर उनके पास गिरोह नहीं थे और जमाअती ढंग से वह अहिंसा का प्रचार नहीं करते थे. इसी वजह से कुरु देश में यज्ञयाग की अहमियत बढ़ गई और अहिंसा के ख़्यालात बरबाद हो गये.

ज़्यादातर मग़रिबी आलिमों की यह राय है कि जैनों के 23 वें तीर्थंकर पार्श्व तारीख़ी शख़्स थे. उनकी ज़िन्दगी में भी काल्पनिक बातें हैं ही, मगर पहले तीर्थंकरों की ज़िन्दगी में जो बातें हैं, उनसे बहुत कम हैं. इस सब में ख़ास तारीख़ी बात यह है कि चौबीसवें तीर्थंकर वर्धमान के 178 साल पहले पार्श्व तीर्थंकर की मुक्ति (मौत) हुई.

वर्धमान या महावीर तीर्थंकर बुद्ध के हमअसर थे, यह बात मशहूर है. बुद्ध का जन्म वर्धमान के जन्म के कम से कम 15 साल बाद हुआ होगा. इसका मतलब यह हुआ कि बुद्ध का जन्म और पार्श्व तीर्थंकर की मुक्ति इन दोनों में 193 साल का फ़र्क़ था. मरने के पहले क़रीब क़रीब 50 साल तो पार्श्व तीर्थंकर उपदेश देते रहे होंगे. इस तरह बुद्ध के जन्म के क़रीब 243 साल पहले पार्श्व मुनि ने उपदेश देने का काम शुरू किया. निग्रन्थ श्रमनों की जमाअत (संघ) भी उन्हीं ने क़ायम की होगी.

परीक्षित राजा के राज के ज़माने से कुरु देश में वैदिक फ़िलासफ़ी की शुरुआत हुई. उसके बाद जन्मेजय गद्दी पर आया और उसने कुरु देश में महायज्ञ करके वैदिक धर्म का झंडा फहराया. इसी वक़्त काशी देश में पार्श्व तीर्थंकर एक नई फ़िलासफ़ी की बुनियाद डाल रहे थे. पार्श्व की पैदाइश वाराणसी शहर में—अश्वसेन नामी राजा की वामा नामी रानी से—हुई, ऐसी कहानी जैन ग्रन्थों में आई है. उस वक़्त हाकिम ज़मींदारों को राजा कहते थे. ऐसे एक राजा को यह बेटा होना कोई नामुमकिन बात नहीं है. पार्श्व की नई फ़िलासफ़ी काशी राज में

ھیں . ننگے رھنا' ھتیلیوں کے اُوپر ھی بھیک مانگ کر کھانا' بال توڑ کے نکالنا' کانٹوں کی کھاٹ پر لیٹنا وغیرہ اِس طرح کی جسمانی تکالیف برداشت کرنے کو تپسویتا کہتے تھے . کئی سال کی دھول ویسی ھی بدن پر پڑی رھنے دینا اور اُس کو کوئی نہ نکالے اِس کو روکشتا کہتے تھے . اِس روکشتا کی زیادتی کی مثال پورانوں میں بھی پائی جاتی ھے . رشی لوگوں کے جسم پر دیمک کا گھر بننا اور صرف اُن کی آنکھیں باھر دکھائی دینے کے بیانات آتے ھیں . پانی کی بوند تک پر بھی رحم کرنا' اِس کو جوگوپسا کہتے تھے—جو گوپسا یعنی ھنسا (ھتیا) سے نفرت .

اُن باتوں سے یہ جانا جاسکتا ھے کہ اھنسا یا دیا کو عبادت کا ایک طریقہ مانتے تھے . اِن طریقوں پر عمل کرنے والے بدھ کے پہلے موجود تھے . اُن لوگوں میں کرشن کے گرو گھور آنگیرس —جینوں کے کہنے کے مطابق— کا ھونا ممکن ھے . پر اُن کے پاس گروہ نہیں تھے اور جماعتی ڈھنگ سے وہ اھنسا کا پرچار نہیں کرتے تھے . اِسی وجہہ سے کرو دیش میں یگیہ یاگ کی اھمیت بڑھ گئی اور اھنسا کے خیالات برباد ھو گئے .

زیادہ تر مغربی عالموں کی یہ رائے ھے کہ جینوں کے 23 ویں تیرتھنکر پاشرو تاریخی شخص تھے . اُن کی زندگی میں بھی کالپنک باتیں ھیں ھی ؛ مگر پہلے تیرتھنکروں کی زندگی میں جو باتیں ھیں' اُن سے بہت کم ھیں . اِس سب میں خاص تاریخی بات یہ ھے کہ چوبیسویں تیرتھنکر وردھمان کے 178 سال پہلے پاشرو تیرتھنکر کی مکتی (موت) ھوئی .

وردھمان یا مہاویر تیرتھنکر بدھ کے ھمعصر تھے' یہ بات مشہور ھے . بدھ کا جنم وردھمان کے جنم کے کم سے کم 15 سال بعد ھوا ھوگا . اِس کا مطلب یہ ھوا کہ بدھ کا جنم اور پاشرو تیرتھنکر کی مکتی اِن دونوں میں 193 سال کا فرق تھا . مرنے کے پہلے قریب قریب 50 سال تو پاشرو تیرتھنکر اُپدیش دیتے رھے ھونگے . اِس طرح بدھ کے جنم کے قریب 243 سال پہلے پاشرو منی نے اُپدیش دینے کا کام شروع کیا . نِرگرنتھ شرمنوں کی جماعت (سنگھ) بھی اُنھوں نے قایم کی ھوگی .

پریکشت راجا کے راج کے زمانے سے کرو دیش میں ویدک فلاسفی کی شروعات ھوئی . اُس کے بعد جنمیجئے گدی پر آیا اور اُس نے کرو دیش میں مہایگیہ کر کے ویدک دھرم کا جھنڈا پھرایا . اِسی وقت کاشی دیش میں پاشرو تیرتھنکر ایک نئی فلاسفی کی بنیاد ڈال رھے تھے . پاشرو کی پیدائش بارانسی شہر میں— اشوسین نامی راجا کی واما نامی رانی سے—ھوئی' ایسی کہانی جین گرنتھوں میں آئی ھے . اُس وقت حاکم زمینداروں کو راجا کہتے تھے . ایسے ایک راجا کو یہ بیٹا ھونا کوئی ناممکن بات نہیں ھے . پاشرو کی نئی فلاسفی کاشی راج میں

अच्छी तरह टिकी होगी; क्योंकि बुद्ध को भी अपने पहले चेलों को खोजने के लिये वाराणसी जाना पड़ा. पार्श्व का धर्म यानी पहले कही हुई अहिंसा, सच्चाई, अस्तेय और अपरिग्रह इन चार उसूलों का था. इतने पुराने जमाने में अहिंसा को इतनी ज़बर्दस्त शकल देने की यह पहली ही मिसाल है.

सिनाई पहाड़ पर मूसा को ईश्वर ने जो दस फ़रमान सुनाये, उनमें क़ुर्बानी मत करो, इसका भी फ़रमान था. पर उन अहकामों को सुनकर मूसा और उसके शागिर्द पैलिस्टाइन में घुसे और वहाँ ख़ून की नदियाँ बहाईं ! कितने लोगों को क़त्ल किया और कितनी नौजवान औरतों को पकड़ कर आपस में तक़सीम कर लिया, इन बातों को अहिंसा कहना हो तो फिर हिंसा किसे कहा जाय ? मतलब यह है कि पार्श्व के पहले दुनिया में सच्ची अहिंसा से भरा हुआ धर्म या असलियत थी ही नहीं.

पार्श्व मुनि ने एक और भी बात की. उन्होंने अहिंसा को सच्चाई, अस्तेय, और अपरिग्रह इन तीनों उसूलों के साथ जकड़ दिया. इस वजह से पहले जो अहिंसा रिषि मुनियों के व्यौहार तक ही थी और जनता के बरताव में जिसकी कोई जगह न थी, वह अब इन उसूलों की वजह से सामाजिक या व्यौहार वाली चीज़ हो गई.

पार्श्व मुनि ने तीसरी बात यह की कि अपने नये धर्म के प्रचार के लिये संघ बनाया. बौद्ध दर्शन से हमें इस बात का पता लगता है कि बुद्ध के वक़्त जो जमाअतें मौजूद थीं उन सब में जैन साधू और साधू औरतों की जमाअत सब से बड़ी थी.

ऊपर के बयान से मालूम होगा कि रिषि मुनियों की तपस्या की शकल वाली अहिंसा से पार्श्व मुनि की दुनियावी भलाई की अहिंसा का जन्म हुआ.

बुद्ध की मुख़्तसिर सवानेह उम्री (जीवनी)

बुद्ध के बारे में बहुत सी जानकारी आजकल आम लोगों को हासिल हैं, फिर भी ज्यादातर बुद्ध जीवनी "बुद्ध चरित काव्य" और "ललित वस्तर" इन दो ग्रन्थों के सहारे लिखे जाने की वजह से ऐसी ज़बानी कहानियों से, जैसे बुद्ध एक बड़े राजा का बेटा था वग़ैरा, बिलकुल फ़र्ज़ी नहीं हैं. इसलिये यहाँ पाली ग्रन्थों की बिना पर मुख़्तसिर में बुद्ध जीवनी दे देना मुनासिब जान पड़ता है.

कौसल देश के उत्तर में शाक्य क्षत्रियों का एक छोटा सा प्रजातन्त्र (डेमोक्रेटिक) राज था. उस वक़्त इस तरह के तीन चार राज थे. इन प्रजातन्त्र राज्यों में हुकूमत बराबर चलने वाली चीज़ नहीं थी. गाँव गाँव के ज़मींदार होते थे जो राजा कहलाते थे. वे एक जगह पर जमा होकर अपना

اچھی طرح ٹکی ہوگی ؛ کیونکہ بدھ کو بھی اپنے پہلے چیلوں کو کھوجنے کے لئے وارانسی جانا پڑا ۔ پاشرو کا دھرم یعنی پہلے کہی ہوئی اہنسا' سچائی' استیہ اور اپریگرہ اِن چار اُصولوں کا تھا ۔ اِتنے پرانے زمانے میں اہنسا کو اِتنی زبردست شکل دینے کی یہ پہلی ہی مثال ہے ۔

سناعی پہاڑ پر موسیٰ کو خدا نے جو دس فرمان سنائے' اِن میں قربانی مت کرو' اِس کا بھی فرمان تھا ۔ پر اُن احکام کو سن کر موسیٰ اور اُس کے شاگرد پیلسٹائن میں گھسے اور وہاں خون کی ندیاں بہائیں ! کتنے لوگوں کو قتل کیا اور کتنی نوجوان عورتوں کو پکڑ کر آپس میں تقسیم کر لیا' اِن باتوں کو اہنسا کہنا ہو تو پھر ہنسا کسے کہا جائے ؟ مطلب یہ ہے کہ پاشرو کے پہلے دنیا میں سچی اہنسا سے بھرا ہوا دھرم یا اصلیت بھی ہی نہیں ۔

پاشرو منی نے ایک اور بھی بات کی ۔ اُنہوں نے اہنسا کو سچائی' استیہ اور اپریگرہ اِن تینوں اُصولوں کے ساتھ جکڑ دیا ۔ اِس وجہہ سے پہلے جو اہنسا رشی منیوں کے بیوہار تک ہی تھی' اور جنتا کے برتاؤ میں جس کی کوئی جگہہ نہ تھی' وہ اب اِن اُصولوں کی وجہہ سے سماجک یا بیوہار والی چیز ہو گئی ۔

پاشرو منی نے تیسری بات یہ کی کہ اپنے نئے دھرم کے پرچار کے لئے سنگھ بنایا ۔ بودھ درشن سے ہمیں اِس بات کا پتہ لگتا ہے کہ بدھ کے وقت جو جماعتیں موجود تھیں' اُن سب میں جین سادھو اور سادھو عورتوں کی جماعت سب سے بڑی تھی ۔

اُوپر کے بیان سے معلوم ہوگا کہ رشی منیوں کی تپسیا کی شکل والی اہنسا سے پاشرو منی کی دنیاوی بھلائی کی اہنسا کا جنم ہوا ۔

بدھ کی مختصر سوانح عمری (جیونی)

بدھ کے بارے میں بہت سی جانکاری آجکل عام لوگوں کو حاصل ہیں' پھر بھی زیادہتر بدھ جیونی "بدھ چرت کاویہ" اور "للت وستر" اِن دو گرنتھوں کے سہارے پر لکھے جانے کی وجہ سے ایسی زبانی کہانیوں سے' جیسے بدھ ایک بڑے راجا کا بیٹا تھا وغیرہ' بالکل فرضی نہیں ہیں ۔ اِس لئے یہاں پالی گرنتھوں کی بنا پر مختصر میں بدھ جیونی دے دینا مناسب جان پڑتا ہے ۔

کوسل دیش کے اُتر میں شاکیہ چھتریوں کا ایک چھوٹا سا پرجاتنتر (ڈیموکریٹک) راج تھا ۔ اُس وقت اِس طرح کے تین چار راج تھے ۔ اِن پرجاتنتر راجیوں میں حکومت برابر چلنے والی چیز نہیں تھی ۔ گاؤں گاؤں کے زمیندار ہوتے تھے جو راجا کہلاتے تھے ۔ وے ایک جگہ پر جمع ہوکر اپنا

एक हाकिम चुनते थे जो महाराज कहलाता था. वह किसी मुक़र्रर वक़्त के लिये नहीं चुना जाता था. जब तक उसे सब राजाओं की राय (वोट) हासिल रहती थी तब तक वह हाकिम का काम करता था, वर्ना दूसरा अफ़सर चुना जाता था. कोई बड़ा काम आ पड़ने पर सारे राज संघ की राय ली जाया करती थी, दूसरे काम यह अफ़सर और सिपहसालार वग़ैरा किया करते थे.

बुद्ध की पैदाइश के पहिले ही कपिलवस्तु के शाक्यों की आज़ादी मिट चली थी. उन्हें एक तरह का 'होमरूल' हासिल था; मगर किसी को फांसी देने या जिलावतन करने का उन्हें हक़ नहीं रह गया था. उसके लिये कोसल महाराज की इजाज़त लेनी पड़ती थी. मगध देश के पहले अंग राजाओं की भी यही कैफ़ियत थी. उनकी मिली जुली हुकूमत मगध देश में ही क़ायम हो गई थी. काशी देश की भी आज़ादी छिनकर उसकी मिलावट कौसल देश में हो गई थी. पावा और कुशीनारा के मल्लों के दो और वैशाली के वज्जियों का एक, इस तरह तीन प्रजातन्त्र राज अब तक आज़ाद रह गये थे. कौसल और मगध देशों में मिली जुली हुकूमत का रवैया मज़बूत होता जा रहा था.

ऐसे वक़्त में कपिलवस्तु से चौदह पंद्रह मील की दूरी पर शुद्धोधन राजा (ज़मींदार) की माया देवी नाम की रानी के पेट से गौतम का (बुद्ध का) जन्म हुआ. बुद्ध चरित काव्य और ललितविस्तर में इसे स्वार्थ सिद्धि और सिद्धार्थ नाम दिया गया है, लेकिन वे पुराने पाली ग्रंथों में कहीं नहीं मिलते. सब जगहों पर उन्हें गोतम ही कहा गया है और वही उनका असली नाम रहा होगा.

गौतम की पैदाइश के बाद सातवें दिन माया देवी राही मुल्के अदम हुईं और उनके पालने पोसने का सारा बोझ (माया देवी की छोटी बहन) उनकी मौसी महाप्रजापती गोतमी पर पड़ा. गोतमी भी शुद्धोधन की स्त्री थी, ऐसा ज़िक्र पाली में मिलता है. लेकिन इसके साथ शुद्धोधन की शादी गोतम के जन्म के पहले हुई या बाद में, इसका कोई पता नहीं. लेकिन इतना तो सच है कि गोतम की परवरिश महाप्रजापती ने बड़ी रहमदिली और होशियारी से की. ऐसा मालूल होता है कि इसी से बहुत सी आजकल की ज़बानों में 'माँ मरे पर मौसी जीवे' की कहावत राइज हुई. लेकिन ख़ास माँ के मरने की बात जब नौजवान गोतम ने समझी होगी तब उनके ऊपर कुछ न कुछ वैराग्य की परछाईं ज़रूर पड़ी होगी. इस वजह से या पहले जन्म के ऐमाल से, जो भी हो, गोतम का रुख़ नौजवानी में ही धर्म की तरफ़ हुआ.

उस ज़माने में कौशल देश में, जिसमें शाक्य देश का भी मिलान था, आडार कालाम और उद्रक रामपुत्र यह दो निहायत मशहूर योगाचार्य थे. उनमें से पहला योग के सात

ایک حاکم چنتے تھے جو مہاراج کہلاتا تھا۔ وہ کسی مقرر وقت کے لئے نہیں چناجاتا تھا۔ جب تک اُسے سب راجاؤں کی رائے (ووٹ) حاصل رہتی تھی تب تک وہ حاکم کا کام کرتا تھا' ورنہ دوسرا افسر چنا جاتا تھا۔ کوئی بڑا کام آپڑنے پر سارے راج سنگھ کی رائے لی جایا کرتی تھی' دوسرے کام یہ افسر اور سپہ سالار وغیرہ کیا کرتے تھے۔

بدھ کی پیدائش کے پہلے ہی کپل وستو کے شاکیوں کی آزادی مٹ چلی تھی۔ اُنھیں ایک طرح کا 'ہوم رول' حاصل تھا؛ مگر کسی کو پھانسی دینے یا جلا وطن کرنے کا اُنھیں حق نہیں رہ گیا تھا۔ اُس کے لئے کوسل مہاراج کی اجازت لینی پڑتی تھی۔ مگدھ دیش کے پہلے انگ راجاؤں کی بھی یہی کیفیت تھی۔ اُن کی ملی جلی حکومت مگدھ دیش میں ہی قایم ہوگئی تھی۔ کاشی دیش کی بھی آزادی چھن کر اُس کی ملاوٹ کوسل دیش میں ہوگئی تھی۔ پاوا اور کوشی نارا کے ملوں کے دو اور ویشالی کے وجیوں کا ایک' اِس طرح تین پرجاتنتر راج اب تک آزاد رہ گئے تھے۔ کوسل اور مگدھ دیشوں میں ملی جلی حکومت کا رویہ مضبوط ہوتا جارہا تھا۔

ایسے وقت میں کپلوستو سے چودہ پندرہ میل کی دوری پر شدودھن راجا (زمیندار) کی مایا دیوی نام کی رانی کے پیٹ سے گوتم کا (بدھ کا) جنم ہوا۔ بدھ چرت کاویہ اور للت وستر میں اُسے سوارتھ سدھی اور سدھارتھ نام دیا گیا ہے' لیکن وے پرانے پالی گرنتھوں میں کہیں نہیں ملتے۔ سب جگہوں پر اُنھیں گوتم ہی کہا گیا ہے اور وہی اُن کا اصلی نام رہا ہوگا۔

گوتم کی پیدائش کے بعد ساتویں دن مایا دیوی راہی ملک عدم ہوئیں اور اُن کے پالنے پوسنے کا سارا بوجھ (مایا دیوی کی چھوٹی بہن) اُن کی موسی مہاپرجاپتی گوتمی پر پڑا۔ گوتمی بھی شدھودھن کی استری تھی' ایسا ذکر پالی میں ملتا ہے۔ لیکن اِس کے ساتھ شدھودھن کی شادی گوتم کے جنم کے پہلے ہوئی یا بعد میں' اِس کا کوئی پتہ نہیں۔ لیکن اِتنا تو سچ ہے کہ گوتم کی پرورش مہاپرجاپتی نے بڑی رحمدلی اور ہوشیاری سے کی۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اِسی سے بہت سی آجکل کی زبانوں میں 'ماں مرے پر موسی جیوے' کی کہاوت رائج ہوئی۔ لیکن خاص ماں کے مرنے کی بات جب نوجوان گوتم نے سمجھی ہوگی تب اُن کے اُوپر کچھ نہ کچھ ویراگیہ کی پرچھائیں ضرور پڑی ہوگی۔ اِس وجہ سے یا پہلے جنم کے اعمال سے' جو بھی ہو' گوتم کا رخ نوجوانی میں ہی دھرم کی طرف ہوا۔

اُس زمانے میں کوسل دیش میں' جس میں شاکیہ دیش کا بھی میلان تھا' آڈار کالام اور اُدرک رام پتر یہ دو نہایت مشہور یوگاچاریہ تھے۔ اُن میں سے پہلا یوگ کے سات

दर्जों का उपदेश देता था और दूसरा आठ दर्जे का. आडार कालाम का एक आश्रम कपिलवस्तु शहर के पास था. वहाँ जाकर गोतम योगाभ्यास करने लगे और उन्होंने योग के पहले दर्जे (प्रथम ध्यान) की मश्क़ की.

शुद्धोधन राजा और दूसरे शाक्य राजे ख़ुद खेत में जाकर खेती का काम करते थे और नौकर चाकरों से भी काम कराते थे. इसी तरह गौतम भी ख़ुद खेती करते और करवाते थे. मगर उनमें एक ख़ूबी यह थी कि वह खेत पर फ़ुर्सत के वक़्त एक जामुन के पेड़ के नीचे बैठकर ऊपर कहे हुए प्रथम ध्यान की मश्क़ करते थे. जातकअट्ठ कथा में इसके बारे में अजीब बाअसर ज़िक्र मौजूद हैं.

अब यह सवाल आया कि गौतम ने 21 साल की उम्र में घर क्यों छोड़ा? ललित विस्तर वग़ैरा ग्रंथों में इसके जो वजूहात दिये गये हैं, उन्हें सिर्फ़ कोरी कल्पनाएं नहीं समझना चाहिये. 29 साल के अपने हाथ से खेती करने वाले आदमी ने बुड्ढा, बीमार और मुर्दा न देखा हो, यह मुमकिन नहीं है. बुढ़ापा, मुसीबत और मौत के ख़्यालात गौतम के दिल में ज़रूर आते होंगे. लेकिन मकान से किनाराकशी के लिये यह वजहें काफ़ी नहीं थीं.

शाक्यों के पड़ोसी और रिश्तेदार कोलिये राजे थे. वे भी कौसल राज के मातहत हुए थे. लेकिन फिर भी शाक्यों और कोलियों में रोहिनी नदी के पानी के बारे में बार बार जंग हुआ करती थीं. इसका नतीजा यह होता था कि दोनों को ही खेती के लिए काफ़ी पानी नहीं मिलता था और आपस में लड़ने से बहुत नुक़सान होने के अलावा कौसल राज को इन छोटे राज्यों के अन्दरूनी बन्दोबस्त में दख़ल देने का बार बार मौक़ा मिलता था. इसलिये यह झगड़ा गौतम को बुरा लगना क़ुदरती था. आख़िर में किसी मौक़े पर कोलियों के ख़िलाफ़ हथियार उठाने से गौतम ने साफ़ इन्कार कर दिया. इससे एक मुश्किल मामला खड़ा हो गया. इसका नतीजा यह होने वाला था कि शुद्धोधन के सारे ख़ान्दान को शाक्य देश से जिलावतन किया जाता. इस मुसीबत से छुटकारा पाने के लिये एक ही रास्ता था कि गौतम परिव्राजक (साधु) हो जाते और उन्होंने उसी रास्ते को मंज़ूर किया. हथियार उठाना क्षत्रियों का धर्म है, यह कहकर उनके दोस्तों और पंडितों ने ज़रूर कोशिश की होगी. लेकिन अर्जुन की तरह गौतम का यह ज़रा सा वैराग्य का जोश न था. इसलिये ख़ुद भगवान भी गौतम को हथियार उठाने के लिये मजबूर नहीं कर सकते थे.

शाक्य और कोलियों की तरह छोटे छोटे प्रजातन्त्र राजे आपस में लड़कर कमज़ोर हो गये थे और उनमें से तीन को छोड़कर बाक़ी राजों की आज़ादी छिन गई थी.

درجوں کا اُپدیش دیتا تھا اور دوسرا آٹھ درجے کا. آڈار کالام کا ایک آشرم کپلوستو شہر کے پاس تھا ۔ وھاں جاکر گوتم یوگا بھیاس کرنے لگے اور اُنھوں نے یوگ کے پہلے درجے (پرتھم دھیان) کی مشق کی ۔

شدھودھن راجا اور اور دوسرے شاکیہ راجے خود کھیت میں جاکر کھیتی کا کام کرتے تھے اور نوکر چاکروں سے بھی کام کراتے تھے ۔ اسی طرح گوتم بھی خود کھیتی کرتے اور کرواتے تھے ۔ مگر اُن میں ایک خوبی یہ تھی کہ وہ کھیت پر فرصت کے وقت ایک جامن کے پیڑ کے نیچے بیٹھکر اُوپر کہے ھوئے پرتھم دھیان کی مشق کرتے تھے ۔ جاتک آٹھ کتھا میں اِس کے بارے میں عجیب باثر ذکر موجود ھیں ۔

اب یہ سوال آیا کہ گوتم نے 29 سال کی عمر میں گھر کیوں چھوڑا ؟ للت وستر وغیرہ گرنتھوں میں اِس کے جو وجوہات دئے گئے ھیں، انھیں صرف کوری کلپنائیں نہیں سمجھنا چاھئے ۔ 29 سال کے اپنے ھاتھ سے کھیتی کرنے والے آدمی نے بڈھا، بیمار اور مردہ نہ دیکھا ھو، یہ ممکن نہیں ھے ۔ بڑھاپا، مصیبت اور موت کے خیالات گوتم کے دل میں ضرور آتے ھونگے، لیکن مکان سے کنارہ‌کشی کے لئے یہ وجھیں کافی نہیں تھیں ۔

شاکیوں کے پڑوسی اور رشتہ‌دار کولیئے راجے تھے ۔ وے بھی کوسل راج کے ماتحت ھوئے تھے ۔ لیکن پھر بھی شاکیوں اور کولیوں میں روھنی ندی کے پانی کے بارے میں بار بار جنگ ھوا کرتی ھیں ۔ اِس کا نتیجہ یہ ھوتا تھا کہ دونوں کو ھی کھیتی کے لئے کافی پانی نہیں ملتا تھا اور آپس میں لڑنے سے بہت نقصان ھونے کے علاوہ کوسل راج کو اِن چھوٹے راجیوں کے اندرونی بندوبست میں دخل دینے کا بار بار موقع ملتا تھا ۔ اس لئے یہ جھگڑا گوتم کو برا لگنا قدرتی تھا ۔ آخر میں کسی موقع پر کولیوں کے خلاف ھتیار اُٹھانے سے گوتم نے صاف انکار کردیا ۔ اِس سے ایک مشکل معاملہ کھڑا ھوگیا ۔ اِس کا نتیجہ یہ ھونے والا تھا کہ شدودھن کے سارے خاندان کو شاکیہ دیش سے جلاوطن کیا جاتا ۔ اِس مصیبت کے چھٹکارا پانے کے لئے ایک ھی راستہ تھا کہ گوتم پریوراجک (سادھو) ھو جاتے اور اُنھوں نے اُسی راستے کو منظور کیا ۔ ھتیار اُٹھانا چھتریوں کا دھرم ھے، یہ کہکر اُن کے دوستوں اور پنڈتوں نے ضرور کوشش کی ھوگی ۔ لیکن ارجن کی طرح گوتم کا یہ ذراسا ویراگیہ کا جوش نہ تھا ۔ اس لئے خود بھگوان بھی گوتم کو ھتیار اُٹھانے کے لئے مجبور نہیں کرسکتے تھے ۔

شاکیہ اور کولیوں کی طرح چھوٹے چھوٹے پرجاتنتر راجے آپس میں لڑ کر کمزور ھوگئے تھے اور ان میں سے تین کو چھوڑ کر باقی راجوں کی آزادی چھن گئی تھی ۔

अंग राजों को जीतकर मगध महाराजा ने अपने मुल्क में शामिल कर लिया था. काशी राजाओं, शाक्यों और कोलियों को जीतकर कौसल महाराज ने अपने मातहत कर लिया था. फिर भी क्षत्री के फ़र्ज़ के नाम पर आपस में लड़ते रहना कितनी बुरी बात थी ! और वह गोतम को पसन्द नहीं हुआ, इसमें ताज्जुब ही क्या.

गोतम से शरमीले, नर्म दिल और अज़ीज़ लड़के को साधू होने के लिए इजाज़त देना मामूली बात नहीं थी. इसके बारे में महाप्रजापती गोतमी और शुद्धोधन राजा को कितना रंज हुआ, इसका थोड़ा सा बयान मज्झिमनिकाय के अरियपरियेसनसुत्त में आया है. ख़ान्दान के बचाने के लिए दूसरा कोई रास्ता न होने से उन्होंने रोते रोते गोतम को इजाज़त दी और गोतम आडार कालाम के आश्रम में चले गये. 'सिर्फ़ ख़ान्दान का बचाना ही गोतम की मंशा होती तो वह सात साल तक ज़बर्दस्त इबादत की मश्क़ करके अन्दरूनी रोशनी का रास्ता नहीं खोजते. साधुओं की फ़िलासफ़ी में आदमी आदमी के झगड़ों के मिटाने का कोई रास्ता ज़रूर मिलेगा, यह उनका यक़ीन था. मकान छोड़ने के ऊपर बयान किये हुए वजूहात को ख़्याल में रखने से गोतम की फ़क़ीराना ज़िन्दगी के सारे कामों पर रोशनी पड़ती है.

आडार कालाम के ध्यान मार्ग से दुख दर्द मिटाने का सवाल हल नहीं हो सकता था, इसलिये उसको छोड़कर उद्रक रामपुत्र का सहारा लिया. योग का एक और दर्जा हासिल करने से भी कुछ फ़ायदा दिखाई न दिया, इसलिये उद्रक रामपुत्र को छोड़कर गोतम राजगृह को चले गये. उस ज़माने में बड़े बड़े श्रमन संघ के नेता इस शहर के आस पास बार बार आया जाया करते थे. उन नेताओं का धर्म उपदेश सुनकर कुछ रास्ता निकालना गोतम की ग़रज़ होनी चाहिये थी. वे सब नेता कई तरह के आत्मवाद (रूहानी ताल्लुक़) बताते थे. कई एक नेता आत्मा (रूह) को अमर और दूसरे फ़ना होने वाली चीज़ मानते थे. इस तरह आत्मा के बारे में इन लोगों में किसी तरह की एक राय नहीं थी. लेकिन वैदिक हिन्सा के जानिब नफ़रत और किस तरह की इबादत करनी चाहिये, इसमें क़रीब क़रीब सभी एक राय थे. इस हालत में गोतम ने यह सोचा कि इबादत के बग़ैर रूहानी ख़ुशी हासिल न होगी और दुख दर्द मिटाने का रास्ता नहीं मिलेगा. इसलिये राजगृह को छोड़कर वे उरुवेला (आजकल की गया) की तरफ़ गये और वहाँ क़रीब 7 साल तक इबादत की. इनके उस वक़्त के कोई कोई तजरबे त्रिपिटिक में मौजूद हैं. इन सबों को यहाँ तफ़सीलवार ज़िक्र करने से और मज़मून बढ़ने के डर से यहाँ बयान नहीं किया जा रहा है.

आख़िरकार गोतम इस फ़ैसले पर आये कि श्रमन

انگ راجوں کو جیت کر مگدھ مہاراجہ نے اپنے ملک میں شامل کر لیا تھا ۔ کاشی راجاؤں، شاکیوں اور کولیوں کو جیت کر کوسل مہاراج نے اپنے ماتحت کر لیا تھا ۔ پھر بھی چھتری کے فرض کے نام پر آپس میں لڑتے رہنا کتنی بری بات تھی ! اور وہ گوتم کو پسند نہیں ہوا، اِس میں تعجب ہی کیا ۔

گوتم سے شرمیلے، نرم دل اور عزیز لڑکے کو سادھو ہونے کے لئے اجازت دینا معمولی بات نہیں تھی ۔ اِس کے بارے میں مہاپرجاپتی گوتمی اور شدھودھن راجا کو کتنا رنج ہوا، اس کا تھوڑا سا بیان مجھیم نکایہ کے اریہ پریئے سن سوت میں آیا ہے ۔ خاندان کے بچانے کے لئے دوسرا کوئی راستہ نہیں ہونے سے انہوں نے روتے روتے گوتم کو اجازت دی اور گوتم آدار کالام کے آشرم میں چلے گئے ۔ صرف خاندان کا بچانا ہی گوتم کی منشا ہوتی تو وہ سات سال تک زبردست عبادت کی مشق کر کے اندرونی روشنی کا راستہ نہیں کھوجتے ۔ سادھوؤں کی فلسفی میں آدمی آدمی کے جھگڑوں کے مٹانے کا کوئی راستہ ضرور ملیگا، یہ اُن کا یقین تھا ۔ مکان چھوڑنے کے اُوپر بیان کئے ہوئے وجوہات کو خیال میں رکھنے سے گوتم کی فقیرانہ زندگی کے سارے کاموں پر روشنی پڑتی ہے ۔

آدار کالام کے دھیان مارگ سے دکھ درد مٹانے کا سوال حل نہیں ہو سکتا تھا، اِس لئے اُس کو چھوڑ کر اُدرک رام پتر کا سہارا لیا ۔ یوگ کا ایک اور درجہ حاصل کرنے سے بھی کچھ فایدہ دکھائی نہ دیا، اِس لئے ادرک رام پتر کو چھوڑ کر گوتم راج گرہا کو چلے گئے ۔ اُس زمانے میں بڑے بڑے شرمن سنگھ کے نیتا اِس شہر کے آس پاس بار بار آیا جایا کرتے تھے ۔ اُن نیتاؤں کا دھرم اُپدیش سنکر کچھ راستہ نکالنا گوتم کی غرض ہونی چاہئے تھی ۔ وے سب نیتا کئی طرح کے آتمواد (روحانی تعلق) بتاتے تھے ۔ کئی ایک نیتا آتما (روح) کو امر اور دوسرے فنا ہونے والی چیز مانتے تھے۔ اِس طرح آتما کے بارے میں ان لوگوں میں کسی طرح کی ایک رائے نہیں تھی ۔ لیکن ویدک ہنسا کے جانب نفرت اور کس طرح کی عبادت کرنی چاہئے، اس میں قریب قریب سبھی ایک رائے تھے ۔ اس حالت میں گوتم نے یہ سوچا کہ عبادت کے بغیر روحانی خوشی حاصل نہ ہوگی اور دکھ درد مٹانے کا راستہ نہیں ملیگا ۔ اِس لئے راجگرہ کو چھوڑ کر وے اُروویلا (آجکل کی گیا) کی طرف گئے اور وہاں قریب 7 سال تک عبادت کی ۔ ان کے اُس وقت کے کوئی کوئی تجربے تریپٹک میں موجود ہیں ۔ اُن سبوں کا یہاں تفصیلوار ذکر کرنے سے اور مضمون بڑھنے کے ڈر سے یہاں بیان نہیں کیا جارہا ہے ۔

آخرکار گوتم اس فیصلے پر آئے کہ شرمن

जमाअत में सबसे बड़ा खतरा आत्मवाद से है. इतना त्याग और तप करके भी आत्मवाद के जाल में फंस जाने से श्रमन दुनिया के झगड़ों से छुटकारे का रास्ता नहीं बता सकते. इसलिये आत्मवाद के मेल के अलावा कोई रास्ता होना चाहिये. दूसरी बात उनके मन में यह आई कि श्रमनों का सब तरह का उसूल और नेक चलनी मुनासिब होने पर भी तप बेकार है.

गोतम के साथ पांच तपस्वी (साधू) थे. वे समझते थे कि गोतम किसी नये तरीक़े का पता लगावेंगे. लेकिन जब वह आत्मवाद का ख़तरा ज़ाहिर करने लगे और जिस्म को तकलीफ़ देने वाली इबादत छोड़कर जिस्म को क़ायम रखने वाली ग़िज़ा इस्तेमा करने लगे तब उन साधुओं को यक़ीन हो गया कि गोतम मज़हबी मैयार से गिर गये और उनको छोड़कर वे काशी चले आये. लेकिन गोतम ने सब्र का दामन नहीं छोड़ा. लगन की राह पर उन्होंने अपना क़दम आगे बढ़ाया. आख़िरकार आजकल जिसे बुद्ध गया कहते हैं, उस जगह एक पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर बैशाखी पूणि मा की रात में गोतम ने अपना नया रास्ता अख़्तयार किया. उनमें से पहली मंज़िल जिस्मानी ऐश आराम का फ़ना होना है. इस मंज़िल में गुमराह होने से दुनिया का बहुत बड़ा हिस्सा आपस में लड़ता, कटता और तकलीफ़ उठाता है. इसलिये यह छोड़ देने के क़ाबिल है. यह छोड़कर जो सूफ़ी हो जाते हैं, वे इबादत में लग कर कई तरह से जिस्मानी ईज़ाएं बर्दाश्त करते हैं, जिससे कोई मतलब हासिल नहीं होता. इसलिये इस क़िस्म की इबादत भी बेकार है. यह दो आख़िरी मंज़िलें छोड़कर बीच का रास्ता चार आर्य सत्यों: (अस्लियतों) का है.

पहला आर्य सत्य यह है कि दुनिया पैदाइश, बुढ़ापा, मौत, तकलीफ़ से और न मिल सकने वाली चीज़ की उम्मीद में दुख उठा रही है. इसकी वजह सिर्फ़ आदमी की प्यास है. प्यास से ही सारी तकलीफ़ पैदा होती है, यह दूसरा आर्य सत्य है. इस प्यास के छोड़ने से ही तकलीफ़ से निजात मिल सकती है, (ऐशपरस्ती या तप से छुटकारा नहीं मिलता) यह तीसरा आय सत्य है. इस प्यास के मिटाने के लिये सा बरताव होना चाहिये, यह चौथा आर्य सत्य है, जिसे अष्टांगिक मार्ग बताता है. वह अष्टांगिक मार्ग यह है—

सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाचा, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि.

इस रास्ते का मतलब यह है कि आदमी आदमी के साथ जिस्म, ज़बान और दिल से वक़्त के मुताबिक़ बरताव कर अपनी प्यास को मिटावे. इसी रास्ते से आदमी आदमी में, ख़ान्दान

جماعت میں سب سے بڑا خطرہ آتمواد سے ھے. اِتنا تیاگ اور تپ کرکے بھی آتمواد کے جال میں پھنس جانے سے شرمن دنیا کے جھگڑوں سے چھٹکارے کا راستہ نہیں بتا سکتے . اِس لئے آتمواد کے میل کے علاوہ کوئی راستہ ھونا چاھئے . دوسری بات اُن کے من میں یہ آئی کہ شرمنوں کا سب طرح کا اُصول اور نیک چلنی مناسب ھونے پر بھی تپ بیکار ھے .

گوتم کے ساتھ پانچ تپسوی (سادھو) تھے . وے سمجھتے تھے کہ گوتم کسی نئے طریقے کا پتہ لگاوینگے . لیکن جب وہ آتمواد کا خطرہ ظاھر کرنے لگے اور جسم کو تکلیف دینے والی عبادت چھوڑکر جسم کو قایم رکھنے والی غذا استعمال کرنے لگے تب اُن سادھوؤں کو یقین ھوگیا کہ گوتم مذھبی میعار سے گرگئے' اور اُن کو چھوڑکر وے کاشی چلے آئے . لیکن گوتم نے صبر کا دامن نہیں چھوڑا . لگن کی راہ پر اُنھوں نے اپنا قدم آگے بڑھایا . آخرکار آجکل جسے بدھ گیا کہتے ھیں' اُس جگہ ایک پیپل کے پیڑ کے نیچے بیٹھکر ویشاکھی پورنیما کی رات میں گوتم نے اپنا نیا راستہ اختیار کیا . اُن میں سے پہلی منزل جسمانی عیش آرام کا فنا ھونا ھے . اس منزل میں گمراہ ھونے سے دنیا کا بہت بڑا حصہ آپس میں لڑتا' کٹتا اور تکلیف اُٹھاتا ھے . اس لئے یہ چھوڑ دینے کے قابل ھے . یہ چھوڑکر جو صوفی ھوجاتے ھیں' وے عبادت میں لگکر کئی طرح سے جسمانی ایذائیں برداشت کرتے ھیں' جس سے کوئی مطلب حاصل نہیں ھوتا . اِس لئے اِس قسم کی عبادت بھی بیکار ھے . یہ دو آخری منزلیں چھوڑکر بیچ کا راستہ چار آریہ ستیوں (اصلیتوں) کا ھے .

پہلا آریہ ستیہ یہ ھے کہ دنیا پیدائش' بڑھاپا' موت' تکلیف سے اور نہ مل سکنے والی چیز کی اُمید میں دکھ اُٹھا رھی ھے . اِس کی وجہہ صرف آدمی کی پیاس ھے . پیاس سے ھی ساری تکلیف پیدا ھوتی ھے' یہ دوسرا آریہ ستیہ ھے . اِس پیاس کے چھوڑنے سے ھی تکلیف سے نجات مل سکتی ھے' (عیش پرستی سے یا تپ سے چھٹکارا نہیں ملتا) یہ تیسرا آریہ ستیہ ھے . اِس پیاس کے مٹانے کے لئے کیسا برتاؤ ھونا چاھیئے' یہ چوتھا آریہ ستیہ ھے جِسے اشٹانگک مارگ بتاتا ھے . وہ اشٹانگک مارگ یہ ھے—

سمیک درشٹی' سمیک سنکلپ' سمیک واچا' سمیک کرمانت' سمیک آجیو' سمیک ویایام' سمیک اِسمرتی اور سمیک سمادھی .

اِس راستے کا مطلب یہ ھے کہ آدمی آدمی کے ساتھ جسم' زبان اور دل سے وقت کے مطابق برتاؤ کر اپنی پیاس کو مٹاوے . اِسی راستے سے آدمی آدمی میں' خاندان

ख़ान्दान में और मुल्क मुल्क में जो झगड़े उठते हैं, वे सब मिट सकते हैं. सिर्फ़ शाक्यों और कोलियों का ही नहीं, सारी दुनिया के लिये इस रास्ते को ढूँढ निकालने से गौतम का दिल कितना रोशन हुआ, इसका महज़ अन्दाज़ा ही लगाया जा सकता है. यहीं से उनके पैरोकार उनको बुद्ध (ज्ञानी) के नाम से नामज़द करते हैं.

गौतम बुद्ध तो हो गये, लेकिन उनका नया रास्ता सुनने वाला था कौन ? जिसमें रूह का कुछ भी रिश्ता नहीं है और तप (गहरी इबादत) की खुल्लम खुल्ला मुख़ालिफ़त की जाती है, वह रास्ता सुनकर कोई भी सूफ़ी बौखला जाता. इसलिये एक ही उम्मीद थी कि शायद जो पांच साधू गौतम के साथ रहते थे, वह गौतम बुद्ध का यह नया रास्ता समझ सकें. इसलिये बुद्ध ने मगध देश में रहने वाले सारे साधुओं को छोड़कर कड़ी गरमी के दिनों में नंगे पांव गया से काशी तक कूच किया और बहुत मेहनत से उन पाँच साधुओं को समझाया.

इस रास्ते के पता लगाने में बुद्ध को बहुत तकलीफ़ बर्दाश्त करनी पड़ी, और समझाने में भी काफ़ी कोशिश करनी पड़ी. लेकिन इसके बढ़ने में ज़्यादा वक़्त नहीं लगा. दूसरे साधुओं के गिरोह बहुत पुराने थे और उन गिरोहों के नेता भी बुद्ध से बहुत बुड्ढे थे. बुद्ध सब में कम उम्र थे. फिर भी उनके इस नये रास्ते का असर आम लोगों पर जल्द ही पड़ा. बुद्ध की ज़िन्दगी में ही उसकी बड़ी शोहरत हुई और मध्य देश (विंध्य, हिमालय, पंजाब और बंगाल के बीच के देश) में बीच के तबक़े के लोगों ने उनके संघ के लिये बहुत से बिहार बनवाये.

आजकल ऐसी एक मानी हुई बात है कि बौद्ध धर्म सांख्य तत्वज्ञान से निकला, लेकिन यह बहुत ग़लत है. सांख्यों का तत्वज्ञान बुद्ध के वक़्त में बुनियादी तरीक़े से मौजूद था. उसका अगर बुद्ध पर कुछ असर पड़ा हो तो वह यही है कि सांख्य के मार्फ़त ज़िक्र की हुई आत्मा में बुद्ध को कुछ भी मतलब नहीं दिखाई दिया. बल्कि बुद्ध की यह पक्की राय हो गई कि इस तरह की आत्मा को मानना नुक़सानदह है. बुद्ध पर किसी हमअसर जमाअत का असर पड़ा हो तो वह पार्श्वनाथ के ऊपर बयान किये हुए चार उसूलों वाली जमाअत का ही हो सकता है. बुद्ध के अष्टांगिक रास्ते को उन्हीं उसूलों की बढ़ोतरी समझना चाहिये. लेकिन इसके साथ जैन सूफ़ी जो इबादत का अपना ख़ास तरीक़ा शामिल कर देते थे, उसकी बुद्ध ने साफ़ साफ़ मुख़ालिफ़त की. इसी वक़्त में जैन आत्मा की असलियत भी मानने लगे थे. उसको भी बुद्ध ने मंज़ूर नहीं किया. बुद्ध के वक़्त में जो बहुत से मशहूर संघ थे उनमें एक जैनों को छोड़कर बाक़ी सब सङ्घ कुछ सदियों में ही मिट गये.

हमारी राय में जैन सङ्घ के बच रहने की ख़ास वजह

خاندان میں اور ملک ملک میں جو جھگڑے 'اُٹھتے ھیں' وے سب مٹ سکتے ھیں ۔ صرف شاکیوں اور کولیوں کا ھی نہیں ساری دنیا کے لئے اِس راستے کو ڈھونڈھ نکالنے سے گوتم کا دل کتنا روشن ھوا' اِس کا محض اندازہ ھی لگایا جا سکتا ھے. یہیں سے اُن کے پیروکار اُن کو بدھ (گیانی) کے نام سے نامزد کرتے ھیں ۔

گوتم بدھ تو ھو گئے' لیکن اُن کا نیا راستا سننے والا تھا کون ؟ جس میں روح کا کچھ بھی رشتہ نہیں ھے اور تپ (گہری عبادت) کی کھلم کھلا مخالفت کی جاتی ھے' وہ راستہ سن کر کوئی بھی صوفی بوکھلا جاتا ۔ اِس لئے ایک ھی اُمید تھی کہ شاید جو پانچ سادھو گوتم کے ساتھ رھتے تھے' وے گوتم بدھ کا یہ نیا راستہ سمجھ سکیں ۔ اِس لئے بدھ نے مگدھ دیش میں رھنے والے سارے سادھوؤں کو چھوڑ کر کڑی گرمی کے دنوں میں ننگے پاؤں گیا سے کاشی تک کوچ کیا اور بہت محنت سے اُن پانچ سادھوؤں کو سمجھایا ۔

اِس راستے کے پتہ لگانے میں بدھ کو بہت تکلیف برداشت کرنی پڑی' اور سمجھانے میں بھی کافی کوشش کرنی پڑی ۔ لیکن اِس کے بڑھنے میں زیادہ وقت نہیں لگا ۔ دوسرے سادھوؤں کے گروہ بہت پرانے تھے اور اُن گروھوں کے نیتا بھی بدھ سے بہت بڈھے تھے ۔ بدھ سب میں کم عمر تھے ۔ پھر بھی اُن کے اِس نئے راستے کا اثر عام لوگوں پر جلد ھی پڑا ۔ بدھ کی زندگی میں ھی اُس کی بڑی شہرت ھوئی اور مدھیہ دیش (وندھیہ' ھمالیہ' پنجاب اور بنگال کے بیچ کے دیش) میں بیچ کے طبقے کے لوگوں نے اُن کے سنگھ کے لئے بہت سے وہار بنوائے ۔

آجکل ایسی ایک مانی ھوئی بات ھے کہ بودھ دھرم سانکھیہ تتوگیان سے نکلا' لیکن یہ بہت غلط ھے ۔ سانکھیوں کا تتوگیان بدھ کے وقت میں بنیادی طریقے سے موجود تھا ۔ اُس کا اگر بدھ پر کچھ اثر پڑا ھو تو وہ یہی ھے کہ سانکھ کے معرفت ذکر کی ھوئی آتما میں بدھ کو کچھ بھی مطلب نہیں دکھائی دیا ۔ بلکہ بدھ کی یہ پکی رائے ھو گئی کہ اِس طرح کی آتما کو ماننا نقصان دہ ھے ۔ بدھ پر کسی ھمعصر جماعت کا اثر پڑا ھو تو وہ پاشرو ناتھ کے اوپر بیان کئے ھوئے چار اصولوں والی جماعت کا ھی ھو سکتا ھے ۔ بدھ کے اشٹانگک راستے کو انہیں اصولوں کی ھی بڑھوتری سمجھنا چاھئے ۔ لیکن اِس کے ساتھ جین صوفی جو عبادت کا اپنا خاص طریقہ شامل کر دیتے تھے' اُس کی بدھ نے صاف صاف مخالفت کی ۔ اُسی وقت میں جین آتما کی اصلیت بھی ماننے لگے تھے ۔ اُس کو بھی بدھ نے منظور نہیں کیا ۔ بدھ کے وقت میں جو بہت سے مشہور سنگھ تھے اُن میں ایک جینوں کو چھوڑ کر باقی سب سنگھ کچھ صدیوں میں ھی مٹ گئے ۔

ھماری رائے میں جین سنگھ کے بچ رھنے کی خاص وجہ

उनका चातुरयाम धर्म है, न कि उनके तरीक़े की इबादत और रूहानी ताल्लुक़ !

अशोक और बौद्ध धर्म

हालांकि बौद्ध सङ्घ का आम लोगों पर काफ़ी असर था, फिर भी सम्राट अशोक का ज़ोर अगर नहीं मिलता तो बौद्ध धर्म का भारत में और भारत के बाहर इतना फैलाव न हो सकता.

जैनों का कहना है कि चन्द्रगुप्त मौर्य जैन मत का था और यह ठीक भी हो सकता है. मगर चन्द्रगुप्त ने यज्ञों को बन्द करने की कोशिश नहीं की. उसने ख़ुद यज्ञ नहीं किये और ब्राह्मनों को इस बारे में बढ़ावा नहीं दिया. इसी वजह से ब्राह्मन तबक़े के ग्रंथ लिखने वालों ने उसे शूद्र ख़ान्दान से कहा होगा. उसका लड़का बिन्दुसार किस मज़हब का था, इसका पता नहीं लगता. वह किसी भी मज़हब का रहा हो, उसने अपने राज का बन्दोबस्त करने के अलावा और कुछ किया हो, ऐसा नहीं जान पड़ता. उसका बेटा अशोक ज़रूर श्रमन संस्कृति का—और उसमें भी ज्यादा से ज्यादा बौद्ध धर्म का—पूरा हामी बना.

ताजपोशी के बाद आठवें या नवें साल अशोक ने कलिंग देश पर चढ़ाई की. यहाँ एक लाख आदमी मारे गये और डेढ़ लाख आदमी पकड़कर लाये गये. इससे कलिंग देश में बड़ा हाहाकार मचा और अशोक के दिल पर उसका ज़बर्दस्त असर पड़ा. वह जितना ही क़ातिल था उतनी ही रहमदिल बना. उस वक़्त जो श्रमन पंथ मौजूद थे, उनमें से बौद्ध पंथ उसे ख़ासकर अच्छा लगा और वह बुद्ध का पूरा शागिर्द बना. बौद्ध धर्म के फैलाव के लिये उसने जो कोशिश की वह मशहूर ही है. मगर वह किसी तरह भी कट्टर नहीं था. बौद्ध तबक़े की हालांकि उसने सब तरह से मदद की, तो भी वह इसका ख्याल रखता था कि दूसरे श्रमन गिरोहों का गुज़र अच्छी तरह होता रहे. इतना ही नहीं, उसने इसका भी जहां तक मुमकिन हो सकता था यह बन्दोबस्त किया कि श्रमन गिरोह आपस में लड़कर बेजा वक़्त ज़ाया न करें.

सातवें शिला लेख में वह कहता है—"सब जगहों पर सब पाषंड (श्रमन गिरोही) रहें, वजह यह कि वे उसूल और ख्याल की पाक़ीज़गी की ख्वाहिश रखते हैं......बहुत दान धर्म करके भी जिस आदमी में ख़ुद पर क़ाबू, ख्यालात की पाकीज़गी, शुक्रगुज़ारी और पक्की भक्ति नहीं, वह सचमुच नीच है." इसके बाद बारहवें शिला लेख में अशोक कहता है—"देवताओं का प्यारा राजा सब तरह के श्रमनों की (पाषंडियों की), साधुओं की और गृहस्थों की दान धर्म से और दूसरे कई तरह से पूजा करता है. मगर देवताओं का प्यारा

اُن کا چتوریام دھرم ہے، نہ کہ اُن کے طریقے کی عبادت اور روحانی تعلق !

اشوک اور بودھ دھرم

حالانکہ بودھ سنگھ کا عام لوگوں پر کافی اثر تھا، پھر بھی سمراٹ اشوک کا زور اگر نہیں ملتا تو بودھ دھرم کا بھارت میں اور بھارت کے باہر اِتنا پھیلاؤ نہ ہوسکتا .

جینوں کا کہنا ہے کہ چندرگپت موریہ جین مت کا تھا اور یہ ٹھیک بھی ہوسکتا ہے . مگر چندرگپت نے یگیوں کو بند کرنے کی کوشش نہیں کی. اس نے خود یگیہ نہیں کئے اور براہمنوں کو اِس بارے میں بڑھاوا نہیں دیا . اِسی وجہ سے براہمن طبقے کے گرنتھ لکھنے والوں نے اُسے شودر خاندان سے کہا ہوگا . اُس کا لڑکا بندوسار کس مذہب کا تھا، اس کا پتہ نہیں لگتا . وہ کسی بھی مذہب کا رہا ہو، اُس نے اپنے راج کا بندوبست کرنے کے علاوہ اور کچھ کیا ہو، ایسا نہیں جان پڑتا . اس کا بیٹا اشوک ضرور شرمن سنسکرتی کا—اور اُس میں بھی زیادہ سے زیادہ بودھ دھرم کا—پورا حامی بنا .

تاجپوشی کے بعد آٹھویں یا نویں سال اشوک نے کلنگ دیش پر چڑھائی کی . یہاں ایک لاکھ آدمی مارے گئے اور ڈیڑھ لاکھ آدمی پکڑ کر لائے گئے . اس سے کلنگ دیش میں بڑا ہاہا کار مچا اور اشوک کے دل پر اُس کا زبردست اثر پڑا . وہ جتنا ہی قاتل تھا اُتنا ہی رحم‌دل بنا . اُس وقت جو شرمن پنتھ موجود تھے، اُن میں سے بودھ پنتھ اُسے خاصکر اچھا لگا اور وہ بدھ کا پورا شاگرد بنا . بودھ دھرم کے پھیلاؤ کے لئے اُس نے جو کوشش کی وہ مشہور ہی ہے . مگر وہ کسی طرح بھی کٹر نہیں تھا . بودھ طبقے کی حالانکہ اس نے سب طرح سے مدد کی، تو بھی وہ اِس کا خیال رکھتا تھا کہ دوسرے شرمن گروہوں کا گذر اچھی طرح ہوتا رہے . اتنا ہی نہیں، اُس نے اس کا بھی جہاں تک ممکن ہوسکتا تھا یہ بندوبست کیا کہ شرمن گروہ آپس میں لڑکر بیجا وقت ضائع نہ کریں .

ساتویں شلا لیکھ میں وہ کہتا ہے—"سب جگہوں پر سب پاشنڈ (شرمن گروہی) رہیں، وجہ یہ کہ وے اُصول اور خیال کی پاکیزگی کی خواہش رکھتے ہیں......بہت دان دھرم کرکے بھی جس آدمی میں خود پر قابو، خیالات کی پاکیزگی، شکرگذاری اور پکی بھکتی نہیں، وہ سچ مچ نیچ ہے." اس کے بعد بارھویں شلا لیکھ میں اشوک کہتا ہے—"دیوتاؤں کا پیارا راجا سب طرح کے شرمنوں کی (پاشنڈیوں کی)، سادھوؤں کی اور گرہستھوں کی دان دھرم سے اور دوسرے کئی طرح سے پوجا کرتا ہے . مگر دیوتاؤں کا پیارا

दान और पूजा को उतनी अहमियत नहीं देता, जितना सब पाषंडियों की सारवृद्धि को. सारवृद्धि की कई क़िस्में हैं उसका खास सिद्धान्त है खामोशी. मिसाल के तौर पर खुद पाषंड की भरमार न करे और दूसरे के पाषंड की बुराई न होने दे, यानी अगर कोई झगड़े की वजह आन ही पड़े, तो उसे अहमियत न दे. दूसरे के पाषंड का ख्याल रखना कई तरह से मुनासिब है. ऐसा करने से खुद के पाषंड की यक़ीनी तौर से तरक़्क़ी करता है और दूसरे के पाषंड पर अहसान करता है......आपस का धर्म एक दूसरा सुने और एक दूसरे की सेवा करे, इसीलिये एकता अच्छी. सब पाषंड अच्छे और दूसरों की भलाई करने वाले हों, यही चीज़ देवताओं को अज़ीज़ है......इसके लिये धर्म महामात्रों को (और दूसरों को) मुक़र्रर किया है.

इस शिला लेख से दिखाई देता है कि जितने भी अहिंसक मजहब थे उन सबके साथ अशोक बराबरी का बर्ताव करता था, इतना ही नहीं, उसने इसके लिये भी बहुत कोशिश की कि इन मजहबों में झगड़ा न होकर एकता बढ़े और यह लोगों को पाबन्दी और रूह की पाकीज़गी का रास्ता दिखा दें. वैदिक तहज़ीब की बुनियाद है यज्ञयाज्ञ. उनकी मुखालिफ़त अशोक ने पहले ही शिला लेख में की है, और उसने आम लोगों को अव्वल दर्जा दिया है. नतीजा यह कि अशोक के राज में ही नहीं, उसके आस पास के राज्यों में भी अगर श्रमन संस्कृति—उसमें से भी बौद्ध संस्कृति—बहुत ज़ोर से फैली हो, तो उसमें कुछ ताज्जुब नहीं.

बौद्ध संस्कृति की तनुज़्ज़ली

बौद्ध श्रमनों को राजाओं की मदद मिली, इसी में उनकी तनुज़्ज़ली का बीज था. उनके बड़े बड़े संघाराम (मठ) राजाओं की मदद के बग़ैर चल नहीं सके. यह काम आम जनता की ताक़त के बाहर भी था. सिर्फ़ अमीर और राजाओं की मदद से ही यह संघाराम चले. नतीजा यह हुआ कि महायान वालों को ऊँचे तबक़ों को अज़ीज़ लगने वाले ग्रन्थों को लिखना पड़ा. उन ग्रन्थकारों ने आम लोगों की ज़बान को छोड़कर ऊँचे तबक़े में क़दर की जाने वाली संस्कृत ज़बान को क़ुबूल किया. इससे आम जनता का रिश्ता उनसे टूट गया. इन्साफ़, ग्रामर, अदब वग़ैरा मज़मूनों पर बौद्ध ग्रन्थकारों ने अच्छे से अच्छे मज़मून लिखे. लेकिन आम लोग इन ग्रन्थों को समझने के नाक़ाबिल थे और उनके लिये यह ग्रन्थ काम के न थे. इतना ही नहीं, साधुओं के मठों को जो बड़ी बड़ी जागीरें मिली थीं इससे उनमें रहने वाले दूसरे लोगों को हसद होने लगा. जैसे आजकल के ज़मींदार अलग अलग तरह से किसानों से लगान लेते हैं, उसी तरह बौद्ध साधू भी किसानों पर ज़ुल्म करते थे, यह मानना सुबूत से खाली नहीं है.

ن اور پوجا کو اُتنی اھمیت نہیں دیتا' جتنا سب پاشنڈیوں
، سارورِدھی کو . سارورِدھی کی کئی قسمیں ھیں. اُس کا خاص
بھانت ھے خاموشی. مثال کے طور پر خود پاشنڈ کی بھرمار نہ
ے اور دوسرے کے پاشنڈ کی برائی نہ ھونے دے' یعنی اگر کوئی
ھگڑے کی وجہ آن ھی پڑے تو اُسے اھمیت نہ دے. دوسرے کے
شنڈ کا خیال رکھنا کئی طرح سے مناسب ھے. ایسا کرنے سے خود
، پاشنڈ کی یقینی طور سے ترقی کرتا ھے اور دوسرے کے پاشنڈ
بھی احسان کرتا ھے...... آپس کا دھرم ایک دوسرا سنے اور
ک دوسرے کی سیوا کرے' اسی لئے ایکتا اچھی . سب پاشنڈ
ڈھے اور دوسروں کی بھلائی کرنے والے ھوں' یہی چیز دیوتاؤں
. عزیز ھے...... اس کے لئے دھرم مہاماتروں کو (اور دوسروں کو)
قرر کیا ھے .

اِس شلا لیکھ سے دکھائی دیتا ھے کہ جتنے بھی اھنسک
ذھب تھے اُن سب کے ساتھ اشوک برابری کا برتاؤ کرتا تھا .
تنا ھی نہیں' اُس نے اس کے لئے بھی بہت کوشش کی کہ
ن مذھبوں میں جھگڑا نہ ھوکر ایکتا بڑھے اور یہ لوگوں کو
ابندی اور روح کی پاکیزگی کا راستہ دکھادیں . ویدک تہذیب
ی بنیاد ھے یگیہ یاگ . اُن کی مخالفت اشوک نے پہلے ھی
لا لیکھ میں کی ھے؛ اور اُس نے عام لوگوں کو اول درجہ دیا ھے.
تیجہ یہ کہ اشوک کے راج میں ھی نہیں' اُس کے آس پاس
کے راجیوں میں بھی اگر شرمن سنسکرتی—اس میں سے بھی
ودھ سنسکرتی—بہت زور سے پھیلی ھو' تو اس میں کچھ
عجب نہیں .

بودھ سنسکرتی کی تنزلی

بودھ شرمنوں کو راجاؤں کی مدد ملی' اِسی میں اُن کی
نزلی کا بیج تھا . اُن کے بڑے بڑے سنگھا رام (مٹھ) راجاؤں
ی مدد کے بغیر چل نہیں سکے . یہ کام عام جنتا کی طاقت کے
اھر بھی تھا . صرف امیر اور راجاؤں کی مدد سے ھی یہ
سنگھا رام چلے. نتیجہ یہ ھوا کہ مہایان والوں کو اُونچے طبقوں کو
زیز لگنے والے گرنتھوں کو لکھنا پڑا . اُن گرنتھکاروں نے عام لوگوں
ی زبان کو چھوڑ کر اُونچے طبقے میں قدر کی جانے والی سنسکرت
بان کو قبول کیا . اِس سے عام جنتا کا رشتہ اُن سے ٹوٹ گیا .
نصاف' گرامر' ادب وغیرہ مضمونوں پر بودھ گرنتھکاروں نے
چھے سے اچھے مضمون لکھے . لیکن عام لوگ اُن گرنتھوں کو
سمجھنے کے ناقابل تھے اور اُن کے لئے یہ گرنتھ کام کے نہ تھے .
تنا ھی نہیں' سادھوؤں کے مٹھوں کو جو بڑی بڑی جاگیریں
ملی تھیں اس سے ان میں رھنے والے دوسرے لوگوں کو حسد
ھونے لگا . جیسے آجکل کے زمیندار الگ الگ طرح سے کسانوں
سے لگان لیتے ھیں' اُسی طرح بودھ سادھو بھی کسانوں پر ظلم
کرتے تھے' یہ ماننا ثبوت سے خالی نہیں ھے .

ऐसी हालत में उन मठों के मालिक बौद्ध और जैन संघों में से आजकल के फ़ैसिज़्म की तरह का एक हिंसावादी शैव गिरोह पैदा हुआ, जिसका नाम है पाशुपत. उन्हीं पाशुपतों में से अघोरी जमाअत की तरह के बड़े बेरहम और ज़ालिम शैव गिरोह की पैदाइश हुई; और उन लोगों ने तलवार, औरत और शराब के ज़रिये या तो बौद्ध और जैन श्रमनों को बरबाद कर दिया या अपने में मिलाने के लिये मजबूर किया.

उत्तर में शशांक जैसे और दक्खिन में सुन्दर पांड्य जैसे राजाओं ने बौद्धों और जैनों पर सातवीं सदी में जो ख़ौफ़नाक ज़ुल्म किये, उसका ज़िक्र तवारीख़ में है. शशांक ने साज़िश करके राज्यवर्धन का क़त्ल करवाया और बुद्ध गया के सारे विहारों को लूटकर उन्हें तोड़ डाला. बोधि वृक्ष को जड़ से उखाड़ कर जला दिया और दक्खिन में सुन्दर पांड्य ने उसी सदी में जैन साधुओं पर कई क़िस्म के बड़े ज़ुल्म किये. उनके सर कोल्हू में डालकर पिरवाये. उसके इन सारे ज़ुल्मों के नमूने आज भी अर्काट के तिरुवत्तूर मन्दिर की दीवारों पर खुदे हुए हैं. इस तरफ़ शैव राजाओं, कापालिकादि शैव साधुओं और उन लोगों के मददगार ब्राह्मनों की कोशिश से बौद्ध और जैन धर्म क़रीब क़रीब बर्बाद ही हो गये.

इन ज़ुल्मों से शैव साधुओं के मठ, बौद्धों के विहार और उन जैनों के जो उपाश्रय (ख़ानक़ाह) बच रहे थे, मुसलमानों के हमले से वह सब क़रीब क़रीब बर्बाद हो गये. बचे खुचे बौद्ध श्रमनों ने तिब्बत वग़ैरा मुल्कों में पनाह ली. जैन साधू अपने उसूलों के पाबन्द होने की वजह से हिन्दुस्तान के बाहर न जा सके. जो जैन और शैव सन्यासी बचे वे यहाँ ही छिप कर रहने लगे. आगे चलकर इन साधुओं का कुछ उरूज भी हुआ. लेकिन वह इतना कमज़ोर रहा कि वह कुछ मज़हबी तरक़्क़ी का काम नहीं कर सके.

बौद्ध संस्कृति की देन

क़रीब पचास साल पहले हमारे देश के बड़े बड़े पंडितों को भी बौद्ध मज़हब के बारे में साफ़ साफ़ जानकारी नहीं थी. पुराण पढ़ने वाले ब्राह्मण समझते थे कि विष्णु ने राक्षसों को बुरे रास्ते पर लगाकर बर्बाद करने के लिये बुद्ध का अवतार लिया. पंडित लोग ग्रन्थों में बौद्धों की बुराई करते थे. शंकराचार्य को विशिष्टाद्वैत वादियों और माधव गिरोहों ने प्रच्छन्न बौद्ध कहा, यह भी लोग जानते थे. लेकिन बुद्ध कौन? और उनके मज़हब का प्रचार कैसे हुआ और शंकराचार्य की मज़हबी किताबों पर उसका असर इतना कैसे पड़ा, जिससे उनको प्रच्छन्न बौद्ध कहने लगे? इनमें से किसी बात को भी कोई पंडित साफ़ साफ़ नहीं जानता था. जिस तरह तारीकी में कोई चीज़ उसके ख़िलाफ़

ایسی حالت میں اُن متھوں کے مالک بودھ اور جین سنگھوں میں سے آجکل کے فیسزم کی طرح کا ایک ھنساوادی شیو گروہ پیدا ھوا، جس کا نام ھے پاشوپت ۔ اِنھیں پاشوپتوں میں سے اگھوری جماعت کی طرح کے بڑے بےرحم اور ظالم شیو گروہ کی پیدائش ھوئی؛ اور اُن لوگوں نے تلوار، عورت اور شراب کے ذریعے یا تو بودھ اور جین شرمنوں کو برباد کردیا یا اپنے میں ملانے کے لئے مجبور کیا ۔

اُتر میں ششانک جیسے اور دکھن میں سندر پانڈیہ جیسے راجاؤں نے بودھوں اور جینیوں پر ساتویں صدی میں جو خوفناک ظلم کئے، اُس کا ذکر تواریخ میں ھے ۔ ششانک نے سازش کرکے راجیوردھن کا قتل کروایا اور بدھ گیا کے سارے بہاروں کو لوٹ کر اُنھیں توڑ ڈالا ۔ بودھی ورکش کو جڑ سے اُکھاڑ کر جلادیا اور دکھن میں سندرپانڈیہ نے اُسی صدی میں جین سادھوؤں پر کئی قسم کے بڑے ظلم کئے ۔ اُن کے سر کولھو میں ڈالکر پروائے ۔ اُس کے اِن سارے ظلموں کے نمونے آج بھی ارکاٹ کے ترووتور مندر کی دیواروں پر کھدے ھوئے ھیں ۔ اِس طرف شیو راجاؤں، کا پالکادی شیو سادھوؤں اور اُن لوگوں کے مددگار براھمنوں کی کوشش سے بودھ اور جین دھرم قریب قریب برباد ھی ھوگئے ۔

ان ظلموں سے شیو سادھوؤں کے متھ، بودھوں کے وہار اور اُن جینیوں کے جو اُپاشرئے (خانقاہ) بچ رھے تھے، مسلمانوں کے حملے سے وہ سب قریب قریب برباد ھوگئے ۔ بچے کھچے بودھ شرمنوں نے تبت وغیرہ ملکوں میں پناہ لی ۔ جین سادھو اپنے اُصولوں کے پابند ھونے کی وجہ سے ھندستان کے باھر نہ جاسکے ۔ جو جین اور شیو سنیاسی بچے، وے یہاں ھی چھپ کر رھنے لگے ۔ آگے چل کر اِن سادھوؤں کا کچھ عروج بھی ھوا ۔ لیکن وہ اتنا کمزور رھا کہ وہ کچھ مذھبی ترقی کا کام نہیں کرسکے ۔

بودھ سنسکرتی کی دین

قریب پچاس سال پہلے ھمارے دیش کے بڑے بڑے پنڈتوں کو بھی بودھ مذھب کے بارے میں صاف صاف جانکاری نہیں تھی ۔ پران پڑھنے والے براھمن سمجھتے تھے کہ وشنو نے راکششوں کو برے راستے پر لگاکر برباد کرنے کے لئے بدھ کا اوتار لیا ۔ پنڈت لوگ گرنتھوں میں بودھوں کی برائی کرتے تھے۔ شنکراچاریہ کو وششٹادویت وادیوں اور مادھو گروھوں نے پرچھن بودھ کہا، یہ بھی لوگ جانتے تھے ۔ لیکن بدھ کون ؟ اور اُن کے مذھب کا پرچار کیسے ھوا اور شنکراچاریہ وغیرہ کی مذھبی کتابوں پر اُس کا اثر اِتنا کیسے پڑا، جس سے اُن کو پرچھن بودھ کہنے لگے ؟ اِن میں سے کسی بات کو بھی کوئی پنڈت صاف صاف اِتنا نہیں جانتا تھا. جس طرح تاریکی میں کوئی چیز اُس کے خلاف

दिखलाई पड़ती है, उसी तरह से उस तारीक ज़माने में बौद्ध मज़हब भी ख़िलाफ़ दिखलाई देता था. पूना के एक मशहूर पंडित ने नागानन्द नाटक लिखा. इसके नान्दी श्लोक में जो "मारवधू (मार की स्त्रियां)" लफ़्ज़ है, उसने उसको नहीं समझा. सभी हाथ की लिखी नक़लों में यही लफ़्ज़ था; तो भी उसने उसे बदलकर "वारवधू" कर दिया. हमारे यहाँ के दिग्गज पंडितों को भी बौद्ध धर्म के बारे में इतनी जानकारी न थी.

मग़रबी पंडितों को भी बौध मज़हब के बारे में बहुत कम जानकारी थी. वे जानते थे कि तिब्बत, ब्रह्मा, चीन वग़ैरा मुल्कों में बौद्ध मज़हब राइज है; पर यह नहीं जानते थे कि इस धर्म का वसीला और फैलाव भारतवर्ष में ही हुआ था और भारती साधुओं ने ही ग़ैर मुल्कों में जाकर इस मज़हब को फैलाया. जब पहले पहल अंग्रेज़ आलिमों ने एलोरा की तरह की कारीगरियों की जगहों को देखा, तब उन लोगों ने अन्दाज़ा किया कि यह कारीगरियाँ भारतीयों की हो ही नहीं सकतीं. उन्होंने यह अन्दाज़ा किया कि उन्हीं के बराबर किसी मोहज़्ज़ब क़ौम ने भारत में आकर इन कारीगरियों की शुरूआत की होगी. धीरे धीरे पच्छिमी पंडितों की कोशिश से, जिनमें पच्छिमी मिशनरियों की भी शिरकत थी, भारतीयों को बौद्ध मज़हब के बारे में कुछ जानकारी होने लगी. फिर भी आम जनता एलोरा या अजंता की कारीगरियों का बौद्धों से रिश्ता न जान सकी, और सारे भारती अदब पर बौद्ध मज़हब का जो असर पड़ा है, उसकी भला उन्हें कैसे जानकारी हो सकती थी ?

वेद, ब्राह्मण और आरण्यकों को छोड़कर ऐसा कोई मज़हबी या दूसरा पुराना ग्रन्थ नहीं है, जिस पर बौद्ध ग्रन्थों का असर न पड़ा हो. इतना ही कहना काफ़ी है कि जो वेदान्त अदब सबसे ऊँचा समझा जाता है, उसका निचोड़ फ़ना और बक़ा से ही लिया गया है और इसी वजह से शंकराचार्य प्रच्छन्न बौद्ध कहलाये. दस्तकारियों के बारे में तो कुछ कहने की ज़रूरत ही नहीं है. जो कुछ अच्छी से अच्छी कारीगरी आजकल हासिल है, वह सब बौद्ध कारीगरों की ही है. बौद्धों के बाद जैनों और शैव साधुओं ने भी उनकी नक़ल की पर बौद्ध कारीगरी की बराबरी में वे न आ सके.

जापान, चीन, तिब्बत, सयाम, सिंहल वग़ैरा मुल्कों में भारत के बारे में जो इतनी इज़्ज़त का इज़हार होता है वह किस की देन है ? उन मुल्कों के जिन लोगों ने भारत नहीं देखा है, वे भारत को ही नहीं बल्कि भारत के बाशिन्दों को भी इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं. पच्छिमी लोगों की तरफ़ हमारे बाप दादे अगर हथियारों से इन मुल्कों पर फ़तह पाते तो उनसे इज़्ज़त की जगह पर आज हम नफ़रत ही पाते. हमारे बुज़ुर्ग बौद्ध संतों ने उन मुल्कों पर जो

دکھلائی پڑتی ھے' اُسی طرح سے اُس تاریک زمانے میں بودھ مذھب بھی خلاف دکھلائی دیتا تھا ۔ پونہ کے ایک مشہور پنڈت نے ناگانند ناٹک لکھا ۔ اِس کے ناندی اشلوک میں جو "ماروِدھو (مار کی اِستریاں)" لفظ ھے' اُس نے اُس کو نہیں سمجھا ۔ سبھی ھاتھ کی لکھی نقلوں میں یہی لفظ تھا؛ تو بھی اُس نے اُسے بدل کر "وارودھو" کردیا ۔ ھمارے یہاں کے دگج پنڈتوں کو بھی بودھ دھرم کے بارے میں اتنی جانکاری نہ تھی۔

مغربی پنڈتوں کو بھی بودھ مذھب کے بارے میں بہت کم جانکاری تھی ۔ وے جانتے تھے کہ تبت' برھما' چین وغیرہ ملکوں میں بودھ مذھب رائج ھے' پر یہ نہیں جانتے تھے کہ اِس دھرم کا وسیلہ اور پھیلاؤ بھارت ورش میں ھی ھوا تھا اور بھارتی سادھوؤں نے ھی غیر ملکوں میں جاکر اِس مذھب کو پھیلایا ۔ جب پہلے پہل انگریز عالموں نے ایلورا کی طرح کی کاریگریوں کی جگہوں کو دیکھا' تب اُن لوگوں نے اندازہ کیا کہ یہ کاریگریاں بھارتیوں کی ھو ھی نہیں سکتیں ۔ اُنھوں نے یہ اندازہ کیا کہ اُنھیں کے برابر کسی مہذب قوم نے بھارت میں آکر ان کاریگریوں کی شروعات کی ھوگی ۔ دھیرے دھیرے پچھمی پنڈتوں کی کوشش سے' جن میں پچھمی مشنریوں کی بھی شرکت تھی' بھارتیوں کو بودھ مذھب کے بارے میں کچھ جانکاری ھونے لگی ۔ پھر بھی عام جنتا ایلورا یا اجنتا کی کاریگریوں کا بودھوں سے رشتہ نہ جان سکی اور سارے بھارتی ادب پر بودھ مذھب کا جو اثر پڑا ھے' اُس کی بھلا اُنھیں کیسے جانکاری ھو سکتی تھی ؟

وید' براھمن اور آرنیکوں کو چھوڑ کر کوئی ایسا کوئی مذھبی یا دوسرا پرانا گرنتھ نہیں ھے' جس پر بودھ گرنتھوں کا اثر نہ پڑا ھو ۔ اِتنا ھی کہنا کافی ھے کہ جو ویدانت ادب سب سے اونچا سمجھا جاتا ھے' اُس کا نچوڑ فنا اور بقا سے ھی لیا گیا ھے اور اِسی وجہہ سے شنکراچاریہ پرچھن بودھ کہلائے ۔ دستکاریوں کے بارے میں تو کچھ کہنے کی ضرورت ھی نہیں ھے. جو کچھ اچھی سے اچھی کاریگری آجکل حاصل ھے' وہ سب بودھ کاریگروں کی ھی ھے ۔ بودھوں کے بعد جینوں اور شیو سادھوؤں نے بھی اُن کی نقل کی پر بودھ کاریگری کی برابری میں وے نہ آسکے ۔

جاپان' چین' تبت' سیام' سنگھل وغیرہ ملکوں میں بھارت کے بارے میں جو اتنی عزت کا اظہار ھوتا ھے وہ کس کی دین ھے ؟ اُن ملکوں کے جن لوگوں نے بھارت نہیں دیکھا ھے' وے بھارت کو ھی نہیں بلکہ بھارت کے باشندوں کو بھی عزت کی نگاہ سے دیکھتے ھیں ۔ پچھمی لوگوں کی طرف ھمارے باپ دادے اگر ھتھیاروں سے اُن ملکوں پر فتح پاتے تو اُن سے عزت کی جگہ پر آج ھم نفرت ھی پاتے ۔ ھمارے بزرگ بودھ سنتوں نے اُن ملکوں پر جو

मजहबी फतह पाई है, वह हमारे लिये जेवर के बराबर है, लेकिन अफसोस की बात है कि हमारे आलिमों को भी बौद्ध मजहब की अभी बहुत ही कम जानकारी है.

बौद्ध मजहब की जानकारी के बिना हमारी पुरानी तवारीख और कारीगरी की जानकारी हो ही नहीं सकती. इतना ही नहीं, बीच के जमाने में जो साधु सन्त हुए, उनकी कहावतों में भरी हुई रहमदिली, नेकचलनी, अच्छी सोहबत वगैरा सभी बातें कहाँ से आई ? इन सबों का जरिया बौद्ध धर्म ही है. बौद्ध धर्म के साधुओं और उपदेश देने वालों ने जनता की जिन्दगी में इखलाक का जो बीज बोया, वह बर्बाद नहीं हुआ. खिलाफ हालतों में भी उसकी कुछ कुछ पाबन्दी इन वैष्णव साधू संतों ने की है.

महात्मा गांधीजी ने जो अहिंसा का इन्कलाब शुरू किया और आम जनता ने एक जबान से उसकी जो ताईद की, उसका भी बीज इसी बौद्ध और कुछ कुछ जैन संस्कृति में है. सब लोग जानते हैं कि महात्मा गांधी पर श्रीमद रामचन्द्र नामी एक जैनी आलिम का बहुत असर पड़ा. एक तो काठियावाड़ में वे वैष्णव खान्दान में पैदा हुए और दूसरे वहाँ जैनों की मजहबी जमाअत भी काफी तादाद में मौजूद है. अगर अहिंसा का बीज भारत में नहीं होता तो बहुत से हिन्दू समाज को महात्मा जी का सत्याग्रह पसन्द न होता. इसलिये आज आम जनता की नब्ज पहचानने और भारतवर्ष की तहजीब के फिर से उरूज पर आने के लिये बौद्ध संस्कृति की जानकारी होना बहुत ही जरूरी है.

———

सब के साथ भलाई करो, अगर तुम्हारे साथ कोई बुराई करता है तो उसकी जिम्मेवारी उस पर है, तुम उसकी देखा देखी अपने दिल को खराब करके फर्ज़ से न हटो.

—संत वाणी.

———

مذہبی فتح پائی ہے، وہ ہمارے لئے زیور کے برابر ہے، لیکن افسوس کی بات ہے کہ ہمارے عالموں کو بھی بودھ مذہب کی ابھی بہت ہی کم جانکاری ہے۔

بودھ مذہب کی جانکاری کے بنا ہماری پرانی تواریخ اور کاریگری کی جانکاری ہو ہی نہیں سکتی۔ اتنا ہی نہیں، بیچ کے زمانے میں جو سادھو سنت ہوئے، ان کی کہاوتوں میں بھری ہوئی رحمدلی، نیک چلنی، اچھی صحبت وغیرہ سبھی باتیں کہاں سے آئیں ؟ ان سبوں کا ذریعہ بودھ دھرم ہی ہے۔ بودھ دھرم کے سادھوؤں اور اپدیش دینے والوں نے جنتا کی زندگی میں اخلاق کا جو بیج بویا، وہ برباد نہیں ہوا۔ خلاف حالتوں میں بھی اس کی کچھ کچھ پابندی ان ویشنو سادھو سنتوں نے کی ہے۔

مہاتما گاندھی جی نے جو اہنسا کا انقلاب شروع کیا اور عام جنتا نے ایک زبان نے اس کی جو تائید کی، اس کا بھی بیج اسی بودھ اور کچھ کچھ جین سنسکرتی میں ہے۔ سب لوگ جانتے ہیں کہ مہاتما گاندھی پر شریمد رام چندر نامی ایک جینی عالم کا بہت اثر پڑا۔ ایک تو کاٹھیاواڑ میں وے ویشنو خاندان میں پیدا ہوئے اور دوسرے وہاں جینیوں کی مذہبی جماعت بھی کافی تعداد میں موجود ہے۔ اگر اہنسا کا بیج بھارت میں نہیں ہوتا تو بہت سے ہندو سماج کو مہاتما جی کا ستیاگرہ پسند نہ ہوتا۔ اس لئے آج عام جنتا کی نبض پہچاننے اور بھارت ورش کی تہذیب کے پھر سے عروج پر آنے کے لئے بودھ سنسکرتی کی جانکاری ہونا بہت ہی ضروری ہے۔

———

سب کے ساتھ بھلائی کرو، اگر تمہارے ساتھ کوئی برائی کرتا ہے تو اس کی ذمہ واری اس پر ہے، تم اس کی دیکھا دیکھی اپنے دل کو خراب کرکے فرض سے نہ ہٹو۔

—سنت وانی۔

———

मुहम्मद साहब के कुछ उपदेश

मुहम्मद साहब ने कहा.—"वह आदमी हम में से नहीं है जो छोटों पर दया नहीं करता, जो बड़ों का आदर नहीं करता, जो दूसरों को इनसाफ़ करने के लिये नहीं कहता, और जो लोगों को बुराई से नहीं बचाता."

—इब्न अब्बास, तिरमिज़ी.

पैग़म्बर ने मेरे दादा अबु मूसा को और मुआज़ को दोनों को यमन भेजा, तो उनसे कहा कि:—"लोगों के लिये आसानी पैदा करना, उनके लिये कोई मुश्किल खड़ी न करना, उनके दिलों को खुश रखना, उनमें एक दूसरे से नफ़रतें पैदा न करना, मिलकर काम करना और आपस में कभी झगड़ा न करना."

—अबु बरदा, बुख़ारी: मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—"खाओ, पियो और दूसरों को ख़ैरात दो और कपड़े पहनो, लेकिन फ़िज़ूल ख़रची न करो और न दिखावा या घमंड करो."

—इब्न अमरू बिन अलआस, बुख़ारी: नसाई.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"सफ़ेद कपड़े पहनो, क्योंकि वही तुम्हारे लिये सबसे अच्छे हैं; और सफ़ेद कपड़ों में ही अपने मुर्दों को दफ़न करो."

—इब्न अब्बास, अबुदाऊद: तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—"जो आदमी भी किसी चीज़ का इजारेदार बन जाता है वह गुनाह करता है."

—मेमार, मुसलिम. अबुदाऊद: तिरमिज़ी.

अनस का कहना है कि:—"मुहम्मद साहब ने अपने पास कभी कोई चीज़ अगले दिन के लिये बचा कर नहीं रखी."

—अनस, तिरमिज़ी.

محمد صاحب کے کچھ اُپدیش

محمد صاحب نے کہا:— وہ آدمی ہم میں سے نہیں ہے جو چھوٹوں پر دیا نہیں کرتا' جو بڑوں کا آدر نہیں کرتا' جو دوسروں کو انصاف کرنے کے لئے نہیں کہتا اور جو لوگوں کو برائی سے نہیں بچاتا ."

—ابن عباس' ترمذی .

پیغمبر نے میرے دادا ابو موسیٰ کو اور معاذ کو دونوں کو یمن بھیجا' تو اُن سے کہا کہ:—"لوگوں کے لئے آسانی پیدا کرنا' اُن کے لئے کوئی مشکل کھڑی نہ کرنا' اُن کے دلوں کو خوش رکھنا' اُن میں ایک دوسرے سے نفرت پیدا نہ کرنا' ملکر کام کرنا اور آپس میں کبھی جھگڑا نہ کرنا ."

—ابو بردہ' بخاری: مسلم .

محمد صاحب نے کہا کہ— "کھاؤ' پیئو اور دوسرے کو خیرات دو اور کپڑے پہنو' لیکن فضول خرچی نہ کرو نہ دکھاوا یا گھمنڈ کرو ."

—ابن عمرو بن العاص' بخاری: نسائی .

محمد صاحب نے کہا کہ:—سفید کپڑے پہنو' کیونکہ وہی تمہارے لئے سب سے اچھے ہیں؛ اور سفید کپڑوں میں ہی اپنے مردوں کو دفن کرو ."

—ابن عباس' ابوداؤد: ترمذی .

محمد صاحب نے کہا کہ:—"جو آدمی بھی کسی چیز کا اجارہ دار بن جاتا ہے وہ گناہ کرتا ہے ."

—معمار' مسلم: ابوداؤد: ترمذی .

انس کا کہنا ہے کہ:—"محمد صاحب نے اپنے پاس کبھی کوئی چیز اگلے دن کے لئے بچا کر نہیں رکھی ."

—انس' ترمذی .

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—"अगर मेरे पास ओहद पहाड़ के बराबर सोना हो तो मुझे ख़ुशी इस में होगी कि मैं तीन लगातार रातों तक उसका कोई भी हिस्सा अपने पास न रहने दूँ; सिवाय किसी ऐसे हिस्से के जो मैंने अपना क़र्ज़ा अदा करने के लिये रख लिया हो."

—अबु हुरैरा, बुख़ारी.

अबु हुरैरा का कहना है कि:—"मुहम्मद साहब इस दुनिया से चल बसे लेकिन उन्हों ने कभी पेट भर जौ की रोटी भी नहीं खाई."

—अबु हुरैरा, बुख़ारी.

आयशा का बयान है कि:—"मुहम्मद साहब के बीवी बच्चों को, मुहम्मद साहब के मरने के दिन तक, कभी दो दिन लगातार जौ की रोटी पेट भर नहीं मिली, कभी कभी महीनों गुज़र जाते थे और घर में चूल्हा न जलता था, वे दिन हम केवल खजूर खाकर और पानी पीकर गुज़ार देते थे."

—आयशा. बुख़ारी: मुसलिम: तिरमिज़ी.

ख़लीफ़ा उमर का राज जब दूर दूर के मुलकों तक फैल चुका था और उन सब मुलकों में लोग ख़ूब ख़ुशहाल थे, तो इस ख़ुशहाली का ज़िक्र करते हुए ख़लीफ़ा उमर ने एक दिन कहा कि:—"मैंने कभी कभी पैग़म्बर को दिन दिन भर भूखा रहकर गुज़ारते देखा है क्योंकि उनके पास कोई चीज़ खाने के लिये नहीं थी."

—नूमान बिन बशीर, मुसलिम.

इब्न मसऊद का कहना है कि:—"मुहम्मद साहब चटाई पर सो रहे थे! जब वे उठे तो उनके बदन पर चटाई के निशान थे. यह देखकर मैंने उनसे कहा,—'ऐ ख़ुदा के रसूल! आप इजाज़त दें तो हम एक नरम बिस्तर आपके लिये बिछादें! मुहम्मद साहब ने जवाब दिया,—'मुझे इस दुनिया के आराम से क्या लेना है. मेरा रिश्ता इसके साथ ऐसा ही है जैसा एक घुड़सवार का जो थोड़ी देर के लिये किसी पेड़ के साए में खड़ा हो जाता है, वहां कुछ देर आराम करता है और फिर वहाँ से चल देता है!,"

—इब्न मसऊद, तिरमिज़ी: इब्न माजह: अहमद.

محمد صاحب نے کہا کہ:—"اگر میرے پاس عحد پہاڑ کے برابر سونا ہو تو مجھے خوشی اِسی میں ہوگی کہ میں تین لگاتار راتوں تک اُس کا کوئی بھی حصہ اپنے پاس نہ رہنے دوں؛ سوائے کسی ایسے حصے کے جو میںنے اپنا قرضہ ادا کرنے کے لئے رکھ لیا ہو."

ابو ہریرہ' بخاری.

ابو ہریرہ کا کہنا ہے کہ:—"محمد صاحب اِس دنیا سے چل بسے لیکن اُنھوں نے کبھی پیٹ بھر جو کی روٹی بھی نہیں کھائی."

—ابو ہریرہ' بخاری.

عائشہ کا بیان ہے کہ:—"محمد صاحب کے بیوی بچوں کو' محمد صاحب کے مرنے کے دن تک' کبھی دو دن لگاتار جو کی روٹی پیٹ بھر نہیں ملی' کبھی کبھی مہینوں گذر جاتے تھے اور گھر میں چولہا نہ جلتا تھا' وے دن ہم کیول کھجور کھا کر اور پانی پی کر گذار دیتے تھے."

—عائشہ' بخاری: مسلم: ترمذی.

خلیفہ عمر کا راج جب دور دور کے ملکوں تک پھیل چکا تھا اور اُن سب ملکوں میں لوگ خوب خوشحال تھے' تو اِس خوشحالی کا ذکر کرتے ہوئے خلیفہ عمر نے ایک دن کہا کہ:— "میںنے کبھی کبھی پیغمبر کو دن دن بھر بھوکھا رہ کر گذارتے دیکھا ہے کیونکہ اُن کے پاس کوئی چیز کھانے کے لئے نہیں تھی."

—نعمان بن بشیر' مسلم.

ابن مسعود کا کہنا ہے کہ:—"محمد صاحب چٹائی پر سو رہے تھے! جب وے اُٹھے تو ان کے بدن پر چٹائی کے نشان تھے. یہ دیکھکر میں نے اُن سے کہا—'اے خدا کے رسول! آپ اِجازت دیں تو ہم ایک نرم بستر آپ کے لئے بچھادیں!' محمد صاحب نے جواب دیا'—'مجھے اِس دنیا کے آرام سے کیا لینا ہے. میرا رشتہ اِس کے ساتھ ایسا ہی ہے جیسا ایک گھوڑ سوار کا' جو تھوڑی دیر کے لئے کسی پیڑ کے سایہ میں کھڑا ہوجاتا ہے' وہاں کچھ دیر آرام کرتا ہے اور پھر وہاں سے چل دیتا ہے!'

—ابن مسعود' ترمذی: ابن ماجہ: احمد.

मुहम्मद साहब के कुछ उपदेश

हज़रत आयशा का कहना है कि :—"मुहम्मद साहब जब किसी आदमी की कोई बुराई सुनते तो वह कभी यह न कहते कि 'ऐसे आदमी की क्या हालत होगी' ? इसकी जगह ऐसे मौक़ों पर वह हमेशा यह कहते:— जो कोई इस तरह की बात कहता है उसकी क्या हालत होगी ?"

—आयशा, अबुदाऊद.

जाबिर का कहना है कि: —"मुहम्मद साहब जब कभी सफ़र में होते तो खुद हमेशा सब के पीछे रहते. वह कमज़ोरों की खबरगीरी करते, उन्हें अपने पीछे बैठा लेते और उनके लिये अल्लाह से दुआ करते रहते."

—जाबिर, अबुदाऊद.

मुहम्मद साहब जब मदीने आए तो वहां के कुछ लोग खजूर के दरख़्तों की क़लमें काट काट कर लगा रहे थे. मुहम्मद साहब ने पूछा:—"तुम लोग यह क्या कर रहे हो ?" उन्होंने जवाब दिया:—"हम हमेशा से यही करते आए हैं." मुहम्मद साहब ने कहा:—"शायद ज़ियादा अच्छा हो अगर तुम इन दरख़्तों को न काटो छाँटो." उन लोगों ने दरख़्तों को वैसे ही छोड़ दिया. इस पर उस साल दरख़्तों में फल बहुत कम आए. मुहम्मद साहब को जब इसकी सूचना मिली तो उन्हों ने कहा कि:—"मैं केवल एक आदमी हूँ. जब मैं दीन के मामले में तुमसे कोई बात कहूँ तो उसे मान लो और जब मैं किसी और बात पर अपनी राय ज़ाहिर करूँ तो याद रखो कि मैं तुम्हारी ही तरह केवल एक आदमी हूँ."

—रफ़ी बिन ख़दीज, मुसलिम.

अलख़ुदरी का बयान है कि:—"मुहम्मद साहब परदे में रहने वाली एक कुँवारी लड़की से भी ज़ियादा शरमीले थे, जब कभी वह कोई ऐसी चीज़ देखते थे जो उन्हें पसन्द न होती थी तो हमें इसका पता उनके चेहरे से लगता था."

—अलख़ुदरी, बुख़ारी: मुसलिम.

हज़रत अली का कहना है:—मुहम्मद साहब के आख़री शब्द यह थे:—"अल्लाह से दुआ माँगो ! तुम्हारे पास जो कुछ माल असबाब है उसके लिये अल्लाह से डरो'."

—अली, अबुदाऊद.

—अनुवादक: श्री मुजीब रिज़वी.

محمد صاحب کے کچھ اپدیش

حضرت عائشہ کا کہنا ہے کہ :—"محمد صاحب جب کسی آدمی کی کوئی برائی سنتے تھے تو وہ کبھی یہ نہ کہتے کہ 'ایسے آدمی کی کیا حالت ہوگی ؟' اِس کی جگہ ایسے موقعوں پر وہ ہمیشہ یہ کہتے :—'جو کوئی اِس طرح کی بات کہتا ہے اُس کی کیا حالت ہوگی ؟"

—عائشہ' ابوداؤد .

جابر کا کہنا ہے کہ :—"محمد صاحب جب کبھی سفر میں ہوتے تو خود ہمیشہ سب کے پیچھے رہتے . وہ کمزوروں کی خبرگیری کرتے' اُنھیں اپنے پیچھے بٹھالیتے اور اُن کے لئے اللہ سے دعا کرتے رہتے ."

—جابر' ابوداؤد .

محمد صاحب جب مدینے آئے تو وہاں کے کچھ لوگ کھجور کے درختوں کی قلمیں کاٹ کاٹ کر لگا رہے تھے . محمد صاحب نے پوچھا :—تم لوگ یہ کیا کررہے رہو ؟" اُنھوں نے جواب دیا :—"ہم ہمیشہ سے یہی کرتے آئے ہیں ." محمد صاحب نے کہا :—"شاید زیادہ اچھا ہو اگر تم اِن درختوں کو نہ کاٹو چھانٹو ." اُن لوگوں نے درختوں کو ویسا ہی چھوڑ دیا . اِس پر اُس سال درختوں میں پھل بہت کم آئے . محمد صاحب کو جب اِس کی سوچنا ملی تو اُنھوں نے کہا کہ :— "میں کیول ایک آدمی ہوں . جب میں دین کے معاملہ میں تم سے کوئی بات کہوں تو اُسے مان لو اور جب میں کسی اور بات پر اپنی رائے ظاہر کروں تو یاد رکھو کہ میں تمھاری ہی طرح کیول ایک آدمی ہوں ."

—رفیع بن خدیج' مسلم .

الخدری کا بیان ہے کہ :—"محمد صاحب پردہ میں رہنے والی ایک کنواری لڑکی سے بھی زیادہ شرمیلے تھے' جب کبھی وہ کوئی ایسی چیز دیکھتے تھے جو اُنھیں پسند نہ ہوتی تھی تو ہمیں اِس کا پتہ اُن کے چہرے سے لگتا تھا ."

—الخدری' بخاری : مسلم .

حضرت علی کا کہنا ہے :—محمد صاحب کے آخری شبد یہ تھے :—"اللہ سے دعا مانگو ! تمھارے پاس جو کچھ مال اسباب ہے اس کے لئے اللہ سے ڈرو ."

—علی' ابوداؤد .

—انوادک : شری مجیب رضوی .

आत्म विद्या (इल्मे रूहानी)—आप बीती

डाक्टर भगवानदास

बनारस का शहर, इतिहास की निगाह से, इस धरती का सबसे पुराना नगर है जो अभी तक मौजूद है. इसकी शुरूआत कब और कैसे हुई इस बात का पता पुराने से पुराने जमाने के धुँधले इतिहास से भी ठीक ठीक नहीं चलता. जिस जमाने में वेदों और उपनिषदों की रचना हो रही थी उस जमाने में बनारस के राजा अजात शत्रु सच्चे खोजियों को यहाँ पर आत्मविद्या का उपदेश दिया करते थे. यहीं पर वह राजा प्रतर्दन राज करते थे जो बहुत बड़े योधा भी थे और जिन्होंने बहुत से वेद मंत्रों की रचना भी की. यहीं के एक राजा महाभारत की लड़ाई में युधिष्ठिर और कृष्ण की तरफ़ से लड़े थे. गीता में उनका ज़िक्र आता है, पर नाम नहीं दिया गया. यहीं पर राजा दिवोदास ने अपने शिष्य सुश्रुतु को 'आयुर्वेद' नाम का वह जबर्दस्त ग्रंथ दिया जो आज तक वैद्यक के बड़े ग्रंथों में गिना जाता है. यह वह जमाना था, जबकि पुराण लिखे जा रहे थे. यहीं पर, कलियुग के शुरू में, यानी कहा जाता है लगभग पाँच हजार बरस हुए वेदों के सम्पादक और महाभारत, पुराणों और ब्रह्मसूत्रों के संग्रह कर्ता व्यास अपने बहुत से चेलों को लेकर आए, और यहीं उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम दिन बिताए. यहीं पर ईसा से नौ सौ बरस पहले जैनियों के तेईसवें यानी आखिरी से एक पहले के तीर्थंकर पार्श्वनाथ पैदा हुए थे. यहीं पर लगभग पच्चीस सौ बरस हुए बुद्ध ने धर्म सुधार और दया धर्म के प्रचार का अपना अद्भुत मिशन शुरू किया था. यहीं पर बाद की सदियों में शंकर, रामानुज, वल्लभ, चैतन्य और दूसरे बड़े बड़े आचार्य और सुधारकों ने आकर प्राचीन धर्म ग्रंथों का अपना नया भाष्य यानी नई तावीलें विद्वानों के सामने रखकर उनकी तसदीक़ की. यहीं पर कबीर ने पुरानी सचाइयों को नए शब्दों में बयान किया. कबीर की भाषा जनता की भाषा है और साथ ही उसमें आत्म विद्या के रहस्य भी छिपे हुए हैं. उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों को दीन धर्म के ग़लत और बिगड़े हुए रूप से आगाह और पाक किया, उन्हें सुधारा, उनमें मेल मुहब्बत पैदा की, उन्हें हठ धर्मियों और पाखन्डों से बचाया और निजात का रास्ता बताया. यहीं पर तुलसीदास ने हिन्दी में वह रामायण लिखी जिसे पिछले तीन सौ बरस से लाखों हिन्दी भाषी भारतवासी 'वेद' की तरह मानते

آتم ودیا (علم روحانی)—آپ بیتی

ڈاکٹر بھگوان داس

بنارس کا شہر اِتہاس کی نگاہ سے، اِس دھرتی کا سب سے پرانا نگر ہے جو ابھی تک موجود ہے۔ اِس کی شروعات کب اور کیسے ہوئی اِس بات کا پتہ پرانے سے پرانے زمانے کے دھندھلے اِتہاس سے بھی ٹھیک ٹھیک نہیں چلتا۔ جس زمانے میں ویدوں اور اُپنشدوں کی رچنا ہو رہی تھی اُس زمانے میں بنارس کے راجا اجات‌شترو سچے کھوجیوں کو یہاں پر آتم ودیا کا اُپدیش دیا کرتے تھے۔ یہیں پر وہ راجا پراتردن راج کرتے تھے جو بہت بڑے یودھا بھی تھے اور جنھوں نے بہت سے وید منتروں کی رچنا بھی کی۔ یہیں کے ایک راجا مہابھارت کی لڑائی میں یدھشٹر اور کرشن کی طرف سے لڑے تھے۔ گیتا میں اُن کا ذکر آتا ہے پر نام نہیں دیا گیا۔ یہیں پر راجا دیو داس نے اپنے ششیہ سوشروتو کو آیوروید کا وہ زبردست گرنتھ دیا جو آج تک ویدیک کے بڑے سے بڑے گرنتھوں میں گنا جاتا ہے۔ یہ وہ زمانہ تھا جب پران لکھے جا رہے تھے۔ یہیں پر، کلیگ کے شروع میں، یعنی کہا جاتا ہے لگ بھگ پانچ ہزار برس ہوئے ویدوں کے سمپادک اور مہابھارت، پرانوں اور برہم سوتروں کے سنگرہ کرتا ویاس اپنے بہت سے چیلوں کو لیکر آئے، اور یہیں انہوں نے اپنے جیون کے انتم دن بتائے۔ یہیں پر عیسیٰ سے نوسو برس پہلے جینیوں کے تئیسویں یعنی آخری سے ایک پہلے کے تیرتھنکر پارشو ناتھ پیدا ہوئے تھے۔ یہیں پر لگ بھگ پچیس سو برس ہوئے بدھ نے دھرم سدھار اور دیا دھرم کے پرچار کا اپنا ادبھوت مشن شروع کیا تھا۔ یہیں پر بعد کی صدیوں میں شنکر، رامانج، ولبھ، چیتنیہ اور دوسرے بڑے بڑے آچاریہ اور سدھارکوں نے آکر پراچین دھرم گرنتھوں کا اپنا نیا بھاشیہ یعنی نئی تعویلیں ودوانوں کے سامنے رکھکر اُن کی تصدیق کی۔ یہیں پر کبیر نے پرانی سچائیوں کو نئے شبدوں میں بیان کیا۔ کبیر کی بھاشا جنتا کی بھاشا ہے اور ساتھ ہی اُس میں آتم ودیا کے رہسیہ چھپے ہوئے ہیں۔ اُنہوں نے ہندؤں اور مسلمانوں دونوں کو دین دھرم کے غلط اور بگڑے ہوئے روپ سے آگاہ اور پاک کیا، اُنہیں سدھارا، اُن میں میل محبت پیدا کی، اُنہیں ہٹ دھرمیوں اور پاکھنڈوں سے بچایا، اور نجات کا راستہ بتایا۔ یہیں پر تلسی‌داس نے ہندی میں وہ راماین لکھی جسے پچھلے تین سو برس سے لاکھوں ہندی بھاشی بھارت‌واسی 'وید' کی طرح مانتے

रहे हैं. बनारस (वाराणसी या काशी), बावजूद बहुत कुछ पतन, गिरावट और तरह तरह की बुराइयों के, अनन्त काल से भारत की धार्मिक राजधानी और संस्कृत विद्या का सब से बड़ा केन्द्र रहा है और अभी तक है. बनारस में सन् 1791 ई० में क्वीन्स कालिज क़ायम हुआ. उस कालिज के साथ एक स्कूल भी था. उस स्कूल की मैट्रीकुलेशन क्लास में सन् 1880 ई० में एक लड़का पढ़ता था. वह लड़का उस समय अपनी उमर के बारहवें साल में था. उसके साथ कुछ दुरघटनाएं हुईं. उसे अपनी दादी से बहुत प्यार था. दादी भी उसे बहुत प्यार करती थी. उसी साल उसने अपनी दादी को मरते हुए देखा. वह चिता तक अरथी के साथ गया. रास्ते भर वह खूब रोता रहा. वह बेहद हैरान था कि इस सब जीने और मरने का मतलब क्या है. इसके बाद उसे इधर उधर से कुछ चीजें पढ़ने को मिलीं. उनमें लिखा था कि कुछ सन्त, महात्मा, रिषि और योगी ऐसे भी होते हैं जिन्हें इन अलौकिक चीजों की जानकारी होती है, वह जिन्दगी और मौत के छिपे हुए राजों को जानते हैं. कुछ नेकदिल सन्यासियों और रूहानी लोगों से उस लड़के की कभी कभी बात चीत भी हुई. उसके शुरू बचपन में एक पंडित रोज शाम को उसके घर आकर घर के लोगों को धर्म की किताबें पढ़कर सुनाया और समझाया करते थे. लड़के ने उस ज़माने में अपनी दादी के साथ बैठकर वालमीकि रामायण, व्यास की महाभारत और कई पुराण सुने थे. उसने बड़े शौक़ के साथ उन किताबों की कहानियों को उन दिनों याद कर लिया था. उन कहानियों के अन्दर जो फ़िलासफ़ी भरी हुई थी वह या तो उस बच्चे के सर के ऊपर से यूँही निकल जाती थी या अगर कोई असर उस पर रह जाता था तो इस तरह का कि जिसका उसे खुद पता न था. उस बारह बरस के लड़के ने जितना कुछ पढ़ या सुन रखा था उसे वह बहुत ही कम या केवल एक सरसरी तौर पर समझता था. फिर भी अब उसके कुछ सोए हुए संस्कार जागने लगे. उसके छिपे हुए क़ुदरती रुझानों में अंकुर फूटने लगे. अपने हम-उम्र दूसरे लड़कों की तरह वह खेलता कूदता, तमाशे देखता, सैर करता और कभी पढ़ता या स्कूल जाता, लेकिन इन सब हालतों के अंदर उसके लड़कपन के दिमाग़ में अब यह एक अजीब विचार बार बार आने लगा कि इस दुनिया की यह सब ज़िंदगी कुछ बेकार सी चीज है. उसके दिल में सृष्टि के रहस्य (राज़) को समझने के लिये एक धड़कन सी होने लगी. वह किसी एक अच्छी चीज की खोज में था, पर अपनी इस इच्छा को खुद भी पूरी तरह न समझता था. उसकी यह लालसा ऐसी ही थी जैसी पतंगे को तारे के लिये, या रात को सुबह के लिये. उसका दिल किसी ऐसी चीज के

رھے ھیں۔ بنارس (وارانسی یا کاشی)، باوجود بہت کچھ پتن، گراوٹ اور طرح طرح کی برائیوں کے، اننت کال سے بھارت کی دھارمک راجدھانی اور سنسکرت ودیا کا سب سے بڑا کیندر رہا ھے اور ابھی تک ھے. بنارس میں سن 1791ء میں کوینس کالج قایم ھوا۔ اُس کالج کے ساتھ ایک اسکول بھی تھا۔ اس اسکول کی میٹریکولیشن کلاس میں سن 1880ع میں ایک لڑکا پڑھتا تھا۔ وہ لڑکا اُس سمے اپنی عمر کے بارھویں سال میں تھا۔ اُس کے ساتھ کچھ درگھٹنائیں ھوئیں۔ اُسے اپنی دادی سے بہت پیار تھا۔ دادی بھی اُسے بہت پیار کرتی تھی۔ اُسی سال اُس نے اپنی دادی کو مرتے ھوئے دیکھا۔ وہ چتا تک ارتھی کے ساتھ گیا۔ راستے بھر وہ خوب روتا رھا۔ وہ بےحد حیران تھا کہ اِس سب جینے اور مرنے کا مطلب کیا ہے۔ اِس کے بعد اُسے اِدھر اُدھر سے کچھ چیزیں پڑھنے کو ملیں. ان میں لکھا تھا کہ کچھ سنت، مہاتما، رشی اور یوگی ایسے بھی ھوتے ھیں جنھیں اِن الوکک چیزوں کی جانکاری ھوتی ھے، وہ زندگی اور موت کے چھپے ھوئے رازوں کو جانتے ھیں۔ کچھ نیک دل سنیاسیوں اور روحانی لوگوں سے اُس لڑکے کی کبھی کبھی بات چیت بھی ھوئی۔ اُس کے شروع بچپن میں ایک پنڈت روز شام کو اُس کے گھر آکر گھر کے لوگوں کو دھرم کی کتابیں پڑھکر سنایا اور سمجھایا کرتے تھے۔ لڑکے نے اُس زمانے میں اپنی دادی کے ساتھ بیٹھکر والمیکی راماین، ویاس کی مہابھارت اور کئی پران سنے تھے۔ اُس نے بڑے شوق کے ساتھ ان کتابوں کی کہانیوں کو اُن دنوں یادکر لیا تھا۔ اُن کہانیوں کے اندر جو فلاسفی بھری ھوئی تھی وہ یا تو اُس بچے کے سر کے اُوپر سے یوں ھی نکل جاتی تھی یا اگر کوئی اثر اُس پر رہ جاتا تھا تو اِس طرح کا کہ جس کا اُسے خود پتہ نہ تھا۔ اُس بارہ برس کے لڑکے نے جتنا کچھ پڑھ یا سن رکھا تھا اُسے وہ بہت ھی کم یا کیول ایک سرسری طور پر ھی سمجھتا تھا۔ پھر بھی اب اُس کے کچھ سوئے ھوئے سنسکار جاگنے لگے۔ اُس کے چھپے ھوئے قدرتی رجحانوں میں انکور پھوٹنے لگے۔ اپنے ھم عمر دوسرے لڑکوں کی طرح وہ کھیلتا کودتا، تماشے دیکھتا، سیر کرتا اور کبھی پڑھتا یا اسکول جاتا، لیکن ان سب حالتوں کے اندر اُس کے لڑکپن کے دماغ میں اب یہ ایک عجیب وچار بار بار آنے لگا کہ اِس دنیا کی یہ سب زندگی کچھ بیکار سی چیز ھے۔ اُس کے دل میں سرشٹی کے رھسیہ (راز) کو سمجھنے کے لئے ایک دھڑکن سی ھونے لگی۔ وہ کسی ایک اچھی چیز کی کھوج میں تھا، پر اپنی اِس اِچھا کو خود بھی پوری طرح نہ سمجھتا تھا۔ اُس کی یہ لالسا ایسی ھی تھی جیسی پتنگے کو تارے کے لئے، یا رات کو صبح کے لئے۔ اُس کا دل کسی ایسی چیز کے

लिये बेक़रार था जो हमारी इस सुख दुख की दुनिया से ऊपर हो. इस जीवन के दुख दर्दों के बारे में कई तरह के सवाल उसके दिल में पैदा हुए. ज्यों ज्यों वह बड़ा होता गया यह सवाल और गहरे होते चले गए. जब वह कालिज में पढ़ने लगा तब भी इस तरह के सवाल उसके अंदर उठते रहे, धीरे धीरे ये सवाल एक ख़ास शक्ल लेने लगे. उस लड़के के दिल में हर वक्त यह जानने की इच्छा ज़ोर पकड़ने लगी कि हमारे अंदर, बाहर और चारों तरफ़ यह दुख दर्द 'क्यों' हैं और इनका इलाज 'कैसे' और 'क्या' हो सकता है ? इन्हीं सवालों के अधीन और बहुत से अनगिनत सवाल उसके दिल में पैदा होने और उसे दिक़ करने लगे. ये सब सवाल अन्त में इसी एक सवाल से सम्बन्ध रखते थे. कि दुनिया के सब दुखों की जड़ क्या है और उनका इलाज क्या है और यह दुनिया और यह सारी सृष्टि जिस में अनन्त पेच दर पेच हैं, जिनके ऊपर और जिनके अन्दर यह सब दुख और बुराई ज़ोरों के साथ छाई हुई है, क्यों है, कैसे है, और कहां से आई ?

हम किसी भी चीज़ के किसी एक हिस्से को उस समय तक पूरी तरह और ठीक ठीक नहीं समझ सकते और न उससे काम ले सकते हैं जब तक उसके बाक़ी सब हिस्सों के साथ उस हिस्से के सम्बन्ध को न जान लें. सब हिस्से मिलकर पूरी चीज़ या पूरी इकाई बनते हैं. उस पूरी इकाई के अन्दर हर हिस्से की अपनी जगह है. हर हिस्सा बाक़ी हिस्सों के साथ या तो मिलकर काम करता है, या उनके मातहत काम करता है, और या उनके ऊपर रहकर उन्हें चलाता और चलने में मदद देता है. अलग अलग हिस्सों में कहीं कार्य और कारण यानी इल्लत और मालूल का सम्बन्ध होता है और कहीं क्रिया और प्रतिक्रिया यानी अमल और रद्दे अमल का. जब तक हम उन सब सम्बन्धों को एक मोटे तार पर न समझ लें तब तक हम किसी एक हिस्से या एक चीज़ को ठीक ठीक नहीं समझ सकते. दूसरे शब्दों में किसी पूरी चीज़ को या उसके किसी हिस्से को, जैसे आदमी को और समाज को, समाज को और इस सारे विश्व को, पिंड को और ब्रह्माण्ड को, किसी महदूद चीज़ को और ला-महदूद को हम केवल तभी समझ सकते हैं और तभी उसका ठीक ठीक व्यवहार कर सकते हैं जब हम इन सब सम्बन्धों को समझलें और बार बार उन पर ध्यान देते रहें. महाभारत के अन्दर जिस समय अर्जुन विषाद में डूबा हुआ, निराश, रंज और ग़म से घबराया हुआ, दया से भर जाता है, और अपने सगे रिश्तेदारों और चचेरे और ममेरे भाइयों को मारने के विचार से कांप उठता है, तो उसके मन को फिर से स्थिर करने के लिये, उसके दिल और दिमाग़ को ठीक करने के लिये, उसे

لئے بیقرار تھا جو ہماری اِس سکھ دکھ کی دنیا سے اُوپر ہو. اس جیون کے دکھ دردوں کے بارے میں کئی طرح کے سوال اُس کے دل میں پیدا ہوئے. جیوں جیوں وہ بڑا ہوتا گیا یہ سوال اور گہرے ہوتے چلے گئے. جب وہ کالج میں پڑھنے لگا تب بھی اِس طرح کے سوال اُس کے اندر اُٹھتے رہے، دھیرے دھیرے یہ سوال ایک خاص شکل لینے لگے. اُس لڑکے کے دل میں ہر وقت یہ جاننے کی اِچھا زور پکڑنے لگی کہ ہمارے اندر، باہر اور چاروں طرف یہ دکھ درد 'کیوں' ہیں اور اِن کا علاج 'کیسے' اور 'کیا' ہوسکتا ہے؟ انہیں سوالوں کے ادھین اور بہت سے انگنت سوال اُس کے دل میں پیدا ہونے اور اُسے دق کرنے لگے. یہ سب سوال انت میں اِسی ایک سوال سے سمبندھ رکھتے تھے کہ دنیا کے سب دکھوں کی جڑ کیا ہے اور اُن کا علاج کیا ہے اور یہ دنیا اور یہ ساری سرشٹی جس میں اننت، پیچ در پیچ ہیں، جن کے اُوپر اور جن کے اندر یہ سب دکھ اور برائی زوروں کے ساتھ چھائی ہوئی ہے، کیوں ہے، کیسے ہے اور کہاں سے آئی؟

ہم کسی بھی چیز کے کسی ایک حصے کو اُس سمے تک پوری طرح اور ٹھیک ٹھیک نہیں سمجھ سکتے اور نہ اُس سے کام لے سکتے ہیں جب تک اُس کے باقی سب حصوں کے ساتھ اُس حصے کے سمبندھ کو نہ جان لیں. سب حصے ملکر پوری چیز یا پوری اکائی بنتے ہیں. اُس پوری اِکائی کے اندر ہر حصے کی اپنی جگہ ہے. ہر حصہ باقی حصوں کے ساتھ یا تو ملکر کام کرتا ہے، یا اُن کے ماتحت کام کرتا ہے، اور یا ان کے اُوپر رہ کر اُنہیں چلاتا اور چلنے میں مدد دیتا ہے. الگ الگ حصوں میں کہیں کاریہ اور کارن یعنی علت اور معلول کا سمبندھ ہوتا ہے اور کہیں کریا اور پرتیکریا یعنی عمل اور رد عمل کا. جب تک ہم اُن سب سمبندھوں کو ایک موٹے طور پر نہ سمجھ لیں تب تک ہم کسی ایک حصے یا ایک چیز کو ٹھیک ٹھیک نہیں سمجھ سکتے. دوسرے شبدوں میں کسی پوری چیز کو یا اُس کے کسی حصے کو، جیسے آدمی کو اور سماج کو، سماج کو اور اِس سارے وشو کو، پنڈ کو اور برھمانڈ کو، کسی محدود چیز کو اور لامحدود کو، ہم کیول تبھی سمجھ سکتے ہیں اور تبھی اُس کا ٹھیک ٹھیک ویوہار کرسکتے ہیں جب ہم اِن سب سمبندھوں کو سمجھ لیں اور بار بار اُن پر دھیان دیتے رہیں. مہابھارت کے اندر جس سمے ارجن وشاد میں ڈوبا ہوا، نراش، رنج اور غم سے گھبرایا ہوا، دیا سے بھرجاتا ہے، اور اپنے سگے رشتہ داروں اور چچیرے اور ممیرے بھائیوں کے مارنے کے وچار سے کانپ اُٹھتا ہے، تو اُس کے من کو پھر سے اِستھر کرنے کے لئے، اُس کے دل اور دماغ کو ٹھیک کرنے کے لئے، اُسے

विश्वास दिलाने के लिये, उसके इरादे को पक्का करने के लिये, उसे यह बताने के लिये कि अपने पापी रिश्तेदारों से लड़ना उस का धर्म था, उस नाज़ुक समय में जबकि दोनों तरफ़ हथियारबन्द फ़ौजें एक दूसरे पर वार करने के लिये आमने सामने तैयार खड़ी हुई थीं और लड़ाई शुरू होने में केवल एक पल भर की देर मालूम होती थी, उस समय कृष्ण ने एक दो घंटे के अन्दर, जिनमें अर्जुन के दिल की हालत और आस पास के वायु मंडल की हालत बराबर नाज़ुक और डरावनी होती चली जा रही थी, लगभग छै सौ श्लोकों के अन्दर इस सारे जीवन का अर्थ और विश्व की पूरी योजना अर्जुन को समझाई।

उस लड़के ने कालिज में साइकालाजी यानी मनोविज्ञान ईथिक्स यानी नीतिविज्ञान और मैटाफ़िज़िक्स यानी फ़िलासफ़ी के विषय लिये. वह समझना चाहता था कि आदमी के अन्दर की सोचने समझने की ताक़त, उसके भाव यानी जज़बात और उसके संकल्प यानी इरादे क्या चीज़ हैं ? नेकी और बदी क्या है ? इस दुनिया की और ज़िन्दगी की असलीयत क्या है ? वग़ैरा वग़ैरा. वह सोचता रहता था, जो लोग उससे हमदर्दी रखते थे उनके साथ बात चीत करता रहता था और इन विषयों पर जितना कुछ पढ़ सकता था पढ़ता रहता था. वह अधिकतर अंग्रेज़ी और संस्कृत की किताबें पढ़ता था. यह दोनों भाषाएं उसके लिये नई थीं. इससे उसकी मुश्किल और बढ़ गई. लेकिन इस मुश्किल से अन्त में उसे फ़ायदा ही पहुँचा. पुराने संस्कृत शब्द अब पुराने और बेमानी होते जा रहे थे. समय की आवश्यकता यह थी कि उन पुराने शब्दों में जो अनमोल विचार भरे हुए थे उनका नए सिरे से अर्थ किया जावे और उन्हें नया जामा पहनाया जावे. आजकल के मानव जीवन और आजकल की सभ्यता से लेकर नए ढंग और नए शब्दों में उन क़ीमती विचारों को नए सिरे से प्रगट किया जावे. नए ख़्याल के लोग तब ही उन्हें समझ सकते थे. पुराने लिबास में नए ख़्याल वालों को वह या तो बेजान और बेमानी दिखाई देंगे और या अनोखे और अजीब मालूम होंगे. केवल इसी तरह वे पुराने विचार पुरानी और नई पीढ़ी के लोगों को, पूरब और पच्छिम को, पुराने और आजकल के जीवन को और पुराने विचारों और आजकल के विचारों को मिलाने में मदद दे सकते थे. इस तरह फ़िलासफ़ी जैसे मज़मून को अंग्रेज़ी और संस्कृत इन दो भाषाओं में पढ़ने से उस लड़के को बहुत फ़ायदा हुआ.

यह दुनिया 'क्यों' और 'कैसे' बनाई गई इस बात को समझने की ज़बरदस्त लालसा उस लड़के में एक रोग की तरह बढ़ने लगी. एक तरह का 'दिमाग़ी बुख़ार', एक तरह का 'सुन्दर जुनून' रहने लगा. "अगर मैं ज़िन्दगी की जड़,

وشواس دلانے کے لئے' اُس کے ارادے کو پکا کرنے کے لئے' اُسے یہ بتانے کے لئے' کہ اپنے پاپی رشتہ داروں سے لڑنا اُس کا دھرم تھا' اُس نازک سمے میں جب کہ دونوں طرف ہتیاربند فوجیں ایک دوسرے پر وار کرنے کے لئے آمنے سامنے تیار کھڑی ہوئی تھیں اور لڑائی شروع ہونے میں کیول ایک پل بھر کی دیر معلوم ہوتی تھی' اُس سمے کرشن نے ایک دو گھنٹے کے اندر' جن میں ارجن کے دل کی حالت اور آس پاس کے وایو منڈل کی حالت برابر نازک اور ڈراونی ہوتی چلی جا رہی تھی' لگ بھگ چھ سو شلوکوں کے اندر اِس سارے جیون کا ارتھ اور وشو کی پوری یوجنا ارجن کو سمجھائی۔

اُس لڑکے نے کالج میں سائکالاجی یعنی منووگیان' ایتھکس یعنی نیتی وگیان اور میٹافزکس یعنی فلاسفی کے وشئے لئے۔ وہ سمجھنا چاہتا تھا کہ آدمی کے اندر کے سوچنے سمجھنے کی طاقت' اُس کے بھاؤ یعنی جذبات اور اُس کے سنکلپ یعنی ارادے کیا چیز ہیں ؟ نیکی اور بدی کیا ہے ؟ اِس دنیا کی اور زندگی کی اصلیت کیا ہے ؟ وغیرہ وغیرہ۔ وہ سوچتا رہتا تھا' جو لوگ اُس سے ہمدردی رکھتے تھے اُن کے ساتھ بات چیت کرتا رہتا تھا اور ان وشیوں پر جتنا کچھ پڑھ سکتا تھا پڑھتا رہتا تھا۔ وہ ادھکتر انگریزی اور سنسکرت کی کتابیں پڑھتا تھا۔ یہ دونوں بھاشائیں اُس کے لئے نئی تھیں۔ اِس سے اُس کی مشکل اور بڑھ گئی۔ لیکن اِس مشکل سے انت میں اُسے فائدہ ہی پہونچا۔ پرانے سنسکرت شبد اب پرانے اور بے معنی ہوتے جا رہے تھے۔ سمے کی آوشیکتا یہ تھی کہ اُن پرانے شبدوں میں جو انمول وچار بھرے ہوئے تھے اُن کا نئے سرے سے ارتھ کیا جاوے اور انہیں نیا جامہ پہنایا جاوے۔ آجکل کے مانو جیون اور آجکل کی سبھیتا سے لیکر نئے ڈھنگ اور نئے شبدوں میں اُن قیمتی وچاروں کو نئے سرے سے پرگٹ کیا جاوے۔ نئے خیال کے لوگ تب ہی اُنہیں سمجھ سکتے تھے۔ پرانے لباس میں نئے خیال والوں کو وہ یا تو بےجان اور بے معنی دکھائی دینگے اور یا انوکھے اور عجیب معلوم ہونگے۔ کیول اِسی طرح وے پرانے وچار پرانی اور نئی پیڑھی کے لوگوں کو' پورب اور پچھم کو' پرانے اور آجکل کے جیون کو اور پرانے وچاروں اور آجکل کے وچاروں کو ملانے میں مدد دے سکتے تھے' اِس طرح فلاسفی جیسے مضمون کو انگریزی اور سنسکرت اِن دو بھاشاؤں میں پڑھنے سے اُس لڑکے کو بہت فائدہ ہوا۔

یہ دنیا 'کیوں' اور 'کیسے' بنائی گئی اِس بات کو سمجھنے کی زبردست لالسا اُس لڑکے میں ایک روگ کی طرح بڑھنے لگی۔ اُسے ایک طرح کا 'دماغی بخار' ایک طرح کا 'سندر جنون' رہنے لگا۔ "اگر میں زندگی کی جڑ'

उसकी असलियत और उसके अर्थ को नहीं समझ सकता तो मेरे जिन्दा रहने से ही क्या फ़ायदा !" जानते बूझते या छिपे दबे सन् 1887 तक उस लड़के के दिमाग़ की यही हालत थी. सन् 1887 में उसे किसी तरह से कुछ तसल्ली मिली. सृष्टि के आख़री 'क्यों' और 'कैसे' का एक जवाब उसके मन के अन्दर पैदा हुआ. उस जवाब के अन्दर और अनगिनत मातहत सवालों के जवाब भी आगए. उसका दिमाग़ी बुख़ार उतर गया. अधिक पवित्र यानी पाक ज़िन्दगी बसर करने की इच्छा अब उसमें ज़ोर करने लगी, वह इच्छा आज तक बनी है, और बदक़िस्मती से आज तक पूरी न हो सकी. लेकिन अगरचे उसके जीवन की सतह शान्त नहीं है और शायद नहीं हो सकती, फिर भी अपने अन्दर उसका मन एक हद तक शान्त है.

वही लड़का, वही नौजवान इस लेख का लेखक है. वह धीरज और सब्र के साथ अपने इस पुराने जरजर शरीर को त्यागने का इन्तज़ार कर रहा है, वह सबका भला चाहता है, और पूरे दिल से यह दुआ करता है कि दूसरों के दिलों को उससे अधिक शान्ति मिले जितनी उसे मिली है, या हर एक को उतनी शान्ति तो हासिल हो जावे जितनी उसे ख़ुद हासिल है.

इस मक़सद को पूरा करने के लिये, जिसके लिये वह दुआ मांगता रहता है, एक नाचीज़ कोशिश के तौर पर, अपने अन्दर की लालसा से, और कुछ नेक दोस्तों के कहने पर भी उसने अंग्रेज़ी में बहुत सी छोटी बड़ी किताबें लिखकर शाए की हैं, तीन किताबें और कुछ पैम्फ़लेट हिन्दी में लिखे हैं. उसने एक किताब संस्कृत कविता में भी लिखी है, ऐसे संस्कृत दानों की सेवा के लिए जो आजकल के नए विचारों में भी दिलचस्पी रखते हों. गीता में लिखा है कि:—"जब पुराने जिस्म कमज़ोर और बेकार हो जाते हैं, तो आत्मा यानी रूह उन्हें फेंककर नए जिस्म धारण कर लेती है, ठीक उसी तरह जिस तरह आदमी पुराने कपड़ों को फेंककर नए कपड़े पहन लेता है." इसी तरह पुरानी ग़ैरफ़ानी सचाइयों को जिन शब्दों में कभी पहले ज़ाहिर किया जा चुका है, वह शब्द जब फीके पड़ जाते हैं या काम में आते आते घिस जाते हैं तो नए शब्दों और नई भाषाओं में ज़ाहिर करना होता है, ताकि नए जीवन के साथ उनका सम्बन्ध चमक सके.

इस सिलसिले के आगे के लेखों को समझने के लिए पढ़ने वालों को तैयार कर देने की ग़रज़ से लेखक यहां अपने कुछ विश्वास दे देना चाहता है.

(1) वह मानता है कि अनगिनत और बेअन्त आत्माएं यानी रूहें मौजूद हैं.

اس کی اصلیت اور اُس کے ارتھ کو نہیں سمجھ سکتا تو میرے زندہ رہنے سے ھی کیا فایدہ !" جانتے بوجھتے یا چھپے دبے سن 1887 تک اُس لڑکے کے دماغ کی یہی حالت تھی. سن 1887 میں اُسے کسی طرح سے کچھ تسلی ملی ۔ سرشٹی کے آخری 'کیوں' اور 'کیسے' کا ایک جواب اُس کے من کے اندر پیدا ہوا . اُس جواب کے اندر اور انگنت ماتحت سوالوں کے جواب بھی آگئے ۔ اُس کا دماغی بخار اُتر گیا . ادھک پوتر یعنی پاک زندگی بسر کرنے کی اچھا اب اُس میں زور کرنے لگی، وہ اچھا آج تک بنی ھے، اور بدقسمتی سے آج تک پوری نہ ھو سکی . لیکن اگرچہ اُس کے جیون کی سطح شانت نہیں ھے اور شاید نہیں ھو سکتی، پھر بھی اپنے اندر اُس کا من ایک حد تک شانت ھے .

وھی لڑکا، وھی نوجوان اس لیکھ کا لیکھک ھے . اس سمے (1956) اس کی عمر 87 سال کی ھے . وہ دھیرج اور صبر کے ساتھ اپنے اِس پرانے جرجر شریر کو تیاگنے کا انتظار کر رہا ھے . وہ سب کا بھلا چاھتا ھے، اور پورے دل سے یہ دعا کرتا ھے کہ دوسروں کے دلوں کو اُس سے ادھک شانتی ملے جتنی اُسے ملی ھے، یا ھر ایک کو اُتنی شانتی تو حاصل ھو ھی جاوے جتنی اسے خود حاصل ھے .

اِس مقصد کو پورا کرنے کے لئے، جس کے لئے وہ دعا مانگتا رہتا ھے، ایک ناچیز کوشش کے طور پر، اپنے اندر کی لالسا سے، اور کچھ نیک دوستوں کے کہنے پر بھی، اس نے انگریزی میں بہت سی چھوٹی بڑی کتابیں لکھ کر شائع کی ھیں . تین کتابیں اور کچھ پیمفلٹ ھندی میں لکھے ھیں . اس نے ایک کتاب سنسکرت کویتا میں بھی لکھی ھے، ایسے سنسکرت دانوں کی سیوا کے لئے جو آجکل کے نئے وچاروں میں بھی دلچسپی رکھتے ھوں . گیتا میں لکھا ھے کہ:—"جب پرانے جسم کمزور اور بیکار ھو جاتے ھیں تو آتما یعنی روح اُنھیں پھینک کر نئے جسم دھارن کر لیتی ھے، ٹھیک اُسی طرح جس طرح آدمی پرانے کپڑوں کو پھینک کر نئے کپڑے پہن لیتا ھے ." اِسی طرح پرانی غیرفانی سچائیوں کو جن شبدوں میں کبھی پہلے ظاھر کیا جا چکا ھے، وہ شبد جب پھیکے پڑ جاتے ھیں یا کام میں آتے آتے گھس جاتے ھیں تو نئے شبدوں اور نئی بھاشاؤں میں ظاھر کرنا ہوتا ھے، تا کہ نئے جیون کے ساتھ اُن کا سمبندھ چمک سکے .

اِس سلسلے کے آگے کے لیکھوں کو سمجھنے کے لئے پڑھنے والوں کو تیار کر دینے کی غرض سے لیکھک یہاں اپنے کچھ وشواس دے دینا چاھتا ھے:—

(1) وہ مانتا ھے کہ انگنت اور بےانت آتمائیں یعنی روحیں موجود ھیں .

(2) वह मानता है कि इन सब रूहों की उन्नति और अवनति होती रहती है. दरजे बदरजे इनके जड़ शरीर यानी माद्दी जिस्म बनते और बिगड़ते रहते हैं. इनके आस पास के वायु मंडल भी बनते और बिगड़ते रहते हैं, और ये रूहें फिर फिर जन्म लेती रहती हैं.

(3) वह मानता है कि हर रूह हर तरह के नए नए तजरबों में से निकलती रहती है, कभी नेकी कभी बदी, कभी सुख कभी दुख, कभी उजाला कभी अंधेरा. यह सब तजरबे अनन्त समय (ज़मान), अनन्त जगह (मकान) और अनन्त गति (हरकत) के अन्दर बराबर एक दूसरे को रद्द करते, ठीक करते और एक दूसरे में समतोल (तवाज़ुन) पैदा करते रहते हैं.

(4) वह मानता है कि देश, काल और गति यानी मकान, ज़मान और हरकत के चक्र बराबर चलते रहते हैं और उनकी तेज़ी, उनकी मियाद और उनका फैलाव बराबर एक तरतीब के साथ बदलता रहता है. इसी उतार और चढ़ाव पर दुनिया की उन्नति (तरक़्क़ी) और अवनति (तनज़्ज़ुली) निर्भर है.

(5) वह मानता है कि हर तरह के देश, काल और गति से ऊपर, सदा पूर्ण, सब जगह मौजूद, और सब को अपने अन्दर लिए हुए, एक 'विश्वात्मा' यानी 'रूहे कुल' है जो चेतन ही चेतन है, अनन्त और सदा एकरस है, जो ला महदूद है, किसी पर निर्भर नहीं, कोई जिसका सानी नहीं, एक, अपने में ही पूरा, लेकिन फिर भी जिसके अन्दर सब अनगिनत अलग अलग रूहें शामिल हैं, जिसमें कभी कोई तब्दीली नहीं होती पर सृष्टि की सब पल पल की तब्दीलियाँ उसी के अन्दर हैं, सब रूहें और सब जिस्म और सारी सृष्टि उसी में, उसी से और उसी के अन्दर है.

लेखक ने अपने इन अजीब विश्वासों को, जो ऊपर से देखने में एक दूसरे के खिलाफ़ मालूम होते हैं, अपनी कई किताबों में साफ़ करने की कोशिश की है, और जहाँ तक उसकी कमज़ोर शक्तियों के लिये सम्भव है वह इन्हें इस सिलसिले के अगले लेखों में भी साफ़ करने की कोशिश करेगा.

---

(2) وہ مانتا ھے کہ اِن سب روحوں کی اُنّتی اور اونتی
نی رھتی ھے ۔ درجہ بدرجہ ان کے جڑ شریر یعنی مادی
سم بنتے اور بگڑتے رھتے ھیں ۔ اِن کے آس پاس کے وایو
ڈل بھی بنتے اور بگڑتے رھتے ھیں' اور یہ پھر جنم لیتی رھتی
ں ۔

(3) وہ مانتا ھےکہ ہر روح ہر طرح کے نئے نئے تجربوں میں
نکلتی رھتی ھے' کبھی نیکی کبھی بدی' کبھی سکھ کبھی دکھ'
ی اجالا کبھی اندھیرا ۔ یہ سب تجربے اننت سمے (زمان)
نت جگہ (مکان) اور اننت گتی (حرکت) کے اندر برابر
ے دوسرے کو رد کرتے' ٹھیک کرتے اور ایک دوسرے میں
تول (توازن) پیدا کرتے رھتے ھیں ۔

(4) وہ مانتا ھے کہ دیش' کال اور گتی یعنی مکان'
ن اور حرکت کے چکر برابر چلتے رھتے ھیں اور اُن کی تیزی'
کی میعاد اور اُن کا پھیلاؤ برابر ایک ترتیب کے ساتھ بدلتا
ا ھے' اُسی اُتار اور چڑھاؤ پر دنیا کی اُنّتی (ترقی) اور
تی (تنزل) نربھر ھے ۔

(5) وہ مانتا ھے کہ ہر طرح کے دیش' کال اور گتی سے
ر' سدا پورن' سب جگہ موجود اور سب کو اپنے اندر لئے
ے' ایک وشواتما' یعنی 'روح کل' ھے جو چیتن ھی چیتن ھے'
ت اور سدا ایک رس ھے' جو لا محدود ھے' کسی پر نربھر
ں' کوئی جس کا ثانی نہیں' ایک' اپنے ھی میں پورا'
ن پھر بھی جس کے اندر سب انگنت الگ الگ روحیں
مل ھیں' جس میں کبھی کوئی تبدیلی نہیں ھوتی پر
شٹی کی سب پل پل کی تبدیلیاں اُسی کے اندر ھیں' سب
حیں اور سب جسم اور ساری سرشٹی اُس میں' اُسی سے
اُسی کے اندر ھے ۔

لیکھک نے اپنے اِن عجیب وشواسوں کو' جو اُوپر سے دیکھنے میں
ے دوسرے کے خلاف معلوم ھوتے ھیں' اپنی کئی کتابوں میں
ف کرنے کی کوشش کی ھے' اور جہاں تک اس کی کمزور
تیوں کے لئے سمبھو ھے وہ انہیں اِس سلسلے کے اگلے لیکھوں
ں بھی صاف کرنے کی کوشش کریگا ۔

चीन में इलाज का पुराना तरीक़ा

पण्डित सुन्दरलाल

चीन से आने वाले पत्र पत्रिकाओं और खासकर वहाँ के सरकारी पत्र पत्रिकाओं में इस तरह के लेख बराबर निकलते रहते हैं. जिनसे पता चलता है कि नए चीन की सरकार वहां के हज़ारों बरस के पुराने इलाज के तरीक़े को और पुरानी दवाओं को किस तरह बढ़ावा दे रही है. हमें दुख है कि राजकुमारी अमृतकौर ने चीन से लौटकर पुरानी चीनी वैद्यक विद्या और चीनी सरकार के उसकी तरफ़ रुख की बाबत जो कुछ सूचना अपने देश और सरकार को दी वह बिल्कुल ग़लत है. हमारी राय है कि भारत सरकार की तरफ़ से देश के कुछ तजरबेकार वैद्यों और हकीमों का एक डेलीगेशन चीन जाना चाहिये जिसमें कुछ निष्पक्ष उदार हृदय अँगरेजी पढ़े डाक्टर भी हों, जो चीन जाकर इन सब बातों का अच्छी तरह अध्ययन करें और लौटकर अपने देश वासियों और सरकार को रिपोर्ट और सलाह दें.

हम अप्रैल 1956 के "चाइना रीकन्सट्रक्टस" से श्री चु शि-चिंग के एक इसी विषय के लेख से कुछ बातें उन्हीं के शब्दों में नीचे दे रहे हैं, जिससे यह पता चलता है कि पुराने तरीक़े से वहां के बीमारों का इलाज किस कामयाबी के साथ किया जाता है और किस प्रकार मरते हुओं को भी बचा लिया जाता है.

'एनसेफ़ेलाइटिस' एक बीमारी का नाम है जिसमें दिमाग़ के अन्दर सूजन आ जाती है, बीमार को ज़ोर का बुख़ार हो जाता है, चक्कर आते हैं, क़ै आती है और एक तरह की बेहोशी छा जाती है.

पेकिंग के बच्चों के अस्पताल में पिछले साल एक साल की उमर से लेकर चौदह साल की उमर तक के बत्तीस बच्चे इस बीमारी से अच्छे होकर अपने घरों को वापस आ गए. वह सब बिलकुल तन्दुरुस्त हो गए और फिर स्कूल, नरसरी आदि जाने लगे. इन बत्तीस चीनी बच्चों ने मेडिकल साइन्स का इतिहास बदल दिया, क्योंकि आज-कल के योरप के डाक्टर अधिकतर इस बीमारी को ला-इलाज समझते थे और उनके इलाज से बहुत कम लोग बचते थे.

इन सब बच्चों की जान चीन के पुराने इलाज के तरीक़े से बची. चीन के पुराने वैद्य या हकीम सैकड़ों बरस

چین میں علاج کا پرانا طریقہ

پنڈت سندر لال

چین سے آنے والے پتر پتریکاؤں اور خاص کر وہاں کے سرکاری پتر پتریکاؤں میں اِس طرح کے لیکھ برابر نکلتے رہتے ہیں جن سے پتہ چلتا ہے کہ نئے چین کی سرکار وہاں کے ہزاروں برس کے پرانے علاج کے طریقے کو اور پرانی دواؤں کو کس طرح بڑھاوا دے رہی ہے ۔ ہمیں دکھ ہے کہ راجکماری امرت کور نے چین سے لوٹ کر پرانی چینی ویدیک ودیا اور چینی سرکار کے اُس کی طرف رخ کی بابت جو کچھ سوچنا اپنے دیش اور سرکار کو دی وہ بالکل غلط ہے ۔ ہماری رائے ہے کہ بھارت سرکار کی طرف سے دیش کے کچھ تجربہ کار ویدیوں اور حکیموں کا ایک ڈیلیگیشن چین جانا چاہئے جس میں کچھ نشپکش اور ہردئے انگریزی پڑھے ڈاکٹر بھی ہوں، جو چین جاکر اِن سب باتوں کا اچھی طرح ادھین کریں اور لوٹ کر اپنے دیش واسیوں اور سرکار کو رپورٹ اور صلاح دیں ۔

ہم اپریل 1956 کے "چائنا ریکنسٹرکٹس" سے شری چوشی ینگ کے ایک اِسی وشئے کے لیکھ سے کچھ باتیں اُنہیں کے شبدوں میں نیچے دے رہے ہیں، جس سے یہ پتہ چلتا ہے کہ پرانے طریقہ سے وہاں کے بیماروں کا علاج کس کامیابی کے ساتھ کیا جاتا ہے اور کس پرکار مرتے ہوؤں کو بھی بچا لیا جاتا ہے ۔

'انسفیلائٹس' ایک بیماری کا نام ہے جس میں دماغ کے اندر سوجن آجاتی ہے، بیمار کو زور کا بخار ہو جاتا ہے، چکر آتے ہیں، قے آتی ہے اور ایک طرح کی بیہوشی سی چھا جاتی ہے ۔

پیکنگ کے بچوں کے اسپتال میں پچھلے سال ایک سال کی عمر سے لیکر چودہ سال کی عمر تک کے بتیس بچے اِس بیماری سے اچھے ہو کر اپنے اپنے گھروں کو واپس آگئے ۔ وہ سب بالکل تندرست ہو گئے اور پھر سے اسکول، نرسری آدی جانے لگے ۔ اِن بتیس چینی بچوں نے میڈیکل سائنس کا اِتہاس بدل دیا، کیونکہ آجکل کے یورپ کے ڈاکٹر ادھکتر اِس بیماری کو لا علاج سمجھتے تھے اور اِن کے علاج سے بہت کم لوگ بچتے تھے ۔

اِن سب بچوں کی جان چین کے پرانے علاج کے طریقہ سے بچی ۔ چین کے پرانے وید یا حکیم سیکڑوں برس

से इस तरह का इलाज करते आ रहे हैं. हाल में नई चीनी सरकार ने इस पुराने इलाज के तरीक़े को नए साइन्सी ढंग से आज़मा कर देखा. सरकार की आज्ञा से पहले दो साल के अन्दर एक साल की उमर से लेकर इकसठ साल की उमर तक के चव्वन बीमारों पर यह तरीक़ा आज़माया गया. चव्वन रोगियों में से इक्यावन बिलकुल अच्छे हो गए, और जो तीन अच्छे नहीं हो सके वह वह थे जिनका रोग इलाज शुरू होने से पहले बहुत बढ़ चुका था. जो इक्यावन अच्छे हो गए उनमें से किसी में रोग का या किसी दवा का कोई बुरा असर बाक़ी नहीं रहा.

इस पर चीन की मिनिस्ट्री आफ़ हेल्थ ने देश भर के अन्दर सब नए चीनी डाक्टरों से यह सिफ़ारिश की कि इस बीमारी का इलाज सब जगह इसी पुराने तरीक़े से किया जावे. नए चीन के वह सब डाक्टर जो आजकल के पच्छिमी इलाज के तरीक़ों को सीखे हुए हैं अब और बीमारियों में भी इलाज के उन पुराने चीनी तरीक़ों की खोज कर रहे हैं और उन्हें सीख रहे हैं जो चीन में सैकड़ों बरस से चले आ रहे हैं. इस विषय पर सितम्बर सन् 1955 के 'चाइना रीकन्सट्रक्ट्स'' में डाक्टर ली ताव का एक लेख "दि स्टोरी आफ़ चाइनीज़ मेडिसन" के नाम से निकल चुका है.

यह बीमारी अधिकतर पन्द्रह बरस से कम उमर के बच्चों को होती है. इसका ख़ास असर दिमाग़ और नरवस सिसटम यानी नसों पर होता है. आजकल के डाक्टर इसे लगभग लाइलाज समझते हैं. दूसरे देशों में इस रोग के जो थोड़े से रोगी बच जाते हैं उनमें से भी अधिकतर कम या ज़्यादा गूँगे या बहरे हो जाते हैं, उनपर लक़वे का असर आ जाता है और दिमाग़ पर भी बुरा असर बाक़ी रह जाता है 'पेनिसिलीन' 'स्ट्रैपटोमाईसीन' और 'औरियोमाईसीन' जैसी दवाओं का या 'सलफ़ा' दवाओं का, 'लैसमा' और 'सीरमथिरेपि' का इस बीमारी पर कोई असर नहीं होता.

योरप वालों को इस बीमारी का पता लगभग तीस बरस हुए चला. लेकिन चीन की दो हज़ार साल पहले की किताबों में इसकी अलामतें दी हुई हैं. जो इलाज आजकल चीन में इस का किया जाता है वह तीन सौ बरस पहले की लिखी हुई एक किताब से लिया गया है. उसमें इस रोग का कारण गरमी बताई गई है.

पेकिंग के बच्चों के अस्पताल में इसके चौंतीस बीमारों में से बत्तीस बिलकुल अच्छे हो गए. इलाज करने वाले चीनी वैद्य का नाम चियांग चीन-आन (Dr. Chian Chien-an) है. डाक्टर चियांग तीस साल से पुराने

سے اِس طرح کا علاج کرتے آرہے ہیں. حال میں نئی چینی سرکار نے اِس پرانے علاج کے طریقے کو نئے سائنسی ڈھنگ سے آزما کر دیکھا. سرکار کی آگیا سے پہلے دو سال کے اندر ایک سال کی عمر سے لیکر اکسٹھ سال کی عمر تک کے چوّن بیماروں پر یہ طریقہ آزمایا گیا. چوّن روگیوں میں سے اکیاون بالکل اچھے ہو گئے' اور جو تین اچھے نہیں ہو سکے وہ وہ تھے جن کا روگ علاج شروع ہونے سے پہلے بہت بڑھ چکا تھا. جو اکیاون اچھے ہو گئے اُن میں سے کسی میں روگ کا یا کسی دوا کا کوئی برا اثر باقی نہیں رہا.

اِس پر چین کی منسٹری آف ہیلتھ نے دیش بھر کے اندر سب نئے چینی ڈاکٹروں سے یہ سفارش کی کہ اِس بیماری کا علاج سب جگہ اِسی پرانے طریقے سے کیا جاوے. نئے چین کے وہ سب ڈاکٹر جو آجکل کے پچھمی علاج کے طریقوں کو سیکھے ہوئے ہیں اب اور بیماریوں میں بھی علاج کے اُن پرانے چینی طریقوں کی کھوج کر رہے ہیں اور اُنہیں سیکھ رہے ہیں جو چین میں سیکڑوں برس سے چلے آرہے ہیں. اِس وشئے پر ستمبر سن 1955 کے چائنا ریکنسٹرکٹس'' میں ڈاکٹر لی تاؤ کا ایک لیکھ ''دی اِسٹوری آف چائنیز میڈیسن'' کے نام سے نکل چکا ہے.

یہ بیماری ادھکتر پندرہ برس سے کم عمر کے بچوں کو ہوتی ہے. اِس کا خاص اثر دماغ اور نروس سسٹم یعنی نسوں پر ہوتا ہے. آجکل کے ڈاکٹر اِسے لگ بھگ لا علاج سمجھتے ہیں. دوسرے دیشوں میں اِس روگ کے جو تھوڑے سے روگی بچ جاتے ہیں اُن میں سے بھی ادھکتر کم یا زیادہ گونگے یا بہرے ہو جاتے ہیں' اُن پر لقوے کا اثر آ جاتا ہے اور دماغ پر بھی برا اثر باقی رہ جاتا ہے. 'پنسلین' اسٹریپٹو مائیسن' اور 'اوریو مائیسن' جیسی دواؤں کا یا 'سلفا' دواؤں کا' 'لیسما' اور 'سیرم تھریپی' کا اِس بیماری پر کوئی اثر نہیں ہوتا.

یورپ والوں کو اِس بیماری کا پتہ لگ بھگ تیس برس ہوئے چلا. لیکن چین کی دو ہزار سال پہلے کی کتابوں میں اِس کی علامتیں دی ہوئی ہیں. جو علاج آجکل چین میں اِس کا کیا جاتا ہے وہ تین سو برس پہلے کی لکھی ہوئی ایک کتاب سے لیا گیا ہے. اُس میں اِس روگ کا کارن گرمی بتائی گئی ہے.

پیکنگ کے بچوں کے اسپتال میں اِس کے چونتیس بیماروں میں سے بتیس بالکل اچھے ہو گئے. علاج کرنے والے چینی وید کا نام ہے چیانگ چین - اُن (Dr. Chiang Chien-an) ہے. ڈاکٹر چیانگ تیس سال سے پرانے

चीनी तरीक़े से रोगियों का इलाज करते आ रहे हैं. उनके बाप दादा भी यही काम करते थे. उन्हीं से उन्हों ने पुरानी चीनी वैद्यक विद्या को सीखा है. चीन की 'चाइनीज़ मेडिकल एसोसिएशन' के मेम्बर पहले केवल योरोपियन ढंग के डाक्टर ही हो सकते थे. अब पुराने ढङ्ग के वैद्य भी उसके मेम्बर हो सकते हैं. डाक्टर चियांग उस के एक प्रतिष्ठित मेम्बर हैं. वह बहुत से योरोपियन ढंग से सीखे हुए डाक्टरों को पुरानी चीनी वैद्यक विद्या सिखाते हैं.

चियाँग-काई-शेक की हुकूमत के दिनों में नए ढंग के डाक्टर पुरानी वैद्यक को "ग़ैर साइन्सी" कहकर उससे नफ़रत किया करते थे. नए चीन में वह हालत बिलकुल बदल गई. कोमिनताँग के शासन में पुराने चीनी वैद्य या हकीम नए अस्पतालों में नहीं घुस सकते थे. पर जनता ने उनके इलाज को जारी रखा और करोड़ों लोग उससे फ़ायदा उठाते रहे. अब नई सरकार में उस पुरानी विद्या की क़दर बहुत बढ़ गई.

डाक्टर चियाँग को जब पेकिंग के बच्चों के अस्पताल में लाया गया तो उन्हों ने अपने ही पुराने ढंग से रोगियों को देखना शुरू किया. उन्हों ने उनके साँस को देखा, उनकी नब्ज़ देखी, उनकी ज़बान देखी और उनके चेहरे की हालत देखी. हर रोगी की हालत के अनुसार उन्हें अलग अलग दवाएं दीं.

उन्होंने एक चार बरस की लड़की पाओ को देखा जिसे किसी पच्छिमी डाक्टर ने 'पेनिसिलीन' के इनजेक्शन दे रखे थे और 'एसपिरिन' जैसी दवाएं खिला रखी थीं और फिर यह कह दिया था कि वह दो एक दिन से अधिक नहीं बच सकती. डाक्टर चियांग ने जब उसे देखा. तो उसे एक सौ साढ़े चार दरजे का बुख़ार था और उसके सर पर बरफ़ की टोपी रखी हुई थी. डाक्टर चियांग ने पहले वह टोपी उतार कर फेंक दी, यह कहकर कि इस तरह जल्दी से बुख़ार नहीं उतारना चाहिये, इससे अन्त में नुक़सान होता है. उन्हो ने पसीना आने की दवा देना भी ग़लत बताया, यह कहकर कि पसीना आने की दवा देना "ऐसा ही है जैसा खली में से तेल निचोड़ने की कोशिश करना, इससे रोगी और कमज़ोर हो जाता है." डाक्टर चियाँग ज़ियादा गरम दवाओं के भी ख़िलाफ़ हैं जैसे 'कोरामाइन'. वह इस रोग के लिये रोगी के आराम करने पर बहुत ज़ोर देते हैं.

पहले इस रोग के रोगियों को दूध, अंडे, और दूसरी ताक़त की चीज़ें खाने को दी जाती थीं. डाक्टर चियांग ने कहा कि "बुख़ार में इस तरह की चीज़ें देना और कोयले डालकर आग बुझाने की कोशिश करना है." उन्हों ने इन

چینی طریقے سے روگیوں کا علاج کرتے آرہے ہیں۔ اُن کے باپ دادا بھی یہی کام کرتے تھے۔ اُنہیں سے اُنہوں نے پرانی چینی ویدیک ودیا کو سیکھا ہے۔ چین کی 'چائینز میڈیکل ایسوسیئیشن' کے ممبر پہلے کیول یوروپین ڈھنگ کے ڈاکٹر ہی ہو سکتے تھے۔ اب پرانے ڈھنگ کے وید بھی اُس کے ممبر ہو سکتے ہیں۔ ڈاکٹر چیانگ اُس کے ایک پرتشٹھت ممبر ہیں۔ وہ بہت سے یوروپین ڈھنگ سے سیکھے ہوئے ڈاکٹروں کو پرانی چینی ویدک ودیا سکھاتے ہیں۔

چیانگ کائی شیک کی حکومت کے دنوں میں نئے ڈھنگ کے ڈاکٹر پرانی ویدیک کو "غیر سائنسی" کہ کر اُس سے نفرت کیا کرتے تھے۔ نئے چین میں وہ حالت بالکل بدل گئی۔ کومنتانگ کے شاسن میں پرانے چینی وید یا حکیم نئے اسپتالوں میں نہیں گھس سکتے تھے۔ پر جنتا نے اُن کے علاج کو جاری رکھا اور کروڑوں لوگ اُس سے فایدہ اُٹھاتے رہے۔ اب نئی سرکار میں اُس پرانی ودیا کی قدر بہت بڑھ گئی۔

ڈاکٹر چیانگ کو جب پیکنگ کے بچوں کے اسپتال میں لایا گیا تو اُنہوں نے اپنے ہی پرانے ڈھنگ سے روگیوں کو دیکھنا شروع کیا۔ اُنہوں نے اُن کے سانس کو دیکھا، اُن کی نبض دیکھی، اُن کی زبان دیکھی اور اُن کے چہرے کی حالت دیکھی۔ ہر روگی کی حالت کے انوسار اُنہیں الگ الگ دوائیں دیں۔

انہوں نے ایک چار برس کی لڑکی پاؤ کو دیکھا جسے کسی پچھمی ڈاکٹر نے 'پینسلین' کے انجیکشن دے رکھے تھے اور 'ایسپرین' جیسی دوائیں کھلا رکھی تھیں اور پھر یہ کہ دیا تھا کہ وہ دو ایک دن سے ادھک نہیں بچ سکتی۔ ڈاکٹر چیانگ نے جب اسے دیکھا تو اُسے ایکسو ساڑھے چار درجے کا بخار تھا اور اس کے سر پر برف کی ٹوپی رکھی ہوئی تھی۔ ڈاکٹر چیانگ نے پہلے وہ ٹوپی اُتارکر پھینک دی، یہ کہ کر کہ اِس طرح جلدی سے بخار نہیں اتارنا چاہئے، اِس سے انت میں نقصان ہوتا ہے۔ انہوں نے پسینہ آنے کی دوا دینا بھی غلط بتایا، یہ کہ کر کہ پسینہ آنے کی دوا دینا "ایسا ہی ہے جیسا کھلی میں سے تیل نچوڑنے کی کوشش کرنا، اس سے روگی اور کمزور ہو جاتا ہے۔" ڈاکٹر چیانگ زیادہ گرم دواؤں کے بھی خلاف ہیں جیسے 'کورومائین'۔ وہ اِس روگ کے لئے روگی کے آرام کرنے پر بہت زور دیتے ہیں۔

پہلے اِس روگ کے روگیوں کو دودھ، انڈے، اور دوسری طاقت کی چیزیں کھانے کو دی جاتی تھیں۔ ڈاکٹر چیانگ نے کہا کہ "بخار میں اِس طرح کی چیزیں دینا اور کوئلے ڈالکر آگ بجھانے کی کوشش کرنا ہے۔" انہوں نے اِن

े जगह चावल का पतला मांड और फलों का रस देना
ू किया.

इलाज के लिये उन्होंने कई पुरानी दवाओं का काढ़ा
वा कर रोगियों को दिया. इनमें एक खास दवा जिपसम
ypsum) थी जो बुखार उतारने के लिये दी गई. पहले
न ही रोगियों का बुखार दो दरजे नीचे उतर आया और
न दिन के अन्दर बिलकुल उतर गया और नारमल हो
ा.

अलग अलग रोगियों पर डाक्टर चियांग ने जिपसम
अलावा तीस और दवाओं का उपयोग किया, जो सब
न की जड़ी बूटियां थीं. कुछ दवाएं बारह सिंघे के सींघ
भी तैयार की गई थीं. उन्हों ने काफ़ूर, और मुश्क
स्तूरी) का भी इस्तेमाल किया. छै दिन के अन्दर सब
गी अच्छे हो गए.

चीनी सरकार ने, जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, सारे
 के डाक्टरों को इस पुराने तरीक़े को काम में लाने की
दायत की है. उन्हों ने अपने ऐलान में नए ढंग के डाक्टरों
कहा है कि:—"किसी चीज़ की बाबत शक करना जायज़
सकता है और साइन्स में ज़रूरी भी हो सकता है,
किन सच्ची घटनाओं से इन्कार करना बिलकुल दूसरी
त है. जबतक आपको शक रहे आप देखते भालते रहिये.
इन्स की उन्नति का यही तरीक़ा है. सच्ची घटनाओं से
कार करना साइन्स के साथ दुश्मनी करना है."

इसमें कोई सन्देह नहीं कि चीनी इलाज के इस पुराने
रीक़े ने हमेशा के लिये बहुत से रोगियों की जानें बचा लीं.
ीन के साइन्सदां अब उन सब दवाओं के तजरबे कर के
ख रहे हैं.

हमारी हार्दिक अभिलाषा है कि किसी दिन हमारे देश
ी सरकार भी वैद्यक और यूनानी जैसे देशी इलाज के
रीक़ों और होमियोपैथी और क़ुदरती इलाज जैसे दूसरे
पयोगी तरीक़ों की सच्ची क़दर करना सीखे, देश की
रोड़ों ग़रीब जनता की तन्दुरुस्ती की रक्षा कर सके और
ा के अरबों रुपैये विदेशी दवाओं और मंहगी, ग़लत और
निकर दवाओं में हर साल बरबाद होने से बचा सके.

کی جگہ چاول کا پتلا مانڈ اور پھلوں کا رس دینا
شروع کیا۔

علاج کے لئے انہوں نے کئی پرانی دواؤں کا کاڑھا پکواکر
روگیوں کو دیا۔ ان میں ایک خاص دوا جپسم (Gypsum)
تھی جو بخار اتارنے کے لئے دی گئی۔ پہلے دن ہی روگیوں کا
بخار دو درجے نیچے اتر آیا اور تین دن کے اندر بالکل اتر گیا
اور نارمل ہوگیا۔

الگ الگ روگیوں پر ڈاکٹر چیانگ نے جپسم کے علاوہ
تیس' اور دواؤں کا اپیوگ کیا، جو سب چین کی جڑی
بوٹیاں تھیں۔ کچھ دوائیں بارہسنگھے کے سینگ سے بھی تیار
کی گئیں تھیں۔ انہوں نے کافور' اور مشک (کستوری) کا بھی
استعمال کیا۔ چھ دن کے اندر سب روگی اچھے ہوگئے۔

چینی سرکار نے' جیسا اوپر لکھا جا چکا ہے' سارے دیش کے
ڈاکٹروں کو اس پرانے طریقے کو کام میں لانے کی ہدایت کی ہے۔
انہوں نے اپنے اعلان میں نئے ڈھنگ کے ڈاکٹروں سے کہا ہے کہ :—
"کسی چیز کی بابت شک کرنا جائز ہوسکتا ہے اور سائنس
میں ضروری بھی ہوسکتا ہے' لیکن سچی گھٹناؤں سے انکار کرنا
بالکل دوسری بات ہے۔ جب تک آپ کو شک رہے آپ دیکھتے
بھالتے رہئے۔ سائنس کی انتی کا یہی طریقہ ہے۔ سچی
گھٹناؤں سے انکار کرنا سائنس کے ساتھ دشمنی کرنا ہے۔"

اس میں کوئی سندیہہ نہیں کہ چینی علاج کے اس پرانے
طریقے نے ہمیشہ کے لئے بہت سے روگیوں کی جانیں بچالیں۔
چین کے سائنسداں ان سب دواؤں کے تجربے کرکے دیکھ رہے ہیں۔

ہماری ہاردک ابھیلاشا ہے کہ کسی دن ہمارے دیش کی
سرکار بھی ویدیک اور یونانی جیسے دیشی علاج کے
طریقوں اور ہومیوپیتھی اور قدرتی علاج جیسے دوسرے اپیوگی
طریقوں کی سچی قدر کرنا سیکھے' دیش کی کروڑوں غریب
جنتا کی تندرستی کی رکشا کرسکے اور دیش کے اربوں روپئے
ودیشی دواؤں اور مہنگی' غلط اور ہانیکر دواؤں میں ہر سال
برباد ہونے سے بچا سکے۔

महात्मा बुद्ध की याद में

24 मई सन् 1956 को बैसाख महीने की पूनो के दिन, जिसे बुद्ध पूनो भी कहा जाता है, न सिर्फ़ हिन्दुस्तान ने और न सिर्फ़ एशिया ने बल्कि सारी तहज़ीबयाफ़्ता दुनिया ने, महात्मा बुद्ध की ढाई हज़ारवीं जयन्ती बड़ी धूम धाम के साथ मनाई. हिन्दुस्तान में तो उन सब पाक मुक़ामों पर, जहाँ की धूल को महात्मा बुद्ध ने अपने पाक क़दमों से छूकर अहमियत दी थी, जशन मनाये गये. बौद्ध तीर्थ स्थानों ने नई सड़कों, नई इमारतों, नए बाग़ों, रोशनी की क़तारों, सरायों और धरमशालों, स्टेशनों और डाकख़ानों से सजधज कर एक नया जामा पहन लिया था. लुम्बिनी के क़रीब जेतबन में जहाँ महात्मा बुद्ध की पैदाइश हुई, मन को हरने वाला एक नया बाग़ बनाया गया. सारनाथ, जहाँ कि महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था, एक लुभावना बाग़ बनाया गया जिसमें हिरनों के झुन्ड दूर दूर से लाकर छोड़े गये. बौद्ध गया, जहाँ महात्मा बुद्ध ने तपस्या की थी और ग्वालिन सुजाता की दी हुई खीर खाने के बाद ज्ञान प्राप्त किया था, बदल कर बिल्कुल एक नया शहर ही बन गया और कुशीनगरा, जहाँ भगवान बुद्ध ने अपनी देह को छोड़कर आज से ढाई हज़ार बरस पहले निर्वाण प्राप्त किया था, उसे भी हज़ारों यात्रियों के लिये सुविधाजनक बनाया गया और इस काम में भारत की सरकार ने दरियादिली के साथ पचासों लाख रुपये ख़र्चे किये. 23 मई को नई दिल्ली में विदेशी दूतावासों की पुरी में, जिसे चाणक्य पुरी भी कहा जाता है राष्ट्रपति भवन के पीछे इस मौक़े की यादगार में पन्डित नेहरू ने एक नये स्मारक की बुनियाद डाली. सम्राट अशोक ने इसी प्रकार महात्मा बुद्ध की याद को ताज़ा किया था. आज हज़ारों बरस बाद महात्मा बुद्ध की याद को फिर ताज़ा किया जा रहा है. इसलिये कि दुनिया आज एक ऐसे मुक़ाम पर पहुँच गई है कि उसे बर्बादी से बचने के लिये ऐटम बम और हाईड्रोजन बम से अपनी हिफ़ाज़त करने के लिये सिवाय महात्मा बुद्ध के बताए हुए रास्ते के और कोई दूसरा

ما بدھ کی یاد میں

24 مئی سن 1956 کو بیساکھ مہینے کی پونو کے دن' جسے بدھ پونو بھی کہا جاتا ہے' نہ صرف ھندستان نے اور نہ صرف ایشیا نے بلکہ ساری تہذیب یافتہ دنیا نے مہاتما بدھ کی ڈھائی ھزارویں جینتی بڑی دھوم دھام کے ساتھ منائی . ھندستان میں تو اُن سب پاک مقاموں پر' جہاں کی دھول کو مہاتما بدھ نے اپنے پاک قدموں سے چھو کر اھمیت دی تھی' جشن منائے گئے .بودھ تیرتھ استھانوں نے نئی سڑکوں' نئی عمارتوں' نئے باغوں' روشنی کی قطاروں' سرایوں اور دھرم شالوں' اِستیشنوں اور ڈاکخانوں سے سج دھج کر ایک نیا جامہ پہن لیا تھا . لمبنی کے قریب جیتبن میں جہاں مہاتما بدھ کی پیدائش ھوئی' من کو ھرنے والا ایک نیا باغ بنایا گیا . سارناتھ' جہاں کہ مہاتما بدھ نے اپنا پہلا اپدیش دیا تھا' ایک لبھاونا باغ بنایا گیا جس میں ھرنوں کے جھنڈ دور دور سے لاکر چھوڑے گئے . بودھ گیا' جہاں مہاتما بدھ نے تپسیا کی تھی اور گوالن سوجاتا کی دی ھوئی کھیر کھانے کے بعد گیان پراپت کیا تھا' بدل کر بالکل ایک نیا شہر ھی بن گیا اور کوشی نگر جہاں بھگوان بدھ نے اپنی دیہہ کو چھوڑ کر آج سے ڈھائی ھزار برس پہلے نروان پراپت کیا تھا' اُسے بھی ھزاروں یاتریوں کے لئے سویدھاجنک بنایا گیا اور اِس کام میں بھارت کی سرکار نے دریادلی کے ساتھ پچاسوں لاکھ روپئے خرچ کئے . 23 مئی کو نئی دلی میں ودیشی دوتا واسوں کی پوری میں جسے چانکیہ پوری بھی کہا جاتا ھے' راشٹر پتی بھون کے پیچھے اِس موقع کی یادگار میں پنڈت نہرو نے ایک نئے اسمارک کی بنیاد ڈالی . سمراٹ اشوک نے اِسی پرکار مہاتما بدھ کی یاد کو تازہ کیا تھا . آج ھزاروں برس بعد مہاتما بدھ کی یاد کو پھر تازہ کیا جا رہا ھے' اِس لئے کہ دنیا آج ایک ایسے مقام پر پہونچ گئی ھے کہ اُسے بربادی سے بچنے کے لئے ایٹم بم اور ھائیڈروجن بم سے اپنی حفاظت کرنے کے لئے سوائے مہاتما بدھ کے بتائے ھوئے راستے کے اور کوئی دوسرا

रास्ता नहीं है. महात्मा बुद्ध के बुनियादी उपदेश जिन्हें पंचशील कहा जाता है. आज नये रूप रंग के साथ दुनिया के सामने एशियाई मुल्कों की तरफ़ से पेश किये जा रहे हैं. आज दुनिया का हर समझदार इन्सान मन ही मन इसकी अहमियत को खूब समझ रहा है.

बुद्ध की तालीम

महात्मा बुद्ध का जन्म हज़रत ईसा से 623 वर्ष पहले का बताया जाता है. जिस तेज़ी के साथ बौद्ध मज़हब पूरे दक्खिन एशिया, पूरबी एशिया और मध्य एशिया को फ़तह करके एक बार शान्ति के साथ पच्छिम की ओर तमाम रूमी साम्राज्य में फैल गया, दुनिया के किसी दूसरे मज़हब के इतिहास में इसकी मिसाल नहीं मिलती. भारत, चीन और जापान के बीच उन दिनों काफ़ी आमद रफ़्त थी, इसलिये यह भी नामुमकिन है कि बाज़ाब्ता बौद्ध प्रचारकों, कश्यप मातंग वग़ैरा के चीन पहुँचने से सदियों पहले यानी ख़ुद बुद्ध ही की ज़िन्दगी में बुद्ध के उपदेशों की ख़बर और उनकी गूँज चीन तक न पहुँची. चीन में उस ज़माने में लाओ-त्ज़े और कुङ्ग-फ़ू-त्ज़े के मत बौद्ध मज़हब के उसूलों के साथ बिल्कुल मिल जुल गये, यहाँ तक कि हर चीनी अपने को बौद्ध मज़हब और ताओ मज़हब का मानने वाला और कुङ्ग फ़ू-त्ज़े यानी कनफ़्यूसियस का पैरोकार तीनों एक ही साथ समझता और यही कहता रहा है.

वैदिक साहित्य में उपनिषदों का जन्म महात्मा बुद्ध से पहले हो चुका था. उपनिषदों के लिखने वाले दुनिया को बता चुके थे कि तमाम अलग अलग देवी देवताओं या उनके तख़य्युल के पीछे असली परमात्मा एक है, वही सब के घट में मौजूद है और निजात का रास्ता किसी तरह के यज्ञ, कर्मकाण्ड या रूढ़ियों का पालन करने में नहीं है बल्कि अपनी इन्द्रयों को जीतने, नफ़्सकुशी करने और ख़ुदी को मिटाकर अल्लाह के वजूद में अपने वजूद को मिटा देना ही निजात, मुक्ति या निर्वाण है. लेकिन महात्मा बुद्ध के वक़्त तक भारतवासी इस सच्चाई को भूल चुके थे. वर्ण व्यवस्था, जति पांत, छुआछूत, कर्म काण्ड और जानवरों की क़ुर्बानी का ज़ोर था. सदाचार को उनके मुक़ाबिले में कम अहमियत दी जाती थी. महात्मा बुद्ध ने ज़माने की हालत को देखते हुए उपदेश दिया—

"सच्चे सुख, ज्ञान और निजात का रास्ता अपनी नफ़्सों यानी इन्द्रयों के पीछे दौड़ना नहीं, न अपनी वासनाओं को पूरा करने में है, न जिस्म को ग़ैर ज़रूरी तकलीफ़ देने में है, निजात का सच्चा रास्ता इन दोनों के बीच से है. इस रास्ते पर चलने के लिये नीचे लिखी सच्चाइयों को समझ लेना चाहिये. जन्म, बुढ़ापा, बीमारी और मौत, प्यारों का वियोग और दुनियावी तकलीफ़ों, इन सब से इन्सान को दुख होता

راستہ نہیں ہے۔ مہاتما بدھ کے بنیادی اُپدیش' جنھیں 'پنچ شیل' کہا جاتا ہے' آج نئے روپ رنگ کے ساتھ دنیا کے سامنے ایشائی ملکوں کی طرف سے پیش کئے جا رہے ہیں۔ آج دنیا کا ہر سمجھدار انسان من ہی من اُس کی اہمیت کو خوب سمجھ رہا ہے۔

بدھ کی تعلیم

مہاتما بدھ کا جنم حضرت عیسیٰ سے 623 ورش پہلے کا بتایا جاتا ہے۔ جس تیزی کے ساتھ بودھ مذہب پورے دکھن ایشیا' پوربی ایشیا اور مدھیہ ایشا کو فتح کر کے ایک بار شانتی کے ساتھ پچھم کی اُور تمام رومی سامراجیہ میں پھیل گیا' دنیا کے کسی دوسرے مذہب کے اتہاس میں اِس کی مثال نہیں ملتی۔ بھارت' چین اور جاپان کے بیچ اُن دنوں کافی آمد رفت تھی' اِس لئے یہ بھی ناممکن ہے کہ باضابطہ بودھ پرچارکوں' کشپ ماتنگ وغیرہ کے چین پہونچنے سے صدیوں پہلے یعنی خود بدھ ہی کی زندگی میں بدھ کے اُپدیشوں کی خبر اور اُن کی گونج چین تک نہ پہونچی۔ چین میں اُس زمانے میں لاؤ تزے اور کونگ فوتزے کے مت بودھ مذہب کے اصولوں کے ساتھ بالکل مل جل گئے' یہاں تک کہ ہر چینی اپنے کو بودھ مذہب اور تاؤ مذہب کا ماننے والا اور کونگ فو تزے یعنی کنفیوسیس کا پیروکار تینوں ایک ساتھ سمجھتا اور یہی کہتا رہا ہے۔

ویدک ساہتیہ میں اپنشدوں کا جنم مہاتما بدھ سے پہلے ہو چکا تھا۔ اپنشدوں کے لکھنے والے دنیا کو بتا چکے تھے کہ تمام الگ الگ دیوی دیوتاؤں یا ان کے تخیل کے پیچھے اصلی پرماتما ایک ہے' وہی سب کے گھٹ میں موجود ہے اور نجات کا راستہ کسی طرح کے یگیہ' کرم کانڈ یا روڑھیوں کا پالن کرنے میں نہیں ہے بلکہ اپنی اندریوں کو جیتنے' نفس کشی کرنے اور خودی کو مٹا کر اللہ کے وجود میں اپنے وجود کو مٹا دینا ہی نجات' مکتی یا نروان ہے۔ لیکن مہاتما بدھ کے وقت تک بھارت واسی اِس سچائی کو بھول چکے تھے۔ ورن ویوستھا' جات پات' چھوا چھوت' کرم کانڈ اور جانوروں کی قربانی کا زور تھا۔ سداچار کو اِن کے مقابلے میں کم اہمیت دی جاتی تھی۔ مہاتما بدھ نے زمانے کی حالت کو دیکھتے ہوئے اُپدیش دیا—

"سچے سکھ' گیان اور نجات کا راستہ اپنی نفسوں یعنی اندریوں کے پیچھے دوڑنا نہیں' نہ اپنی واسناؤں کو پورا کرنے میں ہے' نہ جسم کو غیر ضروری تکلیف دینے میں ہے۔ نجات کا سچا راستہ اِن دونوں کے بیچ سے ہے۔ اِس راستے پر چلنے کے لئے نیچے لکھی سچائیوں کو سمجھ لینا چاہئے۔ جنم' بڑھاپا' بیماری اور موت' پیاروں کا ویوگ اور دنیاوی تکلیفیں' اِن سب سے انسان کو دکھ ہوتا

है. इस दुख का बुनियादी सबब ख्वाहिश यानी तृष्णा है. इसी से जीव को बार बार जन्म लेना पड़ता है. इसमें भोगों की ख्वाहिश यानी नफ़सपरस्ती, निजात की ख्वाहिश यानी जन्नत परस्ती और आत्म सुख की ख्वाहिश यानी खुद परस्ती में ही सब क़िस्म की ख्वाहिशें शामिल हैं. यह ख्वाहिशें जीव के लिये रोग की तरह हैं. जीव की वजह से ही यह ख्वाहिशें पैदा होती हैं. ख्वाहिशों के जीतने का मतलब है सब दुखों से निजात पाना. ख्वाहिशों के जीतने के लिये अठपहलू रास्ते यानी अष्टांगिक मार्ग पर चलना जरूरी है. यही असली मज़हब है. यह अठपहलू रास्ता इस तरह का है—

(1) सम्यक दृष्टि—यानी दुख, उसके बुनियादी सबब और उसके दूर करने के तरीक़ों को ठीक ठीक समझ लेना.

(२) सम्यक् संकल्प—यानी इस बात का अहद करना कि मैं बेलौसी के साथ किसी की हिंसा न करते हुए और किसी से नफ़रत न करते हुए सब काम करूँगा.

(3) सम्यक् वचन—यानी झूठ न बोलना, किसी की बुराई न करना, सख्त अल्फ़ाज़ मुँह से न निकालना और फ़िज़ूल बात न करना.

(4) सम्यक् कर्मान्त—यानी किसी भी जानदार की हिंसा न करना. बिना दी हुई चीज़ न लेना और व्यभिचार न करना.

(5) सम्यक आजीव—यानी ज़रियेमाश (आजीविका) के ग़लत रास्तों को छोड़ कर सच्ची और ईमान्दारी की रोज़ी से ज़िन्दगी बिताना.

(6) सम्यक् व्यायाम—यानी बुरे कामों के न करने और नेक कामों के करने के लिये पुख्ता इरादा करना, अभ्यास करना और उसके लिये चित्त को वश में करना.

(7) सम्यक् स्मृति—यानी इस बात को ध्यान में रखना कि टट्टी पेशाब, बुढ़ापा और मौत जिस्म के साथ लगे हुए हैं, इसलिये मोह और दुख को छोड़कर, लेकिन हमेशा कारगर रह कर, दुनिया में विचरना.

(8) सम्यक् समाज—यानी ध्यान और चित्त की एकाग्रता जिसमें पहले वितर्क, विचार, प्रेम, सुख और एकाग्रता यह पांचों बातें रहती हैं. धीरे धीरे वितर्क और विचार का अन्त हो जाता है, फिर प्रीति का लोप हो जाता है और आख़ीर में सुख भी ग़ायब हो जाता है और बच जाती है एकाग्रता."

यह अठपहलू रास्ता ही महात्मा बुद्ध के उपदेशों का सार है-

ھے . اِس دکھ کا بنیادی سبب خواھش یعنی ترشنا ھے . اِسی سے جیو کو بار بار جنم لینا پڑتا ھے . اِس میں بھوگوں کی خواھش یعنی نفس پرستی' نجات کی خواھش یعنی جنت پرستی اور آتم سکھ کی خواھش یعنی خودپرستی میں ھی سب قسم کی خواھشیں شامل ھیں . یہ خواھشیں جیو کے لئے روگ کی طرح ھیں . جیو کی وجہ سے ھی یہ خواھشیں پیدا ھوتی ھیں . خواھشوں کو جیتنے کا مطلب ھے سب دکھوں سے نجات پانا . خواھشوں کو جیتنے کے لئے اٹھ پہلو راستے یعنی اشٹانگک مارگ پر چلنا ضروری ھے . یہی اصلی مذھب ھے . یہ اٹھ پہلو راستہ اس طرح کا ھے—

(1) سمیک درشٹی—یعنی دکھ' اس کے بنیادی سبب اور ان کے دور کرنے کے طریقوں کو ٹھیک ٹھیک سمجھ لینا .

(2) سمیک سنکلپ—یعنی اس بات کا عہد کرنا کہ میں بےلوثی کے ساتھ کسی کی ھنسا نہ کرتے ھوئے اور کسی سے نفرت نہ کرتے ھوئے سب کام کرونگا .

(3) سمیک وچن—یعنی جھوٹ نہ بولنا' کسی کی برائی نہ کرنا' سخت الفاظ منہ سے نہ نکالنا اور فضول بات نہ کرنا .

(4) سمیک کرمانت—یعنی کسی بھی جاندار کی ھنسا نہ کرنا . بنا دی ھوئی چیز نہ لینا اور وبھچار نہ کرنا .

(5) سمیک آجیو—یعنی ذریعہ معاش (آجیویکا) کے غلط راستوں کو چھوڑکر سچی اور ایمانداری کی روزی سے زندگی بتانا .

(6) سمیک ویایام—یعنی برے کاموں کے نہ کرنے اور نیک کاموں کے کرنے کے لئے پختہ ارادہ کرنا' محنت کرنا' ابھیاس کرنا اور اس کے لئے چت کو وش میں کرنا .

(7) سمیک اسمرتی—یعنی اِس بات کو دھیان میں رکھنا کہ ٹٹی پیشاب' بڑھاپا اور موت جسم کے ساتھ لگے ھوئے ھیں' اس لئے موہ اور دکھ کو چھوڑ کر' لیکن ھمیشہ کارگر رہ کر' دنیا میں وچرنا .

(8) سمیک سماج—یعنی دھیان اور چت کی ایکاگرتا جس میں پہلے وترک' وچار' پریم' سکھ اور ایکاگرتا یہ پانچوں باتیں رھتی ھیں . دھیرے دھیرے وترک اور وچار کا انت ھوجاتا ھے' پھر پریتی کا لوپ ھوجاتا ھے اور آخر میں سکھ بھی غایب ھوجاتا ھے اور بچ جاتی ھے ایکاگرتا .

یہ اٹھ پہلو راستہ ھی مہاتما بدھ کے اُپدیشوں کا سار ھے .

हमारी राय

सबके साथ अहिंसा और कट्टर दुश्मनों तक को माफ़ [र]ना और सब की तरफ़ दोस्ती का भाव रखना बौद्ध [म]ज़हब का ख़ास उसूल है. मर्द और औरत दोनों को बुद्ध [नि]जात का हक़दार मानते थे. दोनों को दुनिया को तर्क करने, [ब्]याहा रहने और यकसां मज़हब का प्रचार करने का [ह]क़दार मानते थे. जात पांत, छुआ छूत, ऊँच नीच के ख़याल [के] वे सख़्त मुख़ालिफ़ थे. वे इन्सान और इन्सान के बीच [ब]राबरी के क़ायल थे. उनका कहना था कि इन्सान अपनी [ह]स्ती के राज़ को कम से कम इतना समझले कि दुनियावी [ज़ि]न्दगी और उसकी आसाइशों की मुनासिब से ज़्यादा [क़ी]मत न आँके और इस तरह से ज़िन्दगी बिताए कि जिस [से] ज़्यादा से ज़्यादा इन्सानों को ज़्यादा से ज़्यादा सुख [औ]र कम से कम दुख हासिल हो. वे कहते थे कि नफ़्स [प]रस्ती, दुई और ख़ुदी इन तीनों से ऊपर उठकर बेग़ैरियत [हा]सिल करने का नाम ही निर्वाण है.

बुद्ध के उपदेशों का लुब्बे लुबाब उनकी इस गाथा में [मौ]जूद है—

"कोई पाप न करना, सब की भलाई करना और अपने [दि]ल को पाक साफ़ रखना, यही बौद्धों की हिदायत है. सब [बौ]द्ध गृहस्थों को अहिंसा, चोरी न करना, सच्चाई, सदाचार, [प]रहेज़गारी और नशीली चीज़ों का सेवन न करना," इन [पां]च बातों का अहद लेना पड़ता था.

धम्मपद में लिखा है --"अगर कोई शख़्स बेवक़ूफ़ी से [मे]री बुराई करे तो मैं बदले में अपनी मोहब्बत से उसे [नि]ढाल करदूँगा. जितना जितना वह मेरी बुराई करेगा [उ]तना उतना ही मैं उसकी भलाई करूँगा."

यह है भगवान बुद्ध की शिक्षा का निचोड़ जिसपर [च]लकर इन्सानी क़ौम को अपनी रूहानी, जिस्मानी और [दि]माग़ी मुसीबतों से निजात मिल सकती है.

4-5-'56. —विश्वम्भरनाथ पांडे

ھماری رائے

سب کے ساتھ اهنسا اور کٹر دشمنوں تک کو معاف کرنا اور سب کی طرف دوستی کا بھاؤ رکھنا بودھ مذھب کا خاص اصول ھے ۔ مرد اور عورت دونوں کو نجات کا حقدار مانتے تھے ۔ دونوں کو دنیا کو ترک کرنے' بےبیاھا رھنے اور یکساں مذھب کا پرچار کرنے کا حقدار مانتے تھے ۔ جات پانت' چھواچھوت' اونچ نیچ کے خیال کے وے سخت مخالف تھے ۔ وے انسان اور انسان کے بیچ برابری کے قایل تھے ۔ اُن کا کہنا تھا کہ انسان اپنی هستی کے راز کو کم سے کم اتنا سمجھ لے کہ دنیاوی زندگی اور اس کی آسایشوں کی مناسب سے زیادہ قیمت نہ آنکے اور اس طرح سے زندگی بتائے کہ جس سے زیادہ سے زیادہ انسانوں کو زیادہ سے زیادہ سکھ اور کم سے کم دکھ حاصل ھو ۔ وے کہتے تھے کہ نفس پرستی' دوئی اور خودی اِن تینوں سے اوپر اُٹھکر بےغیریت حاصل کرنے کا نام ھی نروان ھے ۔

بدھ کے اُپدیشوں کا لب‌لباب اُن کی اِس گاتھا میں موجود ھے—

"کوئی پاپ نہ کرنا' سب کی بھلائی کرنا اور اپنے دل کو پاک صاف رکھنا یہی بدھوں کی هدایت ھے ۔ سب بودھ گرھستوں کو اهنسا' چوری نہ کرنا' سچائی' سداچار' پرھیزگاری اور نشیلی چیزوں کا سیون نہ کرنا' اِن پانچ باتوں کا عہد لینا پڑتا تھا ۔

دھم پد میں لکھا ھے—"اگر کوئی شخص بیوقوفی سے میری برائی کرے تو میں بدلے میں اپنی محبت سے اِسے نڈھال کردونگا ۔ جتنا جتنا ھی وہ میری برائی کریگا اُتنا اُتنا ھی میں اس کی بھلائی کرونگا ۔"

یہ ھے بھگوان بدھ کی شکشا کا نچوڑ جس پر چل کر انسانی قوم کو اپنی روحانی' جسمانی اور دماغی مصیبتوں سے نجات مل سکتی ھے ۔

—وشومبھر ناتھ پانڈے ۔ 24 . 5 . 56

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

نیا ہند

इसके अलावा — اس کے علاوہ

देस बिदेस के मसलों पर हमारी राय में ज़रूरी सम्पादकी नोट

دیس بدیس کے مسئلوں پر ہماری رائے میں ضروری سمپادکی نوٹ

...नी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद ...ستانی کلچر سوسائٹی الٰہ آباد

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

जिल्द 21 جلد   नम्बर 6 نمبر

जून 1956 جون

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद   145 مٹھی گنج الہ آباد

जून 1956 جون

क्या किस में	सफ़ा صفحہ	کیا کس سے
1. इसलाम के बुनियादी उसूल भाई मंज़रअली सोख़्ता	... 287 ...	1. اِسلام کے بنیادی اُصول —بھائی منظر علی سوختہ
2. रूह या आत्मा जब बालिग़ होने लगती है —डाक्टर भगवानदास	... 303 ...	2. روح یا آتما جب بالغ ہونے لگتی ہے —ڈاکٹر بھگوان داس
3. दो समंदरों का सङ्गम और सचाई का प्रकाश —डाक्टर ताराचन्द	... 312 ...	3. دو سمندروں کا سنگم اور سچائی کا پرکاش —ڈاکٹر تارا چند
4. दादा अबुलफ़ज़ल —पंडित सुन्दरलाल	... 317 ...	4. دادا ابوالفضل —پنڈت سندر لال
5. नागा क़ौम और भारत —पंडित सुन्दरलाल	.... 325 ...	5. ناگا قوم اور بھارت —پنڈت سندر لال
6. मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें —अनुवादक : श्री मुजीब रिज़वी	... 335 ...	6. محمد صاحب کی کچھ حدیثیں —انوادک : شری مجیب رضوی
7. हमारी राय—	.... 338 ...	7. ہماری رائے—

विनोबा जी और भारत की राजधानी: श्री बी. जी. खेर और दूसरी पंच वर्षी योजना; बनारस की जगह 'वाराणसी'; चीनी पंचांग (जन्त्री); 'नया हिन्द' के गाहकों और प्रेमियों से—सुन्दरलाल.

ونوباجی اور بھارت کی راجدھانی؛ شری بی. جی. کھیر اور دوسری پنچ ورشی یوجنا؛ بنارس کی جگہ 'وارانسی'؛ چینی پنچانگ (جنتری)؛ 'نیا ہند' کے گاہکوں اور پریمیوں سے —سندر لال.

इसलाम के बुनियादी उसूल

भाई मंजरअली सोख्ता

मैं भारत वासियों और खासकर मुसलमानों का ध्यान उस नाजुक और खतरनाक स्थिति की तरफ़ दिलाना चाहता हूँ जो पच्छिमी सभ्यता अपने साथ लाई है, और जिसने इन्सानी दुनिया पर एक गहरा असर डाल रक्खा है. इस पच्छिमी सभ्यता ने एक खास बात यह की है कि इसने उस मेल और बैठ बिठाव को जो धर्म मजहब ने आदमी की रूहानी और माद्दी, लौकिक और पारलौकिक जिंदगी के बीच क़ायम कर रखा था, उलट दिया है. इस सभ्यता ने ईश्वर में विश्वास की जगह नास्तिकता को, रूहानियत की जगह दौलत परस्ती को, सचाई की जगह पालिसी यानी हिकमते अमली को, सेवा और त्याग की जगह अमीराना ऐशो इशरत को, नैतिक यानी इख़लाक़ी ताक़तों की जगह हैवानी और शैतानी शक्तियों को दे दी है. पच्छमी सभ्यता सब लोगों से कहती है कि अपनी जिंदगी की जरूरतों को बढ़ाओ और उन्हें पूरा करने में अपनी सारी ताक़त लगा दो. यह सभ्यता सारे मानव समाज की भलाई की जगह अलग अलग लोगों के सामने अपने अपने देशों, राष्ट्रों और जमाअतों की भलाई और तरक़्क़ी का आदर्श रखती है. किसी तरह की भी निस्वार्थ सेवा या क़ुर्बानी में उसे विश्वास ही नहीं. अपने लक्ष तक पहुँचने के लिए मार काट, हिंसा और जुल्म जबर-दस्ती को वह जायज तरीक़ा मानती है. वह साफ़ कहती है कि अपने मक़सद को पूरा करने के लिए नेक और बद, अच्छी और बुरी, हर तरह की राह अख्तियार की जा सकती है.

जो जो आफ़तें इस समय दुनिया पर आ रही हैं उन सबका केवल एक कारण यह है कि दुनिया के लोगों ने अपने धार्मिक और मजहबी रास्ते छोड़कर पच्छिमी सभ्यता का रास्ता अख्तियार कर लिया है. जब तक दुनिया के लोग हक़परस्ती यानी सचाई और नेकी की सीधी राह अख्तियार न करेंगे, यह आए दिन की आफ़तें उनपर आती रहेंगी, और हम उन पुरानी क़ौमों की तरह ही हलाक हो जाएँगे जो पिछले जमानों में अपने बुरे कामों के कारण तबाह और बरबाद हो चुकी हैं.

मैं खासकर मुसलमानों का ध्यान उन उसूलों की तरफ़ दिलाना चाहता हूँ जिन पर क़ुरान ने मनुष्य के रूहानी, समाजी, आर्थिक और राजकाजी जीवन को क़ायम करना

اسلام کے بنیادی اصول

بھائی منظر علی سوختہ

میں بھارت واسیوں اور خاصکر مسلمانوں کا دھیان اُس نازک اور خطرناک اِستھتی کی طرف دلانا چاھتا ھوں جو پچھمی سبھتا اپنے ساتھ لائی ھے' اور جس نے انسانی دنیا پر ایک گہرا اثر ڈال رکھا ھے ۔ اِس پچھمی سبھتا نے ایک خاص بات یہ کی ھے کہ اِس نے اُس میل اور بیٹھ بیٹھاؤ کو' جو دھرم مذھب نے آدمی کی روحانی اور مادی' لوک اور پارلوکک زندگی کے بیچ قایم کر رکھا تھا' اُلٹ دیا ھے ۔ اِس سبھتا نے ایشور میں وشواش کی جگہہ ناستکتا کو' روحانیت کی جگہہ دولت پرستی کو' سچائی کی جگہہ پالیسی یعنی حکمت عملی کو' سیوا اور تیاگ کی جگہہ امیرانہ عیش و عشرت کو' نیتک یعنی اخلاقی طاقتوں کی جگہہ حیوانی اور شیطانی شکتیوں کو دے دی ھے ۔ پچھمی سبھتا سب لوگوں سے کہتی ھے کہ اپنی زندگی کی ضرورتوں کو بڑھاؤ اور اُنھیں پورا کرنے میں اپنی ساری طاقت لگا دو ۔ یہ سبھتا سارے مانو سماج کی بھلائی کی جگہہ الگ الگ لوگوں کے سامنے اپنے اپنے دیشوں' راشٹروں اور جماعتوں کی بھلائی اور ترقی کا آدرش رکھتی ھے ۔ کسی طرح کی بھی نسوارتھ سیوا یا قربانی میں اُسے وشواس ھی نہیں ۔ اپنے لکش تک پہونچنے کے لئے مار کاٹ' ھنسا اور ظلم زبردستی کو وہ جایز طریقہ مانتی ھے ۔ وہ صاف کہتی ھے کہ اپنے مقصد کو پورا کرنے کے لئے نیک اور بد' اچھی اور بری' ھر طرح کی راہ اختیار کی جا سکتی ھے ۔

جو جو آفتیں اِس سمے دنیا پر آرھی ھیں اُن سب کا کیول ایک کارن یہ ھے کہ دنیا کے لوگوں نے اپنے دھارمک اور مذھبی راستے چھوڑ کر پچھمی سبھتا کا راستہ اختیار کر لیا ھے ۔ جب تک دنیا کے لوگ حق پرستی یعنی سچائی اور نیکی کی سیدھی راہ اختیار نہ کرینگے' یہ آئے دن کی آفتیں اُن پر آتی رھینگی' اور ھم اُن پرانی قوموں کی طرح ھی ھلاک ھو جائیں گے جو پچھلے زمانوں میں اپنے برے کاموں کے کارن تباہ اور برباد ھو چکی ھیں ۔

میں خاصکر مسلمانوں کا دھیان اُن اُصولوں کی طرف دلانا چاھتا ھوں جن پر قرآن نے منشیہ کے روحانی' سماجی' آرتھک اور راجکاجی جیون کو قایم کرنا

चाहा है. मुझे दुख है कि पढ़े लिखे मुसलमान भी इन्हें बहुत कम समझते हैं. इसलिए मैं उन्हें विस्तार के साथ बयान कर देना चाहता हूँ. मैं दिखाना चाहता हूँ कि क़ुरान ने अपने उन बुनियादी उसूलों में सच्ची लोकशाही (जमहूरियत) को कितनी ऊँची जगह दी है और आज़ादी, बराबरी और भाईचारे के सुनहरे उसूलों को किस पैमाने पर आदमी की ज़िंदगी की बुनियाद ठहराया है.

इसलाम के रूहानी उसूल

क़ुरान 'तौहीद' यानी एक अल्लाह के होने को दुनिया की सबसे बड़ी सचाई बताता है. वह आदमी की ज़िंदगी के हर पहलू की बुनियाद इसी सचाई पर क़ायम करता है. क़ुरान का कहना है कि जब कुल सृष्टि का ईश्वर एक है तो लाज़मी तौर पर कुल मानव समाज भी उसी ईश्वर की एकता का एक रूप है. आदमी अपनी अक़्ल और अपनी आध्यात्मिक (रूहानी) शक्तियों से इस सचाई को अच्छी तरह समझ सकता है. इसलिए आदमी का सबसे पहला फ़र्ज़ यह है कि ईश्वर की एकता को अपने धर्म ईमानकी बुनियाद बनाए और अपने उस मालिक के सामने, जिसने उसे पैदा किया और दुनिया की नियामतें दीं, सर झुकाए. आदमी के रूहानी जीवन का यही सबसे पहला उसूल है.

तौहीद से आगे बढ़कर क़ुरान ने दो तरह के फ़र्ज़ हर आदमी के सामने रक्खे हैं—एक जिन्हें वह 'हक़ूक़ अल्लाह' कहता है यानी ईश्वर की तरफ़ आदमी के फ़र्ज़ और दूसरे जिन्हें वह 'हक़ूक़उलअबाद' कहता है यानी आदमी की तरफ़ आदमी के फ़र्ज़ हक़ूक़ अल्लाह में नमाज़, रोज़ा, हज्ज और ज़कात जैसी चीज़ें शामिल हैं, जिन्हें हर आदमी देश काल के अनुसार अपने ढंग से अदा कर सकता है. क़ुरान ने इन्हें हर आदमी के लिए फ़र्ज़ बताया है. यह इबादत यानी ईश्वर पूजा है. इनसे आदमी में रूहानी शक्ति आती है.

'हक़ूक़ अल्लाह' के साथ ही क़ुरान ने 'हक़ूक़ उलअबाद' यानी हर आदमी के दूसरे आदमियों की तरफ़ फ़र्ज़ों पर भी ज़ोर दिया है और साफ़ कहा है कि अगर हक़ूक़ अल्लाह के पूरा करने में किसी तरह की कमी रह जाय तो ख़ुदा माफ़ कर सकता है, लेकिन अगर हक़ूक़ उलअबाद के पूरा करने में ज़रा बराबर भी कमी रह जाय तो ख़ुदा उसे हरगिज़ माफ़ न करेगा. ऐसे आदमी को इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में, दोनों में, ख़िसारा यानी घाटा उठाना पड़ेगा.

यहां तक क़ुरान का पहला बुनियादी उसूल हुआ.

क़ुरान का दूसरा उसूल यह है कि हक़ूक़ अल्लाह यानी नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज्ज आदमी की रूहानी ज़िंदगी और अंदर के जीवन से संबंध रखते हैं. इसलिए इन्हें ईमान (श्रद्धा) ख़लूसे क़ल्ब (शुद्ध हृदय) और बेग़रज़ी (निस्वार्थता)

چاہا ہے ۔ مجھے دکھ ہے کہ پڑھے لکھے مسلمان بھی اِنھیں بہت کم سمجھتے ھیں ۔ اِس لئے میں اُنھیں وستار کے ساتھ بیان کر دینا چاہتا ہوں ۔ میں دکھانا چاہتا ہوں کہ قرآن نے اپنے اُن بنیادی اُصولوں میں سچی لوک شاہی (جمہوریت) کو کتنی اُونچی جگہہ دی ہے اور آزادی' برابری اور بھائی چارے کے سنہرے اُصولوں کو کس پیمانے پر آدمی کی زندگی کی بنیاد ٹھہرایا ہے ۔

اسلام کے روحانی اُصول

قرآن 'توحید' یعنی ایک اللہ کے ہونے کو دنیا کی سب سے بڑی سچائی بتاتا ہے ۔ وہ آدمی کی زندگی کے ہر پہلو کی بنیاد اِسی سچائی پر قایم کرتا ہے ۔ قرآن کا کہنا ہے کہ جب کل سرشٹی کا ایشور ایک ہے تو لازمی طور پر کل مانو سماج بھی اُسی ایشور کی ایکتا کا ایک روپ ہے ۔ آدمی اپنی عقل اور اپنی آدھیاتمک (روحانی) شکتیوں سے اِس سچائی کو اچھی طرح سمجھ سکتا ہے ۔ اِس لئے آدمی کا سب سے پہلا فرض یہ ہے کہ ایشور کی ایکتا کو اپنے دھرم اِیمان کی بنیاد بنائے اور اپنے اُس مالک کے سامنے' جس نے اُسے پیدا کیا اور دنیا کی نعمتیں دیں' سر جھکائے ۔ آدمی کے روحانی جیون کا یہی سب سے پہلا اُصول ہے ۔

توحید سے آگے بڑھکر قرآن نے دو طرح کے فرض ہر آدمی کے سامنے رکھے ھیں— ایک جنھیں وہ 'حقوق اللہ' کہتا ہے یعنی' ایشور کی طرف آدمی کے فرض' اور دوسرے جنھیں وہ 'حقوق العباد' کہتا ہے یعنی آدمی کی طرف آدمی کے فرض ۔ حقوق اللہ میں نماز' روزہ' حج اور ذکاۃ جیسی چیزیں شامل ہیں' جنھیں ہر آدمی دیش کال کے انوسار اپنے ڈھنگ سے ادا کر سکتا ہے ۔ قرآن نے اِنھیں ہر آدمی کے لئے فرض بتایا ہے ۔ یہ عبادت یعنی ایشور پوجا ہے ۔ اِن سے آدمی میں روحانی شکتی آتی ہے ۔

'حقوق اللہ' کے ساتھ ھی قرآن نے 'حقوق العباد' یعنی ہر آدمی کے دوسرے آدمیوں کی طرف فرضوں پر بھی زور دیا ہے اور صاف کہا ہے کہ اگر حقوق اللہ کے پورا کرنے میں کسی طرح کی کمی رہ جائے تو خدا معاف کر سکتا ہے' لیکن اگر حقوق العباد کے پورا کرنے میں ذرہ برابر بھی کمی رہ جائے تو خدا اُسے ہرگز معاف نہ کریگا ۔ ایسے آدمی کو اِس دنیا میں اور دوسری دنیا میں' دونوں میں' خسارہ یعنی گھاٹا اُٹھانا پڑیگا ۔

یہاں تک قرآن کا پہلا بنیادی اُصول ھوا ۔

قرآن کا دوسرا اُصول یہ ہے کہ حقوق اللہ یعنی نماز' روزہ' ذکاۃ اور حج آدمی کی روحانی زندگی اور اندر کے جیون سے سمبندھ رکھتے ھیں ۔ اِس لئے اِنھیں ایمان (شردھا)' خلوص قلب (شدھ ہردئے) اور بے غرضی (نسوارتھتا)

के साथ पूरा करना चाहिए, यानी इनके पूरा करने में अपने लिये कोई निजी या दुनयवी फ़ायदा, यहाँ तक कि जन्नत की इच्छा भी निगाह में नहीं होनी चाहिए. ये केवल अल्लाह के निकट आने के लिए और रूहानी शक्ति हासिल करने के लिए हैं ताकि आदमी दीन की सीधी राह पर चल सके. अगर इनमें कोई भी ख़ुदग़रज़ी आयेंगी तो इनकी असली ग़रज़ जाती रहेगी और ये बेकार हो जायेंगे

क़ुरान का तीसरा बुनियादी उसूल यह है कि हर आदमी को चाहिये कि उसे जो कुछ रूहानी और नैतिक शक्ति ईश्वर की तरफ़ अपने फ़र्ज़ों को अदा करने से हासिल हो, उस सारी शक्ति को दुनिया के लोगों की तरफ़ अपने फ़र्ज़ों को पूरा करने में निस्वार्थता के साथ लगा दे.

मैं क़ुरान के इन तीन बुनियादी उसूलों की तरफ़ ख़ासकर मुसलमानों का ध्यान दिलाना चाहता हूँ. मैं उन्हें यह भी याद दिलाना चाहता हूँ कि एक ख़ुदा की इबादत के अलावा क़ब्र-परस्ती, पीर-परस्ती और तरह तरह की औहाम-परस्ती यानी अंध विश्वास क़ुरान की आयतों के ख़िलाफ़ हैं जिनसे सबको बचना चाहिए.

इसलाम के समाजी उसूल

आदमी की समाजी ज़िन्दगी का पहला फ़र्ज़ क़ुरान में ग़रीबों, लाचारों, दर्दमन्दों और पीड़ितों से हमदर्दी और उनकी मदद करना बताया गया है. क़ुरान ने आदमी की समाजी ज़िन्दगी की बुनियाद ईश्वर की एकता और इन्सानी भाइचारे पर रखी है. उसने साफ़ साफ़ कहा है कि इन्सानी भाइचारे के उसके दायरे में कुल मानव जाति, कुल इन्सान, शामिल हैं, और हर आदमी को हमेशा सब की यानी कुल इन्सानी क़ौम की भलाई, बेहतरी और बहबूदी का मक़सद अपने सामने रखना चाहिये. क़ुरान का कहना है कि सारा मानव समाज एक कुटुम्ब है. क़ुरान की कई आयतों में नबियों और पैग़म्बरों को भी 'भाई' के शब्द से पुकारा गया है. मुहम्मद साहब हर समय की नमाज़ के बाद आम तौर पर यह कहा करते थे—"मैं गवाही देता हूँ कि दुनिया के सब आदमी एक दूसरे के भाई भाई हैं." ये शब्द इतनी गहराई और भावुकता के साथ उनके गले से निकलते थे कि उनकी आँखों से टप टप आंसू गिरने लगते थे.

इससे अधिक स्पष्ट और ज़ोरदार शब्दों में मानव एकता और मानव जाति के एक कुटुम्ब होने का बयान नहीं किया जा सकता. क़ुरान की यह तालीम और इसलाम के पैग़म्बर की यह मिसाल उन सारे रिवाजों और क़ायदे क़ानूनों को, और उन सब क़ौमी, मुल्की, नसली और मज़हबी गिरोह बन्दियों को एक दम ग़लत और नाजायज़

کے ساتھ پورا کرنا چاھئے' یعنی اِن کے پورا کرنے میں اپنے لئے کوئی نجی یا دنیوی فایدہ' یہاں تک کہ جنت کی اِچھا بھی نگاہ میں نہیں ہونی چاھئے۔ یہ کیول اللہ کے نکٹ جانے کے لئے اور روحانی شکتی حاصل کرنے کے لئے ھیں تاکہ آدمی دین کی سیدھی راہ پر چل سکے۔ اگر اُن میں کوئی بھی خود غرضی آئیگی تو اِن کی اصلی غرض جاتی رھیگی اور یہ بیکار ھو جائینگے ۔

قرآن کا تیسرا بنیادی اصول یہ ھے کہ ھر آدمی کو چاھئیے کہ اُسے جو کچھ روحانی اور نیتک شکتی ایشور کی طرف اپنے فرضوں کو ادا کرنے سے حاصل ھو' اُس ساری شکتی کو دنیا کے لوگوں کی طرف اپنے فرضوں کو پورا کرنے میں نسوارتھتا کے ساتھ لگا دے ۔

میں قرآن کے اِن تین بنیادی اصولوں کی طرف خاصکر مسلمانوں کا دھیان دلانا چاھتا ھوں ۔ میں اُنھیں یہ بھی یاد دلانا چاھتا ھوں کہ ایک خدا کی عبادت کے علاوہ قبر پرستی' پیر پرستی اور طرح طرح کی اوھام پرستی یعنی اندھ وشواس قرآن کی آیتوں کے خلاف ھیں جن سے سب کو بچنا چاھئے ۔

اسلام کے سماجی اصول

آدمی کی سماجی زندگی کا پہلا فرض قرآن میں غریبوں لاچاروں' دردمندوں اور پیڑتوں سے ھمدردی اور ان کی مدد کرنا بتایا گیا ھے ۔ قرآن نے آدمی کی سماجی زندگی کی بنیاد ایشور کی ایکتا اور انسانی بھائی چارے پر رکھی ھے ۔ اُس نے صاف صاف کہا ھے کہ انسانی بھائی چارے کے اُس کے دایرے میں کل مانو جاتی' کل اِنسان' شامل ھیں' اور ھر آدمی کو ھمیشہ سب کی یعنی کل اِنسانی قوم کی بھلائی' بہتری اور بہبودی کا مقصد اپنے سامنے رکھنا چاھئے۔ قرآن کا کہنا ھے کہ سارا مانو سماج ایک کٹمب ھے ۔ قرآن کی کئی آیتوں میں نبیوں اور پیغمبروں کو بھی 'بھائی' کے شبد سے پکارا گیا ھے ۔ محمد صاحب ھر سمے کی نماز کے بعد عام طور پر یہ کہا کرتے تھے—"میں گواھی دیتا ھوں کہ دنیا کے سب آدمی ایک دوسرے کے بھائی بھائی ھیں ۔" یہ شبد اِتنی گہرائی اور بھاوکتا کے ساتھ اُن کے گلے سے نکلتے تھے کہ اُن کی آنکھوں سے ٹپ ٹپ آنسو گرنے لگتے تھے ۔

اِس سے ادھک اسپشٹ اور زوردار شبدوں میں مانو ایکتا اور مانو جاتی کے ایک کٹمب ھونے کو بیان نہیں کیا جا سکتا ۔ قرآن کی یہ تعلیم اور اِسلام کے پیغمبر کی یہ مثال اُن سارے رواجوں اور قاعدے قانونوں کو' اور اُن سب قومی' ملکی' نسلی اور مذھبی گروہ بندیوں کو ایکدم غلط اور ناجایز

कर देती है जो एक आदमी को दूसरे आदमी से अलग करती हैं, और मानव समाज के जीवन में भेद भाव और झगड़े पैदा करती हैं. आजकल के जमाने की सब दलबन्दियां, चाहे वह किसी भी रंग रूप में हों, क़ुरान और इसलाम की निगाह में झूठी हैं.

आजकल सब अलग अलग मजहबों के लोगों ने अपने अपने को अलग अलग लोहे के पिंजरों में बन्द कर रखा है. यह बात इसलाम की तालीम के बिलकुल ख़िलाफ़ है. पर ख़ुद इसलाम के मानने वालों ने भी अपने आपको उसी तरह के एक लोहे के पिंजरे में बंद कर रक्खा है. इस पिंजरे को वह 'अख़वते इसलामी' यानी 'इसलामी भाईचारा' कहते हैं. इस इसलामी भाईचारे के अंदर भी उन्होंने फिर इस तरह की रिवाजी और समाजी दलबंदियाँ पैदा कर ली हैं जिनको मिटाना क़ुरान और पैग़म्बरे इसलाम का ख़ास मिशन था. मेरी विनम्र प्रार्थना है कि भारत के मुसलमान अपने महान और शानदार मजहब के इस पहलू की तरफ़ ध्यान दें और क़ुरान और रसूल की तालीम को सामने रखकर उन सब भेदों और दलबंदियों को, जो भाई भाई में फ़रक़ करती हैं और एक दूसरे से खींचातानी पैदा करती हैं, क़ुरान की आज्ञा के ख़िलाफ़ समझकर एकदम मिटा देने की कोशिश करें.

हमारे आये दिन के जीवन में एक आदमी को दूसरे आदमी के साथ जिस उसूल पर बरताव करना चाहिए उसे क़ुरान, 'अदल' यानी इंसाफ़ का उसूल बताता है. इस उसूल से बढ़कर एक दूसरे के साथ बराबरी पैदा करने वाला कोई दूसरा उसूल नहीं हो सकता. क़ुरान ने इस उसूल की काफ़ी तशरीह (व्याख्या) भी की है. सबसे पहले उसने किसी भी आदमी के लिए किसी भी ग़ैर जरूरी चीज़ को अपने क़ब्ज़े में रखना ग़लत और नाजायज़ क़रार दिया है. क़ुरान की खुली दलील यह है कि इस तरह की सरमायादारी की वजह से, यानी कुछ लोगों के अपने पास आवश्यकता से अधिक माल और धन जमा कर लेने से, दूसरे हक़दारों और जरूरतमंदों का हक़ मारा जाता है.

क़ुरान ने ग़ैर जरूरी सोने और चांदी को अपने पास रखना गुनाह बताया है, और कहा है कि जो कोई ग़ैर जरूरी सोना और चांदी अपने पास रक्खेगा, कर्मों का फल मिलने के दिन उसकी छाती, उसकी हड्डियाँ और उसकी पीठ उसी सोने और चांदी को गरम करके उससे दाग़ी जायँगी और उससे कहा जायगा कि अपनी उस सरमायादारी का मजा चखो. क़ुरान ने यह सब इसलिए नहीं कहा कि वह लोगों से दुनिया छोड़ने या साधू बैरागी बनकर दुनिया के सुखों से अलग रहने के लिए कहता है. क़ुरान की तालीम की बुनियाद अपने पड़ोसियों और दूसरे इन्सानों के हक़ों और उनकी जरूरतों को पूरा करने पर

کر دیتی ہے جو ایک آدمی کو دوسرے آدمی سے الگ کرتی ہیں، اور مانو سماج کے جیون میں بھید بھاؤ اور جھگڑے پیدا کرتی ہیں۔ آجکل کے زمانے کی سب دلبندیاں، چاہے وہ کسی بھی رنگ روپ میں ہوں، قران اور اسلام کی نگاہ میں جھوٹی ہیں۔

آجکل سب الگ الگ مذہبوں کے لوگوں نے اپنے اپنے کو الگ الگ لوہے کے پنجروں میں بند کر رکھا ہے۔ یہ بات اسلام کی تعلیم کے بالکل خلاف ہے۔ پر خود اسلام کے ماننے والوں نے بھی اپنے آپ کو اسی طرح کے ایک لوہے کے پنجرے میں بند کر رکھا ہے۔ اس پنجرے کو وہ 'اخوت اسلامی' یعنی 'اسلامی بھائی چارا' کہتے ہیں۔ اس اسلامی بھائی چارے کے اندر بھی انہوں نے پھر اس طرح کی رواجی اور سماجی دلبندیاں پیدا کرلی ہیں جن کو مٹانا قرآن اور پیغمبر اسلام کا خاص مشن تھا۔ میری ونمر پرارتھنا ہے کہ بھارت کے مسلمان اپنے مہان اور شاندار مذہب کے اس پہلو کی طرف دھیان دیں اور قرآن اور رسول کی تعلیم کو سامنے رکھکر ان سب بھیدوں اور دلبندیوں کو، جو بھائی بھائی میں فرق کرتی ہیں اور ایک دوسرے سے کھینچاتانی پیدا کرتی ہیں، قرآن کی آگیاں کے خلاف سمجھکر ایکدم مٹا دینے کی کوشش کریں۔

ہمارے آئے دن کے جیون میں ایک آدمی کو دوسرے آدمی کے ساتھ جس اصول پر برتاؤ کرنا چاہئیے اسے قرآن 'عدل' یعنی انصاف کا اصول بتاتا ہے۔ اس اصول سے بڑھکر ایک دوسرے کے ساتھ برابری پیدا کرنے والا کوئی دوسرا اصول نہیں ہوسکتا۔ قرآن نے اس اصول کی کافی تشریح (ویاکھیا) بھی کی ہے۔ سب سے پہلے اس نے کسی بھی آدمی کے لئے کسی بھی غیر ضروری چیز کو اپنے قبضے میں رکھنا غلط اور ناجائز قرار دیا ہے۔ قرآن کی کھلی دلیل یہ ہے کہ اس طرح کی سرمایہ‌داری کی وجہ سے، یعنی کچھ لوگوں کے اپنے پاس آوشیکتا سے ادھک مال اور دھن جمع کرلینے سے، دوسرے حقداروں اور ضرورتمندوں کا حق مارا جاتا ہے۔

قرآن نے غیر ضروری سونے اور چاندی کو اپنے پاس رکھنا گناہ بتایا ہے، اور کہا ہے کہ جو کوئی غیر ضروری سونا اور چاندی اپنے پاس رکھیگا، کرموں کا پھل ملنے کے دن اس کی چھاتی، اس کی ہڈیاں اور اس کی پیٹھ اسی سونے اور چاندی کو گرم کرکے اس سے داغی جائینگی، اور اس سے کہا جائیگا کہ اپنی اس سرمایہ‌داری کا مزہ چکھو۔ قرآن نے یہ سب اس لئے نہیں کہا کہ وہ لوگوں سے دنیا چھوڑنے یا سادھو بیراگی بنکر دنیا کے سکھوں سے الگ رہنے کے لئے کہتا ہے۔ قرآن کی اس تعلیم کی بنیاد اپنے پڑوسیوں اور دوسرے انسانوں کے حقوں اور ان کی ضرورتوں کو پورا کرنے پر

है. सब खुदा के बन्दे हैं. सब बराबर हैं. सब आदमी हैं. सब की जरूरतें एक बराबर पूरी होनी चाहिएं. इसलिए जो कोई अपनी जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल करता है या जमा रखता है वह दूसरों को उनके जायज हक्कों यानी मानव अधिकारों से महरूम (वंचित) कर देता है. वह खुदा की इन नियामतों पर जालिमाना क़ब्ज़ा करता है जो सब के लिए एकसी हैं. ऐसा करना साफ़ जुल्म है और अदल और इंसाफ़ के खिलाफ़ है.

इन उसूलों की बुनियाद केवल दूसरी दुनिया की भलाई पर ही नहीं है, बल्कि इस दुनिया और इस जिन्दगी के सच्चे फ़ायदे पर भी है. इन उसूलों का सबंध इन्सानी बराबरी, भाईचारे और सच्ची जमहूरियत यानी लोकशाही से है, इसके पीछे जो आदमी की रूहानी भलाई का ख्याल है वह एक अलग चीज़ है. ज़ाहिर है कि पूंजीवाद, सरमायादारी या केपिटलिज्म का इससे अधिक कड़ा विरोध नहीं हो सकता. क़ुरान ने सूद कमाना, जुआ खेलना और सरमाया जमा करना, इन सब को हराम बताकर हर तरह की सरमायादारी का मानव समाज के जीवन से हमेशा के लिये खात्मा कर दिया. उसने सरमायादारी के क़ायम होने की संभावना को ही मिटा दिया. अगर आज मानव समाजने क़ुरान के इन सुनहरे उसूलों पर अमल किया होता तो हर तरह की सरमायादारी दुनिया से मिट चुकी होती और वह शहनशाहियत (साम्राज्यवाद) जो डेमोक्रेसी यानी जमहूरियत का झूठा जामा पहन कर दुनिया पर राज कर रही है या राज करने की कोशिश कर रही है पैदा ही न हो पाती. हर धर्म ने यही तालीम दी है, लेकिन इसलाम ने उसी समय इन उसूलों के ऊपर एक बहुत बड़ा राज क़ायम करके भी दिखा दिया था.

यह बात भी याद रखनी चाहिए कि क़ुरान ने यह सब उसूल केवल खास लोगों, मोमिनों, आबिदों या खुदा के खास बंदों के लिए ही नहीं रक्खे, उनके लिए अलग दर्जे बदर्जे खास नियम और क़ानून हैं. यह उसूल, जिनकी हमने चर्चा की है, सब आदमियों के लिए हैं. इनके खिलाफ़ चलना खुदा के हुकुम को तोड़ना है.

आज जो हम बहुत से नाम के मुसलमानों को इन उसूलों के खिलाफ़ चलते हुए देखते हैं, उसका कारण यह है कि उनका जीवन क़ुरान के उसूलों पर क़ायम नहीं है, बल्कि उन उसूलों की ग़लत तावीलों यानी झूठी व्याख्याओं पर क़ायम है. मिसाल के तौर पर क़ुरान में खुदा ने अपने बंदों को यह इजाजत दी है कि वह दुनिया की अच्छी अच्छी चीजों और हलाल नियामतों से फ़ायदा उठाएँ. क़ुरान में लिखा है कि "हमने तुम पर यह चीजें हराम नहीं की हैं". इस आयत की ग़लत तावील (झूठी व्याख्या) करके लोगों ने अपने लिए सारी दुनिया परस्ती और ऐश इशरत

ہے۔ سب خدا کے بندے ہیں۔ سب برابر ہیں۔ سب آدمی ہیں۔ سب کی ضرورتیں ایک برابر پوری ہونی چاہئیں۔ اِس لئے جو کوئی اپنی ضرورت سے زیادہ استعمال کرتا ہے یا جمع رکھتا ہے وہ دوسروں کو اُن کے جائز حقوں یعنی مانو ادھیکاروں سے محروم (ونچت) کردیتا ہے۔ وہ خدا کی اُن نعمتوں پر ظالمانہ قبضہ کرتا ہے جو سب کے لئے ایکسی ہیں۔ ایسا کرنا صاف ظلم ہے اور عدل اور اِنصاف کے خلاف ہے۔

اِن اُصولوں کی بنیاد کیول دوسری دنیا کی بھلائی پر ھی نہیں ہے، بلکہ اِس دنیا اور اِس زندگی کے سچے فایدے پر بھی ہے۔ اِن اُصولوں کا سمبندھ اِنسانی برابری، بھائی چارے اور سچی جمہوریت یعنی لوک شاہی سے ہے۔ اِس کے پیچھے جو آدمی کی روحانی بھلائی کا خیال ہے وہ ایک الگ چیز ہے۔ ظاہر ہے کہ پونجی‌واد، سرمایہ‌داری یا کیپیٹلزم کا اِس سے ادھک بڑا وِرودھ نہیں ہوسکتا۔ قرآن نے سود کمانا، جوا کھیلنا اور سرمایہ جمع کرنا، اِن سب کو حرام بتاکر ہر طرح کی سرمایہ‌داری کا مانو سماج کے جیون سے ہمیشہ کے لئے خاتمہ کردیا۔ اُس نے سرمایہ‌داری کے قایم ہونے کی سمبھاؤنا کو ھی مٹا دیا۔ اگر آج مانو سماج نے قرآن کے اِن سنہرے اُصولوں پر عمل کیا ہوتا تو ہر طرح کی سرمایہ‌داری دنیا سے مٹ چکی ہوتی اور وہ شہنشاہیت (سامراجیہ‌واد) جو ڈیموکریسی یعنی جمہوریت کا جھوٹا جامہ پہن کر دنیا پر راج کررہی ہے یا راج کرنے کی کوشش کررہی ہے پیدا ھی نہ ہوپاتی۔ ہر دھرم نے بھی تعلیم دی ہے، لیکن اِسلام نے اُسی سمے اِن اُصولوں کے اُوپر ایک بہت بڑا راج قایم کرکے بھی دکھا دیا تھا۔

یہ بات بھی یاد رکھنی چاہئے کہ قرآن نے یہ سب اُصول کیول خاص لوگوں، مومنوں، عابدوں یا خدا کے خاص بندوں کے لئے ھی نہیں رکھے، اُن کے لئے الگ درجہ بدرجہ خاص نیم اور قانون ہیں۔ یہ اُصول، جنکی ہم نے چرچا کی ہے، سب آدمیوں کے لئے ہیں۔ اِن کے خلاف چلنا خدا کے حکم کو توڑنا ہے۔

آج جو ہم بہت سے نام کے مسلمانوں کو اِن اصولوں کے خلاف چلتے دیکھتے ہیں، اُس کا کارن یہ ہے کہ اُن کا جیون قرآن کے اُصولوں پر قایم نہیں ہے، بلکہ اُن اصولوں کی غلط تاویلوں یعنی جھوٹی ویاکھیاؤں پر قایم ہے۔ مثال طور پر قرآن میں خدا نے اپنے بندوں کو یہ اِجازت دی ہے کہ وہ دنیا کی اچھی اچھی چیزوں اور حلال نعمتوں سے فایدہ اُٹھائیں۔ قرآن میں لکھا ہے کہ "ہم نے تم پر یہ چیزیں حرام نہیں کی ہیں۔" اِس آیت کی غلط تاویل (جھوٹی ویاکھیا) کرکے لوگوں نے اپنے لئے ساری دنیا پرستی اور عیش عشرت

को जायज़ कर लिया है. लोग यह नहीं देखते कि किसी ख़ास चीज़ का जायज़ होना या उसके इस्तेमाल की इजाज़त होना उन उसूलों को रद्द नहीं कर देता जो उस इस्तेमाल के लिए क़ुरान ने क़ायम किए हैं. इन उसूलों को हम ऊपर बयान कर चुके हैं. जो बात अद्ल और इंसाफ़ के ख़िलाफ़ है, जो मानव एकता यानी इंसानी भाईचारे के ख़िलाफ़ है और इस बारे में क़ुरान की खुली हिदायतों से टकराती है, वह बिल्कुल ग़लत और बे-बुनियाद है.

मैं ख़ासकर मुसलमानों से बड़ी नम्रता के साथ यह कहना चाहता हूँ कि वह दूसरे इन्सानों की तरफ़ अपने फ़र्ज़ों को पूरा करने में क़ुरान की खुली हिदायतों पर चलें और नासमझ या .ख़ुदग़रज़ लोगों की तावीलों के चक्कर में न पड़ें. उनके ऐसा करने से देश और मानव समाज का भला तो होगा ही, ख़ुद मुसलमानों का भी इस दुनिया और दूसरी दुनिया दोनों में भला होगा और मुसलमानों में ख़ुद्दारी, और अपने ऊपर भरोसा और अपने सब पड़ोसियों के साथ प्रेम और मुहब्बत पैदा होगी, और दुनिया में सच्चा इन्सानी भाईचारा यानी अख़्वते इन्सानी और सच्ची डेमोक्रेसी यानी जमहूरियत क़ायम करने का सेहरा उन्हीं के सर बँधेगा.

इसलाम के आर्थिक यानी माली उसूल

आदमी में दूसरे जान्दारों से ज्यादा जो समझ और नेकी और बदी की तमीज़ और एक रूहानी प्यास है उसकी बिना पर क़ुरान में आदमी को 'अशरफ़उलमख़लूक़ात' यानी और 'सब प्राणियों से बढ़कर' कहा है, और उसे यह इजाज़त दी है कि वह ख़ुदा की दी हुई सब नियामतों से अपनी जरूरत के अनुसार ख़ुद फ़ायदा उठाए और दूसरों को फ़ायदा पहुँचाए. आर्थिक ज़िंदगी में भी क़ुरान में आदमी के सामने वही अद्ल और इन्साफ़ का उसूल रक्खा है जो समाजी ज़िंदगी में. इसके बाद क़ुरान ने इंसान को अशरफ़उल मख़लूक़ात होने की हैसियत से ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा यानी नायब क़रार किया है और उसका यह फ़र्ज़ बताया है कि वह ख़ुदा की सब नियामतों को सब जानदारों में उनकी ज़रूरत के मुताबिक़ ठीक ठीक तक़सीम करे. यही उसके ख़लीफ़ा होने का मतलब है.

मतलब यह है कि ख़ुदा सारी सृष्टि का बनाने वाला ही नहीं बल्कि उसका मालिक भी है और इस मालिक की हैसियत से उसने आदमी को अपना ख़लीफ़ा बनाया है. ख़लीफ़ा होने का यह मतलब नहीं है कि आदमी जो चाहे करे और जिस तरह चाहे रहे. आदमी को ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनाने के साथ साथ क़ुरान में सब आदमियों और सब जानदारों के हक़ और उनके फ़र्ज़ तय कर दिए गए हैं. अगर आदमी ख़ुदा के बताए हुए उन उसूलों और सबके अधिकारों के ख़िलाफ़

کو جایز کرلیا ھے . لوگ یہ نہیں دیکھتے کہ کسی خاص چیز کا جایز ھونا یا اُس کے اِستعمال کی اِجازت ھونا اُن اُصولوں کو رد نہیں کردیتا جو اُس اِستعمال کے لئے قرآن نے قایم کئے ھیں . اِن اُصولوں کو ھم اُوپر بیان کرچکے ھیں , جو بات عدل اور اِنصاف کے خلاف ھے' جو مانو ایکتا یعنی اِنسانی بھائی‌چارے کے خلاف ھے اور اِس بارے میں قرآن کی کھلی ھدایتوں سے ٹکراتی ھے' وہ بالکل غلط اور بےبنیاد ھے .

میں خاصکر مسلمانوں سے بڑی نمرتا کے ساتھ یہ کہنا چاھتا ھوں کہ وہ دوسرے اِنسانوں کی طرف اپنے فرضوں کو پورا کرنے میں قرآن کی کھلی ھدایتوں پر چلیں اور ناسمجھ یا خود غرض لوگوں کی تاویلوں کے چکر میں نہ پڑیں . اُن کے ایسا کرنے سے دیش اور مانو سماج کا بھلا تو ھوگا ھی خود مسلمانوں کا بھی اِس دنیا اور دوسری دنیا دونوں میں بھلا ھوگا اور مسلمانوں میں خوداری اور اپنے اُوپر بھروسہ اور اپنے سب پڑوسیوں کے ساتھ پریم اور محبت پیدا ھوگی اور دنیا میں سچا اِنسانی بھائی چارا یعنی اخوت اِنسانی اور سچی ڈیموکریسی یعنی جمہوریت قایم کرنے کا سہرا اُنھیں کے سر بندھیگا .

اِسلام کے آرتھک یعنی مالی اُصول

آدمی میں دوسرے جانداروں سے زیادہ جو سمجھ اور نیکی اور بدی کی تمیز اور ایک روحانی پیاس ھے اُس کی بنا پر قرآن میں آدمی کو 'اشرف‌المخلوقات' یعنی اور 'سب پرانیوں سے بڑھکر کہا ھے' اور اُسے یہ اجازت دی ھے کہ وہ خدا کی دی ھوئی سب نعمتوں سے اپنی ضرورت کے انوسار خود فایدہ اُٹھائے اور دوسروں کو فایدہ پہونچائے . آرتھک زندگی میں بھی قرآن نے آدمی کے سامنے وھی عدل اور اِنصاف کا اُصول رکھا ھے جو سماجی زندگی میں . اِس کے بعد قرآن نے اِنسان کو اشرف‌المخلوقات ھونے کی حیثیت سے زمین پر اپنا خلیفہ یعنی نایب قرار کیا ھے اور اُس کا یہ فرض بتایا ھے کہ وہ خدا کی سب نعمتوں کو سب جانداروں میں اُن کی ضرورت کے مطابق ٹھیک ٹھیک تقسیم کرے. یہی اس کے خلیفہ ھونے کا مطلب ھے.

مطلب یہ ھے کہ خدا ساری سرشٹی کا بنانے والا ھی نہیں بلکہ اُس کا مالک بھی ھے اور اِس مالک کی حیثیت سے اُس نے آدمی کو اپنا خلیفہ بنایا ھے . خلیفہ ھونے کا یہ مطلب نہیں ھے کہ آدمی جو چاھے کرے اور جس طرح چاھے رھے . آدمی کو خدا کا خلیفہ بنانے کے ساتھ ساتھ قرآن میں سب آدمیوں اور سب جانداروں کے حق اور اُن کے فرض طے کردئے گئے ھیں . اگر آدمی خدا کے بتائے ھوئے ان اُصولوں اور سب کے ادھیکاروں کے خلاف

जाता है तो वह इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में ख़ुदा के सामने जवाबदेह होगा. आदमी के ख़ुदा का ख़लीफ़ा होने का यह विचार केवल इसलाम ही में नहीं सब धर्मों में किसी न किसी रूप में मौजूद है, और हर मज़हब में उसके लिए उसूल और क़ायदे बने हुए हैं. हर आदमी बिना अपना मज़हब बदले इन बुनियादी और क़ुदरती उसूलों पर चल सकता है.

अगर हम केवल इस बात को अच्छी तरह समझ लें कि ख़ुदा एक है और वही सबका बनाने वाला और सब का मालिक है तो इसी एक उसूल के आधार पर सब तरह की फ़िरक़ेवारियत, साम्प्रदायिकता और धार्मिक दलबन्दियों का ख़ात्मा हो जाना चाहिये. हर आदमी इस ज़मीन के ऊपर ख़ुदा का ख़लीफ़ा यानी नायब है, इस उसूल को सामने रखकर हम केवल मुसलिम, हिन्दू, ईसाई ही नहीं, सारी इन्सानी बिरादरी को एक भाईचारे में बाँध सकते हैं. जो आदमी ख़ुदा के भेजे हुए अदल और इन्साफ़ के क़ानून के अनुसार ज़िन्दगी बसर करता है और सबके साथ मिलकर सबकी जरूरतों को देखते हुए दुनिया की चीज़ों का इस्तेमाल करता है वही सचमुच ख़ुदा का ख़लीफ़ा कहलाने का हक़दार है, चाहे वो मुसलिम हो, हिन्दू हो या ईसाई हो, और जो कोई इसके ख़िलाफ़ अमल करता है वह ख़ुदा का बाग़ी है.

जब सब आदमी भाई भाई हैं तो लाज़िमी तौर पर दुनिया की सब नियामतों में सबका बराबर का हिस्सा है. इसलिए क़ुरानी ज़िन्दगी में ग़रीब और अमीर का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता. जो आर्थिक असमता आज दुनिया में फैली हुई है, पच्छिम के कुछ लोग और उनके कुछ हिमायती उसकी ज़िम्मेवारी ख़ुदा के ख़्याल और मज़हब के प्रचार पर डालते हैं. यह बहुत बड़ा झूठ, अन्याय और बोहतान है. जो ऊँच नीच और ग़रीब अमीर का फ़रक़ इस समय दुनिया में है उसका कारण धर्मों के उसूल नहीं हैं. कारण यह है कि उन धर्मों के मानने वालों ने अपने अपने धर्मों के सच्चे उसूलों से अलग हटकर अपनी समाजी और आर्थिक ज़िन्दगी में स्वार्थ, ख़ुदग़रज़ी और दुनिया परस्ती के ग़लत उसूलों पर चलना शुरु कर दिया. वे दुनिया-परस्ती के जाल में फँस गए और इसी को असली मज़हब समझ बैठे. असली मज़हब सब आदमियों को भाई भाई समझना और उनमें इन्साफ़ और बराबरी का बर्ताव करना है. इससे समाजी और आर्थिक ख़ुशहाली पैदा हुए बग़ैर नहीं रह सकती थी. लेकिन अलग अलग धर्मों के मानने वाले दीन धर्म के इस असली पहलू को न समझ सके. इसीलिए पच्छिमी सुधारकों ने जैसे सोशलिस्ट, डेमोक्रेट्स और कम्यूनिस्ट सबने, धर्म मज़हब का विरोध करना शुरु कर दिया. सच यह है कि जो ऊँचे समाजी उसूल और आर्थिक सुधार

جاتا هے تو وہ اِس دنیا میں اور دوسری دنیا میں خدا کے سامنے جوابدہ هوگا۔ آدمی کے خدا کا خلیفہ هونے کا یہ وچار کیول اِسلام هی میں نہیں سب دھرموں میں کسی نہ کسی روپ میں موجود هے' اور هر مذهب میں اُس کے لئے أصول اور قاعدے بنے هوئے هیں ۔ هر آدمی بنا اپنا مذهب بدلے اِن بنیادی اور قدرتی أصولوں پر چل سکتا هے ۔

اگر هم کیول اِس بات کو اچھی طرح سمجھ لیں کہ خدا ایک هے اور وهی سب کا بنانے والا اور سب کا مالک هے تو اِسی ایک أصول کے آدھار پر سب طرح کی فرقہ واریت' سامپردایکتا اور دھارمک دلبندیوں کا خاتمہ هو جانا چاهئے ۔ هر آدمی اِس زمین کے اُوپر خدا کا خلیفہ یعنی نایب هے' اِس أصول کو سامنے رکھ کر هم کیول مسلم' هندو' عیسائی هی نہیں' ساری اِنسانی برادری کو ایک بھائی چارے میں باندھ سکتے هیں ۔ جو آدمی خدا کے بھیجے هوئے عدل اور انصاف کے قانون کے انوسار زندگی بسر کرتا هے اور سب کے ساتھ ملکر سب کی ضرورتوں کو دیکھتے هوئے دنیا کی چیزوں کا استعمال کرتا هے وهی سچ مچ خدا کا خلیفہ کہلانے کا حقدار هے' چاهے وہ مسلم هو' هندو هو یا عیسائی هو' اور جو کوئی اِس کے خلاف عمل کرتا هے وہ خدا کا باغی هے ۔

جب سب آدمی بھائی بھائی هیں تو لازمی طور پر دنیا کی سب نعمتوں میں سب کا برابر کا حصہ هے ۔ اِس لئے قرآنی زندگی میں غریب اور امیر کا کوئی سوال هی پیدا نہیں هوتا ۔ جو آرتھک اسمتا آج دنیا میں پھیلی هوئی هے' پچھم کے کچھ لوگ اور اُن کے کچھ حمایتی اُس کی ساری ذمہواری خدا کے خیال اور مذهب کے پرچار پر ڈالتے هیں ۔ یہ بہت بڑا جھوٹ' انیائے اور بہتان هے ۔ جو أونچ نیچ اور غریب امیر کا فرق اِس سمے دنیا میں هے اُس کا کارن دھرموں کے أصول نہیں هیں ۔ کارن یہ هے کہ اُن دھرموں کے ماننے والوں نے اپنے اپنے دھرموں کے سچے أصولوں سے الگ هٹکر اپنی سماجی اور آرتھک زندگی میں سوارتھ' خود غرضی اور دنیا پرستی کے غلط أصولوں پر چلنا شروع کر دیا ۔ وے دنیا پرستی کے جال میں پھنس گئے اور اِسی کو اصلی مذهب سمجھ بیٹھے ۔ اصلی مذهب سب آدمیوں کو بھائی بھائی سمجھنا اور اُن میں انصاف اور برابری کا برتاؤ کرنا هے ۔ اِس سے سماجی اور آرتھک خوشحالی پیدا هوئے بغیر نہیں رہ سکتی تھی ۔ لیکن الگ الگ دھرموں کے ماننے والے دین دھرم کے اِس اصلی پہلو کو نہ سمجھ سکے ۔ اِس لئے پچھم کے سدھارکوں نے جیسے سوشلسٹ' دیموکریٹس اور کمیونسٹ' سب نے دھرم مذهب کا ورودھ کرنا شروع کر دیا ۔ سچ یہ هے کہ جو اونچے سماجی أصول اور آرتھک سدھار

इन सब सुधार आन्दोलनों के सामने हैं उनमें और मजहब की सच्ची तालीम में जरा बराबर भी फ़रक़ नहीं है. बल्कि ये सब तहरीकें उसी मजहबी तालीम का धुँधला सा अक्स हैं. दुनिया के धर्मों के मानने वाले अगर आज भी अपने अपने धर्मों के असली उसूलों पर अमल करने लगें तो आज भी इन पच्छिमी आन्दोलनों का जो ग़लत और नास्तिकता का पहलू है उसे मिटाया जा सकता है.

फ़िजूल और बेजा ख़र्च करने वालों को क़ुरान 'अख़्वा-नुश्शयातीन' यानी शैतानों के भाई बंद कहता है. यानी क़ुरान शहनशाहियत की शानो शौकत को ही नहीं, छोटी से छोटी फ़िजूल ख़र्ची को भी गुनाह बताता है. इसके विरुद्ध सब पच्छिमी सुधार आन्दोलनों की बुनियाद दर पर्दा शहनशाहियत पर क़ायम है. यह सब तहरीकें, सारी शक्ति और सारे धन दौलत को छोटे छोटे गिरोहों, ख़ान्दानों या थोड़े से आदमियों में लाकर जमा कर देती हैं. इनसे समाज के ऊपर वाले लोगों के ख़र्च बेहद बढ़ जाते हैं और सारा धन दौलत थोड़े से हाथों में जमा हो जाता है. उन बड़े बड़े संगठनों का जादू, जिन्होंने इन पच्छिमी आन्दोलनों को अपने दायरे में रखा है, सच्चे मजहब के उसूलों के बग़ैर और बिना उनकी मदद के टूट नहीं सकता और न सच्ची इन्सानी बिरादरी क़ायम हो सकती है.

क़ुरान हर ऐसे पेशे को बुरा कहता है और लोगों को उससे हटाता है जिसमें बिना मेहनत किए धन कमाया जा सके. क़ुरान की बुनियादी तालीम यह है कि हर आदमी को ख़ुद अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए और जहाँ तक मुमकिन हो दूसरों पर अपना कोई बोझ नहीं डालना चाहिए, ताकि दूसरों की मेहनत से कोई नाजायज फ़ायदा न उठा सके और इन्सानी समाज को किसी तरह का नुक़सान न पहुंचे. हम यहाँ इस विचार के विस्तार में जाना नहीं चाहते. केवल इतना कह देना काफ़ी है कि अगर हम अदल और इन्साफ़ को आए दिन के जीवन में अपने सामने रक्खें और उस पर अमल करें तो हम क़ुरान की आज्ञाओं पर आसानी से अमल कर सकते हैं.

ख़ासकर मुसलमानों का ध्यान हम क़ुरान की उस ख़ास आज्ञा की तरफ़ दिलाना चाहते हैं जिसमें आदमी को "कसबे तय्यब" की तालीम दी गई है. इसके लफ़्ज़ी मानी पाक रोज़गार हैं. क़ुरान में यह फ़िक़रा भी बार बार आता है कि—"ख़ुदा के फ़ज़्ल की तलाश करो." यहाँ ख़ुदा के फ़ज़्ल से यही कसबे तय्यब यानी कसबे हलाल मुराद है. हर धर्म की किताब में और हर ऋषि, तीर्थंकर या पैग़म्बर की तालीम में कसबे तय्यब की महानता बयान की गई है. महात्मा बुद्ध ने इसे अपने "आठ रास्तों" में "सम्यक आजीविका" यानी नेक रोज़ी का नाम दिया है.

ان سب سدھار آندولنوں کے سامنے ہیں اُن میں اور مذھب کی سچی تعلیم میں ذرہ برابر بھی فرق نہیں ھے. بلکہ یہ سب تحریکیں اُسی مذھبی تعلیم کا دھندھلا سا عکس ھیں. دنیا کے دھرموں کے ماننے والے اگر آج بھی اپنے اپنے دھرموں کے اصلی اصولوں پر عمل کرنے لگیں تو آج بھی اِن پچھمی آندولنوں کا جو غلط اور ناستکتا کا پہلو ھے اُسے مٹایا جا سکتا ھے.

فضول اور بیجا خرچ کرنے والوں قرآن 'اخوان الشیاطین' یعنی شیطانوں کے بھائی‌بند کہتا ھے. یعنی قرآن شہنشاھیت کی شان و شوکت کو ھی نہیں، چھوٹی سے چھوٹی فضول خرچی کو بھی گناہ بتاتا ھے. اِس کے وِرودھ سب پچھمی سدھار آندولنوں کی بنیاد در پردہ شہنشاھیت پر قایم ھے. یہ سب تحریکیں، ساری شکتی اور سارے دھن دولت کو چھوٹے چھوٹے گروھوں، خاندانوں یا تھوڑے سے آدمیوں میں لاکر جمع کر دیتی ھیں. اِن سے سماج کے اُوپر والے لوگوں کے خرچ بےحد بڑھ جاتے ھیں اور سارا دھن دولت تھوڑے سے ھاتھوں میں جمع ھو جاتا ھے. اُن بڑے بڑے سنگٹھنوں کا جادو جنھوں نے اِن پچھمی آندولنوں کو اپنے دایرے میں رکھا ھے، سچے مذھب کے اُصولوں کے بغیر اور بنا اُن کی مدد کے ٹوٹ نہیں سکتا اور نہ سچی انسانی برادری قایم ھو سکتی ھے.

قرآن ھر ایسے پیشے کو برا کہتا ھے اور لوگوں کو اُس سے ھٹاتا ھے جس میں بنا محنت کیئے دھن کمایا جا سکے. قرآن کی بنیادی تعلیم یہ ھے کہ ھر آدمی کو خود اپنے پیروں پر کھڑا ھونا چاھیئے اور جہاں تک ممکن ھو دوسروں پر اپنا کوئی بوجھ نہیں ڈالنا چاھیئے، تاکہ دوسروں کی محنت سے کوئی ناجایز فایدہ نہ اُٹھا سکے اور انسانی سماج کو کسی طرح کا نقصان نہ پہونچے. ھم یہاں اِس وچار کے وستار میں جانا نہیں چاھتے. کیول اتنا کہہ دینا کافی ھے کہ اگر ھم عدل اور انصاف کو آے دن کے جیون میں اپنے سامنے رکھیں اور اِس پر عمل کریں تو ھم قرآن کی آگیاؤں پر آسانی سے عمل کر سکتے ھیں.

خاصکر مسلمانوں کا دھیان ھم قرآن کی اُس خاص آگیاں کی طرف دلانا چاھتے ھیں جس میں آدمی کو "کسب طیب" کی تعلیم دی گئی ھے. اِس کے لفظی معنی پاک روزگار ھیں. قرآن میں یہ فقرہ بھی برابر آتا ھے کہ—"خدا کے فضل کی تلاش کرو." خدا کے فضل سے یہی کسب طیب یعنی کسب حلال مراد ھے. ھر دھرم کی کتاب میں اور ھر رشی، تیرتھنکر یا پیغمبر کی تعلیم میں کسب طیب کی مہانتا بیان کی گئی ھے. مہاتما بدھ نے اِسے اپنے آٹھ راستوں" میں "سمیک آجیوکا" یعنی نیک روزی کا نام دیا ھے.

उसूल यह है कि दुनिया के सब पेशों में वे पेशे ही ऊँचे और अच्छे हैं जिनमें आदमी खुद अपने हाथ की मेहनत से रोज़ी कमाता है. इसलाम के पैग़म्बर मुहम्मद साहब ने, उनके चारों पहले ख़लीफ़ाओं ने, और मुहम्मद साहब के साथियों ने सबने अपनी ज़िन्दगी में इस उसूल को बहुत बड़ी जगह दी और इस पर पूरी तरह अमल किया. मुहम्मद साहब ने इस उसूल पर इतना ज़ोर दिया कि उनकी एक हदीस है कि—"अपने हाथ की मेहनत से रोज़ी कमानेवाला ही अल्लाह का प्यारा हो सकता है."।

मैं फिर ख़ासकर मुसलमानों का ध्यान उनके मज़हब के इस ज़बरदस्त पहलू की तरफ़ दिलाना चाहता हूँ. हमें यह भी याद रखना चाहिए कि दुनिया के धर्मों और ख़ासकर इसलाम की कसबे तय्यब की तालीम और करोड़ों मुसलमानों के उस पर अमल करने ने ही आज इस उसूल को दुनिया के आर्थिक जीवन का सबसे प्यारा, सबसे माना हुआ और सबसे बड़ा उसूल बना रक्खा है. धर्मों की इस तालीम का ही नतीजा है कि आज हर देश की सरकार बड़े ज़ोरों के साथ इस उसूल को अपने देश के जीवन में चलाने की कोशिश कर रही है. रूस और चीन की सरकारों ने तो इस उसूल को अपने विधान (दस्तूर) में मरकज़ी जगह दी है, यानी यही वो धुरी है जिसके चारों तरफ़ उन देशों का सारा आर्थिक जीवन घूमता है. इसलिए मुसलमानों का यह पाक फ़र्ज़ है कि वह किसी क़ौम या मुल्क को इस मैदान में अपने से आगे न निकल जाने दें. उन्हें जल्दी से जल्दी ऐसा प्रोग्राम बनाना चाहिए कि जिससे हर मुसलमान और हर आदमी को कसबे तय्यब के उसूल को सामने रखकर अपनी रोज़ी कमाने का मौक़ा मिले. अगर केवल यही बात पूरे दिल से कर दी जावे तो इस देश का सारा आर्थिक जीवन नए सिरे से तामीर हो सकता है और यह मुल्क ग़ैरों की आर्थिक लूट से बचकर बेहद फल फूल सकता है.

इसलाम के राजकाजी उसूल

यही बुनियादी उसूल क़ुरान की राजनैतिक या राजकाजी तालीम का है. क़ुरान की तालीम है कि हर आदमी को हर समय अपने सामने यह विचार रखना चाहिए कि वह एक मुश्तरका ख़ान्दान यानी एक बड़े मिले जुले कुटुम्ब का एक मेम्बर है. दुनिया के सब आदमियों के साथ उसका व्यवहार और उसके भाव दो सगे भाइयों के आपसी प्रेम और सहयोग का नमूना होने चाहिएँ. यदि एक बार हम इस विचार को अपने दिल में जगह दे दें तो क़ुरान की सारी तालीम पर अमल करना बहुत आसान हो जाता है और क़ुरान की आयतों के पूरे पूरे मानी हमारे दिल में जम जाते हैं. तब हम यह साफ़ देखने लगते हैं कि वह सारी दलबंदियाँ और गिरोह बंदियाँ जो आज मानव समाज को

اُصول یہ ھے کہ دنیا کے سب پیشوں میں وہ پیشے ھی اُونچے اور اچھے ھیں جن میں آدمی خود اپنے ھاتھ کی محنت سے روزی کماتا ھے . اِسلام کے پیغمبر محمد صاحب نے' اُن کے چاروں پہلے خلیفاؤں نے اور محمد صاحب کے ساتھیوں نے سب نے اپنی زندگی میں اِس اُصول کو بہت بڑی جگہہ دی اور اِس پر پوری طرح عمل کیا . محمد صاحب نے اِس اُصول پر اِتنا زور دیا کہ اُن کی ایک حدیث ھے کہ—"اپنے ھاتھ کی محنت سے روزی کمانے والا ھی اللہ کا پیارا ھو سکتا ھے ."

میں پھر خاصکر مسلمانوں کا دھیان اُن کے مذھب کے اِس زبردست پہلو کی طرف دلانا چاھتا ھوں . ھمیں یہ بھی یاد رکھنا چاھئے کہ دنیا کے دھرموں اور خاصکر اِسلام کی کسب طیب کی تعلیم اور کروڑوں مسلمانوں کے اُس پر عمل کرنے نے ھی آج اِس اُصول کو دنیا کے آرتھک جیون کا سب سے پیارا' سب سے مانا ھوا اور سب سے بڑا اُصول بنا رکھا ھے. دھرموں کی اِس تعلیم کا ھی نتیجہ ھے کہ آج ھر دیش کی سرکار بڑے زوروں کے ساتھ اِس اُصول کو اپنے دیش کے جیون میں چلانے کی کوشش کر رھی ھے . روس اور چین کی سرکاروں نے تو اِس اُصول کو اپنے ودھان (دستور) میں مرکزی جگہہ دی ھے یعنی یہی وہ دھوری ھے جس کے چاروں طرف اُن دیشوں کا سارا آرتھک جیون گھومتا ھے . اِس لئے مسلمانوں کا یہ پاک فرض ھے کہ وہ کسی قوم یا ملک کو اِس میدان میں اپنے سے آگے نہ نکل جانے دیں . اُنھیں جلدی سے جلدی ایسا پروگرام بنانا چاھئے کہ جس سے ھر مسلمان اور ھر آدمی کو کسب طیب کے اُصول کو سامنے رکھ کر اپنی روزی کمانے کا موقع ملے . اگر کیول یہی بات پورے دل سے کر دی جاوے تو اِس دیش کا سارا آرتھک جیون نئے سرے سے تعمیر ھو سکتا ھے اور یہ ملک غیروں کی آرتھک لوٹ سے بچ کر بےحد پھل پھول سکتا ھے .

اِسلام کے راجکاجی اُصول

یہی بنیادی اُصول قرآن کی راجنیتک یا راجکاجی تعلیم کا ھے . قرآن کی تعلیم ھے کہ ھر آدمی کو ھر سمے اپنے سامنے یہ وچار رکھنا چاھئے کہ وہ ایک مشترکہ خاندان یعنی ایک بڑے ملے جلے کٹمب کا ایک میمبر ھے . دنیا کے سب آدمیوں کے ساتھ اُس کا ویوھار اور اُس کے بھاؤ دو سگے بھائیوں کے آپسی پریم اور سہیوگ کا نمونہ ھونے چاھئیں . یدی ایک بار ھم اِس وچار کو اپنے دل میں جگہہ دیدیں تو قرآن کی ساری تعلیم پر عمل کرنا بہت آسان ھو جاتا ھے اور قرآن کی آیتوں کے پورے پورے معنی ھمارے دل میں جم جاتے ھیں . تب ھم یہ صاف دیکھنے لگتے ھیں کہ وہ ساری دلبندیاں اور گروہ بندیاں جو آج مانو سماج کو

बड़े से बड़े नुक़सान पहुंचा रही हैं और दुनिया में तरह तरह के आर्थिक और राजकाजी तूफ़ान पैदा कर रही हैं केवल इस सचाई को भुला देने का नतीजा हैं. अगर हम सारे मानव समाज को एक कुटुम्ब मान लें और इन्सानी भाई चारे के उसूल को मान लें तो फिर नौकर या मालिक, हाकिम या महकूम हर आदमी इस दुनिया में ख़ुदा का नायब है और हर आदमी का पैदाइशी हक़ है कि वह ख़ुद्दारी, ख़ुद-मुख़्तारी और ख़ुद ऐतमादी यानी आत्म सम्मान, स्वाधीनता और स्वावलम्बन की ज़िंदगी बसर करे. इस विचार के एक बार दिल में बैठ जाने के बाद किसी तरह की ऊँच नीच या अमीरी ग़रीबी को बर्दाश्त करना आदमी के लिए असंभव हो जाता है. उसमें फिर यह नैतिक और आत्मिक बल आ जाता है कि वह अपने सब भाइयों यानी सब इन्सानों के हक़ों की हिफ़ाज़त करे और जो लोग दूसरों से उनके हक़ छीनते हैं उनके ज़ुल्म का डटकर मुक़ाबला करे. फिर कोई बाहरी या माद्दी शक्ति आदमी की इस आज़ादी और उसकी इस रूहानी शक्ति पर ग़लबा नहीं पा सकती.

जहाँ तक मज़हब का राजकाज से संबंध है क़ुरान ने बहुत साफ़ साफ़ शब्दों में "लाइकराहा फ़िद्दीन" का उसूल हमारे सामने रख दिया है. इस आयत के लफ़्ज़ी मानी यह हैं कि दीन धर्म के मामले में किसी के साथ भी किसी तरह की ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिए. यह साफ़ और सुनहरा उसूल हर आदमी को, चाहे वह किसी मज़हब का हो, अपने मज़हबी फ़र्ज़ पूरा करने की पूरी आज़ादी देता है, और उसकी इस आज़ादी में किसी तरह की दख़लअंदाज़ी को भी ज़ुल्म ठहराता है. क़ुरान के मुताबिक़ जो कोई आदमी भी, चाहे वह किसी भी मज़हब का हो, दूसरों के साथ इस तरह का ज़ुल्म करता है उसके ख़िलाफ़ जेहाद करना हर आदमी का फ़र्ज़ है. ख़ुदा का ख़लीफ़ा होने के नाते हर आदमी अपने भगवान से सीधा संबंध रखने का हक़ रखता है. उसे अधिकार है कि अपने बनाने वाले की पूजा, बन्दगी या स्तुति के लिये जो राह चाहे अख़्तियार करे. उसकी इस आज़ादी में दख़ल देना ज़ुल्म और गुनाह है. नैतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक स्वतंत्रता की इससे ऊँची कल्पना नहीं की जा सकती.

इसका यह मतलब नहीं कि क़ुरान सब धर्मों और मज़हबों की हर चीज़ को ठीक मानता है. क़ुरान 'ईमान' और 'इल्हाद' यानी आस्तिकता और नास्तिकता, नेकी और बदी, भलाई और बुराई में साफ़ फ़र्क़ करता है. उसका यह भी दावा है कि ख़ुदा ने हर देश में, और हर क़ौम में पैग़म्बर भेजे हैं और हर ज़माने में और हर मुल्क में पाक किताबें भी भेजी हैं कि दुनिया के लोग उनकी मदद से ठीक रास्ते को समझ सकें और उस पर चल सकें.

بڑے سے بڑے نقصان پہونچا رہی ہیں اور دنیا میں طرح طرح کے آرتھک اور راجکاجی طوفان پیدا کر رہی ہیں کیول اِس سچائی کو بھلا دینے کا نتیجہ ہیں۔ اگر ہم سارے مانو سماج کو ایک کٹمب مان لیں اور انسانی بھائی چارے کے اُصول کو مان لیں تو پھر نوکر یا مالک، حاکم یا محکوم ہر آدمی اِس دنیا میں خدا کا نایب ہے اور ہر آدمی کا پیدایشی حق ہے کہ وہ خودداری، خود۔مختاری اور خوداعتمادی یعنی آتم سمان، سوادھینتا اور سواولمبن کی زندگی بسر کرے۔ اِس وچار کے ایکبار دل میں بیٹھ جانے کے بعد کسی طرح کی اونچ نیچ یا امیری غریبی کو برداشت کرنا آدمی کے لئے اسمبھو ہو جاتا ہے۔ اِس میں پھر یہ نیتک اور آتمک بل آ جاتا ہے کہ وہ اپنے سب بھائیوں یعنی سب اِنسانوں کے حقوں کی حفاظت کرے اور جو لوگ دوسروں سے اُن کے حق چھینتے ہیں اُن کے ظلم کا ڈٹ کر مقابلہ کرے۔ پھر کوئی باہری یا مادی شکتی آدمی کی اِس آزادی اور اُس کی اِس روحانی شکتی پر غلبہ نہیں پا سکتی۔

جہاں تک مذہب کا راجکاج سے سمبندھ ہے قرآن نے بہت صاف صاف شبدوں میں "لا اکراہا فی الدین" کا اُصول ہمارے سامنے رکھ دیا ہے۔ اِس آیت کے لفظی معنی یہ ہیں کہ دین دھرم کے معاملے میں کسی کے ساتھ بھی کسی طرح کی زبردستی نہیں ہونی چاہئے۔ یہ صاف اور سنہرا اُصول ہر آدمی کو، چاہے وہ کسی مذہب کا ہو، اپنے مذہبی فرض پورا کرنے کی پوری آزادی دیتا ہے، اور اُس کی اِس آزادی میں کسی طرح کی دخل اندازی کو بھی ظلم ٹھہراتا ہے۔ قرآن کے مطابق جو کوئی آدمی بھی، چاہے وہ کسی بھی مذہب کا ہو، دوسروں کے ساتھ اِس طرح کا ظلم کرتا ہے اُس کے خلاف جہاد کرنا ہر آدمی کا فرض ہے۔ خدا کا خلیفہ ہونے کے ناتے ہر آدمی اپنے بھگوان سے سیدھا سمبندھ رکھنے کا حق رکھتا ہے۔ اُسے ادھیکار ہے کہ اپنے بنانے والے کی پوجا، بندگی یا استوتی کے لئے جو راہ چاہے اختیار کرے۔ اُس کی اِس آزادی میں دخل دینا ظلم اور گناہ ہے۔ نیتک، دھارمک اور آدھیاتمک سوتنترتا کی اِس سے اونچی کلپنا نہیں کی جا سکتی۔

اِس کا یہ مطلب نہیں کہ قرآن سب دھرموں اور مذہبوں کی ہر چیز کو ٹھیک مانتا ہے۔ قرآن 'ایمان' اور 'الحاد' یعنی آستکتا اور ناستکتا، نیکی اور بدی، بھلائی اور برائی میں صاف فرق کرتا ہے۔ اُس کا یہ بھی دعویٰ ہے کہ خدا نے ہر دیش میں اور ہر قوم میں پیغمبر بھیجے ہیں اور ہر زمانے میں اور ہر ملک میں پاک کتابیں بھی بھیجی ہیں کہ دنیا کے لوگ اُن کی مدد سے ٹھیک راستے کو سمجھ سکیں اور اُس پر چل سکیں۔

.कुरान का यह भी कहना है कि .खुदा ने सारी दुनिया के लिए हमेशा दीन धर्म की एक ही सीधी राह बताई है और हर पैग़म्बर ने और हर धार्मिक पुस्तक ने उसी सीधी राह की तालीम दी है. दुनिया की किसी दूसरी पाक किताब में इस बुनियादी सचाई को इतने साफ साफ और इतने बार बार बयान नहीं किया गया जितना .कुरान में. कुरान ने आदमी से यह भी कहा है कि सब धार्मिक किताबों और सब रसूलों को मानो और रसूलों रसूलों में किसी तरह का फ़र्क़ ना करो. यहाँ तक कि जो लोग दुनिया भर के सब रसूलों को नहीं मानते या उनमें किसी तरह का फ़र्क़ करते हैं उन्हें .कुरान ने "काफ़ेरूने हक़्क़ा" यानी "सच्चे काफ़िर' कहा है. .कुरान का मज़हब इस निगाह से सब मज़हबों को अपने अन्दर लिये हुए और एक व्यापक यानी आलमगीर मज़हब है.

इसी असल बुनियाद की वजह से .कुरान ने हरेक को कामिल मज़हबी आज़ादी दी है और मज़हब के मामले में किसी को किसी के साथ किसी तरह की भी ज़बरदस्ती करने की इजाज़त नहीं दी. .कुरान की जिस आयत 'लाइकराहा फ़िद्दीन' की हमने ऊपर चर्चा की है उसकी व्याख्या करते हुए मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ने लिखा है :—

"इस असले आज़म (बड़ी बुनियादी बात) का ऐलान कि दीन और अक़ायद (विश्वास) के मामले में किसी क़िस्म का जब्र व इसतकराह (ज़बरदस्ती) जायज़ नहीं, क्योंकि दीन की राह दिल के ऐतक़ाद और यक़ीन की राह है और ऐतक़ाद (विश्वास), दावत व मवाज़त (उपदेश) पैदा कर सकते हैं न कि जब्र व तशद्दुद (यानी विश्वास प्रेम के साथ समझाने बुझाने से हो सकता है, ज़बरदस्ती करने से नहीं हो सकता)." इसके अलावा मज़हबी गिरोहबंदी या फ़िरक़ेबन्दी, चाहे वो किसी भी रूप में हो, सच्चे मज़हब के बिलकुल खिलाफ़ चीज़ है. जब सारी सृष्टि का रचनेवाला और मालिक एक है और उसने सारे मानव समाज के सामने धर्म या हिदायत की एक ही सीधी राह पेश की है तो मज़हब में अलग अलग गिरोहबंदियों का होना उस अल्लाह की वहदत यानी उसकी एकता और उसके मालिक होने से इनकार करना है. देश और काल के अनुसार या अपनी अपनी तबियत के अनुसार पूजा बन्दगी के तरीक़ों का अलग अलग होना दूसरी बात है, और .कुरान इसमें आदमी को पूरी आज़ादी देता है.

.कुरान ने नेकी की राह के साथ साथ बदी की राह यानी गुमराही को भी तय करके अपने मतलब को और साफ कर दिया है. .कुरान कहता है कि हर मज़हब और हर धर्म में बातिलपरस्त यानी झूठे, मुशरिक़ यानी एक

قرآن کا یہ بھی کہنا ھے کہ خدا نے ساری دنیا کے لئے ھمیشہ دین دھرم کی ایک ھی سیدھی راہ بتائی ھے اور ھر پیغمبر نے اور ھر دھارمک پستک نے اُسی سیدھی راہ کی تعلیم دی ھے ۔ دنیا کی کسی دوسری پاک کتاب میں اِس بنیادی سچائی کو اِتنے صاف صاف اور اِتنے بار بار بیان نہیں کیا گیا جتنا قرآن میں ۔ قرآن نے آدمی سے یہ بھی کہا ھے کہ سب دھارمک کتابوں اور سب رسولوں کو مانو اور رسولوں رسولوں میں کسی طرح کا فرق نہ کرو ۔ یہاں تک کہ جو لوگ دنیا بھر کے سب رسولوں کو نہیں مانتے یا اُن میں کسی طرح کا فرق کرتے ھیں انھیں قرآن "کافرون حقہ" یعنی 'سچے کافر' کہا ھے ۔ قرآن کا مذھب اِس نگاہ سے سب مذھبوں کو اپنے اندر لئے ھوئے اور ایک ویاپک یعنی عالمگیر مذھب ھے ۔

اِسی اصل بنیاد کی وجہہ سے قرآن نے ھر ایک کو کامل مذھبی آزادی دی ھے اور مذھب کے معاملہ میں کسی کو کسی کے ساتھ کسی طرح کی بھی زبردستی کرنے کی اجازت نہیں دی ۔ قرآن کی جس آیت 'لااکراہ فی الدین' کی ھم نے اُوپر چرچا کی ھے اُس کی ویاکھیا کرتے ھوئے مولانا ابوالکلام آزاد نے لکھا ھے :—

"اِس اصل اعظم (بڑی بنیادی بات) کا اِعلان کہ دین اور عقاید (وشواس) کے معاملہ میں کسی قسم کا جبر و اِستکراہ (زبردستی) جایز نہیں' کیونکہ دین کی راہ دل کے اعتقاد اور یقین کی راہ ھے اور اعتقاد (وشواس)' دعوت و موازت (اُپدیش) پیدا کرسکتے ھیں نہ کہ جبر و تشدد (یعنی وشواس پریم کے ساتھ سمجھانے بجھانے سے ھوسکتا ھے' زبردستی کرنے سے نہیں ھوسکتا)." اِس کے علاوہ مذھبی گروہبندی یا فرقہبندی' چاھے وہ کسی بھی روپ میں ھو' سچے مذھب کے بالکل خلاف چیز ھے ۔ جب ساری سرشٹی کا رچنے والا اور مالک ایک ھے اور اُس نے سارے مانو سماج کے سامنے دھرم یا ھدایت کی ایک ھی سیدھی راہ پیش کی ھے تو مذھب میں الگ الگ گروہبندیوں کا ھونا اُس اللہ کی وحدت یعنی اُس کی ایکتا اور اس کے مالک ھونے سے اِنکار کرنا ھے ۔ دیش اور کال کے انوسار یا اپنی اپنی طبیعت کی انوسار پوجا بندگی کے طریقوں کا الگ الگ ھونا دوسری بات ھے' اور قرآن اِس میں آدمی کو پوری آزادی دیتا ھے ۔

قرآن نے نیکی کی راہ کے ساتھ ساتھ بدی کی راہ یعنی گمراھی کو بھی طے کرکے اپنے مطلب کو اور صاف کردیا ھے ۔ قرآن کہتا ھے کہ ھر مذھب اور ھر دھرم میں باطل پرست یعنی جھوٹے مشرق یعنی ایک

अल्लाह के सिवा दूसरों को पूजने वाले, मुलहिद यानी नास्तिक, मुफ़सिद यानी झगड़ालू और बदकार लोग भी होते हैं जो सरकशी करते हैं और अपनी ग़लत चाल से बाज नहीं आते, इसीलिए उन्हें तरह तरह की मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं. .क़ुरान मानव समाज को दो हिस्सों में बाँटता है, एक मोमिन और नेक लोग और दूसरे मुनकिर और झगड़ा करने वाले, और सारी दुनिया के मोमिनों यानी ईमान वालों और नेक काम करने वालों को, जो दीन धर्म की सीधी राह पर चलते हैं, .क़ुरान यह इजाज़त देता है कि वे अपने अपने दीन पर क़ायम रहें और उसकी रोशनी में माली, राजकाजी और समाजी दलबंदियों को छोड़कर एक आलमगीर यानी व्यापक 'अख़वते इन्सानी' यानी इन्सानी भाई चारे की सूरत अख़तियार करें. मुहम्मद साहब ने .क़ुरान के इस शानदार आदर्श को अमली जामा पहनाने के लिए एक ख़ास क़दम उठाया. उन्होंने ईरान, मिस्र और रोम के बादशाहों को ख़त भेज कर दावत दी कि जब हम सब एक, .ख़ुदा के मानने वाले हैं और उसके बनाए हुए बुनियादी नैतिक उसूलों को ठीक मानते हैं तो क्यों न हम सब मिलकर तमाम दुनिया के आदमियों को एक भाईचारे के सांचे में ढालने की कोशिश करें. उस 'भाईचारे' के बुनियादी उसूल तीन और सिर्फ़ तीन बताए गए—एक यह कि .ख़ुदा एक है, दूसरे यह कि हर आदमी ज़मीन पर .ख़ुदा का नायब है और तीसरे यह कि हर आदमी के दूसरे आदमियों की तरफ़ कुछ फ़र्ज़ हैं जिन्हें 'हक़ूक़ उल अबाद' कहा जाता है और जिनका पूरा करना सब के लिए ज़रूरी है.

ज़ाहिर है कि इन्सानी भाईचारे में हिन्दू, ईसाई, मुसलमान किसी भी मज़हबी गिरोहबंदी की गुंजायश नहीं है. इस तरह का इन्सानी भाईचारा उन धार्मिक तहरीकों से भी पैदा नहीं हो सकता जो आज हम इसलामी, हिन्दुई या ईसवी मज़हबी तहरीकों की शकल में चलाने की कोशिश कर रहे हैं. इसी गिरोहबंदी और खींचातानी का नतीजा है कि हर मज़हब के लोग और ख़ासकर इसलाम के मानने वाले अव्वल तो ख़ुद अपने मज़हब वालों पर और फिर दूसरे मज़हब वालों पर दीन के मामले में जब्र व ज़बरदस्ती को जायज़ ही नहीं बल्कि लाज़िमी मानते हैं. इसी को वह असली दीन और निजात के लिये ज़रूरी बताते हैं. इन लोगों का वह ग़लत और दर्दनाक बरताव ही दुनिया में सारी खींचातानी और मज़हबी नफ़रत और एक दूसरे से लड़ाई झगड़े की जड़ है. इससे आज दुनिया को बड़े बड़े नुक़सान पहुंच रहे हैं. मज़हब की असलियत से ग़ैर जानकारी और ग़लतफ़हमी ही इन्सानी भाईचारे की तामीर में सबसे बड़ी रुकावट है. मैं सब धर्म मज़हबों के मानने वालों से कह देना चाहता हूँ

اللہ کے سوا دوسروں کو پوجنے والے، ملحد یعنی ناستک، مفسد یعنی جھگڑالو اور بدکار لوگ بھی ہوتے ہیں جو سرکشی کرتے ہیں اور اپنی غلط چال سے باز نہیں آتے۔ اِسی لئے اُنھیں طرح طرح کی مصیبتیں جھیلنی پڑتی ہیں۔ قرآن مانو سماج کو دو حصوں میں بانٹتا ہے، ایک مومن اور نیک لوگ اور دوسرے منکر اور جھگڑا کرنے والے، اور ساری دنیا کے مومنوں یعنی ایمان والوں اور نیک کام کرنے والوں کو، جو دین دھرم کی سیدھی راہ پر چلتے ہیں، قرآن یہ اِجازت دیتا ہے کہ وے اپنے دین پر قایم رہیں اور اُس کی روشنی میں مالی، راجکاجی، اور سماجی دلبندیوں کو چھوڑکر ایک عالمگیر یعنی ویاپک 'اخوت اِنسانی' یعنی اِنسانی بھائی چارے کی صورت اختیار کریں۔ محمد صاحب نے قرآن کے اِس شاندار آدرش کو عملی جامہ پہنانے کے لئے ایک خاص قدم اُٹھایا۔ اُنھوں نے اِیران، مصر اور روم کے بادشاہوں کو خط بھیج کر دعوت دی کہ جب ہم سب ایک خدا کے ماننے والے ہیں اور اُس کے بنائے ہوئے بنیادی نیتک اُصولوں کو ٹھیک مانتے ہیں تو کیوں نہ ہم سب ملکر تمام دنیا کے آدمیوں کو ایک بھائی چارے کے سانچے میں ڈھالنے کی کوشش کریں۔ اُس 'بھائی چارے' کے بنیادی اُصول تین اور صرف تین بتائے گئے—ایک یہ کہ خدا ایک ہے، دوسرے یہ کہ ہر آدمی زمین پر خدا کا نایب ہے اور تیسرے یہ کہ ہر آدمی کے دوسرے آدمیوں کی طرف کچھ فرض ہیں جنھیں 'حقوق العباد' کہا جاتا ہے اور جن کا پورا کرنا سبکے لئے ضروری ہے۔

ظاہر ہے کہ اِنسانی بھائی چارے میں ہندو، عیسائی، مسلمان کسی بھی مذہبی گروہ بندی کی گنجایش نہیں ہے۔ اِس طرح کا اِنسانی بھائی چارا اُن دھارمک تحریکوں سے بھی پیدا نہیں ہوسکتا جو آج ہم اِسلامی، ہندوئی یا عیسوی مذہبی تحریکوں کی شکل میں چلانے کی کوشش کر رہے ہیں۔ اِسی گروہ بندی اور کھینچاتانی کا نتیجہ ہے کہ ہر مذہب کے لوگ اور خاصکر اِسلام کے ماننے والے اول تو خود اپنے مذہب والوں پر اور پھر دوسرے مذہب والوں پر دین کے معاملہ میں جبر و زبردستی کو جایز ہی نہیں بلکہ لازمی مانتے ہیں۔ اِسی کو وہ اصلی دین اور نجات کے لئے ضروری بتاتے ہیں۔ اِن لوگوں کا یہ غلط اور دردناک برتاؤ ہی دنیا میں ساری کھینچاتانی اور مذہبی نفرت اور ایک دوسرے سے لڑائی جھگڑے کی جڑ ہے۔ اِس سے آج دنیا کو بڑے بڑے نقصان پہونچ رہے ہیں۔ مذہب کی اصلیت سے غیرجانکاری اور غلط فہمی ہی اِنسانی بھائی چارے کی تعمیر میں سب سے بڑی رکاوٹ ہے۔ میں سب دھرم مذہبوں کے ماننے والوں سے کہ دینا چاہتا ہوں

के जब तक उनकी यह ग़लतफ़हमी दूर नहीं होती और वे अपने अपने धर्मों की सच्ची तालीम पर नहीं चलते तब तक मुल्कों और क़ौमों के पुरज़े पुरज़े होते रहेंगे और राजकाजी और नैतिक तूफ़ान हमारी समाजी ज़िंदगी की बुनियादों को हिलाते रहेंगे, और हमें पच्छिमी क़ौमों का शिकार बनाते रहेंगे. इन बुनियादी उसूलों को क़ायम करने के बाद .क़ुरान ने सच्चे भाईचारे, सच्ची डेमोक्रेसी यानी जमहूरियत और हुकूमते इलाही यानी रामराज क़ायम करना हर आदमी का पहला फ़र्ज़ बताया है, और उसके तरीक़े भी बता दिये हैं.

हुकूमते इलाही

हुकूमते इलाही का पहला उसूल यह है कि उसमें समाज के सबसे नीचे के लोगों, ग़रीबों, लाचारों, दर्दमंदों और पीड़ितों के दुख दर्द दूर करने की सबसे जियादह कोशिश की जाती है. ख़लीफ़ा उमर की हुकूमत इसकी सबसे अच्छी मिसाल थी. ऐसी हुकूमत में मानव समाज के वह सब रीत रिवाज और क़ायदे क़ानून, जिनके कारण समाज के कुछ लोगों में ग़रीबी घर कर जाती है, लाचारी और दर्दमन्दी बढ़ती है और कुछ लोग दूसरों पर जुल्म कर सकते हैं, वह सब मन्सूख़ और रद्द कर दिये जाते हैं. जुल्म का इससे बढ़कर सबूत नहीं हो सकता कि दुनिया में कुछ लोग दौलतमन्द हों और कुछ ग़रीब, नादार और लाचार. कुछ ज़ालिम हों और कुछ दर्दमन्द और मज़लूम. यही वह ऊँच नीच है जो इन्सानी बराबरी और भाईचारे को ख़त्म कर देती है. क़ुरान के अनुसार यह अल्लाह के हुकुम की सब से बड़ी नाफ़रमानी है.

क़ुरान का ग़रीबों, लाचारों और दर्दमन्दों की तरफ़ इतना ध्यान देना सारे मानव समाज को इन्सानी बराबरी के सांचे में ढाल देता है.

साथ ही क़ुरान बड़े, छोटे, बलवान और कमज़ोर तन्दुरुस्त और बीमार के उस फ़रक़ पर भी पूरा ध्यान देता है जिसका होना हर मिले जुले कुटुम्ब के अन्दर लाज़िमी है. माँ और बच्चे, बाप और बेटे, पति और पत्नी में फ़रक़ होता ही है, सीखने सिखाने की योग्यता भी किसी में कम, किसी में जियादा. किसी भी कुटुम्ब के सब आदमी एक बराबर नहीं कमा सकते, न सब एक सी मेहनत कर सकते हैं. ज़ाहिर है कि हरेक अपनी शक्ति और क़ाबलीयत के अनुसार मेहनत या काम करेगा, और हरेक पर उसकी ज़रूरत के अनुसार ख़र्च किया जावेगा. अक्सर काम न कर सकने वाले बीमार या अपाहिज या बच्चे पर ज्यादा और मेहनत करने वाले तन्दुरुस्त आदमी पर कम ख़र्च होता है. आज

کہ جب تک اُن کی یہ غلطفہمی دور نہیں ہوتی اور وے اپنے اپنے دھرموں کی سچی تعلیم پر نہیں چلتے تب تک ملکوں اور قوموں کے پرزے پرزے ہوتے رہینگے اور راجکاجی اور نیتک طوفان ہماری سماجی زندگی کی بنیادوں کو ہلاتے رہینگے' اور ہمیں پچھمی قوموں کا شکار بناتے رہینگے. اِن بنیادی اُصولوں کو قایم کرنے کے بعد قرآن نے سچے بھائی چارے' سچی ڈیموکریسی یعنی جمہوریت اور حکومت اِلٰہی یعنی رام راج قایم کرنا ہر آدمی کا پہلا فرض بتایا ہے' اور اِس کے طریقے بھی بتادیئے ہیں .

حکومت اِلٰہی

حکومت الٰہی کا پہلا اُصول یہ ہے کہ اُس میں سماج کے سب سے نیچے کے لوگوں' غریبوں' لاچاروں' دردمندوں اور پیڑتوں کے دکھ درد دور کرنے کی سب سے زیادہ کوشش کی جاتی ہے . خلیفہ عمر کی حکومت اس کی سب سے اچھی مثال تھی . ایسی حکومت میں مانو سماج کے وہ سب ریت رواج اور قاعدے قانون جن کے کارن سماج کے کچھ لوگوں میں غریبی گھر کر جاتی ہے' لاچاری اور دردمندی بڑھتی ہے اور کچھ لوگ دوسروں پر ظلم کرسکتے ہیں' وہ سب منسوخ اور رد کر دئے جاتے ہیں . ظلم کا اِس سے بڑھکر ثبوت نہیں ہوسکتا کہ دنیا میں کچھ لوگ دولتمند ہوں اور کچھ غریب' نادار اور لاچار . کچھ ظالم ہوں اور کچھ دردمند اور مظلوم . یہی وہ اونچ نیچ ہے جو اِنسانی برابری اور بھائی چارے کو ختم کر دیتی ہے . قرآن کے انوسار یہ اللہ کے حکم کی سب سے بڑی نافرمانی ہے .

قرآن کا غریبوں' لاچاروں اور دردمندوں کی طرف اِتنا دھیان دینا سارے مانو سماج کو اِنسانی برابری کے سانچے میں ڈھال دیتا ہے .

ساتھ ہی قرآن بڑے' چھوٹے' بلوان اور کمزور' تندرست اور بیمار کے اُس فرق پر بھی پورا دھیان دیتا ہے جس کا ہونا ہر ملے جلے کٹمب کے اندر لازمی ہے . ماں اور بچے' باپ اور بیٹے' پتی اور پتنی میں فرق ہوتا ہی ہے' سیکھنے سکھانے کی یوگتا بھی کسی میں کم اور کسی میں زیادہ . کسی بھی کٹمب کے سب آدمی ایک برابر نہیں کما سکتے' نہ سب ایکسی محنت کرسکتے ہیں . ظاہر ہے کہ ہر ایک اپنی شکتی اور قابلیت کے انوسار محنت یا کام کریگا' اور ہر ایک پر اُس کی ضرورت کے انوسار خرچ کیا جاویگا . اکثر کام نہ کرسکنے والے بیمار یا اپاہج یا بچے پر زیادہ اور محنت کرنے والے تندرست آدمی پر کم خرچ ہوتا ہے . آج

दुनिया भर में कम्युनिज़्म ने इसी को अपना आर्थिक उसूल और अपना सबसे बड़ा नारा बना रखा है.

कम्युनिस्ट विचारकों ने अभी तक यह नहीं सोचा कि जब तक आम लोगों को दो बातों पर विश्वास न होगा, एक यह कि ख़ुदा है और एक और केवल एक है और दूसरे यह कि सब आदमी भाई भाई हैं, तब तक दुनिया के आम लोग ऊपर के उसूल को स्वीकार नहीं कर सकते. जब तक लोगों को इस जीवन के बाद के एक स्थाई या अमर जीवन में विश्वास न होगा तब तक आम लोगों से इन्साफ़, त्याग और निस्स्वार्थता की आशा करना भी ग़लत है. जीवन के सुखों को आम आदमी तब ही दूसरों के लिये त्याग सकता है जब उसे बाद के किसी जीवन में बदले की आशा हो.

दुनिया की हुकूमतों के सामने आज सबसे बड़ा मसला यही है कि हर आदमी दूसरे आदमियों को नेकी और सदाचार के उसूलों पर कैसे चला सकता है और यह कैसे कर सकता है कि हर आदमी सब की भलाई के रास्ते पर ही चले. यह काम किसी तरह की ज़ोर जबरदस्ती से नहीं हो सकता. क़ुरान का कहना है कि एक कुटुम्ब के अन्दर हिन्सा और ज़बरदस्ती से काम लेना मानवता को ठेस पहुँचाना है और उसे मिटाना है. इसीलिये क़ुरान ने आदमी के राजकाजी जीवन के लिये भी हिन्सा और ज़बरदस्ती की जगह भाईचारे, परस्पर सहयोग और प्रेम ही की तालीम दी है. क़ुरान का दावा है कि हमारे आए दिन के जीवन में भाई भाई का सा सम्बन्ध और सहयोग आदमी में सच्चे भाईचारे और सच्ची जमहूरियत (लोक शाही) की बुनियाद डालता है, और यह लोकशाही ऐसी गहरी और मज़बूत होती है कि जितनी हिन्सा और ज़बरदस्ती से दुनिया पर लादी हुई कोई लोकशाही नहीं हो सकती. क़ुरान का कहना है कि परस्पर प्रेम और सहयोग आदमी में वह भाव और ज़िम्मेवारी पैदा करते हैं जो हिन्सा और डर पैदा नहीं कर सकते.

परन्तु आदमी के अन्दर प्रेम और परस्पर सहयोग की इस भावना का पैदा होना भी इतना आसान नहीं है. इसके लिये क़ुरान ने "जेहादे अकबर" का तरीक़ा बताया है. 'जेहादे अकबर' का अर्थ है 'सबसे बड़ा जेहाद.' इसका मतलब है ख़ुद अपनी आत्मा यानी अपने नफ़्स पर विजय प्राप्त करना, अपने अन्दर को जीतना. इसके लिये सब से पहली जरूरत है दिल की सफ़ाई. क्योंकि जब तक हर आदमी अपने दिल को अपने भाई की तरफ़ से क्रोध (ग़ुस्सा), नफ़रत, ईर्ष्या, द्वेष, अविश्वास, हसद वग़ैरा से पाक साफ़ न कर लेगा, तब तक वह उसे अपने बराबर का अनुभव नहीं कर सकेगा, और उससे दूसरे को नुक़सान और तकलीफ़ पहुंचती ही रहेगी. इसलिये आदमी को इन्सानी बराबरी के

دنیا بھر میں کمیونزم نے اِسی کو اپنا آرتھک اُصول اور اپنا سب سے بڑا نعرہ بنا رکھا ھے ۔

کمیونسٹ وچارکوں نے ابھی تک یہ نہیں سوچا کہ جب تک عام لوگوں کو دو باتوں پر وشواس نہ ھوگا، ایک یہ کہ خدا ہے اور ایک اور کیول ایک ھے اور دوسرے یہ کہ سب آدمی بھائی بھائی ھیں، تب تک دنیا کے عام لوگ اُوپر کے اُصول کو سوئیکار نہیں کرسکتے ۔ جب تک لوگوں کو اِس جیون کے بعد کے ایک استھائی یا امر جیون میں وشواس نہ ھوگا تب تک عام لوگوں سے اِنصاف، تیاگ اور نسوارتھتا کی آشا کرنا بھی غلط ھے ۔ جیون کے سکھوں کو عام آدمی تب ھی دوسروں کے لئے تیاگ سکتا ھے جب اُسے بعد کے کسی جیون میں بدلہ کی آشا ھو ۔

دنیا کی حکومتوں کے سامنے آج سب سے بڑا مسئلہ یہی ھے کہ ھر آدمی دوسرے آدمیوں کو نیکی اور سداچار کے اصولوں پر کیسے چلاسکتا ھے اور یہ کیسے کرسکتا کہ ھر آدمی سب کی بھلائی کے راستے پر ھی چلے ۔ یہ کام کسی طرح کی زور زبردستی سے نہیں ھوسکتا ۔ قرآن کا کہنا ھے کہ ایک کٹمب کے اندر ھنسا اور زبردستی سے کام لینا مانوتا کو ٹھیس پہونچانا ھے اور اُسے مٹانا ھے ۔ اِسی لئے قرآن نے آدمی کے راجکاجی جیون کے لئے بھی ھنسا اور زبردستی کی جگہ بھائی چارے، پرسپر سہیوگ اور پریم ھی کی تعلیم دی ھے ۔ قرآن کا دعویٰ ھے کہ ھمارے آئے دن کے جیون میں بھائی بھائی کا سمبندھ اور سہیوگ آدمی میں سچے بھائی چارے اور سچی جمہوریت (لوک شاھی) کی بنیاد ڈالتا ھے، اور یہ لوک شاھی ایسی گہری اور مضبوط ھوتی ھے کہ جتنی ھنسا اور زبردستی سے دنیا پر لادی ھوئی کوئی لوک شاھی نہیں ھوسکتی ۔ قرآن کا کہنا ھے کہ پرسپر پریم اور سہیوگ آدمی میں وہ بھاؤ اور وہ ذمہ واری پیدا کرتے ھیں جو ھنسا اور ڈر پیدا نہیں کرسکتے ۔

پرنتو آدمی کے اندر پریم اور پرسپر سہیوگ کی اِس بھاؤنا کا پیدا ھونا بھی اِتنا آسان نہیں ھے ۔ اِس کے لئے قران نے "جہاد اکبر" کا طریقہ بتایا ھے ۔ 'جہاد اکبر' کا ارتھ ھے 'سب سے بڑا جہاد.' اِس کا مطلب ھے خود اپنی آتما یعنی اپنے نفس پر وجئے پراپت کرنا، اپنے اندر کو جیتنا ۔ اِس کے لئے سب سے پہلی ضرورت ھے دل کی صفائی ۔ کیونکہ جب تک ھر آدمی اپنے دل کو اپنے بھائی کی طرف سے کرودھ (غصہ)، نفرت، ایرشیا، دویش، اوشواس، حسد وغیرہ سے پاک صاف نہ کرلیگا، تب تک وہ اسے اپنے برابر کا انوبھو نہیں کرسکیگا، اور اُس سے دوسرے کو نقصان اور تکلیف پہونچتی ھی رھیگی ۔ اس لئے آدمی کو اِنسانی برابری کے

उसूल से भी आगे बढ़कर दूसरों की ज़रूरतों को अपनी ज़रूरतों पर तरजीह देनी होगी, उसे दूसरों के लिये त्याग और क़ुरबानी करनी होगी. तब ही वह धरती पर ख़ुदा का ख़लीफ़ा यानी नायब बन सकेगा. इसीलिये क़ुरान कहता है कि इन्साफ़ करो, अहसान करो, त्याग यानी ईसार करो. क़ुरान में बराबर आता है कि "अल्लाह उन्हीं को प्यार करता है जो दूसरों पर अहसान करते हैं."

इन अर्थों में ख़ुदा का ख़लीफ़ा बनने की कोशिश को ही क़ुरान ने 'जेहादे अकबर' यानी बड़ा जेहाद कहा है. इसी को 'सीधा रास्ता' बताया है.

इसमें सन्देह नहीं कि क़ुरान ने आत्म रक्षा यानी अपने बचाव के लिये हिन्सा की यानी तलवार उठाने की भी इजाज़त दी है. लेकिन इसे 'जेहादे असग़र' यानी छोटा जेहाद कहा है. लगभग सब धर्मों ने राजकाज में तलवार के इस्तेमाल की इजाज़त दी है, लेकिन केवल जवाबी तौर पर, और वह भी इसलिये कि देश और काल के हालात के अनुसार अभी हिंसा को मनुष्य जीवन से बिलकुल बाहर नहीं किया जा सकता था. साथ ही हर धर्म ने हिंसा को केवल आत्म रक्षा के लिये जायज़ ठहराया है, और हिंसा और तलवार के इस्तेमाल के ख़त्म करने के लिये दरजे ब दरजे रास्ते और राहें बताई हैं. पर कड़ी से कड़ी हिदायतों के होते हुए भी किसी मज़हब के मानने वाले हिंसा को केवल जवाबी उपायों तक यानी आत्म रक्षा तक सीमित न रख सके. इन लोगों ने चूँकि 'जेहादे अकबर' की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया, इसी लिये ये सब दुनिया की हिर्स और लोभ के जाल में फस गए. जेहादे असग़र को ही सबने जेहादे अकबर समझ लिया, और अपने बचाव की हद से बढ़कर उसे दुनिया की ताक़त और ऐश आराम के सामान हासिल करने का ज़रिया बना लिया. इस ज़बरदस्त भूल ने आदमी की सारी रूहानी यानी आध्यात्मिक और इख़लाक़ी यानी नैतिक शक्तियों को मिटा डाला. इसी के नतीजे की शक्ल में इन्सानी दुनिया साम्राज्यवाद और पूंजीवाद यानी शहन-शाहियत और सरमायेदारी के जाल में फंस गई, यहां तक कि उसमें रूहानी और इख़लाक़ी शक्तियों के पैदा होने के सारे दरवाज़े ही बन्द हो गए. नतीजा यह हुआ कि हम यह दुनिया और वह दुनिया दोनों को खो बैठे. दुनिया से हमारा मान और इक़बाल दोनों उठ गए. आज पच्छिम की नास्तिकता और वहां का साम्राज्यवाद हम पर हावी है और उस की सारी शक्ति हमारी रही सही बुनियादों को खोद डालने में लगी हुई है. अगर मज़हबी दुनिया अब भी नहीं जागती और उन रास्तों को अख़्तियार नहीं करती, जो उसकी पाक किताबों और नबियों ने बताए हैं, तो उसे अपनी इस ग़लती के नतीजे भुगतने पड़ेंगे, उस पर नई नई मुसीबतें उतरेंगी

اُصول سے بھی آگے بڑھکر دوسروں کی ضرورتوں کو اپنی ضرورتوں پر ترجیح دینی ہوگی، اُسے دوسروں کے لئے تیاگ اور قربانی کرنی ہوگی۔ تب ہی وہ دھرتی پر خدا کا خلیفہ یعنی نایب بن سکیگا۔ اِس لئے قرآن کہتا ہے کہ اِنصاف کرو، احسان کرو، تیاگ یعنی ایثار کرو۔ قرآن میں برابر آتا ہے کہ "اللہ اُنھیں کو پیار کرتا ہے جو دوسروں پر احسان کرتے ہیں۔"

اِن ارتھوں میں خدا کا خلیفہ بننے کی کوشش کو ہی قرآن نے 'جہاد اکبر' یعنی بڑا جہاد کہا ہے۔ اِسی کو 'سیدھا راستہ' بتایا ہے۔

اِس میں سندیہ نہیں کہ قرآن نے آتم رکشا یعنی اپنے بچاؤ کے لئے ہنسا کی یعنی تلوار اُٹھانے کی بھی اِجازت دی ہے۔ لیکن اِسے 'جہاد اصغر' یعنی چھوٹا جہاد کہا ہے۔ لگ بھگ سب دھرموں نے راجکاج میں تلوار کے اِستعمال کی اِجازت دی ہے، لیکن کیول جوابی طور پر، اور وہ بھی اِس لئے کہ دیش اور کال کے حالات کے انوسار ابھی ہنسا کو منشیہ جیون سے بالکل باہر نہیں کیا جاسکتا تھا۔ ساتھ ہی ہر دھرم نے ہنسا کو کیول آتم رکشا کے لئے جایز ٹھہرایا ہے، اور ہنسا اور تلوار کے اِستعمال کے ختم کرنے کے لئے درجہ بدرجہ راستے اور راہیں بتائی ہیں۔ پر کڑی سے کڑی ہدایتوں کے ہوتے ہوئے بھی کسی مذہب کے ماننے والے ہنسا کو کیول جوابی اُپایوں تک یعنی آتم رکشا تک سیمت نہ رکھ سکے۔ اِن لوگوں نے چونکہ 'جہاد اکبر' کی طرف کوئی دھیان نہیں دیا، اِس لئے یہ سب دنیا کی حرص اور لوبھ کے جال میں پھنس گئے۔ جہاد اصغر کو ہی سب نے جہاد اکبر سمجھ لیا، اور اپنے بچاؤ کی حد سے بڑھ کر اُسے دنیا کی طاقت اور عیش آرام کے سامان حاصل کرنے کا ذریعہ بنا لیا۔ اِس زبردست بھول نے آدمی کی ساری روحانی یعنی آدھیاتمک اور اخلاقی یعنی نیتک شکتیوں کو مٹا ڈالا۔ اِسی کے نتیجے کی شکل میں انسانی دنیا سامراجیہ واد اور پونجی واد یعنی شہنشاہیت اور سرمایہداری کے جال میں پھنس گئی، یہاں تک کہ اُس میں روحانی اور اخلاقی شکتیوں کے پیدا ہونے کے سارے دروازے ہی بند ہو گئے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ہم یہ دنیا اور وہ دنیا دونوں کو کھو بیٹھے۔ دنیا سے ہمارا مان اور اقبال دونوں اُٹھ گئے۔ آج پچھم کی ناستکتا اور وہاں کا سامراجیہ واد ہم پر حاوی ہے اور اُس کی ساری شکتی ہماری رہی سہی بنیادوں کو کھود ڈالنے میں لگی ہوئی ہے۔ اگر مذہبی دنیا اب بھی نہیں جاگتی اور اُن راستوں کو اختیار نہیں کرتی، جو اس کی پاک کتابوں اور نبیوں نے بتائے ہیں تو اُسے اپنی اِس غلطی کے نتیجے بھگتنے پڑینگے، اُس پر نئی نئی مصیبتیں اُتریںگی

और सरमायेदारी और नास्तिकता का तूफ़ान केवल उसी का नहीं, सारे मानव संसार और मानव जाति का ख़ात्मा कर देगा.

मैं मुसलमानों का ध्यान उनके मज़हब के इस सबसे बड़े पहलू की तरफ़ दिलाना चाहता हूँ कि 'तौहीद' यानी अल्लाह का एक होना, 'अख़ूवत' यानी इन्सानी भाईचारा और आदमी का ख़ुदा का 'ख़लीफ़ा' होना, ये तीनों उसूल एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं, इन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता. इनमें वैसा ही संबंध है जैसा रूह और जिस्म में या मांस और हड्डी में. ईश्वर की एकता इनमें केन्द्रीय और बाक़ी दोनों की रूह है. यदि इन तीनों उसूलों को सामने रखकर हम मानव समाज का संगठन न करें तो बेअन्त आपाधापी फैल जाती है, हमारी सारी शक्तियां बिखर जाती हैं, और हमारी रूहानी, जिस्मानी और दूसरी ताक़तें अलग अलग को जाने लगती हैं. ईश्वर की एकता से इनकार करने के बाद कोई नाता ऐसा बाक़ी नहीं रह जाता जो एक आदमी को दूसरे आदमी के साथ प्रेम और सहयोग की ज़ंजीरों में जकड़ सके; और सारे मानव समाज को एक भाईचारे में ला सके. हम इसके ख़िलाफ़ फ़लसफ़ियाना बहसों के तूफ़ान उठा सकते हैं, पर यह एक सच्ची इतिहासी (तारीख़ी) घटना है कि मनुष्य जीवन से फूट और आपाधापी को मिटाने और सबको एक डोर में बाँधने में जितना ज़बरदस्त हिस्सा एक ख़ुदा, एक ईश्वर के विचार ने लिया है इतना आज तक किसी दूसरे विचार ने नहीं लिया. आदमी को हैवानियत से निकाल कर उसे आदमी बनाने में भी जो काम एक ईश्वर के विचार ने किया है वह किसी दूसरे विचार ने नहीं किया. मानव विकास में इन्सानी भाईचारे की सीढ़ी का यही आख़िरी ज़ीना है. अधिक पीछे न जाकर हम केवल पिछले तीन चार सौ बरस के इतिहास पर ही एक निगाह डालें तो हम देखेंगे कि जिस जिस दरजे तक लामज़हबी और नास्तिकता तौहीद (एकेश्वर वाद) और इन्सानी भाईचारे के ख़्यालों को लोगों के दिलों और दिमाग़ों से मिटाने में कामयाब हुई उसी दरजे तक मानव समाज में फूट, आपाधापी और हैवानियत बढ़ती चली गई, टक्करों और महा युद्धों के नए नए तूफ़ान आते गए. नतीजा यह हुआ कि स्वयं आदमी के अन्दर की हैवानियत और शैतानियत सारे मानव समाज पर हावी हो गई. आज यह हैवानी और शैतानी शक्तियां जो बरबादी कर रही हैं उसकी दूसरी मिसाल मानव इतिहास में नहीं मिल सकती. यहां तक कि आज दुनिया के कोने कोने से यह डरावनी आवाज़ आ रही है कि मानव सभ्यता, मानव जीवन और आदमी के वजूद का ख़ुदा ही हाफ़िज़ है.

नास्तिकता और लामज़हबी की इस बाढ़ ने धर्म मज़हबों

اور سرمایہ داری اور ناستکتا کا طوفان کیول اُسی کا نہیں، سارے مانو سنسار اور مانو جاتی کا خاتمہ کر دیگا۔

میں مسلمانوں کا دھیان اُن کے مذہب کے اِس سب سے بڑے پہلو کی طرف دلانا چاہتا ہوں کہ 'توحید' یعنی اللہ کا ایک ہونا 'اخوت' یعنی انسانی بھائی چارا اور آدمی کا خدا کا 'خلیفہ' ہونا' یہ تینوں اُصول ایک دوسرے کے ساتھ جڑے ہوئے ہیں' اِنہیں ایک دوسرے سے الگ نہیں کیا جا سکتا۔ اِن میں ویسا ہی سمبندھ ہے جیسا روح اور جسم میں یا مانس اور ہڈی میں۔ ایشور کی ایکتا اِن میں کیندریہ اور باقی دونوں کی روح ہے۔ یدی اِن تینوں اُصولوں کو سامنے رکھ کر ہم مانو سماج کا سنگٹھن نہ کریں تو بےانت آپادھاپی پھیل جاتی ہے' ہماری ساری شکتیاں بکھر جاتی ہیں' اور ہماری روحانی' جسمانی اور دوسری طاقتیں الگ الگ کو جانے لگتی ہیں۔ ایشور کی ایکتا سے اِنکار کرنے کے بعد کوئی ناتا اِیسا باقی نہیں رہ جاتا جو ایک آدمی کو دوسرے آدمی کے ساتھ پریم اور سہیوگ کی زنجیروں میں جکڑ سکے اور سارے مانو سماج کو ایک بھائی چارے میں لا سکے۔ ہم اِس کے خلاف فلسفیانہ بحثوں کے طوفان اُٹھا سکتے ہیں' پر یہ ایک سچی اِتہاسی (تاریخی) گھٹنا ہے کہ منشیہ جیون سے پھوٹ اور آپادھاپی کو مٹانے اور سب کو ایک ڈور میں باندھنے میں جتنا زبردست حصہ ایک خدا ایک ایشور کے وچار نے لیا ہے اِتنا آج تک کسی دوسرے وچار نے نہیں لیا۔ آدمی کو حیوانیت سے نکال کر اُسے آدمی بنانے میں بھی جو کام ایک ایشور کے وچار نے کیا ہے وہ کسی دوسرے وچار نے نہیں کیا۔ مانو وکاس میں انسانی بھائی چارے کی سیڑھی کا یہی آخری زینہ ہے۔ ادھک پیچھے نہ جاکر ہم کیول پچھلے تین چار سو برس کے اِتہاس پر ہی ایک نگاہ ڈالیں تو ہم دیکھینگے کہ جس جس درجہ تک لامذہبی اور ناستکتا توحید (ایکیشور واد) اور انسانی بھائی چارے کے خیالوں کو لوگوں کے دلوں اور دماغوں سے مٹانے میں کامیاب ہوئی اُسی درجہ تک مانو سماج میں پھوٹ' آپادھاپی' اور حیوانیت بڑھتی چلی گئی' ٹکروں اور مہایدھوں کے نئے نئے طوفان آتے گئے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ سویم آدمی کے اندر کی حیوانیت اور شیطانیت سارے مانو سماج پر حاوی ہو گئی۔ آج یہ حیوانی اور شیطانی شکتیاں جو بربادی کر رہی ہیں اُس کی دوسری مثال مانو اِتہاس میں نہیں مل سکتی۔ یہاں تک کی آج دنیا کے کونے کونے سے یہ ڈراونی آواز آرہی ہے کہ مانو سبھیتا' مانو جیون اور آدمی کے وجود کا خدا ہی حافظ ہے۔

ناستکتا اور لامذہبی کی اِس باڑھ نے دھرم مذہبوں

के मानने वालों के सामने जिन्दगी और मौत का सवाल पैदा कर दिया है. या तो हम हाथ पर हाथ धरे इस बाढ़ के हाथों अपनी सारी सभ्यता और मजहब का मिटाना चुप चाप देखा करें और या अपनी समाजी, रूहानी माली और इखलाक़ी जिन्दगी को पच्छिम की ग़ुलामी से आज़ाद कराने के लिये कमर कसके खड़े हो जायें. इसकी तय्यारी का पहला क़दम यह है कि हम दुनिया-परस्ती और ऐश-परस्ती के उस जाल को तोड़ दें जिसमें पच्छिम की ला-मजहब और ऐशपरस्त सभ्यता ने हमें फांस लिया है, और फिर अपने धर्म मजहब की तालीम पर सच्चे दिल से अमल करना शुरू करदें. यदि हम ऐसा करेंगे तो ईश्वर अल्लाह हमारा साथ देगा और फिर दुनिया की कोई शक्ति हमारे रास्ते में बाधा नहीं बन सकती.

हमें यह जानना चाहिये कि पच्छिमी सभ्यता का जहर अभी तक पूरबी देशों के ऊपर के और बीच के लोगों तक ही पहुंचा है. वह अभी तक छन छन कर आम जनता तक बहुत ही कम पहुंच पाया है. हमारे नीचे के और बहुत दरजे तक बीच के लोगों के दिलों पर ईश्वर में विश्वास और मजहब की हिदायतों का काफ़ी गहरा असर मौजूद है. यदि एक बार पच्छमी सभ्यता की नास्तिकता और लामज़हबी-यत का सच्चा रूप पूरबी देशों की जनता के सामने आ जाये और उसके असर को मिटाने के लिये उन्हें संगठित कर दिया जाय तो एक बहुत बड़ा इनक़लाब जल्दी से जल्दी पैदा हो सकता है जो दुनिया को बरबादी से बचा सकता है. हम धर्म मज़हब के मानने वालों से प्रार्थना करते हैं कि वह इस तरफ़ ध्यान दें और अपने धर्म को और दुनिया को इन दिन दिन बढ़ते हुए ख़तरों से बचाएं.

इस लेख में मैंने मुसलमानों की तरफ़ ख़ास ध्यान दिया है. उनके सामने इस समय तीन ही रास्ते हैं, या तो यह कि वह इसलाम से मुनकिर होकर न केवल आर्थिक यानी माली और राजकाजी मामलों में ही बल्कि मज़हबी और ईमानी मामलों में भी सोशलइज्म और कम्युनिज्म के पैरो बन जायें, या यह कि वह एक ख़ुदा में एतक़ाद, इनसानी भाईचारे और आदमी के ख़ुदा का ख़लीफ़ा होने के पूरे मतलब को ईमान के साथ पूरा करें और अपने देश और अपनी तहज़ीब को पच्छमी विचारों की ग़ुलामी से छुड़ावें. या तीसरा तरीक़ा यह है कि अपनी आजकल की मुसीबतों में गिरफ़्तार रह कर कभी मायूसी के दिन गुज़ारें और कभी अक्सरीयत (बहुमत) और अक़लियत (अल्पमत) का रोना रो रो कर पुराने फ़िरक़ेवाराना तूफ़ान खड़े करें और फिर उन्हीं का शिकार हो जायें. इन तीन के अलावा कोई और चौथा रास्ता उनके सामने नहीं है,

کے ماننے والوں کے سامنے زندگی اور موت کا سوال پیدا کر دیا ھے. یا تو ھم ھاتھ پر ھاتھ دھرے اِس باڑھ کے ھاتھوں اپنی ساری سبھیتا اور مذھب کا مٹنا چپ چاپ دیکھا کریں اور یا اپنی سماجی، روحانی، مالی اور اخلاقی زندگی کو پچھم کی غلامی سے آزاد کرانے کے لئے کمرکس کے کھڑے ھو جائیں . اِس کی تیاری کا پہلا قدم یہ ھے کہ ھم دنیا پرستی اور عیش پرستی کے اُس جال کو توڑ دیں جس میں پچھم کی لا مذھب اور عیش پرست، سبھیتا نے ھمیں پھانس لیا ھے، اور پھر اپنے دھرم مذھب کی تعلیم پر سچے دل سے عمل کرنا شروع کر دیں . یدی ھم ایسا کرینگے تو ایشور اللہ ھمارا ساتھ دیگا اور پھر دنیا کی کوئی شکتی ھمارے راستے میں بادھا نہیں بن سکتی .

ھمیں یہ جاننا چاھئیے کہ پچھمی سبھیتا کا زھر ابھی تک پوربی دیشوں کے اوپر کے اور بیچ کے لوگوں تک ھی پہونچا ھے . وہ ابھی تک چھن چھن کر عام جنتا تک بہت ھی کم پہونچ پایا ھے . ھمارے نیچے کے اور بہت درجے تک بیچ کے لوگوں کے دلوں پر ایشور میں وشواس اور مذھب کی ھدایتوں کا کافی گہرا اثر موجود ھے . یدی ایکبار پچھمی سبھیتا کی ناستکتا اور لامذھبیت کا سچا روپ پوربی دیشوں کی جنتا کے سامنے آجائے اور اُس کے اثر کو مٹانے کے لئے اُنھیں سنگٹھت کردیا جائے تو ایک بہت بڑا اِنقلاب جلدی سے جلدی پیدا ھوسکتا ھے جو دنیا کو بربادی سے بچا سکتا ھے . ھم دھرم مذھب کے ماننے والوں سے پرارتھنا کرتے ھیں کہ وہ اِس طرف دھیان دیں اور اپنے دھرم کو اور دنیا کو اِن دن دن بڑھتے ھوئے خطروں سے بچائیں .

اس لیکھ میں میں نے مسلمانوں کی طرف خاص دھیان دیا ھے. اُن کے سامنے اِس سمئے تین ھی راستے ھیں، یا تو یہ کہ وہ اِسلام سے منکر ھوکر نہ کیول آرتھک یعنی مالی اور راجکاجی معاملوں میں ھی بلکہ مذھبی اور ایمانی معاملوں میں بھی سوشلزم اور کمیونزم کے پیرو بن جائیں، یا یہ کہ وہ ایک خدا میں اعتقاد، اِنسانی بھائی چارے اور آدمی کے خدا کا خلیفہ ھونے کے پورے مطلب کو ایمان کے ساتھ پورا کریں اور اپنے دیش اور اپنی تہذیب کو پچھمی وچاروں کی غلامی سے چھڑاویں . یا تیسرا طریقہ یہ ھے کہ اپنی آجکل کی مصیبتوں میں گرفتار رہکر کبھی مایوسی کے دن گذاریں اور کبھی اکثریت (بہومت) اور اقلیت (الپمت) کا رونا رو روکر پرانے فرقہ وارانہ طوفان کھڑے کریں اور پھر اُنھیں کا شکار ھوجائیں . اِن تین کے علاوہ کوئی اور چوتھا راستہ اُن کے سامنے نہیں ھے .

मेरी प्रार्थना है कि इस देश के मुसलमान क़ुरान की सच्ची रोशनी, सच्ची जमहूरियत (डेमोक्रेसी) और सच्ची हकूमते इलाही (रामराज) क़ायम करने को अपना समाजी और राजकाजी मक़सद बनायें. इस के लिये वह काफ़ी समाजी, रोज़गारी, माली और इख़लाक़ी प्रोग्राम बना सकते हैं. और फिर उन्हें चाहिये कि वह उन प्रोग्रामों को पूरा करने में दिलो जान से लग जावें.

मैं भारत के मुसलमानों को सलाह देता हूँ कि वह इस आन्दोलन में शामिल होने के लिये अपने हिन्दू भाइयों और दूसरे भारत वासियों को भी दावत दें और उन्हें यह यक़ीन दिलाएं कि अक्सरीयत और अक़लीयत यानी बहुमत और अल्प मत और फ़िरक़ेवाराना झगड़ों और मज़हबी दुश्मनियों की सच्ची लोकशाही में कोई जगह नहीं है. अगर हिन्दू मुसलमान और सब मिलकर इन लोहे की दीवारों को तोड़ने की कोशिश करेंगे तो नामुमकिन है कि यह ठहर सकें. इनके मिटजाने के बाद ही वह समाज क़ायम हो सकता है जिसे हम सच्ची जमहूरियत, लोकशाही, हकूमते इलाही या राम राज कह सकें.

जाहिर है कि अगर इस तरह की लोकशाही भारत में क़ायम हो जाये तो पाकिस्तान उसके असर से बाहर नहीं रह सकता. यही एक रास्ता है जिससे वह घाव जो अंगरेज़ी पालिसी ने हम पर लगाए हैं भर सकते हैं. वह दो भाई जो एक दूसरे के ख़िलाफ़ जंग के मोरचे बनाए हुए हैं फिर से गले मिल सकते हैं.

अगर ऐसा हो जाय तो इस देश के जीवन में एक बहुत बड़ा इनक़लाब पैदा हो सकता है, फटे हुए दिल मिल सकते हैं और बिछड़े हुए भाई इस तरह से फिर एक हो सकते हैं कि दुनिया के लिये एक नमूना हो जायें.

शास्त्र की बातें यदि भूल जायें तो फिर याद कर ली जा सकती हैं परन्तु सदाचार से एक बार भी भ्रष्ट हो जाने पर सँभलना मुश्किल होता है.

—सन्त वाणी

میری پرارتھنا هے که اِس دیش کے مسلمان قرآن کی سچی روشنی' سچی جمہوریت (ڈیموکریسی) اور سچی حکومت اِلٰہی (رام راج) قایم کرنے کو اپنا سماجی اور راجکاجی مقصد بنائیں ۔ اِس کے لئے وہ کافی سماجی' روزگاری' مالی اور اخلاقی پروگرام بناسکتے ھیں ۔ اور پھر اُنھیں چاھئے کہ وہ اُن پروگراموں کو پورا کرنے میں دل و جان سے لگ جاویں ۔

میں بھارت کے مسلمانوں کو صلاح دیتا ھوں کہ وہ اِس آندولن میں شامل ھونے کے لئے اپنے ھندو بھائیوں اور دوسرے بھارت واسیوں کو بھی دعوت دیں اور اُنھیں یہ یقین دلائیں کہ اکثریت اور اقلیت یعنی بہومت اور الپ‌مت اور فرقہ‌وارانہ جھگڑوں اور مذھبی دشمنیوں کی سچی لوک شاھی میں کوئی جگہ نہیں ھے ۔ اگر ھندو مسلمان اور سب ملکر ان لوھے کی دیواروں کو توڑنے کی کوشش کرینگے تو ناممکن ھے کہ یہ ٹھہر سکیں ۔ اِن کے مٹ جانے کے بعد ھی وہ سماج قایم ھوسکتا ھے جسے ھم سچی جمہوریت' لوک شاھی' حکومت اِلٰہی یا رام راج کہہ سکیں ۔

ظاھر ھے کہ اگر اِس طرح کی لوک شاھی بھارت میں قایم ھوجائے تو پاکستان اُس کے اثر سے باھر نہیں رہ سکتا ۔ یہی ایک راستہ ھے جس سے وہ گھاؤ جو انگریزی پالیسی نے ھم پر لگائے ھیں بھرسکتے ھیں ۔ وہ دو بھائی جو ایک دوسرے کے خلاف جنگ کے مورچے بنائے ھوئے ھیں پھر سے گلے مل سکتے ھیں ۔

اگر ایسا ھوجائے تو اِس دیش کے جیون میں ایک بہت بڑا انقلاب پیدا ھوسکتا ھے' پھٹے ھوئے دل مل سکتے ھیں اور بچھڑے ھوئے بھائی اِس طرح سے پھر ایک ھوسکتے ھیں کہ دنیا کے لئے ایک نمونہ ھوجائیں ۔

شاستر کی باتیں یدی بھول جائیں تو پھر یاد کرلی جا سکتی ھیں پرنتو سداچار سے ایک بار بھی بھرشٹ ھو جانے پر سنبھلنا مشکل ھوتا ھے ۔

—سنت وانی

रूह या आत्मा जब बालिग़ होने लगती है

डाक्टर भगवानदास

लगभग हर आदमी की आत्मा को एक ख़ास उमर में पहुँचकर, जब आत्मा बालिग़ होने लगती है, एक तरह का रूहानी बुख़ार शुरू हो जाता है जिसकी चरचा मैं इससे पहले के लेख में कर चुका हूँ. यह ठीक उसी तरह होता है जिस तरह एक ख़ास उमर में शरीर के बालिग़ होने की ख़ास अलामतें दिखाई देने लगती हैं. कभी कभी यह दोनों तरह की अलामतें एक ही उमर में साथ साथ भी देखने को मिलती हैं. आदमी के दिल पर इस रूहानी बुख़ार का ख़ास असर यह होता है कि इस नाशमान यानी फ़ानी और निराशा, दुख दर्द और मौत वाली दुनिया की तरफ़ से एक तरह का वैराग्य, नफ़रत और असंतोष पैदा हो जाता है. आदमी की संकल्प शक्ति यानी क़ूवते इरादी पर उसका असर यह होता है कि आठ दिन के जीवन के मामूली काम उसे निरर्थक मालूम होने लगते हैं. उस का जी उनसे फिरने लगता है. ऐसे उस समय में अलग अलग आदमियों में अलग अलग चार सूरतें पैदा होती हैं. पहली सूरत में अगर आदमी का दिमाग़ और उसकी सूझ बूझ काफ़ी जागी हुई नहीं होती और वैराग्य बढ़ जाता है और गहरा हो जाता है, तो कभी कभी आदमी में पागलपन के चिन्ह दिखाई देने लगते हैं. इस तरह के पागलपन को आजकल के पच्छिमी डाक्टर और मनोविज्ञान के जानने वाले 'डिमेंटिया प्रिकोक्स (Dementia Precox) या 'पेरेनोइया' कहते हैं. दूसरी सूरत में अगर सूझ बूझ जाग चुकी होती है पर अभी बहुत अच्छी नहीं जागी होती और चीज़ों की जड़ में जाने, उनके कारणों को समझने का माद्दा अभी कम होता है, जैसा कि आत्मिक विकास की शुरू की हालतों में अक्सर होता है, और निराशा अधिक ज़ोर करती है और उससे आदमी में ग़ुस्सा पैदा होने लगता है तो कभी कभी ख़ास सूरतों में आदमी ऐसे मौक़े पर आत्म-हत्या भी कर बैठता है. तीसरी सूरत यह होती है कि वैराग्य यानी दुनिया से दिल का हटना और जिज्ञासा यानी तलाशे हक़ दोनों कमज़ोर होती हैं तो यह हालत थोड़े दिनों रह कर अपने आप मिट जाती है और आदमी दुनिया के दूसरे मामूली आदमियों की तरह चुपचाप इन्सानी ज़िन्दगी के रोज़-मर्रा के मामूली कामों में लग जाता है. अधिकतर आदमियों की यही हालत होती है. चौथी सूरत में अगर जिज्ञासा

روح یا آتما جب بالغ ہونے لگتی ھے

ڈاکٹر بھگوان داس

لگ بھگ ھر آدمی کی آتما کو ایک خاص عمر میں پہونچ کر، جب آتما بالغ ھونے لگتی ھے، ایک طرح کا روحانی بخار شروع ھو جاتا ھے جس کی چرچا میں اِس سے پہلے کے لیکھ میں کر چکا ھوں یہ ٹھیک اسی طرح ھوتا ھے جس طرح ایک خاص عمر میں شریر کے بالغ ھونے کی خاص علامتیں دکھائی دینے لگتی ھیں۔ کبھی کبھی یہ دونوں طرح کی علامتیں ایک ھی عمر میں ساتھ ساتھبھی دیکھنے کو ملتی ھیں. آدمی کے دل پر اِس روحانی بخار کا خاص اثر یہ ھوتا ھے کہ اِس ناشمان یعنی فانی اور نراشا، دکھدرد اور موت والی دنیا کی طرف سے ایک طرح کا ویراگیہ نفرت، اور اسنتوش پیدا ھو جاتا ھے۔ آدمی کی سنکلپ شکتی یعنی قوت ارادی پر اُس کا اثر یہ ھوتا ھے کہ آٹھ دن کے جیون کے معمولی کام اُسے نررتھک معلوم ھونے لگتے ھیں. اس کا جی اُن سے پھرنے لگتا ھے. ایسے اُس سمئے میں الگ الگ آدمیوں میں الگ الگ چار صورتیں پیدا ھوتی ھیں. پہلی صورت میں اگر آدمی کا دماغ اور اُس کی سوجھ بوجھ کافی جاگی ھوئی نہیں ھوتی اور ویراگیہ بڑھ جاتا ھے اور گہرا ھو جاتا ھے، تو کبھی کبھی آدمی میں پاگلپن کے چنھ دکھائی دینے لگتے ھیں۔ اِس طرح کے پاگلپن کو آجکل کے پچھمی ڈاکٹر اور منووگیان کے جاننے والے ڈیمینٹیا پریکوکس (Dementia Precox) یا 'پیرونوئیا' کہتے ھیں۔ دوسری صورت میں اگر سوجھ بوجھ جاگ چکی ھوتی ھے پر ابھی بہت اچھی نہیں جاگی ھوتی اور چیزوں کی جڑ میں جانے، اُن کے کارنوں کو سمجھنے کا مادہ ابھی کم ھوتا ھے، جیسا کہ آتمک وکاس کی شروع کی حالتوں میں اکثر ھوتا ھے، اور نراشا ادھک زور کرتی ھے اور اُس سے آدمی میں غصہ پیدا ھونے لگتا ھے تو کبھی کبھی خاص صورتوں میں آدمی ایسے موقعے پر آتم ھتیا بھی کر بیٹھتا ھے۔ تیسری صورت یہ ھوتی ھے کہ ویراگیہ یعنی دنیا سے دل کا ھٹنا اور جگیاسا یعنی تلاش حق دونوں کمزور ھوتی ھیں تو یہ حالت تھوڑے دنوں رہ کر اپنے آپ مٹ جاتی ھے اور آدمی دنیا کے دوسرے معمولی آدمیوں کی طرح چپ چاپ انسانی زندگی کے روزمرہ کے معمولی کاموں میں لگ جاتا ھے۔ ادھکتر آدمیوں کی یہی حالت ھوتی ھے۔ چوتھی صورت میں اگر جگیاسا

ज़बरदस्त होती है, बार बार आदमी को दिक़ करती है और दब नहीं पाती, अगर जीवन के अन्यायों, बुराइयों और बेइंसाफियों के खिलाफ वह गुस्सा और वह विद्रोह जो इस जिज्ञासा को जन्म देता है दूसरे आदमियों के साथ सहानुभूति और दया का रूप ले लेता है, यानी आदमी का दिल केवल अपने दुखों के कारण नहीं बल्कि सबके, मनुष्य मात्र के या प्राणी मात्र के, दुखों के कारण दुनिया से फिरता है तो धीरे धीरे आदमी जिन्दगी के मानी को समझने लगता है. उसके सामने जीवन की एक पूरी फिलासोफी आने लगती है. वह यह जानने लगता है कि मैं कौन हूँ, मैं क्या हूँ, मैं कहाँ से आया हूँ, किधर जा रहा हूँ, क्यों जा रहा हूँ; यह सब दूसरी आत्माएँ कौन हैं, क्या हैं, कहाँ से किधर और क्यों जा रही हैं, यह दिखाई देने वाली दुनिया और इसका लगातार चक्र क्या है, क्यों है और कैसे चल रहा है, जीवन का निकास कहाँ से है, क्यों है, जीवन का अर्थ क्या है, जीवन का लक्ष्य यानी मक़सद क्या है, और जीवन के सब दुख सुख किस लिए हैं ? यह चौथी हालत तब पैदा होती है जब मनुष्य की आत्मा एक ख़ास दर्जे तक तरक़्क़ी कर चुकी होती है और एक ख़ास मुक़ाम पर पहुँच चुकी होती है. जल्दी या देर में सब रूहें उस मुक़ाम पर पहुँचती हैं. यह वह मुक़ाम है जहां पर आदमी अपने स्वार्थ यानी अपनी छोटी ख़ुदी से ऊपर उठकर समझ बूझ कर परोपकार यानी सबके भले की तरफ मुड़ने लगता है और फिर लौटकर जीवन का चक्र पूरा करके परम आत्मा यानी रूहे कुल में अपने को लीन यानी फना कर देने की तरफ बढ़ता है.

मैंने अपनी हिन्दी किताब "समन्वय" के आख़िरी अध्याय में और अपनी कई अंग्रेज़ी किताबों, जैसे "दि साइंस आफ़ पीस" "मिस्टिक एक्सपीरियेन्सेज़" टेल्स फ़्राम योगवसिष्ठ" वग़ैरह में आत्मा की इस हालत को विस्तार के साथ बयान किया है.

जिस बीमारी 'डिमेंटिया प्रीकोक्स की मैंने ऊपर चर्चा की है वह अकसर उन नौजवानों को होती है जिन में यह जिज्ञासा अधिक छोटी उमर में और समय से पहले जाग उठती है. कभी कभी यह हालत जियादा बड़ी उमर में भी होती है. नौजवानों को यह अकसर पन्द्रह साल की उमर से लेकर इक्कीस साल की उमर तक होती है जबकि आत्मा और शरीर में नई शक्ति आती है और दोनों एक दूसरे के साथ एक तरह का समझौता करने की कोशिश करते हैं.

आजकल पच्छिम में जिन्दगी की लगातार कशमकश और भोग विलास के जीवन से थकान और तरह तरह

زبردست ہوتی ہے' بار بار آدمی کو دق کرتی ہے اور دب نہیں پاتی' اگر جیون کے انیاؤں' برائیوں اور بے انصافیوں کے خلاف وہ غصہ اور ودروہ جو اس جگیاسا کو جنم دیتا ہے دوسرے آدمیوں کے ساتھ سہانوبھوتی اور دیا کا روپ لے لیتا ہے' یعنی آدمی کا دل کیول اپنے دکھوں کے کارن نہیں بلکہ سب کے' منشیہ ماتر کے یا پرانی ماتر کے' دکھوں کے کارن دنیا سے پھرتا ہے تو دھیرے دھیرے آدمی زندگی کے معنی کو سمجھنے لگتا ہے ۔ اس کے سامنے جیون کی ایک پوری فلسفی آنے لگتی ہے ۔ وہ یہ جاننے لگتا ہے کہ میں کون ہوں' میں کیا ہوں' میں کہاں سے آیا ہوں' کدھر جا رہا ہوں' کیوں جا رہا ہوں' یہ سب دوسری آتمائیں کون ہیں' کیا ہیں' کہاں سے کدھر اور کیوں جارہی ہیں' یہ دکھائی دینے والی دنیا اور اس کا لگاتار چکر کیا ہے' کیوں ہے اور کیسے چل رہا ہے' جیون کا نکاس کہاں سے ہے' کیوں ہے' جیون کا ارتھ کیا ہے' جیون کا لکشیہ یعنی مقصد کیا ہے' اور جیون کے سب دکھ سکھ کس لئے ہیں ۔ یہ چوتھی حالت تب پیدا ہوتی ہے جب منشیہ کی آتما ایک خاص درجے تک ترقی کر چکی ہوتی ہے اور ایک خاص مقام پر پہونچ چکی ہوتی ہے ۔ جلدی یا دیر میں سب روحیں اس مقام پر پہونچتی ہیں ۔ یہ وہ مقام ہے جہاں پر آدمی اپنے سوارتھ یعنی اپنی چھوٹی خودی سے اوپر اٹھکر سمجھ بوجھ کر پروپکار یعنی سب کے بھلے کی طرف مڑنے لگتا ہے اور پھر لوٹ کر جیون کا چکر پورا کر کے پرم آتما یعنی روح کل میں اپنے کو لین یعنی فنا کر دینے کی طرف بڑھتا ہے ۔

میں نے اپنی ہندی کتاب "سمنویہ" کے آخری ادھیایہ میں اور اپنی کئی انگریزی کتابوں' جیسے "دی سائنس آف پیس" "مسٹک ایکسپیرئینسز" "ٹیلس فرام یوگ وسشٹھ" وغیرہ میں آتما کی اس حالت کو وستار کے ساتھ بیان کیا ہے ۔

جس بیماری 'ڈیمینشیا پریکوکس' کی میں نے اوپر چرچا کی ہے وہ اکثر ان نوجوانوں کو ہوتی ہے جن میں یہ جگیاسا ادھک چھوٹی عمر میں اور سمے سے پہلے جاگ اٹھتی ہے ۔ کبھی کبھی یہ حالت زیادہ بڑی عمر میں بھی ہوتی ہے ۔ نوجوانوں کو یہ اکثر پندرہ سال کی عمر سے لیکر اکیس سال کی عمر تک ہوتی ہے جبکہ آتما اور شریر میں نئی شکتی آتی ہے اور دونوں ایک دوسرے کے ساتھ ایک طرح کا سمجھوتہ کرنے کی کوشش کرتے ہیں ۔

آجکل پچھم میں زندگی کی لگاتار کشمکش اور بھوگ ولاس کے جیون سے تھکان اور طرح طرح

के विचारों की टक्करों के कारण कुछ लोगों में यह अलामतें ख़ूब बढ़ जाती हैं. यूरप में इसपर तरह तरह का बहुत सा साहित्य भी निकल रहा है.

जो आदमी कामयाबी के साथ इस तजरबे में से निकल आता है उसके शरीर और उसकी आत्मा दोनों में क़ुदरती तौर पर बल आ जाता है. उसकी सूझ बूझ, उसके भाव (जज़बात), उसकी संकल्प शक्ति सब बढ़ जाती हैं और इस दुनिया के जिस्मानी और रूहानी दोनों तरह के फ़र्ज़ों को वह ज़्यादा अच्छी तरह पूरा करने लगता है.

वैराग्य (दुनिया से दिल का फिरना) और उसके नतीजे

आदमी जब इस दुनिया की ज़िन्दगी से थकने लगता है, या उसका दिल फिरने लगता है, या उसमें दुनिया से नफ़रत पैदा होने लगती है, यानी जब उसमें वैराग्य पैदा होने लगता है, तो उसकी कई सूरतें हो सकती हैं. पहली सूरत में यह वैराग्य महज़ अंधेपन, जहालत और काहिली से पैदा होता है. इस तरह का वैराग्य 'तामस वैराग्य' कहलाता है. दूसरी सूरत में यही वैराग्य काम, क्रोध, ख़ुदी, अहंकार और बेचैनी से पैदा होता है. ऐसी सूरत में वह 'राजस वैराग्य' कहलाता है. इसी तरह के ग़लत वैराग्य से आदमी कभी कभी आत्मघात यानी ख़ुदकुशी भी कर बैठता है. उसकी दुखी आत्मा को जिस जिस्म के ज़रिए से दुख पहुँचता है उसे वह ख़त्म कर देता है. वह यह भूल जाता है कि दुख की जड़ जिस्म नहीं हैं. दुख की जड़ उसके अंदर की अविद्या यानी नादानी है, उसके झूठे ख़याल हैं, ग़लत विश्वास या अक़ीदे हैं. दुख या क्लेश की जड़ उसके अंदर है, बाहर नहीं हैं. इसी अन्दर की जड़ ने ही अपने को ज़ाहिर करने के लिए बाहर के जिस्म को भी रूप दिया है. इस बाहर के रूप को मिटा देने से अंदर की जड़ नहीं जाग सकती और जब तक आत्मा उस अन्दर की जड़ को नहीं समझे और पहचाने और उसका इलाज नहीं करे वह अन्दर की जड़ बार बार इस तरह के नए नए जिस्म बनाती रहेगी.

लेकिन तीसरी सूरत में अगर वैराग्य यानी दुनिया से दिल का फिरना 'सात्विक' है यानी सोच समझकर है और सब के भले की इच्छा उसमें शामिल है तो उसके साथ दुनिया के दुखों का कारण और उसका इलाज ढूँढने की एक ज़बरदस्त जिज्ञासा यानी तलाश होती है. उसके साथ वह विवेक होता है जो नित्य और अनित्य यानी ग़ैरफ़ानी और फ़ानी, सत्य और असत्य यानी हक़ और बातिल में तमीज़ कर सकता है. उसी के साथ आदमी में वह नेकियां जागती हैं जिन्हें ईसाई धर्म में 'सात अमर नेकियां'—श्रद्धा (ईमान), आशा (उम्मीद), दया, न्याय, समझदारी, परहेज़गारी और

کے وچاروں کی ٹکروں کے کارن کچھ لوگوں میں یہ علامتیں خوب بڑھ جاتی ہیں ۔ یورپ میں اِس پر طرح طرح کا بہت سا ساہتیہ بھی نکل رہا ہے ۔

جو آدمی کامیابی کے ساتھ اِس تجربے میں سے نکل آتا ہے اُس کے شریر اور اُس کی آتما دونوں میں قدرتی طور پر بل آجاتا ہے. اُس کی سوجھ بوجھ، اُس کے بھاؤ (جذبات)، اُس کی سنکلپ شکتی سب بڑھ جاتی ہیں اور اِس دنیا کے جسمانی اور روحانی دونوں طرح کے فرضوں کو وہ زیادہ اچھی طرح پورا کرنے لگتا ہے ۔

ویراگیہ (دنیا سے دل کا پھرنا) اور اُس کے نتیجے

آدمی جب اِس دنیا کی زندگی سے تھکنے لگتا ہے، یا اُس کا دل پھرنے لگتا ہے، یا اُس میں دنیا سے نفرت پیدا ہونے لگتی ہے، یعنی جب اُس میں ویراگیہ پیدا ہونے لگتا ہے، تو اُس کی کئی صورتیں ہوسکتی ہیں. پہلی صورت میں یہ ویراگیہ محض اندھےپن، جہالت اور کاہلی سے پیدا ہوتا ہے ۔ اِس طرح کا ویراگیہ 'تامس ویراگیہ' کہلاتا ہے. دوسری صورت میں یہی ویراگیہ کام، کرودھ، خودی، اہنکار اور بےچینی سے پیدا ہوتا ہے ۔ ایسی صورت میں وہ 'راجس ویراگیہ' کہلاتا ہے ۔ اِسی طرح کے غلط ویراگیہ سے آدمی کبھی کبھی آتم‌گھات یعنی خودکشی بھی کر بیٹھتا ہے ۔ اُس کی دکھی آتما کو جس جسم کے ذریعہ سے دکھ پہونچتا ہے اُسے وہ ختم کردیتا ہے ۔ وہ یہ بھول جاتا ہے کہ دکھ کی جڑ جسم نہیں ہے ۔ دکھ کی جڑ اُس کے اندر کی اودیا یعنی نادانی ہے، اُس کے جھوٹھے خیال ہیں، غلط وشواس یا عقیدے ہیں ۔ دکھ یا کلیش کی جڑ اس کے اندر ہے، باہر نہیں ہے ۔ اِس اندر کی جڑ نے ہی اپنے کو ظاہر کرنے کے لئے باہر کے جسم کو بھی روپ دیا ہے ۔ اِس باہر کے روپ کو مٹا دینے سے اندر کی جڑ نہیں جاگ سکتی اور جب تک آتما اُس اندر کی جڑ کو نہیں سمجھے اور پہچانے اور اُس کا علاج نہیں کرے وہ اندر کی جڑ بار بار اِس طرح کے نئے نئے جسم بناتی رہیگی ۔

لیکن تیسری صورت میں اگر ویراگیہ یعنی دنیا سے دل کا پھرنا 'ساتوک' ہے یعنی سوچ سمجھکر ہے اور سب کے بھلے کی اِچھا اُس میں شامل ہے تو اُس کے ساتھ دنیا کے دکھوں کا کارن اور اُس کا علاج ڈھونڈنے کی ایک زبردست جگیاسا یعنی تلاش ہوتی ہے ۔ اُس کے ساتھ وہ وویک ہوتا ہے جو نتیہ اور انتیہ یعنی غیرفانی اور فانی، ستیہ اور استیہ یعنی حق اور باطل میں تمیز کرسکتا ہے ۔ اُسی کے ساتھ آدمی میں وہ نیکیاں جاگتی ہیں جنھیں عیسائی دھرم میں 'سات امر نیکیاں'— شردھا (ایمان)، آشا (اُمید) دیا، نیائے، سمجھداری، پرہیزگاری اور

धीरज—कहा गया है. इन्हीं को वेदान्त में 'उन्नति के छै रास्ते' कहा गया है. वेदान्त में इनके नाम शम, दम, उपरति, तितीक्षा, श्रद्धा और समाधान हैं. बात वही है, केवल शब्द अलग अलग हैं. यह छै या सात नेकियां उन बुराइयों की दुश्मन हैं जिन्हें वेदान्त में 'शडरिपु' यानी 'छै दुश्मन' कहा गया है. यह छै हैं—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर (हसद). इन्जील में इन्हीं को 'सात मुहलिक गुनाह' कहकर बयान किया गया है. बात वही है. इसके साथ साथ इस तीसरी सूरत में आदमी में नजात यानी मुक्ति की जबरदस्त इच्छा होती है. यह इच्छा केवल अपने ही लिये नहीं होती सब के लिये होती है. आदमी की आत्मा चाहती है कि दुनिया की सब आत्माएं दुख और मौत के डर से छूट जावें. यह डर ही सब दुखों की जड़ है. इस जिज्ञासा की हालत में आदमी अपने अन्दर एक बेइतमीनानी पाता है, वह समझता है कि वह किसी ग़ैर यानी अपने से बाहर की किसी चीज़ के सहारे जी रहा है. उसे अपने अमर यानी ग़ैरफ़ानी होने में शक होता है. जब आदमी के अन्दर यह हालत होती है यानी इस तरह का 'सात्विक वैराग्य' ज़ोर करता है तब धीरे धीरे आदमी की अन्दर की आंखें खुलती हैं. उसे आत्म बोध होता है, सच्ची विद्या, प्रज्ञान, यानी मार्फ़त उसमें जागती है. वह देखता है कि एक ही आत्मा, एक ही रूहेकुल सब जगह और सबके अन्दर रमी हुई है. वही है, और सब धोखा है. ग़ैरियत का मिट जाना ही सच्चे ज्ञान का हासिल होना है. यही इल्मेरूहानी है. तब आदमी उस शुद्ध चेतनता की दुनिया के वजूद को महसूस करता है जिसके अन्दर यह सारी जड़ यानी माद्दी दुनिया समाई हुई है. उसे अपने अमर होने का विश्वास हो जाता है. वह आत्मा को आत्म निर्भर यानी ग़नी पाता है, सबके अन्दर एक ही आत्मा देखने लगता है. इस मुक़ाम पर पहुँचकर अविद्या यानी जहालत का नाश हो जाता है. तब आदमी इस धोखे से ऊपर उठ जाता है कि मैं केवल एक मिट्टी का लोंदा या हाड़, मांस, ख़ून का यह नाशमान शरीर हूँ. ख़ुदी या अहंकार जाता रहता है. यह मुक़ाम भी एक तरह की आत्महत्या यानी ख़ुदकुशी का मुक़ाम है. लेकिन जो आपा या जो ख़ुदी इस जगह पर पहुँचकर मरती है वह अपनी छोटी मूटी ख़ुदी है, वह भेद भाव या अहंकार है जो विद्या यानी सच्चे ज्ञान के सामने नहीं ठहर सकता. तब आदमी समझता है कि उसके सारे दुखों की जड़ यही ख़ुदी या अहंकार था, यह ऊपर का शरीर दुखों की जड़ नहीं है. इसी हालत को 'दिव्य दर्शन' कहते हैं. तब आदमी देखता है कि सब जीव-आत्माओं के अन्दर एक ही आत्मा है. वही परम-आत्मा यानी रूहेकुल है, वही मैं हूँ, वही सब हैं. इसे 'अभेद भाव' कहते हैं. इस हालत को पहुँचने

دھیرج—کہا گیا ھے ۔ اِنھیں کو ویدانت میں 'اُنتی کے چھ راستے' کہا گیا ھے ۔ ویدانت میں اِن کے نام شم' دم' اُپرتی' تتیکشا' شردھا اور سمادھان ھیں. بات وھی ھے' کیول شبد الگ الگ ھیں ۔ یہ چھ یا سات نیکیاں اُن برائیوں کی دشمن ھیں جنھیں ویدانت میں 'شڈرپو' یعنی 'چھ دشمن' کہا گیا ھے ۔ یہ چھ ھیں—کام' کرودھ' لوبھ' موہ' مد اور متسر (حسد) ۔ اِنجیل میں اِنھیں کو 'سات مہلک گناہ' کہکر بیان کیا گیا ھے ۔ بات وھی ھے ۔ اِس کے ساتھ ساتھ اس تیسری صورت میں آدمی میں نجات یعنی مکتی کی زبردست اِچھا ھوتی ھے ۔ یہ اِچھا کیول اپنے ھی لئے نہیں ھوتی سب کے لئے ھوتی ھے ۔ آدمی کی آتما چاھتی ھے کہ دنیا کی سب آتماؤں دکھ اور موت کے ڈر سے چھوٹ جاویں ۔ یہ ڈر ھی سب دکھوں کی جڑ ھے ۔ اِس جگیاسا کی حالت میں آدمی اپنے اندر ایک بےاطمینانی پاتا ھے' وہ سمجھتا ھے کہ وہ کسی غیر یعنی اپنے سے باھر کی چیز کے سہارے جی رھا ھے ۔ اُسے اپنے امر یعنی غیر فنی ھونے میں شک ھوتا ھے ۔ جب آدمی کے اندر یہ حالت ھوتی ھے یعنی اِس طرح کا 'ساتوک ویراگیہ' زور کرتا ھے تب دھیرے دھیرے آدمی کی اندر کی آنکھیں کھلتی ھیں ۔ اُسے آتم بودھ ھوتا ھے' سچی ودیا' پرگیان' یعنی معرفت اُس میں جاگتی ھے ۔ وہ دیکھتا ھے کہ ایک ھی آتما' ایک ھی روح کل سب جگہ اور سب کے اندر رمی ھوئی ھے ۔ وھی ھے' اور سب دھوکا ھے ۔ غیریت کا مٹ جانا ھی سچے گیان کا حاصل ھونا ھے ۔ یہی علم روحانی ھے ۔ تب آدمی اُس شدھ چیتنا کی دنیا کے وجود کو محسوس کرتا ھے جس کے اندر یہ ساری جڑ یعنی مادی دنیا سمائی ھوئی ھے ۔ اُسے اپنے امر ھونے کا وشواس ھوجاتا ھے ۔ وہ آتما کو آتم نربھر یعنی غنی پاتا ھے' سب کے اندر ایک ھی آتما دیکھنے لگتا ھے ۔ اِس مقام پر پہونچ کر اودیا یعنی جہالت کا ناش ھوجاتا ھے ۔ تب آدمی اِس دھوکے سے اوپر اُٹھ جاتا ھے کہ میں کیول ایک مٹی کا لوندا یا ہاڑ' مانس' خون کا یہ ناشمان شریر ھوں ۔ خودی یا اھنکار جاتا رھتا ھے ۔ یہ مقام بھی ایک طرح کی آتم ہتیا یعنی خودکشی کا مقام ھے ۔ لیکن جو آپا یا جو خودی اِس جگہ پر پہونچکر مرتی ھے وہ اپنی چھوٹی چھوٹی خودی ھے' وہ بھید بھاؤ یا اھنکار ھے جو ودیا یعنی سچے گیان کے سامنے نہیں ٹھہر سکتا. تب آدمی سمجھتا ھے کہ اُس کے سارے دکھوں کی جڑ یہی خودی یا اھنکار تھا' یہ اوپر کا شریر دکھوں کی جڑ نہیں ھے ۔ اِسی حالت کو 'دویہ درشن' کہتے ھیں ۔ تب آدمی دیکھتا ھے کہ سب جیوآتماؤں کے اندر ایک ھی آتما ھے ۔ وہ پرم آتما یعنی روح کل ھے' وھی میں ھوں' وھی سب ھیں ۔ اِسے 'ابھید بھاؤ' کہتے ھیں. اِس حالت کو پہونچنے

का नाम ही मोक्ष है. यहां पहुँचकर हर तरह का डर और दुख हमेशा के लिये जाता रहता है. क्लेश मिट जाता है. इसीलिये इसे 'निर्वाण' भी कहते हैं. मैं मैं हूँ और तुम तुम हो, मैं तुम से अलग हूँ, मेरा हित, मेरी इच्छाएं, मेरा जीवन, मेरी भलाई तुम्हारे और और सब के हितों, इच्छाओं, जीवन और भलाई से अलग है. यह सब ग़लत फ़हमियां तब मिट जाती हैं. आत्मा एक नये तरह के आनन्द से भर जाती है. जिस में उसे सब दूसरों के साथ एकता, कैवल्य और वहदत महसूस होती है. सब एक हैं. सब मैं हूँ, सब मुझ से हैं. मैं ही विश्व हूँ. सब मुझ में हैं और मैं सब में हूँ, कोई ग़ैर है ही नहीं. अहमेवसर्वः.

इंगलैण्ड के मशहूर कवि शैले ने कहा है :—

"बादलों को, इन्द्र धनुष को और फूलों को मैं ही अलौकिक रंग देता हूँ,

"चाँद का गोला और चमकते हुए तारे, अनन्त आकाश के अन्दर मेरी ही शक्ति से चमक रहे हैं,

"मैंने ही उन्हें यह सुन्दर लिबास पहनाया है,

"ज़मीन पर जितने दिये जल रहे हैं और आसमान पर जितनी रोशनियां चमक रही हैं,

"सब एक ही शक्ति के अंग हैं और वह शक्ति मेरी शक्ति है,

"मैं वह आंख हूँ जिसके ज़रिये से विश्व अपने को देखता है और अपने ईश्वरीय होने को पहचानता है.

"सारे राग रागनियां, सारे बाजे, सारी कविता, सब पेशीनगोइयाँ, सब दवाएं, मेरी ही हैं.

"कला और प्रकृति की सारी रोशनी मैं ही हूँ.

"सब विजय और सारी तारीफ़ का हक़दार

"मेरा ही गीत है."

योगवसिष्ठ में लिखा है :—

"यह सब समुद्र और पहाड़ और यह सब ब्रह्मांड (यानी आसमान के गोले), इस तरतीब में सजे हुए, यह सब केवल मेरे अन्तःकरण यानी मेरी ज़मीर के टुकड़े हैं जो बाहर दिखाई दे रहे हैं. यह सब मेरे बेअन्त वजूद के अन्दर हैं."

ईरानी सूफ़ी कहता है :—

"वजूद के इस समन्दर में एक ही मोती है और वह मोती है ख़ुद-शनासी यानी अपने को पहचानना. हम सब अपने ही चारों तरफ़ हवा के बवंडर या पानी के भंवर की तरह चक्कर खाते रहते हैं."

کا نام ہی موکش ہے۔ یہاں پہونچکر ہر طرح کا ڈر اور دکھ ہمیشہ کے لئے جاتا رہتا ہے۔ کلیش مٹ جاتا ہے۔ اِس لئے اِسے 'نروان' بھی کہتے ہیں۔ میں میں ہوں اور تم تم ہو' میں تم سے الگ ہوں' میرا ہت' میری اِچھائیں' میرا جیون' میری بھلائی تمہارے اور اور سب کے ہتوں' اِچھاؤں' جیون اور بھلائی سے الگ ہے۔ یہ سب غلط فہمیاں تب مٹ جاتی ہیں۔ آتما ایک نئی طرح کے آنند سے بھر جاتی ہے۔ جس میں اُسے سب دوسروں کے ساتھ ایکتا' کیولیہ اور وحدت محسوس ہوتی ہے۔ سب ایک ہیں۔ سب میں ہوں' سب مجھ سے ہیں۔ میں ہی وشو ہوں۔ سب مجھ میں ہیں اور میں سب میں ہوں' کوئی غیر ہے ہی نہیں۔ اہمیوسروہ۔

اِنگلینڈ کے مشہور کوی شیلے نے کہا ہے :—

"بادلوں کو' اندردھنش کو اور پھولوں کو میں ہی الوکک رنگ دیتا ہوں'

"چاند کا گولا اور چمکتے ہوئے تارے' اننت آکاش کے اندر میری ہی شکتی سے چمک رہے ہیں'

"میں نے ہی اُنہیں یہ سندر لباس پہنایا ہے۔

"زمین پر جتنے دیئے جل رہے ہیں اور آسمان پر جتنی روشنیاں چمک رہی ہیں'

"سب ایک ہی شکتی کے انگ ہیں اور وہ شکتی میری شکتی ہے'

"میں وہ آنکھ ہوں جس کے ذریعہ سے وشو اپنے کو دیکھتا ہے اور اپنے اِیشوریہ ہونے کو پہچانتا ہے۔

"سارے راگ راگنیاں' سارے باجے' ساری کویتا' سب پیشینگوئیاں' سب دوائیں' میری ہی ہیں۔

"کلا اور پرکرتی کی ساری روشنی میں ہی ہوں۔

"سب وجئے اور ساری تعریف کا حقدار

"میرا ہی گیت ہے."

یوگ واسشٹھ میں لکھا ہے :—

"یہ سب سمندر اور پہاڑ اور یہ سب برہمانڈ (یعنی آسمان کے گولے)' اِس ترتیب میں سجے ہوئے ہیں' یہ سب کیول میرے انتہکرن یعنی میری ضمیر کے ٹکڑے ہیں جو باہر دکھائی دے رہے ہیں۔ یہ سب میرے بےانت وجود کے اندر ہیں."

اِیرانی صوفی کہتا ہے :—

"وجود کے اِس سمندر میں ایک ہی موتی ہے اور وہ موتی ہے خودشناسی یعنی اپنے کو پہچاننا۔ ہم سب اپنے ہی چاروں طرف ہوا کے بونڈر یا پانی کے بھنور کی طرح چکر کھاتے رہتے ہیں."

हाल के एक हिन्दुस्तानी कवि ने कहा है:—
"तुही है मतलूबे जुमला तालिब,
"तुही है मक़सूदे जुमला आलम,
"तुम्ही से नग़मा है बुलबुलों में,
"तुम्ही से ख़ुशबू गुलाब में है."

व्यक्तिवाद (इनफ़रादियत) और समाजवाद (सोशलइज़्म) के रूहानी पहलू.

यह अभेद बुद्धि यानी यगानगत और वहदत का ख़्याल दुनिया के लिये कितनी बड़ी बरकत हो सकता है इसका अन्दाज़ा हर चलता फिरता आदमी इस बात से लगा सकता है कि इसके ठीक ख़िलाफ़ जो भेद भाव यानी दुई और ग़ैरियत का ख़्याल, अपने और पराए का ख़याल, इस समय दुनिया में बढ़ता जा रहा है उसके नतीजे इन्सानी समाज के लिये कितने डरावने और कितने भयंकर दिखाई दे रहे हैं:—अलग अलग नसलें, अलग अलग राष्ट्र, अलग अलग जमाअतें, अलग अलग पार्टियां, अलग अलग धर्म और सम्प्रदायें, काले और गोरे अलग अलग, यहां तक कि मर्द और औरत अलग अलग, और इससे भी बढ़कर जवान और बूढ़े अलग अलग, हालांकि खुली आँखों से दिखाई देता है कि वही आदमी जो आज जवान है कल बूढ़ा हो जाता है. इन भेद भावों से जो नतीजे पैदा होते हैं वह व्यापारी लड़ाइयों, तरह तरह के हथियारों की लड़ाइयों, महामारियों, वबाओं, समाजी उथल पुथल, बेकारी, बेरोज़गारी, अकाल और करोड़ों इन्सानों को चौबीस घन्टे में एक बार भी पेट भर खाना न मिल सकने की सूरतों में हमें दिखाई दे रहे हैं. इतिहास के लगभग हर युग में और हर ज़माने में दुनिया के लोग इन मुसीबतों में मुबतिला रहे हैं, कभी कुछ कम और कभी कुछ ज़्यादा. बीसवीं सदी के शुरू से आदमी की यह सब मुसीबतें और भी अधिक बढ़ी हुई मालूम हो रही हैं. इसका कारण यह भी है कि आने जाने के साधनों के अधिक बढ़ जाने और आदमी के दिमाग़ के ज़्यादा तेज़ हो जाने के कारण आदमी की ख़ुदी और उसका अहंकार और भी बढ़ गए हैं. आज चारों तरफ़ व्यक्तिवाद यानी इनफ़रादियत का बोल बाला दिखाई देता है.

यह भी क़ुदरत का एक अजीब खेल है. इससे मालूम होता है कि दुई या ग़ैरियत आदमी के अन्दर कितनी घुसी हुई है. चाहिये यह था कि आने जाने के साधनों के बढ़ने के साथ साथ दुनिया की क़ौमें एक दूसरे के और निकट

حال کے یک ہندستانی کوی نے کہا ہے :—
"تو ہی ہے مطلوب جملہ طالب'
"تو ہی ہے مقصود جملہ عالم'
"تجھی سے نغمہ ہے بلبلوں میں'
"تجھی سے خوشبو گلاب میں ہے ."

ویکتی واد (اِنفرادیت) اور سماج واد (سوشلزم) کے روحانی پہلو

یہ ابھید بدھی یعنی یگانگت اور وحدت کا خیال دنیا کے لئے کتنی بڑی برکت ہوسکتا ہے اِس کا اندازہ ہر چلتا پھرتا آدمی اِس بات سے لگا سکتا ہے کہ اِس کے ٹھیک خلاف جو بھید بھاؤ یعنی دوئی اور غیریت کا خیال' اپنے اور پرائے کا خیال' اِس سمے دنیا میں بڑھتا جا رہا اُس کے نتیجے اِنسانی سماج کے لئے کتنے ڈراونے اور کتنے بھینکر دکھائی دے رہے ہیں:—الگ الگ نسلیں' الگ الگ راشٹر' الگ الگ جماعتیں' الگ الگ پارٹیاں' الگ الگ دھرم اور سمپردائیں' کالے اور گورے الگ الگ' یہاں تک کہ مرد اور عورت الگ الگ' اور اِس سے بھی بڑھکر جوان اور بوڑھے الگ الگ' حالانکہ کھلی آنکھوں سے دکھائی دیتا ہے کہ وہی آدمی جو آج جوان ہے کل بوڑھا ہوجاتا ہے . اِن بھید بھاؤں سے جو نتیجے پیدا ہوتے ہیں وہ ویاپاری لڑائیوں' طرح طرح کے ہتھیاروں کی لڑائیوں' مہاماریوں' وباؤں' سماجی اُتھل پتھل' بیکاری' بیروزگاری اکال اور کروڑوں اِنسانوں کو چوبیس گھنٹے میں ایکبار بھی پیٹ بھر کھانا نہ مل سکنے کی صورتوں میں ہمیں دکھائی دے رہے ہیں۔ اِتہاس کے لگ بھگ ہر یگ میں اور ہر زمانے میں دنیا کے لوگ اِن مصیبتوں میں مبتلا رہے ہیں' کبھی کچھ کم اور کبھی کچھ زیادہ . بیسویں صدی کے شروع سے آدمی کی یہ سب مصیبتیں اور بھی ادھک بڑھی ہوئی معلوم ہو رہی ہیں۔ اِس کا کارن یہ بھی ہے کہ آنے جانے کے سادھنوں کے ادھک بڑھ جانے اور آدمی کے دماغ کے زیادہ تیز ہوجانے کے کارن آدمی کی خودی اور اُس کا اہنکار اور بھی بڑھ گئے ہیں . آج چاروں طرف ویکتی واد یعنی انفرادیت کا بول بالا دکھائی دیتا ہے .

یہ بھی قدرت کا ایک عجیب کھیل ہے . اِس سے معلوم ہوتا ہے کہ دوئی یا غیریت آدمی کے اندر کتنی گھسی ہوئی ہے . چاہئے یہ تھا کہ آنے جانے کے سادھنوں کے بڑھنے کے ساتھ ساتھ دنیا کی قومیں ایک دوسرے کے اور نکٹ

मतलूबे जुमला तालिब = सब खोजियों के खोज की चीज़; मक़सूदे जुमला आलम = सारी दुनिया का लक्ष्य; नग़मा = राग.

مطلوب جملہ طالب = سب کھوجیوں کے کھوج کی چیز؛ مقصود جملہ عالم = ساری دنیا کا لکشیہ؛ نغمہ = راگ .

आतीं, एक प्रेम-डोर में बंध सकतीं. उनमें एक दूसरे से एकता और वहदत का ख़याल बढ़ता. यही 'कम्युनिज़्म' का मतलब है. 'कामनवेल्थ' का कोई अच्छा अर्थ हो सकता है तो वह भी यही है. सच्चा और अच्छा 'समाज वाद' भी यही है. लेकिन इसके ख़िलाफ़ हुआ यह कि व्यक्ति वाद और अलग अलग राष्ट्र वाद और अधिक बढ़ा, जिस से एक दूसरे में अविश्वास, डर और नफ़रत और अधिक भयंकर जंगों की सम्भावना भी बढ़ी.

साइन्स आदमी को रूहेकुल की एक बहुत बड़ी देन है. साइन्स की इस अद्भुत और अनोखी उन्नति से और नई नई ईजादों से होना यह चाहिये था कि सब आदमियों की ज़िन्दगी ज़ियादा ख़ुशहाल, ज़ियादा माला माल और ज़ियादा भरपूर दिखाई देती. इसके बजाय हुआ यह कि साइंस और उसकी ईजादें शैतानियत की ग़ुलाम बनकर साम्राज्यवाद, युद्धवाद और धन लोलुपता के नारकीय मतलबोंको पूरा करने के लिए औज़ारों का काम दे रही हैं. अंग्रेज़ी की एक कहावत है कि 'आदमी तजवीज़ करता है और ईश्वर फ़ैसला करता है.' आज हो यह रहा है कि ईश्वर तजवीज़ करता है और शैतान फ़ैसला करता है ! यही कारण है कि फ़रिश्तों का उस्ताद (शैतान) सारी बुराइयों की जड़ हो जाता है. देवता और दैत्य एक दूसरे के सौतेले भाई हैं. मालूम होता है कि दुनिया के इस नाटक को, इस लीला को, पूरा करने के लिए स्वार्थ और परमार्थ, ख़ुदी और ख़ुदा, फ़रिश्ते और शैतान, देवता और राक्षस दोनों की एक बराबर ज़रूरत होती है.

दूसरों के दुखों को अपना दुख समझना, उसके साथ हमदर्दी, सहानुभूति, अनुकंपा या दया महसूस करना, उनके साथ अपनापन अनुभव करना, किसी को ग़ैर न समझना, यह समझना कि मेरा जीवन या मेरा नफ़ा नुक़सान किसी दूसरे के जीवन या किसी दूसरे के नफ़े नुक़सान से अलग नहीं है, हम सब एक दूसरे में बँधे हुए हैं, हरेक की भलाई में सबकी भलाई है, हरेक की बुराई में सबकी बुराई, यह बात आदमी के अंदर पहले एक क़ुदरती ढग से उसके दिल से पैदा होती है और फिर धीरे धीरे वह इसे जानने लगता है और उसके सब काम इसी के रंग में रंग जाते हैं. यही है सबके अंदर एक आत्मा यानी एक विश्व आत्मा को अनुभव करना. इसी विश्वात्मा के चारों तरफ़ सारा जीवन, सारा जगत, एक एक एटम, एक एक चाँद और तारा, हमारे फेफड़ों के अंदर का सांस, हमारे रगों के अंदर का ख़ून और क़ुदरत के सारे ज़हूर साफ़ घूमते हुए, चक्कर लगाते हुए दिखाई देते हैं. दुनिया की सारी दुई, सारी ग़ैरियत, सारे विरोध और मुख़ालफ़त यहाँ आकर मिट जाते हैं. सब एक हो जाते हैं, सब अपने हो जाते हैं, इसी का नाम सात्विक वैराग्य है, यानी दुनिया के ज़ुल्मों,

آتیں، ایک پریم ڈور میں بندھ سکتیں ۔ اُن میں ایک دوسرے سے ایکتا اور وحدت کا خیال بڑھتا ۔ یہی 'کمیونزم' کا مطلب ہے ۔ 'کامنویلتھ' کا کوئی اچھا ارتھ ہو سکتا ہے تو وہ بھی یہی ہے ۔ سچا اور اچھا 'سماج واد' بھی یہی ہے۔ لیکن اِس کے خلاف ہوا یہ کہ ویکتی واد اور الگ الگ راشٹر واد اور ادھک بڑھا، جس سے ایک دوسرے میں اوشواس، ڈر اور نفرت اور ادھک بھینکر جنگوں کی سمبھاونا بھی بڑھی ۔

سائنس آدمی کو روح کل کی ایک بہت بڑی دین ہے ۔ سائنس کی اِس ادبھت اور انوکھی اُنتی سے اور نئی نئی ایجادوں سے ہونا یہ چاہئے تھا کہ سب آدمیوں کی زندگی زیادہ خوشحال، زیادہ مالا مال اور زیادہ بھرپور دکھائی دیتی ۔ اِس کے بجائے ہوا یہ کہ سائنس اور اُس کی ایجادیں شیطانیت کی غلام بن کر سامراجیہ واد، یدھ واد اور دھن لولپتا کے نارکیہ مطلبوں کو پورا کرنے کے لئے اوزاروں کا کام دے رہی ہیں ۔ انگریزی کی ایک کہاوت ہے کہ 'آدمی تجویز کرتا ہے اور ایشور فیصلہ کرتا ہے.' آج ہو یہ رہا ہے کہ ایشور تجویز کرتا ہے اور شیطان فیصلہ کرتا ہے ! یہی کارن ہے کہ فرشتوں کا اُستاد (شیطان) ساری برائیوں کی جڑ ہو جاتا ہے ۔ دیوتا اور دیتیہ ایک دوسرے کے سوتیلے بھائی ہیں ۔ معلوم ہوتا ہے کہ دنیا کے اِس ناٹک کو، اِس لیلا کو پورا کرنے کے لئے سوارتھ اور پرمارتھ، خودی اور خدا، فرشتے اور شیطان، دیوتا اور راکشش دونوں کی ایک برابر ضرورت ہوتی ہے ۔

دوسروں کے دکھوں کو اپنا دکھ سمجھنا، اُن کے ساتھ ہمدردی، سہانوبھوتی، انوکمپا یا دیا محسوس کرنا، اُن کے ساتھ اپناپن انوبھو کرنا، کسی کو غیر نہ سمجھنا، یہ سمجھنا کہ میرا جیون یا میرا نفع نقصان کسی دوسرے کے جیون یا کسی دوسرے کے نفع نقصان سے الگ نہیں ہے، ہم سب ایک دوسرے میں بندھے ہوئے ہیں، ہر ایک کی بھلائی میں سب کی بھلائی ہے، ہر ایک کی برائی میں سب کی برائی ہے، یہ بات آدمی کے اندر پہلے ایک قدرتی ڈھنگ سے اُس کے دل سے پیدا ہوتی ہے اور پھر دھیرے دھیرے وہ اِسے جاننے لگتا ہے اور اُس کے سب کام اِسی کے رنگ میں رنگ جاتے ہیں۔ یہی ہے سب کے اندر ایک آتما یعنی ایک وشوآتما کو انوبھو کرنا ۔ اِسی وشواتما کے چاروں طرف سارا جیون، سارا جگت، ایک ایک ایٹم، ایک ایک چاند اور تارا، ہمارے پھیپھڑوں کے اندر کی سانس، ہمارے رگوں کے اندر کا خون اور قدرت کے سارے ظہور صاف گھومتے ہوئے، چکر لگاتے ہوئے دکھائی دیتے ہیں ۔ دنیا کی ساری دوئی، ساری غیریت، سارے وِرودھ اور مخالفت یہاں آکر مٹ جاتے ہیں ۔ سب ایک ہو جاتے ہیں، سب اپنے ہو جاتے ہیں، اِسی کا نام ساتوک ویراگیہ ہے، یعنی دنیا کے ظلموں

अन्यायों, ऊँच नीच और दुखों से दिल का फिरना, और अपने अंदर यह विश्वास पैदा होना कि मैं इस दुनिया को ठीक करने के लिए ही पैदा हुआ हूँ. इस तरह के विचार और विश्वास के सामने दुनिया का कोई अन्याय नहीं ठहर सकता. इसी का नाम आत्म-प्रकाश या आत्म-बोध यानी रूह का अपने को पहचानना है. एक में पैदा होकर यह रोशनी सबको रोशन करती रहती है. यही दुनिया की सब धार्मिक किताबों का सार है.

कहा जा सकता है कि आदमी के दिल और दिमाग में इतने बड़े परिवर्तन की ज़रूरत क्या है, जीवन के सवालों को हल करने के लिए इसकी ज़रूरत क्या है ? बात यह है कि कोई बच्चा जब तक कम से कम थोड़ी देर के लिए अपने खिलौनों से हटकर किताब या तख्ती की तरफ़ नहीं मुड़ेगा तब तक वह अ, आ, इ, ई नहीं सीख सकता. जब तक हम और सब चीज़ों की तरफ़ से अपनी निगाह को हटा कर सूरज की तरफ़ रुख नहीं करेंगे सूरज भी हमें दिखाई नहीं दे सकता.इस दुनिया के धन दौलत को चिपटे रह कर हम ईश्वर का दीदार हासिल नहीं कर सकते. जब तक हमारा दिल और हमारी आँखें इस असार संसार पर लगी हुई हैं, तब तक हम अपने दिलों के अंदर बैठे हुए उस अनंत अस्तित्व, उस वजूदे कुल को कैसे देख सकते हैं ? हमारे दिल अगर इस दुनिया की चीज़ों की तरफ़ लगे हुए हैं तो हमें सच मुच आत्मा की दुनिया की चीज़ें नहीं दिखाई दे सकतीं. जब तक हम अपनी पूरी शक्ति से, अपने पूरे दिल और दिमाग़ से अनंत की खोज नहीं करेंगे हम अनंत को नहीं पा सकते. परमआत्मा को अपने अंदर बैठाने के लिए हमें अपनी छोटी आत्मा, अपनी खुदी को बाहर निकालना होगा. हज़रत ईसा ने कहा है.—"सत्य यानी हक़ को देखने के लिए तुम्हें उसी तरह की ज़िन्दगी बसर करनी होगी. अगर तुम कामिल होना चाहते हो और अनंत जीवन प्राप्त करना चाहते हो तो तुम्हारे पास जो कुछ हो सब दे डालो, जो कुछ है वह ग़रीबों और नादारों में तक़सीम कर दो और मेरे पीछे चले आओ."

बुद्ध के दिल में जब तलाशे हक़ का यह जनून जागा, यह ईश्वरी उन्माद पैदा हुआ तो वो रात के अँधियारे में अपनी बीवी, अपने बच्चे और शाही महल को छोड़कर अपने पिता की राजधानी कपिलवस्तु के फाटक से बाहर निकल गए और निकलते समय मुड़कर पीछे की तरफ़ देखकर अपना दाहिना हाथ उठाकर उन्हों ने गंभीरता के साथ प्रतिज्ञा की—"जब तक मैं अपने जैसे दूसरे दुखियों की मदद के लिए ज़िंदगी और मौत के रहस्य को नहीं जान लूंगा और उस पर क़ाबू हासिल नहीं कर लूंगा तब तक मैं इस फाटक के अंदर लौट कर नहीं आऊँगा." बुद्ध ने उस रहस्य को पा लिया और जो लोग उसे जानने की इच्छा रखते थे उन सबको सिखाया. वह रहस्य (राज़) यही अमर

انیایوں، اُونچ نیچ اور دکھوں سے دل کا پھرنا، اور اپنے اندر یہ وشواس پیدا ہونا کہ میں اِس دنیا کو ٹھیک کرنے کے لئے ہی پیدا ہوا ہوں . اِس طرح کے وچار اور وشواس کے سامنے دنیا کا کوئی انیائے نہیں ٹھہر سکتا . اِسی کا نام آتم پرکاش یا آتم بودھ یعنی روح کا اپنے کو پہچاننا ہے . ایک میں پیدا ہو کر یہ روشنی سب کو روشن کرتی رہتی ہے . یہی دنیا کی سب دھارمک کتابوں کا سار ہے .

کہا جا سکتا ہے کہ آدمی کے دل اور دماغ میں اِتنے بڑے پریورتن کی کیا ضرورت ہے، جیون کے سوالوں کو حل کرنے کے لئے اِس کی ضرورت کیا ہے ؟ بات یہ ہے کہ کوئی بچہ جب تک کم سے کم تھوڑی دیر کے لئے اپنے کھلونوں سے ہٹ کر کتاب یا تختی کی طرف نہیں مڑیگا تب تک وہ اَ، آ، اِ، ای نہیں سیکھ سکتا . جب تک ہم اور سب چیزوں کی طرف سے اپنی نگاہ کو ہٹا کر سورج کی طرف رخ نہیں کرینگے سورج بھی ہمیں دکھائی نہیں دے سکتا . اِس دنیا کے دھن دولت کو چپٹے رہ کر ہم ایشور کا دیدار حاصل نہیں کر سکتے. جب تک ہمارا دل اور ہماری آنکھیں اِس اسار سنسار پر لگی ہوئی ہیں تب تک ہم اپنے دلوں کے اندر بیٹھے ہوئے اُس اننت استتو، اُس وجود کل کو کیسے دیکھ سکتے ہیں ؟ ہمارے دل اگر اِس دنیا کی چیزوں کی طرف لگے ہوئے ہیں تو ہمیں سچ مچ آتما کی دنیا کی چیزیں نہیں دکھائی دے سکتیں . جب تک ہم اپنی پوری شکتی سے، اپنے پورے دل اور دماغ سے اننت کی کھوج نہیں کرینگے ہم اننت کو نہیں پا سکتے . پرماتما کو اپنے اندر بیٹھانے کے لئے ہمیں اپنی چھوٹی آتما، اپنی خودی کو باہر نکالنا ہوگا . حضرت عیسیٰ نے کہا ہے :—"ستیہ یعنی حق کو دیکھنے کے لئے تمہیں اُسی طرح کی زندگی بسر کرنی ہوگی . اگر تم کامل ہونا چاہتے ہو اور اننت جیون پراپت کرنا چاہتے ہو تو تمہارے پاس جو کچھ ہے سب دے ڈالو، جو کچھ ہے وہ غریبوں اور ناداروں میں تقسیم کر دو اور میرے پیچھے چلے آؤ ."

بدھ کے دل میں جب تلاش حق کا یہ جنون جاگا، یہ ایشوریہ اُنماد پیدا ہوا تو وہ رات کے اندھیارے میں اپنی بیوی، اپنے بچے اور شاہی محل کو چھوڑ کر اپنے پتا کی راجدھانی کپلوستو کے پھاٹک سے باہر نکل گئے اور نکلتے سمے مڑ کر پیچھے کی طرف دیکھ کر اپنا داہنا ہاتھ اُٹھا کر اُنہوں نے گمبھیرتا کے ساتھ پرتگیا کی:—"جب میں اپنے جیسے دوسرے دکھیوں کی مدد کے لئے زندگی اور موت کے رہسیہ کو نہیں جان لونگا اور اُس پر قابو حاصل نہیں کر لونگا تب تک میں اِس پھاٹک کے اندر لوٹ کر نہیں آؤنگا ." بدھ نے اُس رہسیہ کو پا لیا اور جو لوگ اُسے جاننے کی اچھا رکھتے تھے اُن سب کو سکھایا . وہ رہسیہ (راز) یہی امر

सच्चाई है कि सारे दुखों की जड़ हमारे अपने अंदर है. वह जड़ हमारी खुदी है, हमारा अहंकार है. वह जड़ यह वासना या ग़लत इच्छा है कि मैं अपना अलग व्यक्तित्व, अपना अलग वजूद क़ायम रक्खूं. दुख की जड़ यह ग़लत विश्वास है कि मेरा यह हाड़ मांस का शरीर ही मेरा आपा है. इसी का नाम अहंता या ममता है. यह एक ग़ैर फ़ानी सच्चाई है कि हमारे सब दुखों का कारण हम खुद हैं, कोई दूसरा नहीं, कोई दूसरा हमें मजबूर नहीं कर सकता, कोई दूसरा है ही नहीं. कोई अणु, कोई ऐटम, हमारी कोई वृत्ति या विचार, हमारे इस देह और इस चित्त के अंदर की कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसे हम अपना समझते हों और जो तरह तरह के, जगह जगह के और युग युग के अनगिनत शरीरों और अनगिनत दिमाग़ों का जुज़ या अंग न रह चुकी हो, और जो आयंदा भी वैसे ही अनगिनत रूपें, अनगिनत शरीरों और अनगिनत दिमाग़ों, रूहों, स्थानों और ज़मानों में न रहे. इसलिए दुनिया के सब नाम, रूप, सब विचार, सब भाव और सब तजरबे, सब सुख दुख, सब दिमाग़ और सब शरीर एक ही व्यापक आलमगीर आत्मा से संबंध रखते हैं, सब उसी एक का ज़हूर हैं, और उसी के अंदर यह सब इस तरह रहते और चलते फिरते हैं जैसे एक समंदर के अंदर तरह तरह के बुलबुले, झाग, भँवर और लहरें.

سچائی ھے کہ سارے دکھوں کی جڑ ھمارے اپنے اندر ھے ۔ یہ جڑ ھماری خودی ھے' ھمارا اہنکار ھے ۔ وہ جڑ یہ واسنا یا غلط اچھا ھے کہ میں اپنا الگ ویکتتو' اپنا الگ وجود قایم رکھوں ۔ دکھ کی جڑ یہ غلط وشواس ھے کہ میرا یہ ہاڑ مانس کا شریر ھی میرا آپا ھے' اِسی کا نام اہمتا یا ممتا ھے ۔ یہ ایک غیر فانی سچائی ھے کہ ھمارے سب دکھوں کا کارن ھم خود ھیں' کوئی دوسرا نہیں' کوئی دوسرا ھمیں مجبور نہیں کر سکتا' کوئی دوسرا ھی ھے کوئی نہیں۔ انو' کوئی ایٹم' ھماری کوئی ورتی یا وچار' ھمارے اِس دیہہ اور اِس چت کے اندر کوئی چیز ایسی نہیں ھے جسے ھم اپنا سمجھتے ھوں اور جو طرح طرح کے' جگہہ جگہہ کے اور یگ یگ کے انگنت شریروں اور انگنت دماغوں کا جز یا انگ نہ رہ چکی ھو' اور جو آیندہ بھی ویسے ھی انگنت روپوں انگنت شریروں اور انگنت دماغوں روحوں' استھانوں اور زمانوں میں نہ رھے ۔ اِس لئے دنیا کے سب نام' روپ' سب وچار سب بھاؤ اور سب تجربے سب سکھ دکھ' سب دماغ اور سب شریر ایک ھی ویاپک عالمگیر آتما سے سمبندھ رکھتے ھیں' سب اُسی ایک کا ظہور ھیں' اور اُسی کے اندر یہ سب اِس طرح رھتے اور چلتے پھرتے ھیں جیسے ایک سمندر کے اندر طرح طرح کے بلبلے' جھاگ' بھنور اور لہریں ۔

दो समंदरों का संगम और सचाई का प्रकाश

डाक्टर ताराचंद

दारा शिकोह को भारत के वेदांत और इसलाम के सूफ़ी मत दोनों से गहरा प्रेम था. सत्य की खोज का माद्दा उसे अपने पूर्वजों से विरासत में मिला था. सब धर्मों को जानने और समझने की इच्छा उसमें ठीक वैसी ही थी जैसी उसके परदादा सम्राट अकबर में. पर एक बहुत बड़ा फ़र्क़ यह था कि सम्राट अकबर अनपढ़ था और दारा शिकोह हिन्दू धार्मिक साहित्य और मुसलिम धार्मिक साहित्य दोनों का पूरा विद्वान था. सूफ़ी किताबों को उसने खूब पढ़ रक्खा था. बड़े बड़े मुलसमान संतों और सूफ़ियों की उसने जीवनियाँ लिखी थीं और पचास उपनिषदों का उसने संस्कृत से फ़ारसी में अनुवाद किया था. इस तरह सूफ़ी मत और वेदान्त की तुलना वह खूब कर सकता था. इस विषय पर उसने "मजमाउल बहरैन" नाम की एक किताब लिखी. मजमाउल बहरैन के मानी हैं 'दो समंदरों का संगम.' यह अमूल्य ग्रन्थ दोनों धर्मों की सचाई के बारे में दारा शिकोह की खोज का नतीजा है. वह इस नतीजे पर पहुँचा था कि हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों का सार एक ही है और दोनों बुनियादन एक हैं. अपने इस सिद्धान्त को साबित करने के लिए दारा शिकोह ने वेदांत के ग्रंथों और सूफ़ी मत की किताबों के उसूलों को इस पुस्तक में विस्तार के साथ बयान किया है. इस पुस्तक को पढ़कर कोई इंसाफ़-पसंद आदमी इस बात से इंकार नहीं कर सकता कि दारा शिकोह को अपनी बात साबित करने में पूरी कामयाबी मिली है.

अध्यात्म विद्या (इल्मे रूहानी) एक गहरे और अंधेरे समंदर की तरह है. उस समंदर की सतह पर तूफ़ानों, आँधियों, चांद की कशिश और इस ब्रह्मांड की दूसरी शक्तियों के असर से तरह तरह की शकलें बनती और पल पल पर बदलती और बिगड़ती रहती हैं. लेकिन उन अलग अलग शकलों के नीचे गहराई में ऊपर को झाग उगलने वाली लहरों से दूर, शांत जल धाराएँ एक दूसरे में मिलती और एक होती रहती हैं. अध्यात्म विद्या यानी रूहानी इल्म एक व्यापक और आलमगीर चीज़ है. इस विद्या के जानने वाले न किसी एक ज़माने के होते हैं और न किसी एक देश के. वह देश और काल से ऊपर सब देशों और सब ज़मानों के एक

دو سمندروں کا سنگم اور سچائی کا پرکاش

ڈاکٹر تارا چند

داراشکوہ کو بھارت کے ویدانت اور اِسلام کے صوفی مت دونوں سے گہرا پریم تھا۔ ستیہ کی کھوج کا مادہ اُسے اپنے پوروجوں سے وراثت میں ملا تھا ۔ سب دھرموں کو جاننے اور سمجھنے کی اِچھا اُس میں ٹھیک ویسی ہی تھی جیسی اُس کے پردادا سمراٹ اکبر میں۔ پر ایک بہت بڑا فرق یہ تھا کہ سمراٹ اکبر اَنپڑھ تھا اور داراشکوہ ہندو دھارمک ساہتیہ اور مسلم دھارمک ساہتیہ دونوں کا پورا ودوان تھا ۔ صوفی کتابوں کو اُس نے خوب پڑھ رکھا تھا ۔ بڑے بڑے مسلمان سنتوں اور صوفیوں کی اُس نے جیونیاں لکھی تھیں اور پچاس اُپنشدوں کا اُس نے سنسکرت سے فارسی میں انواد کیا تھا ۔ اِس طرح صوفی مت اور ویدانت کی تلنا وہ خوب کرسکتا تھا ۔ اِس وشئے پر اُس نے "مجمع البحرین" نام کی ایک کتاب لکھی ۔ مجمع البحرین کے معنی ہیں 'دو سمندروں کا سنگم' ۔ یہ اَمولیہ گرنتھ دونوں دھرموں کی سچائی کے بارے میں داراشکوہ کی کھوج کا نتیجہ ہے ۔ وہ اِس نتیجے پر پہونچا تھا کہ ہندو دھرم اور اِسلام دونوں کا سار ایک ہی ہے اور دونوں بنیاداً ایک ہیں ۔ اپنے اِس سدھانت کو ثابت کرنے کے لئے داراشکوہ نے ویدانت کے گرنتھوں اور صوفی مت کی کتابوں کے اُصولوں کو اِس پستک میں وستار کے ساتھ بیان کیا ہے ۔ اس پستک کو پڑھکر کوئی اِنصاف پسند آدمی اِس بات سے اِنکار نہیں کرسکتا کہ داراشکوہ کو اپنی بات ثابت کرنے میں پوری کامیابی ملی ہے ۔

ادھیاتم ودیا (علم روحانی) ایک گہرے اور اندھیرے سمندر کی طرح ہے۔ اُس سمندر کی سطح پر طوفانوں' آندھیوں' چاند کی کشش اور اِس برہمانڈ کی دوسری شکتیوں کے اثر سے طرح طرح کی شکلیں بنتی اور پل پل پر بدلتی اور بگڑتی رہتی ہیں ۔ لیکن اُن الگ الگ شکلوں کے نیچے گہرائی میں اُوپر کی جھاگ اُگلنے والی لہروں سے دور' شانت جل دھارائیں ایک دوسرے میں ملتی اور ایک ہوتی رہتی ہیں۔ ادھیاتم ودیا یعنی روحانی علم ایک ویاپک اور عالمگیر چیز ہے ۔ اِس ودیا کے جاننے والے نہ کسی ایک زمانے کے ہوتے ہیں اور نہ کسی ایک دیش کے. وہ دیش اور کال سے اُوپر سب دیشوں اور سب زمانوں کے ایک

बराबर होते हैं. इस तरह की महान आत्माएँ सब देशों और सब ज़मानों में पैदा होती रही हैं. जिन लोगों ने इस विद्या का अभ्यास किया है उन्हें अपने अंदर एक ऐसी हालत अनुभव होने लगती है जिसमें वह एक ऐसी दूसरी दुनिया में पहुँच जाते हैं जहाँ देश और काल का कोई अर्थ नहीं रह जाता और सब ऐसी अनिर्वचनीय यानी नाक़ाबिले बयान रोशनी, एक अलौकिक ज्योति, परम आनंद और गहरी शांति उन्हें अपने अन्दर अनुभव होने लगती है. पर जब आदमी उस अलौकिक तजरबे को इस दुनिया के शब्दों में बयान करने की कोशिश करता है तो उसे ख़ास तरह की परिभाषाएँ या इस्तलाहें काम में लानी पड़ती हैं, इस दुनिया की तरह ही सोचना पड़ता है और जिन लोगों से वह बात करता है उनकी बोली में उनकी समझ के अनुसार बोलना पड़ता है. उसे अधिकतर मिसालें दे देकर उपमा यानी तशबीह और इस्तआरों की यानी रूपक भाषा बोलनी पड़ती है. इस तरह के तजुरबों को केवल तर्क यानी मंतक़ के क़ायदों से नहीं समझा जा सकता. उसके लिए दूसरी तरह के सोचने की ज़रूरत पड़ती है. जो विचार इस तरह पैदा होते हैं वही बढ़कर फिर एक दर्शन शास्त्र या फ़लसफ़े का रूप ले लेते हैं.

इस तरह के रूहानी तजुरबों को तरह तरह की ललित कलाओं में भी ज़ाहिर किया जाता है, क्योंकि आदमी के सब तजरबे आख़िर एक दूसरे के साथ संबंध रखते हैं. गाना, बजाना, कविता, चित्रकला, मूर्ति कला और निर्माण कला यानी इल्मे तामीर इन सबके ज़रिये इन तजरबों को ज़ाहिर किया जाता है. इन कलाओं में सबसे बड़ी कला जीवन कला है. अध्यात्म विद्या का सबसे बड़ा असर आदमी के जीवन पर पड़ता है. अध्यात्म विद्या आदमी के सारे चरित्र यानी कैरेक्टर को रूप दे देती है और उसकी संकल्प शक्ति यानी क़ूवते इरादी को मज़बूत और माला माल कर देती है.

दूसरी तरफ़ इस तरह के जीवन के साथ कई तरह के ख़तरे भी चलते हैं. इस रास्ते पर चलने के लिए इतने कड़े नियमों का पालन करना पड़ता है कि सब आदमी उन्हें नहीं निबाह सकते. कुछ लोग अपने अंदर की कमज़ोरी के कारण आसान रास्ते निकाल लेते हैं. वे गाते बजाते हैं. नाचते हैं, शराबें और तरह तरह के नशे काम में लाते हैं. इससे उनके दिमाग़ों की ऐसी हालत हो जाती है कि उन्हें थोड़ी थोड़ी देर के लिए यह आभास (धोखा) होने लगता है कि वो इस दुनिया के दुखों से छूट गए. असलियत में उनकी इंद्रियों की शक्ति ढीली पड़ जाती है और वो समझते यह हैं कि वो शग़ल यानी योगाभ्यास के किसी ऊँचे मुक़ाम पर पहुँच गए. किसी देश या समाज का जब पतन होने लगता है तो बहुत से लोग जीवन की कठोर आज़माइशों से बचने

برابر ہوتے ہیں ۔ اِس طرح کی مہان آتمائیں سب دیشوں اور سب زمانوں میں پیدا ہوتی رہی ہیں ۔ جن لوگوں نے اِس ودیا کا ابھیاس کیا ہے اُنھیں اپنے اندر ایک ایسی حالت انوبھو ہونے لگتی ہے جس میں وہ ایک ایسی دوسری دنیا میں پہونچ جاتے ہیں جہاں دیش اور کال کا کوئی ارتھ نہیں رہ جاتا اور ایک ایسی انرورچنیہ یعنی ناقابل بیان روشنی' ایک الوکک جیوتی' پرم آنند اور گہری شانتی اُنھیں اپنے اندر انوبھو ہونے لگتی ہے۔ پر جب آدمی اُس الوکک تجربے کو اِس دنیا کے شبدوں میں بیان کرنے کی کوشش کرتا ہے تو اُسے خاص طرح کی پریبھاشائیں یا اِصطلاحیں کام میں لانی پڑتی ہیں' اِس دنیا کی طرح ہی سوچنا پڑتا ہے اور جن لوگوں سے وہ بات کرتا ہے اُن کی بولی میں اُن کی سمجھ کے انوسار بولنا پڑتا ہے ۔ اُسے ادھکتر مثالیں دے دیکر اُپما یعنی تشبیہ اور استعاروں کی یعنی روپک بھاشا بولنی پڑتی ہے ۔ اس طرح کے تجربوں کو کیول ترک یعنی منطق کے قاعدوں سے نہیں سمجھا جاسکتا ۔ اُس کے لئے دوسری طرح کے سوچنے کی ضرورت پڑتی ہے ۔ جو وچار اِس طرح پیدا ہوتے ہیں وہی بڑھکر پھر ایک درشن شاستر یا فلسفہ کا روپ لے لیتے ہیں ۔

اِس طرح کے روحانی تجربوں کو طرح طرح کی للت کلاؤں میں بھی ظاہر کیا جاتا ہے' کیونکہ آدمی کے سب تجربے آخر ایک دوسرے کے ساتھ سمبندھ رکھتے ہیں ۔ گانا' بجانا' کویتا' چترکلا' مورتی کلا اور نرمان کلا یعنی علم تعمیر' اِن سب کے ذریعے اُن تجربوں کو ظاہر کیا جاتا ہے۔ اِن کلاؤں میں سب سے بڑی کلا جیون کلا ہے۔ ادھیاتم ودیا کا سب سے بڑا اثر آدمی کے جیون پر پڑتا ہے ۔ ادھیاتم ودیا آدمی کے سارے چرتر یعنی کیریکٹر کو روپ دے دیتی ہے اور اس کی سنکلپ شکتی یعنی قوت اِرادی کو مضبوط اور مالا مال کردیتی ہے ۔

دوسری طرف اِس طرح کے جیون کے ساتھ کئی طرح کے خطرے بھی چلتے ہیں ۔ اِس راستے پر چلنے کے لئے اِتنے کڑے نیموں کو پالن کرنا پڑتا ہے کہ سب آدمی اُنھیں نہیں نباہ سکتے ۔ کچھ لوگ اپنے اندر کی کمزوری کے کارن آسان راستے نکال لیتے ہیں ۔ وہ گاتے بجاتے ہیں' ناچتے ہیں' شرابیں اور طرح طرح کے نشے کام میں لاتے ہیں ۔ اس سے اُن کے دماغوں کی ایسی حالت ہوجاتی ہے کہ اُنھیں تھوڑی تھوڑی دیر کے لئے یہ آبھاس (دھوکا) ہونے لگتا ہے کہ وہ اِس دنیا کے دکھوں سے چھوٹ گئے ۔ اصلیت میں اُن کی اِندریوں کی شکتی ڈھیلی پڑجاتی ہے اور وہ سمجھتے یہ ہیں کہ وہ شغل یعنی یوگا بھیاس کے کسی اُونچے مقام پر پہونچ گئے۔ کسی دیش یا سماج کا جب پتن ہونے لگتا ہے تو بہت سے لوگ جیون کی کٹھور آزمایشوں سے بچنے

के लिए तसव्वुफ़, वेदांत, शग़ल या योग का इस तरह का सहारा ढूँढ़ लेते हैं. वह सच्चा रूहानी जीवन नहीं, उसकी भद्दी नक़ल होती है.

दारा शिकोह का ज़माना इस देश में बड़ा नाज़ुक ज़माना था. सम्राट शाहजहाँ की शानो शौकत ख़तम हो रही थी. हिन्दुस्तानी समाज के अंदर की वो समस्याएँ और वो मुशकिलें जो अभी तक हल नहीं हो पाई थीं देश के जीवन पर अपना बुरा असर डाल रही थीं. अकबर ने मेल मिलाप का जो आंदोलन शुरू किया था उसका ज़ोर घट गया था. उस आंदोलन को फिर से ज़िंदा करने और ज़िंदा रखने के लिए ज़बरदस्त कोशिश की ज़रूरत थी. दारा शिकोह इस ज़रूरत को समझता था. उसने इस मुशकिल को हल करने की कोशिश की, लेकिन वह नेक विद्वान और पंडित था वह न समाज सुधारक था और न राज नीतिज्ञ. विद्वानों में कई तरह की कमी रह जाती है.

साइन्सी खोज और आलोचना के आजकल के तरीक़े भी उस समय तक एशिया में नहीं फैल पाए थे. योरप में ठीक उसी ज़माने में कैफ़लर, गेलीलियो और न्यूटन जैसे साइंसदानों और डेकार्टे, हौब्स और स्पाइनोज़ा जैसे फ़िलासोफ़रों की बदौलत एक बहुत बड़ा दिमाग़ी इन्क़लाब पैदा हो रहा था. दारा शिकोह अपने देश और अपने ज़माने के विचारों और ज़रूरतों में इतना डूबा हुआ था कि दर्शन शास्त्र के बुनियादी उसूलों को कसौटी पर कसने या आदमी के अंदर इस तरह के तजरबों को साइंसी ढंग से परखने की उसे न सूझ सकती थी. पच्छिम में बरट्रेंड रसल ने इसी तरह के रूहानी तजरबों का तर्क के उसूलों से चलकर अर्थ करने की कोशिश की. विलियम जेम्स ने अलग अलग धर्मों के तरह तरह के इस तरह के तजुरबों की खोज करके उनका मुक़ाबिला किया. दारा शिकोह इस तरह की छान बीन में न पड़ सकता था.

दारा शिकोह के सामने सवाल बिलकुल दूसरे ढंग का था. उसने महसूस कर लिया था कि आदमी और समाज दोनों के लिए इस बात की ज़रूरत है कि कोई ऐसी शक्ति हो जो दुनिया की मामूली ज़रूरतों और आए दिन की छोटी मोटी इच्छाओं और प्रवृत्तियों से आदमी को ऊपर उठा सके और ज़िन्दगी का कोई ज़ियादा टिकाऊ और ग़ैर फ़ानी मक़सद उसके सामने रख सकें. उसने यह देख लिया था कि आदमी जितना जितना अपनी इस छोटी ख़ुदी से ऊपर उठ सकता है उतना उतना ही दूसरों के साथ अपनेपन का भाव उसमें बढ़ता जाता है. उतना उतना ही आदमी और समाज दोनों में बल आता जाता है. दारा शिकोह ने समझ लिया था कि अगर हम अपनी इस छोटी और झूटी ख़ुदी को जीत लें तो समाज के अन्दर तरह तरह के विचार और रीत रिवाज आदमी के अन्दर की छिपी हुई अनन्त शक्तियों को जगाने

کے لئے تصوف، ویدانت، شغل یا یوگ کا اِس طرح کا سہارا ڈھونڈھ لیتے ہیں ۔ یہ سچا روحانی جیون نہیں، اُس کی بھدی نقل ہوتی ہے ۔

داراشکوہ کا زمانہ اِس دیش میں بڑا نازک زمانہ تھا ۔ سمراٹ شاہجہاں کی شان و شوکت ختم ہورہی تھی۔ ہندستانی سماج کے اندر کی وہ سمسیائیں اور وہ مشکلیں جو ابھی تک حل نہیں ہوپائی تھیں دیش کے جیون پر اپنا برا اثر ڈال رہی تھیں ۔ اکبر نے میل ملاپ کا جو آندولن شروع کیا تھا اُس کا زور گھٹ گیا تھا ۔ اُس آندولن کو پھر سے زندہ کرنے اور زندہ رکھنے کے لئے زبردست کوشش کی ضرورت تھی ۔ داراشکوہ اِس ضرورت کو سمجھتا تھا ۔ اُس نے اِس مشکل کو حل کرنے کی کوشش کی ۔ لیکن وہ نیک ودوان اور پنڈت تھا ۔ وہ نہ سماج سدھارک تھا اور نہ راجنیتگیہ ۔ ودوانوں میں کئی طرح کی کمی رہ جاتی ہے ۔

سائنسی کھوج اور آلوچنا کے آجکل کے طریقے بھی اُس سمے تک ایشیا میں نہیں پھیل پائے تھے ۔ یورپ میں ٹھیک اُسی زمانے میں کیفلر، گیلیلیو اور نیوٹن جیسے سائنسدانوں اور ڈیکارٹے، حوبس اور اسپائینوزا جیسے فلاسفروں کی بدولت ایک ایک بہت بڑا دماغی انقلاب پیدا ہو رہا تھا ۔ دارا شکوہ اپنے دیش اور اپنے زمانے کے وچاروں اور ضرورتوں میں اِتنا ڈوبا ہوا تھا کہ درشن شاستر کے بنیادی اُصولوں کو کسوٹی پر کسنے یا آدمی کے اندر اِس طرح کے تجربوں کو سائنسی ڈھنگ سے پرکھنے کی اُسے نہ سوجھ سکتی تھی ۔ پچھم میں برٹرینڈرسل نے اِسی طرح کے روحانی تجربوں کا ترک کے اُصولوں سے چلکر ارتھ کرنے کی کوشش کی ۔ ولیم جیمس نے الگ الگ دھرموں کے طرح طرح کے اِس طرح کے تجربوں کی کھوج کر کے اُن کا مقابلہ کیا ۔ دارا شکوہ اِس طرح کی چھان بین میں نہ پڑ سکتا تھا ۔

دارا شکوہ کے سامنے سوال بالکل دوسرے ڈھنگ کا تھا۔ اُس نے محسوس کر لیا تھا کہ آدمی اور سماج دونوں کے لئے اِس بات کی ضرورت ہے کہ کوئی ایسی شکتی ہو جو دنیا کی معمولی ضرورتوں اور آئے دن کی چھوٹی موٹی اِچھاؤں اور پرورتیوں سے آدمی کو اوپر اُٹھا سکے اور زندگی کا کوئی زیادہ ٹکاؤ اور غیر فانی مقصد اُس کے سامنے رکھ سکے۔ اُس نے یہ دیکھ لیا تھا کہ آدمی جتنا جتنا اپنی اِس چھوٹی خودی سے اوپر اُٹھ سکتا ہے اُتنا اُتنا ہی دوسروں کے ساتھ اپنے پن کا بھاؤ اُس میں بڑھتا جاتا ہے۔ اُتنا اُتنا ہی آدمی اور سماج دونوں میں بل آتا جاتا ہے ۔ دارا شکوہ نے سمجھ لیا تھا کہ اگر ہم اپنی اِس چھوٹی اورجھوٹی خودی کو جیت لیں تو سماج کے اندر طرح‌طرح کے وچار اور ریت رواج آدمی کے اندر کی چھپی ہوئی اننت شکتیوں کو جگانے

में बहुत बड़ी मदद देते हैं, रुकावट नहीं होते. यही सच्ची रूहानियत का रास्ता है.

दारा शिकोह जानता था कि हिन्दुस्तान के अन्दर मुसलमानों के जीवन को तसव्वुफ़ ने एक नई राह दिखा दी थी और एक नए अर्थों में उनके जीवन को माला माल कर दिया था. वो यह भी जानता था कि ठीक इसी तरह वेदांत ने हिन्दू समाज के अन्दर लोगों पर गहरा असर डाला था और अच्छे से अच्छे फूल खिलाए थे. मुसलमानों को इमाम ग़ज़ाली के फ़लसफ़े और मुईनउद्दीन चिश्ती के जीवन के बहुत बड़ी प्रेरणा मिली थी. हिन्दुओं को शंकर और रामानुज, कबीर और चैतन्य के उपदेशों से नई रोशनी और नया जीवन मिला है. अब सवाल केवल यह था कि क्या इन दोनों विशाल समंदरों को मिलाया जा सकता है ? अगर मिलाया जा सके तो मिली जुली हिन्दुस्तानी कलचर के लिए पक्की से पक्की रूहानी बुनियाद मिल सकती है और इस देश में एक सुन्दर मिले जुले समाज की रचना की जा सकती है.

दारा शिकोह ने इन सवालों का जवाब अपनी दोनों किताबों, "मजमउल बहरैन" और "रिसालए हक़नुमा" में दिया है. इन दोनों नामों के अलग अलग मानी हैं दोनों समंदरों का संगम" और "सचाई के प्रकाश पर निबंध."

'मजमाउल बहरैन' की दारा शिकोह ने एक भूमिका लिखी है. उसमें उसने लिखा है कि :—

"पहले मैंने सब असलियतों की असलियत जानना चाहा. मैंने सूफ़ियों के सच्चे मज़हब के रहस्यों (राज़ों) और बरिकियों को जानने की कोशिश की. इस अनमोल चीज़ को हासिल करने के बाद मैंने यह मालूम करने की कोशिश की कि हिन्दुस्तान के उन मवहिदों (एकेश्वर वादियों) खोजियों और उस्तादों का उसूल क्या था जिन्हों ने गहरी तपस्या करके, ध्यान लगाकर, मनन यानी ग़ौरो ख़ौज करके और गहरी समाधि में जाकर ईश्वर अल्लाह का दीदार हासिल किया था. हिन्दू आचार्यों और साधु संतों से मैं बार बार मिला और उनसे ख़ूब बात चीत की. मैंने देखा कि शब्दों के छोटे मोटे फ़रक़ को छोड़कर उनमें कोई बुनियादी फ़रक़ नहीं था. केवल कोई अपनी खोज और अपने ज्ञान को एक तरह के शब्दों में बयान करता था और कोई दूसरी तरह के शब्दों में. इसके बाद मैंने वेदांत के पंडितों और संत महात्माओं और इसलाम के सूफ़ियों दोनों के विचारों को एक जगह करके देखा. उनमें से उन सब बातों को जमा किया जो सचाई के खोजियों के लिए ज़रूरी और कारामद हैं. इस तरह यह किताब तैयार हो गई. यह किताब दोनों तरफ़ के हक़शनास लोगों यानी सचाई को जानने वालों के विचारों और उपदेशों का संग्रह है. इसलिए मैंने इसका नाम "मजमउल बहरैन" रक्खा है."

میں بہت بڑی مدد دیتے ہیں' رکاوٹ نہیں ہوتے ۔ یہی سچی روحانیت کا راستہ ہے ۔

دارا شکوہ جانتا تھا کہ ہندستان کے اندر مسلمانوں کے جیون کو تصوف نے ایک نئی راہ دکھا دی تھی اور ایک نئے ارتھوں میں اُن کے جیون کو مالا مال کر دیا تھا۔ وہ یہ بھی جانتا تھا کہ ٹھیک اِسی طرح ویدانت نے ہندو سماج کے اندر لوگوں پر گہرا اثر ڈالا تھا اور اچھے سے اچھے پھول کھلائے تھے ۔ مسلمانوں کو امام غزالی کے فلسفے اور معین الدین چشتی کے جیون سے بہت بڑی پریرنا ملی تھی ۔ ہندوؤں کو شنکر اور رامانج' کبیر اور چیتنیہ کے اُپدیشوں سے نئی روشنی اور نیا جیون ملا ہے ۔ اب سوال کیول یہ تھا کہ کیا اِن دونوں وشال سمندروں کو ملایا جا سکتا ہے؟ اگر ملایا جا سکے تو ملی جلی ہندستانی کلچر کے لئے پکی سے پکی روحانی بنیاد مل سکتی ہے اور اِس دیش میں ایک سندر ملے جلے سماج کی رچنا کی جا سکتی ہے ۔

دارا شکوہ نے اِن سوالوں کا جواب اپنی دونوں کتابوں "مجمع البحرین" اور "رسالۂ حق نما" میں دیا ہے ۔ اِن دونوں ناموں کے الگ الگ معنی ہیں "دونوں سمندروں کا سنگم" اور "سچائی کے پرکاش پرنبندھ ۔"

"مجمع البحرین' کی دارا شکوہ نے ایک بھومیکا لکھی ہے ۔ اُس میں اُس نے لکھا ہے کہ:—

"پہلے میں نے سب اصلیتوں کی اصلیت جاننا چاہا ۔ میں نے صوفیوں کے سچے مذہب کے رہسیوں (رازوں) اور باریکیوں کو جاننے کی کوشش کی ۔ اِس انمول چیز کو حاصل کرنے کے بعد میں نے یہ معلوم کرنے کی کوشش کی کہ ہندستان کے اُن موحدوں (ایکیشور وادیوں)' کھوجیوں اور اُستادوں کا اُصول کیا تھا جنہوں نے گہری تپسیا کر کے' دھیان لگا کر منن یعنی غور وخوض کر کے اور گہری سمادھی میں جا کر ایشور اللہ کا دیدار حاصل کیا تھا ۔ ہندو آچاریوں اور سادھو سنتوں سے میں بار بار ملا اور اُن سے خوب بات چیت کی ۔ میں نے دیکھا کہ شبدوں کے چھوٹے موٹے فرق کو چھوڑ کر اُن میں کوئی بنیادی فرق نہیں تھا ۔ کیول کوئی اپنی کھوج اور اپنے گیان کو ایک طرح کے شبدوں میں بیان کرتا تھا اور کوئی دوسری طرح کے شبدوں میں۔ اِس کے بعد میں نے ویدانت کے پنڈتوں اور سنت مہاتماؤں اور اِسلام کے صوفیوں دونوں کے وچاروں کو ایک جگہ کر کے دیکھا ۔ اُن میں سے اُن سب باتوں کو جمع کیا جو سچائی کے کھوجیوں کے لئے ضروری اور کارآمد ہیں ۔ اِس طرح یہ کتاب تیار ہو گئی ۔ یہ کتاب دونوں طرف کے حق شناس لوگوں یعنی سچائی کو جاننے والوں کے وچاروں اور اُپدیشوں کا سنگرہ ہے۔ اِس لئے میں نے اِس کا نام 'مجمع البحرین" رکھا ہے ۔"

दारा शिकोह की इन दोनों किताबों में यह साबित किया गया है कि यह सृष्टि कब और कैसे बनी, आदमी कब, कैसे और क्यों पैदा किया गया, आदमी के जीवन का लक्ष्य क्या है, पुरुष और प्रकृति में क्या संबंध है ? इन सब बातों पर हिन्दू फ़िलसफ़ी और मुसलिम फ़िलासफ़ी दोनों एक ही बात कहती हैं और दोनों परमानन्द तक पहुँचने का एक ही रास्ता, एक ही तरह के नियम और एक ही तरह की रियाज़त तपस्याआदि को बताती हैं. दोनों राहें एक हैं. इस रास्ते पर चार ख़ास मुक़ाम हैं जहां पहुंचकर आत्मा यानी रूह को ख़ास ख़ास तरह के मानसिक यानी दिमाग़ी, हार्दिक यानी जज़बाती और शारीरिक यानी जिस्मानी तजरबे होते हैं. यही असत् से सत् की तरफ़ यानी बातिल से हक़ की तरफ़, अँधेरे से उजाले की तरफ़ और फ़ानी ज़िंदगी से ग़ैर फ़ानी ज़िन्दगी की तरफ़ रूह की यात्रा है. यही रास्ता इसलाम के सूफ़ियों और दरवेशों ने सिखाया है और इसी की तालीम हिन्दू संतों और ऋषियों ने दी है. क़ुरान और उपनिषद् दोनों इसी बात की तसदीक़ करते हैं.

× × ×

[डा० ताराचंद ने भारत के राजदूत की हैसियत से तेहरान में रहकर अपने सरकारी फ़र्ज़ की अदायगी के साथ साथ दारा शिकोह की इन दोनों अमूल्य पुस्तकों, "मजमा-उल बहरैन" और "रिसालए हक़नुमा" का फ़ारसी से अंग्रेजी में अनुवाद किया है जो जल्दी ही प्रकाशित होने वाला है—सुन्दरलाल]

अक़्ल पा सकती नहीं है भेद तेरी ज़ात का,
फ़िक्र को सूझी न कोई शै दुआओं के सिवा.
मानने वाले तेरे दुनिया में हैं लाखों मगर,
जानने वाला तेरा कोई नहीं तेरे सिवा.

—उमर ख़ैयाम.

دارا شکوہ کی اِن دونوں کتابوں میں یہ ثابت کیا گیا ھے کہ یہ سرشٹی کب اور کیسے بنی' آدمی کب' کیسے اور کیوں پیدا کیا گیا' آدمی کے جیون کا لکشیہ کیا ھے' پرش اور پرکرتی میں کیا سمبندھ ھے ؟ اِن سب باتوں پر ھند فلاسفی اور مسلم فلاسفی دونوں ایک ھی بات کہتی ھیں اور دونوں پرمانند تک پہونچنے کا ایک ھی راستہ' ایک ھی طرح کے نیم اور ایک ھی طرح کی ریاضت تپسیا آدمی کو بتاتی ھیں ۔ دونوں راھیں ایک ھیں ۔ اِس راستہ پر چار خاص مقام ھیں جہاں پہونچ کر آتما یعنی روح کو خاص خاص طرح کے مانسک یعنی دماغی' هاردک یعنی جذباتی اور شاریرک یعنی جسمانی تجربے ھوتے ھیں ۔ یہی است سے ست کی طرف یعنی باطل سے حق کی طرف' اندھیرے سے اُجالے کی طرف اور فانی زندگی سے غیر فانی زندگی کی طرف روح کی یاترا ھے ۔ یہی راستہ اِسلام کے صوفیوں اور درویشوں نے سکھایا ھے اور اِسی کی تعلیم ھندو سنتوں اور رشیوں نے دی ھے ۔ قرآن اور اُپنشد دونوں اِسی بات کی تصدیق کرتے ھیں ۔

× × ×

[ڈاکٹر تارا چند نے بھارت کے راج دوت کی حیثیت سے طہران میں رہ کر اپنے سرکاری فرض کی ادایگی کے ساتھ ساتھ دارا شکوہ کی اِن دونوں اَمولیہ پستکوں' "مجمع البحرین" اور "رسالۂ حق نما" کا فارسی سے انگریزی میں انواد کیا ھے جو جلدی ھی پرکاشت ھونے والا ھے ۔ —سندر لال ۔]

عقل پا سکتی نہیں ھے بھید تیری ذات کا'
فکر کو سوجھی نہ کوئی شے دعاؤں کے سوا'
ماننے والے ترے دنیا میں ھیں لاکھوں مگر'
جاننے والا ترا کوئی نہیں تیرے سوا ۔

—عمر خیام ۔

दादा अबुलफ़ज़ल

पंडित सुन्दरलाल

"नया हिन्द" के पढ़ने वालों में शायद कोई बिरले ही होंगे जो यह समझ गये हों कि इस नोट में किसकी चरचा है. देश में कुछ इने गिने लोग ही उन्हें जानते होंगे.

मिरज़ा अबुलफ़ज़ल, जिन्हें हम ठीक चालीस बरस से 'दादा' कहा करते थे, पूरबी बंगाल के एक मुसलमान आलिम घराने में पैदा हुए थे. बचपन में बंगला पढ़ी, संस्कृत पढ़ी, फ़ारसी पढ़ी, अरबी पढ़ी, अंगरेज़ी पढ़ी और बाद में यूरप जाकर वहां की बहुत सी ज़बानें सीखीं. कलकत्ता युनिवर्सिटी के वह एम० ए० थे, और यूरप की बन युनिवर्सिटी के पी० एच० डी०. बंगाल में पैदा होकर भी उन्होंने अपनी ज़िन्दगी का अधिकतर भाग देश और दुनिया के दूसरे हिस्सों में ही गुज़ारा.

बंगला उनकी मातृ भाषा थी. संस्कृत के वह पूरे पंडित थे. रामायण, महाभारत और लगभग सब हिन्दू पुराण और स्मृतियां उन्होंने मूल संस्कृत में पढ़ी थीं, और मरते दम तक उन पर हावी थे. चारों वेदों का उनका किया हुआ मूल संस्कृत से बंगला में अनुवाद हमने उनके पास रखा हुआ देखा है. शायद वह कभी प्रकाशित न हो पाया. अपनी बात चीत में—और वह बात चीत भी बहुत कम करते थे—जब कभी वह वेदों, पुराणों, स्मृतियों या किसी शास्त्र का हवाला देते थे तो मालूम होता था कि उनका दिमाग़ किसी आदमी का दिमाग़ नहीं बल्कि ख़ासा चलता फिरता पुस्तकालय है.

अरबी भाषा के वह समन्दर थे. उनका क़ुरान का अंगरेज़ी अनुवाद कई एडीशनों में निकल चुका है. दूसरे महायुद्ध से पहले यूरप में ख़ासकर जरमनी में उनके अनुवाद की बहुत बड़ी क़द्र थी. उनका क़ुरान का उर्दू अनुवाद भी हमने छपा हुआ देखा है.

क़ुरान के तरजुमे के अलावा उन्होंने ख़ासकर अंगरेज़ी में और भी बहुत सी किताबें लिखीं, जिनमें कुछ के नाम ये हैं :—'लाइफ़ आफ़ मुहम्मद; 'सेइंग्स आफ़ मुहम्मद'; 'पेन अपालोजी फ़ार मुहम्मद', 'बिहाइन्ड दि वेल' (जो दुनिया में औरतों की हालत और समस्या पर एक ख़ास किताब है); 'हिन्दूइज़्म एंड इसलाम' 'क्रिश्चेनिटी एंड इसलाम' 'जूडाइज़्म एंड इसलाम' 'बुद्धिइज़्म एंड इसलाम.

دادا ابوالفضل

پنڈت سندر لال

"نیا ہند" کے پڑھنے والوں میں شاید کوئی برلے ہی ہونگے جو یہ سمجھ گئے ہوں کہ اِس نوٹ میں کس کی چرچا ہے . دیش بھر میں کچھ اِنے گنے لوگ ہی اُنہیں جانتے ہونگے.

مرزا ابوالفضل' جنہیں ہم ٹھیک چالیس برس سے 'دادا' کہا کرتے تھے' پوربی بنگال کے ایک مسلمان عالم گھرانے میں پیدا ہوئے تھے. بچپن میں بنگلا پڑھی' سنسکرت پڑھی' فارسی پڑھی' عربی پڑھی' انگریزی پڑھی' اور بعد میں یورپ جاکر وہاں کی بہت سی زبانیں سیکھیں . کلکتہ یونیورسٹی کے وہ ایم . اے . تھے' اور یورپ کی برن یونیورسٹی کے پی . ایچ . ڈی . بنگال میں پیدا ہوکر بھی اُنہوں نے اپنی زندگی کا ادھکتر بھاگ دیش اور دنیا کے دوسرے حصوں میں ہی گذارا .

بنگلا اُن کی ماتر بھاشا تھی . سنسکرت کے وہ پورے پنڈت تھے . رامائن' مہابھارت اور لگ بھگ سب ہندو پران اور اسمرتیاں اُنہوں نے مول سنسکرت میں پڑھی تھیں' اور مرتے دم تک ان پر حاوی تھے . چاروں ویدوں کا اُن کا کیا ہوا مول سنسکرت سے بنگلا میں انواد ہم نے اُن کے پاس رکھا ہوا دیکھا ہے . شاید وہ کبھی پرکاشت نہ ہو پایا . اپنی بات چیت میں —اور وہ بات چیت بھی بہت کم کرتے تھے—جب کبھی وہ ویدوں' پرانوں' اِسمرتیوں یا کسی شاستر کا حوالہ دیتے تھے تو معلوم ہوتا تھا کہ اُن کا دماغ کسی آدمی کا دماغ نہیں بلکہ خاصہ چلتا پھرتا پستکالیہ ہے .

عربی بھاشا کے وہ سمندر تھے . اُن کا قرآن کا انگریزی انواد کئی اِیڈیشنوں میں نکل چکا ہے . دوسرے مہایدھ سے پہلے یورپ میں خاصکر جرمنی میں اُن کے انواد کی بہت بڑی قدر تھی. اُن کا قرآن کا اُردو انواد بھی ہم نے چھپا ہوا دیکھا ہے.

قرآن کے ترجمے کے علاوہ اُنہوں نے خاصکر انگریزی میں اور بھی بہت سی کتابیں لکھیں' جن میں سے کچھ کے نام یہ ہیں :—'لایف آف محمد'; 'سیئنگس آف محمد'; 'اپن اپالوجی فار محمد'; بہائنڈ دی ویل' (جو دنیا میں عورتوں کی حالت اور سمسیا پر ایک خاص کتاب ہے); 'ہندوازم اینڈ اِسلام'; 'کرشچینٹی اینڈ اِسلام'; 'جوڈاازم اینڈ اِسلام'; 'بدھزم اینڈ اِسلام';

इन पिछली चार किताबों में उन्होंने बहुत से हवाले देकर इसलाम के साथ दूसरे धर्मों की समानता दिखाई है ; 'ग़रीबुल क़ुरान' यानी क़ुरान के अरबी शब्दों की एक डिक्शनरी ; वग़ैरा वग़ैरा. उनकी सारी किताबें, जिनमें से केवल कुछ के नाम हमने यहां दिये हैं, बड़े ऊँचे पाए की किताबें हैं.

संस्कृत, अरबी, फ़ारसी के अलावा वह हीब्रू यानी इबरानी; जरमन, फ़्रेंच यूनानी, लातीनी वग़ैरह के भी पूरे पंडित थे.

मिरज़ा अबुल फ़ज़ल किसी एक अलग धर्म मज़हब या सामप्रदाय के पिंजरे के अन्दर बन्द न थे. वह सच्चे और ऊँचे से ऊँचे मानी में "सर्व धर्म समभावी" यानी सब धर्मों को एक निगाह से देखने वाले, सबकी एक बराबर इज़्ज़त करने वाले और वहदते अदियान के क़ायल थे. ऊँचे से ऊँचे मानी में सच्चे धर्मात्मा या कम से कम धर्मात्मा होने की निरन्तर कोशिश करने वाले वह हर तरह के रीत रिवाज, कर्म कांड और शरअ और मिन-हाज से बल्लियों ऊपर थे.

डाक्टर मिरज़ा अबुल फ़ज़ल हमारे गुरु थे. क़ुरान, मुहम्मद साहब और इसलाम के बाबत हमने जो कुछ पढ़ा और सीखा सब उन्हीं से पढ़ा और सीखा. हमने उनसे और भी बहुत कुछ सीखा. वह हमसे कई साल बड़े थे. वह अपने सगे छोटे भाई की तरह हमसे प्यार करते थे हम उन्हें स्नेह और आदर के साथ 'दादा' कहा करते थे और उन्हें अपना रूहानी गुरु मानते थे. सात मई 1956 को हैदराबाद (दक्खिन) में दादा अबुल फ़ज़ल का शरीरान्त हो गया.

हैदराबाद के भाई हसनउद्दीन अहमद ने हमें दादा अबुलफ़ज़ल के शरीरान्त की ख़बर दी. जिस ख़त में उन्होंने हमें यह सूचना दी उसमें उन्होंने भावुकता के साथ और उतनी ही सचाई के साथ लिखा है—"मुझे आपको यह बतलाने की ज़रूरत नहीं है कि आपके दादा कितने बड़े आदमी थे. हम तो बड़े आदमी का लफ़्ज़ अक्सर इस्तेमाल करते हैं और ख़सूसन इन्तक़ाल के बाद तो फ़राख़ दिली से यह ख़िताब दे देते हैं. लेकिन जब मैं मिरज़ा साहब के लिये यह लफ़्ज़ इस्तेमाल कर रहा हूँ तो आम इस्तेमाल से इसका मफ़हूम (मतलब) बिलकुल मुख़्तलिफ़ है."

पूछा जा सकता है कि मिर्ज़ा अबुल फ़ज़ल ने लिखने पढ़ने के अलावा ज़िन्दगी में और क्या कुछ किया ? हमें इस सम्बन्ध में केवल थोड़ा सा ही हाल मालूम है. उनकी ज़िन्दगी अदन के ब्रिटिश मैजिस्ट्रेट की हैसियत से शुरू हुई. डेढ़ हज़ार रुपया तनख़ाह, रुतबा, दबदबा और ज़िन्दगी की

اِن پچھلی چار کتابوں میں اُنہوں نے بہت سے حوالے دیکر اِسلام کے ساتھ دوسرے دھرموں کی سمانتا دکھائی ہے؛ 'غریب القرآن' یعنی قرآن کے عربی شبدوں کی ایک ڈکشنری' وغیرہ وغیرہ ۔ اُن کی ساری کتابیں' جن میں سے کیول کچھ کے نام ہم نے یہاں دیئے ہیں' بڑے اُونچے پایہ کی کتابیں ہیں ۔

سنسکرت' عربی' فارسی کے علاوہ وہ ہیبرو یعنی عبرانی' جرمن' فرینچ' یونانی' لاطینی وغیرہ کے بھی پورے پنڈت تھے ۔

مرزا ابواُلفضل کسی ایک الگ دھرم مذہب یا سمپردائے کے پنجرے کے اندر بند نہ تھے ۔ وہ سچے اور اُونچے سے اُونچے معنی میں "سرودھرم سمبھاوی" یعنی سب دھرموں کو ایک نگاہ سے دیکھنے والے' سب کی ایک برابر عزت کرنے والے اور وحدت ادیان کے قایل تھے ۔ اُونچے سے اُونچے معنی میں سچے دھرماتما یا کم سے کم دھرماتما ہونے کی نرنتر' کوشش کرنے والے وہ ہر طرح کے ریت رواج' کرم کانڈ اور شرع اور منہاج سے بلیوں اُوپر تھے ۔

ڈاکٹر مرزا ابواُلفضل ہمارے گرو تھے ۔ قرآن' محمد صاحب اور اِسلام کی بابت ہم نے جو کچھ پڑھا اور سیکھا سب اُنہیں سے پڑھا اور سیکھا ۔ ہم نے اُن سے اور بھی بہت کچھ سیکھا ۔ وہ ہم سے کئی سال بڑے تھے ۔ وہ اپنے سگے چھوٹے بھائی کی طرح ہم سے پیار کرتے تھے ۔ ہم انہیں سنیہہ اور آدر کے ساتھ 'دادا' کہا کرتے تھے اور اُنہیں اپنا روحانی گرو مانتے تھے ۔ سات مئی سن 1956 کو حیدرآباد (دکھن) میں دادا ابواُلفضل کا شریرانت ہوگیا ۔

حیدرآباد کے بھائی حسن الدین احمد نے ہمیں دادا ابوالفضل کے شریرانت کی خبر دی ۔ جس خط میں اُنہوں نے ہمیں یہ سوچنا دی اُس میں اُنہوں نے بھاوکتا کے ساتھ اور اُتنی ہی سچائی کے ساتھ لکھا ہے—"مجھے آپ کو یہ بتلانے کی ضرورت نہیں ہے کہ آپ کے دادا کتنے بڑے آدمی تھے۔ ہم تو بڑے آدمی کا لفظ اکثر استعمال کرتے ہیں اور خصوصاً اِنتقال کے بعد تو فراخ دلی سے یہ خطاب دے دیتے ہیں ۔ لیکن جب میں مرزا صاحب کے لئے یہ لفظ استعمال کر رہا ہوں تو عام اِستعمال سے اِس کا مفہوم (مطلب) بالکل مختلف ہے ۔"

پوچھا جاسکتا ہے کہ مرزا ابوالفضل نے لکھنے پڑھنے کے علاوہ زندگی میں اور کیا کچھ کیا ؟ ہمیں اِس سمبندھ میں کیول تھوڑا سا ہی حال معلوم ہے ۔ اُن کی زندگی عدن کے برٹش میجسٹریٹ کی حیثیت سے شروع ہوئی ۔ ڈیڑھ ہزار روپیہ تنخواہ' رتبہ' دبدبہ اور زندگی کی

तमाम आसाइशें. मगर जिस चीज़ की दादा को सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी—यानी आज़ाद ख़्याली और रूहानी सकून—वह उन्हें हासिल न था. नतीजा यह हुआ कि आला अफ़सरों के साथ झगड़े हुये और मिरज़ा साहब ने नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया. उसके बाद वे लकद्वीप, मालद्वीप के नवाब के यहाँ प्राइममिनिस्टर हो गये. नवाब साहब का अंग्रेज़ रेज़ीडेंट के साथ जो रवैया था वह मिरज़ा साहब को निहायत हतक-आमेज़ मालूम हुआ. प्राइममिनिस्टर की हैसियत से उनके अमल से अंग्रेज़ रेज़ीडेंट के साथ कज़िये शुरू हो गये. नतीजा यह हुआ कि उन्होंने प्राइममिनिस्टरी से भी स्तीफ़ा दे दिया. इस बार उन्हें बंगाल में सेंट्रल जेल की सुपरिनटेंडेंटी का काम मिला, मगर अंग्रेज़ इन्सपेक्टर जनरल आफ़ प्रीज़न्स से उनकी 6 महीने भी न पटी. नतीजा यह हुआ कि उस 800 रुपया माहवार की नौकरी से भी उन्होंने इस तरह हाथ खींच लिया मानो अचकन पर पड़ी हुई गर्द झाड़ दी हो. उसके बाद वह बड़ौदा में सुपरिनटेंडेंट आफ़ पोस्ट आफ़िसेज़ हो गये. साल भर उन्होंने सुकून से नौकरी की, मगर कुछ मामलों को लेकर भारत सरकार के डाइरेक्टर जनरल आफ़ पोस्ट आफ़िसेज़ से उनकी खटपट हो गई. बड़ौदा सरकार इस मामले में झुक गई, मगर दादा के लिये वह इज़्ज़त आबरू का सवाल था और जब स्तीफ़ा देकर घर लौटे तो उनके दिल में तसल्ली और ओठों पर मुस्कराहट थी. इस बार मिरज़ा साहब ने दूसरे सीग़े की तलाश की. वे काश्मीर में आरकियालाजिकल डिपार्टमेंट के सुपरिनटेंडेंट हो गये. काश्मीर में सुल्तान ज़ैनुलआबदीन ने जिस मिली जुली कल्चर की नींव डाली उसके मुताल्लिक़ मिरज़ा साहब ने काफ़ी दिलचस्प आरकियालाजिकल खोजें कीं. जितने दिनों वह वहाँ रहे काश्मीर के पुरातत्व विभाग को उन्होंने मालामाल करने की कोशिश की, मगर इस बात को लेकर उन्हें सख़्त तकलीफ़ हुई कि बावजूद उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कुछ पुरानी मिली हुई चीज़ें काश्मीर में न रखकर ब्रिटिश म्युज़ियम लन्दन भेज दी गईं. मिरज़ा साहब ने उदास होकर वहां से भी स्तीफ़ा पेश कर दिया और तब रोज़ी की तलाश उन्हें इलाहाबाद खींच ले आई. वे इलाहाबाद म्युनिसिपैलिटी में पहले टैक्स सुपरिनटेंडेंट और फिर एजूकेशन सुपरिनटेंडेंट हुये. वक़्त के साथ साथ ज़िन्दगी में लोगों की तन्ख़ाहों में इज़ाफ़ा होता है मगर दादा के साथ बात दूसरी थी. उन्होंने डेढ़ हज़ार महीना रुपये के साथ नौकरी शुरू की और पचास साल की उम्र में उनकी तन्ख़ाह घटते घटते इलाहाबाद म्युनिसिपैलिटी में ढाई सौ रुपया महीने रह गई. बहैसियत एजूकेशन सुपरिनटेंडेंट के उन्होंने प्रयाग महिला विद्यापीठ की बुनियाद डाली जो अब काफ़ी बड़ी संस्था की शकल में मौजूद है. वह जरमनी में लड़कियों की संस्थाएं जिस शकल में चलती हैं उससे मिलती जुलती शकल में इस संस्था को चलाना चाहते

تمام آسائشیں ۔ مگر جس چیز کی دادا کو سب سے زیادہ ضرورت تھی—یعنی آزاد خیالی اور روحانی سکون وہ اُنھیں حاصل نہ تھا ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ اعلیٰ افسروں کے ساتھ جھگڑے ہوئے اور مرزا صاحب نے نوکری سے اِستعفیٰ دے دیا ۔ اُس کے بعد وے لکدویپ مالدویپ کے نواب کے یہاں پرائم منسٹر ہو گئے ۔ نواب صاحب کا انگریز ریزیڈنٹ کے ساتھ جو رویہ تھا وہ مرزا صاحب کو نہایت ہتک آمیز معلوم ہوا ۔ پرائم منسٹر کی حیثیت سے اُن کے عمل سے انگریز ریزیڈنٹ کے ساتھ قضیئے شروع ہوگئے ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ اُنھوں نے پرائم منسٹری سے بھی استیفیٰ دے دیا ۔ اِس بار اُنھیں بنگال میں سنٹرل جیل کی سپرنٹینڈینٹی کا کام ملا' مگر انگریز انسپکٹر جنرل آف پریزنس سے اُن کی چھ مہینے بھی نہ پٹی ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ اس 800 روپیہ ماہوار کی نوکری سے بھی اُنھوں نے اِس طرح ہاتھ کھینچ لیا مانو اچکن پر پڑی ہوئی گرد جھاڑ دی ہو ۔ اِس کے بعد وہ بڑودہ میں سپرنٹینڈینٹ آف پوسٹ آفسیز ہو گئے ۔ سال بھر اُنھوں نے سکون سے نوکری کی' مگر کچھ معاملوں کو لیکر بھارت سرکار کے ڈائریکٹر جنرل آف پوسٹ آفسیز سے اُن کی کھٹ پٹ ہو گئی ۔ بڑودہ سرکار اِس معاملہ میں جھک گئی مگر دادا کے لئے وہ عزت آبرو کا سوال تھا اور جب استیفیٰ دیکر گھر لوٹے تو اُن کے دل میں تسلی اور ہونٹھوں پر مسکراہٹ تھی ۔ اِس بار مرزا صاحب نے دوسرے صیغے کی تلاش کی ۔ وے کاشمیر میں آرکیالاجیکل ڈپارٹمنٹ کے سپرنٹینڈینٹ ہو گئے ۔ کاشمیر میں سلطان زین العابدین نے جس ملی جلی کلچر کی نیو ڈالی اِس کے متعلق مرزا صاحب نے کافی دلچسپ آرکیالاجیکل کھوجیں کیں ۔ جتنے دنوں وہ وہاں رہے کاشمیر کے پراتتو وبھاگ کو مالا مال کرنے کی کوشش کی' مگر اِس بات کو لیکر اُنھیں سخت تکلیف ہوئی کہ باوجود اُن کی مرضی کے خلاف کچھ پرانی ملی ہوئی چیزیں کاشمیر میں نہ رکھ کر برٹش میوزیم لندن بھیج دی گئیں ۔ مرزا صاحب نے اُداس ہو کر وہاں سے بھی اِستیفیٰ پیش کر دیا اور تب روزی کی تلاش اُنھیں اِلہ آباد کھینچ لے آئی ۔ وے اِلہ آباد میونسپلٹی میں پہلے ٹیکس سپرنٹینڈینٹ اور پھر ایجوکیشن سپرنٹینڈینٹ ہوئے ۔ وقت کے ساتھ ساتھ زندگی میں لوگوں کی تنخواہوں میں اضافہ ہوتا ہے مگر دادا کے ساتھ بات دوسری تھی ۔ اُنھوں نے ڈیڑھ ہزار مہینہ روپیہ کے ساتھ نوکری شروع کی اور پچاس سال کی عمر میں اُن کی تنخواہ گھٹتے گھٹتے الہ آباد میونسپلٹی میں صرف ڈھائی سو روپیہ مہینہ رہ گئی ۔ بحیثیت ایجوکیشن سپرنٹنڈنٹ کے اُنھوں نے پریاگ مہلا ودیاپیٹھ کی بنیاد ڈالی جو اب کافی بڑی سنستھا کی شکل میں موجود ہے۔ جرمنی میں لڑکیوں کی سنستھائیں جس شکل میں چلتی ہیں اُس سے ملتی جلتی شکل میں وہ اِس سنستھا کو چلانا چاہتے

थे, मगर म्युनिसिपैलटी में भला इतने बड़े आलिम और आज़ाद ख्याल आफ़ीसर की गुंजाइश कैसे हो सकती थी ? नतीजा यह हुआ कि वहां की नौकरी से भी उन्होंने स्तीफ़ा दे दिया और आख़िर में सन् 1925 में उन्हें हिन्दुस्तानी अकेडेमी में सौ रुपये महीने की प्रूफ़ रीडरी करनी पड़ी. मगर न उन्हें पंद्रह सौ रुपये की नौकरी का घमंड था और न सौ रुपये पाने का ग़म. उनमें सख़्ती इतनी थी कि फ़ौलाद भी उनके सामने पानी हो जाय, मगर नरमी इतनी थी कि मक्खन भी उन्हें देखकर शर्मा जाय.

दादा मिली जुली हिन्दुस्तानी कल्चर के ज़बर्दस्त हामी थे. जैसा हमने ऊपर लिखा है कि एक तरफ़ वे वेदों और उपनिषदों और संस्कृत भाषा के महान पंडित थे तो दूसरी तरफ़ .क़ुरान मजीद, हदीसों और अरबी भाषा के ज़बर्दस्त आलिम. भला ऐसे आदमी की निगाहों में मज़हबी फ़र्क़ कैसे रह सकते हैं ? वे कृष्ण को भी पैग़म्बर मानते थे और उनकी शिक्षाओं को वहद्दतुल वजूद का हामी समझते थे, तो दूसरी ओर रसूल अल्लाह के पैरो. दोनों की यादगार में उन्होंने अपने बेटे का नाम कृष्ण मोहम्मद रखा. वह ज़माना फ़िर्क़ावाराना तहरीक का ज़माना था. इस पर बड़ी चेमीगोई और कानाफूसी हुई, फिर सख़्त नुक्ताचीनी होने लगी. इस्लामिया और क्रिश्चियन कालिज के अधिकारियों ने नाम की वजह से लड़के को भरती करने से इन्कार कर दिया. मिरज़ा साहब ने सब बर्दाश्त किया मगर सच्ची एकता का हामी कैसे अपने उसूलों से हट सकता था ? भरी जवानी में जब इस लड़के का इन्तक़ाल हुआ तो मिरज़ा साहब को बड़ा सख़्त सदमा पहुँचा, मगर दूसरी मुसीबतों की तरह इसे भी उन्होंने बर्दाश्त किया.

मिरज़ा साहब के पास कभी कभी रायलटी का थोड़ा बहुत रुपया आ जाता था, मगर उनका बायां हाथ लेने में संकोच करता तो दायां हाथ इतना शाह-ख़र्च था कि बड़ी से बड़ी रक़म चार दिन में लुट जाती. यतीमों, बेवाओं, और ज़रूरतमन्दों की फ़ेहरिस्त वह लेकर बैठ जाते और सारी रक़म साफ़ होजाती. जब उनसे पूछा जाता कि—

'दादा, सारी रक़म आपने ख़र्च कर दी ?" तो जवाब देते—

"भई ! हम तो अल्लाह वाले हैं और अल्लाह वाले पैसे जुगाड़ कर नहीं रखते. दूसरे दिन के लिये पैसे बचाकर रखने का मतलब है उस पाक परवरदिगार की तरफ़ अपने ऐतक़ाद की कमी." और दादा ने इस उसूल का सारी ज़िन्दगी पालन किया.

.क़ुरान शरीफ़ के सम्पादन में उन्होंने बड़ी मेहनत की. नई बात उन्होंने यह की कि कलाम मजीद की आयतें वक़्त के लिहाज़ से जिस तरतीब से उतरीं उसी तरतीब

تھے' مگر میونسپلٹی میں بھلا اِتنے بڑے عالم اور آزاد خیال آفیسر کی گنجایش کیسے ہو سکتی تھی ؟ نتیجہ یہ ہوا کہ وہاں کی نوکری سے بھی اُنہوں نے اِستیفیٰ دے دیا اور آخر میں سن 1925 میں اُنہیں ہندستانی اکیڈمی میں سو روپیہ مہینے کی پروف ریڈری کرنی پڑی . مگر نہ اُنہیں پندرہ سو روپئے کی نوکری کا گھمنڈ تھا اور نہ سو روپیہ پانے کا غم . اُن میں سختی اِتنی تھی کہ فولاد بھی اُن کے سامنے پانی ہو جائے' مگر نرمی اِتنی تھی کہ مکھن بھی اُنہیں دیکھ کر شرما جائے .

دادا ملی جلی ہندستانی کلچر کے زبردست حامی تھے . جیسا ہم نے اُوپر لکھا ہے کہ ایک طرف وے ویدوں اور اُپنشدوں اور سنسکرت بھاشا کے مہان پنڈت تھے تو دوسری طرف قرآن مجید' حدیثوں اور عربی بھاشا کے زبردست عالم . بھلا ایسے آدمی کی نگاہوں میں مذہبی فرق کیسے رہ سکتے ہیں ؟ وے کرشن کو بھی پیغمبر مانتے تھے اور ان کی شکشاؤں کو وحدۃالوجود کا حامی سمجھتے تھے' تو دوسری اُور رسول اللہ کے پیرو . دونوں کی یادگار میں اُنہوں نے اپنے بیٹے کا نام کرشن محمد رکھا . وہ زمانہ فرقہ‌وارانہ تحریک کا زمانہ تھا . اس پر بڑی چمی‌گوئی اور کاناپھوسی ہوئی' پھر سخت نکتہ‌چینی ہونے لگی . اِسلامیہ اور کرشچین کالج کے ادھیکاریوں نے نام کی وجہ سے لڑکے کو بھرتی کرنے سے اِنکار کردیا . مرزا صاحب نے سب برداشت کیا مگر سچی ایکتا کا حامی کیسے اپنے اُصولوں سے ہٹ سکتا تھا ؟ بھری جوانی میں جب اِس لڑکے کا اِنتقال ہوا تو مرزا صاحب کو بڑا سخت صدمہ پہونچا مگر دوسری مصیبتوں کی طرح اِسے بھی انہوں نے برداشت کیا .

مرزا صاحب کے پاس کبھی کبھی رایلٹی کا تھوڑا بہت روپیہ آجاتا تھا' مگر اُن کا بایاں ہاتھ لینے میں سنکوچ کرتا تو دایاں ہاتھ اِتنا شاہ خرچ تھا کہ بڑی سے بڑی رقم چار دن میں لٹ جاتی . یتیموں' بیواؤں اور ضرورتمندوں کی فہرست وہ لیکر بیٹھ جاتے اور ساری رقم صاف ہوجاتی . جب اُن سے پوچھا جاتا کہ—

" دادا' ساری رقم آپنے خرچ کردی ؟" تو جواب دیتے—

"بھئی ! ہم تو اللہ والے ہیں اور اللہ والے پیسے جگاڑکر نہیں رکھتے . دوسرے دن کے لئے پیسے بچاکر رکھنے کا مطلب ہے اُس پاک پروردگار کی طرف اپنے اعتقاد کی کمی ." اور دادا نے اِس اُصول کا ساری زندگی پالن کیا .

قرآن شریف کے سمپادن میں اُنہوں نے بڑی محنت کی. نئی بات اُنہوں نے یہ کی کہ کلام مجید کی آیتیں وقت کے لحاظ سے جس ترتیب سے اُتریں اُسی ترتیب

से उन्होंने हालात और वाक़ेआत की रोशनी में उनका सिलसिला बनाया. यह उस सिलसिले के खिलाफ़ था जो कलाम मजीद की आयतों का राइज सिलसिला है. इस पर मिरज़ा साहब की बेहद नुक्ताचीनी हुई, मगर योरप और अमरीका वग़ैरा में मिरज़ा साहब के इस सिलसिले को बेहद पसन्द किया गया.

उनके होमियोपैथिक डाक्टर बनने की भी एक कहानी है. पंडित मोतीलाल नेहरू की जब बेकाम किताबें नीलाम हुईं तो मिरज़ा साहब ने उनकी होमियोपैथी की किताबों का पूरा सैट साढ़े सात सौ रुपये में ख़रीद लिया. आलिम तो थे ही, जो पढ़ना शुरू किया तो होमियोपैथी के इल्म की तह तक पहुँच गये. मौक़ा मिला तो तक़रीबन हैदराबाद में होमियोपैथिक इलाज शुरू कर दिया. लोगों ने पूछा कि—

"वेद और .क़ुरान पर भाष्य लिखना बन्द करके अब आपने होमियोपैथी शुरू कर दी" ? तो बोले—

"इस मुल्क में इतनी ग़रीबी है कि लोगों के पास इलाज तक के लिये पैसे नहीं हैं. डाक्टरों की बेहद कमी है. मैंने सोचा चलो इसी बहाने लोगों की ख़िदमत का मौक़ा मिले."

तीन चार महीने के अन्दर ही हैदराबाद में उनके इलाज की धूम मच गई. एक ख़ानदानी नवाब साहब, जो अर्से से बीमार थे और अपने इलाज के सिलसिले में वियना, बर्लिन और लन्दन की ख़ाक छान आये थे, दोस्तों की सलाह मानकर मिरज़ा साहब के दवाख़ाने में हाज़िर हुए. अल्लाह की .क़ुदरत कि महीने भर में ही चंगे हो गये. जो काम वियना के बड़े बड़े डाक्टर न कर सके वह मिरज़ा साहब के होमियोपैथी इलाज ने कर दिखाया. अच्छे होने के बाद एक दिन नवाब साहब चाँदी के थाल में पाँच हज़ार रुपये रखकर मिरज़ा साहब की ख़िदमत में हाज़िर हुए. मिरज़ा साहब यह देखकर इतना घबराये मानो बहुत बड़ी मुसीबत पेश आ गई हो. बड़ी आर्ज़ू मिन्नत के बाद कुल एक रुपया फ़ीस क़ुबूल की.

मिरज़ा साहब में यह ख़ूबी थी कि जिस काम को हाथ लगाते उसे ख़ूबी से करते, मानो वही उनकी ज़िन्दगी का मक़सद है. ज़माने ने जब उनका इम्तहान लेना शुरू किया और इतना झुकाया कि वे प्रूफ़रीडर हो गये तब भी उनकी यह कैफ़ियत थी कि दस-दस कम्पोज़ीटर कम्पोज़ करते थे और वह अकेले प्रूफ़ देखते थे—पहला, दूसरा और फ़ाइनल—मगर कम्पोज़ीटर उन्हें हरा न पाते थे. वह अक्सर कहा करते थे कि "जो काम भी करो, ख़ुश होकर करो और उसके लिये अल्लाह का शुक्रिया अदा करो." सन् 1933 में कांग्रेस की 'कानपुर दंगा जाँच कमेटी' की रिपोर्ट छापने के लिये कोई प्रेस वाला राज़ी न हुआ. ज़ब्ती के क़ाबिल किताब

سے اُنہوں نے حالات اور واقعات کی روشنی میں اُن کا سلسلہ بنایا ۔ یہ اُس سلسلے کے خلاف تھا جو کلام مجید کی آیتوں کا رائج سلسلہ ہے ۔ اِس پر مرزا صاحب کی بےحد نکتہ‌چینی ہوئی' مگر یورپ اور امریکہ وغیرہ میں مرزا صاحب کے اِس سلسلے کو بےحد پسند کیا گیا ۔

اُن کے ہومیوپیتھک ڈاکٹر بننے کی بھی ایک کہانی ہے ۔ پنڈت موتی لال نہرو کی جب بےکام کتابیں نیلام ہوئیں تو مرزا صاحب نے اُن کی ہومیوپیتھی کی کتابوں کا پورا سیٹ ساڑھے سات سو روپئے میں خرید لیا ۔ عالم تو تھے ہی' جو پڑھنا شروع کیا تو ہومیوپیتھی کے علم کی تہ تک پہونچ گئے ۔ موقع ملا تو تقریباً حیدرآباد میں ہومیوپیتھک علاج شروع کردیا ۔ لوگوں نے پوچھا کہ—

"وید اور قرآن پر بھاشیہ لکھنا بند کرکے اب آپنے ہومیوپیتھی شروع کردی ؟ تو بولے—

"اِس ملک میں اِتنی غریبی ہے کہ لوگوں کے پاس علاج تک کے لئے پیسے نہیں ہیں ۔ ڈاکٹروں کی بےحد کمی ہے ۔ میں نے سوچا چلو اِسی بہانے لوگوں کی خدمت کا موقع ملے ۔"

تین چار مہینے کے اندر ہی حیدرآباد بھر میں اُن کے علاج کی دھوم مچ گئی ۔ ایک خاندانی نواب صاحب' جو عرصے سے بیمار تھے اور اپنے علاج کے سلسلے میں وئینا' برلن اور لندن کی خاک چھان آئے تھے' دوستوں کی صلاح مان‌کر مرزا صاحب کے دواخانہ میں حاضر ہوئے ۔ اللہ کی قدرت کہ مہینے بھر میں ہی چنگے ہوگئے ۔ جو کام وئینا کے بڑے بڑے ڈاکٹر نہ کرسکے وہ مرزا صاحب کے ہومیوپیتھی علاج نے کر دکھایا ۔ اچھے ہونے کے بعد ایک دن نواب صاحب چاندی کے تھال میں پانچ ہزار روپئے رکھکر مرزا صاحب کی خدمت میں حاضر ہوئے ۔ مرزا صاحب یہ دیکھکر اِتنا گھبرائے مانو بہت بڑی مصیبت پیش آگئی ہو ۔ بڑی آرزومنت کے بعد کل ایک روپیہ فیس قبول کی ۔

مرزا صاحب میں یہ خوبی تھی کہ جس کام کو ہاتھ لگاتے اُسے اِس خوبی سے کرتے' مانو وہی اُن کی زندگی کا مقصد ہے ۔ زمانے نے جب اُن کا امتحان لینا شروع کیا اور اِتنا جھکایا کہ وہ پروف ریڈر ہوگئے تب بھی اُن کی یہ کیفیت تھی کہ دس دس کمپوزیٹر کمپوز کرتے تھے اور وہ اکیلے پروف دیکھتے تھے —پہلا' دوسرا اور فائنل—مگر کمپوزیٹر انہیں ہرا نہ پاتے تھے ۔ وہ اکثر کہا کرتے تھے کہ "جو کام بھی کرو' خوش ہوکر کرو اور اس کے لئے اللہ کا شکریہ ادا کرو" ۔ سن 1933 میں کانگریس کی 'کانپور دنگا جانچ کمیٹی' کی رپورٹ چھاپنے کے لئے کوئی پریس والا راضی نہ ہوا ۔ ضبطی کے قابل کتاب

को भला कौन छापता ? दादा से चर्चा हुई, फ़ौरन तैयार हो गये. जो थोड़ी बहुत पूँजी थी उससे एक 'मिनरवा' नाम का प्रेस खोला और छपाई शुरू करदी. रातों दिन उस मोटी रिपोर्ट को एक महीने में छाप कर उन्होंने तैयार कर दिया. पुलिस सुराग़ तक न पा सकी. जिस दिन वह किताब तैयार हुई उसी दिन उसकी क़रीब डेढ़ हज़ार कापियां रेलवे पारसल घरों और पोस्ट आफ़िसों में ज़ब्त करली गईं. मिरज़ा साहब के प्रेस पर सरकारी ताला डाल दिया गया, और आख़ीर में प्रेस ज़ब्त कर लिया गया. ब्रिटिश पार्लियामेंट में इसपर सवाल किये गये मगर कोई नतीजा न निकला. पल्ले की हज़ारों रुपये की पूँजी खोकर भी मिरज़ा साहब को कोई अफ़सोस न था बल्कि वे ख़ुश थे कि उनके चन्द पैसों का मुनासिब इस्तेमाल हुआ.

पी. टी. आई. की रिपोर्ट के मुताबिक़ चौरानवे बरस की उम्र में उनका इन्तक़ाल हुआ. आख़िरी वक़्त तक उनकी आँखें, कान, दान्त और दिमाग़ सही सही काम कर रहे थे. न उनकी आंखों की ज्योति कम हुई, न एक भी दांत हिला. पूछने पर वह अक्सर कहा करते थे कि "मैं नौ बजे रात को सो जाता हूँ और तीन बजे सवेरे उठ जाता हूँ, प्राणायाम करता हूँ और खाने में जिस चीज़ से मुझे बेहद फ़ायदा पहुँचाया वह है—बेल, कच्चा बेल, भुना हुआ बेल, उबला हुआ बेल, पक्के बेल का गूदा, उसका रस और शरबत. मुख़्तलिफ़ तरह से मैंने बेल को खाकर देखा है और मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि सेहत के लिये इससे बेहतरीन कोई दूसरी चीज़ नहीं."

दादा अबुलफ़ज़ल सच्चे अर्थों में फक्कड़ थे. सुना है मशहूर अमरीकन फ़्लास्फ़र 'थोरो' भी फक्कड़ था, मगर दादा अबुलफ़ज़ल फक्कड़ों के सरदार थे.

एक तरफ़ वह एक मामूली लड़की से भी ज़ियादा शरमीले और हद दरजे के कमगो थे. दूसरी तरफ़ वह अपने कुछ उसूलों के इतने पक्के थे कि इस पक्केपन की वजह से ही वह कभी देर तक एक जगह नहीं टिके. आख़िर बुढ़ापे में वह हैदराबाद में होमियोपैथिक प्रैक्टिस करते थे और बहुत नामी होम्योपैथ थे. सरस्वती की शुरू से उनपर अपार कृपा थी, पर उसी दरजे तक लक्ष्मी उनसे हमेशा नाराज़ रहीं.

दादा अबुलफ़ज़ल के चरित्र, उनके कैरेक्टर, को समझने के लिये उनकी जीवन की कुछ ख़ास ख़ास घटनाओं पर निगाह डालना ज़रूरी है. हम केवल तीन घटनाएँ नीचे देते हैं:—

(1) पहली घटना पहले महायुद्ध के दिनों की है. मिरज़ा अबुलफ़ज़ल का क़ुरान का अंग्रेज़ी तरजुमा यूरप में बहुत मक़बूल हो चुका था. कई एडीशन निकल चुके थे. सूरत के एक प्रकाशक ने उनसे छापने का हक़ ले रखा था. पच्चीस

کو بھلا کون چھاپتا ؟ دادا سے چرچا ہوئی' فوراً تیار ہوگئے . جو تھوڑی بہت پونجی تھی اُس سے ایک 'منروا' نام کا پریس کھولا اور چھپائی شروع کردی . راتوں دن اُس موٹی رپورٹ کو ایک مہینے میں چھاپکر اُنہوں نے تیار کردیا . پولس سراغ تک نہ پاسکی . جس دن وہ کتاب تیار ہوئی اُسی دن اُس کی قریب ڈیڑھ ہزار کاپیاں ریلوے پارسل گھروں اور پوسٹ آفسوں میں ضبط کرلی گئیں . مرزا صاحب کے پریس پر سرکاری تالا ڈال دیا گیا' اور آخیر میں پریس ضبط کرلیا گیا . برٹش پارلیامینٹ میں اِس پر سوال کئے گئے مگر کوئی نتیجہ نہ نکلا . پلے کی ہزاروں روپئے کی پونجی کھوکر بھی مرزا صاحب کو کوئی افسوس نہ تھا بلکہ وے خوش تھے کہ اُن کے چند پیسوں کا مناسب اِستعمال ہوا .

پی. ٹی. آئی کی رپورٹ کے مطابق چورا نوے برس کی عمر میں اُن کا انتقال ہوا . آخری وقت تک اُن کی آنکھیں' کان' دانت اور دماغ صحیح صحیح کام کر رہے تھے . نہ اُن کی آنکھوں کی جیوتی کم ہوئی' نہ ایک بھی دانت ہلا . پوچھنے پر وہ اکثر کہا کرتے تھے کہ "میں نو بجے رات کو سو جاتا ہوں اور تین بجے سویرے اُٹھ جاتا ہوں' پرانایام کرتا ہوں اور کھانے میں جس چیز نے مجھے بےحد فایدہ پہونچایا وہ ہے—بیل' کچا بیل' بھنا ہوا بیل' اُبلا ہوا بیل' پکے بیل کا گودا' اُس کا رس اور شربت. مختلف طرح سے میںنے بیل کو کھا کر دیکھا ہے اور میں یہ دعویٰ کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ صحت کے لئے اِس بہترین کوئی دوسری چیز نہیں .

دادا ابولفضل سچے ارتھوں میں پھکڑ تھے . سنا ہے مشہور امریکن فلاسفر 'تھورو' بھی پھکڑ تھا' مگر دادا ابوالفضل پھکڑوں کے سردار تھے .

ایک طرف وہ ایک معمولی لڑکی سے بھی زیادہ شرمیلے اور حد درجے کے کمگو تھے . دوسری طرف وہ اپنے کچھ اُصولوں کے اِتنے پکے تھے کہ اِس پکے پن کی وجہہ سے ھی وہ کبھی دیر تک ایک جگہہ نہیں ٹکے . اخر بڑھاپے میں وہ حیدرآباد میں ہومیو پیتھک پریکٹس کرتے تھے اور بہت نامی ہومیوپیتھ تھے . سرسوتی کی شروع سے اُن پر اپار کرپا تھی' پر اُسی درجے تک لکشمی اُن سے ہمیشہ ناراض رہیں .

دادا ابوالفضل کے چرتر' اُن کے کیریکٹر' کو سمجھنے کے لئے اُن کے جیون کی کچھ خاص خاص گھٹناؤں پر نگاہ ڈالنا ضروری ھے . ہم کیول تین گھٹنائیں نیچے دیتے ہیں:—

(1) پہلی گھٹنا پہلے مہایدھ کے دنوں کی ھے. مرزا ابولفضل کا قرآن کا انگریزی ترجمہ یورپ میں بہت مقبول ہو چکا تھا . کئی ایڈیشن نکل چکے تھے . صورت کے ایک پرکاشک نے اُن سے چھاپنے کا حق لے رکھا تھا . پچیس

फ़ीसदी रायलटी तय थी. मामला तय होते वक़् मिरज़ा साहब ने अपनी ज़रूरत के अनुसार प्रकाशक से सात सौ रुपया पेशगी के लिये थे. होते होते रायलटी के बत्तीस हज़ार रुपये मिरज़ा साहब के प्रकाशक की तरफ़ निकले. उन दिनों इलाहाबाद में मिरज़ा साहब को पैसे का कष्ट था. मिरज़ा साहब के दोस्तों ने उन पर बहुत ज़ोर दिया कि वह अपने प्रकाशक को रुपये के लिये लिखें. वह बार बार इनकार करते रहे, इस दलील पर कि रुपया भेजना प्रकाशक का काम है. किसी तरह प्रकाशक को लिखा गया. जवाब नदारद. अदालत जाने के लिये मिरज़ा साहब से कहा गया. उनके लिये यह असम्भव था. नौबत यहां तक पहुंची कि बजाय मिरज़ा साहब को बत्तीस हज़ार देने के प्रकाशक ने उन पर सात सौ रुपये की सूरत में नालिश करदी. अदालत से नोटिस आयी कि आकर पैरवी करो नहीं तो एक तरफ़ा डिगरी हो जायगी. मिरज़ा ने अदालत जाने से इनकार किया. सात सौ की यकतरफ़ा डिगरी हो गई. इलाहाबाद क़ुरक़ी आई. मिरज़ा की एक भैंस और टाइपराइटर नीलाम हो गए. हंसी हंसी सब बरदाश्त कर लिया पर मिरज़ा अपने बत्तीस हज़ार के लिये अदालत नहीं गए.

(2) दूसरी घटना इसके कुछ बाद की है. आर्थिक कष्टों के कारण मिरज़ा साहब ने इलाहाबाद म्युनिसिपैलिटी में टैक्स सुपरिन्टेन्डेन्ट की नौकरी कर ली थी. पंडित जवाहर लाल नेहरू उन दिनों म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन थे. क़ायदा था कि जिस पर टैक्स वाजिब होजाय उसे नोटिस जाय और अगर वह ख़ास तारीख़ तक टैक्स की रक़म जमा न करदे तो पानी काट दिया जाय. इलाहाबाद के तीन ख़ास आदमी इस क़ायदे की ज़द में आगए,—एक पंडित मोतीलाल नेहरू, दूसरे इलाहाबाद हाई कोर्ट के चीफ़ जसटिस सर ग्रिमवुड मीयर्स साहब और तीसरे अंग्रेज़ सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलीस. ज़ाहिर है तीनों ने यह समझ लिया होगा कि म्युनिसिपैलिटी से कोई आएगा और ख़ुद सलाम करके टैक्स की रक़म ले जायगा. मिरज़ा यह कहां करने कराने वाले थे ? तीनों का पानी काट दिया गया, ख़ास कर पंडित मोती लाल नेहरू के पानी कटने पर ख़ासी चर्चा हुई. मिरज़ा इस्तीफ़ा देने को तय्यार हो गये पर अपने उसूल पर डटे रहे. जब तक रक़म उनके दफ़्तर में जमा नहीं हो गई पानी दोबारा जारी नहीं किया गया.

(3) तीसरी घटना इससे भी अधिक महत्व की है. ख़ास ख़ास मुसलमान आलिमों के लिये कुछ मुसलिम रियासतों से वज़ीफ़े बँधे हुए थे. कुछ दोस्तों की कोशिश से मिरज़ा साहब के लिये भी ढाई सौ रुपये माहवार भोपाल से और चारसौ रुपये माहवार हैदराबाद से बँध गए. इतने में गाँधी जी का असहयोग आन्दोलन शुरू हो गया. मिरज़ा

فیصدی رایلٹی طے تھی ۔ معاملہ طے ہوتے وقت مرزا صاحب نے اپنی ضرورت کے انوسار پرکاشک سے سات سو روپیہ پیشگی لے لئے تھے ۔ ہوتے ہوتے رایلٹی کے بتیس ہزار روپئے مرزا صاحب کے پرکاشک کی طرف نکلے ۔ اُن دنوں اِلہ‌آباد میں مرزا صاحب کو پیسے کا کشٹ تھا ۔ مرزا صاحب کے دوستوں نے اُن پر بہت زور دیا کہ وہ اپنے پرکاشک کو روپئے کے لئے لکھیں ۔ وہ بار بار اِنکار کرتے رہے' اِس دلیل پر کہ روپیہ بھیجنا پرکاشک کا کام ہے ۔ کسی طرح پرکاشک کو لکھا گیا ۔ جواب ندارد ۔ عدالت جانے کے لئے مرزا صاحب سے کہا گیا ۔ اُن کے لئے یہ اسمبھو تھا ۔ نوبت یہاں تک پہونچی کہ بجائے مرزا صاحب کو بتیس ہزار دینے کے پرکاشک نے اُن پر سات سو روپئے کی صورت میں نالش کر دی ۔ عدالت سے نوٹس آیا کہ آکر پیروی کرو نہیں تو یک طرفہ ڈگری ہو جائیگی ۔ مرزا نے عدالت جانے سے اِنکار کیا ۔ سات سو کی یک طرفہ ڈگری ہو گئی ۔ اِلہ‌آباد قرقی آئی ۔ مرزا کی ایک بھینس اور ٹایپ رائٹر نیلام ہو گئے ۔ ہنسی ہنسی سب برداشت کر لیا پر مرزا اپنے بتیس ہزار کے لئے عدالت نہیں گئے ۔

(2) دوسری گھٹنا اِس کے کچھ بعد کی ہے ۔ آرتھک کشٹوں کے کارن مرزا صاحب نے اِلہ‌آباد میونسپلٹی میں ٹیکس سپرنٹنڈنٹ کی نوکری کر لی تھی ۔ پنڈت جواہر لال نہرو اُن دنوں میونسپلٹی کے چیرمین تھے ۔ قاعدہ تھا کہ جس پر ٹیکس واجب ہوجائے اُسے نوٹس جائے اور اگر وہ خاص تاریخ تک ٹیکس کی رقم جمع نہ کر دے تو پانی کاٹ دیا جائے ۔ اِلہ‌آباد کے تین خاص آدمی اِس قاعدے کی زد میں آگئے'— ایک پنڈت موتی لال نہرو' دوسرے اِلہ‌آباد ہائی کورٹ کے چیف جسٹس سر گرموڈ میئرس صاحب اور تیسرے انگریز سپرنٹنڈینٹ پولس ۔ ظاہر ہے تینوں نے یہ سمجھ لیا ہوگا کہ میونسپلٹی سے کوئی آئیگا اور خود سلام کر کے ٹیکس کی رقم لے جائیگا ۔ مرزا یہ کہاں کرنے کرانے والے تھے ؟ تینوں کا پانی کاٹ دیا گیا' خاصکر پنڈت موتی لال نہرو کے پانی کٹنے پر خاصی چرچا ہوئی ۔ مرزا اِستیفیٰ دینے کو تیار ہو گئے پر اپنے اُصول پر ڈٹے رہے ۔ جب تک رقم اُن کے دفتر میں جمع نہیں ہوگئی پانی دوبارہ جاری نہیں کیا گیا ۔

(3) تیسری گھٹنا اِس سے بھی ادھک مہتو کی ہے ۔ خاص خاص مسلمان عالموں کے لئے کچھ مسلم ریاستوں سے وظیفے بندھے ہوئے تھے ۔ کچھ دوستوں کی کوشش سے مرزا صاحب کے لئے بھی ڈھائی سو روپئے ماہوار بھوپال سے اور چار سو روپئے ماہوار حیدرآباد سے بندھ گئے ۔ اِتنے میں گاندھی جی کا اسہیوگ آندولن شروع ہو گیا ۔ مرزا

साहब ने नवाब भोपाल और निजाम हैदराबाद दोनों को लिखा कि चूँकि मुल्क ने अंग्रेज सरकार से असहयोग शुरू कर दिया है इसलिये आप कोभी वाजिब है कि आप भी इस असहयोग में शामिल हो जांय और अंग्रेज सरकार को इसकी इत्तला दे दें, और अगर आप ऐसा नहीं करते तो आप से वजीफा लेना मेरे लिए नाजायज़ है. इस पर भी भोपाल और हैदराबाद से मामूल के मुताबिक़ रुपये आए और मिरज़ा साहब ने वापिस कर दिये· सोलह साल तक वज़ीफ़े बन्द रहे. इस बीच मिरज़ा साहब की आर्थिक कठिनाइयाँ दिन दिन बढ़ती गईं. सन् 1935 के लग भग उनके कुछ दोस्तों ने निज़ाम सरकार से कोशिश की कि वजीफ़ा फिर जारी हो जाय. निजाम सरकार ने जवाब दिया कि मिरज़ा अपने सन् 1919 के ख़त को वापिस लेलें तो वजीफ़ा फिर से जारी कर दिया जायगा. मिरज़ा तैयार न हुए. इस पर निज़ाम साहब यहां तक राज़ी हो गए कि अगर मिरज़ा ख़ुद उनके सामने आकर महज़ ज़बानी यह कह दें कि उनका सन् 1919 वाला ख़त रद्द समझा जाय तो इन सोलह बरस की पूरी रक़म भी जो सत्तर हज़ार से ऊपर होती थी उन्हें दे दी जायगी और आइन्दा के लिये भी चार सौ रुपये माहवार जारी हो जांयगे. दादा अबुलफ़ज़ल के दोस्तों ने, जिनमें हम भी शामिल थे, बहुतेरा समझाया पर दादा इसके लिये राज़ी न हुए. उनकी दलील यही थी कि—"वह ख़त देश की आवाज़ पर लिखा गया था, वह वापिस नहीं हो सकता." हमें ख़ूब याद है कि उन दिनों दादा अबुल-फ़ज़ल की आर्थिक कठिनाइयां किस हद को पहुँची हुई थीं. उनकी एक लड़की उन दिनों तपेदिक़ से बीमार थी और दादा के पास उसके इलाज और ख़ूराक के लिये पैसे नहीं थे, पर असूल असूल था !

हाथ से अफ़सोस ! दौरे जिन्दगी जाता रहा,
मौत के हाथों न जाने ख़ून कितनों का हुआ.
कोई जाकर फिर नहीं लौटा कि लाता कुछ ख़बर,
याँ से जाने वालों का अन्जाम आख़िर क्या हुआ.

—उमर ख़ैयाम.

صاحب نے نواب بھوپال اور نظام حیدرآباد دونوں کو لکھا کہ چونکہ ملک نے انگریز سرکار سے اسہیوگ شروع کر دیا ہے اِس لئے آپ کو بھی اِس اسہیوگ میں شامل ہو جائیں اور انگریز سرکار کو اِس کی اطلاع دے دیں' اور اگر آپ اِیسا نہیں کرتے تو آپ سے وظیفہ لینا میرے لئے ناجایز ہے . اِس پر بھی بھوپال اور حیدرآباد سے معمول کے مطابق روپئے آئے اور مرزا صاحب نے واپس کر دیئے . سولہ سال تک وظیفہ بند رہے . اِس بیچ مرزا صاحب کی آرتھک کٹھنائیاں دن دن بڑھتی گئیں . سن 1935 کے لگ بھگ اُن کے کچھ دوستوں نے نظام سرکار سے کوشش کی وظیفہ پھر جاری ہوجائے . نظام سرکار نے جواب دیا کہ مرزا اپنے سن 1919 کے خط کو واپس لے لیں تو وظیفہ پھر سے جاری کر دیا جائیگا . مرزا تیار نہ ہوئے . اِس پر نظام صاحب یہاں تک راضی ہوگئے کہ اگر مرزا خود اُن کے سامنے آکر محض زبانی یہ کہہ دیں کہ اُن کا سن 1919 والا خط رد سمجھا جائے تو اِن سولہ برس کی پوری رقم بھی جو ستر ہزار سے اُوپر ہوتی تھی اُنہیں دے دی جائیگی اور آئندہ کے لئے چار سو روپیہ ماہوار جاری ہو جائینگے . دادا ابوالفضل کو دوستوں نے' جن میں ہم بھی شامل تھے' بہتیرا سمجھایا' پر دادا اِس کے لئے راضی نہ ہوئے . اُن کی دلیل یہی تھی کہ—"وہ خط دیش کی آواز پر لکھا گیا تھا' وہ واپس نہیں ہو سکتا ." ہمیں خوب یاد ہے کہ اُن دنوں دادا ابوالفضل کی آرتھک کٹھنائیاں کس حد کو پہونچی ہوئی تھیں . اُن کی ایک لڑکی اُن دنوں تپ‌دق سے بیمار تھی اور دادا کے پاس اُس کے علاج اور خوراک کے لئے پیسے نہیں تھے' پر اُصول اصول تھا !

ہاتھ سے افسوس ! دور زندگی جاتا رہا'
موت کے ہاتھوں نہ جانے خون کتنوں کا ہوا.
کوئی جاکر پھر نہیں لوٹا کہ لاتا کچھ خبر
یاں سے جانے والوں کا انجام آخر کیا ہوا .

—عمر خیام .

नागा क़ौम और भारत

पंडित सुन्दरलाल

नागा क़ौम

भारत की उत्तर पूरबी सीमा पर आसाम के पास चार स्वाधीन देशों की सरहदें मिलती हैं—भारत, पाकिस्तान, बरमा और चीन. देश की रक्षा के विचार से वह जगह ख़ास मार्के की है, इलाक़ा अधिकतर पहाड़ी है, उसमें बड़े बड़े जंगल हैं जिनमें दूसरे जानवरों के अलावा हाथियों के झुंड के झुंड फिरते रहते हैं. इसी पहाड़ी इलाक़े में नागा क़ौम बसी हुई है. उनकी बहुत सी बस्तियां और गांव दूर दूर तक फैले हुए हैं. यह एक लगातार सिलसिलेवार इलाक़ा है, पर हाल में जब बरमा हिन्दुस्तान से अलग किया गया तो नागा इलाक़े का एक हिस्सा बरमा में आ गया और दूसरा हिस्सा हिन्दुस्तान में रहा. इस तरह अपनी मरजी के ख़िलाफ़ नागा क़ौम दो टुकड़ों में कट कर दो अलग अलग हुकूमतों में आ गई.

जब से भारत आज़ाद हुआ है तब से नागा लोगों के साथ भारत सरकार के कुछ न कुछ झगड़े बराबर चलते रहते हैं. इस समय ये झगड़े एक हद पर पहुँचे हुए हैं. अख़बारों में रोज़ नागा लोगों की "बग़ावत" और भारतीय फ़ौजों द्वारा उनके दबाए जाने की ख़बरें आती रहती हैं.

अभी कुछ साल हुए अपनी चीन यात्रा के बाद हमें भी इस इलाक़े में जाने का मौक़ा मिला, कोहिमा में और कई जगह हम नागा गांवों में गए. हमने नागा लोगों और उनके सरदारों से बातें कीं, उनके स्कूल देखे. उनका खाना पीना, रहन सहन देखा. कोहिमा के नागा स्कूल में हमने भाषण भी दिया. वहां के भारतीय अफ़सरों से भी हमने उस इलाक़े के हालात मालूम किए. अपने ठहरने की जगह पर हमने बहुत से नागा नेताओं और दूसरे नागा लोगों से दिल खोल कर बातें कीं.

नागा क़ौम एक बहुत पुरानी क़ौम है जो आस पास की सभ्य क़ौमों में अपने को कभी पूरी तरह मिला नहीं पाई. उनके अपने रीति रिवाज हैं, अपनी बोली है, अपना पहनावा है, अपने पुराने ढंग के धार्मिक विचार हैं. उन्हें 'जंगली' या 'असभ्य' कहना केवल उन्हीं अर्थों में ठीक हो सकता है जिन अर्थों में योरप के अधिकतर लोग लगभग सब अफ़रीक़ा और एशिया निवासियों को अभी तक जंगली और असभ्य कहते आए हैं.

ناگا قوم اور بھارت

پنڈت سندر لال

ناگا قوم

بھارت کی اُتر پوربی سیما پر آسام کے پاس چار سوادھین دیشوں کی سرحدیں ملتی ہیں—بھارت' پاکستان' برما اور چین ۔ دیش کی رکشا کے وچار سے وہ جگہ خاص معرکے کی ہے' علاقہ ادھکتر پہاڑی ہے' اُس میں بڑے بڑے جنگل ہیں جن میں دوسرے جانوروں کے علاوہ ہاتھیوں کے جھنڈ کے جھنڈ پھرتے رہتے ہیں ۔ اِسی پہاڑی علاقہ میں ناگا قوم بسی ہوئی ہے ۔ اُن کی بہت سی بستیاں اور گاؤں دور دور تک پھیلے ہوئے ہیں. یہ ایک لگاتار سلسلےوار علاقہ ہے' پر حال میں جب برما ہندستان سے الگ کیا گیا تو ناگا علاقے کا ایک حصہ برما میں آگیا اور دوسرا حصہ ہندستان میں رہا ۔ اِس طرح اپنی مرضی کے خلاف ناگا قوم دو ٹکڑوں میں کٹ کر دو الگ الگ حکومتوں میں آگئی ۔

جب سے بھارت آزاد ہوا ہے تب سے ناگا لوگوں کے ساتھ بھارت سرکار کے کچھ نہ کچھ جھگڑے برابر چلتے رہتے ہیں ۔ اِس سمے یہ جھگڑے ایک حد پر پہونچے ہوئے ہیں ۔ اخباروں میں روز ناگا لوگوں کی "بغاوت" اور بھارتیہ فوجوں دوارا اُن کے دبائے جانے کی خبریں آتی رہتی ہیں ۔

ابھی کچھ سال ہوئے اپنی چین یاترا کے بعد ہمیں بھی اِس علاقے میں جانے کا موقع ملا ۔ کوہیما میں اور کئی جگہ ہم ناگا گاؤں میں گئے ۔ ہم نے ناگا لوگوں اور اُن کے سرداروں سے باتیں کیں' اُن کے اِسکول دیکھے ۔ اُن کا کھانا پینا' رہن سہن دیکھا ۔ کوہیما کے ناگا اِسکول میں ہم نے بھاشن بھی دیا ۔ وہاں کے بھارتیہ افسروں سے بھی ہم نے اِس علاقے کے حالات معلوم کئے ۔ اپنے ٹھہرنے کی جگہ پر ہم نے بہت سے ناگا نیتاؤں اور دوسرے ناگا لوگوں سے دل کھول کر باتیں کیں ۔

ناگا قوم ایک بہت پرانی قوم ہے جو آس پاس کی سبھیہ قوموں میں اپنے کو کبھی پوری طرح ملا نہیں پائی ۔ اُن کے اپنے ریت رواج ہیں' اپنی بولی ہے' اپنا پہناوا ہے' اپنے پرانے ڈھنگ کے دھارمک وچار ہیں ۔ اُنھیں 'جنگلی' یا 'اسبھیہ' کہنا کیول اُنھیں ارتھوں میں ٹھیک ہوسکتا ہے جن ارتھوں میں یورپ کے ادھکتر لوگ لگ بھگ سب افریقہ اور ایشیا نواسیوں کو ابھی تک جنگلی اور اسبھیہ کہتے آئے ہیں ۔

मालूम होता है पिछले दो हजार साल में भारत के शासकों ने कभी भी नागा क़ौम को अपनाने, उनकी आर्थिक हालत को सुधारने या उनमें तालीम फैलाने की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया. अंगरेज़ी जमाने में सब से पहले यह काम योरप और अमरीका के ईसाई पादरियों को सूझा. इसमें कोई शक नहीं कि अधिकतर ईसाई पादरियों ने उस इलाक़े में बहुत अच्छा काम किया. लगभग 40 फ़ीसदी नागा ईसाई हैं. आज नागा लोगों में तालीम का थोड़ा बहुत प्रचार है. उनमें बहुत से ग्रेजुएट हैं. हमने बहुत से नागा ग्रेजुएटोंसे बातें की हैं. आज नागा क़ौम एक काफ़ी संगठित यानी मुनज़्ज़म क़ौम है, उनमें आज़ादी से काफ़ी प्रेम है. वह बहादुर हैं. उनमें त्याग का माद्दा है. वे बहुत बड़े मेहमान नवाज़ हैं, सीधे सरल और सच्चे हैं. राजकाज और हुकूमतों के उसूलों को भी वे काफ़ी समझते हैं. उनमें कई ऐसे गुण हैं जो अधिक सभ्य समझे जाने वाले आस पास के और लोगों में नहीं मिलते. मसलन् हमने वहां की अदालतों के हिन्दुस्तानी अफ़सरों से मालूम किया कि किसी नागा के बयान के ख़िलाफ़ कभी गवाही नहीं ली जाती, क्योंकि कोई नागा कभी झूठ नहीं बोलता. अगर कोई नागा किसी का सिर काट के आएगा तो जहां भी ज़रूरत पड़ेगी वह साफ़ साफ़ कह देगा कि उसने ऐसा किया और अपने वैसा करने का कारण भी बता देगा.

इसमें भी कोई शक नहीं कि नागा लोगों को तालीम देने और ऊपर उठाने में सबसे बड़ा हिस्सा ईसाई पादरियों ने ही लिया है, फिर भी ईसाई नागों और ग़ैर ईसाई नागों में हमने बहुत अच्छा व्यवहार पाया. ईसाई होजाने के कारण उन्होंने अपनी क़ौम के बुनियादी गुण मिटने नहीं दिये.

नागा और अंगरेज़

अंगरेज़ी जमाने में अंगरेज़ों ने नागा लोगों को एक अधूरी आज़ादी दे रखी थी. अंगरेज़ हाकिम नागा लोगों के रीति रिवाजों, उनकी अपनी पंचायतों में किसी तरह का दख़ल नहीं देते थे. उनके आपसी झगड़ों में उनकी पंचायतों के फ़ैसले होते थे. अंगरेज़ों की वहां छावनियां थीं और यही उस देश को अपनी तरफ़ मिलाए रखने से उनकी ख़ास ग़रज़ थी. फिर भी अंगरेज़ों की उस अधूरी गुलामी से अपने को आज़ाद करने की नागा बराबर कोशिश करते रहे. लड़ाइयां भी होती रहीं. अंगरेज़ों के लिए वह इलाक़ा एक तरह से 'बफ़र' इलाक़ा था, यानी ऐसा सरहदी इलाक़ा जिससे किसी पास के आज़ाद देश के साथ लड़ाई छिड़ने पर फ़ायदा उठाया जा सके. दूसरे महायुद्ध के आख़ीर में कोहिमा और इमफल की लड़ाइयां दुनिया भर में प्रसिद्ध हो चुकी हैं. उनका हाल भी हमने वहां खूब सुना. पर वह

معلوم هوتا هے پچھلے دو هزار سال میں بھارت کے شاسکوں نے کبھی بھی ناگا قوم کو اپنانے' اُن کی آرتھک حالت کو سدھارنے یا اُن میں تعلیم پھیلانے کی اور ادھک دھیان نہیں دیا. انگریزی زمانے میں سب سے پہلے یہ کام یورپ اور امریکہ کے عیسائی پادریوں کو سوجھا. اِس میں کوئی شک نہیں کہ ادھکتر عیسائی پادریوں نے اِس علاقے میں بہت اچھا کام کیا. لگ بھگ 40 فیصدی ناگا عیسائی هیں. آج ناگا لوگوں میں تعلیم کا تھوڑا بہت پرچار هے. اُن میں بہت سے گریجوئیٹ هیں. هم نے بہت سے ناگا گریجوئیٹوں سے باتیں کی هیں. آج ناگا قوم ایک کافی سنگٹھت یعنی منظم قوم هے. اُن میں آزادی سے کافی پریم هے. وہ بہادر هیں. اُن میں تیاگ کا مادہ هے. وے بہت بڑے مہماں‌نواز هیں. سیدھے' سرل اور سچے هیں. راجکاج اور حکومت کے اُصولوں کو بھی وے کافی سمجھتے هیں. اُن میں کئی ایسے گن هیں جو ادھک سبھیہ سمجھے جانے والے آس پاس کے اور لوگوں میں نہیں ملتے. مثلاً هم نے وهاں کی عدالتوں کے هندستانی افسروں سے معلوم کیا کہ کسی ناگا کے بیان کے خلاف کبھی گواهی نہیں لی جاتی' کیونکہ کوئی ناگا کبھی جھوٹ نہیں بولتا. اگر کوئی ناگا کسی کا سر کاٹ کے آئیگا تو جہاں بھی ضرورت پڑیگی وہ صاف صاف کہ دیگا کہ اُس نے ایسا کیا اور اپنے ویسا کرنے کا کارن بھی بتا دیگا.

اِس میں بھی کوئی شک نہیں کہ ناگا لوگوں کو تعلیم دینے اور اُوپر اُٹھانے میں سب سے بڑا حصہ عیسائی پادریوں نے هی لیا هے. پھر بھی عیسائی ناگوں اور غیر عیسائی ناگوں میں هم نے بہت اچھا ویوهار پایا. عیسائی هوجانے کے کارن اُنہوں نے اپنی قوم کے بنیادی گن مٹنے نہیں دیئے.

ناگا اور انگریز

انگریزی زمانے میں انگریزوں نے ناگا لوگوں کو ایک ادھوری آزادی دے رکھی تھی. انگریز حاکم ناگا لوگوں کے ریت‌رواجوں' اُن کی اپنی پنچایتوں میں کسی طرح کا دخل نہیں دیتے تھے. اُن کے آپسی جھگڑوں میں اُن کی پنچایتوں کے فیصلے آخری فیصلے هوتے تھے. انگریزوں کی وهاں چھاؤنیاں تھیں اور یہی اُس دیش کو اپنی طرف ملائے رکھنے سے اُن کی خاص غرض تھی. پھر بھی انگریزوں کی اُس ادھوری غلامی سے اپنے کو آزاد کرنے کی ناگا برابر کوشش کرتے رهے. لڑائیاں بھی هوتی رهیں. انگریزوں کے لئے وہ علاقہ ایک طرح سے' بفر' علاقہ تھا' یعنی ایسا سرحدی علاقہ جس سے کسی پاس کے آزاد دیش کے ساتھ لڑائی چھڑنے پر فایدہ اُٹھایا جاسکے. دوسرے مہایدھ کے آخیر میں کوهیما اور اِمپھل کی لڑائیاں دنیا بھر میں پرسدھ هوچکی هیں. اُن کا حال بھی هم نے وهاں خوب سنا. پر وہ

एक दूसरी लम्बी कहानी है. उन लड़ाइयों का हाल वहां के लोगों से सुनकर नागा लोगों के साथ हमारा प्रेम और हमारे दिल में उनके लिए आदर बढ़ा.

भारत वासियों से असन्तोष

भारत के आज़ाद हो जाने पर यह आशा की जाती थी कि भारत वासियों और नागा लोगों में प्रेम बढ़ेगा जिससे दोनों को लाभ होगा; पर हुआ इसका ठीक उलटा. हमने इसका कारण जानने की भी कोशिश की. दो कारण हमें साफ़ दिखाई दिये.

पहला और बड़ा कारण यह था कि भारत की आज़ादी से पहले अधिकतर अंगरेज़ अफ़सर ही उस इलाक़े में जाया करते थे, हिन्दुस्तानी बहुत कम जाते थे, जो जाते थे वह भी एक मातहत रूप में. नागा लोग लगभग सब मांसाहारी हैं. उनका देश एक ठंडा देश है. केवल खेती की पैदावार से शायद उनका काम भी आसानी से नहीं चल सकता, मांस खाने में वे एक जानवर और दूसरे जानवर में किसी तरह का फ़रक़ भी नहीं करते. उनके लिए गाय और सूअर बराबर हैं. नागा लोग बहुत होशियार शिकारी होते हैं. सर्दियों भर खाने के लिए वे सैकड़ों मन जंगली जानवरों का गोश्त सुखा सुखा कर और नमक लगा कर अपने घरों में रख लेते हैं.

नागा आम तौर पर ताड़ी या शराब का भी इस्तेमाल करते हैं, सोम की पत्ती, जिसका वेदों में ज़िक्र आता है, हमने पहले पहल नागा इलाक़े में ही देखी. नागा लोग सोम रस खूब पीते हैं, वे बहुत मज़बूत होते हैं. जिस्मानी मेहनत जितनी वे कर सकते हैं आम तौर पर भारत के दूसरे हिस्से के लोग नहीं कर सकते.

जबतक अंगरेज़ हाकिम वहां जाते रहे खान पान आदि की इन आदतों के कारण नागाओं में और उनमें खासी बनती रही. कम से कम इस मामले में दोनों में से किसी को दूसरे से नफ़रत का कोई कारण न था. पर हमारी आज़ादी के बाद जब हिन्दू या मुसलमान हाकिम उस इलाक़े में जाने लगे तो एक नई बात पैदा हुई. हिन्दू अफ़सरों ने नागा लोगों से इसलिए घृणा दिखाना शुरू किया चूँकि नागा गो मांस खाते थे. नागा हाई स्कूल के हिन्दू अध्यापक इसी कारण नागा बच्चों को अपनी सुराही को हाथ नहीं लगाने देते थे. नागा घरों में जाना या उनके हाथ का भोजन स्वीकार करना तो हिन्दुओं के लिए कहां सम्भव था? अपनी नफ़रत छिपाने की न उनमें तमीज़ थी और न इच्छा. इसी तरह मुसलमान अफ़सर उनसे इसलिए नफ़रत करते थे कि वे सूअर का मांस खा लेते थे. नतीजा क़ुदरती था कि नफ़रतें बढ़ती और चमकती चली गईं. यह था भारत वासियों और नागा लोगों में ग़ैरियत के बढ़ने का सबसे पहला कारण.

ایک دوسری لمبی کہانی ھے . اُن لڑائیوں کا حال وھاں کے لوگوں سے سنکر ناگا لوگوں کے ساتھ ھمارا پریم اور ھمارے دل میں اُن کے لئے آدر بڑھا .

بھارت واسیوں سے اسنتوش

بھارت کے آزاد ھوجانے پر یہ آشا کی جاتی تھی کہ بھارت واسیوں اور ناگا لوگوں میں پریم بڑھیگا جس سے دونوں کو لابھ ھوگا' پر ھوا اِس کا ٹھیک اُلٹا . ھم نے اِس کا کارن جاننے کی بھی کوشش کی . دو کارن ھمیں صاف دکھائی دیئے .

پہلا اور بڑا کارن یہ تھا کہ بھارت کی آزادی سے پہلے ادھکتر انگریز افسر ھی اُس علاقے میں جایا کرتے تھے' ھندستانی بہت کم جاتے تھے' جو جاتے تھے وہ بھی ایک ماتحت روپ میں . ناگا لوگ لگ بھگ سب مانساھاری ھیں . اُن کا دیش ایک ٹھنڈا دیش ھے . کیول کھیتی کی پیداوار سے شاید اُن کا کام بھی آسانی سے نہیں چل سکتا . مانس کھانے میں وے ایک جانور اور دوسرے جانور میں کسی طرح کا فرق بھی نہیں کرتے . اُن کے لئے گائے اور سور برابر ھیں . ناگا لوگ بہت ھوشیار شکاری ھوتے ھیں . سردیوں بھر کھانے کے لئے وے سیکڑوں من جنگلی جانوروں کا گوشت سکھا سکھاکر اور نمک لگاکر اپنے گھروں میں رکھ لیتے ھیں .

ناگا عام‌طور پر تاڑی یا شراب کا بھی اِستعمال کرتے ھیں . سوم کی پتی' جس کا ویدوں میں ذکر آتا ھے' ھم نے پہلے پہل ناگا علاقے میں ھی دیکھی . ناگا لوگ سوم رس خوب پیتے ھیں . وے بہت مضبوط ھوتے ھیں . جسمانی محنت جتنی وے کرسکتے ھیں عام‌طور پر بھارت کے دوسرے حصوں کے لوگ نہیں کرسکتے .

جب تک انگریز حاکم وھاں جاتے رھے کھان پان آدی کی اِن عادتوں کے کارن ناگاؤں میں اور اُن میں خاصی بنتی رھی . کم سے کم اِس معاملہ میں دونوں میں سے کسی کو دوسرے سے نفرت کا کوئی کارن نہ تھا . پر ھماری آزادی کے بعد جب ھندو یا مسلمان حاکم اُس علاقے میں جانے لگے تو ایک نئی بات پیدا ھوئی . ھندو افسروں نے ناگا لوگوں سے اِس لئے گھرنا دکھانا شروع کیا چونکہ ناگا گو مانس کھاتے تھے . ناگا ھائی اِسکول کے ھندو ادھیاپک اِسی کارن ناگا بچوں کو اپنی صراحی کو ھاتھ نہیں لگانے دیتے تھے . ناگا گھروں میں جانا یا اُن کے ھاتھ کا بھوجن سوئیکار کرنا تو ھندوؤں کے لئے کہاں سمبھو تھا ؟ اپنی نفرت چھپانے کی نہ اُن میں تمیز تھی اور نہ اِچھا . اِسی طرح مسلمان افسر اُن سے اِس لئے نفرت کرتے تھے کہ وے سور کا مانس کھالیتے تھے . نتیجہ قدرتی تھا کہ نفرتیں بڑھتی اور چمکتی چلی گئیں . یہ تھا بھارت واسیوں اور ناگا لوگوں میں غیریت کے بڑھنے کا سب سے پہلا کارن .

दूसरा कारण जो इसी से सम्बन्ध रखता है यह था कि कुछ विदेशी खासकर अमरीकी पादरियों ने, जो शायद अपने यहां की सरकार के छिपे दबे एजेन्ट भी थे, इस हालत से बेजा फ़ायदा उठाने की कोशिश की. उन्होंने नागा लोगों को समझाया कि तुम्हारी कभी भी इन हिन्दू और मुसलमानों से नहीं बन सकती, जबकि हम और तुम इन मामलों में बिलकुल एक हैं और अच्छी तरह मिल कर रह सकते है. हमारे वहां जाने से थोड़े ही दिनों पहले इस तरह की अमरीकी साज़िशें हद को पहुँच चुकी थीं. हमने अमरीकी पादरियों से भी बातें कीं. बात क़ुदरती थी. जहां घाव होगा वहीं मक्खी बैठेगी.

हम ख़ुद शुद्ध निरामिष भोजी हैं. नागा इलाक़े में भी हम शुद्ध निरामिष भोजी रहे. लेकिन हमने उनसे परहेज़ की जगह प्रेम बरता. उनके उन्हीं मांस खाने वाले हाथों से हमने उनसे पानी लेकर पिया और उनके घर के बने हुए खाने, जो हम खा सकते थे, उनसे लेकर खाए. नागा लोगों और उनके ईसाई ग्रेजुएटों ने हमारे ठहरने के स्थान पर आ आकर आंसू बहा बहाकर हमसे कहा है कि अगर उनके साथ इस तरह का बरताव किया जाता तो नागा इलाक़े को अलग करने की तहरीक कभी भी पैदा नहीं हो सकती थी. वहां से आकर आसाम के और दिल्ली के जिन हाकिमों से हमें मिलने का मौक़ा मिला उन्हें हमने यह सलाह दी कि हमारी राय में कोई ऐसा हिन्दू या मुसलमान, फ़ौजी या शहरी अफ़सर या अध्यापक उस इलाक़े में नहीं भेजा जाना चाहिए जो छुआ छूत बरतता हो या जो भले, नेक और बहादुर नागा लोगों को हिन्दू धर्म या इसलाम में लाने के चक्कर में हो. पर ज़ाहिर है कि हमारी आवाज़ नक्क़ारखाने में तूती की आवाज़ थी, या ऊपर के हाकिम ख़ुद अपने नीचे वालों को क़ाबू में रखने में नाकाम रहे.

भारत से जो अफ़सर उस अभागे इलाक़े में जाते रहे हैं उनमें से बहुत सों की योग्यता और सदाचार के ख़िलाफ़ भी काफ़ी बातें सुनने में आई हैं.

नागा इलाक़े का स्वाधीनता आन्दोलन बढ़ता जा रहा है. उस आन्दोलन की बाबत तरह तरह की ग़लत फ़हमियां देश भर में फैली हुई हैं और रोज़ अख़बारों में निकलती रहती हैं. असलीयत कम सामने आ पाती है. हाल में "टाइम्स आफ़ इंडिया" के 13 मई के अंक में श्री हरीश चन्दोला का एक लेख निकला है जिससे नागा इलाक़े के असली हालात पर काफ़ी रोशनी पड़ती है.

हिन्दू साम्प्रदायिकता

श्री चन्दोला के अनुसार भी एक बड़ा कारण इस झगड़े के बढ़ने का बहुत से हिन्दू अफ़सरों और हिन्दू अध्यापकों में हिन्दुत्व की बेजा भावना थी. वे ईसाई धर्म को एक विदेशी

دوسرا کارن جو اِسی سے سمبندھ رکھتا ہے یہ تھا کہ کچھ ودیشی خاصکر امریکی پادریوں نے، جو شاید اپنے یہاں کی سرکار کے چھپے دبے ایجینٹ بھی تھے، اِس حالت سے بیجا فایدہ اُٹھانے کی کوشش کی۔ اُنھوں نے ناگا لوگوں کو سمجھایا کہ تمھاری کبھی بھی اِن ہندو اور مسلمانوں سے نہیں بن سکتی، جبکہ ہم اور تم اِن معاملوں میں ایک ہیں اور اچھی طرح مل کر رہ سکتے ہیں۔ ہمارے وہاں جانے سے تھوڑے ہی دنوں پہلے اِس طرح کی امریکی سازشیں حد کو پہونچ چکی تھیں۔ ہم نے امریکی پادریوں سے بھی باتیں کیں۔ بات قدرتی تھی۔ جہاں گھاؤ ہوگا وہیں مکھی بیٹھیگی۔

ہم خود شدھ نرامش بھوجی ہیں۔ ناگا علاقے میں بھی ہم شدھ نرامش بھوجی رہے۔ لیکن ہم نے اُن سے پرہیز کی جگہ پریم برتا۔ اُن کے اِنھیں مانس کھانے والے ہاتھوں سے ہم نے اُن سے پانی لیکر پیا اور اُن کے گھر کے بنے ہوئے کھانے، جو ہم کھا سکتے تھے، اُن سے لیکر کھائے۔ ناگا لوگوں اور اُن کے عیسائی گریجوئیٹوں نے ہمارے ٹھہرنے کے استھان پر آ آ کر آنسو بہا بہا کر ہم سے کہا ہے کہ اگر ان کے ساتھ اِس طرح کا برتاؤ کیا جاتا تو ناگا علاقے کو الگ کرنے کی تحریک کبھی بھی پیدا نہیں ہو سکتی تھی۔ وہاں سے آکر آسام کے اور دلی کے جن حاکموں سے ہمیں ملنے کا موقع ملا اُنھیں ہم نے یہ صلاح دی کہ ہماری رائے میں کوئی ایسا ہندو یا مسلمان، فوجی یا شہری افسر یا ادھیاپک اُس علاقے میں نہیں بھیجا جانا چاہئے جو چھوا چھوت برتتا ہو یا جو بھولے، نیک اور بہادر ناگا لوگوں کو ہندو دھرم یا اسلام میں لانے کے چکر میں ہو۔ پر ظاہر ہے کہ ہماری آواز نقار خانے میں طوطی کی آواز تھی یا اُوپر کے حاکم خود اپنے نیچے والوں کو قابو میں رکھنے میں ناکام رہے۔

بھارت سے جو افسر اُس ابھاگے علاقے میں جاتے رہے ہیں اُن میں سے بہت سوں کی یوگیتا اور سداچار کے خلاف بھی کافی باتیں سننے میں آئی ہیں۔

ناگا علاقے کا سوادھینتا آندولن بڑھتا جا رہا ہے۔ اُس آندولن کی بابت طرح طرح کی غلط فہمیاں دیش بھر میں پھیلی ہوئی ہیں اور روز اخباروں میں نکلتی رہتی ہیں۔ اصلیت کم سامنے آپاتی ہے۔ حال میں "ٹائمس آف اِنڈیا" کے 13 مئی کے انک میں شری ہریش چندولا کا ایک لیکھ نکلا ہے جس سے ناگا علاقے کے اصلی حالات پر کافی روشنی پڑتی ہے۔

ہندو سامپردایکتا

شری چندولا کے انوسار بھی ایک بڑا کارن اِس جھگڑے کے بڑھنے کا بہت سے ہندو افسروں اور ہندو ادھیاپکوں میں ہندتو کی بیجا بھاونا تھی۔ وے عیسائی دھرم کو ایک ودیشی

धर्म और सब ईसाइयों को ग़ैर समझते थे और 'हिन्दुस्तान हिन्दुओं का' के संकीर्ण विचार में कम या अधिक रंगे हुए थे. हमें इसका ख़ुद काफ़ी तजरबा है. हमें मालूम है कि गोआ के मामले को अधिक पेचीदा बनाने में भी कुछ संकीर्ण विचार भारत वासियों की इस भावना ने बहुत बड़ा हिस्सा लिया है. हमें इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस समय इस देश का सब से बड़ा रोग, जिसने कशमीर में, नागा इलाक़े में, गोआ में और जगह जगह कठिनाइयां पैदा की हैं और करता रहता है, साम्प्रदायिकता का रोग है. महात्मा गाँधी के बलिदान के बाद भी देश इस रोग से पूरी तरह छुटकारा नहीं पा सका.

सन् 1948 का समझौता

नागा लोग शुरू में भारत से अलग होना नहीं चाहते थे. जितना नागा इलाक़ा इस समय भारत के अन्दर है वह तीन टुकड़ों में बँटा हुआ है—तिरप और त्वेनसांग की डिवीजनें जो उत्तर पूर्व सरहद्दी एजेंसी में शामिल हैं और नागा पहाड़ी जिला जो आसाम में शामिल है. सन् 1948 में आसाम के गवर्नर सर अकबर हैदरी और नागा नेशनल काउन्सिल के बीच एक समझौता हो गया था जिसपर दोनों तरफ़ के दस्तख़त हो गए थे. समझौता यह था कि इन तीनों नागा इलाक़ों को मिलाकर एक कर दिया जाए और उस पूरी नागा रियासत को ठीक वही अधिकार दे दिए जायें जो पास की मनीपुर और त्रिपुरा रियासतों को मिले हुए हैं. नागा लोग इस शर्त पर ख़ुशी से इंडियन यूनियन में रहने को तैयार थे लेकिन समझौते के थोड़े दिनों बाद ही कुछ सोचकर आसाम सरकार और दिल्ली सरकार दोनों ने उसे मानने से इनकार कर दिया. श्री हरीश चंदोला का कहना है कि इस बाज़ाब्ता समझौते को तोड़ने का कोई कारण नहीं बताया गया.

भारत का विधान और नागा

इससे नागा लोगों में बेऐतबारी और बददिली का फैलना क़ुदरती था. वे फिर भी धीरज के साथ भारत के नये विधान का इन्तज़ार करते रहे. सन् 1950 के नये विधान ने उन की रही सही आशाओं पर भी पानी फेर दिया. तीनों नागा इलाक़े एक दूसरे से अलग रखे गए, उन्हें मिलाने के बजाय नागा पहाड़ी जिले की एक जिला काउन्सिल बना दी गई जिसके सिपुर्द उस जिले का शासन कर दिया गया. इस जिला काउन्सिल के मेम्बर चुनने का अधिकार नागाओं को दिया गया. लेकिन नागा लोग अपने देश का प्रबन्ध सदियों से एक अजीब ढंग से करते आए हैं. उनका सारा शासन गांव पंचायतों के आधार पर है. हर गांव में उनकी अलग अलग पंचायतें हैं; हर पंचायत अपने इलाक़े का पूरा शासन

دھرم اور سب عیسائیوں کو غیر سمجھتے تھے اور 'ہندوستان ہندوؤں کا' کے سنکیرن وچار میں کم یا ادھک رنگے ہوئے تھے۔ ہمیں اِس کا خود کافی تجربہ ہے۔ ہمیں معلوم ہے کہ گوآ کے معاملے کو ادھک پیچیدہ بنانے میں بھی کچھ سنکیرن وچار بھارت واسیوں کی اِس بھاؤنا نے بہت بڑا حصہ لیا ہے۔ ہمیں اِس میں کوئی سندیہہ نہیں کہ اِس سمئے اِس دیش کا سب سے بڑا روگ، جس نے کشمیر میں، ناگا علاقے میں، گوآ میں اور جگہ جگہ کٹھنائیاں پیدا کی ہیں اور کرتا رہتا ہے سامپردایکتا کا روگ ہے۔ مہاتما گاندھی کے بلیدان کے بعد بھی دیش اِس روگ سے پوری طرح چھٹکارا نہیں پا سکا۔

سن 1948 کا سمجھوتہ

ناگا لوگ شروع میں بھارت سے الگ ہونا نہیں چاہتے تھے۔ جتنا ناگا علاقہ اِس سمئے بھارت کے اندر ہے وہ تین ٹکڑوں میں بٹا ہوا ہے—تیرپ اور توینسانگ کی ڈویزنیں جو اُتر پوروی سرحدی ایجینسی میں شامل ہیں اور ناگا پہاڑی ضلع جو آسام میں شامل ہے۔ سن 1948 میں آسام کے گورنر سر اکبر حیدری اور ناگا نیشنل کاؤنسل کے بیچ ایک سمجھوتہ ہو گیا تھا جس پر دونوں طرف کے دستخط ہوگئے تھے۔ سمجھوتہ یہ تھا کہ اِن تینوں ناگا علاقوں کو ملا کر ایک کر دیا جائے اور اُس پوری ناگا ریاست کو ٹھیک وہی ادھیکار دے دئے جائیں جو پاس کی منی پور اور تریپورا ریاستوں کو ملے ہوئے ہیں۔ ناگا لوگ اِس شرط پر خوشی سے اِنڈین یونین میں رہنے کو تیار تھے لیکن سمجھوتے کے تھوڑے دنوں بعد ہی کچھ سوچ کر آسام سرکار اور دلی سرکار دونوں نے اُسے ماننے سے اِنکار کر دیا۔ شری ہریش چندولا کا کہنا ہے کہ اِس باضابطہ سمجھوتے کو توڑنے کا کوئی کارن نہیں بتایا گیا۔

بھارت کا ودھان اور ناگا

اِس سے ناگا لوگوں میں بےاعتباری اور بددلی کا پھیلنا قدرتی تھا۔ وے پھر بھی دھیرج کے ساتھ نئے ودھان کا انتظار کرتے رہے۔ سن 1950 کے نئے ودھان نے اُن کی رہی سہی آشاؤں پر بھی پانی پھیر دیا۔ تینوں ناگا علاقے ایک دوسرے سے الگ رکھے گئے۔ اُنہیں ملانے کے بجائے ناگا پہاڑی ضلع کی ایک ضلع کاؤنسل بنا دی گئی جس کے سپرد اُس ضلع کا شاسن کر دیا گیا۔ اِس ضلع کاؤنسل کے ممبر چننے کا ادھیکار ناگاؤں کو دیا گیا۔ لیکن ناگا لوگ اپنے دیش کا پربندھ صدیوں سے ایک عجیب ڈھنگ سے کرتے آئے ہیں۔ اُن کا سارا شاسن گاؤں پنچایتوں کے آدھار پر ہے۔ ہر گاؤں میں اُن کی الگ الگ پنچایتیں ہیں۔ ہر پنچایت اپنے علاقے کا پورا شاسن

चलाती है. ये सब पंचायतें बहुत प्रेम के साथ मिलकर रहती और काम करती हैं, लेकिन कोई एक मरकज़ी ताक़त इन सब पर हुक्म चलाने वाली वहाँ कभी नहीं रही नागा लोगों को न यह पसन्द है और न इस की ज़रूरत मालूम होती है. दूसरी पुरानी क़ौमों की तरह वे शक्ति या अधिकार को एक आदमी या संस्था के हाथ में दे देना नहीं चाहते, उसे बाँटकर और फैलाकर रखना पसन्द करते हैं. सच्ची लोकशाही (डेमोक्रेसी) के यह चीज़ ज़ियादह नज़दीक मालूम होती है. नई ज़िला काउन्सिल उन्हें अपनी इन पंचायतों के अधिकारों पर बहुत बड़ा हम-ला दिखाई दी. क़ुदरती तौ रपर नागा क़ौम के सब लोगों ने ज़िला काउन्सिल के चुनाव का बायकाट किया. ज़ाहिर है कि हमने उनके लिए विधान बनाने से पहले उन्हें प्रेम और सहानुभूति के साथ समझने की कोशिश नहीं की. उनके चुनाव के बायकाट को हमने भारत के साथ "बग़ावत" समझा, अपनी उच्चता के झूठे घमन्ड में हमने उनके आन्तरिक शासन और रीति रिवाजों में भी बेजा दख़ल देना शुरू किया. नफ़रत और अविश्वास बढ़ता चला गया. आख़िर नागा लोगों ने तय कर लिया कि सिवाय एक अलग स्वाधीन रियासत के और किसी तरह वे अपने सैकड़ों बरस के विचारों, रीत रिवाजों और अपनी कलचर को क़ायम नहीं रख सकते.

नागा लोग इसपर भी यही चाहते रहे कि वे शान्ति के साथ बात चीत करके सब मामलों को तय कर लें.

उन्होंने बार बार चाहा कि उन्हें अपने विचार भारत सरकार के सामने रखने का मौक़ा दिया जावे, पर उनकी सुनाई न हो सकी.

श्री जवाहरलाल नहरू की कोहिमा यात्रा

नागा लोगों ने सोचा कि अगर प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नहरू एक बार उनकी बात सुन लें तो उनके सब दुख दूर हो जायें. मार्च सन् 1953 में जवाहर लाल जी के उस इलाक़े में जाने की ख़बर फैली. नागा लोग बहुत ख़ुश थे. उन्होंने इसे अपने लिए बहुत बड़ा मौक़ा समझा. 31 मार्च को जवाहरलाल जी कोहिमा पहुँचने वाले थे. नागा नेशनल काउन्सिल ने इस ख़बर को अपने एक एक गांव तक पहुंचा दिया. दूर दूर के गांव से लगभग चौदह हज़ार नागा कई कई दिन तक पहाड़ों और जंगलों का सफ़र करके भारत के प्रधान मंत्री का स्वागत करने के लिए कोहिमा में जमा हुए. वे सब अपने अच्छे से अच्छे लिबास में थे. हरेक के हाथों में उनके जंगलों, खेतों और सीधी सादी दस्तकारियों की इस तरह की सुन्दर चीज़ें थीं जो वह जवाहरलाल जी को भेंट करना चाहते थे. क़तार बांधे, ख़ुशी से भरे हुए वे सड़क के दोनों तरफ़ खड़े थे. लगभग यह सब अपने अपने गांव या बिरादरी के मुखिया थे. वे जवाहरलाल जी को अपने

چلاتی ہے ۔ یہ سب پنچایتیں بہت پریم کے ساتھ ملکر رہتی اور کام کرتی ہیں، لیکن کوئی ایک مرکزی طاقت اِن سب پر حکم چلانے والی وہاں کبھی نہیں رہی ۔ ناگا لوگوں کو نہ یہ پسند ہے اور نہ اِس کی ضرورت معلوم ہوتی ہے ۔ دوسری پرانی قوموں کی طرح وے شکتی و ادھیکار کو ایک آدمی یا سنستھا کے ہاتھ میں دینا نہیں چاہتے، اُسے بانٹ کر اور پھیلا کر رکھنا پسند کرتے ہیں ۔ سچی لوک شاہی (ڈیمو کریسی) کے یہ چیز زیادہ نزدیک معلوم ہوتی ہے ۔ نئی ضلع کاؤنسل اُنہیں اپنی اِن پنچایتوں کے ادھیکاروں پر بہت بڑا حملہ دکھائی دی ۔ قدرتی طور پر ناگا قوم کے سب لوگوں نے ضلع کاؤنسل کے چناؤ کا بائکاٹ کیا ۔ ظاہر ہے کہ ہم نے ان کے لئے ودھان بنانے سے پہلے اُنہیں پریم اور سہانوبھوتی کے ساتھ سمجھنے کی کوشش نہیں کی ۔ اُن کے چناؤں کے بائکاٹ کو ہم نے بھارت کے ساتھ "بغاوت" سمجھا ۔ اپنی اُوچتا کے جھوٹے گھمنڈ میں ہم نے اُن کے آنترک شاسن اور ریت رواجوں میں بھی بیجا دخل دینا شروع کیا ۔ نفرت اور اوشواس بڑھتا چلا گیا ۔ آخر ناگا لوگوں نے طے کر لیا کہ سوائے ایک الگ سوادھین ریاست کے اور کسی طرح وے اپنے سیکڑوں برس کے وچاروں، ریت رواجوں اور اپنی کلچر کو قایم نہیں رکھ سکتے ۔

ناگا لوگ اِس پر بھی یہی چاہتے رہے کہ وے شانتی کے ساتھ بات چیت کر کے سب معاملوں کو طے کر لیں ۔

اُنھوں نے بار بار چاہا کہ اُنہیں اپنے وچار بھارت سرکار کے سامنے رکھنے کا موقع دیا جاوے، پر اُن کی سنائی نہ ہو سکی ۔

شری جواہر لال نہرو کی کوہیما یاترا

ناگا لوگوں نے سوچا کہ اگر پردھان منتری شری جواہر لال نہرو ایکبار اُن کی بات سن لیں تو اُن کے سب دکھ دور ہو جائیں. مارچ سن 1953 میں جواہر لال جی کے اُس علاقے میں جانے کی خبر پھیلی ۔ ناگا لوگ بہت خوش تھے ۔ اُنھوں نے اِسے اپنے لئے بڑا موقع سمجھا ۔ 31 مارچ کو جواہر لال جی کوہیما پہونچنے والے تھے ۔ ناگا نشنل کاؤنسل نے اِس خبر کو اپنے ایک ایک گاؤں تک پہونچا دیا ۔ دور دور کے گاؤں سے لگ بھگ چودہ ہزار ناگا کئی کئی دن تک پہاڑوں اور جنگلوں کا سفر کر کے بھارت کے پردھان منتری کا سواگت کرنے کے لئے کوہیما میں جمع ہوئے ۔ وے سب اپنے اچھے سے اچھے لباس میں تھے ۔ ہر ایک کے ہاتھوں میں اُن کے جنگلوں، کھیتوں اور سیدھی سادی دستکاریوں کی اِس طرح کی سندر چیزیں تھیں جو وہ جواہرلال جی کو بھینٹ کرنا چاہتے تھے. قطار باندھے، خوشی سے بھرے ہوئے وے سڑک کے دونوں طرف کھڑے تھے. لگ بھگ یہ سب اپنے اپنے گاؤں یا برادری کے مکھیا تھے ۔ وے جواہر لال جی کو اپنے

मेहमान के रूप में देखते थे और नागा क़ौम के लोग बड़े ज़बरदस्त मेहमान-नवाज़ मशहूर हैं.

पर जवाहरलाल जी के पहुँचने के चन्द मिनट पहले नागा पहाड़ी ज़िले के डिप्टी कमिश्नर ने उन सब नागा लोगों को यह नोटिस दिया कि श्री जवाहरलाल नहरू न आप लोगों का कोई मान-पत्र लेंगे और न आप की कोई भेंट स्वीकार करेंगे.

नागा क़ौम और उनके मुखियों के दिलों को इससे बहुत बड़ी चोट लगी.

ठीक उस समय जब जवाहरलाल जी बरमा के प्रधान मंत्री यू-नू के साथ मंच पर चढ़ रहे थे, चौदह हज़ार नागा निराश और दुखी अपने अपने घरों को वापिस जा रहे थे. कहते हैं जवाहरलाल जी ने उन्हें लौट आने के लिए कहा. पर अब न वे जवाहरलाल जी की बात समझ सकते थे और न जवाहरलाल जी उनकी. यह भी कहा जाता है कि जवाहरलाल जी इस घटना के लिए वहां के अफ़सरों पर बिगड़े. लेकिन अफ़सरों ने इसके बाद ही नागा लोगों से उनके इस तरह चले जाने का बदला लेने की पूरी कोशिश की. बजाय इसके कि नागा लोगों के दुखे हुए दिलों को तसल्ली दी जाती, इलाक़े भर में अंधा धुँध गिरफ़्तारियां और घरों की तलाशियां शुरू हो गईं. जिन नागाओं को हथियारों के लाइसेंस मिले हुए थे उनके भी हथियार छीन लिए गए. ग़लतफ़हमी और दुश्मनी बढ़ती चली गई. पर किसी ने उसकी जड़ में जाने की और ज़ख़मों पर मरहम लगाने की कोशिश नहीं की.

15 अगस्त सन् 1953 को सब सरकारी स्कूलों को राष्ट्रीय झंडा फहराने का हुक्म दिया गया. नागा पहाड़ी ज़िले में दो हाई-स्कूल हैं, एक कोहिमा में, दूसरा मोकोकचुँग में. इन दोनों स्कूलों में उस दिन कुछ लड़के ग़ैर हाज़िर थे. उनकी इस ग़ैर हाज़िरी को भी 'बग़ावत' मान लिया गया. दोनों स्कूल बन्द कर दिए गए. सब नागा विद्यार्थी आवारा फिरने लगे. उस साल नवम्बर तक वे स्कूल न खुल पाए. मजबूर होकर नागा लोगों ने अपने बच्चों के लिए उन्हीं दो शहरों में दो प्राइवेट हाई स्कूल खोल दिये.

मार्च सन् 1953 में आसाम सरकार ने मोकाकचुँग इलाक़े को बाग़ी इलाक़ा (Disturbed area) ऐलान कर दिया. वहां के हाई स्कूल पर फ़ौज ने क़ब्ज़ा कर लिया, जो प्राइवेट स्कूल वहां नागाओं ने खोला था वह भी ज़बरदस्ती बन्द कर दिया गया.

नागा नेताओं ने फिर एकबार प्रार्थना की कि उन्हें प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू से मिलने का मौक़ा दिया जाय ताकि वे अपने दिल की बात उनसे कह सकें. दिल्ली में मुलाक़ात के लिए तारीख़ मुक़र्रर हो गई. नागा नेशनल काउन्सिल के नाम दिल्ली से नागा नेताओं को दिल्ली

مہمان کے روپ میں دیکھتے تھے اور ناگا قوم کے لوگ بڑے زبردست مہمان نواز مشہور ہیں ۔

پر جواہر لال جی کے پہونچنے کے چند منٹ پہلے ناگا پہاڑی ضلع کے ڈپٹی کمشنر نے اُن سب ناگا لوگوں کو یہ نوٹس دیا کہ شری جواہر لال نہرو نہ آپ لوگوں کا کوئی مان پتر لینگے اور نہ آپ کی کوئی بھینٹ سویکار کرینگے ۔

ناگا قوم اور اُن کے مکھیوں کے دلوں کو اِس سے بہت بڑی چوٹ لگی ۔

ٹھیک اُس سمے جب جواہر لال جی برما کے پردھان منتری یو-نو کے ساتھ منچ پر چڑھ رہے تھے، چودہ ہزار ناگا نراش اور دکھی اپنے اپنے گھروں کو واپس جارہے تھے ۔ کہتے ہیں جواہر لال جی نے اُنھیں لوٹ آنے کے لئے کہا ۔ پر اب نہ وے جواہر لال جی کی بات سمجھ سکتے تھے اور نہ جواہر لال جی اُن کی۔ یہ بھی کہا جاتا ہے کہ جواہر لال جی اِس گھٹنا کے لئے وہاں کے افسروں پر بگڑے ۔ لیکن افسروں نے اِس کے بعد ہی ناگا لوگوں سے اُن کے اِس طرح چلے جانے کا بدلہ لینے کی پوری کوشش کی ۔ بجائے اِس کے کہ ناگا لوگوں کے دکھے ہوئے دلوں کو تسلی دی جاتی، علاقے بھر میں اندھادھند گرفتاریاں اور گھروں کی تلاشیاں شروع ہوگئیں ۔ جن ناگاؤں کو ہتھیاروں کے لائسینس ملے ہوئے تھے اُن کے بھی ہتھیار چھین لئے گئے ۔ غلط فہمی اور دشمنی بڑھتی چلی گئی ۔ پر کسی نے اُس کی جڑ میں جانے کی اور زخموں پر مرہم لگانے کی کوشش نہیں کی ۔

15 اگست سن 1953 کو سب سرکاری اِسکولوں کو راشٹریہ جھنڈا پھہرانے کا حکم دیا گیا ۔ ناگا پہاڑی ضلع میں دو ہائی اِسکول ہیں، ایک کوہیما میں، دوسرا موکو کچنگ میں ۔ اِن دونوں اِسکولوں میں اُس دن کچھ لڑکے غیر حاضر تھے ۔ اُن کی اِس غیر حاضری کو بھی 'بغاوت' مان لیا گیا ۔ دونوں اِسکول بند کردئے گئے ۔ سب ناگا ودیارتھی آوارہ پھرنے لگے ۔ اُس سال نومبر تک وے اِسکول نہ کھل پائے ۔ مجبور ہوکر ناگا لوگوں نے اپنے بچوں کے لئے اُنھیں دو شہروں میں دو پرائیویٹ ہائی اِسکول کھول دیئے ۔

مارچ سن 1953 میں آسام سرکار نے موکاکچونگ علاقے کو باغی علاقہ (Disturbed area) اعلان کردیا ۔ وہاں کے ہائی اِسکول پر فوج نے قبضہ کرلیا ۔ جو پرائیویٹ اِسکول وہاں ناگاؤں نے کھولا تھا وہ بھی زبردستی بند کردیا گیا ۔

ناگا نیتاؤں نے پھر ایک‌بار پرارتھنا کی کہ اُنھیں پردھان منتری جواہر لال نہرو سے ملنے کا موقع دیا جائے تاکہ وے اپنے دل کی بات اُن سے کہہ سکیں ۔ دلی میں ملاقات کے لئے تاریخ مقرر ہوگئی۔ ناگا نیشنل کاؤنسل کے نام دلی سے ناگا نیتاؤں کو دلی

बुलाने के लिए कोहिमा तार भेजा गया. श्री चन्दोला का कहना है कि आसाम में न जाने किसने उस तार को दबाए रखा और वह तार ठीक उस तारीख़ को कोहिमा में नागा नेताओं को दिया गया जो तारीख़ दिल्ली में उनकी मुलाक़ात के लिए तय थी. मुलाक़ात न हो सकी. नागा नेताओं ने फिर तीसरी बार मुलाक़ात के लिए कोशिश की. कहा जाता है कि इस बार आसाम के गवरनर ने उनकी प्रार्थना बीच ही में नामंज़ूर करदी.

श्री पन्त और श्री ढेबर

सितम्बर सन् 1955 में होम मिनिस्टर श्री गोबिन्द बल्लभ पन्त कोहिमा पहुँचे. नागा नेशनल काउन्सिल के नेताओं ने उनसे मिलना चाहा. पर उन्हें मौक़ा नहीं दिया गया.

26 नवम्बर सन् 1955 को कांग्रेस प्रेसीडेंट श्री ढेबर कोहिमा पहुंचे. नागा नेताओं ने उनसे मिलकर अपनी कहानी कहना चाहा. लगभग पांच सौ नागा सरदार एक दिन पहले कोहिमा में जमा होगए. उन्हों ने श्री ढेबर को देने के लिए एक प्रस्ताव भी तैयार कर लिया. जिस तरह जवाहरलाल जी के जाने पर हुआ था उसी तरह इस मौक़े पर भी यह पांच सौ नागा सरदार अपने अपने हाथों में भेंट का सामान लिए हुए अपने अतिथि के स्वागत के लिए सड़क के दोनों तरफ़ जमा थे. फिर वहीं श्री ढेबर के आने से चंद मिनट पहले सुपरिन्टेंडेंट पुलिस ने उनके पास पहुंच कर उनसे कहा कि अगर आप लोग दस मिनट के अन्दर यहां से न चले जायेंगे तो आप को ज़बरदस्ती यहां से हटा दिया जायगा. नागा सरदार दूसरी बार दुखी और निराश अपने अपने घरों को चले गये. श्री ढेबर से भी उनकी मुलाक़ात न हो सकी.

जो प्रस्ताव नागा नेताओं ने श्री ढेबर के लिए एक दिन पहले तैयार किया था उसमें लिखा था कि—"नागा लोगों की जितनी समस्याएं हैं उन सबका हल हमें आपस में बात चीत करके ही निकाल लेना चाहिए." नागा लोग लड़ना नहीं चाहते थे. पर इस घटना के बाद बात चीत का दरवाज़ा फिर बन्द कर दिया गया. इस बार बार के अपमान ने बहुत सों के दिलों को तोड़ दिया.

दमन और विकास साथ साथ

इस तरह नागाओं में असन्तोष बढ़ता चला गया. सरकार ने इस असन्तोष को दबाने के लिये एक तरफ़ नागा लोगों के ख़िलाफ़ शक्ति का उपयोग जायज़ क़रार दिया. जगह जगह फ़ौजें भेजी जाने लगीं और दूसरी तरफ़ नागा इलाक़े में उस इलाक़े की 'उन्नति' और 'विकास' की छोटी मोटी योजनाएं शुरू करदीं. नागा नेता और उनके आदमी न पहली चीज़ की क़द्र कर सके और न दूसरी की. गिरफ़्तारियों से बचने के

بلانے کے لئے کوہیما تار بھیجا گیا ۔ شری چندولا کا کہنا ہے کہ آسام میں جانے کس نے اُس تار کو دبائے رکھا اور وہ تار ٹھیک اُس تاریخ کو کوہیما میں ناگا نیتاؤں کو دیا گیا جو تاریخ دلی میں اُن کی ملاقات کے لئے طے تھی ۔ ملاقات نہ ہوسکی ۔ ناگا نیتاؤں نے پھر تیسری بار ملاقات کے لئے کوشش کی. کہا جاتا ہے کہ اِس بار آسام کے گورنر نے اُن کی پرارتھنا بیچ ہی میں نامنظور کردی ۔

شری پنت اور شری ڈھیبر

ستمبر سن 1955 میں ہوم منسٹر شری گوبندبلبھ پنت کوہیما پہونچے ۔ ناگا نیشنل کاؤنسل کے نیتاؤں نے اُن سے ملنا چاہا ۔ پر اُنہیں موقع نہیں دیا گیا ۔

26 نومبر سن 1955 کو کانگریس پرسیڈینٹ شری ڈھیبر کوہیما پہونچے ۔ ناگا نیتاؤں نے اُن سے ملکر اپنی کہانی کہنا چاہا ۔ لگ بھگ پانچ سو ناگا سردار ایک دن پہلے کوہیما میں جمع ہوگئے ۔ اُنہوں نے شری ڈھیبر کو دینے کے لئے ایک پرستاؤ بھی تیار کرلیا ۔ جس طرح جواہر لال جی کے جانے پر ہوا تھا اُسی طرح اِس موقع پر بھی یہ پانچ سو ناگا سردار اپنے اپنے ہاتھوں میں بھینٹ کا سامان لئے ہوئے اپنے اتتھی کے سواگت کے لئے سڑک کے دونوں طرف جمع تھے ۔ پھر وہی شری ڈھیبر کے آنے سے چند منٹ پہلے سپرنٹینڈینٹ پولس نے اُن کے پاس پہونچکر اُن سے کہا کہ اگر آپ لوگ دس منٹ کے اندر یہاں سے نہ چلے جائینگے تو آپ کو زبردستی یہاں سے ہٹا دیا جائیگا ۔ ناگا سردار دوسری بار دکھی اور نراش اپنے اپنے گھروں کو چلے گئے ۔ شری ڈھیبر سے بھی اُن کی ملاقات نہ ہوسکی ۔

جو پرستاؤ ناگا نیتاؤں نے شری ڈھیبر کے لئے ایک دن پہلے تیار کیا تھا اُس میں لکھا تھا کہ—"ناگا لوگوں کی جتنی سمسیائیں ہیں ان سب کا حل ہمیں آپس میں بات چیت کرکے ہی نکال لینا چاہئے ۔" ناگا لوگ لڑنا نہیں چاہتے تھے ۔ پر اِس گھٹنا کے بعد بات چیت کا دروازہ پھر بند کردیا گیا ۔ اِس بار بار کے اپمان نے بہت سوں کے دلوں کو توڑ دیا ۔

دمن اور وکاس ساتھ ساتھ

اِس طرح ناگاؤں میں اسنتوش بڑھتا چلا گیا ۔ سرکار نے اس اسنتوش کو دبانے کے لئے ایک طرف ناگا لوگوں کے خلاف شکتی کا اُپیوگ جائز قرار دیا ۔ جگہ جگہ فوجیں بھیجی جانے لگیں اور دوسری طرف ناگا علاقے میں اُس علاقہ کی 'اُنتی' اور 'وکاس' کی چھوٹی موٹی یوجنائیں شروع کردیں ۔ ناگا نیتا اور اُن کے آدمی نہ پہلی چیز کی قدر کرسکے اور نہ دوسری کی ۔ گرفتاریوں سے بچنے کے

लिए उनके नेता जगह जगह छिपते फिरते थे. उन्होंने आम तौर पर इन योजनाओं के साथ असहयोग किया. बन्दूक़ों के साये में उन्नति की योजनाएं जारी रखी गईं. कुछ नागा लोगों ने भारत की फ़ौजों का मुक़ाबला करना भी शुरू कर दिया. मोकोकचुंग का इलाक़ा भी बाग़ी क़रार दे दिया गया. वहां का स्कूल भी बंद कर दिया गया और वहां भी स्कूल की इमारत पर फ़ौज का क़ब्ज़ा हो गया.

श्री चन्दोला के अनुसार सन् 1956 के शुरू में नागा नेशनल काउन्सिल किंकर्त्तव्य विमूढ़ मालूम होती थी. अचानक उनके एक बहुत बड़े नेता (Sakhri, सखरी को कोई कहीं उड़ा ले गया. कुछ दिन बाद मालूम हुआ कि सखरी को किसी ने मार डाला.

सरकार पक्ष

श्री चन्दोला के लेख के चार दिन बाद 'नागा समस्या' पर 'एक सम्वाद दाता' का एक छोटा सा लेख निकला जो सरकारी बयान नहीं है, परन्तु उनके लेख के जवाब में सरकार पक्ष से लिखा हुआ मालूम होता है. उस लेख में नागा लोगों की "बहादुरी, ईमानदारी, सचाई" वग़ैरा की तारीफ़ की गई है और उनकी कमी यह बताई गई है कि वह जल्दी से शक और अविश्वास का शिकार हो जाते हैं. यह भी माना गया है कि सरकार आज़ादी के बाद नागा लोगों से जैसा चाहिये था मेल मिलाप पैदा नहीं कर सकी. नागा नेशनल काउन्सिल के प्रधान श्री फ़िज़ो पर यह इलज़ाम लगाया गया है कि उन्होंने सरकार के ख़िलाफ़ अपने लोगों में ग़लत फ़हमियां फैलाईं. यह भी कहा गया है कि श्री जवाहरलाल नेहरू तीन बार श्री फ़िज़ो से मिले. कहा गया है कि नागा नेता ऊपर से अहिंसा और शान्ति की नीति का ऐलान करते हैं और अन्दर अन्दर उन नागाओं के ख़िलाफ़ मार काट और लूट मार की तजवीज़ें करते रहते हैं जो अपने नेताओं की पालिसी से इत्तफ़ाक़ नहीं करते. कहा गया है कि भारत की फ़ौजें केवल वफ़ादार और अमन पसन्द नागाओं की रक्षा के लिये वहां गई हैं. अन्त में यह भी साफ़ कह दिया गया है कि जब तक नागा नेता इस तरह की मार काट और मुकम्मल आज़ादी की बात करना बन्द नहीं करेंगे सरकार उनसे कोई बात करने को तय्यार नहीं है.

इस दूसरे लेख को पढ़ने के बाद भी बात वहीं की वहीं रहती है. श्री चन्दोला की किसी भी ख़ास बात को, जिन में से कुछ हमने ऊपर दी हैं, इस लेख में ग़लत नहीं बताया गया.

इसमें सन्देह नहीं फ़ौजी निगाह से अन्त में भारत सरकार ही जीतेगी. लेकिन आम नागा लोगों के दिलों में जो असन्तोष, अविश्वास और बद दिली घर कर चुकी है वह इस तरह नहीं निकल सकती.

لئے اُن کے نیتا جگہ جگہ چھپتے پھرتے تھے ۔ انہوں نے عام طور پر اِن یوجناؤں کے ساتھ اسہیوگ کیا ۔ بندوقوں کے سائے میں اُنتی کی یوجنائیں جاری رکھی گئیں ۔ کچھ ناگا لوگوں نے بھارت کی فوجوں کا مقابلہ کرنا بھی شروع کردیا ۔ موکوکچونگ کا علاقہ بھی باغی قرار دے دیا گیا ۔ وہاں کا اِسکول بھی بند کردیا گیا اور وہاں بھی اِسکول کی عمارت پر فوج کا قبضہ ہوگیا ۔

شری چندولا کے انوسار سن 1956 کے شروع میں ناگا نیشنل کاؤنسل کنکرتویہ‌وموڑھ معلوم ہوتی تھی ۔ اچانک اُن کے ایک بہت بڑے نیتا سکھری (Sakhri) کو کوئی کہیں اُڑا لے گیا ۔ کچھ دن بعد معلوم ہوا کہ سکھری کو کسی نے مار ڈالا ۔

سرکار پکھش

شری چندولا کے لیکھ کے چار دن بعد 'ناگا سمسیا' پر ایک 'سمواد داتا' کا ایک چھوٹا سا لیکھ نکلا جو سرکاری بیان نہیں ہے' پرنتو اُن کے لیکھ کے جواب میں سرکار پکھش سے لکھا ہوا معلوم ہوتا ہے ۔ اُس لیکھ میں ناگا لوگوں کی "بہادری' ایمانداری سچائی" وغیرہ کی تعریف کی گئی ہے اور اُن کی کمی یہ بتائی گئی ہے کہ وہ جلدی سے شک اور اوشواس کا شکار ہو جاتے ہیں ۔ یہ بھی مانا گیا ہے کہ سرکار آزادی کے بعد ناگا لوگوں سے جیسا چاہئے تھا میل ملاپ پیدا نہیں کر سکی ۔ ناگا نیشنل کاؤنسل کے پردھان شری فیزو پر یہ الزام لگایا گیا ہے کہ انہوں نے سرکار کے خلاف اپنے لوگوں میں غلط فہمیاں پھیلائیں ۔ یہ بھی کہا گیا ہے کہ شری جواہر لال نہرو تین بار شری فیزو سے ملے۔ کہا گیا ہے کہ ناگا نیتا اُوپر سے اہنسا اور شانتی کی نیتی کا اعلان کرتے ہیں اور اندر اندر اُن ناگاؤں کے خلاف مار کاٹ اور لوٹ مار کی تجویزیں کرتے رہتے ہیں جو اپنے نیتاؤں کی پالیسی سے اتفاق نہیں کرتے ۔ کہا گیا ہے کہ بھارت کی فوجیں کیول وفادار اور امن پسند ناگاؤں کی رکشا کے لئے وہاں گئیں ہیں ۔ انت میں یہ بھی صاف کہہ دیا گیا ہے کہ جب تک ناگا نیتا اِس طرح کی مار کاٹ اور 'مکمل آزادی' کی بات کرنا بند نہیں کر دینگے سرکار اُن سے کوئی بات کرنے کو تیار نہیں ہے ۔

اِس دوسرے لیکھ کو پڑھنے کے بعد بھی بات وہیں کی وہیں رہتی ہے ۔ شری چندولا کی کسی بھی خاص بات کو' جن میں سے کچھ ہم نے اُوپر دی ہیں' اِس لیکھ میں غلط نہیں بتایا گیا ۔

اِس میں سندیہہ نہیں فوجی نگاہ سے انت میں بھارت سرکار ہی جیتیگی ۔ لیکن عام ناگا لوگوں کے دلوں میں جو اسنتوش' اوشواس اور بددلی گھر کر چکی ہے وہ اِس طرح نہیں نکل سکتی ۔

असली इलाज

श्री हरीश चंदोला का कहना है कि नागा क़ौम के लोग और उनके नेता अब भी बात चीत और समझौते से सारा मामला तय करने के लिए तैयार हैं. उन्हें 'स्वाधीन राज्य' की हठ नहीं है. अगर और बातें मिल बैठकर तय हो जायं तो वे अब भी भारतीय यूनियन में रहने के लिए तय्यार हैं. पर आज की हालत में पहले उनसे "मुकम्मल आज़ादी" की बात छोड़ देने के लिये ज़िद करना और उसके बाद बात चीत के लिये राज़ी होना हमें किसी तरह ठीक नहीं जंचता. इस तरह के मामलों में दुनिया की सरकारों का 'आन' यानी 'प्रेस्टीज का ख़याल दुनिया के लिये बहुत सी मुसीबतें पैदा करता रहा है.

इस सारे मामले में भारत सरकार के ऊपर के कुछ ज़िम्मेदार लोगों, ख़ासकर श्री जवाहरलाल नेहरू, की नागा लोगों की तरफ़ शुभेच्छा में किसी को शक नहीं हो सकता. हम समझते हैं कि नागा लोगों में भी बहुत कम होंगे जिन्हें पंडित जवाहरलाल जैसों की नियत पर शक हो. लेकिन इस नेक नियती और शुभेच्छा के बावजूद इसमें भी शक नहीं कि नागा इलाक़े में हमारे कारनामों और दुनिया के कुछ दूसरे इलाक़ों में साम्राज्यवादियों के कारनामों में बहुत अधिक फ़रक़ नहीं दिखाई देता. देश को उन्नत करने और विकसित करने की योजनाएँ भी दोनों में एकसी मिलती हैं. बन्दूक़ों की छाया में विकास योजनाएँ किसी देश को पनपने में मदद नहीं दे सकतीं. हम यह नहीं कहते कि नागा-ओं से ग़लतियां नहीं हुईं, पर कुल मामले को पूरी तरह देखते हुए हमें नागा इलाक़ों में अपने कारनामों पर लज्जा आ रही है.

भारत की जनता और सरकार दोनों महात्मा गाँधी की दुहाई देते हैं. दोनों युद्ध और हथियारों के ख़िलाफ़ दुनिया भर को उपदेश देते हैं, दोनों सचाई के साथ दुनिया में अमन क़ायम रखने की कोशिशों में पूरी पूरी मदद दे रहे हैं. नागा इलाक़े का मामला एक शुद्ध घरेलू मामला है, कोई बाहर का हमला भी नहीं. ज़रूरत इस बात की है कि कम से कम नागा इलाक़े में हम गाँधी जी के उन उसूलों पर अमल करके दिखादें जिन पर हम दुनिया से अमल कराना चाहते हैं. भारत को हिम्मत के साथ पहले अपनी तरफ़ से वहां की सारी फ़ौजी कार्रवाई बन्द कर देनी चाहिये. सब के लिये आम माफ़ियों का ऐलान हो जाना चाहिये. फिर मिल बैठकर बातें होनी चाहियें. हमें इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि सच्ची क्षमा, इन्सानी हमदर्दी, सच्चे प्रेम और परस्पर समझौते के साथ उस इलाक़े की इस वक़्त की सारी समस्याएँ ख़ूबसूरती के साथ हल की जा सकती हैं.

—सुन्दरलाल.

اصلی علاج

- شری ہریش چندولا کا کہنا ہے کہ ناگا قوم کے لوگ اور اُن کے نیتا اب بھی بات چیت اور سمجھوتے سے سارا معاملہ طے کرنے کے لئے تیار ہیں ۔ اُنہیں 'سوادھین راجیہ' کی ہٹ نہیں ہے ۔ اگر اور باتیں مل بیٹھکر طے ہو جائیں تو وے اب بھی بھارتیہ یونین میں رہنے کے لئے تیار ہیں ۔ پر آج کی حالت میں پہلے اُن سے "مکمل آزادی" کی بات چھوڑ دینے کے لئے ضد کرنا اور اُس کے بعد بات چیت کے لئے راضی ہونا ہمیں کسی طرح ٹھیک نہیں جنچتا ۔ اِس طرح کے معاملوں میں دنیا کی سرکاروں کا 'آن' یعنی پریسٹیج کا خیال دنیا کے لئے بہت سی مصیبتیں پیدا کرتا رہا ہے ۔

اِس سارے معاملہ میں بھارت سرکار کے اُوپر کے کچھ ذمہ‌دار لوگوں' خاصکر شری جواہر لال نہرو' کی ناگا لوگوں کی طرف شوبھیچھا میں کسی کو شک نہیں ہو سکتا ۔ ہم سمجھتے ہیں کہ ناگا لوگوں میں بھی بہت کم ہونگے جنہیں پنڈت جواہر لال جیسوں کی نیت پر شک ہو ۔ لیکن اِس نیک نیتی اور شوبھیچھا کے باوجود اِس میں بھی شک نہیں کہ ناگا علاقے میں ہمارے کارناموں اور دنیا کے کچھ دوسرے علاقوں میں سامراجیہ‌وادیوں کے کارناموں میں بہت ادھک فرق نہیں دکھائی دیتا ۔ دیش کو اُنت کرنے اور وکست کرنے کی یوجنائیں بھی دونوں میں ایکسی ملتی ہیں ۔ بندوقوں کی چھایا میں وکاس یوجنائیں کسی دیش کو پنپنے میں مدد نہیں دے سکتیں ۔ ہم یہ نہیں کہتے کہ ناگاؤں سے غلطیاں نہیں ہوئیں' پر کل معاملے کو پوری طرح دیکھتے ہوئے ہمیں ناگا علاقوں میں اپنے کارناموں پر لجا آرہی ہے ۔

بھارت کی جنتا اور سرکار دونوں مہاتما گاندھی کی دوہائی دیتے ہیں ۔ دونوں یدھ اور ہتھیاروں کے خلاف دنیا بھر کو اُپدیش دیتے ہیں ۔ دونوں سچائی کے ساتھ دنیا میں امن قایم رکھنے کی کوششوں میں پوری پوری مدد دے رہے ہیں ۔ ناگا علاقے کا معاملہ ایک شدھ گھریلو معاملہ ہے' کوئی باہر کا حملہ بھی نہیں ۔ ضرورت اِس بات کی ہے کہ کم سے کم ناگا علاقے میں ہم گاندھی جی کے اُن اُصولوں پر عمل کر کے دکھا دیں جن پر ہم دنیا سے عمل کرانا چاہتے ہیں ۔ بھارت کو ہمت کے ساتھ پہلے اپنی طرف سے وہاں کی ساری فوجی کاروائی بند کر دینی چاہئے ۔ سب کے لئے عام معافیوں کا اعلان ہوجانا چاہیئے ۔ پھر مل بیٹھکر باتیں ہونی چاہیں ۔ ہمیں اِس میں ذرا بھی سندیہہ نہیں کہ سچی چھما' سچی ہمدردی' سچے پریم اور پرسپر سمجھوتے کے ساتھ اُس علاقے کی اِس وقت کی ساری سمسیائیں خوبصورتی کے ساتھ حل کی جاسکتی ہیں ۔

—سندر لال ۔

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

(मिरज़ा अबुलफ़ज़ल के अंग्रेज़ी संग्रह "सेइंग्स आफ़ दी प्रौफ़ेट मुहम्मद" से)

मुहम्मद साहब ने कहा:—"जो आदमी जब कभी नेक काम करता है तो उसे ख़ुशी होती है, और जब कोई बुरा काम करता है तो उसे दुख होता है, वही 'मोमिन' ❀ यानी ईमान वाला है."

—इब्ने उमर, तिरमिज़ी

मुहम्मद साहब ने कहा:—"मोमिन कभी अच्छी बातें सुनने से नहीं थकता जब तक कि वो जन्नत में न चला जाय."

अबु सईद, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"मोमिन बनना यानी ढोंग करना नहीं जानता, वह सबका भला करने की कोशिश करता है; इसके ख़िलाफ़ बुरा आदमी चालाक यानी ढोंगी और बुज़दिल होता है."

अबु हुरैरा, अबु दाऊद: तिरमज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"ईमान की निगाह से सबसे पक्का मोमिन वो है जो दूसरों के साथ बरताव करने में सब से अच्छा है."

अबू हुरैरा, अबु दाऊद: दारीमी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"समझुच मोमिन केवल दूसरों के साथ अच्छा बरताव करके उस आदमी के दर्जे को हासिल कर लेता है जो रात भर खड़ा होकर नमाज़ पढ़ता रहता है और दिन भर रोज़ा रखता है."

—आयशा, अबु दाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"क़यामत के दिन एक मोमिन की तराज़ू के पलड़े में सबसे वज़नदार चीज़ दूसरों

❀ 'मोमिन' का शब्दार्थ 'ईमान वाला' है. मोमिन उन लोगों को कहा जाता है जो मुहम्मद साहब पर 'ईमान' लाए, इस तरह मोमिन के आम माने 'मुसलिम' हुए—एडीटर.

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

(مرزا ابوالفضل کے انگریزی سنگرہ "سیئنگس آف دی پروفیٹ محمد" سے)

محمد صاحب نے کہا :—"جو آدمی جب کبھی کوئی نیک کام کرتا ھے تو اسے خوشی ھوتی ھے، اور جب کوئی برا کام کرتا ھے تو اسے دکھ ھوتا ھے، وھی 'مومن' * یعنی ایمان والا ھے."

—ابن عمر، ترمذی .

محمد صاحب نے کہا :—"مومن کبھی اچھی باتیں سننے سے نہیں تھکتا جب تک کہ وہ جنت میں نہ چلا جائے ."

—ابو سعید، ترمذی .

محمد صاحب نے کہا :—"مومن بننا یعنی ڈھونگ کرنا نہیں جانتا، وہ سب کا بھلا کرنے کی کوشش کرتا ھے؛ اِس کے خلاف برا آدمی چالاک یعنی ڈھونگی اور بزدل ھوتا ھے ."

—ابوھریرہ، ابوداؤد : ترمذی .

محمد صاحب نے کہا :—"ایمان کی نگاہ سے سب سے پکا مومن وہ ھے جو دوسروں کے ساتھ برتاؤ کرنے میں سب سے اچھا ھے ."

—ابو ھریرہ، ابوداؤد : داریمی .

محمد صاحب نے کہا :—"سچ مچ مومن کیول دوسروں ساتھ اچھا برتاؤ کرکے اس آدمی کے درجہ کو حاصل کرلیتا ھے جو رات بھر کھڑا ھوکر نماز پڑھتا رہتا ھے اور دن بھر روزہ رکھتا ھے ."

—عائشہ، ابوداؤد .

محمد صاحب نے کہا :—"قیامت کے دن ایک مومن کی ترازو کے پلڑے میں سب سے وزن‌دار چیز دوسروں

*مومن کا شبدارتھ 'ایمان والا' ھے . مومن ان لوگوں کو کہا جاتا ھے جو محمد صاحب پر 'ایمان' لائے . اِس طرح مومن کے عام معنی 'مسلم' ھوئے—ایڈیٹر .

के साथ उसका अच्छा बरताव होगा; और सचमुच अल्लाह बेशरम आदमी के साथ और उसके साथ जो दूसरों के साथ गुस्ताख़ी से पेश आता है दुशमनी रखता है."

—अबू दरदा, तिरमिज़ी: अबू दाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"मोमिन किसी दूसरे की बुराई नहीं करता, न किसी को कोसता है, न कोई गंदा काम करता है, और न किसी के साथ गुस्ताख़ी से पेश आता है."

—इब्ने मसूद, तिरमिज़ी. बेहक़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"किसी मोमिन के अंदर कभी ये दो चीज़ें एक साथ नहीं होतीं—कंजूसपन और बद इख़लाक़ी (अशिष्टता)."

—अबू सईद, तिरमिज़ी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"मोमिन की मिसाल एक ऐसे हरे भरे पेड़ से दी जा सकती है जिसके पत्ते कभी नहीं झड़ते और न जिसका साया कभी ख़तम होता है."

—इब्ने उमर, बुख़ारी: मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"एक मोमिन की मिसाल एक दूसरे के साथ प्रेम करने, एक दूसरे पर दया करने और हमदर्दी करने में वैसी ही है जैसे एक जिस्म की मिसाल अगर जिस्म के किसी हिस्से में कोई तकलीफ़ होती है तो सारा जिस्म रात भर जाग कर उसका साथ देता है और सारे जिस्म को बुख़ार हो जाता है."

—नुमान बिन बशीर, बुख़ारी: मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"मोमिन नाज की खड़ी हुई बालों की तरह होता है. हवा और आँधी उसे बार बार झुकाती रहती हैं, इसी तरह मोमिन के ऊपर आज़माइशें बार बार आती रहती हैं. इसके ख़िलाफ़ मुनाफ़िक़ यानी ढोंगी आदमी सर्व के उस पेड़ की तरह होता है जो उस वक़्त तक नहीं झुकता जबतक उसे गिरा न दिया जाय."

—अबु हुरैरा, बुख़ारी: तिरमिज़ी, काब बिन मालिक, मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"मोमिन दोस्ती का घर होता है, और जो आदमी दूसरों को दोस्त नहीं बनाता न दूसरे उसे दोस्त बनाते हैं वह आदमी बिलकुल निकम्मा है."

—अबू हुरैरा, अहमद: बेहक़ी.

کے ساتھ اُس کا اچھا برتاؤ ہوگا؛ اور سچ مچ اللہ بےشرم آدمی کے ساتھ اور اُس کے ساتھ جو دوسروں کے ساتھ گستاخی سے پیش آتا ہے دشمنی رکھتا ہے ."

—ابودردہ' ترمذی : ابوداؤد .

محمد صاحب نے کہا :—"مومن کسی دوسرے کی برائی نہیں کرتا' نہ کسی کو کوستا ہے' نہ کوئی گندہ کام کرتا ہے' اور نہ کسی کے ساتھ گستاخی سے پیش آتا ہے ."

—ابن مسعود' ترمذی : بیہقی .

محمد صاحب نے کہا :—"کسی مومن کے اندر کبھی یہ دو چیزیں ایک ساتھ نہیں ہوتیں—کنجوس‌پن اور بد اخلاقی (اشِشٹتا) ."

—ابو سعید' ترمذی .

محمد صاحب نے کہا :—"مومن کی مثال ایک ایسے ہرے بھرے پیڑ سے دی جاسکتی ہے جس کے پتے کبھی نہیں جھڑتے اور نہ جس کا سایہ کبھی ختم ہوتا ہے ."

—ابن عمر' بخاری : مسلم .

محمد صاحب نے کہا:—"ایک مومن کی مثال ایک دوسرے کے ساتھ پریم کرنے' ایک دوسرے پر دیا کرنے اور همدردی کرنے میں ویسی ہی ہے جیسے ایک جسم کی مثال . اگر جسم کے کسی حصہ میں کوئی تکلیف ہوتی ہے تو سارا جسم رات بھر جاگ کر اُس کا ساتھ دیتا ہے اور سارے جسم کو بخار ہو جاتا ہے ."

—نعمان بن بشیر' بخاری: مسلم .

محمد صاحب نے کہا:—"مومن ناج کی کھڑی ہوئی بالوں کی طرح ہوتا ہے . ہوا اور آندھی اُسے بار بار جھکاتی رہتی ہے . اِسی طرح مومن کے اوپر آزمائشیں بار بار آتی رہتی ہیں . اِس کے خلاف منافق یعنی ڈھونگی آدمی سرو کے اُس پیڑ کی طرح ہوتا ہے جو اُس وقت تک نہیں جھکتا جب تک اُسے گرا نہ دیا جائے ."

—ابو ہریرہ' بخاری: ترمذی؛ کعب بن مالک' مسلم .

محمد صاحب نے کہا:—"مومن دوستی کا گھر ہوتا ہے؛ اور جو آدمی دوسروں کو دوست نہیں بناتا نہ دوسرے اُسے دوست بناتے ہیں' وہ آدمی بالکل نکما ہے ."

—ابو ہریرہ' احمد: بیہقی .

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

मुहम्मद साहब से पूछा गया:—"आप उस आदमी की बाबत क्या सोचते हैं जो कोई नेक काम करता है और लोग उसके लिए उसकी तारीफ़ करते हैं और उससे प्यार करते हैं ?" मुहम्मद साहब ने जवाब दिया:—"मोमिन की यही सबसे पहली पहचान है."

—अबू ज़र, मुसलिम.

पैग़म्बर से पूछा गया:—"सबसे अच्छा आदमी कौन है ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया:—"सबसे अच्छा आदमी वो मोमिन है जो अपनी जान और अपने माल से अल्लाह की राह में जेहाद (नेकी करने की कोशिश) करता है." पैग़म्बर से फिर पूछा गया—"उससे उतरकर सबसे अच्छा आदमी कौन है ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया:—"वो आदमी जा किसी पहाड़ी गुफा में पड़ा रहता है, अल्लाह से डरता है और किसीदूसरे के साथ बुराई करने से अपने को बचाए रखता है."

—अबू सईद, बुख़ारी: मुसलिम: अबू दाऊद: तिरमिज़ी: नसाई.

मुहम्मद साहब ने कहा :—"किसी मोमिन के लिए यह जायज़ नहीं है कि वो किसी दूसरे मोमिन को तीन दिन से जियादा अपने से अलग किए रहे, और अगर तीन दिन निकल जावें तो उसे चाहिए कि उस दूसरे आदमी से जाकर मिले और उसे सलाम करे, फिर अगर दूसरा भी प्रेम से जवाब दे तो अल्लाह की तरफ़ से दोनों को सवाब मिलेगा, लेकिन अगर दूसरा प्रेम से जवाब न दे तो वो पाप का भागी होगा; वह आदमी जो तीन दिन से जियादा, अपने भाई से बिगाड़ रखता है दूसरी दुनिया में दोज़ख़ की आग में जायगा." —अबु हुरैरा, अबु दाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"कोई आदमी व्यभिचार नहीं करता जो व्यभिचार भी करे और मोमिन भी हो, कोई आदमी चोरी नहीं करता जो चोरी भी करे और मोमिन भी हो, कोई आदमी कोई नशे की चीज़ नहीं पीता जो नशा भी पिये और मोमिन भी हो, कोई आदमी डाका नहीं डालता जिसे लोग डाका डालते देखें और वह डाका भी डाले और मोमिन भी हो, और कोई दूसरे को धोखा नहीं दे सकता जो दूसरे को धोखा भी दे और मोमिन भी हो, इसलिए ख़बरदार रहो, ख़बरदार. !"

—अबू हुरैरा, बुख़ारी: मुसलिम.

—अनुवादक: श्री मुजीब रिज़वी.

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

محمد صاحب سے پوچھا گیا—"آپ اُس آدمی کی بابت کیا سوچتے ھیں جو کوئی نیک کام کرتا ھے اور لوگ اُس کے لئے اُس کی تعریف کرتے ھیں اور اُس سے پیار کرتے ھیں ؟" محمد صاحب نے جواب دیا:—"مومن کی یہی سب سے پہلی پہچان ھے."

—ابوزر، مسلم .

پیغمبر سے پوچھا گیا—"سب سے اچھا آدمی کون ھے ؟" پیغمبر نے جواب دیا:—"سب سے اچھا آدمی وہ مومن ھے جو اپنی جان اور اپنے مال سے اللہ کی راہ میں جہاد (نیکی کرنے کی کوشش) کرتا ھے." پیغمبر سے پھر پوچھا گیا—"اُس سے اُترکر سب سے اچھا آدمی کون ھے ؟" پیغمبر نے جواب دیا:—"وہ آدمی جو کسی پہاڑی گپھا میں پڑا رہتا ھے، اللہ سے ڈرتا ھے اور کسی دوسرے کے ساتھ برائی کرنے سے اپنے کو بچائے رکھتا ھے ."

—ابو سعید، بخاری: مسلم: ابوداؤد: ترمذی: نساعی .

محمد صاحب نے کہا:—"کسی مومن کے لئے یہ جایز نہیں ھے کہ وہ کسی دوسرے مومن کو تین دن سے زیادہ اپنے سے الگ کئے رھے، اور تین دن نکل جاویں تو اُسے چاھئے کہ اُس دوسرے آدمی سے جاکر ملے اور اُسے سلام کرے، پھر اگر دوسرا بھی پریم سے جواب دے تو اللہ کی طرف سے دونوں کو ثواب ملیگا، لیکن اگر دوسرا پریم سے جواب نہ دے تو وہ پاپ کا بھاگی ھوگا؛ وہ آدمی جو تین دن سے زیادہ اپنے بھائی سے بگاڑ رکھتا ھے دوسری دنیا میں دوزخ کی آگ میں جائیگا ."

—ابو ھریرہ، ابوداؤد .

محمد صاحب نے کہا:—"کوئی آدمی وبھچار نہیں کرتا جو وبھچار بھی کرے اور مومن بھی ھو؛ کوئی آدمی چوری نہیں کرتا جو چوری بھی کرے اور مومن بھی ھو، کوئی آدمی کوئی نشے کی چیز نہیں پیتا جو نشہ بھی پیئے اور مومن بھی ھو؛ کوئی آدمی ڈاکہ نہیں ڈالتا جسے لوگ ڈاکہ ڈالتے دیکھیں اور وہ ڈاکہ بھی ڈالے اور مومن بھی ھو، اور کوئی دوسرے کو دھوکا نہیں دے سکتا جو دوسرے کو دھوکا بھی دے اور مومن بھی ھو، اِس لئے خبردار رھو، خبردار !"

—ابو ھریرہ، بخاری: مسلم .

—انوادک: شری مجیب رضوی .

विनोबा जी और भारत की राजधानी

विनोबा जी की बातें हमेशा बड़े मार्के की होती हैं. देश के सब भला चाहने वालों का फ़र्ज़ है कि उनकी बातों को ध्यान से सुनें, पढ़ें और उन पर गम्भीरता से विचार करें.

हाल में उन्होंने कहा है कि संस्कृति या कलचर की निगाह से दिल्ली आज़ाद भारत की राजधानी नहीं हो सकती. उसका एक कारण समाचार पत्रों के अनुसार उन्होंने यह भी बताया है कि दिल्ली में शराब की नदियां बहती हैं. हमें भी इन सात बरस के अन्दर दिल्ली आने और रहने का काफ़ी मौक़ा मिला है. विनोबा जी की बात में बहुत कुछ सचाई है. अख़बारों के अन्दर आँकड़े भी निकल चुके हैं कि हाल में दिल्ली में शराब की खपत कितनी अधिक बढ़ी है. पर शायद शराब की खपत भी इतनी बड़ी बात नहीं है. हमने पच्छिम की बहुत सी राजधानियों को देखा है. हमें यह कहते दुख होता है कि दिल्ली पच्छिम की कुछ राजधानियों की नक़ल नहीं, भोंडी नक़ल है. इन चीज़ों की तफ़सील में जाना किसी के लिये भी रुचिकर नहीं हो सकता. हम में से एक की कमज़ोरी सब की कमज़ोरी है. पर इसमें सन्देह नहीं कि कलचर या संस्कृति की निगाह से जीवन का जो आदर्श आज की दिल्ली देश के सामने रख रही है वह सारे देश को ऊपर उठाने के बजाय नीचे घसीट रहा है. जब हम दिल्ली की बात करते हैं तो हमारा मतलब नई दिल्ली से है, पुरानी दिल्ली से नहीं. पुरानी दिल्ली अब भी नई दिली से इन बातों में कहीं बेहतर है.

गाँधी जी भी देश के आज़ाद होने के बाद यह नहीं चाहते थे कि आज़ाद भारत की राजधानी दिल्ली रहे. अंगरेज़ों के बनवाए हुए सेक्रेटेरिएट, पार्लीमेन्ट हाउस और वाइसरीगल पैलेस इन सब को वह विश्वविद्यालयों, कालिजों, अस्पतालों और कोढ़ीख़ानों के लिये दे देना चाहते थे. आज़ाद भारत की राजधानी वह शहर से दूर गांवों के वातावरण में चाहते थे, जहां बिजली भी हो, ज़रूरत के

ونوباجی اور بھارت کی راجدھانی

ونوباجی کی باتیں ہمیشہ بڑے معرکے کی ہوتی ہیں ۔ دیش کے سب بھلا چاہنے والوں کا فرض ہے کہ اُن کی باتوں کو دھیان سے سنیں، پڑھیں اور اُن پر گمبھیرتا سے وچار کریں ۔

حال میں اُنہوں نے کہا ہے کہ سنسکرتی یا کلچر کی نگاہ سے دلی آزاد بھارت کی راجدھانی نہیں ہوسکتی ۔ اِس کا ایک کارن سماچارپتروں کے انوسار اُنہوں نے یہ بھی بتایا ہے کہ دلی میں شراب کی ندیاں بہتی ہیں ۔ ہمیں بھی اِن سات برس کے اندر دلی آنے اور رہنے کا کافی موقع ملا ہے ۔ ونوباجی کی بات میں بہت کچھ سچائی ہے ۔ اخباروں کے اندر آنکڑے بھی نکل چکے ہیں کہ حال میں دلی میں شراب کی کھپت کتنی ادھک بڑھی ہے ۔ پر شاید شراب کی کھپت بھی اِتنی بڑی بات نہیں ہے ۔ ہم نے پچھم کی بہت سی راجدھانیوں کو دیکھا ہے ۔ ہمیں یہ کہتے دکھ ہوتا ہے کہ دلی پچھم کی کچھ راجدھانیوں کی نقل نہیں، بھونڈی نقل ہے ۔ اِن چیزوں کی تفصیل میں جانا کسی کے لئے بھی روچیکر نہیں ہوسکتا ۔ ہم میں سے ایک کی کمزوری سب کی کمزوری ہے ۔ پر اِس میں سندیہ نہیں کہ کلچر یا سنسکرتی کی نگاہ سے جیون کا جو آدرش آج کی دلی دیش کے سامنے رکھ رہی ہے وہ سارے دیش کو اُوپر اُٹھانے کے بجائے نیچے گھسیٹ رہا ہے ۔ جب ہم دلی کی بات کرتے ہیں تو ہمارا مطلب نئی دلی سے ہے، پرانی دلی سے نہیں ۔ پرانی دلی اب بھی نئی دلی سے اِن باتوں میں کہیں بہتر ہے ۔

گاندھی جی بھی دیش کے آزاد ہونے کے بعد یہ نہیں چاہتے تھے کہ آزاد بھارت کی راجدھانی دلی رہے ۔ انگریزوں کے بنوائے ہوئے سیکریٹیریٹ، پارلیمینٹ ہاؤس اور وائسریگل پیلیس اِن سب کو وہ وشودیالیوں، کالجوں، اسپتالوں اور کوڑھی خانوں کے لئے دے دینا چاہتے تھے ۔ آزاد بھارت کی راجدھانی وہ شہر سے دور گاؤں کے واتاورن میں چاہتے تھے، جہاں بجلی بھی ہو، ضرورت کے

अनुसार टेलीफ़ोन और मोटरकारें भी हों, पर जहां देश के शासक और क़ानून बनाने वाले सादा, सरल और सच्चा जीवन बिता सकें, और जहां से नैतिक यानी इख़लाक़ी लहरें सारे देश में फैलकर सारे देश को ऊँचा उठा सकें. विनोबा जी की आवाज़ में हमें बिलकुल गाँधीजी की आवाज़ सुनाई दे रही है. हम उनसे पूरी तरह सहमत हैं. पर अभी तो देश इसके ठीक उलटे रास्ते पर ढुलकता चला जा रहा है.

शायद सब काम एक साथ नहीं हो सकते, और आदमी तजरबे से ही सीखता है. भारत की सच्ची आत्मा के जागने में अभी कुछ और देर मालूम होती है. पर वह दिन आएगा इसमें हमें कोई सन्देह नहीं. जब वह दिन आएगा तब ही भारत सच मुच ऊपर उठ सकेगा और दुनिया के सामने एक नया आदर्श पेश कर सकेगा.

26-5-56. —सुन्दरलाल

اَنوسار ٹیلیفون اور موٹرکاریں بھی ہوں' پر جہاں دیش کے شاسک اور قانون بنانے والے سادہ' سرل اور سچا جیون بتاسکیں' اور جہاں سے نیتک یعنی اخلاقی لہریں سارے دیش میں پھیل‌کر سارے دیش کو اُونچا اُٹھا سکیں ۔ ونوباجی کی آواز میں ہمیں بالکل گاندھی جی کی آواز سنائی دے رہی ہے ۔ ہم ان سے پوری طرح سہمت ہیں ۔ پر ابھی تو دیش اس کے ٹھیک اُلٹے راستے پر ڈھلکتا چلا جا رہا ہے ۔

شاید سب کام ایک ساتھ نہیں ہوسکتے' اور آدمی تجربے سے ہی سیکھتا ہے ۔ بھارت کی سچی آتما کے جاگنے میں ابھی کچھ اور دیر معلوم ہوتی ہے ۔ پر وہ دن آئیگا اِس میں ہمیں کوئی سندیہ نہیں ۔ جب وہ دن آئیگا تب ہی بھارت سچ مچ اوپر اُٹھ سکیگا اور دنیا کے سامنے ایک نیا آدرش پیش کرسکیگا۔

—سندر لال 26 . 5 . 56

श्री बी. जी. खेर और दूसरी पंच वर्षी योजना

आज़ाद भारत की पहली पंच वर्षी योजना ख़तम हो चुकी, दूसरी पंच वर्षी योजना की आजकल सब तरफ़ चर-चा है. मालूम होता है जहां तक पढ़े लिखे लोगों और ख़ास कर राजकाजी नेताओं का सम्बन्ध है उनमें अधिकतर के दिमाग़ कम या ज़ियादा उसी तरह चलते हैं जिस तरह इन योजनाओं के तैयार करने वालों के दिमाग़. इनमें बहुत थोड़े हैं जो किसी दूसरी तरह सोचते हैं. यह भी ज़ाहिर है कि जहां तक गाँधी जी के विचारों का सम्बन्ध है यह दोनों योजनाएं गाँधी जी के विचारों और आदर्शों से कोई मेल नहीं रखतीं. इन मामलों में गाँधी जी का दिमाग़ और योजना बनाने वालों के दिमाग़ बिलकुल दो तरह चलते हैं. गाँधी जी की निगाह थी अधिकतर गाँवों की तरफ़ और ग़रीबों, किसानों, मज़दूरों और दस्तकारों की तरफ़. योजना बनाने वालों की निगाह है अधिकतर बड़े बड़े शहरों, ऊँची ऊँची अटारियों और करोड़पतियों और अरबपतियों की तरफ़. यह भी मानना पड़ता है कि इस तरह के मामलों में गाँधी जी के विचारों से सहमत पढ़े लिखे लोग कम हैं, और जो हैं भी उनकी आवाज़ बहुत कम सुनाई पड़ती है. जहां तक करोड़ों आम जनता का सम्बन्ध है वह बेचारे अव्वल तो इन योजनाओं को समझ नहीं पाते और फिर यदि इन योज-नाओं के दावों की अपनी हालत से तुलना करते हैं तो मन ही मन में हैरान और चुप होकर रह जाते हैं.

شری بی ۔ جی ۔ کھیر اور دوسری پنچ ورشی یوجنا

آزاد بھارت کی پہلی پنچ ورشی یوجنا ختم ہوچکی' دوسری پنچ ورشی یوجنا کی آجکل سب طرف چرچا ہے ۔ معلوم ہوتا ہے جہاں تک پڑھے لکھے لوگوں اور خاصکر راجکاجی نیتاؤں کا سمبندھ ہے ان میں ادھکتر کے دماغ کم یا زیادہ اسی طرح چلتے ہیں جس طرح اِن یوجناؤں کے تیار کرنے والوں کے دماغ ۔ اِن میں بہت تھوڑے ہیں جو کسی دوسری طرح سوچتے ہیں ۔ یہ بھی ظاہر ہے کہ جہاں تک گاندھی جی کے وچاروں کا سمبندھ ہے یہ دونوں یوجنائیں گاندھی جی کے وچاروں اور آدرشوں سے کوئی میل نہیں رکھتیں ۔ اِن معاملوں میں گاندھی جی کا دماغ اور یوجنا بنانے والوں کے دماغ بالکل دو طرح چلتے ہیں ۔ گاندھی جی کی نگاہ تھی ادھکتر گاؤں کی طرف اور غریبوں' کسانوں' مزدوروں اور دستکاروں کی طرف ۔ یوجنا بنانے والوں کی نگاہ ہے ادھکتر بڑے بڑے شہروں' اونچی اونچی اٹاریوں اور کروڑپتیوں اور ارب پتیوں کی طرف. یہ بھی ماننا پڑتا ہے کہ اِس طرح کے معاملوں میں گاندھی جی کے وچاروں سے سہمت پڑھے لکھے لوگ کم ہیں' اور جو ہیں بھی ان کی آواز بہت کم سنائی پڑتی ہے ۔ جہاں تک کروڑوں عام جنتا کا سمبندھ ہے وہ بیچارے اول تو ان یوجناؤں کو سمجھ نہیں پاتے اور پھر یدی ان یوجناؤں کے دعوں کی اپنی حالت سے تلنا کرتے ہیں تو من ہی من میں حیران اور چپ ہوکر رہ جاتے ہیں ۔

ऐसी हालत में अगर कहीं कोई आवाज़ भी सचाई के लिये उठती हुई दिखाई देती है तो उस आवाज़ से, चाहे वह नक़्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़ ही क्यों न हो, हमें और हमारे जैसों को आत्मिक सन्तोष मिलता है.

हाल में इसी तरह की आवाज़ दूसरी पंच वर्षी योजना के बारे में श्री बी. जी. खेर की सुनाई दी है. श्री बी. जी. खेर ने बम्बई में समाचार पत्रों के प्रतिनिधियों से कहा है कि:—"जहां तक गांवों के अन्दर बेकारी और बेरोज़गारी का सम्बन्ध है यह योजना बिलकुल निराशा जनक है." इन्होंने बताया कि:—"बम्बई की सबरबन डिस्ट्रिक्ट विलेज इन्डस्ट्रीज़ एसोसिएशन (अतराफ़ ज़िला ग्रामोद्योग सभा) ने गाँव के लोगों की बेकारी और बेरोज़गारी को कम करने के लिये दस 'परिश्रमालय' खोलने का और पाँच हज़ार अम्बर चरख़े चलवाने का फ़ैसला किया है, और इस काम में जनता से सहयोग की प्रार्थना की है."

श्री बी. जी. खेर के यह 'परिश्रमालय' बिलकुल गाँधी जी के विचार की चीज़ हैं. जहां तक हमने सुना है इन्हें 'परिश्रमालय' नाम विनोबा जी ने दिया है.

श्री बी. जी. खेर ने बताया कि सरकारी प्लैनिंग कमीशन के अनुसार इस समय तिरपन लाख बेकार मज़दूर भारत में हैं और अगले पाँच बरस के अन्दर इनमें एक करोड़ और बढ़ जाएंगे जिनमें नव्वे लाख गाँव वाले होंगे. श्री बी. जी. खेर इन सरकारी आँकड़ों को ठीक नहीं मानते. उनका कहना है कि इनमें गाँव के वह करोड़ों लोग शामिल नहीं हैं जो कुछ काम तो करते हैं पर जिनका बहुत सा समय बेकार जाता है, चूँकि उनके पास और काम करने को नहीं है. उनके सैकड़ों छोटे मोटे घरेलू धन्दे हमारे ग़लत आर्थिक विचारों और आदर्शों की वजह से ठप हो गए और होते जा रहे हैं. श्री बी. जी. खेर के अनुसार इस तरह के अधबेकार लोगों की गिनती प्लैनिंग कमीशन के बताए हुए आँकड़ों से कहीं अधिक है. पिछले सात बरस के अन्दर हमारी "योजनाएं" चलती जाती हैं और बेकारी बढ़ती जाती है.

श्री बी. जी. खेर का कहना है कि कमीशन ही के अनुसार कम से कम पचास लाख आदमियों को इन दूसरे पाँच बरस में भी काम नहीं दिया जा सकेगा, हमारे भविष्य के लिये यह "बड़े दुख की बात" है.

श्री बी. जी. खेर का कहना है कि:—"आर्थिक विकास यानी माली तरक़्क़ी की ग़रज़ थी पूरे समाज की भलाई और अधिक से अधिक लोगों को पूरे काम का दिया जाना. इस कसौटी पर अगर हम कसकर देखें तो हमें अपनी इस दूसरी पंच वर्षी योजना को नाकाफ़ी मानना पड़ेगा."

ایسی حالت میں اگر کہیں کوئی آواز بھی سچائی کے لئے اٹھتی ہوئی دکھائی دیتی ہے تو اس آواز سے، چاہے وہ نقارخانے میں طوطی کی آواز ہی کیوں نہ ہو، ہمیں اور ہمارے جیسوں کو آتمک سنتوش ملتا ہے .

حال میں اسی طرح کی آواز دوسری پنچ ورشی یوجنا کے بارے میں شری بی . جی . کھیر کی سنائی دی ہے . شری بی . جی . کھیر نے بمبئی میں سماچارپتروں کے پرتینددھیوں سے کہا ہے کہ :—"جہاں تک گاؤں کے اندر بیکاری اور بیروزگاری کا سمبندھ ہے یہ یوجنا بالکل نراشاجنک ہے ." انھوں نے بتایا کہ :—"بمبئی کی سبربن ڈسٹرکٹ ولیج انڈسٹریز ایسوسیئیشن (اطراف ضلع گراموديوگ سبھا) نے گاؤں کے لوگوں کی بیکاری اور بیروزگاری کو کم کرنے کے لئے دس 'پریشرمالیہ' کھولنے کا اور پانچ ہزار امبر چرخے چلوانے کا فیصلہ کیا ہے، اور اس کام میں جنتا سے سہیوگ کی پرارتھنا کی ہے ."

شری بی. جی. کھیر کے یہ 'پریشرمالیہ' بالکل گاندھی جی کے وچار کی چیز ہیں . جہاں تک ہم نے سنا ہے انھیں 'پریشرمالیہ' نام ونوبا جی نے دیا ہے .

شری بی. جی. کھیر نے بتایا کہ سرکاری پلاننگ کمیشن کے انوسار اس سمے ترپن لاکھ بیکار مزدور بھارت میں ہیں اور اگلے پانچ برس کے اندر ان میں ایک کروڑ اور بڑھ جائینگے جن میں نوے لاکھ گاؤں والے ہونگے . شری بی. جی. کھیر ان سرکاری آنکڑوں کو ٹھیک نہیں مانتے . ان کا کہنا ہے کہ ان میں گاؤں کے وہ کروڑوں لوگ شامل نہیں ہیں جو کچھ کام تو کرتے ہیں پر جن کا بہت سا سمے بیکار جاتا ہے، چونکہ ان کے پاس اور کام کرنے کو نہیں ہے . ان کے سیکڑوں چھوٹے موٹے گھریلو دھندے ہمارے غلط آرتھک وچاروں اور آدرشوں کی وجہ سے ٹھپ ہو گئے اور ہوتے جا رہے ہیں . شری بی. جی. کھیر کے انوسار اس طرح کے ادھ بیکار لوگوں کی گنتی پلاننگ کمیشن کے بتائے ہوئے آنکڑوں سے کہیں ادھک ہے . پچھلے سات برس کے اندر ہماری "یوجنائیں" چلتی جاتی ہیں اور بیکاری بڑھتی جاتی ہے .

شری بی. جی. کھیر کا کہنا ہے کہ کمیشن ہی کے انوسار کم سے کم پچاس لاکھ آدمیوں کو ان دوسرے پانچ برس میں بھی کام نہیں دیا جا سکیگا، ہمارے بھوشیہ کے لئے یہ "بڑے دکھ کی بات" ہے .

شری بی. جی. کھیر کا کہنا ہے کہ :—"آرتھک وکاس یعنی مالی ترقی کی غرض تھی پورے سماج کی بھلائی اور ادھک سے ادھک لوگوں کو پورے کام کا دیا جانا . اس کسوٹی پر اگر ہم کس کر دیکھیں تو ہمیں اپنی اس دوسری پنچ ورشی یوجنا کو ناکافی ماننا پڑیگا."

श्री बी. जी. खेर ने यह भी बताया कि कुल भारत खादी और ग्राम उद्योग बोर्ड ने सरकार को एक पूरा कार्य-क्रम बनाकर दिया था जिसके अनुसार जगह जगह हाथ का सूत इस तरह का तैयार कराया जा सकता है कि जिस से इन पाँच बरस के अन्दर हमारी बढ़ी हुई ज़रूरत का पूरा कपड़ा भी बन सके और जो हमारे सब हाथ करघों पर अच्छी तरह काम दे सके. उस कार्यक्रम के अनुसार सवा दो करोड़ अम्बर चरखे जगह जगह चलवा देने की ज़रूरत है, जिन से पचास लाख मन से ऊपर सूत तैयार हो सकता है. अगर उस कार्यक्रम को कामयाबी के साथ चलाया जा सकता तो केवल उस से ही छत्तीस लाख कातने वालों को, साढ़े बारह लाख बुनकरों और उनके शागिर्दों को, तीस हज़ार बढ़इयों को और लगभग बीस हज़ार और लोगों को काम मिल सकता था. श्री बी. जी. खेर का कहना है कि अम्बर चरखे के ज़रिये गाँव के पचास लाख आदमियों को आसानी से काम दिया जा सकता है. लेकिन खादी का काम करने वालों और उस तरह की संस्थाओं को ज़बरदस्त निराशा हुई जब भारत सरकार ने इस कार्य-क्रम को नामन्ज़ूर कर दिया. आगे भी सरकार इसे कभी पूरी तरह मानेगी इसकी आशा कम है.

हम श्री बी. जी. खेर के इन विचारों से पूरी तरह सहमत हैं. हमारी यह पंच वर्षी योजनाएं बड़े लोगों और पूँजीपतियों की योजनाएं हैं. इनसे देश का कुल धन भी बढ़ सकता है, पर मुट्ठी भर ऊपर के लोगों के लिये, आम जनता के लिये नहीं. जहां तक हमारे लाखों छोटे बड़े गावों की करोड़ों जनता का सम्बन्ध है यह योजनाएं अधिक से अधिक ऐसी ही हैं जैसे किसी कमज़ोर, बीमार और भूखी स्त्री को पाउडर और लिपस्टिक के सहारे तन्दुरुस्त दिखाने की कोशिश की जाय.

समाचार पत्रों में इस योजना पर काफ़ी बहस हो रही है. हम उन चीज़ों को दुहराना नहीं चाहते. हमारी राय साफ़ है कि जिस योजना में भारत जैसे देश की ग़रीब जनता पर सोच सोच कर अरबों रुपए के नए टैक्स लगाने पड़ें, जिस नमक की बाबत गाँधी जी अंगरेज़ सरकार से यह माँग करते थे कि उसपर कोई टैक्स नहीं होना चाहिये, उस पर भी टैक्स लगाना पड़े, जिसमें अरबों की कमी को पूरा करने के लिये हमें देश देश में जाकर क़र्ज़ा लेने की कोशिश करनी पड़े, और जिसमें फिर भी अरबों ही का फ़रक़ आमदनी और ख़र्च में दिखाई दे जिससे अरबों और खरबों ही के चमड़े के न सही काग़ज़ के टुकड़े उड़ा उड़ा कर काम निकालना पड़े, वह योजना कम से कम भारत जैसे देश के लिये दिवालियेपन की योजना और घर फूँक तमाशा है. इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि अगर हम गाँधी जी के बताए रास्ते पर चलें तो हमें एक पैसा भी बाहर से

شری بی. جی. کھیر نے یہ بھی بتایا کہ کل بھارت کھادی اور گرام اُدیوگ بورڈ نے سرکار کو ایک پورا کاریہ کرم بنا کر دیا تھا جس کے انوسار جگہہ جگہہ ہاتھ کا سوت اِس طرح کا تیار کرایا جا سکتا ہے کہ جس سے اِن پانچ برس کے اندر ہماری بڑھی ہوئی ضرورت کا پورا کپڑا بھی بن سکے اور جو ہمارے سب ہاتھ کرگھوں پر اچھی طرح کام دے سکے. اُس کاریہ کرم کے انوسار سوا دو کروڑ امبر چرخے جگہہ جگہہ چلوا دینے کی ضرورت ہے، جن سے پچاس لاکھ من سے اُوپر سوت تیار ہو سکتا ہے. اگر اُس کاریہ کرم کو کامیابی کے ساتھ چلایا جا سکتا تو کیول اُس سے ہی چھتّیس لاکھ کاتنے والوں کو، ساڑھے بارہ لاکھ بنکروں اور اُن کے شاگردوں کو، تیس ہزار بڑھئیوں کو اور لگ بھگ بیس ہزار اور لوگوں کو کام مل سکتا تھا. شری بی. جی. کھیر کا کہنا ہے کہ امبر چرخے کے ذریعے گاؤں کے پچاس لاکھ آدمیوں کو آسانی سے کام دیا جا سکتا ہے. لیکن کھادی کا کام کرنے والوں اور اُس طرح کی سنستھاؤں کو زبردست نراشا ہوئی جب بھارت سرکار نے اِس کاریہ کرم کو نامنظور کر دیا. آگے بھی سرکار اِسے کبھی پوری طرح مانیگی اِس کی آشا کم ہے.

ہم شری بی. جی. کھیر کے اِن وچاروں سے پوری طرح سہمت ہیں. ہماری یہ پنچ ورشی یوجنائیں بڑے لوگوں اور پونجی پتیوں کی یوجنائیں ہیں. اِن سے دیش کا کل دھن بھی بڑھ سکتا ہے، پر مٹھی بھر اُوپر کے لوگوں کے لئے، عام جنتا کے لئے نہیں. جہاں تک ہمارے لاکھوں چھوٹے بڑے گاؤں کی کروڑوں جنتا کا سمبندھ ہے یہ یوجنائیں ادھک سے ادھک ایسی ہی ہیں جیسے کسی کمزور، بیمار اور بھوکی اِستری کو پاؤڈر اور لپ اِسٹک کے سہارے تندرست دکھانے کی کوشش کی جائے.

سماچار پتروں میں اِس یوجنا پر کافی بحث ہو رہی ہے. ہم اُن چیزوں کو دوہرانا نہیں چاہتے. ہماری رائے صاف ہے کہ جس یوجنا میں بھارت جیسے دیش کی غریب جنتا پر سوچ سوچ کر اربوں روپئے کے نئے ٹیکس لگانے پڑیں، جس نمک کی بابت گاندھی جی انگریز سرکار سے یہ مانگ کرتے تھے کہ اُس پر کوئی ٹیکس نہیں ہونا چاہئے، اُس پر بھی ٹیکس لگانا پڑے، جس میں اربوں کی کمی کو پورا کرنے کے لئے ہمیں دیش دیش میں جاکر قرضہ لینے کی کوشش کرنی پڑے، اور جس میں پھر بھی اربوں ہی کا فرق آمدنی اور خرچ میں دکھائی دے، جس سے اربوں اور کھربوں ہی کے چمڑے کے نہ سہی کاغذ کے ٹکڑے اُڑا اُڑا کر کام نکالنا پڑے، وہ یوجنا کم سے کم بھارت جیسے دیش کے لئے دیوالیئے پن کی یوجنا اور گھر پھونک تماشہ ہے. اِس میں بھی کوئی سندیہہ نہیں کہ اگر ہم گاندھی جی کے بتائے راستے پر چلیں تو ہمیں ایک پیسہ بھی باہر سے

क़र्ज़ या दान लेने की ज़रूरत नहीं है. पर इस समय तो यहां आवाज़ सच मुच नक़्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़ है.

श्री बी. जी. खेर जो कुछ कोशिश ख़ुद कर रहे हैं उसे हम दिल से सराहते हैं और उसमें उन्हें पूरी सफलता चाहते हैं.

26. 5. 56 —सुन्दरलाल

'बनारस' की जगह 'वाराणसी'

हमारे प्रदेश उत्तर प्रदेश में बनारस का नाम बदल कर वाराणसी रखा जाना एक दरजे तक हंसी की और अप्राकृतिक यानी ख़िलाफ़ क़ुदरत बात है. दुनिया में सब जगह दुनिया के लाखों शब्दों और ख़ास कर नामों को जनता का गला उसी तरह रगड़ रगड़ कर गोल, सरल और सुन्दर बनाता रहता है जिस तरह गंगा का पानी उस पानी में पड़ी हुई पथरियों को. शब्द सब अन्त में रूढ़ि ही होते हैं. यौगिक शब्दों के टुकड़े या निकास भी अधिकतर स्वयं रूढ़ि होते हैं.

हमें इस से अधिक हंसी की इस समय एक और घटना याद आ रही है. दो चार बरस पहले की बात है. दिल्ली में हमारे घर पर आर्य समाज के मशहूर वेदवेत्ता पंडित विश्व बन्धु जी बैठे हुए थे. कुछ और सज्जन भी बैठे थे. तत्सम, तद्भव की बात चल पड़ी. कुछ सज्जन 'मूल शब्द' पर जाने की बात करने लगे. पंडित विश्व बन्धु जो कुछ देर से चुप बैठे सुन रहे थे. आख़िर वह गम्भीरता के साथ बोले—"भाई! मूल की तरफ़ ही जाओगे तो बड़ी कठिनाई पड़ जायगी. वेदों के अनुसार सब भाषाओं का निकास दो आवाज़ों से है—बन्दर की 'चि' और कुत्ते की 'भौं'. मूल तो यही दो हैं." हम उनके ये शब्द याद से लिख रहे हैं. पर आशय यही था. उनके इस कहने पर सब हंस पड़े और बात ख़तम हो गई.

गंगा अपना काम बन्द नहीं कर सकती. पोती फिर से दादी नहीं हो सकती. न सहारनपुर फिर से 'शाह हारूनपुर' हो सकता है और न 'बनारस' फिर से 'वाराणसी'. जनता बहुत दिनों बहकाई भी नहीं जा सकती. जनता के जिस गले ने पहले वाराणसी का बनारस बनाया था वह और कुछ समय बाद नए वाराणसी को 'बन्सी' या कुछ और बनाकर रहेगा. पर कुछ दिनों की मुसीबत ज़रूर है.

सबसे अधिक दुख की बात यह है कि इस देश में ऊंचे से ऊंचे स्थानों पर अभी तक इस तरह के लोग मौजूद हैं जो कुछ ऐतिहासिक भ्रान्तियों, साम्प्रदायिक भावनाओं और किसी भी भाषा के पाक या नापाक होने के हानिकर अंध विश्वासों से ऊपर नहीं उठ पाते. ग़ैरियत और नफ़रत के दैत्यों ने हमारे दिलों पर काफ़ी सिक्का जमा रखा है. प्रेम के

قرض یا دان لینے کی ضرورت نہیں ہے . پر اِس سمے تو یہاں آواز سچ مچ نقار خانے میں طوطی کی آواز ہے .

شری بی. جی. کھیر جو کچھ کوشش خود کر رہے ہیں اُسے ہم دل سے سراہتے ہیں اور اُس میں اُنہیں پوری سپھلتا چاہتے ہیں .

26 .5 .56 ——سندر لال .

'بنارس' کی جگہہ 'وارانسی'

ہمارے پردیش اُتر پردیش میں بنارس کا نام بدلکر وارانسی رکھا جانا ایک درجے تک ہنسی کی اور اپراکرتک یعنی خلاف قدرت بات ہے . دنیا میں سب جگہہ دنیا کے لاکھوں شبدوں اور خاص کر ناموں کو جنتا کا گلا اُسی طرح رگڑ رگڑ کر گول' سرل اور سندر بناتا رہتا ہے جس طرح گنگا کا پانی اُس پانی میں پڑی ہوئی پتھریوں کو . شبد سب انت میں روڑھی ہی ہوتے ہیں . یوگک شبدوں کے ٹکڑے یا نکاس بھی ادھکتر سویم روڑھی ہوتے ہیں .

ہمیں اِس سے ادھک ہنسی کی اِس سمے ایک اور گھٹنا یاد آرہی ہے . دو چار برس پہلے کی بات ہے. دلی میں ہمارے گھر پر آریہ سماج کے مشہور وید ویتا پنڈت وشوبندھو جی بیٹھے ہوئے تھے . کچھ اور سجن بھی بیٹھے تھے . تتسم' تدبھو کی بات چل پڑی . کچھ سجن 'مول شبد' پر جانے کی بات کرنے لگے . پنڈت وشوبندھو جی کچھ دیر سے چپ بیٹھے سن رہے تھے . آخر وہ گمبھیرتا کے ساتھ بولے——"بھائی ! مول کی طرف ہی جاؤ گے تو بڑی کٹھنائی پڑ جائیگی . ویدوں کے انوسار سب بھاشاؤں کا نکاس دو آوازوں سے ہے——بندر کی 'چی' اور کتے کی 'بھوں' . مول تو یہی دو ہیں ." ہم اُن کے یہ شبد یاد سے لکھ رہے ہیں . پر آشیہ یہی تھا . اُن کے اِس کہنے پر ہم سب ہنس پڑے اور بات ختم ہوگئی .

گنگا اپنا کام بند نہیں کر سکتی . پوتی پھر سے دادی نہیں ہو سکتی . نہ سہارن پور پھر سے 'شاہ ہارون پور' ہو سکتا ہے اور نہ 'بنارس' پھر سے 'وارانسی'. جنتا بہت دنوں بہکائی بھی نہیں جاسکتی . جنتا کے جس گلے نے پہلے وارانسی کا بنارس بنایا تھا وہ اور کچھ سمے بعد نئے وارانسی کو 'بنسی یا کچھ اور بنا کر رہیگا . پر کچھ دنوں کی مصیبت ضرور ہے .

سب سے ادھک دکھ کی بات یہ ہے کہ اِس دیش میں اونچے سے اونچے استھانوں پر ابھی تک اِس طرح کے لوگ موجود ہیں جو کچھ ایتہاسک بھرانتیوں' سامپردایک بھاوناؤں اور کسی بھی بھاشا کے پاک یا ناپاک ہونے کے ہانیکر اندھ وشواسوں سے اوپر نہیں اُٹھ پاتے . غیریت اور نفرت کے دیتوں نے ہمارے دلوں پر کافی سکہ جما رکھا ہے . پریم کے

देवता को वहां बैठने की जगह दिखाई नहीं देती. दुनिया किधर जा रही है ? हम किधर जा रहे हैं ? हमारे दिल और दिमाग़ अभी बहुत छोटे हैं.

26-5-56 —सुन्दरलाल

चीनी पंचांग (जन्त्री)

तीन हज़ार बरस से चीन में दिनों, महीनों और बरसों के हिसाब लगाने का एक ख़ास तरीक़ा चला आता था. सन् 1949 में जब नई सरकार उस देश में क़ायम हुई तो उसने उस पुराने पंचांग को ख़तम करके नया योरोपीय या ईसाई पंचांग देश भर में चालू कर दिया. नई सरकार ने यह बात केवल सब की आसानी के लिए की है, क्योंकि लगभग सारी बाक़ी दुनिया में भी आज यही ईसाई पंचांग चलता है और दुनिया को एक करने में इससे बहुत बड़ी मदद मिल सकती है.

पुराने चीनी पंचांग में बहुत से गुण भी थे. इसलिए देश की जनता में वह अभी तक एक दर्जे तक चालू है, ख़ासकर किसानों को उससे बड़ी मदद मिलती है, ठीक उसी तरह जिस तरह हिन्दुस्तान के पुराने महीनों से भारत के किसानों को मिलती है.

चीन के पुराने पंचांग में साल का पहला दिन देश भर के लोग एक बहुत बड़ा त्योहार मनाते थे. नई सरकार ने उस त्योहार को क़ायम रक्खा है. अब वो उसे 'बसंत का त्योहार' (स्प्रिंग फ़ेस्टिवल) कहते हैं. पुराने हिसाब से इस साल वह 12 फ़रवरी सन् 1956 को पड़ा था.

नई चीनी सरकार चार राष्ट्रीय त्योहार मानती है—एक यही बसंत का दिन, दूसरा पहली जनवरी नए साल का दिन, तीसरा पहली मई दुनिया भर के मजदूरों का दिन और चौथा पहली अक्तूबर यानी चीन का राष्ट्रीय दिन. बसंत को मनाने के लिए तीन दिन की छुट्टी रहती है.

चीनी लोग तारीख़ लिखने के लिए हम से ठीक उलटा तरीक़ा काम में लाते हैं. वह पहले सन् लिखते हैं, फिर महीना और आख़ीर में तारीख़, जैसे क्रिसमसडे यानी बड़े दिन को हम लिखेंगे 25-12-56 तो वो लिखेंगे 56-12-25.

चीन का पुराना पंचांग भारत के पुराने पंचांग की तरह धरती के चारों तरफ़ चांद की गति और सूरज के चारों तरफ़ धरती की गति दोनों के मेल से बना हुआ था. जितनी देर में चांद धरती के चारों तरफ़ एक चक्कर पूरा कर लेता है वह हुआ एक महीना. यह समय ठीक 29 दिन 12 घंटे 44 मिनट और 3 सेकंड होता है. जितनी देर में धरती

دیوتا کو وهاں بیٹھنے کی جگہہ دکھائی نہیں دیتی ۔ دنیا کدھر جا رهی هے ؟ هم کدھر جارهے هیں ؟ همارے دل اور دماغ ابھی بہت چھوٹے هیں ۔

26 .5 .56 —سندر لال ۔

چینی پنچانگ (جنتری)

تین هزار برس سے چین میں دنوں' مہینوں اور برسوں کے حساب لگانے کا ایک خاص طریقہ چلا آتا تھا ۔ سن 1949 میں جب نئی سرکار اُس دیش میں قایم هوئی تو اُس نے اُس پرانے پنچانگ کو ختم کر کے نیا یوروپیہ یا عیسائی پنچانگ دیش بھر میں چالو کر دیا ۔ نئی سرکار نے یہ بات کیول سب کی آسانی کے لئے کی هے' کیونکہ لگ بھگ ساری باقی دنیا میں بھی آج یہی عیسائی پنچانگ چلتا هے اور دنیا کو ایک کرنے میں اِس سے بہت بڑی مدد مل سکتی هے ۔

پرانے چینی پنچانگ میں بہت سے گن بھی تھے ۔ اِس لئے دیش کی جنتا میں وہ ابھی تک ایک درجہ تک چالو هے' خاصکر کسانوں کو اُس سے بڑی مدد ملتی هے' ٹھیک اُسی طرح جس طرح هندستان کے پرانے مہینوں سے بھارت کے کسانوں کو ملتی هے ۔

چین کے پرانے پنچانگ میں سال کا پہلا دن دیش بھر کے لوگ ایک بہت بڑا تیوهار مانتے تھے ۔ نئی سرکار نے اُس تیوهار کو قایم رکھا هے ۔ اب وہ اُسے بسنت کا تیوهار' (اِسپرنگ فیسٹیول) کہتےهیں ۔ پرانے حساب سے اِس سال وہ 12 فروری سن 1956 کو پڑا تھا ۔

نئی چینی سرکار چار راشٹریہ تیوهار مانتی هے—ایک یہی بسنت کا دن' دوسرا پہلی جنوری نئے سال کا دن' تیسرا پہلی مئی دنیا بھر کے مزدوروں کا دن اور چوتھا پہلی اکتوبر یعنی چین کا راشٹریہ دن۔ بسنت کو ماننے کے لئے تین دن کی چھٹی رهتی هے ۔

چینی لوگ تاریخ لکھنے کے لئے هم سے ٹھیک اُلٹا طریقہ کام میں لاتے هیں ۔ وہ پہلے سن لکھتے هیں' پھر مہینہ اور آخر میں تاریخ' جیسے کرسمس ڈے یعنی بڑے دن کو هم لکھینگے 56 .12 .25 تو وہ لکھینگے ۔ 25 .12 .56

چین کا پرانا پنچانگ بھارت کے پرانے پنچانگ کی طرح دھرتی کے چاروں طرف چاند کی گتی اور سورج کے چاروں طرف دھرتی کی گتی دونوں کے میل سے بنا هوا تھا ۔ جتنی دیر میں چاند دھرتی کے چاروں طرف ایک چکر پورا کر لیتا هے وہ هوا ایک مہینہ ۔ یہ سمے ٹھیک 29 دن 12 گھنٹے 44 منٹ اور 3 سیکنڈ هوتا هے ۔ جتنی دیر میں دھرتی

सूरज के चारों तरफ़ एक चक्कर पूरा कर लेती है वह हुआ एक साल. यह समय होता है 365 दिन 5 घंटे 48 मिनट और 46 सेकंड. जितनी देर में धरती अपनी धुरी के चारों तरफ़ एक चक्कर पूरा कर लेती है वह होता है एक दिन रात.

इस तरह चांद के 12 महीनों में और सूरज के एक साल में कुछ थोड़ा सा फ़रक़ पड़ जाता है.

दुनिया के कुछ पंचांग ऐसे हैं जैसे आजकल का हिजरी पंचांग जिनमें इस फ़रक़ को पूरा कर लेने की कोशिश नहीं की जाती. इसीलिए इसलाम के त्यौहार जो हिजरी सन से गिने जाते हैं सदा एक ही मौसम में नहीं पड़ते. रमज़ान कभी गरमी में तो कभी सरदी में और कभी बरसात में आता है. मौसम से उसका कोई संबंध नहीं रहता.

भारत के हिन्दू विद्वानों ने इस कमी को पूरा करने के लिए लगभग हर चौथे साल लोंद के महीने का रिवाज डाला. लगभग हर 97 वर्ष के बाद वो एक महीना कम भी कर लेते हैं. हिसाब मामूली आदमी के लिए ज़रा कठिन हो जाता है, पर इस तरह भारत के पंचांग में चांद के महीनों और सूरज के बरसों में हिसाब ठीक बैठा लिया गया है. चैत हमेशा गरमियों मे ही होगा और बारिश हमेशा सावन भादों में. हर साल पूरा साल है.

ईसाई पंचांग में भी महीनों के दिन घटा बढ़ाकर इस कमी को पूरा कर लिया गया है. ईसाई पंचांग जो आज दुनिया भर में चलता है ख़ासा ठीक पंचांग है. यह कहने की ज़रूरत नहीं कि मौसम सूरज के चारों तरफ़ धरती के घूमने से पैदा होते और बदलते रहते हैं. पर ईसाई महीनों का चांद की गति के साथ अब कोई संबंध नहीं रहा.

पुराने चीन के विद्वानों ने भारत के विद्वानों की तरह चांद के महीनों और सूरज के साल को मिलाने का अपना ही ढंग निकाल लिया था. हर उन्नीस बरस में उन्होंने सात लोंद के महीने जोड़ दिए. इस तरह महीने चांद के हिसाब से गिनते हुए भी हर उन्नीस साल के अंदर उनका एक औसत साल ठीक उतना ही हो जाता है जितना एक सौर यानी शम्सी साल.

चीन में यह तरीक़ा ईसा से कम से कम 600 साल पहले से चला आता था. यूनान में यही तरीक़ा चीन के 170 बरस बाद जारी हुआ.

पुराने चीनियों ने 12 महीनों के भी अलग अलग नाम रख दिये थे और चौबीस पखवारों के भी अलग अलग नाम रख रखे थे. यह 24 नाम अभी तक चलते हैं और ठीक किसानों की ज़रूरत के अनुसार हैं. इनके नाम बड़े मनोरंजक हैं. ये चौबीस नाम एक दूसरे के बाद यह हैं—

سورج کے چاروں طرف ایک چکر پورا کر لیتی ھے وہ ھوا ایک سال۔ یہ سمے ھوتا ھے 365 دن 5 گھنٹے 48 منٹ اور 46 سیکنڈ۔ جتنی دیر میں دھرتی اپنی دھوری کے چاروں طرف ایک چکر پورا کرلیتی ھے وہ ھوتا ھے ایک دن رات ۔

اِس طرح چاند کے 12 مہینوں میں اور سورج کے ایک سال میں کچھ تھوڑا سا فرق پڑ جاتا ھے ۔

دنیا کے کچھ پنچانگ ایسے ھیں جیسے آجکل کا ھجری پنچانگ جس میں اِس فرق کو پورا کرلینے کی کوشش نہیں کی جاتی ۔ اس لئے اِسلام کے تیوھار جو ھجری سن سے گنے جاتے ھیں سدا ایک ھی موسم میں نہیں پڑتے ۔ رمضان کبھی گرمی میں تو کبھی سردی میں او کبھی برسات میں آتا ھے ۔ موسم سے اُس کا کوئی سمبندھ نہیں رھتا ۔

بھارت کے ھندو ودوانوں نے اِس کمی کو پورا کرنے کے لئے لگ بھگ ھر چوتھے سال لوند کے مہینے کا رواج ڈالا۔ لگ بھگ ھر 97 ورش کے بعد وہ ایک مہینہ کم بھی کرلیتے ھیں ۔ حساب معمولی آدمی کے لئے ذرا کٹھن ھوجاتا ھے، پر اِس طرح بھارت کے پنچانگ میں چاند کے مہینوں اور سورج کے برسوں میں حساب ٹھیک بیٹھا لیا گیا ھے ۔ چیت ھمیشہ گرمیوں میں ھی ھوگا اور بارش ھمیشہ ساون بھادوں میں ۔ ھر سال پورا سال ھے ۔

عیسائی پنچانگ میں بھی مہینوں کے دن گھٹا بڑھاکر اِس کمی کو پورا کرلیا گیا ھے ۔ عیسائی پنچانگ جو آج دنیا بھر میں چلتا ھے خاصہ ٹھیک پنچانگ ھے ۔ یہ کہنے کی ضرورت نہیں ھے کہ موسم سورج کے چاروں طرف دھرتی کے گھومنے سے پیدا ھوتے اور بدلتے رھتے ھیں ۔ پر عیسائی مہینوں کا چاند کی گتی کے ساتھ اب کوئی سمبندھ نہیں رہا ۔

پرانے چین کے ودوانوں نے بھارت کے ودوانوں کی طرح چاند کے مہینوں اور سورج کے سال کو ملانے کا اپنا ھی ڈھنگ نکال لیا تھا ۔ ھر انیس برس میں اُنھوں نے سات لوند کے مہینے جوڑ دیئے ۔ اِس طرح مہینے چاند کے حساب سے گنتے ھوئے بھی ھر اُنیس سال کے اندر اُن کا ایک اوسط سال ٹھیک اُتنا ھی ھوجاتا ھے جتنا ایک سور یعنی شمسی سال ۔

چین میں یہ طریقہ عیسیٰ سے کم سے کم 600 سال پہلے سے چلا آتا تھا ۔ یونان میں یہی طریقہ چین کے 170 برس بعد جاری ھوا ۔

پرانے چینیوں نے 12 مہینوں کے بھی الگ الگ نام رکھدیئے تھے اور چوبیس پکھواروں کے بھی الگ الگ نام رکھے تھے ۔ یہ 24 نام ابھی تک چلتے ھیں اور ٹھیک کسانوں کی ضرورت کے انوسار ھیں ۔ اِن کے نام بڑے منورنجک ھیں ۔ یہ چوبیس نام ایک دوسرے کے بعد یہ ھیں—

(1) बसंत शुरू, (2) बसंत की फुहार, (3) कीड़ों का जागना, (4) बसंत के दिन रात बराबर, (5) साफ़ और रौशन, (6) दाने की बारिश, (7) गरमी शुरू, (8) दाने का बनना, (9) बाल में दाना, (10) गरमी का बड़ा दिन, (11) हलकी गरमी, (12) बड़ी गरमी, (13) पतझड़ शुरू, (14) गरमी का टूटना, (15) सफ़ेद ओस, (16) पतझड़ के दिन रात बराबर, (17) ठंडी ओस, (18) कोहरा, (19) जाड़ा शुरू, (20) हलकी बरफ़, (21) भारी बरफ़, (22) सर्दी का छोटा दिन, (23) हलकी सर्दी, (24) तेज़ सर्दी.

ज़ाहिर है देश भर के किसानों को अपने काम में इन नामों से बहुत बड़ी मदद मिलती थी और अब भी मिलती है. चीन में इस तरह की कहावतें गाँव गाँव में बेहद मशहूर हैं जैसे:—"साफ़ और रौशन में चावल बोओ," "दाने की बारिश में रोपा लगाओ" वग़ैरह वग़ैरह.

इस पुराने चीनी पंचांग में एक बहुत बड़ी कमी यह थी कि ईसाई या विक्रमी संवत की तरह इसमें कोई एक पुराना सन नहीं था. हर चीनी सम्राट के गद्दी पर बैठने के समय नया सन चल पड़ता था. इससे लम्बा या सदियों का हिसाब लगाने में ज़रा देर लगती थी.

एक हिसाब चीन में साठ साठ बरस के एक एक युग का भी चलता था, वह और भी पेचीदा मालूम होता है.

पुराने चीन में सात दिन के सप्ताह या हफ़्ते का रिवाज नहीं था. अब वो चल पड़ा है.

नए चीन ने अब वो सब पेचीदगियाँ ख़तम करदीं. अब वहाँ हर इतवार को छुट्टी होती है और वही ईसवी सन् बरता जाता है जो लगभग बाक़ी सब दुनिया में बरता जाता है. दुनिया भर की पहली मई उनकी भी पहली मई है.

दुनिया को एक करने के लिए यह एक ख़ासा अच्छा क़दम है. और नए चीन के खुले दिमाग़ और मानव एकता में विश्वास का सूचक है, चीन के किसान पुराने पखवारों के नामों से फ़ायदा उठाते हैं और उठाते रहेंगे .

24-6-56 —सुन्दरलाल

'नया हिन्द' के गाहकों और प्रेमियों से

'नया हिन्द' जुलाई सन् 1946 में निकलना शुरू हुआ था. उसे इस शकल में निकलते हुए ठीक दस बरस हो चुके.

महात्मा गाँधी हिन्दुस्तानी को इस देश की राष्ट्र भाषा की जगह देना चाहते थे. हिन्दुस्तानी से उनका मतलब वह खड़ी बोली थी जो उत्तर भारत के बहुत से हिस्सों में हिन्दू, मुसलमान और सब लोग आम तौर पर बोलते और

(1) بسنت شروع‘ (2) بسنت کی پھوہار‘ (3) کیڑوں کا جاگنا‘ (4) بسنت کے دن رات برابر‘ (5) صاف اور روشن‘ (6) دانے کی بارش‘ (7) گرمی شروع‘ (8) دانے کا بننا‘ (9) بال میں دانہ‘ (10) گرمی کا بڑا دن‘ (11) ہلکی گرمی‘ (12) بڑی گرمی‘ (13) پت جھڑ شروع‘ (14) گرمی کا ٹوٹنا‘ (15) سفید اوس‘ (16) پت جھڑ کے دن رات برابر‘ (17) ٹھنڈی اوس‘ (18) کہرا‘ (19) جاڑا شروع‘ (20) ہلکی برف‘ (21) بھاری برف‘ (22) سردی کا چھوٹا دن‘ (23) ہلکی سردی‘ (24) تیز سردی .

ظاہر ہے دیش بھر کے کسانوں کو اپنے کام میں ان ناموں سے بہت بڑی مدد ملتی تھی اور اب بھی ملتی ہے . چین میں اِس طرح کی کہاوتیں گاؤں گاؤں میں بیحد مشہور ہیں جیسے—"صاف اور روشن میں چاول بوؤ" ' دانے کی بارش میں روپا لگاؤ" وغیرہ وغیرہ .

اِس پرانے چینی پنچانگ میں ایک بہت بڑی کمی یہ تھی کہ عیسائی یا وکرمی سنوت کی طرح اس میں کوئی ایک پرانا سن نہیں تھا . ہر چینی سمراٹ کے گدی پر بیٹھنے کے سمے نیا سن چل پڑتا تھا . اِس سے لمبا یا صدیوں کا حساب لگانے میں ذرا دیر لگتی تھی .

ایک حساب چین میں ساٹھ ساٹھ برس کے ایک ایک یگ کا بھی چلتا تھا‘ وہ اور بھی پیچیدہ معلوم ہوتا ہے .

پرانے چین میں سات دن کے سپتاہ یا ہفتے کا رواج نہیں تھا . اب وہ چل پڑا ہے .

نئے چین نے وہ سب پیچیدگیاں ختم کردیں . اب وہاں ہر اِتوار کو چھٹی ہوتی ہے اور وہی عیسوی سن برتا جاتا ہے جو لگ بھگ باقی سب دنیا میں برتا جاتا ہے . دنیا بھر کی پہلی مئی اُن کی بھی پہلی مئی ہے .

دنیا کو ایک کرنے کے لئے یہ خاصہ اچھا قدم ہے‘ اور نئے چین کے کھلے دماغ اور مانو ایکتا میں وشواس کا سوچک ہے‘ چین کے کسان پرانے پکھواروں کے ناموں سے فایدہ اُٹھاتے ہیں اور اُٹھاتے رہینگے .

24 . 6 . —سندر لال .

'نیا ہند' کے گاہکوں اور پریمیوں سے

"نیا ہند" جولائی سن 1946 میں نکلنا شروع ہوا تھا . اُسے اِس شکل میں نکلتے ہوئے ٹھیک دس برس ہوچکے .

مہاتما گاندھی ہندستانی کو اِس دیش کی راشٹر بھاشا کی جگہ دینا چاہتے تھے . ہندستانی سے اُن کا مطلب وہ کھڑی بولی تھی جو اُتر بھارت کے بہت سے حصوں میں ہندو‘ مسلمان اور سب لوگ عام طور پر بولتے اور

समझते हैं, और जो देश के दूसरे अधिकतर हिस्सों में भी आसानी से समझी जाती है. हमारी यह बोल चाल की ज़बान हमारी बदक़िस्मती से साहित्य के मैदान में पहुँच कर दो शकलों में बँट गई, जिससे देश, उसकी एकता और उसके भले को काफ़ी नुक़सान पहुँचा और पहुँच रहा है.

महात्मा गाँधी उर्दू और हिन्दी की इन दोनों धाराओं को मिलाकर फिर से एक कर देना चाहते थे और उसे 'हिन्दुस्तानी' ही नाम देना चाहते थे. बोल चाल की भाषा और साहित्य की भाषा के दो अलग अलग नाम होते भी नहीं. बोल चाल की एक बुनियादी भाषा के दो अलग अलग साहित्यक (अदबी) रूप और दो अलग अलग साहित्यक नाम हमारे देश की ही एक अनोखी उपज हैं, जो हमारी तंग निगाह और छोटे दिलों का सबूत हैं.

गाँधी जी की यह भी राय थी कि यह मिली जुली राष्ट्र भाषा नागरी और उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जावे. आगे चलकर कभी देश वासियों का इन दोनों लिपियों में से किसी एक को या किसी तीसरी लिपि को अपनी राष्ट्र लिपि चुन लेना वह भविष्य पर छोड़ देना चाहते थे.

हमें विश्वास है कि नई दिल्ली के अन्दर देश के चुने हुए नुमाइन्दों ने भाषा के मामले में अगर गाँधी जी की सलाह को माना होता तो आज उन बहुत सी बद गुमानियों, ग़लत फ़हमियों और मुसीबतों से देश बच गया होता जिन में हम इस समय फंसे हुए हैं और फंसते जा रहे हैं, पर यह न हो सका !

भाषा के मामले में हमें आज भी गाँधी जी की बात पर उतना ही पक्का विश्वास है जितना आज से दस बरस पहले था. हमें पूरा विश्वास है कि हिन्दी के नाम से जो बनावटी, समझ में न आने वाली, बेमहावरा, रूखी और ग़लत ज़बान आज इस देश में चलाने की कोशिश की जा रही है वह बहुत दिनों नहीं चल सकती. हमें यह भी विश्वास है कि हिन्दी और उर्दू की अलग अलग धाराएं इस देश में बहुत दिनों नहीं बह सकतीं. हमें यह भी विश्वास है कि हमारी आगे की राष्ट्र भाषा यानी दिल्ली सरकार की भाषा और प्रदेश प्रदेश के बीच के काम की भाषा वही मिली जुली भाषा होगी जिसे गाँधी जी हिन्दुस्तानी कहना चाहते थे. देश को अगर पनपना है तो नफ़रतों, तंग निगाहों और अंध विश्वास की शक्तियां देर तक प्रेम, उदारता और समझदारी की शक्तियों को दबाकर नहीं रख सकतीं. पर अभी रोग कुछ ज़ोर पर है.

'नया हिन्द' महात्मा गाँधी की उसी आवाज़ को ज़िन्दा रखने की एक कोशिश है.

سمجھتے ہیں، اور جو دیش کے دوسرے ادھک‌تر حصوں میں بھی آسانی سے سمجھی جاتی ہے۔ ہماری یہ بول چال کی زبان ہماری بدقسمتی سے ساہتیہ کے میدان میں پہنچ کر دو شکلوں میں بٹ گئی جس سے دیش، اس کی ایکتا اور اس کے بھلے کو کافی نقصان پہنچا اور پہنچ رہا ہے۔

مہاتما گاندھی اردو اور ہندی کی ان دونوں دھاراؤں کو ملاکر پھر سے ایک کر دینا چاہتے تھے اور اسے 'ہندستانی' ہی نام دینا چاہتے تھے۔ بول چال کی بھاشا اور ساہتیہ کی بھاشا کے دو الگ الگ نام ہوتے بھی نہیں۔ بول چال کی ایک بنیادی بھاشا کے دو الگ الگ ساہتیک (ادبی) روپ اور دو الگ الگ ساہتیک نام ہمارے دیش کی ہی ایک انوکھی اپج ہیں، جو ہماری تنگ نگاہ اور چھوٹے دلوں کا ثبوت ہیں۔

گاندھی جی کی یہ بھی رائے تھی کہ ملی جلی راشٹر بھاشا ناگری اور اردو دونوں لپیوں میں لکھی جاوے۔ آگے چل کر کبھی دیش واسیوں کا ان دونوں لپیوں میں سے کسی ایک کو یا کسی تیسری لپی کو اپنی راشٹر لپی چن لینا وہ بھوشیہ پر چھوڑ دینا چاہتے تھے۔

ہمیں وشواس ہے کہ نئی دلی کے اندر دیش کے چنے ہوئے نمائندوں نے بھاشا کے معاملے میں اگر گاندھی جی کی صلاح کو مانا ہوتا تو آج ان بہت سی بدگمانیوں، غلط فہمیوں اور مصیبتوں سے دیش بچ گیا ہوتا جن میں ہم اس سمے پھنسے ہوئے ہیں اور پھنستے جا رہے ہیں۔ پر یہ نہ ہو سکا!

بھاشا کے معاملے میں ہمیں آج بھی گاندھی جی کی بات پر اتنا ہی پکا وشواس ہے۔ جتنا آج سے دس برس پہلے تھا۔ ہمیں پورا وشواس ہے کہ ہندی کے نام سے جو بناوٹی، سمجھ میں نہ آنے والی، بےمحاورہ، روکھی اور غلط زبان آج اس دیش میں چلانے کی کوشش کی جا رہی ہے وہ بہت دنوں نہیں چل سکتی۔ ہمیں یہ بھی وشواس ہے کہ ہندی اور اردو کی الگ الگ دھارائیں اس دیش میں بہت دنوں نہیں بہہ سکتیں۔ ہمیں یہ بھی وشواس ہے کہ ہماری آگے کی راشٹر بھاشا یعنی دلی سرکار کی بھاشا اور پردیش پردیش کے بیچ کے کام کی بھاشا وہی ملی جلی بھاشا ہوگی جسے گاندھی جی ہندستانی کہنا چاہتے تھے۔ دیش کو اگر پنپنا ہے تو نفرتوں، تنگ نگاہوں اور اندھ وشواس کی شکتیاں دیر تک پریم، اُدارتا اور سمجھداری کی شکتیوں کو دبا نہیں رکھ سکتیں۔ پر ابھی روگ کچھ زور پر ہے۔

"نیا ہند" مہاتما گاندھی کی اسی آواز کو زندہ رکھنے کی ایک کوشش ہے۔

इन हालात में क़ुदरती था कि 'नया हिन्द' के गाहकों की तादाद कम हो. जो देशवासी भाषा के सवाल पर हमसे सहमत हैं उनमें भी बहुत से हिन्दी पढ़ने वाले 'नया हिन्द' इसलिये नहीं ख़रीदते कि उनके ख़्याल में उर्दू वाला आधा हिस्सा उनके लिये फ़ज़ूल जाता है. उसी तरह बहुत से उरदू पढ़ने वाले हिन्दी हिस्से को अपने लिये फ़ुज़ूल समझ कर 'नया हिन्द' के गाहक नहीं बनते. जो थोड़े से प्रेमी इन हालतों में भी बराबर 'नया हिन्द' के गाहक बने हुए हैं हमारा दिल उनके लिये प्रेम और कृतज्ञता से भरा हुआ है, पर इन हालतों में 'नया हिन्द' का घाटे पर चलना स्वाभाविक था।

माहात्मा गाँधी की ज़िन्दगी में उनके बलिदान से एक दो महीने पहले ही यह संकट हमारे सामने आ चुका था. कुछ मित्रों की राय हुई कि 'नया हिन्द' को हिन्दी में अलग और उर्दू में अलग निकाला जावे, भाषा एक रहे. इससे गहाकों की तादाद बढ़ जाने की आशा थी और हो सकता था कि हमें घाटा न भरना पड़ता. हमने अपने इस संकट को गाँधी जी के सामने रखा और उनकी राय चाही. उन्हों ने कुछ सोचकर हमें जो जवाब दिया वह यह था—"जब तक निकाल सको इसी शकल में निकालो."

'नया हिन्द' ने अब तक गाँधी जी की उस राय पर अमल किया है और कर रहा है.

पर संकट ज्यों का त्यों हमारे सामने है घाटा कब तक और कहां से भरा जावे ?

हमारे सामने अब कई रास्ते हैं:

एक यह कि 'नया हिन्द' को बन्द कर दिया जावे.

'नया हिन्द' की बात को छोड़ कर महात्मा गाँधी की एक आम राय यह भी थी कि जो समाचारपत्र अपने गाहकों के चन्दे से नहीं चल सकता उसे बन्द हो जाना चाहिये. गाँधी जी के अपने पत्र अब तक सब बन्द हो चुके.

दूसरा यह है कि हिन्दी और उर्दू को अलग अलग निकालकर गाहक बढ़ाने और घाटा पूरा करने की कोशिश की जावे. भाषा एक ही रहे पर निकलें दोनों अलग अलग.

तीसरा यह कि 'नया हिन्द' का हर गाहक और हर प्रेमी उसके अधिक से अधिक नए गाहक बनाने की कोशिश करे और इस तरह साल छै महीने के अन्दर उसे अपने पैरों पर खड़ा कर दिया जावे.

'नया हिन्द' के प्रेमी अगर चाहें और जी से कोशिश करें तो हो सकता है कि यह बात असम्भव न हो.

हम इस सारी स्थिति पर विचार कर रहे हैं. फ़ैसला करने से पहले हम चाहते हैं कि 'नया हिन्द' के गाहकों

اِن حالات میں قدرتی تھا کہ 'نیاہند' کے گاہکوں کی تعداد کم ہو . جو دیش واسی بھاشا کے سوال پر ہم سے سہمت ہیں اُن میں بھی بہت سے ہندی پڑھنے والے 'نیاہند' اِس لئے نہیں خریدتے کہ اُن کے خیال میں اُردو والا آدھا حصہ اُن کے لئے فضول جاتا ہے . اُسی طرح بہت سے اُردو پڑھنے والے ہندی حصے کو اپنے لئے فضول سمجھکر 'نیاہند' کے گاہک نہیں بنتے. جو تھوڑے سے پریمی اِن حالتوں میں بھی برابر 'نیاہند' کے گاہک بنے ہوئے ہیں ہمارا دل اُن کے لئے پریم اور کرتگیتا سے بھرا ہوا ہے . پر اِن حالتوں میں 'نیاہند' کا گھاٹے پر چلنا سوابھاوِک تھا .

مہاتما گاندھی کی زندگی میں اُن کے بلیدان سے ایک دو مہینے پہلے ہی یہ سنکٹ ہمارے سامنے آچکا تھا . کچھ متروں کی رائے ہوئی کہ 'نیاہند' کو ہندی میں الگ اور اُردو میں الگ نکالا جاوے' بھاشا ایک رہے . اِس سے گاہکوں کی تعداد بڑھ جانے کی آشا تھی اور ہو سکتا تھا کہ ہمیں گھاٹا نہ بھرنا پڑتا . ہم نے اپنے اِس سنکٹ کو گاندھی جی کے سامنے رکھا اور اُن کی رائے چاہی . اُنہوں نے کچھ سوچ کر ہمیں جو جواب دیا وہ یہ تھا:—"جب تک نکال سکو اِسی شکل میں نکالو ."

'نیا ہند' نے اب تک گاندھی جی کی اُس رائے پر عمل کیا ہے اور کر رہا ہے .

پر سنکٹ جیوں کا تیوں ہمارے سامنے ہے . گھاٹا کب تک اور کہاں سے بھرا جاوے ؟

ہمارے سامنے اب کئی راستے ہیں :

ایک یہ کہ نیاہند کو بند کردیا جاوے .

'نیاہند' کی بات کو چھوڑ کر' مہاتما گاندھی کی ایک عام رائے یہ بھی تھی کہ جو سماچار پتر اپنے گاہکوں کے چندے سے نہیں چل سکتا اُسے بند ہو جانا چاہئے . گاندھی جی کے اپنے پتر اب تک سب بند ہوچکے .

دوسرا یہ ہے کہ ہندی اور اُردو کو الگ الگ نکال کر گاہک بڑھانے اور گھاٹا پورا کرنے کی کوشش کی جاوے . بھاشا ایک ہی رہے پر نکلیں دونوں الگ الگ .

تیسرا یہ کہ 'نیاہند' کا ہر گاہک اور ہر پریمی اُس کے ادھک سے ادھک نئے گاہک بنانے کی کوشش کرے اور اِس طرح سال چھ مہینے کے اندر اُسے اپنے پیروں پر کھڑا کر دیا جاوے .

'نیاہند' کے پریمی اگر چاہیں اور جی سے کوشش کریں تو ہو سکتا ہے کہ یہ بات اسمبھو نہ ہو .

ہم اِس ساری استھتی پر وچار کر رہے ہیں . فیصلہ کرنے سے پہلے ہم چاہتے ہیں کہ نیاہند کے گاہکوں

और प्रेमियों की, जिन्हें हम 'नया हिन्द' के कुटुम्बी मानते हैं, राय मालूम करलें, और जहां तक हो सके उसी के अनुसार चलें. इसलिये हम 'नया हिन्द' के हर गाहक और हर प्रेमी से प्रार्थना करते हैं कि वह जहां तक हो सके जल्दी हमें अपनी ठीक ठीक राय लिख कर भेज दें. हो सकता है कि किसी गाहक या किसी प्रेमी को कोई और रास्ता भी सूझ जाय. लेकिन हम यह बात साफ़ कर देना जरूरी समझते हैं कि जो भाई या बहन हमें 'नया हिन्द' को इसी रूप में जारी रखने की सलाह देंगे उनका पवित्र कर्तव्य हो जायगा कि फिर वह 'नया हिन्द' के गाहक बढ़ाने में अपना समय लगाकर हमें पूरी पूरी मदद दें.

हम फिर कहते हैं कि ज़रा सी कोशिश से यह असम्भव नहीं है.

पर हम अपने हर कुटुम्बी की आज़ाद और साफ़ साफ़ राय जानना चाहते हैं. हमें जवाब का इन्तज़ार रहेगा.

145. मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

30-6-56. —सुन्दरलाल.

है घड़ी भर का तमाशा जबकि दुनिया की फ़िज़ा,
रंजो ग़म इतने उठाने से है फिर क्या फ़ायदा.
सौंप कर क़िस्मत को सब कुछ ख़ुश रहो हर हाल में,
मिट नहीं सकता किसी सूरत मुक़द्दर का लिखा.

—उमर ख़ैयाम.

اور پریمیوں کی جنہیں ہم 'نیاہند' کے کٹمبی مانتے ہیں رائے معلوم کر لیں اور جہاں تک ہو سکے اُسی کے انوسار چلیں . اِس لئے ہم 'نیاہند' کے ہر گاہک اور ہر پریمی سے پرارتھنا کرتے ہیں کہ وہ جہاں تک ہو سکے جلدی ہمیں اپنی ٹھیک ٹھیک رائے لکھ کر بھیج دیں . ہو سکتا ہے کسی گاہک یا کسی پریمی کو کوئی اور راستہ بھی سوجھ جائے . لیکن ہم یہ بات صاف کر دینا ضروری سمجھتے ہیں کہ جو بھائی یا بہن ہمیں 'نیاہند' کو اِسی روپ میں جاری رکھنے کی صلاح دینگے اُن کا پوتر کرتویہ ہو جائے گا کہ پھر وہ 'نیاہند' کے گاہک بڑھانے میں اپنا سمے لگا کر ہمیں پوری پوری مدد دیں .

ہم پھر کہتے ہیں کہ ذراسی کوشش سے یہ اسمبھو نہیں ہے .

پر ہم اپنے ہر کٹمبی کی آزاد اور صاف صاف رائے جاننا چاہتے ہیں. ہمیں جواب کا انتظار رہے گا .

145' مٹھی گنج' اِلہ آباد .

30. 6. 56. — سندر لال .

ہے گھڑی بھر کا تماشہ جب کہ دنیا کی فضا'
رنج و غم اِتنے اُٹھانے سے ہے پھر کیا فائدہ'
سونپ کر قسمت کو سب کچھ خوش رہو ہر حال میں'
مٹ نہیں سکتا کسی صورت مقدر کا لکھا .

—عمر خیام .

हिन्दी घर

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उर्दू में)
लेखक—गान्धीवाद के माने जाने
विद्वान : श्री मंज़र अली सोख्ता
सफ़े 225, क़ीमत दो रुपया

—:o:—

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—क़ुदसिया ज़ैदी
भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा काग़ज़, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें
दाम दो रुपया

—:o:—

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

गीता और क़ुरान

275 सफ़े, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफ़े, दाम बारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक़

क़ीमत बारह आने

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क़ीमत चार आने

बंगाल और उससे सबक़

क़ीमत दो आने

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्ठीगंज इलाहाबाद

ہندی گھر

چر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے یک بڑا کیندر — پاٹھک ہندی، و، انگریزی کی من پسند کتابوں کے ہمیں لکھیں۔

ہماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ہندی اور اردو میں)
لیکھک — گاندھی واد کے مانے جانے
ودوان: شری منظر علی سوختہ۔
صفحے 225، قیمت دو روپیہ

—:o:—

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)
لیکھکا — قدسیہ زیدی
بھومکا — پنڈت جواہر لال نہرو
موٹا کاغذ، موٹا ٹائپ، بہت سی رنگین تصویریں
دام دو روپیہ

—:o:—

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور قران

275 صفحے، دام ڈھائی روپیہ

ہندو مسلم ایکتا

100 صفحے دام بارہ آنے

ہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

قیمت بارہ آنے

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

قیمت چار آنے

بنگال اور اس سے سبق

قیمت دو آنے۔

ہندستانی کلچر سوسائٹی

145، مٹھی گنج الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.